

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

صحیح بخاری

# सहीह बुखारी

मय तर्जुमा व तपसीर

जिल्द : चार

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फिल हदीस सैयदुल फुक्कहा हजरत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हजरत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम खिलजी



प्रकाशक : शो'बा नस्रो इशाअत

जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

© सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) के खलीफ़ा नज़ीर अहमद बिन मुहम्मद दाऊद राज़ ने सहीह बुखारी की उर्दू शरह के हिन्दी अनुवाद सम्बंधित समस्त अधिकार जमीयत अहले हदीष जोधपुर (प्रकाशक) के नाम कर दिये हैं। इस किताब में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। कोई व्यक्ति/संस्था/समूह/प्रकाशन आदि इस पुस्तक की आंशिक अथवा पूरी सामग्री किसी भी रूप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ़ कानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्जे-खर्चे के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब	: सहीह बुखारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़सीर)
मुर्त्तिब (अरबी)	: अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह	: अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-प्रांनी	: सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking)	: जमशेद आलम सलफ़ी
कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग	: खलीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
एवं लेज़र टाइपसेटिंग	: khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग	: मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन	: मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल खिलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव	: फैसल मोदी
ता'दाद पेज (जिल्द-4)	: 732 पेज
प्रकाशन (प्रथम संस्करण)	: ज़िक्रअद: 1432 हिजरी (अक्टूबर 2011 ईस्वी)
ता'दाद (प्रथम संस्करण)	: 2400
कीमत (जिल्द-4)	: 500/-
प्रिण्टिंग	: अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक	: जमीयत अहले हदीष जोधपुर (राज.)

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़

तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1

(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249,

93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशनल

जामिया नगर, नई दिल्ली-25

(फ़ोन): 011-6986973

93125-08762

# फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

## मज़मून

## सफ़ा नं.

## मज़मून

## सफ़ा नं.

मुश्तरक चीज़ों की इन्साफ़ के साथ.....	19
तक्सीम में कुआं डाल कर.....	20
तयम्मूम का दूसरे वारिषों का.....	22
ज़मीन मकान वग़ैरह में शिरकत का बयान	23
जब शरीक लोग घरों वग़ैरह को.....	23
सोने, चाँदी और उन तमाम चीज़ों में.....	24
मुसलमान का मुश्रिकीन और ज़िम्मियों के साथ.....	24
बकरियों का इन्साफ़ के साथ तक्सीम करना	25
अनाज वग़ैरह में शिरकत का बयान	25
गुलाम-लौण्डी में शिरकत का बयान	27
कुर्बानी के जानवरों और ऊँटों में शिरकत .....	27
तक्सीम में एक ऊँट को दस.....	29

## किताबुर रहन

आदमी अपनी बस्ती में हो और गिरवी रखे....	30
ज़ेवर को गिरवी रखना	32
हथियार गिरवी रखना	32
गिरवी जानवर पर सवारी करना.....	34
यहूद वग़ैरह के पास कोई चीज़ गिरवी रखना	35
राहिन और मुरतहिन में अगर.....	35

## किताबुल इत्क

गुलाम आज़ाद करने का प्रभाव	37
क्या गुलाम आज़ाद करना अफ़ज़ल है?	38
सूरज ग्रहन और दूसरी निशानियों .....	39
अगर मुश्तरक गुलाम या लौण्डी को.....	39
अगर किसी शख्स ने साझे के गुलाम में	42
अगर भूल-चूक कर किसी की ज़बान से.....	43
एक शख्स ने आज़ाद करने की निय्यत	44
उम्मे वलद का बयान	47
मुदब्बर की बैअ का बयान	48

अगर किसी मुसलमान का मुश्रिक भाई.....	49
मुश्रिक गुलाम को आज़ाद करने.....	50
अगर अरबों पर जिहाद हो.....	51
जो शख्स अपनी लौण्डी को अदब.....	56
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि गुलाम तुम्हारे भाई है	56
जब गुलाम अपने रब की इबादत.....	57
गुलाम पर दस्तदराज़ी करना.....	59
जब किसी का खादिम खाना लेकर आए	62
गुलाम अपने आक्रा के माल का निगहबान.....	63
अगर कोई गुलाम-लौण्डी को मारे.....	64

## किताबुल मुकातब

जिसने अपने लौण्डी-गुलाम को ज़िना की.....	66
मुकातब और उसकी किस्तों .....	66
मुकातब से कौनसी शतें.....	67
अगर मुकातब दूसरों से.....	70
अगर मुकातब अपने तई बेच....	71
अगर मुकातब किसी शख्स से कहे.....	71

## किताबुल हिबा.....

थोड़ी चीज़ हिबा करना	74
जो शख्स अपने दोस्तों को कोई चीज़.....	75
पानी (या दूध) माँगना	77
शिकार का तोहफ़ा कुबूल करना	78
हदिया का कुबूल करना	79
अपने किसी दोस्त को ख़ास उस दिन में तोहफ़ा...	82
जो तोहफ़ा वापस ना किया जाना चाहिये	85
ज़िन के नज़दीक ग़ायब चीज़ का हिबा करना...	85
हिबा का मुआवज़ा अदा करना	87
अपने लड़के को कुछ हिबा करना	88
हिबा के ऊपर गवाह करना	89

## फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
खाविन्द का अपनी बीवी को.....	90	जिना की तुहमत लगाने वाले.....	129
अगर औरत अपने खाविन्द के सिवा....	91	अगर जुल्म की बात पर लोग....	132
हदिया का अव्वलीन हकदार कौन है?	92	झूठी गवाही देना बड़ा गुनाह है	134
जिसने किसी इज़र से हदिया कुबूल नहीं किया	93	अंधे आदमी की गवाही....	136
अगर हिबा का वादा करके कोई मर जाए....	94	औरतों की गवाही का बयान	138
गुलाम-लौण्डी और सामान पर क्यों कर क़ब्ज़ा	95	बाँदियों और गुलामों की गवाही.....	139
अगर कोई हिबा करे और मौहब लहू का.....	95	दूध की माँ की गवाही.....	140
अगर कोई अपना क़र्ज़ किसी को हिबा कर दे	96	औरतों का आपस में.....	140
एक चीज़ कई आदमियों को हिबा करे....	98	जब एक मर्द दूसरे....	149
जो चीज़ क़ब्ज़े में हो या न हो....	98	किसी की तारीफ़ में मुबालगा करना.....	149
जो शख़्स कई शख़्सों को हिबा करे	101	बच्चों का बालिग़ होना...	150
अगर किसी को कुछ हदिया दिया जाए....	102	मुद्आ अलैय को क़सम दिलाने से पहले.....	151
अगर कोई शख़्स कैंट पर सवार हो...	103	दीवानी और फौजदारी.....	152
ऐसे कपड़े का तोहफ़ा.....	103	अगर किसी ने कोई दा'वा किया.....	154
मुश्किनी का हदिया कुबूल करना	105	अज़र की नमाज़ के बाद.....	155
मुश्कों को हदिया देना	108	मुद्आ अलैय पर जहाँ.....	156
किसी के लिए हलाल नहीं.....	109	जब चन्द आदमी हों और.....	157
उमरा और रुक्बा के बारे में रिवायात	111	सूरह आले इम्रान की एक आयत शरीफ़ा की तशरीह	158
जिसने किसी से धोड़ा आरियतन लिया	112	क्योंकर क़सम ली जाए?	159
शबे इरूसी में दुल्हन के लिए कोई चीज़ आरियतन लेना	113	जिस मुद्ई ने	160
तोहफ़ा मनीहा की फ़ज़ीलत के बारे में	113	जिसने वादा पूरा करने का हुक्म दिया	161
आम दस्तूर के मुताबिक़ किसी ने.....	117	मुश्कों की गवाही कुबूल न होगी	164
जब किसी शख़्स को कोई धोड़ा.....	18	मुश्किलात के वक़्त कुआँ अन्दाज़ी करना	166
<b>किताबुशहादात</b>		<b>किताबुसुलह</b>	
गवाहों का पेश करना	118	लोगों में सुलह कराने का फ़वाब	169
अगर एक शख़्स दूसरे के....	120	दो आदमियों में मेल मिलाप करने के लिए	172
जो अपने तई छुपाकर गवाह बना.....	122	हाकिम लोगों से कहे हमको ले चलो.....	172
जब एक या कई गवाह....	124	सूरह निसा में एक इशदि इलाही	173
गवाह आदिल मुअतबर होने ज़रूरी हैं	125	अगर जुल्म की बात पर सुलह करें.....	173
किसी गवाह को आदिल प्राबित करने.....	126	सुलहनामा में ये लिखवाना काफ़ी है.....	175
नसब और रज़ाअत में.....	127	मुश्किनी के साथ सुलह करना	178



## फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
दीयत पर सुलह करना	179	अगर मरीज़ अपने सर से कोई साफ़ इशारा करे.....	222
हज़रत हुसैन बिन अली (रज़ि.) के मुताल्लिक.....	180	वारिष के लिए वसियत करना.....	223
क्या इमाम सुलह के लिए फ़रीक़िन को इशारा कर सकता है?	182	मौत के वक़्त सद्का करना	223
लोगों में आपस में मेल मिलाप.....	183	सूरह निसा में एक इशार्द बारी	224
अगर हाकिम सुलह करने के लिए.....	183	एक आयते शरीफ़ की तफ़सीर	226
मय्यित के कर्ज़ ख़्वाहों और वारिषों.....	185	अगर किसी ने अपने अज़ीज़ों पर.....	228
कुछ नक़द दे कर कर्ज़ के बदले.....	186	क्या अज़ीज़ों में औरतें और बच्चे भी दाख़िल हैं	229
<b>किताबुशरूत</b>		क्या वक़फ़ करने वाला अपने वक़फ़ से.....	230
इस्लाम में दाख़िल होते वक़्त.....	187	क्या वक़फ़ करने वाला माल वक़फ़ को अपने.....	231
पैवन्द लगाने के बाद	189	अगर किसी ने यूँ कहा.....	232
बैअ में शर्तें....	189	किसी ने कहा कि मेरी ज़मीन या मेरा बाग़.....	233
अगर बेचने वाले ने.....	190	किसी ने अपनी कोई चीज़ या लौण्डी.....	233
मामलात में शर्तें लगाने का बयान	192	अगर सद्के के लिए किसी को वकील करे.....	234
निकाह के वक़्त मेहर की शर्तें	192	आयते शरीफ़ बाबत तफ़सीमे विर्षा	236
मुज़ारअत में शर्तें.....	193	अगर किसी को अचानक मौत आ जाए....	237
जो शर्तें निकाह में जाइज़ नहीं हैं.....	194	वक़फ़ और सद्के पर ग़वाह करना	238
अगर मुक़ातब अपनी बैअ पर.....	195	सूरह निसा में एक इशार्द बारी	239
तलाक़ की शर्तें	196	तयम्मूम के मुताल्लिक एक हिदायते इलाही	240
लोगों से ज़बानी शर्तें करना	198	वस्ती के लिए तयम्मूम के माल में.....	241
दलाइल में शर्त लगाना	199	एक और हिदायते कुआनी	242
मुज़ारअत में मालिक ने काशतक़र.....	200	सफ़र और हज़र में तयम्मूम से काम लेना.....	245
जिहाद में शर्तें लगाना.....	201	अगर किसी ने एक ज़मीन वक़फ़ की.....	245
कर्ज़ में शर्तें लगाना	212	अगर कई आदमियों ने अपनी मुस्तरक़ ज़मीन.....	247
मुक़ातब का बयान और.....	213	वक़फ़ की सनद क्योंकर लिखी जाए	248
इक़रार में शर्तें लगाना या इस्तिफ़नाअ करना जाइज़ है	214	मालदार और मुहताज और मेहमान	248
वक़फ़ में शर्तें लगाने का बयान	215	मस्जिद के लिए ज़मीन का वक़फ़ करना	249
<b>किताबुल वसाया</b>		जानवर और घोड़े और सामान.....	249
इस बारे में कि वसियत ज़रूरी है	216	वक़फ़ की जायदाद का इहतिमाम करना करने वाला	250
अपने वारिषों को छोड़ना.....	219	किसी ने कोई कुआँ वक़फ़ किया.....	251
तिहाई माल की वसियत करने का बयान	220	अगर कोई वक़फ़ करने वाला यूँ कहे.....	253
वसियत करने वाला अपने वस्ती से कहे.....	221	सूरह माइदा में एक इशार्द बारी	253

## फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
मय्यित पर जो कर्ज हो वो उसका.....	254	काफ़िरो से लड़ते वक़्त सन्न करना	292
<b>किताबुल जिहाद</b>		मुसलमानों को काफ़िरो से लड़ने की.....	292
जिहाद की फ़ज़ीलत और रसूले अकरम (ﷺ).....	256	ख़न्दक खोदने का बयान	293
सब लोगों में अफ़ज़ल वो शख़्स है.....	259	जो शख़्स मा'कूल इज़्ज की.....	295
जिहाद और शहादत के लिए.....	261	जिहाद में रोज़े रखने की फ़ज़ीलत	295
मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह के दर्जात का बयान	262	अल्लाह की राह में खर्च करने की फ़ज़ीलत	296
अल्लाह के रास्ते में सुबह व शाम चलने की.....	264	जो शख़्स गाज़ी का सामान तैयार करे....	297
बड़ी आँख वाली हूरों का बयान	265	जंग के मौक़े पर खुश्बू मलना	298
शहादत की आरज़ू करना	266	दुश्मनों की ख़बर लाने वाला दस्ता	299
अगर कोई शख़्स जिहाद में सवारी से गिरकर मर जाए.....	267	क्या जासूसी के लिए.....	299
जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे	268	दो आदमियों का मिलकर सफ़र करना	299
जो अल्लाह के रास्ते में ज़ख्मी हुआ.....	270	क़्यामत तक घोड़े की पेशानी	300
सूरह तौबा की एक आयत शरीफ़ा	270	मुसलमानों का अमीर आदिल हो या ज़ालिम.....	301
जंग से पहले कोई नेक अमल करना	274	जो शख़्स जिहाद की निय्यत से (घोड़े पाले).....	302
किस्ती को अचानक नामा'लूम तौर लगा.....	274	घोड़ों और गधों का नाम रखना	302
जिस शख़्स ने इस इशार्द से....	275	इस बयान में कि बाज़ घोड़े मनहूस होते हैं	305
जिसके क़दम अल्लाह के रास्ते में.....	276	घोड़े के रखने वाले.....	306
अल्लाह के रास्ते में जिन लोगों पर.....	277	जिहाद में दूसरे के जानवर को मारना	307
जंग और ग़दों-गुबार के बाद गुस्ल करना	277	सख़्त सरकश जानवर और निगोड़े की सवारी करना	308
सूरह आले इम्रान की एक आयत की तफ़सीर	278	(ग़नीमत के माल से) घोड़े का हिस्सा.....	309
शहीदों पर फ़रिशतों का साया करना	279	अगर कोई लड़ाई में.....	309
शहीद का दोबारा दुनिया में वापस आने की आरज़ू करना	280	जानवर का रिकाब या गरज़ लगाना	310
जन्नत का तलवारों की चमक के नीचे होना	280	घोड़े की गंगी पीठ पर सवार होना	310
जो जिहाद करने के लिए अल्लाह से औलाद माँगी.....	281	सुस्त रफ़तार घोड़े पर सवार होना	311
जंग के मौक़े पर बहादुरी और बुजदिली का बयान	282	घुड़दौड़ का बयान	311
बुजदिली से अल्लाह की पनाह माँगना	283	घुड़दौड़ के लिए घोड़ों को तैयार करना	312
जो शख़्स अपनी लड़ाई के करनामे बयान करे.....	284	तैयार किये हुए घोड़ों की दौड़ की हद.....	312
जिहाद के लिए निकल खड़े होना.....	285	नबी करीम (ﷺ) की ऊँटनी का बयान	313
काफ़िर अगर कुफ़्र की हालत में.....	286	गधे पर बैठकर जंग करना	315
जिहाद को (नफ़ली) रोज़ों पर मुक़द्दम रखना	288	नबी करीम (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर का बयान	315
अल्लाह की राह में मारे जाने के सिवा.....	288	औरतों का जिहाद क्या है	316

# फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
दरिया में सवार होकर.....	317	यहूदियों से लड़ाई होने का बयान	346
आदमी जिहाद में अपनी एक बीवी को.....	318	तुर्कों से जंग का बयान	346
औरतों का जंग करना.....	318	उन लोगों से लड़ाई का बयान जो.....	348
जिहाद में औरतों का.....	319	हार जाने के बाद.....	349
जिहाद में औरतें ज़ख्मियों की मरहम पट्टी.....	320	मुश्किनी के लिए शिकस्त.....	350
ज़ख्मियों और शहीदों को औरतें....	320	मुसलमान अहले किताब को दीन की बात बतलाए.....	352
(मुजाहिदीन) के जिस्म से तीर का.....	320	मुश्किनी का दिल मिलाने के लिए.....	352
अल्लाह के रास्ते में जिहाद में पहरा देना...	321	यहूद और नसारा को क्यों कर दा'वत दी जाए.....	353
जिहाद में खिदमत करने की फ़ज़ीलत	322	नबी करीम (ﷺ) का ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की दावत देना	354
उस शख्स की फ़ज़ीलत जिसने सफ़र में अपने साथी.....	324	लड़ाई का मक़ाम छुपाना.....	362
अल्लाह के रास्ते में सरहद पर....	325	जुहर की नमाज़ के बाद सफ़र करना	364
अगर किसी बच्चे को खिदमत के लिए.....	325	महीने के आखिरी दिनों में सफ़र करना	364
जिहाद के लिए समन्दर में सफ़र करना	327	रमज़ान के महीने में सफ़र करना	368
लड़ाई में कमज़ोर नातवाँ.....	328	सफ़र शुरू करते वक़्त मुसाफ़िर को रुख़सत करना	368
क़त्ल तौर पर ये न कहा जाए.....	329	इमाम की इताअत करना	369
तीरन्दाज़ी की तरगीब दिलाने.....	331	इमाम के साथ होकर लड़ना	370
बछे से (मशक़ करने के लिए) खेलना	332	बादशाहे इस्लामी की इताअत लोगों पर वाजिब है.....	374
ढाल का बयान.....	333	नबी करीम (ﷺ) दिन होते ही.....	375
एक और बयान ढाल के बारे में	335	अगर कोई जिहाद में से लौटना.....	376
तलवारों की हमाइल और तलवार का गले में लटकाना	336	नई-नई शादी होने के.....	378
तलवार की आराइश करना	336	ख़ौफ़ और दहशत के वक़्त.....	378
जिसने सफ़र में दोपहर के आराम.....	336	ख़ौफ़ के मौक़े पर.....	368
ख़ूद पहनना	337	किसी को उज्रत देकर.....	379
किसी की मौत पर उसके हथियार वग़ैरह.....	338	जो शख्स मज़दूरी के लिए जिहाद..	381
दोपहर के वक़्त दरख़्तों का.....	339	आँहज़रत (ﷺ) के झण्डे का बयान	382
भालों (नेज़ों) का बयान	339	एक इशदि नबवी (ﷺ)	383
आँहज़रत (ﷺ) का लड़ाई में ज़िरह पहनना	341	सफ़रे-जिहाद में तौशा साथ रखना	385
सफ़र में और लड़ाई में चोगा पहनने का बयान	343	तौशा अपने कंधों पर.....	388
सफ़र में हरीर यानी.....	343	औरत का अपने भाई के पीछे.....	388
छुरी का इस्तेमाल करना दुस्त है	344	जिहाद और हज्ज के सफ़र में.....	389
नसारा से लड़ने की फ़ज़ीलत का बयान	345	एक गधे पर दो आदमियों.....	389

## फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
जो रिक़ाब पकड़कर किसी को सवारी पर चढ़ा दे.....	391	अगर किसी से फ़साद या.....	419
मुसहफ़ यानी लिखा हुआ कुआन शरीफ़ लेकर दुश्मन...	391	जंग में शेर पढ़ना.....	419
जंग के वक़्त नारा-ए-तकबीर बुलन्द करना	392	जो घोड़े पर अच्छी तरह न जम.....	421
बहुत चिल्ला कर तकबीर कहना मना है	393	बोरिया जलाकर ज़ख़म की दवा करना.....	421
किसी नशेब की जगह में उतरते वक़्त.....	394	जंग में झगड़ा और इख़्तिलाफ़.....	422
जब बुलन्दी पर चढ़े.....	394	अगर रात के वक़्त दुश्मन.....	425
मुसाफ़िर को उस इबादत का.....	395	दुश्मन को देखकर बुलन्द आवाज़ से.....	426
अकेले सफ़र करना	396	हमला करते वक़्त यूँ कहना अच्छा.....	427
सफ़र में तेज़ चलना	397	अगर काफ़िर लोग एक मुसलमान.....	428
अगर अल्लाह की राह में सवारी के लिए.....	398	कैदी को क़त्ल करना.....	429
माँ-बाप की इजाज़त लेकर जिहाद में जाना	399	अपने तई कैद कर देना.....	429
ऊँटों की गर्दन में घण्टी.....	399	मुसलमान कैदियों को आज़ाद करना	432
एक शख़्स अपना नाम मुजाहिदीन.....	400	मुस्किन से फ़िदया लेना	433
जासूसी का बयान	401	अगर हबी काफ़िर मुसलमानों के.....	434
कैदियों को कपड़े पहनाना	403	ज़िम्मी काफ़िरों को बचाने के लिए लड़ना.....	435
उस शख़्स की फ़ज़ीलत.....	403	जो काफ़िर दूसरे मुल्कों से एलची.....	435
कैदियों को ज़जोरों में बाँधना	405	ज़िम्मियों की सिफ़ारिश.....	436
यहूद या नज़ारा मुसलमान हो जाएँ.....	405	वुफ़ूद से मुलाक़ात के लिए	437
अगर काफ़िरों पर रात को छापा मारें.....	406	बच्चे पर इस्लाम किस तरह पेश किया जाए	438
जंग में बच्चों का क़त्ल करना.....	408	रसूले करीम (ﷺ) का यहूद से यूँ फ़र्माना.....	440
जंग में औरतों का क़त्ल करना.....	408	अगर कुछ लोग जो दास्त हुरब में.....	440
अल्लाह के अज़ाब (आग) से किसी को अज़ाब न करना	408	खलीफ़-ए-इस्लाम की तरफ़ से मर्दुम शुमारी करना	442
सूरह मुहम्मद की एक आयते शरीफ़	409	अल्लाह तआला कभी अपने दीन की मदद.....	444
अगर कोई मुसलमान काफ़िर की कैद में हो.....	410	जो शख़्स मैदाने जंग में.....	445
अगर कोई मुशिक किसी मुसलमान को....	410	मदद के लिए फ़ौज ख़ाना करना.....	445
(हबी काफ़िरों के) घरों और बाग़ों.....	412	जिसने दुश्मन पर फ़तह पाई.....	446
(हबी) मुशिक सो रहा हो तो.....	413	सफ़र में और जिहाद में माले ग़नीमत.....	446
दुश्मन से मुठभेड़ होने की आरज़ू न करना	415	किसी मुसलमान का माल.....	447
लड़ाई मक्रो-फ़रेब का नाम है	416	फ़ारसी या और किसी भी अज़मी ज़बान में बोलना	448
जंग में झूठ बोलना.....	417	माले ग़नीमत में से तक्सीम.....	450
जंग में हबी काफ़िर को अचानक धोखे से.....	418	माले ग़नीमत के ऊँट.....	452

## फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

## मज़मून

## सफ़ा नं.

## मज़मून

## सफ़ा नं.

फ़तह की खुशख़बरी देना	453
ख़ुशख़बरी देने वाले को इनाम देना	454
फ़तहे मक्का के बाद वहाँ से हिजरत....	454
ज़िम्मी या मुसलमान औरतों.....	456
गाज़ियों के इस्तिक्बाल को जाना	457
जिहाद से वापस होते हुए क्या करे	458
सफ़र से वापसी पर नफ़ल नमाज़ .....	460
मुसाफ़िर जब सफ़र से लौटकर.....	461

### किताब फ़र्ज़ुलख़ुम्स

ख़ुम्स के फ़र्ज़ होने का बयान	462
माले ग़नीमत में से पाँचवा हिस्सा अदा करना	470
नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद अज़वाजे मुतहहरात	471
रसूले करीम (ﷺ) की बीवियों के घरों का उनकी तरफ....	472
नबी करीम (ﷺ) की ज़िरह.....	475
इस बात की दलील की ग़नीमत का पाँचवा हिस्सा.....	479
सूरह अन्फ़ाल में एक आयत ग़नीमत के मुता'ल्लिक	481
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तुम्हारे लिए ग़नीमत... 484	
माले ग़नीमत उन लोगों को मिलेगा.....	488
अगर कोई ग़नीमत हासिल करने के लिए लड़े....	488
ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन के पास.....	489
नबी करीम (ﷺ) ने बन् कुरैजा और बन् नज़ीर की जायदाद	490
अल्लाह पाक ने मुजाहिदीने किराम को.....	490
अगर इमाम किसी शख्स को.....	494
इस बात की दलील क्या पाँचवा हिस्सा मुसलमानों की...	494
औहज़रत (ﷺ) का एहसान....	501
इसकी दलील कि ख़ुम्स में.....	501
मक्तूल के जिस्म पर जो सामान हो.....	502
ताल्लिफ़े कुलूब के लिए.....	505
अगर खाने की चीज़ें .....	513

### किताबुल जिज़्या वल मुवादिअत

जिज़्या का और काफ़िरों से.....	514
अगर बस्ती के हाकिम से सुलह हो जाए.....	519
औहज़रत (ﷺ) ने जिन काफ़िरों को.....	519
औहज़रत (ﷺ) का बहरीन से.....	521
किसी ज़िम्मी काफ़िर को नाहक मार डालना.....	523
यहूदियों को अरब के मुल्क .....	524
अगर काफ़िर मुसलमान से दगा करें.....	526
वादा तोड़ने वाले के .....	527
मुसलमान औरतें अगर.....	528
मुसलमान सब बराबर हैं.....	529
अगर काफ़िर लड़ाई के वक़्त घबराकर.....	529
मुश्रिकों से माल वग़ैरह पर सुलह करना.....	538
नामा'लूम मुद्त के लिए सुलह करना	539
मुश्रिकों की लाशों को.....	540
दगाबाज़ी करने वाले पर गुनाह.....	541

### किताब बदउल-ख़ल्क

सूरह रूम की आयत की तशरीह	544
सात ज़मीनों का बयान	548
सितारों का बयान	550
एक आयते शरीफ़ की तफ़सीर	551
सूरह आराफ़ की आयत की तफ़सीर	551
फरिस्तों का बयान	556
उस हदीस के बयान में कि जब एक तुम्हारा.....	569
जन्नत का बयान	577
जन्नत के दरवाज़ों का बयान	585
दोज़ख़ का बयान	586
इब्लीस और उसकी फ़ौज का बयान	590
जिन्नों का बयान	604
सूरह जिन्न में जिन्नात का ज़िक्र	605

## फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
एक आयते कुआनी की तफसीर	605	मोमिन.....	675
मुसलमानों का बेहतरीन माल बकरियाँ हैं	606	कुछ अल्फ़ाज़े-कुआनी की वज़ाहत	675
पाँच बहुत ही बुरे जानवर हैं जिनको हरम में भी मार....	611	सूरह ताहा में ज़िक्रे हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम)	677
उस हदीस का बयान मक्खी पानी.....	614	हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से चालीस रातों का वादा	679
<b>किताबुल अम्बिया</b>		सूरह आरफ़ में तूफ़ान से मुराद.....	680
हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद की पैदाइश के बयान में	617	हज़रत ख़िज़्र और हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के वाकिआत.....	681
आयत व इज़ क़ाल रब्बुक लिलमलाइकति की तफसीर	617	हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की वफ़ात	690
रुहों के जत्थे हैं.....	625	अल्लाह तआला ने फ़र्माया, और इमानवालों के लिए...	693
हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बयान में	626	क़ारून का बयान	693
सूरह नूह की आयत की तफसीर	627	इस बयान में कि .....	694
इलयास अलैहिस्सलाम पैग़म्बर का बयान	630	हज़रत यूनस (अलैहिस्सलाम) का बयान	694
हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का बयान	631	अल्लाह पाक का ये फ़र्माना, इन यहूदियों से.....	697
हज़रत हूद का ज़िक्रे ख़ैर	634	अल्लाह तआला का इश्राद, और दी हमने दाऊद अलैहिस्सलाम को ज़बूर	697
याजुज माजुज का बयान	636	हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का बयान	699
एक आयते शरीफ़ा अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को अपना ख़लील बनाया	640	अल्लाह तआला का इश्राद, और हमने दाऊद को सुलैमान..	702
सूरह साफ़फ़ात के एक लफ़्ज़ की तफ़रीह	647	हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम का बयान	705
हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों का क़िस्सा	661	और उनके सामने बस्तीवालों की मिशाल बयान करो	706
हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का बयान	663	हज़रत ज़करिया (अलैहिस्सलाम) का बयान	706
हज़रत इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का बयान	663	हज़रत ईसा और हज़रत मरयम (अलै.) का बयान	708
हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) का बयान	663	सूरह आले इम्यान में एक आयते करीमा	709
हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) का बयान	664	जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम!	709
सूरह हिज़्र में आले लूत का ज़िक्र	665	अल्लाह पाक का सूरह मरयम में फ़र्माना, ऐ अहले किताब..	711
क़ौमे प्रमूद और हज़रत स़ालेह (अलैहिस्सलाम) का बयान	666	सूरह मरयम में एक और ज़िक्रे ख़ैर	712
हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) का बयान	668	हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) का आसमान से उतरना	719
हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का बयान	669	बनी इस्राईल के वाकिआत का बयान	720
अल्लाह तआला का फ़र्माना, और अय्यूब को याद करो	674	बनी इस्राईल के एक कोढ़ी.....	426
हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का बयान	674	अइहाबे कहफ़ के बयान में	729
अल्लाह तआला ने फ़र्माया, और फ़िरऔन के खानदान के एक		अज़े-मुतज़िम	730

# फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
मुश्तरक चीज़ों की तक्सीम से मुता'ल्लिक हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) की वज़ाहत	19	लफ़्ज़ हिबा की वज़ाहत	73
मुश्तरक गुलाम के बारे में एक तशरीह	19	गोह की हिल्लत पर फ़ाज़िलाना तब्सरा	79
एक हदीष जो बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है	21	अज़वाजे मुतहहरा से मुताल्लिक एक तफ़्सीली बयान	84
बाज़ फ़ुक़हा-ए-कूफ़ा का एक क़यासे बातिल	21	हालात हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रह.)	86
ग़ैर मुस्लिमों की शिरकत में कारोबार करना जाइज़ है	24	औलाद को कुछ हिबा करने के बारे में	88
एक हदीष पर तफ़्सीली तब्सरा	26	हालात हज़रत हुसैन बिन अली (रज़ि.)	97
तशरीह बाबत रहन अश्या मुतफ़रक़ा	30	नाम निहाद तबर्क़ात पर एक इशारा	99
शैख़ निज़ामुद्दीन देहलवी का वाक़िआ	31	हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की नज़रे बज़ीरत का बयान	103
हदीष की एक क़ाबिले मुतालआ तशरीह	31	बददीन लोग जो अपने अज़ीज़ हो उनके साथ एहसान	104
एक सरमायादार यहूदी का वाक़िआ	33	ग़ैर मुस्लिम के हदाया को कुबूल किया जा सकता है	106
गिरवी रखी हुई चीज़ से नफ़ा उठाने के बारे में	34	अहले बिदा'त की मज़म्मत का बयान	107
अहमदाबाद भिवण्डी वग़ैरह के फ़सादात का ज़िक़्र	37	ग़ैर मुस्लिमों को तहाइफ़ दे सकते हैं	109
ज़िक़्रे ख़ैर इमाम ज़ैनुलआबेदीन (रह.)	38	उम्रा व रुक्बा की तशरीहात	111
मरिबजदा लोगों का एक ख़याले-बातिल	39	कुछ मनाक़िबे मुहम्मदी का बयान	112
मुआनिदीने हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) पर एक इशारा	42	लफ़्ज़ मन्हा की तशरीह	114
उम्मे वलद पर एक तफ़्सीली बयान		बेकार ज़मीन को आबाद करने की तर्गीब	117
हज़रत अब्बास (रज़ि.) से मुता'ल्लिक एक इशदि नबवी	50	इस्लाम और सियासत पर एक क़ाबिले मुतालआ वज़ाहत	120
ख़िलाफ़े हदीष राएज़नी की मज़म्मत	51	हाद़-ए-इफ़क़ पर चन्द इशारे	121
वफ़दे हवाज़िन का एक वाक़िआ	53	हदीषे इब्ने सय्याद यहूदी बच्चे के बारे में	122
मुर्व्वजा फैमिली प्लानिंग की मज़म्मत हदीष की रोशनी में	54	तअदील और तज़किया के बारे में	127
अल्फ़ाज़ लौण्डी-गुलाम, सय्यिद वग़ैरह की वज़ाहत	59	मुद्दे रज़ा'त सिर्फ़ दो साल दूध पिलाना है	129
लफ़्ज़ रब के इस्तेमाल पर एक तशरीह	61	शहादते क़ाज़िफ़ के बारे में बाजुनास की तर्दीद	130
इमाम बुख़ारी (रह.) मुज्तहिदे-मुत्लक़ थे	63	गुनाहों की तक्सीम सगीरा और क़बीरा में	135
चेहरे की शराफ़त पर एक वज़ाहती बयान	64	हज़रत इमाम शाफ़ि'ई की वालदा मुहतरमा का एक ज़िक़्रे ख़ैर	139
सिफ़ाते बारी और मस्लके अहले हदीष का बयान	65	फ़ज़ाइल हज़रत आइशा (रज़ि.)	148
कुछ हालात हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)	68	अदालत के लिए इस्लामी हिदायात	152
		चन्द इस्लामी कुज़ात का ज़िक़्रे ख़ैर	153

## फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
काज़ी का ग़लत फैसला इन्दल्लाह नाफ़िज़ नहीं	159	लफ़्ज़ सबील की वज़ाहत	262
एक ग़लत ख़याल की तर्दीद	161	बाज़ मुल्हिदीन का जवाब	266
हज़रत इमाम बुखारी (रह.) खुद मुज्ताहिदे मुतलक हैं	162	फ़ज़ीलत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.)	267
महकमा अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर	166	सत्तर क़ारी सहाबा (रज़ि.) की शहादत का बयान	268
पादरियों का एक लख़ ऐतराज़ और उसका जवाब	167	एक क़ाबिले सद्दे-शक़ शहीद का ज़िक़रे ख़ैर	271
अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक्क का बयान	171	दो सफ़े जो इन्दल्लाह बहुत महबूब हैं	274
मुलह सफ़ई के लिए झूठ बोलना जायज़ है	172	एक बेहद नफ़ीस व बलीग़ क़लामे नबवी	280
आयत फ़स्अलू अहलज़िक्क का मतलब?	174	ग़श्वाए-तबूक पर चन्द इशारात	285
बिदाआते मुरक्वजा की पुरज़ोर तर्दीद	175	ख़ुदसाख़ता दुरूद व वज़ाइफ़ की तर्दीद	288
मुक़ल्लिदीने ज़ामिदीन के लिए हज़रत शाह वलीउल्लाह की नज़ीहत	184	इस्सामे शहादत का बयान	289
औरत से बैअत लेने का तरीका.....	188	शहीद की वजहे-तस्मिया इमाम नववी के लफ़्ज़ों में	289
हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस्म के दरियाए-बेपाया थे	192	जिहाद फ़ज़े किफ़ाया है	290
इस्लामी शरई स्टेट और इजराए-हुदुल्लाह	195	जंगे ख़न्दक़ पर कुछ बयानात	293
तलाक़ की शर्तें जो मना हैं	196	दौर हाज़िरा के आलाते-जंग पर एक इशारा	300
यहूद एक बेवफ़ा क़ौम	201	मुस्लिम मुसलमानों पर एक इशारा	304
अस्मा-उल-हुस्ना पर एक इशारा	215	नहूसत के मुता'ल्लिक़ एक तफ़्सीली बयान	305
वक्फ़ के मुताल्लिक़ कुछ तफ़्सीलात	215	क़ाबिले तबज्जह उलमा, इमाम व मशाइख़ अज़ज़ाम	311
हज़रत सअद बिन अबी वक्क़स (रज़ि.) के बारे में	220	रेस की दौड़ में हिस्सा लेना जाइज़ नहीं है	312
मर्जुल मौत के इत्तरार के बारे में	225	मुसलमानों की अव्वलीन बहरी जंग का ज़िक़रे ख़ैर	317
ज़िक़रे शहादत हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.)	236	ज़िन्दा क़ौमों की मस्तूरात पर एक इशारा	319
हज़्ज़ाज क़ातिल की इब्रतनाक मौत पर एक इशारा	237	नेक ज़ईफ़ लोगों से दुआ कराना सअदत है	329
औरतों की हैषियत पर एक अहम इल्मी मक़ला	241	औलादे इब्नीस पर एक तफ़्सीली तब्सरा	329
सात मुहलिक गुनाहों का बयान	243	आयते शरीफ़ा अइडु लहुम मस्ततअतुम की तफ़्सीर	331
इस्लाहाते-हदीष पर एक तफ़्सीली तब्सरा	244	इस्लाम सिपाहियाना ज़िन्दगी का मुअल्लिम है	332
हज़रत उमर (रज़ि.) का एक वक्फ़नामा	247	मसाजिद को बत्तौर मर्कज़े-मिल्लत करारा देना	333
हज़रत जाबिर (रज़ि.) का एक अदायगी क़र्ज़ा का वाकिआ	255	दन्दाने मुबारक को सद्मा पहुँचाने वाला मर्दूद	334
इस्लामी जिहाद के हक़इक़ के बारे में	257	फुनूने हर्ब में महारत पैदा करने की तराब	335
लफ़्ज़ जिहाद की तशरीह हाफ़िज़ इब्ने हजर के लफ़्ज़ों में	258	एक दस्तुरे जाहिलिय्यत की नफ़ी	338
इस्लाम का अव्वलीन बहरी बेझ अहदे उज़्मानी में	262	तातारियों का कुम्बूले इस्लाम क्यों कर हुआ	346
		तर्क़े क़ौम के बारे में बशारते नबवी	348



## फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
किसरा की तबाही का बयान	354	हिजरत के मतालिब का बयान	455
अहवाले इमाम मालिक (रह.)	365	बवक़्त ज़रूरते खास औरत की जामा तलाशी	457
दो मर्दूद झकुओं का बयान	369	सहाबा (रज़ि.) के बारे में अहले सुन्नत का अक़ीदा	457
मज़म्मत तक्लीदे जामिद	370	बिदअत और अहले बिदअत से सज़्जत नफ़रत करना	462
हकीमी इमाम के औसाफ़	371	एक अहमतरीन मुक़द्दमे का बयान	465
लफ़्जे बैअत की तहकीक़	371	वराषते नबवी से मुताल्लिक़ एक मुफ़्फ़सल हदीष	469
एक अज़ीम इस्लामी तारीख़ी वाकिआ	371	हज़रत अली (रज़ि.) के वज़ी होने की तर्दीद	473
तक्लीदे जामिद पर एक और तब्स्रा	375	क़नुशैतान की तफ़सीर	475
फुतूहाते इस्लामी के लिए बशारात	384	मुहरे नबवी का बयान	476
मोअज़ज़ात का वजूद बरहक़ है	387	हज़रत अली (रज़ि.) के लिए एक फ़हमाइशे रिसालत	478
नारा-ए-रिसालत वग़ैरह की तर्दीद	393	कुन्नियत अबुल कासिम के बारे में	482
ख़ुसूसियाते उम्मत मुहम्मदिया	396	राय और क़्यास की मज़म्मत का बयान	483
हज़रत हातिब (रह.) का ख़त बनाम मुश्किने मक्का	402	किसरा व कैसर के बारे में पेशागोई	485
तारीबे तब्लीग़ का बयान	404	पादरियों का एक ख़याले बातिल	487
अबू राफ़ेअ यहूदी के क़त्ल का वाकिआ	413	मुजाहिदीन को जो बरकात हासिल हों उनका बयान	490
क़अब बिन अशरफ़ यहूदी के क़त्ल का वाकिआ	418	हज़रत ज़ैद बिन अव्वाम (रज़ि.) का तफ़्फ़रा	493
हदीषे मुआज़ के फ़वाइद का बयान	422	हिक़मते जिहाद का तफ़्फ़रीली बयान	520
हाद़ा जंगे उहद का बयान	425	सब चीज़ें हादिष और मख़लूक़ हैं	547
हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) का वाकिआ-ए-शहादत	431	अंबिया क़िराम का एक मुत्तफ़्फ़ अक़ीदा	547
शीओ की एक ग़लत बात की तर्दीद	433	अल्लाह की रहमत उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है	547
मुश्किने से फ़िदया की उम्मीयत	434	अरबों की एक जहालत का बयान	550
ज़िम्पियों के हुक्म का बयान	435	मुन्किरीने हदीष को जवाबात	553
वाकिआ क़िर्नास पर एक तफ़्फ़ील	436	हवा भी अल्लाह की एक मख़लूक़ है	556
इब्ने सय्याद का ज़िक़्र	440	फ़रिश्ते अजसामे लतीफ़ हैं	556
मक्का शरीफ़ में जायदादे नबवी का बयान	441	वाकिआ-ए-मेअराज की कुछ तफ़्फ़ीलात	560
ग़रीबों को बहरहाल मुक़द्दम रखना	442	क़िरआते सबआ पर एक इशारा	566
मुजाहिदीन की फ़ेहरिस्त तैयार करना	443	फ़रिश्तों का वजूद बरहक़ है	568
एक मुजाहिद का दोज़ख़ी होना	444	जहरी नमाज़ों में आमीन बिलजहर का बयान	569
फ़ारसी की एक वजहे तस्मीया	450	तस्वीरसाजी पर एक हदीष	570
माले ग़नीमत की चोरी की सज़ा का बयान	452	वाकिआ-ए-ताइफ़ का बयान	573

## फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफा नं.	मज़मून	सफा नं.
शबे में राज में दीदारे इलाही का बयान	575	हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) का कुछ जिक्र खैर	657
जन्नत अब मौजूद है मुअतज़िला की तर्दीद	577	मुन्किरीने हदीष व ताम्पिर क़अबा व बैतुल मक़दिस	658
अन्नती ने मतों का वजूद बरहक़ है	580	दुरूद से क्या मुराद है	661
मुन्किरीने हदीष की तर्दीद	588	हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के एक सवाल की तशरीह	662
दोज़ख़ में एक बेअमल वाइज़ का हाल	590	हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) के एक क़ौल की तशरीह	665
शैतान का वजूद बरहक़ है	591	कुछ अल्फ़ज़े कुर्आनी की तशरीह	665
जादू बरहक़ है	592	मुहदीषीने किराम की एक ख़ूबी का बयान	670
सुबह सवेरे खड़ा होना	593	हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर कुछ तफ़्सीलात	675
वसाविसे शैतानी का बयान	595	फ़िज़ाइनियों पर अज़ाबात की तफ़्सील	681
मुख़्तलिफ़ हरक़ाते शैतान का बयान	599	हज़रत ख़िज़र (अलैहिस्सलाम) की तफ़्सीलात	682
फ़ज़ीलते कलिमा-ए-तौहीद	602	हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और	
नेचरियों और दहरियों की तर्दीद	604	मलिकुल मौत का एक वाक़िआ	691
दो हदीषों में ततबीक़	611	ख़्वातीन जिनको क़ामिल कहा गया है	693
ग़लत तर्जुमे का नमूना	614	हज़रत यूनस (अलैहिस्सलाम) को जुन्नून क्यों कहा गया	695
किताबुल अंबिया का आगाज़	616	हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का एक मोअज़ज़ा	698
लफ़्ज़े अंबिया की तहकीक़	617	हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के नाम पर एक शूब क़िस्सा	701
चन्द अल्फ़ज़े कुर्आनी की तशरीह	618	एक आयत की तफ़्सीर	702
हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) का हुलिया	620	हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के गाँव नासरह का बयान	708
आग निकलने की पेशगोई	622	हालते शीरख़वारी में बोलने वाले बच्चे	712
दा'वते अंबिया का बयान	625	इन्ज़ील में बशारते मुहम्मदी का बयान	716
एक संगीन जुर्म का बयान	625	कुछ मुर्तदीन का ज़िक्र	719
रूहें आलमे अज़ल में	626	अक़ीदा नुज़ूले-ईसा (अलैहिस्सलाम) उम्मत का	
क़ौम याजूज व माजूज के कुछ हालात	636	इज्तिमाई अक़ीदा है	720
वफ़ाते नबवी के बाद कुछ मुर्तदों का बयान	641	आज के जुम्हूरी दौर पर एक इशारा	722
बुजुग़ाने दीन के मुताल्लिक़ कुछ झूठे क़िस्से	641	मुसलमानों के मौजूदा इन्तिशार पर एक औसू	723
मुन्किरीने हदीष के लिए एक ऐतराज़ का जवाब	644	अज़ान की ख़ूबियाँ	723
हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का ख़तना करना	644	मेहंदी के ख़िज़ाब का बयान	726
क़ब्बाते इब्राहीमी की तशरीह	646	फ़ितरते इन्सानि पर एक इशारा	729
गिरगिट नामी ज़हरीले जानवर का बयान	647		
चश्म-ए-ज़मज़म के जुहर का बयान	649		

## पेश लफ़्ज़

सहीह बुख़ारी का दीबाचा लिखने की सआदत एक ख़ज़ाना पाने से कम क्या हो सकती है? इसकी अहमियत वही जान सकते हैं जो इस अज़ीमुशान किताब के सहीह मक़ाम से आशना हैं। जमाअत ने मुझ नाचीज़ से इस बात का तकाज़ा किया कि सहीह बुख़ारी हिन्दी तर्जुमा चौथी जिल्द का पेश लफ़्ज़ मैं तहरीर करूँ, इस काम के लिये ज़बान व क़लम ने कई मर्तबा साथ देने से इन्कार किया। आख़िर ये चन्द अल्फ़ाज़ आपकी ख़िदमत में पेश हैं।

ये बात हर आदमी को याद रखनी चाहिये कि कुआँन व हदीष को समझने के लिये सरसरी मुतालआ काफ़ी नहीं है। जो लोग महज़ सरसरी मुतालआ करके इन पाकीज़ा इलूम के माहिर बनना चाहते हैं वो एक ख़तरनाक ग़लती में मुब्तला हैं। कुआँन व हदीष को गहरी नज़र से बार-बार मुतालआ करने की ज़रूरत है। इसके बाद भी अगर कोई मसला समझ में न आए तो इलमा-ए-हक़ से रुजूअ करना चाहिये। ये कोशिश जद्दोज़हद करना हर कलिमा-गो के लिये ज़रूरी है। दीन मा'लूम करने और अमल करने के लिये ही अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया है। जो लोग इस रास्ते में कोशिश करेंगे इशाअल्लाह वो कामयाब होंगे और हिदायत-याफ़ता गिरोह में शामिल होंगे।

सहीह बुख़ारी के हिन्दी तर्जुमे की चौथी जिल्द अल्लाह के फ़ज़लो-करम से मुकम्मल होकर आपके हाथों में है। किताब शाए होने के बाद आपके हिस्से का काम बाक़ी रह जाता है या'नी इसकी इशाअत व फ़रोख़्त में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना ताकि सहीह बुख़ारी हिन्दी की आख़री जिल्द शाए होने से पहले ही स्टॉक ख़त्म हो जाए और माँग बाक़ी रह जाए। लाखों की ता'दाद में राजस्थान में जमाअत के अफ़राद हैं और किताबें सिर्फ़ 2000 हैं। एक ज़िन्दा क़ौम और जमाअत के लिये चन्द दिनों की बात है। तहिय्या कर लीजिये कि जमाअत का हर घर सहीह बुख़ारी से ख़ाली न रहेगा। जैसे कुआँन हर घर की ज़ीनत है, उसी तरह कुआँन के बाद सबसे सहीह किताब बुख़ारी शरीफ़ भी हर घर की ज़रूरत है। शादी के मौक़े पर अपने हर नौनिहाल को सहीह बुख़ारी का नुस्खा तोहफ़ा दें; अपने अज़ीज़ दोस्तों को तोहफ़तन किताब भिजवाई जाए; मसाजिद में दर्से बुख़ारी का मुसलसल इन्तज़ाम किया जाए।

मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि कामिल यक़ीन है कि इन तमाम उमूर में आपका तआवुन हस्बे-दस्तूर हासिल रहेगा। अल्लाह तआला हर मुसलमान मर्द व औरत को कुआँन पाक और अह्दादीषे-सहीहा का मुतालआ करने और ग़ौरो-तदब्बुर करने के साथ उनको समझने और बाद अज़ां अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए, आमीन!! ख़ैर-अन्देश व तालिबे-दुआ,

डॉ. गुलाम रब्बानी

जनरल सेक्रेटरी, मारवाड़ मुस्लिम एज्युकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसायटी, जोधपुर

# ता'प्पुरात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम.

सारी ता'रीफें, बड़ाइयाँ, हम्दो-प्रना अल्लाह तबारक व तआला ही के लिये है जो हमारा खालिक, मालिक, रब और इलाह है। बेशुमार दरूदो-सलाम नाज़िल हो अल्लाह के तमाम नबियों और रसूलों पर, खुसूसी तौर पर अल्लाह के आखरी रसूल, नबी-ए-रहमत हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर बेशुमार दरूदो-सलाम नाज़िल हों।

अल्लाह पाक की यह सुन्नत है कि अल्लाह उसको हिदायत देता है जिसमें हिदायत के लिये तड़प व प्यास होती है। जिसके अन्दर यह तड़प और प्यास न हो उसे अल्लाह तआला हर्गिज़ हिदायत नहीं देता। पूरी इन्सानी तारीख़ और नबियों की दा'वत इस पर गवाह है। कुआन मजीद की बेशुमार आयतें इस हकीकत को बयान करती हैं। अल्लाह तआला ऐसा कभी नहीं करता कि मछली चाहने वाले को साँप दे दे और साँप पसन्द करने वाले को मछली दे दे। जब कोई बन्दा ये चाहता है कि उसे हिदायत मिले तो अल्लाह तआला उसे अपने रास्ते पर लगाता है और लगाकर छोड़ नहीं देता बल्कि उसे बराबर अपनी ओर खींचता और आगे बढ़ाता रहता है। जिसके अन्दर हिदायत की तलब नहीं होती, अल्लाह उससे बेपरवाह हो जाता है। उसे छोड़ देता है, जिस गुमराही के रास्ते पर चलना चाहे, चले और जिस गड्ढे में गिरना चाहे गिरे। अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि अल्लाह ने हमको मुसलमान बनाया, हम पर अपने फ़ज़लो-करम की बारिश की कि हमको हिदायत के रास्ते पर लगा दिया।

अल्लाह तआला ने हमको हिदायत के रास्ते पर बने रहने के लिये पूरी ज़िन्दगी दो चीज़ों से मज़बूती से चिमटे रहने की तल्क़ीन की है वो है, अल्लाह की किताब कुआन मजीद और अल्लाह के आख़री रसूल (ﷺ) की सुन्नत जो कि अह्लादीष की किताबों में मुकम्मल तौर पर महफूज़ हैं। हदीष की किताबों में सबसे अफ़ज़ल किताब पूरी उम्मत के नज़दीक इमाम बुखारी (रह.) की 'अल जामेउलमुहम्मिह अल बुखारी' है। इस अज़ीम किताब के यूँ तो कई तर्जुमे शाए हुए हैं जिनमें मौलाना दाऊद 'राज़' स़ाहब के तीस पारे इस मुल्क में बहुत मशहूर हुए। यह यकीनी तौर पर इल्म, हिदायत व नूर का खज़ाना है। आठ जिल्दों वाले इस उर्दू तर्जुमे को हिन्दी ज़बान में शाए करने का अज़ीम काम जमीअत अहले हदीष जोधपुर कर रही है।

अल्लाह पाक हमें इस कारे-ख़ैर की क़दर करने और इस हिदायत के ज़रिये को दिल से लगाने की तौफ़ीक़ बख़शे। अल्लाह से दुआ है कि इस अज़ीम किताब से हिन्दी जानने वाले लोग ज़्यादा से ज़्यादा फ़ैज़याब हों और जो भी हज़रत इस नेक काम में जुड़े हुए हैं अल्लाह पाक उन सब के लिये तोशा-ए-आख़िरत बनाए, आमीन!!

ख़ैर-अन्देश व तालिबे-दुआ,

डॉ. मुहम्मद अब्दुल हई (जय नारायण व्यास यूनिवर्सिटी जोधपुर)

## ता'ष्युरात

सरवरे-अंबिया मुहम्मद मुस्ताफा (ﷺ) को अल्लाह तआला ने दुनिया में अपना आखिरी पैगम्बर बनाकर मबऊस फ़रमाया और आप (ﷺ) ही पर आसमानी हिदायतों का सिलसिला ख़त्म करके यह ऐलान कर दिया गया कि अब दीन मुकम्मल हो गया, बन्दों पर अल्लाह तआला की नेअमत पूरी हो गई और अब क़यामत तक के लिये इस्लाम ही है जिसे अल्लाह तआला ने अपने दीन की हैसियत से पसन्द फ़र्मा लिया है। कुआन करीम तो कादिरे-मुतलक़ का कलाम है उसके हुस्नो-ख़ूबी को अल्फ़ाज़ में बयान ही नहीं किया जा सकता है यह तो पढ़ने और सुनने वाले के दिल में सीधा पैवस्त हुआ चला जाता है और 'अलहुदा' बन्दगाने-ख़ुदा की हिदायत का सामान बन जाता है। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुआनी हिदायतो-तालीमात की अपने अल्फ़ाज़ में जिस ख़ूबसूरती के साथ तशरीह व तौज़ीह फ़र्माई है, वो भी किसी और इन्सान के बस की बात नहीं। 'हदीष की किताबों में' हज़ारों सफ़हात पर आप (ﷺ) के अक़वाल हीरे मोतियों की तरह बिखरे हुए हैं, जिनका एक-एक लफ़्ज़ अपनी जगह ख़ूबसूरती से जड़ा हुआ नज़र आता है। अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को अपनी बात इन्तिहाई फ़सीह व बलीग अन्दाज़ में कहने का ख़ास मलका अता फ़रमाया था। बहुत मुखासर जुम्लों व अल्फ़ाज़ में आप (ﷺ) ने अपनी हिदायत व तालीमात को इस तरह से समोया है जैसे कोजे में दरिया को बन्द कर दिया गया हो। हदीषों में एक क़िस्म जामेअ के मर्तेबे को पहुँची हुई होती है जिनमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के अक़वाल कमाल दर्जे को पहुँचे हुए होते हैं और अल-जामेउस्सहीह लिल बुखारी में तो यह कमाल और भी ज़्यादा नुमाया है और यहाँ पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़र्मुदाद अक़वाल के बिखरे हुए मोतियों को चुन-चुनकर एक हार की शक़ल में पिरो देने वाले हज़रत मुहम्मद इस्माईल बुखारी (रह.) ही का तज़क़रा किया जा रहा है।

क्रारिने-किराम! हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का तआरुफ़ मुहताजे-कलम नहीं है। मुहताजे-कलम लफ़्ज़ यू काम में लेने की ज़रूरत की है कि आसमान वाले ने जिनके लिये अपने कलामे-मुबीन में 'वरफ़अना लका ज़िक़रक' का ऐजाज़ बख़्शा, उस पाक व मुक़र्रमो-मुहतरम हस्ती का ज़िक़र करने वाले क्या फिर किसी साहिबे-क़लम से मुतअरिफ़ करवाए जाने के मुहताज रहेंगे? यक्कीनन नहीं।

साहिबे-किताब ने अल्लाह सुब्हानहू तआला की मेहरबानी के साथ लफ़्ज़ 'किताबो-सुन्नत' को भी सही मफ़हूम दिया। 'किताब' तो चूँकि हुफ़फ़ाजे-किराम के सीनों में और अलग-अलग दूसरी शक़लों में मौजूद थी, मगर 'सुन्नत' लफ़्ज़ अपने सही मअनो-मफ़हूम के लिहाज़ से 'अल-जामेउस्सहीह लिल बुखारी' के बाद ही लोगों की नज़र में आया। 'हदीष की किताबों में' अगर कहीं यह लाइन पढ़ने को हमें मिलती है तो पढ़ने वाले का ध्यान सबसे पहले हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की ओर चला जाता है और नज़र जामेउस्सहीह बुखारी पर जाकर ठहर जाती है **गोया हदीष की किताबों के नाम का मजमूआ सहीह बुखारी है।**

साहिबे किताब ने अपने हमज़ेमाना व आने वाले ज़माने के उलम-ए-हदीष व तुलब-ए-हदीष के लिये एक ऐसा मैयार क़ायम कर दिया कि उस मैयार को इख़्तियार करने के बाद ही 'जामेअ या सहीह' की ख़ुसूसियात साहिबे-किताब के साथ जुड़ सकती थी। जिस तरह अक़ादे की दुरुस्तगी लाजमी है कि उसके बग़ैर इन्सान न तो अपने मअबूदे-हकीकी की सही मअरिफ़त हासिल कर सकता है न अपने मक़सदे वजूद की और न दुनिया में अपने क़िरदार और चाहे गए तर्ज़े-अमल से वाक़िफ़ो-

आगाह हो सकता है ठीक इसी तरह अमल की दुरुस्तगी भी नागुज़ीर है कि उसके बाँग़र अक़ीदे की दुरुस्तगी बेमअनी बन कर रह जाती है। साहिबे-किताब का अपनी ज़ामेअ का इब्तिदाई बाब ही उनकी दीनी बसीरत को उम्मत के सामने वाज़ेह कर देता है। 'सारे आमाल का दारोमदार नियत पर है।' यह उम्मत-मुस्लिमा को उसके ज़रिये किये जाने वाले सारे अमली तौर-तरीकों की बेहद साफ़ो शफ़ाफ़ और लिल्लाहियत के ज़ामेअ ही में रखने का दर्स देता है। ठीक इसी तरह, अपनी ज़ामेअ की इख़ितामी हदीष, इंसानी अमली ज़िन्दगी के हर छोटे बड़े लम्हात को ज़ोर-निगाह रखने का दर्स देती है। अल्लाह तआला के मोमिन बन्दे को अपने किसी भी अमल को छोटा या हक़ीर समझकर तर्क नहीं करना चाहिये।

'सुब्हानल्लाहि वबिहमिद्ही, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम।' ज़बान पर हल्के मगर मीज़ान में बहुत भारी हैं। एक मोमिन अज़कार के तौर पर अपनी सुबहो-शाम की ज़िन्दगी में अगर नबी-ए-रहमत (ﷺ) की इस अमली ज़िन्दगी को उतारेगा तो यकीनन, वो मैदाने-महशर में रूस्वा, नामुराद व तबाहो-बर्बाद नहीं होगा, उसके यह छोटे छोटे अमल उसको ज़न्नत में ले जाने के बाइस बनेंगे। ईशाअल्लाह!

इमाम बुखारी (रह.) की यह दीनी कोशिश जो कि अपने इब्तिदाई दौर ही से सही इस्लाम को समझने का एक अमली मैयार बन गई, बाद के दौर के फ़िल्लों का सामना उलम-ए-रब्बानी बड़े आराम से कर सकें, ऐसे इन्तज़ामात अल्लाह रब्बुल आलमीन ने अपने उस बन्दे से करवाकर इस्लाम की बक्रा व मुहाफ़िज़त व अपने नबी-ए-बरहक़ के लिये इस्तेमाल 'वरफ़अना लका ज़िकरक' के ऐजाज़ को मुस्तहक़म व क़ायामत की सुबह तक के लिये क़ायमो-दायम फ़र्मा दिया।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की दीनी कोशिशों में से सबसे उम्दा व आ'ला शाहकार 'अल ज़ामेअस्सहीह बुखारी' के हिन्दी तर्जुमा हूबहू अरबी मतन की सैटिंग के साथ जब किये जाने का मैंने सुना तो दिल बाग़-बाग़ हो गया। अल्लाह इस कारे-ख़ैर में लगे हुए सभी हज़रात की खुसूसन अब्दुल्लाह फारूक साहब गौरी व भाई सलीम खिलजी की उम्र दराज़ करे ताकि वो अल्लाह के इस दीन की ख़िदमात को यूँ ही अन्जाम देते रहें।

अपनी बात को तिमिज़ी व अब्दाऊद में मन्कूल एक हदीष पर ख़त्म करना चाहूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह उस बन्दे को शादाब रखे जिसने मेरी बात सुनी, उसे याद रखा और उसे (सही तौर पर लोगों तक) पहुंचाया, क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि समझ और फ़हम की बात का हामिल ऐसे शख्स तक बात पहुंचा देता है जो उससे कहीं ज़्यादा फ़हम रखता है।' रसूलुल्लाह (ﷺ) के इन दुआइया कलिमात के अगर इमाम बुखारी मुस्तहक़ नहीं हैं तो फिर कौन हो सकता है? अल्लाह रब्बुल आलमीन उनके मरातिब को बुलन्द करे, इल्मे-दीन व इशाअते दीन की उनकी कोशिशों को कुबूल फ़र्माए और उन्हें करवट करवट चैन अता फ़रमाए। आमीन!

ऐ अल्लाह! तमाम मोमिनीन को अज़ाबे-क़ज़ व अज़ाबे-जहन्नम से महफूज़ फ़र्मा और तेरे दीन के हमें सच्चे व पक्के ख़िदमतगुज़ार बन्दे बना। आमीन!

अशरफ़ अली ख़ान

पब्लिशर, माहनामा निदा-ए-हक़,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## दसवां पारा

बाब 5 : मुश्तरक (संयुक्त) चीजों की इस्साफ़ के साथ ठीक क़ीमत लगाकर उसे शरीकों में बांटना

٥- بَابُ تَقْوِيمِ الْأَشْيَاءِ بَيْنَ الشُّرَكَاءِ بِقِيَمَةِ عَدَلٍ

बाब के ज़ेल हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, क़ाल इब्नु बत्ताल ला ख़िलाफ़ बैनल इलमाइ अन्न किस्मिल अरूज़ि व साइरिल अम्तिअति बअदत्तबबीमि जायज़ुन व इन्नमा इख़्तलफू फ़ी किस्मतिहा बिगैरि तक्वीमिन फअजाज़हुल अवज़रू इज़ा कान अला सबीलित्तराज़ी (फ़तहूल बारी) या'नी सारे सामान व अस्बाब का जब ठीक तौर पर अंदाज़ा कर लिया जाए तो उसकी तक्सीम तमाम इलमा के नज़दीक जाइज़ है और उसमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। हाँ बग़ैर अंदाज़े किये तक्सीम में इख़्तिलाफ़ है। जब बाहमी तौर पर किसी को ए'तिराज़ न हो और सब राजी हों तो अक़्बर के नज़दीक ये भी जाइज़ है।

किताबुशिकत: के इस बाब से ये दसवाँ पारा शुरू हो रहा है जिसमें शिकत से मुता'ल्लिक बकाया मसाले बयान किये जा रहे हैं। दुआ है कि अल्लाह पाक क़लम को लज़िश से बचाए और ख़ैरियत के साथ इस पारे को भी तक्मील कराए आमीन।

2491. हमसे इमरान बिन मैसरा अबुल हसन बसरी ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुखितयानी ने, कहा उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुश्तरक (साझे के) गुलाम में अपना हिस्सा आज़ाद कर दे और उसके पास सारे गुलाम की क़ीमत के मुवाफ़िक़ माल हो तो वो पूरा आज़ाद हो जाएगा। अगर इतना माल न हो तो बस जितना हिस्सा उसका था इतना ही आज़ाद हुआ। अय्यूब ने कहा किये मुझे मा'लूम नहीं कि रिवायत का ये आख़िरी हिस्सा गुलाम का वही हिस्सा आज़ाद होगा जो उसने आज़ाद किया है। ये नाफ़ेअ का अपना क़ौल है या नबी करीम (ﷺ) की हदीष में दाख़िल है। (दीगर मक़ाम: 2503, 2522, 2523, 2524, 2525, 3521, )

٢٤٩١- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شَيْئًا لَهُ مِنْ عَبْدٍ - أَوْ شِرْكَاءَ، أَوْ قَالَ نَمِيئًا - وَكَانَ لَهُ مَا يَبْلُغُ ثَمَنَهُ بِقِيَمَةِ الْعَدْلِ فَهُوَ عَقِيقٌ، وَإِلَّا فَقَدْ عَقَى مِنْهُ مَا عَقَى)). وَقَالَ: لَا أَذَرِي قَوْلَهُ: ((عَقَى مِنْهُ مَا عَقَى)). قَوْلٌ مِنْ نَافِعٍ، أَوْ فِي الْحَدِيثِ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. [أطراف: ٢٥٠٣, ٢٥٢١, ٢٥٢٢, ٢٥٢٣, ٢٥٢٤, ٢٥٢٥, ٢٥٢٦].

**तशरीह:** या'नी सारे गुलाम की हालत में क़ीमत लगाएँगे। या'नी जो हिस्सा आज़ाद हुआ अगर वो भी आज़ाद न होता तो उसकी क़ीमत क्या होती अगर इतना माल न हो तो बस जितना हिस्सा उसका था इतना ही आज़ाद हुआ।

ऐनी ने इस मसले में चौदह मज़हब बयान किये हैं। लेकिन इमाम अहमद और शाफ़िई और इस्हाक़ ने इसी हदीष के

मुवाफिक हुक्म दिया है और हजरत इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं कि ऐसी सूरत में दूसरे शरीक को इख्तियार रहेगा कि चाहे तो अपना हिस्सा भी आज़ाद कर दे और चाहे तो गुलाम से मेहनत मशक़त कराकर अपने हिस्से के दाम वसूल करे। ख़्वाह अगर आज़ाद करने वाला मालदार हो तो अपने हिस्से की क़ीमत उससे भर ले। पहली और दूसरी सूरत में गुलाम का तरका दोनों को मिलेगा और तीसरी सूरत में सिर्फ़ आज़ाद करने वाले को। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है कि गुलाम की ठीक-ठीक क़ीमत लगाकर उसके तमाम मालिकों पर उसे तक्सीम कर दिया जाए।

2492. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको सईद बिन अबी उरुबा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्हें नज़र बिन अनस ने, उन्हें बशीर बिन नहीक ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स मुश्तरक गुलाम में से अपना हिस्सा आज़ाद कर दे तो उसके लिये ज़रूरी है कि अपने माल से गुलाम को पूरी आज़ादी दिला दे। लेकिन अगर उसके पास इतना माल नहीं है तो इंसान के साथ गुलाम की क़ीमत लगाई जाए। फिर गुलाम से कहा जाए कि (अपनी आज़ादी की) कोशिश में वो बाक़ी हिस्से की क़ीमत ख़ुद कमाकर अदा कर ले। लेकिन गुलाम पर उसके लिये कोई दबाव न डाला जाए। (दीगर मक़ाम: 2504, 2626, 2527)

٢٤٩٢- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عُرْوَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهْيَكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ اشْتَقَّ شَقِيقًا مِنْ مَمْلُوكِهِ فَعَلَيْهِ خُلَاصَتُهُ فِي مَالِهِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ قَوْمَ الْمَمْلُوكِ قِيمَةً عَدْلًا، ثُمَّ اسْتَسْعَى غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ)).

[أطرافه في: ٢٥٠٤, ٢٥٢٦, ٢٥٢٧.]

**तशरीह:** या'नी ऐसी तकलीफ़ न दें जिसका वो तहम्मूल (बर्दाश्त) न कर सके जब वो बाक़ी हिस्सों की क़ीमत अदा कर देगा तो आज़ाद हो जाएगा। इब्ने बत्तल ने कहा शराका में तक्सीम करते वक़्त उनकी क़तअ-नज़ाअ के लिये कुआ डालना दुरुस्त है और तमाम फुक़हा उसके काइल हैं। सिर्फ़ कूफ़ा के कुछ फुक़हा ने उससे इन्कार किया है और कहा है कि कुआ अज़लाम की तरह है जिसकी मुमानअत कुआन में वारिद है। हजरत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने भी उसको जाइज़ रखा है। दूसरी सहीह हदीष में है कि आहज़रत (ﷺ) सफ़र में जाते वक़्त अपनी बीवियों के लिये कुआ डालते, जिसका नाम उसमें निकलता उसको साथ ले जाते आजकल तो कुआ इस क़दर आम है कि सफ़र के लिये भी हाजियों के नाम कुआ-अंदाज़ी से छूटे जाते हैं।

## बाब 6 : तक्सीम में कुआ डालकर हिस्से कर लेना

2493. हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़करिया ने, कहा मैंने आमिर बिन शुअबा से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की हुदूद पर कायम रहने वाले और उसमें घुस जाने वाले (या'नी ख़िलाफ़ करने वाले) की मिम्राल ऐसे लोगों की सी है जिन्होंने एक क़श्ती के सिलसिले में कुआ डाला। जिसके नतीजे में कुछ लोगों को क़श्ती के ऊपर का हिस्सा मिला और कुछ को नीचे का। पस जो लोग नीचे वाले

## ٦- بَابُ هَلْ يُقْرَعُ فِي الْقِسْمَةِ؟ وَالْإِسْتِهَامُ فِيهِ

٢٤٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَاءُ قَالَ: سَمِعْتُ غَامِرًا يَقُولُ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الْقَائِمِ عَلَى خُدُودِ اللَّهِ وَالْوَأَعِ فِيهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اسْتَهَمُوا عَلَى سَفِينَةٍ فَأَصَابَ بَعْضُهُمْ



थे, उन्हें (दरिया से) पानी लेने के लिये ऊपर वालों के ऊपर से गुजरना पड़ता। उन्होंने सोचा कि क्यों न हम अपने ही हिस्से में एक सूराख कर लें ताकि ऊपर वालों को हम कोई तकलीफ न दें। अब अगर ऊपर वाले भी नीचे वालों को मनमानी करने देंगे तो कश्ती वाले तमाम लोग हलाक हो जाएंगे और अगर ऊपर वाले नीचे वालों का हाथ पकड़ लें तो ये खुद भी बचेंगे और सारी कश्ती भी बच जाएगी। (दीगर मक़ाम : 2686)

أَغْلَاهَا وَتَغْضُفُهُمْ أَسْفَلَهَا، فَكَانَ الَّذِينَ فِي  
أَسْفَلِهَا إِذَا اسْتَقَوْا مِنَ الْمَاءِ مَرُّوا عَلَى  
مَنْ فَوْقَهُمْ، فَقَالُوا: لَوْ أَنَا خَرَقْنَا فِي نَصِيبِنَا  
خَرَقًا وَلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا، لَإِنْ يَتْرُكُوهُمْ  
وَمَا أَرَادُوا هَلَكُوا جَمِيعًا، وَإِنْ أَخَذُوا  
عَلَى أَيْدِيهِمْ نَجَّوْا وَنَجَّوْا جَمِيعًا)).

[طبرانی : 2686]

**तशरीह :** इस हदीष में जहाज़-कश्ती में जगह हासिल करने के लिये कुर्आ-अंदाज़ी का ज़िक्र किया गया। इसी से मक्क़सदे बाब प्राबित हुआ है। वैसे ये हदीष बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल (आधारित) है। ख़ास तौर पर नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना क्यों ज़रूरी है? इसी सवाल पर इसमें रोशनी डाली गई है कि दुनिया की मिश्राल एक कश्ती की सी है, जिसमें सवार होने वाले अफ़राद में से एक फ़र्द को ग़लती जो कश्ती के बारे में हो सारे अफ़राद ही को ले डूब सकती है। कुर्आन मजीद में यही मज़मून इस तौर पर बयान हुआ। वत्तक़ फ़िल्म तल् ला तुस्लीबन्नल्लज़ीन ज़लमू मिनकुम ख़ास्सतन (अल् अन्फ़ाल : 25) या 'नी फ़िल्ने से बचने की कोशिश करो जो अगर वकूअ (अस्तित्व) में आ गया तो वो ख़ास ज़ालिमों ही पर नहीं पड़ेगा बल्कि उनके साथ बहुत से बेगुनाह भी पिस जाएंगे। जैसे हदीषे हाज़ा में बतौर मिश्राल नीचे वालों का ज़िक्र किया गया कि अगर ऊपर वाले नीचे वालों को कश्ती के नीचे सूराख करने से नहीं रोकेंगे तो नतीजा ये होगा कि नीचे वाला हिस्सा पानी से भर जाएगा और नीचे वालों के साथ ऊपर वाले भी डूबेंगे।

इशदि बारी तअ़ाला है, वल तकुम मिनकुम उम्मतुय यदरून इलल् ख़ैर व यामुरूना बिल मअरूफ़ि व यन्हौन अनिल् मुन्कर (आले इमरान : 104) या 'नी ऐ मुसलमानों ! तुममें से एक जमाअत ऐसी मुकरर होनी चाहिये जो लोगों को भलाई का हुक्म करती रहे और बुराइयों से रोकती रहे। इस आयत के आधार पर तमाम अहले इस्लाम पर फ़र्ज़ है कि अमर बिल मअरूफ़ और नही अनिल् मुन्कर के लिये एक ख़ास जमाअत मुकरर करें।

अल्हम्दुलिल्लाह हुकुमते सऊदी अरबिया में ये महकमा इसी नाम से कायम है और पूरी मम्लकत में इसकी शाखें हैं जो ये फ़र्ज़ अंजाम दे रही हैं। ज़रूरत है कि इज्तिमाई तौर पर हर जगह मुसलमान ऐसे इदारे कायम करके अवाम की फ़लाह व बहबूद का काम अंजाम दिया करें।

ख़ुलासा ये कि तक्सीम के लिये कुर्आ-अंदाज़ी करना, एक बेहतरीन तरीका है जिसमें शुरुका में से किसी को भी इंकार की गुंजाइश नहीं रह सकती। अल्लामा कस्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, व मुताबक़त हदीषि लिज्जुमति ग़ैर ख़फ़िय्यतिन व फ़ीहि वुजूबुस्सबि अला अजल जारि इज़ा ख़शिय वुकूअ मा हुव अशह जररन व अन्नहू लैस लिसाहिबिस्सुफ़लि अय्युहदिष अला साहिबिलउलुव्वि मा यज़ुरू बि वअन्नहू अन अहदष अलैहि जररून अल्जमहू इस्लाहहू व अन्न लिस्साहिबिल उलुव्वि मनअहू मिनज़ररि व फ़ीहि जवाज़ु किस्मतिल इज़ारिल मुतफ़ावति बिल कज़अति क़ाल इब्नु बत्ताल वल उलमाउ मुत्तफ़िकून अलल्कौलि बिल्कुज़अति इल्लल कूफ़ियून फ़इन्नहू क़ालू ला मअना लहा लिअन्नहा तशब्बहल अज़्लामल्लती नहल्लाहु अन्हा. (कस्तलानी) हदीष की बाब से मुताबक़त ज़ाहिर है और इससे पड़ोसी की तकलीफ़ पर सन्न करना बतौर वुजूब प्राबित हुआ, जबकि सन्न न करने की मूरत में इससे भी किसी बड़ी मुसीबत के आने का ख़तरा है और ये भी प्राबित हुआ कि नीचे वाले के लिये जाइज़ नहीं कि ऊपर वाले के लिये कोई ज़रर का काम करे। अगर वो ऐसा कर बैठे तो उसको उसकी दुरुस्तगी करना वाजिब है और ऊपर वाले को हक़ है कि वो ऐसे ज़रर के काम से उसको रोके और सामान व अस्बाबे मुतफ़रिका (संयुक्त सम्पत्ति) का कुर्आ-अंदाज़ी से तक्सीम करना भी प्राबित हुआ। इब्ने बत्ताल ने कहा उलमा का कुर्आ के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ है सिवाय अहले कूफ़ा के।

वो कहते हैं कि कुआँ-अंदाज़ी उन तीनों के मुशाबे (समान) ही है जो कुफ़ारे मक्का बतौर फ़ाल निकाला करते थे। इसलिये ये जाइज़ नहीं हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने अज़्लाम से मना किया है। मुतर्जिम कहता है कि अहले कूफ़ा का ये क्रयास बातिल है। अज़्लाम और कुआँ-अंदाज़ी में बहुत फ़र्क है और जब कुआँ का धुबूत सहीह हदीष से मौजूद है तो उसको अज़्लाम से तश्बीह (उपमा) देना सहीह नहीं है।

## बाब 7 : यतीम का दूसरे वारिषों के साथ शरीक करना

## ۷- بَابُ شَرِكَةِ الْيَتِيمِ وَأَهْلِ السَّمَرَاتِ

इत्तफ़कू अला अन्नहू ला तजूज़ुलमुशारकतु फ़ी मालिल्यतीमि इल्ला इन कान लिल्यतीमि फ़ी ज़ालिक मस्लहतुन राज़िहतुन (फ़तह) या'नी इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि यतीम के माल में शरिफ़त करना जाइज़ नहीं। हाँ, अगर यतीम के मफ़ाद (लाभ) के लिये कोई मस्लिहत राज़िह (अच्छी नीति) हो तो जाइज़ है। अल्लाह ने फ़र्माया कि जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खा जाते हैं वो अपने पेट में जहन्नम की आग भर रहे हैं। लिहाज़ा मामला बहुत ही नाजुक है।

2494. हमसे अब्दुल अजीज़ बिन अब्दुल्लाह आमिरी उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इम्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कि मुझे इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा था (दूसरी सनद) और लैष ने बयान किया कि मुझे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी कि उन्होंने आइशा (रज़ि.) से (सूरह निसा में) इस आयत के बारे में पूछा, अगर तुमको यतीमों में इस्माफ़न करने का डर हो तो जो औरतें पसन्द आएँ दो-दो, तीन-तीन, चार-चार निकाह कर लो। उन्होंने कहा, मेरे भांजे! ये आयत उस यतीम लड़की के बारे में है जो अपने वली (मुहाफ़िज़ रिश्तेदार जैसे चचेरा भाई, फूफ़ीज़ाद या मामूज़ाद भाई) की परवरिश में हो और तरके के माल में उसकी साझी हो और वो उसकी मालदारी और ख़ूबसूरती पर फ़रेफ़ता (आकर्षित) होकर उससे निकाह कर लेना चाहता हो लेकिन पूरा महर इस्माफ़ से जितना उसको और जगह मिलता, वो अदा न करे, तो उससे मना कर दिया गया कि वो ऐसी यतीम लड़कियों से निकाह करे। अल्बत्ता उनके साथ उनके वली इस्माफ़ कर सकें और उनकी हस्बे हैषियत बेहतर से बेहतर तर्ज़े अमल महर के बारे में इख़्तियार करें (तो इस सूत्र में निकाह करने की इजाज़त है)। और उनसे ये भी कह दिया गया कि उनके सिवा जो भी औरत उन्हें पसन्द हो उनसे वो निकाह कर सकते हैं। इर्वा बिन जुबैर ने कहा कि आइशा (रज़ि.) ने बतलाया। फिर लोगों ने इस आयत के नाज़िल होने के बाद (ऐसी लड़कियों से निकाह की इजाज़त के बारे में) मसला पूछा तो अल्लाह तआला ने ये

۲۴۹۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْغَامِرِيُّ الْأَوْسِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا .. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنْ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَرِثَوا مَالَهُمْ إِنْ لَا تَقْسُطُوا﴾ - إِلَى قَوْلِهِ - وَرَبَّاعٍ فَقَالَتْ: يَا ابْنَ أَخِي، هِيَ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجَرٍ وَلَيْهَا تَشَارِكَةٌ فِي مَالِهِ، فَيُعْجِبُهُ مَالُهَا وَجَمَالُهَا، فَيَرِيدُ وَلَيْهَا أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِغَيْرِ أَنْ يَقْسُطَ فِي صَدَاقِهَا، فَيُعْطِيهَا مِنْ مَالِ مَا يُعْطِيهَا عَمْرُو، فَهَؤُلَاءِ أَنْ يَنْكِحُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَقْسُطُوا لَهُنَّ وَيَلْفُوا بِهِنَّ أَغْلَى سَتِيهٍ مِنَ الصَّدَاقِ، وَأَمَرُوا أَنْ يَنْكِحُوا مَا طَابَ لَهُمْ مِنَ النِّسَاءِ سَوَاهُنَّ. قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ: ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ اسْتَفْتَوْا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِهَذِهِ الْآيَةِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ﴾ - إِلَى قَوْلِهِ - وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ، وَاللَّيْثُ ذَكَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنَّهُ يَتْلُو

आयत नाज़िल फ़र्माई, और आपसे औरतों के बारे में ये लोग सवाल करते हैं। आगे फ़र्माया, और तुम उनसे निकाह करना चाहते हो। ये जो इस आयत में है और जो क़ुर्आन में तुम पर पढ़ा जाता है उससे मुराद पहली आयत है या'नी, अगर तुमको यतीमों में इस्लाम न हो सकने का डर हो तो दूसरी औरतें जो भली लगेँ उनसे निकाह कर लो। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा ये जो अल्लाह ने दूसरी आयत में फ़र्माया और तुम उनसे निकाह करना चाहते हो उससे ये गर्ज है कि जो यतीम लड़की तुम्हारी परवरिश में हो और माल और ज़माल कम रखती हो उससे तो तुम नफ़रत करते हो, इसलिये जिस यतीम लड़की के माल और ज़माल में तुमको सबत हो उससे भी निकाह न करो मगर इस सूरत में जब इस्लाम के साथ उनका पूरा महर देना।

(दीगर मक़ाम : 2763, 4573, 4574, 4600, 5064, 5092, 5098, 5128, 5131, 5140, 6965)

### बाब 8 : ज़मीन मकान वग़ैरह में शरीकत का बयान

2495. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें अबू सलमान ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने शफ़आ का हक़ ऐसे अम्वाल (ज़मीन व जायदाद वग़ैरह) में दिया था जिनकी तक्सीम न हुई हो। लेकिन जब उसकी हदबन्दी हो जाए और रास्ते भी बदल जाएँ तो फिर शफ़आ का कोई हक़ बाक़ी नहीं रह जाता।

क़स्तलानी (रह.) ने कहा, इससे ये निकलता है कि शफ़आ ग़ैर-मन्कूला (अचल) जायदाद में है कि मन्कूला (चल सम्पत्ति) में? इसकी बहष पहले भी गुज़र चुकी है।

बाब 9 : जब शरीक लोग घरों वग़ैरह को तक्सीम कर लें तो अब उससे फिर नहीं सकते और न उनको शफ़आ का हक़ रहेगा

عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ الْآيَةُ الْأُولَىٰ أَلَيْ قَالَتْ لَهَا : هَؤُلَاءِ خِفْتُمْ أَنْ لَا تَقْسِمُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ ۚ قَالَتْ غَائِبَةٌ : وَقَوْلَ اللَّهِ فِي الْآيَةِ الْأُخْرَىٰ : هَؤُلَاءِ خِفْتُمْ أَنْ تَتَكَبَّوهُمْ ۚ يَعْنِي هِيَ رَغْبَةُ أَحَدِكُمْ يُتِمِّعِيهِ أَلَيْ تَكُونُ فِي حَجْرِهِ حِينَ تَكُونُ قَلِيلَةً الْمَالِ وَالْجَمَالِ، فَهَؤُلَاءِ أَنْ يَنْكِحُوا مَا رَغَبُوا فِي مَالِهَا وَجَمَالِهَا مِنْ يَتَامَى النِّسَاءِ إِلَّا بِالْقِسْطِ مِنْ أَجْلِ رَغْبَتِهِمْ غَنَّهُنَّ)).

[أطرافه في : ٢٧٦٣، ٤٥٧٣، ٤٥٧٤،

٤٦٠٠، ٥٠٦٤، ٥٠٩٢، ٥٠٩٨،

٥١٢٨، ٥١٣١، ٥١٤٠، ٦٩٦٥].

### ٨- بَابُ الشَّرَكَةِ فِي الْأَرْضَيْنِ وَغَيْرِهَا

٢٤٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّمَا جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَا لَمْ يَفْسَمْ، فَإِذَا

٩- بَابُ إِذَا اقْتَسَمَ الشَّرَكَاءُ الدُّورَ أَوْ غَيْرَهَا فَلَيْسَ لَهُمْ رُجُوعٌ وَلَا شُفْعَةٌ

बाब का तर्जुमा इस तरह निकलता है कि जब शुफ़आ का हक़ तक्सीम के बाद न रहा तो मा'लूम हुआ कि तक्सीम भी फिर नहीं हो सकती क्योंकि अगर तक्सीम बातिल हो जाए तो जायदाद फिर मुश्तरक हो जाएगी और शुरका को शुफ़आ का हक़ पैदा होगा।

2496. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हर उस जायदाद में शुफ़आ का हक़ दिया था जिसकी शुरका में अभी तक्सीम न हुई हो। लेकिन अगर हदबन्दी हो जाए और रास्ते अलग हो जाएँ तो फिर शुफ़आ का हक़ बाक़ी नहीं रहता। (राजेअ : 2213)

**बाब 10 : सोने, चाँदी और उन तमाम चीज़ों में शिर्कत जिनमें बेअे सरिफ़ होती है**

बेअे सरिफ़ का बयान ऊपर गुजर चुका है या'नी सोने चाँदी और नक़द की बेअे सोने चाँदी और नक़द के ऐवज़ में।

2497, 98. हमसे अमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे उब्मान ने जो अस्वद के बेटे हैं, कहा कि मुझे सुलैमान बिन अबी मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबुल मिन्हाल से बेअे सरिफ़ नक़द के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने और मेरे एक शरीक ने कोई चीज़ (सोने और चाँदी की) ख़रीदी नक़द पर भी और उधार पर भी। फिर हमारे यहाँ बराअ बिन अज़िब (रज़ि.) आए तो हमने उनसे इसके बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि मैंने और मेरे शरीक ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने भी ये बेअे की थी और हमने इसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से पूछा था तो आपने फ़र्माया था कि जो नक़द हो वो ले लो और जो उधार हो उसे छोड़ दो। (राजेअ : 2060, 2061)

**बाब 11 : मुसलमानों का मुशिक़ीन और ज़िम्मियों के साथ मिलकर खेती करना**

**तशरीह :** बाब की हदीष से ज़िम्मी की शिर्कत का जवाज़ खेती में मिलता है और जब खेती में शिर्कत जाइज़ होती है तो और चीज़ों में भी जाइज़ होगी। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वहतज्जल्मुम्हूरु बिमुआमलतिन्नबिय्य (ﷺ)

٢٤٩٦ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَنْ  
الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَقْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ  
أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرِ بْنِ  
عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَضَى  
النَّبِيُّ ﷺ بِالشُّفْعَةِ فِي كُلِّ مَا لَمْ يَفْسَمْ،  
فَإِذَا وَقَعَتِ الْخُدُودُ وَصَرَفَتِ الطُّرُقُ فَلَا  
شُفْعَةَ)). (راجع: ٢٢١٣)

١٠ - بَابُ الْإِشْرَاكِ فِي الذَّمِّ  
وَالْفَيْضَةِ مَا يَكُونُ فِيهِ الصَّرْفُ

٢٤٩٧، ٢٤٩٨ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ  
قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ غُثَمَانَ - يَعْنِي  
ابْنَ الْأَسْوَدِ - قَالَ: أَخْبَرَنِي سَلِمَانُ بْنُ  
أَبِي مُسْلِمٍ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا الْحِثَّالِ عَنِ  
الصَّرْفِ يَدًا بِيَدٍ فَقَالَ: اشْتَرَيْتُ أَنَا  
وَشَرَيْتُ لِي شَيْئًا يَدًا بِيَدٍ وَنَسِيتُهُ، فَجَاءَنَا  
الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ فَسَأَلَنَاهُ فَقَالَ: قَعَلْتُ أَنَا  
وَشَرَيْتُ لِي زَيْدًا بِنِ أَرْقَمَ وَسَأَلْنَا النَّبِيَّ ﷺ  
عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((مَا كَانَ يَدًا بِيَدٍ  
فَتُخَذَوُهُ، وَمَا كَانَ نَسِيتُهُ فَتُزَوُّهُ)).

(راجع: ٢٠٦٠، ٢٠٦١)

١١ - بَابُ مُشَارَكَةِ الذَّمِّ  
وَالْمُشْرِكِينَ فِي الْمَزَارَعَةِ

यहूद खैबर व इजा जाज़ फिल्मुज़ारअति जाज़ फी गैरिहा व बिमशरूइयति अखिज़ल्लिज्यति मिन्हुम मअन्न अन फी अम्वालहिमा फीहा या'नी उसके जवाज़ पर जुम्हूर उलमाने नबी करीम (ﷺ) के यहूदे खैबर से मामला करने से दलील पकड़ी है और उनसे जिज्या की मशरूइयत पर भी। हालाँकि उनके अम्वाल का हाल मा'लूम है कि उनमें सूद व ब्याज वगैरह नाजाइज़ आमदनी भी उनके यहाँ होती थी, फिर भी उनसे जिज्या में उनका माल हासिल करना जाइज़ करार दिया गया।

2499. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिनते अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खैबर की ज़मीन यहूदियों को इस शर्त पर दे दी कि वो उसमें मेहनत करें और बोएँ जोतें। पैदावार का आधा हिस्सा उन्हें मिला करेगा। (राजेअ: 2285)

٢٤٩٩ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خَيْبَرَ الْيَهُودَ أَنْ يَمْثَلَوْهَا وَيَزَعَوْهَا، وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يُخْرُجُ مِنْهَا)).

[راجع: ٢٢٨٥]

इस्लाम मुआशरती, तमहुनी उमूर (सांस्कृतिक मामलों) में मुसलमानों को इजाज़त देता है कि वो दूसरी गैर-मुस्लिम क़ौमों से मिलकर अपने मआशी मसाइल हल कर सकते हैं। इसमें न सिर्फ़ खेती-क्यारी बल्कि तमाम दुनियावी उमूर इस इजाज़त में शामिल हैं। इस तरह मुसलमानों को बहुत से दीनी व दुनियावी फ़ायदे भी हासिल होंगे।

## बाब 22 : बकरियों का इंसान के साथ तक्सीम करना

2500. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे अबुलखैर ने और उनसे इब्बा बिन अमिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बकरियाँ दी थीं कि कुर्बानी के लिये उनको सहाबा में तक्सीम कर दें। फिर एक साल का बकरी का बच्चा बच गया तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने इब्बा से फ़र्माया तू इसकी कुर्बानी कर ले। (राजेअ: 2300)

٢٢ - بَابُ قِسْمَةِ الْغَنَمِ وَالْعَدْلِ فِيهَا  
٢٥٠٠ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَنْبَلٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ غُبَّانِ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَعْطَاهُ غَنَمًا يَقْسِمُهَا عَلَى صَحَابَتِهِ طَحْيًا، فَبَقِيَ غَنَمٌ، فَذَكَرَهُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((ضَحِّ بِهِنَّ أَنتَ)). [راجع: ٢٣٠٠]

## बाब 13 : अनाज वगैरह में शिर्कत का बयान

और मन्कूल है कि एक शख्स ने कोई चीज़ चुकाई, दूसरे ने उसको आँख से इशारा किया, तब उसने मोल ले लिया, इससे हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये समझ लिया कि वो शरीक है।

١٣ - بَابُ الشَّرَكَةِ فِي الطَّعَامِ وَغَيْرِهِ  
وَيَذَكِّرُ أَنَّ رَجُلًا سَاوَمَ شَيْئًا لِقَعْمَةٍ آخَرٍ، فَرَأَى عُمَرَ أَنَّهُ شَرَكَةٌ.

2501, 02. हमसे अम्बग बिन फ़रज ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा मुझे सईद बिन अबी अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी बिन मअबद ने, उन्हें उनके दादा अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को

٢٥٠١, ٢٥٠٢ - حَدَّثَنَا أَصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ زُهْرَةَ بْنُ مَعْبُدٍ

पाया था। उनकी वालिदा जैनब बिनते हुमैद (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में आपको लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इससे बेअत ले लीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो अभी बच्चा है। फिर आपने उनके सर पर हाथ फेरा और उनके लिये दुआ की और जुह्रा बिन मअबद से रिवायत है कि उनके दादा अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) उन्हें अपने साथ बाज़ार ले जाते, वहाँ अनाज ख़रीदते। फिर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) उनसे मिलते तो वो कहते कि हमें भी इस अनाज में शरीक कर लो क्योंकि आपके लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बरकत की दुआ की है। चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) उन्हें भी शरीक कर लेते और कभी पूरा एक ऊँट (साथ गल्ले के) नफ़ा पैदा कर लेते और उसको घर भेज देते। (दीगर मक़ाम : 7201)

عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ هِشَامٍ - وَكَانَ قَدْ  
أَذْرَكَ النَّبِيَّ ﷺ، وَذَهَبَتْ بِهِ أُمُّهُ زَيْنَبُ  
بِنْتُ حَمِيدٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا  
رَسُولَ اللَّهِ تَبِيعَهُ، فَقَالَ: هُوَ صَغِيرٌ.  
فَمَسَحَ رَأْسَهُ وَدَعَا لَهُ - وَعَنْ زُهْرَةَ بْنِ  
مُعْبِدٍ أَنَّهُ كَانَ يَخْرُجُ بِهِ جَدُّهُ عَبْدِ اللَّهِ بْنُ  
هِشَامٍ إِلَى السُّوقِ فَيَشْتَرِي الطَّعَامَ، فَيَلْقَاهُ  
ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا  
فَيَقُولَانِ لَهُ: أَشْرِكْنَا، فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ  
دَعَا لَكَ بِالْبَرَكَةِ، فَيَشْرِكُهُمْ فَرُبَّمَا أَصَابَ  
الرَّاحِلَةَ كَمَا هِيَ فَيَبْعَثُ بِهَا إِلَى  
الْمَنْزِلِ)). [طهره في : ٧٢٠١].

[طهره في : ٦٣٥٣].

**तशरीह :** कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है कभी एक ऊँट के लादने के मुवाफ़िक़ अनाज पैदा करते। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि हमको भी उस अनाज में शरीक कर लो। तज़ाम से खाने के गल्ला-जात (अनाज) से गेहूँ, चावल, वग़ैरह मुराद है। शिर्कत में इनका कारोबार करना भी जाइज़ है। जैसा कि इस हदीष में अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) नामी एक सहाबी का ज़िक्र है, जिनके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने बचपन में दुआ फ़र्माई थीं और आपकी दुआओं की बरकत से अल्लाह ने उनको बहुत कुछ नवाज़ा था। उनके दादा जब अनाज वग़ैरह ख़रीदने बाज़ार जाते तो उनको साथ ले लेते ताकि हुज़ूर (ﷺ) की दुआओं की बरकत शामिले-हलाल रहे। कुछ बार रास्ते में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) मिल जाते तो वो भी दरख़वास्त करते कि हमको भी इस तिजारत में शरीक कर लीजिए ताकि दुआ-ए-नबवी की बरकतों से हम भी फ़ायदा हासिल करें। चुनाँचे अक़बर ऐसा हुआ करता था कि ये सब बहुत कुछ नफ़ा कमाकर वापस लौटते।

इस हदीष पर हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व फिलहदीषि मस्तुह रासिस्सगीरि व तर्कु मुबायअति मल्लम यबलुग बहुखूलु फिस्सूकि लितलबिल्मआशि व तलबिल्बर्कति हैषु कानत वरहु अला मन ज़अम अन्नस्सिअत मिनल्हलालि मज़ूमतुन व तुवक्कलू दवाइस्सहाबति अला इज़हारि औलादिहिम इन्दन्नबिद्यि (ﷺ) लिइल्लिमासि बर्कतिही व अलमुम्मिन आलामिनुबुव्वतिही (ﷺ) लिइजाबति दुआइही फी अब्दिल्लहिब्नि हिशाम या'नी इस हदीष से ये निकलता है कि छोटे बच्चे के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरना सुन्नत नबवी है और नाबालिग बच्चे से बेअत लेना प्राबित नहीं हुआ और तलबे मआश के लिये बाज़ार जाने की मशरूइयत भी प्राबित हुई और बरकत तलब करना भी प्राबित हुआ वो जहाँ से भी हासिल हो और उन लोगों की तर्दीद भी हुई जो रिज़्के हलाल की कोशिश को मज़ूम जानते हैं। और ये भी प्राबित हुआ कि बेशतर सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) बरकत हासिल करने के लिये अपनी औलाद को आँहज़रत (ﷺ) की खिदमते-अक़दस में लाया करते थे ताकि आपकी दुआएँ उन बच्चों के शामिले-हलाल हों। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम के हक़ में दुआ-ए-नबवी की बरकत हासिल हुई ये सब आँहज़रत (ﷺ) की सदाक़त की निशानियों में से अहम निशानियाँ हैं।

ऐसा ही वाक़िया इर्वा बारक़ी (रज़ि.) का है जो बाज़ार में जाते और कभी तो चालीस हज़ार का नफ़ा कमाकर बाज़ार

से वापस आते। जो सब कुछ नबी करीम (ﷺ) की दुआओं की बरकत थी। आपने एक बार उनको एक दीनार देकर कुर्बानी का जानवर खरीदने भेजा था। और ये उस एक दीनार की दो कुर्बानियाँ खरीदकर लाए और रास्ते ही में उनमें से एक को फरोख्त करके एक दीनार वापस हासिल कर लिये। फिर हुजूर (ﷺ) की खिदमत में कुर्बानी का जानवर पेश किया और नफ़ा में हासिल होने वाला दीनार भी और साथ में तफ़सीली वाकिया सुनाया। जिसे सुनकर नबी करीम (ﷺ) बेहद खुश हुए और उनके कारोबार में बरकत की दुआ फ़र्माई।

अल्लामा कस्तलानी (रह.) फ़मति हैं, व मुताबकतुलहदीषि लिचर्जुमति फ़ी क़ौलिही अशिरकना लि क़ौनिहिमा तलबन मिन्हु अल्इश्तिराकु फ़ित्तआमिल्लजी इश्तराहु अजाबहुमा इला ज़ालिक व हुम मिनस्सहाबति व लम युन्कल अन गैरिहिम मा युखालिफु ज़ालिक फयकनु हुज्जतुन वलजुम्हूर अला सिद्हतिशिकर्ति फ़ी कुल्लि मा यतमल्लकु (कस्तलानी) या'नी हदीष की बाब में मुताबकत लफ़्ज अशिरकना से है। उन दोनों बुजुर्ग सहाबियों ने उनसे इस ख़रीदे हुए अनाज में शिकत का सवाल किया और उन्होंने दोनों की इस दरख्वास्त को कुबूल कर लिया। वो सब अस्हाबे नबवी थे और किसी से भी उसकी मुख़ालफ़त मन्कूल नहीं हुई। पस ये हुज्जत है और जुम्हूर हर उस चीज़ में शिकत के जवाज़ के क़ाइल हैं जो चीज़ मिलिकियत में आ सकती है।

### बाब 14 : गुलाम लौण्डी में शिकत का बयान

2503. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी साझे के गुलाम का अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया तो उसके लिये ज़रूरी है कि अगर गुलाम की, इस्लाम के मुवाफ़िक़ क़ीमत के बराबर उसके पास माल हो तो वो सारे गुलाम को आज़ाद करा दे। इस तरह दूसरे साझियों को उनके हिस्से की क़ीमत अदा कर दी जाए और इस आज़ाद किये हुए गुलाम का पीछा छोड़ दिया जाए। (राजेअ : 2491)

2504. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे नज़्र बिन अनस ने, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने किसी (साझे के) गुलाम का अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया तो अगर उसके पास माल है तो पूरा गुलाम आज़ाद हो जाएगा। वरना बाक़ी हिस्सों को आज़ाद कराने के लिये उससे मेहनत मज़दूरी कराई जाए। लेकिन इस सिलसिले में इस पर कोई दबाव नहीं डाला जाए। (राजेअ : 2492)

बाब 15 : कुर्बानी के जानवरों और ऊंटों में शिकत और अगर कोई मक्का को कुर्बानी भेज चुके फिर

### ١٤ - بَابُ الشَّرِكَةِ فِي الرِّقِّ

٢٥٠٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ شَرِكًا لَهُ فِي مَمْلُوكٍ وَجَبَ عَلَيْهِ أَنْ يَغْتِقَ كُلَّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ قَتَرَهُ نَفْسَهُ يُقَامُ فِئْتَةٌ عَدْلٍ وَيَغْفَى شَرِكَاؤُهُ حِسَّتُهُمْ وَيَخْلَى سَبِيلُ الْمُغْتَقِ)).

[راجع: ٢٤٩١]

٢٥٠٤ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَارِثٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهْلٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِقْصًا لَهُ فِي عَبْدٍ أَعْتَقَ كُلَّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ، وَإِلَّا يُسْتَنْعَ غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ)). [راجع: ٢٤٩٢]

١٥ - بَابُ الْأَشْيَرَاكِ فِي الْهَدْيِ وَالْبُدُونِ إِذَا أَشْرَكَ الرَّجُلُ الرَّجُلَ

उसमें किसी को शरीक कर ले तो जाइज है

2505, 06. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्हें अब्दुल मलिक बिन जुरैज ने खबर दी, उन्हें अत्ता ने और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने और (इब्ने जुरैज इसी हदीष की दूसरी रिवायत) त्राऊस से करते हैं कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) चौथी ज़िल्हिज्ज की सुबह को हज्ज का तल्बिया कहते हुए जिसके साथ कोई और चीज़ (उमरह) न मिलते हुए (मक्का में) दाखिल हुए। जब हम मक्का पहुँचे तो आपके हुक्म से हमने अपने हज्ज को उमरह कर डाला। आपने ये भी फ़र्माया था कि (उमरह के अफ़आल अदा करने के बाद हज्ज के एह्राम तक) हमारी बीवियाँ हमारे लिये हलाल रहेंगी। इस पर लोगों में चर्चा होने लगा। अत्ता ने बयान किया कि जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि कुछ लोग कहने लगे क्या हम में से कोई मिना इस तरह जाए कि मनी उसके ज़कर से टपक रही हो। जाबिर ने हाथ से इशारा भी किया। ये बात नबी करीम (ﷺ) तक पहुँची तो आप ख़ुन्वा देने खड़े हुए और फ़र्माया मुझे मा'लूम हुआ है कि कुछ लोग इस तरह की बातें कर रहे हैं। अल्लाह की क़सम! मैं उन लोगों से ज़्यादा नेक और अल्लाह से डरने वाला हूँ। अगर मुझे वो बात पहले ही मा'लूम होती जो अब मा'लूम हुई है तो मैं कुर्बानी के जानवर अपने साथ न लाता और अगर मेरे साथ कुर्बानी के जानवर न होते तो मैं भी एह्राम खोल देता। इस पर सुराक़ा बिन मालिक बिन जअशम खड़े हुए और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या ये हुक्म (हज्ज के दिनों में उमरह) ख़ास हमारे ही लिये है या हमेशा के लिये? आपने फ़र्माया, नहीं! बल्कि हमेशा के लिये है। जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) (यमन से) आए। अब अत्ता और त्राऊस में से एक तो यूँ कहता है हज़रत अली (रज़ि.) ने एह्राम के वक़्त यूँ कहा था, लब्बैक बिमा अहल्ल बिही रसूलुल्लाह (ﷺ) और दूसरा यूँ कहता है कि उन्होंने लब्बैक बिहज्जति रसूलुल्लाह (ﷺ) कहा था। नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि वो अपने एह्राम पर कायम रहें (जैसा भी उन्होंने बाँधा है) और उन्हें अपनी कुर्बानी में शरीक

هَذِيهِ بَعْدَ مَا أَهْدَى

٢٥٠٥، ٢٥٠٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الْعَمَّانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ جُرَيْجٍ عَنْ غَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ وَعَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ صَبَحَ رَابِعَةً مِنْ ذِي الْحِجَّةِ مُهْلِينَ بِالْحَجِّ لَا يَخْلُطُهُمْ شَيْءٌ. فَلَمَّا قَدِمْنَا أَمَرَنَا فَجَعَلْنَاهَا عُمْرَةً. وَأَنْ نَحِلَّ إِلَى نِسَائِنَا. فَفَتَشْتُ فِي ذَلِكَ الْقَائِلَةِ. قَالَ عَطَاءٌ: فَقَالَ جَابِرٌ قَبْرُوحٌ أَحَدُنَا إِلَى مَنَى وَذَكَرَهُ يَقَطُرُ مَنًى - فَقَالَ جَابِرٌ بِكَفِّهِ - فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيُّ ﷺ، فَقَامَ خَطِيئًا فَقَالَ: ((بَلَّغْنِي أَنْ أَلْقُوا مَا يَقُولُونَ كَذًا وَكَذَا، وَاللَّهِ لَأَنَا أَبْرُ وَأَقْنَى لِلَّهِ مِنْهُمْ، وَلَوْ أَنِّي اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ، وَلَوْ لَا أَنْ مَعِيَ الْهَدْيُ لَأَخْلَلْتُ)). فَقَامَ سَرَّاقَةً مِنْ مَالِكِ بْنِ جُعْشَمٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هِيَ لَنَا أَوْ لِلْأَنْدِ؟ فَقَالَ: ((لَا، بَلْ لِلْأَنْدِ)). قَالَ: وَجَاءَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ، فَقَالَ أَخَذَهُمَا يَقُولُ: لَيْتَكَ بِمَا أَهْلُ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَقَالَ الْآخَرُ: لَيْتَكَ بِحَجَّةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ عَلَى إِخْرَامِهِ وَأَشْرَكَهُ فِي الْهَدْيِ)).

[راجع: ١٠٨٥، ١٠٥٧]



कर लिया।

इसी से बाब का मज़मून प्राबित हुआ। सनद में इब्ने जुरैज का इस हदीष को अत्ता और ताऊस दोनों से सुनना मज़कूर है। हाफ़िज़ ने कहा मेरे नज़दीक तो ताऊस से रिवायत मुन्क़तअ है क्योंकि इब्ने जुरैज ने मुजाहिद और इकिस्मा से नहीं सुना और ताऊस उन्हीं के हम असर (समकालीन) हैं, अल्बत्ता अत्ता से सुना है क्योंकि अत्ता उन लोगों के दस बरस बाद हुए थे। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि रसूले करीम (ﷺ) ने मदीना से कुर्बानी के लिये 63 ऊँट लिये और हज़रत अली (रज़ि.) यमन से 37 ऊँट लाए। सब मिलकर सौ ऊँट हुए और हज़रत अली (रज़ि.) ने आपको उन ऊँटों में शरीक कर लिया।

### बाब 16 : तक्सीम में एक ऊँट को दस बकरियों के बराबर समझना

2507. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान प्रौरी ने, उन्हें उनके वालिद सईद बिन मसरूक ने, उन्हें अबाय्या बिन रफ़ाआ ने और उनसे उनके दादा राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ तहामा के मुक़ाम जुलहुलैफ़ह में थे (शनीमत में) हमें बकरियाँ और ऊँट मिले थे। कुछ लोगों ने जल्दी की और (जानवर जिब्ह करके) गोश्त को हाँडियों में चढ़ा दिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। आपके हुक्म से गोश्त की हाँडियों को उलट दिया गया। फिर (आपने तक्सीम में) दस बकरियों का एक ऊँट के बराबर हिस्सा रखा। एक ऊँट भाग खड़ा हुआ। क्रौम के पास घोड़ों की कमी थी। एक शख्स ने ऊँट को तीर मारकर रोक लिया। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन जानवरों में भी जंगली जानवरों की तरह वहशत होती है। इसलिये जब तुम उनको न पकड़ सको तो तुम उनके साथ ऐसा किया करो। अबाय्या ने बयान किया कि मेरे दादा ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हमें उम्मीद है या ख़तरा है कि कहीं कल दुश्मन से मुठभेड़ न हो जाए और छुरी हमारे साथ नहीं है। क्या धारदार लकड़ी से हम जिब्ह कर सकते हैं? आपने फ़र्माया, लेकिन जिब्ह करने में जल्दी करो। जो चीज़ ख़ून बहा दे (उसी से काट डालो) अगर इस पर अल्लाह का नाम लिया जाए तो उसको खाओ और नाख़ून और दांत से जिब्ह न करो। उसकी वजह मैं बतलाऊँ, सुनो

### ١٦- بَابُ مَنْ عَدَلَ عَشْرَةَ مِنَ الْغَنَمِ بِحَزْوَورٍ فِي الْقِسْمِ

٢٥٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُبَايَةَ بْنِ رَافِعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِدِي الْحُلَيْفَةِ مِنْ يَهَامَةَ فَأَصْنَبْنَا غَنَمًا وَ إِبِلًا، فَعَجَلُ الْقَوْمِ فَأَخْلَوْا بِهَا الْقُدُورَ، فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَمَرَ بِهَا فَأَكْفَيْتُ، ثُمَّ عَدَلَ عَشْرًا مِنَ الْغَنَمِ بِحَزْوَورٍ. ثُمَّ إِنَّ بَعْضًا نَدَّ وَلَيْسَ فِي الْقَوْمِ إِلَّا خَيْلٌ نَسِيرَةٌ لَرَمَاهُ رَجُلٌ فَحَبَسَهُ بَسْتَهُمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ لِهَيْبَةِ الْبَهَائِمِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا عَلَيْكُمْ مِنْهَا فَأَصْنَعُوا بِهِ مَكَدًا)). قَالَ: قَالَ جَدِّي: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ تَرَجُّو - وَ نَخَافُ - أَنْ نَلْقَى الْقُدُورَ غَدًا، وَلَيْسَ مَعَنَا مُدَى، أَفَتَذْبَحُ بِالْقَصْبِ؟ فَقَالَ: ((اعْجَلْ، أَوْ أَرِنِي. مَا أَنَهَرَ الدَّمَ وَذَكَّرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَكَلُوا، لَيْسَ السِّنُّ وَالظُّفْرُ، وَسَاحَدْتُكُمْ عَنْ ذَلِكَ: أَمَّا السِّنُّ فَتَغْمُ، وَأَمَّا الظُّفْرُ فَمُدَى الْحَبَشِ)).

दांत तो हड्डी है और नाखुन हड्थियों की छुरियाँ हैं। (राजेअ :

[راجع: ٢٤٨٨])

2488)

रावी को शुब्हा है कि आपने लफ़्ज़ अज़जल फ़र्माया, या लफ़्ज़ अरन फ़र्माया। ख़ताबी ने कहा कि लफ़्ज़ अरन असल में अरन था जो अरन यारिनु से है और जिसके मा'नी भी अज़जल या'नी जल्दी करने के हैं।

## 48. किताबुर रहन

# किताब रहन के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**तशीह :** रहन के मा'नी शुबूत या रुकना और इस्तिलाहे शरअ में रहन कहते हैं, क़र्ज़ के बदल कोई चीज़ रखवा देने को मज़बूती के लिये कि अगर क़र्ज़ अदा न हो तो क़र्ज़ देने वाला उस चीज़ से अपना क़र्ज़ वसूल कर ले। जो शख्स रहन की चीज़ का मालिक हो उसको राहिन और जिसके पास रखा जाए उसको मुर्तहिन और उस चीज़ को मरहून कहते हैं।

रहन के लगवी मा'नी गिरवी रखना, इक़ामत करना, हमेशा रहना। मसदर इरहान के मा'नी गिरवी करना। कुआन मजीद की आयत, कुल्लु नफ़्सिम बिमा कसबत रहीना (अल् मुद्बि़र : 38) में गिरवी मुराद है। या'नी हर नफ़्स अपने अज़माल के बदल में अपने आपको गिरवी कर चुका है। हदीषे नबवी, कुल्लु गुलामिन रहीनतुन बि अक्कीक़तिही में भी गिरवी मुराद है या'नी हर बच्चा अपने अक्कीक़े के हाथ में गिरवी है। कुछ ने कहा कि मुराद इससे ये है कि जिस बच्चे का अक्कीक़ा न हुआ और वो मर गया तो वो अपने वालिदैन की सिफ़ारिश नहीं करेगा। कुछ ने अक्कीक़ा होने तक बच्चे का बालों की गंदगी वगैरह में मुब्तला रहना मुराद लिया है।

मुज्ताहिदे मुत्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुताबिक़ रहन के जवाज़ के लिये आयते कुआनी से इस्तिशहाद फ़र्माया। फिर सफ़र की खुसूसियत का शुब्हा पैदा हो रहा था कि रहन सिर्फ़ के बारे में है, इसलिये लफ़्ज़े हज़र का भी इज़ाफ़ा फ़र्माकर इस शुब्हा को रद्द किया और हज़र में रहन का शुबूत हदीषे नबवी से पेश फ़र्माया जो कि आगे मज़कूर है जिसमें यहूदी के यहाँ आपने अपनी ज़िंरहे मुबारक गिरवी रखी। उसका नाम अबू शहम था और ये बन् ज़फ़र से ता'ल्लुक रखता था जो क़बील-ए-ख़जरज़ की एक शाख़ का नाम है।

बाब 1 : आदमी अपनी बस्ती में हो और गिरवी रखे और अल्लाह पाक ने सूरह बक्रर: में फ़र्माया अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न

١ - بَابُ فِي الرِّهْنِ فِي الْحَضَرِ، وَقَوْلُهُ تَعَالَى

﴿وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا

मिले तो हाथ गिरवी रख लो (अल बक्रर : 283)

فَرَمَانٌ مَّقْبُوضَةٌ ﴿٢٨٣﴾ [البقرة: 283]

ये बाब लेकर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये बतलाया कि कुआन मजीद में जो ये कैद है, व इन कुन्तुम अला सफ़रिन (अल बक्रर : 283) ये कैद इतिफ़ाकी है इसलिये कि अक़षर सफ़र में कोई गिरवी की ज़रूरत पड़ती है और उसका ये मतलब नहीं है कि हज़र में गिरवी रखना जाइज नहीं।

2508. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपनी ज़िरह, जौ के बदले गिरवी रखी थी। एक दिन मैं खुद आपके पास जौ की रोटी और बासी चर्बी लेकर हाज़िर हुआ था। मैंने खुद आपसे सुना था, आप फ़र्मा रहे थे कि आले मुहम्मद (ﷺ) पर कोई सुबह और कोई शाम ऐसी नहीं आई कि एक साअ से ज़्यादा कुछ और मौजूद रहा हो, आप (ﷺ) के नौ घर थे। (राजेअ : 2069)

٢٥٠٨- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : وَلَقَدْ رَهَنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ دِرْعَهُ بِشَيْبٍ، وَمَنْتَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِشَيْبٍ شَيْبٍ وَإِهَالَةٍ سَيْفَةٍ. وَلَقَدْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ : ((مَا أَصْبَحَ لَالٌ مَعْمُودٍ إِلَّا صَاعٌ وَلَا أَصْبَى، وَإِنَّهُمْ لَيَسْفَعُ أُنْيَاتٍ)). [راجع: ٢٠٦٩]

**तशरीह :** ये आप (ﷺ) ने अपना वाक़िया बयान फ़र्माया, दूसरे मोमिनीन को तसल्ली देने के लिये न कि बतौर शिकवा और शिकायत के। अल्लाह वाले तो फ़क्र और फ़ाक़ा पर ऐसी खुशी करते हैं जो ग़िना और तवंगरी पर नहीं करते वो कहते हैं, फ़क्र और फ़ाक़ा और दुख और बीमारी ख़ालिस महबूब या'नी अल्लाह करीम की मुराद है और ग़िना और तवंगरी में बन्दे की मुराद भी शरीक होती है।

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ निज़ामुद्दीन औलिया क़द्दस सिर्रहु से मन्कूल है। जब वो अपने घर में जाते और वालिदा से पूछते, कुछ खाने को है? वो कहती, बाबु निज़ामुद्दीन भा इमरोज़ मेहमाने खुदाएँ तो बेहद खुशी करते और जिस दिन वो कहती कि हाँ! खाना ज़रूर है, तो कुछ खुशी न होती। (वहीदी)

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व फिल्हदीषि जवाज़ु मुआमलतिल्कुफ़फ़ारि फ़ीमा लम यतहक्कक तहरीमु ऐनिल्मुतआमिलि फीहि व अदमुल्इतिबारि बिफ़सादि मुअतकिदिहिम व मुआमलातिहिम फीमा बैनहुम बस्तुम्बित मिन्हु जवाज़ु मुआमलातिम्मिन अक्षरि मालिही हुरामुन व फीहि जवाज़ु बैइस्सलाहि व रिहनिही व इज़ारतिही व ग़ैरि ज़ालिक मिनल्काफ़िरि मा लम यकुन हरबिय्यन व फीहि शुबुतु इम्लाकि अहलिज़िम्मति फ़ी अयदीहिम व जवाज़ुशराइ बिष्मुम्मिल्मुअज़्जलि वत्तिखाज़िहुरूइ वल्अददि व ग़ैरहा मिन आलातिल्हरबि व अन्नहू ग़ैर कादिहिन फित्तवक्कुलि व अन्न कीनत आलतिल्हरबि ला तदुल्लु अला तहबीसिहा क़ालहू इब्नुल्मुन्ज़िर व अन्न अक्षर कूति ज़ालिकल्अस्ति अशशईरू क़ालहुदाऊदी व अन्नल्क़ौल क़ौलुल्मुर्तहिनि फी क़मतिल्महुनि मअयमीनिही हकाहु इब्नुत्तीन व फीहि मा क़ान अलैहिन्नबिय्यु (ﷺ) मिनत्तवाज़ुह वज़्जहदि फिहुनिया वत्तक़ल्लुलि मिन्हा कुदरतिही वल्करमुल्लज़ी उफ़्रिजय बिही इला अदमिल्इदखारि हत्ता इहताज इला रिहनिदिइही वस्सबरू अला ज़ैक़िल्ऐशि वल्कनराअति बिल््यसीरि व फ़ज़ीलतु लिअज़्वाज़िही लिसबरीहिन्न मअहू अला ज़ालिक व फीहि ग़ैर ज़ालिक मिम्मा मज़ा व याती क़ालल्उलमाउ अल्हक्मतु फी उदुलिही (ﷺ) अन मुआमलति मयासीरम् सहाबति इला मुआमलतिल्यहूदि अम्मा लिबयानिल्जवाज़ि औ लिअन्नहुम लम यकुन इन्दहुम इज़ ज़ाक़ तआमुन फाज़िलुन अन हाजति ग़ैरिहिम औ ख़शिय अन्नहुम ला याखुज़ून मिन्हु प्रमनन औ इवज़न फलम युरिदितजय्युक़ अलैहिम फइन्नहू ला यब्अदु अंय्यकून फीहिम इज़ ज़ाक़ मंय्यक्दिरू अला ज़ालिक व अक्षरु मिन्हु फलअल्लहू लम यत्तलिअ अला ज़ालिक व इन्नमा इत्तलअ अलैहि मल्लम यकुन मूसिरन बिही मिम्मन नुक्लि ज़ालिक वल्लाहु आलम (फ़तुह्लबारी)

या'नी इस हदीष से कुफ़फ़ार के साथ ऐसी चीज़ों में जिनकी हुरमत मुतहक्कक (खोजबीन की हुई) न हो, तो मामला

करने का जवाज़ प्राबित हुआ। इस बारे में उनके मुअतकिदात और बाहमी मामलात के बिगाड़ का ए'तिबार नहीं किया जाएगा और उससे उनके साथ भी मामला करने का जवाज़ प्राबित हुआ जिनके माल का अक़्ब़र हिस्सा हराम से ता'ल्लुक रखता है और उससे काफ़िर के हाथ हथियार का रहन रखना और बेचना भी प्राबित हुआ जब तक वो हर्बी (दुश्मन देश का निवासी) न हो और इससे ज़िम्मियों के इम्लाक का भी शुबूत हुआ जो उनके काबू में हों और उनसे उधार कीमत पर खरीद करना भी प्राबित हुआ और ज़िरह वग़ैरह आलाते हर्ब का तैयार करना भी प्राबित हुआ, और ये कि इस किस्म की तैयारियाँ तवक्कल के मनाफ़ी (विपरीत) नहीं हैं और ये कि आलाते हर्ब (युद्धक सामग्री) का ज़ख़ीरा जमा करना उनके रोकने पर दलालत नहीं करता।

और ये भी प्राबित हुआ कि उस ज़माने में ज़्यादातर खाने में जौ का रिवाज था। और ये भी प्राबित हुआ कि रहन रखी गई शय के बारे में क़सम के साथ मुर्तहिन का क़ौल ही मो'तबर माना जाएगा और इस हदीस से आँहज़रत (ﷺ) का जुहद व तवक्कल भी बदर्ज-ए-अतम प्राबित हुआ। हालाँकि आपको हर किस्म की आसानियाँ बहम (उपलब्ध) थीं। उनके बावजूद आप (ﷺ) ने दुनिया में हमेशा कमी ही को महबूब रखा और आपका क़रम व सख़ा और अदमे ज़ख़ीरा अंदोज़ी (जमाखोरी न करना) भी प्राबित हुआ। जिसके नतीजे में आपको मजबूरन अपनी ज़िरह को रहन रखना ज़रूरी हुआ और आपका सन्न भी प्राबित हुआ जो आप म'आश की तंगी में फ़र्माया करते थे और कम से कम पर आपका क़नाअत करना भी प्राबित हुआ और आपकी बीवियों की भी फ़ज़ीलत प्राबित हुई जो वो आपके साथ करती थीं और इस बारे में कि आँहज़रत (ﷺ) ने स़हाबा के बजाय यहूदियों से उधार का मामला क्यों फ़र्माया? इलमा ने एक हिकमत बयान की है कि आपने ये मामला जवाज़ के इन्हार के लिये फ़र्माया, या इसलिये कि उन दिनों स़हाबा किराम के पास अतिरिक्त अनाज न था। लिहाज़ा मजबूरन यहूद से आपको मामला करना पड़ा। या इसलिये कि आप जानते थे कि स़हाबा किराम उधार मामला करने के बजाय बिला कीमत ही वो अनाज आपके घर भिजवा देंगे और ख़्वाह-मख़्वाह उनको तंग होना पड़ेगा, इसलिये ख़ामोशी से आपने यहूद से ही काम चला लिया।

## बाब 2 : ज़िरह को गिरवी रखना

2509. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया कि हमने इब्राहीम नख़्दी (रह.) के यहाँ क़र्ज़ में रहन और ज़ामिन का ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि हमसे अस्वद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी से अनाज ख़रीदा एक मुकर्ररा मुदत के क़र्ज़ पर और अपनी ज़िरह उसके यहाँ गिरवी रखी थी। (राजेअ : 2028)

## बाब 3 : हथियार गिरवी रखना

2510. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन डययना ने बयान किया कि अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। वो कह रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कअब बिन अशरफ़ (यहूदी इस्लाम का पक्का दुश्मन) का काम कौन तमाम करता है कि उसने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को बहुत तकलीफ़ दे रखी

## ٢- بَابُ مَنْ رَهَنَ دِرْعَهُ

٢٥٠٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَّاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: «لَمَّا كُنَّا عِنْدَ إِبْرَاهِيمَ الرَّهْنِ وَالْقَيْلِ فِي السُّقُو، فَقَالَ إِبْرَاهِيمُ: حَدَّثَنَا الْأَسْوَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى مِنْ يَهُودِيٍّ طَعَامًا إِلَى أَجَلٍ وَرَهَنَهُ دِرْعَهُ»۔ [راجع: ٢٠٦٨]

## ٣- بَابُ مَنْ رَهَنَ السَّلَاحَ

٢٥١٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرُو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ لَكَفَّرَ بَيْنَ الْأَشْرَفِ فَإِنَّهُ آذَى اللَّهِ وَرَسُولَهُ»۔

है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा कि मैं (ये ख़िदमत अंजाम दूँगा) चुनौचे वो उसके पास गए और कहा कि एक या दो वस्त्र अनाज क़र्ज़ लेने के इरादे से आया हूँ। क़अब ने कहा लेकिन तुम्हें अपनी बीवियों को मेरे यहाँ गिरवी रखना होगा। मुहम्मद बिन मस्लमा और उसके साथियों ने कहा कि हम अपनी बीवियों को तुम्हारे पास किस तरह गिरवी रख सकते हैं जबकि तुम सारे अरब में ख़ूबसूरत हो। उसने कहा कि फिर अपनी औलाद गिरवी रख दो। उन्होंने कहा कि अपनी औलाद किस तरह रहन रख सकते हैं उसी पर उन्हें गाली दी जाया करेगी कि एक दो वस्त्र गल्ले के लिये रहन रख दिये गये थे तो हमारे लिये बड़ी शर्म की बात होगी। अल्बत्ता हम अपने हथियार तुम्हारे यहाँ रहन रख सकते हैं। सुफ़यान ने कहा कि लफ़ज़ लअमा से मुराद हथियार हैं। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) इससे दोबारा मिलने का वा'दा करके (चले आए और रात में उसके यहाँ पहुँचकर) उसे क़त्ल कर दिया। फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको ख़बर दी। (दीगर मक़ाम : 3031, 2032, 4037)

فَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ: أَنَا. فَأَتَاهُ فَقَالَ: أَرَدْنَا أَنْ نُسَلِّقَكَ وَنَقَا أَوْ وَنَقَيْنَ. فَقَالَ: ارْهُونِي بِنِسَاءِكُمْ. قَالُوا: كَيْفَ نَرْهِنُكَ بِنِسَاءِنَا وَأَنْتَ أَجْمَلُ الْعَرَبِ؟ قَالَ: فَارْهُونِي أَبْنَاءَكُمْ. قَالُوا: كَيْفَ نَرْهِنُ أَبْنَاءَنَا قَيْسَبُ أَخَذَهُمْ قِيْقَالُ: رَهْنٌ يَوْسَقُ أَوْ وَنَقَيْنَ؟ هَذَا عَارٌ عَلَيْنَا، وَلَكِنَّا نَرْهِنُكَ اللَّامَةَ - قَالَ مَسْلَمٌ: يَغْنِي السَّلَاحُ - فَوَعَدَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ، فَقَتَلُوهُ، ثُمَّ أَتَوْا النَّبِيَّ (ﷺ)، فَاخْبَرُوهُ).

[أطرافه في: (٤٠٣٧، ٢٠٣٢، ٣٠٣١)].

**तशरीह:** क़अब बिन अशरफ़ मदीना का दीलतमंद यहूदी था। इस्लाम आने से उसको अपने सरमायादाराना वक़ार के लिये एक बड़ा धक्का महसूस हुआ और ये रात-दिन इस्लाम की बढ़त रोकने के लिये तदबीरें सोचता रहता था। बद्र में जो काफ़िर मारे गए थे उनका नोह्वा करके कुफ़ारे मक्का को नबी करीम (ﷺ) से लड़ने के लिये उभारता रहता और आपकी शान में हिज्व और तन्कीस के अशआर गढ़ता। इस नापाक मिशन पर वो जंगे बद्र के बाद मक्का भी गया था। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी नाशाइस्ता हरकतों से तंग आकर उसका मसला मज्मअे में रखा। जिस पर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने अपने आपको पेश किया। उन्होंने आपसे इजाज़त ली कि मैं उसके पास जाकर आपके बाब में जो कुछ मुनासिब होगा, उसके सामने कहूँगा, इसकी इजाज़त दीजिए। आपने उन्हें इजाज़त दे दी तो हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) उसके पास पहुँचे और ये बातें हुईं जो कि यहाँ मज़कूर हैं। आख़िर उस यहूदी ने हथियारों के रहन को मन्ज़ूर कर लिया। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने क़अब के रज़ाई (दूधशरीक) भाई अबू नायला को साथ लेकर रात को उसके पास गए। उसने क़िले के अंदर बुला लिया और जब उनके पास जाने लगा तो उसकी औरत ने मना कर दिया, वो बोला कोई ग़ैर नहीं है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) है और मेरा भाई अबू नायला मुहम्मद बिन मस्लमा के साथ है और भी दो या तीन शख्स थे। अबू अबस बिन जबर, हारिष बिन औस, अब्बाद बिन बिशर।

मुहम्मद बिन मस्लमा (रह.) ने कहा कि मैं क़अब के बाल सूँघने के बहाने उसका सर थामूँगा। तुम उस वक़्त जब देखो कि मैं सर को मज़बूत थामे हुआ हूँ, उसका सर तलवार से क़लम कर देना। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने जब क़अब आया, यही कहा कि ऐ क़अब! मैंने तुम्हारे सर जैसी ख़ुशबू तमाम उम्र में नहीं सूँधी। वो कहने लगा कि मेरे पास एक औरत है जो अरब की सारी औरतों से ज़्यादा मुअत्तर और ख़ुशबूदार रहती है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसका सर सूँघने की इजाज़त मांगी और क़अब के सर को मज़बूत थामकर अपने साथियों को इशारा किया। उन्होंने तलवार से सर उड़ा दिया और लौटकर दरबारे रिसालत में ये बशारत पेश की। आप बहुत ख़ुश हुए और उन मुजाहिदीने इस्लाम के हक़ में दुआ-ए-ख़ैर फ़र्माई।

हजरत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) की कुत्रियत अबू अब्दुल्लाह अंसारी है और ये बद्र में शरीक होने वालों में से हैं। कअब बिन अशरफ़ के क़त्ल की एक वजह ये भी बतलाई गई कि उसने अपना अहद तोड़ दिया था। इस तौर पर वो मुल्क का ग़द्दार बन गया और बार-बार ग़द्दारी की हरकतें करता रहा। लिहाज़ा उसकी आख़िरी सज़ा यही थी जो उसे दी गई।

हजरत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कअब के यहाँ हथियार रहन रखने का ज़िक्र फ़र्माया। इसी से बाब का मतलब प्राबित हुआ।

#### बाब 4 : गिरवी जानवर पर सवारी करना उसका दूध पीना दुरुस्त है

और मुगीरह ने बयान किया और उनसे इब्राहीम नख़्ख़ी ने कि गुम होने वाले जानवर पर (अगर किसी को मिल जाए तो) उस पर चारा देने के बदले सवारी की जाए (अगर वो सवारी का जानवर है) और (चारे के मुताबिक़) उसका दूध भी दूहा जाए। (अगर वो दूध देने वाला जानवर है) ऐसे ही गिरवी जानवर पर भी।

2511. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़करिया बिन अबी जायदा ने बयान किया, उनसे आमिर शुअबी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि गिरवी जानवर पर उसका खर्च निकालने के लिये सवारी की जाए, दूध वाला जानवर गिरवी हो तो उसका दूध पीया जाए। (दीगर मक़ाम : 2512)

2512. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया ने ख़बर दी, उन्हें शुअबी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, गिरवी जानवर पर उसके खर्च के बदल सवारी की जाए। इसी तरह दूध वाले जानवर का जब वो गिरवी हो तो खर्च के बदल उसका दूध पिया जाए और जो कोई सवारी करे या दूध पिये वही उसका खर्च उठाए। (राजेअ : 2511)

٤ - بَابُ الرُّهْنِ مَرْكُوبٌ وَمَخْلُوبٌ وَقَالَ مُعِينَةُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ: تَرْكَبُ الصَّائِلَةَ بِقَدْرِ عِلْفِهَا، وَتَحْلُبُ بِقَدْرِ عِلْفِهَا. وَالرُّهْنُ مِثْلُهُ.

٢٥١١ - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَاءُ عَنْ غَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: ((الرُّهْنُ يُرْكَبُ بِنَفَقَتِهِ، وَيَشْرَبُ لَبَنَ الدَّرِّ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا)). [طَرَفُهُ فِي: ٢٥١٢].

٢٥١٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَاءُ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الرُّهْنُ يُرْكَبُ بِنَفَقَةٍ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَلَبَنَ الدَّرِّ يُشْرَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَعَلَى الَّذِي يُرْكَبُ وَيَشْرَبُ النِّفَقَةَ)).

[راجع: ٢٥١١]

**तशरीह:** शौखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया (रह.), इमाम इब्ने क़य्यिम (रह.) और अस्हाबे हदीष का मज़हब यही है कि मुर्तहिन गिरवी रखी गई शय से नफ़ा उठा सकता है। जब उसकी दुरुस्ती और इस्लाह और ख़बरगिरी करता रहे। भले ही मालिक ने उसको इजाज़त न दी हो और जुम्हूर फ़ुक़हा ने उसके ख़िलाफ़ कहा है कि मुर्तहिन को गिरवीशुदा चीज़ से कोई फ़ायदा उठाना दुरुस्त नहीं। अहले हदीष के मज़हब पर मुर्तहिन को गिरवी रखे गये मकान की हिफ़ाज़त व सफ़ाई के बदले उसमें रहना, उसी तरह गुलाम-लौण्डी से उनके खाने-पीने के एवज़ में ख़िदमत लेना दुरुस्त होगा। जुम्हूर फ़ुक़हा इस हदीष से दलील लेते हैं कि जिस क़र्ज़ से कुछ फ़ायदा हासिल किया जाए वो सूद है। अहले हदीष कहते हैं अव्वल तो ये हदीष ज़ईफ़

है, इस सहीह हदीष के मुआरिजा के लायक नहीं। दूसरे इस हदीष में मुराद वो कर्जा है जो बिला गिरवी के बतौर कर्ज हसना हो। तहावी ने अपने मजहब की ताईद के लिये इस हदीष में ये तावील की है कि मुराद ये है कि राहिन उस पर सवारी कर सकता है और उसका दूध पिये और वही उसका दाना चारा करे।

और हम कहते हैं कि ये तावील ज़ाहिर के खिलाफ है क्योंकि गिरवीशुदा जानवर मुर्तहिन के कब्जे में और उसकी हिरासत में रहता है न कि राहिन के। उसके अलावा हम्माद बिन सलमा ने अपनी जामेअ में हम्माद बिन अबी सुलैमान से जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के उस्ताद हैं, रिवायत की, उन्होंने इब्राहीम नख़्सी से, उसमें साफ़ यूँ है कि जब कोई बकरी रहन करे तो मुर्तहिन उसके दाने चारे के बराबर उसका दूध पिये। अगर दूध उसके दाने-चारे के खर्च के बाद बच रहा है तो उसका लेना दुरुस्त नहीं वो सूद है। (अज़ मौलाना वहीदुज्जर्मा मरहूम)

## बाब 5 : यहूद वगैरह के पास कोई चीज़ गिरवी रखना

2513. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ मुद्दत ठहराकर एक यहूद से अनाज ख़रीदा और अपनी ज़िरह उसके पास गिरवी रखी। (राजेअ : 2068)

## 5- بَابُ الرَّهْنِ عِنْدَ الْيَهُودِ

وغيرهم

٢٥١٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اشْتَرَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ يَهُودِيٍّ طَعَامًا وَرَهْنَهُ ذِرَاعَهُ)). [راجع: ٢٠٦٨]

यहूदी का नाम अबुशहम था। आप (ﷺ) ने उस यहूदी से जौ के तीस साअ कर्ज लिये थे और जो ज़िरह गिरवी रखी थी उसका नाम ज़ातुल फुज़ूल था। कुछ लोगों ने कहा आप (ﷺ) ने वफ़ात से पहले ये ज़िरह छुड़ा ली थी। एक रिवायत में है कि आपकी वफ़ात तक वो गिरवी रही। (वहीदी)

## बाब 6 : राहिन और मुर्तहिन में अगर किसी बात में इख़िलाफ़ हो जाए या उनकी तरह दूसरे लोगों में तो गवाही पेश करना मुद्दअी के ज़िम्मे है, वरना (मुन्किर) मुद्दआ अलैह से क़सम ली जाएगी

2514. हमसे खल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में (दो औरतों के मुक़द्दमे में) लिखा तो उसके जवाब में उन्होंने तहरीर फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़ैसला किया था कि (अगर मुद्दअी गवाह न पेश कर सके) तो मुद्दआ अलैह से क़सम ली जाएगी। (दीगर मक़ाम : 2668, 4552)

## 6- بَابُ إِذَا اخْتَلَفَ الرَّاهِنُ

وَالْمُرْتَهِنُ وَنَحْوِهِ

قَالِيَةُ عَلَى الْمُدَّعِي، وَالْيَمِينُ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ

٢٥١٤- حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((كُتِبَتْ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَكُتِبَ إِلَيَّ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى أَنَّ الْيَمِينَ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ)).

[طرقه: ٢ : ٢٦٦٨, ٤٥٥٢]

ये इख्तिलाफ़ ख्वाह असल रहन में हो या गिरवी रखी गई शय की कुछ मिक्दार में; मसलन मुर्तहिन कहे तूने जमीन पेड़ों समेत गिरवी रखी थी और राहिन कहे मैंने सिर्फ़ जमीन गिरवी रखी थी तो मुर्तहिन ज़ियादती का मुद्दा ही हुआ, उसको गवाह लाना चाहिये। अगर गवाह न लाए तो राहिन का क़ौल क़सम के साथ कुबूल किया जाएगा। शाफ़िइया कहते हैं कि रहन में जब गवाह न हों तो हर सूरत में राहिन का क़ौल क़सम के साथ कुबूल किया जाएगा। (वहीदी)

2515. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे अबू वाइल ने कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि जो शख्स जान-बूझकर इस नियत से झूठी क़सम खाए कि इस तरह दूसरे के माल पर अपनी मिल्कियत जमाए तो वो अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक होगा। इस इश्राद की तस्दीक में अल्लाह तआला ने (सूरह आले इमरान में) ये आयत नाज़िल फ़र्माई, वो लोग जो अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के ज़रिये दुनिया की थोड़ी पूँजी ख़रीदते हैं, आख़िर तक उन्होंने तिलावत की। अबू वाइल ने कहा उसके बाद अज़अब बिन कैस (रज़ि.) हमारे घर तशरीफ़ लाए और पूछा कि अबू अब्दुर्रहमान (अबू मसऊद (रज़ि.) ने तुमसे कौनसी हदीष बयान की है? उन्होंने कहा कि हमने हदाय़े बाला उनके सामने पेश कर दी। इस पर उन्होंने कहा कि उन्होंने सच बयान किया। मेरा एक (यहूदी) शख्स से कुँए के मामले में झगड़ा हुआ था। हम अपना झगड़ा लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम अपने गवाह लाओ वरना दूसरे फ़रीक़ से क़सम ली जाएगी। मैंने अर्ज किया कि ये तो क़सम खा लेगा और (झूठ बोलने पर) उसे कुछ परवाह न होगी। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स जान-बूझकर किसी का माल हड़प करने के लिये झूठी क़सम खाए तो अल्लाह तआला से वो इस हाल में मिलेगा कि वो उस पर निहायत ही ग़ज़बनाक होगा। अल्लाह तआला ने उसकी तस्दीक में ये आयत नाज़िल की। उसके बाद उन्होंने वही आयत पढ़ी, जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के ज़रिये पूँजी ख़रीदते हैं। आयत (वलहुम अज़ाबुन् अलीम) तक।

(राजेअ : 2357)

٢٥١٥، ٢٥١٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ مَعِينٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: ((قَالَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: مَنْ خَلَفَ عَلَى يَمِينٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالًا وَهُوَ لَيْهَا فَاجِرٌ لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبٌ، ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ تَصْدِيقَ ذَلِكَ: ﴿وَالَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا - لَقَرَأَ إِلَى وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [آل عمران : ٧٧].

ثُمَّ إِنَّ الْأَنْفُسَ بَن قَلْبِي خَرَجَ إِلَيْنَا فَقَالَ: مَا يُحَدِّثُكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ قَالَ: لَحَدَّثَنَا، قَالَ: فَقَالَ: صَدَقَ، لَقِيَ وَاللَّهِ أَنْزَلَتْ، كَانَتْ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ خُصُومَةٌ لِي بَنُو، فَاخْتَصَمْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((شَاهِدْكَ أَوْ يَمِينُ)). قُلْتُ: إِنَّهُ إِذَا يَخْلِفُ وَلَا يَمِينِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ خَلَفَ عَلَى يَمِينٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالًا وَهُوَ لَيْهَا فَاجِرٌ لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبٌ)). فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَصْدِيقَ ذَلِكَ: ثُمَّ قَرَأَ هَذِهِ الْآيَةَ: ﴿وَالَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا - إِلَى - وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾.

[راجع : ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]



इस हदीष से ये प्राबित करना मक्सूद है कि मुद्आ अलैह अगर झूठी कसम खाकर किसी का माल हड़प कर जाए तो वो अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बड़ा मुजरिम, गुनाहगार, मलज़ून करार पाएगा अगरचे क़ानूनन वो अदालत से झूठी कसम खाकर डिक्री (अपने पक्ष में आदेश) हासिल कर चुका है मगर अल्लाह के नज़दीक वो आग के अंगारे अपने पेट में दाखिल कर रहा है। पस मुद्आ अलैह का फ़र्ज़ है कि वो बहुत ही सोच-समझकर कसम खाए और दुनियावी अदालत के फ़ैसले को आखिरी फ़ैसला न समझे कि अल्लाह की अदालत अलिया का मामला बहुत ही सख्त है।

## 49. किताबुल इत्क़

# किताब गुलामों की आज़ादी के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 : गुलाम आज़ाद करने का षवाब

١- بَابُ فِي الْغَنِيِّ وَقَضَائِهِ قَوْلُهُ

تَعَالَى :

और अल्लाह तआला ने (सूरह बलद में) फ़र्माया, किसी गर्दन को आज़ाद करना या भूख के दिनों में किसी कराबतदार यतीम बच्चे को खाना खिलाना. (सूरह बलद : 13-15)

﴿فَكَ رَقَبَةٍ. أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْئَةٍ. يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ﴾ [البلد : 13-15].

**तशरीह :** हर चंद हर यतीम को भूख के वक़्त खाना खिलाना षवाब है मगर यतीम बच्चा अगर रिश्तेदार हो तो उसकी परवरिश करने में दुगुना षवाब है। आयते कुर्आनी में किसी गुलाम को आज़ाद करना या ग़रीब यतीम को भूख के वक़्त खाना खिलाना दोनों काम एक ही दर्जे में बयान किये गए हैं। दौरे हाज़िर में अहदे अतीक़ की गुलामी का दौर ख़त्म हो गया। फिर भी आज मअ़ाशी इक्तिसादी (आर्थिक) गुलामी मौजूद है जिसमें एक आलम गिरफ़्तार है। इसलिये अब भी किसी क़र्ज़दार का क़र्ज़ अदा करा देना, किसी नाहक़ शिकन्जे में फंसे हुए इंसान को आज़ाद करा देना और यतीम-मिस्कीनों की ख़बर लेना बड़े भारी कारे षवाब हैं। जगह जगह के फ़सादात में कितने मुस्लिम बच्चे लावारिष यतीम हो रहे हैं। कितने अमीर-उमरा, मसाकीन व फुक़रा की सफ़ों में आ रहे हैं। जैसा कि हाल ही में अहमदाबाद, चाए बासा, चक्रधरपुर, फिर भिवन्डी और जलगांव के हालात सामने हैं। ऐसे मुसीबतज़दा मुसलमानों की मदद करना और उनको ज़िन्दगी के लिये सहारा देना वक़्त का बड़ा भारी कारे ख़ैर है। अल्लाह तआला यहाँ सबको अमन व अमान अता करे। आमीन। लफ़ज़ मसग़ाबा सग़ब यस्ग़ुबु सुग़ुबन सग़ुबा से जाअ भूख के मा'नी में है।

2517. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे आज़िम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे वाकिद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अली

٢٥١٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ

حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: قَالَ حَدَّثَنِي

बिन हुसैन के साथी सईद बिन मरजाना ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख्स ने भी किसी मुसलमान (गुलाम) को आज़ाद किया तो अल्लाह तआला उस गुलाम के जिस्म के हर अज़्व (अंग) की आज़ादी के बदले उस शख्स के जिस्म के भी एक एक अज़्व को जहन्नम से आज़ाद करेगा। सईद बिन मरजाना ने बयान किया कि फिर मैं अली बिन हुसैन (जैनुल आबेदीन रह) के यहाँ गया (और उनसे हदीष बयान की) वो हजार दिरहम या एक हजार दीनार कीमत दे रहे थे और आपने उसे आज़ाद कर दिया। (दीगर मक़ाम : 6715)

وَأَقْدَبُ بْنُ عَمْرِو قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ مَرْجَانَةَ صَاحِبُ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ قَالَ: قَالَ لِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ أَغْتَقَ امْرَأً مُسْلِمًا اسْتَقَدَّ اللَّهُ بِكُلِّ عَضْوٍ مِنْهُ عَضْوًا مِنْهُ مِنَ النَّارِ)). قَالَ سَعِيدُ بْنُ مَرْجَانَةَ: فَاتَّطَلَفْتُ إِلَى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، فَقَعَدَ عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِلَى عَبْدٍ لَهُ قَدْ أَعْطَاهُ بِهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ عَشْرَةَ آلَافٍ دِرْهَمٍ - أَوْ أَلْفَ دِينَارٍ - فَأَعْتَقَهُ.

[طرنه في: ١٧١٥]

हज़रत जैनुल आबेदीन बिन हुसैन (रज़ि.) ने सईद बिन मरजाना से ये हदीष सुनकर उस पर फौरन अमल कर दिखाया और अपना एक ऐसा क़ीमती गुलाम आज़ाद कर दिया जिसकी क़ीमत के तौर पर दस हजार दिरहम मिल रहे थे। जिसका नाम मुरिफ़ था। मगर हज़रत जैनुल आबेदीन ने रुपये की तरफ़ न देखा और एक अज़ीम नेकी की तरफ़ देखा। अल्लाह वालों की यही शान होती है कि वो इंसान परवरी और हमदर्दी को हर क़ीमत पर हासिल करने के लिये तैयार रहते हैं। ऐसे ही लोग हैं जिनको औलिया अल्लाह या इबादुर्रहमान होने का शर्फ़ (श्रेय) हासिल है।

## बाब 2 : कैसा गुलाम आज़ाद करना अफ़ज़ल है?

2518. हमसे अबूदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वाने ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू मुरावेह ने और उनसे अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि कौनसा अमल अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह पर ईमान लाना और उसकी राह में जिहाद करना। मैंने पूछा और किस तरह का गुलाम आज़ाद करना अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जो सबसे ज़्यादा क़ीमती हो और मालिक की नज़र में जो बहुत ज़्यादा पसन्द हो। मैंने अर्ज़ किया कि अगर मुझे से ये न हो सका? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फिर किसी मुसलमान कारीगर की मदद कर या किसी बेहुनर की। उन्होंने कहा कि अगर मैं ये भी न कर सका? इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर लोगों को अपने शर से महफूज़ कर दे कि ये भी एक मददका है जिसे तुम खुद अपने ऊपर करोगे।

## ٢- بَابُ أَيِّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ

٢٥١٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي مُرَاوِحٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((إِيمَانٌ بِاللَّهِ وَجِهَادٌ فِي سَبِيلِهِ)). قُلْتُ فَأَيُّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((أَعْلَاهَا ثَمَنًا، وَأَنْفُسُهَا عِنْدَ أَهْلِهَا)). قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: ((تُعِينُ صَانِعًا، أَوْ تَصْنَعُ لِأَخْرَقٍ)). قَالَ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: ((تَدْعُ النَّاسَ مِنَ الشَّرِّ، فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ تَصَدَّقُ بِهَا عَلَى نَفْسِكَ)).

क्रीमती गुलाम, अच्छा बेहतरीन माहिर कारीगर, ख़्वाह किसी भी मुफ़ीद फ़न का माहिर हो ऐसा गुलाम मालिक की नज़र में इसलिये प्यारा होता है कि वो रोज़ाना अच्छी कमाई कर लेता है। ऐसे को आज़ाद करना बड़ा कारे फ़वाब है या फिर ऐसे इंसान की मदद करना जो बेहतर होने की वजह से परेशान हाल हो, अल्लाहुम्म अय्यिदिल्इस्लाम वल्मुस्लिमीन. आमीन। हदीष में सानेअ का लफ़्ज़ बमा'नी कारीगर है कोई भी हलाल पेशा करने वाला मुराद है। कुछ ने लफ़्ज़ ज़ाइगा रिवायत किया है ज़ादे मुअज्जमा से तो उसके मा'नी ये होंगे जो कोई तबाह हाल हो या'नी फ़क्र व फ़ाक्रा में मुब्तला होकर हलाक व बर्बाद हो रहा हो।

### बाब 3 : सूरज ग्रहण और दूसरी निशानियों के वक़्त गुलाम आज़ाद करना मुस्तहब है

2519. हमसे मूसा बिन मसऊद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ायदा बिन कुदामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इव्रा ने, उनसे फ़ातिमा बिनते मुंज़िर ने और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरज ग्रहण के वक़्त गुलाम आज़ाद करने का हुक्म फ़र्माया है। मूसा के साथ इस हदीष को अली बिन मदीनी ने भी अब्दुल अज़ीज़ दरवारदी से रिवायत किया है, उन्होंने हिशाम से। (राजेअ: 86)

2520. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इषाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे फ़ातिमा बिनते मुंज़िर ने बयान किया और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें सूरज ग्रहण के वक़्त गुलाम आज़ाद करने का हुक्म दिया जाता था। (राजेअ: 86)

चाँद-सूरज का ग्रहण आपारे कुदरत में से है। जिनसे अल्लाह पाक अपने बन्दों को डराता और बतलाता है कि ये सारा आलम एक न एक दिन उसी तरह तहो-बाला होने वाला है। ऐसे मौक़े पर गुलाम आज़ाद करने का हुक्म दिया गया जो बड़ी नेकी है और नोअे इंसानी की बड़ी ख़िदमत जिसका सिला ये है कि अल्लाह पाक इस गुलाम के हर अज़्व के बदले आज़ाद करने वाले के हर अज़्व को जहन्नम से आज़ाद कर देता है। अलहम्दुलिल्लाह इस्लाम की उसी पाक ता'लीम का प्रमरह (नतीजा) है कि आज दुनिया से ऐसी गुलामी तक्रीबन नापेद हो चुकी है, नेकियों की तरफ़ीब के सिलसिले में कुआन पाक व अह्दादीषे नबवी का एक बड़ा हिस्सा गुलाम आज़ाद कराने की तर्गीबात से भरपूर है। इससे ये भी अंदाज़ा किया जा सकता है कि इस्लाम की निगाह में इंसानी आज़ादी की किस क़दर क़द्रो-क्रीमत है और इंसानी गुलामी कितनी मज़मूम शय है। तअज़्जुब है उन मरिब ज़दा ज़हनों पर जो इस्लाम पर रज़अत पसन्दी का इल्ज़ाम लगाते और इस्लाम को इंसानी तरक्की व आज़ादी के खिलाफ़ तसव्वुर करते हैं। ऐसे लोगों को इंसान की आँखों से ता'लीमाते इस्लाम का मुतालअ करना चाहिये।

### बाब 4 : अगर मुश्तरक गुलाम या लौण्डी को

### 3- بَابُ مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الْعِتَاقَةِ فِي الْكُفُوفِ أَوْ الْآيَاتِ

2519- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ بْنُ قُدَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَرْوَةَ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُثَنِّبِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْعِتَاقَةِ فِي كُفُوفِ الشَّمْسِ)). [راجع: 86]

تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ الدَّرَوَازِيِّ عَنْ هِشَامٍ. 2520- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عِيَّانٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُثَنِّبِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: ((كُنَّا نُوَمِّرُ عِنْدَ الْكُفُوفِ بِالْعِتَاقَةِ)). [راجع: 86]

### 4- بَابُ إِذَا أُعْتِقَ عَبْدًا بَيْنَ اثْنَيْنِ،

## आजाद कर दे

2521. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दो साझियों के दरम्यान साझे के गुलाम को अगर किसी एक साझी ने आजाद कर दिया तो अगर आजाद करने वाला मालदार है तो बाक़ी हिस्सों की क़ीमत का अंदाज़ा किया जाएगा फिर (उसी की तरफ़ से) पूरे गुलाम को आजाद कर दिया जाएगा। (राजेअ: 2491)

2522. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी मुश्तरक गुलाम में अपने हिस्से को आजाद कर दिया और उसके पास इतना माल है कि गुलाम की पूरी क़ीमत अदा हो सके तो उसकी क़ीमत इन्साफ़ के साथ लगाई जाएगी और बाक़ी साझियों को उनके हिस्से की क़ीमत (उसी के माल से) देकर गुलाम को उसी की तरफ़ से आजाद कर दिया जाएगा। वरना गुलाम का जो हिस्सा आजाद हो चुका हो। बाक़ी हिस्सों की आजादी के लिये गुलाम को ख़ुद कोशिश करके क़ीमत अदा करनी होगी। (राजेअ: 2491)

2523. हमसे अब्दुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी मुश्तरक गुलाम के अपने हिस्से को आजाद किया और उसके पास गुलाम की पूरी क़ीमत अदा करने के लिये माल भी है तो पूरा गुलाम उसे आजाद कराना लाज़िम है लेकिन अगर उसके पास इतना माल न हो जिससे पूरे गुलाम की सहीह क़ीमत अदा की जा सके। तो फिर गुलाम का जो हिस्सा आजाद हो गया वही आजाद हुआ है। (राजेअ: 2491)

हमसे मुसहद ने बयान किया, उनसे बिशर ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह ने इब्तिस्मर के साथ।

## أَوْ أَمَةً بَيْنَ الشُّرَكَاءِ

٢٥٢١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((قَالَ مَنْ أَعْتَقَ عَبْدًا بَيْنَ اثْنَيْنِ فَإِنْ كَانَ مُوسِرًا قَوْمٌ عَلَيْهِ ثُمَّ يُعْتَقُ)). [راجع: ٢٤٩١]

٢٥٢٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غَمْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِرْكَاءَ لَهُ فِي عَبْدٍ، فَكَانَ لَهُ مَالٌ يَلْغُ ثَمَنَ الْعَبْدِ قَوْمَ الْعَبْدِ قِيَمَةً عَدْلٍ فَأَعْطَى شِرْكَاءَهُ حِصَصَهُمْ وَعَقَّقَ عَلَيْهِ، وَإِلَّا فَقَدْ عَقَّقَ مِنْهُ مَا عَقَّقَ)). [راجع: ٢٤٩١]

٢٥٢٣- حَدَّثَنَا عَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أَسَامَةَ عَنْ عَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ غَمْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شِرْكَاءَ لَهُ فِي مَمْلُوكٍ فَلَعَلَّهِ عَقْدُهُ كُلُّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ يَلْغُ ثَمَنَهُ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ يَقَوْمُ عَلَيْهِ قِيَمَةً عَدْلٍ، فَأَعْتَقَ مِنْهُ مَا أَعْتَقَ)). [راجع: ٢٤٩١]

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بَشِيرٌ عَنْ عَيْدِ اللَّهِ . . . اخْتَصَرَهُ .

2524. हमसे अबन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्पाद बिन जैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे नाफेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया 'अमने किसी (साझे के) गुलाम का अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया। या (आप ﷺ ने) ये अल्फ़ाज़ फ़र्माए शिरका लहूफ़ी अब्दिन् (शक सवी हदीष अय्यूब सुखितयानी को हुआ) और उसके पास इतना माल भी था जिससे पूरे गुलाम की मुनासिब क़ीमत अदा की जा सकती थी तो वो गुलाम पूरी तरह आज़ाद समझा जाएगा। (बाक़ी हिस्सों की क़ीमत उसको देनी होगी) नाफ़ेअ ने बयान किया वरना उसका जो हिस्सा आज़ाद हो गया बस वो आज़ाद हो गया। अय्यूब ने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं ये (आख़िरी टुकड़ा) खुद नाफ़ेअ ने अपनी तरफ़ से कहा था या ये भी हदीष में शामिल है।

या'नी ये इब्राहम व इल्ला फ़क्रद अतक़ मिन्हु मा अतक़ हदीष में दाख़िल है या नाफ़ेअ का क़ौल है। मगर और दूसरे रावियों ने जैसे इब्ने दुल्लाह और मालिक वग़ैरह हैं, इस फ़िक्रे को हदीष में दाख़िल किया है और वही राज़ है।

2525. हमसे अहमद बिन मिक्दाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मूसा बिन इक्बाल ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको नाफ़ेअ ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) गुलाम या बांदी के बारे में ये फ़त्वा दिया करते थे कि अगर वो कई साझियों के बीच मुश्तरक हो और एक शरीक अपना हिस्सा आज़ाद कर दे तो इब्ने इमर (रज़ि.) फ़र्माते थे कि उस शख़्स पर पूरे गुलाम के आज़ाद कराने की ज़िम्मेदारी होगी लेकिन ये उस सूरत में कि जब शख़्स मज़कूर के पास इतना माल हो जिससे पूरे गुलाम की क़ीमत अदा की जा सके। गुलाम की मुनासिब क़ीमत लगाकर दूसरे साझियों को उनके हिस्सों के मुताबिक़ अदायगी कर दी जाएगी और गुलाम को आज़ाद कर दिया जाएगा। इब्ने इमर (रज़ि.) ये फ़त्वा नबी करीम (ﷺ) से नक़ल करते थे। और लैज़ बिन अबी ज़िब, इब्ने इस्हाक़, जुवैरिया, यह्या बिन सईद और इस्माईल बिन उमर्या भी नाफ़ेअ से इस हदीष को रिवायत करते हैं, वो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से और वो नबी करीम (ﷺ) से मुश्तरक़ तौर पर।

٢٥٢٤- حَدَّثَنَا أَبُو الثَّغَمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ نَسِيَةً لَهُ فِي مَمْلُوكٍ أَوْ ذِرَئًا لَهُ فِي عَبْدٍ وَكَانَ لَهُ مِنَ الْمَالِ مَا يَبْلُغُ قِيَمَتَهُ بِقِيَمَةِ الْعَدْلِ فَهُوَ عَتَقَ. قَالَ نَافِعٌ: وَإِلَّا فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ. قَالَ أَيُّوبُ: لَا أَذَرِي أَمْرًا قَالَهُ نَافِعٌ، أَوْ شَيْءٌ فِي الْحَدِيثِ)).

٢٥٢٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مِقْدَامٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يَقْتَضِي فِي الْعَبْدِ أَوْ الْأَمَةِ يَكُونُ بَيْنَ الشُّرَكَاءِ فَيُعْتَقَ أَحَدُهُمْ نَسِيَةً مِنْهُ يَقُولُ: قَدْ وَجَبَ عَلَيْهِ عِتْقُهُ كُلُّهُ إِذَا كَانَ لِلَّذِي أَعْتَقَ مِنَ الْمَالِ مَا يَبْلُغُ يَقْوَمُ مِنْ مَالِهِ قِيَمَةُ الْعَدْلِ، وَيُدْفَعُ إِلَى الشُّرَكَاءِ أَنْصِبَاؤُهُمْ وَيَعْلَى سَبِيلُ الْمُفْتَقِ، يُخْبِرُ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَرَوَاهُ اللَّيْثُ وَابْنُ أَبِي ذَنْبٍ وَابْنُ إِسْحَاقَ وَجُوَيْرِيَةُ وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. مُخْتَصَرًا.

बाब 5 : अगर किसी शख्स ने साझे के गुलाम में अपना हिस्सा आजाद कर दिया और वो नादार है तो दूसरे साझे वालों के लिये उससे मेहनत मजदूरी कराई जाएगी जैसे मुकातब कराते हैं, उस पर सखती नहीं की जाए

۵- بَابُ إِذَا أَعْتَقَ نَصِيبًا فِي عَبْدٍ  
وَلَيْسَ لَهُ مَالٌ اسْتُسْعِيَ الْعَبْدُ غَيْرَ  
مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ، عَلَى نَحْوِ الْكِتَابَةِ

**तशरीह :** या'नी ख्वाह मख्वाह उस पर ज़ोर-जबर नहीं किया जाएगा बल्कि उससे मेहनत न हो सके तो जितना आजाद हुआ उतना आजाद, बाकी हिस्सा गुलाम रहेगा। ये बाब लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष के दोनों अल्फाज़ में तत्बीक दी, या'नी कुछ रिवायतों में यूँ आया है, व इल्ला फ़क़द अतक़ मिन्हु या अतक़ और कुछ में यूँ आया है, इस्तस्मा ग़ैर मशक़्क़िन अलैहि इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि पहली सूरत जब है कि गुलाम मेहनत मशक़्क़त के काबिल न हो और आजाद करने वाला नादार हो और दूसरी सूरत जब है कि वो मेहनत मशक़्क़त और कमाई के काबिल हो।

एक दौर वो भी था कि किसी एक गुलाम को कई आदमी मिलकर खरीद लिया करते थे। अब अगर उन साझियों में से कोई शख्स उस गुलाम के अपने हिस्से को आजाद करना चाहता तो उसके लिये इस्लाम ने ये हुक्म सादिर किया कि पहले उस गुलाम की सहीह कीमत तजवीज़ की जाए। फिर अपना हिस्सा आजाद करने वाला अगर मालदार है तो बाकी हिस्सेदारों को तख्मीना के मुताबिक उनके हिस्सों की कीमतें अदा कर दे उस सूरत में वो गुलाम मुकम्मल आजाद हो गया। अगर वो शख्स मालदार नहीं है तो फिर सिर्फ़ उसी का हिस्सा आजाद हुआ है। बाकी हिस्सा गुलाम खुद मेहनत मजदूरी करके अदा करे। उसी सूरत में वो पूरी आजादी हासिल कर सकेगा।

इस हदीष को हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने मुख्तलिफ़ तुरुक से कई जगह ज़िक्र फ़र्माया है और उससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात किया है (निष्कर्ष निकाले हैं)। इस रोशन हकीकत के होते हुए कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) आयात व अह्वादीष से मसाइल के इस्तिम्बात करने में महारते ताम्मा रखते हैं कुछ ऐसे मुतअस्सिब किस्म के लोग भी हैं जो हज़रत इमाम बुखारी (रह.) को ग़ैर फ़कीह करार देते हैं जो उनके तअस्सुब और कारे बातिनी का खुला शुबूत है।

हज़रत मुज्ताहिदे मुत्लक़ इमाम बुखारी (रह.) को ग़ैर फ़कीह करार देना इतिहाई कोरे बातिनी का शुबूत है मगर जो लोग बड़ी दिलेरी से सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) तक को ग़ैर फ़कीह करार देकर राय और क़यास के खिलाफ़ उनकी सहीह अह्वादीष रद्द कर देने का फ़त्वा दे देते हैं, उनके लिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के लिये ऐसा कहना कुछ बईद अज़ क़यास (कल्पना से परे) नहीं है।

2526. हमसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यहाा बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा मैंने क़तादा से सुना, कहा कि मुझसे नज़्र बिन अनस बिन मालिक ने बयान किया, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने किसी गुलाम का एक हिस्सा आजाद किया। (राजेअ : 2492)

۲۵۲۶- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ  
حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي  
النَّضْرُ بْنُ أَنَسٍ بْنُ مَالِكٍ عَنْ شَيْخٍ مِنْ  
نَهْلِهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَعْتَقَ شَيْئًا مِنْ

عَبْدٍ . . ح.) . [راجع: ۲۴۹۲]

2527. (दूसरी सनद) हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे

۲۵۲۷- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ

यजीद बिन जुरैअ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी इरुबा ने, उनसे क़तादा ने उनसे नज़्र बिन अनस ने, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी साझे के गुलाम का अपना हिस्सा आजाद किया तो उसकी पूरी आजादी उसी के ज़िम्मे है। बशर्त कि उसके पास माल हो। वरना गुलाम की क़ीमत लगाई जाएगी और (इससे अपने बक़िया हिस्सों की क़ीमत अदा करने की) कोशिश के लिये कहा जाएगा। लेकिन उस पर कोई सख़्ती न की जाएगी। सईद के साथ इस हदीष को हज़ाज बिन हज़ाज और अबान और मूसा बिन ख़ल्फ़ ने भी क़तादा से रिवायत किया। शुअबा ने उसे मुस्तसर कर दिया है। (राजेअ: 2492)

**बाब 6 : अगर भूल-चूक कर किसी की जुबान से इताक़ (आजादी) या तलाक़ या और कोई ऐसी ही चीज़ निकल जाए**

और आजादी सिर्फ़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये की जाती है और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर इंसान को उसकी निय्यत के मुताबिक़ अज़्र मिलता है, और भूलने वाले और ग़लती से कोई काम कर बैठने वाले की कोई निय्यत नहीं होती।

2528. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे मिरर ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे ज़ुरारह बिन औफ़ा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के दिलों में पैदा होने वाले वस्वसों को मुआफ़ कर दिया है जब तक वो उन्हें अमल या जुबान पर न लाएँ। (राजेअ: 5269, 6664)

بْنُ ذَرِيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ  
النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ بَشِيرِ بْنِ هَاشِمٍ عَنْ  
أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ  
ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَغْتَقَ نَعِيْبًا - أَوْ حَقِيْبًا -  
- فِي مَخْلُوكٍ لِعِلَاقَةٍ عَلَيْهِ فِي مَالِهِ إِنْ  
كَانَ لَهُ مَالٌ، وَإِلَّا فَوَءَ عَلَيْهِ فَاغْتَسَمَ بِهِ  
غَيْرُ مَشْتَرِيٍّ عَلَيْهِ)). (راجع: ٢٤٩٢)

قَاتِلَةُ حَجَّاجِ بْنِ حَجَّاجٍ وَأَبَانَ وَمُوسَى بْنِ  
خَلْفٍ عَنْ قَتَادَةَ . . اخْتَصَرَهُ حُتَيْبٌ .

٦- بَابُ الْخَطَا وَالنَّسْيَانِ فِي  
الْعِقَاقَةِ وَالطَّلَاقِ وَنَحْوِهِ،

وَلَا عِقَاقَ إِلَّا لَوْجِهِ اللَّهُ تَعَالَى  
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى)).  
وَلَا يَأْتِي لِلنَّاسِي وَالْمَغْطِيءِ.

٢٥٢٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا  
سُهَيْبَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَسْرَعٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ  
زُرَّارَةَ بْنِ أَوْفَى عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ اللَّهُ تَجَاوَزَ  
لِي عَنْ أَثَمِي مَا وَسَّوَسْتَ بِهِ حُدُودَهَا مَا  
لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَكَلِّمْ)).

[طرفاه: ٥٢٦٩، ٦٦٦٤].

**तशरीह:** इस हदीष से बाब का मतलब इस तरह निकला कि जब वस्वसे और दिल के ख़याल पर मुवाख़ज़ा (पकड़) न हुआ तो जो चीज़ ख़ाली जुबान से भूल-चूक कर निकल जाएँ उन पर बतरीक़े औला मुवाख़ज़ा न होगा। या वस्वसे और दिल के ख़याल पर मुवाख़ज़ा इस वजह से नहीं है कि वो दिल आकर गुजर जाता है जमता नहीं। इसी तरह जो कलाम जुबान से गुजर जाए क़स्द (इरादा) न किया जाए तो उसका हुक़म भी वस्वसे की तरह होगा क्योंकि दिल और जुबान दोनों इंसानी हिस्से हैं और दोनों का हुक़म एक है।

2529. हमसे मुहम्मद बिन कसीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया उन्होंने कहा हमसे यहा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी ने, उनसे अलकमा बिन वक्रास लैषी ने, कहा कि मैंने उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आमाल का दारोमदार निय्यत पर है और हर शख्स को उसकी निय्यत के मुताबिक़ फल मिलता है। पस जिसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिये हो, वो अल्लाह और उसके रसूल के लिये समझी जाएगी और जिसकी हिजरत दुनिया के लिये होगी या किसी औरत से शादी करने के लिये तो ये हिजरत महज़ उसी के लिये होगी जिसकी निय्यत से उसने हिजरत की है। (राजेअ: 1)

इस हदीस की शरह ऊपर गुजर चुकी है। इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस से ये निकाला है कि जब हर काम के दुरुस्त होने के लिये निय्यत शर्त हुई तो अगर किसी शख्स की तलाक़ की निय्यत न थी लेकिन बेइख्तियार कहना कुछ चाहता था जुबान से ये निकल गया अन्ता तालिक़ तो तलाक़ न पड़ेगी (वहीदी)

मुतर्जिम कहता है कि ये दिल की बात और निय्यत का मामला है। साहिबे मामला के लिये ज़रूरी है कि वो इस बारे में खुद अपने दिल से फैसला करे और अल्लाह को हाज़िर नाज़िर जानकर करे और फिर खुद ही अपने बारे में फ़त्वा ले कि वो ऐसी मुतल्लका को वापस ला सकता है या नहीं। जो लोग बहालते होश व हवाश अपनी औरतों को साफ़ तौर पर तलाक़ देते हैं, बाद में हीले बहाने करके वापस लाना चाहते हैं। उनको जान लेना चाहिये कि हलाल होने के बावजूद तलाक़ अल्लाह के नज़दीक निहायत ही मबज़ू है।

**बाब 7 : एक शख्स ने आज़ाद करने की निय्यत से अपने गुलाम से कह दिया कि वो अल्लाह के लिये है (तो वो आज़ाद हो गया) और आज़ादी के शुबूत के लिये गवाह (ज़रूरी हैं)**

2530. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया उनसे मुहम्मद बिन बिस्म ने, उनसे इस्माईल ने, उनसे कैस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि जब वो इस्लाम कुबूल करने के इरादे से (मदीना के लिये) निकले तो उनके साथ उनका गुलाम था (रास्ते में) वो दोनों एक-दूसरे से बिछड़ गये। फिर जब अबू हुरैरह (रज़ि.) (मदीना पहुँचने के बाद) हुज़ूर अकरम (ﷺ) की खिदमत में बैठे हुए थे तो उनका गुलाम भी अचानक आ गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अबू हुरैरह (रज़ि.)! ये लो तुम्हारा गुलाम आ गया।

۲۵۲۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ التَّمِيمِيِّ عَنْ حَلَقَمَةَ بْنِ وَقَاصٍ اللَّيْثِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ وَلَا مَرْءٍ مَا نَوَى: لِمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوْ أَثَرِهَا يَتَزَوَّجُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهَا)). [راجع: ۱]

۷- بَابُ إِذَا قَالَ لِعَبْدِهِ هُوَ لِلَّهِ وَنَوَى الْعَقْدَ، الْإِشْهَادُ فِي الْعَقْدِ

۲۵۳۰- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بَشِيرٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ ((عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ لَمَّا أَقْبَلَ يُرِيدُ الْإِسْلَامَ - وَمَعَهُ غُلَامُهُ - حَلَّ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِنْ صَاحِبِهِ، فَأَتَلْنَا بَعْدَ ذَلِكَ وَأَبُو هُرَيْرَةَ جَالِسٌ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ



अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, हुज़ूर! मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि ये गुलाम अब आज़ाद है। रावी ने कहा कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने मदीना पहुँचकर ये शेर कहे थे

हे प्यारी गो कठिन है और लम्बी मेरी रात  
पर दिलाई उसने दारुल कुफ़्र से मुझको नज़ात

(दीगर मक़ाम : 2531, 2532, 4393)

**तशीह:** हालाँकि आजादी के लिये गवाह करने की ज़रूरत नहीं है। मगर इमाम बुखारी (रह.) ने उसको इसलिये बयान किया कि बाब की हदीष में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को गवाह करके अपने गुलाम को आज़ाद किया था। कुछ ने कहा इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि गुलाम को यूँ कहना वो अल्लाह का है उस वक़्त आज़ाद होगा जब कहने वाले की निय्यत आज़ाद करने की हो अगर कुछ और मतलब मुराद रखे तो वो आज़ाद न होगा। आज़ाद करने के लिये कुछ अल्फ़ाज़ तो सरीह हैं जैसे कि वो आज़ाद है या मैंने तुझको आज़ाद कर दिया। कुछ किनाया हैं जैसे वो अल्लाह का है या 'नी अब मेरी मिल्क उस पर नहीं रही, वो अल्लाह की मिल्क है।

2531. हमसे अबूदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे कैस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि जब मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था तो आते हुए रास्ते में ये शेर कहा था,

हे प्यारी कठिन है और लम्बी मेरी रात

पर दिलाई उसने दारुल कुफ़्र से मुझको नज़ात

उन्होंने बयान किया कि रास्ते में मेरा गुलाम मुझसे बिछड़ गया था फिर जब मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो इस्लाम पर क़ायम रहने के लिये मैंने आप (ﷺ) से बेअत कर ली। मैं अभी आपके पास बैठा ही हुआ था कि वो गुलाम दिखाई दिया। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अबू हुरैरह (रज़ि.)! ये देख तेरा गुलाम भी आ गया। मैंने कहा, हुज़ूर वो अल्लाह के लिये आज़ाद है। फिर मैंने उसे आज़ाद कर दिया। इमाम बुखारी (रह.) फ़र्माते हैं कि अबू कुरैब ने (अपनी रिवायत में) अबू उसामा से ये लफ़ज़ नहीं रिवायत किया कि वो आज़ाद है। (राजेज़ : 2530)

कुछ कहते हैं कि ये शेर अबू हुरैरह (रज़ि.) के गुलाम ने कहा था। कुछ ने उसे अबू मरसद गन्वी का बतलाया है। अबू उसामा की रिवायत में इतना ही है कि वो अल्लाह के लिये है। अबू कुरैब वाली रिवायत को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल मग़ाज़ी में वस्ल किया है।

2532. हमसे शिहाब बिन अब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे कैस ने कि जब अबू हुरैरह (रज़ि.) आ रहे थे तो उनके साथ उनका

هَذَا غُلَامُكَ قَدْ أَتَاكَ، فَقَالَ: أَمَّا إِنِّي أَشْهَدُكَ أَنَّهُ حُرٌّ. قَالَ لَهُوَ جِئْتَ يَقُولُ بِنَا لَيْلَةً مِنْ طَوْلِهَا وَعَنَائِهَا عَلَى أَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتْ

[أطرافه في : ٢٥٣١، ٢٥٣٢، ٤٣٩٣]

٢٥٣١- حَدَّثَنَا غُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ قَيْسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمَّا قَبِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قُلْتُ فِي الطَّرِيقِ: يَا لَيْلَةً مِنْ طَوْلِهَا وَعَنَائِهَا عَلَى أَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتْ قَالَ: وَأَبَقَ بَيْنِي غُلَامٌ لِي فِي الطَّرِيقِ، قَالَ: فَلَمَّا قَبِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قَبِيتُهُ، فَبَيَّنَّا أَنَا عِنْدَهُ إِذْ طَلَعَ الْغُلَامُ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، هَذَا غُلَامُكَ)). فَقُلْتُ : هُوَ حُرٌّ يَوْجُوهُ اللَّهُ، فَأَعْتَقْتُهُ)). لَمْ يَقُلْ أَبَا كُرَيْبٍ عَنْ أَبِي أَسَامَةَ ((حُرٌّ)).

[راجع : ٢٥٣٠]

٢٥٣٢- حَدَّثَنَا شَيْهَابُ بْنُ عُبَادٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ : ((لَمَّا أَقْبَلَ أَبُو هُرَيْرَةَ

गुलाम भी था, आप इस्लाम के इरादे से आ रहे थे। अचानक रास्ते में वो गुलाम भूलकर अलग हो गया। (फिर यही हदीष बयान की) उसमें यूँ है और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा था, आप (ﷺ) को गवाह बनाता हूँ कि वो अल्लाह के लिये है। (राजेअ: 2530)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - وَمَنْعَهُ غُلَامَةً - وَهُوَ  
يَطْلُبُ الْإِسْلَامَ، فَعَلَّنَ أَحَدَهُمَا حَاجَتَهُ .  
- بِهَذَا وَقَالَ - أَمَا إِنِّي أَشْهَدُ أَنَّ  
(ش: ٢٥٣٠) - [راجع: ٢٥٣٠]

हज़रत अबू हुरैरह (रह.) की निव्यत आज़ाद करने ही की थी, इसलिये उन्होंने ये लफ़्ज़ इस्ते'माल किये और आँहज़रत (ﷺ) को इस मामले पर गवाह बनाया, उसी से बाब का मज़मून प्राबित हुआ।

### बाब 8 : उम्मे वलद का बयान

### ٨- بَابُ أُمِّ الْوَلَدِ

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि क़यामत की निशानियों में से एक ये भी है कि लौण्डी अपने मालिक को जने।

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((وَمِنْ  
أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ تَلِدَ الْأُمَةُ رَهْطًا))

**तशरीह :** उम्मे वलद वो लौण्डी है जो अपने मालिक को जने। अक़बर इलमा ये कहते हैं कि वो मालिक के मरने के बाद आज़ाद हो जाती है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम शाफ़िई का यही क़ौल है और हमारे इमाम अहमद और इस्हाक़ भी उसी तरफ़ गए हैं। कुछ इलमा ने कहा वो आज़ाद नहीं होती और उसकी बेअ जाइज़ है। तरजीह क़ौले अब्वल को हासिल है। क़यामत की निशानी वाली हदीष इमाम बुखारी (रह.) इसलिये लाए ताकि इशारा उम्मे वलद की बेअ जाइज़ नहीं और उम्मे वलद का बिकना या उसका अपनी औलाद को मिल्क में रहना क़यामत की निशानी है।

इमाम क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, व फ़द इख़तलफ़स्सलफ़ वल्ख़लफ़ फ़ी इत्कि उम्मिलवलद व फ़ी जवाज़ि बैइहा फ़प्राबितु अन उमर अदमु जवाज़ि बैइहा अल्ख़ या'नी सल्फ़ और ख़ल्फ़ का उम्मे वलद की आज़ादी और उसकी बेअ के बारे में इख़ितलाफ़ है। हज़रत उमर (रज़ि.) से उसका अदमे जवाज़ प्राबित है। ये भी मरवी है कि अहदे रिसालत में फिर अहदे सिद्दीकी में उम्मे वलद को ख़रीद व फ़रोख़्त हुआ करती थी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहद में कुछ मज़ालेह की बिना पर उनकी बेअ को मन्नुअ क़रार दे दिया। और बाद में हज़रत उमर (रज़ि.) के इस फ़ैसले से किसी ने इख़ितलाफ़ नहीं किया। इस लिहाज़ से हज़रत उमर (रज़ि.) का ये वक्ती फ़ैसला एक इज्माई मसला बन गया है।

क़ालतीबी हाज़ा मिन अव्वहलाइलि अला बुल्तानि बैइ उम्महातिल औलादि व ज़ालिक अन्नस्सहाबत लौ लम यअलमू अन्नल्हक्कु मअ उमर लम यताबज़हु अलैहि व लम यस्कुतू अन्हू (हाशिया बुखारी, जिल्द 1 पेज 344) या'नी तीबी ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) का ये फ़ैसला इस बात की क़वी दलील है कि औलाद वाली लौण्डी का बेचना बातिल है। अगर सहाबा किराम ये न जानते कि हक़ उमर (रज़ि.) के साथ है तो वो न उस बारे में हज़रत उमर (रज़ि.) की इतिबाअ करते और न उस फ़ैसला पर ख़ामोश रहते। पस प्राबित हुआ कि हज़रत उमर (रज़ि.) का फ़ैसला ही हक़ था।

अल्फ़ाज़े हदीष अन तलिदल्अमतु रब्बहा के ज़ेल शारेहीन लिखते हैं, अरब्बु लुगतन अस्सय्यद वल्मालिक वल्मुर्ब्बी वल्मुन्डम वल्मुरादु हाहुना अल्मौला मअनाहु इत्तिसाउल्डुस्लामि व इस्तीलाउ अहलिही अलत्तुकि वत्तिखाज़िहिम सिरारी व इज़ा इस्तीलदल्जारियतु कानल्वलदु बिमन्ज़िलति रब्बिहा लिअन्नहू वलदु सय्यिदिहा व लिअन्नहू फिल्हसबि कअबीहि व लिअन्नल्अमाअ यलिदन्लमुलूक फतसीरुल्इमामु मिन जुम्लतिरिआया औ हुव किनायतन उन उकूकिल्औलादि बिअय्युमिलल्वलदु उम्महू मुआमलतस्सय्यिदि अमतहू (शरह बुखारी) या'नी ख़ लुगत में सय्यद और मालिक और मुर्ब्बी और मुन्डम को कहा जाता है यहाँ मौला मुराद है। या'नी ये कि इस्लाम बहुत से वसीअ हो जाएगा और मुसलमान तुकों पर ग़ालिब आकर उनको गुलाम बना लेंगे और जब लौण्डी बच्चा जने तो गोया उसने खुद अपने मालिक को जन्म दिया। इसलिये कि वो उसके मालिक का बच्चा है या वो हसब में अपने बाप की तरह है या ये कि लौण्डियाँ बादशाहों को जनेंगी पस इमाम भी रिआया में हो जाएंगी। या इस जुम्ले में औलाद की नाफ़र्मानियों पर इशारा है कि

औलाद अपनी माँ के साथ ऐसा करेगी जैसाकि एक लौण्डी के साथ उसका अक़ाबिर बर्ताव करता है। ये भी हो सकता है कि कुर्बे क़यामत की एक ये भी निशानी है कि लौण्डियों की औलाद बादशाह बन जाएगी। वल्लाहु अलम बिस्सवाब

2533. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया इत्बा बिन अबी वक्रास ने अपने भाई सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) को वसियत की थी कि ज़म्आ की बांदी के बच्चे को अपने क़ब्जे में ले लें। उसने कहा था कि वो लड़का मेरा है। फिर जब फ़तहे मक्का के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) (मक्का) तशरीफ़ लाए, तो सअद (रज़ि.) ने ज़म्आ की बांदी के लड़के को ले लिया और रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, अब्द बिन ज़म्आ भी साथ थे। सअद (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरे भाई का लड़का है। उन्होंने मुझे वसियत की थी कि ये उन्हीं का लड़का है। लेकिन अब्द बिन ज़म्आ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरा भाई है। जो ज़म्आ (मेरे वालिद) की बांदी का लड़का है। उन्हीं के फ़ेराश पर पैदा हुआ है। रसूलल्लाह (ﷺ) ने ज़म्आ की बांदी के लड़के को देखा तो वाक़ई वो इत्बा की सूरत पर था। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अब्द बिन ज़म्आ! ये तुम्हारी परवरिश में रहेगा क्योंकि बच्चा तुम्हारी वालिद ही के फ़ेराश में पैदा हुआ है। आपने साथ ही ये भी फ़र्मा दिया कि, ऐ सौदा बिनते ज़म्आ! (उम्मुल मोमिनीन) इससे पर्दा किया कर, ये हिदायत आपने इसलिये की थी कि बच्चे में इत्बा की शबाहत देख ली थी, सौदा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की बीवी थीं। (राजेअ: 2053)

٢٥٣٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي غُرُورَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((أَنَّ عُتْبَةَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ عَهَدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنْ يَقْبِضَ إِلَيْهِ ابْنَ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ قَالَ عُتْبَةُ: إِنَّهُ ابْنِي. فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَمْنُ الْفَتْحِ أَخَذَ سَعْدُ ابْنَ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ فَأَقْبَلَ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَأَقْبَلَ مَعَهُ بَعْدُ بْنُ زَمْعَةَ. فَقَالَ سَعْدُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا ابْنُ أَخِي، عَهْدَ إِلَيَّ أَنَّهُ ابْنُهُ. فَقَالَ عُتْبَةُ بْنُ زَمْعَةَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا أَخِي، ابْنُ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ، وَلَدَ عَلَى فِرَاشِهِ، فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى ابْنِ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ فَإِذَا هُوَ أَشَبُّ النَّاسِ بِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: هُوَ لَكَ يَا عُتْبَةُ بْنُ زَمْعَةَ، مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ وَلَدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِيهِ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَخْبِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ بِنْتُ زَمْعَةَ)). مِمَّا رَأَى مِنْ شَبْهِهِ بَعْتَهُ. وَكَانَتْ سَوْدَةُ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ. (راجع: ٢٠٥٣)

इस हदीष में उम्मे वलद का ज़िक्र है, यहाँ ये हदीष लाने का यही मतलब है।

### बाब 9 : मुदब्बर की बेअ का बयान

### ٩- بَابُ بَيْعِ الْمُدَبَّرِ

मुदब्बर वो गुलाम जिसके लिये आका का फैसला हो कि वो उसकी वफ़ात के बाद आजाद हो जाएगा। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का रुज़्हान और हदीष का मफ़हूम यही बतलाता है कि मुदब्बर की बेअ जाइज़ है। इस बारे में इमाम क़स्तलानी (रह.) ने छः अक़वाल नक़ल किये हैं। आख़िर में लिखते हैं, व क़ालन्नववी अस्सहीहु अन्नल हदीष अला ज़ाहिरिही व अन्नहू यजुज़ु बैअल मुदब्बरि बि कुल्लि हालिम मा लम यमुतिस सय्यदु (क़स्तलानी) या नी नववी ने कहा कि सहीह यही है कि हदीष अपने

जाहिर पर है और हर हाल में मुदब्बर की बेअ जाइज़ है जब तक उसका आक्रा ज़िन्दा है।

2534. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि हममें से एक शख्स ने अपनी मौत के बाद अपने गुलाम की आज़ादी के लिये कहा था। फिर नबी करीम (ﷺ) ने उस गुलाम को बुलाया और उसे बेच दिया। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर वो गुलाम अपनी आज़ादी के पहले ही साल मर गया था। (राजेअ: 2141)

**तशरीह:** उसका नाम यअकूब था। आँहज़रत (ﷺ) ने आठ सौ दिरहम पर या सात सौ या नौ सौ दिरहम पर नईम के हाथ उसको बेच डाला। इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद का मशहूर मज़हब यही है कि मुदब्बर की बेअ जाइज़ है। इन्फ़िया के नज़दीक मुत्लकन मना है और मालिकिया का मज़हब है कि अगर मौला कर्ज़दार हो और दूसरी कोई ऐसी जायदाद न हो जिससे कर्ज़ अदा हो सके तो मुदब्बर बेचा जाएगा वरना नहीं। इन्फ़िया ने मुमानअते बेअ पर जिन हदीषों से दलील ली है वो जईफ़ हैं और सहीह हदीष से मुदब्बर की बेअ का जवाज़ निकलता है मौला की हयात में (वहीदी)

हदीषे हाज़ा से मालिकिया के मसलक को तरजीह मा'लूम होती है क्योंकि हदीष में जिस गुलाम का ज़िक्र है उसकी सूरत तज़रीबन ऐसी ही थी। बहरहाल मुदब्बर को उसका आक्रा अपनी हयात में अगर चाहे तो बेच भी सकता है क्योंकि उसकी आज़ादी मौत के साथ मशरूत है। मौत से पहले उस पर जुम्ला अहकाम बेअ व शरा लागू रहेंगे। वल्लाहु आलम।

### बाब 10 : विलाअ (गुलाम लौण्डी का तरका) बेचना या हिबा करना

### १- بابُ بَيْعِ الْوَلَاءِ وَهَبِهِ

**तशरीह:** यअनी वलाउल्मुअतिक्र व हुव मा इज़ा मातल्मुअतिक्र वरप्रतुन मुअतक्रतुन औ वरप्रतु मुअतिकही कानतिलअरबु तबीइद् व तहिबुहु फनहा अन्दुशशारिउ लिअन्नल्वलाअ कन्नसबि फला यज़ूलु बिइज़ालतिन व फक्रहाउल्हिजाज़ि वल्इराकि मज्मुऊन अला अन्नहू ला यज़ूज़ बैइल्वलाइ व हिबतिही (हाशिया बुखारी) या'नी विलाअ का मा'नी गुलाम या लौण्डी का तरका जब वो मर जाए तो उसका आज़ाद करने वाला उसका वारिष बनो। अरब में गुलाम और आक्रा के इस रिश्ते को बेअ करने या हिबा करने का रिवाज था। शारेअ ने इससे मना कर दिया। इसलिये कि विलाअ नसब की तरह है जो किसी तौर पर भी ज़ाइल नहीं हो सकता। इस पर तमाम फुक्रहा-ए-इराक़ और हिजाज़ का इतिफ़ाक़ है।

2535. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, आप बयान किया करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने विलाअ के बेचने और उसके हिबा करने से मना फ़र्माया था। (दीगर मक्राम: 6756)

2535- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ بَيْعِ الْوَلَاءِ وَعَنْ هَبِهِ)). [أطرافه ١: ٦٧٥٦].

क्योंकि विलाअ एक हक़ है जो आज़ाद करने वाले को उस गुलाम पर हासिल होता है जिसको आज़ाद करे। ऐसे हुक्क की बेअ नहीं हो सकती। मा'लूम नहीं मरते वक़्त उस गुलाम के पास कुछ माल वगैरह रहता है या नहीं।

2536. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे

2536- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ

जरूर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरा (रज़ि.) को मैंने खरीदा तो उनके मालिकों ने विलाअ की शर्त लगाई (कि आजादी के बाद वो उन्हीं के हक में कायम रहेगी) मैंने रसूले करीम (ﷺ) से इसका जिक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उन्हें आजाद कर दो, विलाअ तो उसकी होती है जो क़ीमत अदा करके किसी गुलाम को आजाद कर दे। फिर मैंने उन्हें आजाद कर दिया। फिर नबी करीम (ﷺ) ने बरीरा (रज़ि.) को बुलाया और उनके शौहर के सिलसिले में उन्हें इख़्तियार दिया। बरीरा ने कहा कि अगर वो मुझे फ़लों फ़लों चीज़ भी दें तब भी मैं उसके पास न रहूँगी। चुनाँचे वो अपने शौहर से जुदा हो गई। (राजेअ: 456)

حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ  
الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ:  
«اشْتَرَيْتُ بَرِيرَةَ، فَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا وَلَاءَهَا،  
فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: «أَعْطِيهَا،  
فَإِنَّ الْوَلَاءَ لِمَنْ أُعْطِيَ الْوَرِقَ»۔  
فَأَعْطَيْتُهَا، فَذَاعَاهَا النَّبِيُّ ﷺ فَعَيَّرَهَا مِنْ  
زَوْجِهَا فَقَالَتْ: لَوْ أُعْطَانِي كَذَا وَكَذَا مَا  
ثَبْتُ عِنْدَهُ. فَاخْتَارَتْ نَفْسَهَا»۔

[راجع: 456]

उसके शौहर का नाम मुगीष था। वो गुलाम था। लौण्डी जब आजाद हो जाए तो उसको अपने शौहर की निस्वत जो गुलाम हो इख़्तियार होता है ख़्वाह निकाह बाक़ी रखे या फ़स्ख़ कर दे। एक रिवायत ये भी है कि मुगीष आजाद था मगर क़स्तलानी ने उसके गुलाम होने को सहीह माना है। ये मुगीष बरीरा की जुदाई पर रोता फिरता था। आँहज़रत (ﷺ) ने भी बरीरा (रज़ि.) से सिफ़ारिश की कि मुगीष का निकाह बाक़ी रखे मगर बरीरा ने किसी भी तरह उसके निकाह में रहना मंज़ूर नहीं किया।

**बाब 11 : अगर किसी मुसलमान का मुश्किक भाई या चचा कैद होकर आए तो क्या (उनको छुड़ाने के लिये) उसकी तरफ़ से फ़िदया दिया जा सकता है?**

अनस (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैंने (जंगे बद्र के बाद कैद से आजाद होने के लिये) अपना भी फ़िदया दिया था और अक़ील (रज़ि.) का भी हालाँकि उस ग़नीमत में हज़रत अली (रज़ि.) का भी हिस्सा था जो उनके भाई अक़ील (रज़ि.) और चचा अब्बास (रज़ि.) से मिली थी।

١١- بَابُ إِذَا أَمِيرَ أَخُو الرَّجُلِ أَوْ  
عَمَّهُ هَلَكَ يُفَادَى إِذَا كَانَ مُشْرِكًا؟  
وَقَالَ أَنَسُ: «فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ  
لَاذَيْتُ نَفْسِي وَلَاذَيْتُ عَقِيلًا» وَكَانَ  
عَلَيْ لَهْ نَصِيبٌ فِي بَلْكَ الْقَيْمَةِ الَّتِي  
أَصَابَ مِنْ أَخِيهِ عَقِيلٍ وَعَمِّهِ عَبَّاسٍ۔

**तशरीह :** ये इबारत लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने हन्फ़िया के क़ौल को रद्द किया है जो कहते हैं कि आदमी अगर अपने मह़रम का मालिक हो जाए तो मालिक होते ही वो आजाद हो जाएगा क्योंकि जंगे बद्र में अब्बास (रज़ि.) और अक़ील (रज़ि.) कैद हुए थे और अली (रज़ि.) को उन पर मिल्क का एक हिस्सा हासिल हुआ था। इसी तरह आँहज़रत (ﷺ) को हज़रत अब्बास (रज़ि.) पर मगर उनकी आजादी का हुक्म नहीं दिया गया। हन्फ़िया ये कह सकते हैं कि जब तक ग़नीमत का माल तक्सीम न हो उस पर मिल्क हासिल नहीं हो सकती। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का बाब का मंशा ये है कि जो रहम मह़रम सिर्फ़ मिल्कियत में आ जाने से फ़ौरन आजाद नहीं हो जाता क्योंकि जंगे बद्र में हज़रत अली (रज़ि.) और खुद रसूले करीम (ﷺ) के हाथों आपके मुह़ररम चचा हज़रत अब्बास (रज़ि.) लगे और हज़रत अक़ील (रज़ि.) जो अभी दोनों मुसलमान नहीं हुए थे और ये इस्लामी हुक्मत के कैदी थे। जिनको बाद में फ़िदया ही लेकर आजाद किया गया। पस त्वाबित हुआ कि आदमी अगर किसी अपने ही मह़रम ग़ैर-मुस्लिम का मालिक हो जाए तो वो भी बग़ैर आजाद किए आजादी नहीं पा सकता। यही बाब का मक़सद है। जरक़शी फ़र्माते हैं, मुरादुहु अन्नलअम्म वन्नलअम्मि व नहवहुमा मिन जर्विरहमि ला यअतिक्रानि अला मिम्मिल्किहिमा मिन जवय रहमिहिमा

लिअन्नन्नबिय्य (ﷺ) कद मलक अम्मुहूल्अब्बास वब्नु अम्मिही अक्कील बिल्यानीमलिल्लती लहू फीहिमा नसीबुन व कजालिक अ ला व लम यअतिका अलैहिमा खुलासा मतलब वही है जो ऊपर गुजर चुका है।

2537. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन इब्बा ने बयान किया, उनसे मूसा ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार के कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुलाकात की और इजाज़त चाही और आकर अर्ज किया कि आप हमें इसकी इजाज़त दीजिए कि हम अपने भांजे अब्बास का फ़िदया मुआफ़ कर दें आपने फ़र्माया कि नहीं एक दिरहम भी न छोड़ो। (दीगर मक़ाम : 3048, 4018)

۲۵۳۷- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ رَضِيٍّ أَنَّ اللَّهَ عَزَّ: (وَأَنْ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ اسْتَأْذَنُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالُوا: لَنَا فَلَنُؤَلِّكَ لِأَبْنِ أَخِي عُبَّاسٍ فِدَاءً، فَقَالَ: لَا تَذْهَبُونَ مِنْهُ دِرْهَمًا)).

[طرفاه في : ۳۰۴۸، ۴۰۱۸].

**तशरीह :** हज़रत अब्बास (रज़ि.) के वालिद अब्दुल मुत्तलिब की वालिदा सलमा अंसार में से थीं, बनी नज्जार के कबीले की। इसलिये उनको अपना भांजा कहा। सुबह नल्लाह! अंसार का अदब! यूँ नहीं अर्ज किया, अगर आप इजाज़त दें तो आपके चचा को फ़िदया मुआफ़ कर दें। क्योंकि ऐसा कहने से गोया औहज़रत (ﷺ) पर एहसान रखना होता। औहज़रत (ﷺ) ख़ूब जानते थे कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) मालदार हैं। इसलिये फ़र्माया कि एक रुपया भी उनको न छोड़ो। ऐसा अदल इस्माफ़ कि अपना सगे चचा तक को भी कोई रिआयत न की पैग़म्बर की खुली हुई दलील है। समझदार आदमी को पैग़म्बरी के पुबूत के लिये किसी बड़े मुअजिजे की ज़रूरत नहीं। आपकी एक एक ख़सलत हज़ार हज़ार मुअजिजों के बराबर थी। इस्माफ़ ऐसा, अदल ऐसा, सखावत ऐसी, शुजाअत ऐसी, सन्न ऐसी, इस्तिक्लाल ऐसा कि सारा मुल्क मुख़ालिफ़ हर कोई जान का दुश्मन, मगर इलानिया तौहीद का वा'ज़ फ़र्माते रहे, बुतों की हिज्व (बुराई) करते रहे। आख़िर में अरबों ऐसे सख़्त लोगों की कायापलट दी, हज़ारों बरस की आदत बुत-परस्ती छुड़ाकर उन्हीं के हाथों उनके बुतों को तुड़वाया। फिर आज तेरह सौ बरस गुजर चुके, आपका दीन शरकन व गर्बन फैल रहा है। क्या कोई झूठा आदमी ऐसा कर सकता है झूठे आदमी का नाम नेक इस तरह पर कायम रह सकता है। (वहीदी)

ऐसी फ़र्माते हैं वख़्तुलिफ़ फ़ी इल्लतिल्मनइ फ़क्कील अन्नहू कान मुशरिकन व क़ील मनअहुम ख़श्यतन अन्ध्यक़अ फ़ी कुलूबि बअज़िल्मुस्लिमीन शौउन या'नी आप (ﷺ) ने क्यूँ मना फ़र्माया उसकी इल्लत में इख़ितलाफ़ है। कुछ ने कहा इसलिये कि उस वक़्त हज़रत अब्बास (रज़ि.) मुशरिक थे। और ये भी कहा गया कि आपने इसलिये मना फ़र्माया कि किसी मुसलमान के दिन में कोई बदगुमानी पैदा न हो कि आप (ﷺ) ने अपने चचा के साथ नारवा रिआयत का बर्ताव किया।

## बाब 12 : मुशरिक गुलाम को आजाद करने का प्रवाब मिलेगा या नहीं ?

## ۱۲- بَابُ عِتْقِ الْمُشْرِكِ

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद ये है कि ख़्वाह गुलाम मुशरिक काफ़िर ही क्यूँ न हो, उसको आजाद करना भी नेकी है। मा'लूम हुआ कि जो मसाइल इंसानी मफ़ादे आम्मा (सार्वजनिक हित) के बारे में हैं उनमें इस्लाम ने मज़हबी तअस्सुब से बाला होकर महज़ इंसानी नुक़्त-ए-नज़र से देखा है। यही इस्लाम के दीने फ़ितरत होने की दलील है, काश! मरिबजदा (पाश्चात्य) लोग इस्लाम का बग़ैर मुतालाआ करके हक़ीक़ते हक़ से वाक़फ़ियत (जानकारी) हासिल करें।

2538. हमसे इब्बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने अपने कुफ़्र के ज़माने

۲۵۳۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي أَنَّ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

में सौ गुलाम आजाद किये थे और सौ ऊँट लोगों को सवारी के लिये दिये थे। फिर जब इस्लाम लाए तो सौ ऊँट लोगों को सवारी के लिये दिये और सौ गुलाम आजाद किये। फिर उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, या रसूलुल्लाह! कुछ उन नेक आमाल के बारे में आपका फ़त्वा क्या है जिन्हें मैं बनिय्यते प्रवाब कुफ़्र के ज़माने में किया करता था। (हिशाम बिन इव्राहिम ने कहा कि अतहन्नषु बिहा के मा'नी अतबररू बिहा के हैं) उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, जो नेकियाँ तुम पहले कर चुके हो, वो सब फ़ायम रहेंगी। (राजेअ: 1436)

أَخَذَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ مِائَةَ رَقَبَةٍ، وَحَمَلَ عَلَى مِائَةِ بَعِيرٍ فَلَمَّا أَسْلَمَ حَمَلَ عَلَى مِائَةِ بَعِيرٍ وَأَخَذَ مِائَةَ رَقَبَةٍ. قَالَ: لَمَّا سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرَأَيْتَ أَشْيَاءَ كُنْتُ أَصْنَعُهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ كُنْتُ أَتَحَسُّ بِهَا - يَعْنِي أَنْبَرُ بِهَا - قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَسْلَمْتَ عَلَى مَا سَلَفَ لَكَ مِنْ خَيْرٍ)).

[راجع: 1436]

**तशरीह:** ये अल्लाह जल्ला जलालुहू की इनायत है अपने मुसलमान बन्दों पर हालाँकि काफ़िर की कोई नेकी मक्बूल नहीं और आखिरत में उसको प्रवाब नहीं मिलने का। मगर जो काफ़िर मुसलमान हो जाए उसके कुफ़्र के ज़माने की नेकियाँ भी फ़ायम रहेंगी। अब जिन इस्लाम ने इस हदीस के खिलाफ़ राय लगाई है उनसे ये कहना चाहिये कि आखिरत का हाल नबी करीम (ﷺ) तुमसे ज़्यादा जानते थे। जब अल्लाह एक फ़ज़ल करता है तो तुम क्यों उसके फ़ज़ल को रोकते हो। अम् यह सुदूननास अला मा आताहुमुल्लाहु मिन फ़ज़िलही (अन निसा: 54) (वहीदी)

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) वो जलीलुल क़द्र बुजुर्ग, सखी तर सहाबी हैं जिन्होंने इस्लाम से पहले सौ ऊँट लोगों की सवारी के लिये दिये थे और सौ गुलाम आजाद किये थे। फिर अल्लाह ने उनको दौलत इस्लाम से नवाज़ा तो उनको खयाल आया कि क्यों इस्लाम में भी ऐसे ही नेक काम किये जाएँ। चुनाँचे मुसलमान होने के बाद फिर सौ ऊँट लोगों की सवारी के लिये दिये और सौ गुलाम आजाद किये। कहते हैं कि ये सौ ऊँट दोनों ज़मानों में उन्होंने हाजियों की सवारी के लिये पेश किये थे। फिर उनको मक्का शरीफ़ में कुर्बान किया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बशारत दी कि इस्लाम लाने के बाद उनकी कुफ़्र के दौर की भी सारी नेकियाँ प्राबित रहेंगी और अल्लाह पाक सबका प्रवाब अज़ीम उनको अज़ा करेगा। इससे मक्क़सदे बाब प्राबित हुआ कि मुसिक, काफ़िर भी अगर कोई गुलाम आजाद करे तो उसका नेक अमल सहीह क़रार दिया जाएगा। ग़ैर-मुस्लिम जो नेकियाँ करते हैं उनको दुनिया में उनकी जज़ा मिल जाती है, वमा लहु फ़िल् आख़िरति मिन नसीब. (अश्शूरा: 20) या'नी आख़िरत में उनका कोई हिस्सा बाक़ी नहीं है।

**बाब 13 : अगर अरबों पर जिहाद हो और कोई उनको गुलाम बनाए फिर हिबा करे या अरबी लौण्डी से जिमाअ करे या फ़िदया ले ये सब बातें दुरुस्त हैं या बच्चों को कैद करे**

और अल्लाह तआला ने सूरह नहल में फ़र्माया, अल्लाह तआला ने एक मम्लूक गुलाम की मिसाल बयान की है जो बेबस हो और एक वो शख्स जिसे हमने अपनी तरफ़ से रोज़ी दी हो, वो उसमें पोशोदा और ज़ाहिर खर्च करता हो क्या ये दोनों शख्स बराबर हो सकते हैं (हर्गिज़ नहीं) तमाम ता'रीफ़ अल्लाह के लिये है मगर

۱۳- بَابُ مَنْ مَلَكَ مِنَ الْعَرَبِ  
وَبَاغٍ وَجَامِعٍ وَفَدَى وَسَيَ الدُّرِّيَّةِ  
رَقِيقًا فَوْهَبَ

وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿مَنْ مَلَكَ مِنَ الْعَرَبِ مِثْلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرَ عَلَى شَيْءٍ، وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنْ رِزْقِنَا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا، هَلْ يَسْتَوُونَ؟ الْحَمْدُ لِلَّهِ، بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا

अक़बर लोग नहीं जानते। (अन्-नहल : 75)

يَعْلَمُونَ ﴿[النحل : 75]

कि हम्द की हकीकत क्या है और गैरुल्लाह जो अपने लिये हम्द का दावेदार हो वो किस क़दर अहमक और बेअक़ल है।

2539, 40. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि मुझे लैष ने ख़बर दी, उन्हें अक़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने कि इब्ने ने ज़िक्र किया कि मरवान और मिस्वर बिन मख़रमा ने उन्हें ख़बर दी कि जब हवाज़िन क़बीला के भेजे हुए लोग (मुसलमान होकर) ओहज़रत (ﷺ) के पास आए। आपने खड़े होकर उनसे मुलाक़ात की, फिर उन लोगों ने आप (ﷺ) के सामने दरख़वास्त की कि उनके अम्वाल और क़ैदियों को वापस कर दिये जाएँ। आप (ﷺ) खड़े हुए (ख़ुत्बा सुनाया) आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम देखते हो मेरे साथ जो लोग हैं। (मैं अकेला होता तो तुमको वापस कर देता) और बात वही मुझे पसन्द है जो सच हो। इसलिये दो चीज़ों में से एक ही तुम्हें इख़्तियार करनी होगी, या अपना माल वापस ले लो, या अपने क़ैदियों को छोड़ा लो, इसीलिये मैंने उनकी तक्सीम में भी देर की थी। नबी करीम (ﷺ) ने त्राईफ़ से लौटते हुए (जिअराना में) हवाज़िन वालों का वहाँ पर कई रातों तक इतिज़ार किया था। जब उन लोगों पर ये बात पूरी तरह ज़ाहिर हो गई कि नबी करीम (ﷺ) दो चीज़ों (माल और क़ैदी) में से सिर्फ़ एक ही को वापस कर सकते हैं। तो उन्होंने कहा कि हमें हमारे आदमी ही वापस कर दीजिए जो आपकी क़ैद में हैं। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) ने लोगों से ख़िताब फ़र्माया, अल्लाह की ता'रीफ़ उसकी शान के मुताबिक़ करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअद! ये तुम्हारे भाई हमारे पास नादिम होकर आए हैं और मेरा भी ख़याल ये है कि इनके आदमी जो हमारे क़ैद में हैं, इन्हें वापस कर दिये जाएँ। अब जो शख़्स अपनी खुशी से इनके आदमियों को वापस करे वो ऐसा कर ले और जो शख़्स अपने हिस्से को छोड़ना न चाहे (और इस शर्त पर अपने क़ैदियों को आज़ाद करने के लिये तैयार हो कि उन क़ैदियों के बदले में) हम उसे उसके बाद सबसे पहली ग़नीमत में से जो अल्लाह तआला हमें देगा उसके (उस) हिस्से के बदले उसके हवाले कर देंगे तो वो ऐसा कर ले। लोग इस पर बोल पड़े कि हम अपनी खुशी से क़ैदियों को वापस करने के लिये तैयार हैं।

٢٥٣٩، ٢٥٤٠ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ : أَخْبَرَنِي اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ جِهَابٍ قَالَ : ذَكَرَ عُرْوَةُ أَنَّ مَرْوَانَ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا جِئْنَا جَاءَهُ وَقَدْ هَوَّازِنَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يُرَدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالُهُمْ وَسَيِّئُهُمْ، فَقَالَ : ((إِنْ مَعِيَ مِنْ تَرَوْنِ، وَأَحَبُّ الْحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَاسْتَخَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ إِمَّا التَّمَالَ وَإِمَّا السَّيِّئِ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِهِمْ)) - وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ انْتَقَرَهُمْ بَعْضَ عَشْرَةِ لَيْلَةٍ جِئْنَا فَقُلَّ مِنَ الطَّائِفَةِ - فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَيْرَ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلَّا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا : فَإِنَّا نَخْتَارُ سَيِّئًا. فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ : ((أَنَا بَعْدُ فَإِنْ إِخْوَانَكُمْ جَاءُوا تَابِعِينَ، وَإِنِّي رَأَيْتُ أَنْ أُرَدَّ إِلَيْهِمْ سَيِّئُهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطِيبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نَقْطِعَ إِلَيْهِ مِنْ أَوَّلِ مَا يُعِيرُهُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ : طَيِّبًا ذَلِكَ. قَالَ : ((إِنَّا لَا نَعْرِئُ مَنْ أَدِنَ مِنْكُمْ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنَ. فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا غَرْفَاءُكُمْ أَمْرَكُمْ)). فَارْجَعَ النَّاسُ، فَكَلَّمَهُمْ غَرْفَاءُكُمْ. ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا.



आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, लेकिन हम पर ये ज़ाहिर न हो सका कि किसने हमें इजाज़त दी है और किसने नहीं दी है। इसलिये सब लोग (अपने ख़ुशियों में) वापस जाएँ और सबके चौधरी आकर उनकी राय से हमें आगाह करें। चुनौचे सब लोग चले गये और उनके सरदारों ने (उनसे बातचीत की) फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको ख़बर दी कि सबने अपनी ख़ुशी से इजाज़त दे दी है। यही वो ख़बर है जो हमें हवाज़िन के कैदियों के सिलसिले में मा'लूम हुई है। (ज़ुहरी ने कहा) और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से (जब बहरीन से माल आया) तो कहा था कि (बद्र के मौक़े पर) मैंने अपना भी फ़िदया दिया था और अक़ील (रज़ि.) का भी।

(राज़ेअ: 2307, 2308)

فَهَذَا الَّذِي بَلَّغْنَا عَنْ سَيِّ هَوَازِنَ. وَقَالَ  
أَنَسٌ قَالَ قَالَ عَبَّاسٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: فَأَذَيْتَ نَفْسِي  
وَأَذَيْتَ عَقِيلًا.

[راجع: 2307, 2308]

**तशरीह:** ये तवील हदीष हज़रत इमाम बुखारी (रह.) कई जगह लाए हैं और इससे पहले आपने बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया (निष्कर्ष निकाला) है। हज़रत इमाम ने बाब मुनअक़िदा के ज़ेल आयते कुआनी को मक़ल किया जिससे आपने बाब का मतलब यूँ प्राबित किया कि आयत में ये कैद नहीं है कि वो गुलाम अरब का न हो, अज़मी और अरबी दोनों शामिल हैं।

हदीष में अरबी क़बीले हवाज़िन के कैदियों का ज़िक्र है जो जंगे हवाज़िन में कामयाबी के बाद मुसलमानों के हाथ लगे थे। इससे भी मक़सद बाब प्राबित हुआ कि लौण्डी गुलाम बवक़ते मुनासिब अरबों को भी बनाया जा सकता है। जब आप (ﷺ) उस जंग से फ़ारिग होकर वापस हुए तो आप (ﷺ) ने अंदाज़ा कर लिया था कि क़बीला हवाज़िन वाले जल्दी ही इस्लाम कुबूल करके अपने कैदियों का मुतालबा करने आएँगे। चुनौचे यही हुआ। अभी आप वापस ही हुए थे कि वफ़दे हवाज़िन अपने ऐसे ही मुतालबात लेकर हाज़िर हो गया। आप (ﷺ) ने उनके मुतालबात में से सिर्फ़ कैदियों की वापसी का मुतालबा मंज़ूर फ़र्माया मगर इस शर्त पर कि दूसरे तमाम मुसलमान भी इस पर तैयार हो जाएँ। चुनौचे तमाम अहले इस्लाम उन गुलामों को वापस करने पर तैयार हो गए। मगर ये लोग शुमार में बहुत थे इसलिये उनमें से हर एक की रज़ामन्दी फ़र्दन फ़र्दन मा'लूम करनी ज़रूरी थी। आपने ये हुक्म दिया कि तुम जाओ और अपने अपने चौधरियों से जो कुछ तुमको मंज़ूर हो वो बयान करो, हम उनसे पूछ लेंगे। चुनौचे यही हुआ और आँहज़रत (ﷺ) ने उनके सारे मर्दों औरतों को वापस कर दिया।

बहरीन के माल की आमद पर आँहज़रत (ﷺ) ने तक्सीम के लिये ऐलाने आम फ़र्मा दिया था, उस वक़्त हज़रत सय्यदना अब्बास (रज़ि.) ने उस माल की दरख्वास्त के साथ कहा था कि मैं इसका बहुत ज़्यादा मुस्तहक़ हूँ, क्योंकि बद्र के मौक़े पर मैं न सिर्फ़ अपना बल्कि हज़रत अक़ील (रज़ि.) का भी फ़िदया अदा करके ख़ाली हाथ हो चुका हूँ। इस पर आप (ﷺ) ने उनको इजाज़त दे दी थी कि वो जिस क़दर चाहें रुपया खुद आप उठा सकें, ले जाएँ। उसी तरफ़ इशारा है और ये भी कि अरबों को भी बहालते मुकर्ररा गुलाम बनाया जा सकता है कि जंगे बद्र में हज़रत अब्बास (रज़ि.) और हज़रत अक़ील (रज़ि.) जैसे अशराफ़े कुरैश को भी दौरे गुलामी से गुजरना पड़ा। काश! ये मुअज़्ज़ज़ हज़रत शुरू में ही इस्लाम से मुशरफ़ हो जाते। मगर सच है, इन्नका ला तहदी मन अहबबत वला किन्नल्लाह यहदी मय्यशाउ. (अल् क़सस: 56)

2541. हमसे अली बिन हसन ने बयान किया, कहा हमको

۲۵۴۱- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ قَالَ

अब्दुल्लाह ने खबर दी, कहा हमको इब्ने औन ने खबर दी, उन्होंने बयान किया कि मैंने नाफ़ेअ (रह.) को लिखा तो उन्होंने मुझे जवाब दिया कि नबी करीम (ﷺ) ने बन् अल मुस्तलिक पर जब हमला किया तो वो बिलकुल शफ़िल थे और उनके मवेशी पानी पी रहे थे। उनके लड़ने वालों को क़त्ल किया गया, और तों बच्चों को कैद कर लिया गया। उन्हीं कैदियों में जुवैरिया (रज़ि.) (उम्मुल मोमिनीन) भी थीं। (नाफ़ेअ ने लिखा था कि) ये हदीष मुझसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान की थी, वो खुद भी इस्लामी फ़ौज के साथ थे।

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُثْمَانَ قَالَ: ((كُنْتُ إِلَى نَافِعٍ، فَكَتَبَ إِلَيَّ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَغَارَ عَلَى بَنِي الْمُصْطَلِقِ وَهُمْ غَارُونَ وَأَنفَامُهُمْ تُسْقَى عَلَى الْمَاءِ، فَكُلَّ مُقَاتِلَتُهُمْ وَسَيَّ ذُرَارِيَهُمْ وَأَصَابَ يَوْمَئِذٍ جَوَيْرِيَّةٌ. حَدَّثَنِي بِهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، وَكَانَ فِي ذَلِكَ الْحَيْثُ)).

हज़रत जुवैरिया (रज़ि.) हारिष बिन अबी ज़ेरार की बेटी थीं। उनका बाप बनी मुस्तलिक का सरदार था। कहते हैं पहले ये प्राबित बिन कैस के हिस्से में आईं। उन्होंने उनको मुक़ातब कर दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने बदले-किताबत अदा करके उनसे निकाह कर लिया और आप (ﷺ) के निकाह कर लेने की वजह से लोगों ने बनी मुस्तलिक के कुल कैदियों को आज़ाद कर दिया, इस ख़याल से कि वो आँहज़रत (ﷺ) के रिश्तेदार हो गए। (वहीदी)

बन् मुस्तलिक अरब क़बीला था जिसे गुलाम बनाया गया था। इसी से बाब की मुताबकत प्राबित हुई कि अरबों को भी लौण्डी गुलाम बनाया जा सकता है अगर वो काफ़िर हों और इस्लामी हुकूमत के मुक़ाबले पर लड़ने को आएँ।

2542. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने, उन्हें मुहम्मद बिन यह्या बिन हब्बान ने, उनसे इब्ने मुहैरीज़ ने कि मैंने अबू सईद (रज़ि.) को देखा तो उनसे एक सवाल किया, आपने जवाब में कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़ा बनी मुस्तलिक के लिये निकले। उस ग़ज़वे में हमें (क़बीला बनी मुस्तलिक के) अरब कैदी हाथ आए। (रास्ते ही में) हमें औरतों की ख़्वाहिश हुई और औरत से अलग रहना हमको मुश्किल हो गया। हमने चाहा कि अज़ल कर लें। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया, तुम अज़ल कर सकते हो, उसमें कोई क़बाहूत नहीं लेकिन जिन रूहों की भी क़यामत तक के लिये पैदाइश मुक़द्दर हो चुकी है वो तो ज़रूर पैदा होकर रहेंगी। (लिहाज़ा तुम्हारा अज़ल करना बेकार है) (राजेअ: 2229)

٢٥٤٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانٍ عَنْ ابْنِ مُحَيْرِيزٍ قَالَ: رَأَيْتُ أَبَا سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَأَصَبْنَا سَبَاً مِنْ سَبَى الْقُرْبِ لَأَشْتَهَيْنَا النِّسَاءَ فَأَشْتَدَّتْ عَلَيْنَا الْغُرْبَةُ وَأَحْبَبْنَا الْغَزَلَ، فَسَأَلْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا عَلَيْكُمْ أَنْ لَا تَفْعَلُوا، مَا مِنْ نَسَمَةٍ كَاتِبَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا وَهِيَ كَاتِبَةٌ)).

[راجع: ٢٢٢٩]

**तशरीह:** अज़ल कहते हैं इज़ाल के वक़्त ज़कर बाहर निकाल लेने को ताकि रहम में मनी न पहुँचे और औरत को हमल न रहे। आँहज़रत (ﷺ) ने उसको पसन्द नहीं फ़र्माया, इसीलिये इश्राद हुआ कि तुम्हारे अज़ल करने से मुक़द्दरे इलाही के मुताबिक़ पैदा होने वाले बच्चे की पैदाइश रुक नहीं सकती। अज़ल को आम तौर पर मकरूह समझा गया, क्योंकि उसमें क़त्ल और तक्लीले नस्ल है। बहलालते मौजूदा जो फैमिली प्लानिंग के नाम से तक्लीले नस्ल के प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं, शरीअते इस्लामी से इसका अलल इत्लाक़ जवाज़ दूँदना सहीह नहीं है बल्कि ये क़त्ल नस्ल ही की एक सूत है।

2543. हमसे जुहर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे जरि बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे अम्मार बिन कअक्राअ, उनसे अबू जरआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं बनू तमीम से हमेशा मुहब्बत करता रहा हूँ। (दूसरी सनद इमाम बुखारी रह. ने कहा) मुझसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको जरि बिन अब्दुल हमीद ने ख़बर दी, उन्हें मुगीरह ने, उन्हें हारिष ने, उन्हें अबू जरआ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, (तीसरी सनद) और मुगीरह ने अम्मार से रिवायत की, उन्होंने अबू जरआ से कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया, तीन बातों की वजह से जिन्हें मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, मैं बनू तमीम से हमेशा मुहब्बत करता हूँ। रसूले करीम (ﷺ) ने उनके बारे में फ़र्माया कि ये लोग दज्जाल के मुकाबले में मेरी उम्मत में सबसे ज़्यादा सख़्त मुख़ालिफ़ होंगे। उन्होंने बयान किया कि (एक बार) बनू तमीम के यहाँ से ज़कात (वसूल होकर आई) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ये हमारी क़ौम की ज़कात है। बनू तमीम की एक औरत क्रैद होकर हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसे आज़ाद कर दे कि ये हज़रत इस्माईल (अलै.) की औलाद में से है।

٢٥٤٣ - حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ عَمَارَةَ بْنِ الْقُتَيْبِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «لَا أَرَانِ أَحَبَّ إِلَيَّ نَجْمٍ . . ح . . وَحَدَّثَنِي ابْنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ عَنْ الْمُفَيْزَةِ عَنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ . . ح . . وَغَنَ عَمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: «مَا زِلْتُ أَحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ مِنْذُ لَمَسْتُ سَمْعَتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لِيهِمْ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: «مَنْ أَحَدُ أَقْبَى عَلَى الدُّجَالِ» قَالَ: وَجَاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «هَذِهِ صَدَقَاتُ قَوْمِنَا». وَكَانَ مَسْبِيَةً مِنْهُمْ عِنْدَ غَابِثَةٍ فَقَالَ: «أَخْبِئْهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ».

[طرفه ٣ : ٤٣٦٦.]

**तरीह:** इस हदीष में ज़िक्र है कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक लौण्डी औरत के आज़ाद करने का हज़रत आइशा (रज़ि.) को हुक्म दिया और साथ ही इशारा हुआ कि ये औरत हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के ख़ानदान से रिश्ता रखती है। लिहाज़ा मुअज़्ज़तरीन ख़ानदानी औरत है उसे आज़ाद कर दो। इससे मक़सदे बाब प़ाबित हुआ कि अरबों को भी गुलाम बनाया जा सकता है। इस औरत का ता'ल्लुक बनी तमीम से था और बनू तमीम के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने ये शर्फ़ अता फ़र्माया कि उनको अपनी क़ौम क़रार दिया, क्योंकि ये एक अज़ीम अरब क़बीला था जो तमीम बिन मुरह की तरफ़ मन्सूब था। जिसका नसबनामा यूँ रसूले करीम (ﷺ) से मिलता है। तमीम बिन मुरह बिन अद बिन तान्हा बिन इल्यास बिन जु. यहाँ पहुँचकर ये नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) से मिल जाता है।

इस क़बीले ने बाद में इस्लाम कुबूल कर लिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत में दज्जाल के मुकाबले पर ये क़बीला बहुत सख़्त होगा जो लड़ाई में सख़्ती के साथ दज्जाल का मुकाबला करेगा। एक बार बनू तमीम की ज़कात वसूल होकर दरबारे रिसालत में पहुँची तो आपने अज़राहे करम फ़र्माया कि ये हमारी क़ौम की ज़कात है। आँहज़रत (ﷺ) ने बहालते कुफ़ भी इस ख़ानदान की इस क़दर इज़्जत अफ़ज़ाई की कि इससे ता'ल्लुक रखने वाली एक लौण्डी ख़ातून को आज़ाद कर दिया और फ़र्माया कि ये औलादे इस्माईल में से है।

इस हदीष से नस्बी शराफ़त पर भी काफ़ी रोशनी पड़ती है। इस्लाम ने नस्बी शराफ़त में गुलू से मना फ़र्माया है और हदे ए' तिला में नस्बी शराफ़त को आपने कायम रखा है जैसा कि इस हदीष से पीछे मज़कूर शुदा वाक़ियात से प़ाबित है कि आप (ﷺ) ने जंगे हुनैन के मौक़े पर अपने आपको अब्दुल मुतलिब का फ़रज़न्द होने पर इन्हारे फ़ख़र फ़र्माया था। मा'लूम हुआ कि इस्लाम से पहले के ग़ैर-मुस्लिम आबा व अज्दाद (पूर्वजों) पर एक मुनासिब हद तक फ़ख़र किया जा सकता है लेकिन

अगर यही फ़ख़ बाज़िषे घमण्ड व गुरूर बन जाए कि दूसरे लोग निगाह में हकीर नज़र आएँ तो इस हालत में खानदानी फ़ख़ कुफ़ का शैवा है, जो मुसलमान के लिये हर्गिज़ लायक नहीं। फ़ताहे मक्का पर आँहज़रत (ﷺ) ने कुरैश की इस नुखुव्वत के खिलाफ़ इन्हारे नाराज़गी फ़र्माकर कुरैश को आगाह फ़र्माया था कि कुल्लुकुम बनू आदम व आदमु मिन तुराब तुम सब आदम की औलाद हो और आदम की पैदाइश मिट्टी से हुई है।

### बाब 14 : जो शख़्स अपनी लौण्डी को अदब और इल्म सिखाए, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

2544. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन फुज़ैल से सुना, उन्होंने मुत्तरफ़ से सुना, उन्होंने शअबी से, उन्होंने अबू बुर्दा से, उन्होंने हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स के पास कोई लौण्डी हो और वो उसकी अच्छी परवरिश करे और उसके साथ अच्छा मामला करे, फिर उसे आज़ाद करके उससे निकाह कर ले तो उसको दोहरा इव्बाब मिलेगा। (राजेज़ : 97)

### ١٤- بَابُ فَضْلِ مَنْ أَذَبَ جَارِيَتَهُ وَعَلَّمَهَا

٢٥٤٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ فُضَيْلٍ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : «مَنْ كَانَتْ لَهُ جَارِيَةٌ فَلَمَّمَهَا فَأَحْسَنَ إِلَيْهَا، ثُمَّ أَغْطَهَا وَتَزَوَّجَهَا كَانَ لَهُ أَجْرَانِ» . [راجع : ٩٧]

अल्हम्दुलिल्लाह कि हरमे का'बा मक़तुल मुकर्रमा मे यकुम मुहर्रम 1390 हिजरी में इस पारे के मतन का लफ़ज़-लफ़ज़ पढ़ना, फिर तर्जुमा लिखना शुरू किया था, साथ ही रब्बे का'बा से दुआएँ भी करता रहा कि वो इस अज़ीम ख़िदमत के लिये सहीह फ़हम अता करे। आज 11 मुहर्रम 90 हिजरी को बऔनिही तअ़ाला इस हदीस तक पहुँच गया हूँ। पारा 9, 10 के मतन को का'बा व मदीनतुल मुनव्वरा में बैठकर पढ़ने की नज़्र भी मा'नी थी। अल्लाह का बेहद शुक्र है कि यहाँ तक कामयाबी हो रही है। अल्लाह पाक से दुआ है कि वो बक़ाया को भी पूरा कराए और क़लम में ताक़त और दिमाग़ में कुव्वत अता फ़र्माए, आमीन वुम्मा आमीन।

### बाब 15 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि, गुलाम तुम्हारे भाई हैं पस उनको भी तुम उसी में से खिलाओ जो तुम खुद खाते हो

### ١٥- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ : «إِخْوَانُكُمْ فَأَطِيعُوهُمْ مِمَّا تَأْكُلُونَ»

और अल्लाह तअ़ाला का फ़र्मान कि, और अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक न ठहराओ और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करो और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों के साथ और रिश्तेदार पड़ोसियों और ग़ैर रिश्तेदार पड़ोसियों और पास बैठने वालों और मुसाफ़िर और लौण्डी गुलामों के साथ (अच्छा सुलूक करो) बेशक अल्लाह तअ़ाला उस शख़्स को पसन्द नहीं फ़र्माता जो तकब्बुर करने और अकड़ने वाला और घमण्ड करने वाला हो। (आयत में) ज़िल कुर्बा से

وَقَوْلُهُ تَعَالَى : «وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا، وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ، وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنْبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ، إِنَّ اللَّهَ لَا يُجِبُ مَنْ كَانَ

मुराद रिश्तेदार हैं, जबि से ग़ैर या'नी अजनबी और अल जारुल  
जंबि से मुराद सफ़र का साथी है। (अन निसा : 36)

مُخْتَلًا فَخُورًا  
[النساء : 36]

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने मक़सदे बाब प्राबित करने के लिये आयते कुआनी को नक़ल किया जिसमें बाब का तर्जुमा लफ़्ज़ **वमा मलकत आयमानुकुम** से निकलता है जिससे लौण्डी गुलाम मुराद हैं। उनके साथ हुस्ने सुलूक करना भी इतना ही ज़रूरी है जितना कि दूसरे क़राबतदारों और यतीमों व भिस्कीनों के साथ ज़रूरी है। अहदे रिसालत पनाह वो दौर था जिसमें इंसानों को लौण्डी गुलाम बनाकर जानवरों की तरह ख़रीदा और बेचा जाता था और दुनिया के किसी क़ानून और मज़हब में इसकी रोक-टोक न थी। उन हालात में पैग़म्बरे इस्लाम अलैह अल्फ़ अल्फ़ सलातु वस्सलाम ने अपनी हुस्ने तदबीर के साथ इस रस्म को ख़त्म करने का तरीक़ा अपनाया और इस बारे में ऐसी पाकीज़ा हिदायतें पेश कीं कि आम मुसलमान अपने गुलामों को इंसानियत का दर्जा देते। लिहाज़ा उनको अपने भाई-बन्धु समझने लग गए। उनके साथ हर मुम्किन सुलूके एहसान ईमान का ख़ास्सा बतलाया गया जिसके नतीजे में रफ़ता रफ़ता ये बुरी रस्म इंसानी दुनिया से ख़त्म हो गई। ये उसी पाकीज़ा ता'लीम का अफ़सर था। ये ज़रूर है कि अब गुलामी की और बदतरीन सूरतें वजूद में आ गई हैं।

2545. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, हमसे वासिल बिन हय्यान ने जो कुबड़े थे, बयान किया, कहा कि मैंने मज़रूर बिन सुवैद से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) को देखा कि उनके बदन पर भी एक जोड़ा था। हमने उसका सबब पूछा तो उन्होंने बतलाया कि एक बार मेरी एक साहब (या'नी बिलाल रज़ि. से) से कुछ ग़ाली-ग़लौच हो गई थी। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से मेरी शिकायत की, आप (ﷺ) ने मुझसे पूछा कि क्या तुमने उन्हें उनकी माँ की तरफ़ से झार दिलाई है? फिर आपने फ़र्माया, तुम्हारे गुलाम भी तुम्हारे भाई हैं अगरचे अल्लाह तआला ने उन्हें तुम्हारी मातहत में दे रखा है। इसलिये जिसका भी कोई भाई उसके क़ब्ज़े में हो उसे वही खिलाए जो वो खुद खाता है और वही पहनाए जो वो खुद पहनता है और उन पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ न डाले। लेकिन अगर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ डालो तो फिर उनकी खुद मदद भी कर दिया करो। (राजेअ : 30)

٢٥٤٥- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا وَاصِلُ الْأَخْذَبِ قَالَ: سَمِعْتُ الْمَعْرُورَ بْنَ سُوَيْدٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبَا ذَرٍّ الْغِفَارِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَعَلَيْهِ خَلَّةٌ وَعَلَى غُلَامِيهِ خَلَّةٌ، فَسَأَلْنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: إِنِّي مَاتَيْتُ رَجُلًا فَشَكَائِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ ((أَعَرْتَهُ بِأَمْرِهِ؟)) ثُمَّ قَالَ: ((إِنْ عَوَّانَكُمْ عَوَّانَكُمْ جَعَلَهُمُ اللَّهُ تَحْتَ أَيْدِيكُمْ، فَمَنْ كَانَ آخِرُهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ وَلْيَلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلَا تَكْلَفُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ، فَإِنْ كَلَّفْتُمُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ لَأَعِيبَنَّوَهُمْ)). (راجع: ٣٠)

ताकि वो आसानी से इस ख़िदमत को अंजाम दे सकें।

रिवायत में मज़कूर गुलाम से हज़रत बिलाल (रज़ि.) मुराद हैं। कुछ ने कहा अबू ज़र (रज़ि.) के भाईयों में से कोई थे जैसे मुस्लिम की रिवायत में है। गुलाम को साथ खिलाने का हुक्म इस्तिहबाबन है। हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) अपने गुलाम को साथ ही खिलाते और अपने ही जैसा कपड़ा पहनाते थे। आयते बाब में ज़िल् कुर्बा से रिश्तेदार मुराद हैं। ये इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है, उसको अली बिन अबी तलहा ने बयान किया और जंबि से कुछ ने यहूदी और नज़रानी मुराद रखा है। ये

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने निकाला। और जारुल जम्ब की जो तफसीर इमाम बुखारी (रह.) ने की है वो मुजाहिद और कतादा से मन्कूल है। इस हदीष से उन मुआनिदीने इस्लाम (इस्लाम के निंदकों) की भी तर्दीद होती है जो इस्लाम पर गुलामी का इल्ज़ाम लगाते हैं। हालाँकि रस्मे गुलामी की जड़ों को इस्लाम ही ने खोखला किया है।

**बाब 16 : जब गुलाम अपने रब की इबादत भी अच्छी तरह करे और अपने आक्रा की ख़ैर ख़्वाही भी तो उसके प्रवाब का बयान**

2546. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने नाफ़ेअ से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गुलाम जो अपने आक्रा का ख़ैर ख़्वाह भी और अपने रब की इबादत भी अच्छी तरह करता हो तो उसे दो गुना प्रवाब मिलता है। (दीगर मक़ाम : 2550)

**तशरीह :** आँहज़रत (ﷺ) ने जहाँ मालिकों को अपने लौण्डी गुलामों के साथ एहसान व सुलूक करने की हिदायत फ़र्माई वहाँ लौण्डी गुलामों को भी अहसन तरीक़े पर समझाया कि वो इस्लामी फ़राइज़ की अदायगी के बाद अपना अहम फ़रीज़ा अपने मालिकों की ख़ैर-ख़्वाही करें, उनको नफ़ा-रसानी समझें। मालिक और आक्रा के भी हुक्क हैं। उनके साथ वफ़ादारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। उनके लिये ज़रर-रसानी का कभी तसव्वुर भी न करें। वो ऐसा करेंगे तो उनको दोगुना प्रवाब मिलेगा। फ़राइज़े इस्लामी की अदायगी का प्रवाब और अपने मालिक की ख़िदमत का प्रवाब, उसी दोगुने प्रवाब का तसव्वुर था जिस पर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने वो तमन्ना ज़ाहिर फ़र्माई जो अगली रिवायत में मज़कूर है।

2547. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान धौरी ने ख़बर दी सालेह से, उन्होंने शअबी से, उन्होंने अबू बुर्दा से और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस किसी के पास भी कोई बांदी हो और वो उसे पूरे हुस्न व ख़ूबी के साथ अदब सिखाए, फिर आज़ाद करके उससे शादी कर ले तो उसे दोगुना प्रवाब मिलता है और जो गुलाम अल्लाह तआला के हुक्क भी अदा कर ले और अपने आक्राओं के भी तो उसे भी दोगुना प्रवाब मिलता है। (राजेअ : 97)

١٦- بَابُ الْعَبْدِ إِذَا أَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ، وَنَصَحَ سَيِّدَهُ

٢٥٤٦- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْعَبْدُ إِذَا نَصَحَ سَيِّدَهُ وَأَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ كَانَ لَهُ أَجْرُهُ مَرَّتَيْنِ)).

[طرنه ن : ٢٥٥٠].

٢٥٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ صَالِحٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ كَانَتْ لَهُ جَارِيَةٌ أَدَّبَهَا فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا وَأَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا فَلَهُ أَجْرَانِ، وَأَيُّمَا عَبْدٍ أَدَّى حَقَّ اللَّهِ وَحَقَّ مَوْلَاهُ فَلَهُ أَجْرَانِ)).

[راجع : ٩٧]

इस्लामी शरीअत में औरत मर्द सबको ता'लीम देना चाहिये, यहाँ तक कि लौण्डी गुलाम को भी इल्म हासिल कराना हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ है। मगर इल्म वो जिससे शराफ़त और इंसानियत पैदा हो, न आज के इलूमे मुरव्वजा जो इंसान नुमा हैवानों में इज़ाफ़ा कराते हैं। अल्इल्मु क़ाल लिल्लाहि क़ाल रसूलुहु क़ाल स्महाबतु हुम उलुल्इफ़ानि या'नी हकीक़ी इल्म वो है जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) फिर आपके सहाबा ने पेशा फ़र्माया।

2548. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको

٢٥٤٨- حَدَّثَنَا بِشَرُّ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ

अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, कहा हमको यूसुफ ने खबर दी, उन्होंने जुहरी से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गुलाम जो किसी की मिल्कियत में हो और नेकोकार हो तो उसे दो प्रवाब मिलते हैं और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद, हज़्ज और वालिदा की ख़िदमत (की रोक) न होती तो मैं पसन्द करता कि गुलाम रहकर मरूँ।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का मतलब ये है कि गुलाम पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं है, उसी तरह हज़्ज भी। और वो बग़ैर अपने मालिक की इजाज़त के जिहाद और हज़्ज के लिये जा भी नहीं सकता। इसी तरह अपनी माँ की ख़िदमत भी आज़ादी के साथ नहीं कर सकता। इसलिये अगर ये बातें न होती तो मैं आज़ादी की निस्वत किसी का गुलाम रहना ज़्यादा पसन्द करता। क़ाल इब्नु बज़्ज़ाल हुब मिन क़ौलि अबी हुरैरत व कज़ालिक क़ाल हुदाऊदी व गैरहू अन्नहू मुदरज़ुन फिलहदीबि व कद सरह बिल्ददराजिल्डस्माईली मिन तरीक्किन आखर अन अब्दिल्लाहि बिल्मुबारकि बिलफ़िज़ वल्लज़ी नप्सि अबी हुरैरत बियदिही व सरह मुस्लिमुन अयज़न बिज़ालिक (हाशिया बुखारी) या'नी ये क़ौल हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक से सराहतन ये आया है और मुस्लिम में भी ये सराहत मौजूद है। वल्लाहु आलम।

2549. हमसे इस्हाक़ बिन नज़्म ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने आ'मश से, उनसे अबू स़ालेह ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कितना अच्छा है किसी का वो गुलाम जो अपने रब की इबादत तमाम हुस्न व ख़ूबी के साथ बजाए और अपने मालिक की ख़ैर-ख़वाही भी करता रहे।

**बाब 17 : गुलाम पर दस्तदराज़ी करना और यूँ कहना कि ये मेरा गुलाम है या लौण्डी मकरूह है**

हाफ़िज़ ने कहा कि कराहियते तंज़ीही मुराद है क्योंकि गुलाम से अपने को आला समझना एक तरह का तकब्बुर है। गुलाम भी हमारी तरह अल्लाह का बन्दा है। आदमी अपने तई जानवर से भी बदतर समझे गुलाम तो आदमी है और हमारी तरह आदम की औलाद है और गुलाम-लौण्डी इस वजह से कहना मकरूह है कि कोई उससे हक़ीकी मा'नी न समझे क्योंकि हक़ीकी बन्दगी तो सिवाय अल्लाह के और किसी के लिये नहीं हो सकती। (वहीदी)

आगे मुज्ताहिदे मुत्तलक़ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने आयाते कुआनी नक़ल की हैं जिनसे लफ़्ज़े गुलाम, लौण्डी और सय्यद के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल करने का जवाज़ प्राबित किया है। ये सब मिजाज़ी मआनी में हैं। लफ़्ज़ अब्द, मम्लूक और सय्यद आयाते कुआनी व अहदीषे नबवी में मिलते हैं जैसा कि यहाँ मन्कूल हैं, उनसे उन अल्फ़ाज़ का मिजाज़ी मआनी में इस्ते'माल प्राबित हुआ। क़ाल इब्नु बज़्ज़ाल जाज़ अय्यकूलरज़ुलु अब्दी औ अमती बिक़्ौलिही तआला वस्मालिहीन मिन इबादिकुम व अमाइकुम व इन्नमा नहा अन्नहू अला सबीलिल्लिज़ति ला अला सबीलित्तहरीमि व करिह ज़ालिक लिइश्तिराकिल्लफ़िज़ इज़ युक्रालु अब्दुल्लाहि व अमतुल्लाहि फ़अला हाज़ा ला धम्बगित्तस्मिथ्यतु बिनहवि अब्दिरसूलिव अब्दिन्नबिथ्यि व नहव ज़ालिक मिम्मा युज़ाफ़ुलअब्दु फ़ीहि इला गैरिल्लाहि तआला (हाशिया बुखारी)

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لِلْعَبْدِ الْمَمْلُوكِ الصَّالِحِ أَجْرَانِ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، نَوْلَا الْجِهَادِ لِي سَبِيلُ اللَّهِ وَالْحَقُّ وَبُرْ أُمِّي لِأَحَبِّتْ أَنْ أَمُوتَ وَأَنَا مَمْلُوكٌ)).

٢٥٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ تَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ الْأَعْمَشِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِنَبِيِّ ﷺ: ((نَعِمًا لَأَخْلَجَنِي يُخْسِنُ عِبَادَةَ رَبِّي، وَيَنْصَحَ لِسَيِّدِي)).

١٧- بَابُ كِرَاهِيَةِ الطَّوَائِلِ عَلَى الرُّقْبِيِّ، وَقَوْلِهِ عَبْدِي أَوْ أُمِّي

और सूरह नूर में अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, और तुम्हारे गुलामों और तुम्हारी बांदियों में जो नेक बख्त हैं।, और (सूरह नहल में फ़र्माया) मम्लूक गुलाम, नीज़ (सूरह कहफ़ में फ़र्माया) और दोनों (हज़रत यूसुफ़ और जुलेखा) ने अपने आक्रा (अज़ीज़े मिस्र) को दरवाज़े पर पाया। और अल्लाह तआला ने (सूरह निसा में) फ़र्माया, तुम्हारी मुसलमान बांदियों में से। और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। अपने सरदार के लेने के लिये उठो (सअद बिन मुआज़ रज़ि. के लिये) और अल्लाह तआला ने सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया, (यूसुफ़ अलै. ने अपने जेलखाने के साथी से कहा था कि) अपने सरदार (हाकिम) के यहाँ मेरा ज़िक्र कर देना। और नबी करीम (ﷺ) ने (बनू सलमा से दरयाफ़्त किया था कि) तुम्हारा सरदार कौन है?

2550. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या कज़ान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने कहा और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। जब गुलाम अपने आक्रा की ख़ैर-ख़वाही करे और अपने रब की इबादत तमाम हुस्न व ख़ूबी के साथ करे तो उसे दोगुना प्रवाब मिलता है। (राजेअ : 2546)

रिवायत में लफ़ज़ अब्द और सय्यद इस्ते'माल हुए हैं और यही बाब का मक़सद है।

2551. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने बुरैद बिन अब्दुल्लाह से, वो अबू बुर्दा से और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। गुलाम जो अपने रब की इबादत अहसन तरीक़ के साथ बजा लाए और अपने आक्रा के जो उस पर ख़ैर-ख़वाही और फ़र्माबरदारी (के हुक्क हैं) उन्हें भी अदा करता रहे, तो उसे दोगुना प्रवाब मिलता है। (राजेअ : 97)

ये इसलिये कि उसने दो फ़र्ज़ अदा किये। एक अल्लाह की इबादत का फ़र्ज़ अदा किया। दूसरे अपने आक्रा की इताअत की जो शरअन उस पर फ़र्ज़ थी इसलिये उसको दोगुना प्रवाब हासिल हुआ। (फ़तह)

2552. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे

وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ﴾، وَقَالَ: ﴿عَبْدًا مَمْلُوكًا﴾. ﴿وَالْقِيَا سَيِّئًا لَدَىٰ آبَائِهِ﴾. وَقَالَ: ﴿مِنْ قَتَايَكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ﴾. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ﴿قُومُوا إِلَىٰ سَيِّدِكُمْ﴾. ﴿وَإِذَا كُنْتُمْ عِنْدَ رَبِّكُمُ: سَيِّدُكُمْ﴾. ﴿وَمَنْ سَيِّدُكُمْ﴾.

٢٥٥٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَىٰ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ﴿إِذَا نَصَحَ الْعَبْدُ مَوْلَاهُ وَاحْسَنَ عِبَادَةً رَبُّهُ كَانَ لَهُ أَجْرُهُ مَرَّتَيْنِ﴾.

[راجع: ٢٥٤٦]

٢٥٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَلَاءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ﴿الْمَمْلُوكُ الَّذِي يُحْسِنُ عِبَادَةَ رَبِّهِ، وَيُؤَدِّي إِلَىٰ سَيِّدِهِ الَّذِي لَهُ عَلَيْهِ مِنَ الْحَقِّ وَالنَّصِيحَةِ وَالطَّاعَةِ، لَهُ أَجْرَانِ﴾.

[راجع: ٩٧]

٢٥٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ



अब्दुर्रजाक ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने खबर दी, उन्हें हममाम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आपने फ़र्माया। कोई शख्स (किसी गुलाम या किसी भी शख्स से) ये न कहे, अपने ख (मुराद आका) को खाना खिला, अपने ख को बुजू करा। अपने ख को पानी पिला। बल्कि सिर्फ़ मेरे सरदार मेरे आका के अल्फ़ाज़ कहना चाहिये। उसी तरह कोई शख्स ये न कहे। मेरा बन्दा, मेरी बन्दी, बल्कि यूँ कहना चाहिये मेरा छोकरा, मेरी छोकरी, मेरा गुलाम।

الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ مَمَامِ بْنِ مُنَبِّهٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَقُلْ أَحَدُكُمْ: أَطْعِمَ رَتْلَكَ، وَصَيَّ رَتْلَكَ، وَسَقَى رَتْلَكَ. وَيَقُلْ: سَيِّدِي مَوْلَايَ. وَلَا يَقُلْ أَحَدُكُمْ: عَبْدِي، أَمَتِي. وَيَقُلْ: قَلْبِي وَخَلْقِي وَغُلَامِي)).

**तशरीह:** ख का लफ़्ज़ कहने से मना फ़र्माया है। इसी तरह बन्दा और बन्दी कहने से मना किया ताकि शिर्क का शुब्हा न हो, गो ऐसा कहना मकरूह है हाराम नहीं जैसे कुआँन में है, उज्जुलूनी इन्दा रब्बिक (यूसुफ़: 42) कुछ ने कहा पुकारते वक़्त इस तरह पुकारना मना है। गर्ज़ मिजाज़ी मा'नी जब मुराद लिया जाए ग़ायत दर्जा ये फ़ैअल मकरूह होगा और यही वजह है कि इलमा ने अब्दुल्लाही या अब्दुल हुसैन ऐसे नामों का रखना मकरूह समझा है और ऐसे नामों का रखना शिर्क इस मा'नी पर कहा है कि उनमें शिर्क का इहाम या शायबा है। अगर हक्कीकी मा'नी मुराद हो तो बेशक शिर्क है। अगर मिजाज़ी मा'नी मुराद हो तो शिर्क न होगा मगर कराहियत में शक नहीं लिहाज़ा बेहतर यही है कि ऐसे नाम न रखे जाएँ। क्योंकि जहाँ शिर्क का वहम हो वहाँ से बहरहाल परहेज़ बेहतर है। खास तौर पर लफ़्ज़े अब्द ऐसा है जिसकी इज़ाफ़त लफ़्ज़ अल्लाह या रहमान या रहीम वगैरह अस्माउल हुस्ना ही की तरफ़ मुनासिब है। तौहीद व सुन्नत के पैरोकारों के लिये लाज़िम है कि वो ग़ैरुल्लाह की तरफ़ हर्गिज़ अपनी अब्दियत को मन्सूब न करें। इय्याक नअबुदू व इय्याक नस्तईन का यही तकाज़ा है। वल्लाहु हुवल मुवाफ़िक।

2553. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उन्होंने नाफ़ेअ से, वो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने गुलाम का अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया और उसके पास इतना माल भी हो जिससे गुलाम की वाजिबी क़ीमत अदा की जा सके तो उसी के माल से पूरा गुलाम आज़ाद किया जाएगा वरना जितना आज़ाद हो गया हो गया।

٢٥٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَارِثٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ أَعْتَقَ نَفْسِيًّا لَهُ مِنَ الْعَبْدِ، فَكَانَ لَهُ مِنَ الْمَالِ مَا يَبْلُغُ قِيَمَتَهُ يَقُومُ عَلَيْهِ قِيَمَةُ عَدَلٍ وَأَعْتَقَ مِنْ مَالِهِ، وَإِلَّا فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَقَى)).

सिर्फ़ वही हिस्सा उसकी तरफ़ से आज़ाद हो रहेगा। इस हदीस को इसलिये लाए कि इसमें अब्द का लफ़्ज़ गुलाम के लिये आया है। लिहाज़ा मिजाज़न गुलाम के लिये अब्द बोला जा सकता है।

2553. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से हर शख्स हाकिम है और उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। पस लोगों का वाक़ई

٢٥٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْرُورٌ عَنْ رَجْعِهِ)).

अमीर एक हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में उससे सवाल होगा। दूसरे हर आदमी अपने घरवालों पर हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। तीसरी औरत अपने शौहर के घर और उसके बच्चों की हाकिम है उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। चौथा गुलाम अपने आका (सय्यद) के माल का हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। पस जान लो कि तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से उसकी रइय्यत के बारे में (क़यामत के दिन) पूछ होगी। (राजेअ: 893)

لَا أَمِيرَ أَلَيْهِ عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى بَيْتِ بَيْتِهَا وَوَلَدِهِ وَهِيَ مَسْئُولَةٌ عَنْهُمْ، وَالْعَبْدُ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُ. إِلَّا فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ. [راجع: ٨٩٣]

इस रिवायत में भी गुलाम के लिये लफ़्ज़े अब्द और आका के लिये लफ़्ज़े सय्यद का इस्तेमाल हुआ है। इस तरह मिजाज़ी मा'नों में इन अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल करना दुरुस्त है। हज़रत इमाम (रह.) का यही मक़सद है जिसके तहत यहाँ आप ये जुम्ला लाए हैं। इन अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल मना भी है जब हकीकी मअानी मुराद लिये जाएँ और ये उसमें तल्बीक है।

2555, 56. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया जुहरी से, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन ब्रत्बा बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया, कहा मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। जब बांदी ज़िना कराए तो उसे (बतौर सज़ा शरई) कोड़े लगाओ फिर अगर कराए तो कोड़े लगाओ और अब भी अगर कराए तो उसे कोड़े लगाओ। तीसरी या चौथी बार में (आपने फ़र्माया कि) फिर उसे बेच दो, ख़वाह क़ीमत में एक रस्सी ही मिले। (राजेअ: 2152, 2145)

٢٥٥٥، ٥٦ - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي حُمَيْدُ اللَّهِ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَزَيْدُ بْنُ خَالِدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «إِذَا زَنَتِ الْأَمَةُ فَاجْلِدُوهَا ثُمَّ إِذَا زَنَتِ فَاجْلِدُوهَا، ثُمَّ إِذَا زَنَتِ فَاجْلِدُوهَا فِي الثَّالِثَةِ أَوْ الرَّابِعَةِ فَبِعْوهَا وَلَوْ بِعَتَمِينَ». [راجع: ٢١٥٢، ٢١٤٥]

**तशरीह:** इस हदीष को इसलिये लाए कि उसमें लौण्डी के लिये अमत का लफ़्ज़ फ़र्माया है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि इस हदीष के लाने से ये मक़सूद है कि जब लौण्डी ज़िना कराए तो उस पर दस्तदराज़ी से मना नहीं है बल्कि उसको सज़ा देना ज़रूरी है। आख़िर में ये रावी का शक है कि आपने तीसरी बार में बेचने का हुक्म फ़र्माया या चौथी बार में।

इन तमाम रिवायतों के नक़ल करने से हज़रत इमाम (रह.) ने प्राबित फ़र्माया कि मालिकों को गुलामों और लौण्डियों पर बड़ाई न जतानी चाहिये। इंसान होने के नाते सब बराबर हैं। शराफ़त और बड़ाई की बुनियाद ईमान और तक्वा है। हकीकी आका, हाकिम, मालिक सब का सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला है। दुनियावी मालिक और आका सारे मिजाज़ी हैं। आज हैं और कल नहीं। जिन आयात और अह्दादीष में ऐसे अल्फ़ाज़ आकाओं या गुलामों के लिये आए हुए हैं वहाँ मिजाज़ी मअानी मुराद हैं।

बाब 18 : जब किसी का ख़ादिम खाना लेकर आए?

١٨ - بَابُ إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ خَادِمُهُ بِطَعَامِهِ

2557. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि जब किसी का गुलाम खाना लाए और वो उसे अपने साथ (खिलाने के लिये) न बिठा सके तो उसे एक या दो निवाला ज़रूर खिलाए या (आपने लुक़्मा अव लुक़्मतैन के बदल अकलति अव अकलतैन फ़र्माया (या) 'नी एक या दो लुक़्मे) क्योंकि उसी ने उसको तैयार करने की तकलीफ़ उठाई है। (दीगर मक़ाम : 5460)

लफ़ज़ ख़ादिम में गुलाम, नौकर चाकर, शागिर्द सब दाख़िल हो सकते हैं।

**बाब 19 : गुलाम अपने आक्रा के माल का निगहबान है और नबी करीम (ﷺ) ने (गुलाम के) माल को उसी के आक्रा की तरफ़ मन्सूब किया है**

मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब यही है कि मिजाज़ी मअ़ानी में गुलाम-लौण्डी अपने मालिकों को सय्यद के लफ़ज़ से याद कर सकते हैं। जैसा कि यहाँ हदीष में अलफ़ाज़ अलख़ादिमु फ़ी मालि सय्यिदिही राइन में बोला गया है। ये हदीष ज़ामेउस्सहीह में कई जगह नक़ल की गई है और मुज्तहिदे मुत्लक़ ने इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है जैसा कि अपने अपने मक़ाम पर बयान होगा। उन मुअ़ानिदीन, हासिदीन पर अफ़सोस जो ऐसे मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम की दिरायत से इंकार करके ख़ुद अपने कोरे बात़िनी का षुबूत देते हैं।

2558. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि हर आदमी हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। इमाम हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। मर्द अपने घर के मामलात का हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। औरत अपने शौहर के घर की हाकिम है और उससे उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा। ख़ादिम अपने आक्रा के माल का मुहाफ़िज़ है और उससे उसके बारे में सवाल होगा। उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये बातें सुनी हैं और मुझे ख़याल है कि आपने ये भी फ़र्माया था कि मर्द अपने बाप के माल का मुहाफ़िज़ है और उससे उसकी रइय्यत

٢٥٥٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ زَيَْادٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا آتَى أَحَدَكُمْ عَادِمَةٌ بِطَعَامِهِ فَإِنْ لَمْ يُجْلِسْهُ مَعَهُ فَلْيُنَاوِلْهُ لُقْمَةً أَوْ لُقْمَتَيْنِ، أَوْ أَكْثَلَ أَوْ أَكْثَلَيْنِ، فَإِنَّهُ وَلِيُّ عِلَاجِهِ)). [طَرَفُهُ ي: ٥٤٦٠].

١٩- باب العبد راعٍ في مال سيده. ونسب النبي ﷺ المال إلى السيد

٢٥٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: فَإِمَامٌ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ فِي نَفْسِ زَوْجِهَا رَاعِيَةٌ وَهِيَ مَسْئُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْعَادِمُ فِي مَالِ مَتْلُوهِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)). قَالَ: فَسَمِعْتُ هَؤُلَاءِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((وَالرَّجُلُ فِي مَالِ أَبِيهِ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ،

के बारे में सवाल होगा। गर्ज तुममें से हर फ़र्द हाकिम है और सबसे उसकी इइयत के बारे में सवाल होगा। (राजेज़: 893)

### बाब 20 : अगर कोई गुलाम लौण्डी को मारे तो चेहरे पर न मारे

2559. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने फ़लों (इब्ने सिम्आन) ने ख़बर दी, उन्हें सईद मक़बरी ने, उन्हें उनके बाप ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, नबी करीम (ﷺ) से।

(दूसरी सनद और इमाम बुखारी (रह.) ने कहा) और हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी हम्माम से और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई किसी से झगड़ा करे तो चेहरे (पर मारने) से परहेज़ करे।

मारपीट में चेहरे पर मारने से परहेज़ सिर्फ़ गुलाम के साथ खास नहीं है। यहाँ चूँकि गुलामों का बयान हो रहा था इसलिये उन्वान में उसी का खुसूसियत से ज़िक्र किया बल्कि चेहरे पर मारने से परहेज़ का हुक्म तमाम इंसानों बल्कि जानवरों तक के लिये है।

हज़रत इमाम ने रिवायत में एक रावी का नाम नहीं लिया। सिर्फ़ इब्ने फ़लों से याद किया है और वो इब्ने सिम्आन है और वो ज़ईफ़ है। उसे इमाम मालिक (रह.) और इमाम अहमद (रज़ि.) ने झूठा कहा है और इमाम बुखारी ने उसकी रिवायत इस मुकाम के सिवा और कहीं इस किताब में नहीं निकाली और यहाँ भी बतौर मुताबअत के है क्योंकि इमाम मालिक और अब्दुर्रज़ाक़ की रिवायत भी बयान की।

**तशरीह:** असलम की एक रिवायत में झाफ़ इज़ा ज़रब है और इस हदीष में गो खादिम की सराहत नहीं है मगर इमाम बुखारी (रह.) ने उस तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसको उन्होंने अदबुल मुफ़रद में निकाला उसमें यूँ है, इज़ा ज़रब खादिम हू या' नी जब कोई तुममें से अपने खादिम को मारे। हाफ़िज़ ने कहा कि ये आम है ख़्वाह किसी हद में मारे या तअज़ीर में हर हाल में मुँह पर न मारना चाहिये। उसकी वजह मुस्लिम की रिवायत में यूँ मज़कूर है क्योंकि अल्लाह ने आदम को उसकी सूरत पर बनाया या' नी मार खाने वाले शख्स की सूरत पर। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है, क्योंकि अल्लाह ने आदम को अपनी सूरत पर बनाया। (वहीदी) वैसे चेहरे पर मारना अदब और अख़्लाक़ के भी सरासर ख़िलाफ़ है। अगर मारना ही हो तो जिस्म के दीगर अअज़ा मौजूद हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ालन्नवबी क़ाललउलमाइ इन्नमा नहा अन ज़र्बिल्वज्हि लिअन्नहू लत्तीफ़न यज़्मउल्महासिन व अक्वसु मा यक्उल्लदराकु बिआज़ा इही फयख़शा मिन ज़र्बिही अन तब्तुल औ तशूहु कुल्लुहा औ बअज़ुहा वल्यशु फीहा फाहिशुम लिजुहूरिहा व बुख़ज़िहा वल ला यस्लिमु इज़ा ज़रबहू मिन शीनिन वुअलीलुल्मज़कूरू अहसनु लाकिन षबत इन्द मुस्लिम तअलीलुन आखर फइन्नहू अखर जल्हदीष मिन तरीकि

فَكَلِّكُمْ رَاعٍ وَكَلِّكُمْ مَسْؤُولَ عَنْ

رَعِيَّتِهِ. [راجع: ٨٩٣]

٢٠- بَابُ إِذَا ضَرَبَ الْعَبْدَ

فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ

٢٥٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ

حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ

أَنَسٍ ح. قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ فَلَانٍ عَنْ

سَعِيدِ الْمُشَيْرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح.

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا

عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

ح. قَالَ: ((إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَجْتَنِبِ

الْوَجْهَ)).

अबी अय्यूब अल्मुरागी अन अबी हुरैरत व जाद फइन्ल्लाह खलक आदम अला सूरतिन वखतुलिफ़ फिज़्ज़मीरि अला मय्यऊदु फलअक्फ़र अला अन्नहू यऊदु अलल्मज्ज़ुबि लिमा तक्कहम मिनलअम्रि बिइकरामि वजिह्ही व लौला अन्नल्मुराद अत्तअलीलु बिज्जालिक लम यकुन लिहाज़िहिल्जुम्लति इतिबातुन बिमा कळलहा व कालल्कुतुबी अआद बअज़ुहुम अज़्ज़मीर अलल्लाहि मुतमस्सिकन बिमा वरद फी बअज़ि तुरूकिही अन्नल्लाह खलक आदम अला सूरतिरहमान इला आखिरिही. (फ़तहल बारी)

ख़ुलासा मतलब ये है कि उलमा ने कहा है चेहरे पर मारने की मुमानअत इसलिये है कि ये अज़्व (अंग) लतीफ़ है जो सारे महासिन का मज्मूआ है और अक़षर इदराक का वुकूअ चेहरे के अज़्ज़ा ही से होता है। पस इस पर मारने से ख़तरा है कि उसमें अनेक नुक़्स और ऐब पैदा हो जाएँ, पस ये इल्लत बेहतर है जिनकी वजह से चेहरे पर मारना मना किया गया है। लेकिन इमाम मुस्लिम के नज़दीक एक और इल्लत है। उन्होंने इस हदीष को अबू अय्यूब मुरागी की सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत किया है कि जिसमें ये लफ़ज़ ज़्यादा हैं कि अल्लाह ने आदम को उसकी सूरत पर पैदा किया है अगर चेज़मीर में इख़ितलाफ़ है मगर अक़षर उलमा के नज़दीक ये ज़मीर मज़्ज़ुब ही की तरफ़ लौटती है। इसलिये कि पहले चेहरे के इकराम का हुक्म हो चुका है। अगर ये तअलील मुराद न ली जाए तो उस जुम्ले का मा क़बल से कोई रब्त बाकी नहीं रह जाता। कुतुबी ने कहा कि कुछ ने ज़मीर को अल्लाह की तरफ़ लौटाया है दलील में कुछ तुरूक की उस इबारात को पेश किया है जिसमें ज़िक्र है कि अल्लाह ने आदम को रहमान की सूरत पर पैदा किया। मुतर्जिम कहता है कि कुर्आन की नस्से सरीह कमिज़्लिही शैइन दलील है कि अल्लाह पाक को और उसके चेहरे को किसी से तश्बीह नहीं दी जा सकती है, वल्लाहु आलाम बिस्सवाब।

अहले हदीष का यही मज़हब है कि अल्लाह पाक अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में वहदहू ला शरीक लहू है और इस बारे में कुरैद करना बिदअत है। जैसा कि इस्तवा अलल अर्श के बारे में सलफ़ का अक्कीदा है वबिल्लाहितीफ़ीक़।

## 50. किताबुल मुकातब

# किताब मुकातब के मसाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मुकातब उस गुलाम को कहते हैं जिसको मालिक कह दे कि अगर तू इतना रुपया इतनी क्रिस्तों में अदा कर दे तो तू आज़ाद है। लफ़ज़ मुकातब ता के ज़बर और ज़ेर दोनों के साथ मन्कूल है। हाफ़िज़ (रह.) फ़रमति हैं वल्मुकातबु बिल्फ़ति मन तक्कउ लहुल्किताबतु व बिल्कस्मि मन तक्कउ मिन्हु या'नी ज़बर के साथ जिसके लिये किताबत का माला किया जाए और ज़ेर के साथ जिसकी तरफ़ किताबत का मामला किया जाए। तारीख़े इस्लाम में सबसे पहले मुकातब हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) हैं और औरतों में हज़रत बरीरा (रज़ि.) जिनका वाक़िया अगली रिवायात में मज़कूर है।

लफ़ज़ मुकातब बाब मुफ़ाअला से मफ़ज़ल का स़ेगा है या'नी वो गुलाम लौण्डी जिससे उसके आका के साथ मुक़ररा शर्तों के साथ आज़ादी का मुआहदा लिख दिया गया हो।

**बाब 1 : मुकातब और उसकी किस्तों का बयान, हर साल में एक किस्त की अदायगी लाज़िम होगी**

۱- بَابُ الْمَكَاتِبِ وَنَجْمَةٌ فِي كُلِّ سَنَةٍ نَجْمٌ

इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कोई हदीष बयान नहीं की, शायद उन्होंने बाब कायम कर लेने के बाद हदीष लिखना चाही होगी मगर उसका मौक़ा न मिला और किताबुल हुदूद में उन्होंने एक हदीष रिवायत की है जिसका मज़मून ये है कि जो कोई अपने गुलाम लौण्डी को ज़िना की झूठी तोहमत लगाए उसको क़यामत के दिन कोड़े लगाए जाएँगे। कुछ नुस्खों में ये बाब मज़कूर नहीं है।

**बाब 2 : जिसने अपने लौण्डी गुलाम को ज़िना की झूठी तोहमत लगाई उसका गुनाह**

وَقَوْلُهُ: هُوَ الَّذِي يَتَقَوَّنَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ لَكَائِبُهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ

अरब में तमाम मामलात तारों के तुलूअ पर हुआ करते थे क्योंकि वो हिसाब नहीं जानते थे। वो यूँ कहते थे कि जब फ़लाँ तारा निकले तो ये मामला यूँ होगा। उसी वज़ह से किस्त को नज़्म कहने लगे। नज़्म तारे को कहते हैं। बदले किताबत में इबाह सालाना किस्तें हों या माहाना हर तरह से जाइज़ है।

और सूरह नूर में अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, तुम्हारे लौण्डी गुलामों में से जो भी मुकातबत का मामला करना चाहें। उनको मुकातब कर दो, अगर उनके अंदर तुम कोई ख़ैर पाओ। (कि वो वा'दा पूरा कर सकेंगे) और उन्हें अल्लाह के उस माल में से मदद भी दो जो उसने तुम्हें अत्ता किया है। रोह बिन इबादा ने इब्ने जुरैज (रह.) से बयान किया कि मैंने अत्ता बिन अबी रिबाह (रह.) से पूछा क्या अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे गुलाम के पास माल है और वो मुकातब बनना चाहे तो क्या मुझ पर वाजिब हो जाएगा कि मैं उससे मुकातबत कर लूँ? उन्होंने कहा कि मेरा ख़याल तो यही है कि (ऐसी हालत में किताबत का मामला) वाजिब हो जाएगा। अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने अत्ता से पूछा, क्या आप इस सिलसिले में किसी से रिवायत भी बयान करते हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि नहीं। (फिर उन्हें याद आया) और मुझे उन्होंने ख़बर दी कि मूसा बिन अनस ने उन्हें ख़बर दी कि सीरीन (इब्ने सीरीन रह. के वालिद) ने अनस (रज़ि.) से मुकातब होने की दरख़वास्त की (ये अनस (रज़ि.) के गुलाम थे) जो मालदार भी थे। लेकिन हज़रत अनस (रज़ि.) ने इंकार किया, इस पर सीरीन हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

خَيْرًا. وَأَوْفَهُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ [النور: ۳۳]. وَقَالَ رُوِيَ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قُلْتُ لِعَطَاءٍ: أَرَأَيْتَ عَلِيٌّ إِذَا عَلِمْتُ لَهُ مَالًا أَنْ أَكَاتِبَهُ؟ قَالَ: مَا أَرَاهُ إِلَّا وَاجِبًا. وَقَالَ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قُلْتُ لِعَطَاءٍ: تَأْتِيهِ عَنْ أَحَدٍ؟ قَالَ: لَا. ثُمَّ أَخْبَرَنِي أَنَّ مُوسَى بْنَ أَنَسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ مِثْرِينَ سَأَلَ أَنَسَ الْمَكَاتِبَةَ - وَكَانَ كَثِيرَ الْمَالِ - فَأَبَى، فَأَنْطَلَقَ إِلَى عَمْرِو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَقَالَ: كَاتِبُهُ، فَأَبَى، فَضَرَبَهُ بِاللَّزَّةِ وَتَلَّوْهُ عَمْرُو: هُوَ لَكَائِبُهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا (لَكَاتِبُهُ).

हजरत उमर (रज़ि.) ने (अनस (रज़ि.) से) फ़र्माया कि किताबत का मामला कर ले। उन्होंने फिर भी इंकार किया तो हजरत उमर (रज़ि.) ने उन्हें दुर्से मारा, और ये आयत पढ़ी कि, गुलामों में अगर ख़ैर देखो तो उनसे मुक़ातबत कर लो। चुनौचे अनस (रज़ि.) ने किताबत का मामला कर लिया।

2560. लैष ने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने कि आइशा (रज़ि.) ने कहा कि बरीरा (रज़ि.) उनके पास आई अपने मुक़ातबत के मामले में उनकी मदद हासिल करने के लिये। बरीरा (रज़ि.) को पाँच औक़िया चौदी पाँच साल के अंदर पाँच क्रिस्तों में अदा करनी थी। आइशा (रज़ि.) ने कहा, उन्हें खुद बरीरा (रज़ि.) के आज़ाद कराने में दिलचस्पी हो गई थी, कि ये बताओ अगर मैं इन्हें एक ही बार (चौदी के ये पाँच औक़िया) अदा कर दूँ तो क्या तुम्हारे मालिक तुम्हें मेरे हाथ बेच देंगे? फिर मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगी और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम हो जाएगी। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के यहाँ गई और उनके आगे ये सूरत रखी। उन्होंने कहा कि हम ये सूरत उस वक़्त मंज़ूर कर सकते हैं कि विलाअ का रिश्ता हमारे साथ रहे। हजरत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर मेरे पास नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आप (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया आपने फ़र्माया कि तू ख़रीद कर बरीरा (रज़ि.) को आज़ाद कर दे, विलाअ तो उसकी होती है जो आज़ाद करे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब फ़र्माया कि कुछ लोगों को क्या हो गया है जो (मामलात में) ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनकी कोई जड़ (बुनियाद) किताबुल्लाह में नहीं है। पस जो शख्स कोई ऐसी शर्त लगाए जिसकी कोई असल किताबुल्लाह में न हो तो वो शर्त ग़लत है। अल्लाह तआला की शर्त ही ज़्यादा हक़ और ज़्यादा मज्बूत है। (राजेअ: 456)

٢٥٦٠- وَقَالَ الثَّيْتُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ غَابَتْ رَحِيمَ اللَّهِ عَنْهَا: إِنَّ بَرِيْرَةَ دَخَلَتْ عَلَيْهَا تَسْتَعِينُهَا فِي كِتَابَتِهَا وَعَلَيْهَا عَمْسَةُ أَوَاقٍ نَجَمَتْ عَلَيْهَا فِي عَمْسِ مِائِينَ؛ فَقَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ - وَفَيْسَتْ فِيهَا - أَرَأَيْتَ إِنْ عَدَدْتَ لَهُمْ عَدَّةً وَاحِدَةً أَيْبُكَ أَمْ لَكَ فَأَعْيُكَ فَهَيِّئْ لِي؟ فَلَقَبَتْ بَرِيْرَةَ إِلَى أَهْلِهَا فَعَرَضَتْ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَقَالُوا: لَا، إِلَّا أَنْ يَكُونَ لَنَا الْوَلَاءُ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اِخْرُجِيهَا فَأَعْيِيهَا)) فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَطَقَ. ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَانَ رَجُلٌ يَشْتَرِي شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ مَنْ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَهُوَ بَاطِلٌ؟ شَرْطُ اللَّهِ أَحَقُّ وَأَوْثَقُ)). [راجع: ٤٥٦]

**तशरीह:** इस तफ़्सीली मुदल्लल बयान का खुलासा ये है कि गुलाम, लौण्डी अगर अपने आकाओं से छुटकारा हासिल करने के लिये मुक़ातबत का मामला करना चाहें और उनमें इतनी अहलियत भी हो कि किसी न किसी तरह इस मामले को बाहुस्न तरीक़ पूरा करेंगे तो आकाओं के लिये ज़रूरी है कि वो ये मामला करके उनको आज़ाद कर दें। आयत करीमा इन् अलिमतुम फ़ीहिम ख़ैरन (अन् नूर: 33) अगर तुम उनमें ख़ैर देखो तो उनसे मुक़ातबत कर लो, में ख़ैर से मुराद ये है कि वो कमाई के लायक़ और ईमानदार हों, मेहनत मज़दूरी करके बदले किताबत अदा कर दें, लोगों के सामने भीख मांगते न

फिरें। वआतुहुम भिम् मालिल्लाहिल्लजी आताकुम. (अनूर : 33) और अपने माल में से जो अल्लाह ने तुमको दिया है उनकी कुछ मदद भी करो; से मुराद ये कि अपने पास उनको बतौर इमदाद कुछ दो, ताकि वो अपने कदमों पर खड़े हो सकें या बदले किताबत में से कुछ मुआफ़ कर दो।

रोह के अफ़र को इस्माईल काज़ी ने अहकामुल कुर्आन में और अब्दुरज़ाक़ और शाफ़िई ने वस्ल किया है। हज़रत अता ने वाजिब करार दिया कि बशर्त मज़कूर आका गुलाम की मुकातबत कर ले। इमाम इब्ने हज़म और ज़ाहिरया के नज़दीक अगर गुलाम मुकातबत का ख़्वाहों हो तो मालिक पर मुकातबत कर देना वाजिब है। क्योंकि कुर्आन में फ़कातिबूहुम अम्र के लिये है जो वुजूब के लिये होता है। मगर जुम्हूर यहाँ अम्र को बतौर इस्तिहबाब करार देते हैं। हज़रत अता ने जब अपना ख़याल ज़ाहिर किया तो अम्र बिन दीनार ने उनसे सवाल किया कि वुजूब का क़ौल आपने किसी सहाबी से सुना है या अपने क़यास और राय से ऐसा कहते हो। बज़ाहिर ये मा'लूम होता है कि अम्र बिन दीनार ने अता से ये पूछा लेकिन हाफ़िज़ ने कहा ये सहीह नहीं है बल्कि इब्ने जुरैज ने अता से ये पूछा। जैसे अब्दुरज़ाक़ और शाफ़िई की रिवायत में उसकी तज़रीह है। इस सूरत में क़ात्ला अम्र बिन दीनार जुम्ला मुअतज़ा होगा। और नस्फ़ी की रिवायत में यूँ है, बक़ालुहु अम्र बिन दीनार या'नी अम्र बिन दीनार भी वुजूब के काइल हुए हैं और तर्जुमा यूँ होगा, और अम्र बिन दीनार ने भी उसको वाजिब कहा है, इब्ने जुरैज ने कहा मैंने अता से पूछा क्या ये तुम किसी से रिवायत करते हो?

हज़रत सीरीन जिनका क़ौल आगे मज़कूर है, ये हज़रत अनस (रज़ि.) के गुलाम थे और ये मुहम्मद के वालिद हैं, जो मुहम्मद बिन सीरीन से मशहूर हैं। ताबेई, फ़कीह और माहिर इल्मे ता'बीर रूया हैं। इस रिवायत को अब्दुरज़ाक़ और तबरी ने वस्ल किया है।

आगे हज़रत उमर (रज़ि.) का क़ौल मज़कूर है और अमल भी ज़ाहिर है कि वो बशर्त मज़कूर मुकातबत को वाजिब कहते थे। जैसे इब्ने हज़म और ज़ाहिरया का क़ौल है। हज़रत बरीरा (रज़ि.) पर पाँच औकिया चाँदी पाँच साल में अदा करनी मुकर्रर हुई थी इसी से बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है। कुछ इलमा ने कहा कि आयते करीमा, वआतुहुम भिम् मालिल्लाहि आताकुम. (अनूर : 33) से मुकातब को माले ज़कात में से भी इमदाद दी जा सकती है। दौरे हाज़रा में नाहक़ मसाइबे क़ैद में गिरफ़्तार हो जाने वाले मुसलमान मर्द-औरत भी हक़ रखते हैं कि उनकी आज़ादी के लिये इन तरीक़ों से मदद दी जाए।

अनस बिन मालिक (रज़ि.) ख़ज़रज क़बीले से थे। उनकी वालिदा का नाम उम्मे सुलैम बिनते मलहान था। रसूले करीम (ﷺ) के ख़ादिमे ख़ास थे। जब आप (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो उनकी उम्र दस साल की थी। हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में बस्रा में क़याम किया। वहाँ लोगों को 91 हिजरी तक इल्मे दीन सिखाते रहे। उम्र सौ साल के आसपास पाई। उनकी औलाद का भी शुमार सौ के करीब है। बहुत से लोगों ने उनसे रिवायत की है।

**बाब 2 : मुकातब से कौनसी शर्तें करना दुरुस्त हैं और जिसने कोई ऐसी शर्त लगाई जिसकी असल किताबुल्लाह में न हो (वो शर्त बातिल है)**

इस बाब में इब्ने उमर (रज़ि.) की एक रिवायत है।

۲- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنْ شُرُوطِ الْمَكَاتِبِ، وَمَنْ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فِيهِ ابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

2561. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उन्होंने उर्वा से और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बरीरा (रज़ि.) उनके पास अपने

۲۵۶۱- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَائِشَةَ



मुकातबत के मामले में मदद लेने आई, अभी उन्होंने कुछ भी अदा नहीं किया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि तू अपने मालिकों के पास जा, अगर वो ये पसन्द करें कि तेरे मामले मुकातबत की पूरी रकम मैं अदा कर दूँ और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम हो तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। बरीरा (रज़ि.) ने ये मूरत अपने मालिकों के सामने रखी लेकिन उन्होंने इंकार किया और कहा कि अगर वो (हज़रत आइशा रज़ि.) तुम्हारे साथ षवाब की निय्यत से ये नेक काम करना चाहती हैं तो उन्हें इख़्तियार है, लेकिन तुम्हारी विलाअ तो हमारे साथ ही रहेगी। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि तू ख़रीदकर उन्हें आज़ाद कर दे। विलाअ तो उसी के साथ होती है जो आज़ाद कर दे। रावी ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों से ख़िताब किया और फ़र्माया कि कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वो ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनकी असल किताबुल्लाह में नहीं है। पस जो भी कोई ऐसी शर्त लगाए जिसकी असल किताबुल्लाह में नहीं है वो उनसे कुछ फ़ायदा नहीं उठा सकता, ख़वाह वो ऐसी सौ शर्तें क्यों न लगा लें। अल्लाह तआला की शर्त ही सबसे ज़्यादा मा'कूल और मज़बूत है। (राजेअ: 456)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْ: أَنَّ بَرِيرَةَ جَاءَتْ تَسْتَعِينَهَا فِي كِتَابَتِهَا، وَلَمْ تَكُنْ قَطَعَتْ مِنْ كِتَابَتِهَا شَيْئًا. قَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ: ارْجِعِي إِلَى أَهْلِكَ فَإِنْ أَحْبَبُوا أَنْ أَقْضِيَ عَنْكَ كِتَابَتَكَ وَتَكُونِ وَلَاؤُكَ لِي فَعَلْتُ. فَلَاكْرَتْ ذَلِكَ بَرِيرَةُ لِأَهْلِهَا فَأَبَوْا وَقَالُوا: إِنْ شَاءَتْ أَنْ تَحْتَسِبَ عَلَيْكَ فَلْتَفْعَلْ وَتَكُونِ وَلَاؤُكَ لَنَا. فَلَاكْرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنِّي أَنَا فَاغِيظُ، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْتَقَى)). قَالَ: ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أَنْاسٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ مَنْ اشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَلَيْسَ لَهُ، وَإِنْ شَرَطَ مِائَةَ مَرَّةٍ، شَرْطُ اللَّهِ أَحَقُّ وَأَوْثَقُ)). [راجع: ٤٥٦]

इन्ने खुज़ैमा ने कहा मतलब ये है कि अल्लाह की किताब से उनका अदमे जवाज़ या अदमे वुजूब प्राबित हो और ये मतलब नहीं है कि जो शर्त अल्लाह की किताब में मज़कूर न हो उसका लगाना बातिल है क्योंकि कभी बेअ में किफ़ालत की शर्त होती है। कभी घमन में ये शर्त होती है कि इस किस्म के रुपये हों या इतनी मुदत में दिये जाएँ ये शर्तें सहीह हैं, गो अल्लाह की किताब में नहीं है क्योंकि ये शर्तें मशरूअ हैं। कहने का मतलब यह है कि मुकातब पर ग़ैर-शरई शर्तें नहीं लादी जा सकती।

2562. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक बांदी ख़रीदकर उसे आज़ाद करना चाहा, उस बांदी के मालिकों ने कहा कि इस शर्त पर हम मामला कर सकते हैं कि विलाअ हमारे साथ क़ायम रहे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से कहा कि उनकी इस शर्त की वजह से तुम न रोको, विलाअ तो उसी की होती है जो आज़ाद करे। (राजेअ: 2156)

٢٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَرَادَتْ عَائِشَةُ أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنْ تَشْتَرِيَ جَارِيَةً لِيُعْتِقَهَا، فَقَالَ أَهْلُهَا: عَلَى أَنْ وَلَايَئَا لَنَا. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا يَمْنَعُكَ ذَلِكَ، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْتَقَى)).

हदीषे बरीरा (रज़ि.) से बहुत से फ़वाइद निकलते हैं। कुछ मुताख़िख़रीन ने उनको चार सौ तक पहुँचा दिया है जिसमें अक़षर तकल्लुफ़ है कुछ फ़वाइद हाफ़िज़ ने फ़तहूल बारी में भी ज़िक्र किये हैं। उनको वहाँ मुलाहिज़ा किया जा सकता है।

### बाब 3 : अगर मुक़ातब दूसरों से मदद चाहे और लोगों से सवाल करे तो कैसा है?

### ۳- بَابُ اسْتِعَانَةِ الْمَكَاتِبِ وَسُؤَالِ النَّاسِ

2563. हमसे इब्नेद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया हिशाम बिन इर्वा से, वो अपने वालिद से, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरा (रज़ि.) आई और कहा कि मैंने अपने मालिकों से नौ औक्रिया चाँदी पर मुक़ातबत का मामला किया है। हर साल एक औक्रिया मुझे अदा करना पड़ेगा। आप भी मेरी मदद करें। इस पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारे मालिक पसन्द करें तो मैं उन्हें (ये सारी रक़म) एक ही बार दे दूँ, और फिर तुम्हें आज़ाद कर दूँ, तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। लेकिन तुम्हारी विलाअ मेरे साथ हो जाएगी। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के पास गई तो उन्होंने इस सूरत से इन्कार कर दिया। (वापस आकर) उन्होंने बताया कि मैंने आपकी ये सूरत उनके सामने रखी थी लेकिन वो इसे सिर्फ़ इस सूरत में क़बूल करने को तैयार हैं कि विलाअ उनके साथ क़ायम रहे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये सुना तो आप (ﷺ) ने मुझसे पूछा मैंने आपको मुज्तलअ किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू इन्हें लेकर आज़ाद कर दे और उन्हें विलाअ की शर्त लगाने दे। विलाअ तो बहरहाल उसी की होती है जो आज़ाद करे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब किया। अल्लाह की हम्दो-घना के बाद फ़र्माया, तुममें से कुछ लोगों को ये क्या हो गया है कि (मामलात में) ऐसी शर्त लगाते हैं जिनकी कोई असल किताबुल्लाह में नहीं है। पस जो भी शर्त ऐसी हो जिसकी असल किताबुल्लाह में न हो वो बातिल है। ख़वाह ऐसी सौ शर्तें क्यूँ न लगा ली जाएँ। अल्लाह का फ़ैसला ही हक़ है और अल्लाह की शर्त ही मज़बूत है कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वो कहते हैं, ऐ फ़लाँ! आज़ाद तुम करो और विलाअ मेरे साथ क़ायम रहेगी। विलाअ तो सिर्फ़ उसी के साथ क़ायम रहेगी जो आज़ाद करे। (राजेअ: 456)

۲۵۶۳- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتِ بَرِيرَةُ فَقَالَتْ: إِنِّي كَاتِبْتُ أَهْلِي عَلَى بَسْعِ أَوْاقٍ لِي كُلِّ عَامٍ أَوْقِيَةً فَأَعِزَّنِي. فَقَالَتْ عَائِشَةُ: إِنَّ أَحَبَّ أَهْلِكَ أَنْ أَعْتَمِدَ لَهُمْ عِدَّةً وَاحِدَةً وَأَعِزَّنِي فَقُلْتُ وَيَكُونُ وَلَاؤُكَ لِي. فَلَذَبْتُ إِلَى أَهْلِيهَا، فَأَبَوْا ذَلِكَ عَلَيْهَا، فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ عَرَضْتُ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَأَبَوْا إِلَّا أَنْ يَكُونَ الْوَلَاءُ لَهُمْ. فَسَمِعَ بِذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَسَأَلَنِي فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ((عَلَيْهَا فَأَعِزَّنِيهَا وَاشْتَرِطِي لَهُمُ الْوَلَاءَ، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللَّهُ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ، فَمَا بَالُ رِجَالٍ مِنْكُمْ يَشْتَرِطُونَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ فَإِنَّمَا شَرْطٌ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَهُوَ بَاطِلٌ وَإِنْ كَانَ مِثْلَ شَرْطٍ، فَقَضَاءُ اللَّهِ أَحَقُّ، وَشَرْطُ اللَّهِ أَوْثَقُ. مَا بَالُ رِجَالٍ مِنْكُمْ يَقُولُونَ أَخَذْنَاهُمْ أَعْتَقَ يَا فُلَانٌ وَلِيَ الْوَلَاءَ إِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)).

नौ औकिया का जिक्र राबी का वहम है। सहीह यही है कि पाँच औकिया पर मामला हुआ था। मुम्किन है शुरू में नौ का जिक्र हुआ और राबी ने उसी को नकल कर दिया हो। ये मज्मून पीछे मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) जिक्र हो चुका है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व युम्किनुल्जम्ह बिअन्नत्तिसअ अस्तुन वल्खम्सु कानत बक्रियत अलैहा व बिहाजा जजमल्कुर्तुबी वल्महिब्ब अत्तबरी या'नी इस तरह जमा मुम्किन है कि असल में मामला नौ पर हुआ हो और पाँच बाक़ी रह गए हों। कुर्तुबी और महब तबरी ने इसी तत्बीक़ पर जज़्म किया है।

#### बाब 4 : जब मुकातब अपने तर्द बेच डालने पर राज़ी

#### 4- بَابُ بَيْعِ الْمَكَاتِبِ إِذَا رَضِيَ.

हो वो बदले किताबत अदा करने से आजिज़ न हुआ हो, अगर आजिज़ हो गया हो तो वो गुलाम हो जाता है उसका बेच डालना सबके नज़दीक़ दुरुस्त हो जाता है। इमाम अहमद का यही मज़हब है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक़ जब तक वो आजिज़ न हो उसकी बेअ दुरुस्त नहीं है।

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मुकातब पर जब तक कुछ भी मुतालबा बाक़ी है वो गुलाम ही रहेगा और ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने कहा, जब तक एक दिरहम भी बाक़ी है (मुकातब आज़ाद नहीं होगा) और अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि मुकातब पर जब तक कुछ बाक़ी है वो अपनी ज़िन्दगी मौत और जुर्म (सब) में गुलाम ही माना जाएगा।

2564. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी यह्या बिन सईद से, वो अमर बिनते अब्दुर्रहमान से कि बरीरा (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) से मदद लेने आई। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उससे कहा कि अगर तुम्हारे मालिक ये सूरत पसन्द करें कि मैं (मुकातबत की सारी रक़म) उन्हें एक ही बार अदा कर दूँ और फिर तुम्हें आज़ाद कर दूँ तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। बरीरा (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र अपने मालिकों से किया तो उन्होंने कहा कि (हमें इस सूरत में ये मंज़ूर है कि) तेरी विलाअ हमारे ही साथ क़ायम रहे। मालिक ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया कि अमरहको यक़ीन था कि आइशा (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू उसे ख़रीदकर आज़ाद कर दे। विलाअ तो उसी के साथ होती है जो उसे आज़ाद करे। (राजेअ : 456)

وَقَالَتْ عَائِشَةُ: هُوَ عَبْدٌ مَا بَقِيَ عَلَيْهِ شَيْءٌ.  
وَقَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ: مَا بَقِيَ عَلَيْهِ يَوْمَهُ.  
وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: هُوَ عَبْدٌ إِنْ غُلِيَ وَإِنْ مَاتَ وَإِنْ جَنَى مَا بَقِيَ عَلَيْهِ شَيْءٌ.

٢٥٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ يَهْيَا بْنِ سَعِيدٍ عَنْ بَرِيرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: أَنَّ بَرِيرَةَ جَاءَتْ تَسْتَعِينُ عَائِشَةَ أُمَ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، فَقَالَتْ لَهَا: إِنْ أَحَبَّ أَهْلُكَ أَنْ أَحْبُ تَهُمْ تَمْلِكُ صَبَةً وَاحِدَةً وَأَغْفِلُكَ فَقُلْتُ: لَذَكَّرْتُ بَرِيرَةَ ذَلِكَ لِأَخْلِيهَا فَقَالُوا: إِلَّا أَنْ يَكُونَ الْوَلَاءُ لَنَا. قَالَ مَالِكٌ: قَالَ يَحْيَى: فَرَعِمْتُ عُمَرَةَ أَنَّ عَائِشَةَ ذَكَّرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ «اشْتَرِيهَا وَأَغْفِلْهَا، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْفَلَ» [راجع: ٤٥٦]

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ये फ़र्माया कि तेरे अहल चाहें तो मैं तेरी कीमत एक दफ़ा ही अदा कर दूँ, यहीं से बाब का मतलब निकला क्योंकि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बरीरा को मोल लेना चाहा। तो मा'लूम हुआ कि मुकातब की बेअ हो सकती है।

#### बाब 5 : अगर मुकातब किसी शख्स से कहे मुझको

#### 5- بَابُ إِذَا قَالَ الْمَكَاتِبُ اشْتَرِي

खरीदकर आज़ाद कर दो और वो इसी गर्ज से खरीद ले

2565. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया कि मुझे से मेरे बाप ऐमन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं आइशा (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया कि मैं पहले इब्ना बिन अबी लहब का गुलाम था। उनका जब इंतिकाल हुआ तो उनकी औलाद मेरी वारिष हुई। उन लोगों ने मुझे अब्दुल्लाह इब्ने अबी अमर को बेच दिया और इब्ने अबी अमर ने मुझे आज़ाद कर दिया। लेकिन (बेचते वक़्त) इब्ना के वारिषों ने विलाअ की शर्त अपने लिये लगा ली थी (तो क्या ये शर्त सहीह है?) इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा कि बरीरा (रज़ि.) मेरे यहाँ आई थीं और उन्होंने किताबत का मामला कर लिया था। उन्होंने कहा कि मुझे आप खरीदकर आज़ाद कर दें। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैं ऐसा कर दूंगी (लेकिन मालिकों से बातचीत के बाद) उन्होंने बताया कि वो मुझे बेचने पर सिर्फ़ इस शर्त के साथ राज़ी हैं कि विलाअ उन्हीं के साथ कायम रहे। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर मुझे उसकी ज़रूरत भी नहीं है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी उसे सुना। (आइशा रज़ि. ने ये कहा कि) आपको उसकी इज़िलाअ मिली। इसलिये आप (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से दरयाफ़्त किया, उन्होंने मूरतेहाल की आपको ख़बर दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि बरीरा को खरीदकर आज़ाद कर दे और मालिकों को जो भी शर्त चाहें लगाने दो। चुनाँचे आइशा (रज़ि.) ने उन्हें खरीदकर आज़ाद कर दिया। मालिकों ने चूँकि विलाअ की शर्त रखी थी इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने (सहाबा किराम रज़ि. के एक मज़मूअे से) ख़िताब फ़र्माया, विलाअ तो उसी के साथ होती है जो आज़ाद करे। (और जो आज़ाद न करे) अगरचे वो सौ शर्तें भी लगा लें (विलाअ फिर भी उनके साथ कायम नहीं हो सकती)

وَأَعِثِّي، فَاشْتَرَاهُ لِذَلِكَ

٢٥٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي أَيْمَنُ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَقُلْتُ: كُنْتُ لِعَنْتَةَ بِنِ أَبِي لَهَبٍ وَمَاتَ وَوَرِثِي بَنُوهُ، وَإِنَّهُمْ بِأَعْيُنِي مِنَ ابْنِ أَبِي عَمْرٍو، فَأَعِثَّنِي ابْنُ أَبِي عَمْرٍو وَاشْتَرَطَ بَنُو عَنْتَةَ الْوَلَاءَ، فَقَالَتْ: دَخَلْتُ بَرِيرَةَ وَهِيَ مَكَاتِبَةٌ فَقَالَتْ: اشْتَرِنِي وَأَعِثَّنِي، قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَتْ: لَا يَنْبَغُنِي حَتَّى يَشْتَرِطُوا وَلَا يَبِي، فَقَالَتْ: لَا حَاجَةَ لِي بِذَلِكَ. فَسَمِعَ بِذَلِكَ النَّبِيُّ ﷺ - أَوْ بَلَعَهُ - فَلَاكِرَ لِعَائِشَةَ فَلَذَكَرَتْ عَائِشَةُ مَا قَالَتْ لَهَا، فَقَالَ: ((اشْتَرِنَهَا وَأَعِثَّنَهَا وَدَعِينَهُمْ بِشَرْطُونِ مَا شَاءُوا)), فَاشْتَرَاهَا عَائِشَةُ فَأَعِثَّنَهَا، وَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا الْوَلَاءَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ، وَإِنْ اشْتَرَطُوا بِأَلَا شَرْطَ)).

**तशरीह:** हज़रत इब्ना (रज़ि.) अबूलहब के बेटे थे। रसूले करीम (ﷺ) के चचाज़ाद भाई, ये फ़तहे मक्का के साल इस्लाम लाए। हज़रत बरीरा (रज़ि.) ने खुद हज़रत आइशा (रज़ि.) से अपने को खरीदने और आज़ाद कर देने की दरख्वास्त की थी उसी से बाब का मज़मून णाबित हुआ।

अल्हम्दुलिल्लाह कि का'बा शरीफ़ में 15 अप्रैल 1970 को यहाँ तक मतने बुखारी शरीफ़ के पढ़ने से फ़ारिग हुआ। साथ ही दुआ की कि अल्लाह पाक खिदमते बुखारी शरीफ़ में कामयाबी बख़्शे और उन सब दोस्तों बुजुर्गों के हक़ में उसे बतौर

सदक-ए-जारिया कुबूल करे जो इस अजीम खिदमत में खादिम के साथ हर मुम्किन तआवुन फर्मा रहे हैं। जज़ाहुमुल्लाहु अहसनलजज़ा फिहुनिया वलआखिरति, आमीन।

सनद में ऐमन (रह.) का नाम आया है। हाफ़िज़ साहब (रह.) फ़र्माते हैं, हुब अयमनुल्हबशी अल्मक्की नज़ीलुल्मदीना वालिदु अब्दिल्वाहिद व हुब गैरु अयमनुब्नु नाथल अल्हबशी अल्मक्की नज़ीलु अस्क्रलान व किलाहुमा मिनत्ताबिर्इन व लैस लिवालिदि अन आयशत व हदीषानि अन जाबिर व कुल्लुहुमा मुताबअतुन व लम यरौ अन्हु गैर वलदिही अब्दुल्वाहिद. (फतुल्बारी)

## 51. किताबुल हिबा व फ़ज़लुहा वत्तहरीसु अलैहा

# किताब हिबा के मसाइल का बयान

## और उसकी फ़ज़ीलत और उसकी तर्गीब दिलाना

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हिबा बिला इवज़ किसी शख्स को कोई माल या हक़ दे देना। सदका भी उसी तरह है मगर वो मुहताज के लिये ब-नियते प्रवाब होता है। हिबा में मुहताज की शर्त नहीं है। लफ़्ज़ हिबा वहब युहिबु का मसदर है लफ़्ज़ वहहाब भी इसी से है जिसके मा'नी बहुत ही नेअमते बख़शने वाला। ये लफ़्ज़ अस्माउल हुस्ना में दाख़िल है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वल्हिबतु बिकस्लिहाइ व तखफ़ीफलबाइलमुवद्दहति तत्लुकु बिल्मअनलअअम्मि अला अन्वाइलअब्राइ व हुब हिबतुदीन मिम्मन हुब अलैहि वस्सदकतु व हिय हिबतुन मा युतमद्दहज़ु बिही तलबु फ़ज़ाबुलआखिरति वल्हदयति व हिय मा युक्नुमु बिहिल्माइबु लहु (इला आखिरिही) वज़ीउल्मुसन्निफ़ि महमूलुन अलल्मअनलअअम्मि लिअन्नहू अदख़ल फ़ीहल्हदाया. (फतुल्बारी) या'नी लफ़्ज़ हिबा मुख्तलिफ़ किस्म के नेक सुलूक करने पर बोला जाता है और वो दरअसल मकरूज़ पर से कर्ज़ का हिबा कर देना है और लफ़्ज़ सदका वो हिबा है जिससे महज़ प्रवाबे आखिरत मत्लूब हो और हदिया वो जो किसी को उसके इकराम के तौर पर दिया जाए। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उसे आम मआनी में मुराद लिया है इसलिये हदाया को भी दाख़िल फ़र्मा लिया है।

### बाब 1 :

### باب ١

2566. हमसे आसिम बिन अली अबुल हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी जिब ने बयान किया, उनसे सईद मक़बरी ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ मुसलमान औरतों! हरिज़ कोई पड़ौसन अपनी दूसरी पड़ौसन के लिये (मा'मूली हदिया को भी) हक़ीर न जाने, ख़्वाह बकरी के ख़ुर का ही क्यूँ न हो। (दीगर मक़ाम : 6017)

٢٥٦٦- حَدَّثَنَا عَامِرُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ عَنْ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَا بَسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لَا تَحْقِرْنَ جَارَةً لِحَارِثَتِهَا وَلَوْ فَوْسِنَ شَاةٍ)).

[طرنه في: ٦٠١٧]

जिस पर बहुत ही ज़रा सा गोشت होता है। मतलब ये है कि अपनी हमसाई (पड़ोसन) का हिस्सा खुशी से कुबूल करे, उसके लेने से नाक-भौं न चढ़ाएँ। न जुबान से ऐसी बात निकाले जिससे उसकी हिंकारत निकले क्योंकि ऐसा करने से उसके दिल को रंज होगा और किसी मुसलमान का दिल दुखाना बड़ा गुनाह है। हदीष से बाब का मतलब यँ निकला कि अपने पड़ोस वालों को तोहफ़ा-तहाइफ़ पेश करना सुन्नत है, चाहे वो कम कीमत ही क्यों न हो। रिवायत में बकरी के खुर का ज़िक्र है जो बेकार जानकर फेंक दिया जाता है। इसका ज़िक्र हदिया की कम कीमती होने के इज़हार के लिये किया गया।

2567. हमसे अब्दुल अजीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने यज़ीद बिन रुमान से, वो इर्वा से और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपने इर्वा से कहा, मेरे भांजे! ओहज़रत (ﷺ) के अहद मुबारक में (ये हाल था कि) हम एक चाँद देखते, फिर दूसरा चाँद देखते, फिर तीसरा देखते, इसी तरह दो दो महीने गुज़र जाते और रसूले करीम (ﷺ) के घरों में (खाना पकाने के लिये) आग न जलती थी। मैंने पूछा, खालाजान! फिर आप लोग ज़िन्दा किस तरह रहती थीं? आपने फ़र्माया कि सिर्फ़ दो काली चीज़ों खज़ूर और पानी पर। अल्बत्ता रसूलुल्लाह (ﷺ) के चन्द अंसार पड़ोसी थे। जिनके पास दूध देने वाली बकरियाँ थीं और वो रसूले करीम (ﷺ) के यहाँ भी उनका दूध तोहफ़े के तौर पर पहुँचा दिया करते थे। आप (ﷺ) उसे हमें भी पिला दिया करते थे। (दीगर मकाम : 6458, 6459)

٢٥٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَوْسِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ يَزِيدَ بْنِ رُوْمَانَ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ لِعُرْوَةَ : ((ابْنِ أَخِي، إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهَلَالِ ثُمَّ الْهَلَالِ ثُمَّ الْهَلَالِ، ثَلَاثَةَ أَجَلَةٍ فِي شَهْرَيْنِ، وَمَا أَوْقَنْتُ فِي أَنَاءِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نَارًا. فَقُلْتُ: يَا خَالَتُ، مَا كَانَ يَغِيْشُكُمْ؟ قَالَتْ: الْأَسْوَدَانِ التَّمْرُ وَالْمَاءُ. إِلَّا أَنَّهُ لَقَدْ كَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ جَيْرَانِ مِنَ الْأَنْصَارِ كَانَتْ لَهُمْ مَتَاعٌ، وَكَانُوا يَمْنَحُونَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنْ آلِهَتِهِمْ لِهَيْئَتِنَا)). [طرفاء في: ٦٤٥٨، ٦٤٥٩].

दूध बतौर तोहफ़ा भेजना इससे प्राबित हुआ। दो महीने मे तीन चाँद इस तरह दिखते हैं कि पहला चाँद महीने के शुरू होने पर देखा, फिर दूसरा चाँद उसके ख़त्म पर तीसरा चाँद दूसरे महीने के ख़त्म होने पर। काली चीज़ों में पानी को भी शामिल कर दिया, हालाँकि पानी काला नहीं होता। लेकिन अरब लोग तज़िया एक चीज़ के नाम से कर देते हैं। जैसे शमशौन, कमरैन, चाँद-सूरज दोनों को कहते हैं। इस तरह अब्यज़ैन दूध और पानी दोनों को कह देते हैं और सिर्फ़ दूध को अब्यज़ या 'नी सफ़ेद होता है पानी का तो कोई रंग नहीं होता। इस हदीष से दूध का बतौर तोहफ़ा व हदिया व हिबा पेश करना प्राबित हुआ। फ़वाइद के लिहाज़ से ये बहुत ही बड़ा हिबा है जो एक इंसान दूसरे इंसान को पेश करता है।

## बाब 2 : थोड़ी चीज़ हिबा करना

2568. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अदी ने बयान किया शुअबा से, वो सुलैमान से, वो अबू हाज़िम से और उनसे अबू हरैरह (रज़ि.) ने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अगर मुझे बाज़ू और पाए (के गोश्त) पर भी दा'वत दी जाए तो मैं कुबूल कर लूँगा और मुझे बाज़ू

٢- بَابُ الْقَلِيلِ مِنَ الْهَبَةِ  
٢٥٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ

और पाये (के गोश्त) का तोहफ़ा भेजा जाए तो उसे भी कुबूल कर लूँगा। (दीगर मक़ाम : 5178)

دُعِيتُ إِلَى ذِرَاعٍ أَوْ كَرَاعٍ لِأَجْتِ، وَلَوْ  
أَهْدَيْتُ إِلَى ذِرَاعٍ أَوْ كَرَاعٍ لَقَبِلْتُ».

[طرفه ٣: ٥١٧٨]

तोहफ़ा कितना भी थोड़ा हो क़ाबिले क़द्र है और दा'वत में कुछ भी पेश किया जाए, दा'वत बहरहाल क़ाबिले कुबूल है। इन अमलों से बाहमी मुहब्बत पैदा होती है जो इस्लाम का असली मंशा है। इससे गोश्त का बतौर हिबा, तोहफ़ा व हदिया करना प्राबित हुआ। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक लफ़्ज़ हिबा इन सब पर बोला जा सकता है।

### बाब 3 : जो शख्स अपने दोस्तों से कोई चीज़ बतौर तोहफ़ा मांगे

अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने साथ मेरा भी एक हिस्सा लगाना (इससे बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ)

2569. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन मुत्तफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मुहाजिर औरत के पास (अपना आदमी) भेजा। उनका एक गुलाम बढई था। उनसे आपने फ़र्माया कि अपने गुलाम से हमारे लिये लकड़ियों का एक मिम्बर बनाने के लिये कहें। चुनाँचे उन्होंने अपने गुलाम से कहा, वो गाबा से जाकर झाऊ काट लाया ओर उसी का एक मिम्बर बना दिया। जब वो मिम्बर बना चुके तो उस औरत ने रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में कहलवा भेजा कि मिम्बर बनकर तैयार है। आप (ﷺ) ने कहलवाया कि उसे मेरे पास भिजवा दें। जब लोग उसे लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने खुद उसे उठाया और जहाँ तुम अब देख रहे हो। वहीं आप (ﷺ) ने उसे रखा। (राजेअ : 377)

٣. بَابُ مَنْ اسْتَوْهَبَ مِنْ أَصْحَابِهِ شَيْئًا  
وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «(اضْرِبُوا  
لِي مَعَكُمْ مَهْمًا)».

٢٥٦٩- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا  
أَبُو عَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ  
سَهْلِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ  
أَرْسَلَ إِلَى امْرَأَةٍ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَكَانَ لَهَا  
غُلَامٌ نَحَّارٌ قَالَ لَهَا، «مُرِّي عَبْدَكَ  
فَلْيَعْمَلْ لَنَا أَغْوَادَ السُّنْبِي»، فَأَمَرَتْ  
عَبْدَهَا، فَلَحَبَ فَقَطَعَ مِنَ الطَّرْفَاءِ، فَمَنَعَ  
لَهُ مِثْرًا. فَلَمَّا قَضَاهُ أَرْسَلَتْ إِلَى النَّبِيِّ  
ﷺ: إِنَّهُ قَدْ قَضَاهُ. قَالَ ﷺ: «(أَرْسِلِي بِهِ  
إِلَيَّ، فَيَجِئُوا بِهِ، فَاخْمَلَهُ الْإِسْلَامُ)»  
فَوَضَعَهُ حَيْثُ تَرَوْنَ». [راجع: ٣٧٧]

**तशरीह :** रसूले करीम (ﷺ) ने बतौर हदिया खुद एक अंसारी औरत से फ़र्माइश की कि वो अपने बढई गुलाम से एक मिम्बर बनवा दें। चुनाँचे ता'मील की गई और गाबा के झाऊ की लकड़ियों से मिम्बर तैयार करके पेश कर दिया गया। जब ये पहले दिन इस्ते'माल हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उस खजूर के तने का सहारा छोड़ दिया जिस पर आप टेक लगाकर खड़े हुआ करते थे। यही तना था जो आप (ﷺ) की जुदाई के ग़म में सुबक सुबककर (सिसक सिसककर) रोने लगा था। जब आप (ﷺ) ने उस पर अपना हाथ रखा तब वो ख़ामोश हो गया। मुहाजिर का लफ़्ज़ अबू ग़स्सान रावी का वहम है और सहीह ये है कि ये औरत अंसारी थी। इससे लकड़ी का मिम्बर सुन्नत होना प्राबित हुआ जो बेशतर अहले हदीष मसाजिद में देखा जा सकता है।

2570. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया अबू हाज़िम से, वो अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा सुलमी से और उनसे उनके

٢٥٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ  
قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي  
حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ السَّلْمِيِّ

बाप ने बयान किया कि मक्का के रास्ते में एक जगह में रसूलुल्लाह (ﷺ) के चन्द साथियों के साथ बैठा हुआ था। रसूले करीम (ﷺ) हमसे आगे क्रयाम फर्मा थे। (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) और लोग तो एहराम बाँधे हुए थे लेकिन मेरा एहराम नहीं था मेरे साथियों ने एक गोरखर देखा। मैं उस वक़्त अपनी जूती गांठने में मशगूल था। उन लोगों ने मुझे कुछ ख़बर नहीं दी लेकिन उनकी ख़्वाहिश यही थी कि किसी तरह मैं गोरखर को देख लूँ। चुनौचे मैंने जो नज़र उठाई तो गोरखर दिखाई दिया। मैं फ़ौरन घोड़े के पास गया और उस पर ज़ीन कसकर सवार हो गया, मगर इत्तिफ़ाक़ से (जल्दी में) कोड़ा और नेज़ा भूल गया। इसलिये मैंने अपने साथियों से कहा कि वो मुझे कोड़ा और नेज़ा उठा दें। उन्होंने कहा, हरिज़ नहीं क्रसम अल्लाह की, हम तुम्हारी (शिकार करने में) किसी क्रिस्म की मदद नहीं कर सकते। (क्योंकि हम सब लोग हालत एहराम में हैं) मुझे इस पर गुस्सा आया और मैंने ख़ुद ही उतरकर दोनों चीज़ें ले लीं। फिर सवार होकर गोरखर पर हमला किया और उसको शिकार कर लाया। वो मर भी चुका था। अब लोगों ने कहा कि उसे खाना चाहिये। लेकिन फिर एहराम की हालत में उसे खाने (के जवाज़) पर शुब्हा हुआ। (लेकिन कुछ लोगों ने शुब्हा नहीं किया और गोश्त खाया) फिर हम आगे बढ़े और मैंने उस गोरखर का एक बाज़ू छुपा रखा था। जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुँचे तो उसके बारे में आपसे सवाल किया, (आपने मुहरिम के लिये शिकार के गोश्त खाने का फ़त्वा दिया) और दरयाफ़्त किया कि उसमें से भी कुछ बचा हुआ गोश्त तुम्हारे पास मौजूद भी है? मैंने कहा, जी हाँ! और वही बाज़ू आपकी इख़दमत में पेश किया। आपने उसे तनावुल फ़र्माया यहाँ तक कि वो ख़त्म हो गया। आप भी उस वक़्त एहराम से थे (अबू हाज़िम ने कहा कि) मुझे ये हदीस ज़ैद बिन असलम ने बयान की, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने (राजेअ: 1821)

عَنْ أَبِي رَمِيٍّ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: ((كَتَبْتُ يَوْمًا جَالِسًا مَعَ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَنَزِلٍ فِي طَرِيقِ مَكَّةَ - وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَازِلٌ أَمَانًا - وَالْقَوْمُ مُخْرِمُونَ وَأَنَا غَيْرُ مُخْرِمٍ، فَأَبْصَرُوا حِمَارًا وَخَشِيًا - وَأَنَا مُشْفَوٌّ أَخْصِفُ نَعْلِي - فَلَمْ يُؤْذِنُونِي بِهِ، وَأَحْبَبُوا لَوْ أَنِّي أَبْصَرْتُهُ، فَالْقَفْتُ فَأَبْصَرْتُهُ، فَقَفْتُ إِلَى الْفَرَسِ فَأَسْرَجْتُهُ، ثُمَّ رَكِبْتُ، وَنَسِيتُ السَّوْطَ وَالرُّمَحَ، فَقُلْتُ لَهُمْ: نَآوِلُونِي السَّوْطَ وَالرُّمَحَ، فَقَالُوا: لَا وَاللَّهِ لَا نُعِينُكَ عَلَيْهِ بِشَيْءٍ، فَطَعَنْتُ، فَتَرَلْتُ فَأَخَذْتُهُمَا، ثُمَّ رَكِبْتُ فَتَنَدَدْتُ عَلَى الْجِمَارِ فَتَقَرَّرْتُ، ثُمَّ جِئْتُ بِهِ وَقَدْ مَاتَ، فَوَلَّعُوا لِي بِمَا كَلُونَهُ. ثُمَّ إِنَّهُمْ حَكُّوا فِي أَكْلِهِمْ إِيَّاهُ وَهُمْ حُرُمٌ، فَوَحْنَا - وَخَبَاتِ الْقَضْدِ مَعِي - فَأَذْرَجْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَسَأَلَنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَتَأَوَّلْتُ الْقَضْدَ فَأَكَلَهَا حَتَّى تَلَدَّهَا وَهُوَ مُخْرِمٌ)).  
فَعَدَنِي بِهِ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ. [راجع: 1821]

साथियों ने इमदाद से इन्कार इसलिये किया कि वो एहराम की हालत में थे और एहराम की हालत में न शिकार करना दुरुस्त है और न शिकार में मदद करना। आँहज़रत (ﷺ) ने उस गोश्त में तोहफ़े की ख़ुद गुज़ारिश की थी। इसी से मक्क़ादे बाब हासिल हुआ। अबू क़तादा सलमी (रज़ि.) ने तीर बिस्मिल्लाह पढ़कर चलाया होगा। पस वो शिकार हलाल हुआ। दोस्त अहबाब में



तोहफ़े तहाइफ़ लेने देने बल्कि कुछ बार बाहमी तौर पर खुद फ़र्माइश करने का आम दस्तूर है, उसकी जवाज़ यहाँ से साबित हुआ।

#### बाब 4 : पानी (या दूध) मांगना

और सहल बिन सअद साएदी ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, मुझे पानी पिलाओ, (इससे अपने साथियों से पानी मांगना साबित हुआ)

٤- بَابُ مَنِ اسْتَسْقَى

وَقَالَ سَهْلٌ قَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اسْقِنِي)).

सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) अंसारी सहाबी हैं और अबू अब्बास इनकी कुत्रियत है। इनका नाम हज़न था। लेकिन रसूले करीम (ﷺ) ने इसको सहल से बदल दिया। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उम्र पन्द्रह साल की थी, उन्होंने मदीना में 91 हिजरी में इतिक़ाल फ़र्माया। ये सबसे आखिरी सहाबी हैं जिनका मदीना में इतिक़ाल हुआ। इनसे इनके बेटे अब्बास और जुहरी और अबू हाज़िम रिवायत करते हैं।

2571. हमसे ख़ालिद बिन भुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, कहा कि मुझसे अबू तुवाला ने जिनका नाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुरहमान था, कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना। वो कहते थे कि (एक बार) रसूले करीम (ﷺ) हमारे उसी घर में तशरीफ़ लाए और पानी त़लब किया। हमारे पास एक बकरी थी, उसे हमने दूहा। फिर मैंने उसमें उसी कुएँ का पानी मिलाकर आपकी ख़िदमत में (लस्सी बनाकर) पेश किया, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आप (ﷺ) के बाएँ तरफ़ बैठे हुए थे और हज़रत उमर (रज़ि.) सामने थे और एक देहाती आपके दाएँ तरफ़ बैठा था। जब आप (ﷺ) पीकर फ़ारिग़ हुए तो (प्याले में कुछ दूध बच गया था इसलिये) हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि ये हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हैं। लेकिन आपने उसे देहाती को अज़ा फ़र्माया (क्योंकि वो दाएँ तरफ़ था) फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, दाईं तरफ़ बैठने वाले, दाईं तरफ़ बैठने वाले ही हक़ रखते हैं। पस ख़बरदार! दाईं तरफ़ ही से शुरू किया करो। अनस (रज़ि.) ने कहा कि यही सुन्नत है, यही सुन्नत है। तीन बार (आपने इस बात को दोहराया) (राजेज़: 3252)

٢٥٧١- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو طَوَالَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((أَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي دَارِنَا هَذِهِ فَاسْتَسْقَى، فَخَلَيْنَا لَهُ حَاةً لَنَا، ثُمَّ شَبَّهَ مِنْ مَاءٍ بِرِنَاءٍ هَلِوٍ، فَأَعْطَيْنَاهُ وَأَبُو بَكْرٍ عَنْ يَسَارِهِ وَعُمَرُ تَحَاةَهُ وَأَعْرَابِيُّ عَنْ يَمِينِهِ. فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ عُمَرُ: هَذَا أَبُو بَكْرٍ، فَأَعْطَى الْأَعْرَابِيَّ ثُمَّ قَالَ: ((الْأَيْمَنُونَ الْأَيْمَنُونَ، أَلَا قَوْمُونَ)). قَالَ أَنَسٌ: فَهِيَ سُنَّةٌ فَهِيَ سُنَّةٌ فَلَا تَرَى مَرَاتٍ)). [راجع: ٣٢٥٢]

**तशरीह:** मक़सदे बाब और खुलासा हदीषे वारिदा ये है कि हर इंसान के लिये उसकी मज्लिस ज़िन्दगी में दोस्त अहबाब के साथ बेतकल्लुफी के बहुत से मौक़े आ जाते हैं। शरीअते इस्लामिया इस बारे में तंग नज़र नहीं है, उसने ऐसे मौक़ों के लिये हर मुम्किन सहूलतें दी हैं जो मअयूब नहीं हैं। मषलन अपने दोस्त अहबाब से पानी पिलाने की फ़र्माइश करना जैसा कि हदीष में मज़कूर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अनस (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ लाकर पानी त़लब किया। हज़रत अनस (रज़ि.) भी मिज़ाजे रिसालत के क़द्रदान थे उन्होंने पानी और दूध मिलाकर लस्सी बनाकर पेश कर दिया। आदाबे मज्लिस का यहाँ दूसरा वाक़िया पेश आया जो रिवायत में मज़कूर है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने सुन्नते रसूल (ﷺ) के इज़हार और उसकी अहमियत बतलाने के लिये तीन बार ये लफ़ज़ दोहराए। वाक़िया यही है कि सुन्नते रसूल (ﷺ) की बड़ी अहमियत है ख़्वाह वो सुन्नत कितनी ही छोटी क्यूँ न हो। फ़िदाइयाने रसूल (ﷺ) के लिये ज़रूरी है कि वो हर वक़्त हर काम में सुन्नते रसूल (ﷺ)

को सामने रखें, इसी में दोनों जहान की भलाई है।

### बाब 5 : शिकार का तोहफा कुबूल करना

और नबी करीम (ﷺ) ने शिकार के बाज़ू का तोहफा अबू क़तादा से कुबूल फ़र्माया था (इसी से बाब का तर्जुमा प्रामाणिक हुआ)

2572. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस बिन मालिक ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मरूज ज़ोह्रान नामी एक जगह में हमने एक ख़रगोश का पीछा किया। लोग (उसके पीछे) दौड़े और उसे थका दिया और मैंने क्रूरता पहुँचकर उसे पकड़ लिया। फिर अबू तलहा (रज़ि.) के यहाँ लाया, उन्होंने उसे ज़िबह किया और उसके पीछे का या दोनों रानों का गोश्त नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा। (शुअबा ने बाद में यज़ीन के साथ) कहा कि दोनों रानें उन्होंने भेजी थीं, उसमें कोई शक नहीं। हज़ुरे अकरम (ﷺ) ने उसे कुबूल फ़र्माया था मैंने पूछा और उसमें से आपने कुछ तनावुल भी फ़र्माया था? उन्होंने बयान किया कि हाँ! कुछ तनावुल भी फ़र्माया था। उसके बाद फिर उन्होंने कहा कि आपने वो हदिया कुबूल फ़र्मा लिया था। (दीगर मक़ाम: 5489, 5535)

2573. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया इब्ने शिहाब से, वो अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इब्ना बिन मसऊद से, वो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से और वो स़अब बिन ज़शामा (रज़ि.) से कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में गोरखर का तोहफा पेश किया था। आप (ﷺ) उस वक़्त मक़ामे अब्बा या मक़ामे विदान में थे (रावी को शुब्हा है) आपने उनका तोहफा वापस कर दिया। फिर उनके चेहरे पर (रंज के आघार) देखकर फ़र्माया कि मैंने ये तोहफा सिर्फ़ इसलिये वापस किया है कि हम एहराम बाँधे हुए हैं। (राजेअ: 1825)

**तशरीह:** इन्मा कबिलस्सयद मिन अबी क़तादत वरदहू अलस्सअबि मअअन्नह (ﷺ) कान फिल्हालैनि मुहरिमन लिअन्नल्मुहरिम ला यम्लिकुस्सयद व यम्लिकु मज़बूहल्हलालि लिअन्नहू ककिर्अति लहमिन लम यब्क फी हुक्मिस्सयदि (ऐनी) आहज़रत (ﷺ) ने अबू क़तादा (रज़ि.) का शिकार कुबूल फ़र्मा लिया और स़अब बिन ज़शामा (रज़ि.) का वापस कर दिया। हालाँकि आप दोनों हालतों में मुहरिम थे। इसको वजह ये कि मुहरिम शिकारे

### 5- بَابُ قَبُولِ هَدِيَةِ الصَّيْدِ.

وَقَبَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ أَبِي قَتَادَةَ عَصَدَةَ الصَّيْدِ

٢٥٧٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَيْنَا أَرْثَا بِمَرِّ الظُّهْرَانِ، فَسَقَى الْقَوْمَ فَلَقَبُوا، فَأَذْرَكُهَا فَأَعْلَنَهَا، فَاتَتْ بِهَا أُمُّ طَلْحَةَ فَلَذَبَهَا وَبَعَثَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِوَرِكَيْهَا - أَوْ فَعَلْنِيهَا قَالَ: ((فَعَلْنِيهَا لَا شَكَّ لِي)) - فَقَبَلَهَا. قُلْتُ: وَأَكَلَ مِنْهُ؟ قَالَ: وَأَكَلَ مِنْهُ. ثُمَّ قَالَ بَعْدُ: قَبَلَهَا)). [طرقاه: ١٠٤٨٩، ١٠٥٣٥]

٢٥٧٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ الْهَدْيَ يُرْسَلُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ حِمَارًا وَخَشِيًا - وَهُوَ بِالْأَنْوَاعِ أَوْ بِوَرِكَيْنِ - فَرَدَّ عَلَيْهِ. فَلَمَّا رَأَى مَا فِي وَجْهِهِ قَالَ: ((أَمَّا إِنَّا لَم نَرُدُّهُ عَلَيْكَ إِلَّا أَنَا حُرْمٌ)).

[راجع: ١٨٢٥]

महज़ को मिल्कियत में नहीं ले सकता और हलाल ज़बीहा को मिल्कियत में ले सकता है। इसलिये कि वो गोश्त के टुकड़े की मानिन्द है जो शिकार के हुक्म में बाक़ी नहीं रहा। पस सअब बिन ज़ाबामा (रज़ि.) का पेशकर्दा गोश्त शिकारे महज़ था और आप मुहरिम थे लिहाज़ा आप (ﷺ) ने उसे वापस फ़र्मा दिया।

### बाब 7 : हदिया का कुबूल करना

2574. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि लोग (रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में) तहाइफ़ भेजने के लिये आइशा (रज़ि.) की बारी का इंतज़ार किया करते थे। अपने हदाया से या इस ख़ास दिन के इंतज़ार से (रावी को शक है) लोग आँहज़रत (ﷺ) की खुशी हासिल करना चाहते थे। (दीगर मक्राम: 2580, 2581, 3775)

ख़िदमते नबवी में तोहफ़ा और फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी में पेश करना दोनों उमूर रसूल करीम (ﷺ) की खुशी का बाज़िष थे। रावी के बयान का यही मतलब है।

2575. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे जा'फ़र बिन अयास ने बयान किया, कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उनकी ख़ाला उम्मे हुफैद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पनीर, घी और गोह (साहना) के तहाइफ़ भेजे। आँहज़रत (ﷺ) ने पनीर और घी मे से तो तनावुल फ़र्माया लेकिन गोह पसन्द न होने की वजह से छोड़ दी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के (इसी) दस्तरख़वान पर (गोह को भी) खाया गया और अगर वो हराम होती तो आप (ﷺ) के दस्तरख़वान पर क्यों खाई जाती।

**तशरीह:** आँहज़रत (ﷺ) ने गोह (साहना) का हदिया कुबूल तो फ़र्मा लिया, लेकिन खुद नहीं खाया, क्योंकि आपकी ये मरगूब न था। हाँ आपके दस्तरख़वान पर उसे सहाबा किराम (रज़ि.) ने खाया जो इसकी हलाल होने की दलील है मगर तब्ज़ी कराहियत से कोई उसे न खाए तो वो गुनाहगार नहीं होगा, हाँ उसे हराम कहना ग़लत है।

अल् मुहहिप्पुल कबीर हज़रतुल उस्ताज़ मौलाना अब्दुर्हमान साहब मुबारक पुरी (रह.) फ़र्माते हैं, व ज़कर इब्नु खालवय अन्नज़जब्ब यईशु सबअमिअति सनतिन व अन्नहू ला यशबुल्माअ व यबूल फी कुल्लि अर्बईन यौमन क़त्तन व ला यस्कुतु लहू सिन्नन व युकालु बल अस्नानुहू किल्अतुन वाहिदतुन व हका गैरुहु अन्न अक्ल लहमिही यज्हुबुलअतश या'नी इब्ने ख़ाल्विया ने ज़िक्र किया है कि गोह (साहना) सात सौ साल तक ज़िन्दा रहती है और वो पानी नहीं पीती और चालीस दिन में सिर्फ़ एक क़तरा पेशाब करती है और उसके दांत नहीं गिरते बल्कि कहा जाता है कि

### ۷- بَابُ قَبُولِ الْهَدِيَّةِ

۲۵۷۴- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّاسَ كَانُوا يَخْتَرُونَ بَهَائِيَهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ يَتَعَوَّنَ بِهَا - أَوْ يَتَعَوَّنَ بِذَلِكَ - مَوْضِعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

[أطرافه ن: ۲۵۸۰، ۲۵۸۱، ۳۷۷۵].

۲۵۷۵- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: بِسَمْعِ سُوَيْدِ بْنِ جَبْرِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَهْدَيْتُ أُمَّ خَلِيفٍ - عَالَةَ ابْنِ عَبَّاسٍ - إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَطِطًا وَسَمْنَا وَأَحْبًا، فَأَكَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْأَطِطِ وَالسَّمَنِ وَتَرَكَ الْأَحْبَ غَلُورًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأَكَلَ عَلَى مَائِدَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَلَوْ كَانَ حَرَامًا مَا أَكَلَ عَلَى مَائِدَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

उसके दांत एक ही कटआ की शक्ल में होते हैं और कुछ का ऐसा भी कहना है कि उसका गोश्त प्यास को बुझा देता है।

आगे हज़रत मौलाना फ़र्माते हैं कि व कालन्नववी अज्मअल्मुस्लिमून अला अन्नज़ब्ब हलालुन लैस बिमवल्हिन. या'नी मुसलमानों का इज्माअ है कि गोह (साहना) हलाला है मकरूह नहीं है। मगर हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के अस्हाब इसे मकरूह कहते हैं। इन हज़रात का ये कौल नुसूसे सरीहा के खिलाफ़ होने की वजह से नाकाबिले तस्लीम है। तिर्मिज़ी की रिवायत अन इब्ने उमर में साफ़ मौजूद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ला आकुलुहु व ला उहरिमुहुन में इसे खाता हूँ न हराम करार देता हूँ। इस हदीष के ज़ेल हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़र्माते हैं व क्रद इख़तलफ़ अहलुल्इल्मि फी अक्लिज़्जब्बि फरख़स फीहि बअज़ु अहलिन्इल्मि मिन अस्हाबिन्नबिय्यि (ﷺ) व गैरुहुम व करिहू बअजुहुम व युवा अनिब्नि अब्बासिन अन्नहू काल अकलज़ब्ब अला माइदति रसूलिल्लाहि (ﷺ) व इन्नमा तरकहू रसूलुल्लाहि (ﷺ) तकज़्ज़ुरन. या'नी गोह (साहना) के बारे में अहले इल्म ने इख़िलाफ़ किया है। पस अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) में से कुछ ने उसके लिये रुख़सत दे दी है और उनके अलावा दूसरे अहले इल्म ने भी और कुछ ने इसे मकरूह कहा है और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरबी है कि रसूले करीम (ﷺ) के दस्तरख़वान पर गोह (साहना) का गोश्त खाया गया। मगर आप (ﷺ) ने तबई कराहियत की बिना पर नहीं खाया।

हज़रत मौलाना मुबारकपुरी मरहूम फ़र्माते हैं, व हुब कौलुल्जुम्हूर व हुवराजिह अल्मुअव्वलु अलैहि या'नी जुम्हूर का कौल हिल्लत ही के लिये है और यही कौल राजेह है जिस पर फ़त्वा दिया गया है और इस मसलक पर हज़रत मौलाना मरहूम ने आठ अह्दादीष व आधार नक़ल फ़र्माए हैं और मकरूह कहने वालों के दलाइल पर बत्तरीके अहसन तब्सरा किया है। तफ़्सील के लिये तोहफ़तुल अहवज़ी जिल्द : 3, पेज नं. 73, 74 का मुतालआ किया जाना ज़रूरी है।

2576. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअन बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन तहमान ने बयान किया उन्होंने मुहम्मद बिन ज़ियाद से और वो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जब कोई खाने की चीज़ लाई जाती तो आप (ﷺ) दरयाफ़्त करते थे तोहफ़ा है या सद्का? अगर कहा जाता कि सद्का है तो आप (ﷺ) अपने सहाबा से फ़र्माते कि खाओ, आप खुद न खाते और अगर कहा जाता कि तोहफ़ा है तो आप (ﷺ) खुद भी हाथ बढ़ाते और सहाबा के साथ उसे खाते।

٢٥٧٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا مَنْ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أُتِيَ بِطَعَامٍ سَأَلَ عَنْهُ: «أَهْبِيئَةٌ أَمْ مَعْتَقَةٌ»)) فَإِنْ قِيلَ مَعْتَقَةٌ قَالَ لَا تَخَابُوا: «كُلُوا»، وَلَوْ يَأْكُلُ: وَإِنْ قِيلَ هَبِيئَةٌ، حَرَبَ يَدُوهُ ﷺ، فَأَكَلَ مَعَهُمْ.

सदके को इसलिये न खाते कि ये आपके लिये और आपकी आल के लिये हलाल नहीं और उसमें बहुत सी मस्लिहतें आप (ﷺ) के पेशेनज़र थे जिनकी वजह से आप (ﷺ) ने अम्वाले सद्कात को अपने और अपनी आल के लिये खाना जाइज़ करार नहीं दिया।

2577. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे कतादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक बार गोश्त पेश किया गया कि ये बरीरा (रज़ि.) को किसी ने बत्तौर सद्का के दिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनके लिये ये सद्का है और हमारे

٢٥٧٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيلَ: نَصَدَقَ عَلَى

लिये (जब उनके यहाँ से पहुँचा तो) हदिया है। (राजेअ: 1495)

بَرِيرَةَ، قَالَ: ((هِيَ لَهَا صَدَقَةٌ، وَكَأَنَّ

هَدِيَّةً)). [راجع: 1495]

मुहताज मिस्कीन जब सद्का या ज़कात का मालिक बन चुका तो अब वो मुख्तार है जिसे चाहे खिलाए जिसको चाहे दे। अमीर या गरीब को उसका तो हफ़ा कुबूल करना जाइज होगा।

2578. हमसे मुहम्मद बिन बशार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम से, शुअबा ने कहा कि मैंने ये हदीष अब्दुर्रहमान से सुनी थी और उन्होंने क़ासिम से रिवायत की, उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि उन्होंने बरीरा (रज़ि.) को (आज़ाद करने के लिये) ख़रीदना चाहा। लेकिन उनके मालिकों ने विलाअ की शर्त अपने लिये लगाई। जब उसका ज़िक्र रसूले करीम (ﷺ) से हुआ, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तू उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दे, विलाअ तो उसी के साथ क़ायम रहती है जो आज़ाद करे। और बरीरा (रज़ि.) के यहाँ (सद्का का) गोश्त आया था तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा ये वही है जो बरीरा को सद्का में मिला है। ये उनके लिये तो सद्का है लेकिन हमारे लिये (चूँकि उनके घर से बतौर हदिया मिला है) हदिया है और (आज़ादी के बाद बरीरा को) इख़्तियार दिया गया था (कि अगर चाहें तो अपने निकाह को फ़सख़ कर सकती हैं) अब्दुर्रहमान ने पूछा बरीरा (रज़ि.) के शौहर (हज़रत मुगीष) गुलाम थे या आज़ाद? शुअबा ने बयान किया कि मैंने अब्दुर्रहमान से उनके शौहर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मा'लूम नहीं वो गुलाम थे या आज़ाद। (राजेअ: 456)

٢٥٧٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ قَالَ: سَمِعْتُهُ مِنْهُ عَنْ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((لَهَا أَزَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ، وَإِنَّهُمْ اشْتَرَوْهَا وَلَا عَمَلًا، فَذَكَرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اشْتَرِيَهَا فَأَعِيتِيهَا، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْتَقَ)). وَأَهْدِيَهَا لَهَا لَحْمًا، فَقِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: هَذَا تُصَدِّقُ عَلَى بَرِيرَةَ، فَقَالَ: ((هِيَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ)). وَخَبَرْتُ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: زَوْجُهَا حُرٌّ أَوْ عَبْدٌ؟ قَالَ شُعْبَةُ: سَأَلْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ عَنْ زَوْجِهَا، قَالَ: لَا أَذْرِي أَحَرًّا أَمْ عَبْدًا)).

[راجع: 456]

2579. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद हज़ज़ाअ ने हफ़सा बिनते सीरीन से कि उम्मे अत्तिया (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ तशरीफ़ ले गए और पूछा, क्या कोई चीज़ (खाने की) तुम्हारे पास है? उन्होंने कहा कि उम्मे अत्तिया (रज़ि.) के यहाँ जो आपने सद्का की बकरी भेजी थी, उसका गोश्त उन्होंने भेजा है। उसके सिवा और कुछ नहीं है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो अपनी जगह पहुँच

٢٥٧٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ قَالَ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ خَالِدِ بْنِ الْحَذَاءِ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سَوْرَةَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةٍ قَالَتْ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَقَالَ: ((مَلَّ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ؟)) قَالَتْ: لَا، إِلَّا شَيْءٌ بَقِيَ مِنْهُ أَمْ عَطِيَّةٍ مِنَ الشَّاةِ الَّتِي بَعَثْتَ

चुकी। (राजेअ: 1446)

إِلَيْهَا مِنَ الصَّدَقَةِ. قَالَ: ((أَبُهَا قَدْ بَلَغَتْ

مَجْلَهَا)). (راجع: ١٤٤٦)

या'नी उसका खाना अब हमारे लिये जाइज़ है क्योंकि मसला ये है कि सद्का ज़कात वगैरह जब किसी मुस्तहिक शख्स को दे दिया जाए, तो वो अब जिस तरह चाहे उसे इस्ते'माल कर सकता है। वो चाहे किसी अमीर गरीब को खिला सकता है। बतौर तोहफ़ा भी दे सकता है। अब वो उसका ज़ाती माल हो गया, वो उसका मालिक बन गया। उसको खर्च करने में उतनी ही आज़ादी है जितनी कि मालिक को होती है। गरीब आदमी की दिलजोई के लिये उसका हदिया कुबूल कर लेना और भी मौजिबे प्रवाब है।

**बाब 8 : अपने किसी दोस्त को खास उस दिन तोहफ़ा भेजना जब वो अपनी एक खास बीबी के पास हो**

2580. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया हिशाम से, उनसे उनके वालिद ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग तहाइफ़ भेजने के लिये मेरी बारी का इंतज़ार किया करते थे। और उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कहा मेरी सौकनें (उम्माहातुल मोमिनीन रज़वानुल्लाह अलैहिन्ना जमा थीं उस वक़्त उन्होंने हुज़ुरे अकरम (ﷺ) से। (बतौर शिकायत लोगों की इस रविश का) ज़िक्र किया तो आपने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। (राजेअ: 2574)

इसलिये कि सहाबा (रज़ि.) अपनी मर्जी के मुख्तार थे, आप (ﷺ) के मिज़ाज-शनास थे, वो अज़बुद ऐसा करते थे फिर उन्हें रोका क्यों कर जा सकता था।

2581. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद बिन अबी उवैस ने, उनसे सुलैमान ने हिशाम बिन इर्वा से, उनसे उनके बाप ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाज की दो टुकड़ियाँ थीं। एक में आयशा (रज़ि.), हफ़सा (रज़ि.) सफ़िया (रज़ि.), और सौदा (रज़ि.) और दूसरी में उम्मे सलमा और बक्रिया अज़्वाजे मुत्तहहरात थीं। मुसलमानों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की आइशा (रज़ि.) के साथ मुहब्बत का इल्म था, इसलिये जब किसी के पास कोई तोहफ़ा होता और वो उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश करना चाहता तो इंतज़ार करता। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की आयशा (रज़ि.) के घर की बारी होती तो तोहफ़ा देने वाले साहब अपना तोहफ़ा आप (ﷺ) की ख़िदमत में भेजते। इस पर उम्मे सलमा (रज़ि.) की जमाअत की अज़्वाजे मुत्तहहरात ने आपस में मश्वरा किया और उम्मे सलमा (रज़ि.) से

٨- بَابُ مَنْ أَهْتَى إِلَى صَاحِبِهِ

وَتَحَرَّى بَعْضُ بَسَائِلِهِ دُونَ بَعْضٍ

٢٥٨٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ

حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ

النَّاسُ يَتَحَرَّوْنَ يَهْدِيَانَهُمْ يَوْمِي. وَقَالَتْ أُمُّ

سَلَمَةَ: إِنَّ صَوَاحِبِي اجْتَمَعْنَ، فَتَحَرَّتْ

لَهُ، فَأَعْرَضَ عَنْهَا)). (راجع: ٢٥٧٤)

٢٥٨١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي

أَبِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ غُرُوفَةَ

عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ

بِسَاءَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كُنَّ حَزْبَيْنِ: فَحِزْبٌ

لِهِ عَائِشَةُ وَخَلِصَةُ وَصَفِيَّةُ وَسَوْدَةُ،

وَالْحِزْبُ الْآخَرُ أُمُّ سَلَمَةَ وَمَكْرِبُ بِسَاءَ

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ قَدْ

عَلِمُوا حُبَّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَائِشَةَ، فَإِذَا

كَانَتْ حَيْثُ أَحْبَبَهُمْ هَدِيَّةٌ يُرِيدُ أَنْ يَهْدِيَهَا

إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَخْرَجَهَا حَتَّى إِذَا كَانَ

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ بَقِيَ

कहा कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) से बात करें ताकि आप लोगों से फ़र्मा दें कि जिसे आप (ﷺ) के यहाँ तोहफ़ा भेजना हो वो जहाँ भी आप (ﷺ) हों वहाँ भेजा करे। चुनाँचे उन अज़्वाज के मश्वरे के मुताबिक़ उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा लेकिन आप (ﷺ) ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। फिर उन ख़्वातीन ने पूछा तो उन्होंने बता दिया कि मुझे आपने कोई जवाब नहीं दिया। अज़्वाजे मुतहहरात ने कहा कि फिर एक बार कहो। उन्होंने बयान किया कि फिर जब आपकी बारी आई तो दोबारा उन्होंने आप (ﷺ) से अर्ज़ किया। इस बार भी आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया। जब अज़्वाजे मुतहहरात ने पूछा तो उन्होंने फिर वही बताया कि आप (ﷺ) ने मुझे इसका कोई जवाब नहीं दिया। अज़्वाज ने इस बार उनसे कहा कि आप (ﷺ) को इस मसले पर बुलवाओ तो सही। जब उनकी बारी आई तो उन्होंने फिर कहा। आप (ﷺ) ने इस बार फ़र्माया। आइशा (रज़ि.) के बारे में मुझे तकलीफ़ न दो। आइशा (रज़ि.) के सिवा अपनी बीवियों में से किसी के कपड़े में भी मुझ पर वहा नाज़िल नहीं होती है। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि आप (ﷺ) के इस इशारे पर उन्होंने अर्ज़ किया, आपको ईज़ा पहुँचने की वजह से मैं अल्लाह के हुज़ूर में तौबा करती हूँ। फिर उन अज़्वाजे मुतहहरात ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की माहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और उनके ज़रिये आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ये कहलवाया कि आपकी अज़्वाज अबूबक्र (रज़ि.) की बेटी के बारे में अल्लाह के लिये आपसे इस्त्राफ़ चाहती हैं। चुनाँचे उन्होंने भी आप (ﷺ) से बातचीत की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी बेटी! क्या तुम वो पसन्द नहीं करती जो मैं करूँ? उन्होंने जवाब दिया कि क्यूँ नहीं, उसके बाद वो वापस आ गई और अज़्वाज को इज़्जिलाअ दी। उन्होंने उनसे फिर दोबारा ख़िदमते नबवी में जाने के लिये कहा। लेकिन आपने दोबारा जाने से इन्कार कर दिया तो उन्होंने ज़ैनब बिनते जहश (रज़ि.) को भेजा। वो ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुई तो उन्होंने सख़्त बातचीत की और कहा कि आपकी अज़्वाज अबूक्रहाफ़ा की बेटी के बारे में आपसे अल्लाह के लिये इस्त्राफ़ मांगती हैं और उनकी आवाज़ ऊँची हो गई। आइशा (रज़ि.) वहीं बैठी हुई थीं। उन्होंने (उनके मुँह पर) उन्हें भी बुरा-भला कहा। रसूलुल्लाह (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की तरफ़ देखन

صَاحِبُ الْهَدْيَةِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ. فَكَلِمَ حِزْبٌ أَمْ سَلَمَةُ فَقُلْنَ لَهَا: كَلِمِي. رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُكَلِّمُ النَّاسَ يَقُولُ: مَنْ أَرَادَ أَنْ يَهْدِيَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ هَدِيَّةً فَلْيَهْدِهِ حَيْثُ كَانَ مِنْ بَنَاتِهِ، فَكَلِمَتُهُ أَمْ بِنَاتُ بِنَاتٍ، فَلَمْ يَقُلْ لَهَا شَيْئًا، فَسَأَلَهَا فَقَالَتْ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا، فَقُلْنَ لَهَا: فَكَلِمِي، قَالَتْ: فَكَلِمَتُهُ جِئَنِّي دَارَ إِلَيْهَا أَيْضًا، فَلَمْ يَقُلْ لَهَا شَيْئًا. فَسَأَلَهَا فَقَالَتْ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا. فَقُلْنَ لَهَا: كَلِمِي حَتَّى يُكَلِّمَكَ. فَدَارَ إِلَيْهَا فَكَلِمَتُهُ فَقَالَ لَهَا: ((لَا تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ، فَإِنَّ الْوَحْيَ لَمْ يَأْتِي وَأَنَا فِي ثَوْبِ امْرَأَةٍ إِلَّا عَائِشَةَ)). قَالَتْ: فَقُلْتُ: أَوْبُ إِلَى اللَّهِ مِنْ أَذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. ثُمَّ إِنَّهُمْ دَعَوْنَ فَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَارْسَلْنَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ تَقُولُ: إِنَّ بِسَاءَكَ يَشُدُّكَ اللَّهُ الْقَبْلَ لِي بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ. فَكَلِمَتُهُ فَقَالَتْ: ((يَا بِنْتِ، أَلَا تُحِبِّينَ مَا أَحَبُّنَّ)). قَالَتْ: بَلَى. فَارْجَعْتَ إِلَيْهِنَّ فَاخْبَرْنَهُنَّ، فَقُلْنَ لِرُجْعِي إِلَيْهِ، قَالَتْ: أَنْ تَرْجِعَ. فَارْسَلْنَ رَتَبَ بِنْتِ جَعْفَرٍ، قَالَتْ: فَاعْلَظْتُ وَقَالَتْ: إِنَّ بِسَاءَكَ يَشُدُّكَ اللَّهُ الْعَدْلَ لِي بِنْتِ ابْنِ أَبِي قُحَافَةَ، فَارْتَفَعَتْ صَوْتُهَا حَتَّى تَنَاقَلَتْ عَائِشَةُ وَهِيَ قَاعِدَةٌ فَسَبَّهَا، حَتَّى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَنَظَرُ إِلَى عَائِشَةَ مَلَى تَكَلَّمَ، قَالَ: فَكَلِمَتُهُ

लगे कि वो कुछ बोलती है या नहीं। रावी ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) भी बोल पड़ीं और ज़ैनब (रज़ि.) की बातों का जवाब देने लगीं और आखिर उन्हें खामोश कर दिया। फिर रसूले करीम (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) की तरफ देखकर फ़र्माया कि ये अबूबक्र की बेटी है। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि आखिर कलामे फ़ातिमा (रज़ि.) के वाकिये के बारे में हिशाम बिन इर्वा ने एक और शाख़्स से भी बयान किया है। उन्होंने जुहरी से रिवायत की और उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान से और अबू मरवान ने बयान किया हिशाम से और उन्होंने इर्वा से कि लोग तहाइफ़ भेजने के लिये हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी का इंतज़ार किया करते थे और हिशाम की एक रिवायत कुरैश के एक साहब और एक दूसरे साहब से जो गुलामों में से थे, भी है। वो जुहरी से नक़ल करते हैं और वो मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम से कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा जब फ़ातिमा (रज़ि.) ने (अंदर आने की) इजाज़त चाही तो मैं उस वक़्त आप (ﷺ) ही की ख़िदमत में मौजूद थी।

**तशरीह:** हुआ ये कि आँहज़रत (ﷺ) की कुछ बीवियाँ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में जमा हुईं और ये कहा कि तुम आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ करो कि आप अपने सहाबा को हुक्म दे कि वो हदिये और तहाइफ़ भेजने में ये राह न देखते रहें कि आँहज़रत (ﷺ) फ़लों बीवी के घर तशरीफ़ ले जाएँ तो हम तहाइफ़ भेजें, बल्कि बिला क़ैद आप किसी बीवी के पास हों भेज दिया करें। चुनाँचे उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनके मज़रूज़ा पर कुछ इल्तिफ़ात नहीं फ़र्माया। वजह इल्तिफ़ात न फ़र्माने की ये थी कि उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) की दरख्वास्त मा'कूल न थी। तोहफ़ा भेजने वाले की मज़ी जब चाहे भेजे, उसको ज़बरन कोई हुक्म नहीं दिया जा सकता कि फ़लों वक़्त भेजे फ़लों वक़्त न भेजे। इस तवील हदीष में इसी वाकिये की तफ़सील मज़कूर है और हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

जहाँ तक बीवियों के हुक्के वाजिबा का ता'ल्लुक था आँहज़रत (ﷺ) ने सबके लिये एक-एक रात की बारी मुक़रर कर रखी थी और उसी के मुताबिक़ अमल दरामद हो रहा था। चूँकि हज़रत आइशा (रज़ि.) के कुछ खुसूसी औसाफ़े हुसना थे और आप उन्हीं की वजह से उनसे ज़्यादा मुहब्बत करते थे। इसलिये तहाइफ़ भेजने वाले कुछ सहाबा (रज़ि.) ने ये सोचा कि जब हुजूर (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की बारी में उनके यहाँ आया करें उस वक़्त हदिया तोहफ़ा भेजा करेंगे। इस पर दूसरी अज़्वाजे मुतहहरात ने आप (ﷺ) की ख़िदमत में दरख्वास्त की कि सहाबा (रज़ि.) को इस खुसूसियत से रोक दें। मुतालबा दुस्त न था लिहाज़ा आप (ﷺ) ने इस पर कोई तवज्जह न दी यहाँ तक कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को दरम्यान में लाया गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ मेरी प्यारी बेटो! क्या तुम उनको दोस्त नहीं रखती जिनको मैं दोस्त रखता हूँ। इस पर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ हुजूर बेशक मैं भी जिसे आप दोस्त रखते हैं उसको दोस्त रखती हूँ। उसके बाद हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) हमेशा हज़रत आइशा (रज़ि.) को दोस्त रखती रहीं। हज़रत अली (रज़ि.) मनाकिबे आइशा (रज़ि.) में फ़र्मते हैं कि अल्लाह जानता है हज़रत आइशा (रज़ि.) दुनिया और आखिरत में रसूले करीम (ﷺ) की बीवी हैं। अल्लाह को फटकार हो उन बदज़ुबान बेलगाम नालायक लोगों पर जो हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) की शान में जुबानदराज़ी करें। हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम आमीन

عَائِشَةُ تَرُدُّ عَلَى زَيْنَبَ حَتَّى امْتَكَّتَهَا.  
قَالَتْ: فَظَرَّ النَّبِيُّ... إِلَى عَائِشَةَ وَقَالَ:  
«إِنَّهَا بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ».  
قَالَ الْبَخَارِيُّ: الْكَلَامُ الْأَخِيرُ قِصَّةُ فَاطِمَةَ  
يَذْكُرُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ رَجُلٍ عَنْ  
الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ.  
وَقَالَ أَبُو مَرْوَانَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ:  
«كَانَ النَّاسُ يَتَحَرَّوْنَ بِهَذَا يَأْتِيهِمْ يَوْمَ  
عَائِشَةَ».  
وَعَنْ هِشَامٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ  
قُرَيْشٍ وَرَجُلٍ مِنَ التَّمَوَالِي عَنْ الزُّهْرِيِّ  
عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ  
بْنِ هِشَامٍ: «قَالَتْ عَائِشَةُ: كُنْتُ عِنْدَ  
النَّبِيِّ ﷺ، فَاسْتَأْذَنْتُ فَاطِمَةَ».



हजरत आइशा सिदीका (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये इतना काफी है कि वो सय्यदना अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) की बेटी हैं और जिस तरह हजरत सिदीक (रज़ि.) सहाबा किराम में ज़्यादा इल्म व फ़ज़ल रखते थे वैसे ही उनकी साहबज़ादी भी औरतों में आलिमा और फ़ाज़िला और मुकर्रिा थीं। हज़ारों अश्आर उनको बरज़ुबान याद थे। फ़साहत और बलागत में कोई उनका मुर्शल न था। व ज़ालिक फज़लुल्लाहि यूतीहि मय्यशाउ

और सबसे बड़ी फ़ज़ीलत ये कि सरकार रिसालत ने उनको बहुत सी खुसूसियात की बिना पर अपनी खासा रफ़ीके हयात करार दिया। हजरत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आपका खास इकराम किया। वक़फ़ा बिही फ़ज़लन

हजरत इमाम बुखारी (रह.) इस तवील हदीष को यहाँ इसलिये लाए कि बाब का मज़मून इससे स़ाहतन प्राबित होता है कि कोई शख्स अपने किसी खास दोस्त को तोहफ़े तहाइफ़ उसकी खास बीवी की बारी में पेश कर सकता है।

अल्हम्दुलिल्लाह अप्रैल 1970 हिजरी की पाँच तारीख तक का 'बा शरीफ़ मक़तुल मुकर्रमा में ये पारा इस हदीष तक पढ़ा गया और अहादीषे नबबिया के लफ़ज़ लफ़ज़ पर ग़ौरो-फ़िक्र करके अल्लाह से का'बा में दुआ की गई कि वो मुझे उसके समझने और तहक़ीक़ हक़ के साथ उसका उद् तर्जुमा व मुख़तसर जामेअ शरह लिखने की तौफ़ीक़ अता करे और उस बाक़ियातुस्सालिहात का प़वाब अज़ीम मेरे मरहूम भाई हाजी मुहम्मद अली उर्फ़ बिल्सारी प्यारो कुरैशी बंगलौर के हक़ में भी कुबूल करे जिनकी तरफ़ से हज़े बदल करने के सिलसिले में मुझको ज़ियारते हरमेन शरीफ़ेन की ये सज़ादत नज़ीब हुई। रब्बना तक्रब्बल मित्रा इन्नका अन्तस्समीडल अलीम.

## बाब 9 : जो तोहफ़ा वापस न किया जाना चाहिये ۹- بَابُ لَا مَا يُرَدُّ مِنَ الْهَدِيَّةِ

शायद हजरत इमाम बुखारी (रह.) ने उस रिवायत की तरफ़ इशारा फ़र्माया है जिसको तिर्मिज़ी ने इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि तोहफ़ा की तीन चीज़ें न फेरी जाएँ। तक्रिया, तैल और दूध। तिर्मिज़ी ने कहा तैल से खुशबूदार चीज़ मुराद है। दूसरी हदीष अबू हुरैरह (रज़ि.) में भी यही है कि खुशबू को न रद्द किया जाए। फ़िदाइयाने सुन्नते रसूल (ﷺ) के लिये ज़रूरी है कि वो आप (ﷺ) के उस्व-ए-हस्ना को अपना लायहा अमल बनाएँ।

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क

जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

2582. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अज़रा बिन प्राबित अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे धुमामा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, अज़रा ने कहा कि मैं धुमामा बिन अब्दुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझे खुशबू इनायत फ़र्माई और बयान किया कि अनस (रज़ि.) खुशबू इनायत फ़र्माई और बयान किया कि अनस (रज़ि.) खुशबू को वापस नहीं करते थे। धुमामा (रज़ि.) ने कहा कि अनस (रज़ि.) का गुमान था कि नबी करीम (ﷺ) खुशबू को वापस नहीं फ़र्माया करते थे। (दीगर मक़ाम : 5929)

۲۵۸۲- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا غَزْوَةُ بْنُ قَابَسٍ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي قُصَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: ((وَدَخَلْتُ عَلَيْهِ فَعَاوَنِي طَبِيبًا، قَالَ: كَانَ أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَا يُرَدُّ الطَّيِّبُ. قَالَ: وَزَعَمَ أَنَسٌ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يُرَدُّ الطَّيِّبُ)). [طرفه ۳: ۵۹۲۹].

## बाब 10 : जिनके नज़दीक ग़ायब चीज़ का हिबा करना दुरुस्त है

## ۱۰- بَابُ مَنْ رَأَى الْهَبَةَ الْعَابَةَ جَائِزَةً

या'नी जो चीज़ हिबा के वक़्त हाज़िर न हो, बाब की हदीष से ये मतलब इस तरह से निकाला कि कैदी उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ)

के पास हाज़िर न थे। मगर आपने हवाज़िन फ़तह करने वालों को हिबा कर दिये। कुछ ने कहा हिबा ग़ायब से मुराद ये है कि मौहूबा लहू ग़ायब हो जैसे हवाज़िन के लोग उस वक़्त हाज़िर न थे लेकिन आपने उनके कैदी उनको हिबा कर दिये।

2583,84. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उनसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उनसे उर्वा ने ज़िक्र किया कि मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) और मरवान बिन हकम ने उन्हें ख़बर दी कि जब क़बीला हवाज़िन का वफ़द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो आप (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब फ़र्माया और अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्द के बाद आपने फ़र्माया अम्मा बअद! ये तुम्हारे भाई तौबा करके हमारे पास आए हैं और मैं यही बेहतर समझता हूँ कि उनके कैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ। अब जो शाख़्स अपनी खुशी से (कैदियों को) वापस करना चाहे वो वापस कर दे और जो ये चाहे कि उन्हें उनका हिस्सा मिले (तो वो भी वापस कर दे) और हमें अल्लाह तआला (उसके बाद) सबसे पहली जो ग़नीमत देगा, उसमें से हम उसे मुआवज़ा दे देंगे। लोगों ने कहा हम आप अपनी खुशी से (उनके कैदियों को वापस करके) आपका इश्राद तस्लीम करते हैं। (राजेअ: 2307, 2308)

٢٥٨٣، ٢٥٨٤ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: ذَكَرَ غُرُوقُ ابْنِ التَّمِيمِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا وَمَرْوَانَ أَخْبَرَاهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، حِينَ جَاءَهُ وَلَدُ هَوَازِنَ قَامَ فِي النَّاسِ فَأَتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ جَاؤُونَا تَائِبِينَ، وَإِنِّي رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْتَهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطِيبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نَعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا)). فَقَالَ النَّاسُ: طَيِّبًا لَكَ)). [راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

**तशरीह:** मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) की कुत्रियत अबू अब्दुर्रहमान है, जुहरी व कुरैशी हैं। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के भांजे हैं। हिजरते नबवी के दो साल बाद मक्का में उनकी पैदाइश हुई। ज़िलहिज्ज 8 हिजरी में मदीना मुनव्वरा पहुँचे। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उम्र सिर्फ़ आठ साल थी। उन्होंने आहज़रत (ﷺ) से हदीष की समाअत की और उनको याद रखा। बड़े फ़क़ीह और साहिबे फ़ज़ल और दीनदार थे। उम्मान (रज़ि.) की शहादत तक मदीना ही में मुक़ीम रहे। उनकी शहादत के बाद वे मक्का में मुतक़िल हो गए और मुआविया (रज़ि.) की वफ़ात तक वहीं मुक़ीम रहे। उन्होंने यज़ीद की बेअत को पसन्द नहीं किया। लेकिन फिर भी मक्का ही में रहे जब तक कि यज़ीद ने लश्कर भेजा और मक्का का मुहासरा (घेराव) कर लिया, उस वक़्त इब्ने जुबैर (रज़ि.) मक्का ही में मौजूद थे। चुनाँचे इस मुहासरे में मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) को भी मिन्जिनीक़ से फेंका हुआ एक पत्थर लगा। ये उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे। उस पत्थर से उनकी शहादत वाक़ेअ हुई। ये वाक़िया रबीउल अव्वल 64 हिजरी की चाँद रात को हुआ। उनसे बहुत से लोगों ने रिवायत की है।

## बाब 11 : हिबा का मुआवज़ा अदा करना

2585. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हदिया कुबूल फ़र्मा लिया करते। लेकिन उसका बदला भी दे दिया करते थे। इस हदीष को वकीअ और मुहाज़िर ने भी रिवायत किया, मगर उन्होंने उसको हिशाम से, उन्होंने अपने बाप से,

## ١١ - بَابُ الْمُكَافَأَةِ فِي الْهِبَةِ

٢٥٨٥ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقْبَلُ الْهَدِيَّةَ وَيُثِيبُ عَلَيْهَا)). لَمْ يَذْكُرْ وَكِيعٌ وَمَخَاصِرٌ: ((عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ

उन्होंने हजरत आइशा (रज़ि.) से के अल्फ़ाज़ नहीं कहे।

عَنْ عَائِشَةَ)).

**तशरीह:** हदीष के आखिर में राबी के अल्फ़ाज़, लम यज़कुर वकीअ मुहाज़िर अन हिशाम अन अबीहि अन आइशत का मतलब ये कि वकीअ और मुहाज़िर दोनों रावियों ने इस हदीष को हिशाम से, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से वस्ल नहीं किया, बल्कि मुर्सलन हिशाम से रिवायत किया। तिमिज़ी और बज़्ज़ार ने कहा इस हदीष को सिर्फ़ ईसा बिन यूनस ने वस्ल किया। हाफ़िज़ ने कहा वकीअ की रिवायत को तो इब्ने अबी शैबा ने निकाला और मुहाज़िर की रिवायत मुज़को नहीं मिली। कुछ मालिकिया ने इस हदीष से हिबा का बदला अदा करना वाजिब रखा है और हन्फ़िया और शाफ़िइया और जुम्हूर के नज़दीक वाजिब नहीं मुस्तहब है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा हिबा बिल मुआवज़ा अगर मुअय्यन और मा'लूम मुआवज़ा के बदल हो तो बेअ की तरह दुरुस्त होगा और अगर मुआवज़ा मजहूल हो तो हिबा सहीह न होगा।

## बाब 12 : अपने लड़के को कुछ हिबा करना

और अपने कुछ लड़कों को अगर कोई चीज़ हिबा में दी तो जब तक इस्माफ़ के साथ तमाम लड़कों को बराबर न दे, ये हिबा जाइज़ नहीं होगा और ऐस जुल्म के हिबा पर गवाह होना भी दुरुस्त नहीं। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अत्ताया के सिलसिले में अपनी औलाद के बीच इस्माफ़ करो, और क्या बाप अपना अत्तिया वापस भी ले सकता है? और बाप अपने लड़के के माल में से दस्तूर के मुताबिक़ जबकि जुल्म का इरादा न हो ले सकता है। नबी करीम (ﷺ) ने उमर (रज़ि.) से एक ऊँट ख़रीदा, और फिर उसे आपने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को दे दिया और फ़र्माया कि उसका जो चाहे कर।

**तशरीह:** अहले हदीष और शाफ़िइ और अहमद और जुम्हूर इलमा का यही क़ौल है कि हिबा में रुजूअ जाइज़ नहीं है। मगर बाप जो अपनी औलाद को हिबा करे, उसमें रुजूअ कर सकता है। तिमिज़ी और हाकिम ने रिवायत किया और कहा सहीह है। किसी शख्स को दुरुस्त नहीं कि अपने अत्तिया या हिबा में रुजूअ करे मगर वालिद जो अपनी औलाद को दे और हन्फ़िया ने उसमें इख़ितलाफ़ किया है उनके नज़दीक क़राबतदार मानेअ रुजूअ हिबा हैं।

2586. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी इब्ने शिहाब से, वो हुमैद बिन अब्दुर्रहमान और मुहम्मद बिन नोअमान बिन बशीर से और उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने कहा कि उनके वालिद उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लाए और अर्ज़ किया कि मैंने अपने इस बेटे को एक गुलाम बतौर हिबा दिया है। आप (ﷺ) ने पूछा, क्या ऐसा ही गुलाम अपने दूसरे लड़कों को भी दिया है? उन्होंने कहा कि नहीं, तो आपने फ़र्माया कि फिर (उनसे भी) वापस ले ले। (दीगर मक़ाम : 2587, 2650)

## ١٢ - بَابُ الْهَبَةِ لِلْوَلَدِ

وَإِذَا أُعْطِيَ بَعْضُ وَلَدِهِ شَيْئًا لَمْ يَجْزْ حَتَّى يَغْدِلَ بَيْنَهُمْ وَيُعْطِيَ الْآخَرَ مِثْلَهُ، وَلَا يُشْهَدُ عَلَيْهِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اغْدِلُوا بَيْنَ أَوْلَادِكُمْ فِي الْعَطِيَّةِ)). وَهَلْ لِلْوَالِدِ أَنْ يُوْجِعَ فِي عَطِيَّتِهِ؟ وَمَا يَأْكُلُ مِنْ مَالٍ وَلَدِهِ بِالْمَعْرُوفِ وَلَا يَنْقُذِي. وَاشْتَرَى النَّبِيُّ ﷺ مِنْ عُمَرَ بَعِيرًا ثُمَّ أَغْطَاهُ ابْنَ عُمَرَ وَقَالَ ((اصْنَعْ بِهِ مَا شِئْتَ)).

٢٥٨٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَمُحَمَّدِ بْنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ: أَنَّ أَبَاهُ أَتَى بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي نَحَلْتُ ابْنِي هَذَا غُلَامًا. فَقَالَ: ((أَكُلْ وَلَدَكَ نَحَلْتُ مِثْلَهُ؟)) قَالَ: لَا، قَالَ: ((فَارْجِعْهُ)).

[طرفاه في: ٢٥٨٧، ٢٦٥٠].

**तशीह:** मा'लूम हुआ कि औलाद के लिये हिबा या अतिरिया के सिलसिले में इस्माफ़ ज़रूरी है जो दिया जाए सबको बराबर बराबर दिया जाए, वरना जुल्म होगा। वालिद के लिये श्राबित हुआ कि वो औलाद से अपना अतिरिया वापस भी ले सकता है और औलाद के माल में से ज़रूरत के वक़्त दस्तूर के मुताबिक़ खा भी सकता है। इब्ने हिब्बान और तबरानी की रिवायत में यूँ है। आपने फ़र्माया, मैं जुल्म पर गवाह नहीं बनता। हमारे इमाम अहमद बिन हंबल का यही क़ौल है कि औलाद में अदल करना वाजिब है और एक को दूसरे से ज़्यादा देना हुराम है। एक रिवायत में यूँ है कि नोअमान के बाप ने उसको बाग़ दिया था और अक़्बर रिवायतों में गुलाम मज़कूर है। हाफ़िज़ ने कहा, त्राऊस और शौरी और इस्हाक़ भी इमाम अहमद के साथ मुतफ़िक्क़ हैं। कुछ मालिकिया कहते हैं कि ऐसा हिबा ही बातिल है और इमाम अहमद सहीह कहते हैं पर रुज़ूअ वाजिब जानते हैं और जुम्हूर का क़ौल ये है कि औलाद को हिबा करने में अदल और इस्माफ़ करना मुस्तहब है। अगर किसी औलाद को ज़्यादा दे तो हिबा सहीह होगा लेकिन मकरूह होगा, हन्फ़िया भी उसके क़ाइल हैं। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने यहाँ अमलुल ख़लीफ़तैन को नक़ल किया है और बतलाया है कि औलाद को हिबा करने में मसावात का हुक्म इस्तिहबाब के लिये है। मौता में सनदे सहीह के साथ मज़कूर है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने मर्जे वफ़ात में हज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया था, इन्नी कुन्तु नहलतु फ़लौ कुन्ति इख़तरतीहि लकान लकि व इन्नमा हुवल्लय्म लिल्लवारिष या'नी मैंने तुझको कुछ बतौर बख़िश देना चाहा था, अगर तुम उसको कुबूल कर लेतीं तो वो तुम्हारा हो जाता और अब तो वो वारिषों में ही तक्सीम होगा। हज़रत उमर (रज़ि.) का वाक़िया तहावी वग़ैरह ने ज़िक़्र किया है कि उन्होंने अपने बेटे आसिम को कुछ बतौर बख़िश दिया था। मानेईन ने उनका ये जवाब दिया है कि शैख़न के इन इक्दामात पर उनके दीगर बच्चे सब राज़ी थे। इस सूरत में जवाज़ में कोई शुब्हा नहीं। बहरहाल बेहतर व औला बराबरी ही है।

### बाब 13 : हिबा के ऊपर गवाह करना

2587. हमसे हामिद बिन इमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अबाना ने बयान किया हुसैन से, वो आमिर से कि मैंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना, वो मिम्बर पर बयान कर रहे थे कि मेरे बाप ने मुझे एक अतिरिया दिया, तो इम्रा बिन्ते रवाहा (रज़ि.) (नोअमान की वालिदा) ने कहा कि जब तक आप रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस पर गवाह न बनाएँ मैं राज़ी नहीं हो सकती। चुनाँचे (हाज़िरे ख़िदमत होकर) उन्होंने अज़्र किया कि इम्रा बिन्ते रवाहा से अपने बेटे को मैंने एक अतिरिया दिया तो उन्होंने कहा कि पहले मैं आपको इस पर गवाह बना लूँ, आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि इसी जैसा अतिरिया तुमने अपनी तमाम औलाद को दिया है? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं, इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह से डरो और अपनी औलाद के बीच इस्माफ़ को कायम रखो। चुनाँचे वो वापस हुए और हदिया वापस ले लिया। (राजेअ : 2586)

### ١٣- بَابُ الْإِشْهَادِ فِي الْهَبَةِ

٢٥٨٧- حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ غَابِرٍ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا وَهُوَ عَلَى الْبَيْتِ يَقُولُ: أَعْطَانِي أَبِي عَطِيَّةً، فَلَاَتُ عُمَرَةَ بِنْتُ رَوَاحَةَ، لَا أَرْضَى حَتَّى تُشْهَدَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: إِنِّي أَخْطَبُ ابْنِي مِنْ عُمَرَةَ بِنْتُ رَوَاحَةَ عَطِيَّةً، فَأَمَرَنِي أَنْ أَشْهَدَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: ((أَعْطَيْتَ سَائِرَ وَلَدِكَ مِثْلَ هَذَا؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: ((فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْبُدُوا بَيْنَ أَوْلَادِكُمْ)). قَالَ: فَرَجَعَ فَرَدَّ عَطِيَّةً)). (راجع: ٢٥٨٦)

इस वाक़िये से हिबा के ऊपर गवाह करना प्राबित हुआ। नोअमान (रज़ि.) की वालिदा ने आँहज़रत (ﷺ) को हिबा पर गवाह बनाना चाहा। इसी से बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ।

## बाब 14 : शौहर का अपनी बीवी को और बीवी का अपने शौहर को कुछ हिबा कर देना

इब्राहीम नखई ने कहा कि जाइज़ है। इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा कि दोनों अपना हिबा वापस नहीं ले सकते। नबी करीम (ﷺ) ने मर्ज के दिन आइशा (रज़ि.) के घर गुज़ारने की अपनी दूसरी बीवियों से इजाज़त मांगी थी, (और अज़्वाजे मुतहहरात ने अपनी अपनी बारी हिबा कर दी थी) और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अपना हिबा वापस लेने वाला शख्स उस कुत्ते की तरह है जो अपनी ही क़ै चाटता है। जुहरी ने उस शख्स के बारे में जिसने अपनी बीवी से कहा कि अपना कुछ महर या सारा महर माफ़ कर दे और उसने कर दिया) उसके थोड़ी ही देर बाद उसने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और बीवी ने (अपने महर का हिबा) वापस मांगा तो जुहरी ने कहा कि अगर शौहर ने महर धोखे के लिये ऐसा किया था तो उसे महर वापस करना होगा। लेकिन अगर बीवी ने अपनी खुशी से महर हिबा किया और शौहर ने भी किसी किस्म का धोखा इस सिलसिले में उसे नहीं दिया, तो ये मुरत जाइज़ होगी। अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि, अगर तुम्हारी बीवियाँ दिल से और खुश होकर तुम्हें अपने महर का कुछ हिस्सा दे दें (तो ले सकते हो)

या'नी अगर शौहर बीवी को हिबा करे या बीवी शौहर को दोनों सूरतों में हिबा नाफ़िज़ होगा और रुजूअ जाइज़ नहीं। इब्राहीम नखई और इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इन दोनों के अग्र को अब्दुर्रज़ाक ने वस्ल किया है। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि दूसरी अज़्वाजे मुतहहरात ने अपनी अपनी बारी का हक़ आइज़रत (ﷺ) को हिबा कर दिया।

2588. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, जब रसूले करीम (ﷺ) की बीमारी बढ़ी और तकलीफ़ शदीद हो गई तो आपने अपनी बीवियों से मेरे घर में अय्यामे मर्ज गुज़ारने की इजाज़त चाही और आपको बीवियों ने इजाज़त दे दी तो आप इस तरह तशरीफ़ लाए कि दोनों क़दम ज़मीन पर गड़ा रहे थे। आप उस वक़्त हज़रत अब्बास (रज़ि.) और एक साहब के दरम्यान थे। अब्दुल्लाह ने बयान किया कि फिर मैंने आइशा (रज़ि.) की इस हदीस का ज़िक्र इब्ने अब्बास

## ۱۴- بَابُ هِبَةِ الرَّجُلِ لِمَرْأَتِهِ

### وَالْمَرْأَةِ لِرَوْجِهَا

قَالَ إِبْرَاهِيمُ : جَائِزَةٌ . قَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ : لَا يَرْجِعَانِ . وَاسْتَأْذَنَ النَّبِيُّ ﷺ إِسَاءَةً أَنْ يَمْرُؤَ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ . وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((الْعَائِدُ فِي هِبَةٍ كَالْكَلْبِ يَمُودُ فِي قَيْدِهِ)). وَقَالَ الزُّهْرِيُّ - فِيمَنْ قَالَ لِمَرْأَتِهِ - هِيَ لِي بَغْضٍ مِنْكَ أَوْ كَلْبٍ . ثُمَّ لَمْ يَمُكِّثْ إِلَّا بَسِيرًا حَتَّى طَلَّقَهَا فَرَجَعَتْ إِلَيْهِ - قَالَ : يَرُدُّ إِلَيْهَا إِنْ كَانَ حَلَبَهَا . وَإِنْ كَانَتْ أَطْلَعَتْ عَنْ طَبَعِ نَفْسِ لَيْسَ لِي شَيْءٌ مِنْ أَمْرِ عَائِشَةَ جَارٍ . قَالَ اللَّهُ تَعَالَى : هَذِهِ بَيْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا (النِّسَاءُ : 4) .

۲۵۸۸- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُمَيْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ : ((قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : لَمَّا تَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فَاشْتَدَّ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ لِرَوَاجَةِ أَنْ يَمْرُؤَ فِي بَيْتِي . فَأَذِنَ لَهُ فَخَرَجَ ثَلَاثَ رَجُلَيْنِ تَغَطُّ رِجْلَاهُ الْأَرْضَ . وَكَانَ ثَلَاثَ الْعَمَاسِ وَتَيْنِ رَجُلٍ آخَرٍ . فَقَالَ عُمَيْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ :

(रज़ि.) से किया। तो उन्होंने मुझसे पूछा, आइशा (रज़ि.) ने जिनका नाम नहीं लिया, जानते हो वो कौन थे? मैंने कहा नहीं। आपने फ़र्माया कि वो हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे। (राजेज़: 198)

لَذَكَرْتُ لَابْنَ عَبَّاسٍ مَا قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقَالَ لِي. وَهَلْ تَذَرِي مِنَ الرَّجُلِ الَّذِي لَمْ نَسْمَعْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَا، قَالَ : هُوَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ. (راجع: ١٩٨)

रसूल करीम (ﷺ) का ये मर्जुल वफ़ात था। आप हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर थे। उस मौके पर तमाम अज्वाजे मुतहहरात ने अपनी अपनी बारी हज़रत आइशा (रज़ि.) को हिबा कर दी, इसी से मक्क़दे बाब प्रामित हुआ।

2589. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे युहैब ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने त़ाउस ने बयान किया, उनसे उनके बालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अपना हिबा लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो क़ै करके फिर छाट जाता है।

(दीगर मक्क़ाम: 2621, 2622, 6975)

٢٥٨٩- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَائِدُ فِي هَيْبَةٍ كَالْكَلْبِ بَقِيءٌ ثُمَّ يَعُودُ فِي قَيْبِهِ)).

[أطرافه لي: ٢٦٢٢, ٢٦٢١, ٦٩٧٥.]

इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) ने इसी हदीष से दलील ली है और हिबा में रुजूअ नाजाइज़ रखा है। सिर्फ़ बाप को इस हिबा में रुजूअ जाइज़ रखा है जो वो अपनी औलाद को करे। ब-दलील दूसरी हदीष के जो ऊपर गुज़र चुकी है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने अगर अजनबी शख्स को कुछ हिबा करे तो उसमें रुजूअ जाइज़ रखा है जब तक वो शौ मौहूब अपने हाल पर बाक़ी हो और उसका बदला न मिला हो।

**बाब 15 : अगर औरत अपने शौहर के सिवा और किसी को कुछ हिबा करे या गुलाम लौण्डी आज़ाद करे और हिबा के वक़्त उसका शौहर मौजूद हो, तो हिबा जाइज़ है।**

लेकिन शर्त ये है कि वो औरत बेअक्ल न हो क्योंकि अगर वो बेअक्ल होगी तो जाइज़ नहीं होगा। अल्लाह तआला का इशार्द है, बेअक्ल लोगों को अपना माल न दो।

अगर उस औरत का शौहर हिबा के वक़्त मौजूद न हो, मर गया हो या औरत ने निकाह ही न किया हो तब तो बिला इत्तिफ़ाक़ हिबा दुस्त है, औरत अगर दीवानी है तो हिबा जाइज़ न होगा। जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक औरत का हिबा जब उसका शौहर मौजूद हो बग़ैर शौहर की इजाज़त के सहीह न होगा चाहे वो अक्ल वाली हो। मगर तिहाई माल तक नाफ़िज़ होगा वसियत की तरह।

2590. हमसे अबू आसिम जिहाक बिन मुखलद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे अब्बाद बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे पास सिर्फ़

١٥- بَابُ هَيْبَةِ الْمَرْأَةِ لِغَيْرِ زَوْجِهَا، وَعَيْبِهَا إِذَا كَانَ لَهَا زَوْجٌ، فَهِيَ جَائِزٌ إِذَا لَمْ تَكُنْ سَفِيهَةً

لِإِذَا كَانَتْ سَفِيهَةً لَمْ يَجُزْ، قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: «وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ» [النساء: ٥]

٢٥٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ حُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُبَادِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

वही माल है जो (मेरे शौहर) जुबैर ने मेरे पास रखा हुआ है तो क्या मैं उसमें से सद्का कर सकती हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सद्का करो, जोड़ के न रखो, कहीं तुमसे भी। (अल्लाह की तरफ से न) रोक लिया जाए। (राजेअ: 1434)

2591. हमसे अब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन इवार् ने बयान किया, उनसे फ़ातिमा बिनते मुज़िर ने और उनसे अस्मा बिनते अबीषक्र (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, खर्च किया कर, गिना न कर, ताकि तुम्हें भी गिन के न मिले। और जोड़कर न रखो, ताकि तुमसे भी अल्लाह तआला (अपनी नेअमतों को) न छुपा ले। (राजेअ: 1434)

या'नी अल्लाह पाक भी तेरे ऊपर कशाइश नहीं करेगा और ज़्यादा रोजी नहीं देगा। अगर ख़ैरात करेगी, सद्का देगी तो अल्लाह पाक और ज़्यादा देगा। इस हदीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि शौहर वाली औरत का हिबा सहीह है क्योंकि हिबा और सद्के का एक ही हुक्म है।

2592. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे लैष ने, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे बुकैर ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) के गुलाम कुरैब ने और उन्हें (उम्मुल मोमिनीन) हज़रत मैमूना बिनते हारिष (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने एक लौण्डी नबी करीम (ﷺ) से इजाज़त लिये बग़ैर आज़ाद कर दी। फिर जिस दिन नबी करीम (ﷺ) की बारी आपके घर आने की थी, उन्होंने ख़िदमते नबवी में अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपको मा'लूम भी हुआ, मैंने एक लौण्डी आज़ाद कर दी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा तुमने आज़ाद कर दिया? उन्होंने अर्ज़ किया हाँ! फ़र्माया कि अगर इसके बजाय तुमने अपने ननिहाल वालों को दी होती तो तुम्हें उससे भी ज़्यादा प्रवाब मिलता। इस हदीष को बुकैर बिन मुज़र ने अम्म बिन हारिष से, उन्होंने बुकैर से, उन्होंने कुरैब से रिवायत किया कि मैमूना (रज़ि.) ने अपनी लौण्डी आज़ाद कर दी। आख़िर तक। (दीगर मक़ाम: 2594)

2593. हमसे हिब्बान बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने ख़बर दी

قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لِي مَا لَا مَا أَذْخَلَ عَلَى الزَّيْرِ، فَأَمْتَدَّقِي؟ قَالَ: (تَمْتَدَّقِي، وَلَا تُوعِي قِيوعِي عَلَيْكَ)).

[راجع: ١٤٣٤]

٢٥٩١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حُرْوَةٍ عَنْ لَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((أَنْفَعِي، وَلَا تُخْصِي قَبْصِي، اللَّهُ عَلَيْكَ، وَلَا تُوعِي قِيوعِي اللَّهُ عَلَيْكَ)). [راجع: ١٤٣٤]

٢٥٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ عَنِ اللَّيْثِ عَنْ يَزِيدَ عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ مِمْمُونَةَ بِنْتَ الْخَدِثِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهَا أَنَّهَا أَغْضَتْ وَلَيْدَةً وَلَمْ تَسْأَلِ النَّبِيَّ ﷺ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُهَا الَّذِي يَدُورُ عَلَيْهَا فِيهِ قَالَتْ: أَخْبَرْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنِّي أَغْضَيْتُ وَلَيْدَتِي؟ قَالَ: ((أَوْفَعْلَتْ؟)) قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَ: ((أَمَّا إِنَّكَ لَوْ أَغْضَيْتَهَا أَخَوَالُكَ كَانَ أَكْثَرُ لَأَجْرِكَ)). وَقَالَ بُكَيْرٌ بْنُ مُضَرٍّ عَنْ غَمْرٍو عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ كُرَيْبٍ: ((إِنَّ مِمْمُونَةَ أَغْضَتْ.)). [طريقه في: ٢٥٩٤]

٢٥٩٣- حَدَّثَنَا جَبَّارُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ

जुहरी से, वो उर्वा से और उनसे हजरत आइशा (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफर का इरादा करते तो अपनी अज्वाज के लिये कुर्आ-अंदाजी करते और जिनका नाम निकल आता उन्हीं को अपने साथ ले जाते। आप (ﷺ) का ये तरीका था कि अपनी तमाम अज्वाज के लिये एक एक दिन और रात की बारी मुक़र्रर कर दी थी, अल्बत्ता (आखिर में) सौदा बिनते जम्आ (रजि.) ने अपनी बारी आइशा (रजि.) को दे दी थी, इससे उनका मक्सद रसूलुल्लाह (ﷺ) की रज़ामन्दी हासिल करनी थी।

(दीगर मक़ाम : 2637, 2661, 2688, 2879, 4025, 4141, 4690, 4749, 4750, 4757, 5212)

الرُّمَيْرِيُّ عَنْ غُرُورٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا أَلْفَرَعَ بَيْنَ سَيَّارِهِ، فَأَبْتَهُنَّ خَرَجَ سَهْمَهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ، وَكَانَ يَقْسِمُ لِكُلِّ امْرَأَةٍ مِنْهُنَّ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا خَيْرَ أَنْ مَوَدَّةَ بِنْتِ زَمْعَةَ وَهَبَتْ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا لِعَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ تَحْتَمِلُ بِذَلِكَ رِضًا وَرَسُولِ اللَّهِ ﷺ».

[أطرقه في : ٢٦٣٧، ٢٦٦١، ٢٦٨٨]

٢٨٧٩، ٤٠٢٥، ٤١٤١، ٤٦٩٠، ٤٧٤٩، ٤٧٥٠، ٤٧٥٧، ٥٢١٢

हजरत सौदा (रजि.) की उम्र भी काफी थी, और उनको रसूल करीम (ﷺ) की खुशनुदी भी मक्सूद थी, इसलिये उन्होंने अपनी बारी हजरत आइशा (रजि.) को दे दी, मक्सदे बाब ये कि इस किस्म का हिबा जो बाहमी रज़ामन्दी से हो जाइज व दुरुस्त है।

## बाब 16 : हदिया का अव्वलीन हक़दार कौन है?

2594. और बक्र बिन मुज़र ने अम् बिन हारिष से, उन्होंने बुकैर से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रजि.) के गुलाम कुरैब से (बयान किया कि) नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा मैमूना (रजि.) ने अपनी एक लौण्डी आज़ाद की तो रसूल करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि अगर वो तुम्हारे ननिहाल वालों को दी जाती तो तुम्हें ज़्यादा प्रवाब मिलता। (राजेअ : 2592)

## ١٦- بَابُ بِمَنْ يُنَادَى بِالْهَدِيَّةِ؟

٢٥٩٤- وَقَالَ بَكْرٌ عَنْ غَمْرٍو عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ مَمُونَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْطَفَتْ وَلَدَةً لَهَا، فَهَانَ لَهَا: «وَلَوْ وَصَلْتُ بَعْضَ أَخْوَالِكُ كَانَ أَحْظَمَ لَأَجْرِكَ».. [راجع: ٢٥٩٢]

मा'लूम हुआ कि तद्वाइफ़ (तोहफ़ों) के अव्वलीन हक़दार अज़ीज़ व अक्बरबा और रिश्तेदार हैं।

2595. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, अबू इमरान जोनी से, उनसे बनूतमीम बिन मुरह के एक साहब तलहा बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हजरत आइशा (रजि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरी दो पड़ोसी हैं, तो मुझे किस के घर हदिया भेजना चाहिये? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसका दरवाज़ा तुमसे करीब हो। (राजेअ : 2259)

٢٥٩٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي عَمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ - رَجُلٍ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ بِنِ مَرْثَةٍ - عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ لِي جَارَتَيْنِ، فَأَيُّ آيِهِمَا أَحَبُّهُ؟ قَالَ: «(إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكَ بَابًا)».

[راجع: ٢٢٥٩]



ये इशारा उस तरफ है कि रिश्तेदारों के बाद उस पड़ोसी का हक है जिसका दरवाजा ज्यादा करीब है। फर्माया कि आपस में तोहफे दिया करो इससे मुहब्बत बढ़ेगी।

### बाब 17 : जिसने किसी उज्र से हदिया कुबूल नहीं किया

हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज (रह.) ने कहा कि हदिया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के अहद में हदिया था लेकिन आजकल तो रिश्तत है।

2596. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इब्बा ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने खबर दी कि उन्होंने सअब बिन जहामा लैसी (रज़ि.) से सुना, वो अम्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) में से थे। उनका बयान था कि उन्होंने अहजरत (ﷺ) की खिदमत में एक गोरखर हदिया किया था। आप उस वक़्त मुक़ामे अब्बा या विदान में थे और मुहम्मिद थे। आपने वो गोरखर वापस कर दिया। सअब (रज़ि.) ने कहा कि उसके बाद जब आपने मेरे चेहरे पर (नाराज़ी के आश्रय) हदिया की वापसी की वजह से देखा, तो फर्माया कि हदिया वापस करना मुनासिब तो न था, लेकिन बात ये है कि हम एहराम बाँधे हुए हैं। (राजेज़: 1825)

गोया किसी वजह की बिना पर हदिया वापस किया जा सकता है। बशर्तकि वजह मा'कूल और शरई हो। वो हदिया भी नाजाइज़ है जो किसी नाजाइज़ मक्सद के हुसूल के लिये बतौर रिश्तत पेश किया जाए। हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज के इशारे का यही मक्सद है। हाफ़िज़ साहब फर्माते हैं, फइन कान लिम असियतिन फला यहिल्लु व हुवरिश्वतु व इन कान लिताअतिन फयस्तहिब्बु व इन कान लिजाइजिन फजाइजुन इनका मतलब भी वही है जो मज़कूर हुआ कि रिश्तत किसी गुनाह के लिये हो तो वो हलाल नहीं है और अगर जाइज़ काम के लिये है तो वो मुस्तहब है।

2597. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया जुहरी से, वो उर्वा बिन जुबैर से, वो अबू हमैद साएदी (रज़ि.) से कि कबीला अज्द के एक सहाबी को जिन्हें इब्ने अतिया कहते थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सदक़ा वसूल करने के लिये आमिल बनाया। फिर जब वो वापस आए तो कहा कि ये तुम लोगों का है (या'नी बैतुलमाल का) और ये मुझे हदिया में मिला है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कि वो अपने वालिद या अपनी वालिदा के घर में क्यों न बैठा रहा।

۱۷- بَابُ مَنْ لَمْ يَقْبَلِ الْهَدِيَّةَ لِعَلَّةٍ وَقَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ: ((كَانَتْ الْهَدِيَّةُ فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ هَدِيَّةً، وَالْيَوْمَ رِشْوَةً)).

۲۵۹۶- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَانَ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ الصُّعْبَةَ بْنَ جَفَّالَةَ اللَّيْثِي - وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ - يُخْبِرُ: أَنَّهُ أَهْدَى لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ حِمَارًا وَخَشِي وَهُوَ بِالْأَنْوَاعِ - أَوْ بَوْدَانٍ - وَهُوَ مَحْرَمٌ قَرْدُهُ، قَالَ صُعْبَةُ: فَلَمَّا عَرَفَ فِي وَجْهِهِ رَدُّهُ هَدِيَّتِي قَالَ: ((لَيْسَ بِنَا رَدُّ عَلَيْكَ، وَلَكِنَّا حُرْمَ)).

[راجع: ۱۸۲۵]

۲۵۹۷- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا مِنَ الْأَزْدِ يُقَالُ لَهُ ابْنُ الْأَثِيَّةِ عَلَى الصَّدَقَةِ، فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: هَذَا لَكُمْ وَهَذَا أَهْدَيْتِي

देखता वहाँ भी उन्हें हदिया मिलता है या नहीं। उस ज्ञात की कसम! जिसके हाथ में मेरी जान है। इस (माले जकात) में से अगर कोई शख्स कुछ भी (नाजाइज़) ले लेगा तो क़यामत के दिन उसे वो अपनी गर्दन पर उठाए हुए आएगा। अगर ऊँट है तो वो अपनी आवाज़ निकालता हुआ आएगा, गाय है तो वो अपनी और बकरी है तो वो अपनी आवाज़ निकालती होगी। फिर आपने अपने हाथ उठाए यहाँ तक कि हमने आपकी बग़ल मुबारक की सफ़ेदी भी देख ली, (और फ़र्माया) ऐ अल्लाह! क्या मैंने तेरा हुक्म पहुँचा दिया। ऐ अल्लाह! क्या मैंने तेरा हुक्म पहुँचा दिया। तीन बार (आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया) (राजेअ: 925)

इससे नाजाइज़ हदिया की मज़म्मत साबित हुई। हाकिम, आमिल जो लोगों से डालियाँ वसूल करते हैं वो भी रिश्तत में दाख़िल हैं। ऐसे नाजाइज़ माल हासिल करने वालों को क़यामत के दिन ऐसे अज़ाब बर्दाश्त करने के लिये तैयार रहना चाहिये।

**बाब 18 : अगर हिबा या हिबा का वा'दा करके कोई मर जाए और वो चीज़ मौहूब लहू (जिसको हिबा की गई हो उस) को न पहुँची हो**

और इबैदा बिन इमर सलमानी ने कहा अगर हिबा करने वाला मर जाए मौहूब पर मौहूब लहू का क़ब्ज़ा हो गया, वो ज़िन्दा हो फिर मर जाए तो वो मौहूब लहू के वारिषों का होगा और अगर मौहूब लहू का क़ब्ज़ा होने से पेशतर वाहिब मर जाए तो वो वाहिब के वारिषों को मिलेगा। और इमाम हसन बसरी ने कहा कि फ़रीक़ेन में से ख़्वाह किसी का भी पहले इतिक़ाल हो जाए, हिबा मौहूब लहू के वरिषा को मिलेगा। जब मौहूब लहू का वकील उस पर क़ब्ज़ा कर चुका हो।

2598. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अल् मुकदिर ने बयान किया, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे वा'दा किया, अगर बहरीन का माल (जिज़्या) आया तो मैं तुम्हें इतना इतना तीन लप माल दूँगा। लेकिन बहरीन से माल आने से पहले ही आप (ﷺ) वफ़ात फ़र्मा गए और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने एक मुनादी से ऐलान करने के लिये कहा कि जिससे नबी करीम (ﷺ) का कोई वा'दा हो या आप (ﷺ) पर उसका कोई क़र्ज़ हो तो वो हमारे पास आए। चुनाँचे मैं आपके यहाँ गया और कहा कि नबी करीम (ﷺ)

لِي. قَالَ: ((فَهَلَّا جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ - أَوْ بَيْتِ أُمِّهِ - فَيَنْظُرُ يَهْدِي لَهُ أَمْ لَا؟ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَأْخُذُ أَحَدٌ مِنْهُ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلَى رَقَبَتِهِ، إِنْ كَانَ بَغِيرًا لَهُ رُغَاءٌ، أَوْ بَقَرَةٌ لَهَا حُورٌ، أَوْ شَاةٌ تَبْعُرُ - ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْنَا غُفْرَةً يُطْبِئُ - اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ، اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ. (فَلَا تَأْخُذْ)). (راجع: ٩٢٥)

١٨- تَابَ إِذَا وَهَبَ هِبَةً أَوْ وَعَدَ ثُمَّ مَاتَ قَبْلَ أَنْ تَصِلَ إِلَيْهِ

وَقَالَ غُبَيْدَةُ: إِنْ مَاتَ وَكَانَتْ لِعَبْدٍ الْهَبِيَّةُ وَالْمُهْدِي لَهُ حَتَّىٰ فَيَمُوتَ يَوْمَئِذٍ، وَإِنْ لَمْ تَكُنْ لِعَبْدٍ فَيَمُوتَ يَوْمَئِذٍ الَّذِي أَخَذَ. وَقَالَ الْحَسَنُ أَهْمَا مَاتَ قَبْلَ فَيَمُوتَ يَوْمَئِذٍ الْمُهْدِي لَهُ إِذَا تَبَعَهَا الرُّسُولُ.

٢٥٩٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى سَمِعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَغْطَيْتُكَ مَكَلًا (فَلَا تَأْخُذْ))، فَلَمْ يَقْدَمْ حَتَّى تُوَفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَمَرَ أَبُو بَكْرٍ مُنَادِيًا فَنَادَى: مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ عِدَّةٌ أَوْ ذَيْنَ فَلْيَأْتِنَا. فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ

ने मुझसे वा'दा किया था तो उन्होंने तीन लप भरकर मुझे दिये।  
(राजेअ: 2296)

وَعَدَنِي لَحَى لِي ثَلَاثًا)). [راجع: ٢٢٩٦]

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि गोया आँहज़रत (ﷺ) ने जाबिर को मशरूत तौर पर बहरीन के माल आने पर तीन लप माल हिबा फ़र्मा दिया, मगर न माल आया और न आप पूरा कर सके। बाद में हज़रत सिद्दीके अकबर (रज़ि.) ने आपका वा'दा पूरा फ़र्माया। इसी से मक़सदे बाब श्राबित हुआ।

## बाब 19 : गुलाम लौण्डी और सामान पर क्यूँकर क़ब्ज़ा होता है

और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं एक सरकश ऊँट पर सवार था। नबी करीम (ﷺ) ने पहले तो उसे ख़रीदा, फिर फ़र्माया कि अब्दुल्लाह ये ऊँट तुले ले।

2599. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैय़ ने बयान किया इब्ने अबी मुलैका से और वो मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द क़बाएँ तक्सीम कीं और मख़रमा (रज़ि.) को उसमें से एक भी नहीं दी। उन्होंने (मुझसे) कहा, बेटे चलो! रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में चलें। मैं उनके साथ चला। फिर उन्होंने कहा कि अंदर जाओ और हुज़ूर (ﷺ) से अर्ज़ करो कि मैं आपका मुंतज़िर खड़ा हुआ हूँ, चुनौचे मैं अंदर गया और हुज़ुरे अकरम (ﷺ) को बुला लिया। आप उस वक़्त उन्हीं क़बाओं में से एक क़बा पहने हुए थे। आपने फ़र्माया कि मैंने ये तुम्हारे लिये छुपा रखी थी, लो अब ये तुम्हारी है। मिस्वर ने बयान किया कि (मेरे वालिद) मख़रमा ने क़बा की तरफ़ देखा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मख़रमा! खुश हुआ या नहीं? (दीगर मक़ाम: 2657, 3127, 5800, 5862, 6132)

١٩- بَابُ كَيْفَ يُفْتَضُّ الْعَبْدُ وَالْمَتَاعُ  
وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ: كُنْتُ عَلَى بَكْرٍ صَغِيرٍ،  
فَاشْتَرَاهُ النَّبِيُّ ﷺ وَقَالَ: هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ اللَّهِ.

٢٥٩٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ أَبِي مَرْيَةَ عَنْ  
الْمُسَوِّدِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ  
قَالَ: «رَسِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَقْبِيَةً وَلَمْ  
يُعْطِ مَخْرَمَةَ مِنْهَا شَيْئًا، فَقَالَ مَخْرَمَةُ: يَا  
أَبِي انْطَلِقْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ،  
فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ فَقَالَ: ادْخُلْ فَاذْغُهُ لِي،  
قَالَ: فَذْغَوْتُهُ لَهُ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ وَعَلَيْهِ قَبَاءٌ  
مِنْهَا فَقَالَ: غَبَانًا هَذَا لَكَ. قَالَ: فَظَرَرْتُ  
إِلَيْهِ فَقَالَ: رَضِيَ مَخْرَمَةُ».

[أطرافه في: ٢٦٥٧، ٣١٢٧، ٥٨٠٠]

[٥٨٦٢، ٦١٣٢].

**तशरीह:** कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है। वालिद ने कहा अब मख़रमा राजी हुआ। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि जब आपने वो अचकन मख़रमा (रज़ि.) को दी तो उनका क़ब्ज़ा पूरा हो गया। जुम्हूर के नज़दीक हिबा में जब तक मौहूब लहू का क़ब्ज़ा न हो उसकी मिल्क पूरी नहीं होती और मालिकिया के नज़दीक सिर्फ़ अक्द से हिबा तमाम हो जाता है। अल्बत्ता अगर मौहूबा लहू उस वक़्त तक क़ब्ज़ा न करे कि वाहिब किसी और को वो चीज़ हिबा कर दे तो हिबा बातिल हो जाएगा। (वहीदी)

## बाब 20 : अगर कोई हिबा करे और मौहूबा लहू उस पर क़ब्ज़ा कर ले लेकिन ज़बान से कुबूल न करे

٢٠- بَابُ إِذَا وَهَبَ هِبَةً فَقَبَضَهَا  
الْآخَرُ وَلَمْ يَقُلْ قَبِلْتُ

मतलब ये कि हिबा में ज़बान से ईजाब कुबूल करना ज़रूरी नहीं और शाफ़िइया ने इसको शर्त रखा है। अल्बत्ता सदक़ा में ज़बान से ईजाब व कुबूल किसी ने ज़रूरी नहीं रखा।

2600. हमसे मुहम्मद बिन महबूब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे मअमर ने बयान किया जुहरी से, वो हमैद बिन अब्दुर्रहमान से और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मैं तो हलाक हो गया। आप (ﷺ) ने पूछा, क्या बात हुई? अर्ज़ किया कि रमज़ान में मैंने अपनी बीवी से हमबिस्तरी कर ली है। आप (ﷺ) ने पूछा, तुम्हारे पास कोई गुलाम है? कहा कि नहीं। फिर पूछा, क्या दो महीने पे दर पे रोज़े रख सकते हो? कहा कि नहीं। फिर पूछा, क्या साठ मिसकीनों को खाना दे सकते हो? उस पर भी जवाब था कि नहीं। बयान किया कि इतने में एक अंमारी अक्रं लाए। (अक्रं खजूर के पत्तों का बना हुआ एक टोकरा होता था जिसमें खजूर रखी जाती थी) और हज़रत (ﷺ) ने उससे फर्माया कि उसे ले जा और स़दक़ा कर दे उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या अपने से ज़्यादा ज़रूरतमन्द पर स़दक़ा करूँ? और उस ज़ात की क्रसम! जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है कि सारे मदीने में हमसे ज़्यादा मुहताज और कोई घराना न होगा। आप (ﷺ) ने फर्माया फिर जा, अपने ही धरवालों को खिला दे। (राजेअ : 1936)

٢٦٠٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْبُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرُ بْنُ الزُّهْرِيِّ عَنْ خُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: هَلَكَتُ، فَقَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ: وَقَعْتُ بِأَهْلِي فِي رَمَضَانَ. قَالَ: ((أَتَجِدُ رَقَبَةً؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَابَعَيْنِ؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: ((فَتَسْتَطِيعُ أَنْ تُطْعِمَ سِتِينَ مِسْكِينًا؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ بِغَرَقٍ وَالْعَرَقِ الْمِكْتَلِ فِيهِ ثَمَرٌ، فَقَالَ: ((ادْفَبْ بِهَذَا لَتَصَدَّقَ بِهِ)). قَالَ: عَلَى أَخَوَجٍ مِنَّا يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ وَاللَّيْلِ بِفَتْكَ بِالْحَقِّ مَا نَبْنُ لَا تَبْنَاهَا أَهْلُ تَبْنُو أَخَوَجَ مِنَّا. قَالَ: ((ادْفَبْ فَأَطْعِمَهُ أَهْلَكَ)).

[راجع: ١٩٣٦]

## बाब 21 : अगर कोई अपना क़र्ज़ किसी को हिबा कर दे

शुअबा ने कहा और उसको हक़म ने कि ये आइज़ है और हसन बिन अली (रज़ि.) ने एक शख्स को अपना क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया था और नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया, अगर किसी का दूसरे शख्स पर कोई हक़ है तो उसे अदा करना चाहिये या मुआफ़ करा ले। जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि मेरे बाप शहीद हुए तो उन पर क़र्ज़ था। नबी करीम (ﷺ) ने उनके क़र्ज़ ख्वाहों से कहा कि वो मेरे बाग़ की (सिर्फ़ मौजूदा) खजूर (अपने क़र्ज़ के बदले में) कुबूल कर लें और मेरे वालिद पर (जो क़र्ज़ बाक़ी रह जाए उसे) मुआफ़ कर दें।

٢١ - بَابُ إِذَا وَهَبَ ذَيْنَا عَلَى رَجُلٍ قَالَ شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ : هُوَ جَائِزٌ. وَوَهَبَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ لِرَجُلٍ ذَيْنَهُ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ حَقٌّ فَلْيُطْعِمِهِ أَوْ لْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ)). فَقَالَ جَابِرٌ: ((قُلْ أَبِي وَعَلَيْهِ ذَيْنِ، فَسَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ غُرْمَاءَهُ أَنْ يَقْبَلُوا ثَمَرَ حَاتِي طِي وَيَحْلُلُوا أَبِي)).

**तशरीह:** फ़रमनि नबवी जो यहाँ मन्कूल है इससे बाब का मतलब यूँ निकला कि हक़ क़र्ज़ को भी शामिल है जब उसको मुआफ़ कराने का हुक्म दिया तो मा'लूम हुआ कि क़र्ज़ का मुआफ़ करवाना दुस्त है। ख्वाह वो खुद क़र्ज़दार

को मुआफ़ कर दे या दूसरे शख्स को वो क़र्ज़ दे डाले कि तुम वसूल कर लो और अपने काम में ले लो। मालिकिया के नज़दीक और शख्स को भी दैन (क़र्ज़) का हिबा दुस्त है और शाफ़िया और हन्फ़िया के नज़दीक दुस्त नहीं। अल्बत्ता मदयून को दैन (क़र्ज़) का हिबा करना सबके नज़दीक दुस्त है।

हज़रत हसन बिन अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) की कुत्रियत अबू मुहम्मद है। आँहज़रत (ﷺ) के नवासे और जन्नत के फूल हैं, जन्नत के तमाम जवानों के सरदार, 3 हिजरी रमज़ानुल मुबारक की पन्द्रहवीं तारीख को पैदा हुए, वफ़ात 50 हिजरी में वाक़ेअ हुई और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किये गये। इनसे इनके बेटे हसन बिन हसन और अबू हुरैरह (रज़ि.) और बड़ी जमाअत ने रिवायत की है।

जब इनके वालिद बुजुर्गवार हज़रत अली कर्मुल्लाह वजहुहू कूफ़ा में शहीद हुए तो लोगों ने हज़रत हसन (रज़ि.) के हाथ पर बेअत की जिनकी ता'दाद चालीस हज़ार से ज़्यादा थी और हज़रत मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्दे खिलाफ़त का काम पन्द्रहवीं जमादिल् अब्वल 41 हिजरी में किया गया। इनके और फ़ज़ाइल किताबुल मनाकिब में आएंगे।

2601. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया इब्ने शिहाब से, वो इब्ने क़अब बिन मालिक से और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उहुद की लड़ाई में उनके बाप शहीद हो गये (और क़र्ज़ छोड़ गए) क़र्ज़ ख़वाहों ने तक्राज़े में बड़ी शिद्दत की, तो मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे इस सिलसिले में बातचीत की, आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि वो मेरे बाग़ की ख़जूर ले लें (जो भी हों) और मेरे वालिद को (जो बाक़ी रह जाए वो क़र्ज़) मुआफ़ कर दें। लेकिन उन्होंने इंकार किया। फिर आपने मेरा बाग़ उन्हें नहीं दिया और न उनके लिये फल तुड़वाए। बल्कि फ़र्माया कि कल सुबह मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा। सुबह के वक़्त तशरीफ़ लाए और ख़जूर के पेड़ों में टहलते रहे और बरकत की दुआ फ़र्माते रहे फिर मैंने फल तोड़कर क़र्ज़ ख़वाहों के सारे क़र्ज़ अदा कर दिये और मेरे पास ख़जूर बच भी गई। उसके बाद मैं रसूल करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने आपको वाक़िया की ख़बर दी हज़रत उमर (रज़ि.) भी वहीं बैठे हुए थे। आपने उनसे फ़र्माया, उमर! सुन रहे हो? हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, हमें तो पहले से मा'लूम है कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। क़सम अल्लाह की! इसमें कोई शक व शुब्हा की गुंजाइश नहीं कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। (राजेअ: 2127)

٢٦٠١ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّهُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ كَثِيرٍ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ: ((أَنَّ أَبَاهُ قِيلَ يَوْمَ أُحُدٍ شَهِدًا فَاسْتَدَّ الْفَرَمَاءُ فِي حُفُوفِهِمْ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَكَلَّمْتُهُ، فَسَأَلْتُهُمْ أَنْ يَقْبَلُوا فَمَرَّ حَاطِبِي وَتَحَلَّلُوا أَيْ قَالُوا، فَلَمْ يُعْطِهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَاطِبِي وَلَمْ يُخْصِرْهُ لَهُمْ، وَلَكِنْ قَالَ: سَاهِدُوا عَلَيْكَ. فَلَمَّا عَلَيْنَا جِئْنَا أَصْبَحَ، فَطَافَ فِي النَّخْلِ وَذَخَا فِي فَمِرِهِ بِالنَّيْزِ، فَجَدَّذْنَاهَا، فَفَعَيْتُهُمْ حَقَّهُمْ، وَتَقَبَّلْنَا مِنْ فَمِرِهِ بَقِيَّةً. ثُمَّ جِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ جَالِسٌ فَأَخْبَرْتُهُ بِذَلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: بِمَمَرٍ: ((اسْمَعْ - وَهُوَ جَالِسٌ - يَا غَمْرُ)). فَقَالَ: أَلَا يَكُونُ قَدْ عَلِمْنَا أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ؟ وَاللَّهِ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ)).

[راجع: ٢١٢٧]

ऐनी ने कहा इस हदीष की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से इस तरह है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जाबिर (रज़ि.) के क़र्ज़ ख़वाहों से ये

सिफारिश की कि बाग में जितना मेवा निकले वो अपने कर्ज के बदले में ले लो और जो कर्ज बाकी रहे वो मुआफ़ कर दो गोया बाकी दैन का जाबिर को हिबा हुआ।

## बाब 22 : एक चीज़ कई आदमियों को हिबा करे तो कैसा है?

और अस्मा बन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने कासिम बिन मुहम्मद और इब्ने अबी अतीक से कहा कि मेरी बहन आइशा (रज़ि.) से विरासत में मुझे गाबा (की ज़मीन) मिली थी। मुआविया (रज़ि.) ने मुझे उसका एक लाख (दिरहम) दिया लेकिन मैंने उसे नहीं बेचा, यही तुम दोनों को हदिया है।

या'नी मशाअ का हिबा जाइज़ है मसलन एक गुलाम या एक घर चार आदमियों को हिबा किया। हर एक का उसमें हिस्सा है। हन्फिया ने उसमें ख़िलाफ़ किया है, वो कहते हैं जो चीज़ तक्सीम के काबिल न हो जैसे चक़ी या हम्माम उसका तो बतौर मशाअ हिबा जाइज़ है और जो चीज़ तक्सीम के काबिल हो, जैसे घर वगैरह उसका हिबा यतौर मशाअ के दुरुस्त नहीं। (वहीदी)

बाब का मतलब हज़रत अस्मा (रज़ि.) के इस तर्ज़े अमल से निकलता है कि उन्होंने अपनी जायदाद बतौर मशाअ के दोनों को हिबा कर दी। कासिम बिन मुहम्मद हज़रत अस्मा (रज़ि.) के भतीजे थे और अब्दुल्लाह भतीजे के बेटे, गाबा मदीना के मुत्तसिल एक गांव था। जहाँ हज़रत आइशा (रज़ि.) की कुछ ज़मीन थी। हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने दोनों को ज़मीन हिबा कर दी। इसी से बाब का तर्जुमा निकला।

2602. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, वो अबू हाज़िम से, वो सहल बिन सअद (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पीने को कुछ लाया, (दूध या पानी) आपने उसे नोश फ़र्माया, आपके दाईं तरफ़ एक बच्चा बैठा था और बड़े बूढ़े लोग बाईं तरफ़ बैठे हुए थे, आपने उस बच्चे से फ़र्माया कि अगर तू इजाज़त दे (तो बचा हुआ पानी) मैं इन बड़े लोगों को दे दूँ? लेकिन उसने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके जूठे में से मिलने वाले किसी हिस्से का मैं ईश्वर नहीं कर सकता। और हज़रत (ﷺ) ने प्याला झटके के साथ उसी की तरफ़ बढ़ा दिया। (राजेअ: 2351)

हाफ़िज़ ने कहा, चूँकि आँ हज़रत (ﷺ) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से ये फ़र्माया कि वो अपना हिस्सा बूढ़ों को हिबा कर दें और बूढ़े कई थे और उनका हिस्सा मशाअ था, इसलिये मशाअ को हिबा का जवाज़ निकला और प्राबित हुआ कि एक चीज़ कई अशख़ास को मुश्तरक तौर पर हिबा की जा सकती है।

बाब 23 : जो चीज़ क़ब्ज़े में हो या न हो और जो चीज़ बट गई हो और जो न बटी हो, उसके हिबा का और नबी करीम (ﷺ) और अब्दुल्लाह ने कबीला हवाज़िन को उनकी तमाम ग़नीमत हिबा कर दी, हालांकि उसकी तक्सीम नहीं हुई थी।

## ٢٢- بَابُ هِبَةِ الْوَاحِدِ لِلْجَمَاعَةِ

وَقَالَتْ أَسْمَاءُ لِلْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَابْنِ أَبِي عَتِيقٍ: وَرِثْتُ عَنْ أُخْتِي عَائِشَةَ بِالْغَابَةِ، وَقَدْ أَعْطَانِي بِهِ مَعَاوِيَةُ مِائَةَ أَلْفٍ، فَهُوَ لَكُمْ.

٢٦٠٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي خازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يَشْرَبُ فَمَشْرَبٌ بَشْرَبٌ، وَعَنْ يَمِينِهِ قُلَامٌ، وَعَنْ يَسَارِهِ الْأَشْيَاحُ، فَقَالَ لِلْقُلَامِ: إِنْ أُوذِنْتَ لِي أَطْعَمْتُ هَؤُلَاءِ، فَقَالَ: مَا كُنْتُ لِأُوذَرَ بِبَصْنِي مِنْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحَدًا. فَقُلْتُ لِي يَحْيَى:)). [راجع: ٢٣٥١]

٢٣- بَابُ الْهِبَةِ الْمَقْبُوضَةِ وَغَيْرِ الْمَقْبُوضَةِ وَالْمَقْسُومَةِ وَغَيْرِ الْمَقْسُومَةِ وَقَدْ وَهَبَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ لَهُوَ أَنْ مَا غَنِمُوا مِنْهُمْ وَهُوَ غَيْرُ مَقْسُومٍ.

2603. और साबित बिन मुहम्मद ने बयान किया कि हमसे मअमर ने बयान किया उनसे मुहारिब ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि मैं नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में (सफ़र से लौटकर) मस्जिद में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने (मेरे ऊँट की क्रीमत) अदा की और कुछ ज़्यादा भी दिया। (राजेअ: 443)

٢٦٠٣- قَالَ ثَابِتٌ حَدَّثَنَا مُسْقَرٌ عَنْ مُخَارِبٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، «أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ لِي الْمَسْجِدِ، فَقَضَانِي وَزَادَنِي»

[راجع: ٤٤٣]

**तशरीह:** जो चीज़ क़ब्ज़े में हो उसका हिबा तो बिलइत्तिफ़ाक़ दुस्त है और जो चीज़ क़ब्ज़े में न हो उसका हिबा अक़भर उलमा के नज़दीक जाइज़ नहीं है। मगर इमाम बुखारी (रह.) ने उसका जवाज़ इसी तरह इस माल के हिबा का जवाज़ जो तक्सीम न हुआ हो, बाब की हदीष से निकाला इसलिये कि आहज़रत (ﷺ) ने ग़नीमत का माल जो अभी मुसलमानों के क़ब्ज़े में नहीं आया था, हवाज़िन के लोगों को हिबा कर दिया। मुखालिफ़ीन ये कहते हैं कि क़ब्ज़ा तो हो गया था क्योंकि ये अम्वाल मुसलमानों के हाथ में थे, भले ही तक्सीम न हुए थे।

दूसरी रिवायत में जाबिर (रज़ि.) का वाक़िया है। शायद हज़रत मुत्तहिदे मुतलक़ इमाम बुखारी (रह.) ने उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसमें ये है कि वो ऊँट भी आप (ﷺ) ने मुझको हिबा कर दिया तो क़ब्ज़ा से पहले हिबा साबित हुआ। आहज़रत (ﷺ) ने जाबिर (रज़ि.) को जो सोना या चाँदी क्रीमत से ज़्यादा दिलवाया उसे जाबिर (रज़ि.) ने बतौर तबर्क हमेशा अपने पास रखा और खर्च न किया। यहाँ तक कि यौमुल हर्ह आया। ये लड़ाई 63 हिजरी में हुई। जब यज़ीदी फ़ौज ने मदीना तय्यिबा पर हमला किया। हर्ह मदीना का एक मैदान है वहाँ ये लड़ाई हुई थी। उसी जंग में ज़ालिमों ने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से उस तबर्क नबवी को छीन लिया। आजकल भी जगह जगह बहुत सी चीज़ें लोगों ने तबर्क़ाते नबवी के नाम से रखी हुई हैं। कहीं आप (ﷺ) के मूए मुबारक बतलाए जाते हैं और कहीं क़दमे मुबारक के निशान वगैरह वगैरह। मगर ये सब बेसनद चीज़ें हैं और इनके बारे में ख़तरा है कि आहज़रत (ﷺ) पर ये इफ़्तिराओं और ऐसे मुफ़्तरों अपने आपको ज़िन्दा दोज़खी बना लें। जैसा कि खुद आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने मेरे ऊपर कोई इफ़्तिरा बाँधा वो ज़िन्दा जहन्नमी है।

2604. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, मुहारिब बिन दह़शार से और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आप फ़र्माते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को सफ़र में एक ऊँट बेचा था। जब हम मदीना पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि मस्जिद में जाकर दो रक़अत नमाज़ पढ़, फिर आपने वज़न किया। शुअबा ने बयान किया, मेरा ख़याल है कि (जाबिर रज़ि. ने कहा) मेरे लिये वज़न किया (आपके हुक्म से हज़रत बिलाल रज़ि. ने) और (उस पलड़े को जिसमें सिक्का था) झुका दिया (ताकि मुझे ज़्यादा मिले)। उसमें से कुछ थोड़ा सा मेरे पास जब से महफूज़ था। लेकिन शाम वाले (उमवी लश्कर) यौमे हर्ह के मौक़े पर मुझसे छीनकर ले गए। (राजेअ: 443)

٢٦٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُخَارِبٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: «بَعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ بَعِيرًا فِي سَفَرٍ، فَلَمَّا أَتَيْنَا الْمَدِينَةَ قَالَ: «أَنْتَ الْمَسْجِدَ لِمَنْ رَكْعَتَيْنِ»» (لَوْزَنَ).

قَالَ شُعْبَةُ: «أَرَاهُ» (لَوْزَنَ لِي فَلَرَجَحَ، لَمَّا زَالَ مِنْهَا شَيْءٌ حَتَّى أَصَابَهَا أَغْلُ الشَّامِ يَوْمَ الْعُرْفَةِ). [راجع: ٤٤٣]

**तशरीह:** हजरत मुज्ताहिदे आजम इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का तर्जुमा श्राबित फरमानी के लिये कबीला हवाज़िन के कैदियों का मामला पेश किया है कि इस्लामी लश्कर के कब्ज़े में आने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें फिर हवाज़िन वालों को हिबा फ़र्मा दिया था। दूसरा वाक़िया हज़रत जाबिर (रज़ि.) का है जिनसे आँहज़रत (ﷺ) ने ऊँट ख़रीदा, फिर मदीना वापस आकर उसकी क़ीमत अदा फ़र्माई और साथ ही मज़ीद आपने और भी बतौर बख़्शिश हिबा फ़र्माया। उसी से बाब का तर्जुमा श्राबित हुआ।

2605. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने अबू हाज़िम से, वो सहल बिन सअद (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में कुछ पीने को लाया गया। आपकी दाईं तरफ़ एक बच्चा था और क़ौम के बड़े लोग बाईं तरफ़ थे आपने बच्चे से फ़र्माया कि क्या तुम्हारी तरफ़ से इज़ाज़त है कि मैं बचा हुआ पानी इन बुजुर्गों को दे दूँ? तो उस बच्चे ने कहा कि नहीं क़सम अल्लाह की! मैं आपसे मिलने वाले अपने हिस्से का हर्गिज़ ईषार नहीं कर सकता। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मशरूब उनकी तरफ़ झटके के साथ बहा दिया। (राजेअ: 2351)

٢٦٠٥ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ آتَى بِشَرَابٍ وَعَنْ يَمِينِهِ غُلَامٌ وَعَنْ يَسَارِهِ أَشْبَاحٌ فَقَالَ لِلْغُلَامِ: ((أَتَأْذُنِي أَنْ أُعْطِيَ هَؤُلَاءِ؟)) فَقَالَ الْغُلَامُ: لَا وَاللَّهِ، لَا أُؤْثِرُ بِنَصِيصِي مِنْكَ أَحَدًا. فَقُلْتُ فِي يَدِهِ)).

[راجع: ٢٣٥١]

**तशरीह:** अगरचे हज़रत उस लड़के ही का था मगर आँहज़रत (ﷺ) की सिफ़ारिश कुबूल न की जिस पर आपने झटके के साथ उसे प्याला दे दिया। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं कि वल्हवकु कमा क़ाल इब्नु बत्ताल अन्नहू (ﷺ) सअलल्युलाम अंध्यहब नसीबहू लिलअश्याख़ि व कान नसीबहू मिन्हु मशाअन ग़ैर मुतमय्यिज़िन फदल्ल अला सिहति हिबतिलमशाइ वल्लाहु आलम (फतहुल्बारी) या'नी हज़रत यही है कि आँहज़रत (ﷺ) ने लड़के से फ़र्माया कि वो अपना हिस्सा बड़े लोगों को हिबा कर दे, उसका वो हिस्सा अभी तक मुस्तरक था। उसी से मशाअ के हिबा करने की सेहत श्राबित हुई।

2606. हमसे अब्दुल्लाह बिन इब्मान बिन जबला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी शुअबा से, उनसे सलमा ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा से सुना और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि एक शख़्स का रसूलुल्लाह (ﷺ) पर क़र्ज़ था (उसने सख़्ती के साथ तक्राज़ा किया) तो सहाबा उसकी तरफ़ बड़े लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसे छोड़ दो, हज़रत वाले को कुछ न कुछ कहने की गुंजाइश होती ही है। फिर आपने फ़र्माया कि इसके लिये एक ऊँट उसी के ऊँट की उम्र का ख़रीदकर उसे दे दो। सहाबा ने अर्ज़ किया कि उससे अच्छी उम्र का ही ऊँट मिल रहा है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसी को ख़रीद कर दे दो कि तुममें सबसे अच्छा आदमी वो है जो क़र्ज़ के अदा करने में सबसे अच्छा हो। (राजेअ: 2305)

٢٦٠٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثْمَانَ بْنُ جُبَيْلَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَلْمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلْمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ يُرْجَلُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ذَيْنَ، فَهَمَّ بِوَأْصَحَابَةٍ فَقَالَ: ((دَعُوهُ فَإِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا)). وَقَالَ: ((اشْتَرُوا لَهُ مِنَّا قَاعُطُومًا إِيَّاهُ)). فَقَالُوا: إِنَّا لَا نَجِدُ مِنَّا إِلَّا سِنًا هِيَ أَفْضَلُ مِنْ مَيْتَةٍ. قَالَ: ((اشْتَرَوْهَا قَاعُطُومًا إِيَّاهُ، فَإِنَّ مِنْ خَيْرِكُمْ أَحْسَنَكُمْ قَبْضَةً)). [راجع: ٢٣٠٥]

कुछ ने कहा इस हदीस की मुनासबत बाब के तर्जुमे से मुश्किल है। क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने अबू राफ़ेअ (रज़ि.) को वकील



किया था। उन्होंने ऊँट खरीदा, तो उनका कब्ज़ा आँहज़रत (ﷺ) का कब्ज़ा था इसलिये कब्ज़े से पहले ये हिबा न हुआ और उसका जवाब ये है कि अबू राफ़ेअ सिर्फ़ खरीदने के लिये वकील हुए थे न कि हिबा के लिये तो उनका कब्ज़ा हिबा के अहकाम में आँहज़रत (ﷺ) का कब्ज़ा न था। पस इमाम बुखारी (रह.) का मतलब हदीष से निकल आया और ग़ौर मत्रबूज़ का हिबा प्राबित हुआ। (वहीदी)

## बाब 24 : अगर कई शख्स कई शख्सों को हिबा करें

2607,08. हमसे यहा बिन बुक़ैर ने बयान किया, उनसे लैषने, कहा हमसे अक़ील ने इब्ने शिहाब से, वो उर्वा से कि मरवान बिन हक़म और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जब हवाज़िन का वफ़द मुसलमान होकर हाज़िर हुआ और आपसे दरख़वास्त की कि उनके अम्वाल और कैदी उन्हे वापस कर दें तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि मेरे साथ जितनी बड़ी जमाअत है उसे भी तुम देख रहे हो और सबसे ज़्यादा सच्ची बात ही मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। इसलिये तुम लोग इन दो चीज़ों में से एक ही ले सकते हो, या अपने कैदी ले लो या अपना माल। मैंने तो तुम्हारा पहले ही इतिज़ार किया था। और नबी करीम (ﷺ) त्राईफ़ से वापसी पर तत्ररीबन दस दिन तक (मक्रामे जिअराना में) उन लोगों का इतिज़ार फ़र्माते रहे। फिर उन लोगों के सामने जब ये बात पूरी तरह वाज़ेह हो गई कि आँहज़रत (ﷺ) उनकी सिर्फ़ एक ही चीज़ वापस फ़र्मा सकते हैं तो उन्होंने कहा कि हम अपने कैदियों ही को (वापस लेना) पसन्द करते हैं। फिर आप (ﷺ) ने खड़े होकर मुसलमानों को ख़िताब किया, आपने अल्लाह की उसकी शान के मुताबिक़ ता'रीफ़ बयान की और फ़र्माया, अम्मा बअद! ये तुम्हारे भाई हमारे पास अब तौबा करके आए हैं। मेरा ख़याल है कि इन्हें इनके कैदी वापस कर दिये जाएँ। इसलिये जो स़ाहब अपनी खुशी से वापस करना चाहें वो ऐसा कर लें और जो लोग ये चाहते हों कि अपने हिस्से को न छोड़ें बल्कि हम उन्हें उसके बदले में सबसे पहली ग़नीमत के माल में से मुआवज़ा दें, तो वो भी (अपने मौजूदा कैदियों को) वापस कर दें। सब स़ाहबा ने इस पर कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अपनी खुशी से इन्हें वापस कर देते हैं। आपने फ़र्माया लेकिन वाज़ेह तौर पर इस वक़्त ये मा'लूम न हो सका है कि कौन अपनी खुशी से देने के लिये तैयार है और कौन नहीं। इसलिये सब लोग (अपने ख़ैमा

٢٤- بَابُ إِذَا وَهَبَ جَمَاعَةٌ لِقَوْمٍ  
٢٦٠٨، ٢٦٠٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ  
قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ  
شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ  
وَالْمُسَوِّزَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ  
ﷺ قَالَ حِينَ جَاءَهُ وَلَدٌ هَوَازِنٌ مُسْلِمِينَ،  
فَسَأَلُوهُ أَنْ يُرَدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالُهُمْ وَسَتِيهِمْ،  
فَقَالَ لَهُمْ: ((مَعِيَ مِنْ تَرَوْنَ، وَأَحَبُّ  
الْحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَاتَّخَذُوا إِحْدَى  
الطَّائِفَتَيْنِ: إِمَّا السَّيِّئَ وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ  
كُنْتُ امْتَنَيْتُ)) - وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ  
انْتَظَرَهُمْ بِضَعِّ عَشْرَةِ لَيْلَةٍ حِينَ قُتِلَ مِنْ  
طَائِفٍ - فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَيْرُ  
رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلَّا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا  
نَخْتَارُ سَيِّئًا. فَقَامَ فِي الْمُسْلِمِينَ فَآتَى  
عَلَى اللَّهِ يَأْهُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ  
فَإِنْ إِخْوَانَكُمْ مَوْلَاءَ جَارُوا تَابِينَ، وَإِنِّي  
رَأَيْتُ أَنْ أُرَدَّ إِلَيْهِمْ سَتِيهِمْ، لَمَنْ أَحَبُّ  
بَيْنَكُمْ أَنْ يُطِيبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبُّ  
أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظٍّ حَتَّى تُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ  
أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ  
النَّاسُ: طَبْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ. فَقَالَ  
لَهُمْ: ((إِنَّا لَا نَنْزِي مَنْ أَدِنَ مِنْكُمْ فِيهِ  
مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا

में) वापस जाएँ और तुम्हारे नुमाइंदे तुम्हारा मामला लाकर पेश करें। चुनौचे सब लोग वापस हो गये और नुमाइन्दों ने उनसे बातचीत की और वापस होकर औहज़रत (ﷺ) को बताया कि तमाम लोगों ने खुशी से इजाज़त दे दी है। कबीला हवाज़िन के क़ैदियों के बारे में हमें यही बात मा'लूम हुई है। ये जुहुरी (रह.) का आखिरी क़ौल था। या'नी ये कि कबीला हवाज़िन के क़ैदियों के बारे में हमें यही बात मा'लूम हुई है।

बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि सहाबा ने जो मुतअदिद लोग थे, हवाज़िन के लोगों को जो मुतअदिद थे, क़ैदियों का हिबा किया।

**बाब 25 : अगर किसी को कुछ हदिया दिया जाए उसके पास और लोग भी बैठे हों तो अब उसको दिया जाए जो ज़्यादा हक़दार है**

۲۵- بَابُ مَنْ أَهْدِيَ لَهُ هَدِيَّةٌ وَعِنْدَهُ جُلَسَاؤُهُ فَهُوَ أَحَقُّ

इससे मज़सूद इस क़ौल का इन्ताल है अल् हदाया मुश्तरक एक बुजुर्ग के सामने ये क़ौल बयान किया गया उन्होंने कहा, तन्हा ख़ुशतर्क।

2609. हमसे इब्ने मुक्रातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी शुअबा से, उन्हें सलमा बिन कुहैल ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक ख़ास इम्र का ऊँट क़र्ज़ लिया, क़र्ज़ ख़्वाह तक्राज़ा करने आया (और ना-जेबा बातचीत की) तो आपने फ़र्माया कि हक़ वाले को कहने का हक़ होता है। फिर आपने उससे अच्छी इम्र का ऊँट उसे दिला दिया और फ़र्माया कि तुममें अफ़ज़ल वो है जो अदा करने में सबसे बेहतर हो। (राजेअ: 2305)

۲۶۰۹- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كَهْتَلٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ أَخَذَ سَبْعًا، لِحَاجَةِ صَاحِبَةٍ يَتَقَضَّاهَا، فَقَالُوا لَهُ، لَقَالَ: ((إِنْ لِمَاصِحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا، ثُمَّ لَعْنَةُ الضَّلَّالِ مِنْ بَيْنِ وَرَأَى: أَلَمْ تَلْكُمُ أَحْسَنَكُمْ لَعْنَةً)). (راجع: ۲۳۰۵)

बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि इस ज़्यादती में दूसरे लोग जो वहाँ बैठे थे शरीक नहीं हुए बल्कि उसी को मिली जिसका ऊँट आप पर क़र्ज़ था।

2610. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया अमर से और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि वो सफ़र में नबी करीम (ﷺ) के साथ थे और इमर (रज़ि.) के एक सरकश ऊँट पर सवार थे। वो ऊँट औहज़रत (ﷺ) से भी आगे बढ़ जाया करता था। इसलिये उनके वालिद (इमर रज़ि.) को तम्बीह करनी पड़ती थी कि ऐ अब्दुल्लाह! नबी करीम (ﷺ) से

۲۶۱۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو: عَنْ ابْنِ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَكَانَ عَلَى بَكْرٍ لِعَمَرَ صَغَبٌ، لَكَانَ يَتَقَدَّمُ النَّبِيَّ ﷺ، لَيَقُولَ أَبُوهُ: يَا عَبْدَ

आगे किसी को न होना चाहिये। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया! कि इमर! उसे मुझे बेच दे। इमर (रज़ि.) ने अर्ज किया ये तो आप ही का है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे ख़रीद लिया। फिर फ़र्माया, अब्दुल्लाह! ये अब तेरा है। जिस तरह तू चाहे उसे इस्ते'माल कर। (राजेअ: 2115)

اللَّهُ لَا يَتَقَدَّمُ النَّبِيُّ ﷺ أَحَدًا، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَغِينُ))، فَقَالَ عُمَرُ: هُوَ لَكَ، فَاشْتَرَاهُ ثُمَّ قَالَ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ اللَّهِ، فَاصْنَعْ بِهِ مَا شِئْتَ)).

[راجع: 2115]

मुताबक़त ज़ाहिर है कि अब्दुल्लाह के साथ वाले उस कूँट में शरीक नहीं हुए, हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी दूरगामी नज़रे बज़ीरत से उस अम्र को प्राबित किया है कि मज्लिस में ख़्वाह कितने ही लोग बैठे हों, हदिया सिर्फ़ उसको दिया जाएगा जो मुस्तहिक्क है। इसी बारीक बीनी ने हज़रत इमाम को ये मक़ाम अता किया कि फ़न्ने हदीष की गहराइयों तक पहुँचना ये सिर्फ़ आपका हिस्सा था जिसकी वजह से वो अमीरुल मोमिनीन फ़िल् हदीष से मशहूर हुए। अब आपके उस खुदादाद मन्सब से कोई हसद करता है या इनाद, इससे इन्कार करता है तो वो करता रहे। हदीषे नबवी की बरकत से अल्लाह तआला ने आपको ग़ौर फ़ानी कुबूलियत दी जो ता-क़यामे दुनिया कायम रहेगी। इंशाअल्लाह।

**बाब 26 : अगर कोई शख्स कूँट पर सवार हो और दूसरा शख्स वो कूँट उसको हिबा कर दे तो दुरुस्त है**

2611. और ह मीदी ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि हमसे अम्र ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे और मैं एक सरकश कूँट पर सवार था। नबी करीम (ﷺ) ने इमर (रज़ि.) से फ़र्माया कि ये कूँट मुझे बेच दे चुनाँचे आपने उसे ख़रीद लिया और फिर फ़र्माया कि अब्दुल्लाह! तू ये कूँट ले जा। (मैंने ये तुझको बख़श दिया)

٢٦- بَابُ إِذَا وَهَبَ بَعِيرًا لِرَجُلٍ وَهُوَ رَاكِبُهُ، فَهُوَ جَائِزٌ

٢٦١١- وَقَالَ الْحَمْدِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، وَكُنْتُ عَلَى بَكْرِ صَبْرٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعُمَرَ: ((بَعِينُ))، فَاتَّعَاهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ اللَّهِ)). [راجع: 2115]

हज़रत अब्दुल्लाह कूँट पर सवार थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी हालत में उसे ख़रीद लिया और फिर अज़राहे नवाज़िश अब्दुल्लाह को उसी हालत में उसे हिबा कर दिया, इसी से बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ।

**बाब 27 : ऐसे कपड़े का तोहफ़ा जिसका पहनना मकरूह हो**

कराहते आम हैं तंज़ीही हो या तहरीमी अहले हदीष हराम को भी मकरूह कह देते हैं।

2611. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने नाफ़ेअ से और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि इमर (रज़ि.) ने देखा कि मस्जिद के दरवाज़े पर एक रेशमी हुल्ला (बिक रहा) है। आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज किया, कि क्या अच्छा होता अगर आप इसे ख़रीद लेते और जुम्आ के दिन और वफ़ूद की मुलाक़ात के मौक़ों पर इसे ज़ेबतन

٢٧- بَابُ هَدِيَّةٍ مَا يُكْرَهُ لِبِسُهَا

٢٦١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَى عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ خُلَّةَ سَيَرَاءٍ عِنْدَ بَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَوْ اشْتَرَيْتَهَا فَلَبِسْتُهَا

फर्मा लिया करते। औहज़रत (ﷺ) ने उनका जवाब ये दिया कि उसे वही लोग पहनते हैं जिनका आखिरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। कुछ दिनों बाद औहज़रत (ﷺ) के यहाँ बहुत से (रेशमी) हुल्ले आए और आपने एक हुल्ला उनमें से हज़रत उमर (रज़ि.) को भी इनायत किया। उमर (रज़ि.) ने इस पर अर्ज़ किया कि आप ये मुझे पहनने के लिये इनायत कर रहे हैं हालाँकि आप खुद अतारद के हुल्लों के बारे में जो कुछ फ़र्माना था, फ़र्मा चुके हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने इसे तुम्हें पहनने के लिये नहीं दिया है। चुनौचे उमर (रज़ि.) ने उसे अपने एक मुश्क भाई को दे दिया, जो मक्के में रहता था। (राजेअ: 886)

अतारद बिन हाजिब बिन जुराह बिन अदी बनी तमीम का भेजा हुआ एक शख्स था। पहला जोड़ा जिसके खरीदने की हज़रत उमर (रज़ि.) ने राय दी थी, वही लाया था। औहज़रत (ﷺ) ने रेशमी हुल्ले का हदिया हज़रत उमर (रज़ि.) को पेश फ़र्माया जिसका खुद इस्तेमाल करना हज़रत उमर (रज़ि.) के लिये जाइज़ न था। तफ़्सील मा'लूम करने के बाद हज़रत उमर (रज़ि.) ने वो हुल्ला अपने एक ग़ैर—मुस्लिम सगे भाई को दे दिया। इसी से बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ। और ये भी कि अपने अज़ीज़ अगर ग़ैर—मुस्लिम या बद दीन हैं तब भी उनके साथ हर मुम्किन एहसाने सुलूक करना चाहिये क्योंकि ये इंसानियत का तकाज़ा है और मक़ामे इंसानियत बहरहाल अफ़अ व आला है।

2613. हमसे अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने नाफ़ेअ से और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के घर तशरीफ़ ले गए, लेकिन अंदर नहीं गए। उसके बाद हज़रत अली (रज़ि.) घर आए तो फ़ातिमा (रज़ि.) ने ज़िक्र किया (कि आप (ﷺ) घर में तशरीफ़ नहीं लाए) अली (रज़ि.) ने इसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसके दरवाज़े पर धारीदार पर्दा लटका देखा था (इसलिये वापस चला आया) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे दुनिया (की आराइश व ज़ेबाइश) से क्या सरोकार। हज़रत अली (रज़ि.) ने आकर उनसे आपकी बातचीत का ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि आप मुझे जिस तरह का चाहें इस सिलसिले में हुक्म फ़र्माएँ। (औहज़रत (ﷺ) को जब ये बात पहुँची तो) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़लों घर में इसे भिजवा दें। उन्हें इसकी ज़रूरत है।

दरवाज़े पर कपड़ा बतौर पर्दा लटकाना नाजाइज़ न था, मगर महज़ ज़ेब व ज़ीनत के लिये कपड़ा लटकाना ये जानवादा नुबुव्वत के लिये इसलिये मुनासिब नहीं था कि अल् फ़क्क़ फ़ख़री उनका तुर्र-ए-इम्तियाज़ था। आपने जो अपने लिये पसन्द किया उसके लिये हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को हिदायत फ़र्माई और एक मौक़ा पर आयत व लिलआख़िरति ख़ैरुल्लक़ मिनल्लुला

يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَلِلْوَلَدِ. قَالَ : إِنَّمَا يَلْبَسُهَا مَنْ لَا خَلَاقَ لَهُ فِي الْآخِرَةِ. ثُمَّ جَاءَتْ خُلَنٌ، فَأَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عُمَرَ مِنْهَا خَلَةً، فَقَالَ: أَكْسَوْنِيهَا وَقُلْتَ لِي خَلَةً عَطَارِدَ مَا قُلْتَ؟ فَقَالَ: ((إِنِّي لَمْ أَكْسِكُمَا لِنَبْسِهَا)). فَكَسَا عُمَرُ أَخَاهُ لَهُ بِمَكَّةَ مُشْرِكًا)). [راجع: ٨٨٦]

٢٦١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ أَبُو جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فَضَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَتَى النَّبِيَّ ﷺ بَيْتَ لَاطِمَةَ فَلَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهَا، وَجَاءَ عَلِيٌّ فَذَكَرْتُ لَهُ ذَلِكَ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((إِنِّي رَأَيْتُ عَلَى بَابِهَا مِثْرًا مَوْشِيًا، فَقَالَ: مَا نِي وَلِلدُّنْيَا)). فَأَتَانَا عَلِيٌّ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهَا، فَقَالَتْ: لِيَأْمُرَنِي بِهِ بِمَا شَاءَ. قَالَ: تَوْصِيْلُ بِهِ إِلَى فَلَانٍ، أَهْلٍ يَسْتَبِيهِمْ حَاجَةً)).

(अजुहा : 4) की रोशनी में इशाद हुआ कि मेरे लिये मेरी आल के लिये दुनियावी तअरीश और तरफअ लायक नहीं, अल्लाह ने हमारे लिये, सब कुछ आखिरत में तैयार कर रखा है।

हजरत फातिमा (रजि.) आँहजरत (ﷺ) की बहुत ही प्यारी बेटी हैं, उनकी वालिदा माजिदा हजरत खदीजा (रजि.) हैं। एक रिवायत के मुताबिक ये आँहजरत (ﷺ) की सबसे छोटी बेटी हैं। दुनिया व आखिरत में तमाम औरतों की सरदार हैं। रमजान 2 हिजरी में इनका निकाह हजरत अली (रजि.) से हुआ और जिलहिज्ज में रुखसती अमल में आई। इनके बतन से हजरत अली (रजि.) के तीन साहबजादे हजरत हसन व हजरत हुसैन, हजरत मुहसिन (रजि.) और जैनब, उम्मे कुलसुम और रुकय्या तीन साहबजादियाँ पैदा हुईं। वफाते नबी के छः माह बाद मदीना तय्यिबा ही में बइअ 28 साल इतिकाल फर्माया। हजरत अली (रजि.) ने उनको गुस्ल दिया और हजरत अब्बास (रजि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। रात ही में दफन की गई। हजरत हसन और हुसैन (रजि.) और उनके अलावा सहाबा की एक जमाअत ने इनसे रिवायत की है।

हजरत आइशा (रजि.) फर्माती हैं कि आँहजरत (ﷺ) के अलावा मैंने किसी को उनसे ज्यादा सच्चा नहीं पाया। उन्होंने फर्माया कि जबकि उन दोनों के दरम्यान किसी बात में कुबैदागी थी कि या रसूलुल्लाह (ﷺ) उन ही से पूछ लीजिए क्योंकि वो झूठ नहीं बोलती हैं। मज़ीद मनाकिब अपने मक़ाम में आएँगे। (रज़ियल्लाहु अन्हा)

4 अप्रैल 70 ईस्वी में इस हदीस तक का'बा शरीफ मकतुल मुकर्रमा में बग़ौरो फ़िक्र मतने बुखारी शरीफ पारा दस को पढ़ा गया। अल्लाह पाक क़लम को लज़िश से बचाए और कलामे रसूलुल्लाह (ﷺ) को सहीह तौर पर समझने और उसका सहीह तर्जुमा लिखने की तौफ़ीक़ अता करे और तशरीहात में भी अल्लाह पाक फ़हम व फ़रासत नज़ीब करे। आमीन या रब्बल आलमीन।

2614. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया कि मुझे अब्दुल मलिक बिन मैसरा ने खबर दी, कहा कि मैंने ज़ैद बिन वहब से सुना कि हजरत अली (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे एक रेशमी हुल्ला हदिया में दिया तो मैंने उसे पहन लिया। लेकिन जब गुस्से के आघार रूए मुबारक पर देखे तो उसे अपनी औरतों में फाड़कर तक्सीम कर दिया। (दीगर मक़ाम : 5366, 5840)

۲۶۱۴- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِهْثَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَسْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَهْدَى إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ خُلَّةَ مِيرَاءٍ، فَلَبِسْتُهَا، فَرَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ، فَشَقَقْتُهَا بَيْنَ نِسَائِي)) [طرفاء في: ۵۳۶۶، ۵۸۴۰].

अबू सालेह की रिवायत में यूँ है फ़ातिमों को बांट दिया, या'नी फ़ातिमा जुहरा (रजि.) और फ़ातिमा बिनते असद को जो हजरत अली (रजि.) की वालिदा थीं और फ़ातिमा बिनते हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को और फ़ातिमा बिनते शैबा या बिनते इत्बा बिन रबीआ को जो अक़ील बिन अबी तालिब की बीवी थीं।

**बाब 28 : मुशिकीन का हदिया कुबूल कर लेना**

और अबू हुरैरह (रजि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने हजरत सारा के साथ हिजरत की तो वो एक ऐसे शहर में पहुँचे जहाँ एक काफ़िर बादशाह था (ये कहा कि) ज़ालिम बादशाह था। इस बादशाह ने कहा कि उन्हें (इब्राहीम अलैहिस्सलाम को) आजर (हाजरा अलैहिस्सलाम) को दे दो। नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में (ख़ैबर के यहूदियों की

۲۸- بَابُ قَبُولِ الْهَدِيَّةِ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ بِسَارَةٍ، فَدَخَلَ قَرْيَةً فِيهَا مَلِكٌ أَوْ جَبَّارٌ فَقَالَ: أَغْطُوهَا أَجْرِي). وَأَهْدَيْتَ لِلنَّبِيِّ ﷺ شاةً فِيهَا سَمٌّ. وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: ((أَهْدَى مَلِكٌ أَثَلَةً لِلنَّبِيِّ

तरफ से दुश्मनी में) हृदया के तौर पर बकरी का ऐसा गोश्त पेश किया गया था जिसमें ज़हर था। अबू हुमैद ने बयान किया ऐला के हाकिम ने नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में सफ़ेद खच्चर और चादर हृदया के तौर पर भेजी थी और नबी करीम (ﷺ) ने उसे लिखवाया कि वो अपनी क़ौम के हाकिम की हैशियत से बाक़ी रहे। (क्योंकि उसने जिज़्या देना मंज़ूर कर लिया था)

بَقْلَةٌ بَيْضَاءُ، وَكَسَاهُ بُرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ  
بِخَرْمِهِمْ))

**तशरीह:** दूमतुल जुन्दल एक शहर का नाम था तबूक के करीब। वहाँ का बादशाह अकीदर बिन अब्दुल मलिक बिन अब्दुल जिन्न नसरानी था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) उसे गिरफ़्तार करके लाए। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे आज़ाद फ़र्मा दिया क्यों कि वो जिज़्या देने पर राज़ी हो गया था। उसने हृदया मज्कूर आँहज़रत (ﷺ) की खिदमते अक़दस में पेश किया था।

कहते हैं हज़रत सारा बहुत ख़ूबसूरत थीं। उनके हुस्नो-जमाल की तारीफ़ सुनकर बादशाह ने उनको बुला भेजा। कुछ लोगों ने उसका नाम अम्र बिन इम्रूल कैस बतलाया है। हज़रत हाजरा उसकी बेटी थी। बादशाह ने हज़रत सारा (रज़ि.) की करामत देखकर चाहा कि उसकी बेटी उस मुबारक ख़ानदान में दाख़िल होकर बरकतों से हिस्सा पाए। हज़रत हाजरा को लौण्डी बांदी कहना ग़लत है जिसका तफ़्सीली बयान पीछे गुज़र चुका है।

ऐला नामी मक़ाम मज्कूर मक्का से मिस्र जाते हुए समुन्दर के किनारे एक बन्दरगाह थी वहाँ के ईसाई हाकिम का नाम यूहन्ना बिन अवबह था। इन रिवायात के नक़ल करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद ये साबित करना है कि मुश्रिकों व कुफ़्रार के हृदियों को कुबूल किया जा सकता है जैसा कि इन रिवायात से ज़ाहिर है।

2615. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे शौबान ने बयान किया क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में दबीज़ किस्म के रेशम का एक जुब्बा हृदया के तौर पर पेश किया गया। आप उसके इस्तेमाल से (मर्दों को) मना फ़र्माते थे। सहाबा को बड़ी हैरत हुई (कि कितना इम्दहरेशम है) आप (ﷺ) ने फ़र्माया (तुम्हें उस पर हैरत है) उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है, जन्नत में सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के रूमाल इससे भी ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं। (दीगर मक़ाम: 2616, 3248)

2616. सईद ने बयान किया क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि दूमा (तबूक के करीब एक मक़ाम) के अकीदर (नसरानी) ने नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हृदया भेजा। (राजेअ: 2615) जिस का ज़िक्र इस हदीष में मौजूद है।

2617. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल यहहाब ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक यहूदी औरत नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में ज़हर मिला

٢٦١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيبُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَدَيْ لِلنَّبِيِّ ﷺ جَبَّةً مَسْنُونَةً، وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الْحَرِيرِ، فَعَجِبَ النَّاسُ مِنْهَا، فَقَالَ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَسَنَادِئِلُ مَعْدٍ بِنِ مَعَادٍ فِي الْجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هَذِهِ)). [طرفاء في: ٢٦١٦، ٣٢٤٨].

٢٦١٦- وَقَالَ سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ: ((إِنْ أَكْبَدَ ذُوْمَةٌ أَهْدَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: ٢٦١٥]

٢٦١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ

हुआ बकरी का गोश्त लाई, आप (ﷺ) ने उसमें से कुछ खाया (लेकिन फौरन ही फर्माया कि इसमें जहर पड़ा हुआ है) फिर जब उसे लाया गया (और उसने जहर डालने का इत्तार भी कर लिया) तो कहा गया कि क्यूँ न इसे क़त्ल कर दिया जाए। लेकिन आपने फर्माया कि नहीं। इस जहर का अषर मैंने हमेशा नबी करीम (ﷺ) के तालू में महसूस किया।

بَيْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «أَنَّ يَهُودِيَةً أَتَتْ النَّبِيَّ ﷺ بِشَاةٍ مَسْمُومَةٍ فَأَكَلَ مِنْهَا فَجِيءَ بِهَا، لَقِيزٌ: أَلَا نَقْلُهَا؟ قَالَ: ((لَا)). فَمَا زِلْتُ أُعْرِفُهَا فِي لَهَوَاتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ».

**तशरीह:** अषर से मुराद उस जहर का रंग है या और कोई तगय्युर जो आप (ﷺ) के तालू मुबारक में हुआ होगा। कहते हैं बशीर बिन बरा एक सहाबी ने भी ज़रा सा गोश्त उसमें से खा लिया था वो मर गए। जब तक वो मरे न थे आपने सहाबा को उस औरत के क़त्ल से मना फर्माया। चूँकि आप अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला लेना नहीं चाहते थे। ये भी आपकी नुबुव्वत की एक बड़ी दलील है। जब बशर (रज़ि.) मर गए तो उनके क़िसास में वो औरत भी मारी गई। मा'लूम हुआ कि जहर खुरानी से अगर कोई हलाक हो जाए तो जहर खिलाने वाले को क़िसास न क़त्ल कर सकते हैं और हन्फिया ने इसमें ख़िलाफ़ किया है। दूसरी हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने वफ़ात के करीब इर्शाद फर्माया कि ऐ आइशा (रज़ि.)! जो खाना मैंने ख़ैबर में खा लिया था, या'नी यही जहर आलूद गोश्त, उसने अब अषर करना शुरू कर दिया और मेरी शाहे रंग काट दी। इस तरह अल्लाह तआला ने आपको शहादत भी अंता फर्माई (वहीदी)

इस वाक़िया से उन ग़ाली मुन्तदेईन की भी तर्दीद होती है जो आँहज़रत (ﷺ) को मुत्लक़न आलिमुल ग़ैब कहते हैं। हालाँकि कुआन मजीद में साफ़ अल्लाह ने आपसे ऐलान कराया है, लौ कुन्तु आलमुल्ग़ैब लस्तव्षर्तु मिनल्ख़ैरि वमा मस्सनिस्सूअ (अल् अअसफ़: 188) या'नी मैं ग़ैब जानने वाला होता तो बहुत सी भलाइयाँ जमा कर लेता और कभी कोई तकलीफ़ मुझे नहीं पहुँच सकती। पस जो लोग अक़ीदा रखते हैं वो सरासर गुमराही में गिरफ़तार हैं। अल्लाह उनको नेक समझ अता करे। आमीन।

2618. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अबू उम्मान ने बयान किया और उनसे अब्दुलहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हम एक सौ तीस आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (सफ़र में) थे। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फर्माया क्या किसी के साथ खाने की भी कोई चीज़ है? एक सहाबी के साथ तक्ररीबन एक साज़ खाना (आटा) था। वो आटा गूँधा गया। फिर एक लम्बा तड़ंगा मुश्किल परेशान हाल बकरियाँ हाँकता हुआ आया। तो नबी अकरम (ﷺ) ने दरयाफ़्त फर्माया कि ये बेचने के लिये हैं। या किसी का अतिथि है या आपने (अतिथि की बजाय) हिबा फर्माया। उसने कहा कि नहीं बेचने के लिये हैं। आपने उससे एक बकरी ख़रीदी फिर वो ज़िह्न की गई। फिर नबी करीम (ﷺ) ने उसकी कलेजी भूनने के लिये कहा। क़सम अल्लाह की एक सौ तीस अरुहाब में से हर एक को उस कलेजी में से काट के दिया। जो मौजूद थे उन्हें तो आपने फ़ौरन ही दे दिया और जो उस वक़्त मौजूद नहीं थे उनका हिस्सा महफूज़ रख लिया। फिर

٢٦١٨ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثَلَاثِينَ وَمِائَةً، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ مَعَ أَحَدٍ مِنْكُمْ طَعَامٌ؟)) لِإِذَا مَعَ رَجُلٍ صَاعٌ مِنْ طَعَامٍ أَوْ نَحْوَهُ، فَخُجِنَ، ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ مُشْرِكٌ مُشْعَانٌ طَوِيلٌ يَغْتَمِ بِسَوْفَلِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَيْعًا أَمْ عَطِيَّةً؟)) أَوْ قَالَ: ((أَمْ هِبَةً؟)) قَالَ: لَا، بَلْ بَيْعٌ. فَاشْتَرَى مِنْهُ شَاةً، فَصُنِغَتْ، وَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِسِوَادِ الْبَطْنِ أَنْ يُشَوَّى. وَأَيَّمُ اللَّهُ مَتَّالِي

बकरी के गोश्त को दो बड़ी क़ाबू में रखा गया और सबने ख़ूब सैर होकर (भरपेट) खाया। जो कुछ क़ाबू में बच गया था उसे कैंट पर रखकर हम वापस लाए। अब कमा क़ाल।

(राजेअ: 2216)

الثَّالِثِينَ وَالْمِائَةَ إِلَّا وَلَدَ خَزْ النَّبِيِّ ﷺ  
خُزَّةً مِنْ مِوَادِّ بَطْنِهَا، إِنْ كَانَ شَاهِدًا  
أَعْطَا إِيَّاهُ، وَإِنْ كَانَ غَائِبًا خَبَأَ لَهُ،  
فَجَعَلَ مِنْهَا فِصْمَتَيْنِ، فَأَكَلُوا أَجْمَعُونَ  
وَشَبِعْنَا، فَفُضِّلَتِ الْفِصْمَتَانِ فَحَمَلَتْهُ عَلَى  
النَّبِيِّ. (أَوْ كَمَا قَالَ). (راجع: ٢٢١٦)

इससे भी किसी काफ़िर मुशरिक का हदिया कुबूल करना या उससे कोई चीज़ ख़रीदना जाइज़ प्राबित हुआ और आँहज़रत (ﷺ) का एक अज़ीम मोअज़िज़ा भी प्राबित हुआ कि आपकी दुआ से वो क़लील (थोड़ा सा) गोश्त सबके लिये काफ़ी हो गया।

## बाब 29 : मुश्रिकों को हदिया देना

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, जो लोग तुमसे दीन के बारे में लड़े नहीं और न तुम्हें तुम्हारे घरों से उन्होंने निकाला है तो अल्लाह तआला उनके साथ एहसान करने और उनके मामले में इंसाफ़ करने से तुम्हें नहीं रोकता।

## ٢٩- بَابُ الْهَدِيَّةِ لِلْمُشْرِكِينَ

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿لَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ  
الَّذِينَ لَمْ يَقَابِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ  
يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ  
وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ﴾ [الممتحنة: ٨]

ہدینہ کا نام اس وقت تک نہیں ہے جب تک کہ اس کا مقابلہ دین میں نہ ہو اور اس کو اپنی دیار سے نہ نکال دیا ہو۔ (بخاری) (بخاری) (بخاری) (بخاری) (بخاری)

2619. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि इमर (रज़ि.) ने देखा कि एक शख्स के यहाँ एक रेशमी जोड़ा बिक रहा है। तो आपने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि आप ये जोड़ा ख़रीद लीजिए ताकि जुम्आ के दिन और जब कोई वफ़द आए तो आप उसे पहना करें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे तो वो लोग पहनते हैं जिनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होता। फिर नबी करीम (ﷺ) के पास बहुत से रेशमी जोड़े आए और आपने उनमें से एक जोड़ा इमर (रज़ि.) को भेजा। इमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं इसे किस तरह पहन सकता हूँ जबकि आप ख़ुद ही इसके बारे में जो कुछ इशारादि फ़र्माया था, फ़र्मा चुके हैं। आपने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें पहनने के लिये नहीं दिया बल्कि इसलिये दिया कि तुम इसे बेच दो या किसी (ग़ैर-मुस्लिम) को पहना दो। चुनाँचे इमर (रज़ि.) ने उसे मक्के में अपने एक भाई के घर भेज दिया जो अभी

٢٦١٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ  
اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَى عُمَرُ حُلَّةً عَلَى رَجُلٍ  
تَبَاغَ، فَقَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: ائْتِنِي هَذِهِ الْحُلَّةَ  
تَلْبَسُهَا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَإِذَا جَاءَكَ الْوَلَدُ،  
فَقَالَ: ((إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لَا خَلَاقَ لَهُ  
فِي الْآخِرَةِ))، فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنْهَا  
بِحُلَّةٍ، فَأَرْسَلَ إِلَى عُمَرَ مِنْهَا بِحُلَّةٍ،  
فَقَالَ عُمَرُ: كَيْفَ تَلْبَسُهَا وَقَدْ قُلْتَ فِيهَا  
مَا قُلْتَ؟ قَالَ: ((إِنِّي لَمْ أَكْسُكَهَا  
لِتَلْبَسُهَا، تَبِغُهَا أَوْ تَكْسُوهَا)). فَأَرْسَلَ بِهَا  
عُمَرُ إِلَى أَخٍ لَهُ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ قَبْلَ أَنْ



इस्लाम नहीं लाया था। (राजेअ : 886)

﴿مُسْلِمٌ﴾. [راجع: 886]

मा'लूम हुआ कि मुश्किनी को हदिया दिया भी जा सकता है। इस्लाम ने दुनियावी मामलात में अपनों और गैरों के साथ हमेशा खदारी व इश्तिराके बाहमी का पुबूत दिया है। इस्लाम की चौदह सौ साला तारीख से अयाँ (रोशन) है कि मुसलमान जिस मुल्क में गए, तमहुन और मुआशरत में वहाँ की कौमों में खलत मलत हो गए। जिस ज़मीन पर जाकर बसे उसको गुल व गुलज़ार बना दिया। काश! मुआनिदीने इस्लाम उन हक़ाइक़ पर गौर करें।

2620. हमसे इब्बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया हिशाम से, उनसे उनके बाप ने और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में मेरी वालिदा (कुतैला बिनते अब्दुल इज़्ज़ा) जो मुश्किनी थीं, मेरे यहाँ आईं। मैंने आप (ﷺ) से पूछा, मैंने ये भी कहा कि वो (मुझसे मुलाक़ात की) बहुत ख़्वाहिशमन्द हैं, तो क्या मैं अपनी वालिद के साथ सिलारहमी कर सकती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी कर। (दीगर मक़ाम : 3183, 5978, 5979)

٢٦٢٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَدِمْتُ عَلَى أُمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَاسْتَفْتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قُلْتُ: إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ وَهِيَ رَاغِبَةٌ أَفَأَحِلُّ أُمِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ، حَلَّى أُمَّكَ)).

[أطرافه في: ٣١٨٣، ٥٩٧٨، ٥٩٧٩]

उसका बेटा हारिष बिन मुदरिका भी साथ आया था। मगर उसका नाम सहाबा में नहीं है। शायद वो कुफ़र ही पर मरा। ये कुतैला बिनते अब्दुल इज़्ज़ा हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बीवी थी। हज़रत अस्मा (रज़ि.) उसी के बतन से पैदा हुई थी। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जाहिलियत के ज़माने में तलाक़ दे दी थी और वो अब भी गैर मुस्लिमा थी जो मदीना में अपनी बेटी अस्मा (रज़ि.) को देखने आई और मेवे और धी वगैरह के तोहफ़े साथ लाई। हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने उनके बारे में रसूले करीम (ﷺ) से दरयाफ़्त किया। जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी करने और अहसन बर्ताव का हुक्म दिया था। इससे इस्लाम की उस रविश पर रोशनी पड़ती है जो वो गैर-मुस्लिम मदीन व औरतों के साथ अच्छा बर्ताव पेश करता है।

बाब 30 : किसी के लिये हलाल नहीं कि अपना दिया हुआ हदिया या सदका वापस ले ले

٣ - بَابُ لَا يَجِلُّ لِأَحَدٍ أَنْ يَرْجِعَ

فِي هِبَتِهِ وَصَدَقَتِهِ

2621. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम और शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया सईद बिन मुसय्यिब से और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपना दिया हुआ हदिया वापस लेने वाला ऐसा है जैसे अपनी की हुई क़ै का चाटने वाला। (राजेअ : 2589)

٢٦٢١ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ أَبِإِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ وَشُعْبَةُ قَالَا: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْمَأْثِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْمَأْثِدِ فِي قَبِيهِ)).

[راجع: 2589]

ज़ाहिरे हदीष से यही निकलता है कि हिबा और सदका में रुज़ूअ ह़राम है लेकिन दूसरी हदीष की रू से वो हिबा मुस्तज़ना (अलग) है जो बाप अपनी औलाद को करे, उसमें रुज़ूअ करना जाइज़ है। इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) का यही फ़त्वा है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने रुज़ूअ को मकरूह कहा है ह़राम नहीं।

2622. हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया इकिरमा से और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हम मुसलमानों को बुरी मिथाल न इखितयार करनी चाहिये। उस शख्स की सी जो अपना दिया हुआ हृदिया वापस ले ले, वो उस कुत्ते की तरह है जो अपनी क़ै खुद चाटता है। (राजेअ: 2589)

٢٦٢٢- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ لَنَا مَثَلُ السَّوءِ، الَّذِي يَقُوذُ فِي بَيْتِهِ كَالْكَلْبِ يَرْجِعُ فِي قَيْئِهِ)).

[راجع: ٢٥٨٩]

2623. हमसे यह्या बिन कज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया ज़ैद बिन असलम से, उनसे उनके बाप ने कि उन्होंने उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) से सुना। आपने फ़र्माया कि मैंने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिये (एक शख्स को) दिया। जिसे मैंने वो घोड़ा दिया था। उसने उसे दुबला कर दिया। इसलिये मेरा इरादा हुआ कि उससे अपना वो घोड़ा ख़रीद लूँ। मेरा ये भी ख़याल था कि वो शख्स वो घोड़ा सस्ते दामों पर बेच देगा। लेकिन जब मैंने इसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे न ख़रीदो, ख़वाह तुम्हें वो एक ही दिरहम में क्यूँ न दे क्योंकि अपने स़दक़े को वापस लेने वाला शख्स उस कुत्ते की तरह है जो अपनी ही क़ै खुद चाटता है। (राजेअ: 1490)

٢٦٢٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَأَصَاعَهُ الْبَيْتِ كَانَ عِنْدَهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَشْتَرِيَهُ مِنْهُ، وَظَنَنْتُ أَنَّهُ بَائِعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَا تَشْتَرِهِ وَإِنْ أَغْطَاكَ بِبُرْصِهِمْ وَاحِدٍ، فَإِنَّ الْبَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ كَالْكَلْبِ يَقُوذُ فِي قَيْئِهِ)). [راجع: ١٤٩٠]

इस घोड़े का नाम वरद था, ये तमीम दारी (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को तोहफ़े में दिया था और आँहज़रत (ﷺ) ने उसे हज़रत उमर (रज़ि.) को बख़्श दिया।

### बाब 31 :

### ٣١ - بَابُ

ये बाब गोया पहले बाब की फ़स्तल है और इस बाब में जो हदीष बयान की उसकी मुनासबत अगले बाब से ये है कि सुहैब के बेटों ने जब आँहज़रत (ﷺ) का हिबा बयान किया, तो मरवान ने ये न पूछा कि आप (ﷺ) ने रुजूअ किया था या नहीं। मा'लूम हुआ कि हिबा में रुजूअ नहीं।

2624. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी कि इब्ने जिदआन के गुलाम बनू सुहैब ने दा'वा किया कि दो मकान और एक हुज़रा नबी करीम (ﷺ) ने सुहैब (रज़ि.) को इनायत फ़र्माया था। (जो विरासत में उन्हें मिलना चाहिये) खलीफ़ा मरवान बिन हक़म ने पूछा कि तुम्हारे हक़ में उस दा'वा

٢٦٢٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمِيرَةَ أَنَّ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ: ((أَنَّ نَبِيَّ مُحَمَّدٍ ﷺ مَوْلَى نَبِيٍّ جُلْدَانِ ادَّعَا بَيْنَيْنِ وَخُجْرَةً أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَغْطَى ذَلِكَ صَهْبًا،

पर गवाह कौन है? उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.)। मरवान ने आपको बुलाया तो आपने गवाही दी कि वो वाक़ई रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुहैब (रज़ि.) को दो मकान और एक हुज्रा दिया था। मरवान ने आपकी गवाही पर फ़ैसला उनके हक़ में कर दिया।

सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की शहादत पर भले ही हाकिम को इत्मीनान हो सकता था। मगर शरअन एक आदमी की शहादत काफ़ी नहीं है। चाहे वो कितना ही मो'तबर हो। मरवान ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की शहादत ली होगी और मुद्दयों से क़सम, एक गवाह और एक मुद्दई की क़सम पर फ़ैसला करना जाइज़ है। अहले हदीष और शाफ़ि'ई और अहमद और अक़्फ़र उलमा का यही क़ौल है, हन्फ़िया इसको जाइज़ नहीं मानते हैं।

### बाब 32 : उम्रा और रुक्बा के बारे में रिवायात

(अगर किसी ने कहा कि) मैंने उम्र भर के लिये तुम्हें ये मकान दे दिया तो उसे उम्रा कहते हैं (मतलब ये है कि उसकी उम्र भर के लिये) मकान मैंने उसकी मिल्कियत में दे दिया। (कुआनी लफ़्ज़ (इस्तअमरकुम फ़ीहा) का मफ़हूम ये है कि उसने तुम्हें ज़मीन में बसाया।

2625. हमसे अबू नु'एम ने बयान किया, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उम्रा के बारे में फ़ैसला किया था कि वो उसका हो जाता है जिसे हिबा किया गया हो।

**तर्शीह:** उम्रा किसी शख्स को मषलन उम्र भर के लिये मकान देना। रुक्बा ये है मषलन किसी को एक मकान दे इस शर्त पर कि अगर देने वाला पहले मर जाए तो मकान उसका हो गया और अगर लेने वाला पहले मर जाए तो मकान फिर देने वाले का हो जाएगा। इसमें हर एक दूसरे की मौत को तकता रहता है। इसलिये इसका नाम रुक्बा हुआ। ये दोनों अक़्द जाहिलियत के ज़माने में मुरव्वज (प्रचलित) थे। जुम्हूर उलमा के नज़दीक दोनों सहीह हैं और इमाम अबू हनीफ़ा ने रुक्बा को मना रखा है और जुम्हूर उलमा के नज़दीक उम्रा लेने वाले का मिल्क हो जाता है और देने वाले की तरफ़ नहीं लौटता। इमाम बुखारी (रह.) ने जो हदीष इस बाब में बयान की। उसमें सिर्फ़ उम्रा का ज़िक्र है रुक्बा का नहीं। और शायद उन्होंने दोनों को एक समझा। (वहीदी)

हाफ़िज़ साहब फ़रमते हैं, वलउम्रा बिजमिलमुहमलति व सुकूलिल्मीमि मअल्कस्मि व हुकिय ज़म्मुल्मीमि मअज़म्मि अव्वलिही व हुकिय फत्हु अव्वलिही मअस्सुकुनि माखूज़ुमिनलउमि वर्रक्बा बिजज़निहा मिनल्मुराक़बति लिअन्नहुम कानू यफ़अलून ज़ालिक फिल्ज़ाहिलिय्यति फयुतिर्जुल अद्गर व यकूलु लहू आमर्तुक इय्याहा अय खहतुहा लक मुद्त उमिक फक्कील लहा उम्रा लिज़ालिक व कज़ा क़ील लहा रुक्बा लिअन्न कुल्लम्मिन्हुमा यर्क़बु मता यमुतुल्आखरु लितर्जिअ इलैहि व कज़ा वरस्तुहु फयकूमून मक़ामहु फी ज़ालिक हाज़ा अस्तुहा लुगतन व अम्मा शअन फल्जुम्हूरु अला अन्नलउम्रा इज़ा वक्रअत कानत मालिकन लिअलिज व ला तर्जिउ इलल्अव्वलि इल्ला अन सुरिह बिइशतिराति ज़ालिक व ज़हबल्जुम्हूरु इला सिहतिहलउम्रा (फत्हुल्बारी)

खुलासा ये कि लफ़्ज़ उम्रा उम्र से माखूज़ है और रुक्बा मुराक़बा से। इसलिये कि जाहिलियत में दस्तूर था कि कोई

فَقَالَ مَرَوَانُ مَنْ يَشْهَدُ لَكُمَا عَلَى ذَلِكَ؟  
قَالُوا: ابْنُ عُمَرَ. فَدَعَاهُ، فَشَهِدَ لِأَعْطَى  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صُحْبًا بَيْنَ وَحُجْرَةٍ،  
فَقَضَى مَرَوَانُ بِشَهَادَتِهِ لَهُمْ)).

۳۲- بَابُ مَا قِيلَ فِي الْغُمَرَى وَالرُّقْبَى  
أَغْمَرْتُهُ الدَّارَ لَهَا غُمَرَى: جَعَلْتُهَا لَهُ.  
﴿اسْتَغْمَرْتُمْ فِيهَا﴾ جَعَلْتُكُمْ عُمَرَاءَ.

۲۶۲۵- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا  
شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَضَى النَّبِيُّ ﷺ  
بِالْغُمَرَى أَنَهَا لِمَنْ وَهَبَتْ لَهُ)).

आदमी बतौर अतिथि किसी को अपना घर इस शर्त पर दे देता है कि ये घर सिर्फ़ तेरी मुहते उम्र तक के लिये मैं तुझे बख़िशश करता हूँ इसीलिये इसे उम्रा कहा गया और रुक़्बा इसलिये कि उनमें से हर एक-दूसरे की मौत का मुंतज़िर होता है कि कब वे मौहबलहू इंतिक़ाल करे और कब घर वाहिब को वापस मिले। इसी तरह उसके वारिष मुंतज़िर रहते। ये लांबी तौर पर है। शरअन कि जुम्हूर के नज़दीक कि उम्रा जब वाक़ेअ हो जाए तो वो लेने वाले की मिलिकियत बन जाता है और अव्वल की तरफ़ नहीं वापस हो सकता। मगर इस सूत में कि देने वाला सराहत के साथ वापसी की शर्त लगा दे और जुम्हूर के नज़दीक उम्रा सहीह प्राबित हो जाता है।

2626. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे नज़र बिन अनस ने बयान किया, उनसे बशीर बिन नहीक ने और उनसे अबू हुसैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उम्रा जाइज़ है और अत्रा ने कहा कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह बयान किया।

٢٦٢٦- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ  
- كُنَّا هَمَّامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي  
النُّعْمَانُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهْيَكٍ عَنْ  
أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ  
قَالَ: ((الْعُمْرَى جَائِزَةٌ)). وَقَالَ عَطَاءُ:  
حَدَّثَنِي جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . نَحْوَهُ.

किसी को कोई चीज़ सिर्फ़ उसकी उम्र तक बख़िश देना इसी को उम्रा कहते हैं।

### बाब 33 : जिसने किसी से घोड़ा आरियतन (उधार माँगकर) लिया

### ٣٣- بَابُ مَنْ اسْتَعَارَ مِنَ النَّاسِ الْفَرَسَ

2627. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, क़तादा से कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया कि मदीने पर (दुश्मन के हमले का) डर था। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) से एक घोड़ा जिसका नाम मन्दूब था मुस्तआरन लिया, फिर आप (ﷺ) उस पर सवार हुए (सहाबा भी साथ थे) फिर जब वापस हुए तो फ़र्माया कि हमें तो कई ख़तरे की चीज़ नज़र न आई, अल्बत्ता ये घोड़ा हमने समुन्दर की तरह (तेज़ दौड़ता) पाया। (दीगर मक़ाम : 2820, 2853, 2857, 2866, 2867, 2908, 2968, 2969, 3040, 6033, 6212)

٢٦٢٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ  
عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: كَانَ  
فُرْعٌ بِالْمَدِينَةِ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا  
مِنْ أَبِي طَلْحَةَ يُقَالُ لَهُ الْمُنْدُوبُ فَوَكَبَهُ،  
فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ شَيْءٍ، وَإِنْ  
وَجَدْنَاهُ لَيَحْرَأُ)).

[أطرافه في : ٢٨٥٣، ٢٨٥٧، ٢٨٢٠]

٢٨٦٦، ٢٨٦٧، ٢٩٠٨، ٢٩٦٨

٤٩٦٩، ٣٠٤٠، ٦٠٣٣، ٦٢١٢]

**तशरीह :** दरिया की तरह तेज़ और बेतकान जाता है। दूसरी रिवायत में है। आप नंगी पीठ पर सवार हुए आपके गले में तलवार पड़ी थी। आप अकेले उसी तरफ़ तशरीफ़ ले गए जिधर से मदीना वालों ने आवाज़ सुनी थी। सुबहानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) की शुजाअत इस वाक़िये से मा'लूम होती है कि अकेले तन्हा दुश्मन की ख़बर लेने को तशरीफ़ ले गए। सखावत ऐसी कि किसी मांगने वाले का सवाल रद्द न करते। शर्म और हया और मरुव्वत ऐसी कि कुँवारी लड़की से भी ज़्यादा। इफ़फ़त ऐसी कि कभी बदकारी के पास तक न फटके। हुस्न व जमाल ऐसा कि सारे अरब में कोई आपका नज़ीर न था। नफ़ासत और नज़ाफ़त ऐसी कि जिधर से निकल जाते, दरो-दीवार मुअत्तर हो जाते। हुस्ने खलक़ ऐसा कि दस बरस तक हज़रत अनस (रज़ि.) ख़िदमत में रहे कभी उनको झिड़का नहीं। अदल और इंसफ़ ऐसा कि अपने सगे चचा की भी कोई रिआयत न की। फ़र्माया

कि अगर फ़ातिमा (रज़ि.) भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ कटवा दूँ, इबादत और रियाज़त ऐसी कि नमाज़ पढ़ते पढ़ते पाँव वरम कर गये (सूज गये)। बेतामई ऐसी कि लाख रुपये आए, सब मस्जिदे नबवी में डलवा दिये और उसी वक़्त बंटवा दिये। सब व क़िनाअत ऐसी कि दो-दो महीने तक चूल्हा गरम न होता। जौ की सूखी रोटी और खजूर पर इक्तिफ़ा करते। कभी दो-दो तीन-तीन फ़ाक़े होते। ग़मे बोरे पर लेटते, बदन पर निशान पड़ जाता था मगर अल्लाह के शुक्रगुज़ार और खुश व ख़ुरम रहते। हर्फ़े शिकायत जुबान पर न लाते। क्या इन सब उमूर के बाद भी कोई अहमक भी आपकी नुबुव्वत और पैग़म्बरी में शक कर सकता है? सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्सलामु अलैहि व सल्लम।

### बाब 34 : शबे अरूसी में दुल्हन के लिये कोई चीज़ आरियतन लेना

2628. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप क़तर (यमन का एक दबीज़ खुरदुरा कपड़ा) की क़मीस क़ीमत पाँच दिरहम की पहने हुए थीं। आपने मुझसे) फ़र्माया। ज़रा नज़र उठा के मेरी इस लौण्डी को तो देख इसे घर में भी ये कपड़े पहनने से इंकार है। हालाँकि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में मेरे पास उसी की एक क़मीस थी। जब कोई लड़की दुल्हन बनाई जाती तो मेरे यहाँ आदमी भेजकर वो क़मीस आरियतन मंगा लेती थी।

हज़रत आइशा (रज़ि.) ये बताना चाहती हैं कि अब हमारे घरों में जिस तरह के कपड़े पहनने से हमारी बान्दियों (दासियों) को इंकार है रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में हमारे ऐसे कपड़े लोग शादियों में इस्ते'माल के लिये आरियतन ले जाया करते थे। इससे कपड़ों को आरियतन ले जाना प्राबित हुआ।

### बाब 35 : तोहफ़ा मनीहा की फ़ज़ीलत के बारे में

2629. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या ही इम्दा है हदिया उस दूध देने वाली ऊँटनी का जिसने अभी हाल ही में बच्चा जना हो और दूध देने वाली बकरी का जो सुबह व शाम अपने दूध से बर्तन भर देती है। हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और इस्माईल ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया कि (दूध देने वाली ऊँटनी का)

### ۳۴- بَابُ الْإِسْتِعَارَةِ لِلْعَرُوسِ عِنْدَ

النِّبَاءِ

۲۶۲۸- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا قَالَ قَالَ عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَعَلَيْهَا دِرْعٌ فَطَرِ فَمَنْ خَمْسَةِ دَرَاهِمٍ، فَقَالَتْ: أَرْفَعُ بِصُرْكَ إِلَى جَارِئَتِي أَنْظُرَ إِلَيْهَا لِإِنِّهَا تُرْمِي أَنْ تَلْبَسَهُ لِي الْيَتِ. وَقَدْ كَانَ لِي مِنْهُمْ دِرْعٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَمَا كَانَتْ امْرَأَةٌ تُقَيِّمُ بِالْمَدِينَةِ إِلَّا أُرْسِلَتْ إِلَيَّ تَسْفِيرَةً)).

### ۳۵- بَابُ فَضْلِ الْمَنِحَةِ

۲۶۲۹- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((نِعْمَ الْمَنِحَةُ اللَّفْحَةُ الصَّمِيُّ مَنَحَةٌ، وَالشَّاةُ الصَّمِيُّ تَقْلُو بِإِنَاءٍ وَتَرَوْحُ بِإِنَاءٍ)). حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ وَإِسْمَاعِيلُ عَنْ مَالِكٍ قَالَ: ((وَنِعْمَ

सदका क्या ही उम्दा है। (दीगर मकाम: 5608)

الصَّدَقَةُ. ((. طرفه في: ٨: ٥٦٠.))

**तशरीह:** मनीहा अरबों की इस्तिलाह (परिभाषा) में दूध देने वाली ऊँटनी या किसी भी ऐसे जानवरों को कहते थे जो किसी दूसरे को कोई तोहफा के तौर पर दूध पीने के वास्ते दे दे।

मनीहा और सदका में फर्क है। मनीहा हुस्ने मुआमलात और सिलारहमी के बाब से ता'ल्लुक रखता है और सदका का मफहूम बहुत आम है। हर मीठी बात को भी सदका कहा गया है और हर मुनासिब और अच्छे तर्जें अमल को भी। इस लिहाज से मनीहा और सदका में उमूम खुसूस मुत्लक का फर्क है। हर मनीहा सदका भी है मगर हर सदका मनीहा नहीं है। फर्फहुम

अल्मुहदिषुल कबीर हजरत मौलाना अब्दुरहमान मुबारकपुरी मरहूम फरमते हैं, काल फिल्कामूस मिन्हतुन कमन्डही व जबिही आताहू वल्इस्मुल्मिन्हतु बिल्कस्सि व मिन्हतुन्नाक़ति जुइल लहू वव्वरुहा लब्नुहा व वलदुहा व हियल्मिन्हतु वल्मनीहतु इन्तिहा व कालल्हाफिजु फिल्फत्हि अल्मनीहतु बिन्नूनि वल्मुहमलति वज़्नु अज़ीमतिन हिय फिल्अस्ति अल्अतिय्यतु काल अबू उबैदत अल्मनीहतु इन्दलअरबि अला वज्हेनि अहदुहुमा अय्युअतियरज़ुलु साहिबहू सिलतन फतकूनु लहू वल्आखरू अय्युअतियहू नाक़तन औ शातन यन्तफिउ बिहल्बिहा व वब्बिहा ज़मनन शुम्म यरूहुहा व कालल्कज़ाज़ क़ील ला तकूनुल्मनीहतु इल्ला नाक़तन औ शातन वल्अव्वलु आरफु इन्तिहा (तोहफतुल अहवज़ी जिल्द 3 पेज नं. 133)

खुलासा ये कि लफज़ मन्हा और मनीहा असल में अतिया बख़्शिश पर बोला जाता है। अबू उबैदा ने कहा कि मनीहा अरब के नज़दीक दो तरीक़ पर है। अव्वल तो ये कि कोई अपने साथी को बतौर सिलारहमी के बख़्श दे, वो उसका हो जाएगा दूसरे ये कि कोई किसी को दो ऊँटनी या बकरी इस शर्त पर दे कि वो उसके दूध वगैरह से फ़ायदा उठाए और एक अग़्रे के बाद उसे वापस कर दे। क़ज़ाज़ ने कहा कि मनीहा सिर्फ़ ऊँटनी या बकरी के अतिये पर बोला जाता है। मगर अव्वल मा'नी ही ज़्यादा मशहूर व मअरूफ़ हैं)।

2630. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने वहब ने ख़बर दी यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, वो अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि जब मुहाजिरीन मक्का से मदीना आए तो उनके साथ कोई भी सामान न था। अंसार ज़मीन और जायदाद वाले थे। अंसार ने मुहाजिरीन से ये मामला किया कि वो अपने बाग़ात में से उन्हें हर साल फल दिया करेंगे और उसके बदले मुहाजिरीन उनके बाग़ात में काम किया करें। हज़रत अनस (रज़ि.) की वालिदा उम्मे सुलैम जो अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा (रज़ि.) की भी वालिदा थीं, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को खजूर का एक बाग़ हदिया दे दिया था। लेकिन आपने वो बाग़ अपनी लौण्डी उम्मे ऐमन (रज़ि.) जो उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) की वालिदा थीं, इनायत फ़र्मा दिया। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) जब ख़ैबर के य हूदियों की जंग से फ़ारिग़ हुए और मदीना तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरीन ने अंसार को उनके तहाइफ़ वापस कर दिये जो उन्होंने फलों की सूरत में दे रखे थे। आँ हज़रत (ﷺ) ने अनस

٢٦٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا يُوسُفُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا قَدِمَ الْمُهَاجِرُونَ الْمَدِينَةَ مِنْ مَكَّةَ وَلَيْسَ بَيْنَهُمْ يَغْنَى شَيْئًا، وَكَانَتِ الْأَنْصَارُ أَهْلَ الْأَرْضِ وَالْفَقَارِ، فَقَاسَمَهُمُ الْأَنْصَارُ عَلَى أَنْ يُغْطَوْهُمْ بِغَارِ أَمْوَالِهِمْ كُلِّ عَامٍ وَيَكْفُوهُمْ الْعَمَلَ وَالْمَوْرَةَ. وَكَانَتْ أُمُّهُ أَمْ أَنَسٍ أَمْ سَلَمَةَ كَانَتْ أُمَّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، فَكَانَتْ أُعْطَتْ أُمَّ أَنَسٍ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَذَاقًا، فَأَعْطَاهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ أَمْ إِيْمَنَ مَوْلَاكَ أَمْ أَسْمَةَ بِنِ زَيْدٍ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَأَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا فَرَّغَ مِنْ قِتَالِ

(रज़ि.) की वालिदा का बाग़ भी वापस कर दिया और उम्मे ऐमन को उसके बजाय अपने बाग़ में से (कुछ पेड़) इनायत फ़र्मा दिये। अहमद बिन शबीब ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें यूनुस ने इसी तरह अल्बत्ता (अपनी रिवायत में बजाय मकानहुन्ना मन हाइतति के) मकानहुन्ना मन ख़ालिसिही बयान किया।

(दीगर मक़ाम : 3428, 4030, 3120)

أَهْلٌ خَيْرٌ فَأَنْصَرَفَ إِلَى الْمَدِينَةِ رَدُّ  
الْمُهَاجِرُونَ إِلَى الْأَنْصَارِ مِنْهُمْ - أَلَيْ  
كَانُوا مَنُحُوهُمْ - مِنْ ثَمَارِهِمْ، فَرَدَّ النَّبِيُّ  
ﷺ إِلَى أُمِّهِ عَذَائَهَا، وَأَعْطَى رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ أُمَّ أَيْمَنَ مَكَانَهُنَّ مِنْ حَانِطِهِ. وَقَالَ  
أَحْمَدُ بْنُ شَيْبَةَ أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ يُونُسَ  
بِهَذَا وَقَالَ : ((مَكَانَهُنَّ مِنْ خَالِصِهِ)).

[أطرافه ٣ : ٣١٢٨، ٤٠٣٠، ٣١٢٠]

**तशरीह :** या'नी बजाय मिन हाइतिही के इस रिवायत में मिन ख़ालिसिही है। इमाम मुस्लिम (रह.) की रिवायत में यू है कि एक शख्स अपनी ज़मीन में से चन्द खजूर के पेड़ आँहज़रत (ﷺ) को दिया करता था। जब बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर की जायदादें आपको मिलीं तो आपने उस शख्स के पेड़ फेर दिये। अनस (रज़ि.) ने कहा मेरे अज़ीज़ों ने मुझसे कहा तू आँहज़रत (ﷺ) के पास जा और जो पेड़ हमने आँहज़रत (ﷺ) को दिये थे वो सबके सब या उनमें से कुछ वापस मांग। आँहज़रत (ﷺ) ने वो पेड़ उम्मे ऐमन अपनी आया को दे दिये थे। मैं जब आप (ﷺ) के पास आया तो आपने वो पेड़ मुझको दे दिये। उम्मे ऐमन आई और मेरे गले पड़ गई, कहने लगीं वो पेड़ तो मैं तुझको कभी नहीं दूंगी। आँहज़रत (ﷺ) उनको समझाने लगे। उम्मे ऐमन तू उनके बदले इतने इतने पेड़ ले ले। वो कहती रही मैं हर्गिज़ नहीं लूंगी क़सम उस अल्लाह की जिसके सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं। यहाँ तक कि आपने दस गुने पेड़ उनके बदल देना कुबूल किये। (वहीदी)

2631. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया हस्सान बिन अत्रिया से, उनसे अबू कब्शा सलूलो ने और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से सुना। आप बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चालीस ख़सलतें जिनमें सबसे आला व अरफ़आ दूध देने वाली बकरी का हदिया करना है, ऐसी हैं कि जो शख्स उनमें से एक ख़सलत पर भी आमिल होगा ज़वाब की निव्यत से और अल्लाह के वादे को सच्चा समझते हुए तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। हस्सान ने कहा कि दूध देने वाली बकरी के हदिये को छोड़कर हमने सलाम का जवाब देना छींकने वाले का जवाब देना और तकलीफ़ देने वाली चीज़ों को रास्ते से हटा देने वगैरह का शुमार किया, तो सब पन्द्रह ख़सलतें भी हम शुमार न कर सके।

٢٦٣١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَيْسَى  
بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ  
حَسَّانِ بْنِ أَبِي كَبْشَةَ السَّلُولِيِّ  
قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :  
((أَرْبَعُونَ عَصْلَةً - أَغْلَظُ مَيْبِخَةِ الْعَنْزِ  
- مَا مِنْ غَائِلٍ يَعْمَلُ بِعَصْلَةٍ مِنْهَا رَجَاءَ  
ثَوَابٍهَا وَتَصَدِّقٍ مَوْعُودٍهَا إِلَّا أَدْخَلَهُ اللَّهُ  
بِهَا الْجَنَّةَ)). قَالَ حَسَّانُ: فَحَدَّثَنَا مَا دُونَ  
مَيْبِخَةِ الْعَنْزِ - مَنْ رَدَّ السَّلَامَ، وَتَشْمِيتِ  
الْعَاطِسِ، وَإِمَاطَةِ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ  
وَنَحْوِهِ - فَمَا اسْتَطَعْنَا أَنْ نَبْلُغَ خَمْسَ

## عَشْرَةَ خِصْلَةٍ

आँहजरत (ﷺ) ने इन खसलतों को किसी मस्लिहत से मुन्हम रखा। शायद ये गर्ज हो कि उनके सिवा और दूसरी नेक खसलतों में लोग सुस्ती न करने लगे। मुतजिम्म कहता है कि ऐसी इम्दा खसलतें जिन पर जत्रत का वा'दा किया गया है। मुतफर्रिक अह्दादीष में चालीस बल्कि ज्यादा भी मज्कूर मौजूद हैं। ये अम्र दीगर है कि हजरत हस्सान बिन अतिया को इन सबका मज्मूई तौर पर इल्म न हो सका। तप्सीले मज्जीद के लिये किताब शोबुल ईमान इमाम बैहकी का मुतालआ मुफ़ीद होगा।

2632. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे अत्ता ने बयान किया, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हममें से बहुत से अस्थाब के पास फ़ालतू ज़मीन भी थी, उन्होंने कहा था कि तिहाई या चौथाई या आधी की बटाई पर हम क्यूँ न उसे दे दिया करें। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसके पास ज़मीन हो तो उसे खुद बोनी चाहिये, या फिर किसी अपने भाई को हदिया कर देनी चाहिये और अगर ऐसा नहीं कर सकता तो फिर ज़मीन अपने पास ही रखे रहे।

2633. और मुहम्मद बिन यूसुफ ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन यज़ीद ने बयान किया और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और आपसे हिजरत के लिये पूछा। आपने फ़र्माया, अल्लाह तुम पर रहम करे। हिजरत का तो बड़ा ही दुश्वार मामला है। तुम्हारे पास ऊँट भी है? उन्होंने कहा जी हाँ! आपने दरयाफ़्त किया, और उसका सदका (ज़कात) भी अदा करते हो? उन्होंने कहा कि जी हाँ! आपने दरयाफ़्त किया, उसमें से कुछ हदिया भी देते हो? उन्होंने ने कहा जी हाँ! आपने दरयाफ़्त फ़र्माया, तो तुम उसे पानी पिलाने के लिये घाट पर ले जाने वाले दिन दुहते होगे? उन्होंने कहा जी हाँ! फिर आपने फ़र्माया कि समुन्दरों के पार भी अगर तुम अमल करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे अमल में से कोई चीज़ नहीं छोड़ेगा।

۲۶۳۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي غَطَاءٌ عَنْ جَابِرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ لِرَجَالٍ مِمَّنْ فَضُلُوا أَرْضِينَ، فَقَالُوا: نُوَاجِرُهَا بِالثُّلُثِ وَالرُّبْعِ وَالنِّصْفِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيَزَعْهَا أَوْ لِيَمْنَحْهَا إِخَاهُ. فَإِنَّ أَبِي قَلْبُشَيْكُ رَضَهُ)).

۲۶۳۳- وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنِي غَطَاءٌ بْنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ قَالَ: جَاءَ أَغْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الْهَجْرَةِ، فَقَالَ: ((وَيْحَكَ، إِنَّ الْهَجْرَةَ خَاتَمُهَا شَدِيدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فُعْطِي صَدَقَتَهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَهَلْ تَمْنَحُ مِنْهَا شَيْئًا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَتَحْنَلْهَا يَوْمَ وَرْدِهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَاعْمَلْ مِنْ وَرَاءِ الْبَحَارِ، فَإِنَّ اللَّهَ لَنْ يَتْرُكَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا)).

एक देहाती ने दीगर मुहाजिरीन की तरह अपना मुल्क छोड़कर मदीना में रहना चाहा आप (ﷺ) जानते थे कि इससे हिजरत न निभ सकेगी। इसलिये आपने फ़र्माया कि अपने मुल्क में रहकर नेक काम करता रह, यही काफ़ी है। ये वाक़िया फ़तहे मक्का के बाद का है जबकि हिजरत फ़र्ज़ नहीं रही थी।



2634. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अम्म ने, उनसे ताऊस ने बयान किया कि मुझसे उनमें सबसे ज़्यादा उस (मुखाबरा) के जानने वाले ने बयान किया, उनकी मुराद इब्ने अब्बास (रज़ि.) से थी कि नबी करीम (ﷺ) एक बार ऐसे खेत की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जिसकी खेती लहलहा रही थी, आपने दरयाफ्त फ़र्माया कि ये किसका है? सहाबा (रज़ि.) ने बतलाया कि फ़लों ने उसे किसया पर लिया है। इस पर आपने फ़र्माया कि अगर वो हृदियतन दे देता तो इससे बेहतर था कि इस पर एक मुकर्रर उज्जत वसूल करता। (राजेअ: 2330)

۲۶۳۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عَمْرِو عَنْ طَاوُسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَغْلَمُهُمْ بِذَلِكَ - يَغْنِي ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ إِلَى أَرْضٍ تَهْتَرُ زَرْعًا، فَقَالَ: ((لِمَنْ هَذِهِ؟)) فَقَالُوا: أَكْثَرُهَا فَلَانٌ. فَقَالَ: ((أَنَا إِنَّهُ لَوْ مَنَحَهَا إِيَّاهُ كَانَ لَهُ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهَا أَجْرًا مَطْلُومًا)). [راجع: ۲۳۳۰]

मतलब आँहज़रत (ﷺ) का ये था कि अगर ज़मीन बेकार पड़ी हो तो अपने मुसलमान भाई को मुफ्त ज़राअत (खेती) के लिये दे दो। इसका किराया लेने से ये अम्म अफ़ज़ल हैं और किराया लेने से आपने मना नहीं फ़र्माया। दूसरी रिवायत में अम्म ने ताऊस से कहा, काश! तुम बटाई करना छोड़ दो, क्योंकि लोग कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने इससे मना किया है। उन्होंने कहा अम्म! मैं तो लोगों को फ़ायदा पहुँचाता हूँ और सहाबा में जो सबसे ज़्यादा इल्म रखते थे या'नी इब्ने अब्बास (रज़ि.), उन्होंने मुझसे बयान किया, आख़िर तक। ये न भूलना चाहिये कि अह्द नबवी ने सिर्फ़ अरब बल्कि सारी दुनिया में इंसानी, तमहुनी, मुआशरती तरक्की का इब्तिदाई दौर था। उस दौर में ग़ैर-आबाद ज़मीनों को आबाद करने की सख़्त ज़रूरत थी। उन ही मक्कासिद के पेशे नज़र पैग़म्बरे इस्लाम ने ज़मीन को आबाद करने के सिलसिले में हर मुम्किन आसानी व सहूलत को मद्देनज़र रखा और उसको ज़्यादा अवामी बनाने की रबत दिलाई, मगर बाद के ज़मानों में जागीरदारी निज़ाम ने ज़मींदार और काश्तकार दो तबके पैदा कर दिये जिनके बुरे नतीजों की संगीन सज़ाएँ आज तक ये दोनों ग़िरोह बाहमी कशमकश की शकल में भुगत रहे हैं। काश इस्लामी निज़ाम दुनिया में बरपा हो, जिसकी बरकत से नोए इंसानी को इन मसाइब से नजात मिल सके। आमीन!!

**बाब 36 : आम दस्तूर के मुताबिक़ किसी ने किसी शख़्स से कहा कि ये लड़की मैंने तुम्हारी ख़िदमत के लिये दे दी तो जाइज़ है**

कुछ लोगों ने कहा कि लड़की आरियतन होगी और अगर ये कहा कि मैंने तुम्हें ये कपड़ा पहनने के लिये दिया तो कपड़ा हिबा समझा जाएगा।

मकसूद इमाम बुखारी (रह.) का हन्फ़िया पर रद्द करना है कि लौण्डी में तो वो कलामे खास आरियत पर महमूल होगा और कपड़े में हिबा पर। ये तरजीह बिला मुरज्जह और तख़्सिस बिला मुख़स्सस है। कुछ ने कहा व इन क़ाल कसौतुम हाज़स्सौब ये अलग कलाम है। कुछ लोगों का मक़ूला नहीं है।

2635. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सारा (अलैहिस्सलाम) के साथ हिजरत की तो उन्हें बादशाह ने आजर

۳۶- بَابُ إِذَا قَالَ : أَخَذْتُكَ هَذِهِ الْجَارِيَةَ عَلَى مَا يَتَعَارَفُ النَّاسُ فَهُوَ جَائِزٌ وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: هَذِهِ غَارِبَةٌ. وَإِنْ قَالَ: كَسَرْتُكَ هَذَا الثَّوبَ فَهُوَ جَائِزٌ.

۲۶۳۵- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ بِسَارَةَ،

को (या'नी हाजरा को) अतिया में दे दिया। फिर वो वापस हुई और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से कहा, देखा आपने अल्लाह तआला ने काफिर को किस तरह जलील किया और एक लड़की खिदमत के लिये भी दे दी। इब्ने सीरीन ने कहा, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि बादशाह ने हाजरा को उनकी खिदमत के लिये दे दिया था। (राजेअ: 2217)

बाब 37 : जब कोई किसी शख्स को घोड़ा सवारी के लिये हदिया कर दे तो वो उमरा और मदक्रा की तरह होता है (कि उसे वापस नहीं लिया जा सकता) लेकिन कुछ लोगों ने कहा है कि वो वापस लिया जा सकता है।

2636. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमको मुफयान ने खबर दी, कहा कि मैंने मालिक से सुना, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से पूछा था तो उन्होंने बयान किया कि मैंने अपने बाप से सुना, वो बयान करते थे कि इमर (रज़ि.) ने कहा मैंने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिये एक शख्स को दे दिया था, फिर मैंने देखा कि वो उसे बेच रहा है। इसलिये मैंने रसूले करीम (ﷺ) से पूछा कि इसे वापस मैं ही खरीद लूँ? आपने फ़र्माया कि उस घोड़े को न खरीद, अपना दिया हुआ मदक्रा वापस न लो। (राजेअ: 1490)

فَاغْطَرَهَا آجَرَ، فَرَجَعْتُ فَقَالَتْ: أَشَحَرْتُ أَنْ اللَّهَ كَبَتَ الْكَافِرَ، وَأَخَذْتُمْ وَلَدَةً؟ وَقَالَ ابْنُ مَيْرَيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فَأَخَذْتُمَهَا هَاجِرًا)). [راجع: ٢٢١٧]

۳۷- بَابُ إِذَا حَمَلَ رَجُلٌ عَلَى فَرَسٍ فَهُوَ كَالْعُمُرَى وَالصَّدَقَةِ وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: لَهُ أَنْ يَرْجِعَ فِيهَا.

۲۶۳۶- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكًا يَسْأَلُ زَيْدَ بْنَ اسْلَمَ فَقَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَرَأَيْتُهُ يَبَاعُ، فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((لَا تَشْرَوْهُ وَلَا تَعُدَّ فِي صَدَقَتِكَ)). [راجع: ۱۴۹۰]

वो जिसको दिया उसकी मिल्क हो चुका अब उसमें रुजूअ जाइज़ नहीं। बाब और हदीस में मुताबकत यही है।

## 52. किताबुशशहादत

# किताब गवाहों के मुता'ल्लिक मसाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : गवाहियों का पेश करना

۱- بَابُ مَا جَاءَ فِي الْبَيِّنَةِ عَلَى

## मुद्दई के ज़िम्मे है

## الْمُدَّعِي

मुद्दई वो शख्स जो किसी हक या शय का दूसरे पर दा'वा करे। मुद्दा अलैह जिस पर दा'वा किया जाए। बारे पुबूत शरअन भी मुद्दई पर है और अक्ल और कयास का मुक्तज़ा भी यही है।

क्योंकि अल्लाह तआला ने सूरह बक्रर: में फ़र्माया है कि, ऐ ईमान वालों! जब तुम आपस में उधार का मामला किसी मुद्दते मुकररह तक के लिये करो तो उसको लिख लिया करो और लाज़िम है कि तुम्हारे दरम्यान लिखने वाला ठीक सहीह लिखे और लिखने से इंकार न करे। जैसा कि अल्लाह ने उसको सिखाया है। पस चाहिये कि वो लिख दे और चाहिये कि वो शख्स लिखवाए जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब है और चाहिये कि वो अपने परवरदिगार अल्लाह से डरता रहे और उसमें से कुछ भी कम न करे। फिर अगर वो जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब है कम अक्ल हो या ये कि कमज़ोर हो और इस क़ाबिल न हो कि वो खुद लिखवा सके तो लाज़िम है कि उसका कारकुन ठीक ठीक लिखवा दे और अपने मर्दों में से दो को गवाह कर लिया करो। फिर अगर दोनों मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें हो, उन गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करते हो। ताकि उन दो औरतों में से एक दूसरी को याद दिला दे अगर कोई एक उन दोनों में से भूल जाए और गवाह जब बुलाए जाएँ तो इंकार न करें और उस (मामले) को ख्वाह वो छोटा हो या बड़ा। उसकी मेयआद तक लिखने से उकता न जाओ, ये किताबत अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा से ज़्यादा इस्माफ़ से नज़दीक है और गवाही को दुरुस्त तर रखने वाली है और ज़्यादा लायक़ उसके कि तुम शुब्हा में न पड़ो, बजुज उसके कि कोई सौदा हाथों हाथ हो जिसे तुम बाहम लेते देते ही रहते हो। सो तुम पर उसमें कोई इल्ज़ाम नहीं कि तुम उसे न लिखो और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करते हो तब भी गवाह कर लिया करो और किसी कातिब और गवाह को नुक़सान न दिया जाए और अगर ऐसा करोगे तो ये तुम्हारे हक़ में एक गुनाह होगा और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ का बहुत जानने वाला है। और अल्लाह तआला का इश्राद है कि ऐ ईमानवालों! इस्माफ़ पर ख़ूब कायम रहने वाले और अल्लाह के लिये गवाही देने वाले बनकर रहो। चाहे तुम्हारे या (तुम्हारे)

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايْتُمْ بَدْنِي إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوا، وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ، وَلَا يَأْب كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ، فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتْلِ اللَّهُ رَبُّهُ وَلَا يَحْسَبَنَّ مِنْهُ شَيْئًا، فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ، وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ، فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى، وَلَا يَأْب الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا، وَلَا تَسْأَلُوا أَنْ تَكْتُبَهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَى أَحَدِهِ، ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَى أَنْ لَا تَرْتَابُوا، إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ لَا تَكْتُبُوهَا، وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ، وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ، وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ، وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ [البقرة: ٢٨٢].

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ إِنْ يَكُنْ

वालदेन और अजीजों के खिलाफ ही क्यों न हो। वो अमीर हो या मुफ्लिस, अल्लाह, बहरहाल) दोनों से ज्यादा हकदार है। तो ख्वाहिश नफ्स की पैरवी न करना कि (हक से) हट जाओ और अगर तुम कजी करोगे या पहलू तही करोगे, तो जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह इससे खूब खबरदार है। (अन निसा : 135)

غَيًّا أَوْ فَحِيرًا فَإِنَّهُ أُولَىٰ بِهِمَا، فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا وَإِنْ تَلَوُّوا أَوْ نَفَرْتُمْ فَلَا تَكُنُوا مِنَ الَّذِينَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا بِأَمْرٍ مِّنَّا لَفَعَلُوا خَيْرًا ۚ

(النساء: १३५)

### तशरीह:

इस्लामियात का अदना तरीन तालिबे इल्म भी जान सकता है कि इस्लामी ता'लीम का खुलासा बनी नोअे इंसान को इज्तिमाई तौर पर एक बेहतरीन तन्जीम के साथ वाबस्ता करना है। ऐसी तन्जीम जो उमूरे उखरवी के साथ साथ उमूरे दुनियावी को भी अहसन तरीक पर अंजाम देने की ज़ामिन हो। इसी तंजीम का दूसरा नाम इस्लामी शहरियत (इस्लामी नागरिकता) है। जिसमें एक इंसान को दीवानी, फौजदारी, अखलाकी, सियासी, इज्तिमाई, इंफिरादी बहुत से मसाइल से साबिका पड़ता है। कुछ बार इसको मुद्दई बनना और कुछ बार मुद्दा अलैह की हैशियत से अदालत के कटघरे में हाज़िर होना पड़ता है। कुछ औकात वो गवाहों की जमाअत में शामिल होता है। इन तमाम मराहिले ज़िन्दगी के पेशेनज़र ज़रूरी था कि मदनियत के और बहुत से मसाइल के साथ साथ शहादात या'नी गवाहियों के मसाइल भी किताबो-सुन्नत की रोशनी में बतलाए जाएँ। इसीलिये मुज्तहिदे मुत्तलक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी जामेइस्सहीह में और बहुत से मदनी (शहरी) मसाइल के साथ मसाइले शहादात को भी बयान करना ज़रूरी समझा और किताबो-सुन्नत की रोशनी में उनकी वो वज़ाहत पेश फर्माई जिससे मज़हबे इस्लाम की जामइय्यत और सियासत पर बहुत काफ़ी रोशनी पड़ती है। इस सिलसिले में मुज्तहिदे मुत्तलक ने अब्वल आयाते कुर्आनी को नक़ल किया, जिनसे वाजेह किया कि एक मर्दे मोमिन के लिये जिस तरह नमाज़-रोज़ा की अदायगी इस्लामी मज़हबी फ़राइज़ हैं, इसी तरह मुआमलात में हमावक़त अदल व इंस़ाफ़ की राह इख़ितयार करना और अमानत व दयानत को हाथ से न जाने देना भी इस्लामी फ़राइज़ ही में दाख़िल है। यून तो आयाते कुर्आनी में बहुत कुछ बतलाया गया है मगर उन उमूर पर ज़्यादा तवज्जह दिलाई गई है कि बाहमी लेन-देन के मुआमलात को जुबानी न रखा करो बल्कि उनको भी खाता पर लाना ज़रूरी है और गवाहों का होना भी ज़रूरी है मर्दों में से दो गवाह काफ़ी होंगे। एक मर्द है तो दूसरे गवाह की जगह दो औरतों को भी गवाह रखा जा सकता है। मा'लूम हुआ कि गवाह मुक़रर करना नफ़्से कुर्आनी से प्राबित है। अब उसी अमर की वो सारी तफ़सीलात हैं जो आगे मुख़्तलिफ़ अहदादीष की रोशनी में बयान होंगी।

हज़रत इमाम (रह.) ने शुरू में जो आयाते कुर्आनी नक़ल की हैं, उन ही से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि उन दोनों आयतों में गवाही देने और गवाह बनाने का ज़िक्र है और ये ज़ाहिर है कि गवाह करने की ज़रूरत उसी शख्स को होती है जिसका क़ौल क़सम के साथ मक्बूल न हो तो उससे ये निकला कि मुद्दई को गवाह पेश करना ज़रूरी है। इमाम बुखारी (रह.) को इस बाब में वो मशहूर हदीष बयान करनी चाहिये थी जिसमें ये है कि मुद्दई पर गवाह हैं और मुंकिर पर क़सम है। और शायद उन्होंने इस हदीष के लिखने का इस बाब में क़स्द किया होगा मगर मौक़ा न मिला या सिर्फ़ आयतों पर इक्तिफ़ा मुनासिब समझी। (वहीदी)

**बाब 2 : अगर एक शख्स दूसरे के नेक आदात व उम्दा ख़साइल बयान करने के लिये अगर सिर्फ़ ये कहे कि हम तो उसके मुता'ल्लिक अच्छा ही जानते हैं या ये कहे कि मैं उसके मुता'ल्लिक सिर्फ़ अच्छी ही बात जानता हूँ**

۲- بَابُ إِذَا عَدَّلَ رَجُلٌ أَحَدًا

فَقَالَ: لَا نَعْلَمُ إِلَّا خَيْرًا،

قَالَ: مَا عَلِمْتُ إِلَّا خَيْرًا

तअदील और तज्किया के मा'नी किसी शख्स को नेक और सच्चा और मक्बूलुशहादत बतलाना। कुछ लोगों ने ये कहा कि ये अल्फ़ाज़ तअदील के लिये काफ़ी नहीं हैं। जब तक साफ़ यूँ न कह कि वो अच्छा है और आदिल है।

इस्लाम ने मुकद्दमात में बुनियादी तौर पर गवाहों के आदिल और नेक चलन होने पर बहुत ज़ोर दिया है क्योंकि मुकद्दमात में फ़ैसले की बुनियाद गवाह ही होते हैं। गवाहों की तअदील के लिये एक तो यही रास्ता है कि हाकिम की अदालत में कोई मुअतमद (भरोसेमन्द) आदमी उस गवाह की अदालत और नेक चलनी की गवाही दे। दूसरा ये कि हुकूमत के खुफ़िया आदमी उस गवाह के बारे में पूरी मा'लूमात हासिल करके हुकूमत को खबर करें। गवाही में झूठ बोलने वालों की बुराइयों में बहुत सी अह्दादीष वारिद हुई हैं और झूठी गवाही को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

2637. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे शौबान ने बयान किया और लैष बिन सअद ने बयान किया कि मुझे ये युनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें इर्वा, इब्ने मुसय्यिब, अल्क़मा बिन वक्कास और इब्ने दुल्लाह ने आइशा (रज़ि.) की हदीष के बारे में ख़बर दी और उनकी बाहम एक की बात दूसरे की बात की तस्दीक करती है कि जब उन पर तोहमत लगाने वालों ने तोहमत लगाई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली और उसामा (रज़ि.) को अपनी बीबी (आइशा रज़ि) को अपने से जुदा करने के बारे में मशवरा करने के लिये बुलाया, क्योंकि आप पर अब तक (इस सिलसिले में) वहा नहीं आई थी। उसामा (रज़ि.) ने तो ये कहा कि आपकी बीबी मुतहहरा (आइशा रज़ि.) में हम सिवाय ख़ैर के और कुछ नहीं जानते। और बरीरा (रज़ि.) (उनकी ख़ादिमा) ने कहा कि मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं जानती जिससे उन पर ऐब लगाया जा सके। इतनी बात ज़रूर है कि वो नौ इम्र लड़की हैं कि आटा गूंधती और फिर जा के सो रहती है और बकरी आकर उसे खा लेती है। रसूले करीम (ﷺ) ने (तोहमत के झूठ प्रामाणित होने के बाद) फ़र्माया कि ऐसे शख्स की तरफ़ से कौन इज्र ख़वाही करेगा जो मेरी बीबी के बारे में मुझे अज़ियत पहुँचाता है। क्रसम अल्लाह की! मैंने अपने घर में ख़ैर के सिवा और कुछ न पाया और लोग एक ऐसे शख्स का नाम लेते हैं जिसके बारे में भी मुझे ख़ैर के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं। (राजेअ: 2593)

٢٦٣٧ - حَدَّثَنَا حِجَّاجٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ غَمْرٍ الثَّمَرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّهَيْرِ وَابْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَغَيْثُ اللَّهِ بْنُ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - وَبَعْضُ حَدِيثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا - حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الْإِفْكِ مَا فَعَلَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَيْهَا وَأَسَامَةُ جِنَنَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيَ يَسْتَأْمِرُهُمَا فِي لِرَاقِ أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَقَالَ: أَهْلُكَ وَلَا نَعْلَمُ إِلَّا خَيْرًا. وَقَالَتْ بَرِيرَةُ: إِنْ رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا أَغْصِمُهُ أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثِي السَّنَنَ تَنَامُ عَنْ عَجَبِ أَهْلِيهَا فَتَأْتِي الذَّاجِرَ فَتَأْكُلُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ يَغْدُرْنَا فِي رَجُلٍ بَلَّغْنِي إِذَا هُوَ فِي أَهْلِ بَيْتِي، فَوَ اللَّهُ مَا عَلِمْتُ مِنْ أَهْلِي إِلَّا خَيْرًا، وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلًا مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلَّا خَيْرًا)).

[راجع: ٢٥٩٣]

**तशरीह:**

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत का वाक़िया इस्लामी तारीख़ का एक मशहूरतरीन हद़्दप्पा है। जिसमें आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत आइशा (रज़ि.) और बहुत से अकाबिर सहाबा को बहुत तकलीफ़ का सामना करना पड़ा। आख़िर इस बारे में सूरह नूर नाज़िल हुई और अल्लाह पाक ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की पाकदामनी ज़ाहिर करने के सिलसिले में कई शानदार बयानात दिये। इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब इससे निकाला है कि हज़रत उसामा (रज़ि.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की तअदील उन लफ़्ज़ों में बयान की जो मक़सदे बाब है।

इस इल्ज़ाम का बानी अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ मर्दूद था जो इस्लाम से दिल में सख़्त कीना रखता था। इल्ज़ाम

एक निहायत ही पाकदामन सहाबी सफवान बिन मुअत्तल पर लगाया था जो निहायत ही नेक सालेह और मर्दे अफ्रीफ थे। ये अल्लाह की राह में शहीद हुए। हदीष इफ्क की और तपसील अपने मुकाम पर आणी।

### बाब 3 : जो अपने तई छुपाकर गवाह बना हो उसकी गवाही दुरुस्त है

और अमर बिन हरीष (रजि.) ने इसको जाइज़ कहा है और फर्माया कि झूठे बेईमान के साथ ऐसी सूरत इख्तियार की जा सकती है। शअबी, इब्ने सीरीन, अता और कतादा ने कहा कि जो कोई किसी से कोई बात सुने तो उस पर गवाही दे सकता है, चाहे वो उसको गवाह न बनाए और हसन बसरी (रह.) ने कहा कि उसे इस तरह कहना चाहिये कि अगरचे उन लोगों ने मुझे गवाह नहीं बनाया लेकिन मैंने इस तरह से सुना है।

**तशरीह:** इस बाब के ज़ेल में शुरू में अमर बिन हरीष का नाम आया है ये कमसिन सहाबा में से थे। उनके बाप भी सहाबी थे। बुखारी शरीफ में उनका ज़िक्र सिर्फ इसी जगह आया है। इस अप्र को इमाम बैहकी ने वस्ल किया। जुम्ला कज़ालिक युफ़अलु बिल्काज़िबल्फ़ाजिरि (जो शख्स झूठा बेईमान हो उसके लिये यही तदबीर करेंगे) या 'नी जो झूठा बेईमान आदमी लोगों के सामने किसी का हक़ तस्लीम करने से डरता है। ऐसा न हो कि वो लोग उस पर गवाह बन जाएँ और तन्हाई में इकरार करता है तो उसका इकरार छुपकर सुन सकते हैं।

आगे हदीष में इब्ने सय्याद का ज़िक्र आया है। जिसका नाम साफ़ था। वो यहूदी लड़का था और अवाम को गुमराह करने और इस्लाम से बदज़न करने के लिये खुद झूठी बातें बतौर इल्हाम बना बनाकर लोगों को सुनाता रहता था। उसमें दज्जाल के बहुत से ख़साइल थे। औहज़रत (ﷺ) इसका मकर व फ़रेब मा'लूम करने के लिये पेड़ों की आड़ में उसे देखने गए। यहीं से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि ऐसे मौक़ा पर छुपकर किसी की बातें सुनना दुरुस्त है और जब सुनना दुरुस्त हुआ तो उस पर गवाही दे सकता है।

2638. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी जुहरी से कि सालिम ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) से सुना, आप कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उबय बिन कअब अंसारी (रजि.) को साथ लेकर खज़ूर के उस बाग़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जिसमें इब्ने सय्याद था। जब हुज़ुरे अकरम (ﷺ) बाग़ में दाख़िल हुए तो आप पेड़ों की आड़ में छुपकर चलने लगे। आप चाहते थे कि इब्ने सय्याद आपको देखने न पाए और उससे पहले आप उसकी बातें सुन सकें। इब्ने सय्याद एक रोएंदार चादर में ज़मीन पर लेटा हुआ था और कुछ गुनगुना रहा था। इब्ने सय्याद की माँ ने औहज़रत (ﷺ) को देख लिया कि आप (ﷺ) पेड़ की आड़ लिये चले आ रहे हैं तो वो कहने लगी, ऐ साफ़! ये मुहम्मद (ﷺ) आ रहे हैं। इब्ने सय्याद होशियार हो गया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर उसे

۳- بَابُ شَهَادَةِ الْمُخْتَبَى،

وَأَجَازَةُ عَمْرُو بْنِ حُرَيْثٍ

قَالَ : وَكَذَلِكَ يَفْعَلُ بِالْكَاذِبِ الْفَاجِرِ .

وَقَالَ الشَّعْبِيُّ وَابْنُ سُرَيْنٍ وَعَطَاءٌ وَقَادَةُ :

السَّمْعُ شَهَادَةٌ . وَقَالَ الْحَسَنُ لَمْ

يُشْهِدُونِي عَلَى شَيْءٍ . وَإِنِّي سَمِعْتُ كَذَا

وَكَذَا .

۲۶۳۸- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا

شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَأَلْتُهُ سَمِعْتُ

عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنِ ابْنِ

الْأَعْرَابِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ

الْأَعْرَابِيُّ إِذَا كَانَ الْحُلُّ أُنْثَى فَيُحِبُّ أَنْ

يُحِيطَ . حَتَّى إِذَا دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

الْحُلَّ وَهُوَ خَلَّ أَنْ يَسْمَعَ مِنْ مَنْ صَادِقٍ

سَبَّ قُلُوبَ مَنْ يَرَاهُ . وَابْنُ صَيَادٍ فَضْطَحَ

عَلَى فَرَسِهِ فِي فَضْطَحَةٍ لَهُ فِيهَا رُومَةٌ أَوْ

رُومَةٌ . فَرَأَتْ أَنْتَ صَيَادَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ

अपने हाल पर रहने देती तो बात ज़ाहिर हो जाती। (राजेअ: 1355)

يَقْبِي بِجُدُوعِ النَّحْلِ، فَقَالَتْ لَأَنْ مَصَادٍ:  
أَيُّ مَصَافٍ هَذَا مُحَمَّدٌ. قَسَّاهُ أَنْ  
مَصَادٍ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ تَرَكْتَهُ بَيْنَ)).

[راجع: ١٣٥٥]

इन्ने सय्याद मदीना में एक यहूदी लड़का था जो बड़ाई मारा करता था कि मुझ पर भी वज्र उतरती है। हालाँकि उस पर शैतान सवार था। अक़्बुर नीम बेहोशी में रहता था और दीवानगी की बातें करता था। आँहज़रत (ﷺ) ने एक बार चाहा छुपकर उसकी बातों को सुनें और वो आपको देख न सके। यही वाकिया यहाँ मज़कूर है। और उसी से हज़रत इमाम ने बाब के तर्जुमा को प्राबित किया है।

2639. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया जुहरी से और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रफ़ाआ कुरज़ी (रज़ि.) की बीवी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अज़्र किया कि मैं रफ़ाआ की निकाह में थी। फिर मुझे उन्होंने तलाक़ दे दी और क़त्ज़ी तलाक़ दे दी। फिर मैंने अब्दुरहमान बिन जुबैर (रज़ि.) से शादी कर ली। लेकिन उनके पास तो (शर्मगाह) उस कपड़े की गांठ की तरह है। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया क्या तू रफ़ाआ के पास दोबारा जाना चाहती है लेकिन तू उस वक़्त तक उनसे अब शादी नहीं कर सकती जब तक तू अब्दुरहमान बिन जुबैर का मज़ा न चख ले और वो तुम्हारा मज़ा न चख लें। उस वक़्त अबूबक्र (रज़ि.) ख़िदमते-नबवी में मौजूद थे और ख़ालिद बिन सईद बिन आस (रज़ि.) दरवाज़े पर अपने लिये (अंदर आने की) इज़ाज़त का इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने कहा, अबूबक्र! क्या इस औरत को नहीं देखते नबी करीम (ﷺ) के सामने किस तरह की बातें ज़ोर-ज़ोर से कह रही है।

(दीगर मक्राम: 5260, 5261, 5265, 5317, 5792, 5825, 6084)

٢٦٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ  
خَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ  
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا جَاءَتْ بِامْرَأَةٍ  
رِفَاعَةَ الْقُرَظِيِّ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: كُنْتُ عِنْدَ  
رِفَاعَةَ فَطَلَّقَنِي فَأَبَتْ طَلَاقِي، فَزَوَّجْتُ  
عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ الزُّبَيْرِ، وَإِنَّمَا مَقَعٌ وَمِثْلُ  
هَذِهِ الثُّوبِ. فَقَالَ: ((أَتُرِيدِينَ أَنْ تَرْجِعِي  
إِلَيَّ رِفَاعَةَ؟ لَا، حَتَّى تَلْوَغِي غَسِيلَتَهُ  
وَيَذُوقَ غَسِيلَتَكَ)). وَأَبُو بَكْرٍ جَالِسٌ  
عِنْدَهُ، وَخَالِدُ بْنُ سَعِيدٍ بْنُ الْقَاصِ يَأْتِيهِ  
يَنْتَظِرُ أَنْ يُؤْذَنَ لَهُ. فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ أَلَا  
تَسْمَعُ إِلَى هَذِهِ مَا تَجْهَرُ بِهِ عِنْدَ النَّبِيِّ  
ﷺ)).

[أخره ي: ٥٢٦٠، ٥٢٦١، ٥٢٦٥]

[٥٣١٧، ٥٧٩٢، ٥٨٢٥، ٦٠٨٤]

इमाम बुखारी (रह.) ने यहीं से ये निकाला कि छुपकर गवाह बनना दुस्त है क्योंकि ख़ालिद दरवाज़े के बाहर थे। औरत के सामने न थे। बावजूद उसके ख़ालिद ने एक क़ौल की निस्बत उस औरत की तरफ़ की और आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ालिद पर ए'तिराज़ नहीं किया। अब्दुरहमान बिन जुबैर साहिबे औलाद थे मगर उस वक़्त शायद वो मरीज़ हों, उसी वजह से उस औरत ने उसको कपड़े की गांठ से ता'बीर किया जिसमें कुछ भी हरकत नहीं होती, या'नी वो जिमाअ नहीं कर सकते। मगर हज़रत इब्ने जुबैर (रज़ि.) ने औरत के उस बयान की तर्दीद की थी।

इस हदीष से ये मसला भी प्राबित हुआ कि जब तक मुतल्लक़ औरत अज़ख़ुद किसी दूसरे मर्द के निकाह में जाकर उससे जिमाअ न कराए और वो खुद उसको तलाक़ न दे दे वो पहले शौहर के निकाह में दोबारा नहीं जा सकती है। फ़र्ज़ी हलाला

कराने वालों पर ला'नत आई है जैसा कि फुकहा-ए-हन्फिया के यहाँ खिाज है कि वो तीन तलाक़ वाली औरत को फ़र्जी हलाला कराने का फ़त्वा दिया करते हैं, जो बाअिषे ला'नत है।

**बाब 4 : जब एक या कई गवाह किसी मामले के इष्बात में गवाही दें और दूसरे लोग ये कह दें कि हमें इस सिलसिले में कुछ मा'लूम नहीं तो फैसला उसी के क़ौल के मुताबिक़ होगा जिसने इष्बात में गवाही दी है**

हुमैदी ने कहा कि ये ऐसा है जैसे बिलाल (रज़ि.) ने ख़बर दी थी कि नबी करीम (ﷺ) ने का'बा में नमाज़ पढ़ी है और फ़ज़ल (रज़ि.) ने कहा था कि आपने (का'बा के अंदर) नमाज़ नहीं पढ़ी। तो तमाम लोगों ने बिलाल (रज़ि.) की गवाही को तस्लीम कर लिया। इसी तरह अगर दो गवाहों ने उसकी गवाही दी कि फ़लाँ शख़्स के फ़लाँ पर एक हज़ार दिरहम हैं और दूसरे दो गवाहों ने गवाही दी कि डेढ़ हज़ार दिरहम हैं तो फैसला ज़्यादा की गवाही देने वालों के क़ौल के मुताबिक़ होगा।

हज़रत फ़ज़ल (रज़ि.) का कहना था कि मैंने आप (ﷺ) को का'बा में नमाज़ पढ़ते नहीं देखा। उनको इस बारे में इल्म न था। हज़रत बिलाल (रज़ि.) की शहादत थी कि उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को का'बा में नमाज़ पढ़ते देखा। अक़प्रियत भी उनके साथ थी। लिहाज़ा उन्हीं की बात को माना गया।

2640. हमसे हब्बान ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको इमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी और उन्हें इब्नबा बिन हारिष (रज़ि.) ने कि उन्होंने अबू अहाब बिन अज़ीज़ की लड़की से शादी की थी। फिर एक ख़ातून आई और कहने लगी कि इब्नबा को भी मैंने दूध पिलाया है और इसे भी जिससे उसने शादी की है। इब्नबा (रज़ि.) ने कहा कि मुझे तो मा'लूम नहीं कि आपने मुझे भी दूध पिलाया है और आपने मुझे पहले इस सिलसिले में कुछ बताया भी नहीं था। फिर उन्होंने आले अबू अहाब के यहाँ आदमी भेजा कि उनसे उसके बारे में पूछे। उन्होंने भी यही जवाब दिया कि हमे मा'लूम नहीं कि उन्होंने दूध पिलाया है। इब्नबा (रज़ि.) अब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मदीना हाज़िर हुए और आपसे मसला पूछा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब क्या हो सकता है जबकि कहा जा चुका। चुनौचे आपने दोनों में जुदाई करवा दी और उसका निकाह दूसरे शख़्स से

٤- بَابُ إِذَا شَهِدَ شَاهِدٌ أَوْ شُهُودٌ بَشْيٍّ فَقَالَ آخَرُونَ: مَا عَلِمْنَا بِذَلِكَ يُحْكَمُ بِقَوْلِ مَنْ شَهِدَ

قَالَ الْخَمِيدِيُّ : هَذَا كَمَا أَخْبَرَنَا بِلَالُ بْنُ النَّبِيِّ ﷺ صَلَّى فِي الْكَعْبَةِ. وَقَالَ الْفَضْلُ: لَمْ يُصَلِّ، فَاحْدُ النَّاسِ بِشَهَادَةِ بِلَالٍ. كَذَلِكَ إِنْ شَهِدَ شَاحِدَانِ أَنْ بِلَالًا عَلَى فَلَانٍ أَلْفٌ دِرْهَمٌ، وَشَهِدَ آخَرَانِ بِأَلْفٍ وَخَمْسِمِائَةٍ، يُقْضَى بِالزِّيَادَةِ.

٢٦٤٠- حَدَّثَنَا حَبَّانٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ سَعِيدٍ بْنُ أَبِي حُسَيْنٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: ((عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْخَارِثِ أَنَّهُ تَزَوَّجَ ابْنَةَ لَابِي إِبَاهِبِ بْنِ عَزِيزٍ، فَاتَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: قَدْ أَرْضَعْتُ عُقْبَةَ وَالَّتِي تَزَوَّجَ. فَقَالَ لَهَا عُقْبَةُ: مَا عَلِمْتُ أَنَّكَ أَرْضَعْتَنِي. وَلَا أَخْبَرْتَنِي. فَأَرْسَلَ إِلَى آلِ أَبِي إِبَاهِبٍ يَسْأَلُهُمْ فَقَالُوا: مَا عَلِمْنَا أَرْضَعْتَ صَاحِبَنَا. فَرَكِبَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ فَسَأَلَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((كَيْفَ وَقَدْ نَلَّ؟)) فَفَارَقَهَا وَتَكَحَّتْ زَوْجًا غَيْرَهُ)).



करा दिया। (राजेअ: 88)

[راجع: 88]

बाब का तर्जुमा इस तरह प्राबित हुआ कि उक्त्बा और उसकी अहलिया के अजीज का बयान नफी में था और दूध पिलाने वाली औरत का बयान इब्बात में था। आहज़रत (ﷺ) ने उसी औरत की गवाही कुबूल फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि गवाही में इब्बात नफी पर मुकद्दम है।

### बाब 5 : गवाह आदिल, मो'तबर होने ज़रूरी हैं

और अल्लाह तआला ने सूरह तलाक़ में फ़र्माया, कि अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो, और अल्लाह तआला ने सूरह बकर: में फ़र्माया कि) गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करो।

2641. हमसे हक़म बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी जुहरी से, कहा कि मुझसे हुमैद बिन अब्दुरहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने और उन्होंने इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोगों का वहा के ज़रिये मुआख़िजा हो जाता था। लेकिन अब वहा का सिलसिला ख़त्म हो गया और हम सिर्फ़ उन्हीं उमूर में मुआख़िजा करेंगे जो तुम्हारे अमल से हमारे सामने ज़ाहिर होंगे। इसलिये जो कोई ज़ाहिर में हमारे सामने ख़ैर करेगा, हम उसे अमन देंगे और अपने करीब रखेंगे। उसके बातिन से हमें कोई सरोकार नहीं होगा। उसका हिसाब तो अल्लाह तआला करेगा और जो कोई हमारे सामने ज़ाहिर में बुराई करेगा तो हम भी उसे अमन नहीं देंगे और न हम उसकी तन्दीक़ करेंगे ख़वाह वो यही कहता रहे कि उसका बातिन अच्छा है।

### 5- بَابُ الشُّهَدَاءِ الْعَدُولِ

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: وَأَشْهَدُوا ذَوِي عَدْلٍ مِنْكُمْ - وَ- مَسْنُورُصُونَ مِنَ الشُّهَدَاءِ  
الطَّلَاق. 2. وَالْبَقَرَةُ: 282

2641- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ بْنُ الرَّفْعِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي حَمِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُتْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: (إِنْ أَنَا مَا كَانُوا يُؤْخَذُونَ بِالْوَحْيِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَإِنْ الْوَحْيُ قَدْ انْقَطَعَ، وَإِنَّمَا نَأْخُذُكُمْ الْآنَ بِمَا ظَهَرَ لَنَا مِنْ أَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا خَيْرًا أَمَانَةً وَلِقَرْنَةً وَلَيْسَ إِلَيْنَا مِنْ سِرِّهِ شَيْءٌ، اللَّهُ يَخَاطِبُهُ فِي سِرِّهِ. وَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا سُوءًا، لَمْ نَأْمَنَهُ وَلَمْ نُصَدِّقْهُ وَإِنْ قَالَ إِنَّ سِرِّهَ خَسَنٌ).

### तशरीह:

हज़रत उमर (रज़ि.) के कौल से उनके वुकूफ़ों का रह हुआ जो एक बदकार फ़ासिक को दरवेश और वली समझें और ये दा'वा करें कि ज़ाहिर आमाल से किया होता है, दिल अच्छा होना चाहिये। कहे, जब हज़रत उमर (रज़ि.) ऐसे शख्स को दिल का हाल मा'लूम नहीं हो सकता था तो तुम बेचारे किस खेत की मूली है। दिल का हाल बजुज अल्लाह करीम के कोई नहीं जानता। नबी करीम (ﷺ) को भी उसका इल्म वहा या'नी अल्लाह के बतलाने से होता। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कायदा बयान किया कि ज़ाहिर की रू से जिसके आमाल शरअ के मुवाफ़िक़ हों उसको अच्छा समझो और जिसके आमाल शरअ के ख़िलाफ़ हों उनको बुरा समझो। अब अगर उसका दिल बिल फ़र्ज अच्छा भी होगा जब भी हम उसके बुरा समझने में कोई मुआख़िजा वार न होंगे क्योंकि हमने शरीअत के कायदे पर अमल किया। अल्बत्ता हम अगर उसको अच्छा समझेंगे तो गुनाहगार होंगे। (वहीदी)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि फ़ासिक, बदकार की बात न मा'नी जाएगी या'नी उसकी शहादत मक्बूल न होगी। मा'लूम हुआ कि शाहिद के लिये अदालत ज़रूरी है। अदालत से मुराद ये है कि मुसलमान आज़ाद, अक्रिल, बालिग़, नेक

ये भी मक्सुद है कि आदिल गवाह के ज़ाहिरी हालात का दुस्त होना ज़रूरी है वरना उसको आदिल न माना जाएगा। इस्लाम का फ़त्वा ज़ाहिरी हालात पर है। बातिन अल्लाह के हवाले है। उसमें उन नामनिहाद सूफ़ियों की भी तदीद है जिनका ज़ाहिर सरासर खिलाफ़े शरअ होता है और बातिन में वो ईमानदार आशिके अल्लाह व रसूल बनते हैं। ऐसे मक्कार नामनिहाद सूफ़ियों ने एक खिल्फ़त को गुमराह कर रखा है। उनमें से कुछ तो इतने बेहया वाक़ेअ हुए हैं कि नमाज़, रोज़ा की खुले लफ़्ज़ों में तहकीर करते हैं, उलमा की बुराइयाँ करते हैं, शरीअत और तरीक़त को अलग अलग बतलाते हैं। ऐसे लोग सरासर गुमराह हैं। हर्गिज़-हर्गिज़ क़ाबिले कुबूलियत नहीं हैं बल्कि वो खुद गुमराह और मख़्लूक के गुमराह करने वाले हैं।

हज़रत जुनैद बग़दादी (रह.) का मशहूर क़ौल है कि कुल्लु हक्कीक़तिन ला यश्हदु लहुश्शरअ फ़हुव ज़िन्दिक़तुन हर वो हक्कीक़त जिसकी शहादत शरीअत से न मिले वो बददीनी और बेईमानी और ज़िन्दिक़ियत है। नऊजुबिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फुसिना मिन सय्याति आमालिना।

## बाब 6 : किसी गवाह को आदिल प्राबित करने के लिये कितने आदमियों की गवाही ज़रूरी है?

## ٦- بَابُ تَغْيِيلِ كَمِّ يَجُوزُ؟

2642. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया प्राबित से और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से एक जनाज़ा निकला तो लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की या उसके सिवा और अल्फ़ाज़ (उसी मफ़हूम को अदा करने के लिये) कहे (रावी को शुब्हा है) आप (ﷺ) ने उस पर भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई। अज़्र किया गया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने उस जनाज़े के बारे में भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई और पहले जनाज़े पर भी यही फ़र्माया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमानवाली क़ौम की गवाही (बारगाहे इलाही में मक्बूल है) ये लोग ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हैं। (राजेअ: 1367)

٢٦٤٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِجَنَازَةٍ، فَأَثَرُوا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). ثُمَّ مَرَّ بِأُخْرَى فَأَثَرُوا عَلَيْهَا شَرًّا - أَوْ قَالَ: غَيْرَ ذَلِكَ - فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). لَقِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قُلْتَ لِهَذَا وَجَبَتْ وَلِهَذَا وَجَبَتْ. قَالَ: ((شَهَادَةُ الْقَوْمِ. الْمُؤْمِنُونَ شُهَدَاءُ اللَّهِ لِي الْأَرْضِ)). [راجع: ١٣٦٧]

2643. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे दाऊद बिन अबी फ़रात ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया अबुल अस्वद से कि मैं मदीना आया तो यहाँ वबा फैली हुई थी, लोग बड़ी तेज़ी से मर रहे थे। मैं हज़रत इमर (रज़ि.) की ख़िदमत में था कि एक जनाज़ा गुज़रा। लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की तो हज़रत इमर (रज़ि.) ने कहा कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा गुज़रा लोगों ने उसकी ता'रीफ़ की, हज़रत इमर (रज़ि.) ने कहा वाजिब हो गई। फिर तीसरा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की, हज़रत इमर (रज़ि.) ने उसके लिये भी यही कहा कि वाजिब हो गई। मैंने पूछा अमीरुल मोमिनीन! क्या

٢٦٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْقُرَاتِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرْدَةَ عَنْ أَبِي الْأَسْوَدِ قَالَ: ((أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ وَقَدْ وَقَعَ بِهَا مَرَضٌ وَهُمْ يَمُوتُونَ مَوْتًا ذَرِيعًا، فَجَلَسْتُ إِلَى عَمْرِو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَمَرَّتْ جَنَازَةٌ فَأَتَانِي خَيْرًا، فَقَالَ عَمْرُو: وَجَبَتْ. ثُمَّ مَرَّ بِأُخْرَى فَأَتَانِي خَيْرًا فَقَالَ عَمْرُو جَبَتْ ثُمَّ

चीज़ वाजिब हो गई। उन्होंने कहा कि मैंने उसी तरह कहा है जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिस मुसलमान के लिये चार आदमी अच्छाई की गवाही दें उसे अल्लाह तआला जन्नत में दाखिल करता है। हमने आँहजरत (ﷺ) से पूछा और अगर तीन दें? आपने फ़र्माया कि तीन पर भी। हमने पूछा और अगर दो आदमी गवाही दें? फ़र्माया, दो पर भी। फिर हमने एक के बारे में आपसे नहीं पूछा। (राजेअ: 1368)

مُرُّ بِالنَّائِلَةِ فَإِنِّي شَرُّ النَّاسِ وَجَبَتْ قُلْتُ: وَمَا وَجَبَتْ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: قُلْتُ: كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا مُسْلِمٍ شَهِدَ لَهُ أَرْبَعَةٌ بَخِيرٍ أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ)). قُلْنَا: وَثَلَاثَةٌ؟ قَالَ: ((وِثَلَاثَةً)). قُلْنَا: وَاثْنَانِ؟ قَالَ: ((وَاثْنَانِ)). ثُمَّ لَمْ نَسْأَلْهُ عَنِ الْوَاحِدِ)). [راجع: ١٣٦٨]

**तशरीह:** इस हदीस से इمام बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि तअदील और तज़किया के लिये कम से कम दो शख्सों की गवाही ज़रूरी है। इمام मालिक (रह.) और शाफ़िई का यही क़ौल है। लेकिन इمام अबू हनीफ़ा के नज़दीक एक की भी गवाही काफ़ी है। (कस्तलानी)

हदीस का मतलब ये कि जिसकी मुसलमानों ने तारीफ़ की उसके लिये जन्नत वाजिब हो गई और जिसकी बुराई की उसके लिये जहन्नम वाजिब हो गई। जिसका मतलब राये-आम्मा की तस्वीब है। सच है, आवाज़े खल्क को नक्कारा-ए-ख़ुदा कहते हैं। मुज्ताहिदे मुत्लक इمام बुखारी (रह.) का इन रिवायात के लाने का मक़सद ये है कि तअदील व तज़किया में राये आम्मा (सर्वसम्मति) का काफ़ी दख़ल है।

### बाब 7 : नसब और रज़ाअत में जो मशहूर हो, इसी तरह पुरानी मौत पर गवाही का बयान

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे और अबू सलमा (रज़ि.) को घुवैबा (अबू लहब की बांदी) ने दूध पिलाया था। और रज़ाअत में एहतियात करना।

٧- بَابُ الشَّهَادَةِ عَلَى الْأَنْسَابِ، وَالرُّضَاعِ الْمُسْتَفِيزِ، وَالْمَوْتِ الْقَدِيمِ وَلَوْلَا النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرْضَعْنِي وَأَنَا مَلَمَّةٌ ثَوِيَّةٌ)). وَالتَّبَيُّتُ بِهِ.

**तशरीह:** या'नी जब तक रज़ाअत अच्छी तरह प्राबित न हो सुनी सुनाई बात पर अमल न करना। मक़सद इمام बुखारी (रह.) का इशारा है हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीस की तरफ़ जो आगे इस किताब में मज़कूर है कि सोच समझकर किसी को अपना रज़ाई भाई करार दो। मुनअकिदा बाब के तमाम मज़ामीन से मतलब इمام बुखारी (रह.) का ये है कि उन चीज़ों में सिर्फ़ बर-बिनाए शहरत शहादत (लोगों में प्रचलित गवाही) देना दुरुस्त है, भले ही गवाह ने अपनी आँख से उन वाक़ियात को न देखा हो। पुरानी मौत से मुराद ये है कि उसको चालीस या पचास साल गुज़र चुके हों।

2644. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने बयान किया, कहा हमको हुकम ने ख़बर दी, उन्हें इराक बिन मालिक ने, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद) अफ़्लह (रज़ि.) ने मुझसे (घर में आने की) इजाज़त चाही तो मैंने उनको इजाज़त नहीं दी। वो बोले कि आप मुझसे पर्दा करती हैं हालाँकि मैं आपका (दूध का) चचा हूँ। मैंने कहा कि ये कैसे? तो उन्होंने बताया कि मेरे भाई (वाईल) की औरत ने आपको मेरे भाई ही का दूध

٢٦٤٤- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ عَنْ عِرَاقٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: امْتَاذَنَ عَلِيٌّ أَفْلَحَ فَلَمْ أَذِنْ لَهُ. فَقَالَ: ابْتَغَيْنِي مِنِّي وَأَنَا عَمَلُكَ؟ فَقُلْتُ: وَكَيْفَ ذَلِكَ؟ قَالَ: أَرْضَعْتُكِ امْرَأَةً أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ أَحَبِّ. فَقَالَتْ: مَا لَتْ عَنْ

पिलाया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अफ़्लह ने सच कहा है। उन्हें (अंदर आने की) इजाज़त दे दिया करो (उनसे पर्दा नहीं है)। (दीगर मक़ाम: 4796, 5103, 5111, 5229, 6156)

रज़ाअत में सिर्फ़ अकेले अफ़्लह की गवाही को तस्लीम किया गया, बाब का यही मक़सद है। साथ ही ये भी है कि गवाह को परखना भी ज़रूरी है।

2645. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया जाबिर बिन ज़ैद से और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हम्ज़ा (रज़ि.) की साहबज़ादी के बाब में फ़र्माया कि ये मेरे लिये हलाल नहीं हो सकतीं, जो रिश्ते नसब की वजह से हुराम हो जाते हैं वही दूध की वजह से भी हुराम हो जाते हैं। ये तो मेरे रज़ाई भाई की लड़की है। (दीगर मक़ाम: 5100)

ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((صَدَقَ أَلْفَحُ أَنْذَنِي لَهُ)).

إِطْرَافُهُ فِي: ٤٧٩٦، ٥١٠٣، ٥١١١،

٥٢٢٩، ٦١٥٦.

٢٦٤٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بِنْتِ حَمْزَةَ: ((لَا تَحِلُّ لِي، يَحْرُمُ مِنَ الرُّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ، هِيَ بِنْتُ أُخِي مِنَ الرُّضَاعَةِ)). [طَرَفُهُ فِي: ٥١٠٠].

**तशरीह:** हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) आप (ﷺ) के चचा थे। दोनों की उम्रों में कोई खास फ़र्क़ नहीं था। इसलिये जिस वक़्त आँ हज़रत (ﷺ) दूध पीते थे हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के भी दूध पीने का वही ज़माना था। और दोनों हज़रत ने अबू लहब की बांदी पुवैबा का दूध पिया था। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की लड़की जिनका नाम अमामा या अम्मारा बताया जाता है, के बारे में ये हदीस आपने उसी बुनियाद पर बयान की थी। क़स्तलानी ने कहा, उनमें से चार रिश्ते मुस्तज़ा हैं जो नसब से हुराम होते हैं, लेकिन रज़ाअ से हुराम नहीं होते। उनका ज़िक्र किताबुन्निकाह में आया इशाअल्लाह तआला।

2646. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र से, वो अम् बन्ते अब्दुर्रहमान से और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत्तहहरा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) उनके यहाँ तशरीफ़ फ़र्माये। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक सहाबी की आवाज़ सुनी जो (उम्मुल मोमिनीन) हफ़्सा (रज़ि.) के घर में आने की इजाज़त चाहता था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरा ख़याल है ये हफ़्सा (रज़ि.) के दूध के चचा हैं। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये सहाबी आपके घर में (जिसमें हफ़्सा रज़ि. रहती हैं) आने की इजाज़त मांग रहे हैं। उन्होंने बयान किया कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा ख़याल है ये फ़लाँ साहब, हफ़्सा के रज़ाई चचा हैं। फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने

٢٦٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوَّجَ النَّبِيَّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ عِنْدَهَا، وَأَنَّهَا سَمِعَتْ صَوْتَ رَجُلٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ، - قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْهِ فَلَانًا، يَعْمُ حَفْصَةَ مِنَ الرُّضَاعَةِ - فَقَالَتْ عَائِشَةُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ.

भी अपने एक रज़ाई चचा के बारे में पूछा कि अगर फ़लाँ ज़िन्दा होते तो क्या बेहिजाब मेरे पास आ सकते थे? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! दूध से भी वो तमाम रिश्ते हुराम हो जाते हैं जो नसब की वजह से हुराम होते हैं। (दीगर मक़ाम : 3105, 5099)

قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((رَأَاهُ لَلَاةَ، لَعَمْرُكَ حَفْصَةُ مِنَ الرُّضَاعَةِ)). فَقَالَتْ: عَائِشَةُ: لَوْ كَانَ لَلَاةَ حَيًّا - لَعَمْرُكَ مِنَ الرُّضَاعَةِ - دَخَلَ عَلَيَّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((نَعَمْ، إِنَّ الرُّضَاعَةَ يَحْرُمُ مِنْهَا مَا يَحْرُمُ مِنَ الْوِلَادَةِ)).

[طرفه في: 3105, 5099].

अल्हम्दुलिल्लाह कि 8 अप्रैल 70 ईस्वी में हमने नबवी मदीना मुनव्वरा में इस पारे के मतन की क़िरअत ग़ौरो-फ़िक्र के साथ यहाँ से शुरू की गई और दुआ की गई कि अल्लाह पाक अपने प्यारे नबी (ﷺ) के प्यारे प्यारे इश्आदात के समझने और उनका बेहतरीन उर्दू तर्जुमा करने के साथ साथ तशरीह करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और इस ख़िदमते हदीसे नबवी (ﷺ) को मेरे लिये और मेरे तमाम मुता'ल्लिकीन व मुख़िलसीन के लिये कुबूल फ़र्माकर ज़रिया-ए-सआदते दारेन बनाए और हाज़ी मरहूम बुलारी प्यारो कुरैशी बैंगलूरी को ज़न्नत नसीब करे जिनके हज्जे बदल के सिलसिले में मुझको मदीना मुनव्वरा की ये हाज़री नसीब हुई अल्लाहुम्मग़फ़िलहू वरहमहू व अकिरम नुज़ुलहू व वस्सिअ मदख़लहू आमीन या रब्बलआलमीन

2647. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें अज़अष बिन अबू शअषाअ ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (घर में) तशरीफ़ लाए तो मेरे यहाँ एक साहब (उनकी रज़ाई भाई) बैठे हुए थे। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, आइशा! ये कौन है? मैंने कहा कि ये मेरा रज़ाई भाई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.) ज़रा देखभाल कर चलो, कौन तुम्हारा रज़ाई भाई है क्योंकि रज़ाअत वही मो'तबर है जो कमसिनी में हो। मुहम्मद बिन क़सीर के साथ इस हदीस को अब्दुर्रहमान बिन महदी ने सुफ़यान शौरी से रिवायत किया है। (दीगर मक़ाम : 5102)

٢٦٤٧ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ وَعِنْدِي رَجُلٌ وَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ مَنْ هَذَا؟)) قُلْتُ: أَخِي مِنَ الرُّضَاعَةِ قَالَ: ((يَا عَائِشَةُ أَنْظُرِي مَنْ أَهْوَأْتُكِ، فَإِنَّمَا الرُّضَاعَةُ مِنَ الْمَجَاعَةِ)). فَأَبَاهُ ابْنُ مُهْدِيٍّ عَنْ سُفْيَانَ.

[طرفه في: 5102].

**तशरीह:** बच्चे का उसी ज़माना में किसी औरत के दूध पीने का ए'तिबार है जबकि बच्चे की ज़िन्दगी के लिये वो ज़रूरी हो या'नी मुद्ते रज़ाअत जो दो साल की है। अगर उसके अंदर दो बच्चे किसी माँ का दूध पीए तो उसका ए'तिबार होगा और दोनों में हुर्मत प्राबित होगी वरना हुर्मत प्राबित नहीं होगी। मुद्ते रज़ाअत हौलैनि कामिलैनि खुद कुआन मजीद से प्राबित है या'नी पूरे दो साल, और इससे ज्यादा दूध पिलाना ग़लत होगा। इन्फ़िया के नज़दीक ये मुद्त तीन माह और ज़ाइद तक है जवाज़ रूए कुआन मजीद सहीह नहीं है।

**बाब 8 : ज़िना की तोहमत लगाने वाले और चोर और हुरामकार की गवाही का बयान**

٨ - بَابُ شَهَادَةِ الْقَادِفِ وَالسَّارِقِ وَالزَّانِي وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

**तशरीह:**

बाब और तफ्सीलाते ज़ेल से इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज ये है कि काज़िफ़ (झूठ बोलने वाला) अगर तौबा करे तो आइन्दा उसकी गवाही मक्बूल होगी। आयत से यही निकलता है और जुम्हूर इलमा का भी यही कौल है। हन्फिया कहते हैं कि तौबा करने से वो फ़ासिफ़ नहीं रहता, लेकिन उसकी गवाही कभी मक्बूल न होगी। कुछ ने कहा अगर उसको हद लग गई तो गवाही कुबूल होगी हद से पहले मक्बूल न होगी।

तफ्सीलाते मज़कूर में मुगीरा बिन शुअबा कूफ़ा के हाकिम थे। मज़कूर तीनों शरख़्सों ने उनकी निस्बत बयान किया कि उन्होंने उम्मे जमील नामी एक औरत से ज़िना किया है लेकिन चौथे गवाह ज़ियाद ने ये बयान किया कि मैंने दोनों को एक चादर में देखा, मुगीरा की सांस चढ़ गई थी, उससे ज़्यादा मैंने कुछ नहीं देखा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन तीनों को हद्दे क़ज़फ़ लगाई।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) काज़िफ़ की गवाही कुबूल नहीं करते थे। लेकिन निकाह में काज़िफ़ की शहादत को जाइज़ करार देते हैं। हालाँकि निकाह का मामला भी कुछ ग़ैर अहम नहीं है। एक मर्द मुसलमान के लिये उम्र भर बल्कि औलाद दर औलाद हलाल-हराम का सवाल है। लेकिन इमाम साहब काज़िफ़ की गवाही निकाह में कुबूल मानते हैं इसी तरह रमज़ान के चाँद में भी काज़िफ़ की शहादत के क़ाइल हैं। पस मा'लूम हुआ कि उनका पहला कौल कि काज़िफ़ की शहादत क़ाबिले कुबूल नहीं वो कौल ग़लत है। जिसकी ग़लती खुद उन्हीं के दीगर अक्वाले सहीह से हो रही है। इस बाब में मसलके सलफ़ ही सहीह और वाजिबुत तस्लीम है कि काज़िफ़ की शहादत मक्बूल है। हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) और अक़बर सलफ़ का कौल ये है कि काज़िफ़ जब तक अपने तई झुठलाए नहीं उसकी तौबा सहीह नहीं होगी। और इमाम मालिक का कौल ये है कि जब वो नेक काम ज़्यादा करने लगे तो हम समझ जाएँगे कि उसने तौबा की, अब अपने तई झुठलाना ज़रूरी नहीं। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का भी झुकाव इसी तरफ़ मा'लूम होता है। कअब बिन मालिक (रज़ि.) और उनके साथियों की रिवायत ग़ज़व-ए-तबूक में मज़कूर होगी। उनसे इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि काज़िफ़ को सज़ा हो जाना भी यही तौबा है क्योंकि औहज़रत (रज़ि.) ने ज़ानी को और कअब बिन मालिक और उनके साथियों को सज़ा देने के बाद तौबा की तकलीफ़ नहीं दी।

अल्फ़ाज़े बाब का तर्जुमा व क़ाल बअजुन्नासि के तहत हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, हाज़ा मन्कूलुन अनिल्हनफ़िय्यति वहतज्जू फ़ी रहि शहादतिल्महदुदि बिअहादीष क़ालल्हुफ़फ़ाज़ ला यस्हिह् मिन्हा शैउन अल्ख़ या'नी यहाँ हन्फिया मुराद हैं जिनसे ये मन्कूल है कि काज़िफ़ की शहादत जाइज़ नहीं अगरचे उसने तौबा कर ली हो उस बारे में उन्होंने हदीषों से इस्तिदलाल किया है, मगर हुफ़फ़ाज़े हदीष का कहना ये है कि उनमें से कोई भी हदीष जो वो अपनी दलील में पेश करते हैं सहीह नहीं है। उनमें से ज़्यादा मशहूर हदीष अमर बिन शुएब अन अबीहि अन् जदह की है। जिसके अल्फ़ाज़ ये हैं ला तज्ज़ु शहादतु खाइननि व ला खाइनतिन व ला महदुदुन फिल्इस्लाम इस हदीष को अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है और तिमिज़ी ने उसके मिश्ल हज़रत आइशा (रज़ि.) से साथ ही ये भी कहा है, ला यस्हिह् या'नी ये हदीष सहीह नहीं है और अबू ज़रआ ने इसे मुंकिर कहा है।

और अल्लाह तआला ने (सूरह नूर में) फ़र्माया, ऐसे तोहमत लगाने वालों की गवाही कभी न मानो, यही लोग तो बदकार हैं, मगर जो तौबा कर लें। तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने अबूबक्र, शिबल बिन मअबद (उनके मौँ जाए भाई) और नाफ़ेअ बिन हारिष को हद लगाई मुगीरह पर तोहमत रचाने की वजह से। फिर उनसे तौबा कराई और कहा जो कोई तौबा कर ले उसकी गवाही कुबूल होगी। और अब्दुल्लाह बिन इत्बा और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और सईद बिन जुबैर और त़ाऊस और मुजाहिद और शअबी और इक्रिमा और ज़ुहरी और महारिब बिन दफ़्फ़ार और शुरैह और मुआविया बिन कुरहने भी तौबा के बाद उसकी गवाही को जाइज़

وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا، وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ. إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَالنُّور: 5-6 [وَجَلَدَ عُمَرُ أَبَا بَكْرَةَ وَشَيْلَ بْنَ مَعْبُدٍ وَنَافِعًا بِقَذَابِ الْمُغْبِيرَةِ، ثُمَّ اسْتَأْذَنَهُمْ وَقَالَ: مَنْ تَابَ قَبِلْتُ شَهَادَتَهُ. وَأَجَاوَزَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثَيْبَةَ وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْقَرِيرِ وَسَعِيدُ بْنُ جَبْرِ وَطَاوُسٌ وَمَجَاهِدُ وَالشَّعْبِيُّ وَعِكْرِمَةُ وَالزُّهْرِيُّ وَمُحَارِبُ بْنُ

रखा है और अबुज्जिनाद ने कहा हमारे नजदीक मदीना तय्यिबा में तो ये हुक्म है जब क़ाज़िफ़ अपने क़ौल से फिर जाए और इस्तिफ़ार कर ले तो उसकी गवाही कुबूल होगी और शअबी और क़तादा ने कहा जब वो अपने तई झुठलाए और उसको हद पड़ जाए तो उसकी गवाही कुबूल होगी। और सुफ़यान श़री ने कहा जब गुलाम को हद्दे क़ज़फ़ पड़े तो उसके बाद वो आज़ाद हो जाए तो उसकी गवाही कुबूल होगी। और जिसको हद्दे क़ज़फ़ पड़ी हो अगर वो क़ाज़ी बनाया जाए तो उसका फ़ैसला नाफ़िज़ होगा। और कुछ लोग (इमाम अबू हनीफ़ा रह.) कहते हैं क़ाज़िफ़ की गवाही कुबूल न होगी, चाहे वो तौबा कर ले। फिर ये भी कहते हैं कि बग़ैर दो गवाहों की गवाही से निकाह किया तो निकाह दुरुस्त होगा। अगर दो गुलामों की गवाही से किया तो दुरुस्त न होगा और उन ही लोगों ने हद्दे क़ज़फ़ पड़े हुए लोगों की और लौण्डी गुलाम की गवाही रमज़ान के चाँद के लिये दुरुस्त रखी है। 1. (और इस बाब में ये बयान है कि क़ाज़िफ़ की तौबा क्यूँकर मा'लूम होगी और आँहज़रत (ﷺ) ने तो ज़ानी को एक साल के लिये इख़राज किया और आप (ﷺ) ने कअब बिन मालिक (रज़ि.) और उनके दोनों साथियों से मना कर दिया कोई बात न करे। पचास रातें इस तरह गुज़रीं।

1 (हालाँकि ये भी एक किस्म की गवाही है तो जब महदूद फ़िल् क़ज़फ़ की गवाही हन्फ़िया ने नाजाइज़ रखी है तो इसको जाइज़ क्यूँ रखते हैं)

2648. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया और उनसे यूनुस ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया और उनसे यूनुस ने और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी कि एक औरत ने फ़तहे मक्का पर चोरी कर ली थी। फिर उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर किया गया और आपके हुक्म के मुताबिक़ उसका हाथ काट दिया गया। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उन्होंने अच्छी तरह तौबा कर ली और शादी कर ली। उसके बाद वो आती थीं तो मैं उनकी ज़रूरत, रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश कर दिया करती थी। (दीगर मक़ाम: 3475, 3732, 3733)

دَنَارٍ وَشَرْتِجَ وَمُعَاوِيَةَ بْنَ قُرَّةَ. وَقَالَ أَبُو الرَّثَادِ: الْأَمْرُ عِنْدَنَا بِالْمَدِينَةِ إِذَا رَجَعَ الْقَادِفُ عَنْ قَوْلِهِ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ قُبِلَتْ شَهَادَتُهُ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ وَقَادَةُ: إِذَا أَكْذَبَ نَفْسَهُ جُلِدَ وَقُبِلَتْ شَهَادَتُهُ. وَقَالَ الثَّوْرِيُّ: إِذَا جُلِدَ الْعَبْدُ ثُمَّ أُخْبِقَ جَازَتْ شَهَادَتُهُ، وَإِنْ اسْتَقْصَى الْمُخْدُودُ لِقَضَايَاهُ جَائِزَةٌ. وَقَالَ يَحْيَى النَّاسِي: لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ الْقَادِفِ وَإِنْ تَابَ. ثُمَّ قَالَ: لَا يَجُوزُ يَكَاخُ بِغَيْرِ شَاهِدَيْنِ، فَإِنْ تَزَوَّجَ بِشَهَادَةِ مَخْدُودَيْنِ جَازَ، وَإِنْ تَزَوَّجَ بِشَهَادَةِ عَبْدَيْنِ لَمْ يَجْزَ. وَأَجَازَ شَهَادَةُ الْمُخْدُودِ وَالْعَبْدِ وَالْأَمَةِ لِرُؤْيَا جِلَالِ رَمَضَانَ. وَكَيْفَ تَعْرِفُ تَوْبَتَهُ. وَقَدْ نَفَى النَّبِيُّ ﷺ الزَّانِيَةَ سَنَةً، وَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ كَلَامِ كُفْرٍ بَيْنَ مَالِكٍ وَصَاحِبِيهِ حَتَّى مَضَى خَمْسُونَ لَيْلَةً.

٢٦٤٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ: ((أَنَّ امْرَأَةً سَرَقَتْ فِي غَزْوَةِ الْفَتْحِ فَأَتَى بِهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ أَمَرَ لَفْطَةً يَدُهَا. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَحَسُنَتْ تَوْبَتُهَا وَتَزَوَّجَتْ، وَكَانَتْ تَأْتِي بَعْدَ ذَلِكَ فَارْفَعُ حَاجَتَهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

[اطرافه ي : ٣٤٧٥، ٣٧٣٢، ٣٧٣٣]

[१८००, १७८८, १७८७, १८०६]

**तशरीह:** ये औरत मखजूमि कुरैश के अशराफ (सम्मानित घराने) से थी। उसने आँहज़रत (ﷺ) के घर से एक चादर चुरा ली थी जैसे कि इब्ने माजा की रिवायत में उसकी सराहत मज़कूर है और इब्ने सअद की रिवायत में ज़ेवर चुराना मज़कूर है, मुम्किन है कि दोनों चीज़ें चुराई हों। बाब का मतलब हज़रत आइशा (रज़ि.) के कौल फ़हसुनत तौबतुहा से निकलता है। तहावी ने कहा चोर की शहादत बिल इम्माअ मक्बूल है जब वो तौबा कर ले। बाब का मतलब ये था कि काज़िफ़ की तौबा क्यूँ कर मक्बूल होगी लेकिन हदीष में चोर की तौबा मज़कूर है तो इमाम बुखारी (रह.) ने काज़िफ़ को चोर पर क़यास किया है।

2649. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया अक्कील से, वो इब्ने शिहाब से, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन लोगों के लिये जो शादी शुदा न हों और ज़िना करें। ये हुक्म दिया था कि उन्हें सौ कोड़े लगाए जाएँ और एक साल के लिये जलावतन कर दिया जाए। (राजेअ: 2314)

۲۶۴۹- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ أَمَرَ بِمَنْ زَنَى وَلَمْ يُحْصَنْ بِحُلْدٍ مِائَةً وَتَرْبِيعَ عَامٍ)). [راجع: ۲۳۱۴]

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद इस रिवायत के लाने से ये है कि जब हदीष में गैर-मुहज़िब की सज़ा यही मज़कूर हुई कि सौ कोड़े मारो और एक साल के लिये जलावतन (तड़ीपार) करो और तौबा का अलग ज़िक्र नहीं किया तो मा'लूम हुआ कि उसका एक साल तक बेवतन रहना यही तौबा है। उसके बाद उसकी शहादत कुबूल होगी।

### बाब 9 : अगर जुल्म की बात पर लोग गवाह बनाना चाहें तो गवाह न बने

۹- بَابُ لَا يَشْهَدُ عَلَى شَهَادَةِ جَوْرٍ إِذَا أَشْهَدَ

2650. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको अबू हय्यान तैमी (यह्या बिन सईद) ने, उन्हें शअबी ने, और उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरी माँ ने मेरे बाप से मुझे एक चीज़ हिबा करने के लिये कहा (पहले तो उन्होंने इन्कार कर दिया क्योंकि दूसरी बीवी के भी औलाद थी) फिर राज़ी हो गए और मुझे वो चीज़ हिबा कर दी। लेकिन माँ ने कहा कि जब तक आप नबी करीम (ﷺ) को इस मामले में गवाह न बनाएँ मैं इस पर राज़ी न होऊँगी। चुनौचे वालिद ने मेरा हाथ पकड़कर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मैं अभी नौउम्र था। उन्होंने अर्ज किया कि इस लड़के की माँ अम्मह बिन्ते स्वाहा (रज़ि.) मुझसे एक चीज़ इसे हिबा करने के लिये कह रही हैं। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि उसके अलावा और भी तुम्हारे लड़के है? उन्होंने कहा हाँ, हैं।

۲۶۵۰- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَنَانٍ التَّمِيمِيُّ عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سَأَلْتُ أُمِّي أَبِي بَغَضَ السُّوْجِيَّةِ لِي مِنْ مَالِهِ، ثُمَّ بَدَأَ لَهُ فَوَهَبَهَا لِي، فَقَالَتْ: لَا أَرْضَى حَتَّى تَشْهَدَ النَّبِيُّ ﷺ. فَأَخَذَ بِيَدِي وَأَنَا غُلَامٌ فَاتَى بِنَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((إِنَّ أُمَّهُ بَنَتْ رَوَاحَةَ سَأَلْتِي بَغَضَ السُّوْجِيَّةِ لِهَذَا. قَالَ: ((أَلَاكَ وَلَدٌ سِوَاهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. فَارَاهُ قَالَ: ((لَا



नोअमान (रज़ि.)! ने बयान किया, मेरा खयाल है कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया तो मुझको जुल्म की बात पर गवाह न बना और अबू हरीज़ ने शअबी से ये नक़ल किया कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया मैं जुल्म की बात पर गवाह नहीं बनता। (राजेअ: 2586)

نَشْهَدُنِي عَلَى (جَوْرٍ)). وَقَالَ أَبُو حَرِيرَةَ  
عَنِ الشَّعْبِيِّ: ((لَا أَشْهَدُ عَلَى جَوْرٍ)).

[راجع: ٢٥٨٦]

गवाह पर अगर ये ज़ाहिर है कि ये जुल्म है तो फिर उसका फ़ज़्र है कि उसके हक़ में हर्गिज़ गवाही न दे वरना वो भी उस गुनाह में शरीक हो जाएगा।

2651. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने बयान किया, कहा हमसे अबू हमज़ा ने बयान किया कि मैंने ज़हदम बिन मुज़रिब (रह.) से सुना कि मैंने इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से सुना और उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें सबसे बेहतर मेरे ज़माने के लोग (सहाबा) हैं फिर वो लोग जो उनके बाद आएँगे। (ताबेईन) फिर वो लोग जो उसके भी बाद आएँगे (ताबेअ ताबेईन) इमरान ने बयान किया कि मैं नहीं जानता आँहज़रत (ﷺ) ने दो ज़मानों का (अपने बाद) ज़िक्र फ़र्माया या तीन का फिर आपने फ़र्माया कि तुम्हारे बाद ऐसे लोग पैदा होंगे जो चोर होंगे, जिनमें दयानत का नाम न होगा। उनसे गवाही देने के लिये नहीं कहा जाएगा। लेकिन वो गवाहियाँ देते फिरेंगे। नज़्रें मानेंगे लेकिन पूरी नहीं करेंगे, मोटापा उनमें आम होगा।

(दीगर मक़ाम: 3650, 6428, 6695)

٢٦٥١- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ  
قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ  
بْنَ مَرْزُبٍ قَالَ: سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ  
حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ  
ﷺ: ((غَيْرُكُمْ قَوْمِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ،  
ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ - قَالَ عِمْرَانُ: لَا أَذْهَبُ  
أَذْكَرَ النَّبِيِّ ﷺ بَعْدَ قَوْمَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةٍ - قَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: إِنْ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَغْوُونَ وَلَا  
يُؤْتَمِنُونَ، وَيَشْهَدُونَ وَلَا يَسْتَشْهَدُونَ،  
وَيَلْبِسُونَ وَلَا يَفُونَ، وَيُظْهَرُ فِيهِمْ  
السُّنَنُ)).

[أطرافه: ٦٦٩٥، ٦٤٢٨، ٣٦٥٠.]

**तुशरीह:** मतलब ये है कि न गवाही में उनको बाक होगा न क़सम खाने में, जल्दी के मारे कभी गवाही पहले अदा करेंगे फिर क़सम खाएँगे। कभी क़सम पहले खा लेंगे फिर गवाही देंगे।

हदीष के जुम्ला यशहदूना वला यस्तशहदूना पर हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं व युआरिज़ुहू मा रबाहु मुस्लिम मिन हदीषि ज़ैदिब्नि ख़ालिदिन मफ़ूअन अला उख़िबरुकुम बिख़ैरिशुहदा इल्लज्जी याती बिशहादति क़ब्ल अंय्यस्अलहा वख़तलफलउल्माउ फी तर्जीहिहिमा फ़जनह इब्नु अब्दिलबारि इला तर्जीहि हदीषि ज़ैदिब्नि ख़ालिदिन लिक्वौनिही मिन रिवायति अहलिल्लमदीनति फ़क़दिमहू अला रिवायति अहलिल्लइराक़ि व बालग़ फ़ज़अम अन्न हदीष इम्रान हाज़ा ला अस्ल लहू व जनह ग़ैरहू इला तर्जीहि हदीषि इम्रान लिइत्तिफ़ाक़ि साहिबस्सहीहि अलैहि व इन्फ़िरादु मुस्लिमिन बिइख़राजि हदीषि ज़ैदिब्नि ख़ालिदिन व जहब आख़रुन इलल्जमइ बैनहुमा (अल्ख़) (फ़तुहलबारी)

या'नी यशहदून वला यस्तशहदूना से ज़ैद बिन ख़ालिद की हदीष मफ़ूअन मुआरिज़ है, जिसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, जिसका तर्जुमा ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया किया मैं तुमको बेहतरीन गवाहों की ख़बर न दूँ? ये वो लोग होंगे कि वो त़लब किये जाने से पहले ही गवाही दें। दोनों अह्दादीष की तरजीह में उलमा का इख़ितलाफ़ है। इब्ने अब्दुल बर ने हदीषे ज़ैद बिन ख़ालिद (मुस्लिम) को तरजीह दी है क्योंकि ये अहले मदीना की रिवायत है। और हदीषे मज़कूर अहले

इराक की रिवायत से है। पस अहले इराक पर अहले मदीना को तरजीह हासिल है। उन्होंने यहाँ तक मुबालगा किया कि हदीषे इमरान मजकूरा को कह दिया कि उसकी कोई असल नहीं (हालाँकि उनका ऐसा कहना भी सहीह नहीं है)। दूसरे उलमा ने हदीषे इमरान को तरजीह दी है इसलिये कि उस पर दोनों इमामों बुखारी व इमाम मुस्लिम का इतिफाक है। और हदीषे जैद बिन खालिद को सिर्फ इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है। तीसरा गिरोहे उलमा वो है जो इन दोनों अहादीष में तत्बीक देने का काइल है।

पहली तत्बीक ये दी गई है कि हदीषे जैद में ऐसे शख्स की गवाही मुराद है जिसे किसी इंसान का हक मा'लूम है और वो इंसान खुद उससे ला इल्म (अनभिज्ञ) है, पस वो पहले ही जाकर उस साहिबे-हक के हक में गवाही देकर उसका हक प्राबित कर देता है। या ये कि उस शहादत का कोई और आलिम जिन्दा न हो पस वो उस शहादत के मुस्तहिककीन वरप्पा को खुद मुतलअ कर दे और गवाही देकर उनको मा'लूम करा दे। इस जवाब को अक़्बर उलमा ने पसन्द किया है। और भी कई तौजीहात की गई हैं जो फ़ुतूल बारी में मजकूर हैं। पस बेहतर यही है कि ऐसे तआरिजात को मुनासिब तत्बीक से उठाया जाए न कि किसी सहीह हदीष का इंकार किया जाए।

2652. हमसे मुहम्मद बिन क़शीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी मंसूर से, उन्होंने इब्राहीम नखई से, उन्हें अबैदा ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे बेहतर मेरे ज़माना के लोग हैं, फिर वो लोग जो उसके बाद होंगे। फिर वो लोग जो उसके बाद होंगे और उसके बाद ऐसे लोगों का ज़माना आएगा जो क़सम से पहले गवाही देंगे और गवाही से पहले क़सम खाएँगे। इब्राहीम नखई (रह.) ने बयान किया कि हमारे बड़े बुजुर्ग शहादत और अहद का लफ़्ज़ जुबान से निकालने पर हमें मारते थे। (दीगर मक़ाम : 3651, 6429, 6658)

मतलब ये कि अशहदु बिल्लाहि या अला अहदिल्लाह ऐसी बातों के मुँह से निकालने पर हमारे बुजुर्ग हमको मारा करते थे ताकि क़सम खाने की आदत न पड़ जाए। मौक़ा बे मौक़ा क़सम खाने की आदत बेहतर नहीं है क़सम में एहतियात लाज़मी है।

### बाब 10 : झूठी गवाही देना बड़ा गुनाह है

अल्लाह तआला ने (सूरह फुरक़ान में) फ़र्माया बहिश्त का बाला ख़ाना उनको मिलेगा जो लोग झूठी गवाही नहीं देते। इसी तरह गवाही को छुपाना भी गुनाह है। (अल्लाह तआला ने सूरह बक़र में फ़र्माया कि) गवाही को न छुपाओ। और जिस शख्स ने गवाही को छुपाया तो उसके दिल में खोट है और अल्लाह तआला सब कुछ जानता है जो तुम करते हो। (और अल्लाह तआला का फ़र्मान सूरह निसा में कि) अगर तुम बीचदार बनाओगे अपनी जुबानों को (झूठी) गवाही देकर।

इसी आयत की तफ़सीर में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, क़ाल तल्वी लिसानुक बिगैरिल हक्कि व हियलल जलजतु फ़ला तुक्कीमुशहादतु अला वजिहा या'नी मुराद ये है कि तू अपनी जुबान को हक़ बात से फेरकर तोड़-मोड़कर बोले जिससे गवाही सहीह तौर पर अदा न हो सके। शारेअ अलौहिस्सलाम का मक़सद ये है कि जहाँ हक़ और सदाक़त की गवाही

٢٦٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ النَّاسِ قُرُونِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَجِيءُ الْوَأَمَّ تَسْبِيحُ شَهَادَةِ أَخِيهِمْ بِمَعْنَى وَبِمَعْنَى شَهَادَتِهِ)). قَالَ إِبْرَاهِيمُ: ((وَكَاثُوا يَضْرِبُونَنَا عَلَى الشَّهَادَةِ وَالْعَهْدِ)).

[أطرافه ٣: ٣٦٥١, ٦٤٢٩, ٦٦٥٨].

### ١- بَابُ مَا قِيلَ فِي شَهَادَةِ الزُّورِ

يَقُولُ اللَّهُ غَزَوْخُلُ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ، وَبِحَمَانٍ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آتِمٌ قَلْبُهُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ تَلَوْا أَلَسْتُمْكُم بِالشَّهَادَةِ.

का मौका हो वहाँ खुलकर साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में गवाही का फ़र्ज अदा करना चाहिये। किनाया इस्तिआरा इशारा वगैरह ऐसे मवाकेअ पर दुरुस्त नहीं हैं।

2653. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, कहा हमने वहब बिन जरिर और अब्दुल मलिक बिन इब्राहीम से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से कबीरा गुनाहों के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, माँ-बाप की नाफ़रमानी करना, किसी की जान लेना और झूठी गवाही देना। इस रिवायत की मुताबअत गुन्दर, अबूआमिर, बहज़ और अब्दुस्समद ने शुअबा से की है। (दीगर मक़ाम : 5977, 6871)

**तस्रीह:** कबीरा गुनाह और भी बहुत हैं। यहाँ रिवायत के लाने का मक़सद हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का झूठी गवाही की मज़म्मत करना है कि ये भी कबीरा गुनाह में दाख़िल है जिसकी मज़म्मत में और भी बहुत सी रिवायात वारिद हुई हैं। बल्कि झूठ बोलने, झूठी गवाही देने को अकबरुल कबाइर में शुमार किया गया है या 'नो बहुत ही बड़ा कबीरा गुनाह झूठी गवाही देना है।

2654. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे बिशर बिन मुफ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे जरीरी ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क्या मैं तुमको सबसे बड़े गुनाह न बताऊँ? तीन बार आप (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। सहाबा ने अर्ज़ किया, हाँ या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह का किसी को शरीक ठहराना, माँ-बाप की नाफ़रमानी करना, आप उस वक़्त तक टेक लगाए हुए थे लेकिन अब आप सीधे बैठ गए और फ़र्माया, हाँ और झूठी गवाही भी। उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस जुम्ले को इतनी बार दोहराया कि हम कहने लगे काश! आप ख़ामोश हो जाते। इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे जरीरी ने बयान किया और उनसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया। (दीगर मक़ाम : 5976, 6273, 6274)

आपको बार बार ये फ़र्माने में तकलीफ़ हो रही थी, सहाबा ने शफ़क़त की राह से ये चाहा कि आप बार बार फ़र्माने की तकलीफ़ न उठाएँ, ख़ामोश हो जाएँ; जबकि आप कई बार फ़र्मा चुके हैं। इलमा ने गुनाहों को स़गीरा और कबीरा दो किस्मों में बांटा है, जिसके लिये दलाइल बहुत हैं। कुछ का ऐसा ख़याल है कि स़गीरा गुनाह कोई गुनाह नहीं, गुनाह सारे ही कबीरा हैं। इमाम

٢٦٥٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ رَجَبَ بْنَ جَرِيرٍ وَعَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ إِبْرَاهِيمَ قَالَا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُثَيْبٍ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْكَتَّابِ قَالَ: الْإِشْرَاكُ بِاللَّهِ، وَغُفُوقُ الْوَالِدَيْنِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَشَهَادَةُ الزُّوْرِ)). تَابَعَهُ عُثْمَرُ وَأَبُو غَابِرٍ وَبَهْزٌ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ شُعْبَةَ.

[طرفاه في: ٥٩٧٧, ٦٨٧١].

٢٦٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بَشَرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا الْجَرِيرِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلَا أُبَيِّنُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَتَّابِ (ثَلَاثًا؟) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: الْإِشْرَاكُ بِاللَّهِ، وَغُفُوقُ الْوَالِدَيْنِ - وَجَلَسَ وَكَانَ مُكَبِّيًا فَقَالَ: أَلَا وَقَوْلُ الزُّوْرِ)). قَالَ: لَمَّا ذَاكَ يُكْرَرُهَا حَتَّى قُلْنَا: لَيْفَ سَكَتَ. وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا الْجَرِيرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ.

[أطرفاه في: ٥٩٧٦, ٦٢٧٣, ٦٢٧٤].

गज़ाली (रह.) फ़र्माते हैं, इन्कारुल फ़र्क़ि बैनल कबीरते वस्सगीरते ला युलीकु बिल फ़र्कीह या' नी दीन की समझ रखने वाले के लिये मुनासिब नहीं कि वो कबीरा और सगीरा गुनाहों के फ़र्क़ का इन्कार करें। आप (ﷺ) ने झूठी गवाही को बार बार इसलिये ज़िक्र किया कि ये बहुत ही बड़ा गुनाह है और बहुत से मफ़ासिद का पेश खैमा है, आपका मक्क़सद था कि मुसलमान हर्गिज़ उसका इतिहास न करें।

### बाब 11 : अंधे आदमी की गवाही और उसके मामले का बयान

और उसका अपना निकाह करना या किसी दूसरे का निकाह कराना, या उसकी ख़रीद व फ़रोख़्त या उसकी अज़ान वग़ैरह जैसे इमामत और इक़्ामत भी अंधे की दुरुस्त है इसी तरह अंधे की गवाही उन तमाम उमूर में जो आवाज़ से समझे जा सकते हों। क़ासिम, इब्ने सीरीन, जुहरी और अत्ता ने भी अंधे की गवाही जाइज़ रखी है। इमाम शअबी ने कहा कि अगर वो ज़हीन और समझदार है तो उसकी गवाही जाइज़ है। हक़म ने कहा कि बहुत सी चीज़ों में उसकी गवाही जाइज़ हो सकती है। जुहरी ने कहा कि अच्छा बताओ अगर इब्ने अब्बास (रज़ि.) किसी मामले में गवाही दें तो तुम उसे रद्द कर सकते हो? और इब्ने अब्बास (रज़ि.) (जब नाबीना हो गए थे तो) सूरज गुरुब होने के वक़्त एक शख़्स को भेजते (ताकि आबादी से बाहर जाकर देख आएँ कि सूरज पूरी तरह गुरुब हो चुका है या नहीं और जब वो आकर गुरुब होने की ख़बर देते तो) आप इफ़्तार करते थे। इसी तरह आप तुलूअे फ़ज्र के बारे में पूछते और जब आपसे कहा जाता कि हाँ फ़ज्र तुलूअ हो गई तो दो रकअत (सुन्नते- फ़ज्र) नमाज़ पढ़ते। सुलैमान बिन यसार (रह.) ने कहा कि आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िरी के लिये मैंने उनसे इजाज़त ली तो उन्होंने मेरी आवाज़ पहचान ली और कहा सुलैमान अंदर आ जाओ क्योंकि तुम गुलाम हो। जब तक तुम पर (माले कितबात में से) कुछ भी बाक़ी न रह जाएगा। समुरा बिन जुन्दब (रज़ि.) ने नक़ाबपोश औरत की गवाही जाइज़ करार दी थी।

**तुसरीह:** आप़ारे मज़कूर में से क़ासिम के अफ़र को सईद बिन मंसूर ने और हसन और इब्ने सीरीन और जुहरी के अफ़र को इब्ने अबी शैबा ने और अत्ता के अफ़र को अफ़म ने वस्ल किया है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा मालिकिया का यही मज़हब है कि अंधे की गवाही क़ौल में और बहरे की गवाही फ़ैअल में दुरुस्त है। और गवाह के लिये ये ज़रूरी नहीं कि वो आँखों वाला और कानों वाला हो। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के अफ़र को अब्दुरज़ाक़ ने वस्ल किया, उस आदमी का नाम मा' लूम नहीं हुआ। इस अफ़र से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि अंधा अपने मुआमलात में दूसरे आदमी पर ए'तिमाद कर सकता है हालाँकि वो उसकी सूरत नहीं देखता। सुलैमान बिन यसार मज़कूर हज़रत आइशा (रज़ि.) के गुलाम

### ١١- بَابُ شَهَادَةِ الْأَعْمَى وَأَمْرِهِ

#### وَنِكَاحِهِ وَإِنِّكَاحِهِ وَمُبَايَعَتِهِ

وَقَوْلِهِ لِي التَّائِدِينَ وَغَيْرِهِ . وَمَا يَعْرِفُ  
بِالْأَصْوَاتِ . وَأَجَازَ شَهَادَتَهُ قَاسِمٌ  
وَالْحَسَنُ وَابْنُ سِيرِينَ وَالزُّهْرِيُّ وَعَطَاءُ .  
وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: تَجُوزُ شَهَادَتُهُ إِذَا كَانَ  
عَاقِلًا . وَقَالَ الْحَكَمُ: رُبُّ شَيْءٍ تَجُوزُ  
فِيهِ . وَقَالَ الزُّهْرِيُّ: أَرَأَيْتَ إِنْ عَبَّاسُ لَوْ  
شَهِدَ عَلَى شَهَادَةٍ أَكُنْتَ تَرُدُّهُ؟ وَكَانَ إِنْ  
عَبَّاسٍ يَبْقَى رَجُلًا، إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ  
الْفَجْرُ . وَيَسْأَلُ عَنِ الْفَجْرِ فَإِذَا قِيلَ لَهُ طَلَعَ  
صَلَّى رَكَعَتَيْنِ . وَقَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ:

थे और हज़रत आइशा (रज़ि.) गुलाम से पर्दा करना ज़रूरी नहीं समझती थी ख्वाह अपना गुलाम हो या किसी और का। सुलैमान बिन यसार मुकातब थे। उनका बदले किताबत अभी अदा नहीं हुआ था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब तक बदले किताबत में से एक पैसा भी तुझ पर बाक़ी है तू गुलाम ही समझा जाएगा। नकाब डालने वाली औरत का नाम मा'लूम नहीं हुआ (वहीदी)

2655. हमसे मुहम्मद बिन अब्द बिन मैमून ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके बाप ने, और उनसे आयशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख्स को मस्जिद में कुआँन पढ़ते सुना तो फ़र्माया कि उन पर अल्लाह तआला रहम फ़र्माए मुझे उन्होंने इस वक़्त फ़लों और फ़लों आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैं फ़लों फ़लों सूरतों में से भूल गया था। अब्बाद बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अपनी रिवायत में आइशा (रज़ि.) से ये ज़्यादाती की है कि नबी करीम (ﷺ) ने मेरे घर में तहज़ुद पढ़ी। उस वक़्त आप (ﷺ) ने अब्बाद (रज़ि.) की आवाज़ सुनी कि वो मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपने पूछा आइशा! क्या ये अब्बाद की आवाज़ है? मैंने कहा जी हाँ! आपने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! अब्बाद पर रहम फ़र्मा।

(दीगर मक़ाम: 5037, 5038, 5042)

۲۶۵۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ رَجُلًا يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((رَحِمَهُ اللَّهُ، لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَلَامًا وَكَلَامًا آتَاهُ اسْتَفْطَهُنَّ مِنْ سُورَةِ كَلَامًا وَكَلَامًا)). وَزَادَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَائِشَةَ: ((تَهَجَّدَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِي، فَسَمِعَ صَوْتَ عَبْدِ اللَّهِ يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ، أَصَوْتُ عَبْدِ اللَّهِ هَذَا؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: اللَّهُمَّ ارْحَمْ عَبْدًا)).

[أطرافه: ۵۰.۳۷, ۵۰.۳۸, ۵۰.۴۲]

इस हदीस की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन यज़ीद या अब्बाद की सूरत नहीं देखी। सिर्फ़ आवाज़ सुनी थी और उस पर ए'तिमाद किया, तो मा'लूम हुआ कि अंधा आदमी भी आवाज़ सुनकर शाहादत दे सकता है। अगर उसकी आवाज़ पहचानता हो। इमां जुहरी यही बतला रहे हैं कि नाबीना की गवाही कुबूल हो सकती है। जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) हैं। भला ये मुम्किन है कि नाबीना होने की वजह से कोई उनकी गवाही कुबूल न करे।

2656. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी सालिम बिन अब्दुल्लाह से और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाल (रज़ि.) रात में अज़ान देते हैं। इसलिये तुम लोग सेहरी खा पी सकते हो यहाँ तक कि (फ़ज़्र के लिये) दूसरी अज़ान पुकारी जाए। या (ये फ़र्माया) यहाँ तक कि अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की अज़ान सुन लो। अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) नाबीना थे और जब तक उनसे कहान जाता सुबह

۲۶۵۶- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ بَلَغَ يُودُنُ بَلِيلًا، فَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يُؤْذَنَ - أَوْ قَالَ: حَتَّى تَسْمَعُوا أَذَانَ - ابْنِ أُمِّ مَكْتُومٍ)) وَكَانَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ رَجُلًا أَعْمَى

हो गई है, वो अज्ञान नहीं देते थे। (राजेअ: 617)

لَا يُؤْذَنُ حَتَّى يَقُولَ لَهُ النَّاسُ: أَصَبَحْتَ.

[راجع: ٦١٧]

इस हदीष की मुताबकत बाब से ज़ाहिर है कि लोग इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की अज्ञान पर ए'तिमाद करते, खाना-पीना छोड़ देते। हालाँकि वो नाबीना थे। इससे भी नाबीना की गवाही का इल्बात मक्सूद है और उन लोगों की तर्दीद जो नाबीना की गवाही कुबूल न करने का फ़त्वा देते हैं।

2657. हमसे ज़ियाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन वरदान ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका से और उनसे मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ चन्द क़बाएँ आई तो मुझे मेरे बाप मखरमा (रज़ि.) ने कहा कि मेरे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की रिजदमत में चलो। मुम्किन है आप उनमें से कोई मुझे इनायत फ़र्माएँ। मेरे वालिद (हुज़रे अकरम ﷺ) के घर पहुँचकर दरवाज़े पर खड़े हो गए और बातें करने लगे। आप (ﷺ) ने उनकी आवाज़ पहचान ली और बाहर तशरीफ़ लाए, आपके पास एक क़बा भी थी, आप उसकी खूबियाँ बयान करने लगे। और फ़र्माया कि मैंने ये तुम्हारे ही लिये अलग कर रखी थी, सिर्फ़ तुम्हारे लिये। (राजेअ: 2599)

٢٦٥٧- حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَبِي مَرْثُومٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «الْعَبَسْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقْبِيَةً. فَقَالَ لِي أَبِي مَخْرَمَةَ: انْطَلِقْ بِنَا إِلَيْهِ عَنَى أَنْ يُعْطِنَا مِنْهَا شَيْئًا. فَقَامَ أَبِي دَانَ الْبَابِ فَكَلَّمَهُ فَقَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ صَوْتَهُ. خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَعَهُ قَبَاءٌ وَهُوَ يُرِيدُ مَخَاصِنَهُ وَهُوَ يَقُولُ: ((حَبَاتٌ هَذَا لَكَ، حَبَاتٌ هَذَا لَكَ)).» [راجع: ٢٥٩٩]

**तशरीह:** हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, फ़इन्न फीहि अन्नहू इअतमद अला सौतिही क़बल अय्यरा शख़्स हू या'नी इस हदीष से मसला यूँ प्राबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत मखरमा (रज़ि.) की सिर्फ़ आवाज़ सुनते ही उन पर ए'तिमाद कर लिया और आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ ले आए तो मा'लूम हुआ कि अँधा आदमी भी आवाज़ से सुने तो शहादत दे सकता है अगर उसकी आवाज़ पहचानता हो। इससे आँहज़रत (ﷺ) की गुरबा-परवरी भी ज़ाहिर है कि आप ग़रीबों का किस हद तक ख़याल फ़र्माते थे।

## बाब 12 : औरतों की गवाही का बयान

और (सूरह बक्रर: में) अल्लाह तआला का फ़र्माना कि, अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें (गवाही में पेश करो)

2658. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें अयाज़ बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या औरत की गवाही मर्द की गवाही के आधे के बराबर नहीं है? हमने अर्ज़ किया क्यूँ नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि यही तो उनकी अक्ल का

## ١٢- بَابُ شَهَادَةِ النِّسَاءِ

وَقَوْلُهُ تَعَالَى: «فَإِنْ لَمْ يَكُنَا رَجُلَيْنِ فَوَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ» [البقرة: ٢٨٢]

٢٦٥٨- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْثُومٍ أَخْبَرَنَا قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدُ عَنْ عِيَاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((أَلَيْسَ شَهَادَةُ الْمَرْأَةِ مِثْلُ نَصْفِ

नुक़सान है।

(राजेअ : 304)

شَهَادَةُ الرَّجُلِ؟ قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: فَلَيْتَ مِنْ

نَفْسَانِ عَقِيلَاهُ. [راجع: ٣٠٤]

**तशरीह :** जब ही तो अल्लाह तआला ने दो औरतों को एक मर्द के बराबर करार दिया है। तमाम हुक्मा का इस पर इतिफाक है कि औरत की खिल्फत ब निस्बत मर्द के जईफ़ है। इसके क़वा दिमाग़िया भी जिस्मानी क़वा के तरह मर्द से कमज़ोर हैं। अब अगर शाज़ोनादिर कोई औरत ऐसी निकल आई कि जिसकी जिस्मानी या दिमागी ताक़त मर्दों से ज़्यादा हो तो उससे अक़षरी फ़िद्री क़ायदे में कोई खलल नहीं आ सकता। ये सहीह है कि ता'लीम से मर्द और औरत के क़वा दिमागी में इस तरह रियाज़त और कसरत से क़वाए जिस्मानी में तरक्की हो सकती है। मगर किसी हाल में मर्दों पर फ़ज़ीलत मर्द के सिन्फ़ पर प्राबित नहीं हुई। और जिन लोगों ने ये ख़याल किया है कि ता'लीम और रियाज़त से औरतें मर्दों पर फ़ज़ीलत हासिल कर सकती हैं। ये उनकी ग़लती है। इसलिये कि बहूष नोअे ज़कूर और नोअे निस्वाँ में है न किसी ख़ास शख़्स मुज़क़र या मुअ़त्रफ़ में। क़स्तलानी ने कहा कि रमज़ान के चौद की रिवायत में एक शख़्स की शहादत काफ़ी है और अम्वाल के दआवी में एक गवाह और मुदई की क़सम पर फ़ैसला हो सकता है इसी तरह अम्वाल और हुक्क में एक मर्द और दो औरतों की शहादत पर भी और हुदूद, निकाह और क़िसास में औरतों की शहादत जाइज़ नहीं है। (वहीदी)

हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) ने अपनी मुहतरमा वालिदा का वाक़िया बयान किया कि वो मक्का शरीफ़ की एक अदालत में एक औरत के साथ पेश हुई। तो हाकिम ने इम्तिहान के तौर पर उनको अलग अलग करना चाहा। फ़ौरन उन्होंने कहा कि ऐसा करना जाइज़ नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला ने कुआन मजीद में फ़र्माया है, अन तज़िल्ल इहदाहुमा फतुजविकर इहदाहुमल्डख़रा (अल बक़र : 282) उन दो गवाह औरतों में से अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसको याद दिला दे और ये जुदाई की सूत में नामुम्किन है। हाकिम ने आपके इस्तिदलाल को तस्लीम किया।

### बाब 13 : बांदियों और गुलामों की गवाही का बयान

और हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि गुलाम अगर आदिल है तो उसकी गवाही जाइज़ है, शुरैह और ज़ुरारह बिन औफ़ा ने भी इसे जाइज़ करार दिया है। इब्ने सीरीन ने कहा कि उसकी गवाही जाइज़ है, सिवा इस सूत के जब गुलाम अपने मालिक के हक़ में गवाही दे। (क्योंकि उसमें मालिक की तरफ़दारी का अन्देशा रहता है) हसन और इब्राहीम ने मा'मूली चीज़ों में गुलाम की गवाही की इजाज़त दी है। क़ाज़ी शुरैह ने कहा कि तुममें से हर शख़्स गुलामों और बान्दियों की औलाद है।

### ١٣ - بَابُ شَهَادَةِ الْإِمَاءِ وَالْعَبِيدِ

وَقَالَ أَنَسٌ : شَهَادَةُ الْعَبْدِ حَاجِزَةٌ إِذَا كَانَ عَدْلًا. وَأَجَازَةٌ شَرِيعٌ وَزَرَارَةُ بْنُ أَوْفَى. وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ : شَهَادَتُهُ حَاجِزَةٌ إِلَّا الْعَبْدَ لِسَيِّدِهِ. وَأَجَازَةُ الْحَسَنِ وَإِبْرَاهِيمَ فِي الشَّيْءِ النَّافِي. وَقَالَ شَرِيعٌ : كُلُّكُمْ بَنُو عَمِيٍّ وَإِمَاءٍ.

मतलब ये है कि तुम सब अल्लाह के लौण्डी गुलाम हो और अल्लाह ही के लौण्डी गुलामों की औलाद हो, इसलिये किसी को किसी पर फ़ख़ करना जाइज़ नहीं है। हमारे इमाम अहमद बिन हंबल ने इसी के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया है कि लौण्डी गुलाम की जब वो आदिल और भिका हों, गवाही मक़बूल है। मगर चारो इमामों ने इसको जाइज़ नहीं रखा। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) लौण्डी गुलामों की शहादत जब वो आदिल भिका हों प्राबित फ़र्मा रहे हैं। बाब का तर्जुमा में नक़लक़र्दा आपार से आपका मुदआ बख़ूबी प्राबित होता है।

2659. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, वो इब्ने अबी मुलैका से, उनसे उक्बान बिन हारिष (रज़ि.) ने

٢٦٥٩ - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ

(दूसरी सनद) इमाम बुखारी ने कहा और हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना, कहा कि मुझसे उक्ब बा बिन हारिष (रज़ि.) ने बयान किया, या (ये कहा कि) मैंने ये हदीष उनसे सुनी कि उन्होंने उम्मे यह्या बिनते अबी इहाब से शादी की थी। उन्होंने बयान किया कि फिर एक स्याह रंग वाली बांदी आई और कहने लगी कि मैंने तुम दोनों को दूध पिलाया है। मैंने उसका जिक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया, तो आप (ﷺ) ने मेरी तरफ से मुँह फेर लिया पस मैं जुदा हो गया। मैंने फिर आपके सामने जाकर उसका जिक्र किया, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब (निकाह) कैसे (बाक़ी रह सकता है) जबकि तुम्हें उस औरत ने बता दिया है कि उसने तुम दोनों को दूध पिलाया था। चुनौचे आपने उन्हें उम्मे यह्या को अपने साथ रखने से मना कर दिया। (राजेअ : 88)

इस हदीष में जिक्र है कि एक लौण्डी की शहादत औहज़रत (ﷺ) ने कुबूल फ़र्माई और उसकी बिना पर एक सहाबी उक्ब बा बिन हारिष (रज़ि.) और उनकी औरत में जुदाई करा दी, मा'लूम हुआ कि लौण्डी गुलामों की शहादत कुबूल की जा सकती है, जो लोग इसके ख़िलाफ़ कहते हैं उनका क़ौल दुरुस्त नहीं।

#### बाब 14 : दूध की माँ की गवाही का बयान

2660. हमसे अबू आसिम ने बयान किया उमर बिन सईद से, वो इब्ने अबी मुलैका से, उनसे उक्ब बा बिन हारिष ने बयान किया कि मैंने एक औरत से शादी की थी। फिर एक औरत आई और कहने लगी कि मैंने तुम दोनों को दूध पिलाया था। इसलिये मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़र्माया कि जब तुम्हें बता दिया गया (कि एक ही औरत तुम दोनों की दूध की माँ है) तो फिर अब और क्या सूरत हो सकती है। अपनी बीवी को अपने से अलग कर दो या इसी तरह के अल्फ़ाज़ आपने फ़र्माए। (राजेअ : 88)

मा'लूम हुआ कि रज़ाअत के बारे में एक ही औरत मुरज़िआ (दूध पिलाने वाली) की शहादत काफ़ी है जैसा कि इस हदीष से ज़ाहिर है, इससे मुरज़िआ की शहादत का भी इब्बात हुआ।

الْحَارِثُ ح. وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقْبَةُ بْنُ الْحَارِثِ أَوْ سَمِعْتُهُ مِنْهُ: أَنَّهُ تَزَوَّجَ أُمَّ يَحْيَى بِنْتِ أَبِي إِبَاهِبٍ، قَالَ: فَجَاءَتْ أُمُّهُ سَوْدَاءُ فَقَالَتْ: لَقَدْ أَرْضَعْتُكُمَا. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ - فَأَعْرَضَ عَنِّي، قَالَ: فَتَحَيْثُ لَقَدْ كَرْتُ ذَلِكَ لَكَ، قَالَ: ((وَكَيْفَ وَقَدْ زَعَمْتَ أَنَّهَا أَرْضَعْتُكُمَا. فَهَاءُ عَنْهَا)). [راجع: ٨٨]

#### ١٤ - بَابُ شَهَادَةِ الْمُرْضِعَةِ

٢٦٦٠ - حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً، فَجَاءَتْ امْرَأَةٌ لِّقَالَتْ: إِنِّي لَقَدْ أَرْضَعْتُكُمَا، فَاتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: وَكَيْفَ وَقَدْ قِيلَ؟ دَفَعَهَا عَنْكَ. أَوْ نَحْوَهُ)). [راجع: ٨٨]

#### बाब 15 : औरतों का आपस में एक-दूसरे की अच्छी आदतों के बारे में गवाही देना

#### ١٥ - بَابُ تَغْدِيلِ النِّسَاءِ بَعْضُهُنَّ بَعْضًا



2661. हमसे अबू रबीअ सुलैमान बिन दाऊद ने बयान किया, इमाम बुखारी ने कहा कि इस हदीष के कुछ मतालिब मुझको इमाम अहमद बिन यूनुस ने सपझाए। कहा हमसे फुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब जुहरी ने बयान किया, उनसे उर्वा बिन जुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अल्लफा बिन यक्कास लैषी और अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने वो क़िस्सा बयान किया, जब तोहमत लगाने वालों ने उन पर तोहमत लगाई लेकिन अल्लाह तआला ने खुद उन्हें इससे बरी करार दिया। जुहरी ने बयान किया (कि जुहरी से बयान करने वाले, जिनका सनद में जुहरी के बाद ज़िक्र है) तमाम रावियों ने आइशा (रज़ि.) की इस हदीष का एक एक हिस्सा बयान किया था, कुछ रावियों को कुछ दूसरे रावियों से हदीष ज्यादा याद थी और वो बयान भी ज्यादा बेहतर तरीक़े पर कर सकते थे। बहरहाल उन सब रावियों से मैंने ये हदीष पूरी तरह महफूज़ कर ली थी जिसे वो आइशा (रज़ि.) से बयान करते थे। उन रावियों में हर एक की रिवायत से दूसरे रावी की तज़दीक़ होती थी। उनका बयान था कि आइशा (रज़ि.) ने कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र में जाने का इरादा करते तो अपनी बीवियों के दरम्यान कुआँ डालते। जिसका नाम निकलता, सफ़र में वही आपके साथ जाती। चुनौचे एक ग़ज़वा के मौक़े पर जिसमें आप भी शिर्कत कर रहे थे, आप (ﷺ) ने कुआँ डलवाया और मेरा नाम निकला। अब मैं आपके साथ थी। ये वाक़िया पदों की आयत के नाज़िल होने के बाद का है। ख़ैर मैं एक होद में सवार रहती, उसी में बैठे बैठे मुझको उतारा जाता था इस तरह हम चलते रहे। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) जिहाद से फ़ारिग होकर वापस हुए और हम मदीना के करीब पहुँच गए तो एक रात आपने कूच का ऐलान करवाया। मैं ये हुक्म सुनते ही उठी और लश्कर से आगे बढ़ गई। जब हाज़त से फ़ारिग हुई तो कजावे के पास आ गई। वहाँ पहुँचकर जो मैंने अपना सीना टटोला तो मेरा अज़फ़ार के काले नगीनों का हार मौजूद नहीं था। इसलिये मैं वहाँ दोबारा पहुँची (जहाँ कज़ाए हाज़त के लिये गई थी) और मैंने हार

۲۶۶۱- حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ - وَأَفْهَمَنِي بَعْضُهُ أَحْمَدُ - قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرْوَةَ بْنِ الرَّبِيعِ وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَبِّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ اللَّثَمِيِّ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الْإِسْلَامِ مَا قَالُوا فَرَأَاهَا اللَّهُ مِنْهُ. قَالَ الزُّهْرِيُّ وَكُلُّهُمْ حَدَّثَنِي طَائِفَةٌ مِنْ حَدِيثِهَا - وَبَعْضُهُمْ أَوْعَى مِنْ بَعْضٍ وَاتَّبَعْتُ لَهُ الْفَصَاحَةَ - وَوَعَيْتُ عَنْ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ الْحَدِيثَ الَّذِي حَدَّثَنِي عَنْ عَائِشَةَ، وَبَعْضُ حَدِيثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا. رَعَمُوا أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ سَفَرًا أَفْرَغَ بَيْنَ أَزْوَاجِهِ، فَأَيُّهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ. فَأَفْرَغَ بَيْنَنَا فِي غَزَاةٍ غَزَاهَا فَمَخْرَجَ سَهْمِي فَمَخَرَجْتُ مَعَهُ بَعْدَ مَا أَنْزَلَ الْحِجَابَ، فَأَنَا أَحْمَلُ فِي هَؤُلَاءِ وَأَنْزَلَ إِلَيَّ. فَسَبَرْنَا حَتَّى إِذَا فَرَّغَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ غَزَوَاتِهِ بَلْكَ وَقَفَلْ وَذَنُونا مِنَ الْمَدِينَةِ أَذْنَ لَيْلَةٍ بِالرَّحِيلِ، فَكُنْتُ حِينَ أَذَنُوا بِالرَّحِيلِ لَمَسْتُ حَتَّى جَاوَزْتُ الْجَبْنَ، فَلَمَّا فَطِنْتُ شَأْنِي أَقْبَلْتُ إِلَى الرَّحْلِ فَلَمَسْتُ صَنْدَرِي، فَإِذَا عِقْدٌ لِي مِنْ جَزَعِ أَطْفَارٍ قَدْ انْقَطَعَ، فَرَجَعْتُ فَلَا تَمَسُّ عِقْدِي، فَحَسَنِي ابْتِذَاةً.

को तलाश किया। इस तलाश में देर हो गई। इस अर्से में वो अम्हाब जो मुझे सवार कराते थे, आए और मेरा होदज उठाकर मेरे ऊँट पर रख दिया। वो यही समझे कि मैं उसमें बैठी हूँ। उन दिनों औरतें हल्की-फुल्की होती थीं, भारी भरकम नहीं। गोश्त उनमें ज्यादा नहीं रहता था क्योंकि बहुत मा' मूली गिजा खाती थीं। इसलिये उन लोगों ने जब होदज को उठाया तो उन्हें उसके बोझ में कोई फर्क मा' लूम नहीं हुआ। मैं यँ भी नौ उम्र लड़की थी। चुनाँचे अम्हाब ने ऊँट को हॉक दिया और खुद भी उसके साथ चलने लगे। जब लश्कर खाना हो चुका तो मुझे अपना हार मिला और मैं पड़ाव की जगह आई। लेकिन वहाँ कोई आदमी मौजूद न था। इसलिये मैं उस जगह गई जहाँ पहले मेरा क़याम था। मेरा ख़याल था कि जब वो लोग मुझे नहीं पाएँगे तो यहीं लौटकर आएँगे। (अपनी जगह पहुँचकर) मैं यँ ही बैठी हुई थी कि मेरी आँख लग गई और मैं सो गई। सफ़वान बिन मुअज़ल सुलमी शुम्मा ज़ब्वानी (रज़ि.) लश्कर के पीछे थे (जो लश्करियों की गिरी-पड़ी चीज़ें उठाकर उन्हें उनके मालिक तक पहुँचाने की ख़िदमत के लिये मुक़रर थे) वो मेरी तरफ़ से गुज़रे तो एक सोये हुए इंसान का साथ नज़र आया इसलिये और करीब पहुँचे। पर्दा के हुक्म से पहले वो मुझे देख चुके थे। उनके इन्ना लिल्लाह पढ़ने से मैं जाग गई। आख़िर उन्होंने अपना ऊँट बिठाया और उसके अगले पाँव को मोड़ दिया (ताकि बिला किसी मदद के मैं खुद सवार हो सकूँ) चुनाँचे मैं सवार हो गई, अब वो ऊँट पर मुझे बिठाए हुए खुद उसके आगे आगे चलने लगे। इसी तरह जब हम लश्कर के पास पहुँचे तो लोग भरी दोपहर में आराम के लिये पड़ाव डाल चुके थे। (इतनी ही बात थी जिसकी बुनियाद पर) जिसे हलाक होना था वो हलाक हुआ और तोहमत के मामले में पेश पेश अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल (मुनाफ़िक) था। फिर हम मदीना में आ गए और मैं एक महीने तक बीमार रही। तोहमत लगाने वालों की बातों का ख़ूब चर्चा हो रहा था। अपनी इस बीमारी के दौरान मुझे इससे भी बड़ा शुब्हा होता था कि उन दिनों रसूलुल्लाह (ﷺ) का वो लुत्फ़ व करम भी मैं नहीं देखती थी जिनका मुशाहिदा अपनी पिछली बीमारियों में कर चुकी थी। पस

أَقْبَلَ الَّذِينَ يَدْخُلُونَ لِي فَأَحْمَلُوا نَوْدَجِي فَرَحَلُوهُ عَلَى بَعِيرِي الَّذِي كُنْتُ رَكْبَ وَهُمْ يَخْسِبُونَ أَنِّي فِيهِ، وَكَانَ لِنِسَاءٍ إِذَا ذَلِكَ خِفَافًا لَمْ يَقْلُنَّ وَلَمْ يَنْهَنْهُنَّ اللَّحْمُ، وَإِنَّمَا يَأْكُلْنَ الْغُلْفَةَ مِنَ الطَّعَامِ فَلَمْ يَسْتَكْبِرِ الْقَوْمُ حِينَ رَفَعُوهُ فَقَالَ الْيَهُودُجُ فَأَحْمَلُوهُ، وَكُنْتُ جَارِيَةً خَدِيقَةَ السَّنِّ، فَبَعَثُوا الْجَمَلَ وَسَارُوا، فَوَجَدْتُ عَقْدِي بَعْدَ مَا اسْتَمَرَّ الْجَيْشُ، فَجِئْتُ مِنْهُمْ وَلَيْسَ فِيهِ أَحَدٌ، فَأَمَمْتُ مَنَزِلِي الَّذِي كُنْتُ بِهِ فَظَنَنْتُ أَنَّهُمْ سَيَقْدِرُونَنِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ، فَبَيْنَا أَنَا جَالِسَةٌ غَلَبَنِي غَيَاةٌ فَبِمَتْ، وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعْطَلِ السَّلْمِيُّ ثُمَّ الذُّكْوَانِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ، فَأَصْبَحَ عِنْدَ مَنَزِلِي، فَرَأَى مَوَادَّ إِنْسَانٍ نَائِمٍ، فَأَتَانِي، وَكَانَ يَرَانِي قَبْلَ الْحِجَابِ، فَاسْتَفْظْتُ بِاسْتِزْجَاعِهِ حَتَّى آتَاخُ وَاحِلَتُهُ فَرُطِيَّةٌ يَدَهَا فَرَكْبَتُهَا، فَانْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ حَتَّى أَتَيْنَا الْجَيْشَ بَعْدَ مَا تَوَلَّوْا مُعَرَّسِينَ فِي نَحْرِ الظُّهَيْرَةِ، فَهَلَكَ مِنْ هَٰذَلِكَ، وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى الْإِفْكَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي إِبْنِ سَلُولٍ، فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَاسْتَكْنَيْتُ بِهَا شَهْرًا وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ مِنْ قَوْلِ أَصْحَابِ الْإِفْكَ، وَيَرْتَبِئِي فِي وَجْهِ أَنِّي لَا أَرَى مِنَ النَّبِيِّ ﷺ اللَّطْفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ أَمْرَضُ، إِنَّمَا يَدْخُلُ فَيَسْلُمُ ثُمَّ يَقُولُ: ((كَيْفَ بَيْكُم؟)) لَا

आप घर में जब आते तो सलाम करते और सिर्फ़ इतना पूछ लेते, मिज़ाज कैसा है? जो बातें तोहमत लगाने वाले फैला रहे थे उनमें से कोई बात मुझे मा'लूम नहीं थी। जब मेरी सिहत कुछ ठीक हुई तो (एक रात) मैं उम्मे मिस्तह के साथ मनासेअ की तरफ़ गई। ये हमारे क़ज़ाए हाजत की जगह थी, हम यहाँ सिर्फ़ रात ही में आते थे। ये उस ज़माने की बात है जब अभी हमारे घरों के पास बैतुल ख़ला नहीं बने थे। मैदान में जाने के सिलसिले में (क़ज़ाए हाजत के लिये) हमारा तज़े अमल क़दीम अरब की तरह था, मैं और उम्मे मिस्तह बिनते अबी रहम चल रहे थे कि वो अपनी चादर में उलझकर गिर पड़ीं और उनकी जुबान से निकल गया, मिस्तह बर्बाद हो। मैंने कहा, बुरी बात आपने अपनी जुबान से निकाली, ऐसे शख्स को बुरा कह रही हैं आप, जो बद्र की लड़ाई में शरीक था। वो कहने लगीं, ऐ! जो कुछ उन सबने कहा है वो आपने नहीं सुना, फिर उन्होंने तोहमत लगाने वालों की सारी बातें सुनाई और उन बातों को सुनकर मेरी बीमारी और बढ़ गई। मैं जब अपने घर वापस हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और दर्यापस्त किया, मिज़ाज कैसा है? मैंने अर्ज किया कि आप मुझे वालिदेन के यहाँ जाने की इजाज़त दे दीजिए। उस वक़्त मेरा इरादा ये था कि उनसे इस ख़बर की तहकीक़ करूंगी। औहज़रत (ﷺ) ने मुझे जाने की इजाज़त दे दी और मैं जब घर आई तो मैंने अपनी वालिदा (उम्मे रुम्मान) से इन बातों के बारे में पूछा, जो लोगों में फैली हुई थीं। उन्होंने फ़र्माया, बेटी! इस तरह की बातों की परवाह न कर, अल्लाह की क़सम! शायद ही ऐसा हो कि तुझ जैसी हसीन व ख़ूबसूरत औरत किसी मर्द के घर में हो और उसकी सौकनों भी हों, फिर भी इस तरह की बातें न फैलाई जाया करें। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! (सौकनों का क्या ज़िक्र) वो तो दूसरे लोग इस तरह की बातें कर रहे हैं। उन्होंने बयान किया कि वो रात मैंने वहीं गुज़ारी, सुबह तक मेरे आंसू नहीं थमते थे और न नींद आई। सुबह हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवी को अलग करने के सिलसिले में मश्वरा करने के लिये अली बिन अबी तालिब और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बुलवाया। क्योंकि वहा (इस

अश्वर) इस्ती'र) مِنْ ذَلِكَ حَتَّى تَقُتْ، فَخَرَجْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ قَبْلَ الْمَنَاصِعِ مُتَبَرِّزًا، لَا نَخْرُجُ إِلَّا لَيْلًا إِلَى لَيْلٍ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ تَخْجِدَ الْكَتْفَ قَرِيبًا مِنْ يُونُسَ، وَأَمَرْنَا أَمْرَ الْقَرْبِ الْأَوَّلِ فِي الْبَرِيَةِ أَوْ فِي السَّنَةِ. فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ بِنْتُ أَبِي رَهْمٍ نَمْشِي، فَغَرَسَتْ فِي مِرْطَئِهَا فَقَالَتْ: تَعَسَّ مِسْطَحٌ. فَقُلْتُ لَهَا: بِنْسَ مَا قُلْتَ. أَسْتَيْنَ رَجُلًا شَهِدَ بِنْرًا؟ فَقَالَتْ: يَا فِتْنَاءُ، أَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالُوا: فَأَخْبَرْتَنِي بِقَوْلِ أَهْلِ الْإِفْكِ، فَازْدَدْتُ مَرَضًا إِلَى مَرَضِي. فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى بَنِي دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَسَلَّمَ فَقَالَ: ((كَيْفَ يَكُونُ؟)) فَقُلْتُ: انْذَنَ لِي إِلَى أَبِي. قَالَتْ: وَأَنَا جَنِينٌ أُرِيدُ أَنْ أَسْتَيْقِنَ الْخَبَرَ مِنْ قَبْلِهِمَا - فَأَذِنَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَأَتَيْتُ أَبِي، فَقُلْتُ لَأُمِّي: مَا يَتَخَدَّثُ بِهِ النَّاسُ؟ فَقَالَتْ: يَا بَنِيَّةُ، هُوَ بِنْتُ عَلٍ تَفْسِكِ الشَّانَ، فَوَا اللَّهَ لَقَلَّمَا كَانَتْ امْرَأَةً قَطُ وَحِيْنَةً عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا وَلَهَا صَرَائِرُ إِلَّا أَكْثَرْنَ عَلَيْهَا فَقُلْتُ: سَبَّحَانَ اللَّهَ، وَلَقَدْ يَتَخَدَّثُ النَّاسُ بِهَذَا؟ قَالَتْ: فَبِتُ بَلَكِ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَصْبَحْتُ لَا يَرِقُّ لِي دَمْعٌ وَلَا أَكْتَحِلُ بَنَوْمٍ. ثُمَّ أَصْبَحْتُ، فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأَسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ جَنَيْنَ ابْنَةَ الْوَحْشِيِّ يَسْتَشِيرُهُمَا فِي لِرَاقِ

सिलसिले में) अब तक नहीं आई थी। उसामा (रज़ि.) को आप की बीवियों से आपकी मुहब्बत का इल्म था। इसलिये उसी के मुताबिक़ मश्वरा दिया और कहा, आपकी बीवी या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वह, हम उनके बारे में ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानतो। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने आप पर कोई तंगी नहीं की है, औरतें उनके सिवा भी बहुत हैं। बांदी से भी आप दर्याफ़्त फ़र्मा लीजिए, वो सच्ची बात बयान करेंगी। चुनौचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बरीरा (रज़ि.) को बुलाया (जो आइशा रज़ि. की ख़ास ख़ादिमा थीं) और पूछा, बरीरा! क्या तुमने आइशा (रज़ि.) में कोई ऐसी चीज़ देखी है जिससे तुम्हे शक़ हुआ हो। बरीरा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मबज़ूज़ फ़र्माया है। मैंने उनमें कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जिसका ऐब मैं उन पर लगा सकूँ। इतनी बात ज़रूर है कि वो नौ इम्र लड़की हैं आटा गूँधकर सो जाती हैं फिर बकरी आती है और उसे खा लेती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसी दिन (मिम्बर पर) खड़े होकर अब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल के बारे में मदद चाही। आपने फ़र्माया, एक ऐसे शख़्स के बारे में मेरी कौन मदद करेगा जिसकी अज़ियत और तकलीफ़ देही का सिलसिला अब मेरी बीवी के मामले तक पहुँच चुका है। अल्लाह की क़सम! अपनी बीवी के बारे में ख़ैर के सिवा और कोई चीज़ मुझे मा'लूम नहीं। फिर नाम भी इस मामले में उन्होंने एक ऐसे शख़्स का लिया है जिसके बारे में भी ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानता। खुद मेरे घर में जब भी वो आए हैं तो मेरे साथ ही आए। (ये सुनकर) सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वल्लाह मैं आपकी मदद करूँगा। अगर वो शख़्स (जिसके बारे में तोहमत लगाने का आपने इशारा किया है) औस क़बीले से होगा तो हम उसकी गर्दन मार देंगे (क्योंकि सअद रज़ि. खुद क़बीला औस के सरदार थे) और अगर वो ख़जरज का आदमी हुआ, तो आप हमें हुक्म दें, जो भी आपका हुक्म होगा हम ता'मील करेंगे। उसके बाद सअद बिन उबादा (रज़ि.) खड़े हुए जो क़बीला ख़जरज के सरदार थे।

أَهْلِي، فَأَمَّا أَسَمَةُ فَأَخْبَرَ عَلِيَّ بِالَّذِي يَعْلَمُ لِي نَفْسِي مِنَ الْوَدِّ لَهُمْ، فَقَالَ أَسَمَةُ: أَهْلَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا نَعْلَمُ وَاللَّهِ إِلَّا خَيْرًا. وَأَمَّا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَمْ يُضَيِّقِ اللَّهُ عَلَيْكَ، وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ، وَمَنْ لِي بِالْجَارِيَةِ تَصُدُّكَ. فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَرِيرَةَ فَقَالَ: ((يَا بَرِيرَةُ هَلْ رَأَيْتِ فِيهَا شَيْئًا يُرِيكَ؟)) فَقَالَتْ بَرِيرَةُ: لَا وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، إِنْ رَأَيْتِ مِنْهَا أَمْرًا أَغْيِصُهُ عَلَيْهَا لَطُ أَكْثَرَ مِنْ أَنِهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السَّنِ تَنَامُ عَنِ الْعَجِينِ فَتَأْكُلُ الدَّاجِنَ فَتَأْكُلُهُ. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ فَاسْتَعْلَزَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي النَّهْلِ سَلُولَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ يَغْتَرُّنِي مِنْ رَجُلٍ بَلَّغَنِي أَذَاهُ لِي أَهْلِي، فَوَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلَّا خَيْرًا، وَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلًا مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلَّا خَيْرًا، وَمَا كَانَ يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِي إِلَّا مَعِيَ)). فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَنَا وَاللَّهِ أَغْدُرُكَ مِنْهُ، إِنْ كَانَ مِنَ الْأَوْسِ حَرَبْنَا غَنَقَهُ، وَإِنْ كَانَ مِنْ إِخْوَانِنَا مِنَ الْخَزْرَجِ أَمَرْنَا فَفَعَلْنَا فِيهِ أَمْرًا. فَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ - وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلًا صَالِحًا، وَلَكِنْ اخْتَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ - فَقَالَ: كَذَبْتُ لَعَمْرُ اللَّهِ، وَاللَّهِ لَا تَقْتُلُهُ وَلَا

हालाँकि उससे पहले अब तक बहुत मालेह थे। लेकिन उस वक्त (सअद बिन मुआज़ रज़ि. की बात पर) हमिय्यत से गुस्सा हो गये थे और (सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) से) कहने लगे अल्लाह के दवाम व बका की कसम! तुम झूठ बोलते हो, न तुम उसे क़त्ल कर सकते हो और न तुम्हारे अंदर उसकी ताक़त है। फिर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) खड़े हुए (सअद बिन मुआज़ के चचाज़ाद भाई) और कहा, अल्लाह की कसम! हम उसे क़त्ल कर देंगे (अगर रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म हुआ) कोई शुब्हा नहीं रह जाता कि तुम भी मुनाफ़िक़ हो क्योंकि मुनाफ़िक़ों की तरफ़दारी कर रहे हो। इस पर औस और खज़रज दोनों क़बीलों के लोग उठ खड़े हुए और आगे बढ़ने ही वाले थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जो अभी तक मिम्बर पर तशरीफ़ रखते थे। मिम्बर से उतरे और लोगों को नरम किया। अब सब लोग ख़ामोश हो गए और आप भी ख़ामोश हो गए। मैं उस दिन भी रोती रही। न मेरे आंसू थमते थे और न नींद आती थी। फिर मेरे पास मेरे माँ-बाप आए। मैं दो रातों और एक दिन से बराबर रोती रही थी ऐसा मा'लूम होता था कि रोते रोते मेरे दिल के टुकड़े हो जाएँगे। उन्होंने बयान किया कि माँ-बाप मेरे पास बैठे हुए थे कि एक अंसारी औरत ने इजाज़त चाही और मैंने उन्हें इजाज़त दे दी और वो भी मेरे साथ बैठकर रोने लगीं। हम सब इसी तरह थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और बैठ गए। जिस दिन से मेरे बारे में वो बातें कही जा रही थीं जो कभी नहीं कही गई थीं। उस दिन से मेरे पास आप नहीं बैठे थे। आप (ﷺ) एक महीने तक इतिज़ार करते रहे थे। लेकिन मेरे मामले में कोई वह्य आप पर नाज़िल नहीं हुई थी। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) ने तशहहूद पढ़ी और फ़र्माया, आइशा! तुम्हारे बारे में मुझे ये ये बातें मा'लूम हुई। अगर तुम इस मामले में बरी हो तो अल्लाह तआला भी तुम्हारी बराअत ज़ाहिर कर देगा और अगर तुमने गुनाह किया है तो अल्लाह तआला से मफ़िरत चाहो और उसके हुज़ूर तौबा करो कि बन्दा जब अपने गुनाह का इकरार करके तौबा करता है तो अल्लाह भी उसकी तौबा कुबूल करता है। ज्यों ही आप (ﷺ) ने अपनी बातचीत ख़त्म की, मेरे आंसू इस तरह सूख

فَقَالَ كَذَبْتَ بِعَمْرِ اللَّهِ، وَاللَّهِ لَيَقْتُلَنَّ، فَإِنَّكَ مُنَاقِقٌ تُجَادِلُ عَنِ الْمُنَافِقِينَ. فَتَارَ الْحَيَّانِ الْأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ حَتَّى مَمُوءَا، وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى الْمِصْبَرِ. فَقَوْلَ لَحَقُّهُمْ حَتَّى سَكَنُوا وَسَكَتَ. وَبَكَتْ يَوْمَ لَا يَرِقًا لِي دَمْعٌ، وَلَا أَتَجِدُ يَوْمَ، فَاصْبَحَ عِنْدِي أَبُوَيَّ وَقَدْ بَكَتْ لَيْلَتَيْنِ وَيَوْمًا حَتَّى أَظُنُّ أَنَّ الْيَكَاةَ فَلَا يُلْقِي كَبِدِي. قَالَتْ: قَيْنَا مِمَّا جَالَسَانِ عِنْدِي وَأَنَا أَبْكِي إِذْ اسْتَأْذَنْتِ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ فَادْنَتْ لَهَا فَجَلَسَتْ تَبْكِي مَعِي، قَيْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ إِذْ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَجَلَسَ وَلَمْ يَجْلِسْ عِنْدِي مِنْ يَوْمٍ قَبْلَ لِي مَا قَبْلَ قَبْلَهَا، وَقَدْ مَكَتْ شَهْرًا لَا يُوحَى إِلَيَّ فِي شَأْنِي شَيْءٌ. قَالَتْ: فَتَشْهَدُ ثُمَّ قَالَ: ((يَا عَائِشَةُ فَإِنَّهُ يَلْقَانِي عَنْكَ وَكَذًا وَكَذًا، فَإِنْ كُنْتَ بِرَبْنَةٍ فَسِيرْتِ لَكَ اللَّهُ، وَإِنْ كُنْتَ أَلَمْتِ فَاسْتَغْفِرِي اللَّهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ، فَإِنَّ الْعَبْدَ إِذَا اعْتَرَفَ بِذَنْبِهِ ثُمَّ تَابَ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ)) فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَقَالَتَهُ فَلَمَّ دَمْعِي حَتَّى مَا أَحِسُّ مِنْهُ قَطْرَةً، وَلَقْتُ لَأَيَّ: أَجِبْ عَنِّي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ. قَالَ: وَاللَّهِ مَا أَذْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ. قُلْتُ لَأَيَّ: أَجْنِبْنِي عَنِّي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ. فِيمَا قَالَ. قَالَتْ: وَاللَّهِ مَا أَذْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ. قَالَتْ: وَأَنَا جَارِيَةٌ حَبِيَّةُ السُّنِّ

गए कि अब एक क्रतरा भी महसूस नहीं होता था। मैंने अपने बाप से कहा कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से मेरे बारे में कहिये। लेकिन उन्होंने कहा, क्रसम अल्लाह की! मुझे नहीं मा'लूम कि आँहज़रत (ﷺ) से मुझे क्या कहना चाहिये। मैंने अपनी माँ से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया, उसके बारे में आँहज़र (ﷺ) से आप ही कुछ कहिये, उन्होंने भी यही फ़र्मा दिया कि क्रसम अल्लाह की! मुझे मा'लूम नहीं कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) से क्या कहना चाहिये। उन्होंने बयान किया कि मैं नौ उम्र लड़की थी। कुआँन मुझे ज़्यादा याद नहीं था। मैंने कहा अल्लाह गवाह है, मुझे मा'लूम हुआ कि आप लोगों ने भी लोगों की अफ़वाह सुनी हैं और आप लोगों के दिलों में वो बात बैठ गई है और उसकी तस्दीक़ भी आप लोग कर चुके हैं, इसलिये अब अगर मैं कहूँ कि मैं (इस बोहतान से) बरी हूँ, और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं वाकई इससे बरी हूँ तो आप लोग मेरी इस मामले में तस्दीक़ नहीं करेंगे। लेकिन अगर मैं (गुनाह को) अपने ज़िम्मे ले लूँ, हालाँकि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैं इससे बरी हूँ, तो आप लोग मेरी बात की तस्दीक़ कर देंगे। क्रसम अल्लाह की! मैं इस वक़्त आप लोगों की कोई मिषाल यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के वालिद (यअक़ूब अलैहिस्सलाम) के सिवा नहीं पाती कि उन्होंने भी फ़र्माया था कि पस सब्बे जमील, सब्बे बेहतर है और जो कुछ तुम कहते हो उस मामले में मेरा मददगार अल्लाह तआला है। उसके बाद बिस्तर पर मैंने अपना रुख़ दूसरी तरफ़ कर लिया और मुझे उम्मीद थी कि खुद अल्लाह तआला मेरी बराअत करेगा लेकिन मेरा ये ख़याल कभी न था कि मेरे मुता'ल्लिक़ वहा नाज़िल होगी। मेरी अपनी नज़र में हैषियत इससे बहुत मा'मूली थी कि कुआँन मजीद में मेरे बारे में कोई आयत नाज़िल हो। हाँ मुझे इतनी उम्मीद ज़रूर थी कि आप कोई ख़बाब देखेंगे जिसमें अल्लाह तआला मुझे बरी फ़र्मा देगा। अल्लाह गवाह है कि अभी आप अपनी जगह से उठे भी न थे और न उस वक़्त घर में मौजूद कोई बाहर निकला था कि आप पर वहा नाज़िल होने लगी और (शिद्दते वहा से) आप जिस तरह पसीने पसीने हो जाया करते थे वही कैफ़ियत आपकी अब भी थी।

لَا أَرَا كَثِيرًا مِنَ الْقُرْآنِ، فَقُلْتُ: إِنِّي  
وَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّكُمْ سَمِعْتُمْ مَا يَخْتَلِفُ  
بِهِ النَّاسُ وَوَقَرْتُ فِي أَنْفُسِكُمْ وَصَدَقْتُمْ بِهِ،  
وَلَكِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي بَرِيئَةٌ - وَاللَّهُ يَعْلَمُ  
أَنِّي لَبَرِيئَةٌ - لَا تَصْدُقُونِي بِذَلِكَ، وَلَكِنْ  
اخْبَرْتُ لَكُمْ بِأَمْرٍ - وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ  
- لَتَصْدُقَنِي. وَاللَّهُ مَا أَحَدٌ لِي وَلَكُمْ مَثَلًا  
إِلَّا أَبَا يُوسُفَ إِذْ قَالَ: ﴿لَتَصْبِرَ جَبْرِيْلُ  
وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾. ثُمَّ  
تَحَوَّلْتُ عَلَى بَرَاهِيهِ وَأَنَا أَرْجُو أَنْ يَبْرئَنِي  
اللَّهُ. وَلَكِنْ وَاللَّهِ مَا ظَنَنْتُ أَنْ يُنْزَلَ فِي  
شَأْنِي وَحَقًّا، وَلَئِنْ اخْبَرْتُ فِي نَفْسِي مِنْ أَنْ  
يَتَكَلَّمَ بِالْقُرْآنِ فِي أَمْرِي، وَلَكِنِّي كُنْتُ  
أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي الْيَوْمِ  
رُؤْيَا يُبْرئُنِي، فَرَأَى اللَّهُ مَا رَأَى مِنْ جَلِيسَةٍ وَلَا  
خَرَجَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ حَتَّى أَنْزَلَ  
عَلَيْهِ، فَأَخَذَهُ مَا كَانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْهَرَجَةِ،  
حَتَّى إِنَّهُ لَيَتَخَلَّزُ مِنْهُ بِمِثْلِ الْجَمَانِ مِنَ  
الْفَرَقِ فِي يَوْمٍ شَاتٍ. فَلَمَّا سُرِّيَ عَنْ  
رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ بِضَخْكَ لَكَانَ أَوَّلُ  
كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا أَنْ قَالَ لِي: ((يَا عَائِشَةُ  
احْمَدِي اللَّهَ، فَقَدْ بَرَّكَ اللَّهُ)). قَالَتْ لِي  
أُمِّي: قُومِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَقُلْتُ:  
لَا وَاللَّهِ لَا أَقُومُ إِلَيْهِ، وَلَا أَحْمَدُ إِلَّا اللَّهَ.  
فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَإِنَّ الَّذِينَ جَافُوا  
بِالْإِنْفِكِ غَصْبَةً مِنْكُمْ﴾ [السور: ١١]  
الآيَات. فَلَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ ﷻ هَذَا لِي بَرَأَتِي

पसीने के क़त्तरे मोतियो की तरह आपके जिस्मे मुबारक से गिरने लगे। हालाँकि सर्दी का मौसम था। जब वह का सिलसिला ख़त्म हुआ तो आप (ﷺ) हंस रहे थे और सबसे पहला कलिमा जो आपकी जुबाने मुबारक से निकला, वो ये था कि आइशा! अल्लाह की हम्द बयान कर कि उसने तुम्हें बरी करार दे दिया है। मेरी वालिदा ने कहा बेटी जा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने जाकर खड़ी हो जा। मैंने कहा, नहीं क़सम अल्लाह की मैं आपके पास जाकर खड़ी न होऊँगी और मैं तो सिर्फ़ अल्लाह की हम्दो-बना करूँगी। अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई थी, जिन लोगों ने तोहमत तराशी की है। वो तुम ही में से कुछ लोग हैं। जब अल्लाह तआला ने मेरी बरात में ये आयत नाज़िल फ़र्माई, तो अबूबक्र (रज़ि.) ने जो मिस्तहबिन अम्ना (रज़ि.) के अज़राजात कराबत की वजह से ख़ुद ही उठाते थे कहा कि क़सम अल्लाह की अब मैं मिस्तहब पर कभी कोई चीज़ ख़र्च नहीं करूँगा कि वो भी आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने में शरीक था। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। तुममें से साहिबे फ़ज़ल व साहिबे माल लोग क़सम न खाएँ। अल्लाह तआला का इशार्द ग़फ़ूरुर्हीम तका अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! बस मेरी यही ख़वाहिश है कि अल्लाह तआला मेरी मफ़िरत कर दे। चुनाँचे मिस्तहब (रज़ि.) को जो आप पहले दिया करते थे वो फिर देने लगे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैनब बिनते जहश (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन से भी मेरे बारे में पूछा था। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि ज़ैनब! तुम (आइशा रज़ि. के बारे में) क्या जानती हो? और क्या देखा है? उन्होंने जवाब दिया मैं अपने कान और अपनी आँख की हिफ़ाज़त करती हूँ (कि जो चीज़ मैंने देखी हो या न सुनी हो वो आपसे बयान करने लगूँ) अल्लाह गवाह है कि मैंने उनमें ख़ैर के अलावा और कुछ नहीं देखा। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि यही मेरी बराबर की थीं, लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें तक्वा की वजह से बचा लिया। अबुर्बीआ ने बयान किया कि हमसे फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे इर्वा ने, उनसे आइशा और अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने इसी हदीष की तरहा

قَالَ أَبُو بَكْرٍ الصَّدِيقُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحِ بْنِ أَنَاثَةَ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ - وَاللَّهُ لَا أَنْفِقُ عَلَى مِسْطَحِ شَيْئًا أَبَدًا بَعْدَ مَا قَالَ لِغَابِثَةَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: هُوَ لَا يَأْتِلُ أَوْلُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعْيُ - إِلَى قَوْلِهِ - غَفُورٌ رَحِيمٌ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ بَلَى وَاللَّهِ، إِنِّي لَأَجِبُ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لِي، فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحِ الَّذِي كَانَ يُجْرِي عَلَيْهِ. وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَسْأَلُ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ عَنْ أَمْرِي، فَقَالَ: ((يَا زَيْنَبُ مَا عَلِمْتُ؟ مَا زَأْنْتُ؟)) فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَحْمِي سَعْيِي وَبَصْرِي، وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا إِلَّا خَيْرًا. قَالَتْ: وَهِيَ الَّتِي كَانَتْ تُسَامِي، فَعَصَمَهَا اللَّهُ بِالْوَرَعِ)).  
قَالَ: وَخَذْنَا فَلَيْحَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ غَابِثَةَ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ مِثْلَهُ. قَالَ: وَخَذْنَا فَلَيْحَ عَنْ رَبِيعَةَ بِنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَتَعْنِي بِنْتُ سَعِيدٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ بِنِ أَبِي بَكْرٍ مِثْلَهُ.

[راجع: २०९३]

अबुरबीआ ने (दूसरी सनद में) बयान किया कि हमसे फुलैह ने बयान किया, उनसे रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान और यह्या बिन सईद ने और उनसे कासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र ने इसी हदीष की तरह। (रजिअ: 2593)

**तारीख:** मुज्ताहिदे मुत्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये तवील हदीष मज़कूरा ऊन्वान के तहत इसलिये लाए हैं कि उसमें बरीरा (रजि.) की गवाही का जिक्र है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनसे हज़रत आइशा (रजि.) के बारे में पूछा और उन्होंने आपके ख़साइल (आदतों) व अख़लाक़ पर इत्मीनान का इज़हार किया। इसी तरह हदीष में हज़रत ज़ैनब (रजि.) की गवाही का भी जिक्र है।

वाक़िया इफ़क इस्लामी तारीख़ का एक अहमतरिनी वाक़िया है। मुहहिषीने किराम ने इससे बहुत से मसाइल को निकाला है। ख़ुद हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को कई जगह लाए हैं और मुख्तलिफ़ मसाइल इससे निकालते हैं। वाक़िये की तफ़सीलात ख़ुद हदीष में मौजूद है। शुरू में आँहज़रत (ﷺ) को इससे सख्त रंज पहुँचा कि आपकी शाने नुबुव्वत पर एक धब्बा लग रहा था। मगर तहकीक़े हक़ के बाद आपने अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल मुनाफ़िक़ को इस इल्ज़ाम तराशी में संगीन सज़ा देनी चाही क्योंकि इस इल्ज़ाम का तराशने वाला और उसको हवा देने वाला वही बदबख़्त था। हज़रत आइशा (रजि.) ने जब इस इल्ज़ाम का जिक्र सुना तो रोते-रोते उनका बुरा हाल हो गया बल्कि बुखार भी चढ़ गया। आपकी वालिदा माजिदा हज़रत उम्मे रुम्मान ने आपको बहुत समझाया बुझाया। मगर आपके रंज में इज़ाफ़ा ही हो रहा था। आपका खाना-पीना, सोना सब ख़त्म हो रहा था। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने अपने ज़ाती इत्मीनान के लिये उसामा बिन ज़ैद (रजि.) से मश्वरा लिया तो उन्होंने हज़रत आइशा (रजि.) की बराअत (बेगुनाही) पर शाहादत दी, हज़रत अली (रजि.) के मश्वरे के मुताबिक़ आपने हज़रत बरीरा (रजि.) से मा'लूम किया, तो उन्होंने भी साफ़ साफ़ आपकी मा'सूमियत पर गवाही दी और हज़रत आइशा (रजि.) की बराअत में सूरह नूर नाज़िल हुई जिसमें अल्लाह तआला ने उसे (बुहताने अज़ीम) करार दिया।

सुब्हानल्लाह! हज़रत आइशा (रजि.) के फ़ज़ल व शर्फ़ का क्या ठिकाना कि आपकी शान में कुआँन नाज़िल हुआ, जो क़यामत तक पढ़ा जाएगा। आपके फ़ज़ाइल बेशुमार हैं। अल्लाह ने आपको अपने महबूब रसूल (ﷺ) की अज़वाजे मुतहहरा में शर्फ़े ख़ास से नवाज़ा कि रसूले करीम (ﷺ) ने आपकी गोद में आपके घर में इंतिकाल फ़र्माया, फिर वही घर क़यामत तक के लिये अल्लाह के महबूब नबी (ﷺ) की आरामगाह में तब्दील हो गया।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वल्गरज़ु मिन्हु सुवालहु (ﷺ) बरीरत अन हालि आयशत व जवाबुहा बिबर अतिहा व इतिमादुन्नबिय्यि (ﷺ) अला क़ौलिही हत्ता ख़तब फस्तअज़र मिन अब्दिल्लाहि इब्नि उबय कज़ालिक सुवालहु मिन ज़ैनब बन्ति ज़हशिन अन हालि आयशत व जवाबुहा बिबर अतिहा अयज़न व क़ौलु आयशत फी हक्कि ज़ैनब हियल्लन्ती कानत तसामीनी फअसिमहल्लाहु बिल्वरइ फफ़ी ज़ालिक मुरादुत्तर्जुमति. (फ़त्ह) आँहज़रत (ﷺ) का हज़रत आइशा (रजि.) के बारे में बरीरा (रजि.) से पूछना और उनका हज़रत आइशा (रजि.) की पाकीज़गी के बारे में बयान देना और उनके बयान पर आँहज़रत (ﷺ) का ए'तिमाद कर लेना, यही मक़सूदे बाब है यहाँ तक कि आँहज़रत (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में ख़ुत्बा दिया और उसके बारे में मुसलमानों से अपील की। ऐसा ही हज़रत ज़ैनब (रजि.) से हज़रत आइशा (रजि.) के बारे में पूछना और उनका हज़रत आइशा (रजि.) की बराअत में जवाब देना जिसके बारे में हज़रत आइशा (रजि.) ने फ़र्माया कि वो भी मेरी सौकन थी, मगर अल्लाह पाक ने उसकी परहेज़गारी की वजह से उनको ग़लत बयानी से बचाया, इसी से बाब के तर्जुमे का इल्बात हुआ।

हज़रत सअद बिन उबादा की ख़फ़ी महज़ इस ग़लतफ़हमी पर थी कि सअद बिन मुआज़ क़बीला औस से पुरानी



अदावत की वजह से ऐसा कह रहे हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) का मक़सद यही है कि हज़रत सअद बिन इबादा निहायत सालेह आदमी थे मगर ग़लतफ़हमी ने उनकी हमियत को जगा दिया था। (रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन)

## बाब 16 : जब एक मर्द दूसरे मर्द को अच्छा कहे तो ये काफ़ी है

और अबू जमीला ने कहा कि मैंने एक लड़का रास्ते में पड़ा हुआ पाया। जब मुझे हज़रत उमर (रज़ि.) ने देखा तो फ़र्माया, ऐसा न हो ये ग़ार, आफ़त का ग़ार हो, गोया उन्होंने मुझ पर बुरा गुमान किया, लेकिन मेरे क़बीले के सरदार ने कहा कि ये सालेह आदमी हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ऐसी बात है तो फिर उस बच्चे को ले जा, उसका नफ़का हमारे (बैतुलमाल के) ज़िम्मे रहेगा।



या'नी एक शख्स का तज़किया काफ़ी है और शाफ़िइया और मालिकिया के नज़दीक कम से कम दो शख्स तज़किया के लिये ज़रूरी हो।

ग़ार की मिशाल अरब में उस मौक़े पर कही जाती है जहाँ ज़ाहिर में सलामती की उम्मीद हो और दरपदा उसमें हलाकत हो। हुआ ये था कि कुछ लोग जान बचाने को एक ग़ार (गुफा) में जाकर छुपे, वो ग़ार उन पर गिर पड़ा था या दुश्मन ने वहीं आकर उनको आ लिया। जबसे ये मिशाल जारी हो गई। हज़रत उमर (रज़ि.) ये समझे कि उस (दुश्मन) ने हरामकारी न की हो और ये लड़का उसका नुतफ़ा हो मगर एक शख्स की गवाही पर आपका दिल साफ़ हो गया और आपने उस बच्चे का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा जारी कर दिया।

तअदील का मतलब ये कि किसी आदमी की इम्दा आदतों व ख़साइल और उसकी सदाक़त और संजीदगी पर गवाही देना, इस्तिलाहे मुहद्दिपीन में तअदील का यही मतलब है कि किसी रावी की प्रकाहत प्राबित करना।

2662. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल वहहाब ने ख़बर दी, कहा कि हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया एक शख्स ने रसूले करीम (ﷺ) के सामने दूसरे शख्स की ता'रीफ़ की, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! तूने अपने साथी की गर्दन काट डाली। तूने अपने साथी की गर्दन काट डाली, कई बार (आप ने इसी तरह फ़र्माया) फिर फ़र्माया कि अगर किसी के लिये अपने किसी भाई की ता'रीफ़ करनी ज़रूरी हो जाए तो यूँ कहे कि मैं फ़लाँ शख्स को ऐसा समझता हूँ, आगे अल्लाह ख़ूब जानता है, मैं अल्लाह के सामने किसी को बेऐब नहीं कह सकता। मैं समझता हूँ वो ऐसा ऐसा है अगर उसका हाल जानता हो। (दीगर मक़ाम : 6061, 6062)

## बाब 17 : किसी की ता'रीफ़ में मुबालागा करना

### ١٦- بَابُ إِذَا زَكَى رَجُلٌ رَجُلًا كَفَاهُ

وَقَالَ أَبُو جَمِيلَةَ: وَجَدْتُ مَثْبُودًا فَلَمَّا رَأَى عُمَرُ قَالَ: عَسَى الْفَوَيْزُ أَبُوْنَا، كَأَنَّهُ يَهْمُنِي. قَالَ عَرِينِي: أَنَّهُ رَجُلٌ صَالِحٌ. قَالَ: كَذَلِكَ، أَذْهَبَ وَعَلَيْنَا نَفَقَةٌ.

٢٦٦٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدُ الْحَدَّاءُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَانِي رَجُلٌ عَلَى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: «وَيْلَكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ (مِرَارًا). ثُمَّ قَالَ: مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا أَخَاهُ لَا مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: أَحْسَبُ فَلَانًا. وَاللَّهِ خَسِيئَةٌ. وَلَا أَرْكَبُ عَلَى إِمَةٍ أَحَدًا. أَخْبِيئَةُ كَذًا وَكَذَا. إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَلِكَ مِنْهُ».

[طرقاه في: ٦٠٦١, ٦٠٦٢]

### ١٧- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الْإِطْنَابِ فِي

मकरूह है जो जानता हो बस वही कहे

2663. हमसे मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जकरिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू मूसा अशअरी (रजि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने सुना कि एक शख्स दूसरे की ता'रीफ कर रहा था और मुबालगा से काम ले रहा था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया कि तुम लोगों ने उस शख्स को हलाक कर दिया। उसकी पुश्त तोड़ दी। (दीगर मक्काम : 6060)

चूँकि गवाह की तअदील और तज्किया का बयान हो रहा है लिहाज़ा ये बतला दिया गया कि किसी की ता'रीफ में हद से गुजर जाना और किसी के सामने उसकी ता'रीफ करना शरअन ये भी मजूम है कि उससे सुनने वाले के दिल में अजब बखुदपसन्दी और किर्र पैदा होने का अन्देशा है। लिहाज़ा ता'रीफ में मुबालगा हर्गिज़ न करना चाहिये और ता'रीफ किसी के मुँह पर न की जाए और उसकी बाबत जिस क़दर मा'लूमत हो वस उन पर इज़ाफ़ा न हो कि सलामती उसी में है।

### बाब 18 : बच्चों का बालिग़ होना और उनकी शहादत का बयान

और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, जब तुम्हारे बच्चे एहतिलाम की उम्र को पहुँच जाएँ तो फिर उन्हें (घरों में दाखिल होते वक़्त) इजाज़त लेनी चाहिये।

मुगीरह (रजि.) ने कहा कि मैं एहतिलाम की उम्र को पहुँचा तो मैं बारह साल का था और लड़कियों का बुलूग़ हैज़ से मा'लूम होता है। अल्लाह तआला के इस इशार्द की वजह से कि औरतें जो हैज़ से मायूस हो चुकी हैं, अल्लाह तआला के इस इशार्द, अन् यज़अना हमलहुन्न तक। हसन बिन झालेह ने कहा कि मैंने अपनी एक पड़ोसन को देखा कि वो इक्कीस साल की उम्र में दादी बन चुकी थीं।

हज़रत इमाम बुखारी (रजि.) का मक़सदे बाब ये मा'लूम होता है कि बच्चे की उम्र पन्द्रह साल को पहुँच जाए तो वो बालिग़ समझा जाएगा और उसकी गवाही कुबूल होगी। यूँ बच्चे बारह साल की उम्र में भी बालिग़ हो सकते हैं। मगर ये इतिफ़ाक़ी अमर है। औरतों के लिये हैज़ आ जाना बुलूग़त की दलील है। वक़द अज्मअल इलमाउ अत्रल हैज़ बुलूग़न फ़ी हक्किन्निसा (फ़तह) या'नी इलमा का इम्माअ है कि औरतों का बलूग़ उनका हाइज़ा होना ही है।)

2664. हमसे अब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि

الْمَذْح، وَلَيَقُلْ مَا يَقْلَم

٢٦٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّاحِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاهُ حَدَّثَنِي بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ رَجُلًا يُثْنِي عَلَى رَجُلٍ وَتَطْرِبُهُ فِي مَذْحِيهِ فَقَالَ: «أَهْلَكْتُمْ - أَوْ قَطَعْتُمْ - ظَهْرَ الرَّجُلِ». [طرفه ن: ٦٠٦٠].

١٨- بَابُ بُلُوغِ الصَّبِيَّانِ وَشَهَادَتِهِمَا وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى «وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمْ الْخُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا» [النور: ٥٩]

وَقَالَ مُبِيرَةُ: اخْتَلَمْتُ وَأَنَا ابْنُ ثِنْتِي عَشْرَةَ سَنَةً. وَبُلُوغُ النِّسَاءِ فِي الْحَيْضِ لِقَوْلِهِ عَزَّوَجَلَّ: «وَاللَّائِي يَخْسَنُ مِنَ الْمَحِيضِ - إِلَى قَوْلِهِ - أَنْ يَضَعْنَ خَمْلَهُنَّ» [الطلاق: ٤]. وَقَالَ الْحَسَنُ بْنُ صَالِحٍ: أَذْرَكْتُ جَارَةً لَنَا جَدَّةً بِنْتُ إِحْدَى وَعِشْرِينَ سَنَةً.

٢٦٦٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ

हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के मौके पर वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने (जंग पर जाने के लिये) पेश हुए तो उन्हें इजाज़त नहीं मिली, उस वक़्त उनकी उम्र चौदह साल थी। फिर ग़ज़व-ए-ख़न्दक के मौके पर पेश हुए तो इजाज़त मिल गई। उस वक़्त उनकी उम्र पन्द्रह साल थी। नाफ़ेअ ने बयान किया कि जब मैं उमर बिन अब्दुल अजीज़ (रह.) के यहाँ उनकी ख़िलाफ़त के ज़माने में गया तो मैंने उनसे ये हदीस बयान की तो उन्होंने फ़र्माया कि छोटे और बड़े के दरम्यान (पन्द्रह साल ही की) हद है। फिर उन्होंने अपने हाकिमों को लिखा कि जिस बच्चे की उम्र पन्द्रह साल की हो जाए (उसका फ़ौजी वज़ीफ़ा) बैतुलमाल से मुक़र्रर कर दें। (दीगर मक़ाम : 4097)

मा'लूम हुआ कि पन्द्रह साल की उम्र होने पर बच्चे पर शरई अहक़ाम जारी हो जाते हैं और उस उम्र में वो गवाही के क़ाबिल हो सकता है।

2665. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सप्रयान बिन सुलैम ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर बालिग़ पर जुम्'आ के दिन गुस्ल वाजिब है। (राजेअ : 858)

۲۶۶۵- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ غَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَنْبَغِي لِلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((غُسْلُ يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ)). [راجع: ۸۵۸]

ये इस अमर की तरफ़ इशारा है कि शरई वाजिबात इंसान पर उसके बालिग़ होने ही पर नाफ़िज़ होते हैं। शहादत (गवाही) भी एक शरई अमर है जिसके लिये बालिग़ होना ज़रूरी है। बुलूग़त की आख़िर हद पन्द्रह साल है जैसा कि पिछली रिवायत में मज़कूर हुआ। उससे इमाम बुखारी (रह.) ने ये भी निकाला कि एहतिलाफ़ होने से मर्द जवान हो जाता है गो उसकी उम्र पन्द्रह साल को न पहुँची हो।

बाब 19 : मुहआ अलैह को क़सम दिलाने से पहले हाकिम का मुहई से ये पूछना तेरे पास गवाह हैं?

2666, 67. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी और उन्हें आ'मश ने, उन्हें शक्कीक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने कोई ऐसी क़सम खाई, जिसमें वो झूठा था, किसी मुसलमान का माल छीनने के लिये, तो वो अल्लाह तआला से इस तरह मिलेगा कि अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक

۱۹- بَابُ سُؤَالِ الْحَاكِمِ الْمُدْعِي : هَلْ لَكَ يَتَّةٌ؟ قَبْلَ اليمينِ

۲۶۶۶، ۲۶۶۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ - وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ - لَيَقْطَعَ بِهَا مَالَ -

होगा। उन्होंने बयान किया कि उस पर अशअष बिन कैस (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह गवाह है, ये हदीष मेरे ही बारे में आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माई थी। मेरा एक यहूदी से एक ज़मीन का झगड़ा था। यहूदी मेरे हक़ का इन्कार कर रहा था। इसलिये मैं उसे नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लाया। आप (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया (क्योंकि मैं मुद्दई था) कि गवाही पेश करना तुम्हारे ही ज़िम्मे है। उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज किया, गवाह तो मेरे पास कोई भी नहीं। इसलिये आँहुज़ूरत (ﷺ) ने यहूद से फ़र्माया कि फिर तुम क़सम खाओ। अशअष (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं बोल पड़ा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर तो ये क़सम खा लेगा और मेरा माल हज़म कर जाएगा। उन्होंने बयान किया कि उसी वाक़िये पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, जो लोग अल्लाह के अहद और क़समों से मा' मूली पूँजी ख़रीदते हैं आख़िर तक। (राजेअ: 2356, 2357)

अदालत के लिये ज़रूरी है कि पहले मुद्दई (वादी) से गवाह तलब करे। उसके पास गवाह न हों तो मुद्दआ अलैह (प्रतिवादी) से क़सम ले, अगर मुद्दआ अलैह झूठी क़सम खाता है तो वो सख़्त गुनाहगार होगा, मगर अदालत में बहुत लोग झूठ से बचना ज़रूरी नहीं जानते हालाँकि झूठी गवाही कबीरा गुनाहों में से है। ऐसे ही झूठी क़सम खाकर किसी का माल हड़प करना अकबरल कबाईर या नी बहुत ही बड़ा कबीरा गुनाह है।

## बाब 20 : दीवानी और फौजदारी दोनों मुक़दमों में मुद्दआ अलैह से क़सम लेना

और नबी करीम (ﷺ) ने (मुद्दई से) फ़र्माया कि तुम अपने दो गवाह पेश करो वरना मुद्दआ अलैह की क़सम पर फ़ैसला होगा। कुतैबा ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे (कूफ़ा के क़ाज़ी) इब्ने शिब्रमा ने बयान किया कि (मदीना के क़ाज़ी) अबुज़्ज़िनाद ने मुझसे मुद्दई की क़सम के साथ सिर्फ़ एक गवाह की गवाही के (नाफ़िज़ हो जाने के) बारे में बातचीत की तो मैंने कहा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है, और तुम अपने मर्दों में से दो गवाह कर लिया करो, फिर अगर दोनों मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें हों, जिन गवाहों से कि तुम मुत्पईन हो, ताकि अगर कोई एक उन दो में से भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। मैंने कहा कि अगर मुद्दई की क़सम के साथ सिर्फ़ एक गवाह की गवाही काफ़ी होती तो फिर ये फ़र्माने की ज़रूरत थी कि अगर एक

امْرِئٍ مُّسْلِمٍ لَّقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبَانٌ. قَالَ: فَقَالَ الْأَخْبَثُ بْنُ قَيْسٍ: لَقِيَ اللَّهَ وَاللَّهُ كَانَ ذَلِكَ، كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ أَرْضٌ فَجَحَدَنِي فَقَدَّمَنِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَلَيْكَ بَيِّنَةٌ؟)) قَالَ: قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَقَالَ لِلْيَهُودِيِّ: ((اخْلِفْ)). قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذَا يَخْلِفُ وَيَلْعَبُ بِمَا لِي. قَالَ: فَأَنزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾ [آل عمران: 77] إِلَى آخِرِ الْآيَةِ.

[راجع: 2306, 2307]

## ٢٠ - بَابُ الْيَمِينِ عَلَى الْمُدْعَى

### عَلَيْهِ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَخْذِ

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((شَاهِدَاكَ أَوْ يَمِينُ)) وَقَالَ قَتِيبَةُ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي شَرْمَةَ كَلَّمَنِي أَبُو الزُّنَادِ فِي شَهَادَةِ الشَّاهِدِ وَيَمِينِ الْمُدْعَى، فَقُلْتُ: قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ. فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِنْ تَرْوُسٍ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكَّرَ بِإِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى﴾ [البقرة: 282] قُلْتُ: إِذَا كَانَ يُكْفَى بِشَهَادَةِ شَاهِدٍ وَيَمِينِ الْمُدْعَى لَمَّا

भूल जाए तो दूसरी उसको याद दिला दे। दूसरी औरत के याद दिलाने से फ़ायदा ही क्या है?

نَحْضُجُ أَنْ تَذَكَّرَ إِحْدَاهُمَا الْآخَرَى، مَا كَانَ يَصْنَعُ بِذِكْرِ هَلَاكِهِ الْآخَرَى.

**तशरीह:** अबुज्जिनाद जिनका ऊपर जिक्र हुआ मदीना के क़ाज़ी और इमाम मालिक के उस्ताद हैं। अहले मदीना और इमाम शाफ़िई और अहमद और अहले हदीष सब इसके क़ाइल हैं कि अगर मुद्ई के पास एक ही गवाह हो तो मुद्ई से क़सम लेकर एक गवाह और क़सम पर फ़ैसला कर देंगे। मुद्ई की क़सम दूसरे गवाह के क़ायम मुक़ाम हो जाएगी और ये अमर हदीषे सहीह से प्राबित है जिसको इमाम मुस्लिम ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक गवाह और एक क़सम पर फ़ैसला किया और अम्हाबे सुनन ने इसको अबू हुरैरह (रज़ि.) और जाबिर (रज़ि.) से निकाला। इब्ने खुज़ैमा ने कहा ये हदीष सहीह है।

इब्ने शिब्रमा कूफ़ा के क़ाज़ी थे। अहले कूफ़ा जैसे हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) इसे जाइज़ नहीं कहते और सहीह हदीष के बरख़िलाफ़ आयते कुआन से इस्तिदलाल करते हैं। हालाँकि आयते कुआन हदीष के बरख़िलाफ़ नहीं हो सकती और कुआन का जानने वाला और समझने वाला आँहज़रत (ﷺ) से ज़्यादा और कोई नहीं था। (वहीदी)

आयत से इब्ने शिब्रमा ने जो इस्तिदलाल किया है वो सहीह नहीं है क्योंकि कुआन मजीद में मामला करने वालों को ये हुक्म दिया है कि वो मामला करते वक़्त दो मर्दों या एक मर्द और दो औरतों को गवाह बना लें। दो औरतें इसलिये रखी हैं कि वो नाकिसुल अक्ल और नाकिसुल हिफ़ज़ होती हैं। एक भूल जाए तो दूसरी उसको याद दिला दे और ये जाहिर है कि मुद्ई से जो क़सम ली जाती है वो उसी वक़्त जब निज़ाबे शहादत का पूरा न हो, अगर एक मर्द और दो औरतें या दो मर्द मौजूद हों तब मुद्ई से क़सम लेनी ज़रूरी नहीं है।

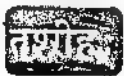
इमाम शाफ़िई ने फ़र्माया, यमोनन मअशहाद की हदीष कुआन के ख़िलाफ़ नहीं है। बल्कि हदीष में बयान है उस अमर का जिसका जिक्र कुआन में नहीं है और अल्लाह तआला ने खुद हमको ये हुक्म दिया है कि हम उसके रसूल के हुक्म पर चलें और जिस चीज़ से आपने मना फ़र्माया कि उससे बाज़ रहें। मैं (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम) कहता हूँ कि कुआन में तो ये जिक्र है कि अपने पांव वुजू में धोओ, फिर हन्फ़िया मौज़ों पर मसह करूँ जाइज़ कहते हैं। इसी तरह कुआन में ये जिक्र है कि अगर पानी न पाओ तो तयम्मूम कर लो और हन्फ़िया उसके बरख़िलाफ़ एक ज़ईफ़ हदीष की रू से नबीज़े तमर से वुजू करूँ जाइज़ समझते हैं और लुत्फ़ ये है कि नबीज़े तमर की ज़ईफ़ और मन्हूल हदीष ज़ईफ़ क़रार देकर उससे किताबुल्लाह पर ज़्यादाती जाइज़ हैं और यमीन मअशहाद की सहीह और मशहूर हदीष को रद्द करते हैं। व हल हाज़ा इल्ला जुल्मुन अज़ीम मिन्हु (वहीदी)

हदीषे हाज़ा के ज़ेल मरहूम लिखते हैं या'नी जब मुद्ई के पास गवाह न हों। बैहकी ने अमर बिन शुऐब अन् अबीह अन जदिही से मर्फूअन यूँ निकाला, अल् बय्थिनतु अला मनिहआ बल्थमीनु मन अन्कर मा'लूम हुआ कि मुद्आ अलैह पर हर हाल में क़सम खाना लाज़िम होगा। जब मुद्ई के पास शहादत न हो, ख़वाह मुद्ई और मुद्आ अलैह में इख़्तिलात और रब्त (सम्पर्क) हो या न हो। इमाम शाफ़िई और अहले हदीष और जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है, लेकिन इमाम मालिक कहते हैं कि मुद्आ अलैह से उसी वक़्त क़सम ली जाएगी। जब उसमें और मुद्ई में इर्तिबात और मुआमलात हों। वरना हर शख़्स शरीफ़ आदमियों को क़सम खिलाने के लिये झूठे दावे उन पर करेगा। (वहीदी)

2668. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने लिखा था, नबी करीम (ﷺ) ने मुद्आ अलैह के लिये क़सम खाने का फ़ैसला किया था। (राजेअ :

٢٦٦٨ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((كَتَبَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى بِالْمُؤْمِنِ عَلَى الْمُدْعَى عَلَيْهِ)).

2669, 70. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जर्री ने बयान किया मंसूर से, उनसे अबू वाईल ने बयान किया कि अब्दुल्लाह (रजि.) ने कहा कि जो शख्स (झूठी) कसम किसी का माल हासिल करने के लिये खाएगा तो अल्लाह तआला से वो इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह पाक उस पर गजबनाक होगा। उसके बाद अल्लाह तआला ने (इस हदीष की) तस्दीक के लिये ये आयत नाज़िल फ़र्माई। जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी कसमों से थोड़ी पूँजी ख़रीदते हैं, अज़ाबे अलीम तक। फिर अशअब्र बिन क्रैस (रजि.) हमारी तरफ़ तशरीफ़ लाए और पूछने लगे कि अबू अब्दुलहमान (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि.) तुमसे कौनसी हदीष बयान कर रहे थे। हमने उनकी यही हदीष बयान की तो उन्होंने कहा कि उन्होंने सहीह बयान की, ये आयत मेरे ही बारे में नाज़िल हुई थी। मेरा एक शख्स से झगड़ा था। हम अपना मुकदमा रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले गए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि या तुम दो गवाह लाओ, वरना इसकी कसम पर फ़ैसला होगा। मैंने कहा कि (गवाह मेरे पास नहीं हैं लेकिन अगर फ़ैसला कसम पर होगा) फिर तो ये ज़रूर ही कसम खा लेगा और कोई परवाह न करेगा। नबी करीम (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया कि जो शख्स भी किसी का माल लेने के लिये (झूठी) कसम खाएगा तो अल्लाह तआला से वो इस हाल में मिलेगा कि वो उस पर गजबनाक होगा। उसकी तस्दीक में अल्लाह तआला ने मज़कूर वाला आयत नाज़िल फ़र्माई थी, फिर उन्होंने यही आयत तिलावत की। (राजेज़ : 2356, 2357)



कुछ हन्फ़िया ने इस हदीष से ये दलील ली है कि यमीन मअशशाहिद पर फ़ैसला करना दुरुस्त नहीं और ये इस्तिदलाल फ़ासिद है कि यमीन मअशशाहिदीन की शक़ में दाख़िल है तो मतलब ये है कि दो गवाह लाए, इस तरह से कि दो मर्द हों या एक मर्द और दो औरतें या एक मर्द और एक कसम वरना मुद्दा अलैह से कसम ले। ये हन्फ़िया इतना ग़ौर नहीं करते कि अल्लाह और रसूल (ﷺ) के कलाम को बाहम मिलाना बेहतर है या उनमें मुख़ालफ़त करना, एक पर अमल करना, एक को तर्क करना। (वहोदी)

अलहम्दुलिल्लाह कि हरमे नबवी मदीनतुल मुनव्वरा में 9 अप्रैल 1970 ईस्वी को हुज़ूर (ﷺ) के मवाजा शरीफ़ में बैठकर यहाँ तक मतन को बग़ौर पढ़ा गया।

बाब 21 : अगर किसी ने कोई दा'वा किया या (अपनी औरत पर) ज़िना का इल्जाम लगाया और गवाह लाने के लिये मुहलत चाही तो मुहलत दी जाएगी

٢٦٦٩، ٢٦٧٠ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: ((مَنْ خَلَفَ عَلَى يَمِينٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالًا لِقَىٰ اللَّهُ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبًا، ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ تَعْدِيَةً ذَلِكَ: هَذِهِ الَّذِينَ يَخْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ - إِلَى - عَذَابٍ أَلِيمٍ)). ثُمَّ إِنَّ الْأَشْجَثَ بْنَ قَيْسٍ عَوَّجَ إِلَيْنَا فَقَالَ: مَا يُحَدِّثُكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ فَحَدَّثَنَا بِمَا قَالَ: فَقَالَ: صدق، لَقِيَ أَنزَلْتُ، كَانَ يَتْبَعُ وَتَيْنَ رَجُلٍ بِخُصُومَةٍ لِي شَيْءٍ، فَاتَّخَصَمْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: شَاهِدَا أَوْ يَمِينُهُ. فَقُلْتُ: إِنَّهُ إِذَا يَخْلِفُ وَلَا يُتَالَى: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ خَلَفَ عَلَى يَمِينٍ يَسْتَحِقُّ بِهَا مَالًا - وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ - لِقَىٰ اللَّهُ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبًا)). فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعْدِيَةً ذَلِكَ. ثُمَّ اقْرَأَ هَذِهِ (الآية)). [راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

٢١ - بَابُ إِذَا ادَّعَىٰ أَوْ قَذَفَ فَلَهُ أَنْ يَلْتَمِسَ الْبَيِّنَةَ وَيَنْطَلِقَ لِطَلَبِ الْبَيِّنَةِ

जैसे हिसाब देखने के लिये मुहलत दी जाएगी। अगर मुहलत के बाद एक गवाह लाया और दूसरा गवाह हाज़िर करने के लिये और मुहलत चाहे तो फिर मुहलत दी जाएगी।

2671. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे इकिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के सामने अपनी बीवी पर शुरैक बिन सहमाअ के साथ तोहमत लगाई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर गवाह ला वरना तुम्हारी पीठ पर हद लगाई जाएगी। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हममें से कोई शख्स अगर अपनी औरत पर किसी दूसरे को देखेगा तो गवाह ढूँढने दौड़ेगा? आँहज़रत (ﷺ) बराबर यही फ़र्माते रहे कि गवाह ला वरना तुम्हारी पीठ पर हद लगाई जाएगी। फिर लिआन की हदीष का ज़िक्र किया। (दीगर मक़ाम : 4747, 5307)

۲۶۷۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامٍ قَالَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ هِلَالَ بْنَ أُمَيَّةٍ قَذَفَ امْرَأَتَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ بِشْرِكٍ مِنْ مَخَنَاءَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «الْيَتَةُ، أَوْ حَدٌّ لِي ظَهْرَكَ»، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِذَا رَأَى أَحَدُنَا عَلَى امْرَأَتِهِ رَجُلًا يَنْطَلِقُ يَلْتَمِسُ الْيَتَةَ؟ فَجَعَلَ يَقُولُ: «الْيَتَةُ وَإِلَّا حَدٌّ لِي ظَهْرَكَ. قَدْ كَرَّ خَلِيفَتُ اللَّعَانِ».

[طرمه : ۴۷۴۷، ۵۳۰۷].



मतलब ये है कि दा'वा करने या किसी पर तोहमत लगाने के बाद अगर मुद्दई के पास फ़ौरी तौर पर गवाह न हों तो इतनी उस अमर की मुहलत दी जाएगी कि वो गवाह तलाश करके अदालत में पेश करे। हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) के सामने उसका अपना चशमदीद वाक़िया था और खुद अपनी बीवी का मामला था, दूसरी तरफ़ इशादि रसूल पाक (ﷺ) कि शरअी क़ानून के तहत चार गवाह पेश करो, उसने ह़ैरान व परेशान होकर ये बात कही जो हदीष में मज़कूर है। आखिर अल्लाह पाक ने उस मुश्किल का हल लिआन की सूत में खुद ही पेश फ़र्माया और रसूल करीम (ﷺ) ने लिआन के बारे में मुफ़स्सल हदीष इशाद फ़र्माई। इससे ये भी साबित हुआ कि जुम्ला अह्लादीषे नबवी का असल माख़ूज कुआनि करीम ही है, इस हकीक़त के पेशेनज़र कुआनि मजीद मतन है और हदीषे नबवी उसकी शरह है जो लोग महज कुआनि मजीद पर अमल करने का नारा बुलन्द करते हैं और अह्लादीषे नबवी की तकज़ीब करते (झुठलाते) हैं, वे शैतानी फ़रेब में गिरफ़्तार हैं और गुमराही के अमीक ग़ार (गहरे गड्ढे) में गिर चुके हैं। जिसका नतीजा हलाकत, तबाही, गुमराही और दोज़ख़ है। अल्लाह की मार उन लोगों पर जो कुआनि मजीद और हदीषे नबवी में तज़ाद साबित करें। कुआनि पर ईमान का दा'वा करें और हदीष का इन्कार करें। क़ातलहुमुल्लाहु अज़ा यूफ़कून. (अत् तौबा : 56)

इसाफ़ की नज़र से देखा जाए तो फ़ितन-ए-इन्कारे हदीष के बानी वो लोग हैं जिन्होंने अह्लादीषे नबवी को ज़न्रियात के दर्जे में रखकर उनकी अहमियत को गिरा दिया। हदीषे नबवी जो बसनेदे सहीह साबित हो उसको महज जन्न (गुमान) कह देना बहुत बड़ी जुअत है। अल्लाह उन फुक़हा पर रहम करे जो इस तख़फ़ीफ़े हदीष के मुर्तकिब हुए जिन्होंने फ़ितन-ए-इन्कारे हदीष का दरवाज़ा खोल दिया। अल्लाह पाक हर मुसलमान को सिराते मुस्तक़ीम नसीब करे। आमीन।

बाब 22 : अस्त्र की नमाज़ के बाद (झूठी) क़सम खाना और ज़्यादा गुनाह है

2672. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे

۲۲- بَابُ الْيَمِينِ بَعْدَ الْعَصْرِ

۲۶۷۲- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ

जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया आ'मश से, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तीन तरह के लोग ऐसे हैं कि अल्लाह तआला उनसे बात भी न करेगा न उनकी तरफ़ नज़र उठाकर देखेगा और न उन्हें पाक करेगा बल्कि उन्हें सख़्त दर्दनाक अज़ाब होगा। एक वो शख्स जो सफ़र में ज़रूरत से ज़्यादा पानी लिये जा रहा है और किसी मुसाफ़िर को (जिसे पानी की ज़रूरत है) न दे। दूसरा वो शख्स जो किसी (खलीफ़तुल मुस्लिमीन) से बेअत करे और सिर्फ़ दुनिया के लिये बेअत करे कि जिससे उसने बेअत की अगर वो उसका मक़सद पूरा कर दे तो ये भी वफ़ादारी से काम ले, वरना उसके साथ बेअत व अहद के ख़िलाफ़ करे। तीसरा वो शख्स जो किसी से अम्र के बाद किसी सामान का भाव करे और अल्लाह की क़सम खा ले कि उसे उसका इतना इतना रुपया मिल रहा था और ख़रीददार उस सामान को (उसकी क़सम की वजह से) ले ले। हालाँकि वो झूठा है। (राजेअ: 2358)

خَذْنَا جُرْئُو بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «ثَلَاثَةٌ لَا يَكْلَمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابُ أَلِيمٍ: رَجُلٌ عَلَى فَضْلِ مَاءٍ يَطْرُقُ يَمْنَعُ مِنْهُ ابْنَ السَّبِيلِ. وَرَجُلٌ بَانَعَ رَجُلًا لَا يَبِيعُهُ إِلَّا لِلدُّنْيَا، فَإِنْ أَعْطَاهُ مَا يُرِيدُ وَلِيَ لَهُ وَإِلَّا لَمْ يَفْعَلْ. وَرَجُلٌ سَارَمَ رَجُلًا يَسْلِقُهُ بَعْدَ الْفَصْرِ لَخَلْفٍ بِاللَّهِ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا كَذًا وَكَذَا فَأَخَذَهَا» (راجع: ٢٣٥٨)

तीनों गुनाह जो यहाँ मज़कूर हुए अख़लाक़ी ए'तिबार से भी बहुत ही बुरे हैं कि उनकी जिस क़दर मज़म्मत की जाए कम है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) मज़कूर तीसरे शख्स की वजह से यहाँ इस हदीस को लाए। तिजारत में झूठ बोलकर माल बेचना हर वक़्त ही गुनाह है मगर अम्र के बाद ऐसी क़सम खाना और भी बदतर गुनाह है कि दिन के उस आखिरी हिस्से में भी वो झूठ बोलने से बाज़ न रह सका।

**बाब 23 : मुद्आ अलैह पर जहाँ क़सम खाने का हुक्म दिया जाए वहीं क़सम खा ले ये ज़रूरी नहीं कि किसी दूसरी जगह पर जाकर क़सम खाए**

और मरवान बिन हक़म ने ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) के एक मुक़द्दमे का फ़ैसला मिम्बर पर बैठे हुए किया और (मुद्आ अलैह होने की वजह से) उनसे कहा कि आप मेरी जगह आकर क़सम खाएँ। लेकिन ज़ैद (रज़ि.) अपनी ही जगह से क़सम खाने लग और मिम्बर के पास जाकर क़सम खाने से इंकार कर दिया। मरवान को इस पर तअज़ुब हुआ। और नबी करीम (ﷺ) ने अशअष बिन क़ैस से) फ़र्माया था कि दो गवाह ला वरना उस (यहूदी) की क़सम पर फ़ैसला होगा। आप (ﷺ) ने किसी ख़ास जगह की तख़सीस नहीं फ़र्माई।

٢٣- بَابُ يَخْلِفُ الْمُدْعَى عَلَيْهِ حَيْثُمَا وَجَبَتْ عَلَيْهِ الْبَيِّنُ وَلَا يُصَوِّفُ مِنْ مَوْضِعٍ إِلَى غَيْرِهِ

قَضَى مَرْوَانُ بِالْبَيِّنِ عَلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَلَى الْمُنْبَرِ فَقَالَ: أَخْلَفْتُ لَهُ مَكَانِي، فَجَعَلَ زَيْدٌ يَخْلِفُ، وَأَبَى أَنْ يَخْلِفَ عَلَى الْمُنْبَرِ، فَجَعَلَ مَرْوَانُ يَتَعَجَّبُ مِنْهُ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((شَاهِدَاكَ أَوْ يَوْثِنَهُ)) فَلَمْ يَخْصُصْ مَكَانًا دُونَ مَكَانٍ.

मज़लून मुद्ई कहे कि मस्जिद में चलकर क़सम खाओ तो मुद्आ अलैह पर ऐसा करना लाज़िम नहीं। हन्फ़िया का यही क़ौल



है और हुनाबिला भी उसके काइल हैं और शाफ़िइया के नज़दीक अगर काज़ी मुनासिब समझे तो ऐसा हुक्म दे सकता है भले ही मुद्दई उसकी ख्वाहिश न करे। मरवान के वाकिये को इमाम मालिक ने मौता में वरूल किया है। जैद बिन बाबित (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन मुतीअ में एक मकान की बाबत झगड़ा था। मरवान उस वक़्त मुआविया (रज़ि.) की तरफ़ से मदीना का हाकिम था। उसने जैद को मिम्बर पर जाकर क़सम खाने का हुक्म दिया। जैद ने इंकार किया और जैद के क़ौल पर अमल करना बेहतर है, मरवान की राय पर अमल करने से। लेकिन हज़रत इब्मान (रज़ि.) से भी मरवान की राय के मुताबिक़ मन्कूल है कि मिम्बर के पास क़सम खाई जाए, इमाम शाफ़िई ने कहा मुस्हफ़ पर क़सम दिलाने में क़बाहूत नहीं। (वहीदी)

अशअष बिन कैस और यहूदी का मुकद्दमा गुज़िशता से पैवस्ता हदीष में गुज़र चुका है, यहाँ इसी तरफ़ इशारा है अगर कुछ अहमियत होती तो आहज़रत (ﷺ) यहूदी से तौरात हाथ में लेकर क़सम खाने का हुक्म देते या उनके गिरजा में क़सम खाने का हुक्म देते। मगर शरअन उनकी क़सम के बारे में कोई ज़रूरत नहीं।

2673. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया आ'मश से, उनसे अबू वाईल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख्स क़सम इसलिये खाता है ताकि उसके ज़रिये किसी का माल (नाजाइज़ तौर पर) हज़म कर जाए तो वो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह पाक उस पर ग़ज़बनाक होगा। (राजेअ: 2356)

٢٦٧٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ  
حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي  
وَائِلٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ  
النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ  
لِيَقْطَعَ بِهَا مَالًا لِقِيَّ اللَّهِ وَمَوْ عَلَيْهِ  
غَضَبَانِ)). [راجع: ٢٣٥٦]

क़सम में ताकीद व तलीज़ किसी खास मकान जैसे मस्जिद वगैरह या किसी खास वक़्त जैसे अस्र या जुम्आ के दिन वगैरह से नहीं पैदा होती। जहाँ अदालत है और क़ानूने शरीअत के ए'तिबार से मुद्दआ अलैह पर क़सम वाजिब हुई है उससे क़सम उसी वक़्त और वहीं ली जाए। क़सम लेने के लिये न किसी खास वक़्त का इतिज़ार किया जाए और न किसी मुकद्दस जगह उसे ले जाया जाए। इसलिये कि मकान से असल क़सम में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इमाम बुखारी (रह.) यही बतलाना चाहते हैं।

**बाब 24 : जब चन्द आदमी हों और हर एक क़सम खाने में जल्दी करे तो पहले किससे क़सम ली जाए**

٢٤- بَابُ إِذَا تَسَارَعَ قَوْمٌ فِي  
الْيَمِينِ

2674. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माय ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने चन्द आदमियों से क़सम खाने के लिये कहा (एक ऐसे मुकद्दमे में जिसके ये लोग मुद्दआ अलैह थे) क़सम के लिये सब एक साथ आगे बढ़े तो आहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया कि क़सम खाने के लिये उनमें बाहम पासा डाला जाए कि पहले कौन क़सम खाए।

٢٦٧٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ قَالَ  
حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ  
هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ  
النَّبِيَّ ﷺ عَرَضَ عَلَى قَوْمٍ الْيَمِينِ  
فَأَسْرَعُوا، فَأَمَرَ أَنْ يُسْتَهْمَ بَيْنَهُمْ فِي الْيَمِينِ  
لِيَهْمَ بِخِلْفٍ)).

अबू दाऊद और निसाई की रिवायत में यँ है कि दो शख्सों ने एक चीज़ का दा'वा किया और किसी के पास गवाह न थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुआँ डालो और जिसका नाम निकले वो क़सम खा ले। हाकिम की रिवायत में यँ है कि दो आदमियों ने एक ऊँट का दा'वा किया और दोनों ने गवाह पेश किये। आप (ﷺ) ने आघो-आध ऊँट दोनों को दिला दिये और अबू दाऊद

की रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने कुर्आ का हुक्म दिया और जिसका नाम कुर्आ में निकला उसको दिला दिया।

## बाब 25 : अल्लाह तआला का सूरह आले इमरान में फ़र्मान कि

जो लोग अल्लाह को दाम्यान में देकर और झूठी क़समें खाकर थोड़ा मोल लेते हैं। (आखिर आयत तक)

2675. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि हमको यज़ीद बिन हासून ने ख़बर दी, उन्हें अब्बाम ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे इब्राहीम अबू इस्माईल सकसकी ने बयान किया और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) को ये कहते सुना कि एक शख्स ने अपना सामान दिखाकर अल्लाह की क़सम खाई कि उसे उस सामान का इतना रुपया मिल रहा था, हालाँकि इतना नहीं मिल रहा था। इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि, जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के ज़रिये थोड़ी क़ीमत हासिल करते हैं। इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि ग्राहकों को फांसने के लिये क़ीमत बढ़ाने वाला सूदख़ोर की तरह खाइन है। (राजेअ : 2088)

٢٥- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾

٢٦٧٥- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا الْقَوَامُ حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ أَبُو إِسْمَاعِيلَ السَّكْسَكِيُّ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((أَقَامَ رَجُلٌ سِلْعَتَهُ فَحَلَفَ بِاللَّهِ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا مَا لَمْ يُعْطِهَا. فَتَرَلْتُ ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾)) [آل عمران : ٧٧]. وَقَالَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى: ((الْناجِشُ أَكِلٌ رِبَا خَائِنٌ)).

[راجع : ٢٠٨٨]

काज़ी के सामने अदालत में झूठ बोलने वालों की मज़मूमत पर जो झूठी क़सम खाकर ग़लत बयानी करें हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ख़ास इस्तिदाला किया है। यूँ झूठ बोलना हर जगह ही मना है।

2676, 77. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया शुअबा से, उनसे सुलैमान ने, उनसे अबू वाईल ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स झूठी क़सम इसलिये खाए कि उसके ज़रिये किसी का माल ले सके, या उन्होंने यूँ बयान किया कि अपने भाई का माल ले सके तो वो अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि वो उस पर ग़ज़बनाक होगा। अल्लाह तआला ने उसी की तस्दीक़ में कुर्आन में ये आयत नाज़िल की कि, जो लोग अल्लाह के अहद और (झूठी) क़समों के ज़रिये मा'मूली पूँजी हासिल करते हैं, अल्लख़; फिर मुझसे अशअष (रज़ि.) की मुलाक़ात हुई तो उन्होंने पूछा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने आज तुमको कौनसी हदीष बयान की थी? मैंने उनसे बयान कर दी तो आपने

٢٦٧٦, ٢٦٧٧- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ كَاذِبًا لِيَقْطَعَ مَالَ رَجُلٍ - أَوْ قَالَ أَخِيهِ - لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبٌ)). وَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعْدِيقَ ذَلِكَ فِي الْقُرْآنِ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾ الآية. فَلَقِيتُ الْأَشعثَ فَقَالَ: مَا حَدَّثَكُمْ عَبْدُ اللَّهِ

फ़र्माया कि ये आयत मेरे ही वाकिये के सिलसिले में नाज़िल हुई थी। (राजेज़ : 2356, 2357)

أُنزِلَتْ. [راجع: ٢٣٥٦, ٢٣٥٧]

अदालत ग़ेब-दाँ (अन्तर्यामी) नहीं होती। कोई शख्स ग़लत बयानी करके झूठी क़समें खाकर अपने हक़ में फ़ैसला करा ले, हालाँकि वो नाहक़ पर है तो ऐसा शख्स अल्लाह के नज़दीक मलज़ून है, वो अपने पेट में आग के अंगारे खा रहा है। क़यामत के दिन वो अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होगा। उसको ये हक़ीक़त ख़ूब ज़हन-नशीन कर लेनी चाहिये। जो लोग क़ाज़ी के फ़ैसले को ज़ाहिर और बातिन हर हाल में नाफ़िज़ कहने हैं, उनकी ग़लत बयानी की तरफ़ भी ये इशारा है।

## बाब 26 : क्यूँ कर क़सम ली जाए

सूरह बक्रह में अल्लाह तआला ने फ़र्माया, वो लोग आपके स।मने अल्लाह की क़सम खाते हैं, तुमको राज़ी करने के लिये, और सूरह निसा में, फिर तेरे पास अल्लाह की क़सम खाते आते हैं कि हमारी निय्यत तो भलाई और मिलाप की थी, क़सम में यूँ कहा जाए बिल्लाह, वल्लाह, तल्लाह (अल्लाह की क़सम) और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, और वो शख्स जो अल्लाह की क़सम अस् के बाद खाता है। और अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाएँ।

## ٢٦- بَابُ كَيْفَ يَسْتَحْلِفُ؟ قَالَ

تَعَالَى : ﴿يَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ لَكُمْ﴾  
وَقَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ﴾  
بِاللّٰهِ إِنَّ أَرْضَنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا.  
يُقَالُ : بِاللّٰهِ وَتَالَهُ وَوَالَهُ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ :  
((وَرَجُلٌ حَلَفَ بِاللّٰهِ كَاذِبًا بَعْدَ الْعَصْرِ))  
وَلَا يَحْلِفُ بِغَيْرِ اللّٰهِ.

कुछ नुस्खों में और दो आयतें मज़कूर हैं, वयहलिफून बिल्लाहि इन्नहुम लमिन्कुम (अत तौबा : 56) और फयुक्सिमानि बिल्लाहि लशहादतुना अहक्कुमिन शहादतिहिमा (अल माइदा : 107) और आयतों के लाने से इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि क़सम में तालीज या 'नी सख्ती ज़रूरी नहीं सिर्फ़ अल्लाह की क़सम काफ़ी है। अरब में बिल्लाह, वल्लाह, तल्लाह ये तीनों कलिमे क़सम में कहे जाते हैं। मज़मूने बाब में आखिरी, जुम्ला बला यहलिफु बिगैरिल्लाह ये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का कलाम है। ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना जाइज़ नहीं।

2678. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे उनके चचा अबू सुहैल ने, उनसे उनके वालिद ने और उन्होंने तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि एक साहब (ज़िमा बिन अलबा) नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में आए और इस्लाम के बारे में पूछने लगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, दिन और रात में पाँच नमाज़ें अदा करना। उसने पूछा क्या इसके अलावा भी मुझ पर कुछ नमाज़ और ज़रूरी है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, नहीं, ये दूसरी बात है कि तुम नफ़्ल पढ़ो। फिर रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रमज़ान के रोज़े हैं। इस पर पूछा क्या इसके अलावा भी मुझ पर कुछ (रोज़े) वाजिब हैं। आपने फ़र्माया नहीं, सिवा उसके जो तुम अपने तौर पर नफ़्ल रखो। तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके सामने रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़कात का भी ज़िक्र

٢٦٧٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَمِّهِ أَبِي سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَإِذَا هُوَ يَسْأَلُهُ عَنِ الْإِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ))، فَقَالَ : هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ : ((لَا، إِلَّا أَنْ تَطُوعَ))، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((وَصِيَامَ رَمَضَانَ))، قَالَ : هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ : ((لَا، إِلَّا أَنْ تَطُوعَ))، قَالَ : ((وَذَكَرَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

किया तो उन्होंने पूछा, क्या (जो फ़र्ज ज़कात है आपने बताई है) उसके अलावा भी मुझ पर कोई ख़ैरात वाजिब है? औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं सिवा उसके जो तुम खुद अपनी तरफ़ से नफ़ल दो। उसके बाद वो साहब ये कहते हुए जाने लगे कि अल्लाह गवाह है न मैं इनमें कोई ज़्यादाती करूँगा और न कोई कमी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर उसने सच कहा है तो कामयाब हुआ। (राज़िअ 46)

या'नी ज़त्रत में जाएगा। बाब का मतलब इससे निकला कि उसने क़सम में लफ़्ज़ वल्लाह का इस्ते'माल किया। क़सम खाने में यही काफ़ी है। वल्लाह, बिल्लाह, तल्लाह ये सब क़समिया अल्फ़ाज़ हैं।

2679. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि नाफ़ेअ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (राज़ि.) से बयान किया कि नबी करांम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी को क़सम खानी ही है तो अल्लाह तआला की क़सम खाए, वरना खामोश रहे।

(दीगर मक़ाम : 3836, 6108, 6646)

الرَّكَاءَةُ. قَالَ: هَلْ عَلَى غَيْرِهِ؟  
قَالَ: ((لَا، إِلَّا أَنْ تَطَوُّعَ)) فَأَدْبَرَ الرَّجُلُ  
وَهُوَ يَقُولُ: وَاللَّهِ لَا أَزِيدُ عَلَى هَذَا وَلَا  
أَنْقُصُ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الْفَلَحُ إِنْ  
صَدَقَ)). (رايح: 46)

۲۶۷۹- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ  
حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ قَالَ: ذَكَرَ نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ  
اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ:  
((مَنْ كَانَ خَالِئًا فَلْيُخْلِطْ بِاللَّهِ أَوْ  
لْيَصْمُتْ)).

[أطرافه في: ۳۸۳۶، ۶۱۰۸، ۶۶۴۶]

इसमें इशारा है कि अदालत में क़सम वही मो'तबर होगी जो अल्लाह के नाम पर खाई जाए। ग़ैरुल्लाह की क़सम नाक़ाबिले ए'तिबार बल्कि गुनाह होगी। दूसरी रिवायत में है जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई, उसने शिर्क किया। पस क़सम सच्ची खानी चाहिये और वो सिर्फ़ अल्लाह के नामे पाक की क़सम हो वरना खामोश रहना बेहतर है।

**बाब 27 : जिस मुद्दई ने (मुद्दआ अलैह की)  
क़सम खा लेने के बाद गवाह पेश किये**

۲۷- بَابُ مَنْ أَقَامَ الْبَيِّنَةَ بَعْدَ  
الْيَمِينِ

तो उसके गवाह कुबूल किये जाएँगे, अहले कूफ़ा और शाफ़िई और अहमद का यही क़ौल है। इमाम मालिक (रह.) कहते हैं कि अगर मुद्दई को अपने गवाहों का इल्म न था और मुद्दआ अलैह से क़सम ले ली, फिर गवाहों का इल्म हुआ तो गवाह कुबूल होंगे और जो गवाहों का इल्म होते हुए उसने गवाह पेश नहीं किये और क़सम ले ली तो अब गवाह मंज़ूर नहीं किये जाएँगे। (वहीदी)

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ये मुम्किन है कि (मुद्दई और मुद्दआ अलैह में कोई) एक-दूसरे से बेहतर तरीक़े पर अपना मुक़द्दमा पेश कर सकता हो। ताऊस, इब्राहीम, और शुरैह (रह.) ने कहा कि आदिल गवाह झूठी क़सम के मुक़ाबले में कुबूल किये जाने का ज़्यादा मुस्तहिक्क है।

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَعَلَّ بَفْضِكُمْ الْخَنَ  
بِخْفِيهِ مِنْ بَفْضِي)). وَقَالَ طَاوُسٌ  
وَأَبُو إِسْحَاقَ: الْبَيِّنَةُ الْقَادِلَةُ أَحَقُّ مِنَ الْيَمِينِ  
الْقَاضِيَةِ.

2680. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया इमाम

۲۶۸۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ

मालिक से, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके बाप ने, उनसे जैनब ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम लोग मेरे यहाँ अपने मुकद्दमात लाते हो और कभी ऐसा होता है कि एक तुममें दूसरे से दलील बयान करने में बढ़कर होता है (कुव्वते बयानिया बढ़कर रखता है) फिर मैं उसको अगर उसके भाई का हक्क (गलती से) दिला दूँ, तो वो (हलालन समझे) उसको न ले, मैं उसको दो ज़ख़ का एक टुकड़ा दिला रहा हूँ। (राजेअ : 2458)

مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ  
رَتِيبٍ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ  
إِلَيَّ، وَلَقَدْ بَغَضْتُكُمْ أَلْحَنُ بِحُجَّتِهِ مِنْ  
بَعْضٍ، لَمَنْ لَعَنْتُ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ هَيْثَا  
يَقُولُ فَإِنَّمَا أَلْعَنُ لَهُ لِقَظَةً مِنَ النَّارِ، فَلَا  
يَأْخُذُهَا»۔ [راجع: ٢٤٥٨]

**तरीह:**

इस हदीष में इमाम मालिक (रह.) और शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) उलमा का मज़हब प्राबित हुआ कि क़ाज़ी का हुक्म ज़ाहिरन नाफ़िज़ होता है न कि बातिनन, या'नी क़ाज़ी अगर ग़लती से कोई फ़ैसला कर दे तो जिसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे इन्दल्लाह उसके लिये वो चीज़ दुस्त न होगी और हफ़िया का रह हुआ जिनके नज़दीक क़ाज़ी की क़ज़ा ज़ाहिरन और बातिनन दोनों तरह नाफ़िज़ हो जाती है। हदीष से भी यही निकलता है कि रसूले करीम (ﷺ) को भी धोखा हो जाना मुम्किन था और आपको इल्मे ग़ैब न था और जब आपसे जो सारे जहाँ से अफ़ज़ल थे ग़लती हो जाना मुम्किन हुआ तो और किसी क़ाज़ी या मुज्ताहिद इमाम या आलिम या हाकिम की क्या हक़ीक़त और क्या हस्ती है और बड़ा बेवकूफ़ है वो शख्स जो किसी मुज्ताहिद या पीर को ख़ता से मा'सूम समझे। (वहीदी)

## बाब 28 : जिसने वा'दा पूरा करने का हुक्म दिया

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने उसको पूरा कर दिया। और हज़रत इस्माईल (अ) का ज़िक्र अल्लाह तआला ने उस वस्फ़ से किया है कि वो वादे के सच्चे थे। और सईद बिन अल अश्वअ ने वा'दा पूरा करने के लिये हुक्म दिया था। समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) से ऐसा ही नक़ल किया, और मिस्वर बिन माख़रमा (रज़ि.) ने कहा कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप अपने एक दामाद (अबुल आस) का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे, आपने फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे वा'दा किया था उसे पूरा किया, अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि इस्हाक़ बिन इब्राहीम को मैंने देखा कि वो वा'दा पूरा करने के वजुब पर इब्ने अश्वअ की हदीष से दलील लेते थे।

٢٨- بَابُ مَنْ أَمَرَ بِإِنْفَاجِ الْوَعْدِ  
وَلَقَدْ لَخِّنَا الْحَسَنُ وَوَأَذَكَّرَ فِي الْكِتَابِ  
إِسْمَاعِيلُ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ  
وَقَضَى ابْنُ الْأَشْعَثِ بِالْوَعْدِ وَذَكَرَ ذَلِكَ  
وَعَنْ سَمُرَةَ. وَقَالَ الْمَسُورُ بْنُ مَخْرَمَةَ:  
(سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَذْكُرُ صَهْرًا لَهُ قَالَ:  
وَعَدَنِي فَوَلَّى لِي)۔ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ:  
رَأَيْتُ إِسْحَاقَ بْنَ إِبْرَاهِيمَ يَخْجُجُ بِحَدِيثِ  
ابْنِ أَشْعَثٍ.

इमाम बुखारी और कुछ उलमा का यही क़ौल है कि वा'दा पूरा करना चाहिये, अगर कोई न करे तो क़ाज़ी पूरा कराएगा। लेकिन जुम्हूर उलमा कहते हैं कि वा'दा पूरा करना मुस्तहब और अच्छा क़ानून ज़रूरी है। पर क़ाज़ी जबन उसे पूरा नहीं करा सकता। अज़रूए दिरायत इमाम बुखारी ही का क़ौल सहीह है कि अदालत फ़ैसला करते वक़्त एक हुक्म जारी करती है गोया मुद्दा अलैह से वा'दा लेती है कि वो अदालत के फ़ैसले को तस्लीम करते हुए गोया उस पर अमल दरआमद करने का वा'दा कर रहा है। अब घर जाकर वो इस हुक्म पर अमल न करे और मुद्दई को कोरा जवाब दे तो अदालत पुलिस के ज़रिये अपने फ़ैसले का निफ़ाज़ कराएगी। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का यही मंशा है और दुनिया का यही क़ानून है। इसी मक़सद से हज़रत इमाम

बुखारी (रह.) ने कई अहादीथ और आधार नक़ल कर दिये हैं। अगर अदालत हुक्म को कोई शख्स जारी न होने दे और तस्लीम के वादे से फिर जाए और अदालत कुछ न कर सके तो ये महज़ एक तमाशा बनकर रह जाएगा।

2681. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे मालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि उन्हें अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक्ल ने उनसे कहा था कि मैंने तुमसे पूछा था कि वो (मुहम्मद स) तुम्हें किस बात का हुक्म देते हैं तो तुमने बताया कि वो तुम्हें नमाज़, सच्चाई, इफ़्त, अहद के पूरा करने और अमानत के अदा करने का हुक्म देते हैं। और ये नबी की सिफ़ात हैं। (राजेअ: 7)

٢٦٨١- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَنْزَلَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غَيْثِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَنِي أَنَّهُ سَأَلْتُ أَبَا سُوْفْيَانَ أَنَّهُ قَالَ لِي: ((سَأَلْتُكَ مَادَا يَأْمُرُكُمْ؟ فَرَفَعْتُمْ أَنَّهُ يَأْمُرُكُمْ بِالصَّلَاةِ وَالصَّدَقِ وَالْعَقَابِ وَالْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ وَإِدَاءِ الْأَمَانَةِ، قَالَ: وَهَذِهِ صِفَةُ نَبِيِّ)). [راجع: ٧]

**तस्रीह**

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) खुद मुज्ताहिदे मुत्लक हैं। जामेउस्सहीह में जगह-जगह आपने अपने खुदादाद इज्तिहादी मल्का से काम लिया है। आपके सामने ये नहीं होता कि उनको किस मसलक की मुवाफ़क़त करनी है और किसकी तर्दीद। उनके सामने सिर्फ़ किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह होती है। उन ही के तहत वो मसाइल व अहक़ाम पेश करते हैं। वो किसी मुज्ताहिद व इमाम के मसलक के मुखालिफ़ हों या मुवाफ़िक़ हज़रत इमाम को क़त्अन ये परवाह नहीं होती। फिर मौजूदा देवबन्दी नाशिराने बुखारी का कई जगह ये लिखना कि यहाँ इमाम बुखारी (रह.) ने फ़लाँ इमाम का मसलक इख़्तियार किया है बिल्कुल ग़लत और हज़रत इमाम की शाने इज्तिहाद में तन्कीस है। इस जगह भी साहिबे तफ़हीमुल बुखारी ने ऐसा ही इल्ज़ाम दोहराया है। वो साहब लिखते हैं कि इमाम मालिक (रह.) कहते हैं कि वा'दा करने का हुक्म भी क़ज़ा के तहत आ सकता है और इमाम बुखारी (रह.) ने भी ग़ालिबन इस बाब में इमाम मालिक (रह.) का मसलक इख़्तियार किया है। (तफ़हीमुल बुखारी पारा नं. 10 पेज नं. 117)

सच है, अल्मउय्यकीसु अला नफ़िसही मुक़ल्लिदीन का चूँकि यही रक्क्या है वो मुज्ताहिदे मुत्लक इमाम बुखारी (रह.) को भी उम्मी नज़र से देखते हैं जो बिल्कुल ग़लत है। हज़रत इमाम मुज्ताहिदे मुत्लक (रहिमहुल्लाहु तआला)

2682. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू सुहैल नाफ़ेअ बिन मालिक बिन अबी आमिर ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं। जब बात कहे तो झूठ कहे, अमानत दी गई तो उसने उसमें ख़यानत की और वा'दा किया तो उसे पूरा नहीं किया। (राजेअ: 33)

2683. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमें हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्हें अमर

٢٦٨٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَهْلٍ نَافِعٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِي عَامِرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((ثَلَاثُ أَلْصَافِي لِلْمُنَافِقِ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا اتَّخَذَ خَانَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ)). [راجع: ٣٣]

٢٦٨٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي

बिन दीनार ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अली ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, कहा नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास (बेहरीन के आमिल) अअलाअ बिन हज़रमी (रज़ि.) की तरफ़ से माल आया। अबूबक्र (रज़ि.) ने ऐलान करा दिया कि जिस किसी का भी नबी करीम (ﷺ) पर कोई क़र्ज़ हो, या औहज़रत (ﷺ) का उससे वा'दा हो तो वो हमारे पास आए। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि उस पर मैंने उनसे कहा कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वा'दा किया था कि आप (ﷺ) इतना इतना माल मुझे अत्ता करेंगे। चुनाँचे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने तीन बार अपने हाथ बढ़ाए और मेरे हाथ पर पाँच सौ फिर पाँच सौ और फिर पाँच सौ गिन दिये। (राजेअ. 2296)

عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((لَمَّا مَاتَ النَّبِيُّ ﷺ جَاءَ أَبَا بَكْرٍ مَالٌ مِنْ قِبَلِ الْفُلَاءِ بْنِ الْحَضْرَمِيِّ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ دَيْنٌ، أَوْ كَانَتْ لَهُ قِلَّةٌ عِدَّةٌ فَلْيَأْتِنَا: قَالَ جَابِرٌ: فَقُلْتُ وَعَدَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: أَنْ يُعْطِيَنِي مَكْذًا وَمَكْذًا وَمَكْذًا - فَبَسَطَ يَدَيْهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ - قَالَ جَابِرٌ: فَقَدْ لِي يَدِي خَمْسَمِائَةٍ ثُمَّ خَمْسَمِائَةٍ)). [راجع: ٢٢٩٦]

गोया हज़रत सिद्दीक (रज़ि.) ने अह्द नबवी को पूरा कर दिखाया, इससे भी ये प्राबित करना मक्सूद है कि वा'दा को पूरा करना ही होगा ख्वाह बज़रिये अदालत ही हो।

2684. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमको सईद बिन सुलैमान ने खबर दी, उनसे मरवान बिन शुजाअ ने बयान किया, उनसे सालिम अफ़्तस ने और उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया हीरा के यहूदी ने मुझसे पूछा, मूसा (अलैहिस्सलाम) ने (अपने महर के अदा करने में) कौनसी मुद्दत पूरी की थी? (या'नी आठ माल या दस साल की, जिनका कुआन में ज़िक्र है) मैंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं, हाँ! अरब के बड़े आलिम की ख़िदमत में हाज़िर होकर पूछ लूँ (तो फिर तुम्हें बता दूँगा) चुनाँचे मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने बताया कि आपने बड़ी मुद्दत पूरी की (दस साल की) जो दोनों मुद्दतों में बेहतर थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) भी जब किसी से वा'दा करते तो पूरा करते थे।

٢٦٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ سَلِيمَانَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ شَجَاعٍ عَنْ سَالِمِ الْأَنْطَرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: ((سَأَلَنِي يَهُودِيٌّ مِنْ أَهْلِ الْحِيرَةِ: أَيُّ الْأَجَلَيْنِ قَضَى مُوسَى؟ قُلْتُ: لَا أَذْرِي حَتَّى أَقْدِمَ عَلَى خَيْرِ الشَّرَبِ فَسَأَلَهُ: فَقَبِمْتُ فَسَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: قَضَى أَكْثَرَهُمَا وَأَطْيَبَهُمَا، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَالَ قَعْلًا)).

**तशरीह:** इन जुम्ला अह्दादीष से हज़रत इमाम ने वा'दा पूरा करने का पुज़ूब प्राबित किया, खुसूसन जो वा'दा अदालत में किया जाए वो न पूरा करे तो उससे जबरन उसे पूरा कराया जाएगा वरना अदालत एक तमाशा बनकर रह जाएगी।

हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के सामने आठ साल और दस साल की मुद्दतें रखी गई थीं। हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने उनसे फ़र्माया कि मैं चाहता हूँ अपनी दो बेटीयों में से एक की शादी तुमसे कर दूँ। बशर्त कि तुम आठ बरस मेरी नौकरी करो और अगर दस बरस पूरा करो तो तुम्हारा एहसान होगा। इदीष का आखिरी जुम्ला का मतलब ये कि अल्लाह के रसूल वा'दा ख़िलाफ़ हर्गिज़ नहीं होते हैं। यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है। दूसरी रिवायत में यूँ है कि सईद ने कहा, फिर

वो यहूदी मुझसे मिला तो मैंने जो इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया था, वो उसे बतला दिया। वो कहने लगा इब्ने अब्बास (रज़ि.) बेशक आलیم हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ये आहज़रत (ﷺ) से सुना था, और आपने ये हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से पूछा था, जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह पाक से जिसके जवाब में अल्लाह पाक ने फ़र्माया था कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने वो मीयाद पूरी की जो ज़्यादा लम्बी और ज़्यादा बेहतर थी।

### बाब 29 : मुश्रिकों की गवाही न कुबूल होगी

और शअबी ने कहा कि दूसरे दीन वालों की गवाही एक से दूसरे के खिलाफ़ लेनी जाइज़ नहीं है। अल्लाह तआला के इस इश्राद की वजह से कि हमने उनमें बाहम दुश्मनी और बुज़्र को हवा दे दी है।

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अहले किताब की (उनकी मज़हबी रिवायात में) न तस्दीक़ करो और न तक्ज़ीब करो बल्कि ये कह लिया करो कि अल्लाह पर और जो कुछ उसने नाज़िल किया सब पर हम ईमान लाए। अल् आयति

मुश्रिकों की गवाही मुश्रिकों पर न मुसलमानों पर कुबूल होगी। हन्फिया के नज़दीक़ मुश्रिकों की गवाही मुश्रिकों पर कुबूल होगी। अगरचे उनके मज़हब मुख्तलिफ़ हों क्योंकि आहज़रत (ﷺ) ने एक यहूदी मर्द और एक यहूदी औरत को चार यहूदियों की शहादत पर रज़म किया था।

2685. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया युनुस से, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा ने कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, ऐ मुसलमानों! अहले किताब से तुम क्यूँ सवालात करते हो। हालाँकि तुम्हारी किताब जो तुम्हारे नबी (ﷺ) पर नाज़िल हुई है, अल्लाह तआला की तरफ़ से सबसे बाद में नाज़िल हुई है। तुम उसे पढ़ते हो और उसमें किसी किस्म की आमेज़िश भी नहीं हुई है। अल्लाह तआला तो तुम्हें पहले ही बता चुका है कि अहले किताब ने उस किताब को बदल दिया, जो अल्लाह तआला ने उन्हें दी थी और खुद ही उसमें तग़य्युर कर दिया और फिर कहने लगे ये किताब अल्लाह की तरफ़ से है। उनका मक़्सद इससे सिर्फ़ ये था कि इस तरह थोड़ी पूँजी (दुनिया की) हासिल कर सकें। पस क्या जो इल्म (कुआन) तुम्हारे पास आया है वो तुमको उन (अहले किताब) से पूछने को नहीं रोकता। अल्लाह की क़सम! हमने उनके किसी आदमी को कभी नहीं देखा कि वो इन आयात के मुताल्लिक़

٢٩- بَابُ لَا يُسْأَلُ أَهْلُ الشِّرْكَ عَنْ الشَّهَادَةِ وَغَيْرِهَا وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ أَهْلِ الْجِلْدِ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: «فَأَعْرِضْنَا عَنْهُمْ الْعُدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ» [المائدة: ١٤].

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا تُصَدِّقُوا أَهْلَ الْكِتَابِ وَلَا تُكَذِّبُوهُمْ، وَقُولُوا: «أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ» (الآية)).

٢٦٨٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، كَيْفَ تَسْأَلُونَ أَهْلَ الْكِتَابِ وَكِتَابَكُمْ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى نَبِيِّهِ ﷺ أَخَذْتُ الْأَخْبَارَ بِاللَّهِ تَقْرَؤُنَهُ لَمْ يُشَبَّ؟ وَقَدْ حَدَّثَكُمْ اللَّهُ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ يَدْلُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ وَغَيَّرُوا بِأَيْدِيهِمُ الْكِتَابَ فَقَالُوا: «هَؤُلَاءِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهَذَا قَلِيلًا» [البقرة: ٧٩] أَلَا يَنْهَاهُمْ لَا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْعِلْمِ عَنْ مُسْأَلَتِهِمْ لَا بِاللَّهِ مَا رَأَيْنَا مِنْهُمْ رَجُلًا قَطُّ يَسْأَلُكُمْ عَنْ



तुमसे पूछता हो जो तुम पर (तुम्हारे नबी के ज़रिये) नाज़िल की गई हैं। (दीगर मक़ाम : 7363, 7522, 7523)

الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ).

[أَطْرَافُهُ فِي : ٧٥٢٣ ، ٧٥٢٢ ، ٧٣٦٣]

**तशरीह :** इस्लाम ने प्रिकह, आदिल गवाह के लिये जो शर्तें रखी हैं, उनके मे'यार पर उतरना एक ग़ैर-मुस्लिम के लिये नामुम्किन है। इसलिये अलल उमूम उसकी गवाही काबिले कुबूल नहीं। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) उसी मसलक के दलाइल बयान फ़र्मा रहे हैं। ये अमर दीगर है कि इमामे वक़्त, हाकिमे मजाज़ किसी ग़ैर-मुस्लिम की गवाही इस बिना पर कुबूल करे कि कुछ दूसरे मुस्तनद क़राइन से भी उसकी तस्दीक होती हो। जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने खुद चार यहूदियों की गवाही पर एक यहूदी मर्द और औरत को ज़िना के जुर्म में संगसारी का हुक्म दिया था। बहरहाल कायद-ए-कुल्लिया वही है जो हज़रत इमाम ने बयान किया है।

**बाब 30 : मुश्किलात के वक़्त कुआँ-अंदाज़ी करना**

और अल्लाह तआला का इश्राद है कि, जब वो अपनी क़लमें डालने लगे (कुआँ-अंदाज़ी करने के लिये ताकि) फ़ैसला कर सकें कि मरयम की किफ़ालत कौन करे। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (आयते मज़क़ूरा की तफ़सीर में फ़र्माया) कि जब सब लोगों ने (नहर उर्दुन में) अपने अपने क़लम डाले, तो तमाम क़लम पानी के बहाव के साथ बह गए लेकिन ज़क़रिया अलैहिस्सलाम का क़लम उस बहाव में ऊपर आ गया। इसलिये उन्होंने ही मरयम (अलैहिस्सलाम) की तर्बियत अपने ज़िम्मे ली और अल्लाह तआला का इश्राद है फ़साहम के मा'नी हैं पस उन्होंने कुआँ डाला। फ़काना मिनल मुद हज़ीन (में मुद हज़ीन के मा'नी हैं) मिनल मस्हूमीन (या'नी कुआँ उन्हीं के नाम पर निकला) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने (किसी मुक़द्दमे में मुद्आ अलैह होने की बिना पर) कुछ लोगों से क़सम खाने के लिये कहा, तो वो सब (एक साथ) आगे बढ़े। इसलिये आप (ﷺ) ने उनमें कुआँ डालने के लिये हुक्म फ़र्माया ताकि फ़ैसला हो कि सबसे पहले क़सम कौन आदमी खाए।

जुम्हूर उलमा के नज़दीक क़त्अन नज़ाअ के लिये कुआँ डालना जाइज़ और मशरूअ है। इब्ने मुज़िर ने हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा से भी इसका जवाज़ नक़ल किया है। पस आयात और हदीष से कुआँ-अंदाज़ी का शुबूत हुआ। अब अगर कोई कुआँ-अंदाज़ी का इंकार करे तो वो खुद ग़लती में मुब्तला है।

2686. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़याष ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि हमसे शअबी ने बयान किया, उन्होंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह की हुदूद में सुस्ती बरतने वाले और उसमें मुब्तला हो जाने

٣٠- بَابُ الْفُرْعَةِ فِي الْمُسْكَالَاتِ

وَقَوْلُهُ: ﴿إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ﴾ [آل عمران : 44].

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: اقْتَرَعُوا فَجَرَّتِ الْأَقْلَامُ مَعَ الْجَرِيَةِ، وَغَالَ قَلَمُ زَكَرِيَّا الْجَرِيَةَ فَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا. وَقَوْلُهُ: ﴿فَسَاهَمَ﴾ أَفْرَغَ ﴿فَكَانَ مِنَ الْمَذْحِضِينَ﴾ مِنَ الْمَسْهُومِينَ [الصفات : 141].

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: ((عَرَضَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى قَوْمٍ الْيَمِينَ فَأَسْرَعُوا، فَأَمَرَ أَنْ يُسْهَمَ بَيْنَهُمْ أَيُّهُمْ يَخْلِفُ)).

٢٦٨٦- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ

غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ

قَالَ: حَدَّثَنَا الشَّعْبِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ التُّعْمَانَ بْنَ

بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ

वाले की मिशाल एक ऐसी कौम की सी है जिसने एक कश्ती (पर सफर करने के लिये जगह के बारे में) कुर्आ-अंदाजी की। फिर नतीजे में कुछ लोग नीचे सवार हुए और कुछ ऊपर। नीचे के लोग पानी लेकर ऊपर की मंजिल से गुजरते थे और उससे ऊपर वालों को तकलीफ होती थी। इस खयाल से नीचे वाला एक आदमी कुल्हाड़ी से कश्ती का नीचे का हिस्सा काटने लगा। (ताकि नीचे ही से समुन्दर का पानी ले लिया करे) अब ऊपर वाले आए और कहने लगे कि ये क्या कर रहे हो? उसने कहा कि तुम लोगों को (मेरे ऊपर आने-जाने से) तकलीफ होती थी और मेरे लिये भी पानी जरूरी था। अब अगर उन्होंने नीचे वाले का हाथ पकड़ लिया तो उन्हें भी नजात दी और खुद भी नजात पाई। लेकिन अगर उसे यूँ ही छोड़ दिया, तो उन्हें भी हलाक किया और खुद भी हलाक हो गए।

इससे कुर्आ-अंदाजी का घुबूत मिला। हजरत इमाम का इस हदीस को यहाँ लाने का यही मकसद है और इससे अमर बिल मज़रूफ और नही अनिल मुंकर की ताकीदे शदीद भी ज़ाहिर हुई और बुराई को रोकना जरूरी है वरना उसकी लपेट में सब ही आ सकते हैं। ताक़त हो तो बुराई को हाथ से रोका जाए। वरना जुबान से रोकने की कोशिश की जाए। ये भी न हो सके तो दिल में उससे सख़्त नफ़रत की जाए और ये ईमान का सबसे कमतर दर्जा है। अल्हम्दुलिल्लाह हुकूमते सरूदिया में देखा कि मद्दकमा अमर बिल मज़रूफ और नही अनिल मुंकर सरकारी सतह पर कायम है और सारी मम्लकत में उसकी शाखें फैली हुई हैं, जो अपने फ़राइज़ अंजाम दे रही हैं। अल्लाह पाक हर जगह के मुसलमानों को ये तौफ़ीक़ दे कि वो इसी तरह इज्तिमाई तौर पर बनी नोअे इंसान की ये आलातरीन ख़िदमत अंजाम दें और इंसानों की भलाई व फ़लाह को अपनी ज़िन्दगी का लाज़िमा बना लें। आमीन या रब्बल आलमीन।

2687. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी जुहरी से, उनसे ख़ारजा बिन ज़ैद अंसारी ने बयान किया कि उनकी रिश्तेदार एक औरत उम्मे अलाअ नामी ने जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत भी की थी, उन्हें ख़बर दी कि अंसार ने मुहाजिरीन को अपने यहाँ ठहराने के लिये पांसे डाले तो इष्मान बिन मज़ज़न (रज़ि.) का क़याम हमारे हिस्से में आया। उम्मे अलाअ (रज़ि.) ने कहा कि फिर इष्मान बिन मज़ज़न (रज़ि.) हमारे घर ठहरे और कुछ मुद्दत बाद वो बीमार पड़ गए। हमने उनकी तीमारदारी की मगर कुछ दिन बाद उनकी वफ़ात हो गई। जब हम उन्हें कफ़न दे चुके तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबुस्साइब! (इष्मान रज़ि. की कुन्नियत) तुम पर अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों, मेरी गवाही है कि अल्लाह तआला ने अपने यहाँ तुम्हारी ज़रूर इज़्जत और बड़ाई की होगी। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये बात तुम्हें कैसे मा'लूम हो गई कि अल्लाह तआला

النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلُ الْمُنْعَمِ فِي خُلُودِهِ وَالْوَقْعِ لِنَهْجِهَا مَثَلُ قَوْمٍ اسْتَهْمُوا سَقِينَةً فَصَارَ بَعْضُهُمْ فِي اسْفَلِهَا وَصَارَ بَعْضُهُمْ فِي اَعْلَاهَا، لَكَانَ اللَّيْنُ فِي اسْفَلِهَا يَمْرُؤُونَ بِالنَّاءِ عَلَى اللَّيْنِ فِي اَعْلَاهَا، فَتَأَذُّوْا بِهِ، فَآخَذَ فَاَسًا فَجَعَلَ يَنْقُرُ اسْفَلَ السَّقِينَةِ، فَاتَوَّهَ فَقَالُوا: مَا لَكَ؟ قَالَ: تَأَذُّنْتُمْ بِي وَلَا بُدَّ لِي مِنَ النَّاءِ، لَئِنْ اَخْلَوْتُ عَلَى يَدَيْهِ اَنْجُوهُ وَتَجَرَّوْا اَنْفُسَهُمْ، وَإِنْ تَرَكُوهُ اَهْلَكُوهُ وَاَهْلَكُوا اَنْفُسَهُمْ)).

٢٦٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدٍ الْأَنْصَارِيُّ أَنَّ أُمَّ الْغَلَاءِ امْرَأَةً مِنْ بَنِي سَابِئِهِمْ قَدْ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ عُثْمَانَ ابْنَ مَطْفُونٍ طَارَ لَنَا مِنْهُمْ فِي السُّكْنَى حِينَ أَقْرَعَتِ الْأَنْصَارُ سَكْنَى الْمُهَاجِرِينَ، قَالَتْ أُمُّ الْغَلَاءِ: فَسَكَنَ عِنْدَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَطْفُونٍ، فَاشْتَكَى لِمَرْضَاتِهِ، حَتَّى إِذَا تَوَلَّى وَجْهَتَاهُ فِي رِجَائِهِ دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقُلْتُ: وَرَحْمَةُ

ने उनकी इज्जत और बड़ाई की होगी। मैंने अर्ज किया, मेरे माँ और बाप आप पर फ़िदा हो, मुझे ये बात किसी ज़रिये से मा'लूम नहीं हुई है। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, इब्मान का जहाँ तक मामला है, तो अल्लाह गवाह है कि उनकी वफ़ात हो चुकी और मैं उनके बारे में अल्लाह से ख़ैर ही की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल होने के बावजूद मुझे भी ये इल्म नहीं कि उनके साथ क्या मामला होगा। उम्मे अलाअ (रज़ि.) कहने लगीं, अल्लाह की क़सम! अब उसके बाद मैं किसी शख्स की पाकी कभी बयान नहीं करूँगी। उससे मुझे रंज भी हुआ (कि आँहज़रत (ﷺ) के सामने मैंने एक ऐसी बात कही जिसका मुझे हकीक़ी इल्म नहीं था) उन्होंने कहा (एक दिन) मैं सो रही थी, मैंने ख़्वाब में हज़रत इब्मान (रज़ि.) के लिये एक बहता हुआ चश्मा देखा। मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे ख़्वाब बयान किया। आपने फ़र्माया कि ये उनका अमल (नेक) था। (राजेअ . 1243)

**तुशीह:**

किसी भी बुजुर्ग के लिये क़तई ज़न्नती होने का हुक्म लगाना ये मन्सब सिर्फ़ अल्लाह और रसूल ही को हासिल है और किसी को भी हक़ नहीं कि किसी को मुल्लक़ ज़न्नती कह सके। रिवायत में क़सम के लिये लफ़्ज़ बल्लाह बार बार आया है उसी ग़र्ज़ से इमाम बुखारी (रह.) उसको यहाँ लाए हैं। दूसरी रिवायत में यूँ है। मेरा हाल क्या होना है और इब्मान का हाल क्या होना है। ये मुवाफ़िक़ है इस आयत के जो सूरह अहक़ाफ़ में है। वमा अदरी मा युफ़अलु बी बला बिकुम (अल् अहक़ाफ़ : 9) या 'नी मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा? हदीष में कुआँ-अंदाज़ी का ज़िक्र है, बाब के मुताबिक़ ये भी एक तौजीह है।

पादरियों का ये ए'तिराज़ कि तुम्हारे नबी को जब अपनी नजात का इल्म न था तो दूसरों की नजात वो कैसे करा सकते हैं। महज़ फ़ालतू ए'तिराज़ है इसलिये कि अगर आप सच्चे नबी न होते तो ज़रूर अपनी तसल्ली के लिये यूँ फ़र्माते कि मैं ऐसा करूँगा वैसा करूँगा, मुझे सब इख़्तियार है। सच्चे रास्तबाज़ इंकिसारी सामने रखते हैं। इसी बिना पर आपने ऐसा फ़र्माया।

2688. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने ख़बर दी जुहरी से, उन्हें इर्वा ने ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र का इरादा फ़र्माते तो अपनी बीवियों में कुआँ-अंदाज़ी फ़र्माते और जिनका नाम निकल आता, उन्हें अपने साथ ले जाते। आप (ﷺ) का ये भी मा'मूल था कि अपनी हर बीवी के लिये एक दिन और रात मुक़रर कर दी थी। अल्बत्ता

اللّٰهُ عَلَيْكَ اَمَّا السَّائِبِ، فَشَهِدَتْنِي عَلَيْكَ  
لَقَدْ اَكْرَمَكَ اللّٰهُ. فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ:  
(وَمَا يُدْرِيكَ اَنْ اللّٰهُ اَكْرَمَهُ؟) فَقُلْتُ: لَا  
اَدْرِي بِاَيِّ اَنْتَ وَاَمِّي يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ.  
فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: ((اَمَّا غُفْمَانُ لَقَدْ  
جَاءَهُ وَاللّٰهُ اَيُّقِيْنُ، وَاِنِّي لَا رَجُوْ لَهُ الْخَيْرَ،  
وَاللّٰهُ مَا اَدْرِي - وَاَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ - مَا  
يُفْعَلُ بِهِ)). قَالَتْ: فَوَاللّٰهِ لَا اَزْكِيْ اَحَدًا  
بَعْدَهُ اَبَدًا، وَاَخْرَجْنِيْ ذَلِكَ. قَالَتْ: فَبِمَنْتُ  
فَارَبْتُ لِعُفْمَانِ عَيْنًا تَجْرِي، فَجِئْتُ اِلَى  
رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَاخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((ذَلِكَ  
عَمَلُهُ)). [راجع: ١٢٤٣]

٢٦٨٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَقَابِلٍ قَالَ  
اَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ اَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ  
قَالَ: اَخْبَرَنِيْ عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ  
عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِذَا  
اَرَادَ سَفَرًا اَفْرَغَ بَيْنَ نِسَائِهِ، فَاتَّهَنَ خَرَجَ

सौदा बन्ते ज़म्आ (रज़ि.) ने (अपनी उम्र के आखिरी हिस्से में) अपनी बारी आपकी ज़ोजा आइशा (रज़ि.) को दे दी थी ताकि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उनको रज़ा हासिल हो। (इससे भी कुर्आ-अंदाज़ी साबित हुई)

(राजेज़: 2593)

2689. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबूबक्र के गुलाम सुमथ ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर लोगों को मा'लूम होता कि अज़ान और सफ़े अव्वल में कितना प्रवाब है और फिर (उन्हें उसके हासिल करने के लिये) कुर्आ-अंदाज़ी करनी पड़ती, तो वो कुर्आ-अंदाज़ी भी करते और अगर उन्हें मा'लूम हो जाए कि नमाज़ सवेरे पढ़ने में कितना प्रवाब है तो लोग एक-दूसरे से सबक़त करने लगें और अगर उन्हें मा'लूम हो जाए कि इशा और सुबह की कितनी फ़ज़ीलतें हैं तो अगर घुटनों के बल आना पड़ता तो फिर भी आते। (राजेज़: 615)

इन सारी अह्दादीष से हज़रत इमाम ने कुर्आ-अंदाज़ी का जवाज़ निकाला और बतलाया कि बहुत से मुआमलात ऐसे भी सामने आ जाते हैं कि उनके फ़ैसले के लिये बेहतर यही तरीक़ा कुर्आ-अंदाज़ी ही होता है। पस उसके जवाज़ में कोई शुब्हा नहीं है। कुछ लोग कुर्आ-अंदाज़ी को जाइज़ नहीं कहते, ये उनकी अक्ल का क़सूर है।

इस हदीष से अज़ान पुकारने और सफ़े अव्वल में खड़े होने की भी इतिहाई फ़ज़ीलत साबित हुई और नमाज़ सवेरे अव्वल वक़्त पढ़ने की भी जैसा कि जमाअते अहले हदीष का अमल है कि फ़ज़्र, जुहर, अस्र, मरिब अव्वल वक़्त अदा करना इनका मा'मूल है। ख़ास तौर पर अस्र और फ़ज़्र में ताख़ीर करना इन्दल्लाह महबूब नहीं। अस्र अव्वल वक़्त एक मिष्ल साया हो जाने पर और फ़ज़्र ग़लस में अव्वल वक़्त पढ़ना, आँहज़रत (ﷺ) का यही तर्ज़े अमल था। जो आज तक हरमेन-शरीफ़ेन में मा'मूल है। वबिल्लाहि तौफ़ीक़

سَهْمَهَا مَرَجَ بِهَا مَعَهُ. وَكَانَ يَقْسِمُ بِكُلِّ  
أَمْرٍ مِنْهُمْ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا. خَيْرَ أَنْ سَوْدَةَ  
بَنَتْ زَمَنَةً وَهَبَتْ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا لِمَا بَشَتْ  
زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ تَنْتَعِي بِذَلِكَ رِضًا وَشَوْلًا  
اللَّهُ ﷻ. [راجع: ٢٥٩٣]

٢٦٨٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي  
مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي  
صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا  
فِي النَّدَاءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ لَمْ يَجِدُوا  
إِلَّا أَنْ يَسْتَهْمُوا عَلَيْهِ لاسْتَهْمُوا، وَلَوْ  
يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهَجُّبِ لاسْتَبَقُوا إِلَيْهِ، وَلَوْ  
يَعْلَمُونَ مَا فِي الْفَتَمَةِ وَالصَّبْحِ لَأَتَوْهُمَا  
وَلَوْ حَبُوا». [راجع: ٦١٥]

## 53. किताबुसुलह

## किताब सुलह के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## बाब 1 : लोगों में सुलह कराने का प्रवाब

और सूरह निसा में अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, उनकी अक़्शर कानाफूसियों में ख़ैर नहीं, सिवा उन (सर्गोशियों) के जो सद्क़ा या अच्छी बात की तरफ़ लोगों को तर्गीब दिलाने के लिये हों या लोगों के दरम्यान सुलह कराएँ और जो शख्स ये काम अल्लाह तआला की खुशनुदी हासिल करने के लिये करेगा तो जल्द ही मैं उसे अज़्रे अज़ीम दूँगा और इस बाब में ये बयान है कि इमाम खुद अपने अम्ह्बाब के साथ मुख्तलिफ़ मुक़ामात पर जाकर लोगों में सुलह कराए। (अन निसा : 114)

١- بَابُ مَا جَاءَ فِي الإِسْلَاحِ بَيْنَ النَّاسِ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: لَا غَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِنْ نَجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَقْرُوفٍ أَوْ إِسْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا [النساء : ११४].  
وَمَخْرُوجِ الْإِيمَانِ إِلَى الْمَوَاضِعِ لِيُصْلَحَ بَيْنَ النَّاسِ بِأَصْحَابِهِ.

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सुलह की फ़ज़ीलत में इसी आयत पर इत्तिस्लार किया, शायद उनको कोई हदीसे सहीह इस बाब में अपनी शर्त पर नहीं मिली। इमाम अहमद (रह.) ने अबू दर्दा से मर्फूअन निकाला कि मैं तुमको वो बात न बतलाऊँ जो रोज़े और नमाज़ और सद्क़े से अफ़ज़ल है, वो क्या है आपस में मिलाप कर देना। आपस में फ़साद नेकियों को मिटा देता है। सुलह के मुकाबले पर फ़साद झगड़ा जिसकी कुआन मजीद ने शिद्दत से बुराई की है और बार बार बतलाया है कि अल्लाह पाक झगड़े फ़साद को दोस्त नहीं रखता। वो बहरहाल सुलह, अमन, मिलाप को दोस्त रखता है।

2690. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि (कुबा के) बनू अम्प बिन औफ़ में आपस में कुछ तकरार हो गई थी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने कई अम्ह्बाब को साथ लेकर उनके यहाँ उनमें सुलह कराने के लिये गए और नमाज़ का वक़्त हो गया, लेकिन आप तशरीफ़ न ला सके। चुनौचे बिलाल

٢٦٩٠- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : (رَأَى نَاسًا مِنْ بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ كَانُوا بَيْنَهُمْ شَيْءٌ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ فِي أَنْاسٍ مِنْ

(रज़ि.) ने आगे बढ़कर अज्ञान दी, अभी तक चूँकि आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ नहीं लाए थे। इसलिये वो (आँहज़रत ﷺ) ही की हिदायत के मुताबिक़) अबूबक्र (रज़ि.) के पास आए और उनसे कहा कि हुज़ूर (ﷺ) वहीं रुक गए हैं और नमाज़ का वक़्त हो गया है, क्या आप लोगों को नमाज़ पढ़ा देंगे? उन्होंने कहा कि हाँ, अगर तुम चाहो। उसके बाद बिलाल (रज़ि.) ने नमाज़ की तक्बीर कही और अबूबक्र (रज़ि.) आगे बढ़े। (नमाज़ के दरम्यान) नबी करीम (ﷺ) सफ़ों के दरम्यान से गुज़रते हुए पहली सफ़ में आ पहुँचे। लोग बार बार हाथ पर हाथ मारने लगे। मगर अबूबक्र (रज़ि.) नमाज़ में किसी दूसरी तरफ़ मुतवज्जह नहीं होते थे (मगर जब बार बार ऐसा हुआ तो) आप मुतवज्जह हुए और मा'लूम किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आपके पीछे हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ के इशारे से उन्हें हुक्म दिया कि जिस तरह वो नमाज़ पढ़ा रहे हैं, उसे जारी रखें। लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) ने अपना हाथ उठाकर अल्लाह की हम्द बयान की और ऊनटे पांव पीछे आ गए और सफ़ में मिल गये। फिर नबी करीम (ﷺ) आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ से फ़ारिग होकर आप लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उन्हें हिदायत की कि लोगों! जब नमाज़ में कोई बात पेश आती है तो तुम हाथ पर हाथ मारने लगते हो। हाथ पर हाथ मारना औरतों के लिये है। (मर्दों को) जिसकी नमाज़ में कोई बात पेश आए तो सुब्हानल्लाह कहना चाहिये क्योंकि ये लफ़्ज़ जो भी सुनेगा वो मुतवज्जह हो जाएगा। ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! जब मैंने इशारा भी कर दिया था फिर आप लोगों को नमाज़ क्यूँ नहीं पढ़ाते रहे? उन्होंने अर्ज़ किया, अबू क़हाफ़ा के बेटे के लिये ये बात मुनासिब न थी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के होते हुए नमाज़ पढ़ाए (राजेअ : 864)

أَمَحَابَهُ يُصَلِّحُ بَيْنَهُمْ، فَحَضَرَتِ الصَّلَاةُ  
وَلَمْ يَأْتِ النَّبِيُّ ﷺ، فَجَاءَ بِلَالٌ فَأَذَّنَ  
بِالصَّلَاةِ وَلَمْ يَأْتِ النَّبِيُّ ﷺ. فَجَاءَ إِلَى  
أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَيْسَ،  
وَقَدْ حَضَرَتِ الصَّلَاةُ، فَهَلْ لَكَ أَنْ تَرْمِ  
النَّاسَ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، إِنْ شِئْتَ. فَأَقَامَ  
الصَّلَاةَ. فَتَقَدَّمَ أَبُو بَكْرٍ، ثُمَّ جَاءَ النَّبِيُّ  
ﷺ يَمْشِي فِي الصُّفُوفِ حَتَّى قَامَ فِي  
الصَّفِّ الْأَوَّلِ، فَأَخَذَ النَّاسُ بِالتَّصْفِيحِ  
حَتَّى اسْتَكْرَأُوا، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ لَا يَكَاذُ  
يَلْتَفِتُ فِي الصَّلَاةِ، فَالْتَفَتَ إِذَا هُوَ بِالنَّبِيِّ  
ﷺ وَرَاءَهُ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ بِيَدِهِ فَأَمَرَهُ يُصَلِّي  
كَمَا هُوَ، فَرَفَعَ أَبُو بَكْرٍ يَدَهُ فَحَمِدَ اللَّهَ،  
ثُمَّ رَجَعَ الْقَهْقَرَى وَرَاءَهُ حَتَّى دَخَلَ فِي  
الصَّفِّ، وَتَقَدَّمَ النَّبِيُّ ﷺ فَصَلَّى بِالنَّاسِ  
لَمَّا فَرَّغَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: ((يَا  
أَيُّهَا النَّاسُ، إِذَا نَابَكُمْ شَيْءٌ فِي صَلَاتِكُمْ  
أَخْلَثُمْ بِالتَّصْفِيحِ، إِنَّمَا التَّصْفِيحُ لِلنِّسَاءِ،  
مَنْ نَابَهُ شَيْءٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيَقُلْ سُبْحَانَ  
اللَّهِ، فَإِنَّهُ لَا يَسْمَعُهُ أَحَدٌ إِلَّا الْغَفَّتْ. يَا أَيُّهَا  
بَكْرُ، مَا مَنَعَكَ حِينَ أَشْرَفْتَ إِلَيْكَ لَمْ  
تُصَلِّ بِالنَّاسِ؟)) فَقَالَ: مَا كَانَ يَنْبَغِي لِأَبِي  
أَبِي قَحَاةٍ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ  
ﷺ. (راجع: ٨٦٤)

ये हदीस पीछे गुज़र चुकी है। यहाँ हज़रत मुज्ताहिदे मुत्तलक़ इमाम बुखारी (रह.) इस हदीस को इसलिये लाए कि इसमें आपके बमुक़ाम कुबा बन्ू अम्र बिन औफ़ में सुलह कराने के लिये तशरीफ़ ले जाने का ज़िक्र है। मा'लूम हुआ कि सुलह को इतनी अहमियत है कि उसके लिये बड़ी से बड़ी शख़्सियत भी पेश क़दमी कर सकती है। भला रसूले करीम (ﷺ) से अफ़ज़ल, बेहतर और बड़ा कौन होगा। आप खुद इस पाक मक्क़सद के लिये कुबा तशरीफ़ ले गए।

ये भी मा'लूम हुआ कि नमाज़ में नादानी से कुछ लज़िश हो जाए तो वो बहरहाल काबिले मुआफ़ी है। मगर इमाम को चाहिये कि ग़लती करने वालों को आइन्दा के लिये हिदायत कर दे।

2691. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया, अगर आप अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) के यहाँ तशरीफ़ ले चलते तो बेहतर था। आँहज़रत (ﷺ) उसके यहाँ एक गधे पर सवार होकर तशरीफ़ ले गए। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम पैदल आपके साथ थे। जिधर से आप गुज़र रहे थे वो शोर (खारी) ज़मीन थी। जब नबी करीम (ﷺ) उसके यहाँ पहुँचे तो वो कहने लगा ज़रा आप दूर ही रहिए आपके गधे की बूने मेरा दिमाग़ परेशान कर दिया है। उस पर एक अंसारी सहाबी बोले कि अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) का गधा तुझसे ज़्यादा खुशबूदार है। अब्दुल्लाह (मुनाफ़िक़) की तरफ़ से उसकी क़ौम का एक शख्स उन सहाबी की इस बात से गुस्सा हो गया और दोनों ने एक-दूसरे को बुरा-भला कहा। फिर दोनों तरफ़ से दोनों के हिमायती मुस्तइल हो गए और हाथापाई, छड़ी और जूते तक की नौबत पहुँच गई। हमें मा'लूम हुआ है कि ये आयत उसी मौक़े पर नाज़िल हुई थी। अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ें तो उनमें सुलह करा दो।

۲۶۹۱- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ قَالَ : سَمِعْتُ أَبِي أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ لَوْ أَتَيْتَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أُبَيٍّ. فَأَنْطَلَقَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ وَرَكِبَ حِمَارًا، فَأَنْطَلَقَ الْمُسْلِمُونَ يَمْشُونَ مَعَهُ - وَهِيَ أَرْضٌ مَبْحَةٌ - فَلَمَّا أَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: إِنَّكَ غَنِيٌّ، وَاللَّهُ لَقَدْ آذَانِي تَنُ حِمَارَكَ. فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ مِنْهُمْ: وَاللَّهِ لَحِمَارُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَطْيَبُ رِيحًا مِنْكَ. فَغَضِبَ لِعَبْدِ اللَّهِ رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ، فَشَتَمَا، فَغَضِبَ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا أَمْصَحَاهُ، فَكَانَ بَيْنَهُمَا ضَرْبٌ بِالْجَرِيدِ وَالْأَيْدِي وَالنَّعَالِ، فَلَمَّا أَتَاهَا أَنْزَلَتْ: ﴿وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتُلَا لِأَمْصَحُوا بَيْنَهُمَا﴾ [الحجرات: 9].

**तशरीह:** अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ खज़रज का सरदार था, मदीना वाले उसको बादशाह बनाने वाले थे, आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ ले गए और ये अम्र मुल्लवी हो गया। लोगों ने आपको ये राय दी कि आप उसके पास तशरीफ़ ले जाएँगे तो उसकी दिलजोई होगी और बहुत से लोग इस्लाम कुबूल करेंगे। नबी मगरूर नहीं होते, आप बिला तकल्लुफ़ तशरीफ़ ले गए। मगर उस मर्द ने जो अपने आपको बहुत नफ़ीस समझता था, आपके गधे को बदबूदार समझा और ये गुस्ताख़ाना कलाम किया जो उसके खुबुषे बातिनी की दलील था। एक अंसारी सहाबी ने उसको मुँहतोड़ जवाब दिया। जिसे सुनकर उस मुनाफ़िक़ के खानदान के कुछ लोग तैश में आ गए और करीब था कि आपस में जंग बपा हो जाए, आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों फ़रीक़ में सुलह करा दी, आयत में मुसलमानों में सुलह कराने का ज़िक्र है। ये दोनों गिरोह मुसलमान ही थे। किताबुससुलह में इसलिये इस हदीस को हज़रत इमाम (रह.) ने दर्ज किया कि आपस की सुलह सफ़ाई के लिये आँहज़रत (ﷺ) की सख़्ततरीन ताकीदात हैं और ये अमल इन्द्ल्लाह बहुत ही अज़ो-श़वाब का मौजिब है। आयते मज़क़ूर फ़िल्बाब में ये है कि मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़पड़ें तो उनमें सुलह करा दो। मगर यहाँ ये ए'तिराज़ होता है कि आयत तो मुसलमानों के बारे में है और अब्दुल्लाह बिन उबई के साथी तो उस वक़्त काफ़िर थे। कस्तलानी ने कहा इब्ने अब्बास की तफ़सीर में है कि अब्दुल्लाह बिन उबय के साथी भी मुसलमान हो चुके थे, आयत में लफ़ज़, मोमिनीन खुद इस अम्र पर दलील है।

अहले इस्लाम का बाहमी क़त्ल व क़िताल इतना बुरा है कि उसकी जिस क़दर मज़मूत की जाए कम है। अल्लाहुम्मा

अल्लिफ़ बैन कुलूबिना वस्लिह जाता बैनिना कुछ मुतअस्सिब मुकल्लिद उलमा ने अपने मसलक के सिवा दूसरे मुसलमानों के खिलाफ़ अवाम में इस कदर तअस्सुब फैला रखा है कि वो दूसरे मुसलमानों को बिलकुल अजनबियत की निगाहों से देखते हैं। ऐसे उलमा को अल्लाह नेक हिदायत करे, आमीन। खास तौर पर अहले हदीष से बुग़ज व इनाद अहले बिदअत की निशानी है जैसा कि हज़रत शाह अब्दुल कादिर जीलानी (रह.) ने तहरीर फ़र्माया है।

## बाब 2 : दो आदमियों में मेल-मिलाप कराने के लिये झूठ बोलना गुनाह नहीं है

2692. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया मालेह बिन कैसान से, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि उनकी वालिदा उम्मे कुलथुम बिनते इब्बा ने उन्हें ख़बर दी और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि झूठा वो नहीं है जो लोगों में बाहम सुलह कराने की कोशिश करे और उसके लिये किसी अच्छी बात की घुगली खाए या उसी सिलसिले की और कोई अच्छी बात कह दे।

## ۲- بَابُ لَيْسَ الْكَاذِبُ يُصْلِحُ بَيْنَ

النَّاسِ

۲۶۹۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ أَبِي شِهَابٍ أَنَّ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أُمَّهُ أَمْ كُلْثُومُ بِنْتُ عُقْبَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَيْسَ الْكَاذِبُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ فَيُصْبِحَ غَيْرًا أَوْ يَقُولَ غَيْرًا)).

**तशरीह :** मसलन दो आदमियों में रंज हो और ये मिलाप कराने की निय्यत से कहे कि वो तो आपके ख़ैर-ख़वाह हैं या आपकी ता'रीफ़ करते हैं। क़स्तलानी (रह.) ने कहा ऐसे झूठ की सख़्सत है जिससे बहुत से फ़ायदे की उम्मीद हो। इमाम मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि तीन जगह झूठ बोला जा सकता है। एक तो लड़ाई में, दूसरे मुसलमानों में आपस में मेल-जोल कराने में, तीसरे अपनी बीबी से। कुछ ने और मुकामों को भी जहाँ कोई मस्लिहत हो, उन ही पर क़यास किया है। वो कहते हैं झूठ बोलना जब मना है जब उससे नुक़सान पैदा हो या उसमें कोई मस्लिहत न हो, कुछ ने कहा झूठ हर हाल में मना है और ऐसे मुक़ामों में तो रिया करना बेहतर है। मसलन कोई ज़ालिम से यूँ कहे कि मैं तो आपके लिये दुआ किया करता हूँ और मत्तलब ये रखे अल्लाहुम्मगफ़िर लिलमुस्लिमीन कहा करता हूँ, और ज़रूरत के वक़्त तो झूठ बोलना बिल इतिफ़ाक़ जाइज़ है। ज़रूरत से मज़क़ूर सुलह सफ़ाई की ज़रूरत मुराद है, या किसी ज़ालिम के जुल्म से बचने या किसी को बचाने के लिये झूठ बोलना, हदीष इन्नमलआमालु बिन्निध्याति का ये भी मत्तलब है।

## बाब 3 : हाकिम लोगों से कहे हमको ले चलो हम सुलह करा दें

2693. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी और इस्हाक़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि कुबा के

## ۳- بَابُ قَوْلِ الْإِمَامِ لِأَصْحَابِهِ :

اذْهَبُوا بِنَا نُصْلِحْ

۲۶۹۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَوْتَيْسِيُّ وَاسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْقُرَوِيُّ قَالَا : حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي حَارِثٍ عَنْ سَهْلِ



लोगों ने आपस में झगड़ा किया और नौबत यहाँ तक पहुँची कि एक ने दूसरे पर पत्थर फेंके, आँहज़रत (ﷺ) को जब उसकी इत्तिलाअ मिली तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया। चलो हम उनमें सुलह कराएँगे। (राजेअ : 684)

ابن مسعود رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَقْلَ قَبِيلَةٍ اقْتَلَوْا حَتَّى تَرَامُوا بِالْحِجَارَةِ، فَأَخْبَرَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِذَلِكَ فَقَالَ: «ادْفَعُوا بِنَا نَصْلِحَ بَيْنَهُمْ». [راجع: ٦٨٤]

गोया आप (ﷺ) ने सुलह के लिये खुद पेशक़दमी फ़र्माई, यही बाब का मक़सद है। बाहमी झगड़े का होना हर वक़्त मुम्किन है, मगर इस्लाम में तकाज़न बल्कि इंसानियत का तकाज़ा है कि हुस्ने तदबीर से ऐसे झगड़ों को ख़त्म करके बाहमी इत्तिफ़ाक़ करा दिया जाए।

**बाब 4 : सूरह निसा में अल्लाह का ये फ़र्माना  
अगर मियाँ-बीवी सुलह कर लें तो सुलह ही  
बेहतर है**

2694. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान प्रौरी ने बयान किया हिशाम बिन इर्वा से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने (अल्लाह तआला के उस फ़र्मान की तफ़सीर में फ़र्माया) अगर कोई औरत अपने शौहर की तरफ़ से बेतवज्जही देखे तो उससे मुराद ऐसा शौहर है जो अपनी बीवी में ऐसी चीज़ें पाए जो उसे पसन्द न हों, उम्र की ज्यादाती वगैरह और इसलिये उसे अपने से अलग करना चाहता हो और औरत कहे कि मुझे जुदा न करो (नफ़का वगैरह) जिस तरह तुम चाहो देते रहो। तो उन्होंने फ़र्माया कि अगर दोनों उस पर राज़ी हो जाएँ तो कोई हर्ज नहीं है। (राजेअ : 2450)

٤- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:  
إِذَا يَصَلَاحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا، وَالصُّلْحُ

خَيْرٌ ﴿النساء: ١٢٨﴾

٢٦٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: «وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا، قَالَتْ: «هُوَ الرَّجُلُ يَرَى مِنْ أَمْرَائِهِ مَا لَا يَعْجِبُهُ كِبَرًا أَوْ غَيْرَ فَيُرِيدُ طَرَاثُهَا، فَتَقُولُ: أَسْمِكُنِي، وَالْقِيمَ لِي مَا جِئْتُ قَالَتْ: فَلَا بَأْسَ إِذَا تَرَاضَا».

[راجع: ٢٤٥٠]

फिर अगर मर्द करारदाद के मुवाफ़िक़ उसकी बारी में दूसरी औरत के पास रहे या उसको खर्च कम दे तो गुनाहगार न होगा क्योंकि औरत ने अपनी रज़ामन्दी से अपना हक़ साकि़त (स्थगित) कर दिया, जैसा कि हज़रत सौदा (रज़ि.) ने अपनी रज़ा से अपनी बारी हज़रत आइशा (रज़ि.) को हिबा कर दी थी और आँहज़रत (ﷺ) उनकी बारी के दिन हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ रहा करते थे। मियाँ-बीवी का बाहमी तौर पर सुलह सफ़ाई से रहना इस्लाम में बढ़ी अहमियत रखता है।

**बाब 5 : अगर जुल्म की बात पर सुलह करें तो वो  
सुलह लगव है**

2695, 96. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी जिब ने बयान किया, कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे

٥- بَابُ إِذَا اصْطَلَحُوا عَلَى صُلْحٍ  
جَوْرٍ فَالْصُّلْحُ مَرْذُودٌ

٢٦٩٥, ٢٦٩٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذَنْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ

उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती आया और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हमारे दरम्यान किताबुल्लाह से फ़ैसला कर दीजिए। दूसरे फ़रीक ने भी यही कहा कि उसने सच कहा है। आप हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कर दें। देहाती ने कहा कि मेरा लड़का उसके यहाँ मज़दूर था। फिर उसने उसकी बीवी से ज़िना किया। क़ौम ने कहा तुम्हारे लड़के को रजम किया जाएगा, लेकिन मैंने अपने लड़के के इस जुर्म के बदले में सौ बकरियाँ और एक बांदी दे दी। फिर मैंने इल्म वालों से पूछा तो उन्होंने बताया कि उसके सिवा कोई मूरत नहीं कि तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े लगाए जाएँ और एक साल के लिये मुल्क बदर कर दिया जाए। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तुम्हारा फ़ैसला किताबुल्लाह ही से करूँगा। बांदी और बकरियाँ तो तुम्हें वापस लौटा दी जाती हैं, अल्बत्ता तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े लगाए जाएँगे और एक साल के लिये मुल्क बदर किया जाएगा और उनैस तुम (ये क़बीला असलम के एक महाबी थे) उस औरत के घर जाओ और उसे रजम कर दो (अगर वो ज़िना का इकरार कर ले) चुनाँचे उनैस गए, और (चूँकि उसने भी ज़िना का इकरार कर लिया था इसलिये) उसे रजम कर दिया। (राजेज़: 2314, 2315)

عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ  
وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا  
لَأَنَّ: جَاءَ أَغْرَابِيٌّ لَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ  
أَقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ. فَقَامَ عَصَمَةُ  
فَقَالَ: صَدَقَ، أَقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ.  
فَقَالَ الْأَغْرَابِيُّ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيقًا عَلَى  
هَذَا فَرْزِي بِأَمْرَائِي، فَقَالُوا لِي: عَلَى ابْنِكَ  
الرُّجْمُ، فَقَذَيْتُ ابْنِي مِنْهُ بِعَالَةٍ مِنَ الْقَتَمِ  
وَالْوَلِيدَةِ، ثُمَّ سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَقَالُوا: إِنَّمَا  
عَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَقْرِبُ عَامٍ. فَقَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا فَعِيلَ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللَّهِ،  
أَمَّا الْوَلِيدَةُ وَالْقَتَمُ فَرُدُّهُمَا عَلَيْكَ، وَعَلَى  
ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَقْرِبُ عَامٍ. وَأَمَّا أَنْتَ يَا  
أَنْتُسُ - بِرَجُلٍ - فَاهْذُ عَلَى امْرَأَةٍ هَذَا  
فَارْجُمَهَا. فَقَذَا عَلَيْهَا أَنْتُسُ فَرَجَمَهَا)).

[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

**तशरीह:** ज़ानी लड़के के बाप ने बीवी के शौहर से सौ बकरियाँ और एक लौण्डी देकर सुलह कर ली। बाब का मतलब इससे निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तेरी बकरियाँ और लौण्डी तुझको वापस मिलेंगी, क्योंकि ये नाजाइज़ और ख़िलाफ़े शरीअत सुलह थी। इब्ने दकीकुल ईट ने कहा, इस इदीष से ये निकला कि नाजाइज़ मुआवज़े के बदले जो चाज़ ली जाए उसका फेर देना वाजिब है, लने वाला उसका मालिक नहीं होता। रिवायत में अहले इल्म से मुराद वो सहाब हैं जो आँहज़रत (ﷺ) की ज़िन्दगी में फ़त्वा दिया करते थे। जैसे खुलफ़ा-ए-अरब़ा और मुआज़ बिन जबल और उबैद बिन क़अब और ज़ैद बिन वाबित और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.);

ये भा भा लुप्त हुआ कि जो मसला 174 लूभ न हो अहले इल्म से उसकी तहकाफ़ व रलना जरूरी है और ये तहकीक़ किताब व सुन्नत की राशनी में होनी चाहिये न कि महज़ तक्लीद के आँधरे में ठोकरें खाई जाएँ, आयत फ़सलू अहलज़िज़िर इन्कुन्तुम ला तज़लमून (अन्-हल: 43) का यही मतलब है।

2697. हमसे यअक़ूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने हमारे दीन में अज़ख़ुद कोई ऐसी चीज़ निकाली जो उसमें नहीं थी तो वो

٢٦٩٧ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ  
وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا  
لَأَنَّ: جَاءَ أَغْرَابِيٌّ لَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ  
أَقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ. فَقَامَ عَصَمَةُ  
فَقَالَ: صَدَقَ، أَقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ.  
فَقَالَ الْأَغْرَابِيُّ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيقًا عَلَى  
هَذَا فَرْزِي بِأَمْرَائِي، فَقَالُوا لِي: عَلَى ابْنِكَ  
الرُّجْمُ، فَقَذَيْتُ ابْنِي مِنْهُ بِعَالَةٍ مِنَ الْقَتَمِ  
وَالْوَلِيدَةِ، ثُمَّ سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَقَالُوا: إِنَّمَا  
عَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَقْرِبُ عَامٍ. فَقَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا فَعِيلَ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللَّهِ،  
أَمَّا الْوَلِيدَةُ وَالْقَتَمُ فَرُدُّهُمَا عَلَيْكَ، وَعَلَى  
ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَقْرِبُ عَامٍ. وَأَمَّا أَنْتَ يَا  
أَنْتُسُ - بِرَجُلٍ - فَاهْذُ عَلَى امْرَأَةٍ هَذَا  
فَارْجُمَهَا. فَقَذَا عَلَيْهَا أَنْتُسُ فَرَجَمَهَا)).

रह है। इसकी रिवायत अब्दुल्लाह बिन जा'फर मखरमी और अब्दुल  
वाहिद बिन अबी औन ने सअद बिन इब्राहीम से की है।

هَذَا مَا لَيْسَ فِيهِ فَهْوَ رَدٌّ. رَوَاهُ عَبْدُ اللَّهِ  
بْنُ جَعْفَرٍ الْمَخْرَمِيُّ وَعَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَبِي  
عَوْنٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ.

**तशरीह :** अब्दुल्लाह बिन जा'फर की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और अब्दुल वाहिद की रिवायत को दारे कुत्नी ने वस्ल  
किया है। इस हदीष से ये निकला कि जो सुलह बरखिलाफ कवाइदे शरअ हो वो लख और बातिल है और जब  
सुलह का मुआहिदा बातिल ठहरा तो जो मुआवज़ा किसी फ़रीक ने लिया वो वाजिबुर रह होगा।

ये हदीष शरीअत की असलुल उसूल (बुनियादी नियम) है। इससे उन तमाम बिदआत का जो लोगों ने दीन में निकाल  
रखी है पूरा रद्द हो जाता है। जैसे तीजा, फ़ातिहा, चहलुम, शबे बरात का हलवा, मुहर्रम का खिचड़ा, तअज़िया, शद्दा, मौलूद,  
उर्स, क़ब्रों पर ग़िलाफ़ व फूल डालना, उन पर मेले करना वगैरह वगैरह। ये जुम्ला उमूर इसलिये बिदअते सइय्या हैं कि ज़मान-  
ए-रिसालत, ज़मान-ए-सहाबा व ताबेईन में इनका कोई वजूद नहीं मिलता, जैसा कि कुतुबे तारीख़ वस्सियर मौजूद है। मगर  
किसी भी मुस्तनद किताब में किसी भी जगह इन बिदआते सइय्या का प्बूत नहीं मिलता। अगर सारे अहले बिदअत भी मिलकर  
ज़ोर लगाएँ तो नाकाम रहेंगे। बहरहाल बिदअत से परहेज़ करना और सुन्नते नबवी को मा'मूल बनाना बेहद ज़रूरी है। किसी  
ने सच कहा है :-

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क  
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

**बाब 6 : सुलह नामा में ये लिखना काफ़ी है, ये  
वो सुलह नामा है जिस पर फ़लाँ वल्द फ़लाँ और  
फ़लाँ वल्द फ़लाँ ने सुलह की और ख़ानदान और  
नसबनामा लिखना ज़रूरी नहीं है**

(अगर दोनों शख्स मशहूर मा'रूफ हों)

٦- بَابُ كَيْفَ يَكْتُبُ: هَذَا مَا  
صَالِحٌ فَلَانُ ابْنُ فَلَانٍ وَإِنْ لَمْ يَنْسَبْهُ  
إِلَى قَبِيلَتِهِ أَوْ نَسَبِهِ

2698. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि  
हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया,  
उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने बराअ बिन आज़िद  
(रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ)  
ने हुदबिया को सुलह (कुरैश से) की तो उसकी दस्तावेज़ हज़रत  
अली (रज़ि.) ने लिखी थी। उन्होंने उसमें लिखा मुहम्मद अल्लाह  
के रसूल (ﷺ) की तरफ़ से। मुशिकीन ने उस पर ए'तिराज़ किया  
कि लफ़्ज़े मुहम्मद के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) न लिखो, अगर  
आप रसूलुल्लाह होते तो हम आपसे लड़ते ही क्यों? औ हज़रत (ﷺ)  
ने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का  
लफ़्ज़ मिटा दो, अली (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कहा कि मैं तो इसे  
नहीं मिटा सकता, तो औ हज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ से वो  
लफ़्ज़ मिटा दिया और मुशिकीन के साथ इस शर्त पर सुलह की

٢٦٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي  
إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَوَاءَ بْنَ عَازِبٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا صَالَحَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَهْلَ الْحُدَيْبِيَّةِ كَتَبَ عَلِيُّ  
رَضَوَانِ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَّهِمُ كِتَابًا، فَكَتَبَ  
مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: لَا  
تَكْتُبْ مُحَمَّدُ رَسُولُ اللَّهِ، لَوْ كُنْتَ  
رَسُولًا لَمْ نَقْبَلْكَ. فَقَالَ لِعَلِيٍّ: أَمَحُ.  
قَالَ عَلِيٌّ: مَا أَنَا بِأَلَدِي أَمَحَاهُ. فَمَحَاهُ

कि आप अपने अस्त्राब के साथ (आइन्दा साल) तीन दिन के लिये मक्का आएँ और हथियार म्यान में रखकर दाखिल हों, शागिदों ने पूछा कि जुलुबानुस्सलाह (जिसका यहाँ जिक्र है) क्या चीज़ होती है? तो उन्होंने बताया कि म्यान और जो चीज़ उसके अंदर होती है (उसका नाम जुलबान है) (राबेअ: 1781)

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، يَدِيهِ وَمَا لَحْتُهُمْ عَلَى أَنْ  
يَدْخُلَ هُوَ وَأَصْحَابُهُ فَلَا تَلَاةَ لَهُمْ، وَلَا  
يَدْخُلُوهَا إِلَّا بِجَلْبَانِ السَّلَاحِ. فَسَأَلُوهُ.  
مَا جَلْبَانِ السَّلَاحِ؟ فَقَالَ: الْقِرَابُ بِمَا  
فِيهِ. [راجع: ١٧٨١]

**तशरीह:** सुलहनामा में सिर्फ़ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखा गया। उसी से बाब का तर्जुमा नाबित हुआ। इससे ज़ाहिर हुआ कि किसी मौके पर अगर मुखालिफ़ीन कोई नामुनासिब मतालिब करें जो ज़िद की हद तक पहुँच जाए तो मजबूरन उसे तस्लीम करना पड़ेगा। आज जबकि अहले इस्लाम अक्रिलियत में सलामती है। ऐसे उमूर के लिये उम्मीद है कि इन्दल्लाह मुवाख़ज़ा न होगा।

औहज़रत (ﷺ) मुस्तज़िबल में इस्लाम की फ़तहे मुबीन (खुली जीत) देख रहे थे। इसी लिये हुदैबिया के मौके पर मस्लिहूतन आपने मुश्रिकीन की कई नामुनासिब बातों को तस्लीम कर लिया और आइन्दा खुद मुश्रिकीने मक्का ही को उनकी ग़लत शर्तों का ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ा। सच है, अल हक्क यअलू वला युअला अलैहि

2699. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया इस्राईल से, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ीक्रअद के महीने में उमरह का एहराम बाँधा। लेकिन मक्का वालों ने आपको शहर में दाखिल नहीं होने दिया। आखिर सुलह इस पर हुई कि (आइन्दा साल) आप मक्का में तीन रोज़ तक क़याम करेंगे। जब सुलहनामा लिखा जाने लगा तो उसमें लिखा गया कि ये वो सुलहनामा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया है। लेकिन मुश्रिकीन ने कहा कि हम तो उसे नहीं मानते। अगर हमें इल्म हो जाए कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो हम आपको न रोकेँ। बस आप सिर्फ़ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं रसूलुल्लाह भी हूँ और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूँ। उसके बाद आप (ﷺ) ने अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का लफ़ज़ मिटा दो, उन्होंने अज़्र किया, नहीं अल्लाह की क़सम! मैं तो ये लफ़ज़ कभी न मिटाऊँगा। आखिर आप (ﷺ) ने खुद दस्तावेज़ ली और लिखा कि ये उसकी दस्तावेज़ है कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने इस शर्त पर सुलह की है कि मक्का में वो हथियार म्यान में रखे बग़ैर दाखिल न होंगे। अगर मक्का का कोई शख्स उनक साथ जाना चाहेगा, तो वो उसे साथ न ले जाएँगे। लेकिन अगर उनके अस्त्राब में से कोई शख्स मक्का में रहना चाहेगा तो उसे वो रोकेँगे नहीं। जब (आइन्दा

٢٦٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ  
إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الثَّوْرِيِّ وَهَيْبِ  
اللَّيْثِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ فِي رُحَى  
الْفُجْدَةِ، فَأَمَى أَهْلَ مَكَّةَ أَنْ يَدْخُلُوهُ يَدْخُلُ  
مَكَّةَ، حَتَّى لَا تَضَاهُمْ عَلَى أَنْ يَخِيَمَ بِهَا  
ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ. فَلَمَّا كَتَبُوا الْكِتَابَ كَتَبُوا: هَذَا  
مَا لَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ،  
فَقَالُوا: لَا نُفَرِّقُ بِهَا، فَلَوْ نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ  
اللَّهِ مَا مَنَعْنَاكَ، لَكِنْ أَنْتَ مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ  
اللَّهِ. قَالَ: ((أَنَا رَسُولُ اللَّهِ، وَأَنَا مُحَمَّدٌ  
بْنُ عَبْدِ اللَّهِ))، ثُمَّ قَالَ لِعَلِيِّ: ((امْحُ)):  
((رَسُولُ اللَّهِ)) قَالَ: لَا وَاللَّهِ لَا أَصْحُوكَ  
أَبَدًا، فَأَعَدَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْكِتَابَ  
لَكَتَبَ: هَذَا مَا لَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ بْنُ  
عَبْدِ اللَّهِ، لَا يَدْخُلُ مَكَّةَ سَلَاخَ إِلَّا فِي  
الْقِرَابِ، وَأَنْ لَا يَخْرُجَ مِنْ أَهْلِهَا بِأَحَدٍ

साल) आप मक्का तशरीफ ले गए और (मक्का में क्रयाम की) मुहत पूरी हो गई तो कुरैश अली (रज़ि.) के पास आए और कहा कि अपने साहब से कहिए कि मुहत पूरी हो गई है और अब वो हमारे यहाँ से चले जाएँ। चुनौचे नबी करीम (ﷺ) मक्का से रवाना होने लगे। उस वक़्त हम्ज़ा (रज़ि.) की एक बच्ची चचा-चचा करती हुई आई। अली (रज़ि.) ने उन्हें अपने साथ ले लिया, फिर फ़ातिमा अलैहस्सलाम के पास हाथ पकड़कर लाए और फ़र्माया, अपनी चचाज़ाद बहन को भी साथ ले लो, उन्होंने उसको अपने साथ सवार कर लिया, फिर अली, ज़ैद और जा'फ़र (रज़ि.) का झगड़ा हुआ। अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उसका मैं ज़्यादा मुस्तहिक हूँ, ये मेरे चचा की बच्ची है। जा'फ़र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ये मेरे भी चचा की बच्ची है और उसकी ख़ाला मेरे निकाह में भी हैं। ज़ैद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरे भाई की बच्ची है। नबी करीम (ﷺ) ने बच्चे की ख़ाला के हक़ में फैसला किया और फ़र्माया कि ख़ाला माँ की जगह होती है, फिर अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ। जा'फ़र (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम झूत और आदात व अख़लाक सबमें मुझसे मुशाबेह हो। ज़ैद (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम हमारे भाई भी हो और हमारे मौला भी। (राजेअ : 1781)

إِنْ أَرَادَ أَنْ يَبْعَهُ، وَأَنْ لَا يَمْنَعَ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِهِ أَرَادَ أَنْ يُقِيمَ بِهَا. فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الْأَجَلَ أَتَوْا عَلِيًّا فَقَالُوا: قُلْ لِصَاحِبِكَ اخْرُجْ عَنَّا فَقَدْ مَضَى الْأَجَلَ. فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ، فَبَعَثَهُمْ ابْنَةَ حَمْزَةَ - يَا عَمُّ، يَا عَمُّ - فَتَنَازَلَهَا عَلِيٌّ فَأَخَذَ بِيَدِهَا وَقَالَ لِفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ: دُونَكَ ابْنَةُ عَمِّكَ أَحْمِلِيهَا. فَاتَّخَصَمَ فِيهَا عَلِيٌّ وَزَيْدٌ وَجَعْفَرٌ. فَقَالَ عَلِيٌّ: أَنَا أَحَقُّ بِهَا وَهِيَ ابْنَةُ عَمِّي وَخَالَتُهَا تَحْيَى وَقَالَ زَيْدٌ: ابْنَةُ أَحْيَى. فَقَضَى بِهَا النَّبِيُّ ﷺ لِخَالَاتِهَا وَقَالَ: ((الْخَالَةُ بِمَنْزِلَةِ الْأُمِّ))، وَقَالَ لِعَلِيٍّ: ((أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا مِنْكَ)). وَقَالَ لِجَعْفَرٍ: ((أَشْبَهْتَ خَلْقِي وَخَلْقِي)). وَقَالَ لَزَيْدٍ: ((أَنْتَ أَشْوَنَا وَمَوْلَانَا)). [راجع: 1781]

**तशरीह:** हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के रज़ाई भाई थे। इसलिये उनकी साहबज़ादी ने आपको चचा चचा कहकर पुकारा। हज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने उस बच्ची को अपनी भतीजी इसलिये कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत ज़ैद (रज़ि.) को हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) का भाई बना दिया था। ज़ैद (रज़ि.) से आँहज़रत (ﷺ) ने लफ़्ज़ मौला से खिताब फ़र्माया, मौला उस गुलाम को कहते हैं जिसको मालिक आज़ाद कर दे। आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ैद (रज़ि.) को आज़ाद करके अपना बेटा बना लिया था। जब आप (ﷺ) ने ये लड़की अज़रूए इन्साफ़ हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) को दिलवाई, तो औरों का दिल खुश करने के लिये ये हदीष फ़र्माई। इस हदीष से हज़रत अली (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तेरा हूँ, तू मेरा है। मतलब ये कि हम तुम दोनों एक ही दादा की औलाद हैं और खून मिला हुआ है। हज़रत अली (रज़ि.) ने मिताने और आप (ﷺ) का नामे-नामी लिखने से इंकार उड़ूले हुक्मी के तौर पर नहीं किया, बल्कि कुव्वते इमानिया के जोश से उनसे ये नहीं हो सका कि आपकी रिसालत जो सरासर और बरहक़ और सहीह थी, उसको अपने हाथ से मिटाएँ। हज़रत अली (रज़ि.) को ये भी मा'लूम हो गया था कि आपका हुक्म बतौर वुजूब के नहीं है।

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि तर्जुमा में सिर्फ़ फ़लों बिन फ़लों लिखने पर इत्तिस्ार किया और ज़्यादा नसब नामा खानदान वग़ैरह नहीं लिखवाया। इस रिवायत में जो आपके खुद लिखने का ज़िक्र है ये बतौर मुअजिज़ा होगा, वरना दरहक़ीक़त आप नबी-ए-उम्मी थे और लिखने पढ़ने से आपका कोई ता'ल्लुक न था। फिर अल्लाह ने आपको इल्लुमुल अक्वलीन वल् आख़िरीन से मालामाल फ़र्माया। जो लोग हुज़ूर (ﷺ) के उम्मी होने का इंकार करते हैं वो ग़ालती पर हैं, उम्मी होना भी आपका मुअजिज़ा है।

## बाब 7 : मुश्रीकीन के साथ सुलह करना

इस बाब में अबू सुफयान (रज़ि.) की हदीष है

औफ़ बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि एक दिन आया कि फिर तुम्हारी रूमियों से सुलह हो जाएगी. इस बाब में सहल बिन हनीफ़ अस्मा और मिस्वर (रज़ि.) की भी नबी करीम (ﷺ) से रिवायत हैं।

2700. मूसा बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हमसे सुफयान बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उसे बराअ बिन अज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सुलह हद्दैबिया मुश्रीकीन के साथ तीन शर्तों पर की थी, (1) ये कि मुश्रीकीन में से अगर कोई आदमी आँहज़रत (ﷺ) के पास आ जाए तो आप उसे वापस कर देंगे। लेकिन अगर मुसलमानों में से कोई मुश्रीकीन के यहाँ पनाह लेगा तो ऐसे शख्स को वापस नहीं करेंगे। (2) ये कि आप आइन्दा साल मक्का आ सकेंगे और सिर्फ़ तीन दिन ठहरेंगे। (3) ये कि हथियार, तलवार, तीर वगैरह नियाम और तरकश में डालकर ही मक्का में दाखिल होंगे। धुनोंचे अबू जन्दल (रज़ि.) (जो मुसलमान हो गए थे और कुरैश ने उनको कैद कर रखा था) बेड़ियों को घिसटते हुए आए, तो आप (ﷺ) ने उन्हें (शराइते मुआहिदे के मुताबिक़) मुश्रीकों को वापस कर दिया। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुअम्मल ने सुफयान से अबू जन्दल का जिक्र नहीं किया है और इल्ला बिजुलुबानिस् सलाह के बजाय इल्ला बिजुलुबिस्सलाह के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं।

2701. हमसे मुहम्मद बिन राफ़ेइ ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह बिन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) इमरह का एहराम बाँधकर निकले, तो कुफ़फ़ारे कुरैश ने आपको बैतुल्लाह जाने से रोक दिया। इसलिये आपने कुर्बानी का जानवर हद्दैबिया में ही ज़िबह कर दिया और सर भी वहीं मुँडवा लिया और कुफ़फ़ारे मक्का से आपने इस शर्त पर सुलह की थी कि आप आइन्दा साल इमरह कर सकेंगे। तलवारों के सिवा और कोई

## ۷- بَابُ الصُّلْحِ مَعَ الْمُشْرِكِينَ:

فِيهِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ

وَقَالَ عَوْفُ بْنُ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَمَنْ تَكُونُ هَذِهِ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ بَنِي الْأَصْنَفِ)).  
وَفِيهِ سَهْلُ بْنُ حَنْفٍ وَأَسْمَاءُ وَالْمُسَوِّزُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

2700- وَقَالَ مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ ((صَالَحَ النَّبِيُّ ﷺ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ عَلَى ثَلَاثَةِ أَشْيَاءَ: عَلَى أَنْ مَنْ آتَاهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ رِذْءٌ إِلَيْهِمْ، وَمَنْ آتَاهُمْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ لَمْ يَرْدُوهُ. وَعَلَى أَنْ يَدْخُلَهَا مِنْ قَابِلٍ وَيَلْبِسَ بِهَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، وَلَا يَدْخُلَهَا إِلَّا بِحُلَّتَانِ السَّلَاحِ: السِّفَرِ وَالْقَوْسِ وَنَحْوِهِ. فَجَاءَ أَبُو جَنْدَلٍ يَخْتَلِلُ لِي قُوْدِهِ فَرِذْءٌ إِلَيْهِمْ)). [راجع: 1781]  
قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: لَمْ يَذْكُرْ مُؤْتَلًى عَنْ سُفْيَانَ أَنَّهُ جَنْدَلٍ، وَقَالَ: ((إِلَّا بِحُلَّتَانِ السَّلَاحِ)).

2701- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَجَ مُعْتَمِرًا، فَحَالَ كَفَّارٌ فَرْتَشَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْبَيْتِ، فَخَرَّ هَدْيُهُ، وَخَلَقَ رَأْسَهُ بِالْحُدَيْبِيَّةِ، وَقَضَاهُمْ

हथियार साथ न लाएँगे। (और वो भी नियाम में होंगी) और कुरैश जितने दिन चाहेंगे उससे ज्यादा मक्का में न उठेंगे। (या'नी तीन दिन) चुनौचे आँहजरत (ﷺ) ने आईन्दा साल उमर रह किया और शराइत के मुताबिक आप (ﷺ) मक्का में दाखिल हुए, फिर जब तीन दिन गुजर चुके तो कुरैश ने मक्का से चले जाने के लिये कहा और आप (ﷺ) वहाँ से वापस चले आए। (दीगर मक़ाम : 4252)

عَلَى أَنْ يَغْتَمِرَ النَّامُ الْمُقْبِلُ، وَلَا يَحْمِلَ سِلَاحًا عَلَيْهِمْ إِلَّا سِوْفًا، وَلَا يُؤْتَمَّ بِهَا إِلَّا مَا أَحَبُّوا. لَأَغْتَمِرَ مِنَ النَّامِ الْمُقْبِلِ لَدَعْلَهَا كَمَا كَانَ صَالِحُهُمْ، فَلَمَّا أَقَامَ بِهَا ثَلَاثًا أَمَرُوهُ أَنْ يَخْرُجَ فَخَرَجَ).

[طرفه ٣ : ٤٢٥٢]

अगरचे मुश्रीकीन की ये शर्तें बिल्कुल नामुनासिब थीं, मगर रहमतुल लिल आलमीन (ﷺ) ने बहुत से मसालेह के पेशेनजर इनको तस्लीम कर लिया। पस मस्लिहतन दबकर सुलह कर लेना भी कुछ मौकों पर जरूरी हो जाता है। इस्लाम सरासर सुलह का हामी है। एक रिवायत में है कि जो शरूफ़ फ़साद को मिटाने के लिये अपना हक छोड़कर भी सुलह कर ले, अल्लाह उससे बहुत ही बेहतर अज़्र अज़ा करता है। हजरत हसन और हजरत मुआविया (रज़ि.) की सुलह भी इसी किस्म की थी।

2702. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे बिस्म ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे बशीर बिन यसार ने और उनसे सहल बिन अबी हश्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन सहल और मुहैसा बिन मसऊद बिन ज़ैद (रज़ि.) ख़ैबर गए। ख़ैबर के यहूदियों से मुसलमानों की उन दिनों सुलह थी। (दीगर मक़ाम : 3173, 6143, 6898, 7192)

٢٧٠٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بَشِيرٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ بَشِيرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي خَتْمَةَ قَالَ: «انْطَلَقَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَهْلٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ مَسْعُودٍ إِلَى خَيْبَرَ وَهِيَ يَوْمَئِذٍ صَلَاحٌ...»

[أطرافه ٣ : ٣١٧٣، ٦١٤٣، ٦٨٩٨]

[٧١٩٢]

इसी से काफ़ि़रों के साथ सुलह करना श्राबित हुआ। सुलह के बारे में इस्लाम ने ख़ास हिदायत इसीलिये दी है कि इस्लाम सरासर अमन और सुलह का अलमबरदार है। इस्लाम ने जंग व जिदाल को कभी पसन्द नहीं किया, कुआन मजीद में साफ़ हिदायत है। व इन जनहू लिस्सल्लिफ ज़नह लहा (अल अन्फाल : 61) अगर दुश्मन सुलह करना चाहे तो आप जरूर सुलह के लिये झुक जाइये। कुआन मजीद में जहाँ भी जंगी अहकामात हैं वो सिर्फ़ मुदाफ़ि़अत के लिये हैं, जारेहाना हिदायत कहीं भी नहीं है।

## बाब 8 : दियत पर सुलह करना (या'नी किस्मास मुआफ़ करके दियत पर राज़ी हो जाना)

2703. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा मुझसे हुमैद ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नज़र की बेटो रबीआ (रज़ि.) ने एक लड़की के दांत तोड़ दिये। उस पर लड़की वालों ने तावान मांगा और उन लोगों ने मआफ़ी चाही, लेकिन मुआफ़ करने से उन्होंने मना कर

## ٨ - بَابُ الصُّلْحِ فِي الدِّيَةِ

٢٧٠٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ أَنَّ الرِّبْعَ - وَهِيَ ابْنَةُ النَّضْرِ - كَسَرَتْ نَيْبَةَ جَارِيَةٍ، فَطَلَبُوا الْأَرْضَ

दिया। चुनौचे नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने बदला लेने का हुक्म दिया (या'नी उनका भी दांत तोड़ दिया जाए) अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! रबीआ का दांत किस तरह तोड़ा जा सकेगा, नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब़रूष किया है, उसका दांत नहीं तोड़ा जाएगा। आँहुज़र (ﷺ) ने फ़र्माया कि अनस! किताबुल्लाह का फ़ैसला तो बदला लेने (क़िसास) ही का है। चुनौचे ये लोग राज़ी हो गए और मुआफ़ कर दिया। फिर आपने फ़र्माया कि अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे भी हैं कि अगर वो अल्लाह की क़सम खा लें तो अल्लाह तआला खुद उनकी क़सम पूरी करता है। फ़ज़ारी ने (अपनी रिवायत में) हमैद से, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से ये ज़्यादाती नक़ल की है कि वो लोग राज़ी हो गए और तावान ले लिया। (दीगर मक़ाम : 2806, 4499, 4500, 4611, 6894)

दियत पर सुलह करना प्रावित हुआ। हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने अल्लाह की क़सम इस उम्मीद पर खाई कि अल्लाह ज़रूर-ज़रूर दूसरे फ़रीक़ का दिल मोड़ देगा और क़िसास के बदले दियत पर राज़ी हो जाएंगे। चुनौचे अल्लाह ने क़सम को पूरा कर दिया और फ़रीक़े शानी दियत लेने पर राज़ी हो गया, जिस पर आँहुज़र (ﷺ) ने बारगाहे इलाही में मक़बूल कुछ लोगों की निशानदेही फ़र्माई कि वो ऐसे होते हैं कि अल्लाह पाक के बारे में अपने दिलों में कोई सच्चा अज़म कर लें और उसको पूरे भरोसे के साथ बीच में ले आएँ तो वो ज़रूर ज़रूर उनका अज़म पूरा कर देता है और वो अपने इरादे में कामयाब हो जाते हैं। अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) और औलिया-ए-कामिलीन में ऐसी बहुत सी मिषालें तरीख़े आलाम के सफ़हात पर मौजूद हैं और कुदरत का ये क़ानून अब भी जारी है।

**बाब 9 : हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) के बारे में नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि ये मेरा बेटा है**

मुसलमानों का सरदार है और शायद इसके ज़रिये अल्लाह तआला मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा दे और अल्लाह पाक का सूरह हुज़रात में ये इश्राद कि, पस दोनों में सुलह करा दो।

2704. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अबू मूसा ने बयान किया कि मैंने हज़रत इमाम हसन बसरी (रह.) से सुना, वो बयान करते थे कि क़सम अल्लाह की! जब हसन बिन अली (रज़ि.) (मुआविया रज़ि. के मुक़ाबले में) पहाड़ों जैसा लश्कर लेकर पहुँचे, तो अम्र बिन आस (रज़ि.) ने कहा (जो

وطلبوا الغفر، فأبوا. فأتوا النبي ﷺ فأمروهم بالقيصاص، فقال أنس بن النضر: أتكسر نية الربيع يا رسول الله؟ لا والذي بعتك بالحق لا تكسر نيتها. فقال: ((يا أنس كجأ الله القصاص)). فرضي القوم وغفوا، فقال النبي ﷺ: ((إن من عباد الله من لو أقسم على الله لأبره)). زاد الفزاري عن حميد عن أنس: ((فرضي القوم وقبلوا الأرش)).

[أطرافه 3: 2806, 4499, 4500, 4611, 6894]

**9- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا:**

((ابني هذا سيد، ولعل الله أن يصلح به بين فئتين عظيمتين، وقوله جل ذكره ﴿فاصالحوا بينهما﴾).

2704- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: ((اسْتَظَلَّ وَاللَّهِ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ مُعَاوِيَةَ بِكَتَابِ أَمْثَالِ الْجِبَالِ، فَقَالَ عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ: إِنِّي



अमीर मुआविया (रज़ि.) के मुशरीर खास थे) कि मैं ऐसा लश्कर देख रहा हूँ जो अपने मुकाबिल को नेस्तो-नाबूद किये बग़ैर वापस न जाएगा। मुआविया (रज़ि.) ने उस पर कहा और क्रसम अल्लाह की, वो उन दोनों अस्त्रहाब में ज्यादा अच्छे थे, कि ऐ अमर! अगर उस लश्कर ने इस लश्कर को क़त्ल कर दिया, या इसने उसको कर दिया, तो (अल्लाह तआला की बारगाह में) लोगों के उमूर (की जवाबदेही के लिये) मेरे साथ कौन ज़िम्मेदारी लेगा? लोगों की बेवा औरतों की खबरगोरी के सिलसिले में मेरे साथ कौन ज़िम्मेदार होगा? लोगों की आल औलाद के सिलसिले में मेरे साथ कौन ज़िम्मेदार होगा? आखिर मुआविया (रज़ि.) ने हसन (रज़ि.) के यहाँ कुरैश की शाख बनू अब्दे शम्स के दो आदमी भेजे। अब्दुरहमान बिन समुरह और अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज, आप (रज़ि.) ने उन दोनों से फ़र्माया कि हसन बिन अली (रज़ि.) के यहाँ जाओ और उनके सामने सुलह पेश करो, उनसे इस पर बातचीत करो और फ़ैसला आप ही की मज़ी पर छोड़ दिया। हसन बिन अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, हम बनू अब्दुल मुजलिब की औलाद हैं और हमको खिलाफ़त की वजह से रुपया पैसा ख़र्च करने की आदत हो गई है और हमारे साथ ये लोग हैं, ये ख़ून ख़राबा में त़ाक़ हैं, बग़ैर रुपया दिये मानने वाले नहीं। वो कहने लगे हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) आपको इतना इतना रुपया देने पर राज़ी हैं और आपसे सुलह चाहते हैं। फ़ैसला आपकी मज़ी पर छोड़ा है और आपसे पूछा है। हज़रत हसन (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उसकी ज़िम्मेदारी कौन लेगा? इन दोनों क़ासिदों ने कहा कि हम इसकी ज़िम्मेदारी लेते हैं। हज़रत हसन ने जिस चीज़ के बारे में भी पूछा, तो उन्होंने यही कहा कि हम उसके ज़िम्मेदार हैं। आखिर आपने सुलह कर ली, फिर फ़र्माया कि मैंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से सुना था, वो बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को सिम्बर पर ये फ़र्माते सुना है और हसन बिन अली (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के पहलू में थे, आप कभी लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होते और कभी हसन (रज़ि.) की तरफ़ और फ़र्माते कि मेरा ये बेटा सरदार है और शायद इसके ज़रिये अल्लाह तआला मुसलमानों

لَأَرَى كِتَابَ لَا تُوَلِّي حَتَّى تَقْتُلَ أَقْرَبَهُ.  
فَقَالَ لَهُ مُعَاوِيَةُ - وَكَانَ وَاللهُ خَيْرَ  
الرَّجُلَيْنِ - أَيُّ عَمْرُو، إِنَّ قَتْلَ هَؤُلَاءِ  
وَهَؤُلَاءِ هَؤُلَاءِ مِنْ لِي بِأُمُورِ النَّاسِ، مَنْ  
لِي بِسَانِهِمْ، مَنْ لِي بِضَيْعَتِهِمْ؟ فَبَعَثَ إِلَيْهِ  
رَجُلَيْنِ مِنْ قُرَيْشٍ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ -  
عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ  
غَامِرِ بْنِ كُرَيْزٍ - قَالَ : اذْهَبَا إِلَى هَذَا  
الرَّجُلِ فَأَعْرِضَا عَلَيْهِ وَقُولَا لَهُ وَاطْلُبَا  
إِلَيْهِ. فَأَتِيَاهُ فَدَخَلَا عَلَيْهِ فَتَكَلَّمَا وَقَالَا لَهُ  
فَطَلُبَا إِلَيْهِ. فَقَالَ لَهُمَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ :  
إِنَّا بَنُو عَبْدِ الْمُطَّلِبِ قَدْ أَصَبْنَا مِنْ هَذَا  
الْمَالِ، وَإِنَّ هَذِهِ الْأُمَّةُ قَدْ عَاقَتْ لِي  
دِمَائِيهَا. قَالَا: فَإِنَّهُ يَغْرُضُ عَلَيْكَ كَذَا  
وَكَذَا. وَيَطْلُبُ إِلَيْكَ وَيَسْأَلُكَ. قَالَ: فَمَنْ  
لِي بِهَذَا؟ قَالَا: نَحْنُ لَكَ بِهِ. فَمَا سَأَلَهُمَا  
شَيْئًا إِلَّا قَالَا: نَحْنُ لَكَ بِهِ. فَصَالَحَهُ.  
فَقَالَ الْحَسَنُ: وَلَقَدْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرَةَ  
يَقُولُ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الْحَنْزِبِ  
- وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ إِلَى جَنْبِهِ - وَهُوَ  
يَقْبُلُ عَلَى النَّاسِ مَرَّةً وَعَلَيْهِ أُخْرَى  
وَيَقُولُ: إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهُ أَنْ  
يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِتْنَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ  
الْمُسْلِمِينَ. قَالَ لِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ:  
إِنَّمَا نَبَتْ لَنَا سِمَاعُ الْحَسَنِ مِنْ أَبِي بَكْرَةَ  
بِهَذَا الْحَدِيثِ.

[أطرافه في : ٣٦٢٩، ٣٧٤٦، ٧١٠٩].

के दो अजीम गिरोह में सुलह कराएगा। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि हमारे नज़दीक इस हदीस से हसन बसरी (रह.) का अबूबक्र (रज़ि.) से सुनना प्राबित हुआ है। (दीगर मक़ाम : 3629, 3746, 7109)

**तशरीह :** हदीस में हज़रत हसन और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की आपसी सुलह का ज़िक्र है और इससे सुलह की अहमियत भी ज़ाहिर होती है। इस मक़सद के तहत मुज्ताहिदे मुल्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीस को यहाँ लाए। इस सुलह के बारे में आँहज़रत (ﷺ) ने पेशीनगोई की थी, जो इफ़ ब इफ़ सहीह प्राबित हुई और इससे मुसलमानों की आपसी खूँरजी रुक गई। हज़रत हसन (रज़ि.) की अस्करी ताक़त और हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) की दूरअंदेशी फिर मसालिहत के लिये हज़रत हसन (रज़ि.) की आमादगी, ये सारे हालात उम्मत के लिये बहुत से सबक पेश करते हैं। मगर सद अफ़सोस कि इन सबकों को बहुत कम मद्देनज़र रखा गया, जिसकी सज़ा उम्मत अभी तक भुगत रही है।

रावी के कौल व काना ख़ैरुलजुलयनि में इशारा हज़रत अमीर मुआविया और अमर बिन आस (रज़ि.) की तरफ़ है कि हज़रत मुआविया अमर बिन आस (रज़ि.) से बेहतर थे जो जंग के ख़्वाहिशमंद नहीं थे।

### बाब 10 : क्या इमाम सुलह के लिये फ़रीक़ेन को इशारा कर सकता है?

### १०- بَابُ هَلْ يُشِيرُ الْإِمَامُ

بِالصُّلْحِ؟

2705. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन हिलाल ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अबुर्रिजाल मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे उनकी वालिदा अमरा बिनते अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरवाजे पर दो झगड़ा करने वालों की आवाज़ सुनी जो बुलन्द हो गई थी। वाक़िया ये था कि एक आदमी दूसरे से क़र्ज़ में कुछ कमी करने और तक्राजे में कुछ नरमी बरतने के लिये कह रहा था और दूसरा कहता था कि अल्लाह की क़सम! मैं ये नहीं करूँगा। आख़िर रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास गये और फ़र्माया कि इस बात पर क़सम खाने वाले साहब कहाँ हैं? कि वो एक अच्छा काम नहीं करेंगे। उन सहाबी ने अर्ज किया, मैं ही हूँ या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अब मेरा भाई जो चाहता है वही मुझको पसन्द है।

٢٧٠٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ هِلَالٍ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِي الرَّجَالِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أُمَّهُ عَمْرَةَ بِنْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((سَمِعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ صَوْتَ غَضُومٍ بِالْبَابِ، غَالِيَةً أَصْوَاتَهُمْ، وَإِذَا أَحَدُهُمَا يَسْتَوْضِعُ الْآخَرَ وَيَسْتَرْفِقُهُ فِي شَيْءٍ، وَهُوَ يَقُولُ: وَاللَّهِ لَا أَفْعَلُ، فَنُفِجَ عَلَيْهِمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: أَيْنَ التَّمَالِي عَلَى اللَّهِ لَا يَفْعَلُ الْمَعْرُوفُ؟ فَقَالَ: آتَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَهُ أَيْ ذَلِكَ أَحَبُّ)).

आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों में सुलह का इशारा किया, इसी से मक़सदे बाब प्राबित हुआ। हाफ़िज़ ने कहा, उन लोगों के नाम मा'लूम नहीं हुए, बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आपने उस शख्स को पूछा था वो कहाँ है जो अच्छी बात न करने के लिये क़सम खा रहा था। गोया आपने उसके काम को बुरा समझा और सुलह का इशारा किया। वो समझ गया और आपके पूछते ही खुद ब खुद कहने लगा कि मेरा मक़रूज़ जो चाहे वो मुझको मंज़ूर है। उस शख्स ने आँहज़रत (ﷺ) के अदबो एहतियाम में फ़ौरन

ही आपका इशारा पाकर मक्कुरज के कर्ज में तखफ़ीफ़ (कमी) का ऐलान कर दिया। बड़ों के एहतियार में इंसान अपना कुछ नुक़सान भी बर्दाश्त कर ले तो बेहतर है।

2706. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने, उनसे अअरज ने बयान किया कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक ने बयान किया और उनसे कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने कि अब्दुल्लाह बिन हदरदि असलमी (रज़ि.) पर उनका कर्ज था, उनसे मुलाक्रात हुई तो उन्होंने उनका पीछा किया, (आखिर तक़ार में) दोनों की आवाज़ बुलन्द हो गई। नबी करीम (ﷺ) उधर से गुज़रे तो आपने फ़र्माया, कि ऐ कअब! और अपने हाथ से इशारा किया, जैसे आप कह रहे हों कि आधा (कर्ज कम कर दे) चुनौचे उन्होंने आधा कर्ज छोड़ दिया और आधा लिया। (राजेअ: 457)

۲۷۰۶- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنِ الْأَعْرَجِ قَالَ: ((حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ كَانَ لَهُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي حَدَرَةَ الْأَسْلَمِيِّ مَالٌ، فَلَقِيَهُ فَلَزِمَهُ حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصَوَاتُهُمَا، فَمَرَّ بِهِمَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: يَا كَعْبُ - فَأَشَارَ بِيَدِهِ كَأَنَّهُ يَقُولُ: النِّصْفَ - فَأَخَذَ بِنِصْفِ مَا لَهُ عَلَيْهِ وَتَرَكَ بِنِصْفًا)).

[راجع: ۴۵۷]

इस्लामी ता'लीम यही है कि अगर मक्कुरज (कर्जदार) नादार है तो उसको ढील देना या फिर मुआफ़ कर देना ही बेहतर है। जो कर्ज ख़्वाह के आमाले ख़ैर में लिखा जाएगा। व इन कान ज़ू उस्रतिन फनज़िरतुन इला मयसरतिन व अन तसहकू ख़ैरुल्लकुम (अल बकर: 280) आयते कुआनी का यही मतलब है।

### बाब 11 : लोगों में आपस में मिलाप कराने का और इंस़ाफ़ करने की फ़ज़ीलत का बयान

2707. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी हम्माम से, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान के बदन के (तीन सौ साठ जोड़ों में से) हर जोड़ पर हर उस दिन का स़दक़ा वाजिब है जिसमें सूरज तुलूअ होता है और लोगों के दरम्यान इंस़ाफ़ करना भी एक स़दक़ा है।

(दीगर मक़ाम: 2891, 2979)

### ۱۱- بَابُ فَضْلِ الْإِصْلَاحِ بَيْنَ النَّاسِ وَالْعَدْلِ بَيْنَهُمْ

۲۷۰۷- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((كُلُّ سَلَامَةٍ مِنَ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلُّ يَوْمٍ تَطْلُعُ فِيهِ الشَّمْسُ، يَغْدِلُ بَيْنَ النَّاسِ صَدَقَةٌ)).

[طرفاه: ۲۸۹۱, ۲۸۹۹]

या'नी जो स़दक़ा वाजिब था वो लोगों के दरम्यान अदल करने से भी अदा हो जाता है। गोया अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्रिया भी है कि लोगों के दरम्यान इंस़ाफ़ किया जाए ये भी एक तरह का स़दक़ा ही है जिसके नतीजे दूर-रस (दूरगामी) होते हैं, इसीलिये आपस में मेल-मिलाप करा देने को नफ़ल नमाज़ और नफ़ली रोज़ा से ज़्यादा अहम अमल बतलाया गया है।

### बाब 12 : अगर हाकिम सुलह करने के लिये इशारा

### ۱۲- بَابُ إِذَا أَشَارَ الْإِمَامُ بِالصُّلْحِ

करे और कोई फ़रीक़ न माने तो कायदे का हुक्म दे दे

قَابِي، حَكَمَ عَلَيْهِ بِالْحُكْمِ الْيَسِينِ.

हुक्म यही है कि जिसका खेत ऊपर हो वो मेंदों तक पानी भर जाने के बाद अपने हमसाये के खेत में पानी छोड़ दे।

2708. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी कि जुबैर (रज़ि.) बयान करते थे कि उनमें और एक अंसारी सहाबी में जो बद्र की लड़ाई में भी शरीक थे, मदीना की पथरीली ज़मीन की नाली के बाब में झगड़ा हुआ। वो अपना मुक़द्दमा रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिज़रत में ले गए। दोनों हिज़रत उस नाले से (अपने बाग़) सैराब किया करते थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जुबैर! तुम पहले सैराब कर लो, फिर अपने पड़ोसी को भी सैराब करने दो, इस पर अंसारी सहाबी को गुस्सा आ गया और कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या इस वजह से कि ये आपकी फूफ़ी के लड़के हैं। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया और आपने फ़र्माया, ऐ जुबैर! तुम सैराब करो और पानी को (अपने बाग़ में) इतनी देर तक आने दो कि दीवार तक चढ़ जाए। इस बार रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुबैर को उनका पूरा हक़ अता किया, इससे पहले आपने ऐसा फ़ैसला किया था, जिसमें हिज़रत जुबैर (रज़ि.) और अंसारी सहाबी दोनों की रियायत थी। लेकिन जब अंसारी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को गुस्सा दिलाया तो आपने जुबैर (रज़ि.) को क़ानून के मुताबिक़ पूरा हक़ अता फ़र्माया। इर्वा ने बयान किया कि जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया, क़सम अल्लाह की! मेरा ख़याल है कि ये आयत उसी वाक़िये पर नाज़िल हुई थी, पस हर्गिज़ नहीं! तेरे रब की क़सम! ये लोग उस वक़्त तक मोमिन न होंगे जब तक अपने इख़्तिलाफ़ात में आपके फ़ैसले को दिलो-जान से तस्लीम न कर लें। (राजेअ: 2360)

٢٧٠٨ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ الزُّبَيْرَ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّهُ خَاصَمَ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَمُشَاهَدًا بَدْرًا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي هِجَارٍ مِنَ الْخُرُوفَةِ كَانَا يَسْتَقِيَانِ بِهِ كِلَاهُمَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِلزُّبَيْرِ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ ارْصِلْ إِلَى جَارِكَ)). فَغَضِبَ الْأَنْصَارِيُّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْ كَانَ ابْنُ عَمَلِكَ. فَقُلُونِ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ، ثُمَّ اخْسِنْ حَتَّى يَتَلَفَّ الْجَذَرُ)). فَاسْتَوْعَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَقَّهُ لِلزُّبَيْرِ. وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ ذَلِكَ أَشَارَ عَلَى الزُّبَيْرِ بِرَأْيِ سَفَةِ لَهُ وَلِلْأَنْصَارِيِّ فَلَمَّا أَحْفَظَ الْأَنْصَارِيُّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اسْتَوْعَى لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَوْنِ الْحُكْمِ، قَالَ عُرْوَةُ قَالَ الزُّبَيْرُ: وَاللَّهِ مَا أَحْسِبُ هَذِهِ الْآيَةَ نَزَلَتْ إِلَّا فِي ذَلِكَ: ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾ [النساء: ٦٥].

**तशरीह:** बाब लोगों में आपस में मिलाप कराने का और इस्साफ़ करने की फ़ज़ीलत का बयान कायदे और ज़ाब्तो का जहाँ तक ता'ल्लुक है आहिज़रत (ﷺ) का इशारे गिरामी हिज़रत जुबैर (रज़ि.) के हक़ में बिलकुल इस्साफ़ पर मब्नी था। मगर अंसारी सहाबी को उसमें रू-ए-रियायत का पहलू नज़र आया जो सहीह न था, उस पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई और बिला चूँ चरा की इत्ताअत को रसूले करीम (ﷺ) को ईमान की बुनियाद क़रार दिया गया।

आयते करीमा से उन मुक़ल्लिदीने जामिदीन का भी रह होता है जो सहीह अहदादीष पर अपने अइम्मा के अक्वाल को तरजीह देते और मुख्तलिफ़ हिलों बहानों से फ़ैसल-ए-नबवी को टाल देते हैं। हिज़रत शाह वलीउल्लाह मुहदिष देहलवी

हुज्जतुल्लाहिल बालिगा जिल्द अब्बल पेज नं. 365, 366 पर फ़र्माते हैं। पस अगर हमें रसूल (ﷺ) की हदीष बसनदे सहीह पहुँचे जिसकी इत्ताअत अल्लाह ने हम पर फ़र्ज की है और मुज्तहिद का मज़हब उससे मुखालिफ़ हो और उसके बावजूद हम हदीषे सहीह को छोड़कर मुज्तहिद की तख़मीन और ज़न्नी बात की पैरवी करें तो हमसे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा और हम उस वक़्त क्या बहाना पेश करेंगे जबकि लोग रब्बुल आलमीन के सामने हाज़िर होंगे। दूसरी जगह हज़रत शाह साहब ने ऐसी तक्लीद को आयत इत्तख़जू अहबारहुम व रूहबानहुम अर्बाबम्मिन दूनिल्लाहि (अतू तौबा : 31) का मिस्रदाक्र करार दिया है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा)

### बाब 13 : मय्यत के क़र्ज ख़्वाहों और वारिषों में सुलह का बयान और क़र्ज का अंदाज़े से अदा करना

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अगर दो शरीक आपस में ये ठहरा लें कि (अपने हिस्से को बदल) क़र्ज वसूल करे और दूसरा नक़द माल ले ले तो कोई हर्ज नहीं। अब अगर एक शरीक का हिस्सा तल्फ़ हो जाए (मय्यलन क़र्ज़ा डूब जाए) तो वो अपने शरीक से कुछ नहीं ले सकता।

2709. मुझसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे वहब बिन कसान ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे वालिद जब शहीद हुए तो उन पर क़र्ज था। मैंने उनके क़र्ज ख़्वाहों के सामने ये सूरत रखी कि क़र्ज के बदले मे वो (इस साल की ख़जूर के) फल ले लें। उन्होंने इससे इंकार कर दिया, क्याकि उनका ख़याल था कि उससे क़र्ज पूरा नहीं हो सकेगा, मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया कि जब फल तोड़कर मिरबद (वो जगह जहाँ ख़जूर ख़ुश्क करते थे) में जमा कर दो (तो मुझे ख़बर दो) चुनौचे मैंने आप (ﷺ) को ख़बर दी। आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए। साथ में अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी थे। आप वहाँ ख़जूर के ढेर पर बैठे और उसमें बरकत की दुआ फ़र्माई, फिर फ़र्माया कि अब अपने क़र्ज ख़्वाहों को बुलाओ और उनका क़र्ज अदा कर दे, चुनौचे कोई शख्स ऐसा बाक़ी न रहा जिसका मेरे बाप पर क़र्ज बाक़ी रहा हो और मैंने उसे अदा न कर दिया हो। फिर भी तेरह वस्क़ ख़जूर बाक़ी बच गई। सात वस्क़ अज्वा में से और छः वस्क़ लोन में से, या छः वस्क़ अज्वा में से और सात वस्क़ लोन में से, बाद में मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से मरिब के वक़्त जाकर मिला और

### ١٣- بَابُ الصُّلْحِ بَيْنَ الْغُرَمَاءِ وَأَصْحَابِ

الْمِيزَاتِ، وَالْمَجَازَفَةِ فِي ذَلِكَ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا بَأْسَ أَنْ يَتَعَازَجَ الشَّرِيكَانِ فَيَأْخُذَ هَذَا دَيْنًا وَهَذَا عَيْنًا فَإِنْ تَوَيَّ لَأَخْبِئِمَا لَمْ يَرْجِعْ عَلَى صَاحِبِهِ.

٢٧٠٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((تَوَلَّى أَبِي وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَعَرَضْتُ عَلَى غُرَمَائِهِ أَنْ يَأْخُذُوا الْفَرَمَ بِمَا عَلَيْهِ فَأَبَوْا، وَلَمْ يَرَوْا أَنْ فِيهِ وَفَاءٌ، فَأَنْتِ النَّبِيُّ ﷺ فَلَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: ((إِذَا جَدَدْتَهُ فَوَضَعْتَهُ فِي التَّوْبَةِ أَذْنُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)). فَبَاءَ وَمَقَّةً أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَجَلَسَ عَلَيْهِ لَدَعَا بِالرَّكَّةِ ثُمَّ قَالَ: ((ادْعُ غُرَمَاءَكَ فَأُولَئِهِمْ)). فَمَا تَوَكَّتُ أَحَدًا لَهُ عَلَى أَبِي دَيْنٍ إِلَّا قَضَيْتُهُ، وَلَفَضْتُ ثَلَاثَةَ عَشَرَ وَمَقَّةً: سَبْعَةَ عَجْوَةٍ وَسَبْعَةَ لَوْنٍ، أَوْ سَبْعَةَ عَجْوَةٍ وَسَبْعَةَ لَوْنٍ. فَأَوَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْمَغْرِبَ فَلَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، فَضَحِكَ

आपसे उसका जिक्र किया तो आप हंसे और फ़र्माया, अबूबक्र और उमर के यहाँ जाकर उन्हें भी ये वाक़िया बता दो। चुनौचे मैंने उन्हें बतलाया, तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को जो करना था आपने वो किया। हमें उसी वक़्त मा'लूम हो गया था कि ऐसा ही होगा। हिशाम ने वहब से और उन्होंने जाबिर से अज़र के वक़्त (जाबिर रज़ि. की हाज़िरी का) ज़िक्र किया है और उन्होंने न अबूबक्र (रज़ि.) का ज़िक्र किया है और न हंसने का, ये भी बयान किया कि (जाबिर रज़ि. ने कहा) मेरे वालिद अपने पर तीस वस्त्र क़र्ज़ छोड़ गए थे और इब्ने इस्हाक़ ने वहब से, और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से जुहर की नमाज़ का ज़िक्र किया है। (राजेज़ : 2127)

एक वस्त्र साठ साज़ का होता है। अज्वा मदीना की खज़ूरों में बहुत आला किस्म है और लौन उससे कमतर होती है। आँहज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत से हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने अपना सारा क़र्ज़ अदा कर दिया, फिर भी काफ़ी बचत हो गई। खुशानसीब थे हज़रत जाबिर (रज़ि.), जिनको ये फ़ैज़ाने नबवी हासिल हुआ। मज़मूने बाब की हर शिक़ हदीसे हाज़ा से प्राबित है।

#### बाब 14 : कुछ नक़द देकर क़र्ज़ के बदले सुलह करना

2710. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे इब्मान बिन उमर ने बयान किया, उन्हें यूनस ने ख़बर दी और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन कअब ने ख़बर दी और उन्हें कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने इब्ने अबी हदरद (रज़ि.) से अपना क़र्ज़ तलब किया, जो उनके ज़िम्मे था। ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के अहदे मुबारक का वाक़िया है। मस्जिद के अंदर उन दोनों की आवाज़ बुलन्द हो गई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी सुनी। आप उस वक़्त अपने हुज़े में तशरीफ़ रखते थे। चुनौचे आप बाहर आए और अपने हुज़े का पर्दा उठाकर कअब बिन मालिक (रज़ि.) को आवाज़ दी। आपने पुकारा एकअब! उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं हाज़िर हूँ। फिर आपने अपने हाथ के इशारे से फ़र्माया कि आधा मुआफ़ कर दो। कअब (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कर दिया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने (इब्ने अबी हदरद रज़ि. से) फ़र्माया कि अब उठो और क़र्ज़ अदा कर दो। (हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है)

(राजेज़ : 457)

فَقَالَ: ((أَنْتَ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرُ فَأَخْبِرْهُمَا))،  
فَقَالَا: لَقَدْ عَلِمْنَا - إِذْ صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ  
ﷺ مَا صَنَعَ - أَنْ يَكُونَ ذَلِكَ)).

وَقَالَ هِشَامُ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ: ((صَلَاةُ  
الْمَغْرِبِ)) وَلَمْ يَذْكُرْ ((أَبَا بَكْرٍ)) وَلَا  
((صَلَاةَ)) وَقَالَ: ((وَكَلَّا أَيْ عَلَيْهِ  
ثَلَاثِينَ وَسَقَا ذَيْنَا)). وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ  
عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ ((صَلَاةُ الظُّهْرِ)).

[راجع: 2127]

١٤ - بَابُ الصُّلْحِ بِالذَّيْنِ وَالْقَيْنِ  
٢٧١٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا عَفْهَانُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ  
ح. وَقَالَ الثَّبْتُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ  
شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ كَثِيرٍ أَنَّ  
كَثِيرَ بْنِ مَالِكٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ تَقَاعَى ابْنُ أَبِي  
حَلَزَمٍ ذَيْنَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي هَذِهِ رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ، فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا  
حَتَّى سَمِعَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ،  
فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَيْهِمَا حَتَّى كَشَفَ  
مِجَنَّبَ خُجْرَتِهِ فَتَادَى كَثِيرَ بْنَ مَالِكٍ،  
فَقَالَ: ((يَا كَثِيرُ))، قَالَ: كَيْفَ يَا رَسُولَ  
اللَّهِ، فَأَشَارَ بِيَدِهِ أَنْ خُجِعَ الشُّطْرُ، فَقَالَ  
كَثِيرٌ: لَقَدْ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَمْ فَأَقْبِهِ)). [راجع: 457]

## 54. किताबुशशुरूत

# किताब शराइत के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**बाब 1 : इस्लाम में दाखिल होते वक़्त और मुआमलाते बेअ व शराअ में कौनसी शर्तें लगाना जाइज़ है?**

2711, 12. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने ख़लीफ़ा मरवान और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से सुना, ये दोनों हज़रात अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़बर देते थे कि जब सुहैल बिन अम्र ने (हुदैबिया में कुफ़फ़ारे कुरैश की तरफ़ से सुलह का मुआहिदा) लिखवाया तो जो शर्तें नबी करीम (ﷺ) के सामने सुहैल ने रखी थीं, उनमें ये शर्त भी थी कि हममें से कोई भी शख़्स अगर आपके यहाँ (फ़रार होकर) चला जाए ख़्वाह वो आपके दीन पर ही क्यों न हो तो आपको उसे हमारे हवाले करना होगा। मुसलमान ये शर्त पसन्द नहीं कर रहे थे और उस पर उन्हें दुख हुआ था। लेकिन सुहैल ने इस शर्त के बग़ैर सुलह कुबूल न की। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने इसी शर्त पर सुलहनामा लिखवा लिया। इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन अबू जन्दल (रज़ि.) को जो मुसलमान होकर आया था (मुआहिदे के तहत बादिले नाख़्वास्ता) उनके वालिद सुहैल बिन अम्र के हवाले कर दिया गया। इसी तरह मुहत्ते सुलह में जो पर्द भी

١- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الشَّرُوطِ فِي  
الإِسْلَامِ، وَالْأَحْكَامِ، وَالْمَبَايِعَةِ  
٢٧١١، ٢٧١٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ  
قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ  
شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ  
سَمِعَ مَرْوَانَ وَالْمُسَوِّزَ بْنَ مَخْرَمَةَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُمَا يُخْبِرَانِ عَنْ أَصْحَابِ رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا كَاتَبَ سُهَيْلُ بْنُ  
عَمْرِو يَوْمَئِذٍ كَانَ فِيهَا اشْتَرَطَ سُهَيْلُ بْنُ  
عَمْرِو عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ لَا يَأْتِيكَ مِنَّا  
أَحَدٌ - وَإِنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ - إِلَّا رَدَدْتَهُ  
إِلَيْنَا وَعَلَيْتَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ فِكْرَةَ الْمُؤْمِنُونَ  
ذَلِكَ وَامْتَنَعُوا مِنْهُ، وَأَبَى سُهَيْلُ إِلَّا ذَلِكَ  
فَكَاتَبَهُ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى ذَلِكَ، فَرَدَّ يَوْمَئِذٍ أَبَا  
جَنْدَلٍ إِلَى أَبِيهِ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرِو، وَلَمْ يَأْتِهِ  
أَحَدٌ مِنَ الرِّجَالِ إِلَّا رَدَّهُ فِي بَيْتِكَ الْمَدَنَةِ

औहजरत (ﷺ) की खिदमत में मक्का से भागकर आया) आपने उसे उनके हवाले कर दिया ख्वाह वो मुसलमान ही क्यों न रहा हो। लेकिन चन्द ईमान वाली औरतें भी हिजरत करके आ गई थीं, उम्मे कुल्सुम बिनते इब्न अबी मुईत्त (रज़ि.) भी उनमें शामिल थीं जो उसी दिन (मक्का से निकलकर) आप (ﷺ) की खिदमत में आई थीं, वो जवान थीं और जब उनके घरवाले आए और रसूलुल्लाह (ﷺ) से उनकी वापसी का मुतालबा किया, तो आप (ﷺ) ने उन्हें उनके हवाले नहीं किया, बल्कि औरतों के बारे में अल्लाह तआला (सूरह मुम्तहिना में) इश्राद फ़र्मा चुका था कि, जब मुसलमान औरतें तुम्हारे यहाँ हिजरत करके पहुँचे तो पहले तुम उनका इम्तिहान ले लो, यूँ तो उनके ईमान के बारे में जानने वाला अल्लाह तआला ही है। अल्लाह तआला के इस इश्राद तक कि कुफ़्रार व मुश्रिकीन उनके लिये हलाल नहीं हैं अल्लख। (राजेज़: 1694, 1695)

2713. इर्वा ने कहा कि मुझे आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) हिजरत करने वाली औरतों का इस आयत की वजह से इम्तिहान लिया करते थे, ऐ मुसलमानों! जब तुम्हारे यहाँ मुसलमान औरतें हिजरत करके आएँ तो तुम उनका इम्तिहान ले लो, गफ़ूर रहीम तक। इर्वा ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि उन औरतों में से जो इस शर्त का इकरार कर लेतीं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते कि मैंने तुमसे बेअत की, आप सिर्फ़ ज़बान से बेअत करते थे। क़सम अल्लाह की! बेअत करते वक़्त आप (ﷺ) के हाथ ने किसी भी औरत के हाथ को कभी नहीं छुआ, बल्कि आप सिर्फ़ ज़बान से बेअत लिया करते थे।

(दीगर मक़ाम: 2733, 4182, 4891, 5288, 7214)

इस हदीस से मा'लूम हुआ कि औरतों से बेअत लेने में सिर्फ़ ज़बान से कह देना काफी है, उनको हाथ लगाना दुरुस्त नहीं जैसे हमारे ज़माने के कुछ जाहिल पीर करते हैं। अल्लाह उनसे समझे और उनको हिदायत करे। सुलह हूदैबिया शराईते मा'लूमा के साथ की गई, जिनमें कुछ शर्तें बज़ाहिर मुसलमानों के लिये नागवार भी थीं, मगर बहरहाल उन ही शर्तों पर सुलह का मुआहिदा लिखा गया, इससे प्राबित हुआ कि ऐसे मौकों पर फ़रीक़ेन मुनासिब शर्तें लगा सकते हैं।

2714. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ियाद बिन इलाक़ा ने बयान किया कि मैंने

وَإِنْ كَانَ مُسْلِمًا. وَجَاءَ الْمُؤْمِنَاتِ مُهَاجِرَاتٍ، وَكَانَتْ أُمُّ كَلْثُومٍ بِنْتُ عَقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَظٍّ مِمَّنْ خَرَجَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَئِذٍ - وَهِيَ غَائِقٌ - فَجَاءَ أَهْلُهَا يَسْأَلُونَ النَّبِيَّ ﷺ أَنْ يَرْجِعَهَا إِلَيْهِمْ فَلَمْ يَرْجِعْهَا إِلَيْهِمْ لِمَا أُنْزِلَ اللَّهُ فِيهِمْ: ﴿وَإِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ﴾ اللَّهُ أَكْلَمُ بِأَمْنَانِهِنَّ - إِلَى قَوْلِهِ - وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ﴾ [الممتحنة: 10].

[راجع: 1694, 1695]

٢٧١٣- قَالَ عُرْوَةُ فَأَخْبَرَنِي عَائِشَةُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُهُنَّ بِهَذِهِ الْآيَةِ: ﴿وَإِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ﴾ - إِلَى - غُفُورٌ رَحِيمٌ)) قَالَ عُرْوَةُ: قَالَتْ عَائِشَةُ: لَمَنْ أَقَرَّ بِهَذَا الشَّرْطِ مِنْهُنَّ قَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((قَدْ بَايَعْتُكُمْ)) كَلَامًا يُكَلِّمُهَا بِهِ، وَاللَّهُ مَا مَسَّتْ يَدُهُ يَدَ امْرَأَةٍ قَطُّ فِي الْمُبَايَعَةِ، وَمَا بَايَعُهُنَّ إِلَّا بِقَوْلِهِ: ((أَطْرَافُهُ ن: ٢٧٣٣، ٤١٨٢، ٤٨٩١، ٥٢٨٨، ٧٢١٤)).

٢٧١٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا



जरीर (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की तो आप (ﷺ) ने मुझसे हर मुसलमान के साथ खैर-खुवाही करने की शर्त पर बेअत की थी। (राजेअ: 57)

2715. हमसे मुसद्द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे कैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने नमाज़ कायम करने, ज़कात अदा करने और हर मुसलमान के साथ खैर-खुवाही करने की शर्तों के साथ बेअत की थी। (राजेअ: 57)

दोनों अह्मदीय में बेअत की शर्तों में नमाज़ कायम करने और हर के बारे में ज़िक्र है, इसीलिये उनको यहाँ लाया गया है।

## बाब 2 : पेवन्द लगाने के बाद अगर

### खजूर का पेड़ बेचे?

2716. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने कोई ऐसा खजूर का बाग़ जिसकी पेवन्दकारी हो चुकी थी तो उसका फल (उस साल के) बेचने वाले ही का होगा। वहाँ अगर ख़रीददार शर्त लगा दे। (तो फल समेत बेअ समझी जाएगी) (राजेअ: 2203)

मतलब ये कि बेअ व शरा में ऐसी मुनासिब शर्तों का लगाना जाइज़ है। फिर मामला शर्तों के साथ ही तैय्य समझा जाएगा। पेवन्दकारी के बाद अगर ख़रीदने वाला उसी साल के फल की शर्त लगा ले, तो फल उसका होगा, वरना मालिक ही का रहेगा।

## बाब 3 : बेअ में शर्तें करने का बयान

2717. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बरीरह आइशा (रज़ि.) के यहाँ अपने मुकातबत के बारे में उनसे मदद लेने के लिये आई, उन्होंने अभी तक उस मामले में (अपने मालिकों को) कुछ न दिया था। आइशा (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया कि अपने मालिकों के यहाँ जाकर (उनसे पूछो कि) अगर वो ये सूरत पसन्द करे कि

سَمِعْتُ عَنْ زَيْدِ بْنِ عِلَاقَةَ قَالَ: سَمِعْتُ جَرِيرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: بَايَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَشْرَطَ عَلَيَّ: ((وَالصَّحْحُ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)). [راجع: ٥٧]

٢٧١٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إسماعيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَتَسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَايَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى إِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِتْيَاءِ الزَّكَاةِ وَالصَّحْحُ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)). [راجع: ٥٧]

## ٢- بَابُ إِذَا بَاعَ نَخْلًا قَدْ أُبْرِتَ

٢٧١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ بَاعَ نَخْلًا قَدْ أُبْرِتَ فَفَرَّقَهَا لِلْبَايِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبَاعُ)). [راجع: ٢٢٠٣]

## ٣- بَابُ الشَّرْطِ فِي الْبَيْعِ

٢٧١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ جِهَانَ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْ: أَنَّ بَرِيرَةَ جَاءَتْ عَائِشَةَ تَسْتَعِينُهَا فِي كِتَابَيْهَا، وَلَمْ تَكُنْ قَعَتَ مِنْ كِتَابَيْهَا شَيْئًا، فَلَاَتَ لَهَا عَائِشَةُ ارْجِعِي إِلَى أَهْلِكَ لِأَنَّ أَحْمَرَ

तुम्हारी मुक़ातबत की पूरी रक़म में अदा कर दूँ और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम हो जाए तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। बरीरा ने उसका तज़्किरा जब अपने मालिकों के सामने किया तो उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि वो (आयशा रज़ि.) अगर चाहें तो ये कारे प्रवाब तुम्हारे साथ कर सकती हैं लेकिन विलाअ तो हमारे ही साथ क़ायम होगी। आइशा (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने उनसे फ़र्माया कि तुम उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो, विलाअ तो बहरहाल उसी के साथ क़ायम होती है जो आज़ाद कर दे। (राजेअ : 456)

बेअ में ख़िलाफ़े शरअ शर्तें लगाना जाइज़ नहीं, अगर कोई ऐसी शर्तें लगाए भी तो वो शर्तें बातिल होंगी, बाब और हदीष का यहाँ यही मक़सद है।

#### बाब 4 : अगर बेचने वाले ने किसी ख़ास मक़ाम तक सवारी की शर्त लगाई तो ये जाइज़ है

2718. हमसे अबु नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा कि मैंने आमिर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि वो (एक ग़ज़वा के मौक़े पर) अपने ऊँट पर सवार आ रहे थे, ऊँट थक गया था। हुज़ूर अकरम (ﷺ) का उधर से गुज़र हुआ, तो आप (ﷺ) ने ऊँट को एक ज़र्ब लगाई और उसके हक़ में दुआ की, चुनाँचे ऊँट इतनी तेज़ी से चलने लगा कि कभी इस तरह नहीं चला था फिर आपने फ़र्माया कि उसे एक औक्रिया में मुझे बेच दो। मैंने इंकार किया मगर आप (ﷺ) के इम्रार पर फिर मैंने आपके हाथ पर बेच दिया, लेकिन अपने घर तक उस पर सवारी को मुस्तज़ा करा लिया। फिर जब हम (मदीना) पहुँच गए। तो मैंने ऊँट आपको पेश कर दिया और आप (ﷺ) ने उसकी क़ीमत भी अदा कर दी, लेकिन जब मैं वापस होने लगा तो मेरे पीछे एक म्राहब को मुझे बुलाने के लिये भेजा, (मैं हाज़िर हुआ तो) आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हारा ऊँट कोई ले थोड़ी ही रहा था, अपना ऊँट ले जाओ, ये तुम्हारा ही माल है। (और क़ीमत वापस नहीं ली) शुअबा ने मुगीरह के वास्ते से बयान किया, उनसे आमिर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना तक ऊँट पर

أَنْ أَلْقَيْتُ عَلَيْكَ كِبَابَكَ وَتَكُونَ وَلَاؤُكَ لِي فَعَلْتُ. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ بَرِئَةً إِلَى أَهْلِهَا فَأَبَوْا وَقَالُوا: إِنْ شَاءَتْ أَنْ تَحْسِبَ عَلَيْكَ فَلْتَفْعَلْ وَتَكُونَ لَنَا وَلَاؤُكَ. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ لَهَا: «إِنَّمَا فَاغْبِي، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْنَى». [راجع: 456]

#### 4- بَابُ إِذَا اشْتَرَطَ الْبَائِعُ ظَهَرَ الدَّائِيَةِ إِلَى مَكَانٍ مُسَمًّى جَارَ

2718- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا قَالَ: سَمِعْتُ عَامِرًا يَقُولُ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يَسِيرُ عَلَى جَمَلٍ لَهُ قَدْ أَغْبَا، فَمَرَّ النَّبِيُّ ﷺ فَضَرَبَهُ، فَذَعَا لَهُ فَسَارَ بِسِيرِ تِسْرٍ يَسِيرُ مِثْلَهُ. ثُمَّ قَالَ: «(بَغْيِيهِ بِأَوْقِيَةٍ)»، قُلْتُ: لَا، ثُمَّ قَالَ: «(بَغْيِيهِ بِأَوْقِيَةٍ)» فَبَعَثَهُ، فَاسْتَشْنَيْتُ حِمْلَاتِهِ إِلَى أَهْلِي. فَلَمَّا قَدِمْنَا أَتَانِي بِالْجَمَلِ وَتَقَدَّمَنِي ثَمَنُهُ، ثُمَّ انْصَرَفْتُ، فَأَرْسَلَ عَلَيَّ الْوَيْ قَالَ: «(مَا كُنْتُ لِأَعْزِدَ جَمْلَكَ؛ فَعَزَدَ جَمْلَكَ ذَلِكَ فَهُوَ مَا لَكَ)». وَقَالَ شُعْبَةُ عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ جَابِرٍ: «(أَفْرَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ظَهْرَةَ إِلَى الْمَدِينَةِ)». وَقَالَ إِسْحَاقُ عَنْ جَرِيرٍ عَنْ مُغِيرَةَ: «(فَبَعَثَهُ عَلَيَّ أَنْ لِي فَقَارَ ظَهْرُهُ)

मुझे सवार होने की इजाजत दी थी, इस्हाक़ ने जरीर से बयान किया और उनसे मुगीरह ने कि (जाबिर (रज़ि.) ने फ़र्माया था) पस मैंने ऊँट इस शर्त पर बेच दिया कि मदीना पहुँचने तक उस पर मैं सवार रहूँगा। अता वग़ैरह ने बयान किया कि (रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया था) इस पर मदीना तक की सवारी तुम्हारी है। मुहम्मद बिन मुंकदिर ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि उन्होंने मदीना तक सवारी की शर्त लगाई थी। ज़ैद बिन असलम ने जाबिर (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया कि (रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया था) मदीना तक उस पर तुम ही रहोगे। अबुज्जुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि मदीना तक की सवारी की आँहुज़ूर (ﷺ) ने इजाजत दे दी थी। आ'मश ने सालिम से बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि (रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया) अपने घर तक तुम उसी पर सवार हो के जाओ। अबैदुल्लाह और इब्ने इस्हाक़ ने वहब से बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि ऊँट को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक औक्रिया में ख़रीदा था। इस रिवायत की मुताबअत ज़ैद बिन असलम ने जाबिर (रज़ि.) से की है। इब्ने जु'रैज ने अता वग़ैरह से बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने (कि नबी करीम ﷺ ने फ़र्माया था) मैं तुम्हारा ये ऊँट चार दीनार में लेता हूँ, इस हिसाब से कि एक दीनार दस दिरहम का होता है, चार दीनार का एक औक्रिया होगा। मुगीरह ने शअबी के वास्ते से और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से (उनकी रिवायत में और) इसी तरह इब्नुल मुंकदिर और अबुज्जुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से अपनी रिवायत में क़ीमत का ज़िक्र न हों किया है। आ'मश ने सालिम से और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से अपनी रिवायत में एक औक्रिया सोने की वज़ाहत की है। अबू इस्हाक़ ने सालिम से और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से अपनी रिवायत में दो सौ दिरहम बयान किये हैं और दाऊद बिन क्रैस ने बयान किया, उनसे अबैदुल्लाह बिन मिक्सम ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने ऊँट तबूक के रास्ते में (ग़ज़वा से वापस होते हुए) ख़रीदा था। मेरा ख़याल है कि उन्होंने कहा कि चार औक्रिया में (ख़रीदा था) अबू नज़रह ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत में बयान किया कि बीस दीनार में ख़रीदा था। शअबी के बयान के मुताबिक़ एक औक्रिया ही

حَتَّى أَبْلُغَ الْمَدِينَةَ)). وَقَالَ عَطَاءٌ وَغَيْرُهُ: ((لَكَ ظَهْرُهُ إِلَى الْمَدِينَةِ)). وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّبِ عَنْ جَابِرٍ: ((شَرَطَ ظَهْرُهُ إِلَى الْمَدِينَةِ)). وَقَالَ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ جَابِرٍ: ((وَلَكَ ظَهْرُهُ حَتَّى تَرْجِعَ)). وَقَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ: ((أَلْفَرْنَاكَ ظَهْرُهُ إِلَى الْمَدِينَةِ)). وَقَالَ الْأَعْمَشُ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ: ((بَلَغَ عَلَيْهِ إِلَى أَهْلِكَ)). وَقَالَ عُمَيْدُ اللَّهِ وَابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ: ((اشْتَرَاهُ النَّبِيُّ ﷺ بِوَقِيَّةٍ)). وَتَابَعَهُ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ جَابِرٍ. وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ وَغَيْرِهِ عَنْ جَابِرٍ: ((أَخَذَتْهُ بِأَرْبَعَةِ دِينَارٍ)) وَهَذَا يَكُونُ أَوْقِيَّةً عَلَى حِسَابِ الدِّينَارِ بِعَشْرَةِ ذَرَاهِمٍ. وَلَمْ يَمَيِّنِ الْقَمَنَ مُغِيرَةُ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرٍ، وَابْنُ الْمُثَنَّبِ وَأَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ. وَقَالَ الْأَعْمَشُ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ: ((أَوْقِيَّةٌ ذَهَبٍ)). وَقَالَ أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ: ((بِمِائَتِي دِرْهَمٍ)). وَقَالَ دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ عَنْ عُمَيْدِ اللَّهِ بْنِ مِقْسَمٍ عَنْ جَابِرٍ: ((اشْتَرَاهُ بِطَرِيقِ ثَبُوكَ، أَخْبِيَهُ قَالَ: بِأَرْبَعِ أَوَاقٍ)). وَقَالَ أَبُو نَضْرَةَ عَنْ جَابِرٍ: ((اشْتَرَاهُ بِعِشْرِينَ دِينَارًا)). وَقَوْلُ الشَّعْبِيِّ: ((بِأَوْقِيَّةٍ)). أَكْثَرُ الْإِشْتِرَاطِ أَكْثَرُ وَاصَحُّ عِنْدِي، قَالَهُ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ. [راجع: ٤٤٣]

ज्यादा रिवायतों में है। इसी तरह शर्त लगाना भी ज्यादा रिवायतों से प्राबित है और मेरे नज़दीक सहीह भी यही है, ये अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने फ़र्माया। (राजेअ: 443)

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की वुस्अते इल्म यहाँ से मा'लूम होती है कि एक एक हदीष के कितने कितने तरीक़ उनको महफूज़ थे। हासिल उन सब रिवायात के ज़िक्र करने से ये है कि अक़्बर रिवायतों में सवारी का ज़िक्र है, जो बाब का तर्जुमा से मा'लूम हुआ कि बेअ में ऐसी शर्त लगाना दुरुस्त है। इमाम बुखारी (रह.) के बाद हमारे शैख़ हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) का मर्तबा है। शायद कोई किताब हदीष की ऐसी हो, जो उनकी नज़र से न गुज़री हो और सहीह बुखारी तो अल्हम्दु शरीफ़ की तरह उनको हिफ़ज़ याद थी। या अल्लाह! हमको आलमे बरज़ख़ में इमाम बुखारी (रह.) और इब्ने तैमिया और हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) की ज़ियारत नसीब कर और हक़ीर मुहम्मद दाऊद राज़ को भी उन बुजुर्गों के खादिमों में शुमार फ़र्माना, आमीन।

### बाब 5 : मुआमलात में शर्तें लगाने का बयान

2719. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़िनाद ने बयान किया, उनसे अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार रिज़वानुल्लाह अलैहिम ने नबी करीम (ﷺ) के सामने (मुवाखात के बाद) ये पेशकश की कि हमारे खज़ूर के बाग़ात आप हममें और हमारे भाईयों (मुहाजिरीन) में बांट दीजिए, लेकिन औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। इस पर अंसार ने मुहाजिरीन से कहा कि आप लोग हमारे बाग़ों के काम कर दिया करें और हमारे साथ फल में शरीक हो जाएँ, मुहाजिरीन ने कहा कि हमने सुन लिया और हम ऐसा ही करेंगे। (राजेअ: 2325)

2720. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर की ज़मीन यहूदियों को इस शर्त पर दी थी कि उसमें काम करें और उसे बोएँ तो आधी पैदावार उन्हें दी जाया करेगी। (राजेअ: 2285)

इन दो अह्लादीष से प्राबित होता है कि मुआमलात में मुनासिब और जाइज़ शर्तें लगाना और फ़रीकेन का उन पर मामला तै कर लेना दुरुस्त है।

### बाब 6 : निकाह के वक़्त मेहर की शर्तें

और हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हुक्क की अक़्तइयत शर्तों

### ٥- بَابُ الشَّرْطِ فِي الْمَعَامِلَةِ

٢٧١٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ الْأَنْصَارُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَلَيْسَ بَيْنَنَا وَتَيْنِ إِخْوَانِ النَّعِيلِ. قَالَ: ((لَا)). فَقَالُوا: تَكْفُونَا الْمَزُونَةَ وَتُشْرِكُنَا فِي الْفَرَةِ، قَالُوا سَوِيغًا وَأَعْطَيْنَا)).

[راجع: ٢٣٢٥]

٢٧٢٠- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْيَهُودَ أَنْ يَغْتُلُوا وَتَزْرَعُوا، وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا)).

[راجع: ٢٢٨٥]

### ٦- بَابُ الشَّرْطِ فِي الْمَهْرِ عِنْدَ النِّكَاحِ

وَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ مَقَاطِعَ الْحَقُوقِ عِنْدَ

के पूरा करने ही से होती है और तुम्हें शर्त के मुताबिक ही मिलेगा। मिस्वर ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मैंने सुना कि आपने अपने एक दामाद का जिक्र फ़र्माया और (हुकूकें) दामादी (की अदायगी में) उनकी बड़ी ता'रीफ़ की और फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जब भी कोई बात कही तो सच कही और वा'दा किया तो उसमें पूरे निकले।

2721. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैप्र ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन अबी हबीब ने बयान किया, उनसे अबुल खैर ने और उनसे इब्न अबी अमिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, वो शर्तें जिनके ज़रिये तुमने औरतों की शर्मगाहों को हलाल किया है, पूरी की जाने की सबसे ज़्यादा मुस्तहिक्क हैं। (दीगर मक़ाम : 5151)

الشُّرُوطُ، وَلَكَ مَا شَرَطْتَ. وَقَالَ الْمَسْوُورُ ((مَنْعَتُ النَّبِيِّ ﷺ ذَكَرَ مِنْهُرَا لَهُ فَأَتَى عَلَيْهِ فِي مَصَاهِرِهِ فَأَحْسَنَ قَالَ: حَدَّثَنِي لَمَنْعَتِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي)).

٢٧٢١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ أَبِي حَنْبَلٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((أَحَقُّ الشُّرُوطِ أَنْ تُؤْتُوا بِهَا مَا اسْتَخْلَسْتُمْ بِهِ الْقُرُوجَ)).  
[طرفه في: ٥١٥١].

जिनमें ईजाब व कुबूल और महर की शर्तें बड़ी अहमियत रखती हैं। कोई शख्स महर बाँधवाते वक़्त दिल में अदा न करने का इरादा रखता हो तो इन्दल्लाह उसका निकाह हलाल न होगा। क़स्तलानी ने कहा मुराद वो शर्तें हैं जो अक़दे निकाह के मुख़ालिफ़ नहीं हैं, जैसे मुबाशरत या नान नफ़का के बारे में शर्तें, लेकिन इस किस्म की शर्तें कि दूसरा निकाह न करेगा या लौण्डी न रखेगा, या सफ़र में न ले जाएगा, पूरी करना ज़रूरी नहीं बल्कि ये शर्तें लागू होंगी। इमाम अहमद और अहले हदीष का ये क़ौल है कि हर किस्म की शर्तें पूरी करनी पड़ेंगी क्योंकि हदीष मुत्लक़ है। मगर वो शर्तें जो किताब व सुन्नत के खिलाफ़ हों।

## बाब 7 : मुज़ारअत की शर्तें जो जाइज़ हैं

2722. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने ड़ययना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मैंने हन्ज़ला ज़रक़ी से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि हम अक़षर अंसार का काश्तकारी किया करते थे और हम ज़मीन बटाई पर देते थे। अक़षर ऐसा होता कि किसी खेत के एक दुकड़े में पैदावार होती और दूसरे में न होती, इसलिये हमें उससे मना कर दिया गया। लेकिन चाँदी (रूपये वग़ैरह) के लगान से मना नहीं किया गया। (राजेअ : 2286)

٧- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْمَزَارَعَةِ  
٢٧٢٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ حَنْظَلَةَ الزُّرَقِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَلِيفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كُنَّا أَكْثَرَ الْأَنْصَارِ حَقْلًا، فَكُنَّا نُكْرِي الْأَرْضَ، فَأَوْثَمًا أَخْرَجَتْ هَلْوًى وَلَمْ تُخْرِجْ ذِهِ، فَهَبْنَا عَنْ ذَلِكَ، وَلَمْ نَنْتَهِ عَنْ الْوَرَقِ)). [راجع: ٢٢٨٦]

या'नी वो मुज़ारअत (खेती) मना है जिसमें ये क़रार हो कि इस क़ि़अे की पैदावार हम लेंगे, इस क़ि़अे की पैदावार तुम लेना,

क्योंकि उसमें धोखा है। शायद उस क़िस्मे में कुछ पैदान हो।

### बाब 8 : जो शर्तें निकाह में जाइज़ नहीं हैं उनका बयान

2723. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन जुरैअ ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शहरी किसी देहाती का माले तিজारत न बेचे। कोई शख्स नजिश न करे और न अपने भाई की लगाई हुई क़ीमत पर भाव बढ़ाए। न कोई शख्स अपने किसी भाई के पैग़ामे निकाह की मौजूदगी में अपना पैग़ामे निकाह भेजे और न कोई औरत (किसी मर्द से) अपनी बहन की तलाक़ का मुतालबा करे (जो उस मर्द के निकाह में हो) ताकि इस तरह उसका हिस्सा भी ख़ुद ले ले। (राजेअ : 2140)

कोई सौतन अपनी बहन को तलाक़ दिलवाने की शर्त लगाए तो ये शर्त दुस्त न होगी, बाब और हदीष में इसी से मुताबक़त है।

### बाब 9 : जो शर्तें हुदुदुल्लाह में जाइज़ नहीं हैं, उनका बयान

2724, 25. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मसऊद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं आपसे अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ कि आप मेरा फ़ैसला किताबुल्लाह से कर दें। दूसरे फ़रीक़ ने जो उससे ज़्यादा समझदार था, कहा कि जी हाँ! किताबुल्लाह से ही हमारा फ़ैसला फ़र्माइये, और मुझे (अपना मुकद्दमा पेश करने की) इजाज़त दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि पेश कर। उसने बयान करना शुरू किया कि मेरा बेटा इन साहब के पास मज़दूर था। फिर उसने इनकी बीवी से ज़िना कर लिया, जब मुझे मा'लूम हुआ कि (ज़िना की सज़ा में) मेरा लड़का ख़त्म कर दिया जाएगा तो मैंने उसके बदले में सौ बकरियाँ और एक लौण्डी दी, फिर इल्म वालों से उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरे लड़के को (ज़िना की सज़ा में) क्योंकि वो ग़ैर शादी शुदा था) सौ

### 8- بَابُ مَا لَا يَجُوزُ مِنَ الشَّرُوطِ فِي النِّكَاحِ

2723- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَقَمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَبِيعُ حَاطِرٌ لِبَادٍ، وَلَا تَاجِشُوا، وَلَا يَزْنِي عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ، وَلَا يَخْطُبُنَّ عَلَى خَطْبَتِهِ. وَلَا تَسْأَلُ الْمَرْأَةُ طَلَاقَ أَخِيهَا لِيَسْتَكْفِيَهُ إِثْمًا)).

[راجع: 2140]

### 9- بَابُ الشَّرُوطِ الَّتِي لَا تَحِلُّ لِي الْحُدُودِ

2724, 2725- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمْرِو اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُمَا قَالَا: ((إِن رَجُلًا مِنَ الْأَعْرَابِ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْشُدَكَ اللَّهَ إِلَّا قَضَيْتَ لِي بِكِتَابِ اللَّهِ: فَقَالَ الْخَصَمُ الْآخَرُ - وَهُوَ أَقْلَهُ مِنْهُ -: نَعَمْ فَأَقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ. وَالتَّنَزُّلُ لِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((قُلْ)).

قَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَمِيئًا عَلَى هَذَا فَرَزَنِي بِأَمْرَائِهِ، وَإِنِّي أَخْبَرْتُ أَنْ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ فَأَقْبَلْتِ مِنْهُ بِمَاتِهِ هَذَا وَوَلَدَتْهُ،

कोड़े लगाए जाएंगे और एक साल के लिये शहर-बदर कर दिया जाएगा। अल्बत्ता उसकी बीवी रजम कर दी जाएगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं तुम्हारा फ़ैसला किताबुल्लाह ही से करूँगा। बांदी और बकरियाँ तुम्हें वापस मिलेंगी और तुम्हारे बेटे को सौ कोड़े लगाए जाएंगे और एक साल के लिये जलावतन किया जाएगा। अच्छा, उनैस! तुम उस औरत के यहाँ जाओ, अगर वो भी (ज़िना का) इक़रार कर ले, तो उसे रजम कर दो, (क्योंकि वो शादीशुदा थी) बयान किया कि उनैस (रज़ि.) उस औरत के यहाँ गए और उसने इक़रार कर लिया, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से वो रजम की गई। (राजेज़: 2314, 2315)

سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى  
انْثَى جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ، وَإِنَّ عَلَى  
امْرَأَةٍ هَذَا الرَّجْمَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:  
«وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا أَقْبِضُ بَيْنَكُمْ  
بِكِتَابِ اللَّهِ: الْوَلِيدَةُ وَالْقَتْمُ وَدُّ عَلَيْكَ،  
وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ. اغْدُ  
يَا أَنْثَى إِلَى امْرَأَةٍ هَذَا فَإِنَّ اخْتَرَفَتْ  
لَارْجُمَهَا». قَالَ: لَفَعْدًا عَلَيْهَا فَاخْتَرَفَتْ،  
فَأَمَرَ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَرُجِمَتْ».

[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

**तशरीह:** सौ बकरियाँ और एक लौण्डी उसकी तरफ से फ़िदया देकर उसको छुड़ा लिया, बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है क्योंकि उसने ज़िना की हद के बदले ये शर्त की सौ बकरियाँ और एक बांदी उसकी तरफ से दूँगा। आँहज़रत (ﷺ) ने उसको बातिल करार दिया जो हुदुदुल्लाह के हुक्म में से हैं। जो बन्दों की आपसी सुलह से टाली नहीं जा सकती। जब भी कोई ऐसा जुर्म प्राबित होगा हद ज़रूर जारी की जाएगी। अल्बत्ता जो सज़ाएँ इंसानी हुक्म की वजह से दी जाती हैं उनमे बाहमी सुलह की सूरतें निकाली जा सकती हैं। ज़ानिया औरत के लिये चार गवाहों का होना ज़रूरी है जो चश्मदीद बयान दें, या औरत व मर्द खुद इक़रार कर लें ये भी याद रहे कि हुदूद का क़ायम करना इस्लामी शरई स्टेट का काम है। जहाँ क़वानीने इस्लामी का इजराअ मुसल्लम हो। अगर कोई कोई स्टेट इस्लामी होने के दावे के साथ हुदुदुल्लाह को क़ायम नहीं करती तो वो इन्द्ल्लाह सख़्त मुजरिम है। ज़ानी मर्द ग़ैर शादीशुदा की हुदूद है जो यहाँ मफ़कूर हुई, रजम के लिये आख़िर में ख़लीफ़ा वक़्त का हुक्म ज़रूरी है।

**बाब 10 : अगर मुकातब अपनी बेअ पर इसलिये राज़ी हो जाए कि उसे आज़ाद कर दिया जाएगा तो उसके साथ जो शराइत जाइज़ हो सकती हैं, उनका बयान**

2726. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन मक्की ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया कि मैं आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने बतलाया कि बरीरा (रज़ि.) मेरे यहाँ आई, उन्होंने किताबत का मामला कर लिया था। मुझसे कहने लगीं कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! मुझे आप ख़रीद लें, क्योंकि मेरे मालिक मुझे बेचने पर आमदा हैं, फिर आप मुझे आज़ाद कर देना। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हौं (मैं ऐसा कर लूँगी) लेकिन बरीरह (रज़ि.) ने फिर कहा कि मेरे मालिक मुझे उस वक़्त बेचेंगे

١٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنْ شُرُوطِ  
الْمُكَاتَبِ إِذَا رَضِيَ بِاتِّبَاعِ عَلَى أَنْ  
يُعْتَقَ

٢٧٢٦- حَدَّثَنَا خَلَادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ  
حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ الْمَكِّيُّ عَنْ  
أَبِيهِ قَالَ: «دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلْتُ عَلَى بَرِيرَةَ وَهِيَ  
مُكَاتَبَةٌ فَقَالَتْ: يَا أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ اخْتَرِفِي،  
فَإِنَّ أَهْلِي يَبْتَغُونِي فَأَغِيظُنِي. قَالَتْ: نَعَمْ.  
قَالَتْ: إِنَّ أَهْلِي لَا يَبْتَغُونِي حَتَّى يَشْتَرُونِي»

जब वो विलाअ की शर्त अपने लिये लगा लें। इस पर आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फिर मुझे ज़रूरत नहीं है। जब नबी करीम (ﷺ) ने सुना, या आपको मा'लूम हुआ (रावी को शुब्हा था) तो आपने फ़र्माया कि बरीरा (रज़ि.) का क्या मामला है? तुम उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो, वो लोग जो चाहें शर्त लगा लें। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने बरीरा (रज़ि.) को ख़रीदकर आज़ाद कर दिया और उसके मालिक ने विलाअ की शर्त अपने लिये महफूज़ रखी। आँहज़रत (ﷺ) ने यही फ़र्माया कि विलाअ उसी के साथ षाबित होती है जो आज़ाद करे (दूसरे) जो चाहें शर्त लगाते हैं। (राजेअ: 456)

मा'लूम हुआ कि ग़लत शर्तों के साथ जो मामला हो वो शर्तें हर्गिज़ काबिले कुबूल न होंगी और मामला मुनअक़िद हो जाएगा।

### बाब 11 : त़लाक़ की शर्तें (जो मना हैं)

इब्ने मुसय्यिब, हसन और अता ने कहा ख़्वाह शर्त को बाद में बयान करे या पहले, हर हाल में शर्त के मुवाफ़िक़ अमल होगा।

या'नी त़लाक़ को मुक़द्दम करे शर्त उसके बाद कहे। मज़लन कहे अन्ति तालिकुन इन दख़ल्लिह्यार शर्त को मुक़द्दम करके त़लाक़ बाद में रखे मज़लन कहे इन दख़ल्लिह्यार फ अन्ति तालिकुन हर हाल में त़लाक़ जब ही पड़ेगी जब शर्त पाई जाए, या'नी वो औरत घर में जाए। इन तीनों अषरों को अब्दुरज़ाक़ ने क़स्ल किया है। (वहीदी)

2727. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे अदी बिन षाबित ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (तिजारीतों की) पेशवाई से मना किया था और उससे भी कि कोई शहरी किसी देहाती का माले त़िजारीत बेचे और उससे भी कि कोई औरत अपनी (दीनी नस्बी) बहन के त़लाक़ की शर्त लगाए और उससे भी कि कोई अपने किसी भाई के भाव पर भाव लगाए, इसी तरह आपने नज़िश और तज़रिया से भी मना फ़र्माया। मुहम्मद बिन अरअरह के साथ इस हदीष को मुआज़ बिन मुआज़ और अब्दुस्समद बिन अब्दुल वारिष ने भी शुअबा से रिवायत किया है और गुन्दर और अब्दुरहमान बिन महदी ने यूँ कहा कि हमें मना किया गया था। नज़र और हज़ाज बिन मिन्हाल ने यूँ कहा कि मना किया था (रसूलुल्लाह ﷺ ने)

(राजेअ: 2140)

وَلَا تَحِلُّ لِي فِئْتُهُ. قَالَتْ: لَا حَاجَةَ لِي بِهَا. فَسَمِعَ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - أَوْ بَلَّغَهُ - فَقَالَ: ((مَا شَأْنُ بَرِيْرَةَ؟)) فَقَالَ: اشْتَرَيْتُهَا فَأَعْطَيْتُهَا وَلَيْسَتْ بِطَوْرٍ مَا شَاءُوا)). قَالَتْ: فَأَشْرَيْتُهَا فَأَعْطَيْتُهَا وَاشْرُوطَ أَهْلُهَا وَلَا عَقْدَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْنَى، وَإِنْ اشْتَرَطُوا مِائَةَ شَرْطٍ)). (راجع: 456)

### 11- بَابُ الشَّرُوطِ فِي الطَّلَاقِ

وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ وَالْحَسَنُ وَاتَّاتَا: إِنَّ بَدْءًا بِالطَّلَاقِ أَوْ آخِرًا لَهُوَ أَحَقُّ بِشَرْطِهِ.

2727- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرَفَةَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ بْنِ قَابِطٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ التَّلْقِي، وَإِنْ يَتَنَاقَشُ الْمَهَاجِرُ لِلْأَعْرَابِيِّ، وَإِنْ تَشْتَرِطُ الْمَرْأَةُ طَلَاقَ أَخِيهَا، وَإِنْ يَسْتَأْمُ الرَّجُلُ عَلَى مَوْتِ أَخِيهِ. وَنَهَى عَنِ النَّعْشِ، وَعَنِ الصُّبْرَةِ)). تَابَهُ مُعَاذُ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ شُعْبَةَ. وَقَالَ هُنْدَرُ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ: ((نَهَى)). وَقَالَ آدَمُ: ((نُهِنَا)). وَقَالَ النُّصْرُ وَحَاجُّ بْنُ مِنْهَالٍ ((نَهَى)). (راجع: 2140)



**तशरीह:** बाब का तर्जुमा हदीष के लफ्ज़ व इन तशरीहितल्लिम् अर्तु तलाक़ उख़्तिहा से निकला क्योंकि अगर वो सौकन की तलाक़ की शर्त करके और शौहर शर्त के मुवाफ़िक़ तलाक़ दे दे तो तलाक़ पड़ जाएगी वरना शर्त लगाने की मुमानअत से कोई फ़ायदा नहीं। नजिश धोखा देने की निय्यत से नरख़ बढ़ाना ताकि दूसरा शख्स जल्द उसको ख़रीद ले, या किसी बिकती हुई चीज़ की बुराई बयान करना ताकि ख़रीददार उसको छोड़कर दूसरी तरफ़ चला जाए और तस्विया ख़रीददार को धोखा देने के लिये जानवर का दूध उसके थनों में रोककर रखना।

मुआज़ बिन मुआज़ की रिवायत और अब्दुस्समद और गुन्दर की रिवायतों को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया और अब्दुर्रहमान बिन महदी की रिवायत हाफ़िज़ साहब को मौसूलन नहीं मिली और हज्जाज की रिवायत को इमाम बैहकी ने वस्ल किया और आदम की रिवायत को उन्होंने अपने नुस्खे में वस्ल किया और नज़र की रिवायत को इस्हाक़ बिन राहवै ने वस्ल किया। (अल्हम्दुलिल्लाह कि पारा 10 पूरा हुआ)

अल्हम्दुलिल्लाह! आज बतारीख़ 10 अप्रैल 1970 यौमे जुम्आ बुखारी शरीफ़ पारा 10 के मतने मुबारक की क़िरअत से फ़रागत हासिल हुई, जबकि मस्जिदे नबवी में गुम्बदे ख़ज़रा के दामन में आँहज़रत (ﷺ) के मवाजा शरीफ़ के सामने बैठा हुआ हूँ और दुआ कर रहा हूँ कि परवरदिगार इस अज़ीम ख़िदमते-हदीष में मुझको खुलूस और कामयाबी अत्ता कर जबकि तेरे प्यारे हबीब के इश़ादाते तय्यिबात की नश्रो इशाअत ज़िन्दगी का मक़सदे वाहिद करार दे रहा हूँ। मुझको इसके तर्जुमे और तशरीहात में लज़िशों से बचाइयो, इस ख़िदमत को अहसन तरीक़ पर अंजाम देने के लिये मेरे दिल व दिमाग़ में इमानी व रूहानी रोशनी अत्ता कर क़दम क़दम पर मेरी रहनुमाई फ़र्माइयो। मेरा ईमान है कि ये मुबारक किताब तेरे हबीब (ﷺ) के इश़ादाते-तय्यिबात का एक बेशबहा ज़ख़ीरा है। जिसकी नश्रो इशाअत आज के दौर में जिहादे अकबर है। ऐ अल्लाह! मेरे जो-जो भाई जहाँ-जहाँ भी इस पाकीज़ा ख़िदमत में मेरे साथ मुम्किन इश्तिराक़ व मुसाअदत कर रहे हैं, उन सबको जज़ा-ए-ख़ैर अत्ता फ़र्मा और क़यामत के दिन अपने हबीब (ﷺ) को शफ़ाअत से उनको सरफ़राज़ कर और सबको जन्नत नसीब फ़र्माना, आमीन या रब्बल आलमीन।

(2 सफ़र 1390 हिजरी यौमल जुम्आ। मदीना तय्यिबा)

अल्हम्दुलिल्लाह कि तर्जुमा और तशरीहात की तक्मील से आज फ़रागत हासिल हुई, इस सिलसिले में जो भी मेहनत की गई है और लफ्ज़-लफ्ज़ को जिस गहरी नज़र से देखा गया है वा अल्लाह ही बेहतर जानता है। फिर भी ग़लतियों का इम्कान है, इसलिये अहले इल्म से बसदे अदब दरख़वास्त है कि जहाँ भी कोई ग़लती नज़र आए मुतलअ फ़र्माकर मेरी दुआएँ हासिल करें। अल्इन्सानु मुरक्कबुन मिनलख़तइ वनिस्त्यान मशहूर मकूल है। साल भर से ज़ाइद अरसा इस पारे के तर्जुमा व तशरीहात पर सफ़र किया गया है और मतन व तर्जुमा को कितनी बार नज़रों से गुज़रा गया है, उसकी गिनती खुद मुझको भी याद नहीं। ये मेहनते शाक्रका महज़ इसलिये बर्दाश्त की गई कि ये जनाब रसूले करीम अहमद मुज्ताबा मुहम्मदे मुस्तफ़ा (ﷺ) के पाकीज़ा फ़रामीने आलिया का बेशबहा ज़ख़ीरा है। इसमें ग़ौर व फ़िक़र वसीला-ए-नजात दारेन है और इसकी ख़िदमत व इशाअत मौजिबे स़द अज़्रे अज़ीम है।

या अल्लाह! ये हक़ीर ख़िदमत महज़ तेरी और तेरे हबीब (ﷺ) की रज़ा हासिल करने के लिये अंजाम दी जा रही है। इसमें खुलूस और कामयाबी बख़्शना तेरा काम है। जिस तरह ये दसवाँ पारा तूने पूरा कराया है, इससे भी ज़्यादा बेहतर दूसरे बीस पारों को भी पूरा कराइयो और मेरे दुनिया से जाने के बाद भी ख़िदमते हदीष का ये मुबारक सिलसिला जारी रखने की मेरे अज़ीज़ों को तौफ़ीक़ दीजियो कि सब कुछ तेरे ही कब्ज़-ए-कुदरत में है तू फ़अआलुल लिमा यूरीद है। बेशक हर चीज़ पर तू कादिर है।

जो हुआ तेरे ही करम से हुआ

जो होगा तेरे ही करम से होगा।

खादिम हदीषे नबवी मुहम्मद दाऊद राज़ अस्सलफ़ी अद देहलवी  
रहपुवा, जिला गुडगांव (हरियाणा भारत) यकुम मुहर्मुल हराम 1391 हिजरी

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### ग्यारहवां पारा

2728. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यज़ला बिन मुस्लिम और अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी सईद बिन जुबैर से और उनमें एक-दूसरे से ज़्यादा बयान करता है, इब्ने जुरैज ने कहा मुझसे ये हदीष यज़ला और अम्र के सिवा औरों ने भी बयान की, वो सईद बिन जुबैर से रिवायत करते हैं कि हम इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर थे, उन्होंने कहा कि मुझसे उबय बिन कअब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ख़िज़्र से जो जाकर मिले थे, मूसा (अलैहिस्सलाम) थे। फिर आख़िर तक हदीष बयान की कि ख़िज़्र (अ.) ने मूसा (अ.) से कहा क्या मैं आपको पहले ही नहीं बता चुका था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे (मूसा की तरफ़ से) पहला सवाल तो भूलकर हुआ था, बीच का शर्त के तौर पर और तीसरा जान-बूझकर हुआ था। आपने ख़िज़्र से कहा था कि मैं जिसको भूल गया आप उससे मुझसे मुवाख़िज़ा न कीजिये और न मेरा काम मुश्किल बनाओ, दोनों को एक लड़का मिला जिसे ख़िज़्र (अ.) ने मार डाला फिर वो आगे बढ़े तो उन्हें एक दीवार मिली जो गिरने वाली थी लेकिन ख़िज़्र ने उसे दुरुस्त कर दिया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने, वरआअहुम मलिक के बजाय अमामहुम मलिक पढ़ा है। (राजेअ : 74)

٢٧٢٨ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى بْنُ مُسْلِمٍ وَعَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ - يُرِيدُ أَحَدَهُمَا عَلَى صَاحِبِهِ، وَغَيْرُهُمَا قَدْ سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُهُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ - قَالَ: إِنَّا لَوَدَّ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: مُوسَى رَسُولُ اللَّهِ. فَذَكَرَ الْحَدِيثَ قَالَ: ((أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا)) كَانَتْ الْأَوَّلَى نِسْيَانًا، وَالْوُسْطَى شَرْطًا، وَالثَّالِثَةُ عَمْدًا. ﴿قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا﴾، ﴿لَقِيََا غُلَامًا فَقَالَا﴾، ﴿فَانْطَلَقَا﴾. فَوَجَدَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقُضَ فَالْأَمَةُ ﴿قَرَأَا أَنْ عَبَّاسٍ﴾ ((أَمَانَهُمْ مَلِكٌ)). [راجع: ٧٤]

कि उनके आगे एक बादशाह था। हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) और हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के दरम्यान जुबानी शर्तें हुई, इसी से मक्कादे बाब फ़ाबित हुआ। (इमाम बुखारी और क़यीर इलमा के नज़दीक हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं। वल्लाहु आलमु बिस्सवाबि व इलैहिल्मर्जज़ वल्मआब.

## बाब 13 : विलाअ में शर्त लगाना

## ١٣ - بَابُ الشَّرْطِ فِي الْوَلَاءِ

विलाअ एक हक है जो आज़ाद करने वाले को अपने आज़ाद किये हुए गुलाम या लौण्डी पर हासिल होता है लेकिन अगर वो मर जाए तो आज़ाद करने वाला भी उसका एक वारिष होता है, अरब लोग इस हक को बेच डालते और हिबा करते, आँहज़रत (ﷺ) ने इससे मना किया है।

2729. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने हिशाम बिन इर्वा से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास बरीरा (रज़ि.) आई और कहने लगी कि मैंने अपने मालिक से नौ औकिया चाँदी पर मुकातबत कर ली है, हर साल एक औकिया देना होगा। आप भी मेरी मदद कीजिये। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अगर तुम्हारे मालिक चाहें तो मैं एक दम उन्हें इतनी क़ीमत अदा कर सकती हूँ, लेकिन तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम होगी। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के यहाँ गई और उनसे इस सूरत का ज़िक्र किया लेकिन उन्होंने विलाअ के लिये इंकार किया। जब वो उनके यहाँ से वापस हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ फ़र्मा थे। उन्होंने कहा कि मैंने अपने मालिकों के सामने ये सूरत रखी थी, मगर वो कहते थे कि विलाअ उन्हीं के साथ क़ायम रहेगी। नबी करीम (ﷺ) ने भी ये बात सुनी और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आपको सूरतेहाल से आगाह किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू इन्हें ख़रीद ले और उन्हें विलाअ की शर्त लगाने दे। विलाअ तो उसी के साथ क़ायम हो सकती है जो आज़ाद करे। चुनौचे आइशा (रज़ि.) ने ऐसा ही किया फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) सहाबा में गए और अल्लाह तआला की हम्दो-प्रना के बाद फ़र्माया कि कुछ लोगों को क्या हो गया है कि वो ऐसी शर्तें लगते हैं जिनका कोई पता किताबुल्लाह में नहीं है, ऐसी शर्तें जिसका पता किताबुल्लाह में नहीं है बातिल है ख़्वाह सौ शर्तें क्यूँ न लगा ली जाएँ, अल्लाह का फ़ैसला ही हक़ है और अल्लाह की शर्तें ही पायदार हैं और विलाअ तो उसी को मिलेगी जो आज़ाद करेगा (राजेअ : 456)

٢٧٢٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((جَاءَنِي بَرِيرَةُ فَقَالَتْ: كَانَتْ أَهْلِي عَلَى يَسْرِ أَوَاقٍ، فِي كُلِّ عَامٍ أَوْقِيَّةٌ، فَأَعْيِشِي. فَقَالَتْ: إِنْ أَحْبَبُوا أَنْ أَغْتَمَّ لَهُمْ وَيَكُونُوا وَلَاؤُكَ لِي فَقُلْتُ: فَلَقَبْتُ بَرِيرَةَ إِلَى أَهْلِهَا فَقَالَتْ لَهُمْ، فَأَبَوْا عَلَيْهَا، فَجَاءَتْ مِنْ عِنْدِهِمْ - وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَالِسٌ - فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ عَرَضْتُ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَأَبَوْا إِلَّا أَنْ يَكُونَ الْوَلَاءُ لَهُمْ، فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَخْبَرَتْ عَائِشَةُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (خُلِّيْهَا وَاشْتَرِطِي لَهُمُ الْوَلَاءَ، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْتَقَ)). فَقُلْتُ: عَائِشَةُ. ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَتَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((مَا بَالُ رَجَالٍ يَشْتَرِطُونَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ مَا كَانَ مِنْ شَرْطٍ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ لَهُوَ بَاطِلٌ، وَإِنْ كَانَ مِائَةً شَرْطٍ، فَمَنْ أَهْلُ اللَّهِ أَحَقُّ، وَشَرْطُ اللَّهِ أَرْثَقُ، وَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْتَقَ)).

[راجع: ٤٥٦]

मक्क़दे बाब ये कि विलाअ में ऐसी ग़लत शर्तें लगाना मना है जिसका कोई पुबूत किताबुल्लाह से न हो। हाँ जाइज़ शर्तें जो फ़रीकेन तै कर लें वो तस्तीम होंगी। इस रिवायत में नौ औकिया का ज़िक्र है। दूसरी रिवायत में पाँच का जिसकी तब्दीक़ यूँ दी गई है कि शायद नौ औकिया पर मामला हो और पाँच बाक़ी रह गई हों जिनके लिये बरीरा (रज़ि.) को हज़रत आइशा (रज़ि.) के

पास आना पड़ा या मुष्किन है कि नौ के लिये राबी का वहम हो और पाँच ही सहीह हो। रिवायात से पहले ख्याल को तरजीह मा'लूम होती है जैसा कि फ़तहूल बारी में तफ़सील के साथ मज़कूर है।

**बाब 14 : मुज़ारअत में मालिक ने काश्तकार से ये शर्त लगाई कि जब मैं चाहूँगा, तुझे बेदखल कर सकूँगा**

١٤ - بَابُ إِذَا اشْتَرَطَ فِي  
الْمُزَارَعَةِ ((إِذَا شِئْتُ أَخْرَجْتُكَ))

या'नी मुज़ारअत में कोई मुद्दत मुअय्यन न करे बल्कि ज़मीन का मालिक यूँ शर्त लगाए कि मैं जब चाहूँगा तुझे बेदखल कर दूँगा, ये शर्त भी जाइज़ है बशर्ते कि दोनों फ़रीक़ खुशी से मंज़ूर करें। मक्सदे बाब ये है कि तमदुनी व मुआशरती उमूर में बाहमी तौर पर जिन शर्तों के साथ मुआमलात होते हैं, वो शर्तें जाइज़ हूदद में हों तो ज़रूर क़ाबिले तस्लीम होंगी जैसा कि यहाँ मुज़ारअत की एक शर्त मज़कूर है।

2730. हमसे अबू अहमद मुरार बिन हम्बिया ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन यह्या अबू ग़स्सान किनानी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि जब उनके हाथ पाँव ख़ैबर वालों ने तोड़ डाले तो उमर (रज़ि.) ख़ुत्बा देने के लिये खड़े हुए, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब ख़ैबर के यहूदियों से उनकी जायदाद का मामला किया था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जब तक अल्लाह तआला तुम्हें क़ायम रखे हम भी क़ायम रखेंगे और अब्दुल्लाह बिन अमर वहाँ अपने अम्वाल के सिलसिले में गए तो रात में उनके साथ मारपीट का मामला किया गया जिससे उनके पाँव टूट गए। ख़ैबर में उनके सिवा और कोई हमारा दुश्मन नहीं, वही हमारे दुश्मन हैं और उन्हीं पर हमें शुब्हा है इसलिये मैं उन्हें जलावतन कर देना ही मुनासिब जानता हूँ। जब उमर (रज़ि.) ने उसका पुख़्ता इरादा कर लिया तो बनू अबी हक्कीक़ (एक यहूदी ख़ानदान) का एक शख्स था, आया और कहा था अमीरुल मोमिनीन! क्या आप हमें जलावतन कर देंगे हालाँकि मुहम्मद (ﷺ) ने हमें यहाँ बाक़ी रखा था और हमसे जायदाद का एक मामला भी किया था और उसकी हमें ख़ैबर में रहने देने की शर्त भी आपने लगाई थी। उमर (रज़ि.) ने इस पर फ़र्माया क्या तुम ये समझते हो कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान भूल गया हूँ। जब हुज़ूर (ﷺ) ने कहा था कि तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम ख़ैबर से निकाले जाओगे और तुम्हारे ऊँट तुम्हें रातों-रात लिये फिरेंगे। उसने कहा ये तो अबुल क़ासिम (हुज़ूर (ﷺ) का एक मज़ाक़ था। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया अल्लाह के दुश्मन! तुमने झूठी बात कही। चुनाँचे उमर (रज़ि.) ने उन्हें शहर

٢٧٣٠ - حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى أَبُو غَسَّانَ الْكِنَانِيُّ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا دَخَلَ أَهْلُ خَيْبَرَ عِنْدَ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَامَ عُمَرُ خَطِيبًا فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَامَلَ يَهُودَ خَيْبَرَ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَقَالَ: لَقَرُّكُمْ مَا أَلَرُّكُمْ اللَّهُ، وَإِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ خَرَجَ إِلَى مَالِهِ هُنَاكَ فَعَدِي عَنِّي مِنَ اللَّيْلِ فَعَدِيَتْ يَدَايَ وَرِجْلَايَ، وَلَيْسَ لَنَا هُنَاكَ عَدُوٌّ غَيْرُهُمْ، هُمْ عَدُوْنَا وَتَهْمُنَا، وَلَقَدْ رَأَيْتُ إِجْلَافَهُمْ. فَلَمَّا أَجْمَعَ عُمَرُ عَلَى ذَلِكَ آتَاهُ أَحَدُ بَنِي أَبِي الْحَقَنِ قَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَلْخَرَجْنَا وَلَقَدْ أَقْرَأْنَا مُحَمَّدًا ﷺ وَحَامَلْنَا عَلَى الْأَمْوَالِ وَشَرَطَ ذَلِكَ لَنَا؟ فَقَالَ عُمَرُ: أَطَنَنْتُ أَلِي لَسَيْتُ قَوْلَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: ((كَئِيفَ بَلَكَ إِذَا أَخْرَجْتَ مِنْ خَيْبَرَ تَغْتَوِ بَلَكَ فَلَوْصَلْتَ لَيْلَةً بَعْدَ لَيْلَةٍ)). فَقَالَ: كَانَ ذَلِكَ هَزِيلَةً مِنْ أَبِي الْقَاسِمِ. فَقَالَ: كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللَّهِ. فَأَجْلَافَهُمْ عُمَرُ، وَأَغْطَاهُمْ يَهْمَةً مَا كَانَ لَهُمْ مِنَ الْقَمَرِ مَالًا وَابِلًا وَغُرُوحًا

बदर कर दिया और उनके फलों की कुछ नक़द क्रीमत, कुछ माल और ऊँट और दूसरे सामान या 'नी कजावे और रस्सियों की मूरत में अदा कर दी। इसकी रिवायत हम्माद बिन सलमान ने अब्दुल्लाह से नक़ल की है जैसा कि मुझे यकीन है नाफ़ेअ से और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से मुख़्तमर तौर पर।

مِنْ أَقَابٍ وَحِبَالٍ وَغَيْرِ ذَلِكَ».

رَوَاهُ حَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ أَحْسَنَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، اختصاراً.

**तशरीह:** रिवायत के शुरू सनद में अबू अहमद मुरार बिन हम्विया हैं। जामेउससहीह में उनसे और उनके शौख से सिर्फ यही एक हदीष मरबी है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को पैदावार वसूल करने के लिये ख़ैबर भेजा था। वहाँ बदन अहद यहूदियों ने मौक़ा पाकर हज़रत अब्दुल्लाह को एक छत से नीचे धकेल दिया और उनके हाथ पैर तोड़ दिये। ऐसी ही शरायों की वजह से हज़रत उमर (रज़ि.) ने ख़ैबर से यहूद को जलावतन कर दिया। ख़ैबर की फ़तह के बाद रसूल करीम (ﷺ) ने मप्तुहा ज़मीनात (जीती हुई धरती) का मामला ख़ैबर के यहूदियों से कर लिया था और कोई मुहत मुकरर नहीं की बल्कि ये फ़र्माया कि ये मामला हमेशा के लिये नहीं है बल्कि जब अल्लाह चाहेगा ये मामला ख़त्म कर दिया जाएगा। इसी बिना पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहदे खिलाफ़त में उनको बेदख़ल करके दूसरी जगह मुतक़िल करा दिया। इस बदन अहद क़ौम ने कभी किसी के साथ वफ़ा नहीं की, इसलिये ये क़ौम मलज़ून और मतरूद (धुत्कारी हुई) करार पाई। इस हदीष से ये निकला कि ज़मीन का मालिक अगर काश्तकार का कोई कुसूर देखे तो उसको बेदख़ल कर सकता है गो वो काम शुरू कर चुका हो मगर उसके काम का बदल देना होगा जैसे कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने किया।

## बाब 15 : जिहाद में शत्रों लगाना और काफ़िरों के साथ मुलह करने में और शत्रों का लिखना

2731, 74. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रजाक़ ने बयान किया, कहा मुझको मअमर ने ख़बर दी, कहा कि मुझे जुहरी ने ख़बर दी, कहा मुझे इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी और उनसे मख़रमा (रज़ि.) और मरवान ने, दोनों के बयान से एक-दूसरे की हदीष की तस्दीक़ भी होती है। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मुलहे हुदैबिया के मौक़े पर (मक्का) जा रहे थे, अभी आप (ﷺ) रास्ते ही में थे, फ़र्माया ख़ालिद बिन वलीद कुरैश के (दो सौ) सवारों के साथ हमारी नक़ल व हरकत का अंदाज़ा लगाने के लिये मुक़ामे ग़मीम में मुक़ीम है (ये कुरैश का मुक़द्दमतुल जैश है) इसलिये तुम लोग दाहिनी तरफ़ से जाओ, पस अल्लाह की क़सम! ख़ालिद को उनके बारे में कुछ भी इल्म न हो सका और जब उन्होंने उस लश्कर का गुबार उठता हुआ देखा तो कुरैश को जल्दी-जल्दी ख़बर देने गए उधर नबी करीम (ﷺ) चलते रहे यहाँ तक कि आप उस घाटी पर पहुँचे जिससे मक्का में उतरते हैं तो आप (ﷺ) की सवारी बैठ गई।

## ١٥- بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْجِهَادِ وَالْمُصَالَحَةِ

فَعِ أَهْلَ الْغَرْبِ، وَكِتَابَةُ الشُّرُوطِ

٢٧٣١، ٧٤ - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا الرَّزَّاقُ أَخْبَرَنَا عُمَرُ قَالَ: أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي غُرُورَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنِ الْمُسَوِّدِ بْنِ مَعْرُوفَةَ وَمَرْوَانَ - يُصَدِّقُ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا حَدِيثَ صَاحِبِهِ - قَالَ: ((عَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَمَنَ الْخُدَيْيَةِ حَتَّى كَانُوا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (( إِنَّ عَالِدَ بْنِ الْوَلِيدِ بِالْقُعَيْنِ فِي غَيْبٍ يَفْرِشُ طَلِيقَةً، فَعْمَلُوا ذَاتَ الْيَمِينِ)). فَوَ اللَّهِ مَا حَقَرَ بِهِمْ عَالِدٌ حَتَّى إِذَا هُمْ بِقَرْيَةِ الْحِشْرِ، فَأَنْطَلَقَ يَرْكُضُ نَذِيرًا يَفْرِشُ وَسَارَ النَّبِيُّ

सहाबा (कैटनी को उठाने के लिये हल हल कहने लगे लेकिन वो अपनी जगह से न उठी। सहाबा (रजि.) ने कहा कि क़स्वा अड़ गई, आप (ﷺ) ने फ़र्माया क़स्वा अड़ी नहीं और न ये उसकी आदत है, इसे तो उस ज़ात ने रोक लिया जिसने हाथियों (के लश्कर) को (पक्का) में दाखिल होने से रोक लिया था। फिर आपने फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कुरैश जो भी ऐसा मुतालबा रखेंगे जिसमें अल्लाह के घर की बड़ाई हो तो मैं उनका मुतालबा कर लूंगा। आखिर आप (ﷺ) ने कैटनी को डांटा तो वो उठ गई। रावी ने बयान किया कि फिर नबी करीम (ﷺ) सहाबा से आगे निकल गए और हुदैबिया के आखिरी किनारे प्रमद (एक चश्मा या गड़्ढा) पर जहाँ पानी कम था, आप (ﷺ) ने पड़ाव किया। लोग थोड़ा थोड़ा पानी इस्तेमाल करने लगे, उन्होंने पानी को ठहरने ही नहीं दिया, सब खींच डाला। अब रसूल करीम (ﷺ) से प्यास की शिकायत की गई तो आप (ﷺ) ने अपने तरकश में से एक तीर निकाल कर दिया कि उस गड़्ढे में डाल दें अल्लाह की क़सम! तीर गाड़ते ही पानी उन्हें सैराब करने के लिये उबलने लगा और वो लोग पूरी तरह सैराब हो गए। लोग इसी हाल में थे कि बुदैल बिन वरक्का ख़ुज़ाई (रजि.) अपनी क़ौम ख़ुज़ाआ के कई आदमियों को लेकर हाज़िर हुआ। ये लोग तिहामा के रहने वाले और रसूलुल्लाह (ﷺ) के महारमे राज़ बड़े ख़ैर-ख़वाह थे। उन्होंने ख़बर दी कि मैं कअब बिन लुई और आमिर बिन लुई को पीछे छोड़कर आ रहा हूँ। जिन्होंने हुदैबिया के पानी के ज़ख़ीरों पर अपना पड़ाव डाल दिया है, उनके साथ बक़रत दूध देने वाली कैटनियाँ अपने नए-नए बच्चों के साथ हैं। वो आपसे लड़ेंगे और आपके बैतुल्लाह पहुँचने में रुकावट होंगे। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं सिर्फ़ उमर रह करने के इरादे से आए हैं और वाक़िया ये है कि (मुसलसल) लड़ाइयों ने कुरैश को भी कमज़ोर कर दिया है और उन्हें बड़ा नुक़सान उठाना पड़ा है, अब अगर वो चाहें तो मैं एक मुद्दत तक उनसे सुलह का मुआहिदा कर लूंगा, उस अर्से में वो मेरे और अवाम (कुफ़फ़ार व मुशरिकीने अरब) के बीच न पड़ें फिर अगर मैं कामयाब हो जाऊँ और (उसके बाद) वो चाहें तो इसदीन (इस्लाम) में वो भी दाख़िल हो सकते हैं (जिसमें और तमाय़ लोग दाख़िल हो चुके होंगे) लेकिन अगर मुझे कामयाबी नहीं हुई तो

ﷺ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِالنَّبِيِّ أَلْفِي يُهَيِّطُ عَلَيْهِمْ مِنْهَا بَرَكْتَ بِهِ وَرَاجِلُهُ، فَقَالَ النَّاسُ: حَلَّ حَلٌّ. فَالْحَقَّتْ. فَقَالُوا عَلِمَتْ الْقُصَوَاءُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا عَلِمَتْ الْقُصَوَاءُ وَمَا ذَاكَ لَهَا بِغُلْفٍ. وَلَكِنْ حَسَبَهَا حَاسِبُ الْفِيلِ)). ثُمَّ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَا يَسْأَلُونَنِي حُطَّةً يَعْظُمُونَ فِيهَا حُرُمَاتِ اللَّهِ إِلَّا أَعْطَيْتُهُمْ إِيَّاهَا. ثُمَّ رَجَعُوا فَوَلَّتْ)). قَالَ: فَعَدَلَ عَنْهُمْ حَتَّى نَزَلَ بِالْقَصَى الْخُدَيْبِيَّةِ عَلَى قَمَدٍ قَلِيلٍ الْمَاءِ يَبْرُصُهُ النَّاسُ تَبْرُصًا، فَلَمْ يُلْبَهُ النَّاسُ حَتَّى تَرَوْهُ، وَشَكِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْفَطَشُ، فَانْتَرَعَ مِنْهُمَا مِنْ كِبَانِيهِ، ثُمَّ أَمَرَهُمْ أَنْ يَجْعَلُوهُ لِيهِ، فَوَدَّ اللَّهُ مَا زَالَ يَجِيئُ لَهُمْ بِالْوَيْ حَتَّى صَدَرُوا عَنْهُ، فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ، إِذْ جَاءَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَانَ الْخُزَاعِيُّ لِي نَفَرٍ مِنْ قَوْمِهِ مِنْ خُزَاعَةَ - وَكَانُوا عَقِبَةَ نَصِيحِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِنْ أَهْلِ بَهَاةٍ - فَقَالَ: إِنِّي تَرَكْتُ كَفَبَ بْنَ لُؤَيٍّ وَغَامِرَ بْنَ لُؤَيٍّ. نَزَلُوا أَخَذُوا مِيَاهَ الْخُدَيْبِيَّةِ، وَمَعَهُمُ الْوُدُ الْمَطَالِيلُ، وَهُمْ مُقَابِلُونَ وَمُصَادِرُونَ عَنِ النَّبِيِّ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّا لَمَنْ نَجِيءَ لِقَعَالٍ أَحَدٍ، وَلَكِنَّا جِئْنَا مُعْظَمِينَ، وَإِنْ قَرَرْنَا قَدْ نَهَكْتُهُمُ الْحَرْبُ وَأَضْرَبَتْ بِهِمْ، فَإِنْ شَاؤُوا مَادَدْنَاهُمْ مَدَّةً وَيَجْلُوا بَنِي وَتَمَنَ النَّاسِ، فَإِنْ أَظْهَرَ فَإِنْ شَاؤُوا أَنْ يَدْخُلُوا

उन्हें भी आराम मिल जाएगा और अगर उन्हें मेरी पेशकश से इंकार है तो उस ज्ञात की क्रम जिसके हाथ में मेरी जान है जब तक मेरा सर तन से जुदा नहीं हो जाता, मैं इस दीन के लिये बराबर लड़ता रहूंगा या फिर अल्लाह तआला इसे नाफिज कर देगा। बुदैल (रजि.) ने कहा कि कुरैश तक आपकी बातचीत पहुँचाऊँगा चुनाँचे वो वापस हुए और कुरैश के यहाँ पहुँचे और कहा कि हम तुम्हारे पास उस शख्स (नबी करीम ﷺ) के यहाँ से आ रहे हैं और हमने उसे एक बात कहते सुना है, अगर तुम चाहो तो तुम्हारे सामने हम उसे बयान कर सकते हैं। कुरैश के बेवकूफों ने कहा कि हमें इसकी ज़रूरत नहीं कि तुम उस शख्स की कोई बात हमें सुनाओ। जो लोग झाड़बुराय थे, उन्होंने कहा कि ठीक है जो कुछ तुमने सुना है हमसे बयान करो। उन्होंने कहा कि मैंने उसे (औहज़रत ﷺ) को ये कहते सुना है और फिर जो कुछ उन्होंने औहज़रत (ﷺ) से सुना था, सब बयान कर दिया। इस पर इर्वा बिन मसज़द (रजि.) (जो उस वक़्त तक कुफ़्रार के साथ थे) खड़े हुए और कहा ऐ कौम के लोगों! क्या तुम मुझ पर बाप की तरह शफ़क़त नहीं रखते। सबने कहा क्यों नहीं! ज़रूर रखते हैं। इर्वा ने फिर कहा क्या मैं बेटे की तरह तुम्हारा ख़ैर-ख़वाह नहीं हूँ, उन्होंने कहा क्यों नहीं है। इर्वा ने फिर कहा तुम लोग मुझ पर किसी क्रिस्म की तोहमत लगा सकते हो? उन्होंने कहा कि नहीं। उन्होंने पूछा क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि मैंने इकाज़ वालों को तुम्हारी मदद के लिये कहा था और जब उन्होंने इंकार किया तो मैंने अपने घराने, औलाद और उन तमाम लोगों को तुम्हारे पास लाकर खड़ा कर दिया था जिन्होंने मेरा कहना माना था? कुरैश ने कहा क्यों नहीं (आपकी बातें दुरुस्त हैं) उसके बाद उन्होंने कहा देखो अब उस शख्स (नबी करीम ﷺ) ने तुम्हारे सामने एक अच्छी तज्वीज़ रखी है, उसे तुम कुबूल कर लो और मुझे उसके पास (बातचीत) के लिये जाने दो, सबने कहा आप ज़रूर जाइये। चुनाँचे इर्वा बिन मसज़द (रजि.) औहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) से बातचीत शुरू की। आप (ﷺ) ने उनसे भी वही बातें कहीं जो आप (ﷺ) बुदैल से कह चुके थे, इर्वा (ﷺ) ने उस वक़्त कहा। ऐ मुहम्मद! बताओ अगर आप (ﷺ) ने अपनी क़ौम को तबाह कर दिया तो क्या अपने से पहले किसी भी

فِيمَا دَخَلَ فِيهِ النَّاسُ قُتِلُوا. وَإِلَّا فَقَدْ جَاءُوا. وَإِنْ هُمْ أَبَوْا قَوْلَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَأَقَاتِلَنَّهُمْ عَلَى أَمْرِي هَذَا حَتَّى تَنْفَرِدَ سَالِقَتِي، وَلَيَنْفِلَنَّ اللَّهُ أَمْرَهُ. فَقَالَ بُدَيْلٌ: سَأُبَلِّغُهُمْ مَا تَقُولُ. قَالَ فَانْطَلَقَ حَتَّى أَتَى قُرَيْشًا قَالَ: إِنَّا قَدْ جِئْنَاكُمْ مِنْ هَذَا الرَّجُلِ، وَسَمِعْنَاهُ يَقُولُ قَوْلًا، فَإِنْ جِئْتُمْ أَنْ نَعْرِضَهُ عَلَيْكُمْ فَعَلْنَا. فَقَالَ سَفَهَاءُؤُهُمْ: لَا حَاجَةَ لَنَا أَنْ نُخْبِرَنَا عَنْهُ بِشَيْءٍ. وَقَالَ ذُوو الرِّأْيِ مِنْهُمْ: هَاتِ مَا سَمِعْتَهُ يَقُولُ: قَالَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ كَذَا وَكَذَا. فَخَذَلْنَاهُمْ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ. فَهَامَ عَزْوَةٌ بِنُ مَسْعُودٍ فَقَالَ: أَيُّ قَوْمٍ أَلَسْتُمْ بِالْوَالِدِ؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: أَوَلَسْتُمْ بِالْوَلَدِ؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: فَهَلْ تَهْمُونِي؟ قَالُوا: لَا. قَالَ: أَلَسْتُمْ تَقْلُمُونَ أَنِّي اسْتَفَرْتُ أَهْلَ عَكَاطٍ، فَلَمَّا بَلَغُوا عَلَيَّ جِئْتُمْ بِأَهْلِي وَوَلَدِي وَمَنْ أَطَاعَنِي؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: إِنْ هَذَا قَدْ عَرَضَ لَكُمْ عَطَّةٌ رُشِدٍ اقْبُلُوهَا وَدَعُونِي آيَةً. قَالُوا آيَةً. فَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ نَحْوًا مِنْ قَوْلِهِ لِبُدَيْلٍ. فَقَالَ عَزْوَةٌ عِنْدَ ذَلِكَ: أَيُّ مُحَمَّدٍ، أَرَأَيْتَ إِنْ اسْتَأْصَلْتَ أَمْرَ قَوْمِكَ، هَلْ سَمِعْتَ بِأَحَدٍ مِنَ الْقُرْبِ اجْتَنَحَ أَهْلَهُ قَبْلَكَ؟ وَإِنْ تَكُنِ الْآخَرَى، فَإِنِّي وَاللَّهِ لَا أَرَى وَجْهًا، وَإِنِّي لَا أَرَى أَشْرَافًا مِنَ النَّاسِ خَلِيقًا أَنْ يَقُولُوا

अब के बारे में सुना है कि उसने अपने खानदान का नामो-निशान मिटा दिया हो लेकिन अगर दूसरी बात वाक़ेअ हुई (या'नी हम आप ﷺ) पर ग़ालिब हुए) तो मैं तो अल्लाह की क़सम तुम्हारे साथियों का मुँह देखता हूँ ये पंज मील लोग यही करेंगे, उस वक़्त ये सब लोग भाग जाएँगे और आपको तन्हा छोड़ देंगे। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) बोले अम्सिस बिबज़िल्लात (अबे जा! लात बुत की शर्मगाह चूस ले) क्या हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से भाग जाएँगे और आप (ﷺ) को तन्हा छोड़ देंगे। इर्वा ने पूछा ये कौन साहब हैं? लोगों ने बताया कि अबूबक्र (रज़ि.) हैं। इर्वा ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर तुम्हारा मुझ पर एहसान न होता जिसका अब तक मैं बदला नहीं दे सका हूँ तो तुम्हें ज़रूर जवाब देता। बयान किया कि वो नबी करीम (ﷺ) से फिर बातचीत करने लगे और बातचीत करते हुए आप (ﷺ) की दाढ़ी मुबारक पकड़ लिया करते थे। मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के पास खड़े थे, तलवार लटकाए हुए और सर पर ख़ूद पहने। इर्वा जब भी नबी करीम (ﷺ) की दाढ़ी मुबारक की तरफ़ हाथ ले जाते तो मुगीरह (रज़ि.) तलवार की कोतही को उनके हाथ पर मारते और उनसे कहते कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दाढ़ी से अपना हाथ अलग रख। इर्वा (रज़ि.) ने अपना सर उठाया और पूछा ये कौन साहब हैं? लोगों ने बताया कि मुगीरह बिन शुअबा। इर्वा ने उन्हें मुख़ातिब करके कहा ऐ दगाबाज़! क्या मैंने तेरी दगाबाज़ी की सज़ा से तुझको नहीं बचाया? असल में मुगीरह (रज़ि.) (इस्लाम लाने से पहले) जाहिलियत में एक क़ौम के साथ रह रहे थे फिर उन सबको क़त्ल करके उनका माल ले लिया था। उसके बाद (मदीना) आए और इस्लाम कुबूल कर लिया (तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में उनका माल भी रख दिया कि जो चाहें उसके बारे में हुक्म दें) लेकिन आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तेरा इस्लाम तो मैं कुबूल करता हूँ, रहा ये माल तो मेरा इससे कोई वास्ता नहीं क्योंकि वो दगाबाज़ी से हाथ आया है जिसे मैं ले नहीं सकता, फिर इर्वा (रज़ि.) घूर-घूरकर रसूले करीम (ﷺ) के अज़्हाब की नक़ल व हरकत देखते रहे। फिर रावी ने बयान किया कि क़सम अल्लाह की! अगर कभी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बलग़म भी थूका तो आप (ﷺ) के अज़्हाब ने अपने हाथों पर उसे ले लिया

وَيَذْعُوكَ، فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ: اَمْسِصْ بِنَظَرِ  
الْلاَّتِ، اَنَحْنُ نَفِرُ عَنْهُ وَنَدْعُهُ، فَقَالَ: مَنْ  
ذَا؟ قَالُوا: أَبُو بَكْرٍ. قَالَ: اَنَا وَالَّذِي نَفْسِي  
بِيَدِهِ، لَوْ لَا يَدُكَ كَانَتْ لَكَ عِنْدِي لَمْ  
أَجْزِكَ بِهَا لِاجْتِنَاكَ. قَالَ: وَجَعَلَ يَكَلِّمُ  
النَّبِيَّ ﷺ، فَكَلَّمَا تَكَلَّمَا اخَذَ بِلِحْيَتِهِ،  
وَالْمُفِيرَةُ بِنُ شُعْبَةَ قَائِمَةً عَلَى رَأْسِ النَّبِيِّ  
ﷺ وَنَعْمَةُ السَّيْفِ وَعَلَيْهِ السُّفُفَرُ، فَكَلَّمَا  
أَفْوَى غُرُوزُهُ بِيَدِهِ إِلَى لِحْيَةِ رَسُولِ اللَّهِ  
ﷺ، فَضَرَبَ يَدَهُ بِنَظَرِ السُّفُفَرِ وَقَالَ لَهُ:  
أَخْرَيْتَكَ عَنْ لِحْيَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.  
فَرَفَعَ غُرُوزُهُ رَأْسَهُ فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا  
الْمُفِيرَةُ بِنُ شُعْبَةَ. فَقَالَ: أَيُّ عُذْرٍ،  
أَلَسْتُ أَسْنَى فِي عُذْرِكَ؟ وَكَانَ الْمُفِيرَةُ  
صَحْبَةً قَوْمًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَفَتَلَهُمْ وَاخَذَ  
أَمْوَالَهُمْ لَمْ يَأْتِ فَاسْتَمَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:  
(أَنَا الْإِسْلَامُ قَائِلٌ وَأَنَا الْمَالُ فَلَسْتُ  
بِنَهْ فِي شَيْءٍ)). ثُمَّ إِنَّ غُرُوزَهُ جَعَلَ يَرْمُقُ  
أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَيْنِهِ. قَالَ: قَوْلُ اللَّهِ  
مَا تَتَّخِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نِعَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ  
فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَذَلِكَ بِهَا وَجْهُهُ  
وَجِلْدُهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمْ ابْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا  
تَوَضَّأُوا كَادُوا يَفْتَتِلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا  
تَكَلَّمُوا خَفَضُوا أَمْوَالَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا  
يَحْدُثُونَ إِلَيْهِ النَّظَرُ تَنْظِيمًا لَهُ. فَوَجَعَ  
غُرُوزُهُ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَيُّ قَوْمٍ، وَاللَّهِ  
لَقَدْ وَقَعْتُ عَلَى الْمُلُوكِ، وَوَقَعْتُ عَلَى



और उसे अपने चेहर और बदन पर मल लिया। किसी काम का अगर आप (ﷺ) ने हुक्म दिया तो उसकी बजा आवरी में एक-दूसरे से सबकत ले जाने की कोशिश करते। आप (ﷺ) वुजू करने लगे तो ऐसा मा'लूम हुआ कि आप (ﷺ) के वुजू के पानी पर लड़ाई हो जाएगी (या) नी हर शख्स उस पानी को लेने की कोशिश करता था) जब आप बातचीत करने लगते तो सब पर खामोशी छा जाती। आप (ﷺ) की ता'ज़ीम का ये हाल था कि आप (ﷺ) के साथी नज़र भरकर आप (ﷺ) को देख भी नहीं सकते थे। ख़ैर इर्वा जब अपने साथियों से जाकर मिले तो उनसे कहा कि ऐ लोगों! क़सम अल्लाह की! मैं बादशाहों के दरबार में भी वफ़द लेकर गया हूँ, क़ैसर व किसरा, और नज़ाशी सबके दरबार में लेकिन अल्लाह की क़सम मैंने कभी नहीं देखा कि किसी बादशाह के साथी उसकी इस दर्जा ता'ज़ीम करते हों जितनी मुहम्मद के अज़्हाब आपकी करते हैं। क़सम अल्लाह की अगर मुहम्मद (ﷺ) ने बलग़म भी थूक दिया तो उनके अज़्हाब ने उसे अपने हाथों पर ले लिया और उसे अपने चेहरे और बदन पर मल लिया। आप (ﷺ) ने उन्हें अगर कोई हुक्म दिया तो हर शख्स ने उसे बजा लाने में एक-दूसरे पर सबकत की कोशिश की। आप (ﷺ) ने अगर वुजू किया तो ऐसा मा'लूम होता था कि आप (ﷺ) के वुजू पर लड़ाई हो जाएगी। आप (ﷺ) ने जब बातचीत शुरू की तो हर तरफ़ खामोशी छा गई। उनके दिलों में आप (ﷺ) की ता'ज़ीम का ये आलम था कि आप (ﷺ) को नज़र भरकर भी नहीं देख सकते। उन्होंने तुम्हारे सामने एक भली मूरत रखी है, तुम्हें चाहिये कि उसे कुबूल कर लो। इस पर बनू किनाना का एक शख्स बोला कि अच्छा मुझे भी उनके यहाँ जाने दो, लोगों ने कहा तुम भी जा सकते हो। जब ये रसूलुल्लाह (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाब रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन के करीब पहुँचे तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये फ़लाँ शख्स है, एक ऐसी क़ौम का फ़र्द जो बैतुल्लाह की कुर्बानी के जानवरों की ता'ज़ीम करते हैं इसलिये कुर्बानी के जानवर इसके सामने कर दो। सहाबा (रज़ि.) ने कुर्बानी के जानवर उसके सामने कर दिये और लब्बैक कहते हुए उसका इस्तिक्रबाल किया जब उसने ये मंज़र देखा तो कहने लगा कि सुब्हानल्लाह क़त्अन मुनासिब नहीं है कि ऐसे लोगों को का'बा से रोका जाए। उसके बाद कुरैश में से एक दूसरा शख्स मिकरज़ बिन हफ़्स नामी खड़ा हुआ और कहने लगा

قَصَرَ وَكَسَرَى وَالنَّجَاشِي، وَاللَّهُ إِنْ رَأَيْتَ مَلَكًا قَطُّ يُعْظِمُهُ أَصْحَابُهُ مَا يُعْظِمُ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُحَمَّدًا، وَاللَّهُ إِنْ تَخَمَّ نَخَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ لَدُنْكَ بِهَا وَجْهَةٌ وَجِلْدَةٌ، وَإِذَا أَمَرْتُمْ ابْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّعُوا كَانُوا يَقْتُلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمْتَ خَفَفُوا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا يُجِدُونَ النَّظَرَ إِلَيْهِ نَعِيمًا لَهُ، وَإِنَّهُ قَدْ عَرَضَ عَلَيْكُمْ حُطَّةٌ رُشِدٌ فَاقْبَلُوهَا. فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي كَيْسَانَ: دَعُونِي آتِيهِ، فَقَالُوا: آتِيهِ. فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((هَذَا فَلَانٌ، وَهُوَ مِنْ قَوْمٍ يُعْظَمُونَ الْبُذُنَ، لَا يُضَوُّوهُا لَهُ)), فَهَبْتُ لَهُ، وَاسْتَغْبَلَهُ النَّاسُ يُلْتَوْنَ. فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ قَالَ: سَبَّحَانَ اللَّهِ، مَا يَنْهَى لَهُؤُلَاءِ أَنْ يُصْنَعُوا عَنِ الْبُذُنِ. فَلَمَّا رَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ قَالَ رَأَيْتُ الْبُذُنَ قَدْ قُلِدَتْ وَ أَشِيرَتْ لَمَّا رَأَى يُصْنَعُوا عَنِ الْبُذُنِ فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ يُقَالُ لَهُ بِكَرَزُ بْنُ خَلْعٍ فَقَالَ: دَعُونِي آتِيهِ. فَقَالُوا: آتِيهِ. فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَذَا بِكَرَزُ، وَهُوَ رَجُلٌ فَاجِرٌ)). فَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ. فَبَيْنَمَا هُوَ يُكَلِّمُهُ إِذْ جَاءَ سَهْلُ بْنُ عَمْرٍو. قَالَ مَعْمَرٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبُو بَرْزَةَ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّهُ لَمَّا جَاءَ سَهْلُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ سَهَّلَ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ)).

कि मुझे भी उनके यहाँ जाने दो। सबने कहा कि तुम भी जा सकते हो जब वो आँहजरत (ﷺ) और महाबा (रजि.) से करीब हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मिकरज़ है एक बदतरीन शख्स। फिर वो नबी करीम (ﷺ) से बातचीत करने लगा। अभी वो बातचीत कर ही रहा था कि सुहैल बिन अमर आ गया। मअमर ने (साबिका सनद के साथ) बयान किया कि मुझे अय्यूब ने ख़बर दी और उन्हें इकिरमा ने कि जब सुहैल बिन अमर आया तो नबी करीम (ﷺ) ने (नेक फ़ाली के तौर पर) फ़र्माया तुम्हारा मामला आसान (सहल) हो गया। मअमर ने बयान किया कि जुहरी ने अपनी हदीस में इस तरह बयान किया था कि जब सुहैल बिन अमर आया तो कहने लगा कि हमारे और अपने बीच (सुलह) की एक तहरीर लिख लो। घुनोंचे नबी करीम (ﷺ) ने कातिब को बुलवाया और फ़र्माया कि लिखो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम सुहैल कहने लगा रहमान को अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता कि वो क्या चीज़ है। अल्बत्ता तुम यूँ लिख सकते हो बिस्मिकल्लाहुम्प जैसे पहले लिखा करते थे मुसलमानों ने कहा कि क़सम अल्लाह की हमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के सिवा और कोई दूसरा जुम्ला न लिखना चाहिये। लेकिन आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बिस्मिकल्लाह ही लिखने दो। फिर आप (ﷺ) ने लिखवाया ये मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से सुलहनामा की दस्तावेज़ है (ﷺ) सुहैल ने कहा अगर हमें ये मा'लूम होता कि आप रसूलुल्लाह हैं तो न हम आप (ﷺ) को का'बा से रोकते और न आपसे जंग करते। आप (ﷺ) तो सिर्फ़ इतना लिखिए कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह इस पर रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह गवाह है कि मैं उसका सच्चा रसूल हूँ ख़वाह तुम मेरी तकज़ीब ही करते रहो, लिखो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह। जुहरी बयान करते हैं कि ये सब कुछ (नरमी और रियायत) सिर्फ़ आप (ﷺ) के उस इश्राद का नतीजा था (जो पहले ही आप (ﷺ) ने बुदेल रजि. से कह चुके थे) कि कुरैश मुझसे जो भी ऐसा मुतालबा करेंगे जिससे अल्लाह तआला की हुर्मतों की ता'जीम मक्मूद होगी तो मैं उनके मुतालबे को ज़रूर मान लूँगा, इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने सुहैल से फ़र्माया लेकिन सुलह के लिये पहली शर्त ये होगी कि तुम लोग बैतुल्लाह के तवाफ़ करने के लिये जाने दोगे। सुहैल ने कहा क़सम अल्लाह की हम (इस साल) ऐसा नहीं होने देंगे वरना अरब कहेंगे कि हम मालूब हो गए थे (इसलिये हमने

قَالَ مَعْمَرٌ قَالَ الزُّهْرِيُّ فِي خَلِيقِهِ : فَبَعَثَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو فَقَالَ : هَاتِ اكْتُبْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ كِتَابًا.

فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْكَاتِبَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : اكْتُبْ ((بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ))، قَالَ سُهَيْلٌ : أَمَّا ((الرَّحْمَنُ)) فَوَ اللَّهِ مَا أَفْرِي مَا هُوَ، وَلَكِنْ اكْتُبْ ((بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ)) كَمَا كُنْتَ تَكْتُبُ، فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ : وَاللَّهِ لَا نَكْتُبُهَا إِلَّا ((بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ))، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : اكْتُبْ ((بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ))، ثُمَّ قَالَ : ((هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ))، فَقَالَ سُهَيْلٌ وَاللَّهِ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَا صَدَدْنَاكَ عَنْ النَّبِيِّ وَلَا قَاتَلْنَاكَ، وَلَكِنْ اكْتُبْ ((مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ))، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : وَاللَّهِ إِنِّي لَرَسُولُ اللَّهِ وَإِنْ كَذَّبْتُمُونِي، اكْتُبْ ((مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ))، قَالَ الزُّهْرِيُّ : وَذَلِكَ لِقَوْلِهِ : ((لَا يَسْأَلُونِي خُطَّةً يُعْطَمُونَ فِيهَا حُرُمَاتِ اللَّهِ إِلَّا أُعْطِيَتْهُمْ إِلَّاهَا))، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ : ((عَلَى أَنْ تَخْلُوا بَيْنَنَا وَبَيْنَ النَّبِيِّ نَقُطُوفَ بِهِ))، فَقَالَ سُهَيْلٌ : وَاللَّهِ لَا تَصْحَدُ الْقُرَيْشُ أَنَا أَعْلَلْنَا ضُفْطَةً، وَلَكِنْ ذَلِكَ مِنَ الْعَامِ الْمَقْبِلِ، فَكُتِبَ، فَقَالَ سُهَيْلٌ : وَعَلَى أَنَّهُ لَا يَأْتِيكَ مِنَّا رَجُلٌ - وَإِنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ - إِلَّا وَدَدْتُهُ إِلَيْنَا. قَالَ الْمُسْلِمُونَ : سَبَّحَانَ اللَّهِ، كَيْفَ يُوَدُّ إِلَى

आपको इजाजत दे दी) अल्बत्ता आइन्दा साल के लिये इजाजत है। चुनौचे ये भी लिख लिया। फिर सुहैल ने लिखा किये शर्त भी (लिख लीजिए) कि हमारी तरफ का जो शख्स भी आप (ﷺ) के यहाँ जाएगा ख्वाह वो आप (ﷺ) के दीन ही पर क्यूँ न हो आप (ﷺ) उसे वापस कर देंगे। मुसलमानों ने (ये शर्त सुनकर कहा) सुब्हानल्लाह! (एक शख्स को) मुश्रिकों के हवाले किस तरह किया जा सकता है जो मुसलमान होकर आया हो। अभी यही बातें हो रही थीं कि अबु जन्दल बिन सुहैल बिन अम्म (रज़ि.) अपनी बेड़ियों को घसीटते हुए आ पहुँचे, वो मक्का के नशीबी इलाक़े की तरफ से भागे थे और अबु ख़ुद को मुसलमानों के सामने डाल दिया था। सुहैल ने कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! ये पहला शख्स है जिसके लिये (सुलहनामा के मुताबिक) मैं मुतालबा करता हूँ कि आप (ﷺ) हमें उसे वापस कर दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अभी तो हमने (सुलहनामा की इस दफ़ा को) सुलहनामा में लिखा भी नहीं है (इसलिये जब सुलहनामा तैयार जाएगा उसके बाद उसका निफ़ाज़ होना चाहिये) सुहैल कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! फिर मैं किसी बुनियाद पर भी आप (ﷺ) से सुलह नहीं करूँगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा मुझ पर उस एक को देकर एहसान कर दो। उसने कहा कि मैं इस सिलसिले में एहसान भी नहीं कर सकता। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि नहीं तुम्हें एहसान कर देना चाहिये, लेकिन उसने यही जवाब दिया कि मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। अल्बत्ता मिकरज़ ने कहा कि चलिये हम इसका आप (ﷺ) पर एहसान करते हैं मगर (उसकी बात नहीं चली) अबु जन्दल (रज़ि.) ने कहा मुसलमानों! मैं मुसलमान होकर आया हूँ, क्या मुझे मुश्रिकों के हाथ में दे दिया जाएगा? क्या मेरे साथ जो कुछ मामला हुआ है तुम नहीं देखते? अबु जन्दल (रज़ि.) को रास्ते में बड़ी सख़्त अज़िय्यतें पहुँचाई गई थीं। रावी ने बयान किया कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा आख़िर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया क्या ये वाक़िया और हक़ीक़त नहीं कि आप (ﷺ) अल्लाह के नबी हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्यूँ नहीं! मैंने अर्ज़ किया क्या हम हक़ पर नहीं हैं और क्या हमारे दुश्मन बातिल नहीं हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्यूँ नहीं! मैंने कहा फिर अपने दीन के मामले में क्यूँ दबें? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं अल्लाह का रसूल हूँ, उसकी हुक्म उदूली नहीं कर सकता और वही मेरा मददगार है। मैंने कहा क्या आप (ﷺ) हमसे ये नहीं

المُشْرِكِينَ وَقَدْ جَاءَ مُسْلِمًا؟ قَبِلْنَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ دَخَلَ أَبُو جَنْدَلٍ بَيْنَ سَهْلٍ وَبَيْنَ عُمَرُو يَوْمَئِذٍ فِي قُبُورِهِ، وَقَدْ خَرَجَ مِنْ أَسْفَلِ مَكَّةَ حَتَّى رَمَى بِتَفْسِيهِ بَيْنَ أَظْهُرِ الْمُسْلِمِينَ، فَقَالَ سَهْلٌ: هَذَا يَا مُحَمَّدُ أَوَّلُ مَا أَقَامَيْتَ عَلَيْهِ أَنْ تَرُدَّهُ إِلَيَّ.

فَقَالَ النَّبِيُّ: «إِنَّا لَمْ نَقْضِ الْكِتَابَ بَعْدُ». قَالَ: قَوْلُ اللَّهِ إِذَا لَمْ أَصِلْكَ عَلَى شَيْءٍ أَبَدًا. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «فَاجْزُهُ إِلَيَّ»، قَالَ: مَا أَنَا بِمُجْبِرٍ لَكَ، قَالَ: «بَلَى لِمَا لَمْ يَأْمُرْ»، قَالَ: مَا أَنَا بِفَاعِلٍ. قَالَ يَكْرَهُ: بَلَى لَقَدْ أَجَزْتَهُ لَكَ. قَالَ أَبُو جَنْدَلٍ: أَيُّ مَعْتَرِ الْمُسْلِمِينَ، أَرُدُّ إِلَيَّ الْمُشْرِكِينَ وَقَدْ جِئْتُ مُسْلِمًا؟ أَلَا تَرَوْنَ مَا لَقِيتُ؟ وَكَانَ لَقَدْ عَذَّبَ حَدَابًا حَبِيدًا فِي اللَّهِ. فَقَالَ عُمَرُو بْنُ الْخَطَّابِ: قَاتَيْتُ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ. فَقُلْتُ: أَنْتَ نَبِيَّ اللَّهِ حَقًّا؟ قَالَ: «بَلَى». قُلْتُ: أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَعَدَوْنَا عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: «بَلَى». قُلْتُ: فَلِمَ نَقْطِى الدِّينَةَ فِي دِينِنَا إِذَا؟ قَالَ: «إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ وَلَسْتُ أَغْنِيهِ، وَهُوَ نَاصِرِي». قُلْتُ: أَوَلَيْسَ كُنْتَ تَخَذُنَا أَنَا مَتَابِي الْبَيْتَ فَتَطْرُقُ بِهِ؟ قَالَ: «بَلَى، فَأَخْبَرْتُكَ أَنَا نَاتِيهِ الْعَامَ». قَالَ: قُلْتُ: لَا. قَالَ: «لَئِنْكَ آتِيهِ وَمَطْرُوفٌ بِهِ». قَالَ قَاتَيْتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ: يَا أَبَا بَكْرٍ، أَلَيْسَ هَذَا نَبِيَّ اللَّهِ حَقًّا؟ قَالَ:

फ़र्माते थे कि हम बैतुल्लाह जाएँगे और उसका तवाफ़ करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ठीक है लेकिन क्या मैंने तुमसे ये कहा था कि इसी साल हम बैतुल्लाह पहुँच जाएँगे। इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा नहीं (आपने इस क़ैद के साथ नहीं फ़र्माया था) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर इसमें कोई शुब्हा नहीं कि तुम बैतुल्लाह तक ज़रूर पहुँचोगे और एक दिन उसका तवाफ़ करोगे। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं अबूबक्र (रज़ि.) के यहाँ गया और उनसे भी यही पूछा कि अबूबक्र! क्या ये हकीकत नहीं कि आँहज़रत (ﷺ) अल्लाह के नबी हैं? उन्होंने भी कहा कि क्यूँ नहीं। मैंने पूछा क्या हम हक़ पर नहीं हैं? और क्या हमारे दुश्मन बातिल पर नहीं हैं? उन्होंने कहा क्यूँ नहीं! मैंने कहा कि फिर हम अपने दीन को क्यों ज़लील करें? अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा जनाब! बिला शक़ व शुब्हा वो अल्लाह के रसूल हैं, वो अपने रब की हुक्म इदूली नहीं कर सकते और रब ही उनका मददगार है पस उनकी रस्सी मजबूती से पकड़ लो, अल्लाह गवाह है कि वो हक़ पर हैं। मैंने कहा क्या आँहज़रत (ﷺ) हमसे ये नहीं कहते थे कि अनक़रीब हम बैतुल्लाह पहुँचेंगे और उसका तवाफ़ करेंगे। उन्होंने कहा कि ये भी सहीह है लेकिन क्या आँहज़रत (ﷺ) ने आपसे ये फ़र्माया था कि इसी साल आप बैतुल्लाह पहुँच जाएँगे। मैंने कहा कि नहीं। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा फिर इसमें भी कोई शक़ नहीं कि आप एक न एक दिन बैतुल्लाह पहुँचेंगे और उसका तवाफ़ करेंगे। जुहरी ने बयान किया कि इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया बाद में मैंने अपनी इस इज्जलत पसन्दी की मकाफ़ात के लिये नेक आमाल किये। फिर जब सुलहनामा से आप फ़ारिग हो चुके तो सहाबा रिज्वानुल्लाह अज्मईन से फ़र्माया कि अब उठो और (जिन जानवरों को साथ लाए हो उनकी) कुर्बानी कर लो और सर भी मुँडा लो। उन्होंने बयान किया कि अल्लाह गवाह है सहाबा में से एक शख्स भी न उठा और तीन बार आप (ﷺ) ने ये जुम्ला फ़र्माया। जब कोई न उठा तो हज़रत उम्मे सलमा के ख़ैमे में गए और उनसे लोगों के तर्ज़े अमल का ज़िक्र किया। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! क्या आप ये पसन्द करेंगे कि बाहर तशरीफ़ ले जाएँ और किसी से कुछ न कहें बल्कि अपनी कुर्बानी का जानवर जिन्ह कर लें और अपने हज्जाम को बुलाएँ जो आपके बाल मुँड दे। चुनाँचे आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए। किसी से कुछ नहीं कहा और सब कुछ किया, अपने जानवर की कुर्बानी कर ली और

بَلَى. قُلْتُ: آَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَعَدُّونَا عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: بَلَى. قُلْتُ: فَلَمْ نُعْطِ الدِّينَةَ لِي دِينَنَا إِذَا؟ قَالَ: أَيُّهَا الرَّجُلُ، إِنَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَلَيْسَ يَفْصِي رَبَّهُ، وَهُوَ نَاصِرُهُ، فَاسْتَمْسِكْ بِغُرْزِهِ قَوْلاً إِنَّهُ عَلَى الْحَقِّ. قُلْتُ: أَلَيْسَ كَانَ يُحَدِّثُنَا أَنَا سَنَاقِي الْيَتِيمَ وَتَطُوفُ بِهِ؟ قَالَ: بَلَى، أَفَأَخْبَرَكَ أَنَّكَ تَأْتِيهِ الْعَامَّةُ؟ قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَإِنَّكَ آتِيهِ وَتَطُوفُ بِهِ. قَالَ الرَّطْبِيُّ قَالَ هُمَرُ: فَعَمِلْتُ لِذَلِكَ أَهْمَالًا. قَالَ: فَلَمَّا قَرَعَ مِنْ لُحْيَةِ الْكِنَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِأَصْحَابِهِ: «رُفُوعُوا فَانْحَرُوا ثُمَّ اخْلُقُوا». قَالَ: قَوْلُ اللَّهِ مَا قَامَ مِنْهُمْ رَجُلٌ حَتَّى كَانَ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَلَمَّا لَمْ يَلَمْ مِنْهُمْ أَحَدٌ دَخَلَ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَذَكَرَ لَهَا مَا لَقِيَ مِنَ النَّاسِ، فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَتَجِبُ ذَلِكَ؟ أَخْرَجَ، ثُمَّ لَا تُكَلِّمُ أَحَدًا مِنْهُمْ كَلِمَةً حَتَّى تَخْرُجَ بِذَلِكَ، وَتَذْهَبُ خَائِلَكَ فَيُخْلِفَكَ. فَخَرَجَ فَلَمْ يُكَلِّمْ أَحَدًا مِنْهُمْ حَتَّى لَعَلَ ذَلِكَ: لَحَرُ بُذْنَةٍ، وَدَعَا خَائِلَهُ فَخَلَفَهُ. فَلَمَّا رَأَوْا ذَلِكَ قَامُوا فَانْحَرُوا، وَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يَخْلُقُ بَعْضًا، حَتَّى كَادَ بَعْضُهُمْ يَقْتُلُ بَعْضًا عَمًا. ثُمَّ بَجَاءَهُ بِسُوءِ مُؤْمِنَاتٍ، فَأَنزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: «يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مِنْ أَجْرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ» - حَتَّى بَلَغَ - بِعَصِمِ الْكُوفَرِيِّ، فَطَلَّقَ هُمَرُ يَوْمَئِذٍ

अपने हज्जाम को बुलवाया जिसने आप (ﷺ) के बाल मूँडे। जब सहाबा ने देखा तो वो भी एक-दूसरे के बाल मूँडने लगे, ऐसा मा'लूम होता था कि रंज व गम में एक-दूसरे से लड़ पड़ेंगे। फिर आँहुज़ूर (ﷺ) के पास (मक्का से) चन्द मोमिन औरतें आईं तो अल्लाह तआला ने ये हुक्म दिया, ऐ लोगों! जो ईमान ला चुके हो, जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत करके आएँ तो उनका इम्तिहान ले लो। बिअसिमिल्ल क्वाफिर तक। उस दिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी दो बीवियों को तलाक़ दी जो अब तक मुसलमान न हुई थीं। उनमें से एक ने तो मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से निकाह कर लिया था और दूसरी से सप्रवान बिन उमय्या ने। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो कुरैश के एक फ़र्द अबू बस्रीर (रज़ि.) (मक्का से फ़रार होकर) हाज़िर हुए। वो मुसलमान हो चुके थे। कुरैश ने उन्हें वापस लेने के लिये दो आदमियों को भेजा और उन्होंने आकर कहा कि हमारे साथ आपका मुआहिदा हो चुका है। चुनौचे आँहुज़रत (ﷺ) ने अबू बस्रीर (रज़ि.) को वापस कर दिया। कुरैश के दोनों अफ़राद जब उन्हें वापस लेकर लौटे और जुल हुलैफ़ह पहुँचे तो खज़ूर खाने के लिये उतरे जो उनके साथ थी। अबू बस्रीर (रज़ि.) ने उनमें से एक से फ़र्माया क़सम अल्लाह की तुम्हारी तलवार बहुत अच्छी मा'लूम होती है, दूसरे साथी ने तलवार नियाम से निकाल दी। उस शख्स ने कहा हाँ अल्लाह की क़सम! निहायत इम्दा तलवार है, मैं इसका बारहा तजुर्बा कर चुका हूँ। अबू बस्रीर (रज़ि.) इस पर बोले कि ज़रा मुझे भी तो दिखाओ और इस तरह अपने क़ब्ज़े में कर लिया फिर उस शख्स ने तलवार के मालिक को ऐसी ज़रब लगाई कि वो वहीं ठण्डा हो गया, उसका दूसरा साथी भागकर मदीना आया और मस्जिद में दौड़ता हुआ दाख़िल हुआ। नबी करीम (ﷺ) ने जब उसे देखा तो फ़र्माया ये शख्स कुछ ख़ौफ़ज़दा मा'लूम होता है। जब वो आँहुज़रत (ﷺ) के क़रीब पहुँचा तो कहने लगा अल्लाह की क़सम! मेरा साथी मारा गया और मैं भी मारा जाऊँगा (अगर आप लोगों ने अबू बस्रीर को न रोका) इतने में अबू बस्रीर (रज़ि.) भी आ गये और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला ने आपकी जिम्मेदारी पूरी कर दी, आप (ﷺ) मुझे उनके हवाले कर

امْرَأَتَيْنِ كَانَتَا لَهُ فِي الشُّرْكِ، فَزَوَّجَ إِحْدَاهُمَا مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ وَالْأُخْرَى صَفْوَانَ بْنَ أُمَيَّةَ. ثُمَّ رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ وَهُوَ مُسْلِمٌ، فَارْتَلَوْا فِي طَلَبِهِ رَجُلَيْنِ فَقَالُوا: الْعَهْدُ الَّذِي جَعَلْتَ لَنَا، فَدَفَعَهُ إِلَى الرَّجُلَيْنِ، فَخَرَجَا بِهِ حَتَّى بَلَغَا ذَا الْحُلَيْفَةِ، فَزَلُّوا يَأْكُلُونَ مِنْ تَمَرٍ لَهُمْ، فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ لِأَخِي الرَّجُلَيْنِ: وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَى سَبْلَكَ هَذَا يَا فَلَانُ جَيْدًا، فَاسْتَلَّهُ الْآخَرُ فَقَالَ: أَجَلٌ وَاللَّهِ إِنَّهُ لَحَبْدٌ، لَقَدْ جَوْتُهُ بِهِ ثُمَّ جَوْتُهُ. فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ: أَرِنِي أَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَأَمْسَكْتَهُ مِنْهُ، فَضَرَبَتْهُ حَتَّى بَرَدَ، وَفَرَّ الْآخَرُ حَتَّى أَتَى الْمَدِينَةَ، فَدَعَلَ الْمَسْجِدَ يَغْدُو، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ رَأَاهُ: ((لَقَدْ رَأَى هَذَا دُعْرًا))، فَلَمَّا انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قِيلَ وَاللَّهِ صَاحِبِي وَإِنِّي لَمَقْتُولٌ. فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، قَدْ وَاللَّهِ أَوْفَى اللَّهِ بِمَعْلُوكٍ قَدْ رَدَدْتَنِي إِلَيْهِمْ، ثُمَّ أَنْجَانِي اللَّهُ مِنْهُمْ.

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَيْلٌ أُمِّهِمْ مِنْ قَرْبِ لَوْ كَانَ لَهُ أَحَدٌ))، فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ عَرَفَ أَنَّهُ سَيَرُدُّهُ إِلَيْهِمْ، فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى سَيْفَ الْبَحْرِ. قَالَ: وَتَنَقَّلْتُ مِنْهُمْ أَبُو جَنْدَلُ بْنُ سُهَيْلٍ فَلَدِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ، فَجَعَلَ لَا يَخْرُجُ مِنْ قُرَيْشٍ رَجُلٌ قَدْ أَسْلَمَ إِلَّا لَدِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ، حَتَّى اجْتَمَعَتْ مِنْهُمْ

चुके थे लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे उनसे नजात दिलाई।  
 ओहजरत (ﷺ) ने फर्माया (तेरी माँ की खराबी) अगर उसका कोई  
 एक भी मददगार होता तो फिर लड़ाई के शोले भड़क उठते। जब  
 उन्होंने आप (ﷺ) के ये अल्फाज़ सुने तो समझ गए कि आप फिर  
 कुफ़रार के हवाले कर देंगे इसलिये वहाँ से निकल गये और  
 समुन्दर के किनारे पर आ गए। रावी ने बयान किया कि अपने घर  
 वालों से (मक्का से) छूटकर अबू जन्दल बिन सुहेल (रज़ि.) भी  
 अबू बस्रीर (रज़ि.) से जा मिले और अब ये हाल था कि कुरैश का  
 जो शख्स भी इस्लाम लाता (बजाय मदीना आने के) अबू बस्रीर  
 (रज़ि.) के यहाँ समन्दर के साहिल पर चला जाता। इस तरह से  
 एक जमाअत बन गई और अल्लाह गवाह है ये लोग कुरैश के जिस  
 क्राफ़िले के बारे में भी सुन लेते कि वो शाम जा रहा है तो उसे रास्ते  
 ही में रोककर लूट लेते और क्राफ़िले वालों को क़त्ल कर देते। अब  
 कुरैश नबी करीम (ﷺ) के यहाँ अल्लाह और रहम का वास्ता देकर  
 दरखास्त भेजी कि आप किसी को भेजें (अबू बस्रीर (रज़ि.)  
 और उनके दूसरे साथियों के यहाँ कि वो कुरैश की ईजा से रुक  
 जाएँ) और उसके बाद जो शख्स भी आपके यहाँ जाएगा (मक्का  
 से) उसे अमन है। चुनौचे ओहजरत (ﷺ) ने उनके यहाँ अपना  
 आदमी भेजा और अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि,  
 और वो ज़ात परवरदिगार जिसने रोक दिया था तुम्हारे हाथों को  
 उनसे और उनके हाथों को तुमसे (या'नी जंग नहीं हो सकी थी)  
 मक्का की वादी में (हुदैबिया में) बाद में उसके कि तुमको ग़ालिब  
 कर दिया था उन पर यहाँ तक कि बात जाहिलियत के दौर बेजा  
 हिमायत तक पहुँच गई थी। उनकी हमिय्यते (जाहिलियत) ये थी  
 कि उन्होंने (मुआहिदे में भी) आपके लिये अल्लाह के नबी होने का  
 इक्कार नहीं किया इसी तरह उन्होंने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं  
 लिखने दिया और आपके बैतुल्लाह जाने से मानेअ बने। (राजेअ  
 : 1694, 1695)

عَصَانَةً، فَوَاللّٰهُ مَا يَسْمَعُونَ بِغَيْرِ غَرَجَةٍ  
 لِّقُرَيْشٍ إِلَى الشَّامِ إِلَّا اخْرَجُوا لَهَا.  
 فَعَقَلُوهُمْ وَأَخْلَوْا أَمْوَالَهُمْ. فَأَرْسَلْتُ  
 قُرَيْشًا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ تَسَاجِدَةً بِاللَّهِ وَالرَّحِمِ  
 لَمَّا أُرْسِلَ لَمَنْ آتَاهُ فَهُوَ آمِنٌ فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ  
 ﷺ إِلَيْهِمْ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ  
 الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ  
 بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ -  
 حَتَّىٰ تَلْعَلَّ بِ- الْحَمِيَّةِ﴾، حَمِيَّةَ الْحَمِيلَةِ  
 [النَّصَح: ٢٤] وَكَانَتْ حَمِيَّتُهُمْ أَنَّهُمْ لَمْ  
 يُقِرُّوا أَنَّهُ نَبِيُّ اللَّهِ، وَلَمْ يُقِرُّوا بِبِسْمِ اللَّهِ  
 الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، وَخَالُوا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ  
 النَّبِيِّ ﷺ. (راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥)

2733. अक़ील ने जुहरी से बयान किया, उनसे उर्वाने और उनसे  
 आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) औरतों का (जो मक्का से  
 मुसलमान होने की वजह से हिजरत करके मदीना आती थीं)  
 इम्तिहान लेते थे (जुहरी ने) बयान किया कि हम तक ये रिवायत  
 पहुँची है कि जब अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि

٢٧٣٣- وَقَالَ عَقِيلٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ:  
 ((قَالَ غُرُوزَةٌ فَأَخْبَرَنِي عَائِشَةُ أَنَّ رَسُولَ  
 اللَّهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُهُنَّ. وَتَلَقَّيْنَا أَنَّهُ لَمَّا  
 أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى أَنْ يَزُكُّوا إِلَى الْمُشْرِكِينَ

मुसलमान वो सब कुछ उन मुश्रिकों को वापस कर दें जो उन्होंने अपनी उन बीवियों पर खर्च किया हो जो (अब मुसलमान होकर) हिजरत कर आई हैं और मुसलमानों को हुक्म दिया कि काफिर औरतों को अपने निकाह में न रखें तो उमर (रज़ि.) ने अपनी दो बीवियों कुरैबा बन्ते अबी उमय्या और एक ज़वल ख़ुजाई की लड़की को तलाक़ दे दी। बाद में कुरैबा से मुआविया (रज़ि.) ने शादी कर ली और दूसरी बीवी से अबू जहम ने शादी कर ली थी लेकिन जब कुफ़र ने मुसलमानों के उन अख़राजात को अदा करने से इंकार किया जो उन्होंने अपनी (काफिरा) बीवियों पर किये थे तो अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, और तुम्हारी बीवियों में से कोई काफ़िरों के यहाँ चली गई तो वो मुआवज़ा तुम खुद ही ले लो, ये वो मुआवज़ा था जो मुसलमान कुफ़र में से उस शख्स को देते जिसकी बीवी हिजरत करके (मुसलमान होने के बाद किसी मुसलमान के निकाह में आ गई हो) पस अल्लाह ने अब ये हुक्म दिया कि जिस मुसलमान की बीवी मूर्तद होकर (कुफ़र के यहाँ) चली जाए उसके (महर व नफ़्का के) अख़राजात उन कुफ़र की औरतों के महर से अदा कर दिये जाएँ जो हिजरत करके आ गई हैं (और किसी मुसलमान ने उनसे निकाह कर लिया है) अगरचे हमारे पास उसका कोई पुबूत नहीं कि कोई मुहाजिरा भी ईमान के बाद मूर्तद हुई हों और हमें ये रिवायत भी मा'लूम हुई कि अबू बज़्ज़ीर बिन उसैद बज़्ज़ी (रज़ि.) जब नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मोमिन व मुहाजिर की हैशियत से मुआहिदा की मुद्दत के अन्दर ही हाज़िर हुए तो अख़नस बिन शुरैक ने नबी करीम (ﷺ) को एक तहरीर लिखी जिसमें उसने (अबू बज़्ज़ीर रज़ि. की वापसी का) मुतालबा आपसे किया था। फिर उन्होंने हदीष पूरी बयान की। (राजेअ: 2713)

مَا أَنْفَقُوا عَلَى مَنْ هَاجَرَ مِنْ أَزْوَاجِهِمْ، وَحَكَمَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ أَنْ لَا يُنْسِكُوا بَعْضَ الْكُوفَرِ، أَنْ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ طَلَّقَ امْرَأَتَيْنِ - قَرِيبَةً بِنْتِ أَبِي أُمَيَّةَ وَابْنَةَ جَزُولِ الْخَزَاعِيِّ فَزَوَّجَ قَرِيبَةً مُعَاوِيَةَ وَتَزَوَّجَ الْآخَرَى أَبُو جَهْمٍ. فَلَمَّا أَبَى الْكُفَّارُ أَنْ يُقْرُوا بِأَدَاءِ مَا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُونَ عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاتِبْتُمْ﴾ [الممتحنة: ١١] وَالنَّفَقَ مَا يُؤَدِّي الْمُسْلِمُونَ إِلَى مَنْ هَاجَرَتْ امْرَأَتُهُ مِنَ الْكُفَّارِ، فَأَمَرَ أَنْ يُعْطَى مَنْ ذَعَبَ لَهُ زَوْجٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ مَا أَنْفَقَ مِنْ صَدَاقٍ نِسَاءَ الْكُفَّارِ اللَّاتِي هَاجَرْنَ، وَمَا نَفَلَمُ أَحَدًا مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ ارْتَدَّتْ بَعْدَ إِيمَانِهَا. وَبَلَّغَنَا أَنَّ أَبَا بَصِيرٍ بْنُ أَسِيدٍ التَّقِيُّ قَدِيمٌ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ مُؤْمِنًا مُهَاجِرًا إِلَى الْمَدِينَةِ، فَكَتَبَ الْأَخْنَسُ بْنُ شُرَيْقٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَسْأَلُهُ أَبَا بَصِيرٍ فَلَذَكَرَ الْحَدِيثَ [راجع: ٢٧١٣]

**तशरीह:**

ये वाक़िया 6 हिजरी का है आँहज़रत (ﷺ) पीर के दिन ज़ीक़अदा के आख़िर में मदीना से उमरह का इरादा करके निकले। आप (ﷺ) के साथ सात सौ मुसलमान थे और सत्तर ऊँट कुर्बानी के, हर दस आदमी में एक ऊँट। एक रिवायत में आपके साथियों की ता'दाद चौदह सौ बतलाई है। आपने बसर बिन सुफ़यान को कुरैश की ख़बर लाने के लिये भेजा था, उसने वापस आकर बतलाया कि कुरैश के लोग आपके आने की ख़बर सुनकर ज़ीतुवा में आ गए हैं और ख़ालिद बिन वलीद उनके सवारों के साथ किराअुल ग़ामी नामी जगह में आ ठहरे हैं, ये जगह मक्का से दो मील पर है। इस रिवायत में वाक़िया हूदैबिया की तफ़्सीलात मौजूद हैं। रिवायत में क़स्वा ऊँटनी का ज़िक़र है, उस पर आँहज़रत (ﷺ) सवारी करते थे, ये तमाम ऊँटों में आगे

रहती, आप (ﷺ) ने उस पर सवार होकर हिजरत की थी। रिवायत में तिहामा का ज़िक्र है, ये मक्का और उसके अन्तर्गत की बस्तियों को कहते हैं, तहम गर्मी की शिद्दत को कहते हैं, ये इलाक़ा बेहद गरम है, इसीलिये तिहामा नाम से मौसम हुआ। कअब बिन लुवी कुरैश के जदे आला हैं। ऊजुल् मत्ताफील का लफ्ज़ जो रिवायत में आया है उसके दो मा'नी हैं एक बच्चेदार ऊँटनियाँ जो अभी बच्चा जनी हों और काफ़ी दूध दे रही हों। दूसरे इंसानों के बाल-बच्चे। दोनों सूरतों में मतलब यह है कि कुरैश के लोग चश्मों पर ज्यादा दिनों तक रहने के लिये, अपने ऊँट-ऊँटनियों और बाल-बच्चे लेकर आए हैं ताकि वो अर्सा तक आपसे जंग करते रहें। इर्वा बिन मसऊद (रज़ि.) जो कुरैश के नुमाइन्दे बनकर आप (ﷺ) से सुलह की बातचीत करने आए थे, ये छः साल बाद खुद मुसलमान होकर मुबल्लिग की हैषियत से अपनी क़ौम की तरफ़ गये थे। आज ये आँहज़रत (ﷺ) को समझने समझाने का ख़याल लेकर आए थे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जब उसका ये जुम्ला सुना कि ये मुतफ़र्रिक् क़बाइल के लोग जो मुसलमान होकर आपके आसपास जमा हैं, हार होने की सूरत में आपको छोड़कर भाग जाएँगे, उसके जवाब में गुस्सा होकर कहा था कि तू वापस जाकर अपने मा'बूद लात की शर्मगाह चूस ले, ये ख़याल हर्गिज़ न करना कि हम लोग आँहज़रत (ﷺ) को छोड़कर चले जाएँगे। मुगीरह बिन शुअबा जिसको इर्वा ने ग़दर करार दिया था। कहते हैं ये इर्वा के भतीजे थे, एक होने वाली जंग में जो मुगीरह की क़ौम के बारे में थी, इर्वा ने बीच-बचाव करा दिया था। उस एहसान को जतला रहे थे। बन्ू किनाना मे से आने वाले का नाम हलीस बिन अल्कमा हारपी था। वो हब्शियों का सरदार था, आपने उसके बारे में जो फ़र्माया था वो बिलकुल सहीह साबित हुआ कि उसने कुर्बानी के जानवर को देखकर, मुसलमानों से लम्बैक के नारे सुनकर बड़े अच्छे लफ्ज़ों में मुसलमानों का ज़िक्र ख़ैर किया और मुसलमानों के हक़ में सिफ़ारिश की। सुलह हुदैबिया का मतन लिखने वाले हज़रत अली कर्मल्लाह वजहुहु थे। जिन दफ़आत के तहत से सुलह नामालिखा गया उनका इख़ित्तसार ये है (1) दस साल तक आपस में सुलह रहेगी, दोनों तरफ़ के लोगों की आमद व रफ्त में किसी तरह की रोक-टोक न होगी (2) जो कबीले चाहें कुरैश से मिल जाएँ और जो कबीले चाहें वो मुसलमानों के साथ शामिल हो जाएँ, हलीफ़ कबीलों के हुक्क भी यही होंगे (3) अगले साल मुसलमानों को तवाफ़े का'बा की इजाज़त होगी, उस वक़्त हथियार उनके जिस्म पर न होंगे जो सफ़र में साथ हों (4) अगर कुरैश में से कोई शख़्स नबी (ﷺ) के पास मुसलमान होकर चला जाए तो कुरैश के तलब करने पर वो शख़्स वापस करना होगा लेकिन अगर कोई शख़्स इस्लाम छोड़कर कुरैश से जा मिले तो कुरैश उसे वापस नहीं करेंगे। आखिरी शर्त सुनकर सिवाय हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के सारे मुसलमान घबरा गए। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) इस बारे में ज़्यादा पुरजोश थे लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने हंसकर इस शर्त को भी मंज़ूर कर लिया।

मुआहिदे की आखिरी शर्त की निस्बत कुरैश का ख़याल था कि इससे डरकर आइन्दा कोई शख़्स मुसलमान न होगा। लेकिन ये शर्त अभी लिखी भी न गई थी कि उस मजलिस में अबू जन्दल (रज़ि.) पहुँच गए जिनको मुसलमान होने की वजह से कुरैश ने कैद कर रखा था और अब वो मौक़ा पाकर जंजीरों समेत ही भागकर इस्लामी लश्कर में पहुँच गए थे। कुरैश के नुमाइन्दे सुहैल ने कहा कि इसे हमारे हवाले किया जाए आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहदनामा के मुकम्मल हो जाने पर इसके ख़िलाफ़ न होगा अभी चूँकि ये नामुकम्मल है लिहाज़ा अबू जन्दल को वापस नहीं किया जा सकता, इस पर सुहैल ने कहा कि तब हम सुलह नहीं करते। आखिर अबू जन्दल (रज़ि.) वापस कर दिये गये, उन हालात को देखकर, मुसलमान बहुत तैश में आ गये और उमर (रज़ि.) तो इस क़दर बिगड़े कि वो उस जुअत पर उम्र भर पछताते रहे मगर उस अहम मौक़े पर हज़रत सय्यिदना अबूबक्र (रज़ि.) की उलुल अज़्मी क़ाबिले सद तहसीन है कि आपने उन हालात का कोई अफ़र नहीं लिया और आँहज़रत (ﷺ) के हर क़दम की आप (रज़ि.) ता'रीफ़ ही करते रहे। रज़ियल्लाहु अन्हुम

### बाब 16 : क़र्ज़ में शर्त लगाना

और अब्दुल्लाह बिन उमर और अत्ता बिन अबी रिबाह (रज़ि.) ने कहा कि अगर क़र्ज़ (की अदायगी) के लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर की जाए तो ये जाइज़ है।

### ١٦ - بَابُ الشَّرْطِ فِي الْقَرْضِ

وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ وَعَطَاءُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا:

إِذَا أَجَلُهُ فِي الْقَرْضِ جَازٌ.



2734. और लैष ने कहा कि मुझसे जा'फर बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुर्मज ने बयान किया, उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख्स का जिक्र किया जिन्होंने बनी इस्राईल के किसी दूसरे शख्स से एक हजार अशरफी क़र्ज़ मांगा और उसने एक मुकर्रर मुदत तक के लिये दे दिया। (राजेअ: 1498)

٢٧٣٤- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمَزٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلًا سَأَلَ بَعْضَ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنْ يُسَلِّفَهُ أَلْفَ دِينَارٍ لَدَفَعَهَا إِلَيْهِ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى)). [راجع: ١٤٩٨]

मा'लूम हुआ कि क़र्ज़ देने वाला ऐसी जाइज़ शर्तें लगा सकता है और अदा करने वाले पर लाज़िम होगा कि उन ही शर्तों के तहत वक़्त मुकर्रर पर वो क़र्ज़ अदा कर दे। बनी इस्राईल के उन दो शख्सों का जिक्र पीछे तफ़्सील से गुजर चुका है।

**बाब 17 : मुकातब का बयान और जो शर्तें उसकी किताबुल्लाह के मुखालिफ़ हैं, उनका जाइज़ न होना**

١٧- بَابُ الْمَكَاتِبِ، وَمَا لَا يَجِلُّ مِنَ الشُّرُوطِ الَّتِي تُخَالِفُ كِتَابَ اللَّهِ

मुकातब वो लौण्डी या गुलाम जो अपनी आज़ादी के लिये मुकर्रर शर्तों के साथ अपने आक्रा से तहरीरी मुआहिदा कर ले।

और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने मुकातब के बारे में कहा कि उनकी (या'नी मुकातब और उसके मालिक की) जो शर्तें हों वो मोतबर होंगी और इब्ने उमर या उमर (रज़ि.) ने (रावी को शक है) कहा कि हर वो शर्त जो किताबुल्लाह के मुखालिफ़ हो वो बातिल है ख़वाह ऐसी सौ शर्तें भी लगाई जाएँ। अबू अब्दुल्लाह हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि बयान किया जाता है कि उमर और इब्ने उमर (रज़ि.) दोनों से यही क़ौल मरवी है।

وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فِي الْمَكَاتِبِ: شُرُوطُهُمْ بَيْنَهُمْ. وَقَالَ ابْنُ عُمر - أَوْ عُمرُ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: كُلُّ شَرْطٍ خَالَفَ كِتَابَ اللَّهِ فَهُوَ بَاطِلٌ، وَإِنْ اشْتَرَطَ مِائَةَ شَرْطٍ. وَقَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: يَقَالُ عَنْ كَلِمَتِهَا، عَنْ عُمر وَابْنِ عُمر.

2735. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, यह्या बिन सईद अंसारी (रज़ि.) से, उनसे अमर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरा (रज़ि.) अपनी मुकातबत के सिलसिले में उनसे मदद मांगने आई तो उन्होंने कहा कि अगर तुम चाहो तुम्हारे मालिकों को (पूरी क़ीमत) दे दूँ और तुम्हारी विलाअ मेरे साथ क़ायम होगी। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो आपसे मैंने इसका जिक्र किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें तू ख़रीद ले और आज़ाद कर दे। विलाअ तो बहरहाल उसी के साथ क़ायम होगी जो आज़ाद कर दे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया उन लोगों को क्या हो गया है जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनका कोई पता किताबुल्लाह में नहीं है, जिसने भी कोई ऐसी

٢٧٣٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عُمرَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَتَتْهَا بَرِيرَةُ تَسْأَلُهَا فِي كِتَابَتِهَا فَقَالَ: إِنْ شِئْتَ أُعْطِيتِ أَهْلَكَ وَتَكُونُ الْوَلَاءَ لِي. فَلَمَّا جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ذَكَرَتْهُ ذَلِكَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْعَمِهَا فَأَغْنِيَهَا، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَتَقَرَّ)). ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ مَنْ اشْتَرَطَ شَرْطًا

शर्त लगाई जिसका पता किताबुल्लाह में नहीं है तो ख्वाह ऐसी सौ शर्तें लगा ले उनसे कुछ फ़ायदा नहीं उठाएगा। (राजेअ : 456)

لَيْسَ لِي بِحَبَابِ اللَّهِ لَلَّيْسَ لَهُ وَإِنْ اشْرَطَ  
مِائَةَ شَرْطٍ. (راجع: ٤٥٦)

हज़रत बरीरा के आक्रा आज़ादी के बाद उनकी विलाअ को अपने साथ रखना चाहते थे और इसी शर्त पर वो बरीरा (रज़ि.) को हज़रत आइशा (रज़ि.) की पेशकश के मुताबिक आज़ाद करना चाहते थे। उनकी ये शर्त बातिल थी क्योंकि ऐसे लौण्डी गुलामों की विलाअ उनके साथ क़ायम होती है जो अपना रुपया खर्च करके उनके आज़ाद कराने वाले हैं। ये भी मा'लूम हुआ कि कोई शख्स कोई ग़लत शर्त लगाए तो लगाता रहे शरअन वो शर्त बातिल होगी और क़ानून उसे तस्लीम नहीं करेगा।

### बाब 18 : इकरार में शर्त लगाना या इस्तिफ़ा करना जाइज़ है और उन शर्तों का बयान

जो मुआमलात में इमूमन लोगों में राइज हैं और अगर कोई यूँ कहे मुझ पर फ़लों के सौ दिरहम निकलते हैं मगर एक या दो।

١٨- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْإِشْرَاطِ  
وَالْتَنْيَا فِي الْإِفْرَاقِ،  
وَالشُّرُوطِ الَّتِي يَتَعَارَفُهَا النَّاسُ بَيْنَهُمْ وَإِذَا  
قَالَ مِائَةً إِلَّا وَاحِدَةً أَوْ يَتَيْنِ وَقَالَ ائْتِنِ

तो नित्रावे या अठान्वे दिरहम देने होंगे या'नी अगर यूँ कहा सौ निकलते हैं मगर एक तो नित्रानवे देने होंगे और अगर दो का इस्तिफ़ा किया तो अठानवे देने होंगे और क़लील का क़बीर से इस्तिफ़ा बिल इतिफ़ाक़ दुस्त है। इख़्तिलाफ़ इस इस्तिफ़ा में है जो क़बीर का क़लील हो। जुम्हूर ने इसका भी जाइज़ रखा है।

और इब्ने औन ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया कि किसी ने ऊँट वाले से कहा तू अपने ऊँट अंदर लाकर बाँध दे अगर मैं तुम्हारे साथ फ़लों दिन तक न जा सका तो तुम सौ दिरहम मुझसे वसूल कर लेना। फिर वे उस दिन तक न जा सका तो क़ाज़ी शुरैह (रह.) ने कहा कि जिसने अपनी खुशी से अपने ऊपर कोई शर्त लगाई और उस पर कोई जबर भी नहीं किया गया था तो वो शर्त उसको पूरी करनी होगी। अय्यूब ने इब्ने सीरीन (रह.) से नक़ल किया कि किसी शख्स ने अनाज बेचा और ख़रीददार ने कहा कि अगर तुम्हारे पास बुध के दिन तक न आ सका तो मेरे और तुम्हारे बीच बेअ बाक़ी नहीं रहेगी। फिर वो उस दिन तक नहीं आया तो शुरैह (रह.) ने ख़रीददार से कहा कि तूने वा'दा ख़िलाफ़ी की है, आपने फ़ैसला उसके ख़िलाफ़ किया।

عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ رَجُلٌ لِكُرَيْبٍ:  
ادْخِلْ رِكَابَكَ، فَإِنْ لَمْ أَرْحَلْ مَعَكَ يَوْمَ  
كَذَا وَكَذَا فَفَلَكَ مِائَةُ دِرْهَمٍ، فَلَمْ يَخْرُجْ،  
فَقَالَ شَرِيحٌ: مَنْ شَرَطَ عَلَى نَفْسِهِ طَعَامًا  
غَيْرَ مُكْرَهٍ فَهُوَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَيُّوبُ عَنِ ابْنِ  
سِيرِينَ: إِنْ رَجُلًا بَاعَ طَعَامًا وَقَالَ: إِنْ لَمْ  
أَبْكِ الْأَرْبَعَاءَ فَلَيْسَ بِنَفْسِي وَتَيْتِكَ بَيْعٌ، فَلَمْ  
يَجْعَلْ. فَقَالَ شَرِيحٌ لِلْمُشْتَرِي: أَنْتَ  
أَخْلَفْتَ، فَنَقَضَى عَلَيْهِ.

2736. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला के नित्रानवे नाम हैं या'नी एक कम सौ। जो शख्स उन सबको महफूज़ रखेगा वो जन्नत में दाख़िल होगा।

٢٧٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ  
حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
قَالَ: ((إِنْ فُتِنَ سِتْنَةٌ وَسِتْنِينَ اسْمًا، مِائَةً

(दीगर मक़ाम : 6410, 7392)

إِلَّا وَاحِدًا، مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ).

[طرقه : ١ : ٦٤١٠، ٧٣٩٢]

इस हदीष में आँहज़रत (ﷺ) ने सौ में से एक इस्तिस्ना किया। मा'लूम हुआ क़रीर में से क़लील का इस्तिस्ना दुस्त है। अल्लाह पाक के ये निज़ानवे नाम अस्माउल हुस्ना कहलाते हैं। उनमें सिर्फ़ एक नाम या'नी अल्लाह इस्मे ज़ाती है और बाक़ी सिफ़ाती हैं। उनमें से अक़षर कुआन मजीद में भी मज़कूर हुए हैं, बाक़ी अह्दादीष में। सबको एकसमान शुमार किया गया है। हमने अपनी मशहूर किताबे मुक़द्दस मज्मूआ के आख़िर में अस्माउल हुस्ना को तर्जुमे के साथ ज़िक्र कर दिया है।

### बाब 19 : वक्फ़ में शर्तें लगाने का बयान

2737. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को ख़ैबर में एक टुकड़ा ज़मीन मिली तो आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मश्वरे के लिये हाज़िर हुए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मुझे ख़ैबर में एक ज़मीन का टुकड़ा मिला है उससे बेहतर माल मुझे अब तक कभी नहीं मिला था, आप उसके बारे में क्या हुक्म देते हैं? आपने फ़र्माया कि अगर जी चाहे तो अज़ल ज़मीन अपनी मिल्कियत में बाक़ी रख और पैदावार सदक़ा कर दे। इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इमर (रज़ि.) ने उसको इस शर्त पर सदक़ा कर दिया कि न उसे बेचा जाएगा और न उसका हिबा किया जाएगा और न उसमें विरासत चलेगी। उसे आपने मुहताजों के लिये, रिश्तेदारों के लिये और गुलामों को आज़ाद कराने के लिये, अल्लाह के दीन की तब्लीग़ और इशाअत के लिये और मेहमानों के लिये सदक़ा (वक्फ़) कर दिया और ये कि उसका मुतवल्ली अगर दस्तूर के मुताबिक़ उसमें से अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ वसूल कर ले या किसी मुहताज को दे तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं। इब्ने औन ने बयान किया कि जब मैंने इस हदीष का ज़िक्र इब्ने सीरीन से किया तो उन्होंने फ़र्माया कि (मुतवल्ली) उसमें से माल जमा करने का इरादा न रखता हो। (राजेअ : 2313)

### ١٩- بَابُ الشَّرْطِ فِي الْوَقْفِ

٢٧٣٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثْمَانَ قَالَ: أَخْبَأَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَصَابَ أَرْضًا بِخَيْبَرَ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ يَسْتَأْمِرُهُ فِيهَا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي أَصَبْتُ أَرْضًا بِخَيْبَرَ لَمْ أَصِبْ مَالًا قَطُّ أَتَقَرَّنَ عِنْدِي مِنْهُ، لِمَا تَأْمُرُ بِهِ؟ قَالَ: ((إِنْ حِثَّتْ حَبَّتُ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا)). قَالَ: لَتَصَدَّقَ بِهَا عُمَرُ أَنَّهُ لَا يُبَاغُ وَلَا يُوقَبُ وَلَا يُؤْرَثُ. وَتَصَدَّقَ بِهَا فِي الْفُقَرَاءِ وَلِي السَّبِيلِ وَلِي الرُّكَّابِ وَلِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ وَالضَّيْفِ، وَلَا جُنَاحَ عَلَيَّ مَنْ وَثَّقَهَا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ، وَيُطْعِمَ غَيْرَ مَمْنُولٍ)). قَالَ: فَحَدَّثْتُ بِهِ ابْنَ سِيرِينَ فَقَالَ: ((غَيْرُ مُطَائِلٍ مَالًا)).

[راجع: ٢٣١٣]

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है। वाकिफ़ अपनी वक्फ़ को जिस जिस तौर चाहे मशरूत कर सकता है, जैसा कि यहाँ हज़रत इमर (रज़ि.) की शर्तों की तफ़सीलात मौजूद हैं, इस हदीष से ये भी ज़ाहिर हुआ कि वाकिफ़ अपनी तच्चीज़कर्दा शर्तों के तहत अपने वक्फ़ पर अपनी ज़ाती मिल्कियत भी बाक़ी रख सकता है और ये भी प्राबित हुआ कि वक्फ़ का मुतवल्ली नेक निय्यती के साथ दस्तूर के मुताबिक़ उसमें से अपना खर्च भी वसूल कर सकता है। इस वक्फ़ नामा में मसरारिफ़ की एक मद फ़ी सबीलिल्लाह भी मज़कूर है जिससे मुजाहिदीन की इमदाद मुराद है और वो सारे काम जिनसे अल्लाह के दीन की तब्लीग़ होती हो

जैसे इस्लामी मदरिस और तब्लीगी इदारे वगैरह वगैरह।

वक्फ की ता'रीफ में इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व हुब फिल्लुगति अल्हब्सु युकालु वक्फ्तु कजा बिदूनि अलिफ अलल्लुगति लफ़्सीहि अय हबस्तुहु व फिशशरी अति हब्सु लियिकि फी सबिलिल्लाहि तआला लिलफुकराइ व अब्नाइस्सबीलि युसरफु अलैहिम मनाफिडहु व यब्का अस्तुहु अला मिल्लिल्लाकिफि व अल्फ़ाज़ुहु वक्फ्तु व हबस्तु व सबल्लु व अबतु हाज़िही मराइहु अल्फ़ाज़िही व अम्मा किनायतन तसदक्कतु व खतुलिफ फी हरम्तु फ़कील सरीहुन वक़ील गैर सरीहिन. (नैलुल औतार) या'नी वक्फ का लम्बी मा'नी रोकना है, कहा जाता है कि मैंने इस तरह इसको वक्फ कर दिया या'नी रोक दिया, ठहरा दिया और शरीअत में अपनी किसी मिल्लियत को अल्लाह के रास्ते में रोक देना, वक्फ कर देना कि उसके मुनाफ़े को फुकरा और मुसाफ़िरों पर खर्च किया जाए और उसकी असल वाक्फ़ की मिल्लियत में बाकी रहे वक्फ की सेहत के लिये अल्फ़ाज़ में वक्फ किया, मैंने उसे रोक दिया वगैरह वगैरह सरीह अल्फ़ाज़ हैं। बतौर किनाया ये भी दुरुस्त है कि मैंने इसे सदका कर दिया। लफ़ज़ हर्मत मैंने इसके मुनाफ़े का इस्तेमाल अपने लिये हराम करार दे लिया, इसको कुछ ने वक्फ के लिये लफ़ज़ सरीह करार दिया और कुछ ने गैर सरीह करार दिया है।

हज़रत उमर बिन ख़ताब (रज़ि.) की हदीष के ज़ेल इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व फिलहदीषि फवाइदु मिन्हा सुबूतु सिह्हति अस्तिल्वक्फि क़ालन्नववी व हाज़ा मज़हबुना यअनी अइम्मतुशश़ाफ़िइय्यति व मज़हबुलजमाहीर व यदुल्लु अलैहि अयज़न इज्माइलमुस्लिमीन अला सिह्हति वक्फिलमसाजिदि वस्सिक्कायाति व मिन्हा फ़ज़ीलतुलइन्फ़ाकि मिम्मा युहिब्बु व मिन्हा ज़िक्क फ़ज़ीलतिन ज़ाहिरतिन लिउमर अन्हु व मिन्हा मुशावरतु अहलिलफ़ज़िल वस्सलाहि फिलउमूरि व तरीक्लिल्खैरि व मिन्हा फ़ज़ीलतु सिलतिलअहांमि वल्वक्फि अलैहिम (वल्लाहु आलम नैल)

या'नी इस हदीष में बहुत से फ़वाइद हैं जिनमें से असल वक्फ की सेहत का सुबूत भी है। बक़ौल अल्लामा नववी अइम्म-ए-श़ाफ़िइया और जमाहीर का यही मज़हब है और उस पर आम मुसलमानों का इज्माअ भी दलील है जो मसाजिद और कुँए वगैरह के वक्फ की सेहत पर हो चुका है और इस हदीष से खर्च करने की भी फ़ज़ीलत प्राबित हुई जो अपने महबूब तरीन माल में से किया जाता है और उससे हज़रत उमर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी प्राबित होती है और उससे अहले इल्म व फ़ज़ल से सलाह मशविरा करना भी प्राबित हुआ और सिलारहमी की फ़ज़ीलत और रिस्ते नाते वालों के लिये वक्फ करने की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई।

लफ़ज़ वक्फ मुख्तलिफ अह्वादीष में मुख्तलिफ मा'नी पर बोला गया है जिसकी तफ़सील किताब लुगातुल हदीष बज़ेल लफ़ज़ वाव का मुतालआ किया जाए।

## 55. किताबुल वसाया

# किताब वसियतों के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : इस बारे में कि वसियतें ज़रूरी हैं

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी की वसियत लिखी

۱- بَابُ الْوَصَايَا وَقَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ

((وَصِيَّةُ الرَّجُلِ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ))

हुई होनी चाहिये और अल्लाह तआला ने सूरह बकरः में फ़र्माया कि, तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुममें से किसी की मौत आती मा'लूम हो और कुछ माल भी छोड़ रहा हो तो वो वालिदैन और अज़ीज़ों के हक्क में दस्तूर के मुताबिक वसियत कर जाए। ये ज़रूरी है परहेज़गारों पर। फिर जो कोई उसे उसके सुनने के बाद बदल डाले सो उसका गुनाह उसी पर होगा जो उसे बदलेगा, बेशक अल्लाह बड़ा सुननेवाला और बड़ा जानने वाला है। अल्बत्ता जिस किसी को वसियत करने वाले के बारे में किसी की तरफ़दारी या हक़तल्फ़ी का इल्म हो जाए फिर वो मवज़्ज़ालहू और वारिषों में (वसियत में कुछ कमी करके) मेल करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शिश करने वाला निहायत रहम करने वाला है (आयत में) जनफ़न के मा'नी एक तरफ़ झुक जाने के हैं, मुतजानिफ़ के मा'नी झुकने वाले के हैं।

वसियत कहते हैं मरते वक़्त आदमी का कुछ कह जाना कि मेरे बाद ऐसा ऐसा करना, फ़लों को ये देना फ़लों को ये देना। वसियत करने वाले को मूसी और जिसके लिये वसियत की हो उसको मूसा लहू कहते हैं। आयते मीराष नाज़िल होने के बाद सिर्फ़ तिहाई माल में वसियत करना जाइज़ करार दिया गया, बाक़ी माल हिस्सेदारों में तक्सीम होगा।

2738. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से, वो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी मुसलमान के लिये जिनके पास वसियत के क़ाबिल कोई भी माल हो दुरुस्त नहीं कि दो रात भी वसियत को लिखकर अपने पास महफूज़ रखे बग़ैर गुज़ारे। इमाम मालिक के साथ इस रिवायत की मुताबअत मुहम्मद बिन मुस्लिम ने अम्र बिन दीनार से की है, उन्होंने इब्ने इमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: حُكِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْأَوْلِيَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ. لَمَنْ يَذَلِّهِ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ لِأَنَّمَا إِلَهُهُ عَلَى الَّذِينَ يُدْأُونَهُ، إِنْ اللَّهُ سَمِعَ عَلَيْهِمْ. لَمَنْ عَافَ مِنْ مَوْصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ، إِنْ اللَّهُ غَفَرُوا رَحِمَهُمْ جَنَفًا: مَيْلًا. مُتَجَانِفٌ: مَائِلٌ.

۲۷۳۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَهْ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ يَبْتَئُ لِنَفْسِهِ إِلَّا وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ)). تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ.

**तशरीह:** आयते शरीफ़ा कुतिब अलैकु इज़ा हज़र अहदुकु मुल्मातु व इन तरकनिल्वसियतु (अल बकरः 180) आयते मीराष से पहले नाज़िल हुई। उस वक़्त वसियत करना फ़र्ज़ था। जब मीराष की आयत उतरी तो वसियत की फ़र्ज़ियत जाती रही और वारिष के लिये वसियत करना मना हो गया जैसा कि अम्र बिन ख़ारिजा की रिवायत में है इब्नल्लाह आता कुल्ल जीहत्किन्न हक्कहु फ़ला वसियत लिवारिषिन (अख़जहू अह्दाबुस्सुन्ति) और ग़ैर वारिष के लिये वसियत जाइज़ रह गई। आयते शरीफ़ा फमन बदलहू बअद मा समिअहू (अल बकरः 181) का मतलब ये है कि वसियत बदल देना गुनाह है मगर जिस सूरत में मूसी ने ख़िलाफ़े शरीअत वसियत की हो और बुलुष से जाइद किसी को दिलाकर वारिषों की हक्क तल्फ़ी की हो तो ऐसी ग़लत वसियत को बदल डालना मना नहीं है। ज़रूरी है कि मूसा लहू और दीगर वारिषों में सुलह सफ़ाई करा दे और मुताबिके शरीअत फ़ैसला करके वसियत की इस्लाह कर दे। वसियतुर्जुलि मक्तुबुन इन्दहू

ये मजूमून खुद बाब की हदीष में आगे आ रहा है मगर उसमें मर्तुन का लफ्ज़ है और लफ्ज़ रजुल के साथ ये हदीष नहीं मिली। शायद हजरत इमाम बुखारी (रह.) ने उसे बिल मा'नी रिवायत किया हो क्योंकि मर्तुन रजुल ही को कहते हैं और रजुल की कैद ए'तिबारे अक़षर के है वरना औरत और मर्द दोनों की वसियत सहीह होने में कोई फ़र्क नहीं, इसी तरह नाबालिग की वसियत भी सहीह है, जब वो अक़ल और होश रखता हो। हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और इमाम मालिक का यही कौल है लेकिन हन्फिया और शाफ़िया ने इसको जाइज़ कहाँ रखा है। इमाम अहमद ने ऐसे लड़के की उम्र का अंदाज़ा सात बरस या दस बरस किया है। वसियत का हर वक़्त लिखा हुआ होना इसलिये ज़रूरी है कि मौत का कोई वक़्त मुक़रर नहीं है न मा'लूम कब अल्लाह पाक का हुक्म हो और इंसान का आखिरी सफ़र शुरू हो जाए, लिहाज़ा लाज़िम है कि उस सफ़र के लिये हर वक़्त तैयार रहे और अपने बाद के लिये ज़रूरी मुआमलात के वास्ते उसे जो बेहतर मा'लूम हो वो लिखा हुआ अपने पास तैयार रखे। हदीष कुन फ़िद दुनिया कअन्नक ग़रीब का भी यही मतलब है कि दुनिया में हर वक़्त मुसाफ़िराना ज़िन्दगी गुज़ारना न मा'लूम कब कूच का वक़्त आ जाए।

2739. हमसे इब्राहीम बिन हारिष ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे यह्या इब्ने अबी बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुबैर बिन मुआविया जअफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक अमर बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के निस्बती भाई अमर बिन हारिष (रज़ि.) ने जो जुवैरिया बन्ते हारिष (रज़ि.) (उम्मुल मोमिनीन) के भाई हैं, बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी वफ़ात के बाद सिवाए अपने सफ़ेद ख़च्चर, अपने हथियार और अपनी ज़मीन के जिसे आप (ﷺ) ने वक़फ़ कर गए थे, न कोई दिरहम छोड़ा था न दीनार न गुलाम न बान्दी और न कोई चीज़। (दीगर मक़ाम : 2873, 2912, 3098)

या'नी अपनी सेहत की हालत में आपने ये ज़मीन वक़फ़ फ़र्मा दी थी फिर वफ़ात के वक़्त भी उसकी ताकीद फ़र्मा दी। कुछ ने कहा व जअलहा सदक़तन की ज़मीन तीनों की तरफ़ फिरती है या'नी ख़च्चर और हथियार और ज़मीन सबको वक़फ़ कर दिया था।

इस हदीष की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से यूँ है कि वक़फ़ का अफ़र मरने के बाद भी रहता है तो वो वसियत के हुक्म में हुआ।

2740. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, कहा हमसे तलहा बिन मुसर्रफ़ ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सवाल किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कोई वसियत की थी? उन्होंने कहा कि नहीं। उस पर मैंने पूछा कि फिर वसियत किस तरह लोगों पर फ़र्ज़ हुई? या (रावी ने इस तरह बयान किया) किलोगों को वसियत का हुक्म क्या हुआ? उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने लोगों को किताबुल्लाह पर अमल करने

٢٧٣٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي مُكَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ نَفَاوَةَ الْحَقْفِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ حَتَّى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَمَرِي جُوَيْرِيَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ قَالَتْ: ((مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عِنْدَ مَوْتِهِ دِرْهَمًا وَلَا دِينَارًا وَلَا عَبْدًا وَلَا أَمَةً وَلَا شَيْئًا، إِلَّا بَغْلَةً أَلْبَيْضَاءَ وَسِلَاحًا وَأَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً)).

[اطرافه فی : ٢٨٧٣ ، ٢٩١٢ ، ٣٠٩٨]

٢٧٤٠- حَدَّثَنَا خَلَادُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مَالِكٌ حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ مُصَرِّفٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: هَلْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَوْصَى؟ فَقَالَ: لَا. فَقُلْتُ: كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوْ أَمُرُوا بِالْوَصِيَّةِ؟ قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللَّهِ)).

की वसियत की थी। (और किताबुल्लाह में वसियत करने का हुक्म मौजूद है) (दीगर मक़ाम : 4460, 5022)

[طرفه ١: ٤٤٦٠, ٥٠٢٢]

**तशरीह :** बाब का मतलब इससे निकला कि लोगों पर वसियत कैसे फ़र्ज़ हुई? अल्लाह की किताब पर चलने का हुक्म एक जामेअ वसियत है जो शरीअत के सारे अहक़ाम को शामिल है, जब तक मुसलमान उस वसियत पे कायम रहे और कुआन व हदीष पर चलते रहे उनकी दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक्की होती गई और जबसे कुआन व हदीष को पसे पुस्त डाल दिया और हर एक ने अपनी राय और क़यास को असल बनाया, फूट पड़ गई, अलग अलग मज़ाहिब बन गए और हर जगह मुसलमान मुतफ़रि़क हो गये। सहोह मुस्लिम में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने वसियत फ़र्माई थी कि जज़ीर-ए-अरब को यहूदियों से पाक कर देना, जिम्मी काफ़िरों की हर मुम्किन खातिर मदारात करना जैसे कि मैं करता हूँ। हज़रत अली (रज़ि.) के बारे में वसी होने की कोई सहोह हदीष किसी भी मुस्तनद किताब में मन्कूल नहीं है।

2741. हमसे अमर बिन ज़रारह ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन अलिया ने ख़बर दी अब्दुल्लाह बिन औन से, उन्हें इब्राहीम नख़्ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) के यहाँ कुछ लोगों ने ज़िक्क किया कि अली करमल्लाह वजुहू (नबी अकरम के) वसी थे तो आपने कहा कि कब उन्हें वसी बनाया। मैं तो आपके विसाल के वक़्त सरे मुबारक अपने सीने पर या उन्होंने (बजाय सीने के) कहा कि अपनी गोद में रखे हुए थी फिर आपने (पानी का) त़श्त मंगवाया था कि इतने में (सरे मुबारक) मेरी गोद में झुक गया और मैं समझ न सकी कि आपकी वफ़ात हो चुकी है तो आपने अली को वसी कब बनाया? (दीगर मक़ाम : 4459)

हज़रत आइशा (रज़ि.) का मतलब ये है कि बीमारी से लेकर वफ़ात तक तो आँहज़रत (ﷺ) मेरे पास ही रहे, मेरी ही गोद में इंतिकाल फ़र्माया, अगर हज़रत अली (रज़ि.) को वसी बनाते या 'नी अपना खलीफ़ा मुक़रर करते जैसे शिआ गुमान करते तो मुझको तो ज़रूर ख़बर होती पस शियों का ये दा'वा बिलकुल बिला दलील है।

**बाब 2 : अपने वारिषों को मालदार छोड़ना उससे बेहतर है कि वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें**

2742. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया सअद बिन इब्राहीम से, उनसे आमिर बिन सअद ने और उनसे सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (हज्जतुल बिदाअ में) मेरी अयादत को तशरीफ़ लाए, मैं उस वक़्त मक्का में था। हज़ूरे अकरम (ﷺ) उस सरज़मीन पर मौत को पसन्द नहीं करते थे जहाँ से कोई हिजरत कर चुका हो। आँहज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह इब्ने अफ़राअ (सअद बिन ख़ौला रज़ि) पर रहम करे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह

٢٧٤١- حَدَّثَنَا عَنْ أَبِي زُرَّارَةَ أَخْبَرَنَا  
جَبْرِائِيلُ بْنُ أَبِي حَوْنٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ  
الْأَسْوَدِ قَالَ : (ذَكَرُوا عِنْدَ عَائِشَةَ أَنَّ  
عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ وَصِيًّا،  
فَقَالَتْ: مَنَى أَوْصَى إِلَيْهِ وَقَدْ كُنْتُ  
مُسَيِّدَةً إِلَى صَدْرِي - أَوْ قَالَتْ: خَجَرِي  
- لَدَعَا بِالطَّلَسِ، فَلَقِيَ النَّحْتِ لِي  
خَجَرِي فَمَا خَفَرْتُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ، فَمَنَى  
أَوْصَى إِلَيْهِ)). [طرفه ١: ٤٤٥٩]

٢- بَابُ أَنْ يَتْرُكَ وَرَثَتُهُ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ  
مِنْ أَنْ يَتَكَفَّفُوا النَّاسَ

٢٧٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا مَعْيَانُ  
عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ  
بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ :  
(جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُنِي وَأَنَا بِمَكَّةَ، وَهُوَ  
يَكْرَهُ أَنْ يَمُوتَ بِالْأَرْضِ الَّتِي هَاجَرَ مِنْهَا،  
قَالَ: (يُرَحِّمُ اللَّهُ ابْنَ عَفْرَاءَ)). قُلْتُ: يَا

(ﷺ)! मैं अपने सारे माल व दौलत की वसियत कर दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने पूछा फिर आधे की कर दूँ? आप (ﷺ) ने उस पर भी यही फ़र्माया कि नहीं। मैंने पूछा फिर तिहाई की कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया तिहाई कर सकते हो और ये भी बहुत है, अगर तुम अपने वारिषों को अपने पीछे मालदार छोड़ो तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़ो के लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें, इसमें कोई शक नहीं कि जब तुम अपनी कोई चीज़ (अल्लाह के लिये खर्च करोगे) तो वो ख़ैरात है, यहाँ तक कि वो लुक्मा भी जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालोगे (वो भी ख़ैरात है) और (अभी वसियत करने की कोई ज़रूरत भी नहीं) मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुम्हें शिफ़ा दे और उसके बाद तुमसे बहुत से लोगों को फ़ायदा हो और दूसरे बहुत से लोग (इस्लाम के मुखालिफ़) नुक़सान उठाएँ। उस वक़्त हज़रत सअद (रज़ि.) की सिर्फ़ एक बेटी थी।

एक रिवायत में है कि हज़रत सअद (रज़ि.) उस बीमारी में नाउम्मीदी की हालत को पहुँच चुके थे। आपने आँहज़रत (ﷺ) के सामने सारे माल के वक्फ़ करने का ख़याल जाहिर किया मगर आँहज़रत (ﷺ) ने आपकी ढारस बँधाई और आप (रज़ि.) को स्नेह की बशारत दी चुनाँचे आप बाद में तक्ररीबन पचास साल ज़िन्दा रहे और तारीख़े इस्लाम में आपने बड़े अज़ीम कारनामे अंजाम दिये (रज़ि.) मुअरिख़ीन ने उनके दस बेटे और बारह बेटियाँ बतलाई हैं वल्लाहु अलम बिस्सवाब

### बाब 3 : तिहाई माल की वसियत करने का बयान

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि ज़िम्मी काफ़िर के लिये भी तिहाई माल से ज़्यादा की वसियत नाफ़िज़ न होगी। अल्लाह तआला ने सूरह माइदह में फ़र्माया कि आप उनमें ग़ैर-मुस्लिमों में भी इसके मुताबिक़ फ़ैसला कीजिए जो अल्लाह तआला ने आप पर नाज़िल किया है।

**तशरीह :** ज़िम्मी और मुसलमानों का एक ही हुक्म है किसी की वसियत तिहाई माल से ज़्यादा नाफ़िज़ न होगी। इमाम मालिक और शाफ़िई और इमाम अहमद का यही क़ौल है कि वसियत तिहाई माल से ज़्यादा में नाफ़िज़ न होगी, अगर मय्यत के वारिष न हों तो बाक़ी माल बैतुलमाल में रखा जाएगा और हन्फ़िया का ये क़ौल है कि अगर वारिष न हों या वारिष हों और वो इजाज़त दें तो तिहाई से ज़्यादा में भी वसियत नाफ़िज़ हो सकती है। इब्ने बत्ताल ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह.) ने इमाम हसन बसरी (रह.) का क़ौल लाकर हन्फ़िया पर रद किया है और इसीलिये कुआन की ये आयत लाए, व अनिहकुम बयनहुम बिमा अन्ज़लल्लाहु (अल् माइदा : 49) क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) का हुक्म भी बिमा अन्ज़लल्लाहु में दाख़िल है (वहीदी) क़ाल इब्नु बत्ताल अरादल्बुख़ारी बिहाज़रर्हि अला मन क़ाल कल्हनफ़ियति लिजवाज़िल्वसियति बिज़्जियादति अल्षुलुषि लिमन ला वारिष लहु व कज़ालिक इहतज्ज बिक़्ौलिही व अनिहकुम बैनहुम बिमा अन्ज़लल्लाहु वल्लज़ी हक़म बिहीन्नबियु (ﷺ) मिनषुलुषि व हुवलहुकुमु बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़मन तजावज़ माहदहू फ़क़द अता मा नुहिय अन्हु व क़ाल इब्नुल्मुनीर लम युरिदिल्बुख़ारी हाज़ा

رَسُولَ اللَّهِ أَوْصَى بِمَالِي كُلَّهُ؟ قَالَ: ((لَا)). قُلْتُ: فَالْشُّطْرُ؟ قَالَ: ((لَا)). قُلْتُ: الثُّلُثُ؟ قَالَ: ((فَالْثُّلُثُ، وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ، إِنَّكَ أَنْ تَدْعَ وَرَثَتَكَ أَغْنَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَدْعَهُمْ غَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ فِي أَيْدِيهِمْ وَإِنَّكَ مِنْهُمَا أَنْفَقْتَ مِنْ نَفَقَةٍ لِفَانْهَا صَدَقَةٌ، حَتَّى اللَّقْمَةُ تَرْفَعُهَا إِلَى فِيْ أَمْرَائِكَ، وَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَرْفَعَكَ فَيَنْتَفِعَ بِكَ نَاسٌ وَيَضُرَّ بِكَ آخَرُونَ. وَلَمْ يَكُنْ لَهُ يَوْمَئِذٍ إِلَّا ابْنَةٌ)).

### ۳- بَابُ الْوَصِيَّةِ بِالثُّلُثِ

وَقَالَ الْحَسَنُ: لَا يَجُوزُ لِلذِّي وَصِيَّةٌ إِلَّا الثُّلُثُ وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَأِنْ أَحْكَمْتُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ﴾ [المائدة: 49].



व इन्नमा अरादल्इस्तिश्हाद बिल्आयति अला अन्नल्लज़ी इज़ा तहाकम इलैना वरषतहू ला तन्फ़ज़ु मिन वसियतिही इल्ला बिष्पुलुषि लिअन्न ला नहकुमु फीहिम इल्ला बिहुक्मिल्इस्लामि लिक्कौलिही तआला व अनिहकुम बैनहुम बिमा अन्ज़लल्लाहु अल्आयः (फ़तुहल बारी) इबारत का खुलासा वही है जो मज़कूर हुआ।

2743. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, काश! लोग (वसियत को) चौथाई तक कम कर देते तो बेहतर होता क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुम तिहाई (की वसियत कर सकते हो) और तिहाई भी बहुत है या (आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया) ये बड़ी रक़म है।

2744. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अदी ने बयान किया, उनसे मरवान बिन मुआविया ने, उनसे हाशिम इब्ने हाशिम ने, उनसे आमिर बिन सअद ने और उनसे उनके बाप सअद बिन अबी वक्रास ने बयान किया कि मैं मक्का में बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी अयादत के लिये तशरीफ़ लाए। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे लिये दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे उलटे पाँव वापस न कर दे (या'नी मक्का में मेरी मौत न हो) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुम्हें सेहत दे और तुमसे बहुत से लोग नफ़ा उठाएँ। मैंने अर्ज़ किया मेरा इरादा वसियत करने का है। एक लड़की के सिवा और मेरे कोई (औलाद) नहीं। मैंने पूछा क्या आधे माल की वसियत कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया आधा तो बहुत है। फिर मैंने पूछा तो तिहाई की कर दूँ? फ़र्माया कि तिहाई की कर सकते हो अगरचे ये भी बहुत है या (ये फ़र्माया कि) बड़ी (रक़म) है। चुनाँचे लोग भी तिहाई की वसियत करने लगे और उनके लिये जाइज़ हो गई।

इस हदीस से भी तिहाई तक की वसियत करना जाइज़ प्राबित हुआ, साथ ये भी कि शारेअ (अलैहिस्सलाम) का मंशा वारिषों के लिये ज़्यादा से ज़्यादा माल छोड़ना है ताकि वो पीछे मुहताज न हों, वसियत करते वक़्त वसियत करने वालों को ये अम्र मल्हूज रखना ज़रूरी है।

۲۷۴۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ مَعِينٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَوْ غَضَّ النَّاسُ إِلَى الرَّبْعِ، لَأَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الثُلُثُ، وَالثُلُثُ كَثِيرٌ أَوْ كَثِيرٌ)).

۲۷۴۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا زَكَرِيَاءُ بْنُ عَدِيٍّ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ هَاشِمٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرِضْتُ لَعَادَتِي النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، اذْعُ اللَّهُ أَنْ لَا يَرُدَّنِي عَلَى عَقِبِي. قَالَ: ((لَعَلَّ اللَّهَ يَرْفَعُكَ، وَيَنْفَعُ بِكَ نَاسًا)). قُلْتُ: أُرِيدُ أَنْ أَوْصِيَ وَإِنَّمَا لِي ابْنَةٌ، قُلْتُ أَوْصِي بِالنِّصْفِ؟ قَالَ: ((النِّصْفُ كَثِيرٌ)). قُلْتُ: فَالثُّلُثُ؟ قَالَ: ((الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ - أَوْ كَثِيرٌ - قَالَ: فَأَوْصَى النَّاسُ بِالثُّلُثِ فَجَارَ ذَلِكَ لَهُمْ)).

बाब 4 : वसियत करने वाला अपने वसी से कहे कि मेरे बच्चे की देखभाल करते रहना और वसी

۴- بَابُ قَوْلِ الْمُوصِي لِوَصِيَّةٍ : تَعَاهَدَ وَلَدِي.

### के लिये किस तरह के दावे जाइज़ है

2745. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब से, वो इब्ना बिन जुबैर से और उनसे नबी करीम (ﷺ) की जोजा मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ना बिन अबी वक्रास ने मरते वक़्त अपने भाई सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) को ये वसियत की थी कि ज़म्आ की बांदी का लड़का मेरा है, इसलिये तुम उसे ले लेना, चुनाँचे फ़तहे मक्का के मौक़े पर सअद (रज़ि.) ने उसे ले लिया और कहा कि मेरे भाई का लड़का है। उन्होंने इस बारे में मुझे वसियत की थी। फिर अब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) उठे और कहने लगे कि ये तो मेरा भाई है, मेरे बाप की लौण्डी ने इसको जना है और मेरे बाप के बिस्तर पर पैदा हुआ है। फिर ये दोनों नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरे भाई का लड़का है, मुझे उसने वसियत की थी। लेकिन अब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि ये मेरा भाई है और मेरे वालिद की बांदी का लड़का है। नबी करीम (ﷺ) ने फ़ैसला ये फ़र्माया कि लड़का तुम्हारा ही है अब्द बिन ज़म्आ! बच्चा फ़ेराश के तहत होता है और ज़ानी के हिस्से में पत्थर हैं लेकिन आप (ﷺ) ने सौदा बन्ते ज़म्आ (रज़ि.) से फ़र्माया कि उस लड़के से पर्दा कर क्योंकि आप (ﷺ) ने उब्बा की मुशाबिहत उस लड़के में साफ़ पाई थी। चुनाँचे उसके बाद उस लड़के ने सौदा (रज़ि.) को कभी न देखा यहाँ तक कि आप अल्लाह तआला से जा मिलीं। (राजेअ: 2053)

**तशरीह:**

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि उब्बा ने कहा मेरे लड़के का ख़याल रखो, उसको ले लेना और सअद ने जो अपने भाई के क़सी थे, उसका दा'वा किया। उस बच्चे का नाम अब्दुलहमान था हालाँकि आप (ﷺ) ने फ़ैसला कर दिया कि वो ज़म्आ का बेटा है तो सौदा का भाई हुआ मगर चूँकि उसकी सूरत उब्बा से मिलती थी इसलिये एहतियातन हज़रत सौदा (रज़ि.) को उससे पर्दा करने का हुक्म दिया।

### बाब 5 : अगर मरीज़ अपने सर से कोई साफ़ इशारा करे तो उस पर हुक्म दिया जाएगा?

2746. हमसे हस्सान बिन अबी अब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.)

وَمَا يُجُوزُ لِلْوَصِيِّ مِنَ الذَّغْوِ

٢٧٤٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: ((كَانَ عُبَيْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ وَلَدَةً زَمْعَةَ مَيْمَنِي، فَأَقْبَضَهُ إِلَيْكَ. فَلَمَّا كَانَ غَاِمُ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدٌ فَقَالَ: ابْنُ أَخِي لَمْ كَانَ عَهْدٌ إِلَيَّ فِيهِ. فَقَامَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ: أَخِي وَإِنْ أُمّةٌ أَبِي وَلَدَ عَلَى لِرَاسِهِ. فَسَاقُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْنُ أَخِي، كَانَ عَهْدٌ إِلَيَّ فِيهِ. فَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَإِنْ وَلَدَةً أَبِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ، الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْخَجَرُ)). ثُمَّ قَالَ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ: ((اِخْتَجِي مِنْهُ)). لَمَّا رَأَى مِنْ شَبهِهِ بَشْبَةً. لَمَّا رَأَاهَا حَتَّى لَقِيَ اللَّهَ)).

[راجع: ٢٠٥٣]

٥ - بَابُ إِذَا أَوْمَأَ الْمَرِيضُ بِرَأْسِهِ  
إِشَارَةً بَيِّنَةً جَازَتْ

٢٧٤٦ - حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ أَبِي عَتَابٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ

ने कि एक यहूदी ने एक (अंसारी) लड़की का सर दो पत्थरों के बीच में रखकर कुचल दिया था। लड़की से पूछा गया कि तुम्हारा सर इस तरह किसने किया है? क्या फ़लाँ शख्स ने किया? फ़लाँ ने किया? आखिर यहूदी का भी नाम लिया गया (जिसने उसका सर कुचल दिया था) तो लड़की ने सर के इशारे से हाँ में जवाब दिया। फिर वो यहूदी बुलाया गया और आखिर उसने भी इकरार कर लिया और नबी करीम (ﷺ) के हुक्म से उसका भी पत्थर से सर कुचल दिया गया। (राजेज़ : 2413)

عَنْ: «رَأَى يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ، فَقِيلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ؟ أَلَا نَ أَوْ لُلَانِ؟ حَتَّى سَمِيَ الْيَهُودِيُّ فَلَاوَمَاتِ بِرَأْسِهَا، فَجِيءَ بِهِ فَلَمْ يَزَلْ حَتَّى اعْتَرَفَ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَضَ رَأْسَهُ بِالْحِجَارَةِ».

[راجع: ٢٤١٣]

**तरीह:** आप (ﷺ) ने उस लड़की का बयान जो सर के इशारे से था, शहादत (गवाही) में कुबूल किया और यहूदी की गिरफ्तारी का हुक्म दिया गो क़िसास का हुक्म सिर्फ़ शहादत की बिना पर नहीं दिया गया बल्कि यहूदी के इक़बाले जुर्म पर लिहाज़ा ऐसे मज़लूम के सर के इशारे से भी अहले क़ानून ने मौत के वक़्त की शहादत को मोतबर करार दिया है क्योंकि आदमी मरते वक़्त अक़बर सच ही कहता है और झूठ से परहेज़ करता है।

**बाब 6 : वारिष के लिये वसियत करना जाइज़ नहीं है**

٦- بَابُ لَا وَصِيَّةَ لَوَارِثٍ

**तरीह:** ये मज़मून सराहतन एक हदीष में वारिद है जिसको अज़हाबे सुन्नन वग़ैरहने अबू अमामा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है मगर उसकी सनद में कलाम है, इसीलिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इसको न ला सके। इमाम शारिफ़ ने इस रिवायत को मुतवातिर कहा है और फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने इसका इन्कार किया है।

2747. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया वक्राअ से, उन्होंने इब्ने अबी नुजैह से, उनसे अत्ता ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया शुरू इस्लाम में (मीराष का) माल औलाद को मिलता था और वालिदैन के लिये वसियत ज़रूरी थी लेकिन अल्लाह तआला ने जिस तरह चाहा उस हुक्म को मन्सूख कर दिया फिर लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर करार दिया और वालिदैन में से हर एक का छठा हिस्सा और बीबी का (औलाद की मौजूदगी में) आठवाँ हिस्सा और (औलाद की ग़ैर मौजूदगी में) चौथा हिस्सा करार दिया। इसी तरह शौहर का (औलाद न होने की सूरत में) आधा और (औलाद होने की सूरत में) चौथा हिस्सा करार दिया। (दीगर मक़ाम : 4578, 6739)

٢٧٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «كَانَ الْمَالُ لِلْوَلَدِ، وَكَانَتِ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ، فَسَخَّ اللَّهُ مِنْ ذَلِكَ مَا أَحَبَّ، فَجَعَلَ لِلذَّكَرِ مِثْلَ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ، وَجَعَلَ لِلْأَبَوَيْنِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا الشُّدْسُ، وَجَعَلَ لِلْمَرْأَةِ الثُّمْنُ وَالرُّبُعُ، وَلِلزَّوْجِ الشُّطْرُ وَالرُّبُعُ».

[طرفاء في : ٤٥٧٨ ، ٦٧٣٩].

इस सूरत में वसियत का कोई सवाल ही बाक़ी नहीं रहा।

**बाब मौत के वक़्त सद्का करना**

2748. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया सुफ़यान घ़ौरी से, वो अम्मार से, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया एक सहाबी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! कौनसा

٧- بَابُ الصَّدَقَةِ عِنْدَ الْمَوْتِ

٢٧٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ عَنْ سَفْيَانَ عَنْ عَمَارَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «قَالَ

सदका अफ़ज़ल है? फ़र्माया ये कि सदका तन्दुरुस्ती की हालत में कर कि (तुझको उस माल को बाकी रखने की) इवाहिश भी हो जिससे कुछ सरमाया जमा हो जाने की तुम्हें उम्मीद हो और (उसे खर्च करने की मूरत में) मुहताजी का डर हो और उसमें ताखीर न कर कि जब रूह हलक़ तक पहुँच जाए तो कहने बैठ जाए कि इतना माल फ़लों के लिये, फ़लाने को इतना देना, अब तो फ़लाने का हो ही गया (तू तो दुनिया से चला) (राजेअ: 1419)

**बाब 8 : अल्लाह तआला का सूरह निसा में ये फ़र्माना कि वसियत और क़र्ज़ की अदायगी के बाद हिस्से बंटेंगे**

और मन्कूल है कि क़ाज़ी शुरैह और इमर बिन अब्दुल अजीज़ और ताक़स और अता और अब्दुर्रहमान बिन उज़ैना इन लोगों ने बीमारी में क़र्ज़ का इकरार दुरुस्त रखा है और इमाम हसन बसरी ने कहा सबसे ज़्यादा आदमी को उस वक़्त सच्चा समझना चाहिये जब दुनिया में उसका आख़िरी दिन और आख़िरत में पहला दिन हो और इब्राहीम नख़्ई और हक़म बिन इत्बा ने कहा अगर बीमार वारिष से यूँ कहे कि मेरा उस पर कुछ क़र्ज़ा नहीं तो ये इक़रा सहीह होगा और राफ़ेअ बिन ख़दीज (सहाबी) ने ये वसियत की कि उनकी बीवी फ़ज़ारिया के दरवाज़े में जो माल बन्द है वो न खोला जाए और इमाम हसन बसरी (रज़ि.) ने कहा अगर कोई मरते वक़्त अपने गुलाम से कहे कि मैं तुझको आज़ाद कर चुका तो जाइज़ है और शअबी ने कहा कि अगर औरत मरते वक़्त यूँ कहे मेरा शौहर मुझको महर दे चुका है और मैं ले चुकी हूँ तो जाइज़ होगा और कुछ लोग (हन्फ़िया) कहते हैं बीमार का इकरार किसी वारिष के लिये दूसरे वारिषों की बदगुमानी की वजह से सहीह न होगा। फिर यही लोग कहते हैं कि अमानत और बज़ाअत और मुज़ारबत का अगर बीमार इकरार करे तो सहीह है। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम बदगुमानी से बचे रहो, बदगुमानी बड़ा झूठ है और मुसलमानों! (दूसरे वारिषों का हक़) मार लेना दुरुस्त नहीं क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है मुनाफ़िक़ की निशानी ये है कि अमानत में ख़यानत करे और अल्लाह तआला ने सूरह निसा में फ़र्माया अल्लाह तआला तुमको ये हुक्म देता है कि जिसकी

رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ الْفَضْلُ؟ قَالَ: ((أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيحٌ حَرِيصٌ، تَأْمُلُ الْغَنَى وَتَخْشَى الْفَقْرَ، وَلَا تُنْهَلُ حَتَّى إِذَا بَلَغْتَ الْخُلُقُومَ قُلْتَ: لِفُلَانٍ كَذَا وَلِفُلَانٍ كَذَا، وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ)). (راجع: ١٤١٩)

٨- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ فَرَضٍ﴾ [النساء: ٢٢]

وَيَذَكَّرُ أَنْ شَرَّهَا وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ وَطَاوُسٌ وَعَطَاءٌ وَابْنُ أَذِينَةَ أَجَازُوا إِفْرَازَ السَّرِيضِ بِدَيْنٍ. وَقَالَ الْحَسَنُ أَحَقُّ مَا يُصَدَّقُ بِهِ الرَّجُلُ آخِرَ يَوْمٍ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلَ يَوْمٍ مِنَ الْآخِرَةِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ وَالْحَكَمُ: إِذَا أَتَى الْوَارِثُ مِنَ الدَّيْنِ بَرْعَةً، وَأَوْصَى رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ أَنْ لَا تُكْشَفَ امْرَأَتُهُ الْفَرَّازِيَّةُ عَمَّا أُغْلِقَ عَلَيْهِ بَابُهَا. وَقَالَ الْحَسَنُ إِذَا قَالَ لِمَمْلُوكِهِ عِنْدَ الْمَوْتِ: كُنْتُ أَغْنَيْتُكَ جَارًا. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: إِذَا قَالَتِ الْمَرْأَةُ عِنْدَ مَوْتِهَا: إِنَّ زَوْجِي قَضَانِي وَقَبَضْتُ مِنْهُ جَارًا. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: لَا يَجُوزُ إِفْرَازُهُ لِسَوْءِ الظَّنِّ بِهِ لِلزَّوْجَةِ. ثُمَّ امْتَحَسَنَ فَقَالَ: يَجُوزُ إِفْرَازُهُ بِالْوَدِيعَةِ وَالْبَهَاغَةِ وَالْمُضَارَبَةِ. وَقَدْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لِيَاكُمُ وَالظَّنُّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْخَبَرِ)) وَلَا يَحِلُّ مَالُ الْمُسْلِمِينَ بِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((آيَةُ

अमानत है, उसको पहुँचा दो। इसमें वारिष या गैर वारिष की कोई रुखसत ही नहीं है। इसी मजूमून में अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) से मफूअन हदीष मरवी है।

السَّالِقِ إِذَا اتَّعَمَ عَيْنًا وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا﴾ [النساء : ٥٨] فَلَمْ يَخْصُ وَارِثًا وَلَا غَيْرَهُ. يَوْمَ عَثَرَ اللَّهُ بَنِي عَمْرِو عَنْ النَّبِيِّ ﷺ.

**तशरीह:** इस बाब के ज़ेल हज़रत हाफ़िज़ साहब फ़रमाते हैं, अरादल्मुसन्निफ़ वल्लाहु आलामु बिहाज़िहि तर्जुमति अल्इहति जाजु बिमा अख्तारहू मिन जवाज़ि इक्लरारिल् मरीज़ि बिदिनि मुत्लक़न सवाअन कानल्मुकिरू लहू वारिषन औ अज्जबिय्यन व वज्हुदलालति अन्नहू सुब्हानहू व तआला सिवा बैनल्वसिय्यति वदनि फी तक्दीमिहिमा अलल्मीराषि व लम युफस्सिल फखरजतिल्वसिय्यतु लिल्वारिषि बिदलीलिल्लज़ी तक्दम व बक्रियल्इक्लरारू बिद्दीनि अल्ला हालिही अल्ख या'नी इस बाब के मुनअक्किद करने से मुसन्निफ़ का इरादा इस अमर पर हुजत पकड़ना है कि उन्होंने मरीज़ का कर्ज़ के बारे में मुत्लक़न इक्लरार कर लेना जाइज़ करार दिया है जिसके लिये मरीज़ इक्लरार कर रहा है वो उसका वारिष हो या कोई अजनबी इंसान हो, इसलिये कि आयते शरीफ़ा मे अल्लाह पाक ने मीराष के ऊपर वसिय्यत और कर्ज़ दोनों को बराबरी के साथ मुकद्दम किया है। इन दोनों में कोई फ़ासला नहीं फ़र्माया पस वसिय्यत दलीले मुकद्दम की बिना पर वारिष के लिये मन्सूख हो गई और कर्ज़ का इक्लरार कर लेना अपनी हालत पर कायम रहा। हज़रत इमाम (रह.) ने अपने ख़याल की ताईद में मुख्तलिफ़ अइम्म-ए-किराम, मुहद्दिषीने इज़ाम के अक्वाल इस्तिश्हाद के तौर पर नक़ल फ़र्माए हैं।

शारेहीन लिखते हैं, क़ाल बअज़ुन्नासि अय अल्हनफिय्यतु यकुलून लौ यजूज़ु इक्लरारल्मरीज़ि लिबअज़िल्वरप्रति लिअन्नहू मजन्नतुन अन्नहू युरीदु बिहिल्असाअफी आखिरिल्अमि शुम्म नाक़ज़ हैषु जव्वज़हू इक्लरारहू लिल्वरप्रति बिल्वदीअति व नहविही बिमुज़रदिन वल्इस्तिहसानु मिन गैरि दलीलिन यदुल्लु अल्ला इम्तिनाइ ज़ालिक व जवाज़ु हाज़िही शुम्म रह् अलैहिम बिअन्नहू सूउज़न्नि बिही बिअन्नहू ला यहिल्लु मालुल्मुस्लिमीन अय अल्मुकिरू लहू लिहदीषि इजा उतुमिन खान कज़ा फी मज्मइल्बिहार या'नी हन्फिया ने कहा कि बाज़ वारिषों के लिये मरीज़ का इक्लरारे कर्ज़ जाइज़ नहीं इस गुमान पर कि मुम्किन है मरीज़ वारिष के हक़ में बुराई का इरादा रखता हो उस पर फिर मुनाक़सा पेश किया है इसी तरह कि अहनाफ़ हज़रात ने मरीज़ का वदिअत के बारे में किसी वारिष के लिये इक्लरार करना जाइज़ करार दिया है हालाँकि ये ख़याल महज़ इस्तिहसान की बिना पर है जिसकी कोई दलील नहीं जिसे उसके इम्तिनाअ या जवाज़ पर पेश किया जा सके। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने फिर उन पर बई तौर पर रह् फ़र्माया कि ये मरीज़ के साथ सूए ज़न्न है और बई तौर कि जिसके लिये मरीज़ इक्लरार कर रहा है, उस मुसलमान का माल हड़प करना इस हदीष से जाइज़ नहीं कि अमानत का माल न अदा करना ख़यानत है। मरीज़ ने जिस वारिष वगैरह के लिये इक्लरार किया है वो माल उस वारिष वगैरह की अमानत हो गया जिसकी अदायगी ज़रूरी है।

अल्लामा ऐनी (रह.) ने कहा अमानत और मुज़ारबत का इक्लरार इसलिये सहीह है कि कर्ज़ में लुज़ूम (अनिवार्य) होता है, इन चीज़ों में लुज़ूम नहीं होता। मैं कहता हूँ गो लुज़ूम न हो मगर वारिषों का नुक़सान तो उनमें भी मुहतमिल है जैसे कर्ज़ में और जब इल्लत मौजूद है तो हुक्म भी वही होना चाहिये। इसलिये ए'तिराज़ इमाम बुखारी (रह.) का सहीह है। हदीष इय्याकुम वज़ज़न्न को इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल अदब में वस्ल किया। ये हदीष लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने हन्फिया का रह् किया जो बदगुमानी ना जवाज़ी की इल्लत करार देते हैं। अल्लामा ऐनी ने कहा हम बदगुमानी को तो इल्लत ही करार नहीं देते फिर ये इस्तिदलाल बेकार है और अगर मान लें तब भी हदीष से बदगुमानी मना है और ये गुमान बदगुमान नहीं हैं। मैं कहता हूँ जब एक मुसलमान को मरते वक़्त झूठा समझा तो इससे बढ़कर और क्या बदगुमानी होगी। हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि मरीज़ पर जब किसी का कर्ज़ हो तो उसका इक्लरार करना चाहिये। वरना वो ख़यानत का मुर्तकिब होगा और जब इक्लरार करना वाजिब हुआ तो उसका इक्लरार मुअतबर भी होगा वरना इक्लरार के वाजिब करने से फ़ायदा ही क्या है?

और आयत से ये निकाला कि कर्ज भी दूसरे की गोया अमानत है ख़वाह वो वारिष हो या न हो। पस वारिष के लिये इकरार सहीह होगा। ऐसी का ये ए'तिराज़ कि कर्ज को अमानत नहीं कह सकते और आयत में अमानत की अदायगी का हुक्म है, सहीह नहीं है। क्योंकि अमानत से यहाँ ल'वी अमानत मुराद है या'नी दूसरे का हक़ न कि शरई अमानत और कर्ज ल'वी अमानत में दाखिल है। इस आयत का शाने नुज़ूल इस पर दलालत करता है कि आपने उम्मान बिन तलहा शैबी (रज़ि.) से कअबे की चाबी ली और अंदर गए। उस चाबी को हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने मांगा उस वक़्त ये आयत उतरी, आप (ﷺ) ने वो चाबी फिर शैबी को दे दी जो आज तक उनके खानदान में चली आती है। यही वो खानदान है जो कबले इस्लाम से आज तक का'बा शरीफ़ की चाबी का मुहाफ़िज़ चला आ रहा है। इस्लामी दौर में भी इसी खानदान को इस ख़िदमत पर बहाल रखा गया और आज सऊदी अरबिया हुकूमत के दौर में भी यही खानदान है जो का'बा शरीफ़ की चाबी का मुहाफ़िज़ है। अगर अमीरे हुकूमते सऊदी भी कअबा में दाखिल होना चाहें तो इसी खानदान से उनको ये चाबी हासिल करना ज़रूरी है और वापसी के बाद वापस कर देना भी ज़रूरी है। उस दौर में हिजाज़ में कितने इंकलाबात आए मगर इस निज़ाम में किसी दौर में भी फ़र्क़ नहीं आया। (अल्लाह तआला इस निज़ाम को हमेशा कायम दायम रखे आमीन)

हदीष ला मुदक़त इल्ला अल्लख़ इसको इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुज्ज़कात में वस्ल किया है। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि दैन (कर्ज) का अदा करना वसियत पर मुक़द्दम है, इसलिये कि वसियत मिसल मुदक़ा के है और जो शख़्स मद्यून (मक्रूज़) हो वो मालदार नहीं है। (तफ़सीर वहीदी)

2749. हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबुरबीअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने, उन्होंने कहा हमसे नाफ़ेअ बिन मालिक बिन अबी आमिर अबू सुहैल ने, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने अबू हुसैरह (रज़ि.) से उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से, आप (ﷺ) ने फ़र्माया मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं जब बात कहे तो झूठ कहे और जब उसके पास अमानत रखें तो ख़यानत करे और जब वा'दा करे तो ख़िलाफ़ करे। (राजेअ: 33)

**बाब 9 : अल्लाह तआला के (सूरह निसा में) ये फ़र्माने की तफ़सीर कि हिस्सों की तक्सीम वसियत और दैन के बाद होगी**

और मन्कूल है कि आँहज़रत (ﷺ) ने कर्ज को वसियत पर मुक़द्दम करने का हुक्म दिया और (इस सूरत में) ये फ़र्माने की अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो तो अमानत (कर्ज) का अदा करना नफ़ल वसियत के पूरा करने से ज़्यादा ज़रूरी है और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुदक़ा वही उम्दह है जिसके बाद आदमी मालदार रहे और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा गुलाम बग़ैर अपने मालिक की इजाज़त के वसियत नहीं कर सकता और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया गुलाम अपने मालिक के माल का निगहबान है।

2750. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको

٢٧٤٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ  
الرَّبِيعُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا  
نَافِعُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي غَالِبٍ أَبُو سُهَيْلٍ عَنْ  
أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ  
النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَيُّ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: إِذَا  
حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا أُمِّنَ خَانَ، وَإِذَا  
وَعَدَ أَخْلَفَ)). [راجع: ٣٣]

٩- بَابُ تَأْوِيلِ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿مَنْ بَغَىٰ  
وَصِيَّةٌ يُوصِي بِهَا أَوْ ذِينَ﴾ [النساء: ١٢]  
وَيَذْكُرُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَىٰ بِالذَّيْنِ قَبْلَ  
الْوَصِيَّةِ. وَقَوْلُهُ: ﴿إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ  
تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا﴾ فَإِذَا الْأَمَانَةُ  
أَحَقُّ مِنْ تَطَوُّعِ الْوَصِيَّةِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:  
«(لَا صَدَقَةٌ إِلَّا عَنْ ظَهْرِ غِيٍّ)». وَقَالَ ابْنُ  
عَبَّاسٍ: لَا يُوصِي الْعَبْدُ إِلَّا بِأَذْنِ أَهْلِهِ.  
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَبْدُ رَاعٍ فِي مَالِ  
مَوْلَاهُ)).

٢٧٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا

इमाम औज़ाई ने खबर दी, उन्होंने जुहरी से, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब और उर्वा बिन जुबैर से कि हकीम बिन हेज़ाम (मशहूर सहाबी) ने बयान किया मैंने औहज़रत (ﷺ) से मांगा आपने मुझको दिया, फिर मांगा फिर आपने दिया, फिर फ़र्माने लगे हकीम ये दुनिया का रुपया पैसा देखने में खुशनुमा और मज़े में शीरी है लेकिन जो कोई इसको सैरचश्मी से ले उसको बरकत होती है और जो कोई जान लड़ाकर हिर्ष के साथ इसको ले उसको बरकत न होगी। इसकी मिशाल ऐसी है जो कमाता है लेकिन सैर नहीं होता और ऊपर वाला (देने वाला) हाथ नीचे वाले (लेने वाले) हाथ से ज़्यादा बेहतर है। हकीम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम उसकी जिसने आपको सच्चा नबी बना करके भेजा मैं तो आज से आप (ﷺ) के बाद किसी से कोई चीज़ कभी नहीं लेने का मरने तक फिर (हकीम का ये हाल रहा) कि अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उनका सालाना वज़ीफ़ा देने के लिये उनको बुलाते, वो उसके लेने से इंकार करते। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी अपनी ख़िलाफ़त में उनको बुलाया उनका वज़ीफ़ा देने के लिये लेकिन उन्होंने इंकार किया। हज़रत उमर (रज़ि.) कहने लगे मुसलमानों! तुम गवाह रहना हकीम को उसका हक़ जो ग़नीमत के माल में अल्लाह ने रखा है देता हूँ वो नहीं लेता। ग़र्ज़ हकीम ने औहज़रत (ﷺ) के बाद फिर किसी शख्स से कोई चीज़ कुबूल नहीं की (अपना वज़ीफ़ा भी बैतुलमाल में न लिया) यहाँ तक कि उनकी वफ़ात हो गई, अल्लाह उन पर रहम करे। (राजेज़: 1472)

2751. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी कहा हमको यूनुस ने, उन्होंने जुहरी से, उन्होंने कहा मुझको सालिम ने खबर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से, उन्होंने कहा मैंने औहज़रत (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्माते थे तुममें से हर कोई निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा। हाकिम भी निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा और मर्द अपने घरवालों का निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा और

الأوزاعي عن الزهري عن سعيد بن المسيب وعروة بن الزبير أن حكيم بن حزام رضي الله عنه قال: ((سألت رسول الله ﷺ فأعطيني، ثم سألت فأعطيني، ثم قال لي: ((يا حكيم، إن هذا المال خضير خلو، فمن أخذه بسخاوة نفس يورثه له فيه، ومن أخذه بإشراف نفس لم يورثه له فيه، وكان كألدي يأكل ولا يشبع، وأبى الغلبا خير من اليد السفلى)). قال حكيم: فقلت: يا رسول الله، والذي يغفلك بالحق، لا أرى أحدا يغذك شيئا حتى أفارق الدنيا، فكان أبو بكر يدغو حكيمنا ليغطيته الغطاء فيأبى أن يقبل منه شيئا. ثم إن عمر دعا ليغطيته فيأبى أن يقبله، فقال: يا معشر المسلمين، إني أعرض عليه حقه الذي قسم الله له من هذا الفداء فيأبى أن يأخذه. فلم يروا حكيم أحدا من الناس يغذ النبي ﷺ حتى توفي رحمه الله)).

[راجع: 1472]

2751- حدثنا بشر بن محمد السخيني أخبرنا عبد الله أخبرنا يونس عن الزهري قال: أخبرني سالم عن ابن عمر عن أبيه رضي الله عنهما قال: سمعت رسول الله ﷺ يقول: ((كلكم راع ومسؤول عن رعيتيه، والإمام راع ومسؤول عن رعيتيه، والرجل راع في

औरत अपने शौहर के घर की निगाहबान है अपनी रइय्यत के बारे में पूछी जाएगी और गुलाम अपने साहब के माल का निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा। इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा मैं समझता हूँ आपने ये भी फ़र्माया कि मर्द अपने बाप के माल का निगाहबान है और अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा। (राजेअ : 893)

أَخْبَرَهُ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا رَاعِيَةٌ وَمَسْئُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْعَادِمُ فِي مَالِ سَيِّدِهِ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيهِ).

[راجع: ٨٩٣]

**तशरीह :** ये हदीस किताबुल इत्क़ में गुज़र चुकी है, उसकी मुनासबत तर्जुमा से मुश्किल है। कुछ ने कहा है गुलाम अपने मालिक के माल का निगाहबान हुआ हालाँकि वो गुलाम ही का कमाया हुआ है तो उसमें मालिक और गुलाम दोनों के इत्क़ मुता'ल्लिक़ हुए, लेकिन मालिक का इत्क़ मुक़द्दम किया गया क्योंकि वो ज़्यादा क़बी है। इसी तरह क़र्ज़ और वसियत में क़र्ज़ को मुक़द्दम किया जाएगा, क्योंकि क़र्ज़ की अदायगी फ़र्ज़ है और वसियत एक किस्म का तबर्अ या नी नफ़ल है। शाफ़िइया ने कहा कि उनमें वारिष दाख़िल न होंगे। कुछ ने कहा दाख़िल होंगे। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने कहा अज़ीज़ों से मह़रम नातेदार मुराद होंगे, बाप की तरफ़ के हों या माँ की तरफ़ के।

**बाब 10 : अगर किसी ने अपने अज़ीज़ों पर कोई चीज़ वक्फ़ की या उनके लिये वसियत की तो क्या हुक्म है और अज़ीज़ों से कौन लोग मुराद होंगे?**

١٠- بَابُ إِذَا وَقَفَ أَوْ وَصَّى

لِأَقْرَبِيهِ،

وَمِنْ الْأَقْرَبِ؟

और श़ाबित ने अनस (रज़ि.) से रिवायत किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तलहा से फ़र्माया तू ये बाग़ अपने अज़ीज़ों को दे डाला उन्होंने हस्सान और उबई बिन कअब को दे दिया (जो अबू तलहा के चचा की औलाद थे) और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंज़ारी ने कहा मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने बुमामा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से श़ाबित की तरह रिवायत की, उनसे यूँ है अपने क़राबतदार मुहताजों को दे। अनस (रज़ि.) ने कहा तो अबू तलहा ने वो बाग़ हस्सान और उबई बिन कअब (रज़ि.) को दे दिया, वो मुझसे ज़्यादा अबू तलहा (रज़ि.) के क़रीबी रिश्तेदार थे और हस्सान और उबई बिन कअब की क़राबत अबू तलहा से यूँ थी कि अबू तलहा का नाम ज़ैद है वो सुहैल के बेटे, वो अस्वद के, वो ह़राम बिन अमर बिन ज़ैद मनात बिन अदी बिन अमर बिन मालिक बिन नज़्जार के और हस्सान श़ाबित के बेटे, वो मुंज़िर के, वो ह़राम के तो दोनों ह़राम में जाकर मिल जाते हैं जो पर दादा है तो

وَقَالَ ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ: ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ لَأَبِي طَلْحَةَ: ((اجْعَلْهَا لِفُقَرَاءِ الْأَقْرَبِ)). فَجَعَلَهَا لِحَسَّانَ وَأَبِي بِنِ كَعْبٍ)) وَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثَمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ بِمِثْلِ حَدِيثِ ثَابِتٍ: قَالَ: ((اجْعَلْهَا لِفُقَرَاءِ قُرَائِكَ)). قَالَ أَنَسٌ: فَجَعَلَهَا لِحَسَّانَ وَأَبِي بِنِ كَعْبٍ وَكَانَا أَقْرَبَ إِلَيْهِ مِنِّي)). وَكَانَ قُرَابَةُ حَسَّانَ وَأَبِي بِنِ أَبِي طَلْحَةَ وَاسْمُهُ زَيْدُ بْنُ سَهْلٍ بْنُ الْأَسْوَدِ بْنِ حَرَامٍ بْنِ عَمْرِو بْنِ زَيْدٍ مَنَاةَ بْنِ عَدِيٍّ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، وَحَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ بْنُ الْمُنْذِرِ بْنِ حَرَامٍ، فَيَجْتَمِعَانِ إِلَى حَرَامٍ وَهُوَ الْأَبُ الثَّالِثُ، وَحَرَامُ ابْنُ



हराम बिन अमर बिन जैद, मनात बिन अदी बिन अमर बिन मालिक बिन नजार हस्सान और अबू तलहा को मिला देता है और उबई बिन कअब छठी पुश्त में या'नी अमर बिन मालिक में अबू तलहा से मिलते हैं, उबई बिन कअब के बेटे, वो कैस के, वो ब्रबैद के, वो जैद के, वो मुआविया के, वो अमर बिन मालिक बिन नजार के तो अमर बिन मालिक हस्सान और अबू तलहा और उबई तीनों को मिला देता है और कुछ ने (इमाम अबू यूसुफ इमाम अबू हनीफा के शागिर्द ने) कहा अजीजों के लिये वसियत करे तो जितने मुसलमान बाप दादा गुजरे हैं वो सब दाखिल होंगे।

2752. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्होंने इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तलहा से फ़र्माया, (जब उन्होंने अपना बाग़ बीरे हाअल्लाह की राह में देना चाहा) मैं मुनासिब समझता हूँ तुझे बाग़ अपने अजीजों को दे दे। अबू तलहा ने कहा बहुत ख़ूब ऐसा ही करूँगा। फिर अबू तलहा ने वो बाग़ अपने अजीजों और घचा के बेटों में बांट दिया और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअरा की) ये आयत उतरी और अपने करीब के नाते वालों को (अल्लाह के अज़ाब से) डराओ तो आँहज़रत (ﷺ) कुरैश के ख़ानदानों में बनी फ़हर, बनी अदी को पुकारने लगे (उनको डराया) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब ये आयत उतरी वन्ज़िर अशीरतकल अकरबीन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ कुरैश के लोगों! (अल्लाह से डरो) (राजेअ: 1461)

### बाब 11 : क्या अजीजों में औरतें और बच्चे भी दाखिल होंगे

2753. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उन्होंने जुहरी से, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुलहमान ने खबर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअरा की) ये आयत अल्लाह तआला ने उतारी

غَمْرُو بْنُ زَيْدٍ مَنَاةُ بْنُ عَبْدِ بْنِ غَمْرُو بْنِ مَالِكِ بْنِ النُّجَارِ، فَهُوَ يَجْمَعُ حَسَنًا وَأَبًا طَلْحَةَ وَأُمِّيَّ إِلَى مَبْنَى آبَاءِ إِلَى غَمْرُو بْنِ مَالِكٍ، وَهُوَ أُمِّيُّ بْنُ كَعْبٍ بْنِ قَيْسِ بْنِ عَمِيَّةِ زَيْدِ بْنِ مُعَاوِيَةَ بْنِ غَمْرُو بْنِ مَالِكِ بْنِ النُّجَارِ، فَعَمْرُو بْنُ مَالِكٍ يَجْمَعُ حَسَنًا وَأَبًا طَلْحَةَ وَأُمِّيَّ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِذَا أَوْصَى بِقَرَابَتِهِ فَهُوَ إِلَى آبَائِهِ فِي الْإِسْلَامِ.

٢٧٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ رَضِيٍّ أَنَّ اللَّهَ عَزَّ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَبِي طَلْحَةَ: ((أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْأَقْرَبِينَ)), قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَلْفَعَلْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَتَبَنِيَّ عَمِّي)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَّا نَزَلَتْ: ((وَأَنْلِزْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ)) جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا نَبِيَّ لِهَر: يَا نَبِيَّ غَدِي، لَبَطُونِ قُرَيْشِي)). وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ((وَأَنْلِزْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ)) قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ)). [راجع: ١٤٦١]

### ١١- بَابُ هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالْوَلَدُ فِي الْأَقَارِبِ؟

٢٧٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ

और अपने नज़दीक नातेदारों को अल्लाह के अज़ाब से डरा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुरैश के लोगों! या ऐसा ही कोई और कलिमा तुम लोग अपनी अपनी जानों को (नेक आमाल के बदल) मोल ले लो (बचा लो) मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा (या'नी उसकी मज़ी के खिलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का) अब्दे मुनाफ़ के बेटों! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अब्बास बिन मुत्तलिब के बेटे! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। सफ़िया मेरी फूफी! अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। फ़ातिमा (रज़ि.) बेटे तू चाहे मेरा माल मांग ले लेकिन अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम नहीं आएगा। अबुल यमान के साथ हदीष को अस्बग ने भी अब्दुल्लाह बिन वहब से, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया। (दीगर मक़ाम: 3527, 4771)

أَبَاهُزْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنْزِلْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾ قَالَ: «يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ، لَا أَغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لَا أَغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا. يَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لَا أَغْنِي عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا. يَا صَفِيَّةُ عَمَةُ رَسُولِ اللَّهِ لَا أَغْنِي عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ سَلِينِي مَا شِئْتُ مِنْ مَالِي لَا أَغْنِي عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ بْنُ ابْنٍ وَهَبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ. [طرفاء في: ٣٥٢٧، ٤٧٧١].

**तशरीह:** पिछली हदीष में पहले आपने कुरैश के कुल लोगों को मुखातब किया जो खास आपकी क़ौम के लोग थे। फिर अब्दे मुनाफ़ अपने चौथे दादा की औलाद को। फिर खास अपने चचा और फूफी या'नी दादा की औलाद को फिर खास अपनी औलाद को। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि क़राबत वालों में औरतें दाखिल हैं क्योंकि हज़रत सफ़िया अपनी फूफी को भी आप (ﷺ) ने मुखातब किया और बच्चे भी इसलिये कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) जब ये आयत उतरी कमसिन बच्ची थीं, आप (ﷺ) ने उनको भी मुखातब किया।

## बाब 12 : क्या वक़फ़ करने वाला अपने वक़फ़ से खुद भी वो फ़ायदा उठा सकता है?

और हज़रत इमर (रज़ि.) ने शर्त लगाई थी (अपने वक़फ़ के लिये) कि जो शख्स उसका मुतवल्लि हो उसके लिये उस वक़फ़ में से खा लेने से कोई हर्ज न होगा। (दस्तूर के मुताबिक़) वाकिफ़ खुद भी वक़फ़ का मुहतमिम हो सकता है और दूसरा शख्स भी। इसी तरह अगर किसी शख्स ने क़ैत या कोई और चीज़ अल्लाह के रास्ते में वक़फ़ की तो जिस तरह दूसरे उससे फ़ायदा उठा सकते हैं खुद वक़फ़ काने वाला भी उठा सकता है अगरचे (वक़फ़ करते वक़्त) उसकी शर्त न लगाई हो।

١٢- بَابُ هَلْ يَنْتَفِعُ الْوَاقِفُ بِوَقْفِهِ؟ وَقَدْ اشْتَرَطَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: لَا جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلُ. وَقَدْ يَلِي الْوَاقِفُ وَغَيْرُهُ. وَكَذَلِكَ كُلُّ مَنْ جَعَلَ بَذَنَةً أَوْ شَيْئًا لِلَّهِ فَلَهُ أَنْ يَنْتَفِعَ بِهِ كَمَا يَنْتَفِعُ غَيْرُهُ وَإِنْ لَمْ يَشْتَرِطْ.

**तशरीह:** वाकिफ़ अपने वक़फ़ से फ़ायदा उठा सकता है जब उस चीज़ को खुद अपने ऊपर और नीज़ दूसरों पर वक़फ़ कर दिया हो या वक़फ़ में ऐसी शर्त कर ली हो या उसमें से एक हिस्सा अपने लिये खास कर लिया हो या मुतवल्लि

को कुछ दिलाया हो और खुद ही मुतवल्ली हो। क़स्तलानी (रह.) ने कहा शाफ़िइया का सहीह मज़हब ये है कि अपनी ज़ात पर वक्फ़ करना बातिल है।

हज़रत उमर (रज़ि.) का अफ़र किताबुशुरूत में मौसूलन गुज़र चुका है। इमाम बुखारी (रह.) ने इससे ये निकाला है कि जब वक्फ़ के मुतवल्ली को हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसमें से खाने की इजाज़त दे दी तो खुद वक्फ़ करने वाले को भी उसमें से खाना या कुछ फ़ायदा लेना दुरुस्त होगा। इसलिये कि कभी वक्फ़ करने वाला खुद उस जायदाद का मुतवल्ली होता है। आखिरी मज़मून में इख़ितलाफ़ है। कुछ ने कहा अगर कोई चीज़ फ़क़ीरों पर वक्फ़ की और वक्फ़ करने वाला फ़क़ीर नहीं है तो उससे फ़ायदा उठाना दुरुस्त नहीं। अल्बत्ता अगर वो फ़क़ीर हो जाए या उसकी औलाद में से कोई फ़क़ीर हो जाए तो फ़ायदा उठा सकता है, यही मुख़्तार है।

2754. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने देखा कि एक शख्स कुर्बानी का ऊँट हाँके जा रहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि उस पर सवार हो जा। उस म़ाहब ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये कुर्बानी का ऊँट है। आप (ﷺ) ने तीसरी या चौथी बार फ़र्माया कि अफ़सोस! सवार भी हो जा (या आपने वयलक की बजाय वयहक फ़र्माया जिसके मा'नी भी वही हैं) (राजेअ: 1690)

٢٧٥٤ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَرَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَجُلًا يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ لَهُ: «ارْكَبْهَا»، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهَا بَدَنَةٌ. فَقَالَ - فِي الثَّلَاثَةِ أَوْ الرَّابِعَةِ - «ارْكَبْهَا وَتِلْكَ - أَوْ وَتَخْلُكَ».

[راجع: ١٦٩٠]

2755. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने देखा कि एक म़ाहब कुर्बानी का ऊँट हाँके लिये जा रहा है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस पर सवार हो जा लेकिन उन्होंने मज़ज़रत की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो कुर्बानी का ऊँट है। आप (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि सवार भी हो जा। अफ़सोस! ये कलिमा आप (ﷺ) ने तीसरी या चौथी बार फ़र्माया था। (राजेअ: 1689)

٢٧٥٥ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: (أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَأَى رَجُلًا يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ: ارْكَبْهَا، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهَا بَدَنَةٌ، قَالَ: «ارْكَبْهَا وَتِلْكَ».) فِي الثَّلَاثَةِ أَوْ فِي الثَّلَاثَةِ.

[راجع: ١٦٨٩]

इस हदीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि वक्फ़ी चीज़ से खुद वक्फ़ करने वाला भी फ़ायदा उठा सकता है, जानवर पर मकान को भी क़यास कर सकते हैं। अगर कोई मकान वक्फ़ करे तो उसमें खुद भी रह सकता है। ये भी ज़ाहिर हुआ कि कुर्बानी का जानवर पर वक्फ़ ज़रूरत सवारी की जा सकती है, अगर दूध देने वाला जानवर है तो उसका दूध भी इस्तेमाल किया जा सकता है। वो जानवर बराए कुर्बानी मुतअय्यन करने के बाद अज़चे मुअत्तल नहीं बन जाता। आम तौर पर मुशिकीन अपने शिक्रिया अफ़आल के लिये मौसूम कर्दा जानवरों को बिलकुल आज़ाद समझने लग जाते हैं जो उनकी नादानी की दलील है, ग़ैरुल्लाह के नामों पर इस तरह जानवर छोड़ना ही शिक्र है।

बाब 13 : अगर वक्फ़ करने वाला माले वक्फ़ को (अपने क़ब्ज़े में रखे) दूसरे के हवाले न करे तो जाइज़ है इसलिये कि उमर (रज़ि.) ने (ख़ैबर की अपनी ज़मीन) वक्फ़ की

١٣ - بَابُ إِذَا وَقَفَ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى غَيْرِهِ فَهُوَ جَائِزٌ لِأَنَّ غَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَوْقَفَ وَقَالَ: لَا

और फर्माया कि अगर उसमें से उसका मुतवल्ली भी खाए तो कोई मुजायका नहीं है। यहाँ आपने उसकी तखसीस नहीं की थी कि खुद आप ही उसके मुतवल्ली होंगे या कोई दूसरा। नबी करीम (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) से फर्माया था कि मेरा खयाल है कि तुम अपनी ज़मीन (बाग़ बरिहाअ सदका करना चाहिये हो तो) अपने अज़ीज़ों को दे दो। उन्होंने अज़ि किया कि मैं ऐसा ही करूँगा। चुनाँचे उन्होंने अपने अज़ीज़ों और चचा के लड़कों में बांट दिया।

جَنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ، وَلَمْ يَخْصُ  
إِنْ وَلِيَهُ عُمَرُ أَوْ غَيْرُهُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لَأَبِي  
طَلْحَةَ: ((أَرَأَيْتَ أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْأَقْرَبِينَ))،  
فَقَالَ: أَلْعَلَّ، لَقَسَمَهَا فِي أَقَارِبِهِ وَتَبَنَى  
عُمَهُ.

**तशरीह:** तो मा'लूम हुआ कि वक्फ़ करने वाला अपने वक्फ़ को अपने कब्ज़े में भी रख सकता है जैसा कि हज़रत इमर (रज़ि.) के फ़ैअल से साबित है। जुम्हूर इलमा का यही क़ौल है और मालिकिया वग़ैरह के नज़दीक वक्फ़ उस वक़्त तक सहीह नहीं होता जब तक माले वक्फ़ को अपने कब्ज़ा से निकालकर दूसरे के कब्ज़े में न दे। जुम्हूर की दलील हज़रत इमर, हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के अफ़आल हैं। उन सबने अपने औकाफ़ को अपने ही कब्ज़ा में रखा था। उसका नफ़ा ख़ैरात के कामों में सर्फ़ (खर्च) करते। बाब के तहत ज़िक्र कर्दा अफ़र हज़रत इमर (रज़ि.) से मा'लूम हुआ कि हज़रत इमर (रज़ि.) खुद भी मुतवल्ली रह सकते थे क्योंकि औहज़रत (ﷺ) ने उससे मना नहीं किया और जब हज़रत इमर (रज़ि.) मुतवल्ली हो सके तो उनको उसमें से खाना भी दुस्त होगा, बाब का यही मतलब है। इसलिये वक्फ़ को आम और ख़ास दो क़िस्मों पर बांट दिया गया है। जिससे मुराद वो औकाफ़ होते हैं जिनका असल मक्सूद कुछ तो उमूरे दीनी और कारे हाए ख़ैर में इमदाद करना है और कुछ ख़ास अशख़ास या ख़ास किसी जमाअत की नफ़ा रसानी है। वक्फ़ ख़ास जिनका मक्सूद असली वाकिफ़ के अयाल व अतफ़ाल या अक़रबा के लिये आज़ूका मुहय्या करना हो, लम्बी मा'नी वक्फ़ के बाँध देना, हब्स कर देना है और असल में ये लफ़ज़ छोड़े और ऊँट वग़ैरह के बाँधने में इस्तेमाल किया जाता है और उलमाए इस्लाम की इस्तिलाह में वक्फ़ से मुराद किसी कारेख़ैर के लिये अपना माल दे देना। वक्फ़ की ता'रीफ़ ये भी की गई है कि किसी जायदाद मिस्ल अराज़ी व मकानात वग़ैरह के हक्के मिलिकियत से दस्त बरदार रहकर अल्लाह की राह में उसको इस तरह से दे देना कि अल्लाह के बन्दे को उससे फ़ायदा हो बशर्ते कि माले मौकूफ़ वक्फ़ करने के वक़्त वाकिफ़ का अपना हो। वाकिफ़ अपने कब्ज़ा व मिलिकियत की शर्त भी लगा सकता है। किसी दूसरे मुक़ाम पर उसकी तफ़सील आएगी।

**बाब 14 : अगर किसी ने यूँ कहा कि मेरा घर अल्लाह की राह में सदका है, फुकरा वग़ैरह के लिये सदका होने की कोई वज़ाहत नहीं की**

तो वक्फ़ जाइज़ हुआ अब उसको इख़्तियार है उसे वो अपने अज़ीज़ों को भी दे सकता है और दूसरों को भी क्योंकि सदका करते हुए किसी की तखसीस नहीं की थी। जब अबू तलहा (रज़ि.) ने कहा कि मेरे अम्वाल में मुझे सबसे ज़्यादा पसन्दीदा बरिहाअ का बाग़ है और वो अल्लाह के रास्ते में सदका है तो नबी करीम (ﷺ) ने उसे जाइज़ करार दिया था (हालाँकि उन्होंने कोई तअय्युन नहीं की थी कि वो ये किससे देंगे) लेकिन कुछ लोग

١٤ - بَابُ إِذَا قَالَ: دَارِيْ صَدَقَةٌ  
لِلّٰهِ، وَلَمْ يُبَيِّنْ لِلْفُقَرَاءِ

أَوْ غَيْرِهِمْ فَهُوَ جَائِزٌ وَيَضَعُهَا فِي الْأَقْرَبِينَ  
أَوْ حَيْثُ أَرَادَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لَأَبِي طَلْحَةَ  
حِينَ قَالَ أَحَبُّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بَرِيخَاءُ وَإِنَّهَا  
صَدَقَةٌ لِلّٰهِ، فَأَجَازَ النَّبِيُّ ﷺ. وَقَالَ  
بَعْضُهُمْ: لَا يَجُوزُ حَتَّى يُبَيِّنَ لِمَنْ،  
وَالأَوَّلُ أَصَحُّ.

शाफ़िइया ने कहा कि जब तक ये न बयान कर दे कि सद्का किस लिये है, जाइज़ नहीं होगा और पहला क़ौल ज़्यादा सहीह है।

हज़रत अबू त़लहा ने मुज्जल तौर पर अपना बाग़ आँहज़रत (ﷺ) के हवाले कर दिया और आप (ﷺ) ने वापस फ़र्माते हुए उसे उनके क़राबतदारों में तक्सीम करने का हुक्म दिया, किसी क़राबतदार की तख़्सीस नहीं की। इसी से मक़सदे बाब प्राबित हुआ।

**बाब 15 : किसी ने कहा कि मेरी ज़मीन या मेरा बाग़ मेरी (मरहूमा) माँ की तरफ़ से सद्का है तो ये भी जाइज़ है ख़वाह इसमें भी इसकी वज़ाहत न की हो कि किसके लिये सद्का है**

2756. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यअला बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्होंने इकिमा से सुना, वो बयान करते थे कि हमें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सअद बिन उबादा (रज़ि.) की माँ अम्रह बिनते मसऊद का इतिक्काल हुआ तो वो उनकी ख़िदमत में मौजूद नहीं थे। उन्होंने आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरी वालिदा का जब इतिक्काल हुआ तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर नहीं था। क्या अगर मैं कोई चीज़ सद्का करूँ तो क्या उनको फ़ायदा पहुँच सकता है? आपने इब्बात में जवाब दिया तो उन्होंने कहा कि मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मेरा मिख़राफ़ नामी बाग़ उनकी तरफ़ से सद्का है। (दीगर मक़ाम : 2762, 2770)

हज़रत सअद बिन उबादा ग़ज़्व-ए-दूमतुल जन्दल में आँहज़रत (ﷺ) के साथ गये हुए थे, पीछे से उनकी मुहतरमा वालिदा का इतिक्काल हो गया। मिख़राफ़ उस बाग़ का नाम था या उसके माँ नी बहुत मेवेदार के हैं।

**बाब 16 : किसी ने अपनी कोई चीज़ या लौण्डी, गुलाम या जानवर सद्का या वक्फ़ किया तो जाइज़ है**

(मज़लब ये कि माल मुश्तरक माल मन्कुला का भी वक्फ़ दुरुस्त है)

2757. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे अब्दुर्रहमान इब्ने अब्दुल्लाह बिन कअब ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन कअब ने बयान किया कि मैंने कअब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अर्ज़ किया या

١٥- بَابُ إِذَا قَالَ أَرْضِي أَوْ  
بُسْتَالِي مَدَّةً عَنْ أُمِّي فَهُوَ جَائِزٌ،

وَإِنْ لَمْ يُسِنَّ لِمَنْ ذَلِكَ  
٢٧٥٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا  
مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ:  
أَخْبَرَنِي يَحْيَى أَنَّهُ سَمِعَ عِكْرِمَةَ يَقُولُ:  
أَتَانَا ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ  
سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَوَقَّعَتْ أُمُّهُ  
وَهُوَ غَائِبٌ عَنْهَا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ  
أُمِّي تَوَقَّعَتْ وَأَنَا غَائِبٌ عَنْهَا، أَيَقْبَلُهَا  
شَيْءٌ إِنْ تَصَدَّقْتُ بِهَا عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)).  
قَالَ: فَإِنِّي أَشْهَدُكَ أَنَّ خَالِطِي الْمُوَحَّرَافَ  
مَدَّةً عَنْهَا)).  
[طريقه ٣: ٢٧٦٢، ٢٧٧٠.]

١٦- بَابُ إِذَا تَصَدَّقَ أَوْ وَفَّ  
بَعْضَ مَالِهِ

أَوْ بَعْضَ رَقَبَتِهِ أَوْ ذَوَابِهِ فَهُوَ جَائِزٌ  
٢٧٥٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا  
الْثَّبْتُ عَنْ غَزْوَلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ:  
أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنُ  
كَثِيرٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَثِيرٍ قَالَ: سَمِعْتُ

रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरी तौबा (ग़ज़व-ए-तबूक में न जाने के कुसूर की) कुबूल होने का शुक्राना ये है कि मैं अपना माल अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के रास्ते में दे दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर अपने माल का एक हिस्सा अपने पास ही बाक़ी रखो तो तुम्हारे हक़ में ये बेहतर है। मैंने अर्ज़ किया कि फिर मैं अपना ख़ैबर का हिस्सा अपने पास महफूज़ रखता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 2947, 2948, 2949, 2950, 3088, 3556, 3889)

ये क़अब बिन मालिक (रज़ि.) वो सज़ाबी हैं जो अपने दो साथियों समेत जंगे तबूक में आँहज़रत (ﷺ) के साथ नहीं निकले थे। आप एक मुद्दत तक ज़ेरे इताब (गुस्से व नाराज़गी के शिकार) रहे। आख़िर अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कुबूल कर ली उसका मुफ़्फ़सल ज़िक़्र किताबुल् मग़ाज़ी में आया। हदीस से ये भी निकला कि सारा माल ख़ैरात कर देना मकरूह है और ये भी निकला कि माले मन्कूला का वक़फ़ करना भी जाइज़ है।

### बाब 17 : अगर सद्का के लिये किसी को वकील करे और वकील उसका सद्का फेर दे

2758. और इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया कि मुझे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सलमा ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने (इमाम बुखारी रहने कहा कि) मैं समझता हूँ कि ये रिवायत उन्होंने अनस (रज़ि.) से की है कि उन्होंने बयान किया (जब सूरह आले इमरान की) ये आयत नाज़िल हुई कि तुम नेकी हर्गिज़ नहीं पा सकते जब तक उस माल में से ख़र्च न करो जो तुमको ज़्यादा पसन्द है तो अबू तलहा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तबारक व तआला अपनी किताब में फ़र्माता है कि, तुम नेकी हर्गिज़ नहीं पा सकते जब तक कि उस माल में से ख़र्च न करो जो तुमको ज़्यादा पसन्द है और मेरे अम्वाल में सबसे पसन्द मुझे बीरेहाज़ है। बयान किया कि बीरे हाज़ एक बाग़ था। रसूलुल्लाह (ﷺ) भी उसमें तशरीफ़ ले जाया करते, उसके साए में बैठते और उसका पानी पीते (अबू तलहा ने कहा कि) इसलिये वो अल्लाह अज़्ज व जल्ल की राह में सद्का और रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये है। मैं उसकी नेकी और उसके ज़ख़ीरे आख़िरत होने की उम्मीद रखता हूँ। पस या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जिस तरह अल्लाह आपको बताए उसे ख़र्च कीजिए।

كَتَبَ بَنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، إِنْ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ، قَالَ: «أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ». قُلْتُ: لِيَأْتِي أَمْسِكْ سَهْمِي الَّذِي بِخَيْرٍ.

[أطرافه ٣ : ٢٩٤٧، ٢٩٤٨، ٢٩٤٩،

٢٩٥٠، ٣٠٨٨، ٣٥٥٦، ٣٨٨٩]

### ١٧- بَابُ مَنْ تَصَدَّقَ إِلَى وَكِيلِهِ ثُمَّ رَدَّ الْوَكِيلُ إِلَيْهِ

٢٧٥٨- وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ لَا أَغْلَمُهُ إِلَّا عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ جَاءَ أَبُو طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى فِي كِتَابِهِ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنْ أَحَبُّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بَيْرِخَاءٌ - قَالَ: وَكَانَ حَدِيثَهُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَسْتَظِلُّ بِهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَائِهَا - فَهِيَ إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ أَزْجُو بَرَةً وَذَخْرَةً، فَصَغَفَهَا أَيْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَيْثُ أَرَاكَ اللَّهُ. فَقَالَ رَسُولُ

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया वाह-वाह शाबाश अबू तलहा! ये तो बड़ा नफ़ा बख़्श माल है, हम तुमसे इसे कुबूल करके फिर इसे तुम्हारे ही हवाले कर देते हैं और अब तुम उसे अपने अज़ीज़ों-अक़ारिब को दे दो। चुनौचे अबू तलहा (रज़ि.) ने वो बाग़ अपने अज़ीज़ों को दे दिया। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जिन लोगों को बाग़ आपने दिया था उनमें उबई और हस्सान (रज़ि.) थे। उन्होंने बयान किया कि हस्सान (रज़ि.) ने अपना हिस्सा मुआविया (रज़ि.) को बेच दिया तो किसी ने उनसे कहा कि क्या आप अबू तलहा (रज़ि.) का दिया हुआ माल बेच रहे हैं? हस्सान (रज़ि.) ने जवाब दिया कि मैं ख़जूर का एक साअ रूप्यों के एक साअ के बदल क्यूँ न बेचूँ। अनस (रज़ि.) ने कहा ये बाग़ बनी जुदैला के मुहल्ले के करीब था जिसे मुआविया (रज़ि.) ने (बतौर क़िला के) ता' मीर किया था। (राजेअ: 1461)

**तशरीह:** बाब का तर्जुमा इससे निकला कि अबू तलहा ने आँहज़रत (ﷺ) को वकील किया था, आप (ﷺ) ने उनका स़दका कुबूल करके फिर उन्हीं को वापस कर दिया और फ़र्माया कि उसे अपने अक़रबा में तक्सीम कर दो। हज़रत हस्सान ने अपना हिस्सा हज़रत मुआविया के हाथ बेच डाला था जब लोगों ने ए'तिराज़ किया तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं ख़जूर का एक साअ रूप्यों के एक साअ के बदले में क्यूँ न बेचूँ या'नी ऐसी क़ीमत फिर कहाँ मिलेगी गोया ख़जूर चाँदी के हमवज़न बिक रही है। कहते हैं सिर्फ़ हस्सान का हिस्सा उस बाग़ में हज़रत मुआविया ने एक लाख दिरहम में ख़रीदा। चूँकि अबू तलहा (रज़ि.) ने ये बाग़ मुअय्यन लोगों पर वक्फ़ किया था लिहाज़ा उनको अपना हिस्सा बेचना दुरुस्त हुआ। कुछ ने कहा कि अबू तलहा ने उन लोगों पर वक्फ़ करते वक़्त ये शर्त लगा दी थी कि अगर उनको हाज़त हो तो बेच सकते हैं वरना माल वक्फ़ की बेअ दुरुस्त नहीं। क़सरे बनी हुदैला की तफ़सील हाफ़िज़ साहब यूँ फ़र्माते हैं व अम्मा क़स्र बनी हुदैला व हुव बिल्मुहमलति मुसग़रून व वहमुन मन क़ालहू बिल्जीमि फनुसिब इलैहि मुल्कस्स बिस्ब बिल्मुजावरति व इल्ला फल्लज़ी बनाहू हुव मुआवियतुब्नु अबी सुफ़यान व बनू हुदैला बिल्मुहमलति मुसग़रून बत्नु म्मिनलअन्सारि व हुम बनू मुआवियतुब्नि अम्रिब्नि मालिक अन्नज्जार व कानू बितिल्कल्बुक़ अति फउरिफ़त बिहिम फलम्मा इशतरा मुआवियतु हिस्मत हस्सानिन बना फीहा हाज़लक़स्र फउरिफ़त बिक़स्रि बनी हुदैला ज़कर ज़ालिक अम्फ़नु शैबत व गैरहू फी अख़बारिल्मदीनति मिलकुहु मुल्हदीकतुल् मज्कूर: व लम यक्रिफ़हा अलैहिम इज लौ वकफ़हा मा साग लिहस्सानि अन्ध्यबीअहा व वक़अ फी अख़बाल्मदीनति लिमुहम्मदिब्निल्हसनिल्मख़जूमी मिन तरीक़ि अबी बक्रिब्नि हज़्मिन अन्न प्रमन हिस्सति हस्सानिन मिअतु अल्फ़िदिहमिन कबजहा मिम्मुआवियतब्नि अबी सुफ़यान (खुलासतु फतहिलबारी) और लेकिन क़सरे बनी हुदैला हाए मुहमला के साथ और जिसने उसे जीम के साथ नक़ल किया ये उसका वहम है। ये पड़ौस की वजह से बनू हुदैला की तरफ़ मन्सूब हो गया था वरना उसके बनाने वाले हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान हैं और बनू हुदैला अन्सार का एक कबीला है। ये बनू मुआविया बिन अम्र बिन मालिक नज्जार हैं जो यहाँ रहा करते थे पस उन ही से ये मन्सूब हो गया। पस जब हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने हज़रत हस्सान (रज़ि.) वाला हिस्सा ख़रीद लिया तो वहाँ ये क़िला बनाया जो क़सरे बनू हुदैला के नाम से मौसूम हो गया। उसे अम्र बिन शैबा वगैरह ने अख़बारुल मदीना में ज़िक़र किया है, हज़रत हस्सान ने अपना हिस्सा हज़रत मुआविया को बेच दिया। इससे प़ाबित हुआ कि अगर उसको उन पर वक्फ़ करते तो उसे हस्सान बेच नहीं सकते थे और अख़बारे मदीना में है कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने हस्सान को उनके हिस्से की क़ीमत एक लाख दिरहम अदा की थी। अल्लामा क़स्तालानी (रह.) फ़र्माते हैं व अजाब आख़र बिअन्न अब्बा तल्हत हीन वक्रफ़हा शरत जवाज़ बैइहिम इन्दल्इतियाजि फइन्नशर्त बिहाज़शर्ति क़ाल बअज़ुहुम लिजवाज़िही

اللّٰهُ ﷻ: ((بَيْعَ يَا أَبَا طَلْحَةَ، ذَلِكَ مَالٌ رَّابِعٌ قَبْلَتَاهُ مِنْكَ وَرَدَدْنَاهُ عَلَيْكَ، فَاجْعَلْهُ فِي الْأَقْرَبِينَ)). فَصَدَّقَ بِهِ أَبُو طَلْحَةَ عَلَى ذَوِي رَحِمِهِ. قَالَ وَكَانَ مِنْهُمْ أَبِي رَحْسَانٌ. قَالَ: وَبَاعَ حَسَّانٌ حِصَّتَهُ مِنْهُ مِنْ مُعَاوِيَةَ فَقِيلَ لَهُ: تَبِيعَ صَدَقَةَ أَبِي طَلْحَةَ؟ فَقَالَ: أَلَا أَيْبَغُ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ بِصَاعٍ مِنْ ذَرَاهِمٍ؟ قَالَ: وَكَانَتْ يِلْكُ الْحَدِيقَةُ فِي مَوْضِعٍ قَصْرٍ بَنَى جَدَّتِلَهُ الَّذِي بَنَاهُ مُعَاوِيَةُ)). (راجع: 1461)

वल्लाहु अलमुया'नी हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने जब उसे वक़्त किया तो हाज़त के वक़्त उन लोगों को बेचने की इज़ाज़त दे दी थी और इस शर्त पर वक़्त जाइज़ है। लफ़्ज़े हुदैला को कुछ ने जीम के साथ जुदैला नक़ल किया है। कुछ ने कहा कि वो सहीह हाअ मज़मूमा के साथ हुदैला है वल्लाहु अलाम।

### बाब 18 :

(सूरह निसा में) अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जब (मीराज़ की तक्सीम) के वक़्त रिश्तेदार (जो वारि़ष न हों) और यतीम और मिस्कीन आ जाएँ तो उनको भी तरके में से कुछ कुछ खिला दो (और अगर खिलाना न हो सके तो) अच्छी बात कहकर नरमी से टाल दो।

जो लोग खुद वारि़ष हों, उनको तो यतीम और मिस्कीन और दूर के नाते वालों को जो वारि़ष नहीं हैं तक्सीम के वक़्त कुछ देना वाजिब था और जो खुद वारि़ष न हों जैसे वारि़षे औला उसको ये हुक्म था कि नरमी से जवाब दे दो। ये हुक्म इस्तिदाए इस्लाम में था फिर उस सद्के का वुजूब जाता रहा और ये आयत मन्सूख हो गई, अब कुछ ने कहा अब भी ये हुक्म बाक़ी है आयत मन्सूख नहीं है।

2759. हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अबाना ने बयान किया अबू बिश्र जा'फ़र से, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि कुछ लोग गुमान करने लगे हैं कि ये आयत (जिसका ज़िक्र इन्वान में हुआ) मीराज़ की आयत से मन्सूख हो गई है, नहीं क्रसम अल्लाह की आयत मन्सूख नहीं हुई अल्बत्ता लोग उस पर अमल करने में सुस्त हो गए हैं। तरके के लेने वाले दो तरह के होते हैं, एक तो वो जो खुद वारि़ष हों उसको तो चटाने का हुक्म है (अज़ीज़ों, यतीमों और मुहताजों को जो तक्सीम के वक़्त आ जाएँ) दूसरा जो खुद वारि़ष नहीं हो उसको नरमी से जवाब देने का हुक्म है, वो यूँ कहे मियों में तुमको देने का इख़्तियार नहीं रखता।

(दीगर मक़ाम : 4576)

### ١٨ - بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ﴾

٢٧٥٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ الْغُمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَّانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «إِنْ نَأَسَ فَرَحُونَ أَنْ يُلَوَّ الْأَمَةُ نُسِبَتِ، وَلَا وَاللَّهِ مَا نُسِبَتْ، وَلَكِنَّهَا مِمَّا تَهَازَنَ النَّاسُ، هُمَا وَالْإِن: وَالْإِن: وَذَلِكَ الَّذِي يَرْزُقُ، وَوَال: لَا يَرِثُ فَذَلِكَ الَّذِي يَقُولُ بِالْمَغْرُوبِ، يَقُولُ لَا أَمْلِكُ لَكَ أَنْ أُعْطِيكَ».

[طرقه ١ : ٤٥٧٦]

**तशरीह :** सनद में मज़कूर हज़रत सईद बिन जुबैर असदी कूपी हैं, जलीलुल क़द्र ताबेईन मे से एक थे भी हैं। इन्होंने अबू मसरूद (रज़ि.), इब्ने अब्बास (रज़ि.), इब्ने इमर (रज़ि.), इब्ने जुबैर और अनस (रज़ि.) से इल्म हासिल किया और उनसे बहुत से लोगों ने। माहे शाबान 95 हिजरी में जबकि उनकी उम्र 49 साल की थी, हज़ाज बिन यूसुफ ने इनको क़त्ल कराया और खुद हज़ाज रमज़ान में मरा और कुछ के नज़दीक उसी साल शव्वाल में और यूँ भी कहते हैं कि उनकी शहादत के छः माह बाद मरा। उसके बाद हज़ाज किसी के क़त्ल पर क़ादिर न हुआ। क्योंकि सईद ने उसके लिये दुआ की थी जबकि हज़ाज उनसे मुखातिब होकर बोला कि बताओ तुमको किस तरह क़त्ल किया जाए मैं तुमको उसी तरह क़त्ल करूँगा। सईद बोले कि एक हज़ाज! तू अपना क़त्ल जिस तरह होना चाहे वो बतला, इसलिये कि अल्लाह की क्रसम! जिस तरह तू मुझको क़त्ल करेगा उसी तरह आख़िरत में मैं तुझको क़त्ल करूँगा। हज़ाज बोला, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमको मुआफ़ कर दूँ? बोले कि अगर अफ़व वाक़ेअ हुआ तो वो अल्लाह की तरफ़ से होगा और तेरे लिये उसमें कोई बराअत व बहाना नहीं। हज़ाज ये सुनकर बोला कि इनको ले जाओ और क़त्ल कर डालो। पस जब उनको दरवाज़े से बाहर निकाला तो ये हँस पड़े। इसकी



खबर हज्जाज को पहुँचाई गई तो हुक्म हुआ कि उन्हें वापस लाओ। लिहाज़ा वापस लाया गया तो उनसे पूछा कि अब हंसने का क्या सबब था। बोले कि मुझको अल्लाह के मुकाबले में तेरी बेबाकी और अल्लाह तआला की तेरे मुकाबिल में हिल्म व बुर्दबारी पर तअज्जुब होता है। हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि खाल बिछाई जाए तो बिछाई गई फिर हुक्म दिया कि इनको क़त्ल कर दिया जाए। उसके बाद सईद बिन जुबैर ने फ़र्माया कि वज्जहतु वज्हिय लिल लज़ी अल्ख़ (अल् अन्ज़ाम : 79) या'नी मैंने अपना रुख सबसे मोड़कर उस अल्लाह की तरफ़ कर लिया है कि जो ख़ालिके ७२ ममान और ज़मीन है और मैं शर्क करने वालों में से नहीं हूँ। हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि इनको क्रिब्ले की मुखालिफ़ सिम्त करके मज्बूत बाँध दिया जाए। सईद ने फ़र्माया, फ़अथनमा तुवल्लू फ़षम्मा वज्जहुल्लाह (अल् बकर : 115) जिस तरफ़ भी तुम रुख करोगे उसी तरफ़ अल्लाह है। अब हज्जाज ने हुक्म दिया कि सर के बल औंठा कर दिया जाए। सईद ने फ़र्माया कि मिन्हा खलक़नाकुम व फीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुखिरजुकुम तारतन उड़रा (ताहा : 555) हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि इसको ज़िन्ह कर डालो। सईद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं शहादत देता और हुज्जत पेश करता हूँ, इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई और इलाह नहीं वो एक है, उसका कोई शरीक नहीं और इस बात की कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। ये हुज्जते ईमानी मेरी तरफ़ से सम्भाल यहाँ तक कि तू मुझसे क़यामत के दिन मिले।

फिर सईद ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! हज्जाज को मेरे बाद किसी के क़त्ल पर क़ादिर न कर। उसके बाद खाल पर उनको ज़िन्ह कर दिया गया। कहते हैं कि हज्जाज उसके क़त्ल के बाद पन्द्रह रातों और जिया, उसके बाद हज्जाज के पेट में कीड़ों की बीमारी पैदा हो गई। हज्जाज ने हकीम को बुलवाया ताकि मुआयना कर ले। हकीम ने एक गोश्त का एक सड़ा हुआ टुकड़ा मंगवाया और उसको धागे में पिरोकर उसके गले से उतारा और कुछ देर तक छोड़े रखा, उसके बाद हकीम ने उसको निकाला तो देखा कि खून से भरा हुआ है। हकीम समझ गया कि अब ये बचने वाला नहीं। हज्जाज अपनी बक्रिया ज़िन्दगी में चीखता चिल्लाता रहता था कि मुझे और सईद को क्या हुआ कि जब मैं सोता हूँ तो मेरा पाँव पकड़ कर हिला देता है। सईद बिन जुबैर इराक़ की खुली आबादी में दफ़न किये गये। !फ़रल्लाहु लहू (अक्माल)

## बाब 19 : अगर किसी को अचानक मौत आ जाए तो उसकी तरफ़ से ख़ैरात करना मुस्तहब है और मय्यत की नज़्रों को पूरी करना

2760. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि एक सहाबी (सअद बिन इब्बादा) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि मेरी वालिदा की मौत अचानक धाक़े अ हो गई, मेरा ख़याल है कि अगर उन्हें बातचीत का मौक़ा मिलता तो वो स़दका करतीं तो क्या मैं उनकी तरफ़ से ख़ैरात कर सकता हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उनकी तरफ़ से ख़ैरात कर। (राजेअ : 1388)

١٩- بَابُ مَا يُسْتَحَبُّ لِمَنْ تُوُفِيَ  
فُجَاءَةً أَنْ يَتَصَدَّقُوا عَنْهُ،

وَقَضَاءِ النُّلُورِ عَنِ الْمَيِّتِ

٢٧٦٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أُمِّي أَتَيْتْ نَفْسَهَا، وَأَرَاهَا لَوْ تَكَلَّمَتْ تَصَدَّقَتْ، أَفَأَتَصَدَّقُ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ، تَصَدَّقْ عَنْهَا)). [راجع: ١٣٨٨]

इस हदीष से मा'लूम हुआ कि वारिषों की तरफ़ से मय्यत को ख़ैरात और स़दके का प्रवाब पहुँचता है। अहले हदीष का इस पर इतिफ़ाक़ है लेकिन मुअतज़िला ने इसका इन्कार किया है। दूसरी रिवायत में है सअद ने पूछा कौनसी ख़ैरात अफ़ज़ल है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया पानी पिलाना। इसको इमाम निसाई ने रिवायत किया है।

2761. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी इब्ने शिहाब से, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें इब्ने अब्बास (रजि.) ने कि सअद बिन अब्बादा (रजि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मसला पूछा, उन्होंने अर्ज किया कि मेरी माँ का इतिक़ाल हो गया है और उसके ज़िम्मे एक नज़ थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनकी तरफ से नज़ पूरी कर दे। (दीगर मक़ाम : 6698, 6959)

۲۷۶۱- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ سَعْدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ اسْتَفْتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا نَذْرٌ، فَقَالَ: ((أَقْضِهِ عَنْهَا)).

[طرفاه بی: ۶۶۹۸، ۶۹۵۹]

बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) ने उनको माँ की नज़ पूरा करने का हुक्म दिया, मा'लूम हुआ कि माँ-बाप के इस क्रिस्म के फ़राइज़ की अदायगी ओलाद पर लाज़िम है

## बाब 20 : वक्रफ और सदक्रा

### पर गवाह करना

2762. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ ने खबर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने खबर दी कहा कि मुझे यअला बिन मुस्लिम ने खबर दी, उन्होंने इब्ने अब्बास (रजि.) के गुलाम इकिरमा से सुना और उन्हें इब्ने अब्बास (रजि.) ने खबर दी कि कबीला बनी साअदा के भाई सअद बिन अब्बादा (रजि.) की माँ का इतिक़ाल हुआ तो वो उनकी खिदमत में हाज़िर नहीं थे (बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ के साथ ग़ज़व-ए-दूमतुल जन्दल में शरीक थे) इसलिये वो आँहज़रत (ﷺ) के पास आए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरी वालिदा का इतिक़ाल हो गया है और मैं उस वक़्त मौजूद नहीं था तो अगर मैं उनकी तरफ से ख़ैरात करूँ तो उन्हें उसका फ़ायदा पहुँचेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! सअद (रजि.) ने उस पर कहा कि मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मेरा बाग़ मिख़राफ़ नामी उनकी तरफ से ख़ैरात है। (राजेज़ : 2756)

## ۲۰- بَابُ الْإِشْهَادِ فِي الْوَقْفِ

### وَالصَّدَقَةِ

۲۷۶۲- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى أَنَّهُ سَمِعَ عِكْرِمَةَ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَقُولُ أَنَّنَا ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ سَعْدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَخَا بَنِي سَاعِدَةَ - تَوَقَّعَتْ أُمُّهُ وَهِيَ غَائِبَةٌ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أُمِّي تَوَقَّعَتْ وَأَنَا غَائِبٌ عَنْهَا، فَهَلْ يَنْفَعُهَا شَيْءٌ إِنْ تَصَدَّقْتُ بِهَا عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ: فَإِنِّي أَشْهَدُ أَنَّ خَائِطِي الْمِخْرَافَ صَدَقَتْ عَنْهَا)).

[راجع: ۲۷۵۶]

**तशरीह :** लफ़ज़ मिख़राफ़ के बारे में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, क़ौलुहु अल्मिख़राफ़ बिकस्रि अबवलही व सुक़ुनिल्मुअजमति व आखिरुहु फा अय अल्मकानुल्मुबिर सुमिय बिजालिक लिमा युख़रफ़ मिन्हु अय युज्ना मिनष्मरति तक्लु शजरतु मिख़राफ़िन व मिष्मारिन क़ालहुल्ख़त्ताबी व वक्रअ फ़ी रिवायति अब्दिरज़ज़ाक़ अल्मख़रफ़ बग़ैरि अलिफ़िन व हुव इस्मुल्हाइतिल्मज़क़ूर वल्हाइतिल् बुस्तानि (फ़त्ह) या'नी मिख़राफ़ फलदार पेड़ को कहते हैं, उस बाग़ का नाम ही मिख़राफ़ हो गया था।

## बाब 21 : सूरह निसा में अल्लाह तआला का ये इर्शाद कि,

और यतीमों को उनका माल पहुँचा दो और सुथरे माल के ब दले गंदा माल मत लो। और उनका माल अपने माल के साथ गड़ु-मड़ु करके न खाओ बेशक ये बहुत बड़ा गुनाह है और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम लड़कियों में ईसाफ़ न कर सकोगे तो दूसरी औरतें जो तुम्हें पसन्द हों, उनसे निकाह कर लो।

या'नी अपनी ख़राब चीज़ यतीम के माल में शरीक कर दी और अच्छी चीज़ ले ली, ऐसा न करो क्योंकि यतीम का माल तुम्हारे लिये हाराम और गंदा है और तुम्हारी चीज़ गो ख़राब हो मगर हलाल और सुथरी है।

2763. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी जुहरी से कि इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) उनसे हदीष बयान करते थे, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से आयत, वइन ख़िफ़तुम अल्ला तुक्सितू फ़िल् यतामा फ़न्किहू मा ताबा लकुम मिन निसा (तर्जुमा ऊपर गुजर चुका है) का मतलब पूछा तो आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उससे मुराद वो यतीम लड़की है जो अपने वली की ज़ेरे-परवरिश हो, फिर वली के दिल में उसका हुस्न और उसके माल की तरफ़ से रबते निकाह पैदा हो जाए मगर उससे कम महर पर जो वैसी लड़कियों का होना चाहिये तो इस तरह निकाह करने से रोका गया लेकिन ये कि वली उनके साथ पूरे महर की अदायगी में ईसाफ़ से काम लें (तो निकाह कर सकते हैं) और उन्हें लड़कियों के सिवा दूसरी औरतों से निकाह करने का हुक्म दिया गया। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा तो अल्लाह अज़्ज व जल्ल ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि, आपसे लोग औरतों के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हिदायत करता है, हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर अल्लाह तआला ने इस आयत में बयान कर दिया कि यतीम लड़की अगर जमाल और माल वाली हो और (उनके वली) उनसे निकाह करने के ख़्वाहिशमन्द हों लेकिन पूरा महर देने में उनके (ख़ानदान के) तरीक़ों की पाबन्दी न कर सकें तो (वो उनसे निकाह न करें) जबकि माल और हुस्न की कमी की वजह से उनकी तरफ़ उन्हें कोई रबत न होती हो तो उन्हें वो छोड़ देते और उनके सिवा किसी दूसरी औरत को तलाश करते। रावी ने कहा

۲۱- يَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

يُورَثُوا الْيَتَامَى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْحَبِثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا اَمْوَالَهُمْ اِلَى اَمْوَالِكُمْ اِنَّهٗ كَانَ حَرٰمًا كَبِيْرًا. وَاِنْ حِفْتُمْ اَنْ لَا تَقْسُطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ [النساء: ۱۲-۱۳].

۲۷۶۳- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : (( كَانَ غُرُوْةُ بِنِ الرُّمَيْثِ يُحَدِّثُ اَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ﴿وَاِنْ حِفْتُمْ اَنْ لَا تَقْسُطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ﴾ قَالَتْ: هِيَ الْيَتِيْمَةُ فِي حَجَرٍ وَلِيَّهَا، فَيَرْغَبُ فِي جَمَالِهَا وَمَالِهَا، وَيُرِيدُ اَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِاَذْنِ مَنْ سَبَّهَ نِسَابَهَا، فَتُهْوَا عَنْ نِكَاحِهَا اِلَّا اَنْ يَقْسُطُوا فِي اِكْمَالِ الصَّدَاقِ، وَاَمْرُوْا بِنِكَاحٍ مِنْ سِوَاهُنَّ مِنَ النِّسَاءِ، قَالَتْ عَائِشَةُ: ثُمَّ اسْتَفْتَى النَّاسُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بَعْدَ، فَاَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ﴾ قَالَتْ: فَيَنْ اِنَّ اللهَ فِيْ هٰذِهِ اَنْ الْيَتِيْمَةَ اِذَا كَانَتْ ذَاتَ جَمَالٍ وَمَالٍ رَغِبُوا فِي نِكَاحِهَا وَلَمْ يُلْحِقُوْهَا بِسَبِّهَا بِاِكْمَالِ الصَّدَاقِ، فَاِذَا كَانَتْ مَرْغُوْبَةً عَنْهَا فِي قَلِيْلِ الْمَالِ وَالْجَمَالِ تَرَكَوْهَا وَانْمَسَوْا غَيْرَهَا مِنَ النِّسَاءِ. قَالَ: فَكَمَا

जिस तरह ऐसे लोग रबत न होने की सूरत में उन यतीम लड़कियों को छोड़ देते, उसी तरह उनके लिये ये भी जाइज नहीं कि जब उन लड़कियों की तरफ उन्हें रबत हो तो उनके पूरे महर के मामले में और उनके हुक्क अदा करने में इंसान से काम लिये बगैर उनसे निकाह करें। (राजेअ : 2494)

فَرَّكَوْنَهَا حِينَ يَرْفَعُونَ عَنْهَا فَلَيْسَ لَهُمْ  
أَنْ يَنْكِحُوهَا إِذَا رَفَعُوا فِيهَا إِلَّا أَنْ  
يُقْضَىٰ لَهَا الْأَوْثَىٰ مِنَ الصَّنَاقِ وَيُطَوَّرَ  
حَقُّهَا. [راجع: ٢٤٩٤]

**तशरीह :** तारीख (इतिहास) व रिवायतों में मज़कूर है कि यतीम लड़कियाँ जो अपने वली की तर्बियत में होती थीं और वो लड़की उस वली के माल वगैरह में बवजह क़राबत के शरीक होती तो अब दो सूरतें पेश आती थीं, कभी तो ये सूरत पेश आती कि वो लड़की खूबसूरत होती और वली को उसके माल व जमाल दोनों की रबत की वजह से उससे निकाह की ख्वाहिश होती और वो थोड़े से महर पर उससे निकाह कर लेता क्योंकि कोई दूसरा शख्स उस लड़की का दावेदार नहीं होता था और कभी ये सूरत पेश आती कि यतीम लड़की सूरत शकल में हसीन न होती मगर उसका वो वली ये खयाल करता कि दूसरे किसी से उसका निकाह कर दूँगा तो लड़की का माल मेरे कब्जे से निकल जाएगा। इस मस्लिहत से वो निकाह तो उस लड़की से तबअन व करहन कर लेता मगर वैसे उससे कुछ रबत न रखता। उस पर इस आयत का नुजूल हुआ और औलिया (वलियों) को इर्शाद हुआ कि अगर तुमको इस बात का डर है कि तुम ऐसी यतीम लड़कियों के बारे में इंसान न कर सकोगे और उनके महर और उनके साथ हुस्ने मुआशरत में तुमसे कोताही होगी तो तुम उनसे निकाह मत करो बल्कि और औरतों जो तुमको मरगूब हों उनसे एक तो क्या चार तक की तुमको इजाज़त है। कायदा-ए-शरइय्या के मुताबिक उनसे निकाह कर लो ताकि यतीम लड़कियों को भी नुकसान न पहुँचे क्योंकि तुम उनके हुक्क के हामी रहोगे और तुम भी किसी गुनाह में न पड़ोगे। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है कि बहरहाल औलिया का फ़र्ज़ है कि यतीम बच्चों और बच्चियों के माल की अल्लाह से डरते हुए हिफ़ाज़त करें और उनके बालिग होने पर जैसे उनके हक में बेहतर जानें वो माल उनको अदा कर दें। वल्लाहु आलम

**बाब 22 : सूरह निसा में अल्लाह का ये इर्शाद कि,**  
और यतीमों की आजमाइश करते रहो यहाँ तक कि वो बालिग हो जाएँ तो अगर तुम उनमें सलाहियत देख लो तो उनके हवाले उनका माल कर दो और उनके माल को जल्द जल्द इंसान से और इस खयाल से कि ये बड़े हो जाएँगे मत खा डालो, बल्कि जो शख्स मालदार हो तो यतीम के माल से बचा रहे और जो शख्स नादार हो वो दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसमें से खा सकता है और जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उन पर गवाह भी कर लिया करो और अल्लाह हिसाब करने वाला काफ़ी है। मर्दों के लिये भी उस तरके में हिस्सा है जिसको वालिदैन् और नज़दीक के क़राबतदार छोड़ जाएँ और औरतों के लिये भी उस तरके में हिस्सा है जिसको वालिदैन् और नज़दीक क़राबतदार छोड़ जाएँ। (उस मतरूका) में से थोड़ा या ज़्यादा ज़रूर एक हिस्सा मुकरर है, आयत में हसीबन के मा'नी काफ़ी के हैं।

٢٢- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿وَأَنذَرُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ  
لِيَأْتِيَهُمْ مِنْهُمْ رِشْوَةٌ فَاذْلَمُوا إِلَيْهِمْ  
أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن  
يَكْبُرُوا، وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ، وَمَنْ  
كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ، فَإِذَا  
دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ،  
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا. لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا  
تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ  
مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ  
أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا﴾ [النساء:

(अन निसा : 6-7)

۷-۶. حَسْبًا يَفْنَى كَالِی.

जाहिलियत के ज़माने में अरब लोग तरका में सिर्फ़ मर्दों का हक़ समझते थे, औरतों को कोई हिस्सा नहीं मिलता था। अल्लाह ने ये बुरी रस्म बातिल कर दी और औरत मर्द सबका हिस्सा मुकर्रर कर दिया, अब भी बहुत सी जाहिल क़ौमों में जो मुसलमान हैं मगर लड़की का हिस्सा देने का रिवाज नहीं है। ये सरासर जुल्म और बातिल रस्म है, लड़की को भी इस्लाम ने हिस्सेदार ठहराया है, उसका भी हिस्सा अदा करना ज़रूरी है, इस्लाम और अदयाने साबिका (पूर्ववर्ती धर्मों) में औरतों की हैशियत पर एक मा'लूमात से भरा मक़ाला इज़तमआब मौलवी सय्यद उमैर अली एम. ए. बैरिस्टाईट लॉ ने अपनी क़ानूनी किताब जामेउल अहक़ाम फ़ी फ़िक्हुल इस्लाम में क़लम के हवाले किया है जिसका इख़्तिसार (संक्षिप्तीकरण, सारांश) दर्ज ज़ेल है।

जो इस्लाम, शारेअ इस्लाम (ﷺ) ने फ़र्माई उनसे औरतों की हालत में नुमायाँ तरफ़्फ़ी वाक़ेअ हुई, अरब में भी और उन यहूदियों में जो जज़ीरा नुमाए अरब में सुकूनत पज़ीर (निवासी) थे, औरतों की हालत बहुत ही अबतर (गिरी हुई) थी। औरत अपने बाप के घर में कनोज़ की हालत में रहती थी और अगर वो नाबालिग़ होती तो उसके बाप को उसके बेच डालने का इख़्तियार होता था। उसका बाप और बाप की वफ़ात के बाद उसका भाई जो चाहता था उसके साथ सुलूक करता था बजुज़ किसी ख़ास सूरत के बेटी बिलकुल महजुबुल अरष थी। मुस्लिमों ने अरब में औरत सिर्फ़ एक जायदादे मन्कूला समझी जाती थी और अपने बाप या शौहर की मिलिकियत का एक जुच्चे आज़म तमष्वुर की जाती थी और हर शख़्स की बीवी मिश्ल और मतरूका के उसकी बेटी और बेटियों को बतौर तरका पेदरी के मिलती थीं, इसी वजह से सौतेली माओं की शादियाँ अक़बर सौतेले बेटों के साथ हो जाती थीं, इस क़बीह रस्म को इस्लाम में ह़राम कर दिया गया।

शारेअ मुहम्मदी के बमौजिब औरत की हैशियत इल्लिस्तान की औरतों की हालत से बेहतर व बरतर है जब तक वो नाकितख़दा रहती है, अपने बाप के घर में रहती है और जब तक नाबालिग़ रहती है किसी क़दर अपने बाप के या उसके क़ायम मुक़ाम के इख़्तियार रहती है, बालिग़ हो जाने पर उसको वो तमाम हुकूके शरई हासिल हो जाते हैं जो बालिग़ और रशीद इंसान को मिलने चाहिये। वो अपने भाईयों के साथ माँ-बाप के तरके में हिस्सा बाकी है और अगरचे बेटे और बेटी के हिस्से में फ़र्क़ है मगर ये फ़र्क़ भाई और बहन के हालात का मुन्सिफ़ाना लिहाज़ करके रखा गया है। शादी के बाद भी उसके तश्ख़ीस में कुछ फ़र्क़ नहीं आता और वो एक जुदाग़ाना मेम्बर या'नी शरीके सोसायटी की हैशियत में बाकी रहती है और उसका वजूद उसके शौहर के वजद के साथ संयुक्त नहीं हो जाता, उसका माल उसके शौहर का माल नहीं हो जाता बल्कि उसका माल उसी का रहता है और वो एक ज़ाती हक़ अपनी मिलिकियत में रखती है। वो अपने क़र्जदारों पर ऐलानिया अदालत में मुक़द्दमे कर सकती है और किसी वली को शरीक करने या अपने शौहर के नाम से मुक़द्दमा करने की ज़रूरत नहीं रखती। जब वो अपने बाप के घर से अपने शौहर के मकान में जा चुकती है तब भी उसको सब हुकूके शरई वही हासिल रहते हैं जो मर्दों को हासिल हैं। तमाम हवाजिब और हुकूक जो एक औरत और ज़ौजा को हासिल होने चाहियें उसको सिर्फ़ मुरव्वत और अख़लाक़ की रू से हासिल नहीं हैं जिसका कुछ ए'तिबार नहीं है बल्कि नस्से कुआनी के बमौजिब हासिल हैं। वो अपनी जायदाद को बिला इजाज़ते शौहर मुंतक़िल कर सकती है और वो वसियत कर सकती है, वो औरों की जायदाद की वसिय्या और मुंतज़िमा मुकर्रर हो सकती है और औक़ाफ़ की मुतवल्लिया भी मुकर्रर हो सकती है।

बाब 23 : वसी के लिये यतीम के माल

—بَابُ وَمَا لِلْوَصِيِّ أَنْ يَفْعَلَ فِي

में तिजारत और मेहनत करना दुरुस्त है और फिर

مَالِ الْيَتِيمِ

मेहनत के मुत्ताबिक़ उसमें से खा लेना दुरुस्त है

وَمَا يَأْكُلُ مِنْهُ بِقَدَرِ عَمَلَيْهِ

2764. हमसे हारून बिन अश़अषने बयान किया, कहा हमसे बनू

احْتَسَبَ حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ

हाशिम के गुलाम अबू सईद ने बयान किया, उनसे सखर बिन जुवैरिया ने बयान किया नाफ़ेअ से और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि इमर (रज़ि.) ने अपनी एक जायदाद रसूलुल्लाह (ﷺ) के जमाने में वक्फ़ कर दी, उस जायदाद का नाम षप्पाथा और ये एक खजूर का बाग़ था। इमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मुझे एक जायदाद मिली है और मेरे ख़याल में निहायत इम्दह है, इसलिये मैंने चाहा कि उसे सद्का कर दूँ तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि असल माल को सद्का कर कि न बेचा जा सके और न हिबा किया जा सके और न उसका कोई धारिष बन सके, सिर्फ़ उसका फल (अल्लाह की राह में) सर्फ़ (खर्च) हो। चुनौचे इमर (रज़ि.) ने उसे सद्का कर दिया, उनका ये सद्का गाज़ियों के लिये, गुलामों को आज़ाद कराने के लिये, मुहताजों और कमज़ोरों के लिये, मुसाफ़िरों के लिये और रिश्तेदारों के लिये था और ये कि उसके निगरों के लिये उसमें कोई मुज़ायका नहीं होगा कि वो दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसमें से खाए या अपने किसी दोस्त को खिलाए बशर्ते कि उसमें से माल जमा करने का इरादा न रखता हो। (राजेअ: 2313)

इस हदीस से प्राबित हुआ कि वक्फ़ का मुतवल्ली अपनी मेहनत के बदले दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसमें से खा सकता है जैसा कि हज़रत इमर (रज़ि.) ने अपना बाग़ वक्फ़ करते वक़्त तै कर दिया था। इमाम क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, वमुताबक़तुलहदीसि लिच्छर्जुमति मिन जिहतिन अन्नल्मक्सूद जवाज़ु अख़िज़लउज्रति मिम्मालिल्यतीमि लिक्कौलि उमर बला जुनाह अला मन वलियुहु अय्याकुल मिन्हु बिल्मअरूफ़ि (क़स्तलानी) मतलब वही है जो ऊपर मज़कूर हुआ।

2765. हमसे अबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया हिशाम से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने (कुआन मजीद की इस आयत) और जो शख़्स मालदार हो वो अपने को यतीम के माल से बिलकुल रोके रखे, अल्बत्ता जो शख़्स नादार हो तो वो दस्तूर के मुताबिक़ खा सकता है, के बारे में फ़र्माया कि यतीमों के वलियों के बारे में नाज़िल हुई कि यतीम के माल में से अगर वली नादार हो तो दस्तूर के मुताबिक़ उसके माल में से ले सकता है। (राजेअ: 2212)

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ مَوْلَى تَيْهِ هَاشِمٍ حَدَّثَنَا صَخْرُ بْنُ جُوَيْرِيَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ عُمَرَ تَصَدَّقَ بِمَالٍ لَهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - وَكَانَ يَقَالَ لَهُ لَمْعٌ، وَكَانَ نَحْلًا - فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي اسْتَفَدْتُ مَالًا وَهُوَ عِنْدِي نَفِيسٌ فَأَرَدْتُ أَنْ أَتَصَدَّقَ بِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: تَصَدَّقْ بِأَصْلِهِ، لَا يَتَاغَ وَلَا يُوهَبَ وَلَا يُورَثُ، وَلَكِنْ يُنْفَقُ لِمَنْزِلِهِ، فَصَدَّقَ بِهِ عُمَرُ، فَصَدَّقَهُ بِذَلِكَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَفِي الرِّقَابِ وَالْمَسْكِينِ وَالضُّعْفَى وَأَبْنِ السَّبِيلِ وَلِلَّذِي الْقُرْبَى، وَلَا جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلَهُ أَنْ يَأْكُلَ مِنْهُ بِالْمَعْرُوفِ، أَوْ يُؤْكِلَ صَدِيقَهُ غَيْرَ مَعْمُولٍ بِهِ)).

[راجع: 2313]

٢٧٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: «وَمَنْ كَانَ غَيًّا فَلْيَتَنَفَّضْ، وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ» قَالَتْ: «أُنْزِلَتْ فِي وَالِي الْأَيْمِ أَنْ يُصِيبَ مِنْ مَالِهِ إِذَا كَانَ مُحْتَاجًا يَقْنَرُ مَالَهُ بِالْمَعْرُوفِ». [راجع: 2212]

इस हदीस से बाब का पहला हिस्सा या'नी यतीमों के माल में नेक निय्यती से तिजारत करना, फिर अपनी मेहनत के मुताबिक़ उसमें से खाना दुरुस्त है।

## बाब 23 : सूरह निसा में अल्लाह तआला का इश्राद है कि,

बेशक वो लोग जो यतीमों का माल जुल्म के साथ खा जाते हैं, वो अपने पेट में आग भरते हैं, वो ज़रूर दहकती हुई आग ही में झाँक दिये जाएँगे। (अन निसा : 10)

इन्हे अबी हातिम अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से हदीष में अज़राज में मन्कूल है कि आपने दो ज़ख़ में ऐसे लोग देखे जिनके पेट ऊँटों के पेट जैसे हैं। जिनमें दो ज़ख़ का दहकता हुआ पत्थर डाला जा रहा है और वो नीचे से निकल जाता है। आप (ﷺ) को बतलाया गया ये वो लोग हैं जो यतीमों का माल खा जाया करते थे।

2766. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे शौर बिन ज़ैद मदनी ने बयान किया, उनसे अबू गैब ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सात गुनाहों से जो तबाह कर देने वाले हैं, बचते रहो। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वो कौन-सा गुनाह है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, जादू करना, किसी की नाहक जान लेना कि जिसे अल्लाह तआला ने हाराम करार दिया है, सूद खाना, यतीम का माल खाना, लड़ाई में से भाग जाना, पाकदामन भोली-भाली ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाना। (दीगर मक़ाम : 5764, 6857)

कबीरा गुनाहों की ता'दाद उन सात पर ख़त्म नहीं है और भी बहुत से गुनाह इस ज़ैल में बयान किये गये हैं। कुछ इलमाने उनकी तफ़्सीलात पर मुस्तफ़िल किताबें लिखी हैं, बहरहाल ये गुनाह हैं जिनका मुर्तकिब अगर बग़ैर तौबा किये मर गया तो यकीनन वो हलाक हो गया या'नी ज़हन्नम रसीद हुआ। बाब की मुताबक़त यतीम का माल खाने से है जिनकी मज़म्मत आयते मज़क़ूर फ़िल बाब में की गई है। इस हदीष के जुम्ला रावी मदनी हैं और हज़रत इमाम ने उसे किताबुत् तिब वल् मुहारिबीन में भी निकाला है।

## बाब 24 : अल्लाह तआला का सूरह बक्रः में ये फ़र्माना कि,

आप (ﷺ) से लोग यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि जहाँ तक हो सके उनके मालों में बेहतरी का ख़याल रखना ही बेहतर है और अगर तुम उनके साथ (उनके अम्वाल में) साथ मिल-जुलकर रहो तो (बहरहाल) वो भी तुम्हारे ही भाई हैं और अल्लाह तआला संवारने वाले और फ़साद पैदा करने वाले को ख़ूब

## ۲۳- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا﴾ (النساء: ۱۰).

۲۷۶۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ الْمَدَنِيِّ عَنْ أَبِي الْفَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُفْسِدَاتِ)). قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا هُنَّ؟ قَالَ: ((الشُّرْكُ بِاللَّهِ، وَالسَّحَرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبَا، وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ، وَالزَّوْثَى يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْفَافِلَاتِ)).

[طرمه في : ۵۷۶۴، ۶۸۵۷].

## ۲۴- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى، قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ، وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ، وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَغْنَيْتُكُمْ، إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾

जानता है और अगर अल्लाह तआला चाहता तो तुम्हें तंगी में मुब्तला कर देता, बिला शुब्हा अल्लाह तआला गालिब और हिक्मत वाला है, (कुआन की इस आयत में) लअनतकुम के मा'नी हैं कि तुम्हें हर्ज और तंगी में मुब्तला कर देता और (सूरह ताहा में लफ़्ज़) तहनत के मा'नी मुँह झुक गये, उस अल्लाह के लिये जो जिन्दा है और सब कुछ सम्भालने वाला।

2767. और इमाम बुखारी (रह.) ने कहा हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि इब्ने इमर (रज़ि.) को कोई वस्ती बनाता तो वो कभी इन्कार न करते। इब्ने सीरीन ताबेई (रह.) का महबूब मशगला ये था कि यतीमों के माल वा जायदाद के सिलसिले में उनके ख़ैर-ख़्वाहों और वलियों को जमा करते ताकि उनके लिये कोई अच्छी मूरत पैदा करने के लिये गौर करें। ताऊस ताबेई (रह.) से जब यतीमों के बारे में कोई सवाल किया जाता तो आप ये आयत पढ़ते कि, और अल्लाह फ़साद पैदा करने वाले और संवारने वाले को ख़ूब जानता है। अता (रह.) ने यतीमों के बारे में कहा ख़्वाह मा' मूली क्रिस्म के लोगों में हों या बड़े दर्जे के, उसका वली उसके हिस्से में से जैसे चाहे उसके लायक हो, वैसा उस पर खर्च करे।

[البقرة : २२०] لَا تَجْعَلُوا مَوْتَكُمْ وَمَوْتَكُمْ وَغَنَت : خَصَفَتْ.

٢٧٦٧- وَقَالَ لَنَا سُلَيْمَانُ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ : مَا وَدَّ ابْنُ عُمَرَ عَلَى أَحَدٍ وَصِيَّتُهُ. وَكَانَ ابْنُ سِيرِينَ أَحَبَّ الْأَشْيَاءِ إِلَيْهِ فِي مَالِ الْيَتِيمِ أَنْ يَجْتَمِعَ إِلَيْهِ نَصَحَاؤُهُ وَأَوْلِيَاؤُهُ فَيَنْظُرُوا إِلَيْهِ هُوَ خَيْرٌ لَهُ. وَكَانَ طَاوُسٌ إِذَا سِيلَ عَنْ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ الْيَتَامَى قَرَأَ : ﴿وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُنْفِئَةَ مِنَ الْمُصْلِحِ﴾. وَقَالَ عَطَاءٌ فِي يَتَامَى الصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ : يُنْفِقُ الْوَلِيُّ عَلَى كُلِّ إِنْسَانٍ يَقْتَرِهِ مِنْ جَنْبِهِ.

**तशीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का कौल व क़ाल लना सुलैमानु हद़्थना हम्माद अल्ख ये हदीष मौसूलन है मुअल्लक नहीं है क्योंकि सुलैमान बिन हर्ब इमाम बुखारी (रह.) के शूयूख में से हैं और तअ जब है ऐनी से कि उन्होंने हाफ़िज़ इब्ने हज़र पर ये ए' तिराज़ जमाया कि इस हदीष का मौसूल होना किसी लफ़्ज़ से नहीं पाया जाता हालाँकि उसमें साफ़ क़ाला लना के लफ़्ज़ से मा' लूम होता है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सुलैमान से सुना और ये इमाम बुखारी (रह.) का कमाल एहतिyतन है कि उन्होंने ने ऐसे मक्रामात पर हद़्थना या अख़बरना का लफ़्ज़ इस्ते' माल नहीं फ़र्माया क्योंकि सुलैमान ने बुखारी को ये रिवायत बतौर तहदीष के न सुनाई होगी बल्कि वो किसी और से मुखातिब होंगे और इमाम बुखारी (रह.) ने सुन लिया होगा (वहीदी)

हदीषे मौसूल या मुत्तसिल व मुअल्लक की ता' रीफ़ शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी के लफ़्ज़ों में ये है, फइल्लम यस्कुत राविम्पिरूवाति मिनल्बय्थिनि फल्हदीषु मुत्तसिलुन व युसम्मा अदमुस्सुकूति इत्तिसालन व इन सक़त वाहिदुन औ अक्पर फल्हदीषु मुन्कतिउन व हाज़स्सुकूतु इन्क्रिताउन वस्सुकूतु अम्मा अय्यकून मिन अब्वलिस्सनदि व युसम्मा मुअल्लकन व हाज़ल्इस्क्रातु तअलीक़न वस्साक्रितु क़द यकूनु वादिन औ क़द यकूनु अक्पर व क़द युहज़ुफ़ु तमामस्सनदि कमा हुव आदतुल्मुसन्निफ़ीन यकूलून क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) वत्तअलीकातु क़यीरतुन फी तराजिमि सहीहिलबुखारी व लहा हुक्मुल्इत्तिसालि लिअन्नहु इल्तज़म फीहाज़लिकताबि अल्ला यातिय इल्ला बिस्मिहीह (मुक़दम: मिश्कात) या' नी सनद के रावियों में से कोई रावी साक्रित न हो, उस हदीष को मुत्तसिल (या मौसूल) कहेंगे और इस अदमे सुकूत को दूसरा नाम इत्तिसाल का दिया गया है और अगर कोई एक रावी या ज़्यादा साक्रित हों पस वो हदीष मुन्कतअ है इस सुकूत को इन्क़ताअ कहते हैं। कभी सुकूत रावी-ए-सनद में से होता है, ऐसी हदीष को मुअल्लक



कहते हैं और इस इस्कात को तअलीक़ कहते हैं, साक़ित कभी एक रावी होता है कभी ज़्यादा जैसा कि मुसन्निफ़ीन की आदत है कि वो बग़ैर सनद बयान किये काला रसूलुल्लाह (ﷺ) कह देते हैं और इस किस्म की तअलीकात सहीह बुखारी के अब्बाब में बक़रत हैं और उन सबके लिये इतिज़ाम ही का हुक्म है क्योंकि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इल्तिज़ाम किया हुआ है कि वो इस किताब में सिर्फ़ सहीह अह्दादीष व आधार ही को नक़ल करेंगे।

तर्जुमतुल बाब में मज़कूर आयते शरीफ़ा व यस्अलूनक अनिल्यतामा (अल बक़र : 220) का शाने नुज़ूल ये है कि जब आयत व ला तक्वबू मालल्यतीम (अल अन्आम : 156) नाज़िल हुई तो लोगों ने डर के मारे यतीमों का खाना-पीना सब बिलकुल अलग कर दिया पस वो कुछ बच जाता तो ख़राब हो जाता, ये अम्र बहुत मुश्किल हुआ तो उन्होंने ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत-अक्दस में इस मुश्किल का ज़िक्र किया। उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई और बतलाया गया कि उनको अपने साथ ही खिलाओ-पिलाओ, उनके माल की हिफ़ाज़त करो, अगर तुम्हारी निय्यत दुरुस्त होगी तो अल्लाह ख़ूब जानता है। वल्लाहु यअलमुल्मुप्सिद मिनल्मुस्लिहि (अल बक़र : 220)

## बाब 25 : सफ़र और हज़र में यतीम से काम लेना जिसमें उसकी भलाई हो और माँ और सौतेले बाप का यतीम पर नज़र डालना

2768. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम बिन क़रीर ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन उलय्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपके साथ कोई ख़ादिम नहीं था। इसलिये अबू तलहा (रज़ि.) (जो मेरे सौतेले बाप थे) मेरा हाथ पकड़कर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ले गए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अनस समझदार बच्चा है ये आपकी ख़िदमत किया करेगा। अनस (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने आपकी सफ़र और हज़र में ख़िदमत की, आप (ﷺ) ने मुझसे कभी किसी काम के बारे में जिसे मैंने कर दिया हो, ये नहीं फ़र्माया कि ये काम तुमने इस तरह क्यूँ किया, इसी तरह किसी ऐसे काम के बारे में जिसे मैंने कर सका हूँ आप (ﷺ) ने ये नहीं फ़र्माया कि तूने ये काम इस तरह क्यूँ नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 6038, 6911)

हज़रत अबू तलहा ने जो हज़रत अनस (रज़ि.) के सौतेले बाप थे, उनको आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में वक़फ़ कर दिया जबकि आप (ﷺ) एक जंग के लिये निकल रहे थे, इसी से मक्क़सदे बाब प्राबित हुआ। हज़रत अनस (रज़ि.) क़ाबिले सद मुबारकबाद हैं कि उनको सफ़र और हज़र में पूरे दस साल आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत का मौक़ा मिला और आँहज़रत (ﷺ) के अख़लाक़े फ़ाज़िला का बहुत क़रीब से उन्होंने मुआयना किया और क़यामत तक के लिये वो ख़ादिमे रसूलुल्लाह (ﷺ) की हैप्पियत से दुनिया में यादगार रह गए (रज़ियल्लाहु व अरज़ाहु) ये अबू तलहा ज़ैद बिन सहल अंसारी शौहर उम्मे सुलैम (वालिदा अनस) के हैं और इस हद्दीष के तमाम रावी बसरी हैं जिस तरह कि क़स्तलानी ने बयान किया।

## बाब 26 : अगर किसी ने एक ज़मीन वक़फ़ की (जो मशहूर व मा'लूम है) उसकी हद्दे बयान नहीं

٢٥- بَابُ اسْتِخْدَامِ الْيَتِيمِ فِي السَّفَرِ وَالْحَضَرِ إِذَا كَانَ صَاحِبًا لَهُ وَنَظَرِ الْأُمِّ أَوْ زَوْجِهَا لِلْيَتِيمِ

٢٧٦٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى عَنْ ابْنِ إِسْرَافِيلَ عَنْ كَثِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي الْمَدِينَةِ نَسِيَ لَهُ خَادِمًا، فَأَخَذَ أَبُو طَلْحَةَ بِيَدِي فَأَنْطَلَقَ بِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أُنْسًا غُلَامًا كَمَسَ فَلْيُخْذْكَ، قَالَ: فَعَدَمْتُ فِي السَّفَرِ وَالْحَضَرِ، مَا قَالَ لِي بِشَيْءٍ مَنَعَهُ لِيَمْ صَنَعْتَ هَذَا هَكَذَا؟ وَلَا بِشَيْءٍ لَمْ أَصْنَعْ لِيَمْ لَمْ تَصْنَعْ هَذَا هَكَذَا؟) [طرفاء: ٦٠٣٨، ٦٩١١]

٢٦- بَابُ إِذَا وَقَفَ أَرْضًا وَلَمْ يُبَيِّنْ

## कीं तो ये जाइज होगा, इसी तरह ऐसी ज़मीन का सदका देना

الْحُدُودُ فَهُوَ جَائِزٌ،

وَكَذَلِكَ الصَّدَقَةُ

2769. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे इस्हाक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप (रज़ि.) बयान करते थे कि अबू तलहा (रज़ि.) खजूर के बाग़ात के ए'तिबार से मदीना के अंसार में सबसे बड़े मालदार थे और उन्हें अपने तमाम मालों में मस्जिदे नबवी के सामने बीरेहाअ का बाग़ा सबसे ज़्यादा पसन्द था। खुद नबी करीम (ﷺ) भी उस बाग़ा में तशरीफ़ ले जाते और उसका मीठा पानी पीते थे। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जब ये आयत नाज़िल हुई, नेकी तुम हर्गिज़ हासिल नहीं करोगे जब तक अपने उस माल से न खर्च करो जो तुम्हें पसन्द हों, तो अबू तलहा (रज़ि.) उठे और आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला फ़र्माता है कि, तुम नेकी हर्गिज़ नहीं हासिल कर सकोगे जब तक अपने उन मालों में से न खर्च करो जो तुम्हें ज़्यादा पसन्द हों, और मेरे अम्बाल में मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द बीरेहाअ है और ये अल्लाह के रास्ते में सदका है, मैं अल्लाह की बारगाह से उसकी नेकी और ज़ख़ीर-ए-आख़िरत होने की उम्मीद रखता हूँ, आपको जहाँ अल्लाह तआला बताए उसे खर्च करें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, शाबाश! ये तो बड़ा फ़ायदेमन्द माल है या (आपने बजाय राबेह के) रायेह कहा, ये शक अब्दुल्लाह बिन मस्लमा रावी को हुआ था..... और जो कुछ तुमने कहा है मैंने सब सुन लिया है और मेरा ख़याल है कि तुम उसे अपने नाते वालों को दे दो। अबू तलहा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं ऐसा ही करूँगा। चुनाँचे उन्होंने अपने अज़ीज़ों और अपने चचा के लड़कों में तक्सीम कर दिया। इस्माईल, अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और यह्या बिन यह्या ने मालिक के वास्ते से। राबेह के बजाय रायेह बयान किया है। (राजेअ: 1461)

٢٧٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ أَكْثَرَ الْأَنْصَارِ بِالْمَدِينَةِ مَالًا مِنْ نَخْلٍ، وَكَانَ أَحَبَّ مَالِهِ إِلَيْهِ بَرِخَاءُ مُسْتَقْبَلَةُ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيهَا طَيِّبٍ، قَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا نَزَلَتْ ﴿لَنْ تَأْكُلُوا الْبَرَّ حَتَّى تَفْقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ قَامَ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: ﴿لَنْ تَأْكُلُوا الْبَرَّ حَتَّى تَفْقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنْ أَحَبُّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بَرِخَاءُ، وَإِنِّهَا صَدَقَ اللَّهُ أَزْجُوا بِرِخَاءَ وَذَخَرَهَا عِنْدَ اللَّهِ، لَصَغْفَهَا حَيْثُ أَرَاكَ اللَّهُ، فَقَالَ: ((بَعْ، ذَلِكَ مَالٌ رَابِعٌ - أَوْ رَابِعٌ، شَكُّ ابْنِ مَسْلَمَةَ - وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْأَقْرَبِينَ)). قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفَعَلَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ)). وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ وَيَحْيَى بْنُ يَحْيَى عَنْ مَالِكٍ: ((رَابِعٌ)).

[راجع: ١٤٦١]

बाब के तर्जुमे की मुताबक़त साफ़ ज़ाहिर है कि अबू तलहा ने बीरेहाअ को सदका कर दिया। उसके हद्द बयान नहीं किये क्योंकि बीरेहाअ बाग़ मशहूर व मअरूफ़ था, हर कोई उसको जानता था अगर कोई ऐसी ज़मीन वक्फ़ करे कि वो मअरूफ़ व मशहूर न हो तब तो उसकी हद्द बयान करनी ज़रूरी है।

लफ़्ज़ बीरेद्दाअ दो कलिमों से मुक़ब है पहला कलिमा बीर है जिसके मा'नी कुँए के हैं दूसरा कलिमा हाअ है उसके बारे में इख़िताफ़ है कि किसी मर्द या औरत का नाम है या किसी जगह का नाम जिसकी तरफ़ ये कुँआ मन्सूब किया गया है या ये कलिमा ऊँटों के डांटने के लिये बोला जाता था और इस जगह ऊँट बक़रत चराए जाते थे, लोग उनको डांटने के लिये लफ़्ज़ हाअ इस्ते'माल करते। उसी से ये लफ़्ज़ बीरेद्दाअ मिलकर एक कलिमा बन गया। फिर हज़रत अबू तलहा का सारा बाग़ ही उस नाम से मौसूम हो गया क्यों कि ये कुँआ उसके अंदर था लफ़्ज़ बरिख़ बरिख़ वाह! वाह!! की जगह बोला जाता था।

2770. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमको रौह बिन उबादा ने ख़बर दी, कहा हमको ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया कि मुझसे अम्म बिन दीनार ने बयान किया इकिमा से और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि एक सहाबी सअद बिन उबादा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि उनकी माँ का इतिहास हो गया है। क्या अगर वो उनकी तरफ़ से ख़ैरात करें तो उन्हें उसका फ़ायदा पहुँचेगा आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि हाँ। इस पर उन सहाबी ने कहा कि मेरा एक पुरमेवा बाग़ है और मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैंने वो उनकी तरफ़ से सद्का कर दिया। (राजेअ: 2756)

٢٧٧٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِنَّهُ تَوَلَّيْتُ أَيْفُفَهَا إِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ: فَإِنْ لِي بِخَرَفَةٍ، وَأَشْهَدُكَ أَنِّي قَدْ تَصَدَّقْتُ بِهَا عَنْهَا)).

[راجع: ٢٧٥٦]

यहाँ भी इस बाग़ की हदूद को बयान नहीं किया गया। इससे मक्सदे बाब प्राबित हुआ। ये भी प्राबित हुआ कि इसाले प्रवाब के लिये कुँआ या कोई बाग़ वक्फ़ कर देना बेहतरिन् सदक़-ए-जारिया है कि मख़लूक इससे फ़ायदा हासिल करती रहेगी और जिस के लिये बनाया गया उसको प्रवाब मिलता रहेगा।

**बाब 27 : अगर कई आदमियों ने अपनी मुश्तरक ज़मीन जो मशाअ थी (तक्सीम नहीं होती थी) वक्फ़ कर दी तो जाइज़ है**

2771. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह यज़ीद बिन हुमैद ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने (मदीना में) मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और बनी नज़ार से फ़र्माया तुम अपने इस बाग़ का मुझसे मोल कर लो। उन्होंने कहा हर्गिज़ नहीं अल्लाह की क़सम! हम तो अल्लाह ही से इसका मोल लेंगे। (राजेअ: 234)

٢٧- بَابُ إِذَا وَقَفَ جَمَاعَةٌ أَرْضًا مُشَاعًا فَهِيَ جَائِزٌ

٢٧٧١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي النَّجَّاحِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَاءِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ لَا تَمْتُونِي بِخَالِطِكُمْ هَذَا))، قَالُوا: لَا وَاللَّهِ لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ)). [راجع: ٢٣٤]

**तशरीह:** गोया बनी नज़ार ने अपनी मुश्तरक ज़मीन मस्जिद के लिये वक्फ़ कर दी तो बाब का मतलब निकल आया लेकिन इब्ने सअद ने तब्कात में वाक़दी से यूँ रिवायत की है कि आपने ये ज़मीन दस दीनार में ख़रीदी और अबूबक्र (रज़ि.) ने क़ीमत अदा की। इस सूरत में भी बाब का मक्सद निकल आएगा इस तरह से कि पहले बनी नज़ार ने उसको वक्फ़ करना चाहा और आपने उस पर इकार न किया। वाक़दी की रिवायत में ये भी है कि आपने क़ीमत इसलिये दी कि दो यतीम बच्चों का भी उसमें हिस्सा था। (वहीदी) ये हदीष अब्बाबुल जनाइज़ में भी गुज़र चुकी है।

### बाब 28 : वक्फ की सनद क्यों कर लिखी जाए

2772. हमसे मुसद्द बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, उमर (रज़ि.) को खैबर में एक ज़मीन मिली (जिसका नाम षम्रा था) तो आप नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मुझे एक ज़मीन मिली है और उससे इम्दा माल मुझे कभी नहीं मिला था, आप उसके बारे में मुझे पश्वरा देते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर चाहे तो असल जायदाद अपने क़रज़ में रोक रख और उसके मुनाफ़े को ख़ैरात कर दे। चूनाँचे उमर (रज़ि.) ने उसे इस शर्त के साथ सद्क़ा (वक्फ़) किया कि असल ज़मीन न बेची जाए, न हिबा की जाए और न विरासत में किसी को मिले और फुकरा, रिश्तेदार, गुलाम आज़ाद कराने, अल्लाह के रास्ते (के मुजाहिदों) मेहमानों और मुसाफ़िरों के लिये (वक्फ़ है) जो शरूअ भी इसका मुतवल्ली हुआ अगर दस्तूर के मुताबिक़ उसमें से खाए या अपने किसी दोस्त को खिलाए तो कोई हर्ज नहीं बशर्त कि माल जमा करने का इरादा न हो। (राजेअ : 2313)

इस रिवायत में ये ज़िक्र नहीं है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने वक्फ़ की ये शर्तें लिखवा दीं, मगर इमाम बुखारी (रह.) उस रिवायत की तरफ़ इशारा किया जिसको अबू दाऊद ने निकाला। उसमें यही है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये शर्तें मुअयक्बीब की क़लम से लिखवा दीं जिसमें ये था कि असल जायदाद को कोई बेअ या हिबा न कर सके, उसी को वक्फ़ कहते हैं। नाते वालों में मालदार, और नादार सब आ गए तो बाब का मक़सद निकल आया (वहीदी)। हज़रत उमर (रज़ि.) का ये वाकिया 7 हिजरी से ता'ल्लुक रखता है। आपने शुरू में उसका मुतवल्ली हज़रत हफ़सा (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन को बनाया था और ये लिखा था कि हाज़ा मा कतब अब्दुल्लाहि उमरू अमीरुलूमिनीन फी षमगिन अन्नहू इला हफ़सत आशत तुन्फिकु हैषु अराहल्लाहु फइ तुषफ़ियत फइला जविरायि मिन अहलिहा वक्फ़ नामा का मतन लिखने वाले मुअयक्बीब थे और गवाह अब्दुल्लाह बिन अरक़म। आँहज़रत (ﷺ) के मुबारक अहद में ये जुबानी वक्फ़ था, बाद में हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहदे हुक्मत में उसे बाज़ाब्ता तहरीर करा दिया (विधिवत लिखवा दिया)। (फ़तहूल बारी)

### बाब 29 : मालदार और मुहताज और मेहमान सब पर वक्फ़ कर सकता है

2773. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उमर (रज़ि.) को खैबर में एक जायदाद मिली तो आपने नबी करीम (ﷺ) की

### ۲۸- بَابُ الْوَقْفِ كَيْفَ يُكْتَبُ؟

۲۷۷۲- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثْمَانَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِخَيْرِ أَرْضٍ، قَالِيَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: «رَأَيْتُ أَرْضًا لَمْ أَحِبَّ مَالًا لَمْ أَفْسِدْ مِنْهُ، فَكَيْفَ تَأْمُرُنِي بِهَا؟ قَالَ: «إِنْ فُتِنْتُ خَشِنْتُ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتُ بِهَا»». قَصَدْتُ عُمَرَ أَنَّهُ لَا يَبَاغُ أَصْلُهَا وَلَا يُوهَبُ وَلَا يُؤْزَتُ فِي الْفُقَرَاءِ وَالرَّقَابِ وَلِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالصَّيْفِ وَابْنِ السَّبِيلِ، لَا جُنَاحَ عَلَيَّ مَنْ وَلَّيَهَا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ أَوْ يُطْعِمَ صَدِيقًا غَيْرَ مُعْمُولٍ لِيهِ»». [راجع: ۲۳۱۳]

### ۲۹- بَابُ الْوَقْفِ لِلْغَنِيِّ وَالْفَقِيرِ وَالصَّيْفِ

۲۷۷۳- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثْمَانَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَجَدَ مَالًا

ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके बारे में ख़बर दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर चाहो तो इसे स़दका कर दो। चुनौचे आपने फ़ुकरा, मसाकीन, रिश्तेदारों और मेहमानों के लिये उसे स़दका कर दिया। (राजेअ: 1213)

بَخِيرَ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ قَالَ: ((إِنْ جِئْتَ تَصَدَّقْتَ بِهَا)) فَصَدَّقَ بِهَا فِي الْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَذِي الْقُرْبَى وَالضُّعْفَى. [راجع: 1213]

**तशरीह:** हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, फ़ीहि जवाज़ुलवक्फ़ि अललअगनियाइ लिअन्न ज़विल्कुर्बा वज़ज़ैफ़ि लम युक्कय़िद बिल्हाज़ति व हुवलअसहहु इन्दशशाफ़िइय्यति (फ़तह) या'नी इससे अग्निया (मालदारों) पर भी वक्फ़ करने का जवाज़ निकला, इसलिये कि कराबतदारों और मेहमानों के लिये हाज़तमन्द होने की क़ैद नहीं लगाई और शाफ़िइया के नज़दीक यही सहीह मसलक है।

### बाब 30 : मस्जिद के लिये ज़मीन का वक्फ़ करना

2774. हमसे इस्हाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस्समद ने बयान किया, कहा कि मैं ने अपने वालिद (अब्दुल वारि़) से सुना, उनसे अबुत् तियाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने मस्जिद बनाने के लिये हुक्म दिया और फ़र्माया ऐ बनू नज्जार! अपने बाग़ की मुझसे क़ीमत ले लो। उन्होंने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम! हम तो उसकी क़ीमत सिर्फ़ अल्लाह से मांगते हैं। (राजेअ: 234)

٣٠- بَابُ وَقْفِ الْأَرْضِ لِلْمَسْجِدِ  
٢٧٧٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو الْيَاقِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((رَأَى قَدِمَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ الْمَدِينَةَ أَمَرَ بِالْمَسْجِدِ وَقَالَ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ لَا تُؤْنِسُونِي بِحَائِطِكُمْ هَذَا))، قَالُوا: لَا وَاللَّهِ لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ)).

[راجع: 234]

**तशरीह:** लजअललबुख़ारी अरारदरइ अला मन ख़स्स जवाज़ुलवक्फ़ि बिल्मस्जिदि व कअन्नहू काल कद नफ़ज वक्फ़लअर्ज़िल्मज्कूरति क़ब्ल अन तकून मस्जिदन फदल्ल अला अन्न सिहतल्वक्फ़ि ला तुखतस्सु बिल्मस्जिदि व वजहुअख़िज़ही मिन हदीषिल्बाबि अन्नललज़ीन कालू ला नल्लुबु धमनहा इल्ला इलल्लाहि कअन्नहुम तसहकू बिल्अज़िल्मज्कूरति लिहतमि इन्इकादिल्वक्फ़ि क़ब्लल्बनाइ फयूख़जु मिन्हु अन्न मन वक्फ़ अर्ज़न अला अय्यबिनयहा मस्जिदन यन्नअकिदुल्वक्फ़ क़ब्लल्बनाइ (फ़तह)। खुलासा इस इबारात का ये है कि मस्जिद के नाम पर ता'मीर से पहले ही किसी ज़मीन का वक्फ़ करना दुरुस्त है कुछ लोग उसको जाइज़ नहीं कहते, उनकी तर्दीद करना इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद है। बनू नज्जार ने पहले ज़मीन को वक्फ़ कर दिया था बाद में मस्जिद नबवी वहाँ ता'मीर की गई।

### बाब 31 : जानवर और घोड़े और सामान और सोना—चाँदी वक्फ़ करना

ज़ुहरी (रह.) ने ऐसे शख़्स के बारे में फ़र्माया था जिसने हज़ार दीनार अल्लाह के रास्ते में वक्फ़ कर दिये और उन्हें अपने एक ताजिर गुलाम को दे दिया था कि उससे कारोबार करे और उसके नफ़े को वो शख़्स मुहताजों और नाते वालों के लिये स़दका किया। क्या वो शख़्स उन अशरफ़ियों के नफ़ा में से कुछ खा सकता है?

٣١- بَابُ وَقْفِ الدُّوَابِّ وَالْكَرَاعِ وَالْفَرُوضِ وَالصَّامِتِ

قَالَ الزُّهْرِيُّ لِمَنْ جَعَلَ أَلْفَ دِينَارٍ لِي سَبِيلَ اللَّهِ، وَدَفَعَهَا إِلَى غُلَامٍ لَهُ تَاجِرٌ يَنْجُرُ بِهَا، وَجَعَلَ رِبْحَهُ صَدَقَةً لِلْمَسْكِينِ وَالْأَفْرَاقِينَ هَلْ لِلرَّجُلِ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ رِبْحِ

उसने उसनफ़ा को मोहताजों पर सदका न किया हो जब भी उसमें से खा नहीं सकता।

ذَلِكَ الْاَنْفَرُ هَيْثَا وَانْ لَمْ يَكُنْ جَتَلْ  
رَبِحَهَا صَدَقَةٌ لِّی الْمَسْكِينِ؟ قَالَ لَیْسَ  
لَهُ اَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا.

बाब का तर्जुमा का मक़सद जायदादे मन्कूला का वक्फ़ करना है। कुराअ काफ़ के ज़म्मा के साथ घोड़ों को कहा जाता है। लफ़्ज़ उरुज नक़दी के अलावा दीगर अस्बाब पर बोला जाता है और सामित सोने-चाँदी पर मुस्तअमल है (फ़तह)। खुलासा ये कि जायदादे मन्कूला और ग़ैर-मन्कूला बशराइते मा'भूला सबका वक्फ़ करना जाइज़ है क्योंकि वो अशरफ़ियाँ अल्लाह की राह में निकालें तो गोया सदका कर दें, अब सदके का माल अपने खर्च में क्यूँ कर ला सकता है, इस अषर को इब्ने वहब ने अपने मौता में वस्ल किया है। (वहीदी)

2775. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे यहा बिन क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह इमरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने अपना एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में (जिहाद करने के लिये) एक आदमी को दे दिया। ये घोड़ा औहज़रत (ﷺ) को हज़रत इमर (रज़ि.) ने दिया था, इसलिये कि आप जिहाद में किसी को उस पर सवार करें। फिर इमर (रज़ि.) को मा'लूम हुआ कि जिस शख्स को ये घोड़ा मिला था, वो उस घोड़े को बाज़ार में बेच रहा है। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या वो उसे खरीद सकते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर्गिज़ उसे न खरीद। अपना दिया हुआ सदका वापस न ले। (रज़ेअ: 1489)

٢٧٧٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى  
حَدَّثَنَا غَيْثٌ عَنْهُ قَالَ : حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ  
ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ عُمَرَ  
خَفَلَ عَلَى فَرَسٍ لَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَطْلَافًا  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَحْمِلُ عَلَيْهَا وَجَلًا،  
فَأَخْبَرَ عُمَرُ أَنَّهُ قَدْ وَلَقَّاهَا بِبَيْعِهَا، فَسَأَلَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَبَاعَهَا، فَقَالَ: ((لَا  
يَبَاعُهَا وَلَا تُرْجَعُ لِي صَدَقَتُكَ)).

[راجع: ١٤٨٩]

गो हज़रत इमर (रज़ि.) ने ये घोड़ा सदका दिया था मगर वक्फ़ का हुक्म भी सदका पर क़यास किया, उस पर ये ए'तिराज़ होता है कि वक्फ़ में तो अमल जायदाद रोक ली जाती है और सदका में अमल जायदाद की मिल्कियत मुंतक़िल की जाती है, इसलिये ये क़यास सहीह नहीं। अब ये कहना कि हज़रत इमर (रज़ि.) ने ये घोड़ा वक्फ़ किया था, इसलिये सहीह नहीं हो सकता कि अगर वक्फ़ किया होता तो वो शख्स जिसको घोड़ा मिला था, उसको बेचने के लिये बाज़ार में क्यूँ कर खड़ा कर सकता।

### बाब 32 : वक्फ़ की जायदाद का एहतिमाम करने वाला अपना खर्च उसमें से ले सकता है

2776. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अउरज ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो आदमी मेरे वारिष हैं, वो रुपया अशरफ़ी अगर मैं छोड़ जाऊँ तो वो तक्सीम करें, वो मेरी बीवियों का खर्च और जायदाद का एहतिमाम करने वाले का खर्च निकालने के बाद

### ٣٢- بَابُ نَفَقَةِ الْقِيَمِ لِلرَّقَمِ

٢٧٧٦- حَدَّثَنَا غَيْثٌ عَنْهُ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى  
أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ  
عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ  
اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَتَقَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا  
وَلَا دِرْهَمًا مَا تَرَكَتُ - بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي

सदका है। (दीगर मक़ाम : 3096, 6829)

وَمَوْزَنَةٌ غَامِلِي - لَهُوَ صَدَقَةٌ.

[طرفاء ١ : ٣٠٩٦ ، ١٧٢٩].

मा'लूम हुआ कि जो कोई वक्फ़ी जायदाद का इतिज़ाम करे, उसका वो मुतवल्ली हो वो अपनी मेहनत का वाजिब मुआवज़ा जायदाद में से दिलाने का मुस्तहिक़ होगा। (वहीदी)

2777. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उमर (रज़ि.) ने अपने वक्फ़ में ये शर्त लगाई थी कि उसका मुतवल्ली उसमें से खा सकता है और अपने दोस्त को खिला सकता है पर वो दौलत न जोड़े। (राजेअ : 2313)

बाब 33 : किसी ने कोई कुँआ वक्फ़ किया और अपने लिये भी उसमें से आम मुसलमानों की और दूसरों की तरह पानी लेने की शर्त लगाई या ज़मीन वक्फ़ की और दूसरों की तरह खुद भी उससे फ़ायदा लेने की शर्त कर ली तो ये भी दुरुस्त है

और अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने एक घर वक्फ़ किया था (मदीना में) जब कभी मदीना आते, उस घर में क़ायम किया करते थे और हज़रत जुबैर (रज़ि.) ने अपने घरों को वक्फ़ कर दिया था और अपनी एक मुतल्लक़ा लड़की से फ़र्माया था कि वो उसमें क़ायम करें लेकिन उस घर को नुक़सान न पहुँचाएँ और न उसमें कोई दूसरा नुक़सान करे और जो शौहर वाली बेटी होती उसको वहाँ रहने का हक़ नहीं और इब्ने उमर (रज़ि.) ने हज़रत उमर (रज़ि.) के (वक्फ़ कर्दा) घर में रहने का हिस्सा अपनी मुहताज औलाद को दे दिया था।

2778. अब्दान ने बयान किया कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अबू अब्दुर्रहमान ने कि जब हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि.) मुहासरे (घेराव) में लिये गए तो (अपने घर के) ऊपर चढ़कर आपने बाग़ियों से फ़र्माया कि मैं तुमको अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ और सिर्फ़ नबी करीम (ﷺ) के अस्हाब से क़स्मिया पूछता हूँ कि क्या आप लोगों को मा'लूम नहीं है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स बीरे

٢٧٧٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ عُمَرَ اشْتَرَطَ لِي وَفْقِهِ أَنْ يَأْكُلَ مَنْ وَلِيَهُ وَيُؤْكَلَ صَدِيقُهُ غَيْرَ مَمْنُولٍ مَالًا)). [راجع: ٢٣١٣]

٣٣- بَابُ إِذَا وَقَفَ أَرْضًا أَوْ بَيْتًا اشْتَرَطَ لِنَفْسِهِ مِثْلَ دَلَاءِ الْمُسْلِمِينَ

وَأَوْقَفَ أُنْسَ دَارًا، فَكَانَ إِذَا قِيمَ نَزَلَهَا. وَصَدَّقَ الزُّبَيْرُ بِذَوْرِهِ وَقَالَ لِمَرْذُودَةٍ مِنْ بَنَاتِهِ: أَنْ تَسْكُنَ غَيْرَ مُضِرَّةٍ وَلَا مُضِرٍّ بِهَا، فَإِنْ اسْتَفْتَيْتِ بَرَّوَجٍ فَلَيْسَ لَهَا حَقٌّ. وَجَعَلَ ابْنُ عُمَرَ نَصِيبَهُ مِنْ دَارِ عُمَرَ سَكْنَى لِلْبُيُوتِ الْحَاجَةِ مِنْ آلِ عَبْدِ اللَّهِ.

٢٧٧٨- وَقَالَ عَبْدَانُ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ: ((أَنَّ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَيْثُ حُوصِرَ أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ: أَنْشُدْكُمْ اللَّهَ، وَلَا أَنْشُدُ إِلَّا أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ: أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ

रूमा को खोदेगा और उसे मुसलमानों के लिये वक्फ करेगा तो उसे जन्नत की बशारत है तो मैंने ही उस कुँआ को खोदा था। क्या आप लोगों को मा'लूम नहीं है कि आँहजरत (ﷺ) ने जब फ़र्माया था कि जैसे इस्रा (ग़ज्व-ए-तबूक पर जाने वाला लश्कर) को जो शख्स साज़ो-सामान से लैस कर देगा तो उसे जन्नत की बशारत है तो मैंने ही उसे मुसल्लह (हथियारबंद) किया था। रावी ने बयान किया कि आपकी इन बातों की सबने तस्दीक की थी। हजरत उमर (रज़ि.) ने अपने वक्फ़ के बारे में फ़र्माया था कि उसका मुंतज़िम अगर उसमें से खाए तो कोई हर्ज नहीं है। ज़ाहिर है कि मुंतज़िम खुद वाकिफ़ भी हो सकता है और कभी दूसरे भी हो सकते हैं और हर एक के लिये ये जाइज़ है।

ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَفَرَ رُومَةَ فَلَهُ الْجَنَّةُ))  
فَحَفَرْتُهَا؟ أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ قَالَ: ((مَنْ  
جَهَّزَ جَيْشَ الْمُسْرَةِ فَلَهُ الْجَنَّةُ))  
فَجَهَّزْتُهُ؟ قَالَ: أَفَصَدَّقُوهُ بِمَا قَالَ. وَقَالَ  
عُمَرُ لِي وَتَفِيهِ: لَا جُنَاحَ عَلَيَّ مِنْ وَلِيهِ أَنْ  
يَأْكُلَ، وَلَقَدْ يَلِيهِ الْوَأَقِفُ وَغَيْرُهُ، فَهُوَ  
وَاسِعٌ لِكُلِّ).

**तशरीह:** या'नी किसी ने अपने वक्फ़ से खुद भी फ़ायदा उठाने की शर्त लगाई तो उसमें कोई हर्ज नहीं है। इब्ने बत्ताल ने कहा कि इस मसले में किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं कि अगर किसी ने कोई चीज़ वक्फ़ करते हुए उसके मुनाफ़े से खुद या अपने रिश्तेदारों के नफ़ा (उठाने) की भी शर्त लगाई तो जाइज़ है मग़लन किसी ने कोई कुँआ वक्फ़ किया और शर्त लगा ली कि आम मुसलमानों की तरह मैं भी इसमें से पानी पिया करूँगा तो वो पानी भी ले सकता है और उसकी ये शर्त जाइज़ होगी।

हजरत जुबैर बिन अवाम के अग्र को दारमी ने अपनी मुस्न्द में वस्ल किया है। आप शौहर वाली बेटी को उसमें रहने की इसलिये इजाज़त न देते कि वो अपने शौहर के घर में रह सकती है। ये अग्र बाब के तर्जुमे से इस तरह मुताबिक़त होता है कि कोई बेटी उनकी कुँवारी भी होगी और सुहबत से पहले उसको तलाक़ दी गई होगी तो उसका खर्चा बाप के ज़िम्मे है उसका रहना गोया खुद बाप का वहाँ रहना है। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के अग्र को इब्ने सअद ने वस्ल किया है, ये वो घर था जिसको उमर (रज़ि.) वक्फ़ कर गये थे तो अग्र बाब के तर्जुमे के मुताबिक़ हो गया। अब्दान इमाम बुखारी (रह.) के शौख़ थे तो ये तअलीक़ न होगी और दारे कुत्नी और इस्माईल (रह.) ने इसको वस्ल भी किया है। दूसरी रिवायतों में यूँ है कि हजरत उप्मान (रज़ि.) ने ये कुँआ ख़रीद करके वक्फ़ किया था, खुदवाना मज़कूर नहीं है लेकिन शायद हजरत उप्मान (रज़ि.) ने उसको कुछ गहरा करने के लिये खुदवाया भी हो। ये रिवायत लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसको तिमिज़ी ने निकाला। उसमें यूँ है कि आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कोई रूमा का कुँआ ख़रीद ले और दूसरे मुसलमानों के साथ अपना डोल भी उसमें डाले उसको बहिश्त में उससे भी इम्दा कुँआ मिलेगा। निसाई की रिवायत में है कि हजरत उप्मान (रज़ि.) ने ये कुँआ बीस हज़ार या पच्चीस हज़ार में ख़रीदा था। मज़कूर जैसे इस्रा या'नी तंगी का लश्कर जिससे मुराद वो लश्कर है जो जंगे तबूक में आप (ﷺ) के साथ गया था, उस जंग का सामान मुसलमानों के पास बिलकुल न था। हजरत उप्मान (रज़ि.) ने आँहजरत (ﷺ) के इस इश्राद पर सब सामान अपनी ज़ात से फ़राहम कर दिया जिस पर आँहजरत (ﷺ) ने बहुत ही ज़्यादा इज़हारे मसरत फ़र्माते हुए हजरत उप्मान (रज़ि.) के लिये ज़िन्दा जन्नती होने की बशारत पेश फ़र्माई। हजरत उप्मान (रज़ि.) ने जब अपनी आजमाइश के दिनों में सहाब-ए-किराम को इस तरह मुखातब फ़र्माया जो अग्र में मज़कूर है तो बेशतर सहाबा ने आपकी तस्दीक़ की और गवाही दी जिनमें हजरत अली और तलहा और जुबैर और सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) पेश-पेश थे। इस हदीष के ज़ैल में हजरत उप्मान (रज़ि.) के मनाकिब के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने अनेक अह्दाइष को नक़ल किया है, अल्इहतिाजु इला ज़ालिक लिदफ़्इ मज़रतिन औ तहस्सुलि मन्फ़अतिन इन्मा यक्वहु ज़ालिक इन्दलमुफ़ाखरति वल्मुकाषरति वल्अजबि (फत्ह) या'नी उससे उस अम्क का जवाज़ प्राबित हुआ कि



किसी नुकसान को दफा करने या कोई नफा हासिल करने के लिये आदमी खुद अपने मनाकिब बयान कर सकता है, लेकिन फ़ख़र और खुदपसन्दी के तौर पर ऐसा करना मकरूह है।

**बाब 34 : अगर वक्फ़ करने वाला यूँ कहे कि उसकी क़ीमत अल्लाह ही से लेंगे तो वक्फ़ दुरुस्त हो जाएगा**

2779. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था ऐ बन् नज्जार! तुम अपने बाग़ की क़ीमत मुझसे वसूल कर लो तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हम उसकी क़ीमत अल्लाह तआला के सिवा किसी से नहीं चाहते। (राजेअ: 234)

**बाब 35 : (सूरह माइद: में) अल्लाह तआला का ये फ़र्माना**

ऐ ईमानवालों! जब तुममें से कोई मरने लगे तो आपस की गवाही वसियत के वक्त्त तुममें से। (या'नी मुसलमानों में से या अज़ीज़ों में से) दो मोतबर शख्सों की होनी चाहिये या अगर तुम सफ़र में हो और वहाँ तुम मौत की मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाओ तो ग़ैर ही या'नी काफ़िर या जिनसे क़राबत न हो दो शख्स सही (मय्यत के वारिषों) उन दोनों गवाहों को अज़र की नमाज़ के बाद तुम रोक लो अगर तुमको (उनके सच्चे होने में शुब्हा हो) तो वो अल्लाह की क़सम खाएँ कि हम इस गवाही के बदले दुनिया कमाना नहीं चाहते चाहे जिसके लिये गवाही दें वो अपना रिश्तेदार हो और न हम अल्लाह वास्ते गवाही छिपाएँगे, ऐसा करें तों हम अल्लाह के क़सूरवार हैं, फिर अगर मा'लूम हो वाक़ेई ये गवाह झूठे थे तो दूसरे वो दो लोग खड़े हों जो मय्यत के नज़दीक के रिश्तेदार हों (या जिनको मय्यत के दो नज़दीक के रिश्तेदारों ने गवाही के लायक समझा हो) वो अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हमारी गवाही पहले गवाहों की गवाही से ज़्यादा मोतबर है और हमने कोई नाहक बात नहीं कही, ऐसा किया हो तो बेशक हम गुनाहगार होंगे। ये तदबीर ऐसी है जिससे ठीक ठीक गवाही देने की ज़्यादा उम्मीद रहती है या इतना तो ज़रूर होगा कि वसी या गवाहों को डर रहेगा कि ऐसा न हो उनके क़सम खाने के बाद फिर वारिषों को क़सम दी जाए और अल्लाह से डरते रहो और उसका हुक्म सुना और

۳۴- بَابُ إِذَا قَالَ الْوَاقِفُ لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ فَهُوَ جَائِزٌ

۲۷۷۹- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَنْ ابْنِ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي النَّبَّاحِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَايَ النَّبِيِّ الْجَارُ ثَامِنُونِي بِعَابِطِكُمْ)), قَالُوا: لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ)). (راجع: ۲۳۴)

۳۵- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ صَرَفْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنْ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْعُرُ بِهِ لَمَّا نَأْتُوكَانَ ذَا قُرْبَىٰ، وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذَا لَمِنَ الْإِيمَانِ. فَإِنْ غَيْرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَاخْرَاجَا بِقَوْمَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوَّلَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتَيْهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا، إِنَّا إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ. ذَلِكَ أَذْنَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهٍ أَوْ يَخَالُوا أَنْ تُردَّ إِيْمَانٌ بَعْدَ إِيْمَانِهِمْ، وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا، وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾ [المائدة:

अल्लाह नाफ़र्मान लोगों को (राह पर) नहीं लगाता। (अल माइदः : 106-107)

[१०७-१०६]

2780. हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कहा मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने, कहा हमसे इब्ने अबी ज़ायदा ने, उन्होंने मुहम्मद बिन अबिल कासिम से, उन्होंने अब्दुल मलिक बिन सईद बिन जुबैर से, उन्होंने अपने बाप से, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से उन्होंने कहा बनी सहम का एक शख्स तमीम दारी और अदी बिन बदाअ के साथ सफ़र पर निकला, वो ऐसे मुल्क में जाकर मर गया जहाँ कोई मुसलमान न था। ये दोनों शख्स उसका मतरूका माल लेकर मदीना वापस आए। उसके अस्बाब में चाँदी का एक गिलास गुम था। आँहज़रत (ﷺ) ने उन दोनों को क़सम खाने का हुक्म फ़र्माया (उन्होंने क़सम खा ली) फिर ऐसा हुआ कि वो गिलास मक्का में मिला, उन्होंने कहा हमने ये गिलास तमीम और अदी से ख़रीदा है। उस वक़्त मय्यत के दो अज़ीज़ (अमर बिन आस और मुत्तलिब खड़े हुए और उन्होंने क़सम खाई कि ये हमारी गवाही तमीम और अदी की गवाही से ज़्यादा मोतबर है, ये गिलास मय्यत ही का है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा इन ही के बारे में ये आयत नाज़िल हुई (जो ऊपर गुज़र चुकी है) या अय्युहल्लज़ीन आमनू शहादतु बैनकुम आख़िर आयत तक।

बाब 36 : मय्यत पर जो क़र्ज़ हो वो उसका वसी अदा कर सकता है गो दूसरे वारिष हाज़िर न हों

2781. हमसे मुहम्मद बिन साबिक ने बयान किया या फ़ज़ल बिन यअकूब ने मुहम्मद बिन साबिक से (ये शक़ खुद हज़रत इमाम बुखारी रह. को है) कहा हमसे शैबान बिन अब्दुर्रहमान अबू मुआविया ने बयान किया, उनसे फ़रास बिन यह्या ने बयान किया, उनसे शअबी ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके वालिद (अब्दुल्लाह (रज़ि.) उहद की लड़ाई में शहीद हो गए थे। अपने पीछे छः लड़किया छोड़ी थीं और क़र्ज़ भी। जब खजूर के फल तोड़ने का वक़्त आया तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में

٢٧٨٠- وَقَالَ لِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ : حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي الْقَاسِمِ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ سَعْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : (( خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَهْمٍ مَعَ تَمِيمِ الدَّارِيِّ وَعَدِيِّ بْنِ بَدَاءٍ ، فَمَاتَ السَّهْمِيُّ بِأَرْضٍ لَيْسَ بِهَا مُسْلِمٌ ، فَلَمَّا قَدِمَا بِتَرَكِيَّتِهِ فَقَدُوا جَامًا مِنْ لَبَنَةٍ مُخَوَّصًا مِنْ ذَهَبٍ ، فَاحْلَفَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ، ثُمَّ وَجَدَ الْجَامَ بِمَكَّةَ فَقَالُوا : ابْتِغَاهُ مِنْ تَمِيمٍ وَعَدِيِّ ، فَقَامَ رَجُلَانِ مِنْ أَوْلِيَاءِهِ فَحَلَفَا : لَشَهَادَتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتَيْهِمَا وَإِنَّ الْجَامَ لِصَاحِبِهِمْ ، قَالَ وَلِيهِمْ نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ : ﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ 》

٣٦- بَابُ قَضَاءِ الْوَصِيِّ دُونَ

الْمَيِّتِ بِغَيْرِ مَخْضَرٍ مِنَ الْوَرَثَةِ

٢٧٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ - أَوْ الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ عَنْهُ - حَدَّثَنَا شَيْبَانُ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ فِرَاسٍ قَالَ : قَالَ الشَّعْبِيُّ حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : (( أَنَّ أَبَاهُ اسْتَشْهَدَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ مِائَةَ نَبَاتٍ وَتَرَكَ عَلَيْهِ دَيْنًا ، فَلَمَّا خَضَرَ جَدَاؤُ النَّخْلِ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ

हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपको ये मा'लूम ही है कि मेरे वालिदे माजिद उहूद की लड़ाई में शहीद हो चुके हैं और बहुत ज्यादा क़र्ज़ छोड़ गए हैं, मैं चाहता था कि क़र्ज़ख्वाह आपको देख ले (ताकि क़र्ज़ में कुछ रिआयत कर दें) लेकिन वो यहूदी थे और वो नहीं माने, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ और खलियान में हर किस्म की खजूर अलग अलग कर लो जब मैंने ऐसा ही कर लिया तो आँहज़रत (ﷺ) को बुलाया, क़र्ज़ख्वाहों ने आँहज़रत (ﷺ) को देखकर और ज्यादा सख़्ती शुरू कर दी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने जब ये तर्ज़ें अमल मुलाहिज़ा फ़र्माया तो सबसे बड़े खजूर के ढेर के गिर्द आप (ﷺ) ने तीन चक्कर लगाए और वहीं बैठ गए फिर फ़र्माया कि अपने क़र्ज़ख्वाहों को बुलाओ। आप (ﷺ) ने नाप-नापकर देना शुरू किया और वल्लाह मेरे वालिद की तमाम अमानत अदा कर दी, अल्लाह गवाह है कि मैं इतने पर भी राज़ी था कि अल्लाह तआला मेरे वालिद का तमाम क़र्ज़ अदा कर दे और मैं अपनी बहनों के लिये एक खजूर भी उसमें से न ले जाऊँ लेकिन हुआ ये कि ढेर के ढेर बच रहे और मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जिस ढेर के पास बैठे हुए थे उसमें से तो एक खजूर भी नहीं दी गई थी। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि अरूबी (हदीष में अल्फ़ाज़) के मा'नी हैं कि मुझ पर भड़कने और सख़्ती करने लगे। इसी मा'नी में कुआन मजीद की आयत, फ़अरयना बयनहुमुल अदावता वल् बाज़ाअ में फ़अरयना है। (राजेअ: 2127)

فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ  
وَالِدِي اسْتُشْهِدَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ عَلَيْهِ دَيْنًا  
كَثِيرًا، وَإِنِّي أَحِبُّ أَنْ يَرَاكَ الْفَرَمَاءُ. قَالَ:  
((اذْهَبْ فَيُبَيِّرْ كُلَّ تَمْرٍ عَلَى نَاحِيَةٍ))  
فَفَعَلْتُ، ثُمَّ دَعَوْتُهُ، فَلَمَّا نَظَرُوا إِلَيْهِ  
أَغْرَوْا بَيْنَ تِلْكَ السَّاعَةِ، فَلَمَّا رَأَى مَا  
يَصْنَعُونَ طَافَ حَوْلَ أَعْظَمِهَا يَبْدُرًا ثَلَاثَ  
مَرَّاتٍ، ثُمَّ جَلَسَ عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((ادْعُ  
أَصْحَابَكَ))، فَمَا زَالَ يَكِيلُ لَهُمْ حَتَّى  
أَدَّى أَمَانَةَ وَالِدِي، وَأَنَا وَاللَّهُ رَاضٍ أَنْ  
يُؤَدِّيَ اللَّهُ أَمَانَةَ وَالِدِي وَلَا أَرْجِعُ إِلَى  
أَخَوَائِي تَمْرَةً، فَسَلِمَ وَاللَّهُ الْيَّابِرُ كُلُّهَا  
حَتَّى أَنِّي أَنْظَرُ إِلَى الْيَبْدُرِ الَّذِي عَلَيْهِ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ كَأَنَّهُ لَمْ يَنْقُصْ تَمْرَةً  
وَاحِدَةً)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ((أَغْرَوْا  
بَيْنَهُمَا)) يَغْنِي هِنْجُوا بَيْنَهُمَا. (فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ  
الْعُدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ). [راجع: 2127]

### तशरीह:

आयत का मफ़हूम ये है कि हमने यहूद और अंसारी के दरम्यान अदावत और बुज़ को भड़का दिया। हदीष का लफ़ज़ अरूबी, अरयना ही के मा'नी में है। जाबिर (रज़ि.) तो आँहज़रत (ﷺ) को इसलिये ले गए थे कि आप (ﷺ) को देखकर क़र्ज़ख्वाह नरमी करेंगे मगर हुआ कि वो क़र्ज़ख्वाह और ज्यादा पीछे पड़ गए कि हमारा सारा क़र्ज़ अदा करो। उन्होंने ये ख़याल किया कि जब आँहज़रत (ﷺ) जाबिर (रज़ि.) के पास तशरीफ़ लाए हैं तो अगर जाबिर से कुल क़र्ज़ अदा न हो सकेगा तो आँहज़रत (ﷺ) अदा कर देंगे या ज़िम्मेदारी ले लेंगे। इस ग़लत ख़याल की बिना पर उन्होंने क़र्ज़ वसूल करने के सिलसिले में और ज्यादा सख़्त रवैया इख़्तियार कर लिया जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत जाबिर (रज़ि.) के बाग़ में दुआ फ़र्माई और जो भी ज़ाहिर हुआ वो आपका खुला मोज़ज़ था। ये हदीष ऊपर कई बार गुज़र चुकी है और हज़रत मुज्ताहिदे मुत्तलक़ इमाम बुखारी (रह.) ने इससे कई एक मसाइल का इस्तिख़राज़ फ़र्माया है। यहाँ बाब का मतलब यूनिकला कि जाबिर (रज़ि.) जो अपने बाप के वज़ी थे, उन्होंने अपने बाप का क़र्ज़ अदा किया उस वक़्त दूसरे वारिष उनकी बहनें मौजूद थीं उन क़र्ज़ख्वाहों ने अपना नुक़सान आप किया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको कई बाद समझाया कि तुम अपने क़र्ज़ के बदल ये सारी खजूरें ले लो, उन्होंने खजूरों को कम समझकर कुबूल न किया।

अल्लहुमुलिल्लाह कि किताबुशुरूत खत्म होकर आगे किताबुल जिहाद शुरू हो रही है। जिसमें हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने जिहाद के मसले पर पूरी-पूरी रोशनी डाली है। अल्लाह पाक खैरियत के साथ किताबुल जिहाद को खत्म कराए। आमीन! वस्सलामु अलल मुर्सलीन वल्लहमुदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

## 56. किताबुल जिहाद वस्सियर

# किताब जिहाद के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : जिहाद की फ़ज़ीलत और रसूले करीम (ﷺ) के हालात के बयान में

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जान और उनके माल इस बदले में ख़रीद लिये हैं कि उन्हें जन्नत मिलेगी, वो मुसलमान अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते हैं और इस तरह (महारिरे कुफ़्फ़ार को) ये मारते हैं और खुद भी मारे जाते हैं। अल्लाह तआला का ये वा'दा (कि मुसलमानों को उनकी कुर्बानियों के नतीजे में जन्नत मिलेगी) सच्चा है, तौरात में, इंजील में और कुर्आन में और अल्लाह से बढ़कर अपने वा'दे को पूरा करने वाला कौन हो सकता है? पस खुश हो जाओ तुम अपने इस सौदे की वजह से जो तुमने उसके साथ किया है, आख़िर आयत (व बश्शिरल मोमिनीन) तक। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह की हदों से मुराद उसके अहकाम की इत्ताअत है।

इंजील में जिहाद का हुक्म नहीं है मगर इंजील में तौरात का सहीह और सच्ची किताब होना मज़कूर है तो तौरात के सब अहकाम गोया इंजील में भी मौजूद हैं। आयते मज़कूरा में आगे वल्लाहिफ़िजून लिहदुदिल्लाहि (अत् तौबा : 112) के अल्फ़ाज़ भी हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से उसकी तफ़्सीर इमाम बुखारी (रह.) ने नक़ल कर दी है, इसको इब्ने अबी हातिम ने अपनी तफ़्सीर में निकाला है, आयत का शाने नुज़ूल लैलतुल उक्बा में अंसार के बैअत करने के बारे में है और हुक्म क़यामत तक के लिये आम है। इस बैअत के वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा था कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अपने रब के लिये और अपनी ज़ात के लिये हमसे जो चाहें अहद ले लें। आपने फ़र्माया कि मैं अल्लाह के लिये अहद लेता हूँ कि सिर्फ़ उसी एक की

۱- بَابُ فَضْلِ الْجِهَادِ وَالسِّيَرِ

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

هَإِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لِيُقَاتِلُوا وَيُقَاتَلُوا وَغَدَا عَلَيْهِمْ حَقٌّ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ، وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ؟ فَاسْتَشِيرُوا بِرَأْسِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ - إِلَى قَوْلِهِ - وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿[التوبة: 111] قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: الْخُدُودُ الطَّاعَةُ.

इबादत करो और किसी को उसका शरीक न करो और अपने लिये ये कि नफ़े व नुक़सान में अपने नफ़सों के साथ मुझको शरीक कर लो, उन्होंने कहा कि उसका बदला हमको क्या मिलेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत मिलेगी, उस पर वो बोले किये तो बहुत ही नफ़ाबख़श सौदा है। (फ़तहूल बारी)

2782. हमसे हसन बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग्बल ने बयान किया, कहा कि मैंने वलीद बिन अयज़ार से सुना, उनसे सईद बिन अयास अबू अमर शैबानी ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि दीन के कामों में कौनसा अमल अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, मैंने पूछा उसके बाद? आप (ﷺ) ने फ़र्माया वालिदैन के साथ नेक सुलूक करना, मैंने पूछा और उसके बाद? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। फिर मैंने आप (ﷺ) से ज्यादा सवालात नहीं किये, वरना आप (ﷺ) इसी तरह उनके जवाबात इनायत फ़र्माते। (राजेअ: 257)

۲۷۸۲- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْبَلٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْوَلِيدَ بْنَ الْعِزَّارِ ذَكَرَ عَنْ أَبِي عَمْرِو الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((الصَّلَاةُ عَلَى مِقَاتِهَا)). قُلْتُ: ثُمَّ أَيُّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ بِرُ الْوَالِدَيْنِ)). قُلْتُ: ثُمَّ أَيُّ؟ قَالَ: ((الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)). فَسَكَتُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَلَوْ اسْتَزِدْتُهُ لَوَازِدِي)).

[راجع: ۲۷]

2783. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ख़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मंसूर बिन मुअतमिर ने बयान किया मुजाहिद से, उन्होंने त्राऊस से और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया फ़तहे मक्का के बाद अब हिजरत (फ़र्ज़) नहीं रही अल्बत्ता जिहाद और निव्यत बख़ैर करना अब भी बाक़ी हैं और जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो निकल खड़े हुआ करो। (राजेअ: 1349)

۲۷۸۳- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعْبُدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنصُورٌ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَإِذَا اسْتَفْرَغْتُمْ فَأَنْفِرُوا)).

[راجع: ۱۳۴۹]

**तशरीह:** या'नी अब फ़तहे मक्का होने के बाद वो खुद दारुल इस्लाम हो गया, इसलिये यहाँ से हिजरत करके मदीना आने का कोई सवाल ही बाक़ी नहीं रहता। इसका ये मतलब नहीं कि हिजरत का सिलसिला सिरे से ही ख़त्म हो गया है जहाँ तक हिजरत का आम ता'ल्लुक है या'नी दुनिया के किसी भी दारुल हरब से दारुल इस्लाम की तरफ़ हिजरत, तो उसका हुक्म अब भी बाक़ी है मगर उसके लिये कुछ शर्तें हैं जिनका लिहाज़ रखना ज़रूरी है।

या'नी क़यामत तक जिहाद फ़र्ज़ रहेगा, दूसरी हदीष में है कि जबसे मुझको अल्लाह ने भेजा क़यामत तक जिहाद होता रहेगा, यहाँ तक कि अख़ीर मे मेरी उम्मत दज्जाल से मुकाबला करेगी। जिहाद इस्लाम का एक रुकने आज़म है और फ़र्ज़े किफ़ाया है लेकिन जब एक जगह, एक मुल्क के मुसलमान काफ़िरो के मुकाबले से आजिज़ हो जाएँ तो उनके पास वालों पर, इस तरह तमाम दुनिया के मुसलमानों पर जिहाद फ़र्ज़ हो जाता है और उसके छोड़ने से सब गुनाहगार होते हैं। इसी तरह जब काफ़िर

मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ आएँ तो हर मुसलमान पर जिहाद फ़र्ज़ हो जाता है यहाँ तक कि औरतों और बूढ़ों और बच्चों पर भी। हमारे ज़माने में चन्द दुनियादार, खुशामदखोर, झूठे दगाबाज़ मौलवियों ने काफ़िरों की खातिर से आम मुसलमानों को बहका दिया है कि अब जिहाद फ़र्ज़ नहीं रहा, उनको अल्लाह से डरना चाहिये और तौबा करना भी ज़रूरी है, जिहाद की फ़र्ज़ियत क़यामत तक बाक़ी रहेगी। अल्बत्ता ये ज़रूर है कि एक इमामे आदिल से पहले बैअत की जाए और (महारिब) काफ़िरों को वा'दे के मुताबिक़ नोटिस दिया जाए अगर वो इस्लाम या जिज़्या देना कुबूल न करें, उस वक़्त अल्लाह पर भरोसा करके उनसे जंग की जाए और फ़ित्ना और फ़साद और औरतों और बच्चों की ख़ुरैजी किसी शरीअत में जाइज़ नहीं है। (वहीदी)

लफ़ज़ जिहाद की तशरीह में हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़रमति हैं, वल्लिजिहादु बिकस्लिज्मीम अस्लुहु लुगतल्मशक्कति युकालु जहतु जिहादन बिलुगतिल्मशक्कति व श'अन बज़लुल्जुहदि फी कितालिल्कुफ़फ़ारि व युत्लकु अयज़न अला मुजाहदतिन्फ़िस् वश'शैतानि वल्फुस्साकि फअम्मा मुजाहदतुन्फ़िस् फअला तअल्लुमि उमूरिदीनि धुम्म अलल्अमलि बिहा अला तअलीमिहा व अमा मुजाहदतुश'शैतानि फअला दफ़्द मा याती मिनशशुब्हाति व मा युज़य्यिनुहु मिनशशह्वाति व अम्मा मुजाहदतुल्कुफ़फ़ारि फतक्कउ बिल्यादि वल्मालि वल्लिसानि वल्कल्बि व अम्मा मुजाहदतुल्फुस्साकि फबिल्यादि धुम्मल्लिसानि धुम्मल्कल्बि. (फ़तहूल बारी) या'नी लफ़ज़ जिहाद जीम के कसर के साथ लुगत मे मुशक्कत पर बोला जाता है और शरीअत में (महारिब) काफ़िरों से लड़ने पर और ये लफ़ज़ नफ़्स और शैतान और फ़ुस्साक के मुजाहिदात पर भी बोला जाता है पस नफ़्स के साथ जिहाद दीनी इलूम का हासिल करना, फिर उन पर अमल करना और दूसरों को उन्हें सिखाना है और शैतान के साथ जिहाद ये कि उसके लिए हुए शुब्हात को दफ़ा किया जाए और उनको जो वो शह्वात को मुजय्यन करके पेश करता है, उन सबको दफ़ा करना शैतान के साथ जिहाद करना है और महारिब काफ़िरों से जिहाद, हाथ (ताक़त से), माल, जुबान और दिल के साथ होता है और फ़ासिक-फ़ाजिर लोगों के साथ जिहाद ये कि हाथ से उनको बुरे कामों से रोका जाए फिर जुबान से, फिर दिल से। मतलब आपका ये था कि मुजाहिद जब जिहाद के लिये निकलता है तो उसका सोना, बैठना, चलना, घोड़े का दाना-पानी करना, सब इबादत ही होता है तो जिहाद के बराबर दूसरी कौन इबादत हो सकती है? अल्बत्ता कोई बराबर इबादत में मसरूफ़ रहे ज़रा दम न ले तो शायद जिहाद के बराबर हो मगर ऐसा किससे हो सकता है। दूसरी हदीष से मा'लूम होता है कि जिक़रे इलाही जिहाद से भी अफ़ज़ल है, एक हदीष में है कि अय्यामे अशर में इबादत करने से बढ़कर कोई अमल नहीं, इन हदीषों में तनाक़ुज़ नहीं है बल्कि सब अपने महल और मौक़े पर दूसरे तमाम आमाल से अफ़ज़ल हैं मज़लन जब काफ़िरों का जोर बढ़ रहा हो तो जिहाद सब अमलों से अफ़ज़ल होगा और जब जिहाद की ज़रूरत न हो तो जिक़रे इलाही सबसे अफ़ज़ल होगा। एक रिवायत में है कि आपने फ़र्माया, धुम्म रजअना मिनल जिहादिल्अस्गरि इलल्जिहादिल्अक्बरि या'नी नफ़्सकशी और रियाज़त को आपने बड़ा जिहाद फ़र्माया। (वहीदी)

2784. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हबीब बिन अबी अम्प ने बयान किया आइशा बन्ते तलहा से और उनसे आइशा (रज़ि.) (उम्मुल मोमिनीन) ने कि उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम समझते हैं कि जिहाद अफ़ज़ल आमाल में से है फिर हम (औरतें) भी क्यूँ न जिहाद करें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन सबसे अफ़ज़ल जिहाद मक्बूल हज्ज है जिसमें गुनाह न हों। (राजेअ : 1520)

٢٧٨٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، نَرَى الْجِهَادَ أَفْضَلَ الْقَمَلِ، أَفَلَا نَجَاهِدُ، قَالَ: ((لَكِنْ أَفْضَلُ الْجِهَادِ حَجٌّ مَبْرُورٌ)).

[راجع: ١٥٢٠]

ये हदीष पहले गुज़र चुकी है, बाब का मतलब इस हदीष से यूँ निकला कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जिहाद को सबसे अफ़ज़ल

कहा और आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर इंकार नहीं किया।

2785. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अफ़फ़ान बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम ने, कहा हमसे मुहम्मद बिन जुहादा ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू हुसैन ने ख़बर दी, उनसे ज़क्वान ने बयान किया और उनसे अबू हुसैह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक साहब (नाम नामा'लूम) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आए और अज़्र किया कि मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जो घ़वाब में जिहाद के बराबर हो। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा कोई अमल नहीं पाता। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इतना कर सकते हो कि जब मुजाहिद (जिहाद के लिये) निकले तो तुम अपनी मस्जिद में आकर बराबर नमाज़ पढ़नी शुरू कर दो और (नमाज़ पढ़ते रहो और दरम्यान में) कोई सुस्ती और काहिली तुम्हें महसूस न हो, इसी तरह रोज़े रखने लगो और (कोई दिन) बग़ैर रोज़े के न गुज़रे। उन साहब ने अज़्र किया भला ऐसा कौन कर सकता है? अबू हुसैह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुजाहिद का घोड़ा जब रस्सी में बंधा हुआ ज़मीन (पर पांव) मारता है तो उस पर भी उसके लिये नेकियाँ लिखी जाती हैं। (राज़ेअ: 1520)

**बाब 2 : सब लोगों में अफ़ज़ल वो शख़्स है जो अल्लाह की राह में अपनी जान व माल से जिहाद करे**

और अल्लाह ने (सूरह सफ़ में) फ़र्माया कि, ऐ ईमानवालों! क्या मैं तुमको बताऊँ एक ऐसी तिज़ारत जो तुमको नज़ात दिलाए दुख देने वाले अज़ाब से; वो ये कि ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से, ये तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम समझो, अगर तुमने ये काम अंजाम दे दिये तो अल्लाह तआला मुआफ़ कर देगा तुम्हारे गुनाह और दाख़िल करेगा तुमको ऐसे बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और बेहतरीन मकानात तुमको अत्ता किये जाएंगे, जन्नाते-अदन में ये बड़ी कामयाबी है।

2786. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने कहा कि मुझसे

٢٧٨٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا عَفَّانٌ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو حَاضِرٍ أَنَّ ذَكَرَانَ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ذُلِّي عَلَى عَمَلٍ يُغْدِلُ الْجِهَادَ. قَالَ: ((لَا أَجِدُهُ)). قَالَ: هَلْ تَسْتَطِيعُ إِذَا خَرَجَ الْمُجَاهِدُ أَنْ تَدْخُلَ مَسْجِدَكَ فَتَقُومَ وَلَا تَقْرَأَ، وَتَصُومَ وَلَا تُفْطِرَ؟)) قَالَ: وَمَنْ يَسْتَطِيعُ ذَلِكَ؟ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: إِنَّ فَرَسَ الْمُجَاهِدِ لَيَسْتُرُ فِي طَوْلِهِ. فَيُكْتَبُ لَهُ حَسَنَاتٌ. (راجع: ١٥٢٠)

٢- بَابُ أَفْضَلِ النَّاسِ مُؤْمِنٍ يُجَاهِدُ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ؟ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ، ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ. يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَتَسْكُنُ فِيهَا طَيِّبَةٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ، ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾ (الصّف: ١٠).

٢٧٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ

अता बिन यज़ीद लैषी ने कहा और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि अर्ज किया गया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! कौन शख्स सबसे अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया वो मोमिन जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान और माल से जिहाद करे। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा और उसके बाद कौन? फ़र्माया वो मोमिन जो पहाड़ की किसी घाटी में रहना इख़्तियार करे, अल्लाह तआला का डर रखता हो और लोगों को छोड़कर अपनी बुराई से उनको महफूज़ रखे। (दीगर मक़ाम: 6494)

النَّبِيُّ أَنْ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَنَا قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مُؤْمِنٌ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ». قَالُوا: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «مُؤْمِنٌ فِي شِعْبٍ مِنَ الشُّعَابِ يَتَّقِي اللَّهَ وَيَدْعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهِ». [طهره في: 6494].

### तशरीह:

जब आदमी लोगों में रहता है तो ज़रूर किसी न किसी की ग़ीबत करता है या ग़ीबत सुनता है या किसी पर गुस्सा करता है, उसको ईज़ा देता है। तंहाई और इज़लत में उसके शर से सब लोग बचे रहते हैं। इस हदीष से उसने दलील ली जो इज़लत और गोशानशीनी (एकांतवास) को इख़्तिलात (मेलजोल) से बेहतर जानता है। जुम्हूर का मज़हब है कि इख़्तिलात अफ़ज़ल है और हक़ ये है कि ये मुख़्तलिफ़ है बइख़्तिलाफ़ अशखाज़ और अहवाल और ज़माने और मौक़े के। जिस शख्स से मुसलमानों को दीनी और दुनियावी फ़ायदे पहुँचते हों और वो लोगों की बुराइयों पर सन्न कर सके, उसके लिये इख़्तिलात अफ़ज़ल है और जिस शख्स से इख़्तिलात से गुनाह सरज़द होते हों और उसकी सुहबत से लोगों को ज़रर (नुक़सान) पहुँचता हो, उसके लिये इज़लत अफ़ज़ल है। ऊपर हदीष में अय्युत्रास अफ़ज़ल कौनसा आदमी बेहतर है जवाब में जो कुछ औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हक़ीक़त में ऐसा मुसलमान दूसरे सब मुसलमानों से अफ़ज़ल होगा क्योंकि जान और माल दुनिया की सब चीज़ों में आदमी को बहुत महबूब हैं तो उनका अल्लाह की राह में खर्च करने वाला सबसे बढ़कर होगा कुछ ने कहा लोगों से आम मुसलमान मुराद हैं वरना उलमा और सिद्दीकीन मुजाहिदीन से भी अफ़ज़ल हैं। मैं (मौलाना बहीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ कुफ़्र और मुल्हिदीन और मुखालिफ़ीने दीन से बहज़-मुबाह़षा करना और उनके ए'तिराज़ात का जो वो इस्लाम पर करें, जवाब देना और ऐसी किताबों का छापना और छपवाना ये भी जिहाद है। (वहीदी) इस नाज़ुक दौर में जबकि आम लोग कुआन व हदीष से बेरख़बी कर रहे हैं और दिन ब दिन जिहालत व ज़लालत (अज्ञानता व गुमराही) के गार में गिरते चले जा रहे हैं, बुखारी शरीफ़ जैसी अहम पाकीज़ा किताब का तर्जुमा व तशरीह के साथ शाये करना भी जिहाद से कम नहीं है और मैं अपने इशाराहे सदर (दिल की गहराइयों) के मुताबिक़ ये कहने के लिये तैयार हूँ कि जो हज़रात इस कारे ख़ैर में हिस्सा लेकर इसकी तक्मील का शरफ़ हासिल करने वाले हैं यकीनन वो अल्लाह के दफ़्तर में अपने मालों से मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के दफ़्तर में लिखे जा रहे हैं। (राज़)

2787. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की मिषाल... और अल्लाह तआला उस शख्स को ख़ूब जानता है जो (ख़ुलूसे दिल के साथ सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है.... उस शख्स की सी है जो रात में बराबर नमाज़ पढ़ता रहे और दिन में बराबर रोज़े रखता रहे और अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वाले के लिये, उसकी ज़िम्मेदारी ले ली है कि अगर

٢٧٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «تَمَلَّ الْمَجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ - وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِهِ - كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ. وَتَوَكَّلْ اللَّهُ لِلْمَجَاهِدِ فِي سَبِيلِهِ بَأَن يُتَوَفَّاهُ أَنْ يُذْخِلَهُ الْجَنَّةَ أَوْ



उसे शहादत देगा तो उसे बेहिसाब व किताब जन्नत में दाखिल करेगा या फिर ज़िन्दा व सलामत (घर) प्रवाब और माले गनीमत के साथ वापस करेगा। (राजेअ: 36)

يُرجَعُ سَالِمًا مَعَ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ))

[راجع: 36]

या'नी नियत का हाल अल्लाह ही को खूब मा'लूम है कि वो मुख्लिस है या नहीं, अगर मुख्लिस है तो वो मुजाहिद होगा वरना कोई दुनिया के माल व जाह और नामवरी के लिये लड़े वो मुजाहिद फ्री सबीलिल्लाह नहीं है। मिषाल में नमाज़ पढ़ने से नमाज़ नफ़ल इसी तरह रोज़े रखने से नफ़ल रोज़ा मुराद है कि कोई शख्स दिन भर नफ़ल रोज़े रखता हो और रात भर नफ़ल नमाज़ पढ़ता हो, मुजाहिद का दर्जा इससे भी बढ़कर है।

### बाब 3 : जिहाद और शहादत के लिये मर्द और औरत दोनों का दुआ करना

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! मुझे अपने रसूल (ﷺ) के शहर (मदीना तय्यिबा) में शहादत की मौत अता फ़र्माइये।

2788,89. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया इमाम मालिक से, उन्होंने इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा से और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उम्मे हुराम (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले जाया करते थे (ये अनस रज़ि. की ख़ाला थीं जो उबादा बिन स़ामित के निकाह में थीं) एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने आप (ﷺ) की ख़िदमत में खाना पेश किया और आप (ﷺ) के सर से जुएँ निकालने लगीं, इस अज़ें में आप (ﷺ) सो गये, जब बेदार हुए तो आप (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे। उम्मे हुराम (रज़ि.) ने बयान किया मैंने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! किस बात पर आप हंस रहे हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने इस तरह पेश किये गये कि वो अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करने के लिये दरिया के बीच में सवार इस तरह जा रहे हैं जिस तरह बादशाह तख़्त पर होते हैं या जैसे बादशाह तख़्त रवाँ पर सवार होते हैं ये शक़ इस्हाक़ रावी को था। उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) दुआ फ़र्माइये कि अल्लाह मुझे भी उन्हीं में से कर दे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके लिये दुआ की फिर आप (ﷺ) अपना सर रखकर सो गए, इस बार भी आप जब बेदार हुए तो मुस्कुरा रहे थे। मैंने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! किस बात पर आप मुस्कुरा रहे हैं? आपने फ़र्माया मेरी

### 3- بَابُ الدُّعَاءِ بِالْجِهَادِ وَالشَّهَادَةِ

لِلرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ

وَقَالَ عُمَرُ: ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي بَلَدِي رَسُولُكَ.

2788, 2789 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْخُلُ عَلَيَّ أَمْ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ فَتَطْعِمُهُ وَكَانَتْ أَمْ حَرَامٍ تَحْتَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، فَدَخَلَ عَلَيْهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَطْعَمْتُهُ وَجَعَلْتُ تَقْلِي رَأْسَهُ، قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ اسْتَيْقَظَ، وَهُوَ يَضْحَكُ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّيْ غَرَضُوا عَلَيَّ غُرَاةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ، يَرْكَبُونَ نَجَجَ هَذَا الْبَحْرِ مُلُوكًا عَلَى الْأَسِيرَةِ - أَوْ مِثْلَ الْمُلُوكِ عَلَى الْأَسِيرَةِ))، شَكَ إِسْحَاقُ - قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَ لِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ، ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ

उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने इस तरह पेश किये गये कि वो अल्लाह की राह में ग़ज़्वे के लिये जा रहे हैं पहले की तरह, इस बार भी फ़र्माया उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह से मेरे लिये दुआ कीजिए कि मुझे भी उन्हीं में से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तू सबसे पहली फ़ौज में शामिल होगी (जो समन्दरी रास्ते से जिहाद करेगी) चुनौचे हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में उम्मे हुराम (रज़ि.) ने बहरी (समन्दरी) सफ़र किया फिर जब समुन्दर से बाहर आई तो उनकी सवारी ने उन्हें नीचे गिरा दिया और उसी ह्वाड़े में उनकी वफ़ात हो गई। (दीगर मक़ाम : 2799, 2800, 2877, 2878, 2894, 2895, 2924, 6282, 6283, 7001, 7002)

يُضْحِكُ. فَقُلْتُ: وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أَتْبَاعِي عَرَضُوا عَلَيَّ غَزَاةً لِي سَبَّلِ اللَّهُ - كَمَا قَالَ لِي الْأَوَّلُ)) - قُلْتُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِذْ عَنِ اللَّهِ أَنْ يَخْفَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: ((أَنْتَ مِنَ الْأَوَّلِينَ)). فَوَكَّيْتُ النَّحْرَ لِي زَمَنٍ مُغَاوِرَةٍ بِنِ أَبِي سَفْيَانَ فَصَرَّعَتْ عَنْ ذَاتَيْهَا حِينَ عَرَّجَتْ مِنَ النَّحْرِ لَهْلَكَتْ)).

[اطرافه في: ٢٨٨٢, ٢٨٩٤, ٢٨٧٧, ٢٧٩٩]

[٧٠٠١]. [اطرافه في: ٢٨٩٥, ٢٨٧٨, ٢٨٠٠]

[٧٠٠٢, ٦٢٨٣, ٢٩٩٤]

**तशरीह:** हज़रत मुआविया (रज़ि.) उस वक़्त मिस्र के गवर्नर थे और इरुमान (रज़ि.) की खिलाफ़त का दौर था, जब मुआविया (रज़ि.) ने आप (ﷺ) से रोम पर लश्करकशी की इजाज़त मांगी और इजाज़त मिल जाने पर मुसलमानों का सबसे बड़ा बहरी लश्कर (समुद्री बेड़ा) तैयार हुआ जिसने रोम के खिलाफ़ जंग की। उम्मे हुराम (रज़ि.) भी अपने शौहर के साथ इस लड़ाई में शरीक थीं और इस तरह आँहज़रत (ﷺ) की पेशानगोई के मुताबिक़ मुसलमानों की सबसे पहली बहरी (समुद्री) जंग में शरीक होकर शहीद हुई। फ़रज़ियल्लाहु अन्हा। शहादत का वक़ूअ उस वक़्त हुआ जब मुसलमान जिहाद से वापस लौट रहे थे, गो उम्मे हुराम खुद नहीं लड़ी मगर अल्लाह की राह में निकली और नस्से कुआन व हदीष की रू से जो कोई जिहाद के लिये निकले और राह में अपनी मौत से मर जाए वो भी शहीद है। पस उम्मे हुराम को शहादत नज़ीब हुई और इस तरह दुआ-ए-नबवी (ﷺ) का ज़हूर हुआ। हज़रत उम्मे हुराम (रज़ि.) आप (ﷺ) की दूधशरीक ख़ाला होती हैं, इसीलिये आप (ﷺ) उनके यहाँ आया-जाया करते थे, वो भी आप (ﷺ) के लिये मौ से ज़्यादा शफ़ीक़ (मेहरबान) थीं (रज़ि.)। रिवायत से औरतों का जिहाद में शरीक होना षाबित हुआ। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि जैसे मर्द ये दुआ कर सकते हैं या अल्लाह मुझको मुजाहिदीन में कर, मुझको शहादत नज़ीब फ़र्मा, ऐसे ही औरत भी ये दुआ कर सकती है। आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में और उसके बाद खुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़मानों में भी औरतें मुजाहिदीन के साथ ही रही हैं। उनके खाने-पीने, ज़रूख़ पट्टी करने की ख़िदमात औरतों ने अंजाम दी हैं। हज़रत इमर (रज़ि.) की ये दुआ कुबूल हुई और आप मदीना में अबूलू लूमजूसी के हाथ से शहीद हुए थे। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अज़ाहु)

#### बाब 4 : मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह के

##### दरजात का बयान

सबील का लफ़ज़ जुबान में हाज़ा सबीली व हाज़िही सबीली

मुज़क्कर और मुअन्नफ़ दोनों तरह इस्ते'माल होता है।

#### ٤- بَابُ ذَرَجَاتِ الْمُجَاهِدِينَ فِي

سَبِيلِ اللَّهِ

يُقَالُ هَذِهِ سَبِيلِي، وَهَذَا سَبِيلِي

**तशरीह:** चूँकि हदीष में फ़ी सबीलिल्लाह का लफ़ज़ आया था तो इमाम बुखारी (रह.) ने इस मुनासबत से सबील की तहकीक़ बयान कर दी कि ये लफ़ज़ अरबी जुबान में मुज़क्कर और मुअन्नफ़ दोनों तरह से बोला जाता है, हाज़िही सबीली और हाज़ा सबीली दोनों तरह कहते हैं। कुछ नुस्खों में इसके बाद इतनी इबारत और है, व क़ालू अबू अब्दुल्लाहि ग़ज़ा

वाहिदुद्दा गाज़ी दरजातुन लहुम दरजातुन या'नी सूरह आले इमरान में रूकूअ 16 में जो गाज़ा का लफ़्ज़ आया है तो गाज़ा गाज़ी की जमा है और हुम दरजात का मा'नी लहुम दरजात है या'नी उनके लिये दर्जे हैं। (वहीदी)

2790. हमसे यद्दया बिन सलैह ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने, उनसे अत्ता बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शस्त्र अल्लाह और उसके रसूल पर इमान लाए और नमाज़ क़ायम करें और रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह तआला पर हक़ है कि वो जन्नत में दाख़िल करेगा ख़्वाह अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे या उसी जगह पड़ा रहे जहाँ पैदा हुआ था। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या हम लोगों को इसकी बशारत न दे दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिये तैयार किये हैं, उनके दो दर्जों में इतना फ़ासला है जितना ज़मीन और आसमान में है। इसलिये जब अल्लाह तआला से मांगना हो तो फ़िरदौस मांगो क्योंकि वो जन्नत का सबसे दरम्यानी दर्जा है और जन्नत के सबसे बुलन्द दर्जे पर है; यद्दया बिन सलैह ने कहा कि मैं समझता हूँ यूँ कहा कि, उसके ऊपर परवरदिगार का अर्श है और वहीं जन्नत की नहरें निकलती हैं। मुहम्मद बिन फुलैह ने अपने वालिद से व फ़ौक़हू अरशुरहमान ही की रिवायत की है। (दीगर मक़ाम: 7423)

۲۷۹۰- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَتْ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يَدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، يَجْعَلَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ يَجْلِسَ فِي أَزْوَاجِهِ النَّبِيِّ وَلَدٍ فِيهَا)). فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَفَلَا تُبَشِّرُ النَّاسَ؟ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا بَيْنَ الثَّرَاءَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ فَإِذَا سَأَلْتُمْ اللَّهَ فَسَأَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ - أَرَأَيْتُمْ؟ وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ - وَمِنْهُ تَفْجَرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ عَنْ أَبِيهِ: ((وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ)).

[طرفه ب: ۷۴۲۳]

**तशरीह:** मतलब ये है कि अगर किसी को जिहाद नज़ीब न हो लेकिन दूसरे फ़राइज़ अदा करता है और उसी हाल में मर जाए तो आख़िरत में उसको बहिश्त मिलेगी, भले ही उसका दर्जा मुजाहिदीन से कम होगा। मुहम्मद बिन फुलैह के रिवायतकर्दा इज़ाफ़े में शक़ नहीं है जैसे यद्दया बिन सुलैमान की रिवायत में अराहु अल्ख़ वारिद है; कि मैं समझता हूँ। कहा बहिश्त की नहरों से वो चार नहरें पानी और दूध और शहद और शराब की नहरें मुराद हैं जिनका ज़िक्र कुआन शरीफ़ में है।

2791. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने, कहा हमसे अबू रज़ाअ ने, उनसे समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने रात में दो आदमी देखे जो मेरे पास आए फिर वो मुझे लेकर एक पेड़ पर चढ़े और उसके बाद मुझे एक ऐसे मक़ान में ले गए जो निहायत ही ख़ूबसूरत

۲۷۹۱- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا جَرِيرٌ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ الْبَيْتَ الْبَيْتَ الَّذِي رَجَلَيْنِ آتَيْنِي فَصَعِدَا بِي الشَّجَرَةَ فَأَدْخَلَنِي دَارًا هِيَ أَحْسَنُ وَأَفْضَلُ، ثُمَّ أُرْفُطُ أَحْسَنَ مِنْهَا،

और बड़ा पाकीजा था, ऐसा खूबसूरत मकान मैंने कभी नहीं देखा था। उन दोनों ने कहा कि ये घर शहीदों का है। (राजेअ : 845)

قَالَا أَمَا هَلِيهِ الدَّارُ لِدَارِ الشُّهَدَاءِ).

[راجع : ٨٤٥]

मुफ़्फ़सल तौर पर (विस्तारपूर्वक) ये हदीस किताबुल जनाइज में गुजर चुकी है। दो शख्सों से मुराद हजरत जिब्रिल और हजरत मीकाईल (अलैहुमुस्सलाम) हैं जो पहले आपको बैतुल मज्दिस ले गए थे, बाद में आसमानों की सैर कराई और जन्नत और जहन्नम के बहुत से नजारे आपको दिखलाए। जिस्मानी मेअराज का वाकिया अलग है जो बिलकुल हक और हकीकत है।

### बाब 5 : अल्लाह के रास्ते में सुबह व शाम चलने की और जन्नत में एक कमान बराबर जगह की फ़ज़ीलत

2792. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन खालिद ने (फ़ज़ले जिहाद में) बयान किया, कहा हमसे हुमैद तबील ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के रास्ते में गुज़रने वाली एक सुबह या एक शाम दुनिया से जो कुछ दुनिया में है सबसे बेहतर है। (दीगर मक़ाम : 2796, 6568)

2793. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन फुलैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया हिलाल बिन अली से, उनसे अब्दुरहमान बिन अबी नमरह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत में एक (कमान) हाथ जगह दुनिया की उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ और गुरुब होता है और आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम चलना उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ और गुरुब होता है। (दीगर मक़ाम : 3253)

2794. हमसे क़बीसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया उन्होंने अबू हाज़िम से और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के रास्ते में गुज़रने वाली एक सुबह व शाम दुनिया और जों कुछ दुनिया में है सबसे बढ़कर है। (दीगर मक़ाम : 2892, 3250, 6415)

### ٥- بَابُ الْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ فِي سَبِيلِ

اللَّهِ، وَقَابَ قَوْسٍ أَحَدِكُمْ فِي الْجَنَّةِ

٢٧٩٢- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا

وَقَيْبٌ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((لَغَدْوَةٌ

فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا

وَمَا فِيهَا)). [طرفاه في : ٢٧٩٦, ٦٥٦٨].

٢٧٩٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي

عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

أَبِي عَمْرٍو عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَقَابٌ قَوْسٍ فِي

الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ الشَّمْسُ

وَتَقْرُبُ. وَقَالَ: لَغَدْوَةٌ أَوْ رَوْحَةٌ فِي سَبِيلِ

اللَّهِ خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ الشَّمْسُ

وَتَقْرُبُ)). [طرفة في : ٣٢٥٣].

٢٧٩٤- حَدَّثَنَا قَيْصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ

أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الرَّوْحَةُ وَالْغَدْوَةُ

فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَفْضَلُ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا

فِيهَا)). [أطرافه في : ٢٨٩٢, ٣٢٥٠, ٦٤١٥].

जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के फ़ज़ाइल में बहुत सी आयाते कुआनी और अह्दायिषे नबवी वारिद हुई हैं उन ही में से ये अह्दायिष भी हैं जो फ़ज़ाइले जिहाद को वाज़ेह लफ़्ज़ों में ज़ाहिर कर रही हैं। कुरूने उल्ला के मुसलमानों की ज़िन्दगी शाहिद (गवाह) है कि उन्होंने इस्लाम को और उसके मक़ासिदे आलिया (उच्च उद्देश्य) को कमाहक़हु समझा था और वो इसी आधार पर सर पर कफ़न बाँधे हुए पूरी दुनिया में सरगर्दी और कोशों हुए और एक ऐसी तारीख़ (इतिहास) बना गए जो क़यामत तक आने वाले अहले इस्लाम के लिये मशअले राह (मौल का पत्थर) प्राबित होगी।

**बाब 6 : बड़ी आँखों वाली हूरों का बयान, उनकी सिफ़ात जिनको देखकर आँखें हैरान होंगी**  
जिनकी आँखों की पुतली ख़ूब स्याह होगी और सफ़ेदी भी बहुत साफ़ होगी और (सूरह दुख़ान में) वजव्वज़नाहुम के मा'नी अन्कहनाहुम के हैं।

2795. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अम्र ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई भी अल्लाह का बन्दा जो मर जाए और अल्लाह के पास उसकी कुछ भी नेकी जमा हो वो फिर दुनिया में आना पसन्द नहीं करता गो उसको सारी दुनिया और जो कुछ उसमें है सब कुछ मिल जाए मगर शहीद फिर दुनिया में आना चाहता है कि जब वो (अल्लाह तआला के) यहाँ शहादत की फ़ज़ीलत को देखेगा तो चाहेगा कि दुनिया में दोबारा आए और फिर क़त्ल हो (अल्लाह तआला के रास्ते में)। (दीगर मक़ाम : 2817)

2796. और मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना वो नबी करीम (ﷺ) के हवाले से बयान करते थे कि अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम भी गुज़ार देना दुनिया और जो कुछ उसमें है, सबसे बेहतर है और किसी के लिये जन्नत में हाथ जगह भी या (राबी को शक़ है) एक क़ैद जगह, क़ैद से मुराद कोड़ा है, दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है और अगर जन्नत की कोई औरत ज़मीन की तरफ़ झांक भी ले तो ज़मीन व आसमान अपनी तमाम वुस्अतों के साथ मुनव्वर हो जाएँ और ख़ुशबू से मुअत्तर हो जाएँ। उसके सर का दुपट्टा भी दुनिया और उसकी सारी चीज़ों से बढ़कर है। (राजेअ : 2792)

٦- بَابُ الْحُورِ الْعِينِ وَصِفَتِهِنَّ  
يَحْرُ فِيهَا الطَّرْفُ شَدِيدَةُ سِوَادِ الْعَيْنِ،  
شَدِيدَةُ تَبَاضٍ الْعَيْنِ. وَزُجْنَاهُمْ:  
أَنْكَحْنَاهُمْ.

٢٧٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ  
حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ  
عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((مَا  
مِنْ عَبْدٍ يَمُوتُ لَهُ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ يَسْرُهُ أَنْ  
يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَأَنْ لَهُ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا،  
إِلَّا الشَّهِيدَ لَمَّا يَرَى مِنْ فَضْلِ الشَّهَادَةِ،  
فَإِنَّهُ يَسْرُهُ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيَقْتَلَ مَرَّةً  
أُخْرَى)). [طَرَفُهُ ٢٨١٧].

٢٧٩٦- قَالَ : وَسَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ  
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ : ((لَرَوْحَةٍ فِي سَبِيلِ  
اللَّهِ أَوْ غَدَوَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا،  
وَلَقَابُ قَوْسٍ أَحَدِكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ أَوْ مَوْضِعٌ  
قَبْدٍ - يَعْنِي سَوْطَةً - خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا  
فِيهَا. وَلَوْ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعَتْ  
إِلَى أَهْلِ الْأَرْضِ لِأَصْدَاءَتْ مَا بَيْنَهُمَا  
وَلَمَلَأَتْهُ رِيحًا، وَلَنْصَيِفَهَا عَلَى رَأْسِهَا  
خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)).

[رَاجِعُ : ٢٧٩٢]

**तशरीह :** कुछ मुल्हिदीन बेदीन हूँ के नूर और खुशबू पर इस्तिआद करते हैं, उनका जवाब ये है कि बहिश्त का क़यास दुनियाँ पर नहीं किया जा सकता न बहिश्त की ज़िन्दगी दुनिया की ज़िन्दगी की तरह है। बहुत सी चीज़ें हम दुनिया में देख नहीं सकते मगर आखिरत में उनको देखेंगे, दोज़ख़ का हल्के से हल्का अज़ाब आदमी नहीं उठा सकता पर आखिरत में आदमी को ऐसी ताक़त दी जाएगी कि वो दोज़ख़ के अज़ाबों का तहम्मूल (बर्दाश्त) करेगा और फिर ज़िन्दा रहेगा। अल्ल अल ग़ज़ उख़रवी ज़िन्दगी को दुनियावी हालात पर क़यास करने वाले खुदफ़हम व फ़िरासत से महरूम हैं।

### बाब 7 : शहादत की आरज़ू करना

2797. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे उस ज़ात की क़सम। जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर मुसलमानों के दिलों में उससे रंज न होता कि मैं उनको छोड़कर जिहाद के लिये निकल जाऊँ और मुझे ख़ुद इतनी सवारियाँ मयस्सर नहीं हैं कि उन सबको सवार करके अपने साथ ले चलूँ तो मैं किसी छोटे से छोटे ऐसे लश्कर के साथ जाने से भी न रुकता जो अल्लाह के रास्ते में ग़ज़वे के लिये जा रहा होता। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! मेरी तो आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िन्दा किया जाऊँ और फिर क़त्ल किया जाऊँ। (राजेज़: 36)

### ٧- بَابُ تَمَنِّيِ الشَّهَادَةِ

٢٧٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَمِيرِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ لَا أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَا تَطِيبُ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنِّي، وَلَا أَجِدُ مَا أَحْتَجِلُهُمْ عَلَيْهِ، مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِيَّةٍ تَغْذُو فِي سَبِيلِ اللَّهِ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوِدِدْتُ أَنِّي أَقْتُلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ أَحْيَا، ثُمَّ أَقْتُلُ ثُمَّ أَحْيَا، ثُمَّ أَقْتُلُ ثُمَّ أَحْيَا، ثُمَّ أَقْتُلُ)).»

[راجع: ٣٦]

मा'लूम हुआ कि शहादत की आरज़ू करना इस निव्यत से कि उससे शजरे इस्लाम की आबयारी होगी और आखिरत में बुलन्द दरजात हासिल होंगे। ये जाइज़ बल्कि सुन्नत है और ज़रूरी है।

2798. हमसे यूसुफ़ बिन यअक़ूब सफ़फ़ार ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अलिया ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया आपने फ़र्माया फ़ौज़ का झण्डा अब ज़ैद ने अपने हाथ में लिया और वो शहीद कर दिये गये फिर जा'फ़र ने ले लिया और वो भी शहीद कर दिये गये फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने ले लिया और वो भी शहीद कर दिये गये और अब किसी हिदायत का इतिज़ार किये बग़ैर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया। और उनके हाथ पर इस्लामी लश्कर को फ़तह हुई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि और

٢٧٩٨- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ الصَّفَّارُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((أَخَذَ الرَّايَّةَ زَيْدٌ فَأَصِيبَ ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ فَأَصِيبَ ثُمَّ أَخَذَهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ عَنْ غَيْرِ امْرَأَةٍ فَفُتِحَ لَهُ)). وَقَالَ:

हमें कोई उसकी खुशी भी नहीं थी कि ये लोग जो शहीद हो गए हैं हमारे पास ज़िन्दा रहते क्योंकि वो बहुत ऐशो-आराम में चले गए हैं। अय्यूब ने बयान किया था आपने ये फ़र्माया कि उन्हें कोई उसकी खुशी भी नहीं थी कि हमारे साथ ज़िन्दा रहते, उस वक़्त औहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। (राजेज़: 1446)

((مَا يَسُرُّنَا أَنَّهُمْ عِنْدَنَا)) قَالَ أَيُّوبُ: أَوْ قَالَ: ((مَا يَسُرُّهُمْ أَنَّهُمْ عِنْدَنَا، وَعَيْنَاهُ تَلْفُفَانِ)). (راجع: 1446)

**तशरीह:** हुआ ये था कि 8 हिजरी में आप (ﷺ) ने गुज्व-ए-मौता के लिये एक लश्कर रवाना किया। ज़ैद बिन हारिषा को उसका सरदार मुकर्रर किया और फ़र्माया कि अगर वो शहीद हो जाएँ तो जा'फ़र को सरदार बनाना, अगर वो भी शहीद हो जाएँ तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा को। इतिफ़ाक़ से एक के बाद एक ये तीनों सरदार शहीद हो गए और ख़ालिद बिन वलीद ने आखिर में अफ़सरी झण्डा उठा लिया ताकि मुसलमान हिम्मत न हारें क्योंकि लड़ाई सख़्त हो रही थी। गो उनके लिये औहज़रत (ﷺ) ने कुछ नहीं फ़र्माया था। आप (रज़ि.) काफ़िरों से यहाँ तक लड़े कि अल्लाह ने आपके ज़रिये इस्लाम के लश्कर को फ़तह नसीब फ़र्माई। दूसरी रिवायत में है कि आपने खुश होकर ख़ालिद बिन वलीद के हक़ में फ़र्माया कि वो अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है। मज़ीद तफ़्सीलात जंगे मौता के ज़िक्र में आएंगी।

**बाब 8 : अगर कोई शख्स जिहाद में सवारी से गिरकर मर जाए तो उसका शुमार भी मुजाहिदीन में होगा, उसकी फ़ज़ीलत**

और सूरह निसा में अल्लाह तआला का इश्राद कि जो शख्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिजरात की निय्यत से निकले और फिर रास्ते ही में उसकी वफ़ात हो जाए तो अल्लाह पर उसका अज़्र (हिजरात का) वाजिब हो गया (आयत में) वक्रअ के मा'नी वजब के हैं। (अन निसा: 100)

۸- بَابُ فَضْلِ مَنْ يُصْرَعُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمَاتَ فَهُوَ مِنْهُمْ

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكُهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ﴾ [النساء: 100] وقع: وجب.

**तशरीह:** कहते हैं एक शख्स ज़मरह नामी जो मुसलमान था, मक्का में रह गया था। जब ये आयत नाज़िल हुई, अलम तकुन अर्ज़ल्लाहि वासिअतुन फतुहाजिरू फीहा या'नी, क्या अल्लाह की ज़मीन फराख नहीं है कि तुम उसमें हिजरात कर जाओ, ये आयत सुनकर उन्होंने बीमारी में मदीना का सफ़र शुरू किया मगर रास्ते ही में उनको मौत आ गई। उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई। जिहाद भी उस पर क़यास किया जा सकता है कि कोई शख्स जिहाद के लिये निकले और रास्ते में अपनी मौत से मर जाए तो उसको भी मुजाहिदीन का प़वाब मिलेगा और वो इन्दल्लाह शहीदों में लिखा जाएगा। मशहूर हदीष इन्नमा लिक्ुल्लि इमिन् मा नवा से भी इसकी ताईद होती है हिजरात अपना दीन-ईमान बचाने के लिये दारुल हरब से दारुल इस्लाम में चले जाने को कहते हैं और ये क़यामत तक के लिये बाक़ी है।

2799. 2800. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन हब्बान ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे उनकी ख़ाला उम्मे-हराम बिनते मिलहान (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) मेरे करीब ही सो गए। फिर जब बेदार हुए तो

۲۷۹۹، ۲۸۰۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ خَالَتِهِ أُمِّ حُرَّامٍ بَسَتْ مِلْحَانَ قَالَتْ: ((نَامَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا قَرِيبًا مِنِّي، ثُمَّ

मुस्कुरा रहे थे, मैंने अर्ज किया कि आप (ﷺ) किस बात पर हंस रहे हैं? फ़र्माया मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो ग़ज़्वा करने के लिये उस बहते दरिया पर सवार होकर जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ते हैं। मैंने अर्ज किया फिर आप (ﷺ) मेरे लिये भी दुआ कर दीजिए कि अल्लाह तआला मुझे भी उन्हीं में से बना दे। आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ की। फिर दोबारा आप (ﷺ) सो गए और पहले की तरह इस बार भी किया (बेदार होते हुए मुस्कुराए) उम्मे हुराम (रज़ि.) ने पहले ही की तरह इस बार भी अर्ज किया और आप (ﷺ) ने वही जवाब दिया। उम्मे हुराम (रज़ि.) ने अर्ज किया आप दुआ कर दें कि अल्लाह तआला मुझे भी उन्हीं में से बना दे तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी चुनौचे वो अपने शौहर इब्बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ मुसलमानों के सबसे पहले बहरी (समन्दरी) बेड़े में शरीक हुई। मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में ग़ज़्वा से लौटते वक़्त जब शाम के साहिल पर लश्कर उतरा तो उम्मे हुराम (रज़ि.) के करीब एक सवारी लाई गई ताकि उस पर सवार हो जाएँ लेकिन जानवर ने उन्हें गिरा दिया और उसी में उनका इंतिकाल हो गया। (राजेज़: 2788, 2789)

अंबिया के ख़्वाब भी वह्य और इल्हाम होते हैं। आपने ख़्वाब में देखा कि आपकी उम्मत के कुछ लोग बड़ी शान और शौकत के साथ बादशाहों की तरह समुन्दर पर सवार हो रहे हैं। आखिर आप (ﷺ) का ये ख़्वाब पूरा हुआ और मुसलमानों ने अहदे मुआविया (रज़ि.) में बहरी बेड़े तैयार करके शाम (सीरिया) पर हमला किया, बाब का तर्जुमा इस तरह निकला कि उम्मे हुराम (रज़ि.) अगरचे जानवर से गिरकर मरीं मगर आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मुजाहिदीन में शामिल फ़र्माया और अन्त मिनल् अब्बलीन से आपने पेशीनगोई फ़र्माई।

## बाब 9 : जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे (या) नी उसके किसी अज़्व को सदमा हो)

2801. हमसे हफ़्स बिन उमर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, उनसे इस्हाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बन्ू सुलैम के सत्तर आदमी (जो क़ारी थे) बन्ू आमिर के यहाँ भेजे। जब ये सब हज़रात (बीरे मज़्ना पर) पहुँचे तो मेरे मामू हुराम बिन मिलहान (रज़ि.) ने कहा मैं (बन्ू सुलैम के यहाँ) आगे जाता हूँ अगर मुझे उन्हीं ने इस बात का अमन दे दिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें उन तक

اسْتَيْقَظَ يَتَبَسَّمُ، فَقُلْتُ: مَا أَحْسَنَكَ؟ قَالَ: ((أُنَسُّ مِنْ أُمَّتِي غَرَضُوا عَلَيَّ يَرْكَبُونَ هَذَا الْبَحْرَ الْأَعْظَرَ كَأَنَّهُمْ يَرْكَبُونَ عَلَى الْأَسْبَةِ)). قَالَ: فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا. ثُمَّ نَامَ النَّبِيُّ، فَفَعَلَ بِمِثْلِهَا، فَقَالَتْ: يَنْتِ قَوْلُهَا، فَاجَابَهَا بِقَوْلِهَا، فَقَالَتْ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَقَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الْأَوَّلِينَ)). فَعَزَّجَتْ مَعَ زَوْجِهَا عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ غَازِيًا أَوَّلَ مَا رَكِبَ الْمُسْلِمُونَ الْبَحْرَ مَعَ مُعَاوِيَةَ، فَلَمَّا انْصَرَفُوا مِنْ غَزْوِهِمْ قَالَتِ لِقَوْلِهَا الشَّامَ فَقُرِئَتْ إِلَيْهَا ذَاتُهُ يَرْكَبُهَا فَصَرَفَهَا فَمَاتَتْ)).

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

## ٩- بَابُ مَنْ يُنْكَبُ أَوْ يُطْعَنُ فِي

سَبِيلِ اللَّهِ

٢٨٠١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمَرَ الْخَوْصِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْوَامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى بَنِي عَامِرٍ فِي سَتِينَ، فَلَمَّا قَدِمُوا قَالَ لَهُمْ خَالِي: اتَّقُواكُمْ، لِإِنْ



पहुँचाऊँ ता बेहतर करना तुम लोग मेरे करीब तो हो ही। चुनौचे वो उनके यहाँ गये और उन्होंने अमन भी दे दिया। अभी वो कबीले के लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुना ही रहे थे कि कबीले वालों ने अपने एक आदमी (आमिर बिन तुफैल) को इशारा किया और उसने आप (रज़ि.) के बरछा मारा जो जिस्म में आर-पार हो गया। उस वक़्त उनकी जुबान से निकला, अल्लाहु अकबर! मैं कामयाब हो गया का'बा के रब की कसम! उसके बाद कबीले वाले हुराम (रज़ि.) के दूसरे साथियों की तरफ़ (जो सत्तर की ता'दाद में थे) बढ़े और सबको क़त्ल कर दिया। अल्बत्ता एक साहब जो लंगड़े थे, पहाड़ पर चढ़ गए। हम्माम (हदीष के रावी) ने बयान किया मैं समझता हूँ कि एक साहब और उनके साथी (पहाड़ पर चढ़े थे) (अमर बिन उमर्या ज़मरी) उसके बाद जिब्रईल ने नबी करीम (ﷺ) को ख़बर दी कि आपके साथी अल्लाह तआला से जा मिले हैं, पस अल्लाह खुद भी उनसे खुश है और उन्हें भी खुश कर दिया है। उसके बाद हम (कुआन की दूसरी आयतों के साथ ये आयत भी) पढ़ते थे (तर्जुमा) हमारी क़ौम के लोगों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, पस हमारा रब खुद भी खुश है और हमें भी खुश कर दिया है। उसके बाद ये मन्सूख हो गई, नबी करीम (ﷺ) ने चालीस दिन तक सुबह की नमाज़ में क़बीला रअल, ज़क्वान, बनी लहयान और बनी उमर्या के लिये बद् दुआ की थी जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाफ़रमानी की थी। (राजेअ: 1001)

أَتَيْنِي حَتَّى أَبْلَغَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَّا كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا. فَفَعَلْتُمْ فَأَمْتُوهُ، فَيَتَمَّا يُخَذِّلُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَمَرُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ لَطْفَةً فَأَلْفَدُوهُ، فَقَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ، فُرُوتٌ وَزَبُّ الْكُفَّةِ. ثُمَّ مَاتُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحَابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلَّا رَجُلًا أُفْرَجَ صَعِيدَ الْجَبَلِ، قَالَ هَمَامٌ: فَأَرَاهُ آخِرَ مَعْدَةٍ، فَأَخْبَرَ جَبْرِئِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ فَرَضِي عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ أَنْ تَلْعَوْا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقَيْنَا رَبَّنَا فَرَضِي عَنْهُمْ وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدَهُ، فَذَخَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا عَلَى رِغْلٍ وَذَكْوَانٍ وَتَبِي لِحَتَانٍ وَتَبِي عُصْبَةِ الَّذِينَ عَصَوْا اللَّهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ».

[راجع: 1001]

**तशरीह:** हाफ़िज़ ने कहा उसमें हफ़स बिन उमर इमाम बुखारी के शैख से सह हो गया है और सहीह यूँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उम्मे सुलैम के एक भाई या'नी हुराम बिन मिल्हान को सत्तर आदमियों के साथ बनी आमिर की तरफ़ भेजा था। ये सत्तर आदमी अंसार के क़ारी थे और आपने दीन की ता'लीम फैलाने के लिये कबीला बनी आमिर के यहाँ भेजे थे जिनके लिये खुद उस कबीला ने दरख्वास्त की लेकिन रास्ते में बनू सुलैम ने दगा की और उन ग़रीब कारियों को नाहक क़त्ल कर दिया। बनू सुलैम का सरदार आमिर बिन तुफैल था। लुगत के सिलसिले में जिन कबीलों का ज़िक्र रिवायत में आया है ये सब बनू सुलैम की शाखें हैं। आयत जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है उन आयतों में से है जिनकी तिलावत मन्सूख हो गई।

2802. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन कैस ने और उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) किसी लड़ाई के मौक़े पर मौजूद थे और आप (ﷺ) की उँगली जख्मी हो गई थी।

٢٨٠٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو غَوَاثَةَ عَنْ الْأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سَفْيَانَ : أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ

आप (ﷺ) ने उँगली से मुखातिब होकर फ़र्माया तेरी हक़ीक़त एक ज़ख़मी उँगली के सिवा क्या है और जो कुछ मिला है अल्लाह के रास्ते में मिला है। (दीगर मक़ाम : 6146)

كَانَ فِي بَعْضِ الْمَشَاهِدِ وَقَدْ دَمِيَتْ  
إِصْبَعُهُ فَقَالَ: ((هَلْ أَنْتَ إِلَّا إِصْبَعٌ دَمِيَتْ،  
وَلَهُ سَبِيلٌ إِلَهُ مَا لَقِيتَ)).  
[طبره ٣ : ٦١٤٦].

मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने तर्जुमा यूँ किया है, एक उँगली है तेरी हस्ती यही; जो अल्लाह की राह में ज़ख़मी हुई

### बाब 10 : जो अल्लाह के रास्ते में ज़ख़मी हुआ?

#### उसकी फ़ज़ीलत का बयान

2803. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी अबुज़्ज़िनाद से, उन्होंने अअरज से और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है जो शख़्स भी अल्लाह के रास्ते में ज़ख़मी हुआ और अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि उसके रास्ते में कोई ज़ख़मी हुआ है, वो क़यामत के दिन इस तरह से आएगा कि उसके ज़ख़मों से ख़ून बह रहा होगा, रंग तो ख़ून जैसा होगा लेकिन उसमें ख़ुशबू मुश्क जैसी होगी। (राजेअ : 237)

### ١٠- بَابُ مَنْ يُجْرَحُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ

٢٨٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ  
أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ  
عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ  
لِلَّهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَا  
يُكَلِّمُ أَحَدٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ - وَاللَّهُ أَعْلَمُ  
بِمَنْ يُكَلِّمُ فِي سَبِيلِهِ - إِلَّا جَاءَ يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ وَجُرْحُهُ يَشْتَبُ وَاللَّوْنُ لَوْنُ الدَّمِ،  
وَالرَّيْحُ رِيحُ الْمِسْكِ)). [راجع: ٢٣٧]

या'नी अल्लाह को ख़ूब मा'लूम है कि ख़ालिस उसकी रज़ाजूई के लिये कौन लड़ता है और उसमें रिया और नामवरी का शायबा है या नहीं। इमाम नववी (रह.) ने कहा है कि जो शख़्स बाग़ियों या रहज़नों के हाथ से ज़ख़मी हो या दीन की ता'लीम के दौरान में मर जाए उसके लिये भी यही फ़ज़ीलत है, आजकल जो मुसलमान दुश्मनों के हाथ से मज़्लूमाना क़त्ल हो रहे हैं वो भी उसी ज़ैल में हैं। (वज़ाहु आलम बिस्सवाब)

### बाब 11 : फ़र्माने इलाही कि,

ऐ पैग़म्बर! उन काफ़िरों से कह दो तुम हमारे लिये किया इन्तिज़ार करते हो, हमारे लिये तो दोनों में से (शहादत या फ़तह) कोई भी हो अच्छा ही है और लड़ाई है कभी इधर कभी उधर।

2804. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ ने बयान किया, कहा मुज़से यूनस ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उन्होंने अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक्ल ने उनसे कहा था मैंने तुमसे पूछा था लड़ाइयों का क्या

### ١١- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿قُلْ هَلْ تَرْتَضُونَ بِنَا إِلَّا اخْذِي  
الْمُحْسِنِينَ﴾ [التوبة: ٥٢]

وَالْحَرْبُ سِجَالٌ

٢٨٠٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا  
اللَيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ  
عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ  
عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَفْيَانَ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ

अंजाम रहता है तो तुमने बताया कि लड़ाई डोलों की तरह है, कभी इधर कभी उधर या'नी कभी लड़ाई का अंजाम हमारे हक में होता है और कभी उनके हक में अंबिया का भी यही हाल होता है कि उनकी आजमाइश होती रहती है (कभी फतह और कभी हार से) लेकिन अंजाम उन्हीं के हक में अच्छा होता है। (राजेअ : 7)

مِرْقَالٌ قَالَ لَدَى سَأَلْتِكَ كَيْفَ كَانَ فَتْلُكُمْ  
إِيَّاهُ. فَرَعَمْتُ أَنَّ الْحَرْبَ سِجَالٌ وَذَوَلٌ.  
فَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تَبْتَلَى ثُمَّ تَكُونُ لَهُمْ  
الْعَاقِبَةُ. (راجع : ٧)

या'नी या तो मुसलमान लड़ते-लड़ते अपनी जान दे देगा या फिर फतह हासिल होगी। ईमान लाने के बाद मुसलमानों के लिये दोनों अंजाम नेक और अच्छे हैं। फतह की सूरत को तो सब अच्छी समझते हैं लेकिन लड़ाई में मौत और शहादत एक मोमिन का आखिरी मकसूद (अन्तिम लक्ष्य) है, अल्लाह के रास्ते में लड़ता है और अपनी जान दे देता है, जब अल्लाह की बारगाह में पहुँचता है तो उसकी नवाजिशें और ज़याफ़तें उसे खूब हासिल होती हैं।

**बाब 12 : अल्लाह तआला का इर्शाद है कि,**

मोमिनों में कुछ वो लोग भी हैं जिन्होंने उस वादे को सच कर दिखाया जो उन्होंने अल्लाह तआला से किया था, पस उनमें कुछ तो ऐसे हैं जो (अल्लाह के रास्ते में शहीद होकर) अपना अहद पूरा कर चुके और कुछ ऐसे हैं जो इतिज़ार कर रहे हैं और अपने अहद से वो फिरे नहीं हैं। (अल अहज़ाब : 23)

١٢- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا  
اللَّهُ عَلَيْهِ، فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ  
مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا﴾. [الأحزاب  
: ٢٣]

आयत में अहद से मुराद वो अहद है जो सहाबा (रज़ि.) ने उहद के दिन किया था या लैलतुल इक्बा में कि आँहज़रत (ﷺ) का साथ देंगे और किसी हाल में मुँह न मोड़ेंगे। कुछ तो अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके जैसे अनस बिन नज़र, अब्दुल्लाह अंसारी, हमज़ा, तलहा वगैरह कुछ शहादत के मुतज़िर हैं जैसे हज़रते खुलाफ़ा-ए-अरबआ और दूसरे सहाबा जो बाद में शहीद हुए और उमूम के लिहाज़ से क़यामत तक आने वाले वो सारे मुसलमान जो दिलों में ऐसी तमन्ना रखते हैं। जअल्लल्लाहु मिन्हुम आमीन

2805. हमसे मुहम्मद बिन सईद ख़ुज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा (दूसरी सनद) हमसे अम्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमसे ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुमैद तबील ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे चचा अनस बिन नज़र (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में हाज़िर न हो सके, इसलिये उन्होंने अज़्र किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं पहली लड़ाई ही से शायब रहा जो आपने मुश्किनी के खिलाफ़ लड़ी लेकिन अगर अब अल्लाह तआला ने मुझे मुश्किनी के खिलाफ़ किसी लड़ाई में हाज़िरी का मौक़ा दिया तो अल्लाह तआला देख लेगा कि मैं क्या करता हूँ। फिर जब उहद की लड़ाई का मौक़ा आया और मुसलमान भाग निकले तो अनस

٢٨٠٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيدٍ  
الْخَزَاعِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى عَنْ حُمَيْدٍ  
قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسًا. ح حَدَّثَنَا غَمْرُو بْنُ  
زُرَّارَةَ حَدَّثَنَا زِيَادٌ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ  
الطُّوَيْلِيُّ عَنْ أَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
«غَابَ عَمِّي أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ عَنْ قِتَالِ  
بَدْرٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، غِبْتُ عَنْ أَوَّلِ  
قِتَالٍ قَاتَلْتُ الْمُشْرِكِينَ، لَيْنَ اللَّهُ أَشْهَدَنِي  
قِتَالِ الْمُشْرِكِينَ لَيَرَيْنَ اللَّهُ مَا أَصْنَعُ.

बिन नज़र ने कहा कि ऐ अल्लाह! जो कुछ मुसलमानों ने किया मैं उससे मअज़रत करता हूँ और जो कुछ इन मुश्रिकीन ने किया है मैं उससे बेज़ार हूँ। फिर वो आगे बढ़े (मुश्रिकीन की तरफ़) तो सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) से सामना हुआ। उनसे अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने कहा ऐ सअद बिन मुआज़! मैं तो जन्नत में जाना चाहता हूँ और नज़र (उनके बाप) के रब की क़सम मैं जन्नत की खुशबू उहूद पहाड़ के करीब पाता हूँ। सअद (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जो उन्होंने कर दिखाया उसकी मुझमें हिम्मत न थी। अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि उसके बाद जब अनस बिन नज़र (रज़ि.) को हमने पाया तो तलवार नेज़े और तीर के तक्ररीबन अस्सी ज़ख़म उनकी जिस्म पर थे, वो शहीद हो चुके थे, मुश्रिकों ने उनके हिस्सों को काट दिया था और कोई शख्स उन्हें पहचान न सका था, सिर्फ़ उनकी बहन डँगलियों से उन्हें पहचान सकी थी। अनस (रज़ि.) ने बयान किया हम समझते हैं (या आपने बजाय नरा के नज़ुनु कहा) मतलब एक ही है कि ये आयत उनके और उन जैसे मोमिनीन के बारे में नाज़िल हुई थी कि मोमिनों में कुछ वो लोग हैं जिन्होंने अपने उस वादे को सच्चा कर दिखाया जो उन्होंने अल्लाह तआला से किया था, आख़िर आयत तक।

(दीगर मक़ाम : 4048, 4783)

2806. उन्होंने बयान किया कि अनस बिन नज़र (रज़ि.) की एक बहन रबीअ नामी (रज़ि.) ने किसी ख़ातून के आगे के दांत तोड़ दिये थे, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे क़िसास लेने का हुक्म दिया। अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाया है (क़िसास में) उनके दांत न टूटेंगे। चुनौचे मुहअरी तावान लेने पर राज़ी हो गए और क़िसास का ख़याल छोड़ दिया, इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के कुछ बन्दे हैं कि अगर वो अल्लाह का नाम लेकर क़सम खा लें तो अल्लाह खुद उनकी क़सम पूरी कर देता है। (राजेअ : 2703)

فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ أُحُدٍ وَانْكَشَفَ الْمُشْرِكُونَ قَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعْتَصِرُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلَاءِ، يَغْنِي أَسْنَنَهُ، وَأَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلَاءِ، يَغْنِي الْمُشْرِكِينَ. ثُمَّ تَقَدَّمَ فَاسْتَخْلَفَهُ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ، فَقَالَ: يَا سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ، الْجَنَّةُ وَرَبُّ النَّصْرِ، إِنِّي أَجِدُ رَيْحَهَا مِنْ ذُوْنِ أُحُدٍ. قَالَ سَعْدُ: فَمَا اسْتَطَعْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا صَنَعَ.

قَالَ أَنَسُ: فَوَجَدْنَا بِهِ بَضْعًا وَتَمَانِينَ ضَرْبَةً بِالسِّيفِ أَوْ طَعْنَةً بِرُمْحٍ أَوْ رَمِيَةً بِهِمْ. وَوَجَدْنَاهُ قَدْ قُتِلَ وَقَدْ مَثَلَ بِهِ الْمُشْرِكُونَ، فَمَا عَرَفَهُ أَحَدٌ إِلَّا أُخْتَهُ بِبَابِهِ. قَالَ أَنَسُ: كَمَا نَرَى - أَوْ نَظُنُّ - أَنَّ هَذِهِ الْآيَةَ نَزَلَتْ فِيهِ وَفِي أَشْبَاهِهِ: هُوَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رَجُلًا صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ)).

[طرمه في: ٤٠٤٨، ٤٧٨٣].

٢٨٠٦- وَقَالَ: إِنَّ أُخْتَهُ - وَهِيَ تَسْمَى الرُّبَيْعَ - كَسَرَتْ نَيْلَةَ امْرَأَةٍ فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْقِصَاصِ، فَقَالَ أَنَسُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا يُكْسَرُ شَيْئُهَا. فَرَضُوا بِالْأَرْضِ وَتَرَكَوا الْقِصَاصَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لِابْتِرَاءٍ)).

[راجع: ٢٧٠٣]

**तशरीह:** हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि.) ने जो कहा उसका मतलब ये था कि मैं दोनों कामों से नाराज़ हूँ, मुश्रिक तो कमबख्त नापाक हैं जो नाहक़ पर लड़ रहे हैं। उनसे क़त्लअन बेज़ार हूँ और मुसलमान जिनको हक़ पर ज़मकर लड़ना चाहिये था वो भाग निकले हैं, उनकी हरकत को भी नापसन्द करता हूँ और तेरी दरगाह में मअज़रत करता हूँ कि मैं उन भागने

वालों में से नहीं हूँ। ये कहकर उन्होंने कुप्फार पर हमला किया और कितनों को जहन्नम रसीद करते हुए आखिर जामे शहादत पी लिया। भागने वालों से वो लोग मुराद हैं जिनको जंगे उहुद में एक दर्रे की हिफाजत पर मामूर किया गया था और ताकीद के साथ कह दिया गया था कि जब तक इजाजत न मिले, हर्गिज दर्रा न छोड़ें मगर उन्होंने शुरू में मुसलमानों की फतह देखी तो दर्रा खाली छोड़ दिया और जिसमें से कुप्फारे कुरैश ने दोबारा वार किया और मैदाने उहुद का नक्शा ही बदल गया, जंगे उहुद इस्लामी तारीख का एक बहुत ही दर्दनाक मअरका है जिसमें सत्तर मुसलमान शहीद हुए और इस्लाम को बड़ा जबरदस्त नुकसान पहुँचा। मैदाने उहुद में गंज शहीदान उन्हीं शुहदाए उहुद का यादगारी कब्रिस्तान है, जज़ाहुमुल्लाहु जज़ाअन हसना

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है

ये सब पौधे उसी की लगाई हुई है।

2807. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी जुहरी से, दूसरी सनद और मुझसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, मेरा ख्याल है कि मुहम्मद बिन अतीक के वास्ते से, उनसे इब्ने शिहाब (जुहरी) ने और उनसे खारजा बिन ज़ैद ने कि ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) ने बयान किया जब कुर्आन मजीद को एक मुहम्मद की (किताबी) सूरत में जमा किया जाने लगा तो मैंने सूरह अहज़ाब की एक आयत नहीं पाई जिसकी रसूलुल्लाह (ﷺ) से बराबर आपकी तिलावत करते हुए सुनता रहा था (जब मैंने उसे तलाश किया तो) सिर्फ़ खुज़ैमा बिन प्राबित अंसारी (रज़ि.) के यहाँ वो आयत मुझे मिली। ये खुज़ैमा (रज़ि.) वही हैं जिनकी अकेले की गवाही को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो आदमियों की गवाही के बराबर करार दिया था। वो आयत ये थी, मिनल् मोमिनीन रिजालुन सदकू मा आहदुल्लाहु अलैहि (अल् अहज़ाब : 23) तर्जुमा बाब के ज़ेल में गुजर चुका है)

(दीगर मक़ाम : 4049, 4679, 4784, 4986, 4988, 4989, 7191, 7425)

۲۸۰۷ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ أَرَاهُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَيْنٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَسَخْتُ الْمُحْفَ لِي الْمَصَاحِفِ فَقَدْتُ آيَةً مِنْ سُورَةِ الْأَحْزَابِ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا فَلَمْ أَجِدْهَا إِلَّا مَعَ خَزِيمَةَ بْنِ ثَابِتٍ الْأَنْصَارِيِّ الَّذِي جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَهَادَتَهُ شَهَادَةً رَجُلَيْنِ، وَهُوَ قَوْلُهُ: ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ﴾)).

أُطْرَافُهُ ن: ٤٠٤٩, ٤٦٧٩, ٤٧٨٤

٤٩٨٦, ٤٩٨٨, ٤٩٨٩, ٧١٩١

[۷۴۲۵]

**तशरीह :** इससे कोई ये न समझे कि कुर्आन शरीफ़ एक शख्स की रिवायत पर जमा हुआ है क्योंकि ये आयत सुनी तो बहुत से आदमियों ने थी जैसे हज़रत उमर और उबय बिन कअब और हिलाल बिन उमय्या और ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) वग़ैरहम से मगर इतिफ़ाक़ से लिखी हुई किसी के पास न मिली।

हज़रत खुज़ैमा (रज़ि.) की शहादत को आपने दो शहादतों के बराबर करार दिया, ये खास खुज़ैमा के लिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया था। हुआ ये कि आप (ﷺ) ने एक शख्स से कोई बात फ़र्माई, उसने इंकार किया। खुज़ैमा ने कहा मैं इसका गवाह हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुझसे तो गवाही तलाब नहीं की गई फिर तू गवाही देता है। खुज़ैमा ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम पर आसमान से जो हुक्म उतरते हैं उन पर आप (ﷺ) की तस्दीक करते हैं ये कौनसी बड़ी बात है। आप (ﷺ) ने खुज़ैमा (रज़ि.) की शहादत पर फ़ैसला कर दिया और उनकी शहादत दूसरे दो आदमियों की शहादत के बराबर रखी। (वहीदी)

## बाब 13 : जंग से पहले कोई नेक अमल करना

और अबू दर्दा (रज़ि.) ने कहा कि तुम लो अपने (नेक) आमाल की बदौलत जंग करते हो और अल्लाह तआला का (सूरह सफ़ में ये) इशाद कि, ऐ लोगों! जो ईमान ला चुके हो ऐसी बातें बयूँ कहते हो जो खुद नहीं करते अल्लाह के नज़दीक ये बहुत बड़े गुप्ते की बात है कि तुम वो कहो जो तुम खुद नहीं करते, बेशक अल्लाह उन लोगों को पसन्द करता है जो उसके रास्ते में सफ़ बनाकर ऐसे जमकर लड़ते हैं जैसे सीसा पिलाई हुई ठोस दीवार हों।

۱۳- بَابُ عَمَلٍ صَالِحٍ قَبْلَ الْقِتَالِ  
وَقَالَ أَبُو الذَّرْدَاءِ إِنَّمَا تُقَاتِلُونَ بِأَعْمَالِكُمْ.  
وَقَوْلُهُ هِيَ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ  
مَا لَا تَفْعَلُونَ. كَبُرَ مَقَاتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ  
تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ  
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًا كَانَتْهُمْ بَنِيَانٍ  
مَرْصُوصًا.

## तशरीह:

मुसलमानों की दो सफ़े अल्लाह को बहुत ही महबूब हैं। एक सफ़ तो वो जो नमाज़ में कायम करते हैं कि पैर से पैर, कंधे से कंधा मिलाकर अल्लाह की इबादत के लिये खड़े होते हैं। दूसरी सफ़ वो जो वो दुश्मन के मुकाबले पर सीसा पिलाई हुई दीवारों की शक्ल में कायम करके जिहाद करते हैं, ये दोनों सफ़े अल्लाह को बहुत महबूब हैं और सद अफ़सोस कि इस दौर नाजुक में ये हर किस्म की हक़ीकी सफ़बन्दी मुसलमानों में से मफ़कूद हो चुकी है। जिहाद की सफ़बन्दी तो ख़्वाब व ख़याल में भी नहीं मगर नमाज़ों की सफ़बन्दी का भी बुरा हाल है किसी भी मस्जिद में जाकर देखें सफ़ों में हर नमाज़ी दूसरे नमाज़ी से इस तरह दूर-दूर हटा नज़र आएगा गोया वो दूसरा नमाज़ी और उसके क़दम छूने से कोई गुनाह कबीरा लाज़िम आ जाएगा।

सफ़े कज, दिल परेशान, सज्दा बेज़ोक्र

कि अंदाज़े जुनू बाक़ी नहीं है।

2808. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्हीम ने बयान किया, कहा हमसे शबाबा बिन सवार फ़ुज़ारी ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक स़ाहब ज़िरह पहने हुए हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं पहले जंग में शरीक हो जाऊँ या पहले इस्लाम लाऊँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया पहले इस्लाम लाओ फिर जंग में शरीक होना। चुनौचे वो पहले इस्लाम लाया और उसके बाद जंग में शहीद हुए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अमल कम किया लेकिन अज़्र बहुत पाया।

۲۸۰۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ  
حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ الْقُرَازِيُّ حَدَّثَنَا  
إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ  
الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَتَى النَّبِيَّ  
ﷺ رَجُلٌ مُفْتَعٌ بِالْخَيْدِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ  
اللَّهِ، أَقَاتِلْ وَأَسْلِمْ؟ قَالَ: ((أَسْلِمَ ثُمَّ  
قَاتِلَ)). فَأَسْلِمَ ثُمَّ قَاتَلَ فَقَاتِلَ. فَقَالَ

कुछ ने कहा ये शख़्स अम्र बिन श़ाबित अंसारी थे। इन्हे इस्हाक़ ने मगाज़ी में निकाला कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) लोगों से पूछा करते थे कि भला बताओ वो कौन शख़्स है जिसने एक नमाज़ पढ़ी और ज़न्नत में चला गया, फिर कहते ये अम्र बिन श़ाबित है। हदीष से ये निकला कि हर नेक काम की कुबूलियत के लिये पहले मुसलमान होना शर्त है। ग़ैर-मुस्लिम जो भी करे दुनिया में उसका बदला उसे मिलेगा और आख़िरत में उसके लिये कुछ नहीं।

## बाब 14 : किसी को अचानक नामा'लूम तीर लगा और

## ۱۴- بَابُ مَنْ أَتَاهُ مِنْهُمْ غُرُوبٌ

उस तीर ने उसे मार दिया, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

نَقْلَهُ

2809. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुसैन बिन मुहम्मद अबू अहमद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शैबान ने बयान किया क़तादा से, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मे रबीआ बिनते बरा (रज़ि.) जो हारिषा बिन सुराका (रज़ि.) की वालिदा थीं, नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! हारिषा के बारे में भी आप मुझे कुछ बताएं..... हारिषा (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शहीद हो गए थे, उन्हें नामा'लूम सिम्त से एक तीर आकर लगा था..... कि अगर वो ज़न्नत में है तो सब्र कर लूँ और अगर कहीं और है तो रोऊँ-थोऊँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ उम्मे हारिषा! ज़न्नत के बहुत से दर्जे हैं और तुम्हारे बेटे को फ़िरदौसे आला में जगह मिली है। (दीगर मक़ाम : 3982, 6550, 6567)

٢٨٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ أُمَّ الرَّبِيعِ بِنْتَ الْبَرَاءِ وَهِيَ أُمُّ خَارِثَةَ بِنِ سُرَّاقَةَ أُمُّ أَسْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَلَا تَحْذَرُنِي مِنْ خَارِثَةَ - وَكَانَ قَبْلَ يَوْمِ بَدْرٍ أَصَابَتْ مِنْهُمْ غُرْبٌ - فَإِنْ كَانَ فِي الْجَنَّةِ صَبَرْتُ، وَإِنْ كَانَ غَيْرَ ذَلِكَ اجْتَنَدْتُ عَلَيْهِ فِي الْبُكَاءِ. قَالَ: ((يَا أُمَّ خَارِثَةَ، إِنَّهَا جَنَّاتٌ فِي الْجَنَّةِ، وَإِنْ أَبْكَى أَصَابَ الْفِرْدَوْسُ الْأَعْلَى)).

[أطرافه في: ٣٩٨٢، ٦٥٥٠، ٦٥٦٧].

रिवायत में उम्मे रबीआ को बरा की बेटी बतलाना रावी का वहम है, सहीह ये है कि उम्मे रबीआ नज़र की बेटी हैं और अनस बिन मालिक (रज़ि.) की फूफी हैं। उनका बेटा हारिषा नामी बद्र की लड़ाई में एक नामा'लूम तीर से शहीद हो गया था, उन ही के बारे में उन्होंने ये तहकीक़ फ़र्माई। ये सुनकर उम्मे हारिषा हंसती हुई गई और कहने लगीं हारिषा मुबारक हो! मुबारक हो! पहले ये समझीं कि हारिषा दुश्मन के हाथ से नहीं मारा गया शायद उसे ज़न्नत न मिले मगर बशारते नबवी सुनकर उनको इत्मीनान हो गया। सुब्हानल्लाह! अहदे नबवी की मुसलमान औरतों का भी क्या इमान और यक़ीन था कि वो इस्लाम के लिये मर जाना मौजिबे शहादत व दुखूले जन्नत जानती थीं। आजकल के मुसलमान हैं जो इस्लाम के नाम पर हर क़दम पीछे ही हटते जा रहे हैं। फिर भला तरक्की और कामयाबी क्यूँकर नसीब होगी। इक़बाल ने सच कहा है :-

आ तुझको बताता हूँ तक्दीर उमम क्या है, शमशीर व सिनौं अक्वल, ताऊस व रुबाब आख़िर

बाब 15 : जिस शख़्स ने इस इरादे से जंग की कि  
अल्लाह तआला ही का कलिमा बुलन्द रहे,  
उसकी फ़ज़ीलत

2810. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुरहने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सहाबी (लाहक़ बिन ज़मीरा) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि एक शख़्स जंग में शिर्कत करता है ग़नीमत हासिल करने के लिये, एक शख़्स जंग में शिर्कत करता

١٥- بَابُ مَنْ قَاتَلَ لِيَكُونَ كَلِمَةً  
اللَّهُ هِيَ الْعَلِيَا

٢٨١٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَعْنَمِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلذَّكْرِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ

है नामवरी के लिये, एक शख्स जंग में शिकत करता है ताकि उसकी बहादुरी की धाक बैठ जाए तो उनमें से अल्लाह के रास्ते में कौन लड़ता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स इस इरादे से जंग में शरीक हो ताकि अल्लाह का कलिमा बुलन्द हो, सिर्फ़ वही अल्लाह के रास्ते में लड़ता है। (राजेअ: 123)

يُرَى مَكَانَهُ، فَمَنْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ؟ قَالَ :  
(مَنْ قَاتَلَ لِيَكُونَ كَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْغَلِيَّةَ  
فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)).

[راجع: ١٢٣]

मक़सद ये कि असल चीज़ खुलूस है अगर ये है तो सब कुछ है, ये नहीं तो कुछ भी नहीं। क़यामत के दिन कितने ही सखी, कितने क़ारी, कितने मुजाहिदीन दोज़ख में डाले जाएंगे। ये वो होंगे जिनका मक़सद सिर्फ़ रिया और नमूद था, नामवरी और शहरत तलबी के लिये उन्होंने ये काम किये, इसलिये उनको सीधा जहन्नम में डाल दिया जाएगा। अज़ाज़नल्लाहु मिन्हा

### बाब 16 : जिसके क़दम अल्लाह के रास्ते में गुबार आलूद हुए उसका षवाब

और सूरह बराअत में अल्लाह तआला का इश्राद है कि मा कान लि अहलिल् मदीनति अल्लाह तआला के इश्राद इन्नल्लाह ला युज़ीअ अएरल् मुहसिनीन तक (अत तौबा : 120)

### ١٦- بَابُ مَنْ اغْتَرَّتْ قَدَمَاهُ فِي

سَبِيلِ اللَّهِ وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ - إِلَى قَوْلِهِ -  
إِنَّ اللَّهَ لَا يَضْمَعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ﴾  
[التوبة : ١٢٠].

2811. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमसे यहा बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्हें अबाय़ा बिन राफ़ेअ बिन ख़दीज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अबू अब्स (रज़ि.) ने ख़बर दी, आपका नाम अब्दुर्रहमान बिन जबर है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस बन्दे के भी क़दम अल्लाह के रास्ते में गुबार आलूद हो गये, उन्हें (जहन्नम की) आग छुए? (ये नामुक्किन है) (राजेअ: 907)

٢٨١١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ  
بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْرَةَ قَالَ:  
حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ أَبِي مَرْثَمٍ أَخْبَرَنَا عُبَايَةُ بْنُ  
رَافِعٍ بْنُ خَدِيجٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو عَاصِمٍ  
هُوَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ جَبْرِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ  
ﷺ قَالَ: ((مَا اغْتَرَّتْ قَدَمَاهُ غَيْرَ فِي سَبِيلِ  
اللَّهِ فَتَمَسَّهُ النَّارُ)). [راجع: ٩٠٧]

**तशरीह :** पूरी आयाते बाब का तर्जुमा ये है मदीना वालों को और जो उनके आसपास गंवार रहते हैं ये मुनासिब न था कि अल्लाह के नबी के पीछे बैठ रहें और उसकी जान की फ़िक्र न करके अपनी जान बचाने की फ़िक्र में रहे। इसलिये कि लोगों को या'नी जिहाद करने वालों को अल्लाह की राह में प्यास हो, भूख हो, उस मुक़ाम पर चलें जिससे काफ़िर ख़फ़ा हो, दुश्मन को कुछ भी नुक़सान हो, हर-एक के बदले इन पाँचों कामों में उनका नेक अमल अल्लाह के पास लिख लिया जाता है, बेशक अल्लाह नेकों की मेहनत बर्बाद नहीं करता। इस आयत से इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब निकाला कि अल्लाह की राह में अगर आदमी ज़रा भी चले और पाँव पर गर्द (धूल) पड़े तो भी षवाब मिलेगा, जब अल्लाह की राह में पाँव गर्द आलूद होने (रेत से सन जाने) पर ये अषर हो कि दोज़ख की आग छुए भी नहीं तो वो लोग कैसे दोज़ख में जाएंगे जिन्होंने अपनी जान व माल से अल्लाह की राह में कोशिश की होगी। अगर उनसे कुछ कुसूर भी हो गये हैं तो अल्लाह जल्ले जलालुहू से उम्मीद-मुआफ़ी है। इस हदीस से मुजाहिदीन को खुश होना चाहिये कि वो दोज़ख से महफूज़ रहेंगे। (वहीदी)



## बाब 17 : अल्लाह के रास्ते में जिन लोगों पर गर्द पड़ी हो उनकी गर्द पोंछना

2812. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल वहहाब प्रकफी ने खबर दी, कहा हमसे खालिद ने बयान किया इकिस्मा से कि इब्ने अब्बास (रजि.) ने उनसे और (अपने साहबजादे) अली बिन अब्दुल्लाह से फर्माया तुम दोनों अबू सईद (रजि.) की खिदमत में जाओ और उनसे अहादीसे नबवी सुनो। चुनौचे हम हाज़िर हुए, उस वक़्त अबू सईद (रजि.) अपने (रज़ाई) भाई के साथ बाग़ में थे और बाग़ को पानी दे रहे थे, जब आपने हमें देखा तो (हमारे पास) तशरीफ़ लाए और (चादर ओढ़कर) गोद मारकर बैठ गए, उसके बाद बयान फर्माया हम मस्जिद नबवी की ईंटें (हिजरते नबवी के बाद ता'मिरे मस्जिद के लिये) एक-एक करके ढो रहे थे लेकिन अम्मार (रजि.) दो दो ईंटें ला रहे थे, इतने में नबी करीम (ﷺ) उधर से गुज़रे और उनके सर से गुबार को साफ़ किया। फिर फर्माया अफ़सोस! अम्मार को एक बागी जमाअत मारेगी, ये तो उन्हें अल्लाह की (इताअत की) तरफ़ दा'वत दे रहा होगा लेकिन वो उसे जहन्नम की तरफ़ बुला रहे होंगे। (राजेअ: 447)

## ١٧- بَابُ مَسْحِ الْغُبَارِ عَنِ النَّاسِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

٢٨١٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرَمَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ لَهُ وَلَعَلِّي ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ: إِنِّي أَبَا سَعِيدٍ فَأَسْمَعَا مِنْ حَدِيثِهِ. فَأَتَيْنَا وَهُوَ وَأَخُوهُ فِي خَلِيطٍ لَهُمَا بَسْتِيَاءٍ، فَلَمَّا رَأَيْنَا جَاءَ فَأَخْبَى وَجَلَسَ فَقَالَ: كُنَّا نَقْلُ لَبَنَ الْمَسْجِدِ لَبَنَةً لَبَنَةً، وَكَانَ عُمَارٌ يَنْقُلُ لَبَتَيْنِ لَبَتَيْنِ، فَمَرَّ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ وَمَسَحَ عَنْ رَأْسِهِ الْغُبَارَ وَقَالَ: ((وَيْحَ عُمَارٍ تَقْتُلُهُ الْفِتْنَةُ الْبَاقِيَةُ، عُمَارُ يَذْعُوهُمْ إِلَى اللَّهِ وَيَدْعُوهُمْ إِلَى النَّارِ)).

[راجع: ٤٤٧]

हज़रत अम्मार बिन यासिर (रजि.) के फ़ज़ाइल व हालात पहले बयान हो चुके हैं। यहाँ मुराद जंगे सिफ़फ़ीन से है जिसमें ये हज़रत अली (रजि.) के साथियों में थे और 35 हिजरी में ये वहाँ ही 93 साल की उम्र में शहीद हुए। ओहज़रत (ﷺ) ने अज़राहे शफ़क़त व मुहब्बत उनका सर गर्द व गुबार से साफ़ किया, उससे उनकी बहुत बड़ी फ़ज़ीलत प्राबित हुई और बाब का मक़सद भी प्राबित हुआ।

## बाब 18 : जंग और गर्दों-गुबार के बाद गुस्ल करना

2813. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अब्दहने खबर दी हिशाम बिन उर्वी से, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें आइशा (रजि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) जब जंगे खन्दक से (फ़ारिग़ होकर) वापस हो गए और हथियार रखकर गुस्ल करना चाहा तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम आए, उनका सर गुबार से अटा हुआ था। जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने कहा आपने हथियार उतार दिये, अल्लाह की क्रसम! मैंने तो अभी तक हथियार नहीं

## ١٨- بَابُ الْغُسْلِ بَعْدَ الْحَرْبِ وَالْغُبَارِ

٢٨١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ وَحَبِ اللَّهِ عَنْهَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمَّا رَجَعَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ وَوَضَعَ السَّلَاحَ وَاتَّخَلَ، فَأَتَاهُ جِبْرِيلُ وَقَدْ غَسَبَ رَأْسَهُ الْغُبَارَ فَقَالَ: ((وَضَعْتَ السَّلَاحَ؟ فَوَ اللَّهِ مَا وَضَعْتَهُ)).

उतारे हैं। आप (ﷺ) ने पूछा, तो फिर अब कहीं का इरादा है? उन्होंने फ़र्माया इधर और बनू कुरैज़ा की तरफ़ इशारा किया। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनू कुरैज़ा के खिलाफ़ लश्करकशी की। (राजेअ: 463)

[راجع: ٤٦٣]

बनू कुरैज़ा के यहूद ने जंगे खंदक में मुसलमानों से मुआहिदा के खिलाफ़ मुश्किने मक्का का साथ दिया था और ये अंदरूनी साज़िशों में तेज़ी के साथ मसरूफ़ रहे थे, इसलिये ज़रूरी हुआ कि उनकी साज़िशों से भी मदीना को पाक किया जाए चुनाँचे अल्लाह ने ऐसा ही किया और ये सब मदीना से निकाल दिये गये और बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है।

### बाब 19 : उन शहीदों की फ़ज़ीलत

जिनके बारे में इन आयात का नुज़ूल हुआ, वो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल कर दिये गये उन्हें हर्गिज़ मुर्दा मत ख़याल करो बल्कि वो अपने रब के पास ज़िन्दा हैं (वो जन्नत में) रिज़क़ पाते रहते हैं, उन (नेअमत्तों) से बेहद खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से अत्ता की हैं और जो लोग उनके बाद वालों में से अभी उनसे नहीं जा मिले उनकी खुशियाँ मना रहे हैं कि वो भी (शहीद होते ही) निडर और बेग़म (चिन्तामुक्त) हो जाएँगे। वो लोग खुश हो रहे हैं अल्लाह के इन्आम और फ़ज़ल पर और उस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज़्र ज़ाया नहीं करता। (आले इमरान: 179-181)

2814. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी त़लह्हा से और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अम्हाबे बीर मज़ना (रज़ि.) को जिन लोगों ने क़त्ल किया था उन पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीस दिन तक सुबह की नमाज़ में बद्दुआ की थी। ये रअल, ज़क्वान, और इस्रय्या क़बीलों के लोग थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी की थी। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जो (70 क़ारी) सहाबा बीर मज़ना के मौक़े पर शहीद कर दिये गये थे, उनके बारे में कुआन की ये आयत नाज़िल हुई थी जिसे हम मुद्दत तक पढ़ते रहे थे बाद में आयत मन्सूख़ हो गई थी (उस आयत का तर्जुमा ये है) हमारी क़ौम को पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, हमारा रब हमसे राज़ी है और हम उससे राज़ी हैं। (राजेअ: 1001)

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَنِيَنَّ)) قَالَ: مَا هُنَا. وَأَوْمَأَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ - قَالَتْ: فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ..

### 19- بَابُ فَضْلِ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ. فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَتَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ. يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلِهِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ [آل عمران: 179, 181]

2814- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى الَّذِينَ قُتِلُوا أَصْحَابَ بَيْرِ مَعُونَةَ. ثَلَاثِينَ هَذَاهُ، عَلَى رِغْلِ وَذُكْوَانٍ وَغَصَّيَةِ غَصْبَةِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ. قَالَ أَنَسٌ: أَتُرِيدُ فِي الَّذِينَ قُتِلُوا بَيْرِ مَعُونَةَ قُرْآنَ قِرَائَةِ ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ: تَلْفَوْا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِينَا عَنَّْا وَرَضِينَا عَنْهُ)).

[راجع: ١٠٠١]

2815. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया अमर से, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से सुना, आप बयान करते थे कि कुछ सहाबा ने जंगे उहुद के दिन सुबह के वक़्त शराब पी (अभी तक शराब हARAM नहीं हुई थी) फिर वो शहीद हो गए। सुफयान (रह.) (रावी हदीष) से पूछा गया कि क्या उसी दिन के आखिरी हिस्से में (उनकी शहादत हुई) थी जिस दिन उन्होंने शराब पी थी? तो उन्होंने जवाब दिया कि हदीष में इसका कोई जिक्र नहीं है। (दीगर मक्लाम : 4044, 4618)

٢٨١٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ جَابِرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((اصْطَبَحَ نَاسُ الْخَمْرِ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ قُتِلُوا شُهَدَاءَ. فَقِيلَ لِسُفْيَانَ: مِنْ آخِرِ ذَلِكَ الْيَوْمِ؟ قَالَ: نَعَسَ هَذَا فِيهِ)). (طرفاء ١: ٤٠٤٤، ٤٦١٨).

या'नी इस रिवायत में ये जिक्र नहीं है कि उसी दिन शाम को शराब पी थी बल्कि सुबह को पीने का जिक्र है, जंगे उहुद जब हुई उस वक़्त तक शराब हARAM नहीं हुई थी। शहीद की फ़ज़ीलत इस हदीष से यूँ निकली कि अल्लाह ने जाबिर (रज़ि.) के बाप से कलाम किया जिन्होंने ने ये आरजू की कि मैं फिर दुनिया में भेज दिया जाऊँ फिर उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि मेरा हाल मेरे साथियों को पहुँचा दे। उस पर ये आयत उतरी बला तहसबन्नल्लज़ीन कुतिलू फी सबीलिल्लाहि अम्वातन (आले इमरान : 169) इस रिवायत को तिर्मिज़ी ने निकाला है और हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उसकी तरफ़ इशारा किया है। इस रिवायत में उन शुहदा के बारे में शराबनोशी का जिक्र ज़िम्न आ गया है, बाद में शराब की हुर्मत नाज़िल होने पर तमाम अस्हाबे नबवी ने शराब के बर्तन तक तोड़कर अपने घरों से बाहर फेंक दिये थे (रज़ि.)। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि मुताबक़तुन लिक्तर्जुमति फीहि इस्तरुन इल्ला अंद्यकून मुरादुहु अन्नलखमरल्लती शरिबूहा यौमइज़िन लम तजुरहुम लिअन्नल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अज़्ना अलैहिम बअद मौतिहिम व रफ़अ अन्हुमुलख़ौफ़ वल्हुज़ु व इन्नमा कान ज़ालिक लिअन्न कानत यौमइज़िन मबाहतुन. (फतह) या'नी हदीष और बाब में मुताबक़त मुश्किल है मगर ये कि मुराद ये हो कि उस दिन उन शहीदों ने शराब पी थी जिससे उनकी शहादत में कोई नुक़सान नहीं हुआ बल्कि अल्लाह ने मौत के बाद उनकी ता'रीफ़ की और उनसे डर व ग़म को दूर कर दिया। ये इसलिये कि उस दिन तक शराब की हुर्मत नाज़िल नहीं हुई थी। इसलिये मुबाह थी। बाद में हुर्मत नाज़िल होकर वो क़यामत तक के लिये हARAM कर दी गई।

## बाब 20 : शहीदों पर फ़रिशतों

### का साया करना

2816. हमसे सद्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमें सुफयान बिन इययना ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मेरे वालिद रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने लाए गए (उहुद के मौक़े पर) और काफ़िरों ने उनके नाक कान काट डाले थे, उनकी नअश नबी करीम (ﷺ) के सामने रखी गई तो मैंने आगे बढ़कर उनका चेहरा खोलना चाहा लेकिन मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे मना कर दिया फिर नबी करीम (ﷺ) ने रोने-पीटने की आवाज़ सुनी (तो पूछा कि किसकी आवाज़ है?) लोगों ने बताया कि अमर की लड़की हैं (शहीद की बहन) या अमर की बहन हैं (शहीद की चची

## ٢٠- بَابُ ظِلِّ الْمَلَائِكَةِ عَلَى

### الشَّهِيدِ

٢٨١٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِيرِ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ: ((جِئْتُ بِأَبِي إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ مَثَلَ بِهِ وَوَضِعَ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَلَقَبْتُ أَكْثِفُ عَنْ وَجْهِهِ، فَتَهَانَى قَوْمِي، فَسَمِعَ صَوْتَ صَاحِبَةٍ، فَقِيلَ: ابْنَةُ عَمْرٍو- أَوْ أُخْتُ عَمْرٍو- فَقَالَ: ((لَمْ تَكُنِي، أَوْ لَا تَكُنِي،

शक रावी को था) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि रो क्यों रही हैं या (आपने ये फ़र्माया कि) रोएँ नहीं मलाइका बराबर उन पर अपने परोँ का साया किये हुए हैं। इमाम बुखारी (रह.) कहते हैं कि मैंने स़दक़ा से पूछा क्या हदीष में ये भी है कि (जनाज़ा) उठाए जाने तक तो उन्होंने बताया कि सुफ़यान ने कुछ औक्रात ये अल्फ़ाज़ भी हदीष में बयान किये थे। (राजेअ: 1244)

مَا زَالَتْ الْمَلَائِكَةُ تَطْلُؤُ بِأَجْنِحَتِهَا)). قُلْتُ لِمَ ذَلِكُمْ: أَيْنَ حَتَّى رُفِعَ؟ قَالَ: رَبَّمَا قَالَهُ)).

[راجع: ١٢٤٤]

## बाब 21 : शहीद का दोबारा दुनिया में वापस आने की आरजू करना

2817. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख्स भी ऐसा न होगा जो जन्नत में दाख़िल होने के बाद दुनिया में दोबारा आना पसन्द करे, ख़वाह उसे सारी दुनिया मिल जाए सिवाए शहीद के। उसकी ये तमन्ना होगी कि दुनिया में दोबारा वापस जाकर दस बार और क़त्ल हो (अल्लाह के रास्ते में) क्योंकि वो शहादत की इज़त वहाँ देखता है। (राजेअ: 2795)

## ٢١- بَابُ تَمَنَّى الْمُجَاهِدِ أَنْ

### يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا

٢٨١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّسَّابَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا أَحَدٌ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَوْ مَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ، إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ، لِمَا تَرَى مِنَ الْكَرَامَةِ)).

[راجع: ٢٧٩٥]

## बाब 22 : जन्नत का तलवारों की चमक के नीचे होना

## ٢٢- بَابُ الْجَنَّةِ تَحْتَ بَارِقَةِ

### السُّوْفِ

**तस्रीह:** इस बाब के ज़ेल हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाल इब्नुल्मुनीर कानल्बुख़ारी अराद अन्नस्सुयूफ़ लम्मा कानत लहा बारिक़तुन कान लहा अयज़न ज़िल्लुन कालल्कुर्तुबी व हुव मिनल्कलामिन्नफीसिलज़ामिइल्मूजिज़िल्मुश्तमिलि अला ज़ुरूबिमिल्लबलाग़ति मअल्विजाज़ति व अज़ूबतिल्लफ़िज़ फइन्नहू अफ़ाज़ल्हज़ज़ अलल्लिहादि वल्अख़बारि बिष्यवाबि अलैहि वल्हज़ज़ु अला मुकारबतिल्लअदुव्वि व इस्तिअमालिस्सुयूफ़ि कल्इज्तिमाइ हीनरफ़िज़ हत्ता तस्रीस्सुयूफ़ु तज़िलुल्मतक़ातिलीन व क़ाल इब्नुल्जौज़ी अल्मुरादु अन्नल्जन्नत तहसुलु बिल्लिहाद वज़िललालु जम्उ जिल्लिन व इज़ा तदानिल्लख़स्मानि झार कुल्लुम्मि-हुमा तहत ज़िल्लि सैफ़ि माहिबिही लिहिमिही हल्ल दफ़उहू अलैहि व ला यकून ज़ालिक इल्ल इन्द इल्लिहामिल्कितालि. (फ़तुल बारी) खुलासा इबारात का ये कि गोया इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये मुराद ली है कि जब तलवारों की चमक होती है तो उनका साया भी होता है। कुर्तुबी ने कहा कि ये बहुत ही नफ़ीस कलाम है जामेअ मुख़्तसर जो फ़साहत व बलाग़त की बहुत सी किस्मों पर मुश्तमिल (आधारित) है जो बहुत ही हलावत और अज़ूबत अपने अंदर रखता है और दुश्मन से करीब होने और तलवारों के इस्तेमाल करने की भी तसरीब है और लड़ाई के वक़्त इज्तिमाअ की भी, यहाँ तक कि फ़रीक़ेन की तलवारें जमा होकर साया फ़गन होने लगती हैं। इब्ने जौज़ी ने कहा मुराद ये है कि जन्नत जिहाद से हासिल होती है और ज़िलाल, ज़िल्ल की जमा है और जब दो दुश्मन तलवारें लेकर एक-दूसरे पर हमलावर होते हैं तो हर

एक पर तलवारों का साया पड़ता है और वो मुदाफिअत की कोशिश करता है और ये लड़ाई के गर्म होने पर होता है।

खुलासा ये कि जिहाद और आला-ए-कलिमतुल्लाह ही वो अमल हैं जो इस्लाम की सरबुलन्दी का वाहिद ज़रिया हैं मगर जिहाद के लिये शरीअत ने कुछ उज़ूल व ज़वाबित्त मुकरर किये हैं और ये जिहाद महज़ मुदाफिअते अअदा के लिये होता है। इस्लाम ने ज़ारिहाना जंग की हर्गिज़ इजाज़त नहीं दी है। आयते कुआनी उज़िन लिल्लज़ीन युक्रातलून बिअन्नहुम जुलिमु व इन्नल्लाह अला नस्रिहमल क़दीर (हज़्ज : 39) इस पर खुली दलील है कि अहले इस्लाम को जब वो मज़लूम हों मुदाफिआना (रक्षात्मक) जिहाद की इजाज़त है।

और मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें हमारे नबी (ﷺ) ने अपने रब का ये पैग़ाम दिया है कि हम में से जो भी (अल्लाह के रास्ते में) क़त्ल किया जाए, वो सीधा जन्नत में जाएगा और इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा था क्या हमारे मक्तूल जन्नती और उनके (कुप्फ़ार के) मक्तूल जहन्नमी नहीं हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्यों नहीं?

2818. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया मूसा बिन इज़बा से, उनसे इमर बिन अब्दुल्लाह के मौला सालिम अबुन नज़्ज़ ने, सालिम इमर बिन अब्दुल्लाह के कातिब भी थे, बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने उमर बिन अब्दुल्लाह को लिखा था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है यक़ीन ज़ानो जन्नत तलवारों के साये के नीचे है। इस रिवायत की मुताबअत उवैसी ने इब्ने अबी ज़िनाद के वास्ते से की और उनसे मूसा बिन इज़बा ने बयान किया। (दीगर मक़ाम : 2833, 2966, 3024, 7237)

وَقَالَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ: أَخْبَرَنَا نَبِيُّنَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رَسُولِ رَبَّنَا: مَنْ قُتِلَ مِنَّا صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ. وَقَالَ عُمَرُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَلَيْسَ قَتْلًا فِي الْجَنَّةِ وَقَتْلَاهُمْ فِي النَّارِ؟ قَالَ: ((بَلَى))

٢٨١٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمِ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ - وَكَانَ كَاتِبًا - قَالَ: كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((وَاغْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلِّ السَّيْفِ)). تَابَعَهُ الْأَوْسِيُّ عَنْ ابْنِ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ.

[أطرافه في: ٢٨٣٣، ٢٩٦٦، ٣٠٢٤،

[٧٢٣٧]

### बाब 23 : जिहाद करने के लिये अल्लाह से औलाद मांगे उसकी फ़ज़ीलत

2819. लैय़ ने बयान किया कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन हुर्मुज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कि सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया

### ٢٣- بَابُ مَنْ طَلَبَ الْوَلَدَ لِلْجِهَادِ

٢٨١٩- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمَزٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ

आज रात अपनी सौ या (रावी को शक था) निन्यानवे बीवियों के पास जाऊँगा और हर बीवी एक-एक शहसवार जनेगी जो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करेंगे। उनके साथी ने कहा कि इंशाअल्लाह भी कह लीजिए लेकिन उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। चुनौचे सिर्फ एक बीवी हामला हुई और उनके भी आधा बच्चा पैदा हुआ। उस ज्ञात की कसम! जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है अगर सुलैमान (अलैहिस्सलाम) उस वक़्त इंशाअल्लाह कह लेते तो (तमाम बीवियाँ हामला होतीं और) सबके यहाँ ऐसे शहसवार बच्चे पैदा होते जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते। (दीगर मक़ाम : 3424, 5242, 6639, 6720, 7469)

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ مَلِيحَانُ بْنُ دَاوُدَ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ: لَأُطَوِّقَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى مِائَةِ امْرَأَةٍ - أَوْ يَسَعُ وَتِسْعِينَ - كُلُّهُنَّ تَأْتِي بِفَارِسٍ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. فَقَالَ لَهُ صَاحِبُهُ: قُلْ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ، فَلَمْ يَقُلْ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ، فَلَمْ تَحْمِلْ مِنْهُنَّ إِلَّا امْرَأَةً وَاحِدَةً جَاءَتْ بِشِقِّ رَجُلٍ. وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ قَالَ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ لَجَاحِدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَرُسَانَا أَجْمَعُونَ)).

[أطرافه في: ٣٤٢٤، ٥٢٤٢، ٦٦٣٩]

[٦٧٢٠، ٧٤٦٩]

मज़ीद तफ़्सीलात (विस्तृत विवरण) हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के ज़िक्र में आया। इंशाअल्लाह।

## बाब 24 : जंग के मौक़े पर बहादुरी और बुज़दिली का बयान

2820. हमसे अहमद बिन अब्दुल मलिक बिन वाकिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया श़ाबित बिनानी से और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा हसीन (खूबसूरत) सबसे ज़्यादा बहादुर और सबसे ज़्यादा फ़य्याज़ थे, मदीना तय्यिबा के तमाम लोग (एक रात) ख़ौफ़ज़दा थे (आवाज़ सुनाई दी थी और सब लोग उसकी तरफ़ बढ़ रहे थे) लेकिन नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त एक घोड़े पर सवार सबसे आगे थे (जब वापस हुए तो) फ़र्माया उस घोड़े को (दौड़ने में) हमने समन्दर पाया। (राजेअ : 2627)

## ٢٤- بَابُ الشُّجَاعَةِ فِي الْحَرْبِ

### وَالْجَبِينِ

٢٨٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَدُوٍّ الْمَلِكِيُّ بْنُ وَالِدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيٍّ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ وَأَشَجَعَ النَّاسِ وَأَجْوَدَ النَّاسِ. وَلَقَدْ فَرَعَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ، فَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ سَبْقَهُمْ عَلَى فَرَسٍ، وَقَالَ: ((وَجَدْنَاهُ بِحُرًّا)).

[راجع: ٢٦٢٧]

**तशरीह :** या'नी बेतकान (बिना थके, लगातार) चला ही जाता है, कहीं रुकता या अड़ता नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) रात के वक़्त बनफ़से नफ़ीस अकेले और तन्हा आवाज़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और दुश्मन का कुछ भी डर न किया। सुबहानल्लाह शुजाअत ऐसी, सखावत ऐसी, हुस्नो-जमाल ज़ाहिरी ऐसा, कमालाते बातिनी ऐसे, कुव्वत ऐसी, रहम व करम ऐसा कि कभी साइल (मौनने वाले) को महरूम नहीं किया, कभी किसी से बदला लेना नहीं चाहा, जिसने मुआफ़ी चाही मुआफ़ कर दिया। इबादत और अल्लाह की बन्दगी ऐसी कि रात-रात भर नमाज़ पढ़ते पढ़ते पाँव वरम कर गए (सूज गये), तदबीर और राय ऐसी कि चन्द रोज़ ही में अरब की कायापलट कर रख दी, बड़े-बड़े बहादुरों और अकड़ों को नीचा दिखा दिया, ऐसे अज़ीम पैग़म्बर पर लाखों बार दरूदो-सलाम।

2821. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें उमर बिन मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने खबर दी कहा कि मुझे जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने खबर दी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चल रहे थे, आपके साथ और बहुत से सहाबा भी थे। वादी-ए-हुनैन से वापस तशरीफ ला रहे थे कि कुछ (बढ़) लोग आपको लिपट गए। बिल आखिर आपको मजबूरन एक बबूल के पेड़ के पास जाना पड़ा। वहाँ आपकी चादर मुबारक बबूल के कांटे में उलझ गई तो उन लोगों ने उसे ले लिया (ताकि जब आप उन्हें कुछ इनायत फर्माएं तो चादर वापस करें) आप (ﷺ) वहाँ खड़े हो गए और फर्माया मेरी चादर मुझे दे दो, अगर मेरे पास पेड़ के कांटों जितने भी कैंट बकरियाँ होतीं तो मैं तुममें तक्सीम कर देता, मुझे तुम बखील नहीं याओगे और न झूठा और बुजदिल पाओगे। (दीगर मक़ाम : 3148)

ये इसलिये फर्माया कि बखील की नतीजे में झूठ और बुजदिली और सखावत के नतीजे में सदाकत और बहादुरी आना लाज़िम हैं, ये जगो हुनैन से वापसी का वाक़िया है। मज़ीद तफ़्सीलात किताबुल मग़ाज़ी में आएंगी, इश्आअल्लाह!

## बाब 25 : बुजदिली से अल्लाह की पनाह मांगना

2822. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने बयान किया, उन्होंने अम्र बिन मैमून औदी से सुना, उन्होंने बयान किया कि सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) अपने बच्चों को ये दुआइया कलिमात इस तरह सिखाते थे जैसे मुअल्लिम (टीचर) बच्चों को लिखना सिखाता है और फर्माते थे कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़ के बाद इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह मांगते थे (दुआ का तर्जुमा ये है) ऐ अल्लाह! बुजदिली से मैं तेरी पनाह मांगता हूँ, उससे तेरी पनाह मांगता हूँ कि इम्र के सबसे ज़लील हिस्से में पहुँचा दिया जाऊँ और तेरी पनाह मांगता हूँ मैं दुनिया के फ़िल्तों से और तेरी पनाह मांगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, फिर मैंने ये हदीष जब मुस्अब बिन सअद (रज़ि.) से बयान की तो उन्होंने भी इसकी तस्दीक की।

(दीगर मक़ाम : 6365, 6370, 6374)

٢٨٢١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ جُبَيْرٍ بْنِ مُطْعِمٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جُبَيْرُ بْنُ مُطْعِمٍ أَنَّهُ يَتِمَّا هُوَ يَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ النَّاسُ مَقْلَعَةً مِنْ حَنْبَلٍ، فَطَلَفَهُ النَّاسُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطُرُّوا إِلَى سَمْرَةٍ فَخَطَفَتْ رِدَاءَهُ فَوَلَفَتْ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((أَعْطُونِي رِدَائِي، لَوْ كَانَ لِي عِنْدَ هَذِهِ الْبُغْيَاءِ نَعْمًا لَفَسَمْتُهُ بَيْنَكُمْ، ثُمَّ لَا تَجِدُونِي بَعِيدًا وَلَا كَلُوبًا وَلَا جَبَانًا)).

[طهره ٣: ٢١٤٨]

## ٢٥- بَابُ مَا يُتَعَوَّذُ مِنَ الْخَبْنِ

٢٨٢٢- حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَرَ سَمِعْتُ عُمَرَو بْنَ مَيْمُونٍ الْأَوْدِيَّ قَالَ: ((كَانَ سَعْدٌ يُعَلِّمُ بَيْنَهُ هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ كَمَا يُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْبِلْمَانَ الْكِتَابَةَ وَيَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُتَعَوَّذُ مِنْهُمْ ذِكْرَ الصَّلَاةِ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخَبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُمْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ قِتَةِ الدُّنْيَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)). فَحَدَّثْتُ بِهِ مُصَنَّبًا فَصَدَّقَهُ)).

[أطرافه ٣: ٦٣٧٤, ٦٣٧٠, ٦٣٦٥]

2823. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फर्माया करते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ आजिज़ी और सुस्ती से, बुज़दिली और बुढ़ापे की ज़लील हद्द में पहुँच जाने से और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़िलों से और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से। (दीगर मक़ाम : 4707, 6367, 6371)

٢٨٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْكَسَلِ وَالْجَنَنِ وَالْهَرَمِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ».

[أطرافه ٣: ٤٧٠٧، ٦٣٦٧، ٦٣٧١].

बुढ़ापे की ज़लील हद्दें जिसमें इंसान का दिमाग़ माऊफ़ (कुन्द) हो जाता है और वो बच्चों जैसी हरकतें करने लगता है। होशो-हवास और अक्लो-शुअर ग़ायब हो जाते हैं ऐसी उम्र में पहुँचने से भी पनाह मांगनी चाहिये। ऐसे ही आजिज़ी, काहिली, बुज़दिली, ज़िन्दगी व मौत का फ़िलान और क़ब्र का अज़ाब ये सब ऐसी चीज़ें हैं कि हर मुसलमान को उनसे पनाह मांगनी ज़रूरी है।

## बाब 26 : जो शख़्स अपनी लड़ाई के कारनामे बयान करे, उसका बयान

इस बाब में अबू उम्मान ने सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) से रिवायत किया है।

٢٦- بَابُ مَنْ حَدَّثَ بِمَشَاهِدِهِ فِي الْحَرْبِ

قَالَ أَبُو عُثْمَانَ عَنْ سَعْدٍ:

ये दूसरे मुसलमानों की हिम्मत बढ़ाने के लिये जाइज़ है न कि रिया (दिखावे) और नामवरी के लिये।

2824. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे हातिम ने बयान किया मुहम्मद बिन यूसुफ़ से, उनसे साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं तलहा बिन अब्दुल्लाह, सअद बिन अबी वक्कास, मिस्दाद बिन अस्वद और अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) की सुहबत में बैठा हूँ लेकिन मैंने किसी को रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीष बयान करते नहीं सुना। अल्बत्ता तलहा (रज़ि.) से सुना कि वो उहुद की जंग के बारे में बयान किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4062)

٢٨٢٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا خَاتَمٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: «سَمِعْتُ طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ وَسَعْدًا وَالْوَقْدَاءَ بْنَ الْأَسْوَدِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ، فَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا مِنْهُمْ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، إِلَّا أَنِّي سَمِعْتُ طَلْحَةَ يُحَدِّثُ عَنْ يَوْمِ أُحُدٍ».

[طرحه ٣: ٤٠٦٢].

दूसरे सहाबा बतौर एहतिyत ज़्यादा रिवायत बयान करने से परहेज़ करते ताकि कहीं शलत बयानी होकर बाज़िघे गुनाहे अज़ीम न हो फिर भी उन सारे हज़रात की मरविyaत मौजूद हैं जो बहुत ही ज़िम्मेदारी के साथ उन्होंने रिवायत की हैं। जंगे उहुद में आँहज़रत (ﷺ) के पास सिर्फ़ तलहा और सअद रह गये थे और तलहा का हाथ सुन्न हो गया था, उन्होंने मुशिकों के वार अपने हाथ पर लिये और आँहज़रत (ﷺ) को बचाया। सअद वो बुजुर्ग हैं जिनको काफ़िरों का तीर सबसे पहले आकर लगा जैसा कि किताबुल मग़ाज़ी में आया।



बाब 27 : जिहाद के लिये निकल खड़ा होना वाजिब है और जिहाद की निर्यत रखने का वाजिब होना

और सूरह तौबा में अल्लाह तआला का इर्शाद, कि निकल पड़ो हल्के हो या भारी और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, ये बेहतर है तुम्हारे हक में अगर तुम जानो, अगर कुछ माल आसानी से मिल जाने वाला होता और सफ़र भी मा' मूली होता तो ये लोग (मुनाफ़िक्कीन) ऐ नबी! ज़रूर आप (ﷺ) के साथ हो लेते लेकिन उनको तो (तबूक) का सफ़र ही दूर-दराज़ मा' लूम हुआ और ये लोग अब अल्लाह की क्रसम खाएंगे, अल आयति और अल्लाह का इर्शाद, ऐ ईमानवालों! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि निकलो अल्लाह की राह में जिहाद के लिये तो तुम ज़मीन पर ढेर हो जाते, क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी पर आख़िरत के मुकाबले में राज़ी हो गए हो? सो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान तो आख़िरत की ज़िन्दगी के सामने बहुत ही थोड़ा है, अल्लाह के इर्शाद, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, तक। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से (पहली आयत की तफ़सीर में) मन्कूल है कि जुदा जुदा टुकड़ियाँ बनाकर जिहाद के लिये निकलो, कहा जाता है कि प्रबात (जमा) का मुफ़रद षुबतुन् है।

2825. हमसे अमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शरीरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मंसूर ने बयान किया मुजाहिद से, उन्होंने त्राक़स से और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़तह मक्का के दिन फ़र्माया था कि मक्का फ़तह होने के बाद (अब मक्का से मदीना के लिये) हिजरत बाक़ी नहीं है, लेकिन ख़ुलूसे निर्यत के साथ जिहाद अब भी बाक़ी है इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो निकल खड़े हो। (राजेअ: 1349)

٢٧- بَابُ وَجُوبِ النِّفَرِ، وَمَا

يَجِبُ مِنَ الْجِهَادِ وَالنِّيَّةِ وَقَوْلُهُ

﴿انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، ذَلِكَُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ. لَوْ كَانَ عَرَحًا مُّقِرًّا وَسَفَرًا فَاِصْدَا لَاتَّبَعُوكَ، وَلَكِنْ بَعَثْتُ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةَ. وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ﴾ [التوبة: ٤١] الآية. وقوله: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ تُأَلَّفْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ؟ أَرْضُنَّكُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ - إِلَى قَوْلِهِ - عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَلِيلٌ﴾ [التوبة: ٣٨].

يُذَكِّرُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿انْفِرُوا ثُبَاتٍ سَرَّايَا مُتَفَرِّقِينَ﴾. يُقَالُ: وَاحِدُ الثُّبَاتِ ثُبَةٌ.

٢٨٢٥- حَدَّثَنَا هَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا

يَحْيَى حَدَّثَنَا سَفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنصُورٌ

عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمَ

الْفَتْحِ: ((لَا هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ، وَلَكِنْ

جِهَادٌ وَنِيَّةٌ. وَإِذَا اسْتَفَرَّتْكُمْ فَانْفِرُوا)).

[راجع: ١٣٤٩]

तशीह:

ये आयतें ग़ज़व-ए-तबूक के बारे में नाज़िल हुईं। तबूक मक्का से शहरे मदीना के शिमाल (उत्तर) की सरहद पर वाक़ेअ है। मदीना मुनव्वरा से तबूक की दूरी बारह मंज़िलों की है। शाम (सीरिया) पर उस वक़्त ईसाइयों की हुकूमत थी, आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़व-ए-हुनैन से फ़ारिग़ होकर मदीना मुनव्वरा वापस हुए तो आप (ﷺ) को ख़बर मिली कि ईसाई फ़ौजें मुकामे तबूक में जमा हो रही हैं और मदीना पर हमला करने की तैयारियों में लगी हुई हैं, जिनकी आप (ﷺ) ने खुद ही बढ़कर मुदाफ़िअत करनी चाही। चुनाँचे तीस हज़ार फौज आप (ﷺ) के साथ हो गई, लेकिन मौसम सख़्त गर्मी का था, खज़ूर की फ़सल पकने और कटने का ज़माना था जिस पर अहले मदीना की गुज़रान बड़ी हद तक मौकूफ़ (आधारित) थी,

मुकाबले भी एक बाकायदा फौज से था और वो भी अपने वक़्त की बड़ी सल्तनत की फौज और सफ़र भी दूर-दराज़, इसलिये कुछ की हिम्मतें जवाब दे गईं और मुनाफ़िक़ीन ने तो ख़ूब ही बहाने लगाए फिर भी जब ईसाइयों को हालात की नामुवाफ़क़त के बावजूद मुसलमानों की उस तैयारी का इल्म हुआ तो खुद ही उनके हौसले पस्त हो गए और उन्हें फौजकशी की हिम्मत न हुई। लश्करे इस्लाम एक मुद्दत तक इतिज़ार के बाद वापस चला (सूरह तौबा) में आयते शरीफ़ा, यअतज़िस्सुन इज़ा रजअतुम इलैहिम (अत् तौबा : 94) में इस जंग से मुताल्लिकीन मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है। दुनिया कारगाहे अमल है, वक़्त आने पर जो चुराने वालों को इस्लामी इस्तिलाह में लफ़्ज़े मुनाफ़िक़ से याद किया गया है क्योंकि इस्लाम सरासर अमली ज़िन्दगी का नाम है, सच है :-

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी, ये ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है

**बाब 28 : काफ़िर अगर कुफ़्र की हालत में मुसलमान को मारे फिर मुसलमान हो जाए, इस्लाम पर मज़बूत रहे और अल्लाह की राह में मारा जाए तो उसकी फ़ज़ीलत का बयान**

2826. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी अबुज़्ज़िनाद से, उन्होंने अज़रज से, और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) अल्लाह तआला ऐसे दो आदमियों पर हंस देगा कि उनमें से एक ने दूसरे को क़त्ल किया था और फिर भी दोनों जन्नत में दाख़िल हो गए। पहला वो जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया वो शहीद हो गया, उसके बाद अल्लाह तआला ने क़ातिल को तौबा की तौफ़ीक़ दी और वो भी अल्लाह की राह में शहीद हुआ। इस तरह दोनों क़ातिल व मक्त्तूल बिल आख़िर जन्नत में दाख़िल हुए।

**तशरीह :**

या'नी कायदा तो ये है कि क़ातिल और मक्त्तूल एक साथ जन्नत या जहन्नम में जमान हों, अगर मक्त्तूल और शहीद (अल्लाह के रास्ते का) जन्नती है तो यक़ीनन ऐसे इंसान का क़ातिल जहन्नम में जाएगा लेकिन अल्लाह पाक खुद अपनी कुदरत के अजायबत मुलाहज़ा फ़र्माता है तो उसे हंसी आ जाती है कि एक शख्स ने काफ़िरों की तरफ़ से लड़ते हुए एक मुसलमान मुजाहिद को शहीद कर दिया फिर अल्लाह की कुदरत कि उसे भी ये ईमान की हालत नज़ीब हुई और उसके बाद वो मुसलमानों की तरफ़ से लड़ते हुए शहीद हो गया और इस तरह क़ातिल और मक्त्तूल दोनों जन्नत में दाख़िल हो गए। अल्लाह पाक जब अपनी कुदरत का ये अजूबा देखता है तो हंसी आ जाती है जैसे अल्लाह की ओर सिफ़ात हक़ हैं इस तरह हंसना भी हक़ है। जिसकी कैफ़ियत में क़ुरैद करना बिदअत है, सलफ़ का यही मसलक है। इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि इस्लाम लाने से और जिहाद करने से कुफ़्र के सब गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं, इमाम अहमद और हम्माम की रिवायत से ये स़राहत निकलती है कि उन दो शख्सों में एक मोमिन था एक काफ़िर। पस अगर एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अमदन या'नी जान-बूझकर किसी शरई वजह के बग़ैर क़त्ल करके क़ातिल तौबा करे और अल्लाह की राह में शहीद हो तो उसका गुनाह मुआफ़ न होगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का यही क़ौल है कि क़ातिल मोमिन की तौबा कुबूल नहीं और जुम्हूर उलमा कहते हैं कि उसकी तौबा स़हीह है और आयत व मध्यक्त्तुल मुमिनन मुतअम्मिदन (अन् निसा : 93) बरतरीके तलीज़ है कि लोग उससे बाज़ रहें, खुलूद से मुराद बहुत मुद्दत तक रहना है। (ख़ुलासा वहीदी)

۲۸- بَابُ الْكَافِرِ يَقْتُلُ الْمُسْلِمَ،

ثُمَّ يُسْلِمُ فَيَسُدُّ

بَعْدُ وَيُقْتَلُ

۲۸۲۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ

اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((يُضْحِكُ اللَّهُ إِلَى رَجُلَيْنِ

يَقْتُلُ أَحَدُهُمَا الْآخَرَ يَدْخُلَانِ الْجَنَّةَ،

يُقَاتِلُ هَذَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلُ، ثُمَّ يُعْرَبُ

إِلَى عَلَى الْقَاتِلِ فَيُسْتَشْهِدُ)).

आज ईदुल अज्हा 1391 हिजरी को जबकि जमाअत की दा'वत पर मुम्बई ईदुल अज्हा पढ़ाने आया हुआ था, ये तशरीही बयान कलम के हवाले किया गया। अल्लाह पाक आज के मुबारक दिन में ये दुआ कुबूल करे कि इस मुबारक किताब की तकमील का शर्फ हासिल हो। आमीन या रबबल आलमीन।

क़ाल इब्नुलजौज़ी अक्षरुससलफ़ि यमतनिक़न मिन तावीलि मिज़िलि हाज़ा व यरौनहू कमा जाअ व यम्बगी अययुराइय मिज़िल फी मिज़िलि हाज़लअमि इअतिकादुन अन्नहू युशबिहू सिफ़ातुल्लाहि सिफ़ातुलबल्कि व मअनलअमि अदमुलइल्मि बिल्मुरादि मिन्हु अम इअतिकादित्तन्ज़ीह. (फ़तहूल बारी) या'नी इब्ने जौज़ी ने फ़र्माया कि अक़्बर सल्फ़ सॉलेहीन इस किस्म की सिफ़ाते इलाही की तावील मना जानते हैं बल्कि जिस तरह ये वारिद होती हैं उसी तरह तस्लीम करते हैं, इस ए'तिकाद के साथ कि अल्लाह की सिफ़ाते मख़लूक की सिफ़ात के मुशाबेह नहीं हैं। तस्लीम करने का मतलब ये कि हमको उनके मअानी मा'लूम हैं, कैफ़ियत मा'लूम नहीं।

2827. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे अम्बसा बिन सईद ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप ख़ैबर में ठहरे हुए थे और ख़ैबर फ़तह हो चुका था, मैंने अज़ा किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरा भी (माले ग़नीमत में) हिस्सा लगाइये। सईद बिन अलआस के एक लड़के (अबान बिन सईद रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उनका हिस्सा न लगाइये। इस पर अबू हुरैरह (रज़ि.) बोले कि ये शख़्स तो इब्ने क़ौक़िल (नोअमान बिन मालिक रज़ि.) का कातिल है। अबान बिन सईद (रज़ि.) ने कहा कितनी अजीब बात है कि ये जानवर (या'नी अबू हुरैरह अभी तो पहाड़ की चोटी से बकरियाँ चराते चराते यहाँ आ गया है और एक मुसलमान के क़त्ल का मुझ पर इल्ज़ाम लगाता है। इसको ये ख़बर नहीं कि जिसे अल्लाह तआला ने मेरे हाथों से (शहादत) इज़्जत दी और मुझे उसके हाथों से ज़लील होने से बचा लिया (अगर उस वक़्त मैं मारा जाता) तो दोज़ख़ी होता, अम्बसा ने बयान किया कि अब मुझे ये नहीं मा'लूम कि आप (ﷺ) ने उनका भी हिस्सा लगाया या नहीं। सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझे सईदी ने अपने दादा के वास्ते से बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि सईदी से मुराद अमर बिन यह्या बिन सईद बिन अमर बिन सईद बिन आस हैं। (दीगर मक़ाम : 4237, 4238, 4239)

रिवायत में इब्ने क़ौक़िल से मुराद नोअमान बिन मालिक इब्ने अलबा बिन अहरम बिन फ़हर बिन ग़नम सहाबी है। क़ौक़िल उनके दादा अलबा का लक़ब था, वो उहूद के दिन अबान के हाथ शहीद हुए थे। कहते हैं उन्होंने उस दिन ये दुआ की थी कि या अल्लाह! सूरज डूबने से पहले मैं ज़न्नत की सैर करूँ, अल्लाह ने उनकी ये दुआ कुबूल कर ली और वो सूरज डूबने से पहले ही

۲۸۲۷- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْسَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِخَيْبَرَ يَغْدِمُ مَا اقْتَنَوْهَا فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اسْأَلُكَ لِي، فَقَالَ بَعْضُ بَنِي سَعِيدٍ بْنُ الْعَاصِي: لَا تُسْأَلُ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقِلٍ، فَقَالَ ابْنُ سَعِيدٍ بْنُ الْعَاصِي: وَاعْجَبًا لَوَثَرٍ تَذَلُّي عَلَيْنَا مِنْ قُدُومِ ضَانٍ يَنْتَقِي عَلَيَّ قَتْلَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ أَكْرَمَهُ اللَّهُ عَلَى يَدَيَّ وَلَمْ يُهَيِّئْ عَلَيَّ يَدَيْهِ. قَالَ: فَلَا أَذْرِي أَسْأَلُ لَهُ أَمْ لَمْ يُسْأَلْ)). قَالَ سُفْيَانُ: وَحَدَّثَنِي السَّعِيدِيُّ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: السَّعِيدِيُّ هُوَ عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ بْنِ سَعِيدٍ بْنِ الْعَاصِي. [أطرافه: ١، ٤٢٣٧، ٤٢٣٨، ٤٢٣٩].

शहीद हो गये। वब्र, अरब में बिल्ली से छोटा एक जानवर जिसकी दुम और कान छोटे होते हैं। कदूम और ज़ान जो लफ़्ज़ आया है कुछ ने कहा ये एक पहाड़ का नाम है जो क़बील-ए-दौस के करीब था, हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) उधर ही के बाशिन्दे थे गोया अबान बिन सईद ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) पर ये तज़ान किया, उनके पस्त क़द होने को वब्र से तश्बीह दी और बकरियों का गडरिया करार देते हुए अपने ज़ुर्म का इकरार भी किया मगर ये कि उस वक़्त वो मुसलमान नहीं हुए थे बाद में अल्लाह ने दौलते इस्लाम से सरफ़राज़ कर दिया।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वल्मुरादु भिन्हु हाहुना क़ौलु अबान अक्वमहुल्लाहु अला यदय्य व लम युहिनी अला यदैहि व अराद बिज़ालिक अन्नुअमान इस्तश्हद बियदि अबान फअक्वमहुल्लाहु बिश्शहादति व लम युक्तल अबा अला कुप्पिही फयदखुलुन्नार व हुवलमुरादु बिल्इहानति बल आश अबान हत्ता ताब व अस्लम व कान इस्लामुहु क़ब्ल ख़ैबर बअदल्हुदैबिया व क़ाल ज़ालिकल्कलामु बिहज्रतिन्नबिय्यि (ﷺ) व अक्वमहु अलैहि व मुवाफ़िकुल्लिमा तज़म्मनतुन लिन्नजुमति. (फ़तुहल बारी) क़ौले अबान से यहाँ मुराद ये कि अल्लाह ने मेरे हाथ पर उनको इज़्जत शहादत दी और उनके हाथों से क़त्ल कराकर मुझको ज़लील होने से बचा लिया, जिससे मुराद लिया कि नोअमान (रज़ि.) अबान (रज़ि.) के हाथ से शहीद हुए पस अल्लाह ने उनका इकराम फ़र्माया और अबान कुफ़्र पर नहीं मरा वरना वो दोज़ख़ में जाता। अल्लाह ने उनको हुदैबिया के बाद इस्लाम नज़ीब फ़र्माया। अबान ने ये बातें आँहज़रत (ﷺ) के सामने बयान की आप (ﷺ) ख़ामोश रहे, उससे बाब का तर्जुमा षाबित हुआ। आप (ﷺ) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का हिस्सा नहीं लगाया। इस पर हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वहतज्ज बिही क़ाल इन्न मन हज़र बअद फ़िराग़िल वक़अति व लौ कान ख़रज मददल लहुम अल्ला युशारिक मन हज़रहा व हुव क़ौलुल जुम्हूर (फ़तुहल बारी) या'नी उससे दलील ली उससे जिसने कहा कि जो शख़्स जंग होने के बाद हाज़िर हुआ अगरचे वो मदद करने के ही लिये आया हो, उसको हाज़िर होने वालों के साथ हिस्सों में शरीक नहीं किया जाएगा। जुम्हूर का यही क़ौल है।

### बाब 29 : जिहाद को (नफ़ली रोज़ों पर)

#### मुक़द्दम रखना

2828. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे षाबित बिनानी ने, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू तलहा जैद बिन सहल (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में जिहादों में शिर्कत के ख़याल से (नफ़ली) रोज़े नहीं रखते थे लेकिन आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद फिर मैंने उन्हें ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के सिवा रोज़े के बग़ैर नहीं देखा।

जिहाद एक ऐसा अमल है जिसमें फ़र्ज़ नमाज़ भी कम हो जाती है फिर नफ़ली नमाज़ और रोज़ों का ज़िक्र ही क्या है क्योंकि जिहाद उन सब पर मुक़द्दम है मगर आम तौर पर मुसलमान इस फ़रीजे से गाफ़िल हो गए और नफ़ली बल्कि खुद साख़्ता नमाज़ों, वज़ीफ़ों ने उनको मैदाने जिहाद से क़दअन गाफ़िल कर दिया इल्ला माशा अल्लाह। पीछे बतलाया जा चुका है कि इस्लाम में जिहाद या'नी किताल महज़ मुदाफ़िआना तौर पर है ज़ारेहाना (ज़ोर-जुल्म) की जंग को हर्गिज़ इस्लाम ने जाइज़ नहीं रखा।

### बाब 30 : अल्लाह की राह में मारे जाने के सिवा शहादत की और भी सात क्रिस्में हैं

#### ۲۹- بَابُ مَنِ اخْتَارَ الْغَزْوَ عَلَى

##### الصُّومِ

۲۸۲۸- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا ثَابِتُ الْثَنَائِي قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ أَبُو طَلْحَةَ لَا يَصُومُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَجْلِ الْغَزْوِ. فَلَمَّا لَبِىَّ النَّبِيُّ ﷺ لَمْ أَرَهُ مُطْعِمًا إِلَّا يَوْمَ فِطْرٍ أَوْ أَحْنَى)).

#### ۳۰- بَابُ الشَّهَادَةِ سَبْعَ سِوَى

##### الْقَتْلِ

2829. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें सुमयने, उन्हें अबू सलैह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया शहीद पाँच किस्म के होते हैं। ताऊन में हलाक होने वाला, पेट की बीमारी से मरने वाला, डूबकर मरने वाला, दबकर मरने वाला, और अल्लाह के रास्ते में शहादत पाने वाला। (राजेज़: 653)

٢٨٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ ((الشَّهَدَاءُ خَمْسَةٌ: الْمَطْطُونُ وَالْمَنْطُونُ وَالْفَرَقُّ وَصَاحِبُ الْهَيْدَمِ وَالشَّهِيدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)).

[راجع: ٦٥٣]

**तशरीह:** कुछ अह्दादीष में शहादत की सात किस्मों का साफ़ ज़िक्र आया है, हज़रत इमाम (रह.) ने उनमें से अह्दादीष के पेशे-नज़र लगाया है लेकिन चूँकि ये अह्दादीष उनकी शराइज़ पर नहीं थीं, इसलिये उन्हें बाब के तहत नहीं लाए। मक्सदे बाब ये है कि शहादत सिर्फ़ जिहाद करते हुए क़त्ल हो जाने का ही नाम नहीं है बल्कि उसकी मुख्यतः सूरतें हैं। ये बात दूसरी है कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते हुए शहादत पाने का दर्जा बहुत ही बुलन्द है। (दूसरी रिवायतों में है कि जो जलकर या निमोनिया में मर जाए या औरत ज़चगी में या आदमी अपने माल व जान की हिफ़ाज़त में या सफ़र में या साँप और बिच्छू के काटने से या दरिन्दे के फाड़ने से मर जाए, वो शहीद है, इमाम नववी (रह.) फ़र्माते हैं, अल्मुस्तादु बिशहादति हाउलाइ कुल्लुहुम गैरल्मक्तूलि फी सबीलिल्लाहि अन्नहुम यकूनु लहुम षबाबुशशुहदाइ व अम्मा फिहुनिया फयुगसलून व युसल्ली अलैहिम व क़द सबक्र फी किताबिल्ईमानि बयानु हाज़ा व अन्नशुहदाअ षलाषत अक्साम शहीदुन फिहुनिया व अल्आखिरति व हुल्मक्तूलु फी हर्बिल्कुप्फारि व शहीदुन फिल्आखिरति दून अहमामिहुनिया व हुम हाउलाइल्मज़कूरुन हुना शहीदुन फिहुनिया दूनल्आखिरति व हुव मन ग़ल्ल फिल्गनीमति औ कुतिल मुदबिरन (नववी, जिल्द: 2 पेज नं. 143) या 'नी मक्तूल के अलावा इन तमाम शहादतों से मुराद ये कि आखिरत में उनको शुहदा का षवाब मिलेगा मगर दुनिया में शुहदा की तरह नहीं बल्कि आम मुसलमानों की तरह गुस्ल दिये जाएँगे और उन पर नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ी जाएगी। शुहदा तीन किस्म के होते हैं, एक तो वो हैं जो दुनिया व आखिरत में शहीद ही हैं, जो जिहाद में कुप्फार के हाथों से मारे जाएँ। दूसरी किस्म के शहीद वो जो दुनिया में शहीद हुए मगर आखिरत में शहीद नहीं, वो ऐसे लोग हैं जिन्होंने माले ग़नीमत वग़ैरह में ख़यानत की। तीसरी किस्म के शहीद वो जो दुनिया में शहीद हैं मगर दुनिया में उन पर अहकामे शुहदा जारी न होंगे, ऐसे ही शुहदा यहाँ मज़कूर हैं। लफ़्ज़ शहीद की हक़ीक़त बतलाने के लिये हज़रत इमाम नववी (रह.) शारेह मुस्लिम लिखते हैं, व अम्मा सबबु तस्मियतिही शहीदन फ़क़ालन्नज़्ज़ुब्नु शुमैल लिअन्नहू हय्युन फइन्न अर्वाहुम शहिदत व हज़रत दारस्सलामि व अर्वाहु गैरहिम इन्नमा तशहदुहा यौमल्क्रियामति व क़ाल इब्नुल्अम्बारी लिअन्नल्लाह तआला व मलाइकतहू अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु यशहदून लहू बिल्जन्नति व क़ील लिअन्नहू शहिद इन्द ख़ुरूजि रूहिही मा अअहहुल्लाहु तआला लहू मिनष़वाबि वल्करामति व क़ील लिअन्न मलाइकतरहमति यशहदूनहू फयारख़ुजून रूहहू व क़ील लिअन्नहू शहिद लहू बिल्ईमानि व ख़ातमतिल्ख़ैरि बिज़ाहिरि हालिही व क़ील लिअन्न अलैहि शाहिदन बिकौनिही शहीदन व हुवदमु व क़ील लिअन्नहू यशहदु अलल्उममि यौमल्क्रियामति बिइब्लागिरूसुलि अरिसालत इलैहिम व अला हाज़ा अल्क़ौलु युशारिकुहुम गैरुहुम फी हाज़ल्वस्मिफ़. (नववी जिल्द 2, पेज 134) या 'नी शहीद की वजह तस्मिया के बारे में पस नज़र बिग शुमैल ने कहा कि वो जिन्दा है या 'नी उनकी रूह दारुस्सलाम में जिन्दा और हाज़िर रहती है जबकि उनके ग़ैर की रूहें क़यामत के दिन वहाँ हाज़िर होंगी। इब्ने अम्बारी ने कहा इसलिये कि अल्लाह पाक और उसके फ़रिश्ते उसके लिये जन्नत की शहादत देते हैं और कहा गया कि इसलिये कि जब भी उसकी रूह निकली उसने षवाब और करामत के बारे में अल्लाह के वा'दों का मुशाहिदा किया और कहा गया कि इसलिये कि रहमत के फ़रिश्ते उसकी शहादत के वक़्त हाज़िर होते और उसकी रूह को ले लेते हैं और कहा गया कि इसलिये कि ज़ाहिरी शहादत की बिना पर उसके इमान और ख़ातिमा बिल्ख़ैर की शहादत दी गई और कहा गया कि उस

पर उसका खून शाहिद (गवाह) होगा जो उसके शहीद होने की शहादत देगा और कहा गया कि इसलिये कि वो क़यामत के दिन दूसरी उम्मतों पर शहादत देगा कि उनके रसूलों ने उनको अल्लाह के पैग़ामात दिये और इस क़ौल पर उन के ग़ैर भी उसमें उनके शरीक होंगे।

2830. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको आसिम ने ख़बर दी हफ़सा बिनते सीरीन से और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ताऊन की मौत हर मुसलमान के लिये शहादत का दर्जा रखती है। (दीगर मक़ाम : 5732)

۲۸۳۰- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عاصِمٌ عَنْ حفصة بنتِ سَيرينَ عن أنسِ بنِ مالكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عن النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((الطَّاعُونَ شَهَادَةٌ لِّكُلِّ مُسْلِمٍ)).

[طرفه ب : ۵۷۳۲]

इसलिये ताऊन ज़दा इलाकों से भागना या उनमें दाखिल होना मना है, इस बीमारी में आदमी के गले या बगल में गिल्टी (गाँठ) होती है और शदीद (तेज़) बुखार के साथ दो दिन में आदमी ख़त्म होता है, इसी को प्लेग भी कहते हैं।

### बाब 31 : अल्लाह तआला का सूरह निसा में

वे फ़र्माया कि मुसलमानों में जो लोग या'ज़ूर (असमर्थ) नहीं हैं और वे जिहाद से बैठ रहें; वो और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन लोगों को जो अपने माल और जान से जिहाद करें, बैठे रहने वालों पर एक दर्जा फ़ज़ीलत दी है। यूँ अल्लाह तआला का अच्छा वा'दा सबके लिये है और अल्लाह तआला ने मुजाहिदों को बैठने वालों पर बहुत बड़ी फ़ज़ीलत दी है। अल्लाह के फ़र्मान ग़फ़ूर हीमा तक। (अन निसा : 95)

### ۳۱- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِّ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ فَرْجَةً، وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَى، وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ - إِلَى قَوْلِهِ - غُفُورًا رَحِيمًا﴾ [النساء : 95]

पहले ये आयत यूँ उतरी थी, ला यस्तविल्काइदून मिनल्मुमिनीन वल्मुजाहिदून आखिर तक। उसमें ग़ैर उलिज़ज़ररि के अल्फ़ाज़ न थे फिर अल्लाह ने ये लफ़ज़ नाज़िल फ़र्माकर लूले, लंगड़े, अंधे, अपाहिज लोगों को निकाल दिया क्योंकि वो या'ज़ूर हैं।

इमाम नववी उसके ज़ेल में फ़र्माते हैं, फीहि दलीलुन लिसुकूतिल्जिहादि अनिल्मअज़ूरिन व लाकिन ला यकूलु षवाबुहुम षवाबल्मुजाहिदीन बल लहुम षवाबु निय्यातिहिम इन कान लहुम निय्यतुन मालिहतुन कमा क़ालन्नबिय्यु (ﷺ) व लाकिन जिहादुन व निय्यतुन व फीहि अन्नल्जिहाद फ़र्जुन किफ़ायतुन लैस बिफ़र्जिन ऐनन व फीहिरहुन अला मय्यकूलु अन्नहू कानत फी ज़मनिन्नबिय्यि (ﷺ) फ़र्जुन ऐनुन व बअदहू फ़र्जुन किफ़ायतुन वस्महीहु अन्नहू लम यज़ल फ़र्जुन किफ़ायतुन मिन हीनि शरइन व हाजिहिल्आयतु जाहिरतुन फी ज़ालिक लिक़्ौलिही तआला व कुल्लं व्वअदल्लाहुल्हुस्ना व फ़ज़लल्लाहुल्मुजाहिदीन अलल्काइदीन अज़न अज़ीमा. या'नी ये दलील है कि या'ज़ूर लोगों से जिहाद मुआफ़ है मगर उनको मुजाहिदीन का षवाब नहीं मिलेगा बल्कि उनकी नेक निय्यती का षवाब मिलेगा बशर्त कि वो निय्यते सालेहा रखते हों जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिहाद और निय्यते जिहाद क़यामत तक के लिये बाक़ी है। इससे ये भी श्राबित हुआ कि जिहाद फ़र्जे ऐन नहीं बल्कि सिर्फ़ फ़र्जे किफ़ायत है और उसमें उस शख्स का भी रद्द है जो कहता है कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में जिहाद फ़र्जे ऐन था बाद में फ़र्जे किफ़ायत हो गया। सहीह ये है कि जिहाद हमेशा से फ़र्जे किफ़ायत ही चला आ रहा है। आयत का ज़ाहिर मफ़हूम भी यही है कि अल्लाह ने सबसे नेक वा'दा फ़र्माया है और क़ाइदीन पर मुजाहिदों को बड़ी फ़ज़ीलत है। क़ाइदीन या'नी जिहाद से बैठे रहने वाले लोग मुराद हैं।

2831. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया अबू इस्हाक से कि मैंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, आप कहते थे कि जब आयत, ला यस्तविल काईदूना मिनल् मुमिनीन नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैद बिन घ़ाबित (रज़ि.) (जो कातिबे-वह्य थे) को बुलाया, आप एक चौड़ी हड्डी साथ लेकर हाज़िर हुए और इस आयत को लिखा और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) ने जब अपने नाबीना होने की शिकायत की तो आयत यूँ नाज़िल हुई, ला यस्तविल काईदूना मिनल् मुमिनीना ग़ैरा उलिलज़रर। (दीगर मक़ाम : 4593, 4594, 4990)

۲۸۳۱- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ دَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَيْدًا فَجَاءَ بِكَيْفٍ فَكَتَبَهَا. وَشَكَأ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ ضَرَارَتَهُ فَنَزَلَتْ: ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولَى الضَّرَرِ﴾.

[أطراف في: ۴۵۹۳، ۴۵۹۴، ۴۹۹۰].

उस ज़माने में चूँकि कागज़ ज़्यादा नहीं था, इसलिये हड्डी या और बहुत सी दूसरी चीज़ों पर भी ख़ास तरीके इस्ते'माल करने के बाद इस तरह लिखा जाता कि साफ़ पढ़ा जा सकता था और किताबत भी एक तबील ज़माने तक बाक़ी रहती थी। यहाँ ऐसी ही एक हड्डी पर आयत लिखने का ज़िक्र हुआ है। इस आयत ने नाबीना वग़ैरह मा'ज़रीन को फ़र्ज़ियते जिहाद से मुस्तज़ा (अलग) कर दिया। जिस दौर में जैसा कि आजकल है शराइते जिहाद पूरे तौर पर मौजूद न हों उस दौर के अहले इस्लाम भी मा'ज़रीन ही में शुमार होंगे मगर ऐसे दौर को जुअफ़े इस्लाम का दौर कहा जाएगा जैसा कि बदअल् इस्लामु ग़रीबन व सयज़दु क़मा बदअ से ज़ाहिर है।

2832. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे स़ालेह बिन कैसान ने बयान किया इब्ने शिहाब से, उन्होंने सहल बिन सअद जुहरी (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि मैंने मरवान बिन हक़म (खलीफ़ा और उस वक़्त के अमीरे मदीना) को मस्जिदे नबवी में बैठे हुए देखा तो उनके क़रीब गया और पहलू में बैठ गया और फिर उन्होंने हमें ख़बर दी कि ज़ैद बिन घ़ाबित अंसारी (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे आयत लिखवाई, ला यस्तविल काईदूना मिनल् मुमिनीना वल् मुजाहिदीना फ़ी सबीलिल्लाह उन्होंने बयान किया फिर अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आए, आप (ﷺ) उस वक़्त मुझसे आयत मज़कूर लिखवा रहे थे, उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अगर मुझ में जिहाद की त़ाक़त होती तो मैं भी जिहाद में शरीक होता। वो नाबीना थे, उस पर अल्लाह तबारक व त़आला ने अपने रसूल (ﷺ) पर वह्य नाज़िल की। उस वक़्त आप (ﷺ) की रान मेरी रान पर थी मैंने आप (ﷺ) पर वह्य की शिहत की वजह से आप (ﷺ) की रान

۲۸۳۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ الزُّهْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ خَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ فَأَقْبَلْتُ حَتَّى خَلَسْتُ إِلَى جَنْبِهِ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَلَى عَلَيْهِ: ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ﴾ قَالَ فَجَاءَهُ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَهُوَ يُبْلِهَا عَلَيْهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ أَسْتَطِيعُ الْجِهَادَ لَجَاهَدْتُ - وَكَانَ رَجُلًا أَعْمَى - فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى

का इतना बोझ महसूस किया कि मुझे डर हो गया कि कहीं मेरी रान फट न जाए। उसके बाद वो कैफियत आप (ﷺ) से ख़त्म हो गई और अल्लाह अज़्ज व जल्ल ने फ़क़हत ग़ैर उलिज़्ज़र नाज़िल फ़र्माए। (दीगर मक़ाम : 4592)

عَلَى رَسُولِهِ ﷺ وَفَعَلَهُ عَلَى فَعِيدِي.  
فَنَقَلْتُ عَلَى حَتَّى جُنْتُ أَنْ تَوْصِي فَعِيدِي.  
ثُمَّ سُرِّي عَنْهُ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ:  
﴿غَيْرُ أُولَى الصَّرَبِ﴾.  
[طَرَفُهُ لِي: ٤٥٩٢]

रसूले करीम (ﷺ) पर जब वज्र नाज़िल होती तो आपकी हालत अलग सी हो जाती, सख़्त सर्दी में पसीना-पसीना हो जाते और जिस्म मुबारक बोझल हो जाता। उसी कैफ़ियत को रावी ने यहाँ बयान किया है। आयत में इन अल्फ़ाज़ से नाबीना बीमार अपाहिज लोग फ़र्जियते जिहाद से अलग कर दिये गये। सच है, ला युकल्लिफुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अहा. (अल बक़र : 286) अहकामे इलाही सिर्फ़ इंसानी वुस्अत व ताक़त की हद तक बजा साने ज़रूरी हैं।

### बाब 32 : काफ़िरो से लड़ते वक़्त सब्र करना

2833. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ मूसा बिन इक़बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी नज़र ने कि अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने (इमर बिन इब्दुल्लाह को) लिखा तो मैंने वो तहरीर पढ़ी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है जब तुम्हारी कुफ़्रान से मुठभेड़ हो तो सब्र से काम लो। (राजेअ : 2818)

٣٢- بَابُ الصَّبْرِ عِنْدَ الْقِتَالِ  
٢٨٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ  
حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ  
عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمِ أَبِي النَّضْرِ  
أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى كَتَبَ لِقُرَّائِهِ أَنَّ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا لَقِيتُمُوهُمْ  
فَاصْبِرُوا)). [راجع: ٢٨١٨]

या'नी मुस्तक़िल मज़ाजी के साथ जमे रहो और हालात जैसे भी हों बद दिल हर्गिज़ न हो, बुज़दिली या फ़रार मोमिन की शान नहीं। अगर मौत मुक़द्दर नहीं तो यक़ीन सलामती के साथ वापसी होगी और मौत मुक़द्दर है तो कोई ताक़त न बचा सकेगी। यही ईमान और यक़ीन है जो मदें मोमिन को ग़ाज़ी या शहीद के मुअज़्ज़ अल्काब से मुलक़क़ब (सुशोभित) करता है। इशादि बारी तआला है, या अय्युहल्लज़ीन आमनुस्तईनु बिस्सब्बि वम्मलाति इन्नल्लाह मअस्साबिरीन. (अल बक़र : 153) तर्जुमा : ऐ ईमानवालों ! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो, बेशक अल्लाह पाक सब्र करने वालों के साथ है।

### बाब 33 : मुसलमानों को (महारिब) काफ़िरो से लड़ने की रबत दिलाना

और सूरह अन्फ़ाल में) अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, ऐ रसूल! मुसलमानों को काफ़िरो से लड़ने का शौक़ दिलाओ।

٣٣- بَابُ التَّحْرِيطِ عَلَى الْقِتَالِ  
وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:  
﴿حَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ﴾  
[الأنفال: ٦٥]

काफ़िरो से मुराद वो हैं जो इस्लामी रियासत पर हमला करें। जो ग़ैर-मुस्लिम मुसलमानों के साथ अमन व सुलह के साथ रहें उनके साथ जंग व जिहाद व ग़दारी हर्गिज़ जाइज़ नहीं है जैसा कि इशादि बारी तआला है, व इन जनहू लिस्सल्मि फज़्नह लहा (अल् अन्फ़ाल : 61) अगर वो ग़ैर-मुस्लिम सुलह सफ़ाई के लिये झुके तो तुम भी उसके लिये झुक जाओ, अमन व अमान व सुलह के साथ रहो कि अल्लाह को यही पसन्द है, वल्लाहु ला युहिबुल्फ़साद. (अल बक़र : 205) अल्लाह फ़साद को हर्गिज़ पसन्द नहीं रखता।

2834. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, कहा हमसे अबू

٢٨٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ  
حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو وَحَدَّثَنَا أَبُو



इस्हाक ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) (ग़ज़व-ए-ख़न्दक के शुरू होने से कुछ पहले जब ख़न्दक की खुदाई हो रही थी) मैदाने ख़न्दक की तरफ़ तशरीफ़ ले गए, आपने देखा कि मुहाजिरीन और अंसार सदीं की सख़ती के बावजूद सुबह ही सुबह ख़न्दक खोदने में मसरूफ़ हैं, उनके पास गुलाम भी नहीं थे जो उनकी इस खुदाई में मदद करते। आप (ﷺ) ने उनकी थकन और भूख को देखा तो आप (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो पस आख़िरत ही की ज़िन्दगी है पस अंसार और मुहाजिरीन की मरिफ़रत फ़र्माइयो। सहाबा ने उसके जवाब में कहा, हम वो हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) के हाथ पर उस वक़्त तक जिहाद करने का अहद किया है जब तक हमारी जान में जान है।

नबी मुहम्मद (ﷺ) से ये बेअत हमने की

जब तलक है ज़िन्दगी लड़ते रहेंगे हम सदा

(दीगर मक़ाम : 2835, 2961, 3795, 3796, 4099, 4100, 6413, 7201)

إِسْحَاقُ عَنْ جُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى الْخَنْدَقِ فَإِذَا الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ يَحْفَرُونَ فِي خِدَاةٍ بَارِدَةٍ، فَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ عَيْنَةٌ يَتَمَلَّوْنَ ذَلِكَ لَهُمْ، فَلَمَّا رَأَى مَا بِهِمْ مِنَ النَّصَبِ وَالْجُوعِ قَالَ: «اللَّهُمَّ إِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْآخِرَةِ، فَاغْفِرْ لِلْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ. فَقَالُوا مُجِيبِينَ لَهُ: نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيَْنَا أَبَدًا

[أطرافه في: ٢٨٣٥، ٢٩٦١، ٣٧٩٥]

٣٧٩٦، ٤٠٩٩، ٤١٠٠، ٦٤١٣

[٧٢٠١]

### बाब 34 : ख़न्दक खोदने का बयान

### ٣٤- بَابُ خَفْرِ الْخَنْدَقِ

पहले ज़मानों में दुश्मनों से महफूज़ रहने की सूरतों में से एक सूरत ये भी थी कि क़िले या शहर के चारों तरफ़ गहरी ख़न्दक खोदकर उसको पानी से लबरेज़ कर दिया जाता, इसी तरह वो क़िला या शहर दुश्मन से महफूज़ हो जाया करता था। मुसलमानों को भी एक बार मदीना की हिफ़ाज़त के लिये ऐसा ही करना पड़ा। दीर हाज़िरा (वर्तमान काल) में जंग के पुराने हालात सब दूसरी सूरतों में बदल चुके हैं, अब जंग ज़मीन से ज़्यादा फ़िज़ा (आसमन) में लड़ी जाती है।

2835. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारि़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि (जब तमाम अरब के मदीना मुनव्वरा पर हमले का ख़तरा हुआ तो) मदीना के आसपास मुहाजिरीन व अंसार ख़न्दक खोदने में मशगूल

٢٨٣٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَفَلَ الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ يَحْفَرُونَ الْخَنْدَقَ حَوْلَ

होगए, मिट्टी अपनी पीठ पर लादकर उठाते और (ये रजज़) पढ़ते जाते, हम वो हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) के हाथ पर उस वक़्त तक इस्लाम के लिये बेअत की है जब तक हमारी जान में जान है। नबी करीम (ﷺ) उनके पास रजज़ के जवाब में ये दुआ फ़र्माते, ऐ अल्लाह! आख़िरत की ख़ैर के सिवा और कोई ख़ैर नहीं, पस आप तो अंगार और मुहाजिरीन को बरकत अता फ़र्माइयो।

(राजेअ: 2834)

الْمَدِينَةِ وَيَقُولُونَ التُّرَابَ عَلَىٰ مُوْتِهِمْ وَيَقُولُونَ:

نَحْنُ الدِّينَ يَاغُفِرُوا مُحَمَّدًا

عَلَىٰ الْإِسْلَامَ مَا بَقِيَْنَا أَبَدًا

وَالنَّبِيِّ ﷺ بِحَيْثِهِمْ وَيَقُولُونَ:

اللَّهُمَّ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ

فَارْكَدْ فِي الْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ

[راجع: ٢٨٣٤]

हदीष में मदीना शरीफ़ के आसपास खंदक खोदने का ज़िक्र है। यही बाब का तर्जुमा है।

2836. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) (खंदक खोदते हुए मिट्टी) उठा रहे थे और फ़र्मा रहे थे कि (ऐ अल्लाह!) अगर तू न होता तो हमें हिदायत नज़ीब न होती, या'नी तू हिदायत गिर न होता तो न मिलती राह हमको। (दीगर मक़ाम: 2837, 3034, 4104, 4106, 6620, 7236)

٢٨٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْقُلُ وَيَقُولُ: (لَوْ لَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا).

[أطرافه ي: ٢٨٣٧، ٣٠٣٤، ٤١٠٤، ٦٦٢٠، ٧٢٣٦.]

ये जंग शब्वाल 5 हिजरी में हुई थी, जिसमें अरब की सारी क्रौमों ने मुतहिद होकर इस्लाम के खिलाफ़ यलगार की थी मगर अल्लाह ने उनको ज़लील कर के लौटा दिया। सूरह अहज़ाब में इस जंग के कुछ लरज़ा खैज़ कवाइफ़ मज़कूर हुए हैं।

2837. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ग़ज़्वा अहज़ाब (खंदक) के मौक़े पर देखा कि आप (ﷺ) मिट्टी (खंदक खोदने की वजह से निकलती थी) खुद बो रहे थे, मिट्टी से आपके पेट की सफ़ेदी छुप गई थी और आप ये शेर कह रहे थे,

٢٨٣٧- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: (رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْأَحْزَابِ يَنْقُلُ التُّرَابَ - وَقَدْ رَأَى التُّرَابَ يَخَاضَ بَطْنِهِ - وَهُوَ يَقُولُ:

तू हिदायत-गर न होता तो कहीं मिलती नजात  
अब उतार हम पर तसल्ली ऐ शहे आली सिफ़ात  
बे सबब हम पर ये काफ़िर जुल्प से चढ़ आते हैं

कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात  
पाँव जमवा दे हमारे, दे लड़ाई में प्रबात  
जब वो बहकाएँ हमें सुनते नहीं हम उनकी बात

(राजेअ: 2836)

हदीष में ज़िक्रकर्दा आखिरी अल्फ़ाज़ इन्नल उला क्रद बगौ अलैना का मतलब ये कि या अल्लाह! दुश्मनों ने ख़्वाह मख़्वाह हमारे खिलाफ़ क़दम उठाया और हमारे साथ ज़्यादाती की है, इसलिये मजबूरन हमको उनके जवाब में मैदान में आना पड़ा है।

इससे ज़ाहिर है कि इस्लामी जंग मुदाफ़िआना होती है जिसका मक़सद अज़ीम फ़ितना फ़साद करके अमन व अमान की फ़िज़ा पैदा करना होता है। जो लोग इस्लाम पर क़त्ल व ग़ारत गिरी का इल्ज़ाम लगाते हैं वो हक़ से सरासर नावाक़फ़ियत का धुबूत देते हैं।

### बाब 35 : जो शख़्स किसी मा'कूल इज़र की वजह से जिहाद में शरीक़ न हो सका

2838. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुबैर ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़व-ए-तबूक़ से वापस हुए। (दीगर मक़ाम: 2839, 4423)

2839. इमाम बुख़ारी (रह.) हदीस की दूसरी सनद बयान करते हैं कि हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, ये ज़ैद के बेटे हैं, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक ग़ज़वा (तबूक़) पर थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुछ लोग मदीना में हमारे पीछे रह गये हैं लेकिन हम किसी भी घाटी या वादी में (जिहाद के लिये) चलें वो प्रवाब में हमारे साथ हैं कि वो सिर्फ़ इज़र की वजह से हमारे साथ नहीं आ सके। और मूसा ने बयान किया कि हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे हुमैद ने, उनसे मूसा बिन अनस (रज़ि.) ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि पहली सनद ज़्यादा सहीह है। (राजेअ: 2838)

पहली सनद वो जिसमें हुमैद और अनस के दरम्यान मूसा बिन अनस का वास्ता नहीं है यही ज़्यादा सहीह है। जंगे तबूक़ में पीछे रह जाने वालों में कुछ वाक़ई ऐसे मुख़्लिस थे जिनके इज़रात (कारण) सहीह थे, वो दिल से शिक़त चाहते थे, मगर मजबूरन पीछे रह गए, उन्हीं के बारे में आप (ﷺ) ने ये बशारत पेश की। तर्जुमा और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

### बाब 36 : जिहाद में रोज़े रखने की फ़ज़ीलत

2840. हमसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन दोनों हज़रात ने नोअमान बिन अबी अयाश से सुना, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से, आप ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि जिसने अल्लाह तआला

### ۳۵- بَابُ مَنْ حَبَسَهُ الْعُذْرُ عَنِ الْغَزْوِ

۲۸۳۸- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: ((وَجَعَلْنَا مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ)). [طرفاه بی : ۲۸۳۹, ۴۴۲۳].

۲۸۳۹- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ خَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزَاةٍ لَفَّالٍ: ((إِنْ أَقْوَامًا بِالسَّيْئَةِ خَلَفْنَا مَا سَلَكْنَا شِعْبًا وَلَا وَادِيًا إِلَّا وَهُمْ مَعَنَا بِيَدِهِ، حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ)). وَقَالَ مُوسَى: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ((الْأَوَّلُ أَصَحُّ)). [راجع: ۲۸۳۸]

### ۳۶- بَابُ فَضْلِ الصَّوْمِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

۲۸۴۰- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ وَسَهْلٌ بْنُ أَبِي صَالِحٍ أَنَّهُمَا سَمِعَا النُّعْمَانَ بْنَ أَبِي عِيَّاشٍ

के रास्ते में (जिहाद करते हुए) एक दिन भी रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसे जहन्नम से सत्तर साल की मुसाफ़त की दूरी तक दूर कर देगा।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بَعَدَ اللَّهُ وَجْهَهُ مِنَ النَّارِ سَبْعِينَ خَرِيفًا».

**तशरीह:** मुज्ताहिदे मुत्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि कुआन व हदीष में लफ़्ज़ फ़ी सबीलिल्लाह ज़्यादातर जिहाद ही के लिये बोला गया है। हदीषे मज़कूर में भी जिहाद करते हुए रोज़ा रखना मुराद है जिससे नफ़ल रोज़ा मुराद है और उसी की ये फ़ज़ीलत है। हकीकत ये है कि मर्दे मुजाहिद का रोज़ा और मर्दे मुजाहिद की नमाज़ बहुत ऊँचा मुक़ाम रखती है।

### बाब 37 : अल्लाह की राह (जिहाद) में खर्च करने की फ़ज़ीलत का बयान

2841. हमसे सअद बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया यह्या से, वो अबू सलमा से, और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख्स ने अल्लाह के रास्ते में एक जोड़ा (किसी चीज़ का) खर्च किया तो उसे जन्नत के दारोगा बुलाएँगे। जन्नत के हर दरवाज़े का दारोगा (अपनी तरफ़) बुलाएगा कि ऐ फ़लाँ! इस दरवाज़े से आ। उस पर अबूबक्र (रज़ि.) बोले या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर उस शख्स को कोई डर नहीं रहेगा। ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे उम्मीद है कि तुम भी उन्हीं में से होओगे। (राजेअ: 1897)

### ۳۷- بَابُ فَضْلِ النِّفَقَةِ فِي

سَبِيلِ اللَّهِ

۲۸۴۱- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَتَيْنِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ دَعَاهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ - كُلُّ خَزَنَةٍ بِأَمْرِ - أَيْ قُلٍّ، هَلُمَّ». قَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَلِكَ الَّذِي لَا تَوَى عَلَيْهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ».

[راجع: ۱۸۹۷]

इस हदीष में भी लफ़्ज़ फ़ी सबीलिल्लाह से जिहाद मुराद है जोड़ा करने से मुराद है कि जो चीज़ भी दी वो कम अज़क़म दो-दो की ता'दाद में दी उस पर ये फ़ज़ीलत है।

2842. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे हिलाल ने बयान किया, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलल्लाह (ﷺ) मम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया मेरे बाद तुम पर दुनिया की जो बरकतें खोल दी जाएँगी, मैं तुम्हारे बारे में उनसे डर रहा हूँ कि (कहीं तुम उनमें मुत्तला न हो जाओ) उसके बाद आपने दुनिया की रंगीनियों का ज़िक्र फ़र्माया। पहले दुनिया की बरकात का ज़िक्र किया फिर उसकी रंगीनियों को बयान फ़र्माया, इतने में एक सहाबी खड़े हुए और अज़्र किया, या

۲۸۴۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ حَدَّثَنَا هِلَالٌ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: «إِنَّمَا أَخَشَى عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِي مَا يَفْتَحُ عَلَيْكُمْ مِنْ بَرَكَاتِ الْأَرْضِ». ثُمَّ ذَكَرَ زَهْرَةَ الدُّنْيَا قَبْدًا بِإِحْدَاهِمَا وَتَى

रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या भलाई, बुराई पैदा कर देगी। आप उसपर थोड़ी देर के लिये खामोश हो गए। हमने समझा कि आप (ﷺ) पर वह नाजिल हो रही है। सब लोग खामोश हो गए जैसे उनके सरो पर परिन्दे हों। उसके बाद आप (ﷺ) ने चेहर-ए-मुबारक से पसीना साफ़ किया और पूछा सवाल करने वाला कहाँ है? क्या ये भी (माल और दुनिया की बरकत) ख़ैर है? तीन बार आपने यही जुम्ला दोहराया फिर फ़र्माया देखो बहार के मौसम में जब हरी घास पैदा होती है, वो जानवर को मार डालती है या मरने के करीब कर देती है मगर वो जानवर बच जाता है जो हरी-हरी दूब चरता है, कोखें भरते ही सूरज के सामने जा खड़ा होता है। लीद, गोबर, पेशाब करता है फिर उसके हजम हो जाने के बाद और चरता है, उसी तरह ये माल भी हरा भरा और शीरी है और मुसलमान का वो माल कितना ब्रम्दा है जिसे उसने हलाल तरीकों से जमा किया हो और फिर उसे अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) यतीमों के लिये और मित्स्कीनों के लिये वक़फ़ कर दिया हो लेकिन जो शख्स नाजाइज़ तरीकों से जमा करता है तो वो एक ऐसा खाने वाला है जो कभी आसूदा नहीं होता और वो माल क़यामत के दिन उसके खिलाफ़ गवाह बनकर आएगा। (राजेअ: 921)

### बाब 38 : जो शख्स गाज़ी का सामान तैयार कर दे या उसके पीछे उसके घरवालों की ख़बरगिरी करे, उसकी फ़ज़ीलत

2843. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिज़ ने बयान किया, हमसे हुसैन ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या ने बयान किया, कहा मुझसे अबू सलमा ने बयान किया, कहा कि मुझसे बसर बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख्स ने अल्लाह के रास्ते में ग़ज़वा करने वाले को साज़ो-सामान दिया तो वो (गोया) खुद ग़ज़वे में शरीक हुआ और जिसने ख़ैरख्वाहाना तौर पर गाज़ी के घरबार की निगरानी की तो वो (गोया) खुद ग़ज़वे में शरीक हुआ।

2844. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान

بِالْأُخْرَى. فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَوْ يَأْتِي الْخَيْرُ بِالشَّرِّ؟ فَسَكَتَ عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا يُوْحَىٰ إِلَيْهِ، وَسَكَتَ النَّاسُ كَانَ عَلَى رُؤُوسِهِمُ الطُّيُورُ. ثُمَّ إِنَّهُ مَسَحَ عَنْ وَجْهِهِ الرُّخَصَاءَ فَقَالَ: ((أَيُّنَ الْمَسَائِلِ أَيْقَا؟ أَوْ خَيْرٌ هُوَ فَلَا؟. إِنَّ الْخَيْرَ لَا يَأْتِي إِلَّا بِالْخَيْرِ. وَإِنَّهُ كُلُّ مَا يَنْبُتُ الرِّبْعُ مَا يَقْبَلُ حَطًّا أَوْ يَلْمُ، أَكَلْتُ حَتَّى إِذَا امْتَدَّتْ خَاصِرَتَاهَا اسْتَقْبَلَتِ الشَّمْسُ فَطَلَّتْ وَبَالَتْ ثُمَّ رَفَعَتْ. وَإِنَّ هَذَا الْمَالِ خَضِيرَةٌ خُلُوةٌ، وَيَعِمُّ صَاحِبُ الْمُسْلِمِ لِمَنْ أَخَذَهُ بِحَقِّهِ فَجَعَلَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالنَّاسِ وَالْمَسَاكِينِ، وَمَنْ لَمْ يَأْخُذْهُ بِحَقِّهِ فَهُوَ كَالْأَكْلِ الَّذِي لَا يَشْبَعُ، وَيَكُونُ عَلَيْهِ شَهِيدًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٩٢١]

### ٣٨- بَابُ فَضْلِ مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا أَوْ

خَلَفَهُ بِخَيْرٍ

٢٨٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ حَدَّثَنِي بَسْرُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَدْ غَزَا، وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِخَيْرٍ فَقَدْ غَزَا)).

٢٨٤٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ



जंगे यमामा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के ज़माने में 12 हिजरी मुसैलमा कज़ाब (नुबुव्वत के झूठे दावेदार) से लड़ी गई थी। तफ़्सीलात किताबुल मगाज़ी में आएँगी, इंशाअल्लाह!

### बाब 40 : दुश्मनों की ख़बर लाने वाले दस्ते की

#### फ़ज़ीलत

लफ़्ज़े तलीआ के बारे में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, अथ मय्यब्बअषु अलल्लअदुव्वि लियत्तलिअ अला अहवालिहिम व हुव इस्मु जिन्सिन लियश्मलल वाहिदु फ़र्मा फ़ौकहू (फ़तहुल बारी) या'नी जो शख्स दुश्मनों के हालात की ख़बर हासिल करने के लिये भेजा जाए और ये इस्मे जिंस (संज्ञा का प्रकार) है जो वाहिद (एकवचन) और जमा (बहुवचन) सब पर मुश्तमिल (आधारित) है।

2846. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान घौरी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जंगे ख़ंदक के दिन फ़र्माया दुश्मन के लश्कर की ख़बर मेरे पास कौन ला सकता है? (दुश्मन से मुराद यहाँ बनू कुनैज़ा थे) जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मैं। आप (ﷺ) ने दोबारा पूछा दुश्मन के लश्कर की ख़बर कौन ला सकता है? इस बार भी जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मैं। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नबी के हवारी (सच्चे मददगार) होते हैं और मेरे हवारी (जुबैर) हैं। (दीगर मक़ाम : 2847, 2997, 3719, 4113, 7261)

٢٨٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو نَعْمٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ يَأْتِنِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ يَوْمَ الْأَخْزَابِ؟)) قَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا. ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِنِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) قَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَحَوَارِي الزُّبَيْرِ)).  
[أطرافه: ٣: ٢٨٤٧, ٢٩٩٧, ٣٧١٩, ٤١١٣, ٧٢٦١].

### बाब 41 : क्या जासूसी के लिये किसी एक शख्स को भेजा जा सकता है?

2847. हमसे सद्क़ा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने इययना ने ख़बर दी, कहा हमसे इब्ने मुंकदिर ने बयान किया, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सहाबा को (बनी कुनैज़ा की ख़बर लाने के लिये) दा'वत दी। सद्क़ा (इमाम बुख़ारी रह. के उस्ताज़) ने कहा कि मेरा ख़याल है कि ये ग़ज़व-ए-ख़ंदक का वाक़िया है, तो जुबैर (रज़ि.) ने उस पर लम्बैक कहा फिर आप (ﷺ) ने बुलाया और जुबैर (रज़ि.) ने लम्बैक कहा फिर तीसरी बार आप (ﷺ) ने बुलाया और इस बार भी जुबैर (रज़ि.) ने लम्बैक कहा। इस पर अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) हैं। (राजेज़: 2846)

٤١- بَابُ هَلْ يُنْعَثُ الطَّلِيعَةُ وَحَدَهُ  
٢٨٤٧- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُثَيْمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَذَبَ النَّبِيُّ ﷺ النَّاسَ - قَالَ صَدَقَةُ أَظُنُّهُ يَوْمَ الْغَضَنِي - فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، ثُمَّ نَذَبَ النَّاسَ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، ثُمَّ نَذَبَ النَّاسَ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا، وَإِنْ حَوَارِي الزُّبَيْرِ بْنِ النُّوَّامِ)). [راجع: ٢٨٤٦]

### बाब 42 : दो आदमियों का मिलकर सफ़र करना

2848. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबू

٤٢- بَابُ سَفَرِ الْإِثْنَيْنِ  
٢٨٤٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا

शिहाब ने बयान किया, उनसे खालिद हज्जाअ ने, उनसे अबू क़लाबा ने और उनसे मालिक बिन हुवेरिष (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम नबी करीम (ﷺ) के यहाँ से वतन के लिये वापस लौटे तो आप (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया कि एक मैं था और दूसरे मेरे साथी, (हर नमाज़ के वक़्त) अज़ान पुकारना और इक़ामत कहना और तुम दोनों में जो बड़ा हो वो नमाज़ पढ़ाए। (राजेअ: 628)

ये हदीष किताबुस्सलात में गुज़र चुकी है यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इसको इसलिये लाए कि एक हदीष में वारिद हुआ है कि अकेला सफ़र करने वाला शैतान है और दो शख्स सफ़र करने वाले दो शैतान हैं और तीन शख्स जमाअत। इस हदीष की रू से कुछ ने दो शख्सों का सफ़र मकरूह रखा है, इमाम बुखारी (रह.) ने उसी हदीष से उसका जवाज़ निकाला मा'लूम हुआ कि ज़रूरत से दो आदमी भी सफ़र कर सकते हैं।

**बाब 43 : क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत बँधी हुई है**

٤٣ - بَابُ الْخَيْلِ مَعْقُودَةٍ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

**तशरीह:** सवारी के जानवरों में घोड़े को एक नुमायाँ मुक़ाम हासिल है, ये जानवर अपनी वफ़ाशिआरी व फ़र्माबरदारी के लिहाज़ से इंसानों के लिये हमेशा से एक महबूब जानवर रहा है। जंग में घोड़े से सवारी की ख़िदमत बड़ी अहमियत रखती है। आज भी जबकि आज के मशीनी दौर में बेहतर से बेहतर सवारियाँ ईजाद में आ चुकी है, क़दम क़दम पर मोटर व हवाई जहाज़ हैं मगर घोड़े की अहमियत आज भी मुसल्लम है। लश्क़रों की ज़ीनत जो घोड़े के साथ वाबस्ता है दूसरी सवारियों के साथ नहीं है। दुनिया में कोई हुकूमत ऐसी नहीं है जिसमें घुड़सवार फ़ौज का दस्ता न हो। इस्लाम ने न सिर्फ़ जंग व जिहाद बल्कि रिफ़ाहे आम (सार्वजनिक हित) के लिये भी घोड़ा पालने की बड़ी फ़ज़ीलत बयान की है। बहुत से मक़ामात जहाँ मशीनी सवारियों की पहुँच नहीं होती घोड़ा वहाँ तक पहुँच जाता है। इन तमाम अह्दादीष में घोड़े की फ़ज़ीलत उन ही खूबियों की बिना पर वारिद हुई है। ख़ास तौर पर जबकि पहले ज़मानों में यही जानवर जंग में बहादुरों का मूनीसे जान होता था। इस्लामी नुक्त-ए-नज़र से मुजाहिदीन के घोड़े फ़ज़ीलत रखते हैं और उन ही पर इन तमाम सवारियों को क़यास किया जा सकता है जो आज मशीनी सवारियाँ बहरी (समुद्री) व बरी (जमीनी) व फ़िज़ाई (आकाशीय) मुक़ाबलों में इस्तेमाल में आती हैं। आज के मशीनी दौर में उनकी बड़ी अहमियत है। जो क़ौमों अपने आलाते जंग (युद्ध सामग्री) में ज़्यादा ता'दाद ऐसे ही आलात की मुहय्या करती हैं, वही क़ौमों आज फ़तहयाब होती हैं, और जिनके पास ये आलात मुहय्या नहीं होते वो बेहद कमज़ोर तसव्वुर की जाती हैं। आज की दुनिया में अमेरिका और रूस का नाम इसलिये रोशन है क्योंकि वो इस किस्म के आलात मुहय्या करने में दुनिया की सब क़ौमों से आगे हैं। अल्फ़ाज़े बाब में ख़ैर से मुराद हर भलाई और माल भी मुराद है। उमूमन अहले अरब ख़ैर का लफ़्ज़ माल पर बोलते हैं जैसा कि आयते करीमा में लफ़्ज़ इन तरक़ ख़ैरल्वसिय्यतु (अल्बकर: : 180) में ख़ैर से माल ही मुराद है।

2849. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत वाबस्ता रहेगी। (क्योंकि इससे जिहाद में काम लिया जाता रहेगा) (दीगर मक़ाम: 3644)

٢٨٤٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الْخَيْلُ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). [طرفه في: ٣٦٤٤].



2850. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुसैन और इब्ने अबी अस्सफ़र ने, उनसे शअबी ने और उनसे इर्वा बिन जअदि (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत तक घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत बँधी हुई रहेगी। सुलैमान ने शुअबा के वास्ते से बयान किया कि उनसे इर्वा बिन अबी अल् जअदि (रज़ि.) ने इस रिवायत की मुताबअत (जिसमें बजाय इब्नुल जअदि के इब्ने अबी अल् जअदि है) मुसहद ने हुशैम से की, उनसे हुसैन ने, उनसे शअबी ने और उनसे इर्वा इब्ने अबी अल् जअदि ने। (दीगर मक़ाम : 2852, 3119, 3643)

सअद ने भी अबी अल् जअदि कहा। इब्ने मदीनी ने भी इसी को ठीक कहा है और इब्ने अबी हातिम ने कहा कि अबुल जअदि का नाम सअद था। सुलैमान की रिवायत में अबू नुऐम के मुस्ताख़रज में और मुसहद की रिवायत उनके मुसन्द में मौसूल है।

2851. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया घोड़े की पेशानी में बरकत बँधी हुई है। (दीगर मक़ाम : 3645)

**बाब 44 : मुसलमानों का अमीर आदिल हो या ज़ालिम उसकी क़यादत में जिहाद हमेशा होता रहेगा**  
क्योंकि नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, घोड़े की पेशानी में क़यामत तक ख़ैरो-बरकत क़ायम रहेगी।

और घोड़ा इसीलिये मुतबर्क (बरकत वाला) है कि वो आल-ए-जिहाद (जिहाद का आला) है। तो मा'लूम हुआ कि जिहाद भी क़यामत तक होता रहेगा। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इमाम अबू दाऊद की ये हदीष न ला सके कि जिहाद वाजिब है तुम पर हर एक बादशाहे-इस्लाम के साथ ख़वाह वो नेक हो या बद, चाहे वो कबीरा गुनाह करता हो और अनस (रज़ि.) की ये हदीष कि जिहाद जबसे अल्लाह ने मुझको भेजा है क़यामत तक क़ायम रहेगा। अख़ीर मेरी उम्मत दज्जाल से लड़ेगी, किसी ज़ालिम के जुल्म या आदिल के अदल से जिहाद बातिल नहीं हो सकता क्योंकि दोनों हदीषें इमाम बुखारी (रह.) की शर्त के मुवाफ़िक़ न थीं। खुलासा ये कि जिहाद इमाम आदिल हो या फ़ासिक़ दोनों के साथ दुरुस्त है।

2852. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा हमसे आमिर ने, कहा हमसे इर्वा बारिक़ी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ख़ैरो-

۲۸۵۰- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُصَيْنٍ وَابْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ غُرُوزَةَ بْنِ الْجَعْفَرِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَغْفُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). قَالَ سُلَيْمَانُ عَنْ شُعْبَةَ: ((عَنْ غُرُوزَةَ بْنِ أَبِي الْجَعْفَرِ)). تَابَعَهُ مُسَدَّدٌ عَنْ هُثَيْمٍ عَنْ حُصَيْنٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ: ((عَنْ غُرُوزَةَ بْنِ أَبِي الْجَعْفَرِ)). [أطرافه في: ۲۸۵۲, ۳۱۱۹, ۳۶۴۳]

۲۸۵۱- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي الْيَاحِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الْبَرَكَةُ فِي نَوَاصِي الْخَيْلِ)). [طرفه في: ۳۶۴۵]

۴۴- بَابُ الْجِهَادِ مَا ضَرَّ مَعَ الْبِرِّ وَالْفَاجِرِ  
لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((الْخَيْلُ مَغْفُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)).

۲۸۵۲- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَاءُ عَنْ عَامِرٍ حَدَّثَنَا غُرُوزَةُ الْبَارِقِيُّ أَنَّ النَّبِيَّ

बरकत क़ायामत तक घोड़े की पेशानी के साथ बँधी रहेगी या'नी आखिरत में प्रवाब और दुनिया में माले गनीमत मिलता रहेगा।  
(राजेअ: 2850)

﴿قَالَ: ((الْخَيْلُ مَقْفُودَةٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ: الْأَجْرُ وَالْمَقْتَمُ)).

[راجع: ٢٨٥٠]

**तशरीह:**

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बताना चाहते हैं कि घोड़े में खैरो-बरकत के बारे में हदीष आई है वो उसके आल-ए-जिहाद होने की वजह से है और जब क़ायामत तक उसमें खैरो-बरकत क़ायम रहेगी तो उससे निकला कि जिहाद का हुक्म भी क़ायामत तक बाक़ी रहेगा और चूँकि क़ायामत तक आने वाला दौर हर अच्छा और बुरा दोनों होगा इसलिये मुसलमानों के उमरा भी इस्लामी शरीअत के पूरी तरह पाबन्द होंगे और कभी ऐसे नहीं होंगे लेकिन जिहाद का सिलसिला कभी बन्द न होगा क्योंकि ये कलमतुल्लाह को बुलन्द करने और दुनिया व आखिरत में सरबुलन्दी का ज़रिया है। इसलिये इस्लामी मफ़ाद के पेशे-नज़र ज़ालिम हुक्मरानों की क़यादत में भी जिहाद किया जाता रहेगा।

**बाब 45 : जो शख़्स जिहाद की निय्यत से (घोड़ा पाले) अल्लाह तआला के इर्शाद (व मिरिबातिल खैलि) की ता'मील में**

٤٥ - بَابُ مَنْ احْتَبَسَ قَرْمًا

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ﴾

[الأنفال: ٦٠]

2853. हमसे अली बिन हज़म ने बयान किया, कहा हमसे इमाम अब्दुल्लाह बिन अल मुबारक ने बयान किया, कहा मुझको तलहा बिन अबी सईद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने सईद मज़बरी से सुना, वो बयान करते थे कि उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने अल्लाह तआला पर ईमान के साथ और उसके वा'द-ए-प्रवाब को सच्चा जानते हुए अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) घोड़ा पाला तो उसे घोड़े का खाना, पीना और उसका पेशाब व लीद सब क़ायामत के दिन उसकी तराजू में होगा और सब पर उसको प्रवाब मिलेगा।

٢٨٥٣ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا طَلْحَةُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدًا الْمَقْبُرِيَّ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ احْتَبَسَ قَرْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ، إِيمَانًا بِاللَّهِ وَتَصَدِيقًا بِوَعْدِهِ، فَإِنَّ شِبَعَةَ وَرِيَّةَ وَزَوْثَةَ وَبَوْلَةَ فِي مِيزَانِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

**तशरीह:**

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, फ़्री हाज़लहदीषि जवाज़ुन वक्फ़लखैलि लिलमुदाफ़अति अनिलमुस्लिमीन व लियस्तम्बित भिन्हु जवाज़ु वक्फ़ि गैरिल्लिबैलि मिनल्मन्कूलाति व मिन गैरिल्लमन्कूलाति मिम्बाबि औला (फ़ल्हल बारी) या'नी इस हदीष से श्राबित हुआ कि दुश्मनों की मुदाफ़िअत के लिये घोड़े को वक्फ़ करना जाइज़ है। इसी से घोड़े के सिवा और भी जायदादे मन्कूला (चल सम्पत्ति) का वक्फ़ करना श्राबित हुआ, जायदादे गैर मन्कूला (अचल सम्पत्ति) का वक्फ़ तो बहरसूरत बेहतर है। दौरे हाज़िर में मशीनी आलाते हर्ब व ज़र्ब (युद्धक हथियार) बहुत सी किस्मों के वजूद में आ चुके हैं जिनके बग़ैर आज मैदान में कामयाबी मुश्किल है, इसीलिये दुनिया की क़ौमों उन युद्धक सामान की फ़राहमी में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिशों में मसरूफ़ हैं। जब भी कभी किसी भी जगह इस्लामी क़वाइद के तहत जिहाद का मौक़ा होगा, उन आलात की ज़रूरत होगी और उनकी फ़राहमी सब पर मुकद्दम होगी। इस लिहाज़ से ऐसे मौक़ों पर इन सब की फ़राहमी भी दौरे रिसालत में घोड़ों की फ़राहमी जैसे प्रवाब का मौजिब होगी, इंशाअल्लाह तआला!

**बाब 46 : घोड़ों और गधों का नाम रखना**

٤٦ - بَابُ اسْمِ الْقَرَمِ وَالْحِمَارِ

2854. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे फुजैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू हाजिम ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क्रतादा ने और उनसे उनके बाप ने कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) निकले। अबू क्रतादा (रज़ि.) अपने चंद साथियों के साथ पीछे रह गए थे। उनके दूसरे तमाम साथी तो मुहरिम थे लेकिन उन्होंने खुद एहराम नहीं बाँधा था। उनके साथियों ने एक गोरखर देखा। अबू क्रतादा (रज़ि.) के उस पर नज़र पड़ने से पहले उन हज़रात की नज़र अगरचे उस पर पड़ी थी लेकिन उन्होंने उसे छोड़ दिया था लेकिन अबू क्रतादा (रज़ि.) उसे देखते ही अपने घोड़े पर सवार हुए, उनके घोड़े का नाम जरादा था, उसके बाद उन्होंने साथियों से कहा कि कोई उनका कोड़ा उठाकर उन्हें दे दे (जिसे लिये बग़ैर वो सवार हो गये थे) उन लोगों ने उससे इंकार कर दिया (मुहरिम होने की वजह से) इसलिये उन्होंने खुद ही ले लिया और गोरखर पर हमला करके उसकी कूँचे काट दीं उन्होंने खुद भी उसका गोश्त खाया और दूसरे साथियों ने भी खाया फिर नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए। जब ये लोग आप (ﷺ) के साथ हो लिये आप (ﷺ) ने पूछा कि क्या उसका गोश्त तुम्हारे पास बचा हुआ बाक़ी है? अबू क्रतादा ने कहा कि हाँ उसकी एक रान हमारे साथ बाक़ी है। चुनौचे नबी करीम (ﷺ) ने भी वो गोश्त खाया। (राजेअ: 1821)

घोड़े का नाम जरादा था, इससे बाब का मतलब साबित हुआ।

2855. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे मज़न बिन ईसा ने बयान किया, कहा हमसे उबई बिन अब्बास बिन सहल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने उनके दादा (सहल बिन सअद साअदी रज़ि.) से बयान किया कि हमारे बाग़ में नबी करीम (ﷺ) का एक घोड़ा रहता था जिसका नाम लहीफ़ था।

2856. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन आदम से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अबुल अहवस ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अम्र बिन मैमून ने और उनसे मुआज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जिस गधे पर

٢٨٥٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا قُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَتَخَلَّفَ أَبُو قَتَادَةَ مَعَ بَعْضِ أَصْحَابِهِ وَهُمْ مُخْرِمُونَ وَهُوَ غَيْرُ مُخْرِمٍ، فَرَأَوْا حِمَارًا وَخَشِيَ قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ، فَلَمَّا رَأَوْهُ تَرَكُوهُ حَتَّى رَأَى أَبُو قَتَادَةَ، فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ يُقَالُ لَهُ الْحَرَادَةُ، فَسَأَلَهُمْ أَنْ يُبَايَعُوهُ سَوَطَهُ فَأَبَوْا، فَسَأَلَهُ، فَحَمَلَ لِفَقْرَةٍ، ثُمَّ أَكَلَ فَأَكَلُوا، فَقَدِمُوا، فَلَمَّا أَذْرَكُوهُ قَالَ: ((هَلْ مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟)) قَالَ: مَعَنَا رِجْلُهُ، فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَهَا)).

[راجع: ١٨٢١]

٢٨٥٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا أَبِي بْنُ عَبَّاسٍ بْنُ سَهْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: ((كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فِي حَابِطِنَا فَرَسٌ يُقَالُ لَهُ اللَّحِيفُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَقَالَ بَعْضُهُمْ: اللَّحِيفُ.

٢٨٥٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ يَحْيَى بْنَ آدَمَ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ غَمْرٍو بْنِ مَيْمُونٍ

सवार थे, मैं उस पर आप (ﷺ) के पीछे बैठा हुआ था। उस गधे का नाम उफैर था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ मुआज़! क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआला का हक्क अपने बन्दों पर क्या है? और बन्दों का हक्क अल्लाह पर क्या है? मैंने अर्ज किया अल्लाह और उसके रसूल ही ज्यादा जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह का हक्क बन्दों पर ये है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएँ और बन्दों का हक्क अल्लाह तआला पर ये है कि जो बन्दा अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो अल्लाह उसे अज़ाब न दे। मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं इसकी लोगों को बशारत न दे दूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लोगों को इसकी बशारत न दो वरना वो ख़ाली ए'तिमाद कर बैठेंगे। (और नेक आमाल से ग़ाफ़िल हो जाएँगे) (दीगर मक़ाम : 5967, 6267, 6500, 7373)

عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ وَدَفَّ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى جِمَارٍ يُقَالُ لَهُ عُفَيْرٌ، فَقَالَ: ((يَا مُعَاذُ، قُلْ تَلْبَسِي مَا حَقَّ اللَّهُ عَلَى عِبَادِهِ وَمَا حَقَّ الْعِبَادُ عَلَى اللَّهِ؟)) قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ. قَالَ: ((لَئِنْ حَقَّ اللَّهُ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَتَّبِعُوهُ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَحَقَّ الْعِبَادُ عَلَى اللَّهِ أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا)). فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلَا أُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ؟ قَالَ: ((لَا تُبَشِّرُهُمْ فَيَكْفُرُوا)).

[أطرافه ج: ١٥٩٦٧, ١٦٢٦٧, ١٦٥٠٠]  
[٧٣٧٣].

### तशीह:

यहाँ गधे का नाम उफैर मज़कूर है, इसी से बाब का मतलब प्राबित हुआ। इस हदीस से शिर्क की इतिहाई मज़म्मत और तौहीद की इतिहाई ख़ूबी भी प्राबित हुई। कुआन मजीद की बहुत सी आयात में मज़कूर है कि शिर्क इतना बड़ा गुनाह है जो शख्स बहालते शिर्क दुनिया से चला गया, उसके लिये जन्नत क़द्मून ह़राम है। वो हमेशा के लिये नारे-दोज़ख़ में जलता रहेगा। इद अफ़सोस कि कितने नाम-निहाद मुसलमान हैं जो कुआन मजीद पढ़ने के बावजूद अंधे होकर शिर्किया कामों में गिरफ़्तार हैं बल्कि बुतपरस्तों से भी आगे बढ़े हुए हैं। जो क़ब्रों में दफ़नशुदा बुजुर्गों से हाज़तें तलब करते हैं, दूर-दराज़ से उनकी दुहाई देते और उनके नामों की नज़्रो-नियाज़ करते हैं और ऐसे ऐसे ग़लत ए'तिक़ादात बुजुर्गों के बारे में रखते हैं, जो ए'तिक़ाद खुले हुए शिर्किया ए'तिक़ाद हैं और जो बुतपरस्तों को ही ज़ैबा (शोभा) देते हैं मगर नामनिहाद मुसलमानों ने इस्लाम को बर्बाद कर दिया है। हदाहुमुल्लाह इला सिरातिम् मुस्तक़ीम तौहीद व शिर्क की तफ़सीलात के लिये तक्विद्यतुल् इमान का मुतालआ निहायत ही अहम व ज़रूरी है।

2857. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया कि मैंने क़तादा से सुना कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया (एक रात) मदीना में कुछ ख़तरा सा महसूस हुआ तो नबी करीम (ﷺ) ने हमारा (अबू तलहा का जो आपके अज़ीज थे) घोड़ा मंगवाया, घोड़े का नाम मन्दूब था। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़तरा तो हमने कोई नहीं देखा अल्बत्ता इस घोड़े को हमने समुन्दर पाया। (राजेअ : 2627)

٢٨٥٧ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ فَرَسٌ بِالْمَدِينَةِ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا لَنَا يُقَالُ لَهُ مَلُوبٌ فَقَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ فَرَسٍ، وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَهْرًا)). [راجع: ٢٦٢٧]

एक दफ़ा मदीना में रात के वक़्त लोगों को ऐसा ख़याल हुआ कि अचानक किसी दुश्मन ने शहर पर हमला कर दिया है। आँहज़रत (ﷺ) खुद बनफ़से-नफ़ीस मन्दूब घोड़े पर सवार होकर अंधेरी रात में उसकी तहक़ीक़ के लिये निकले मगर इस अफ़वाह को

आपने ग़लत पाया, यही वाक़िया यहाँ मज़कूर है।

### बाब 47 : इस बयान में कि कुछ घोड़े मन्हूस होते हैं

٤٧- بَابُ مَا يُذَكَّرُ مِنْ شُومِ

الْفَرَسِ

2858. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि नहूसत सिर्फ़ तीन ही चीज़ों में होती है, घोड़े में, औरत में और घर में। (राजेअ: 2099)

٢٨٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّمَا الشُّومُ فِي ثَلَاثَةٍ: فِي الْفَرَسِ. وَالْمَرْأَةِ. وَالذَّارِ)). (راجع: ٢٠٩٩)

**तशरीह:** या'नी अगर नहूसत कोई चीज़ होती तो इन चीज़ों में होती जैसे आगे की हदीष से मा'लूम होता है। अबू दाऊद की रिवायत में है कि बदफ़ाली कोई चीज़ नहीं। अगर हो तो घर और घोड़े और औरत में होगी और इब्ने ख़ुज़ैमा और हाकिम ने निकाला कि दो शख्स हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गये कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ये हदीष बयान करते हैं कि तीन चीज़ों में नहूसत होती है घोड़े, औरत और घर में। ये सुनकर हज़रत आइशा (रज़ि.) बहुत गुस्सा हुई और कहने लगीं कि आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा नहीं फ़र्माया बल्कि आपने जाहिलियत वालों का ये ख़याल बयान फ़र्माया था कि वो इन चीज़ों में नहूसत के क़ाइल थे। इलमा ने इसमें इख़ितलाफ़ किया है कि वाक़ई इन चीज़ों में नहूसत कोई चीज़ है या नहीं, अक़ब़र ने इन्कार किया है क्योंकि दूसरी सहीह हदीष में है कि बदशगुनी कोई चीज़ नहीं है न छूत कोई चीज़ न तीरह-तेज़ी और कुछ ने कहा है कि नहूसत से ये मुराद है कि घोड़ा बदज़ात (बिगड़ैल), काहिल (सुस्त), शरीर (बदमाश) हो; या औरत बदज़बान, बुरे रवैये वाली हो; घर तंग और बिना हवा-रोशनी का और गन्दा हो। अबू दाऊद की एक हदीष में है आप (ﷺ) से एक शख्स ने बयान किया या रसूलल्लाह (ﷺ) हम एक घर में जाकर रहे तो हमारा शुमार कम हो गया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसे बुरे घर को छोड़ दो। (वहीदी)

हज़रत हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, बाबु मा युज़क़रू मिन शुऊमिल्फ़र्सि अय हल हुब अला उमूमिही औ मख़सूसुन बिबअजिल्ख़ैलि व हल हुब अला ज़ाहिरिही औ मा दल्ल व क़द अशार बिईरादि हदीषि सहलिन बअद हदीषिब्नि इमर इला अन्नल्हस्स्लज़ी फी हदीषि इब्नि इमर लैस अला ज़ाहिरिही व तर्जुमतुल्बाबि अल्लज़ी बअदहू व हियल्ख़ैलु अष्वलाषतु इला अन्न शुऊम मख़सूसुन बिबअजिल्ख़ैलि दून बअज़िन व कुल्लु ज़ालिक मिन लतीफ़ि नज़िही व दकीकि फिक्किही क़ालल्किरमानी फ़इन कुल्लु अशशुऊम कद यक़ुन फी गैरिहा फ़मा मअनल्हस्स् कालल्ख़ताबी अल्बर्कतु वशशऊम अलामतानि लिमा युसीबुल्इन्सानु मिनल्ख़ैरि वशशारि व ला यकूनु शैउन मिन ज़ालिक इल्ला बिक़ज़ाइल्लाहि इला आख़िरिही. (फ़तह) या'नी बाब जिसमें घोड़े की नहूसत का ज़िक्र है वो अपने इमूम पर है या उससे कुछ घोड़े मुराद हैं और कहा वो ज़ाहिर पर है या उसकी तावील की गई है और हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हदीष इब्ने उमर (रज़ि.) के बाद हदीषे सहल लाकर इशारा किया है कि हदीषे इब्ने उमर का हज़र अपने ज़ाहिर पर नहीं है और तर्जुमतुल बाब जो बाद में है जिसमें है कि घोड़ा तीन किस्म के आदमियों के लिये होता है। इससे मा'लूम होता है कि नहूसत आम नहीं है बल्कि कुछ घोड़ों के साथ ख़ास होती है और ये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की बारीक नज़र है और आप (रह.) की गहरी फ़िक्र है (जो एक मुज्ताहिदे मुत्लक़ की शान के ऐन लायक़ है)। अगर कोई कहे कि नहूसत उसके गैर में हज़र के मा'नी में आती है तो उसके जवाब में ख़ताबी ने कहा कि बरकत और नहूसत दो ऐसी अलामतें हैं जो ख़ैर और शर से इंसान को पहुँचती हैं और उनमें से बग़ैर अल्लाह के फैसले के कोई चीज़ नहीं हो सकती और मज़कूर तीनों चीज़ें महल और ज़ुरूफ़ हैं। उनमें से कोई चीज़ भी तबई बरकत या नहूसत नहीं रखती है। हाँ, अगर उनको इस्ते'माल करते वक़्त ऐसी चीज़

पेश आ जाए तो वो चीज़ उनकी तरफ मन्सूब हो जाती है, मकान में सुकूनत (रिहाइश) करनी पड़ती है, औरत के साथ ज़िन्दगी गुजराना जरूरी हो जाता है और कभी ज़रूरत के लिये घोड़ा पालना पड़ता है तो उनके साथ कुछ मौकों पर बरकत या नहूसत इजाज़ी चीज़ें हैं वरना जो कुछ होता है सिर्फ़ अल्लाह ही के हुक्म से होता है। ये भी कहा गया है कि औरत की नहूसत से ये मुराद है कि वो बाँझ रह जाए और घोड़े की नहूसत से मुराद ये कि कभी उस पर चढ़कर जिहाद का मौका नज़ीब न हो और घर की ये कि कोई पड़ोसी बुरा मिल जाए और ये भी सब कुछ अल्लाह के क़ज़ा व क़दर के तहत होता है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस बहस का ख़ात्मा इस आयत पर किया, **مَا أَصَابَ مِنْ مُّسْلِمٍ مِنْ شَيْءٍ فَلْيَافِكُمْ بِهَا الشَّيْءُ** (अल्-हदीद: 22) या 'नीज़मीन में या तुम्हारे नफ़्सों में तुम पर कोई भी मुसीबत आए वो सब आने से पहले ही अल्लाह की किताब लोहे महफूज़ में दर्ज शुदा है, उसके बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता।

2859. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से रिवायत किया, उन्होंने अबू हाज़िम बिन दीनार से, उन्होंने सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) से रिवायत किया कि रसूले अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया नहूसत अगर होती तो वो घोड़े, औरत और मकान में होती। (दीगर मक़ाम: 5095)

٢٨٥٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي هَازِمٍ بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ فَفِي الْمَرْأَةِ وَالْفَرَسِ وَالْمَسْكَنِ».

(अरब में १००५)

### बाब 48 : घोड़े के रखने वाले

तीन तरह के होते हैं और अल्लाह तआला का इशार्द है,

और घोड़े, ख़च्चर और गधे (अल्लाह तआला ने पैदा किये) ताकि तुम उन पर सवार भी हुआ करो और ज़ीनत भी रहे। (अन-नहल: 8)

### ٤٨ - بَابُ الْخَيْلِ لِثَلَاثَةٍ، وَقَوْلُهُ

تَعَالَى :

«وَالْخَيْلِ وَالْبِغَالِ وَالْغُمَيْرِ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً» [النحل : ٨]

इमाम बुखारी (रह.) ने ये आयत लाकर इस तरह इशारा किया कि अगर ज़ैब व ज़ीनत के लिये भी कोई घोड़ा रखे तो जाइज़ है बशर्त कि तकब्बुर और घमण्ड न करे और गुनाह का काम उनसे न ले।

2860. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अबू सल्लेह सिमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया घोड़े के मालिक तीन तरह के लोग होते हैं। कुछ लोगों के लिये वो बाअिष्रे अज़्रो-प्रवाब हैं, कुछ के लिये वो सिर्फ़ पर्दा हैं और कुछ के लिये वबाले जान हैं। जिसके लिये घोड़ा अज़्रो-प्रवाब का बाअिष्र है ये वो शख्स है जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद की निव्यत से उसे पालता है फिर जहाँ ख़ूब चरी होती या (ये फ़र्माया कि) किसी शादाब जगह उसकी रस्सी को ख़ूब लम्बी

٢٨٦٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي سَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «الْخَيْلُ لِثَلَاثَةٍ: لِوَجَلٍ أَجَرَ، وَلِرَجُلٍ سَتَرَ، وَعَلَى رَجُلٍ وَزَرَ. فَمَا أَدَّى لَهُ أَجْرَ فَرَجَلٍ رِبْطُهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاطَّلَ فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ، فَمَا أَصَابَتْ فِي طِيلِهَا ذَلِكَ مِنَ الْمَرْجِ أَوْ

करके बाँधता है (ताकि चारों तरफ से चर सके) तो घोड़ा उसकी चराई की जगह से या उस शादाब जगह से अपनी रस्सी में बैधा हुआ जो कुछ भी खाता-पीता है मालिक को उसकी वजह से नेकियाँ मिलती हैं और अगर वो घोड़ा अपनी रस्सी तुड़ाकर एक ज़गन या दो ज़गन लगाए तो उसकी लीद और उसके क़दमों के निशानों में मालिक के लिये नेकियाँ हैं और अगर वो घोड़ा नहर से गुजरे और उसमें से पानी पी ले तो अगरचे मालिक ने पानी पिलाने का इरादा न किया हो फिर भी उससे उसे नेकियाँ मिलती हैं। दूसरा शख्स वो है जो घोड़े को फ़ख़, दिखावे और अहले इस्लाम की दुश्मनी में बाँधता है तो ये उसके लिये बबाले जान है और रसूलुल्लाह (ﷺ) से गधों के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर उस जामेअ और मुंफ़रिद आयत के सिवा उनके बारे में और कुछ नाज़िल नहीं हुआ कि जो कोई एक ज़र्रा बराबर भी नेकी करेगा उसका बदला पाएगा और जो कोई ज़र्रा बराबर बुराई करेगा उसका बदला पाएगा। (रजैअ : 2371)

इस रिवायत में उसका ज़िक्र छोड़ दिया, जिसके लिये ए़बाब है न अज़ाब। दूसरी रिवायत में उसका बयान है कि वो शख्स जो अपनी तवंगरी की वजह से और इसलिये कि किसी से सवारी मांगना न पड़े बाँधे फिर अल्लाह का हक़ फ़रामोश न करे या'नी थके माँदे मुहताज को ज़रूरत के वक़्त सवार करा दे, कोई मुसलमान आरियतन मांगे तो उसको दे दे। आयते मज़क़ूर को बयान फ़र्माकर आप (ﷺ) ने लोगों को इस्तिम्बाते अहक़ाम का तरीक़ा बतलाया कि तुम लोग आयत और अहदीष से इस्तिदलाल कर सकते हो।

## बाब 49 : जिहाद में दूसरे

### जानवर को मारना

2861. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अक्कील व बिशर बिन इक्बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल मुतवक्किल नाजी (अली बिन दाऊद) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से जो कुछ सुना है, उनमें मुझसे भी कोई हदीष बयान कीजिए। उन्होंने बयान फ़र्माया कि मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ एक सफ़र में शरीक था। अबू अक्कील रावी ने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं (ये सफ़र) जिहाद के लिये था या अमरह के लिये (वापस होत

الرّوْحَةِ كَانَتْ لَهُ حَسَنَاتٍ، وَلَوْ أَنَّهَا قَطَعَتْ طِيلَهَا فَاسْتَبْتَّ شَرْفًا أَوْ شَرْفِينَ كَانَتْ أَرْوَانَهَا وَأَفَارَهَا حَسَنَاتٍ لَهُ. وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهْرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ وَلَمْ يَرُدَّ أَنْ يَسْقِيَهَا كَانَ ذَلِكَ حَسَنَاتٍ لَهُ. الرَّجُلُ الَّذِي هِيَ عَلَيْهِ وَزَّرَ فَهُوَ رَجُلٌ رَتَّطَهَا فَخَرًّا وَرِبَاءً وَنَوَاءً لِأَهْلِ الْإِسْلَامِ فَهِيَ وَزَّرَ عَلَى ذَلِكَ)). وَسَبَّلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ الْحُمْرِ فَقَالَ: ((مَا أَنْزَلَ عَلَيَّ فِيهَا إِلَّا هَذِهِ الْآيَةَ الْجَامِعَةَ الْفَادَةَ: لِمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ، وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ)). [راجع: 2371]

## 49 - بَابُ مَنْ ضَرَبَ ذَائِبَةً غَيْرَهُ فِي

### الْعَزْوِ

2861 - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَقِيلٍ حَدَّثَنَا أَبُو الْخَوَّكِلِ النَّاجِيُّ قَالَ: أَتَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيَّ فَقُلْتُ لَهُ: حَدَّثَنِي بِمَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: سَافَرْتُ مَعَهُ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ - قَالَ أَبُو عَقِيلٍ: لَا أَذْرِي غَزْوَةً أَوْ غُمْرَةً - فَلَمَّا أَنْ أَقْبَلْنَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَتَعَجَّلَ إِلَى أَهْلِهِ فَلْيَعَجَلْ)). قَالَ جَابِرٌ :

हुए) जब (मदीना मुनव्वरा) दिखाई देने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अपने घर जल्दी जाना चाहे वो जा सकता है। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम आगे बढ़े। मैं अपने एक स्याही सुख़ कैंट बेदाग़ पर सवार था दूसरे लोग मेरे पीछे रह गए, मैं उसी तरह चल रहा था कि कैंट रुक गया (थककर) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, जाबिर! अपना कैंट थाम ले, आप (ﷺ) ने अपने कोड़े से कैंट को मारा, कैंट कूदकर चल निकला फिर आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, ये कैंट बेचोगे? मैंने कहा हाँ! जब मदीना पहुँचे और नबी करीम (ﷺ) अपने अम्हाब के साथ मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए तो मैं भी आप (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचा और बलात के एक कोने में मैंने कैंट को बाँध दिया और आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया ये आप (ﷺ) का कैंट है। फिर आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और कैंट को घुमाने लगे और फ़र्माया कि कैंट तो तुम्हारा ही है, उसके बाद आप (ﷺ) ने चन्द औक़िया सोना मुझे दिलवाया और पूछा तुमको क़ीमत पूरी मिल गई। मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया अब क़ीमत और कैंट (दोनों ही) तुम्हारे हैं। (राजेज़: 443)

فَاقْبَلُوا وَاِنَّا عَلَى جَمْعٍ لِّيْ اَوْمَكُ لَيْسَ فِيْهِ شَيْءٌ وَالنَّاسُ حُلْفِي، فَيُنَا اَنَا كَذَلِكَ اِذَا قَامَ عَلَيَّ فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ : ((يَا جَابِرُ اسْتَمْسِكْ)). فَضَرَبْتُهُ بِسَوْطِيهِ ضَرْبَةً فَرَوَيْتُ الْعِزَّ مَكَانَهُ. فَقَالَ: ((اَتَبِيعُ الْحِمْلَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِيْنَةَ وَدَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَسْجِدَ فِي طَوَائِفِ اصْحَابِهِ، فَدَخَلْتُ اِلَيْهِ وَعَقَلْتُ الْجَمْلَ فِي نَاحِيَةِ الْبَلَاطِ فَقُلْتُ لَهُ: هَذَا جَمْلُكَ. فَخَرَجَ فَجَمَعَ يَطِيفٌ بِالْجَمْلِ وَيَقُولُ: ((الْحِمْلُ جَمْلُنَا)). فَبَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ اَوَاقٍ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ: ((اَعْطُوْهَا جَابِرًا)). ثُمَّ قَالَ: ((اسْتَوْفَيْتَ الثَّمَنَ؟)) قُلْتُ بَعْدُ قَالَ: ((الثَّمَنُ وَالْجَمْلُ لَكَ)). (راجع: 1443)

इमाम अहमद की रिवायत में यूँ है आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़रा इसको बिठा, मैंने बिठाया फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये लकड़ी तू मुझको दे, मैंने दी, आप (ﷺ) उस लकड़ी से उसको कई टूँसे दिये, उसके बाद फ़र्माया कि सवार हो जा। मैं सवार हो गया। बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है कि आप (ﷺ) ने पराये कैंट या 'नी जाबिर (रज़ि.) के कैंट को मारा। बलात वो पत्थर का फ़र्श जो मस्जिदे नबवी के सामने था। ये सफ़र ग़ज़्व-ए-तबूक का था। इब्ने इस्हाक ने ग़ज़्व-ए-जातुरिकाज़ बतलाया है।

### बाब 50 : सख़्त सरकश जानवर और नर घोड़े की सवारी करना

और राशिद बिन सअद ताबेई ने बयान किया कि सहाबा नर घोड़े की सवारी पसन्द किया करते थे क्योंकि वो दौड़ता भी तेज़ है और बहादुर भी बहुत होता है।

### ५०- بَابُ الرُّكُوبِ عَلَى الدَّائِيَةِ

#### الصَّغْبَةِ وَالْفُحُولَةِ مِنَ الْخَيْلِ

وَقَالَ رَاشِدُ بْنُ سَعْدٍ: كَانَ السَّلَفُ يَسْتَحِبُّونَ الْفُحُولَةَ لِأَنَّهَا أَجْرَى وَأَجْسَرُ.

ऐनी और हाफ़िज़ और क़स्तलानी; किसी ने भी ये बयान नहीं किया कि ये अपर किसने वस्ल किया। एक रिवायत में यूँ है कि सहाबा हालते ख़ौफ़ में मादयान को बेहतर समझते थे और सफूफ़ और क़िलों पर हमला करने के लिये नर घोड़े को। ऐनी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) से हमेशा नर घोड़े पर सवारी मन्कूल है। इसी तरह सहाबा में सिर्फ़ सईद से ये मन्कूल है कि वो मादयान पर सवार हुए थे।



2862. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, कहा हमको शुअबा ने खबर दी, उन्हें क़तादा ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि मदीना में (एक रात) कुछ डर और घबराहट हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) का एक घोड़ा मांग लिया। उस घोड़े का नाम मन्दूब था। आप (ﷺ) उस पर सवार हुए और वापस आकर फ़र्माया कि डर की तो कोई बात हमने नहीं देखी अल्बत्ता ये घोड़ा क्या है दरिया है।

٢٨٦٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ فَرَسٌ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا لِأَبِي طَلْحَةَ يُقَالُ لَهُ مَذْدُوبٌ، فَرَكِبَهُ وَقَالَ: «مَا رَأَيْنَا مِنْ فَرَسٍ، وَإِنْ وَجَدْنَا لَبْخُرًا».

इस हदीस की मुताबक़त बाब के तर्जुमे से मुश्किल है क्योंकि फ़रस तो अरबी जुबान में नर और मादा दोनों को कहते हैं। कुछ ने कहा कि इन्ना वजदनाहू में जो ज़मीर मज़कूर है उससे हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि वो नर घोड़ा था। अब बाब का ये मतलब कि शरीर जानवर पर सवार होना इससे निकाला कि नर अक़बर मादयान की बनिस्बत ज़्यादा तेज़ और शरीर होते हैं, अगरचे कभी मादा, नर से भी ज़्यादा शरीर और सख़्त होती है। (वहीदी)

### बाब 51 : (ग़नीमत के माल से) घोड़े का हिस्सा क्या मिलेगा?

2863. हमसे इब्नेद बिन इस्माईल ने बयान किया अबू उसामा से, उन्होंने इब्नेदुल्लाह इमरी से, उन्होंने नाफ़ेअ से और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने (माले ग़नीमत से) घोड़े के दो हिस्से लगाए थे और उसके मालिक का एक हिस्सा। (दीगर मक़ाम : 4228)

इमाम मालिक (रह.) ने फ़र्माया कि अरबी और तुर्की घोड़े सब बराबर हैं क्योंकि अल्लाह ने फ़र्माया कि और घोड़ों और खच्चरों और गधों को सवारी के लिये बनाया और हर सवार को एक ही घोड़े का हिस्सा दिया जाएगा। (गो उसके पास कई घोड़े हों)

### ٥١- بَابُ سَهَامِ الْفَرَسِ

٢٨٦٣- حَدَّثَنَا غَيْثُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أَسَامَةَ عَنْ غَيْثِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عَسْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ: «رَأَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ جُفْلًا لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ وَلِصَحَابِهِ سَهْمًا».

[طوله ب: ٤٢٢٨].

وَقَالَ مَالِكٌ: يُسَهَّمُ لِلْخَيْلِ وَالْبَرَادِيزِ مِنْهَا لِقَوْلِهِ تَعَالَى: «وَالْخَيْلِ وَالْبِغَالِ وَالْجُمُزِ لَتَرْكَبُوهُمْ» [النحل: ٨] وَلَا يُسَهَّمُ لِأَكْثَرِ مِنْ فَرَسٍ.

**तशरीह:** तो अल्लाह तआला ने अरबी घोड़े की तखसीस नहीं की। अरबी और तुर्की सब घोड़ों को बराबर हिस्सा मिलेगा या'नी सवार को तीन हिस्से मिलेंगे, पैदल को एक हिस्सा। अक़बर इमामों और अहले हदीस का यही क़ौल है।

### बाब 52 : अगर कोई लड़ाई में दूसरे के जानवर को खींचकर चलाए

2864. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सहल बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि एक शख्स ने बराअ बिन आजिब (रज़ि.) से पूछा क्या हुनैन की

### ٥٢- بَابُ مَنْ قَادَ ذَاتَهُ غَيْرِهِ فِي الْحَرْبِ

٢٨٦٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ يُونُسَ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ: «قَالَ: رَجُلٌ لِلْبُرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ:

लड़ाई में आप लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) को छोड़कर चले गए थे? बरा (रज़ि.) ने कहा हौं, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रार नहीं हुए थे। हवाज़िन के लोग (जिनसे उस लड़ाई में मुक़ाबला था) बड़े तीरंदाज़ थे, जब हमारा उनका सामना हुआ तो शुरू में हमने हमला करके उन्हें शिकस्त दे दी, फिर मुसलमान माले ग़नीमत पर टूट पड़े और दुश्मन ने तीरों की हम पर बारिश कर दी फिर भी रसूले करीम (ﷺ) अपनी जगह से नहीं हटे। मैंने देखा कि आप (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे, अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) उसकी लगाम थामे हुए थे और आप (ﷺ) ये शेर फ़र्मा रहे थे कि मैं नबी हूँ इसमें झूठ का कोई दख़ल नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। (दीगर मक़ाम : 2874, 2930, 3042, 4315, 4316, 4317)

أَفْرَزْتُمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ قَالَ: لَكِنُّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَفِرْ، إِنِّ هَوَازِينَ كَانُوا قَوْمًا رَمَاءَ. وَإِنَّا لَمَّا لَقَيْنَاهُمْ خَمَلْنَا عَلَيْهِمْ فَأَنْهَزْنَاهُمْ، فَأَقْبَلَ الْمُسْلِمُونَ عَلَى الْعَنَانِمْ، فَاسْتَقْبَلُونَا بِالسَّهَامِ، فَأَمَّا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَلَمْ يَفِرْ، فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ وَإِنَّهُ لَعَلَى بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ، وَإِنِّي أَنَا سَفِيَانٌ أَخَذَ بِلِحَامِهَا وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)).

[انظره في: ٢٨٧٤، ٢٩٣٠، ٣٠٤٢]

[٤٣١٧، ٤٣١٦، ٤٣١٥]

या'नी मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ और अल्लाह ने जो फ़तह व नुसरत का वा'दा किया था वो बरहक़ है, इसलिये मैं भाग जाऊँ? ये नहीं हो सकता। मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने इसका तर्जुमा शेर में यूँ किया है :-

हूँ मैं पैग़म्बर बिला शक़ व ख़तर और अब्दुल मुत्तलिब का हूँ पिसर

मज़ीद तफ़्सील जंगे हुनैन के हालात में आएगी। इंशाअल्लाह तआला!

### बाब 53 : जानवर पर रकाब या गर्ज लगाना

2865. हमसे इब्नेद बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे इब्नेदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब अपना पाये मुबारक गर्ज (रकाब) में डाला और कैंटनी आप (ﷺ) को लेकर सीधी उठ गई तो आप (ﷺ) ने मस्जिदे जुल हुलैफ़ के पास लम्बैक कहा (एहराम बाँधा)। (राजेअ : 166)

٥٣- بَابُ الرُّكَّابِ، وَالْعَرَزِ لِلدَّائِمَةِ  
٢٨٦٥- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ عُمَيْدٍ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ إِذَا أَدْخَلَ رَجُلَهُ فِي الْعَرَزِ وَاسْتَوَتْ بِهِ نَاقَتُهُ قَائِمَةً أَهْلٌ مِنْ عِنْدِ مَنْسَجِدِ ذِي الْخُلَيْفَةِ)). [راجع: ١٦٦]

गर्ज भी रकाब ही को कहते हैं, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि रकाब अगर लोहे का हो या लकड़ी का तो उसे रकाब कहते हैं लेकिन अगर चमड़े का हो तो उसे गर्ज कहते हैं। कुछ ने कहा रकाब घोड़े में होती है और गर्ज ऊँट में।

### बाब 54 : घोड़े की नंगी पीठ पर सवार होना

2866. हमसे अमर बिन औन ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे श़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) घोड़े की नंगी पीठ पर

٥٤- بَابُ رُكُوبِ الْفَرَسِ الْعُرْيِ  
٢٨٦٦- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

जिस पर ज़ीन नहीं थी, सवार होकर महाबा से आगे निकल गए थे।  
और हज़ूर (ﷺ) की गर्दन मुबारक में तलवार लटक रही थी।

(राजेअ: 2627)

((اسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى فَوْسٍ غَوِيٍّ مَا عَلَيْهِ سَرَجٌ فِي غَنِيٍّ سَيْفٍ))

[راجع: ٢٦٢٧]

सुब्हानल्लाह! ये हुस्न व जमाल और ये शुजाअत और बहादुरी नंगी पीठ घोड़े पर सवारी करना बड़े ही शहसवारों का काम है और ये हकीकत है कि इस फ़ुन में औहज़रत (ﷺ) यकताए रोज़गार थे। बारहा ऐसे मौक़े आए कि आप (ﷺ) ने बेहतरीन शहसवारी का घुबूत पेश किया। स़द अफ़सोस कि आजकल अवाम तो दरकिनार ख़वास या'नी इलमा व मशाइख़ ने ऐसी अहम सुन्नतों को बिलकुल छोड़ दिया है। ख़ासकर इलम-ए-किराम में बहुत ही कम ऐसे मिलेंगे जो ऐसे फ़ुनूने मस्नूना से उल्फ़त रखते हों हालाँकि ये फ़ुनून कुआन व सुन्नत की रोशनी में मुसलमानों के अवाम व ख़वास में बहुत ज़्यादा तरवीज के काबिल हैं। आजकल निशानेबाज़ी जो बन्दूक से सिखाई जाती है वो भी इसी में दाख़िल है और फ़ने हर्ब के बारे में जो नई-ईजादात हैं, उन सबको उस पर क़यास किया जा सकता है।

### बाब 55 : सुस्त रफ़्तार घोड़े पर सवार होना

2867. हमसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा (रात में) अहले मदीना को दुश्मन का ख़तरा हुआ तो नबी करीम (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े (मन्दूब) पर सवार हुए, घोड़ा सुस्त रफ़्तार था या (रावी ने यूँ कहा कि) उसकी रफ़्तार में सुस्ती थी, फिर जब आप (ﷺ) वापस हुए तो फ़र्माया कि इसकी रफ़्तार में सुस्ती थी, फिर जब आप (ﷺ) वापस हुए तो फ़र्माया कि हमने तो तुम्हारे इस घोड़े को दरिया पाया (ये बड़ा ही तेज़ रफ़्तार है) चुनाँचे उसके बाद कोई घोड़ा उससे आगे नहीं निकल सकता था। (राजेअ: 2627)

### ٥٥- بَابُ الْفَرَسِ الْقَطُوفِ

٢٨٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ حَمَادٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((إِنْ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَرَّغُوا مَرَّةً فَرَسَ النَّبِيِّ ﷺ فَرَسًا لِأَبِي طَلْحَةَ كَانَ يَقْطُفُ - أَوْ كَانَ فِيهِ قَطَافٌ - فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ: ((وَجَدْنَا فَرَسَكُمْ هَذَا يَحْرُا)), فَكَانَ يَغْدُ ذَلِكَ لَا يُجَارَى)). [راجع: ٢٦٢٧]

ये घोड़ा बेहद सुस्त रफ़्तार था लेकिन औहज़रत (ﷺ) की सवारी की बरकत से ऐसा तेज़ और चालाक हो गया कि कोई घोड़ा उसके बराबर नहीं चल सकता था। आप उस सुस्त रफ़्तार घोड़े पर सवार हुए, इसी से बाब का मतलब निकला। औहज़रत (ﷺ) ने ये इक़दाम फ़र्माकर आइन्दा आने वाले खुलफ़ा-ए-इस्लाम के लिये एक मिशाल कायम फ़र्माई ताकि वो सुस्तुल व ज़ूद बनकर न रह जाएँ बल्कि हर मौक़ा पर बहादुरी व जुअत व मुकाबला में अवाम से आगे बढ़ने की कोशिश करते रहें।

### बाब 56 : घुड़दौड़ का बयान

2868. हमसे क़बीज़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ग़ौरी ने बयान किया, उनसे अबूदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने तैयार किये हुए घोड़ों की दौड़ मुक़ामे हफ़्याअ से प्रिनियतुल विदाअ तक कराई थी और जो घोड़े तैयार नहीं किये गये थे उनकी दौड़

### ٥٦- بَابُ السَّبْقِ بَيْنَ الْخَيْلِ

٢٨٦٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَجْرَى النَّبِيُّ ﷺ مَا ضَمَّرَ مِنَ الْخَيْلِ مِنَ الْحَقَقَاءِ إِلَى ثِيَةِ الْوَدَاعِ، وَأَجْرَى مَا لَمْ يُضَمَّرْ مِنَ النَّيَةِ

प्रनिय्यतुल विदाअ से मस्जिदे जुरैक तक कराई थी। इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि घुड़दौड़ में शरीक होने वालों में मैं भी था। अब्दुल्लाह ने बयान किया कि हमसे सुफयान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफयान प्रौरी ने बयान किया कि हफ़्याअ से प्रनिय्यतुल विदाअ तक पाँच मील का फ़ासला है और प्रनिय्यतुल विदाअ से मस्जिदे जुरैक सिर्फ़ एक मील की दूरी पर है। (राजेअ: 420)

हफ़्याअ और प्रनिय्यतुल विदाअ दोनों मुक़ामों के नाम हैं, मदीना से बाहर तैयार किये गये या'नी उनका इज़्मार किया गया। इज़्मार उसको कहते हैं कि पहले घोड़े को ख़ूब खिला पिलाकर मोटा किया जाए फिर उसका दाना चारा कम कर दिया जाए और कोठरी में झोल डालकर बन्द रहने दें ताकि पसीना ख़ूब करे और उसका गोश्त कम हो जाए और शर्त में दौड़ने के लायक हो जाए।

घुड़दौड़ के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़मति हैं, व क़द अज्म अलज़लमाउ अला जवाज़िल मुसाबक़ति बिगैर इवज़िन लाकिन कस्सरहा मालिक वशशाफ़िइ अलल्खुफ़िफ़ वल्हाफ़िरि वन्नस्लि व खस्सहू वअज़ुलउलमाइ बिल्खैलि व अजाज़हू अता फी कुल्लि शैइन. (फत्हुल बारी) या'नी इस्लाम-ए-इस्लाम ने दौड़ कराने के जवाज़ पर इतिफ़ाक़ किया है जिसमें बतौर शर्त कोई मुआवज़ा मुकरर न किया गया हो लेकिन इमाम शाफ़िई और इमाम मालिक ने इस दौड़ को कूँट और घोड़े और तीरंदाज़ी के साथ ख़ास किया है और कुछ उलमा ने उसे सिर्फ़ घोड़े के साथ ख़ास किया है और अता ने इस मुसाबक़त को हर चीज़ में जाइज़ रखा है। एक रिवायत में है, ला सबक़ इल्ला फी खुफ़िफ़िन औ हाफ़िरिन औ नस्लिन या'नी आगे बढ़ने की शर्त तीन चीज़ों में दुरुस्त है, कूँट और घोड़े और तीरंदाज़ी में और एक रिवायत में यूँ है, मन अदख़ल फर्सन बैन फर्सैनि फइन कान यूमिनु अय्यस्बक़ फला खैर फीहि लुगातुल हदीष. जिस शख्स ने एक घोड़ा शर्त के दो घोड़ों में शरीक किया अगर उसको ये यक़ीन है कि ये घोड़ा उन दोनों से आगे बढ़ जाएगा तब तो बेहतर नहीं अगर ये यक़ीन नहीं तो शर्त जाइज़ है। इस तीसरे शख्स को मुहल्लिल कहते हैं या'नी शर्त को हलाल कर देने वाला मज़ीद तफ़्सील के लिये देखो। (लुगातुल हदीष हर्फ़ सीन-साद: 30)

## बाब 57 : घुड़दौड़ के लिये घोड़ों को तैयार करना

## ۵۷- بَابُ إِضْمَارِ الْخَيْلِ لِلْسَّبْقِ

कुछ ने बाब का तर्जुमा का ये मतलब रखा है कि शर्त के लिये इज़्मार का ज़रूरी न होना। इस सूत्र में बाब की हदीष बाब से मुताबक़त हो जाएगी।

2969. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उन घोड़ों की दौड़ कराई थी जिन्हें तैयार नहीं किया गया था और दौड़ की हद प्रनिय्यतुल विदाअ से मस्जिदे बनी जुरैक तक रखी गई थी और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने भी इसमें शिक़त की थी। अबू अब्दुल्लाह ने कहा कि अमदा (हदीष में) हद और इतिहा के मा'नी में है (कुआन मज़ीद में है) (फ़त्ताल अलैहिमुल अमदु) जो इसी मा'नी में है। (राजेअ: 420)

۲۸۶۹- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سَابَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تُضْمَرْ، وَكَانَ أَمْنُهَا مِنَ النَّيِّبَةِ إِلَى مَسْجِدِ نَبِيِّ زُرَيْقٍ، وَأَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ سَابِقَ بَهَا)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ اللَّهُ أَمَدًا غَايَةً (فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ) الْحَدِيد: ۱۹ [راجع: ۴۲۰]

इस हदीस की मुताबकत बाब का तर्जुमा से मुश्किल है। बाब में तो इज्मार शुदा घोड़ों की शर्त मज्कूर है और हदीस में उन घोड़ों का जिक्र है जिनका इज्मार नहीं हुआ। इसका जवाब ये है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की आदत है कि हदीस का एक लफ्ज़ लाकर उसके दूसरे लफ्ज़ की तरफ इशारा कर देते हैं, इस हदीस में दूसरा लफ्ज़ है कि जिन घोड़ों का इज्मार हुआ था आपने उनकी शर्त कराई, हफ्थाअ से प्रनिय्यतुल विदाअ तक जैसे ऊपर गुज़र चुका है।

### बाब 58 : तैयार किये हुए घोड़ों की दौड़ की हद कहाँ तक हो

### ٥٨ - بَابُ غَايَةِ السَّيِّقِ لِلْخَيْلِ الْمُضْمَرَةِ

2870. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे मूसा बिन इब्रआ ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन घोड़ों की दौड़ कराई जिन्हें तैयार किया गया था। ये दौड़ मुक़ामे हफ्थाअ से शुरू कराई और प्रनिय्यतुल विदाअ उसकी आखिरी हद थी (अबू इस्हाक़ रावी ने बयान किया कि) मैंने अबू मूसा से पूछा उसका फ़ासला कितना था? तो उन्होंने बताया कि छः या सात मील और आँहज़रत (ﷺ) ने उन घोड़ों की भी दौड़ कराई जिन्हें तैयार नहीं किया गया था। ये दौड़ मुक़ामे हफ्थाअ से शुरू कराई और प्रनिय्यतुल विदाअ उसकी आखिरी हद थी (अबू इस्हाक़ रावी ने बयान किया कि) मैंने अबू मूसा से पूछा उसका फ़ासला कितना था? तो उन्होंने बताया कि छः या सात मील और आँहज़रत (ﷺ) ने उन घोड़ों की भी दौड़ कराई जिन्हें तैयार नहीं किया गया था। ऐसे घोड़ों की दौड़ प्रनिय्यतुल विदाअ से शुरू हुई और हद मस्जिदे बनी जुरैक़ थी। मैंने पूछा उसमें कितना फ़ासला था? उन्होंने कहा कि तक्रीबन एक मील। इब्ने इमर (रज़ि.) भी दौड़ में शिक़त करने वालों में थे। (राजेअ : 420)

٢٨٧٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سَاقَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَدَا أَصْحَابِهِ، فَأَرْسَلَهَا مِنَ الْخَفَاءِ، وَكَانَ أَمْدًا ثِيَّةَ الْوَدَاعِ. فَقُلْتُ لِمُوسَى: لَكُمْ كَانَ بَيْنَ ذَلِكَ؟ قَالَ: سِتَّةَ أَمْيَالٍ أَوْ سَبْعَةً. وَسَاقَى بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تَضْمَرْ، فَأَرْسَلَهَا مِنَ ثِيَّةِ الْوَدَاعِ، وَكَانَ أَمْدًا مَسْجِدَ نَبِيِّ زُرَيْقٍ. قُلْتُ لَكُمْ بَيْنَ ذَلِكَ؟ قَالَ: مِيلٌ أَوْ نَحْوُهُ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ مِمَّنْ سَاقَى فِيهَا)).  
[راجع: ٤٢٠]

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद बाब ये है कि इज्मार शुदा घोड़ों की दौड़ की हद छः से सात मील है जैसा कि मुक़ामे हफ्थाअ से प्रनिय्यतुल विदाअ का फ़ासला है और ग़ैर इज्मार शुदा घोड़ों की हद तक्रीबन एक मील जो प्रनिय्यतुल विदाअ और मस्जिदे बनी जुरैक़ की हद थी। एक मुतमदिन हुकूमत के लिये इस मशीनी दौर में भी घोड़े की बड़ी अहमियत है। अरबी नस्ल के घोड़े जो फ़ौकियत रखते हैं वो मुहताज तशरीह नहीं। ज़मान-ए-रिसालत में घोड़ों को सधाने के लिये ये मुक़ाबल की दौड़ हुआ करती थी मगर आजकल रेस की दौड़ जो आज आम तौर पर शहरों में कराई जाती है और घोड़ों पर बड़ी-बड़ी रक़म बतौर जूएबाज़ी के लगाई जाती हैं ये खुला हुआ ज़ौ है जो शरअन क़रून हुराम है और किसी पर मख़फ़ी नहीं। स़द अफ़सोस कि आम मुसलमानों ने आजकल हलाल व हुराम की तमीज़ ख़त्म कर दी है और कितने ही मुसलमान उनमें हिस्सा लेते हैं और तबाह होते हैं। मुख़्तसर ये कि आजकल रेस की घुड़दौड़ में शिक़त करना बिलकुल हुराम है, अल्लाह हर मुसलमान को इस तबाही से बचाए आमीन।

### बाब 59 : नबी करीम (ﷺ) की ऊँटनी का बयान

हमसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसामा (रज़ि.) को क़स्वा (नामी ऊँटनी) पर अपने पीछे बिठाया

### ٥٩ - بَابُ نَاقَةِ النَّبِيِّ ﷺ

قَالَ ابْنُ عُمَرَ أَرْدَفَ النَّبِيُّ ﷺ أَسَامَةَ عَلَى الْقَصْوَاءِ. وَقَالَ الْمُسَوِّرُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ

था। मिस्वर बिन मखरमा ने कहा नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़स्वा ने सरकशी नहीं की है।

مَا خَلَّتِ الْقَصْرَاءُ)).

ये सुलह हुदैबिया के मौके पर जबकि प्रिनियतुल विदाअ पर आप पहुँचे थे और आपकी ये ऊँटनी क़स्वा नामी बैठ गई थी, आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि इस ऊँटनी की बैठने की आदत नहीं है लेकिन आज इसे उस अल्लाह ने बिठा दिया है जिसने किसी ज़माने में हाथी वालों को मक्का पर चढ़ाई करने से हाथी को बिठा दिया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़सम अल्लाह की कि मक्का वाले हरम की ता'ज़ीम के बारे में जो भी शर्त पेश करेंगे तो मैं उसे मंज़ूर कर लूँगा। फिर आपने उस ऊँटनी को डांटा और वो उठकर चलने लगी।

ये हदीस पारा नम्बर 11 के शुरू में बाबुशशुरूत फ़िल् जिहाद में गुज़र चुकी है, हिजरत नबवी के वक़्त भी यही ऊँटनी आप (ﷺ) की सवारी में थी, जोहरी ने कहा कि क़स्वा वो ऊँटनी जिसके कान कटे हुए हों और अज़्बाअ जिसके कान चीर दिये गये हों। आँहज़रत (ﷺ) की ऊँटनी मे ये दोनों ऐब नहीं थे। सिर्फ़ इन लक़बों से उसको मुलक़ब कर दिया गया था। (किरमानी)

2871. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ इब्राहीम ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ऊँटनी का नाम अज़्बाअ था। (दीगर मक़ाम : 2872)

٢٨٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ خَمِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: «كَانَتْ نَاقَةُ النَّبِيِّ ﷺ يُقَالُ لَهَا

الْعُضْبَاءُ)). (طرفه ي: ٢٨٧٢).

मुअरिख़ीने इस्लाम इस बारे में मुतफ़िह नहीं हैं कि क़स्वाअ, जदआ और अज़्बाअ ये आँहज़रत (ﷺ) की तीन ऊँटनियों के नाम थे या ऊँटनी सिर्फ़ एक ही थी और नाम उसके तीन थे। मिस्वर बिन मखरमा वाली तअलीक़ को अबू दाऊद ने वस्ल किया है। कहते हैं क़स्वा और अज़्बाअ एक ही ऊँटनी के तीन नाम थे और उसी का नाम जदआ भी था और शहबा भी। वल्ल उतरने के वक़्त आपको यही ऊँटनी सम्भालती और कोई ऊँटनी न उठा सकती थी, उसके सिवा आप (ﷺ) की और भी कई ऊँटनियाँ थीं।

2872. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ु हैर बिन मुआविया ने बयान किया, उनसे हुसैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की एक ऊँटनी थी जिसका नाम अज़्बा था। कोई ऊँटनी उससे आगे नहीं बढ़ती थी या हुमैद ने यूँ कहा वो पीछे रह जाने के क़रीबन होती फिर एक देहाती एक नौजवान और क़वी (मज़बूत) ऊँट पर सवार होकर आया और आँहज़रत (ﷺ) की ऊँटनी से उनका ऊँट आगे निकल गया। मुसलमानों पर ये बड़ा शाक़ गुज़रा लेकिन जब नबी करीम (ﷺ) को उसका इल्म हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला पर हक़ है कि दुनिया में जो चीज़ भी बुलन्द होती है (कभी कभी) उसे वो गिराता भी है। मूसा ने हम्माद से इसकी रिवायत तूल के साथ की है, हम्माद ने श़ाबित से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ: 2871)

٢٨٧٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ خَمِيدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ نَاقَةٌ تُسَمَّى الْعُضْبَاءَ لَا تُسَبِّقُ - قَالَ خَمِيدٌ: أَوْ لَا تَكَادُ تُسَبِّقُ - فَجَاءَ أَغْرَابِيٌّ عَلَى لُغُودٍ فَسَبَّهَا، فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ حَتَّى عَرَفُوهُ فَقَالَ: حَقٌّ عَلَى اللَّهِ أَنْ لَا يَرْفَعَ شَيْءٌ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا وَضَعَهُ)).

طَوَّلَهُ مُوسَى عَنْ حَمَّادٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٨٧١]

इस हदीस से बहुत से मसाइल पर रोशनी पड़ती है। ऊँट, घोड़े का नाम रखना, उनमें दौड़ कराना और बतौर कायदा कुल्लिया ये कि दुनिया में बढ़ने वाली और मगरूर होने वाली त्राकतों को अल्लाह ज़रूर एक न एक दिन नीचा दिखाता है। इस हदीस से ये सारी बातें प्रामित होती हैं।

## बाब 60 : गधे पर बैठकर जंग करना

## ٦٠- بَابُ الْغَزْوِ عَلَى الْحَمِيرِ

कुछ नुस्खों में ये बाब मज़कूर नहीं। अल्बत्ता शैख फ़व्वाद अब्दुल बाक़ी वाले नुस्खे में ये बाब है।

## बाब 61 : नबी (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर का बयान

## ٦١- بَغْلَةُ النَّبِيِّ ﷺ الْبَيْضَاءُ

इसका ज़िक्र अनस (रज़ि.) ने अपनी हदीस में किया और अबू हुमैद साएदी ने कहा कि ऐला के बादशाह ने नबी करीम (ﷺ) को एक सफ़ेद ख़च्चर तोहफ़ा में भिजवाया था।

قَالَ أَنَسُ قَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: أَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ النَّبِيِّ ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ.

2873. हमसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने अम्र बिन हारिष (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (वफ़ात के बाद) सिवा अपने सफ़ेद ख़च्चर के और अपने हथियार और उस ज़मीन के जो आप (ﷺ) ने ख़ैरात कर दी थी और कोई चीज़ नहीं छोड़ी थी। (राजेअ : 2739)

٢٨٧٣- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ عُمَرُو بْنَ الْحَارِثِ قَالَ: ((مَا تَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَّا بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ وَسَلَاحَهُ، وَأَرْضًا تَرَكَهَا صَدَقَةً)).

[راجع: ٢٧٣٩]

**तशरीह :** यही ख़च्चर है जो दलदल के नाम से मशहूर हुआ। आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद भी ये ख़च्चर ज़िन्दा रहा था। ज़मीन क्या थी फ़िदक का आधा हिस्सा और वादी-ए-कुरा का तिहाई हिस्सा और ख़ैबर की खुम्स में से आपका हिस्सा और बनी नज़ीर में से जो आप (ﷺ) ने चुन ली थी। उन ही चीज़ों को हज़रत फ़ातिमा जुहरा ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से उनकी खिलाफ़त के ज़माने में मांगा। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने ये हदीस सुनाई कि आँहज़रत (ﷺ) फ़र्मा चुके हैं हम पैग़म्बरों का कोई वारिष नहीं होता जो हम छोड़ जाएँ हमारे बाद वो ख़ैरात है। आप (ﷺ) का हकीक़ी वरज़ा उलूम किताब व सुन्नत का लाफ़ानो ख़ज़ाना है जिसके हासिल करने की आम इजाज़त ही नहीं बल्कि ताकीद शदीद है। इसीलिये उलमा-ए-इस्लाम को मजाज़ी तौर पर आप (ﷺ) के खुलफ़ा से मौसूम किया गया है जिनके लिये आप (ﷺ) ने दुआएँ भी पेश की हैं। अल्लाह पाक हम सब इस मुकद्दस किताब बुखारी शरीफ़ पढ़ने पढ़ाने वालों का शुमार उसी जमाअत में कर ले (आमीन)

2874. हमसे मुहम्मद बिन मुन्नना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान घौरी ने बयान किया मुझसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया बरा बिन आजिब (रज़ि.) से कि उनसे एक शख़्स ने पूछा, ऐ अबू अम्मार! क्या आप लोगों ने (मुसलमानों के लश्कर ने) हुनैन की लड़ाई में पीठ फेर ली थी? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं अल्लाह गवाह है नबी करीम (ﷺ) ने पीठ नहीं फेरी थी अल्बत्ता बाज़ लोग (मैदान से) भाग पड़े थे (और वो लूट में लग गए थे) क़बीला हवाज़िन ने उन पर तीर बरसाने शुरू कर दिये लेकिन नबी करीम (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर

٢٨٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَمْ رَجُلٌ: يَا أَبَا عَمْرَةَ وَلَيْتُمْ يَوْمَ حُنَيْنٍ، قَالَ: لَا وَاللَّهِ مَا وَلَّى النَّبِيُّ ﷺ، وَلَكِنْ وَلَّى سُرْعَانَ النَّاسِ. فَلَقِيَهُمْ رَاوِدٌ بِالنَّبْلِ وَالنَّبِيُّ ﷺ عَلَى بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ، وَأَبُو

पर सवार थे और अबू सुफ़ियान बिन हारिष उसकी लगाम थामे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि मैं नबी हूँ जिसमें झूठ का कोई दखल नहीं। मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। (राजेअ: 2864)

سُفْيَانُ بْنُ الْحَارِثِ أَخَذَ بِلِجَامِهَا وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)). [راجع: ٢٨٦٤]

इसमें आँहज़रत (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर का ज़िक्र है। इसीलिये हज़रत मुज्ताहिदे मुत्लक़ इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष को यहाँ लाए। इससे ये भी मा'लूम हुआ कि जिहाद में मुनासिब तौर पर आबाअ व अज्दाद (पूर्वजों) की बहादुरी का ज़िक्र किया जा सकता है। जंगे हुनैन माहे शव्वाल 8 हेजरी में क़बाइले हवाज़िन व फ़कीफ़ के ज़ारिहाना हमलों की मुदाफ़िअत के लिये लड़ी गई थी। दुश्मनों की ता'दाद चार हज़ार के करीब थी और इस्लामी लश्कर बारह हज़ार पर मुश्तमिल था और इसी क़व्रते ता'दाद के घमण्ड में लश्करे इस्लाम एहतियात से गाफ़िल हो गया था जिसके नतीजा पीछे हटने की सूरत में भुगतना पड़ा, बाद में जल्दी ही मुसलमान सम्भल गए और आख़िर मुसलमानों की ही फ़तह हुई। मज़ीद तफ़सील अपने मुक़ाम पर आएगी।

## बाब 62 : औरतों का जिहाद क्या है?

2875. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान श़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें मुआविया इब्ने इस्हाक़ ने, उन्हें आइशा बिनते त़लहा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से जिहाद की इजाज़त चाही तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारा जिहाद हज्ज है।

और अब्दुल्लाह बिन वलीद ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान श़ौरी ने बयान किया और उनसे मुआविया ने यही हदीष नक़ल की। (राजेअ: 1520)

٦٢- بَابُ جِهَادِ النِّسَاءِ  
٢٨٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ ((جِهَادُكُنَّ الْحُجُّ)).  
وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بِهَذَا. [راجع: ١٥٢٠]

ये इमामे बक़्त की बज़ीरत (समझ-बूझ) पर निर्भर करता है कि वो जंगी क़वाईफ़ (युद्ध की परिस्थितियों) के आधार पर औरतों की शिर्कत ज़रूरी समझता है या नहीं? अगर कोई मुसलमान औरत जिहाद में न शरीक हो सके बल्कि वो हज्ज ही कर सकती है तो उस सफ़र में उसके लिये भी उसको जिहाद ही का प्रवाब मिलेगा।

2876. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान श़ौरी ने बयान किया और उनसे मुआविया ने यही हदीष और अबू सुफ़यान ने हबीब बिन अबी अम्र से यही रिवायत की जो आइशा बिनते त़लहा से उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के वास्ते से है (उसमें है कि) नबी करीम (ﷺ) से आप (ﷺ) की अज़्वाजे मुत्तहहरात ने जिहाद की इजाज़त मांगी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज्ज बहुत ही उम्दह जिहाद है। (राजेअ: 1520)

٢٨٧٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بِهَذَا. وَعَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ سَأَلَتْ نِسَاءَهُ عَنِ الْجِهَادِ فَقَالَ: ((نَعَمْ الْجِهَادُ الْحُجُّ)). [راجع: ١٥٢٠]

सफ़रे हज्ज औरतों के लिये जिहाद से कम नहीं है, मगर खुद जिहाद में भी औरतों की शिर्कत प्राबित है बल्कि बहरी (समन्दरी) जिहाद के लिये एक इस्लामी ख़ातून के लिये आँहज़रत (ﷺ) की पेशीनगोई मौजूद है जिसके पेशेनज़र मुज्ताहिदे मुत्लक़ इमाम बुखारी (रह.) ने आगे औरतों का बहरी जिहाद में शरीक होने का बाब मुनअक़िद किया।



बाब 63 : दरिया में सवार होकर औरत का जिहाद करना

2877, 78. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे मुआविया बिन अमर ने, हमसे अबू इस्हाक ने उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अंसारी ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) उम्मे हुराम बिनते मिलहान के यहाँ तशरीफ़ ले गए और उनके यहाँ तकिया लगाकर सो गए फिर आप (ﷺ) (उठे तो) मुस्कुरा रहे थे। उम्मे हुराम ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) क्यों हंस रहे थे? आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) सबज़ समुन्दर पर सवार हो रहे हैं उनकी मित्राल (दुनिया या आखिरत में) तख़्त पर बैठे हुए बादशाहों की सी है। उन्होंने अज़्र किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे भी उनमें शामिल कर दे फिर दोबारा आप (ﷺ) लेटे और (उठे तो) मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने इस बार भी आप (ﷺ) से वही सवाल किया और आप (ﷺ) ने भी पहली ही वजह बताई। उन्होंने फिर अज़्र किया आप (ﷺ) दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला मुझे भी उनमें से कर दे, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सबसे पहले लश्कर में शरीक होगी और ये कि बाद वालों में तुम्हारी शिक़त नहीं है। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आपने (उम्मे हुराम ने) इब्बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ निकाह कर लिया और बिनते करज़ा मुआविया (रज़ि.) की बीवी के साथ उन्होंने दरिया का सफ़र किया। फिर जब वापस हुई और अपनी सवारी पर चढ़ीं तो उसने उनकी गर्दन तोड़ डाली। वो उस सवारी से गिर गई और (उसी में) उनकी वफ़ात हुई।

**तशरीह :** ये निकाह का मामला दूसरी रिवायत के खिलाफ़ पड़ता है, जिसमें ये है कि उसी वक़्त इब्बादा बिन स़ामित के निकाह में थीं। शायद उन्होंने तलाक़ दे दी होगी, बाद में उनसे निकाह प्रानी किया होगा। ये उस जंग का ज़िक्र है जिसमें हज़रत उम्रान (रज़ि.) के ज़माने में रजब 28 हिजरी में सबसे पहला समुन्दरी बेड़ा हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने अमीरुल मोमिनीन की इज़ाज़त से तैयार किया और क़िन्नस पर चढ़ाई की। ये मुसलमानों की सबसे पहली बहरी जंग थी जिसमें उम्मे हुराम (रज़ि.) जो कि नबी अकरम (ﷺ) की अज़ीज़ा थीं, शरीक हुई और शहादत भी पाई। हज़रत मुआविया (रज़ि.) की बीवी का नाम फ़ाख़ता था और वो भी आपके साथ उसमें शरीक थीं।

٢٣- بَابُ غَزْوِ الْمَرْأَةِ فِي الْبَحْرِ  
٢٨٧٧. ٢٨٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا معاويةُ بْنُ عَمْرِو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ ((دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى ابْنَةِ مَلْحَانَ فَاتَكَا عُنْدَهَا، ثُمَّ ضَحِكَ، فَقَالَتْ: لِمَ تَضْحِكُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّي يَتَوَكَّبُونَ الْبَحْرَ الْأَخْضَرَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، مِثْلَهُمْ مِثْلُ الْمُلُوكِ عَلَى الْأُمُورِ)). فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِذْغِ اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْنَهَا مِنْهُمْ)). ثُمَّ عَادَ فَضَحِكَ، فَقَالَتْ لَهُ مِثْلَ -أَوْ يَمْ- ذَلِكَ، فَقَالَ لَهَا مِثْلَ ذَلِكَ فَقَالَتْ إِذْغِ اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَلَنْتِ مِنَ الْآخِرِينَ)) قَالَ أَنَسٌ فَتَزَوَّجَتْ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ فَوَكَّبَتْ الْبَحْرَ مَعَ بِنْتِ قَرْظَةَ، فَلَمَّا قَالَتْ رَكِبْتُ ذَابَتْهَا، فَوَقَصَتْ بِهَا، فَسَقَطَتْ عَنْهَا فَمَاتَتْ)).

**बाब 64 : आदमी जिहाद में अपनी एक बीवी को ले जाए और एक को न ले जाए (ये दुरुस्त है)**

2879. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर नुमैरी ने, उन्होंने कहा हमसे यूनस बिन यज़ीद ऐली ने बयान किया, कहा मैंने इब्ने शिहाब जुहरी से सुना, कहा कि मैंने इर्वा बिन जुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अल्कमा बिन वक्रास और इब्नेदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से आइशा (रज़ि.) की हदीस सुनी, इन चारों ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की ये हदीस मुझसे थोड़ी थोड़ी बयान की। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ ले जाना चाहते (जिहाद के लिये) तो अपनी बीवियों में कुआँ डालते और जिसका नाम निकल आता उन्हें अपने साथ ले जाता थे। एक ग़ज़्वे के मौक़े पर आप (ﷺ) ने हमारे दरम्यान कुआँ अंदाज़ी की तो उस बार मेरा नाम आया और मैं आहुज़ूर (ﷺ) के साथ गई, ये पदों का हुक्म नाज़िल होने के बाद का वाक़िया है। (राजेज़ : 2593)

मा'लूम हुआ कि पदों का ये मतलब नहीं है कि औरत घर के बाहर न निकले जैसे कुछ जाहिलों ने समझ रखा है बल्कि शरई पदों के साथ औरत ज़रूरियात के लिये घर से बाहर भी निकल सकती है, ख़ास तौर पर जिहादों में शिकत कर सकती है जैसा कि अनेक रिवायतों में इसका ज़िक्र मौजूद है।

**बाब 65 : औरतों का जंग करना और मर्दों के साथ लड़ाई में शिकत करना**

2880. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के मौक़े पर मुसलमान नबी करीम (ﷺ) के पास से जुदा हो गये थे। उन्होंने बयान किया कि मैंने आयशा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) और उम्मे सुलैम (रज़ि.) (अनस रज़ि. की वालिदा) को देखा कि ये अपने इज़ार समेटे हुए थीं और (तेज़ चलने की वजह से) पानी के मशकीज़े छलकते हुई लिये जा रही थीं और अबू मअमर के अलावा जा'फ़र बिन मेहरान ने बयान किया कि मशकीज़े को अपनी पुश्त पर इधर से उधर जल्दी-जल्दी लिय

٦٤- بَابُ حَمْلِ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ فِي

الْفُرُوقِ دُونَ بَعْضِ نِسَائِهِ

٢٨٧٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ غُرُوقَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَمُسَيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعُغْلَقَةَ بْنَ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ جَدِّهِ غَابِثَةَ، كُلُّ حَدَّثٍ طَائِفَةٌ مِنَ الْحَدِيثِ قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ الْفُرُوقَ بَيْنَ نِسَائِهِ فَأَيُّهُنَّ يَخْرُجُ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا النَّبِيُّ ﷺ. فَأَخْرَجَ بَيْنَنَا فِي غُرُوقَ غَوَاهًا، فَخَرَجَ لِيَهَا سَهْمِي، فَخَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ)). [راجع: ٢٥٩٣]

٦٥- بَابُ غَزْوِ النِّسَاءِ وَقِتَالِهِنَّ مَعَ

الرُّجَالِ

٢٨٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيٍّ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ انْهَزَمَ النَّاسُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: وَلَقَدْ رَأَيْتُ غَابِثَةَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ وَأُمَّ سَلِيمَ وَإِهْمَا لَمُسْمَرَتَانِ أَرَى خَدَمَ سَوْقِيهِمَا تَنْقَرَانِ الْقِرْبَ - وَقَالَ غَيْرُهُ: تَنْقَلَانِ الْقِرْبَ - عَلَى مُرْبِهِمَا ثُمَّ تَفَرَّغَا فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ،

फिरती थीं और क़ौम को उसमें से पानी पिलाती थीं, फिर वापस आती थीं और मशकीज़ों को भरकर ले जाती थीं और क़ौम को पानी पिलाती थीं, मैं उनके पाँव की पाज़ेबें देख रहा था। (दीगर मक़ाम : 2902, 3811, 4064)

ثُمَّ تَرْجِعَانِ فَمَلَأْنِيهَا ثُمَّ تَجِيَانِ فَتُفَرِّغَانِيهَا  
فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ))

[أطرافه (3): 2902, 3811, 4064]

**तशरीह :**

ज़िन्दा क़ौमों की औरतों में भी ज़ब्ब-ए-आज़ादी बदज़-ए-अतम मौजूद होता है जिसके सहारे वो कुछ बार मैदाने जंग में ऐसे नुमायाँ काम कर गुज़रती हैं कि उनको देखकर सारी दुनिया हैरतज़दा हो जाती है जैसा कि आजकल यहूदियों के खिलाफ़ मुजाहिदीने फ़िलिस्तीन बहुत से मुसलमानों के मुजाहिदाना कारनामों की शहस्त है। हज़रत उम्मे सुलैम मशहूर सद्दाबिया मिल्हान की बेटी हैं जो मालिक बिन नज़र के निकाह में थीं। उन ही के बतन से मशहूर सद्दाबी हज़रत अनस (रज़ि.) पैदा हुए। मालिक बिन नज़र हालते कुफ़्र ही में वफ़ात पा गए थे। बाद में उनका निकाह अबू तलहा (रज़ि.) से हुआ। उनसे बहुत से सद्दाबा ने अह्दादीष रिवायत की हैं।

### बाब 66 : जिहाद में औरतों का मर्दों के पास मशकीज़ा उठाकर ले जाना

2881. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उनसे अलबा बिन अबी मालिक ने कहा कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मदीना की ख़वातीन में कुछ चादरें तक्सीम कीं। एक नई चादर बच गई तो कुछ हज़रात ने जो आपके पास ही थे कहा या अमीरल मोमिनीन! ये चादर रसूलुल्लाह (ﷺ) की नवासी को दे दीजिए, जो आपके घर में हैं। उनकी मुराद (आपकी बीवी) उम्मे कुल्थुम बिनते अली (रज़ि.) से थी लेकिन उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि उम्मे सुलैत (रज़ि.) इसकी ज़्यादा मुस्तहिक हैं। ये उम्मे सुलैत (रज़ि.) उन अंसारी ख़वातीन में से थीं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की थी। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आप उहुद की लड़ाई के मौक़े पर हमारे लिये मशकीज़े (पानी के) उठाकर लाती थीं। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा (हदीष में) लफ़ज़ तज़फ़र का मा'नी ये है कि सीती थी। (दीगर मक़ाम : 4071)

### ٦٦- بَابُ خَمَلِ النِّسَاءِ الْقَرَبِ إِلَى النَّاسِ فِي الْقَرْوِ

٢٨٨١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ ثَعْلَبَةُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَسَمَ مَرُوطًا بَيْنَ نِسَاءِ مِنْ نِسَاءِ الْمَدِينَةِ، فَبَقِيَ مَرُوطٌ جَيْدٌ، فَقَالَ لَهُ بَعْضُ مَنْ عِنْدَهُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَعْطِ هَذَا ابْنَةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الَّتِي عِنْدَكَ - يُرِيدُونَ أُمَّ كَلْثُومَ بِنْتِ عَلِيٍّ - فَقَالَ عُمَرُ: أُمُّ سَلَيْطٍ أَحَقُّ. وَأُمُّ سَلَيْطٍ مِنْ نِسَاءِ الْأَنْصَارِ مِمَّنْ بَايَعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، قَالَ عُمَرُ: فَإِنَّهَا كَانَتْ تَرْفَرُ لَنَا الْقَرَبِ يَوْمَ أُحُدٍ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: تَرْفَرُ تَخْطُ.

[أطرافه (3): 2902, 3811, 4064]

**तशरीह :**

तज़फ़र का मा'नी सीने से करना सहीह नहीं है, सहीह तर्जुमा ये है कि उठाकर लाती थी। क़स्तलानी (रह.) ने कहा इमाम बुखारी (रह.) ने ये मा'नी अबू सालेह कातिब लैष की तक्लीद से नक़ल कर दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) का अदलो-इस्साफ़ यहाँ से मा'लूम करना चाहिये। ये चादर आप अपनी बीवी उम्मे कुल्थुम को दे देते मगर इस ख़याल से न दी कि वो उनकी बीवी थीं और ग़ैर को जिसका हक़ ज़्यादा था मुकद्दम कर दिया। इस्साफ़ का तकाज़ा भी यही है।

### बाब 67 : जिहाद में औरतें ज़ख़िमियों की मरहम पट्टी कर सकती हैं

2882. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने बयान किया, उनसे रबीअ बन्ते मुअव्वज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ (ग़ज़्वा में) शरीक होते थे, मुसलमान फ़ौजियों को पानी पिलाते थे, ज़ख़िमियों की मरहम पट्टी करते थे और जो लोग शहीद हो जाते उन्हें मदीना उठाकर लाते थे। (दीगर मक़ाम : 2883, 5679)

ख़ुलासा-ए- कलाम ये कि जिहाद के मौक़ों पर औरतें घर का टाट बनकर बैठी नहीं रहती थीं बल्कि सरफ़रोशाना ख़िदमत अंजाम देती थीं।

### बाब 68 : ज़ख़िमियों और शहीदों को औरतें लेकर जा सकती हैं

2883. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़ल ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने और उनसे रबीअ बन्ते मुअव्वज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ जिहाद में शरीक होते थे, मुजाहिद मुसलमानों को पानी पिलाते, उनकी ख़िदमत करते और ज़ख़िमियों और शुहदाओं को उठाकर मदीना ले जाते थे। (राजेअ : 2882)

इससे भी औरतों का जिहाद में शरीक होना साबित हुआ।

### बाब 69 : (मुजाहिदीन के) जिस्म से तीर का खींचकर निकालना

2884. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अबू बुर्दा (रज़ि.) ने उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू आमिर (रज़ि.) के घुटने में तीर लगा तो मैं उनके पास पहुँचा। उन्होंने फ़र्माया कि इस तीर को खींच कर निकाल लो मैंने खींच लिया तो उससे खून बहने लगा फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) को इस

### ٦٧- بَابُ مُدَاوَاةِ النِّسَاءِ الْجَرْحَى فِي الْغَزْوِ

٢٨٨٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمَفْظَلِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ عَنْ الرَّبِيعِ بْنِ مَعْقُودٍ قَالَتْ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَقَمِي، وَنُدَاوِي الْجَرْحَى، وَنَرُدُّ الْقَتْلَى إِلَى الْمَدِينَةِ)).

[اصراع في: ٢٨٨٣، ٥٦٧٩]

### ٦٨- بَابُ رَدِّ النِّسَاءِ الْجَرْحَى وَالْقَتْلَى

٢٨٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمَفْظَلِ عَنْ خَالِدِ بْنِ ذَكْوَانَ عَنْ الرَّبِيعِ بْنِ مَعْقُودٍ قَالَتْ: ((كُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَقَمِي الْقَوْمِ وَنُخْدِمُهُمْ، وَنَرُدُّ الْقَتْلَى وَالْجَرْحَى إِلَى الْمَدِينَةِ)).

[راجع: ٢٨٨٢]

### ٦٩- بَابُ نَزْعِ السَّهْمِ مِنَ الْبَدَنِ

٢٨٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْأَعْلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: رُمِيَ أَبُو غَامِرٍ فِي رُكْبَتِهِ فَأَنْتَهَيْتُ إِلَيْهِ، قَالَ: انْزِعْ هَذَا السَّهْمَ، فَنَزَعْتُهُ، فَنَزَا مِنْهُ الْمَاءُ، فَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ:

हादसे की खबर दी तो आप (ﷺ) ने (उनके लिये) दुआ फ़र्माई कि  
ऐ अल्लाह! उबैद अबू आमिर की मफ़िरत फ़र्मा। (दीगर मक़ाम :  
4323, 6383)

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَعَبْدِي أَبِي عَامِرٍ)).  
[طرفاء ي : ٤٣٢٣ : ٦٣٨٣]

आलाते जराही (ऑपरेशन के औजार) जो आजकल वजूद में आ चुके हैं, उस वक़्त न थे। इसलिये ज़ख़िमियों के जिस्मों में पेवस्ता तीर हाथों ही से निकाले जाते थे। अबू आमिर (रज़ि.) ऐसे ही मुजाहिद हैं जो तीर से घायल होकर जामे शहादत नोश फ़र्मा गए थे। नबी करीम (ﷺ) ने बतौर इज़हारे अफ़सोस उनका नाम लिया और उनके लिये दुआए ख़ैर फ़र्माई। अबू आमिर अबू मूसा अशाअरी (रज़ि.) के चचा थे। जंगे औतास में ये वाफ़िया पेश आया था।

## बाब 70 : अल्लाह के रास्ते में जिहाद में पहरा देना कैसा है?

2885. हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको यह्या बिन सईद ने ख़बर दी, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन रबीआ बिन आमिर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने आइशा (रज़ि.) से सुना, आप बयान करती थीं कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक रात) बेदारी में गुज़ारी, मदीना पहुँचने के बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, काश! मेरे अरुहाब में से कोई नेक मर्द ऐसा होता जो रातभर हमारा पहरा देता! अभी यही बातें हो रही थी कि हमने हथियार की झंकार सुनी। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया ये कौन साहब है? (आने वाले ने) कहा मैं हूँ सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.), आपका पहरा देने के लिये हाज़िर हुआ हूँ। फिर नबी करीम (ﷺ) खुश हुए, उनके लिये दुआ फ़र्माई और आप सो गए। (दीगर मक़ाम : 7231)

## ٧٠- بَابُ الْحِرَاسَةِ فِي الْغَزْوِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

٢٨٨٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَامِرٍ بْنُ رَبِيعَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ سَهْرًا، فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ قَالَ: ((لَيْتَ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِي صَالِحًا يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ))، إِذْ سَمِعْنَا صَوْتَ سَلَاحٍ، فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) فَقَالَ: أَنَا سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ جِئْتُ لِأَحْرُسَكَ. ((وَنَامَ النَّبِيُّ ﷺ)). (أُحْرَفَ فِي: ٧٢٣١)

**तशरीह:** दूसरी रिवायत में है यहाँ तक कि आप (ﷺ) के खरटिकी आवाज़ सुनी। तिमिज़ी ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से निकाला नबी अकरम (ﷺ) चौकी पहरा रखते थे, जब ये आयत उतरी, वल्लाहु यअसिमुक मिनत्रासि (अल माइदा : 67) (अल्लाह आप (ﷺ) को लोगों से महफूज़ रखेगा) तो आप (ﷺ) ने चौकी पहरा उठा दिया। हाकिम और इब्ने माजा ने मफूअन निकाला। जिहाद में एक रात चौकी पहरा देना हज़ार रातों की इबादत और हज़ार दिनों के रोज़े से ज़्यादा षवाब रखता है।

2886. हमसे यह्या बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अबूबक्र ने ख़बर दी, उन्हें अबू हुसैन ने, उन्हें अबू सालेह और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दीनार का बन्दा, दिरहम का बन्दा, चादर का बन्दा, कम्बल का बन्दा हलाक हो गया कि अगर उसे कुछ दे दिया जाए तब तो खुश हो जाता है और अगर नहीं दिया जाए तो नाराज़ हो जाता है, इस हदीष को इस्त्राईल और मुहम्मद बिन जहादह ने अबू हुसैन से मफूअ

٢٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَوْسُفَ أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرِ عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تَمَسَّ عَبْدُ الدِّينَارِ وَالْدِرْهَمِ وَالْقَطِيفَةِ وَالْخَمِيصَةِ إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطَ لَمْ يَرْضَ))، لَمْ يَرْضَهُ

नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 2887, 6435)

2887. और अमर इब्ने मरज़ूक ने हमसे बढ़ाकर बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अब्दुरहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने अबू सलहेह से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आहज़रत (ﷺ) से, आप (ﷺ) ने फ़र्माया दीनार (सोने की अशरफ़ी) का बन्दा और दिरहम (चाँदी का सिक्का) का बन्दा और कम्बल का बन्दा तबाह हो गया, अगर उसको कुछ दिया जाए तब तो वो खुश जो न दिया जाए तो गुस्सा हो जाए, ऐसा शख्स तबाह सरनगूँ हुआ। उसको कांटा लगे तो अल्लाह करे फिर न निकले। मुबारक वो बन्दा है जो अल्लाह के रास्ते में (गज्वे के मौक़े पर) अपने घोड़े की लगाम थामे हुए है, उसके सर के बाल परागन्दा हैं और उसके क़दम गदों गुबार से अटे हुए हैं, अगर उसे चौकी पहर पर लगा दिया जाए तो वो अपने उस काम में पूरी तन्दरुस्ती ही से लगा रहे और लश्कर के पीछे (देखभाल के लिये) लगा दिया जाए तो उसमें भी पूरी तन्देही और फ़र्ज़शनासी से लगा रहे (अगरचे ज़िन्दगी में गुर्बत की वजह से) उसकी कोई अहमियत भी न हो कि) अगर वो किसी से मुलाक़ात की इजाज़त चाहे तो उसे इजाज़त भी न मिले और अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो उसकी सिफ़ारिश भी कुबूल न की जाए, अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि इस्राईल और मुहम्मद बिन जहादह ने अबू हुसैन से ये रिवायत मफ़ूअन नहीं बयान की है और कहा कि कुअन मजीद में जो लफ़्ज़ तअसन आया है गोया यूँ कहना चाहिये कि फ़तअसहुमुल्लाहु (अल्लाह उन्हें गिराये, हलाक करे) तूबा फ़ूअला के वज़न पर है हर अच्छी और तय्यब चीज़ के लिये। वाव असल में या था (तय्यबा) फिर या को वाव बदल दिया गया और ये तय्यब से निकला। (राजेअ : 2886)

इस हदीष में एक ग़रीब मुख़िलस मर्दे मुजाहिद के चौकी पर पहरा देने का ज़िक्र है, यही बाब से वजहे मुताबक़त है, अल्लाह वाले बुजुर्ग ऐसे ही पोशीदा, ग़रीब व नामा'लूम ग़ैर मशहूर होते हैं जिनकी दुआएँ अल्लाह कुबूल करता है मगर ये मक़ाम हर किसी को नसीब नहीं होता है।

बाब 71 : जिहाद में ख़िदमत करने की फ़ज़ीलत का बयान

2888. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे

إِسْرَائِيلَ وَمُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ. [طرفاه 3: 2887, 6435].

2887- وَزَادَنَا عَمْرُو قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((تَمَسَّ عِنْدَ الدِّينَارِ وَعِنْدَ الدِّرْهَمِ وَعِنْدَ الْخُمُوصَةِ: إِنْ أُعْطِيَ وَصِيٍّ وَإِنْ لَمْ يُفْطَ سَخَطٌ، تَعَسَّ وَانْتَكَسَ، وَإِذَا شَيْءٌ فَلَا تَقْشُرْ طَوْبَى لِمَنْ أَخَذَ بِعِصَانِ قَرَبِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، اشْمَتَ رَأْسُهُ مُغْبِرَةً قَدَمَاهُ، إِنْ كَانَ فِي الْحِرَاسَةِ، وَإِنْ كَانَ فِي السَّاقَةِ كَانَ فِي السَّاقَةِ. إِنْ اسْتَأْذَنَ لَمْ يُؤْذَنَ لَهُ، وَإِنْ شَفَعَ لَمْ يُشَفَعْ)).

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: لَمْ يَرْفَعَهُ إِسْرَائِيلُ وَمُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ. وَقَالَ: ((تَعَسَّ)), فَكَأَنَّهُ يَقُولُ: فَاتَّعَسَهُمُ اللَّهُ. ((طَوْبَى)): فَعَلَى مِنْ كُلِّ شَيْءٍ طَيْبٍ وَهِيَ بَاءٌ خَوَّلَتْ إِلَى الْوَاوِ، وَهِيَ مِنْ يَطِيبُ. [راجع: 2887]

٧١- بَابُ فَضْلِ الْخِدْمَةِ فِي الْقُرْبَى

2888- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرُورَةَ حَدَّثَنَا

शुअबा ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन इबैद ने, उनसे प्राबित बनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं जरिर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) के साथ था तो वो मेरी खिदमत करते थे, हालाँकि इम्र में वो मुझसे बड़े थे, जरिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हर वक्त अंसार को एक ऐसा काम करते देखा (रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत) कि जब उनमें से कोई मुझे मिलता तो मैं उसकी ता'जीम व इकराम करता हूँ।

شُعْبَةُ عَنْ يُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَحِبْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ فَكَانَ يَخْدُمُنِي وَهُوَ أَكْبَرُ مِنِّي أَنَسٍ. قَالَ جَرِيرٌ: إِنِّي رَأَيْتُ الْأَنْصَارَ يَصْنَعُونَ شَيْئًا لَا أُحَدِّثُ أَحَدًا مِنْهُمْ إِلَّا أَكْرَمْتُهُ)).

**तशरीह :** वो बात ये थी कि अंसारी जनाब रसूले करीम (ﷺ) से बहुत मुहब्बत रखते और आप (ﷺ) की ता'जीम करते थे। मा'लूम हुआ जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से मुहब्बत रखे उसकी खिदमत करना ऐन सज़ादत है। बज़ाहिर इस हदीष की मुताबक़त बाब के तर्जुमे से मुश्किल है, ऐनी ने कहा मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि ये सोहबत सफ़र में हुई और सफ़रे आम है जो जिहाद के सफ़र को भी शामिल है पस बाब से मुताबक़त हो गई।

2889. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुत्तलिब बिन हन्तब के मौला अम्र बिन अबी अम्र ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ैबर (ग़ज़्वा के मौक़े पर) गया, मैं आप (ﷺ) की खिदमत किया करता था, फिर जब आप (ﷺ) वापस हुए और उहुद का पहाड़ दिखाई दिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये वो पहाड़ है जिससे हम मुहब्बत करते हैं और वो हमसे मुहब्बत करता है। उसके बाद आप (ﷺ) ने अपने हाथ से मदीना की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया ऐ अल्लाह! मैं उसके दोनों पथरीले मैदानों के दरम्यान के ख़ित्ते को हुर्मत वाला करार देता हूँ, जिस तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का को हुर्मत वाला शहर करार दिया था, ऐ अल्लाह! हमारे साअ और हमारे मुह में बरकत अता फ़र्मा। (सजेअ : 371)

٢٨٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ بْنِ خَطَّابٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ أَحَدْنَا. فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ رَاجِعًا وَبَدَأَ لَهُ أَحَدٌ قَالَ: ((هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ)). ثُمَّ أَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَحْرَمَ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا كَحَرَمِ إِبْرَاهِيمَ مَكَّةَ. اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي صَاعِبَا وَمَدَنَا)). [إِسْنَادٌ]

इससे मदीना शरीफ़ की हुर्मत भी प्राबित हुई जैसा कि मक्का शरीफ़ की हुर्मत है, मदीना के लिये भी हूदूदे हरम मुतअय्यन (निर्धारित) हैं जिनके अंदर वो सारे काम नाजाइज़ हैं जो हरमे मक्का में नाजाइज़ हैं। अहले हदीष का यही मसलक है कि मदीना भी मक्का ही की तरह हराम है। (वत् तफ़सील मुकामे आख़र) ख़ैबर मदीना से शाम की जानिब तीन मंज़िल पर एक जगह है। ये यहूदियों की आबादी थी। आहज़रत (ﷺ) को हुदैबिया से आए हुए एक माह से कम ही अर्सा हुआ था कि आप (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों की साज़िश का हाल सुना कि वो मदीना पर हमला करने वाले हैं, उन्हीं की मुदाफ़िअत के लिये आप (ﷺ) ने पेश क़दमी की और अहले इस्लाम को फ़तहे मुबीन हासिल हुई।

2890. हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबुर्बबीअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने, उनसे आसिम बिन सुलैमान

٢٨٩٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ زَكَرِيَّا حَدَّثَنَا

ने, उनसे मुवररक अजली ने और उनसे अनस ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ (एक सफ़र में) थे। कुछ सहाबा किराम (रज़ि.) रोज़े से थे और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा था। मौसम गर्मी का था, हममें ज्यादा बेहतर साया जो कोई करता, अपना कम्बल तान लेता। ख़ैर जो लोग रोज़े से थे वो कोई काम न कर सके थे और जिन हज़रत ने रोज़ा नहीं रखा था तो उन्होंने ही ऊँटों को उठाया (पानी पिलाया) और रोज़ेदारों की ख़ूब-ख़ूब ख़िदमत भी की। और (दूसरे तमाम) काम किये। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आज अज़्रो-प्रवाब को रोज़ा न रखने वाले लूटकर ले गए।

عاصِمٌ عَنْ مُورِقِ الْعِجْلِيِّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ  
اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْثَرَنَا ظِلًّا الَّذِي يَسْتَظِلُّ  
بِكِسَايِهِ، وَأَمَّا الَّذِينَ صَامُوا فَلَمْ يَفْعَلُوا  
شَيْئًا، وَأَمَّا الَّذِينَ أَفْطَرُوا فَبَغَوْا الرِّكَابَ.  
وَأَمْتَنَهُوا وَعَالَخُوا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ذُفَبَ الْمُفْطِرُونَ الْيَوْمَ  
بِالْأَجْرِ)).

**तशरीह:** या'नी रोज़ेदारों से ज्यादा उनको प्रवाब मिला, मा'लूम हुआ कि जिहाद में मुजाहिदीन की ख़िदमत करना रोज़े से ज्यादा अज़र रखता है। रोज़ा एक इफ़िरादी नेकी है मगर मुजाहिदीन की ख़िदमत पूरी मिल्लत की ख़िदमत है, इसलिये इसको बहरहाल फ़ौक़ियत हासिल है। हदीष का मफ़हूम ये भी है कि रोज़ा अगरचे ख़ैर महज़ है और मख़सूस व मन्बूल इबादत है फिर भी सफ़र वग़ैरह में ऐसे मौकों पर जबकि उसकी वजह से दूसरे अहम काम रुक जाने का ख़तरा हो तो रोज़ा न रखना अफ़ज़ल है। जो वाक़िया हदीष में है उसमें भी यही सूत्र पेश आई थी कि जो लोग रोज़े से थे वो कोई काम थकन वग़ैरह की वजह से नहीं कर सके लेकिन बेरोज़ेदारों ने पूरी तवज्जह से तमाम ख़िदमात अंजाम दिये, इसलिये उनका प्रवाब रोज़ा रखने वालों से भी बढ़ गया।

## बाब 72 : उस शख़्स की फ़ज़ीलत जिसने सफ़र में अपने साथी का सामान उठा दिया

2891. हमसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मज़मर ने, उनसे हम्माम ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रोज़ाना इंसान के हर एक जोड़ पर स़दक़ा लाज़िम है और अगर कोई शख़्स किसी की सवारी में मदद करे कि उसको सहारा देकर उसकी सवारी पर सवार करा दे या उसका सामान उस पर उठाकर रख दे तो ये भी स़दक़ा है। अच्छा और पाक लफ़ज़ भी (जुबान से निकालना) स़दक़ा है। हर क़दम जो नमाज़ के लिये उठता है वो भी स़दक़ा है और (किसी मुसाफ़िर को) रास्ता बता देना भी स़दक़ा है। (राजेअ: 2707)

٧٢- بَابُ فَضْلِ مَنْ حَمَلَ مَتَاعَ

صَاحِبِهِ فِي السَّفَرِ

٢٨٩١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا  
عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:  
«كُلُّ سَلَامَى عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلُّ يَوْمٍ: يَجْنِي  
الرَّجُلُ فِي ذَاتِهِ يُحَامِلُهُ عَلَيْهَا أَوْ يَرْفَعُ  
عَلَيْهَا مَتَاعَهُ صَدَقَةٌ، وَالْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ،  
وَكُلُّ خَطْوَةٍ يَمْشِيهَا إِلَى الصَّلَاةِ صَدَقَةٌ،  
وَذَلَّ الطَّرِيقَ صَدَقَةٌ»۔ [راجع: ٢٧٠٧]

हदीष आम है मगर सफ़रे जिहाद के मुसाफ़िर खुसूस्सियत से यहाँ मुराद हैं, इसीलिये हज़रत इमाम (रह.) इसको किताबुल जिहाद में लाए हैं, कोई भाई अगर इस मुबारक सफ़र में थक रहा है या उस पर बोझ ज्यादा है तो उसकी इमदाद बड़ा ही दर्जा रखती है। यूँ हर मुसाफ़िर की मदद बहुत बड़ा कारे ख़ैर है, मुसाफ़िर कोई भी हो। इसी तरह जुबान से ऐसा लफ़ज़ कहना कि सुनने वाला खुश हो जाएँ और वो कलिमा ख़ैर ही के बारे में हो तो ऐसे अल्फ़ाज़ भी स़दक़ा की मद में लिखे जाते हैं। कुर्आन मजीद में ऐसे अल्फ़ाज़ जो उस स़दक़ा से बहुत ही बेहतर क़रार दिया है जिस स़दक़ा की वजह से जिस पर वो स़दक़ा किया गया है उसको



सुनकर तकलीफ हो, इसीलिये हर मुसलमान मोमिन का फर्ज है कि या तो कलम-ए-खैर जुबान से निकाले या खामोश रहें। हर कदम जो नमाज़ के लिये उठे वो भी सदक़ा है और किसी राह भूले हुए मुसाफ़िर को रास्ता बतला देना भी बहुत ही बड़ा सदक़ा है। यही इस्लाम की वो अखलाकी पाकीज़ा ता'लीम है जिसने अपने सच्चे पैरोकारों को आसमानों और ज़मीनों में कुबूले आम बख़्शा। अल्लाहुम्मज्जअल्ना मिन्हुम (आमीन)

### बाब 73 : अल्लाह के रास्ते में सरहद पर एक दिन पहरा देना कितना बड़ा प्रवाब है

और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, ऐ ईमानवालों! स़न्न से काम लो और दुश्मनों से स़न्न में ज़्यादा रहो, और मोर्चे पर जमे रहो आख़िर आघत तक। (आले इमरान : 20)

स़न्न एक बहुत बड़ी इंसानी कुव्वत का नाम है जिसके नतीजे में बहुत से इंसानों ने बड़ी बड़ी तारीख़ी कामयाबियाँ हासिल की हैं। हमारे रसूले पाक (ﷺ) की मिशाल अज़हर मिनशशम्स (सूरज की तरह रोशन) है।

2892. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अबु नज़र हाशिम बिन क़ासिम से सुना, उन्होंने कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू हाज़िम (सलमा बिन दीनार) ने बयान किया और उनसे सहल बिन सज़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह के रास्ते में दुश्मन से मिली हुई सरहद पर एक दिन का पहरा दुनिया व माफ़ीहा से बढ़कर है, ज़न्नत में किसी के लिये एक कोड़े जितनी जगह दुनिया व माफ़ीहा से बढ़कर है और जो शख्स अल्लाह के रास्ते में शाम को चले या सुबह को तो वो दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। (राजेअ : 2794)

### ٧٣- بَابُ فَضْلِ رِبَاطٍ يَوْمٍ فِي

سَبِيلِ اللَّهِ وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۚ الْآيَةُ [آل عمران : २०]

٢٨٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُبِيرٍ سَمِعَ أَبَا النُّعْمِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِي خَارِجٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا. وَمَوْضِعٌ سَوَاطِ أَحَدِكُمْ مِنَ الْخَبَةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا، وَالرَّوْحَةُ يَرُوحُهَا الْقَتْلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ الْفِدْوَةُ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا))

[راجع : ٢٧٩٤]

इस्लामी शरई रियासत में सरहद पर चौकी पहरा की ख़िदमत जिसको सौंपी जाए और उसे बखूबी अंजाम दे तो उसका नाम भी मुजाहिदीन में ही लिखा जाता है और उसको वो प्रवाब मिलता है जिसके सामने दुनिया की सारी दौलत भी कोई ह क़ीक़त नहीं रखती क्योंकि दुनिया बहरहाल फ़ानी और उसका प्रवाब बहरहाल बाक़ी है, अरिबातु बिकस्तिराइ लिमुवहहदतिलखफ़ीफति मुलाज़मतुल्मकानिल्लज़ी बैनल्मुस्लिमीन वल्कुफ़फ़ारि लिहरासतिल्मुस्लिमीन मिन्हुम वस्तदल्लल्मुसन्निफ़ु बिल्आयति इखितयारुन लिअशहुरित्तफ़ासीरि फ़अनिलहसनिल्बसरी वल्क़तादा इस्बिरु अला त्ताअतिल्लाहि व साबिरु आदाअल्लाहि फिल्जिहादि व राबितु फी सबीलिल्लाहि व अन मुहम्मदिनबिल्क़अबि इस्बिरु अलत्ताअति व साबिरु लिइन्तिजारिल्वअदि व राबितुल्अदुव्व वत्तकुल्लाह फीमा बैनकुम. (फ़तह)

### बाब 74 : अगर किसी बच्चे को ख़िदमत के लिये जिहाद में साथ ले जाए

### ٧٤- بَابُ مَنْ غَرَا بِصَبِيٍّ لِلْجِهَادِ

इसमें इशारा है कि बच्चा जिहाद के लिये मुखातब नहीं है लेकिन ख़िदमत के लिये बच्चों को जिहाद में साथ लगाया जा सकता है।

2893. हमसे कुतैबा बिन सईद ने कहा, हमसे यअकूब बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अमर बिन अमर ने और उनसे अनस बिन मालिक (रजि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ने अबूतलहा (रजि.) से फ़र्माया कि अपने बच्चों में से कोई बच्चा मेरे साथ कर दो जो खैबर के ग़ज़वे में मेरे काम कर दिया करे, जबकि मैं खैबर का सफ़र करूँ। अबूतलहा अपनी सवारी पर अपने पीछे बिठाकर मुझे (अनस रजि. को) ले गए, मैं उस वक़्त अभी लड़का था बालिश होने के करीब। जब भी औहज़रत (ﷺ) कहीं क्रयाम करते तो मैं आप (ﷺ) की खिदमत करता। अक़बर मैं सुनता कि आप (ﷺ) ये दुआ करते ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ग़म और आजिज़ी से, सुस्ती, बुख़ल, बुज़दिली, क़र्ज़दारी के बोझ और ज़ालिम के अपने ऊपर ग़लबा से, आख़िर हम खैबर पहुँचे और जब अल्लाह तआला ने खैबर के क़िले पर आपको फ़तह दी तो आप (ﷺ) के सामने सफ़िया बिनते हुय्यि बिन अख़्तब (रजि.) के ज़माल (जाहिरी व बातिनी) का ज़िक्र किया गया उनका शौहर (यहूदी) लड़ाई में काम आ गया था और वो अभी दुल्हन ही थीं (और चूँकि क़बीले के सरदार की बेटी थीं) इसलिये रसूले करीम (ﷺ) ने (उनका इकराम करने के लिये) उन्हें अपने लिये पसन्द फ़र्मा लिया। फिर आप (ﷺ) उन्हें साथ लेकर वहाँ से चले। जब हम सहुस्सहबा पर पहुँचे तो वो हैज़ से पाक हुई, तो आप (ﷺ) ने उनसे ख़ल्वत की। उसके बाद आप (ﷺ) ने हैस (खज़ूर, पनीर और घी से तैयार किया हुआ एक खाना) तैयार कराकर एक छोटे से दस्तरख़वान पर रखवाया और मुझसे फ़र्माया कि अपने आस पास के लोगों को दा'वत दे दो और औहज़रत (ﷺ) का हज़रत सफ़िया (रजि.) के साथ निकाह का वलीमा था। आख़िर हम मदीना की तरफ़ चले, अनस (रजि.) ने कहा कि मैंने देखा कि औहज़ूर (ﷺ) सफ़िया (रजि.) की वजह से अपने पीछे (कैट के कोहान के इर्दगिर्द) अपनी अब्बा से पर्दा किये हुए थे (सवारी पर जब हज़रत सफ़िया रजि. सवार होतीं) तो आप (ﷺ) अपने कैट के पास बैठ जाते और अपना घुटना खड़ा रखते और हज़रत सफ़िया (रजि.) अपना पाँव हज़ूरे अकरम (ﷺ) के घुटने पर रखकर सवार हो जातीं। इस तरह हम चलते रहे और जब मदीना आ गया तो आप (ﷺ) ने उहुद पहाड़ को देखा और फ़र्माया, य

۲۸۹۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عَمْرِو بْنِ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَأَبِي طَلْحَةَ : «الْقَمَسَ لِي غُلَامًا مِنْ غِلْمَائِكُمْ يَخْدُمُنِي حَتَّى أَخْرُجَ إِلَى خَيْبٍ»، فَخَرَجَ بِي أَبُو طَلْحَةَ مُرَوِّدِي وَأَنَا غُلَامٌ رَافِقْتُ الْخَلْمَ، فَكُنْتُ أَخْذُمُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ، فَكُنْتُ أَسْمَعُهُ كَثِيرًا يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْفَجْرِ وَالْكَسَلِ، وَالْبَخْلِ وَالسُّخْنِ، وَطَلْعِ الدِّهْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ»، ثُمَّ قَدِمْنَا خَيْبَرَ، فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْحِصْنَ ذَكَرَ لَهُ جَمَانٌ صَغِيرَةٌ بِنْتُ خَصٍّ بْنِ أَطْطَبٍ - وَقَدْ قِيلَ زَوْجُهَا، وَكَانَتْ غُرُوسًا - فَاصْطَفَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَفْسِهِ، فَخَرَجَ بِهَا حَتَّى بَلَغْنَا سِدَّ الْمُهَاجِرِ خَلَّتْ، فَبَنَى بِهَا، ثُمَّ صَنَعَ خِيَمًا فِي بَطْحِ صَنْبِرٍ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «(إِذِنْ مَنْ خَوْلَكَ)». فَكَانَتْ بِلَكَ وَلِيْمَةً رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى صَغِيرَةٍ. ثُمَّ خَرَجْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: لَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخَوِّي لَهَا وَرَأَاهُ بَعَاءَةً، ثُمَّ يَجْلِسُ عِنْدَ بَعِيرِهِ فَيَضَعُ رُكْبَتَهُ، فَيَضَعُ صَغِيرَةً رِجْلَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ حَتَّى تَرْكَبَ، فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا أَشْرَقْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ نَظَرْنَا إِلَى أَخِي

पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम इससे मुहब्बत रखते हैं, उसके बाद आप (ﷺ) ने मदीना की तरफ निगाह उठाई और फ़र्माया कि, ऐ अल्लाह! मैं इसके दोनों पथरीले मैदानों के दरम्यान के खिन्ने को हुर्मत वाला करार देता हूँ जिस तरह हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने मक्का को हुर्मत वाला करार दिया था ऐ अल्लाह! मदीना के लोगों को उनकी मुद्द और सज़ा में बरकत अता फ़र्मा। (राजेअ : 371)

فَقَالَ: «مَدَا جَبَلٌ يَجِيئَا وَنُجُةً» ثُمَّ نَظَرَ إِلَى التَّمْدِينَةِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَخْرَمُ مَا بَيْنَ لَانْتِهَا بِجَبَلٍ مَا حَرَّمَ إِبْرَاهِيمَ مَكَّةَ. اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مَدِينِهِمْ وَصَاعِيهِمْ».

[راجع: ٣٧١]

**तशरीह:** रसूल करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में हज़रत अनस (रज़ि.) को ख़िदमत के लिये साथ रखा जो अभी नाबालिग थे, इसी से मक्कसदे बाब श़ाबित होता है। उसी लड़ाई में हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आप (ﷺ) के हरम में दाख़िल हुई जो एक ख़ानदानी ख़ातून थीं इस रिश्ते से अहले इस्लाम को बहुत से इल्मी फ़वाइद हासिल हुए। इस रिवायत में एक दुआ-ए-मस्नूना भी मज़कूर हुई है जो बहुत से फ़वाइद पर मुस्तमिल है। जिसका याद करना और दुआओं में उसे पढ़ते रहना बहुत से उमूरे दीनी और दुनियावी के लिये मुफ़ीद श़ाबित होगा। हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के तफ़सीली हालात पीछे मज़कूर हो चुके हैं इसी हदीस से मदीना मुनव्वरा का मुक़ाम भी मिश्ले मक्का शरीफ़ हासिल हुआ। दुआ-ए-मस्नूना में लफ़ज़ हम्म और हुज़्न हम मा'नी ही हैं। फ़र्क़ ये है कि हम्म वो फ़कर जो वाक़ेअ नहीं हुआ लेकिन वकूअ का ख़तरा है, हुज़ना वो ग़म व फ़िक़्र जो वाक़ेअ हो चुका है। हज़रत अनस (रज़ि.) ख़िदमते नबवी में पहले ही थे मगर उस मौक़े पर भी उनको साथ लिया गया उनकी मुद्दे ख़िदमत नौ साल है, उहूद पहाड़ के लिये जो आप (ﷺ) ने फ़र्माया वो हक़ीक़त पर मबनी है, इन्नल्लाह अला कुल्लि शैइन क़दीर (अल बकर : 20)

## बाब 75 : जिहाद के लिये समुन्दर में सफ़र करना

2894. 95. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन हब्बान ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे उम्मे हराम (रज़ि.) ने ये वाक़िया बयान किया था कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन उनके घर में तशरीफ़ लाकर क़ैलूला फ़र्माया था। जब आप बेदार हुए तो हंस रहे थे। उन्होंने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! किस बात पर आप हंस रहे हैं? फ़र्माया मुझे अपनी उम्मत मे से एक क़ौम को (ख़्वाब में देखकर) खुशी हुई जो समुन्दर में (ग़ज़्वा के लिये) इस तरह जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर बैठे हों। मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह से दुआ कीजिए कि मुझे भी वो उनमें से कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम भी उन ही में से हो। उसके बाद फिर आप सो गए और जब बेदार हुए तो फिर हंस रहे थे। आपने इस बार भी वही बात बताई। ऐसा दो या तीन बार हुआ। मैंने कहा,

## ٧٥- بَابُ رُكُوبِ الْبَحْرِ

٢٨٩٤، ٢٨٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الثُّمَّانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «حَدَّثَنِي أُمُّ حَرَامٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمًا لِي نَبِيَّهَا، فَاسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ، قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا يَضْحَكُكَ؟ قَالَ: «عَجِبْتُ مِنْ قَوْمٍ مِنْ أُمَّتِي يَرْكَبُونَ الْبَحْرَ كَالْمَلُوكِ عَلَى الْأَسْبَةِ»، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اذْغِ اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَقَالَ: «أَنْتَ مِنْهُمْ». ثُمَّ نَامَ فَاسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ. فَقَالَ جِبِلٌّ ذَلِكَ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ

ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि मुझे भी वो उनमें से कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी वो हज़रत उबादा बिन स़ामित (रज़ि.) के निकाह में थीं और वो उनको (इस्लाम के सबसे पहले बहरी बेड़े के साथ) ग़ज़वा में ले गए, वापसी में सवार होने के लिये अपनी सवारी से करीब हुई (सवार होते हुए या सवार होने के बाद) गिर पड़ीं जिससे आपकी गर्दन टूट गई और शहादत की मौत पाई, रज़ियल्लाहु अन्हा। (राजेअ : 2788, 2789)

ये हदीस और इस पर नोट पीछे लिखा जा चुका है यहाँ मरहूम इक़बाल का ये शेर याद रखने के काबिल है :-

दशत तो दशत है दरिया भी न छोड़े हमने

बहरे जुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हमने

### बाब 76 : लड़ाई में कमज़ोर नातवाँ और नेक लोगों से मदद चाहना

उनसे दुआ कराना, और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझको अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मुझसे क्रैसर (मुल्के रोम के बादशाह) ने कहा कि मैंने तुमसे पूछा कि अमीर लोगों ने उन (हुज़ूर अकरम ﷺ की पैरवी की है या कमज़ोर ग़रीब तबक़े वालों ने? तुमने बताया कि कमज़ोर और ग़रीब तबक़े वालों ने (उनकी इत्तिबाअ की है) और अंबिया का पैरूकार यही तबक़ा होता है।

2896. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन तलहा ने बयान किया, उनसे मुअ़अब इब्ने सअद ने बयान किया कि सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) का ख़याल था कि उन्हें दूसरे बहुत से सहाबा पर (अपनी मालदारी और बहादुरी की वजह से) फ़ज़ीलत हासिल है तो नबी करीम (स) ने फ़र्माया कि तुम लोग सिर्फ़ अपने कमज़ोर मा'ज़ूर लोगों की दुआओं के नतीजे में अल्लाह की तरफ़ से मदद पहुँचाए जाते हो और उन की दुआओं से रिज़क़ दिये जाते हो।

काल इब्नु बत्ताल तावीलुहु अन्नज़्ज़ुअफ़ाअ अशह इख़लासन फिहुआइ व अक्परु खुशूअन फिलइबादति लिखलाइ कुलूबिहिम अनित्तअल्लुकि बिजुख़रुफ़िहुनिया. (फ़त्ह) या'नी जुअफ़ा दुआ करते वक़्त इख़लास में बहुत सख़्त होते हैं और इबादत में उनका खुशूअ ज़्यादा होता है और उनके दिन दुनियावी ज़ेब व ज़ीनत से पाक होते हैं। इसलिये ज़ईफ़ लोगों से दुआ कराना बहुत ही मौजिबे बरकत है।

2897. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे

اذع الله ان يجعلني منهم، فيقول: ((أنت من الأولين)). فتزوج بها عبادة بن الصامت فخرج بها إلى الفزو، فلما رحلت قربت ذابة لتركها، فوكت فاندقت عنقها)).

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

٧٦- بَابُ مَنْ اسْتَعَانَ بِالضُّعَفَاءِ وَالصَّالِحِينَ فِي الْحَرْبِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَنِي أَبُو سَفْيَانَ قَالَ: ((قَالَ لِي قَيْصَرُ: سَأَلْتُكَ أَشْرَافَ النَّاسِ اتَّبَعُوهُ أَمْ ضَعَفَاؤُهُمْ؟ فَرَعَيْتُ ضَعَفَاؤُهُمْ، وَهُمْ أَتْبَغُ الرُّسُلِ)).

٢٨٩٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ طَلْحَةَ عَنْ مُصَنَّبِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: رَأَى سَعْدٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِنْ لَهُ فَضْلًا عَلَى مَنْ دُونَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ تَنْصَرُونَ وَتَرْزُقُونَ إِلَّا بِضَعَفَائِكُمْ)).

٢٨٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ

सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर (रजि.) से सुना, आप अबू सईद खुदरी (रजि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक ज़माना ऐसा आयेगा कि मुसलमानों की फ़ौज की फ़ौज जहाँ पर होंगी जिनमें पूछा जाएगा क्या फ़ौज में कोई ऐसे बुजुर्ग भी हैं जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) की सुहबत उठाई हो, कहा जाएगा कि हाँ तो उनसे फ़तह की दुआ कराई जाएगी। फिर एक ऐसा ज़माना आएगा उस वक़्त उसकी तलाश होगी कि कोई ऐसे बुजुर्ग मिल जाएँ जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के सहाबा की सुहबत उठाई हो, (या'नी ताबेई) ऐसे भी बुजुर्ग मिल जाएँगे और उनसे फ़तह की दुआ कराई जाएगी उसके बाद एक ऐसा ज़माना आएगा कि पूछा जाएगा कि क्या तुममें से कोई ऐसे बुजुर्ग हैं जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के सहाबा के शागिदों की सुहबत पाई हो कहा जाएगा कि हाँ और उनसे फ़तह की दुआ कराई जाएगी। (दीगर मक़ाम : 3594, 3649)

خَذَلْنَا مَقَاتِلَ عَنْ عَمْرٍو مَسْعَ جَابِرًا عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَأْتِي زَمَانٌ يَفْزُو فِيهِ مِنَ النَّاسِ، يُقَالُ: لَيْكُم مِّنْ صَحْبِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. يُقَالُ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ عَلَيْهِ. ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ يُقَالُ: لَيْكُم مِّنْ صَحْبِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. يُقَالُ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ. ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ يُقَالُ: لَيْكُم مِّنْ صَحْبِ صَاحِبِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ. يُقَالُ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ.))

[طرفاء 3: 3091, 3119]

**तशरीह :** इस हदीष से मा'लूम हुआ कि अल्लाह वाले नेक लोगों की दुआओं से नफ़ा हासिल करना जाइज़ है। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मेरा ज़माना, फिर मेरे बाद सहाबा का ज़माना और फिर ताबेईन का ज़माना ये बेहतरीन ज़माने हैं। इन ख़ैरो-बरकत के ज़मानों में मुसलमान सहीह मा'नों में अल्लाह वाले मुसलमान थे, उनकी दुआओं को कुबूल आम हासिल था। बहरहाल हर ज़माने में ऐसे अल्लाह वाले लोगों का वजूद ज़रूरी है। उनकी सुहबत में रहना, उनसे दुआएँ कराना और रूहानी फ़यूज़ हासिल करना ऐन खुशनसीबी है। ऐसे ही लोगों को कुआन मजीद में औलिया अल्लाह से ता'बीर किया गया है जिनकी शान में अल्लनज़ीन आमनू व कानू यत्तकून कहा गया है कि वो लोग अपने इमान में पुख़्ता और तक्वा में कामिल होते हैं। जिनमें ये चीज़ें न पाई जाएँ उनको औलिया अल्लाह जानना इतिहाई हिमाक़त है। मगर अफ़सोस कि आजकल बेशतर नामनिहाद मुसलमान इस हिमाक़त में मुब्तला हैं कि वो बहुत से चरसी, अफ़ीमची, हरामख़ोर, निकटदूत लोगों को महज़ उनके बालों और जुब्बों-कुब्बों को देखकर अल्लाह वाले जानते हैं, हालाँकि ऐसे लोगों के भेस में इब्लीस की औलाद है जो ऐसे बहुत से कमअक्लों को गुमराह करके दोज़ख़ी बनाने का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं। अल्लुहुम्म इन्न नज्जू बिक़ मिन शुर्रुरिअन्फ़सिना हदीष से मैदाने जिहाद में नेकतरीन लोगों से दुआ कराने का पुबूत हुआ। अहुआउ सलाहुल्मुमिनि, मोमिन का बेहतरीन हथियार है। सच है, बला को टाल देती है दुआ अल्लाह वालों की।

### बाब 77 : क़तई तौर पर ये न कहा जाए

कि फ़लौ शख़्स शहीद है (क्योंकि निर्यत और खात्मा का हाल मा'लूम नहीं है) और अबू हुरैरह (रजि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते में जिहाद करता है और अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते में ज़ख़मी होता है।

### 77- بَابُ لَا يَقُولُ فَلَانٌ شَهِيدٌ

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِهِ، اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يَكْتُمُ فِي سَبِيلِهِ.))

**तशरीह :** जब तक हदीष से प़ाबित न हो जैसे क़तई तौर पर किसी को बहिस्ती नहीं कह सकते मगर सिर्फ़ उन लोगों को जिनको आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो ज़न्नती है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उस हदीष की तरफ़ इशारा किया

जिसको हज़रत इमाम अहमद ने निकाला कि तुम अपने जंगों में कहते हो कि फ़लाँ शहीद हुआ ऐसा न कहो। यूँ कहो जो अल्लाह की राह में मरे वो शहीद है। दूसरी रिवायत में है बहुत लोग ऐसे हैं कि उनको दुश्मन का तीर लगता है और वो मर जाते हैं मगर वो अल्लाह के नजदीक हकीकी शहीद नहीं होते हैं। जो दुनिया में रिया व नमूद के लिये लड़े और मारे गए, जैसा कि दूसरी रिवायत में सराहत मौजूद है।

2898. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की (अपने अम्हाब के साथ या ख़ैबर की लड़ाई में) मुश्रीकीन से मुठभेड़ हुई और जंग छिड़ गई, फिर जब आप (ﷺ) (उस दिन लड़ाई से फ़ारिग होकर) अपने पड़ाव की तरफ वापस हुए और मुश्रीकीन अपनी पड़ाव की तरफ तो आप (ﷺ) की फौज के साथ एक शख्स था, लड़ाई लड़ने में उनका ये हाल था कि मुश्रीकीन का कोई आदमी भी अगर किसी तरफ नज़र पड़ जाता तो उसका पीछा करके वो शख्स अपनी तलवार से उसे क़त्ल कर देता। सहल (रज़ि.) ने उसके बारे में कहा कि आज जितनी सरगर्मी के साथ फ़लाँ शख्स लड़ा है, हममें से कोई भी उस तरह नहीं लड़ सका। आप (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि लेकिन वो शख्स जहन्नमी है। मुसलमानों में से एक शख्स ने (अपने दिल में कहा अच्छा मैं उसको पीछा करूँगा (देखूँ हज़ूर ﷺ ने उसे क्यूँ दोज़खी कहा है) बयान किया कि वो उसके साथ साथ दूसरे दिन लड़ाई में मौजूद रहा, जब कभी वो खड़ा हो जाता तो ये भी खड़ा हो जाता और जब वो तेज़ चलता तो ये भी उसके साथ तेज़ चलता। बयान किया कि आख़िर वो शख्स ज़ख्मी हो गया ज़ख्म बड़ा गहरा था। इसलिये उसने चाहा कि मौत जल्दी आ जाए और अपनी तलवार का फल ज़मीन पर रखकर उसकी धार को सीने के मुकाबले में कर लिया और तलवार पर गिरकर अपनी जान दे दी। अब वो साहब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। आप (ﷺ) ने पूछा क्या बात हुई? उन्होंने बयान किया कि वही शख्स जिसके बारे में आपने फ़र्माया था कि वो जहन्नमी है, साहबा किराम (रज़ि.) पर ये आपका फ़र्मान बड़ा शाक़ गुजरा था। मैंने उनसे कहा कि तुम सब लोगों की तरफ से मैं उसके बारे में तहकीक़ करता

٢٨٩٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اتَّفَقَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ فَاقْتُلُوا، فَلَمَّا مَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى عُسْكَرِهِ وَمَالَ الْآخَرُونَ إِلَى عُسْكَرِهِمْ، وَفِي أَمْخَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ رَجُلٌ لَا يَدْعُ لَهُمْ شَاذَةَ وَلَا فَاذَةَ إِلَّا اتَّبَعَهَا يَضْرِبُهَا بِسَيْفِهِ، فَقَالَ: مَا أَجْزَأُ مِنَّا الْيَوْمَ أَحَدٌ كَمَا أَجْزَأُ فَلَانٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَمَّا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ))، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَنَا صَاحِبُهُ، قَالَ فَخَرَجَ مَعَهُ كُلَّمَا وَقَفَ وَقَفَ مَعَهُ، وَإِذَا أَسْرَعَ أَسْرَعَ مَعَهُ، قَالَ: فَجَرِحَ الرَّجُلُ جَرْحًا شَدِيدًا، فَاسْتَعَجَلَ الْمَوْتُ، فَوَضَعَ نَصْلَ سَيْفِهِ فِي الْأَرْضِ وَذُبَابُهُ بَيْنَ تَدْيِيهِ، ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَى سَيْفِهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَخَرَجَ الرَّجُلُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، قَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ: الرَّجُلُ الَّذِي ذَكَرْتَ أَيْنَا أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَأَعْظَمَ النَّاسُ ذَلِكَ، فَقُلْتُ: أَنَا لَكُمْ بِهِ، فَخَرَجْتُ فِي طَلَبِهِ، ثُمَّ جَرِحَ جَرْحًا شَدِيدًا، فَاسْتَعَجَلَ الْمَوْتُ فَوَضَعَ نَصْلَ

हूँ। चुनाँचे मैं उसके पीछे हो लिया। उसके बाद वो शख्स सख्त ज़ख्मी हो गया और चाहा कि जल्दी मौत आ जाए। इसलिये उसने अपनी तलवार का फल ज़मीन पर रखकर उसकी धार को अपने सीने के मुकाबिल कर लिया और उस पर गिरकर अपनी जान दे दी। उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक आदमी ज़िन्दगी भर बज़ाहिर अहले जन्नत के सारे काम करता है हालाँकि वो अहले जहन्नम में से होता है और एक आदमी बज़ाहिर अहले दोज़ख के काम करता है हालाँकि वो अहले जन्नत में से होता है। (दीगर मक़ाम : 4202, 4207, 6493, 6607)

سَيِّقِهِ فِي الْأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَنِيَّتَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلُ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ: ((إِنَّ الرَّجُلَ لَيَفْعَلُ عَمَلًا أَهْلُ الْجَنَّةِ فِيمَا يَتَذَوُّ لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَفْعَلُ عَمَلًا أَهْلُ النَّارِ فِيمَا يَتَذَوُّ لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)). [أطرافه 3: 4202، 4207، 6493، 6607].

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि ज़ाहिर में वो शख्स मैदाने जिहाद में बहुत बड़ा मुजाहिद मा'लूम हो रहा था मगर किस्मत में दोज़ख़ लिखी हुई थी, जिसके लिये नबी करीम (ﷺ) ने वह्वा और इल्हाम के ज़रिये मा'लूम करके फ़र्मा दिया था। आखिर वही हुआ कि खुदकुशी करके हुराम मौत का शिकार हुआ और दोज़ख़ में दाखिल हुआ। अंजाम का फ़िक्क़ हर वक़्त ज़रूरी है। अल्लाह पाक राक़िमुल हुरूफ़ (लेखक) और तमाम क़ारेईने किराम को ख़ात्मा बिल ख़ैर नज़ीब फ़र्माए आमीन।

## बाब 78 : तीरंदाज़ी की तरगीब दिलाने के बयान में

## ٧٨- بَابُ التَّخْرِيسِ عَلَى الرُّمِيِّ وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

अल्लाह तआला का इशार्द है कि, और उन (काफ़िरों) के मुकाबले के लिये जिस क़दर भी तुमसे हो सके सामान तैयार रखो, कुव्वत से और पले हुए घोड़ों से, जिसके ज़रिये से तुम अपनी रुअब रखते हो अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर. (अल अन्फ़ाल : 60)

﴿وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُؤْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ﴾ [الأنفال : 60]

**तशरीह :** आयत शरीफ़ा में लफ़्ज़ मिन कुव्वह में तन्वीन, तन्कीर के लिये है जिससे मैदाने जंग में काम आने वाली हर किस्म की कुव्वत मुराद है, जिस्मानी, फ़त्नी और आलात की कुव्वत जिसमें वो सारे आलाते जंग शामिल हैं जो अब तक वजूद में आ चुके हैं और क़यामत तक वजूद में आएँगे। मुसलमानों का फ़र्ज है कि वो जुम्ला आलात मुहय्या करें, उनसे पूरी वाक़फ़ियत पैदा करें, उनको ख़ुद बनाएँ उनका इस्तेमाल हों, सबको ये आयत शामिल होगी। आयत में अगला टुकड़ा तुहिबून बिही अदुव्वल्साहि व अदुव्वकुम (अल अन्फ़ाल : 60) और भी ज़्यादा तवज्जह तलब है कि आलाते जंग का इस्तेमाल महज़ मुल्कगीरी के लिये न हो बल्कि उनका मक्सद ये हो कि अल्लाह के दीन के दुश्मनों को दबाकर ख़ल्क़ल्लाह के लिये ज़मीन को अमन व आफ़ियत का गहवारा बनाया जाए क्योंकि अल्लाह के दीन का तकाज़ा यही है कि यहाँ उसकी मख़लूक चैन व सुकून की ज़िन्दगी बसर कर सके, जुल्मो-उदवान को मिटाना यही इस्लामी जिहाद का मंशा है और बस।

2899. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया, उन्होंने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) का कबीला बनू

٢٨٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي غُبَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ الْأَكْوَعِ

असलम के चन्द सहाबा पर गुजर हुआ जो तीरंदाजी की मशक (प्रेक्टिस) कर रहे थे। आप (ﷺ) ने फर्माया इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के बेटों! तीरंदाजी करो कि तुम्हारे बुजुर्ग दादा इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी तीरंदाज थे। हाँ! तीरंदाजी करो, मैं बनी फ़लाँ (इब्नुल औराअरजि.) की तरफ हूँ। बयान किया, जब आप (ﷺ) एक फ़रीक़ के साथ हो गये तो (मुकाबले में हिस्सा लेने वाले) दूसरे फ़रीक़ ने अपने हाथ रोक लिये। आप (ﷺ) ने फर्माया क्या बात पेश आई, तुम लोगों ने तीरंदाजी क्यों बन्द कर दी? दूसरे फ़रीक़ ने अर्ज किया कि जब आप (ﷺ) एक फ़रीक़ के साथ हो गये तो भला हम किस तरह मुकाबला कर सकते हैं। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने फर्माया अच्छा तीरंदाजी जारी रखो, मैं तुम सबके साथ हूँ। (दीगर मक़ाम: 3507, 3373)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى نَفَرٍ مِنْ أَسْلَمَ يَتَعَلَّمُونَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ارْمُوا نَبِيَّ إِسْمَاعِيلَ، فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا، ارْمُوا وَأَنَا مَعَ نَبِيِّ فُلَانٍ)). قَالَ: فَأَمْسَكَ أَحَدُ الْقَرِيقَيْنِ بِأَيْدِيهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا لَكُمْ لَا تَرْمُونَ؟)) قَالُوا: كَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمْ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ارْمُوا فَإِنَّا مَعَكُمْ كُلُّكُمْ)).

[طرفاء في: 3507, 3373].

**तशरीह:** सीरते तय्यिबा के मुताल्लआ करने वालों पर वाज़ेह है कि आप (ﷺ) ने अपने पैरोकारों को हमेशा सिपाही बनाने की कोशिश की और मुजाहिदना ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दिन-रात तल्क्कीन करते रहे जैसा कि इस हदीष से भी वाज़ेह है। साथ ही ये भी वाज़ेह हुआ कि अरबों के ज़दे अमजद (पूर्वज) हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी बड़े ज़बरदस्त सिपाही थे और नेज़ा-बाज़ी ही उनका मशग़ला था। आजकल बन्दूक, तोप, हवाई जहाज़ और जितने भी आलाते हर्ब (युद्धक हथियार) वजूद में आ चुके हैं वो सब इसी ज़ेल (की परिभाषा में) हैं। उन सबमें महारत पैदा करना सबको अपनाना ये अल्लाह की बन्दगी के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि हर मुसलमान पर इनका सीखना फ़र्ज़ है।

2900. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरहमान बिन ग़सील ने, उनसे हम्ज़ा बिन अबी उसैद ने, और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई के मौक़े पर जब हम कुरैश के मुकाबले में सफ़बंद हो गये थे और वो हमारे मुकाबले में तैयार थे, फर्माया कि अगर (हमला करते हुए) कुरैश तुम्हारे फ़रीब आ जाएँ तो तुम लोग तीरंदाजी शुरू कर देना ताकि वो पीछे हटने पर मजबूर हों। (दीगर मक़ाम: 3984, 3985)

٢٩٠٠ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْفَيْصَلِ عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ جِئْنَا صَفًّا بِقُرَيْشٍ وَصَفُّوا لَنَا: ((إِذَا أَكْتَبُوكُمْ فَلَعَنَكُمْ بِالْبَيْلِ)).

[طرماء في: 3984, 3985].

इस हदीष से ज़ाहिर हुआ कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने मैदाने बद्र में मुजाहिदीने इस्लाम को जंगी तर्बियत भी फर्माई और जंग व जिहाद के क़ायदे भी ता'लीम फर्माए। दरहक़ीक़त अमीरे लश्कर को ऐसा होना चाहिये कि वो क़ौम को हर तरह से कंट्रोल कर सके।

**बाब 79 : बरछे से (मशक करने के लिये) खेलना**

2901. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मज़अमर ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें इब्नुल मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि

٧٩ - بَابُ اللَّهْوِ بِالْحِرَابِ وَنَحْوِهَا

٢٩٠١ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ



हब्शा के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) के सामने हिराब (छोटे नेजे) का खेल दिखला रहे थे कि उमर (रज़ि.) आ गए और कंकरियाँ उठाकर उन्हें उनसे मारा। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उमर! उन्हें खेल दिखाने दो। अली बिन मदीनी ने ये बयान ज्यादा किया कि हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी कि मस्जिद में (ये सहाबा रज़ि.) अपने खेल का मुजाहि़रा कर रहे थे।

ابْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا الْحَبَشَةُ يَلْعَبُونَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، بِالْجِرَابِ، دَخَلَ عُمَرُ فَأَهْوَى إِلَى الْحَصْبَاءِ فَحَصَبَهُمْ بِهَا، فَقَالَ: ((دَغْهُمْ يَا عُمَرُ)) وَزَادَ عَلَيْهِ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ ((فِي الْمَسْجِدِ)).

ये जंगी करतबों की मश्क़ (प्रेक्टिस) थी। हज़ुरे नबवी में हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसे खिलाफ़ अदब समझा मगर आँहज़रत (ﷺ) ने हब्शी मुजाहिदीन की हिम्मत अफ़ज़ाई की और उनकी उस मश्क़ को जारी रहने दिया। अहदे रिसालत में नशरो-इशाअत बल्कि सारे काम नज़्म व नस्क़ मिल्लत के लिये दफ़्तर का काम भी मस्जिद ही से लिया जाता था। इस्लाम का इब्तिदाई दौर था, आज जैसी आसानियाँ मुहय्या न थीं इसलिये मिल्ली उमूर के लिये मस्जिद ही को बतौर मर्कज़ मिल्लत इस्ते'माल किया गया। आज भी मसाजिद को इस्लामी मिल्लत उमूर के लिये इसी तौर पर इस्ते'माल किया जा सकता है, व फीहि किफायतुन लिमन लहू दिरायतुन।

### बाब 80 : ढाल का बयान और जो अपने साथी की ढाल इस्ते'माल करे उसका बयान

٨٠- بَابُ الْمِجَنِّ وَمَنْ يَتَرَسُّ

بِتَرَسِّ صَاحِبِهِ

2902. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू तलहा (रज़ि.) अपनी और नबी करीम (ﷺ) की आड़ एक ही ढाल से कर रहे थे और अबू तलहा (रज़ि.) बड़े अच्छे तीरंदाज़ थे। जब वो तीर मारते तो नबी अकरम (ﷺ) सर उठाकर देखते कि तीर कहाँ जाकर गिरा है। (राजेअ: 2880)

٢٩٠٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ أَبُو طَلْحَةَ يَتَرَسُّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِتَرَسِّ وَاحِدٍ، وَكَانَ أَبُو طَلْحَةَ حَسَنَ الرَّمْيِ، فَكَانَ إِذَا رَمَى يُشْرِفُ النَّبِيُّ ﷺ فَيَنْظُرُ إِلَى مَوْضِعِ تَبْلِهِ))

[راجع: ٢٨٨٠]

एक ही ढाल से दो मुजाहिदीन के बचाव करने का जवाज़ प्राबित हुआ जैसा कि हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) का अमल हुआ। आँहज़रत (ﷺ) उनकी निशानेबाज़ी की कामयाबी मा'लूम करने के लिये नज़र उठाकर देखते कि तीर कहाँ जाकर गिर रहा है, उनकी हिम्मत अफ़ज़ाई के लिये भी।

2903. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब उहुद की लड़ाई में आँहज़रत (ﷺ) का ख़ूद आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर तोड़ा गया और चेहरा मुबारक खून आलूद हो गया और आप (ﷺ) के आगे के दांत शहीद हो गये तो अली (रज़ि.) ढाल में भर-भरकर

٢٩٠٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ غَفِيرٍ حَدَّثَنَا يَنْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ قَالَ: ((لَمَّا كُتِبَتْ بَيْضَةُ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى رَأْسِهِ وَأَذْمِيَ وَجْهُهُ وَكُتِبَتْ رِجْلَيْهِ، وَكَانَ عَلَيَّ يَخْتَلِفُ بِالسَّمَاءِ فِي

पानी बार बार ला रहे थे और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ज़ख़्म को धो रही थीं। जब उन्होंने देखा कि खून पानी से और ज़्यादा निकल रहा है तो उन्होंने एक चटाई जलाई और उसकी राख को आप (ﷺ) के ज़ख़्मों पर लगा दिया, जिससे खून आना बन्द हो गया। (राजेअ : 243)

الْمَجْنُ وَكَانَتْ فَاطِمَةُ تَغْسِلُهُ، فَلَمَّا رَأَتْ  
الدَّمَ يَزِيدُ عَلَى الْمَاءِ كَثْرَةً عَمَدَتْ إِلَى  
حَصِيرٍ فَأَخْرَجَتْهَا وَأَلْصَقَتْهَا عَلَى جُرْحِهِ  
فَرَقَأَ الدَّمَ)). [راجع: ٢٤٣]

**तशरीह :** दंदाने मुबारक को सदमा पहुँचाने वाला उतबा बिन अबी वक्रास मर्दूद था, उसने आप (ﷺ) के करीब जाकर एक पत्थर मारा मगर फ़ौरन हज़रत हातिब बिन अबी बल्लतआ (रज़ि.) ने एक ही ज़ब से उसकी गर्दन उड़ा दी। और अब्दुल्लाह बिन क्रम्या मर्दूद ने पत्थर मारे। आपने फ़र्माया अल्लाह तुझे तबाह करे। ऐसा ही हुआ कि एक पहाड़ी बकरी ने निकलकर उसको सींगों से ऐसा मारा कि उसके टुकड़े टुकड़े कर दिया। सच है वो लोग किस तरह फ़लाह पा सकते हैं जिनके हाथों ने अपने ज़माने के नबी (ﷺ) के सर को ज़ख़्मी कर दिया हो।

2904. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन डययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे जुहरी ने, उनसे मालिक बिन औस बिन हदषान ने और उनसे इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि बन् नज़ीर के बाग़ात वग़ैरह अम्वाल उनमें से थे जिनको अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को वग़ैर लड़े दे दिया था। मुसलमानों ने उनके हासिल करने के लिये घोड़े और कैट नहीं दौड़ाए तो ये अम्वाल ख़ास तौर से रसूलुल्लाह (ﷺ) ही के थे जिनमें से आप (ﷺ) अपनी अज़्वाजे मुतहहरात को सालाना नफ़्का के तौर पर भी दे देते थे और बाक़ी हथियार और घोड़ों पर खर्च करते थे ताकि अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) हर वक़्त तैयारी रहे। (दीगर मक़ाम : 3094, 4033, 4885, 5357, 5358, 6728, 7305)

٢٩٠٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا  
سُفْيَانُ عَنْ غُمَيْرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مَالِكِ  
بْنِ أَوْسٍ بْنِ الْأَخْطَلِ عَنْ غُمَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ قَالَ: ((كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النُّظَيْرِ مِمَّا  
أَلْفَاهُ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ، لَا مِمَّا لَمْ يُوجِفْهُ  
الْمُسْلِمُونَ عَلَيْهِ بِخَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ  
لَكَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ خَاصَّةً وَكَانَ يُنْفِقُ  
عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةً سَنِيَّةً، ثُمَّ يَجْعَلُ مَا بَقِيَ فِي  
السَّلَاحِ وَالْكِرَاعِ غَدَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ)).  
[أطرافه: ٣: ٤٠٣٣، ٣٠٩٤، ٤٠٨٨٥، ٥٣٥٨، ٥٣٥٧، ٦٧٢٨، ٧٣٠٥].

हथियार घोड़े ये सारी फ़ौज के इस्ते'माल के वास्ते मुहय्या किये जाते थे।

2905. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन डययना ने बयान किया, कहा मुझसे सअद बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन शहाद ने और उनसे अली (रज़ि.) ने (दूसरी रिवायत में) हमसे क़बीसा बिन उक्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन डययना ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन शहाद ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) के बाद मैंने किसी के बारे में नबी करीम (ﷺ) से

٢٩٠٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ  
سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ  
عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَادٍ عَنْ عَلِيٍّ. حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ:  
حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ شَدَادٍ قَالَ: سَمِعْتُ  
عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ  
ﷺ يُفَدِّي رَجُلًا بَعْدَ سَعْدٍ، سَمِعْتُهُ

नहीं सुना कि आपने खुद को उन पर सड़के किया हो। मैंने सुना कि आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे तीर बरसाओ (सअद रजि) तुम पर मेरे माँ-बाप कुर्बान हों। (दीगर मक्काम : 4058, 4059, 6184)

يَقُولُ: ((أَرُمَ لِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).

[أطرافه في: ٤٠٥٨، ٤٠٥٩، ٦١٨٤].

**तशरीह:** इस हदीस से तीरंदाजी की फ़ज़ीलत साबित हुई इस तौर पर कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत सअद बिन अबी वक्कास (रजि.) की तीरंदाजी पर उनको शाबाशी पेश फ़र्माई। या'लूम हुआ कि फुनूने हर्ब जिनमें महारत पैदा करने से अल्लाह पाक की रज़ा मल्बूब हो बड़ी फ़ज़ीलत और दरजात रखते हैं। अस्परे हाज़िर (वर्तमान काल) के सारे आलाते-हर्ब (युद्धक हथियारों) में महारत को इसी पर क़यास किया जा सकता है सद् अफ़सोस, कि मुसलमानों ने इन नेक कामों को क़दर भुला दिया है जिसकी सज़ा वो मुख़्तलिफ़ अज़ाबों की शक्ल में भुगत रहे हैं।

### बाब 81 : ढाल के बयान में

#### ٨١- بَابُ الدَّرَقِ

2906. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया कि अमर ने कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने बयान किया, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रजि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए तो दो लड़कियाँ मेरे पास जंग बुआष के गीत गा रही थीं। आप (ﷺ) बिस्तर पर लेट गए और चेहरा मुबारक दूसरी तरफ़ कर लिया उसके बाद अबूबक्र (रजि.) आ गए और आपने मुझे डाँटा कि ये शैतानी गाना और रसूलुल्लाह (ﷺ) की मौजूदगी में! लेकिन आप (ﷺ) उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया कि उन्हें गाने दो, फिर जब अबूबक्र (रजि.) दूसरी तरफ़ मुतवज्जह हो गए तो मैंने उन लड़कियों को इशारा किया और वो चली गई। (राजेअ : 454)

٢٩٠٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ سَمِعْتُ عُمَرَوَ حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَعِنْدِي جَارِيَتَانِ تَغْنِيَانِ بِنَاءً يُغَاثُ، فَأَضْطَجَعُ عَلَى الْفِرَاشِ وَحَوْلَ وَجْهَةٍ، فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَانْتَهَرَنِي وَقَالَ: مِرْمَارَةُ الشَّيْطَانِ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَأَقْبَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((دَعُهُمَا)). فَلَمَّا عَمَلَ عَمَلَهُمَا فَحَرَحْتَا)). [راجع: ٤٥٤]

2907. आइशा (रजि.) ने बयान किया कि ईद के दिन सूडान के कुछ सहाबा ढाल और हिराब का खेल दिखला रहे थे, अब या मैं ने खुद रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा या आपने ही फ़र्माया कि तुम भी देखना चाहती हो? मैंने कहा जी हाँ। आप (ﷺ) ने मुझे अपने पीछे खड़ा कर लिया, मेरा चेहरा आप (ﷺ) के चेहरा पर था (इस तरह मैं पीछे पड़े से खेल को बख़ूबी देख सकती थी) और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे ख़ूब बनू अरफ़द! जब मैं थक गई तो आपने फ़र्माया, बस? मैंने कहा जी हाँ, आपने फ़र्माया तो फिर जाओ। अहमद ने बयान किया और उनसे इब्ने वहब ने (अबूबक्र रजि.) के आने के बाद दूसरी तरफ़ मुतवज्जह हो जाने के लिये लफ़ज़ अमल के बजाय) लफ़ज़े शफ़ल नक़ल किया है। या'नी जब वो ज़रा शाफ़िल हो गए। (राजेअ : 949)

٢٩٠٧- قَالَتْ: وَكَانَ يَوْمَ عِيدٍ يَلْعَبُ السُّودَانُ بِالدَّرَقِ وَالْحِرَابِ، فَمَا مَأَلَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَإِنَّمَا قَالَ: ((تَشْتَهَيْنِ تَطْرِينَ)). فَقُلْتُ: نَعَمْ، فَأَقَامَنِي وَرَأَى خَدِّي عَلَى حَذِّهِ وَيَقُولُ: ((ذُوكُمْ يَا بَنِي أَرْفَدَةَ حَتَّى إِذَا مَلَيْتُ قَالَ: ((حَسْبُكَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَادْهَمِي)). قَالَ أَحْمَدُ عَنْ ابْنِ وَهْبٍ: ((فَلَمَّا غَفَلَ)).

[راجع: ٩٤٩]

रिवायत में कुछ सहाबा के ढालों और बछियों से जंगी करतब दिखलाने का जिक्र है, इसी से मक्सुदे बाब प्राबित हुआ। ये भी मा'लूम हुआ कि तारीखी और जंगली करतबों का नज़ारा देखना जाइज है, पर्दे के साथ औरतें भी ऐसे खेल देख सकती हैं।

## बाब 82 : तलवारों की हमाइल और तलवार का गले में लटकाना

## ۸۲- بَابُ الْحَمَائِلِ وَتَغْلِيْقِ السِّيفِ بِالْعُنُقِ

2908. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे प्राबित ने और उनसे अनस (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा ख़ूबमूरत और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। एक रात मदीना पर (एक आवाज़ सुनकर) बड़ा ख़ौफ़ छा गया था, सब लोग उस आवाज़ की तरफ़ बड़े लेकिन नबी करीम (ﷺ) सबसे आगे थे और आप (ﷺ) ने ही वाक़िया की तहक़ीक़ की। आप (ﷺ) अबू तलहा (रजि.) के एक घोड़े पर सवार थे जिसकी पुश्त नंगी थी। आप (ﷺ) की गर्दन से तलवार लटक रही थी और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि डरो मत। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमने तो घोड़े को समुन्दर की तरह तेज़ पाया है या (ये फ़र्माया कि घोड़ा जैसे समुन्दर है)। (राजेअ: 2627)

۲۹۰۸- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا  
حَمَّادُ بْنُ رَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُ قَالَ ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَحْسَنَ  
النَّاسِ. وَاشْتَعَّ النَّاسُ. وَلَقَدْ فَزَعُ أَهْلُ  
الْمَدِينَةِ لِلَّذِ فَخَرَجُوا نَحْوَ الصُّوْتِ  
فَاسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ وَلَقَدْ اسْتَبْرَأَ الْخَبَرَ  
وَهُوَ عَلَى فَرَسٍ لَأَبِي طَلْحَةَ غُرَبِيٍّ وَلَمَّا  
غُفِيَ السِّيفُ وَهُوَ يَقُولُ: ((لَمْ تُرَاعُوا)).  
ثُمَّ قَالَ: ((وَجَدْنَاهُ يَحْرًا)). أَوْ قَالَ:  
((إِنَّهُ لَحَرٌّ)). [راجع: ۲۶۲۷]

मदीना में एक दफ़ा रात को दुश्मन के हमले की अफ़वाह फैल गई थी। उसी की तहक़ीक़ के लिये आप (ﷺ) खुद बनफ़से नफ़ीस निकले और चारों तरफ़ दूर दूर तक मुलाहिज़ा करके वापस हुए और लोगों को बताया कि कुछ ख़तरा नहीं है। जिस घोड़े पर आप सवार थे उसकी तेज़ रफ़्तारी से बहुत खुश हुए।

## बाब 83 : तलवार की आराइश करना

## ۸۳- بَابُ حَلِيَةِ السَّيْفِ

2909. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने सुलैमान बिन हबीब से सुना, कहा मैंने अबू उमामा बाहेली से सुना वो बयान करते थे कि एक क़ौम (सहाबा रिज्जानुल्लाह अलैहिम अज्मईन) ने बहुत सी फ़तूहात कीं और उनकी तलवारों की आराइश सोने-चाँदी से नहीं हुई थी बल्कि ऊँट की पुश्त का चमड़ा, सीसा और लोहा की तलवार के ज़ेवर थे।

۲۹۰۹- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا  
عَنْ اللَّهِ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ  
سُلَيْمَانَ بْنَ حَبِيبٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ  
يَقُولُ ((لَقَدْ فَتَحَ الْفَتْوحَ قَوْمٌ مَا كَانَتْ  
حَلِيَّةُ سَيْفِهِمُ اللَّحَبُ وَلَا الْفِصَّةُ، إِنَّمَا  
كَانَتْ حَلِيَّتُهُمُ الْعَلَابِيُّ وَالْأَنَكُ وَ  
الْحَدِيدُ)).

अहदे जाहिलियत में तलवारों की ज़ेबाइश सोने-चाँदी से किया करते थे। मुसलमानों ने ज़ाहिरी ज़ेबाइश से क़ाअे नज़र करके

तलवारों की जेबाइश और मस्नूई उम्दगी सीसे और लोहे से की कि दरहकीकत यही उनकी जेबाइश थी। आलाते हर्ब को बेहतर से बेहतर शकल में रखना आज भी तमाम मुतमद्दिन अक्वामे आलम (सभ्य दुनिया की कौमों) का दस्तूर है।

### बाब 84 : जिसने सफ़र में दोपहर के आराम के वक़्त अपनी तलवार पेड़ पर लटकाई

2910. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे सिनान बिन अबी सिनानुद्दौला और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ नजद के अत्रराफ़ में एक ग़ज़वा में शरीक थे। जब हुजुरे-अकरम (ﷺ) जिहाद से वापस हुए तो आपके साथ ये भी वापस हुए। रास्ते में कैलूला का वक़्त एक ऐसी वादी में हुआ जिसमें बबूल के पेड़ बक़़रत थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी वादी में पड़ाव किया और सहाबा पूरी वादी में (पेड़ के साथे के लिये) फैल गए। आप (ﷺ) ने भी एक बबूल के नीचे क़याम फ़र्माया और अपनी तलवार पेड़ पर लटका दी। हम सब सो गये थे कि आँहज़रत (ﷺ) के पुकारने की आवाज़ सुनाई दी, देखा गया तो एक बदवी आप (ﷺ) के पास था आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसने ग़फ़लत में मेरी ही तलवार मुझ पर खींच ली थी और मैं सोया हुआ था, जब बेदार हुआ तो नंगी तलवार उसके हाथ में थी। उसने कहा मुझसे तुम्हें कौन बचाएगा? मैंने कहा कि अल्लाह! तीन बार (मैंने इस तरह कहा और तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर गई) हुजुरे अकरम (ﷺ) ने अरबी को कोई सज़ा नहीं दी बल्कि आप (ﷺ) बैठ गए। (फिर वो खुद मुताख़िर होकर इस्लाम लाए)। (दीगर मक़ाम : 2913, 4134, 4135, 4136)

### ٨٤ - بَابُ مَنْ عُلِقَ سَيْفُهُ بِالشَّجَرِ

#### فِي السَّفَرِ عِنْدَ الْقَائِلَةِ

٢٩١٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سِنَانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ الدُّؤْلِيُّ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ (أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَا أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ نَجْدٍ، فَلَمَّا قَفَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَفَلَ مَعَهُ، فَأَذْرَكَهُمْ الْقَائِلَةَ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْغَضَاءِ، فَزَلَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَفَرَّقَ النَّاسُ يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ، فَزَلَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ تَحْتَ شَجَرَةٍ وَعُلِقَ بِهَا سَيْفُهُ، وَنَسْنَا نَوْمَهُ، فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْعُونَا، وَإِذَا عِنْدَهُ أَغْرَابِيٌّ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا اخْرُطَ عَلَيَّ سَيْفِي وَأَنَا نَائِمٌ، فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِي يَدِي حُلَّتًا، فَقَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ فَقُلْتُ: اللَّهُ (ثَلَاثًا). وَلَمْ يُعَاقِبْهُ، وَجَلَسَ)).

[أطرافه في: ٢٩١٣، ٤١٣٤، ٤١٣٥،

٤١٣٦]

### तशरीह :

इन्ने इस्हाक़ ने मगाज़ी में यूँ रिवायत किया है कि काफ़िरों ने उस गंवार से जिसका नाम दअपूर था, ये कहा कि इस वक़्त मुहम्मद (ﷺ) अकेले हैं और मौक़ा अच्छा है। चुनाँचे वो आप (ﷺ) की तलवार लेकर आप (ﷺ) के सिरहाने खड़ा हो गया और कहने लगा कि अब आप (ﷺ) को कौन बचाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया मेरा बचाने वाला अल्लाह है। आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया ही था कि फ़ौरन हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ लाए और उस गंवार के सीने पर एक घूँसा मारा और तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी, जो आप (ﷺ) ने उठा ली और फ़र्माया कि अब तुझको कौन बचाएगा? उसने कहा कोई नहीं।

### बाब 85 : ख़ूद पहनना

### ٨٥ - بَابُ لِبْسِ الْبَيْضَةِ

(लोहे का टोप जिससे मैदान में सर का बचाव किया जाता था)

2911. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने, उनसे उहुद की लड़ाई में नबी करीम (ﷺ) के ज़ख्मी होने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बतलाया कि आप (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर ज़ख्म आए और आप (ﷺ) के आगे के दांत टूट गए थे और खूद आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर टूट गई थी। (जिससे सर पर ज़ख्म आए थे) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) खून धो रही थीं और अली (रज़ि.) पानी डाल रहे थे। जब हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने देखा कि खून बराबर बढ़ता ही जा रहा है तो उन्होंने एक चटाई जलाई और उसकी राख आप (ﷺ) के ज़ख्मों पर लगा दिया जिससे खून बन्द हो गया। (राजेअ: 243)

٢٩١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْهُ ((أَنَّهُ سِئِلَ عَنْ جَرْحِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ فَقَالَ: جُرِحَ وَجْهُ النَّبِيِّ ﷺ وَكُسِرَتِ رِجْلَاهُ وَهَشِمَتِ النَّيْضَةُ عَلَى رَأْسِهِ، فَكَانَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامُ تَغْسِلُ الدَّمَ وَعَلَى رَأْسِهِ اللَّهُ عَنْهُ يُمْسِكُ. فَلَمَّا رَأَتْ أَنَّ الدَّمَ لَا يَزِيدُ إِلَّا كَثْرَةً أَخَذَتْ خَصِيرًا فَأَخْرَقَتْهُ حَتَّى صَارَ رَمَادًا، ثُمَّ أَلْقَتْهُ، فَاسْتَمْسَكَ الدَّمَ)).

(راجع: ٢٤٣)

**तशरीह:** जंगे उहुद में सबसे ज्यादा अलमनाक हादसा ये हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) को चोटें आईं और आप (ﷺ) ज़ख्मी हो गए। चेहरे का ज़ख्म इब्ने कम्म्या के हाथों से हुआ और दांतों का सदमा इब्ने अबी वक्कास के हाथों से पहुँचा और खूद को आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर तोड़ने वाला अब्दुल्लाह बिन हिशाम था। खूद, लोहे का टोप जो सर की हिफ़ाज़त करने के लिये सर ही पर पहना जाता है। हदीस से उसका पहनना प्राबित हुआ। जंगे उहुद के तफ़्सीली हालात किताबुल मग़ाज़ी में आएँगे, इंशाअल्लाह।

## बाब 86 : किसी की मौत पर उसके हथियार वग़ैरह तोड़ने दुरुस्त नहीं है

2912. हमसे अमर बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन महदी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान शौरी ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे अमर बिन हारिज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (वफ़ात के बाद) अपने हथियार एक सफ़ेद ख़च्चर और एक क़ह्ज़ा अराज़ी जिसे आप पहले ही सदका कर चुके थे के सिवा और कोई चीज़ नहीं छोड़ी थी। (राजेअ: 2739)

## ٨٦- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ كَسَرَ السِّلَاحِ عِنْدَ الْمَوْتِ

٢٩١٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرُو بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((مَا تَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَّا سِلَاحَهُ وَبَغْلَهُ بَيْضَاءَ وَأَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً)). (راجع: ٢٧٣٩)

**तशरीह:** अरब में जाहिलियत के ज़माने में दस्तूर था कि जब किसी कबीले का सरदार या कबीले का कोई बहादुर मर जाता तो उसके हथियार तोड़ दिये जाते, ये इस बात की अलामत समझी जाती थी कि अब उन हथियारों का हकीकती मा'नो में कोई उठाने वाला बाक़ी न रहा है। ज़ाहिर है कि इस्लाम में ऐसा अमल हर्गिज़ जाइज़ नहीं। रसूले करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद आप (ﷺ) के हथियार वग़ैरह सब बाक़ी रह गए। इसी से बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर इशारा किया कि शरीअते इस्लामी में ये काम मना है क्योंकि इसमें अमल का ज़ाया करना है।

**बाब 87 : दोपहर के वक़्त पेड़ों का साया हासिल करने के लिये फ़ौजी लोग इमाम से जुदा होकर (मुतफ़रिक् पेड़ों के साये में) फैल सकते हैं**

2913. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उनसे सिनान बिन अबी सिनान और अबू सलमान ने बयान किया और उन दोनों हज़रत को जाबिर (रज़ि.) ने ख़बर दी। और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्हें इब्राहीम बिन सअद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें सिनान बिन अबी सिनान अद दौली ने और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक लड़ाई में शरीक थे। एक ऐसे जंगल में जहाँ बबूल के दरख़्त बक़रत थे। कैलूला का वक़्त हो गया, तमाम सहाबा साएकी तलाश में (पूरी वादी में मुतफ़रिक् पेड़ों के नीचे) फैल गए और नबी करीम (ﷺ) ने भी एक पेड़ के नीचे क़ायम किया। आप (ﷺ) ने तलवार (पेड़ के तने से) लटका दी थी और सो गये थे। जब आप (ﷺ) बेदार हुए तो आप (ﷺ) के पास एक अजनबी मौजूद था उस अजनबी ने कहा था कि अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा? फिर आँहज़रत (ﷺ) ने आवाज़ दी और जब सहाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) के करीब पहुँचे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस शख्स ने मेरी ही तलवार मुझ पर खींच ली थी और मुझसे कहने लगा था कि अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचा सकेगा? मैंने कहा कि अल्लाह (इस पर वो शख्स खुद ही दहशत ज़दा हो गया) और तलवार नियाम में कर ली, अब ये बैठा हुआ है आँहज़रत (ﷺ) ने उसे कोई सज़ा नहीं दी थी। (राजेअ: 2910)

ये हदीष ऊपर गुजर चुकी है यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को ये अमर श्रावित करने के लिये लाए कि फ़ौजी लोग दोपहर में कहीं चलते हुए जंगल में कैलूला करें तो अपनी पसन्द के मुताबिक़ सायादार पेड़ तलाश कर सकते हैं और अपने क़ायदे से आराम करने के लिये अलग-अलग हो सकते हैं और ये आदाबे जंग के मनाफ़ी नहीं है।

**बाब 88 : भालों (नेज़ो) का बयान**

और इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान किया जाता है कि नबी करीम

۸۷- بَابُ تَفْرِقِ النَّاسِ عَنِ الْإِمَامِ  
عِنْدَ الْقَابِلَةِ وَالْإِسْطِلَالِ بِالشَّجَرِ

۲۹۱۳- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ  
عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا سَيَّانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ  
وَأَبُو سَلَمَةَ أَنَّ حَابِرًا أَخْبَرَهُ. حَدَّثَنَا مُوسَى  
بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ  
أَخْبَرَنَا أَبُو شَهَابٍ عَنْ سَيَّانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ  
الدُّوَلِيِّ أَنَّ حَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((أَنَّهُ عَزَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى  
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَذْرَكَهُمْ الْقَابِلَةَ فِي وَادٍ  
كَثِيرِ الْعُصَا. فَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الْعُصَا  
يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ. فَنَزَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ  
ثُمَّ نَامَ. فَاسْتَبَقَ وَعِنْدَهُ رَجُلٌ وَهُوَ لَا  
يَشْعُرُ بِهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ هَذَا  
اخْتَرَطَ سَيْفِي فَقَالَ: مَنْ يَمْلِكُ؟ قُلْتُ:  
اللَّهُ)). فَشَامَ السَّيْفَ. فَهَا هُوَ ذَا جَالِسٍ.  
ثُمَّ لَمْ يَغَاقِبْهُ)). [راجع: ۲۹۱۰]

۸۸- بَابُ مَا قِيلَ فِي الرَّمَاحِ  
وَيَذْكُرُ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ:

(ﷺ) ने फ़र्माया मेरी रोज़ी मेरे नेजे के साथे के नीचे मुकद्दर की गई है और जो मेरी शरीअत की मुखालफ़त करे, उसके लिये ज़िल्लत और ख़वारी को मुकद्दर किया गया है।

(جَعَلَ رَزْقِي تَحْتَ ظِلِّ رَحْمَتِي وَجَعَلَ  
الذِّلَّةَ وَالْخَوَارِ عَلَى مَنْ خَالَفَ أَمْرِي)۔

इस हदीष को इमाम अहमद ने क़बूल किया। मतलब ये कि मेरा पेशा सिपाहिगी है। दूसरी हदीष में है कि मेरी उम्मत की सौदागिरी जिहाद है।

2914. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें उमर बिन अब्दुल्लाह के मौला अबुन नज़्र ने और उन्हें अबू क़तादा अंसारी के मौला नाफ़ेअ ने और उन्हें अबू क़तादा (रज़ि.) ने कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे (मुलह हुदैबिया के मौक़े पर) मक्का के रास्ते में आप (ﷺ) अपने चन्द साथियों के साथ जो एहराम बाँधे हुए थे, लश्कर से पीछे रह गए। ख़ुद क़तादा (रज़ि.) ने अभी एहराम नहीं बाँधा था। फिर उन्होंने एक गोरख़र देखा और अपने घोड़े पर (शिकार करने की निव्यत से) सवार हो गये, उसके बाद उन्होंने अपने साथियों से (जो एहराम बाँधे हुए थे) कहा कि कोड़ा उठा दें उन्होंने उससे इंकार कर दिया, फिर उन्होंने अपना नेज़ा मांगा उसके देने से उन्होंने इंकार किया, आख़िर उन्होंने ख़ुद उसे उठाया और गोरख़र पर झपट पड़े और उसे मार लिया। नबी करीम (ﷺ) के सहाबा में से कुछ ने तो उस गोरख़र का गोश्त खाया और कुछ ने उसके खाने से (एहराम के इज़र की बिना पर) इंकार कर दिया। फिर जब ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे तो उसके बारे में मसला पूछा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो एक खाने की चीज़ थी जो अल्लाह तआला ने तुम्हें अत्ता की। और ज़ैद बिन असलम से रिवायत है कि उनसे अत्ता बिन यसार ने बयान किया और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने गोरख़र के (शिकार के) बारे में अबुन नज़्र ही की हदीष की तरह (अल्बत्ता उस रिवायत में ये ज़ाइद है कि) नबी करीम (ﷺ) ने पूछा क्या उसका कुछ बचा हुआ गोश्त अभी तुम्हारे पास मौजूद है? (राजेअ: 1821)

٢٩١٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِبَعْضِ طَرِيقِ مَكَّةَ تَخَلَّفَ مَعَ أَصْحَابٍ لَهُ مُخْرِمِينَ وَهُوَ غَيْرُ مُحْرِمٍ، فَرَأَى جِمَارًا وَخَشْيًا، فَاسْتَوَى عَلَى فَرَسِهِ، فَسَأَلَ أَصْحَابَهُ أَنْ يُنَاقِلُوهُ سَوَطَةً فَلَابُوا، فَسَأَلَهُمْ رُحْمَةً فَلَابُوا، فَأَخَذَهُ ثُمَّ شَدَّ عَلَى الْجِمَارِ فَقَتَلَهُ، فَأَكَلَ مِنْهُ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبَى بَعْضٌ، فَلَمَّا أذْرَكُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ: ((إِنَّمَا هِيَ طُعْمَةٌ أَطْعَمَكُمْوَهَا اللَّهُ))۔  
وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ فِي الْجِمَارِ الْوَحْشِيِّ يَقُولُ حَدِيثُ أَبِي النَّضْرِ قَالَ: ((هَلْ مَعَكُمْ مِنْ لَحْمِهِ شَيْءٌ؟))۔

[راجع: ١٨٢١]

**तशीह:** इस हदीष में हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) का नेज़ों से मुसल्लह (हथियारबंद) होना मज़कूर हुआ है, इसी से बाब का मतलब प्राबित हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की रिवायत का मक़सद ये कि मुसलमान के लिये ये अम्र बाअिषे फ़ख़्र है कि वो हर हाल में अल्लाह का सिपाही है हर हाल में सिपाहियाना जिन्दगी गुज़ारना यही उसका ओढ़ना और बिछौना है। स़द अफ़सोस कि आम अहले इस्लाम बल्कि ख़ास तक इन हक़ाइक़े इस्लाम से हद दर्जा गाफ़िल हो गए हैं।



इलम-ए-जवाहिर सिर्फ फुरुई मसाइल में उलझकर रह गये और हक्काइके इस्लाम नजरो से बिलकुल ओझल हो गये जिसकी सज़ा सारे मुसलमान आम तौर पर गुलामाना ज़िन्दगी की शक्ल में भुगत रहे हैं। इल्ला मन शाअल्लाहु

### बाब 89 : आँहज़रत (ﷺ) का लड़ाई में ज़िरह पहनना

इसी तरह कुर्ता (लोहे) का और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि, ख़ालिद बिन वलीद ने तो अपनी ज़िरहें अल्लाह के रास्ते में वक्फ़ कर रखी हैं, (फिर उससे ज़कात का मांगना बेजा है)

2915. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहहाब शक्फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इकिस्मा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (बद्र के दिन) दुआ फ़र्मा रहे थे, उस वक़्त आप (ﷺ) एक ख़ैमे में तशरीफ़ फ़र्मा थे, कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे अहद और तेरे वादे का वास्ता देकर फ़रियाद करता हूँ ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो आज के बाद तेरी इबादत न की जाएगी। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का हाथ पकड़ लिया और अर्ज़ किया बस कीजिए ऐ अल्लाह के रसूल! आप (ﷺ) ने अपने रब के हुज़ूर में दुआ की हद कर दी है। आँहज़रत उस वक़्त ज़िरह पहने हुए थे। आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए तो जुबाने मुबारक पर ये आयत थी (तर्जुमा) जमाअते (मुशिकीन) जल्द ही शिकस्त खाकर भाग जाएगी और पीठ दिखाना इख़्तियार करेगी और क़यामत के दिन उनसे वा'दा है और क़यामत का दिन बड़ा ही भयानक और तलख़ होगा, और वुहैब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने बयान किया कि बद्र के दिन का (ये वाक़िया है)। (दीगर मक़ाम : 3953, 4875, 4877)

٨٩- بَابُ مَا قِيلَ فِي دِرْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَالْقَمِيصِ فِي الْحَرْبِ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَمَّا خَالِدٌ فَقَدْ اخْتَسَنَ أَذْرَاعَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

٢٩١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ. اللَّهُمَّ إِن شِئْتَ لَمْ تَعْبُدْ بَعْدَ الْيَوْمِ)). فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ بِيَدِهِ فَقَالَ: حَسْبُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَدْ أَلْحَقْتَ عَلَى رَأْسِكَ. وَهُوَ فِي النَّزْعِ، فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: ((مُسَيِّزُ الْجَمْعِ وَيُولُونَ الدَّبْرَ. بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذَى وَأَمْرٌ)).

وَقَالَ وَهَيْبٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ ((يَوْمَ بَنِي)) بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذَى وَأَمْرٌ.

(طَرَفُهُ فِي: ٣٩٥٣، ٤٨٧٥، ٤٨٧٧)

**तशरीह :**

या'नी ऐ अल्लाह! आज तू अपना वा'दा अपने फ़ज्लो-क़रम से पूरा कर दे। वा'दा ये था कि या तो क़ाफ़िला आएगा या क़ाफ़िरो पर फ़तह होगी। आँहज़रत (ﷺ) को अल्लाह के वा'दे पर कामिल भरोसा था। मगर मुसलमानों की बेसरो-सामानी और क़िल्लत और क़ाफ़िरो की क़षरत को देखकर ब मुक्तज़ाए बशरीयत आपने फ़र्माया, लन तुअबद बअदल् यौम का मतलब ये कि दुनिया में आज तेरे ख़ालिफ़ पूजने वाले यही तीन सौ तेरह आदमी हैं, अगर तू इनको हलाक कर देगा तो तेरी मर्ज़ी। चूँकि मेरे बाद फिर कोई पैग़म्बर नहीं आएगा तो क़यामत तक शिकं ही शिकं रहेगा और तुझे कोई न पूजेगा। अल्लाह ने अपने प्यारे नबी की दुआओं को कुबूल किया और बद्र में क़ाफ़िरो को वो शिकस्त दी कि आइन्दा के लिये उनकी कमर टूट गई और अहले इस्लाम की तरफ़ी के रास्ते खुल गए। इस हदीष से मैदाने जंग में ज़िरह पहनना प्राबित हुआ। आज कल मशीनी दौर है लिहाज़ा मैदाने जंग के भी पुराने तौर-तरीके बदल गए हैं।

2916. हमसे मुहम्मद बिन क़ौरी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफयान बौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अस्वद ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की ज़िरह एक यहूदी के पास तीस स़ाअ जौ के बदले में रहन रखी हुई थी। और यअला ने बयान किया कि हमसे आ'मश ने बयान किया कि लोहे की ज़िरह (थी) और मुअल्ला ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने लोहे की एक ज़िरह रहन रखी थी। (राजेअ : 2068)

٢٩١٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((تَوَفَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَدُرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِلَاتَيْنِ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ)). وَقَالَ يَحْيَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ ((دُرْعٌ مِنْ حَدِيدٍ)). وَقَالَ مُعَلَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ وَقَالَ ((رَهْنُهُ دِرْعًا مِنْ حَدِيدٍ)). [راجع: ٢٠٦٨]

इस हदीष से ज़िरह रखने का पुबूत हुआ। ज़िरह लोहे का कुर्ता जिससे जंग में सारा जिस्म छुप जाता है और उस पर किसी ने ज़े या बरछे का अपर न होता था। क़दीम ज़माने में तक्रीबन सारी ही दुनिया में मैदाने जंग में ज़िरह पहनने का रिवाज था।

2917. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बख़ील (जो ज़कात नहीं देता) और ज़कात देने वाले (सखी) की मिथाल दो आदमियों जैसी है, दोनों लोहे के कुर्ते (ज़िरह) पहने हुए हैं, दोनों के हाथ गर्दन से बँधे हुए हैं ज़कात देने वाला (सखी) जब भी ज़कात का इरादा करता है तो उसका कुर्ता इतना कुशादा हो जाता है कि ज़मीन पर चलते में घिसटता जाता है लेकिन जब बख़ील स़दका का इरादा करता है तो उसकी ज़कात एक एक हल्का उसके बदन पर तंग हो जाता है और इस तरह सिकुड़ जाता है कि उसके हाथ उसकी गर्दन से जुड़ जाते हैं। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि फिर बख़ील उसे ढीला करना चाहता है लेकिन वो ढीला नहीं होता। (राजेअ : 1443)

٢٩١٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الْبَخِيلِ وَالْمُتَصَدِّقِ مَثَلُ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ قَدْ اضْطَرَّتْ أَيْدِيهِمَا إِلَى تَرَاقِيهِمَا، فَكُلَّمَا هُمُ الْمُتَصَدِّقُ بِصَدَقَتِهِ انْتَفَعَتْ عَلَيْهِ حَتَّى تَغْفِيَ أَثَرَهُ، وَكُلَّمَا هُمُ الْبَخِيلُ بِالصَّدَقَةِ انْقَضَتْ كُلُّ خَلْقَةٍ إِلَى خَاصِيَّتِهَا وَتَقَلَصَتْ عَلَيْهِ وَانْضَمَّتْ بِذَاءٍ إِلَى تَرَاقِيهِ)). فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ ((لِيَجْهَذَا أَنْ يَوْسَعَهَا فَلَا تَسْعَ)). [راجع: ١٤٤٣]

**तशरीह :** ये हदीष किताबुज ज़कात में गुजर चुकी है। मज़लब ये है कि सखी का दिल तो ज़कात और स़दका देने से खुश और कुशादा हो जाता है और बख़ील अव्वल तो ज़कात देता नहीं दूसरे जबरन क़हरन कुछ दे भी तो दिल तंग और रंजीदा हो जाता है, उसकी ज़िरह के हल्के सिकुड़ने की यही ता'बीर है। बुखल की मज़मूमत में बहुत सी आयात व अह्दादीष मौजूद हैं, मर्दे मोमिन ज़कात निकालने और अल्लाह के लिये खर्च करने से इस क़दर खुश होता है गोया उसकी ज़िरह ने कुशादा होकर उसके सारे जिस्म को ढांप लिया, उसकी ज़िरह की कुशादगी से भी ज़्यादा उसका दिल कुशादा हो जाता है। अल्लाह हर

मुसलमान को ये खूबी अज्ञात करे आमीन। चौंके इस हदीष में ज़िरह का ज़िक्र था, इसलिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) यहाँ इसको लाए और ज़िरह का इल्ज़ाम फर्माया।

## बाब 90 : सफ़र और लड़ाई में जुब्बा पहनने का

### बयान

2918. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबुज्ज़ुहा मुस्लिम ने, जो सबीह के साहबज़ादे हैं, उनसे मसरूक ने बयान किया और उनसे मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाज़त के लिये तशरीफ़ ले गए। जब आप (ﷺ) वापस हुए तो मैं पानी लेकर ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप (ﷺ) शामी जुब्बा पहने हुए थे। फिर आप (ﷺ) ने कुल्ली की और नाक में पानी डाला और अपने चेहरा मुबारक को धोया। उसके बाद (हाथ धोने के लिये) आस्तीन चढ़ाने की कोशिश की लेकिन आस्तीन तंग थी इसलिये हाथों को नीचे से निकाला फिर उन्हें धोया और सर का मसह किया और दोनों मोज़ों का भी मसह किया। (रज़ेअ: 182)

## बाब 91 : लड़ाई में हरीर या'नी ख़ालिस रेशमी

### कपड़ा पहनना

**तशरीह :** इस मसले में इख़्तिलाफ़ है, इमाम मालिक (रह.) और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने मुल्लकन इसका पहनना मदीं पर हाराम रखा और इमाम शाफ़िई और इमाम अबू यूसुफ़ ने कहा ज़रूरत के लिये जाइज़ है जैसे ख़ारिश या जुओं में और अहले हदीष के नज़दीक लड़ाई में भी जाइज़ है बल्कि इब्ने माजिशून ने कहा मुस्तहब है दुश्मन को डराने के लिये।

2919. हमसे अहमद बिन मिज़दाम ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और जुबैर (रज़ि.) को ख़ारिश के मर्ज़ की वजह से रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी थी, जो उन दोनों को लाहक़ हो गई थी जो इस मर्ज़ में मुफ़ीद है।

(दीगर मक़ाम : 2920, 2921, 2922, 5831)

### तशरीह :

ये हदीष लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने इसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जो आगे बयान किया कि ये इजाज़त जिहाद में हुई और अबू दाऊद की रिवायत में है कि ये इजाज़त सफ़र में दी। अब दूसरी रिवायत में इजाज़त की इल्लत जूएँ मज़कूर हैं इस रिवायत में खुजली। दोनों में तत्बीक़ यूँ होगी कि पहले जूएँ पड़ी होंगी फिर जुओं की वजह से

## 90- باب الحجّة في السفر

### والحرب

٢٩١٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَنْ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ أَبِي الضُّحَى مُسْلِمٌ هُوَ ابْنُ صَبِيحٍ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ قَالَ: انْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِحَاجَتِهِ، ثُمَّ أَقْبَلَ، فَتَلَقَّيْنِي بِمَاءٍ - وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَةٌ - فَمَضَمْتُ وَاسْتَشَقُّ، وَغَسَلَ وَجْهَهُ، فَلَذَبَ بِخُرْجِ يَدَيْهِ مِنْ كُمَيْهِ فَكَانَا ضَيِّقَيْنِ، فَأَخْرَجْنَاهَا مِنْ تَحْتِ، فَفَسَلْنَاهُمَا، وَنَسَحَ بِرَأْسِهِ وَعَلَى خُفَيْهِ. [راجع: ١٨٢]

## 91- باب الحرير في الحرب

٢٩١٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَفْصِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْخَوَارِثِ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَنَهُمْ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخَصَ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ فِي قَيْصَرٍ مِنْ حَرِيرٍ مِنْ حِكْمَةٍ كَانَتْ بِهِمَا))

[أطرافه في: ٢٩٢٠، ٢٩٢١، ٢٩٢٢]

[٥٨٣١]

खुजली पैदा हो गई होगी। कहते हैं रेशमी कपड़ा खारिश को खो देता है और जुओं को मार डालता है। (वहीदी)

2920. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से जुओं की शिकायत की तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी, फिर मैंने जिहाद में उन्हें रेशमी कपड़ा पहने हुए देखा। (राजेअ: 2919)

٢٩٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرَ شَكَوَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ - يَغْنِي الْقَمَلُ - فَأَرْخَصَ لَهُمَا فِي الْخَزِيرِ، فَرَأَيْتُهُ عَلَيْهِمَا فِي غَزَاةٍ)).

[راجع: ٢٩١٩]

2921. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उन्हें क़तादा ने ख़बर दी और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) को रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी थी। (राजेअ: 2919)

٢٩٢١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ أَخْبَرَنِي قَتَادَةُ أَنَّ أَنَسَ حَدَّثَهُمْ قَالَ: ((رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ لَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ فِي خَزِيرٍ)).

[راجع: ٢٩١٩]

2922. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि (नबी करीम (ﷺ) ने) रुख़सत दी थी या (ये बयान किया कि) रुख़सत दी गई थी, उन दोनों हज़रात को खारिश की वजह से जो उनको लाहक़ हो गई थी। (राजेअ: 2919)

٢٩٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((رَخَّصَ - أَوْ رَخَّصَ - لَهُمَا لِحِكْمَةٍ بِهِمَا)). [راجع: ٢٩١٩]

## बाब 92 : छुरी का इस्ते'माल करना दुरुस्त है

2923. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे जा'फ़र बिन अमर बिन उमय्या ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि आप (ﷺ) शाने का गोश्त (छुरी से) काटकर खा रहे थे, फिर नमाज़ के लिये अज़ान हुई तो आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी लेकिन वुजू नहीं किया। हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी और उन्हें जुहरी ने (इस रिवायत में) ये ज़्यादाती भी मौजूद है कि (जब आप ﷺ नमाज़ के लिये बुलाए गए तो) आप

٩٢- بَابُ مَا يُذَكَّرُ فِي السُّكَيْنِ  
٢٩٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُ مِنْ كَيْفٍ يَخْتَرُ مِنْهَا، ثُمَّ دَعَى إِلَى الصَّلَاةِ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ)). حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ وَزَادَ: ((فَأَلْفَى

(ﷺ) ने छुरी डाल दी। (राजेज़: 208)

(السُّكَيْنَ). [راجع: 208]

ये हदीस किताबुल वुजू में गुजर चुकी है और यहाँ इमाम बुखारी (रह.) इसको इसलिये लाए कि जब छुरी का इस्ते'माल दुरुस्त हुआ तो जिहाद में भी इसको रख सकते हैं। ये भी एक हथियार है। मुजाहिदीन को बहुत सी ज़रूरियात में छुरी भी काम आ सकती है, इसलिये इसका भी सफ़र में साथ रखना जाइज़ है।

### बाब 93 : नसारा से लड़ने की फ़ज़ीलत का बयान

2924. हमसे इस्हाक़ बिन यज़ीद दमिश्की ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हमज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे झौर बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन मअदान ने और उनसे झमैर बिन अस्वद अन्सी ने बयान किया कि वो इब्बादा बिन स्यामित (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपका क़याम साहिले हिम्म पर अपने ही एक मकान में था और आपके साथ (आपकी बीवी) उम्मे हराम (रज़ि.) थीं। झमैर ने बयान किया कि हमसे उम्मे हराम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मेरी उम्मत का सबसे पहला लश्कर जो दरियाई सफ़र करके जिहाद के लिये जाएगा, उसने (अपने लिये अल्लाह तआला की रहमत व मफ़िरत) वाजिब कर ली। उम्मे हराम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा था या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं भी उनके साथ होऊँगी? आपने फ़र्माया कि हाँ, तुम भी उनके साथ होगी। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे पहला लश्कर मेरी उम्मत का जो क़ैसर (रोमियों के बादशाह) के शहर (कुस्तुन्तुनिया) पर चढ़ाई करेगा, उनकी मफ़िरत होगी। मैंने कहा मैं भी उनके साथ होऊँगी या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। (राजेज़: 2789)

٩٣- بَابُ مَا قِيلَ فِي قِتَالِ الرُّومِ  
٢٩٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ  
الذَّبِيثِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَمْرَةَ قَالَ:  
حَدَّثَنِي زُورُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْلَانَ  
أَنْ غَمَزَ بِنَ الْأَمْوَدِ النَّسَبِيَّ حَدَّثَهُ أَنَّهُ  
أَتَى عَبْدَةَ بْنَ الصَّلَاحِ وَهُوَ نَزَلَ فِي  
سَاحِلِ حِمَاصٍ وَهُوَ فِي بَنَاءٍ لَهُ وَمَعَهُ أُمُّ  
حَرَامٍ، قَالَ غَمَزَ: فَحَدَّثَنَا أُمُّ حَرَامٍ أَنَّهَا  
سَمِعَتْ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((أَوَّلُ جَيْشٍ  
مِنْ أُمَّتِي يَغْزُونَ الْبَحْرَ قَدْ أُوجِهُوا)).  
قَالَتْ أُمُّ حَرَامٍ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
أَنَا فِيهِمْ؟ (( قَالَ أَنتَ فِيهِمْ)). ثُمَّ قَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُونَ  
مَدِينَةَ قَيْصَرَ مَغْفُورٌ لَهُمْ)). قَالَتْ: أَنَا  
فِيهِمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((لَا)).

[راجع: 2789]

**तशरीह:** पहला जिहाद हज़रत उस्मान (रज़ि.) के ज़माने में (अमीर मुआविया की क़यादत में) 28 हिजरी में हुआ जिस पर जज़ीरा कुबरस के नसारा पर चढ़ाई की गई, उसी में हज़रत उम्मे हराम (रज़ि.) शरीक थीं, वापसी में ये रास्ते पर सवारी से गिरकर शहीद हो गई। दूसरा जिहाद 55 हिजरी में हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में हुआ जिसमें कुस्तुन्तुनिया पर हमला किया गया था। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) ने उसी में शहादत पाई थी और कुस्तुन्तुनिया ही में दफ़न किये गये। ये लश्कर यज़ीद बिन मुआविया की ज़ेरे क़यादत था। मगर ख़िलाफ़त हज़रत मुआविया (रज़ि.) ही की थी इसलिये इससे यज़ीद की ख़िलाफ़त की सिहत पर दलील पकड़ना ग़लत हुआ और लश्करवालों की बख़्शिश की जो बशारत दी गई इससे ये लाज़िम नहीं आता कि लश्कर का हर एक फ़र्द बख़्शा जाए। खुद आँहज़रत (ﷺ) के साथ एक आदमी ख़ूब बहादुरी से लड़ा था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया था उसके बारे में कि वो ज़हनमी है पस ज़न्नती और ज़हनमी होने में ख़ातिमा का ए'तिबार है। (वहीदी) नोट :- यहाँ अल्लामा वहीदुज्जमाँ मरहूम (रह.) को ज़बरदस्त ग़लतफ़हमी हुई है। और नबी (ﷺ) की पेशीनगोई की बेजा

तावील कर डाली है। हालाँकि नबी (ﷺ) की कही हुई बात हर्फ ब हर्फ पूरी होती है। नबी (ﷺ) के साथ जो लश्कर लड़ रहा था, उन सबके जन्नती होने की पेशीनगोई आप (ﷺ) ने नहीं फ़र्माई थी और उसके बरअक्स कुस्तुनुनिया के सारे लश्करियों के जन्नती होने की आप (ﷺ) ने पेशीनगोई फ़र्माई थी। अल्लाह तआला की रहमतों को महद्द करने का इख्तियार किसी इंसान के पास नहीं है। (महमूदुल हसन असद)

### बाब 94 : यहूदियों से लड़ाई होने का बयान

2925. हमसे इस्हाक़ बिन मुहम्मद फ़रवी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (एक दौर आएगा जब) तुम यहूदियों से जंग करोगे। (और वो शिकस्त खाकर भागते फिरेंगे) कोई यहूदी अगर पत्थर के पीछे छुप जाएगा तो वो पत्थर भी बोल उठेगा कि, ऐ अल्लाह के बन्दे! ये यहूदी मेरे पीछे छुपा बैठा है इसे क़त्ल कर डाल। (दीगर मक़ाम : 3593)

2926. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमको जरीर ने ख़बर दी अम्मार बिन क़अकाअ से, उन्हें अबू जरआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि यहूदियों से तुम्हारी जंग न हो लेगी और वो पत्थर भी उस वक़्त (अल्लाह तआला के हुक्म से) बोल उठेंगे जिसके पीछे यहूदी छुपा हुआ होगा कि ऐ मुसलमान! ये यहूदी मेरी आड़ लेकर छुपा हुआ है इसे क़त्ल कर डालो।

ये क़यामत के करीब हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के नुज़ूल के बाद होगा।

### बाब 95 : तुर्कों से जंग

**तस्रीह:** तुर्क से मुराद यहाँ वो क़ौम है जो याफ़िष बिन नूह की औलाद में से है उनको क़ौमे तार-तार (तातार) कहा गया है। ये लोग ख़ुलफ़ा के अहद तक काफ़िर थे यहाँ तक कि हलाकू खाँ तुर्क ने अरबों पर चढ़ाई की और ख़िलाफ़ते बनू अब्बासिया का काम तमाम किया। उसके कुछ बाद तुर्क मुशरिफ़ इस्लाम हुए जिनके इस्लाम की मुख़तसर कहानी ये है।

### तातारी दौलत :-

ऐल ख़ानिया का वो पहला बादशाह जिसने इस्लाम कुबूल किया तक्विदार था, ये बादशाह हलाकू खाँ का छोटा लड़का था, जो अबाक़ा खाँ के बाद मुग़ल तख़्त व ताज का मालिक हुआ। डॉक्टर सर थॉमस आरनॉल्ड ने प्रीचिंग ऑफ़ इस्लाम में उस दौर के ईसाई मुअरिख़ के हवाले से तक्विदार खाँ का एक मक्तूब नक़ल किया है जो उसने सुलताने मिस्र के नाम ख़ाना किया था। मक्तूब नक़ल करने से पहले वो ईसाई मुअरिख़ तक्विदार का तआरुफ़ कराते हुए लिखता है :

### ٩٤- بَابُ قِتَالِ الْيَهُودِ

٢٩٢٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْقُرَوِيُّ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((تَقَابِلُونَ الْيَهُودَ حَتَّى يَخْتَبِئَ أَحَدُهُمْ وَرَاءَ الْحَجَرِ فَيَقُولَ يَا عَبْدَ اللَّهِ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَأَيْتُ لِقَاتُهُ)).

[طريقه ن: ٣٥٩٣]

٢٩٢٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقُفَيْحِ عَنْ أَبِي رُزَيْعَةَ عَنْ أَبِي مُرَّةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَابِلُوا الْيَهُودَ، حَتَّى يَقُولَ الْحَجَرُ وَرَاءَهُ الْيَهُودِيُّ: يَا مُسْلِمُ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَأَيْتُ لِقَاتُهُ)).

### ٩٥- بَابُ قِتَالِ التُّرْكِ

तक्विदार की ता'लीम व तर्बियत ईस्वी मज़हब के मुताबिक हुई थी। बचपन में इसे इस्तिबाग़ा (बपतिस्मा) मिला था और उसका नाम नकूलस रखा गया था लेकिन नकूलस जब जवान हुआ तो उसे मुसलमानों की सुहबत नसीब हो गई मुसलमानों की सुहबत ने नकूलस पर बहुत अप्र डाला वो इस ता'ल्लुक और मेलजोल को बहुत अज़ीज़ रखने लगा था। (नोट : ईसाई मज़हब में धर्म की जो दीक्षा दी जाती है उसे बपतिस्मा कहा जाता है)। मुसलमानों के साथ नकूलस के मेलजोल का ये नतीजा निकला कि वो मुसलमान हो गया और उसने अपना नाम सुल्तान मुहम्मद रखा। इस्लामी नज़रियात कुबूल करके नकूलस या 'नी सुल्तान मुहम्मद ने इस अम्र की कोशिश की कि उसकी पूरी तातारी क्रौम तातारी की रोशनी से मुनव्वर हो जाए, वो एक बासतूत (तरक़ी-पसंद) शहंशाह था। उसने इस्लामी तौहीद और इस्लामी अख़लाक़ कुबूल करने वालों के लिये इन्आम व इकराम मुक़र्र किया और उन्हें इख़्तियार और इज़्जत के ओहदों पर मामूर किया। शहंशाह के इस ऐजाज़ व इकराम का तातारी अवाम पर बड़ा अप्र पड़ा और तातारियों की बड़ी ता'दाद ने तौहीद व अख़िरत का इस्लामी तसव्वुर कुबूल कर लिया।

इस तआरुफ़े तम्हीद के बाद उस दौर का ईसाई मुअरिख़ सुल्तान मुहम्मद (नकूलस) का वो तारीख़ी मक्तूब लिखता है जो उसने मिस्री फ़र्मा रवा के नाम भेजा था। वो मक्तूब ये है :

सुल्तान मुहम्मद का फ़र्मान शाहे मिस्र के नाम। बाद तम्हीद के वाज़ेह हो कि अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल व करम से हमें हिदायत की रोशनी अता की। जवानी के आगाज़ में हमको अपनी उलूहियत व वहदानियत का इकरार करने और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की पैगम्बराना सदाक़त को तस्लीम करने और अल्लाह के नेक बन्दों के बारे में अच्छी राय रखने की तौफ़ीक़ बख़शी। फ़मंच्युरिदिल्लाहु अय्यहदियहू यशरह मदरहू लिलइस्लाम (अल अन्आम : 125) तर्जुमा : अल्लाह तआला जिसको जिन्दगी के बेहतरीन रास्ते पर चलाना चाहता है तो उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है। हम उस वक़्त से आज तक दीने हक़ को सर बुलन्द करने और मुसलमानों के मुआमलात को सुधारने पर तवज्जह कर रहे हैं। यहाँ तक कि वालिद बुजुर्गवार हलाकू ख़ाँ और बिरादर बुजुर्ग (अबाक़ा ख़ाँ) की तरफ़ से हुक्मरानी की ज़िम्मेदारी हम पर आ पड़ी और अल्लाह तआला ने हमारी आरजुओं को पूरा करने का मौक़ा फ़राहम किया। एक वक़्त था कि मुक़द्दस कोरलितानी (मज्लिसे उमरा) में ये फ़ैसला हुआ कि हमारे बिरादर बुजुर्ग के हुक्म से फ़ौजकशी मुहिम को जारी रखा जाए और हमारी उन फौजों को हर तरफ़ रवाना किया जाए जिनकी क़षरत से अल्लाह की ज़मीन बावजूद वसीअ होने के तंग हो चुकी थी और जिन फौजों की सौलत व हैबत (रोब, दबदबे व आतंक) से दुनिया का दिल कांपता और थरथरा जाता था और फ़ौजकशी का फ़ैसला हमारे ऐवान उमरा के शहज़ादगान और सिपाहसालारान ऐसे मुस्तहक़म अज़म व इरादे से करते कि जिसके सामने पहाड़ झुक जाएँ और संग ख़ारा मोम हो जाएँ। लेकिन आज वो वक़्त है कि हमारी मज्लिस शहज़ादगान व उमरा में ये मश्विरा होता है कि इस्लाम के कलिमे को सरबुलन्द किया जाए, ख़ुरैजी का सिलसिला बन्द किया जाए, चारों ओर अमन व अमान का दौर दौरा हो, हमारी मम्मलकत के हुक्म हमारी शफ़क़त से आराम पाएँ क्योंकि हम अल्लाह की अज़मत को तस्लीम करते हैं और अल्लाह के बन्दों पर मेहरबान हैं। हमारे इस फ़ैसले को शौखुल इस्लाम कुदवतुल आरिफ़ीन के नेक मश्वरों ने तक्वियत दी है। हमने क़ाज़ियुल क़सनात कुतुबुद्दीन शौराजी और अताबक बहाउद्दीन को मुल्क के आसपास इलाकों में भेजा है ताकि वो अवाम को हमारे इस तरीक़-ए-कार से आगाह करें, इस्लाम पिछले गुनाहों को मुआफ़ कर देता है। अब अल्लाह ने हमको हक़ की पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़र्माई है।

हलाकू ख़ाँ के लड़के तक्विदार ख़ाँ के इस मक्तूब के बाद सर थॉमस लिखता है। मुग़ल तारीख़ के जानने वाले को इस मक्तूब के मुतालआ (अध्ययन) से राहत और सुकून हासिल हुआ होगा।

2927. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा मैंने हसन से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अम्म बिन त़ल्लिब (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत की निशानियों में से है कि

۲۹۲۷- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ  
بْنُ حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ:  
حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ قَلْبٍ قَالَ: قَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ

तुम ऐसी क़ौम से जंग करोगे जो बातों की बनाते हैं (या उनके बाल बहुत लम्बे होंगे) और क़यामत की एक निशानी ये है कि उन लोगों से लड़ोगे जिनके मुँह चौड़े होंगे गोया वो ढालें हैं चमड़ा जमी हुई (या'नी बहुत मोटे मुँह वाले होंगे)। (दीगर मक़ाम : 3592)

हदीष में मुतरक़ह है मा'नी दोनों के एक ही है, इससे तातार क़ौम मुराद हैं जो बाद में दौलते इस्लाम से मुशरफ़ हुए।

**तशरीह :** तुर्क से मुराद यहाँ वो क़ौम है जो याफ़्रू बिन नूह की औलाद में से हैं। अलल इमूम तातार के लोग आँहज़रत (ﷺ) और ख़ुलफ़-ए-इस्लाम के ज़मानों तक काफ़िर रहे। यहाँ तक कि हलाकू ख़ाँ तुर्क ने अरबों पर चढ़ाई करके ख़िलाफ़ते अब्बासिया का ख़ात्मा किया। उसके बाद कुछ तुर्क मुशरफ़े इस्लाम हुए। वहब बिन मुनब्बा ने कहा कि तुर्क याज़ूज माज़ूज के चचेरे भाई हैं। जब दीवार बनाई गई तो ये लोग ग़ायब थे वो दीवार के उसी तरफ़ रह गये। इसीलिये उनका नाम तुर्क या'नी मतरूक हो गया, वल्लाहु आलाम बिस्सवाब।

2928. हमसे सईद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे झालेह बिन कैसान ने, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम तुर्कों से जंग न कर लोगे, जिनकी आँखें छोटी होंगी, चेहरे सुर्ख होंगे, नाक मोटी फैली हुई होगी, उनके चेहरे ऐसे होंगे जैसे तहबन्द चमड़ा लगी हुई होती है और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम से जंग न कर लोगे जिनके जूते बाल के बने हुए होंगे।

(दीगर मक़ाम : 2929, 3587, 3590, 3591)

### बाब 96 : उन लोगों से लड़ाई का बयान जो बालों की जूतियाँ पहने होंगे

2929. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि तुम एक ऐसी क़ौम से लड़ाई न कर लोगे जिनके जूते बालों के होंगे और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम से जंग न कर लोगे जिनके चेहरे

تَقَابِلُوا قَوْمًا يَتَّبِعُونَ بِعَالِ الشَّعْرِ، وَإِنْ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ تَقَابِلُوا قَوْمًا عِرَاضَ الْوُجُوهِ كَانَ وَجُوهُهُمُ الْمَجَانُ الْمَطْرَقَةُ. (طرمه ن: 3592).

2928 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنْ الْأَعْرَجِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَاتِلُوا التُّرُكَ، صِفَاتُ الْأَعْيُنِ حُمْرُ الْوُجُوهِ، ذُلْفُ الْأَنْفِ، كَانَ وَجُوهُهُمُ الْمَجَانُ الْمَطْرَقَةُ. وَلَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَابِلُوا قَوْمًا يَغَالَهُمُ الشَّعْرُ)). [أطرافه ن: 2929, 3587, 3590, 3591].

### 96 - بَابُ قِتَالِ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّعْرَ

2929 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسْتَنَبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَاتِلُوا قَوْمًا يَغَالَهُمُ الشَّعْرُ، وَلَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَابِلُوا قَوْمًا كَانَ وَجُوهُهُمُ



तहशुदा ढालों जैसे होंगे। सुफयान ने बयान किया कि उसमें अबुज्जिनाद ने अजरज से और उन्होंने अबू हुदैरह (रजि.) से ये ज्यादा नकल किया कि उनकी आँखें छोटी होंगी, नाक मोटी, चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह-ब-तह चमड़ा ढाल होती है। (राजेअ: 2928)

الْمَحْجَانُ الْمَطْرُوقَةُ)). قَالَ مَسْعُودٌ: وَزَادَ فِيهِ أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَوَاهُ: ((مِصَارُ الْأَعْيُنِ، ذَلِكَ الْأَنُوفِ، كَانَ وَجُوهُهُمُ الْمَحْجَانُ الْمَطْرُوقَةُ)).

[راجع: ٢٩٢٨]

इस हदीस में भी क़ौमे तुर्क का बयान है और ये उनके कुबूले इस्लाम से पहले का ज़िक्र है। कहते हैं कि दुनिया में तीन क़ौमे ऐसी हैं कि उन्होंने, ख़ास तौर पर सारी क़ौम ने इस्लाम कुबूल कर लिया, अरब, तुर्क और अफ़ग़ान। ये जब इस्लाम में दाख़िल हुए तो रूए ज़मीन पर सब ही मुसलमान हो गए। ज़ालिक फ़ज़लुल्लाहि यूतिहि मय्यशाउ

### बाब 97 : हार जाने के बाद इमाम का सवारी से उतरना और बचे-खुचे लोगों की सफ़ बाँधकर अल्लाह से मदद मांगना

2930. हमसे अमर बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रजि.) से सुना, उनसे एक साहब ने पूछा था कि अबू अम्मार! क्या आप लोगों ने हुनैन की लड़ाई में फ़रार इख़ितयार किया था? बराअ (रजि.) ने कहा नहीं अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पीठ हर्गिज़ नहीं फेरी थी। अल्बत्ता आप (ﷺ) के अस्हाब में जो नौजवान थे, वे सरो-सामान जिनके पास न ज़िरह थी, न ख़ूद और कोई हथियार भी ले गए थे, उन्होंने ज़रूर मैदान छोड़ दिया था क्योंकि मुक्राबले में हवाज़िन और बनू नज़्र के बेहतरीन तीरंदाज़ थे कि कम ही उनका कोई तीर ख़ता जाता (चूकता)। चुनाँचे उन्होंने ख़ूब तीर बरसाये और शायद ही कोई निशाना उनका ख़ता हुआ हो (उस दौरान में मुसलमान) नबी करीम (ﷺ) के पास आकर जमा हो गए। आप (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे और आप (ﷺ) के चचेरे भाई अबू सुफ़यान बिन हारिष इब्ने अब्दुल मुत्तलिब आप (ﷺ) की सवारी की लगाम थामे हुए थे। हुज़ूर (ﷺ) ने सवारी से उतरकर अल्लाह तआला से मदद की दुआ मांगी। फिर फ़र्माया कि मैं नबी हूँ इसमें ग़लतबयानी का कोई शुब्हा नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। उसके बाद आप (ﷺ) ने अपने अस्हाब की (नये तरीक़े पर) सफ़बन्दी की। (राजेअ: 2864)

٩٧- بَابُ مَنْ صَفَّ اصْحَابَهُ عِنْدَ الْهَرَمَةِ وَلَزَلَ عَنْ دَابَّتِهِ وَاسْتَقْصَرَ ٢٩٣٠- حَدَّثَنَا شُعْرَبُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْأَنْبِيَاءَ - وَنَالَهُ زَيْدٌ: أَلْتَقَمَ قُرُونَهُمْ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ يَوْمَ خَيْبِ - قَالَ لَا وَآلِهِ، مَا وَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنَّهُ خَرَجَ حَتَّى أَصْبَحَ وَصَفَّ لَهُمْ خَيْرًا لِمَنْ يَبْلُغُ، فَأَتَوْا قَوْمًا وَمَا جَمَعَ قَوْمَانِ وَتَبَى نَصْرٌ، مَا يَكُنَّ يَسْقُطُ لَهُمْ مِنْهُمْ، فَوَضَعُوهُمْ وَخَفَا مَا يَكُنَّ يَكُونُونَ يَخْطِئُونَ، فَأَتَوْا هَذَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ عَلَى بَقْلِيَةِ الْيَحْيَا وَأَتَى عَنْهُ أَبُو سَلْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ يَقُولُ بِهِ، قَرَأَ وَاسْتَقْصَرَ ثُمَّ قَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لَا تَحْزَنْ، أَلَا إِنَّ عَبْدَ الْمُطَّلِبِ)). ثُمَّ صَفَّ اصْحَابَهُ)).

[راجع: ٢٨٦٤]

## बाब 98 : मुश्रिकीन के लिये शिकस्त और जलजले की बद्दुआ करना

2931. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ईसा ने खबर दी, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने, उनसे इबैदा ने और उनसे अली (रजि.) ने बयान किया कि गज़व-ए-अहज़ाब (खन्दक) के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मुश्रिकीन को) ये बद्दुआ दी कि ऐ अल्लाह! उनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे। उन्होंने हमको सलातुल वुस्ता (अम्र की नमाज़) नहीं पढ़ने दी (ये आपने उस वक़्त फ़र्माया) जब सूरज ग़रूब हो चुका था और अम्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई थी। (दीगर मक़ाम : 4111, 4533, 6396)

2932. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़ियान बिन इययना ने बयान किया, उनसे इब्ने ज़क्वान ने, उनसे अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (सुबह की) दुआए कुनूत में (दूसरी रक़अत के रूकूअ के बाद) ये दुआ पढ़ते थे (तर्जुमा) ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को नजात दे, ऐ अल्लाह! वलीद को नजात दे, ऐ अल्लाह! अयाश बिन अबी रबीआ को नजात दे, ऐ अल्लाह! तमाम कमज़ोर मुसलमानों को नजात दे। (जो मक्का में मुश्रिकीन की सख़्तियाँ झेल रहे थे)। ऐ अल्लाह! मुजर पर अपना सख़्त अज़ाब नाज़िल करा ऐ अल्लाह ऐसा क़हत नाज़िल कर जैसा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में पड़ा था। (राजेअ : 797)

2933. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रजि.) से सुना, आप बयान करते थे कि ग़ज़व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये दुआ की थी ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले (क़यामत के दिन) हिसाब बड़ी सुरअत से लेने वाले ऐ अल्लाह! मुश्रिकों और कुफ़रकार की ज़माअतों को (जो मुसलमानों का इस्तिस्लाल करने आई हैं) शिकस्त दे। ऐ अल्लाह!

## 98- بَابُ الدُّعَاءِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ بِالْهَزِيمَةِ وَالزَّلْزَلَةِ

2931- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ الْأَخْزَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَلَأَ اللَّهُ بُيُوتَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا شَقَلُوا عَنْ صَلَاةِ الْوَسْطَى حِينَ غَابَتِ الشَّمْسُ)).

[أطرافه ي: 4111, 4533, 6396].

2932- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِ ذَكْوَانَ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُو فِي الْقُنُوتِ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ، اللَّهُمَّ أَنْجِ عِيَّاشَ بْنَ أَبِي رَيْثَةَ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَغْفِرِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ، اللَّهُمَّ اشْدُدْ زَطَاتِكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ سَبِّحْ

كُنَيْي يُونُسَ)). [راجع: 797]

2933- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: دَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ الْأَخْزَابِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ (اللَّهُمَّ مُزِلْ الْكُفَّابِ سَرِيحَ الْجَسَابِ، اللَّهُمَّ اهْزِمِ الْأَخْزَابِ، اللَّهُمَّ اهْزِمِهِمْ وَزَلِّلِهِمْ)

उन्हें शिकस्त दे और उन्हें झिंझोड़ कर रख दे। (दीगर मकाम :

2965, 3025, 4115, 6392, 7489)

2934. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जा'फर बिन औन ने बयान किया, हमसे सुफयान घौरी ने, उनसे अबू इस्हाक ने, उनसे अमर बिन मैमून ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का'बा के साये में नमाज़ पढ़ रहे थे। अबू जहल और कुरैश के कुछ दूसरे लोगों ने कहा कि कैंट की ओझड़ी लाकर कौन इन पर डालेगा? मक्का के किनारे एक कैंट ज़िबह हुआ था (और उसी की ओझड़ी लाने के वास्ते) उन सभी ने अपने आदमी भेजे और वो उस कैंट की ओझड़ी उठा लाए और उसे नबी करीम (ﷺ) के ऊपर (नमाज़ पढ़ते हुए) डाल दिया। उसके बाद फ़ातिमा (रज़ि.) आई और उन्होंने आप (ﷺ) के ऊपर से उस गंदगी को हटाया। आँहज़रत (ﷺ) ने उस वक़्त ये बददुआ की कि ऐ अल्लाह! कुरैश को पकड़! ऐ अल्लाह! कुरैश को पकड़! ऐ अल्लाह! कुरैश को पकड़! अबू जहल बिन हिशाम, इब्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन इब्बा, उबय बिन ख़ल्फ़ और इब्बा बिन अबी मुईज़ सबको पकड़ ले। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा चुनौचे मैंने उन सबको जंगे बद्र के कुँए में देखा कि सभी को क़त्ल करके उसमें डाल दिया गया था। अबू इस्हाक ने कहा कि मैं सातवें शख़्स का (जिसके हक़ में आप ﷺ ने बददुआ की थी, उसका नाम) भूल गया और यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने कहा कि उनसे अबू इस्हाक़ ने (सुफयान की रिवायत में उबय बिन ख़ल्फ़ की बजाय) उमय्या बिन ख़ल्फ़ बयान किया और शुअबा ने कहा कि उमय्या या उबय (शक के साथ है) लेकिन सहीह उमय्या है। (राजेअ: 240)

2935. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि कुछ यहूदी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आए और कहा अस्सामु अलैयक़म (तुम पर मौत आए) मैंने कहा क्या उन्होंने भी जो कहा

[أطرافه في : ٢٩٦٥ ، ٣٠٢٥ ، ٤١١٥ ،

7589 3292

٢٩٣٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ، لَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَنَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ، وَنَجَرَتْ جُرُورٌ بِنَاحِيَةِ مَكَّةَ فَأَرْسَلُوا فَبَجَاءُوا مِنْ سَلَاةٍ وَطَرَحُوهُ عَلَيْهِ، فَبَجَاءَتْ فَاطِمَةُ فَأَلْقَعَتْهُ عَنْهُ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، لِأَبِي جَهْلٍ بْنِ هِشَامٍ وَعُثْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَشَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدَ بْنَ عُثْبَةَ وَأَبِيَّ بْنَ خَلْفٍ وَعُثْبَةَ بْنَ أَبِي مُعَيْطٍ)). قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُمْ فِي قَلْبٍ بَذَرَ قَتْلِي)) قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ: وَنَسِيتُ السَّابِقَ. وَقَالَ يُوسُفُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ ((أُمِّيَةُ بْنُ خَلْفٍ))، وَقَالَ شُعْبَةُ: ((أُمِّيَةُ أَوْ أُمِّي))، وَالصَّحِيحُ أُمِّيَةُ.

[راجع: ٦٤٠]

٢٩٣٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا  
حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ  
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ الْيَهُودَ دَخَلُوا  
عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكَ،  
فَلَعَنَتْهُمْ. فَقَالَ: مَا لَكُمْ؟ قَالَتْ: أَوْلَكُمْ

था आप (ﷺ) ने नहीं सुना? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या और तुमने नहीं सुना कि मैंने उसका क्या जवाब दिया, व अल्लैयकुम या'नी तुम पर भी वही आए (या'नी मैंने कोई बुरा लफ़्ज़ जुबान से नहीं निकाला सिर्फ़ उनकी बात उन ही पर लौटा दी)। (दीगर मक़ाम : 6024, 6030, 6256, 6395, 6401, 6927)

تَسْنَعُ مَا قَالُوا: قَالَ: «فَلَمْ تَسْمِعْ مَا قُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ».

[طبرانی ۳ : ۱۶۰۲، ۱۶۰۳، ۱۶۰۶، ۱۶۰۷]

[۱۶۹۲۷، ۱۶॰۱، ۱۶۳९]

इसीलिये नामा'कूल और बेहूदी हरकतों का जवाब यँ ही होना चाहिये। आयते कुआनी, इदफ़अ बिल्लती हिय अहसनु (फुससिलत : 34) का तकाज़ा है कि बुराई का जवाब भलाई से दिया जाए। यहूद की फ़ितरत हमेशा से शरपसन्द रही है। खुद अपने अंबिया के साथ उनका बर्ताव अच्छा नहीं रहा तो और किसी की क्या हकीकत है। आँहज़रत (ﷺ) की मुख़ालफ़त में यहूदियों ने कोई कसर उठा नहीं रखी थी, यहाँ तक कि मुलाक़ात के वक़्त जुबान को तोड़ मरोड़कर अस्सलामु अल्लैयकुम की जगह अस्सामु अल्लैयकुम कह डालते कि तुम पर मौत आए। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी इस हरकत पर ख़बर पाकर इतना ही काफ़ी समझा व अल्लैयकुम या'नी तुम पर भी वही आए जो मेरे लिये मुँह से निकाल रहे हो। इस हदीष से ये भी ज़ाहिर हो रहा है कि आप (ﷺ) ने यहूद की उस हरकत के जवाब में हज़रत आइशा (रज़ि.) के लअन- तअन वाले जवाब को पसन्द नहीं फ़र्माया बल्कि जो जवाब आप (ﷺ) ने दिया, उसी को काफ़ी समझा। ये आपके कमाले अख़लाक़े हसना की दलील है।

### बाब 99 : मुसलमान अहले किताब को दीन की बात बतलाए या उनको कुआन सिखाए?

2936. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको यअक़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा मुझे मेरे भतीजे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उनसे उनके चचा ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने (रोम के बादशाह) कैसर को (ख़त) लिखा जिसमें आप (ﷺ) ने ये भी लिखा था कि अगर तुमने (इस्लाम की दा'वत से) मुँह मोड़ा तो (अपने गुनाह के साथ) उन काश्तकारों का भी गुनाह तुम पर पड़ेगा (जिन पर तुम हुक्मरानी कर रहे हो)। (दीगर मक़ाम : 2940)

ये हदीष तफ़सील के साथ शुरू किताब में गुज़र चुकी है। उस ख़त में आपने कुआन मजीद की आयत भी लिखी थी तो बाब का तर्जुमा प्राबित हो गया या'नी अहले किताब को कुआन सिखाना मगर ये जब है कि उनसे ख़ैर की उम्मीद हो। अगर उनसे गुस्ताख़ी और बेअदबी का ख़तरा है तो उनको कुआन शरीफ़ हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं सिखाना चाहिये।

### बाब 100 : मुश्रीकीन का दिल मिलाने के लिये उनकी हिदायत की दुआ करना

2937. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब

### ९९- بَابُ مَنْ يُرِيدُ الْمُسْلِمَ أَهْلَ

#### الْكِتَابِ أَوْ يُعَلِّمَهُمُ الْكِتَابَ؟

۲۹۳۶- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي

عَبْدٍ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي خَيْثَمُ بْنُ عَبْدِ

اللهِ بْنِ شَيْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَمَّاهُ ابْنَ

عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَا أَنَّ رَسُولَ

اللهِ ﷺ كَتَبَ إِلَى كَيْسَرَ «وَقَالَ: ((وَلَيْتَ

تَوَلَّيْتُ لَوْنًا خَلِّكَ إِيَّاهُ الْإِنْسَانُ))».

[طبرانی ۳ : ۱۶۹۴۰]

### १००- بَابُ الدُّعَاءِ لِلْمُشْرِكِينَ

#### بِالْهُدَى لِيَعْلَمَهُمْ

۲۹۳۷- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ

ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि तुफैल बिन अमर दौसी (रज़ि.) अपने साथियों के साथ हुजूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क़बीला दौस के लोग सरकशी पर उतर आए हैं और अल्लाह का कलाम सुनने से इंकार करते हैं। आप (ﷺ) उन पर बददुआ कीजिए! कुछ सहाबा (रज़ि.) ने कहा कि अब दौस के लोग बरबाद हो जाएंगे। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! दौस के लोगों को हिदायत दे और उन्हें (दायरा-ए-इस्लाम में) खींच ला। (दीगर मक़ाम : 4392, 6397)

حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَلِيلٌ مِنْ غَمْرٍو الدَّوْسِيُّ وَأَصْحَابُهُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ دَوْسًا عَصَتْ وَأَبَتْ، فَادْعُ اللَّهَ عَلَيْهَا، فَقِيلَ: هَلَكْتَ دَوْسٌ. قَالَ: ((اللَّهُمَّ اهدِ دَوْسًا وَالْتِ بِهِمْ)).  
[طرمه في : ٤٣٩٢، ٦٣٩٧.]

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) भी क़बीला दौस के थे। लोगों ने बददुआ की दरख़वास्त की थी मगर आपने उनकी हिदायत की दुआ फ़र्माई जो कुबूल हुई और बाद में उस क़बीले के लोग खुशी खुशी मुसलमान हो गए।

**बाब 101 : यहूद और नसारा को क्यूँकर दा'वत दी जाए और किस बात पर उनसे लड़ाई की जाए और ईरान और रोम के बादशाहों को नबी करीम (ﷺ) का ख़ुतूब लिखना और लड़ाई से पहले इस्लाम की दा'वत देना.**

2938. हमसे अली बिन जुअद ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी क़तादा से, उन्होंने कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना कि आप बयान करते थे कि जब नबी करीम (ﷺ) ने शाहे रोम को ख़त लिखने का इरादा किया तो आपसे कहा गया कि वो लोग कोई ख़त उस वक़्त तक कुबूल नहीं करते जब तक कि वो मुहर लगा हुआ न हो, चुनौचे आँहज़रत (ﷺ) ने एक चाँदी की अंगूठी बनवाई। गोया दस्ते मुबारक पर उसकी सफ़ेदी भेरी नज़रों के सामने है। उस अंगूठी पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह खुदा हुआ था। (राजेअ : 65)

١٠١- بَابُ دَعْوَةِ الْيَهُودِ وَالنَّصْرَانِيِّ، وَعَلَى مَا يَقَاتُلُونَ عَلَيْهِ؟ وَمَا كَتَبَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى كِسْرَى وَقَيْسَرَ، وَالذُّعُفَةَ قَبْلَ الْفَيْصَالِ  
٢٩٣٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَفْصِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((لَمَّا أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى الرُّومِ قِيلَ لَهُ: إِنَّهُمْ لَا يَقْرَأُونَ كِتَابًا إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَعْقُومًا، فَاتَّخَذَ حَاتِمًا مِنْ بَغْدَةِ، فَكَاتَبَ أَنْظَرَ إِلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ، وَنَفَسَ فِيهِ: مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ)).  
[راجع : ٦٥]

मक़सद ये है कि इस्लाम की दा'वत बाज़ाबता तहरीरी तौर पर सरबराह की मुहर से मुज़य्यन (सुशोभित) होनी चाहिये। ये जब है कि शाहाने आलम को दा'वती ख़ुतूब लिखे जाएँ इससे तहरीरी तब्लीग़ का भी मसून होना प्राबित हुआ।

2939. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, कहा मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि

٢٩٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُيَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना खत किसरा के पास भेजा। आप (ﷺ) ने (ऐलची से) ये कहा था कि वो आप (ﷺ) के खत को बहरीन के गवर्नर को दे दें, बहरीन का गवर्नर उसे किसरा के दरबार में पहुँचा देगा। जब किसरा ने मक्तूबे मुबारक पढ़ा तो उसे उसने फाड़ डाला। मुझे याद है कि सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया था कि फिर नबी करीम (ﷺ) ने उस पर बद्दुआ की थी कि वो भी पारा-पारा हो जाए (चुनाँचे ऐसा ही हुआ)। (राजेअ: 64)

اللَّهُ بْنُ عُثْبَةَ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَثَابٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ: (رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَتَمَتَّ بِكِتَابِهِ إِلَى كِسْرَى، فَأَمَرَهُ أَنْ يَذْفُقَهُ إِلَى عَظِيمِ الْبَحْرَيْنِ يَذْفُقَهُ عَظِيمُ الْبَحْرَيْنِ إِلَى كِسْرَى. فَلَمَّا قَرَأَهُ كِسْرَى خَرَفَهُ، فَحَسِبْتُ أَنْ مَجِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ قَالَ: فَدَعَا عَلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُعْزَقُوا كُلُّ مَمَزَقٍ)). (راجع: ٦٤)

इतिहास में जिक्र है कि किसरा जो एक नौजवान अय्याश किस्म का आदमी था और वो मौक़े का इंतज़ार कर रहा था कि अपने वालिद किसरा को ख़त्म करके जल्द से जल्द तख़्त और ख़ज़ानों का मालिक बन जाए। चुनाँचे जब किसरा ने ये हरकत की उसके बाद जल्दी ही एक रात को उसके लड़के ने किसरा के पेट पर चढ़कर उसके पेट को छुरा घोंप दिया और उसे ख़त्म कर दिया। बाद में वो तख़्तो-ताज का मालिक बना तो उसने ख़ज़ानों का जाइज़ा लेते हुए ख़ज़ाने में एक दवा की शीशी पाई जिस पर कुव्वते बाह की दवा लिखा हुआ था। उसने सोचा कि वालिद साहब उसी दवा को खा खाकर आख़िर तक ऐश करते रहे मुझको भी दवा खा लेनी चाहिये। दरहकीक़त उस शीशी में सम्मुल फ़ार (ज़हर) था उसने उसको खाया और फ़ौरन ही वो भी ख़त्म हो गया। इस तरह उसकी सल्तनत पारा-पारा हो गई और अहदे फ़ारूकी में सारा मुल्क इस्लामी क़लम रू में शामिल हो गया और अल्लाह के सच्चे रसूल (ﷺ) की दुआ ने पूरा पूरा अज़र दिखाया (ﷺ)। किरमानी वग़ैरह में है कि उसके लड़के का नाम खैरूया था जिसने अपने बाप परवेज़ नामी का पेट चाक किया और छः माह बाद खुद भी वो मज़क़ूर ज़हर खाकर हलाक हो गया। अहदे फ़ारूकी में हज़रत सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) के हाथों ये मुल्क फ़तह हुआ। यहाँ रिवायत में यही ख़ुसरू परवेज़ मुराद है जो लक़बे किसरा से याद किया गया। (हाशिया बुखारी शरीफ़, जिल्द अव्वल पेज नं. 15)

## बाब 102 : नबी करीम (ﷺ) का (ग़ैर मुस्लिमों को) इस्लाम की तरफ़ दा'वत देना

और इस बात की दा'वत देना कि वो अल्लाह को छोड़कर बाहम एक-दूसरे को अपना रब न बनाएँ और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि किसी बन्दे के लिये ये लायक़ नहीं कि अगर अल्लाह तआला उसे (किताब व हिक़मत) अज़ा करे तो (वो बजाय अल्लाह तआला की इबादत के लोगों से अपनी इबादत के लिये कहे) आख़िर तक। (आले इमरान : 79)

## ١٠٢ - بَابُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى

### الْإِسْلَامِ وَالنُّبُوَّةِ

وَأَنْ لَا يَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ، وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿مَا كَانَ لِشَيْءٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ﴾ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ [آل عمران : ٧٩]

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) बतलाना चाहते हैं कि इस्लामी जिहाद का मक़सद अज़ीम मुल्कगिरी हर्गिज़ नहीं बल्कि उसका मक़सद अज़ीम महज़ अल्लाह पाक के दीने बरहक़ इस्लाम को हर मुल्क में फैलाना है ताकि दुनिया में हर जगह अल्लाह की हुकूमत का तसव्वुर इशाअत पाये और दुनिया अमनो-अमान का गहवारा बन जाए और कोई इंसान दूसरे लोगों पर ऐसी बरतरी अपने लिये न इख़्तियार करे कि लोग उसे खुदाई दर्जा में समझने पर मजबूर हो जाएँ। इस्लामी जिहाद का मक़सद इबादते इलाही है और मसावाते-इंसानी को फ़रोज़ देना है और इस मुलूकियत को जड़ से उखाड़ना जिसमें एक इंसान तख़्त पर बैठकर अपने दूसरे जिन्स इंसानों से अपनी खुदाई तस्लीम कराए यहाँ तक कि अंबिया व रसूल जो मक़बूलाने बारगाहे

अहदियत होते हैं, उनको भी ये लायक नहीं कि वो खुदाई के कुछ हिस्सेदार बनने का दावा कर सकें। इस्लाम के इसी इंसानियत नवाज़ पहलू का अप्र था कि नोअे इंसान ने मुल्क और मज़हब के नाम पर होने वाले जुल्मों का एहसास किया और दुनियावी बादशाहों और मज़हबी रहनुमाओं की असल हक़ीक़त की तरफ़ मुतवज्जह किया कि वो इंसान होने के नाते पूरी बनी नोअे इंसान के खादिम हैं। अगर वो अपनी हुदूद से आगे बढ़ेंगे तो उनका मक़ामे रिफ़अते ज़िल्लत से तब्दील होगा। आज जम्हूरियत और समानता की जो लहरें दुनिया में मौज-ज़न हैं, उनको पैदा करने में इस्लाम ने एक ज़बरदस्त किरदार अदा किया है। सच है,

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है ये सब पौध उसकी लगाई हुई है।

2940. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे ज़ालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इब्बा ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कैसर को एक ख़त लिखा जिसमें आप (ﷺ) ने उसे इस्लाम की दा'वत दी थी। दहिया कलबी (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने मक्तूब देकर भेजा और उन्हें हुक्म दिया था कि मक्तूब बसरा के गवर्नर के हवाले कर दें वो उसे कैसर तक पहुँचा देगा। जब फ़ारस की फौज (उसके मुक़ाबले में) शिकस्त खाकर पीछे हट गई थी (और उसके मुल्क के क़ब्ज़े शुदा इलाक़े वापस मिल गए थे) तो इस इन्आम के शुक्राने के तौर पर जो अल्लाह तआला ने (उसका मुल्क वापस देकर) उस पर किया था अभी कैसरे हिम्स से ईलिया (बैतुल मक्दिदस) तक पैदल चलकर आया था। जब उसके पास रसूलुल्लाह (ﷺ) का नामा-ए-मुबारक पहुँचा और उसके सामने पड़ा गया तो उसने कहा कि अगर उनकी ओहज़रत (ﷺ की) क़ौम का कोई शाइख़ यहाँ हो तो उसे तलाश करके लाओ ताकि मैं उस रसूल (ﷺ) के बारे में उससे कुछ सवालात करूँ। (राजेअ: 2936)

2941. इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि कुरैश के एक क़ाफ़िले के साथ वो उन दिनों शाम में मुक़ीम थे। ये क़ाफ़िला उस दौर में यहाँ तिजारात की गर्ज़ से आया था जिसमें ओहज़रत और कुफ़्फ़ारे कुरैश में बाहम सुलह हो चुकी थी। (सुलह हुदेबिया) अबू सुफ़यान ने कहा कि कैसर के आदमी की हमसे शाम के एक जगह पर मुलाक़ात हुई और वो मुझे और मेरे साथियों को अपने साथ (कैसर के दरबार में बैतुल मक्दिदस) लेकर चला फिर जब हम ईलिया

۲۹۴۰- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَزَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَتَبَ إِلَى قَيْسَرَ بِدَعْوَةِ إِلَى الْإِسْلَامِ. وَبَعَثَ بِكِتَابِهِ إِلَيْهِ مَعَ دُحَّةِ الْكَلْبِيِّ. وَأَمَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ بَصْرَى لِيَدْفَعَهُ إِلَى قَيْسَرَ. وَكَانَ قَيْسَرٌ لَمَّا كَشَفَ اللَّهُ جُنُودَ فَارِسَ مَشَى مِنْ حَمَصَ إِلَى إِبِلَاءَ شُكْرًا لِمَا أَنْبَأَهُ اللَّهُ ﷻ فَلَمَّا جَاءَ قَيْسَرَ كِتَابُ رَسُولِ اللَّهِ ﷻ قَالَ حِينَ قَرَأَهُ: التَّيَسُّوْا لِي هَذَا هَذَا أَخَذَ مِنْ قَوْمِهِ لِأَسْأَلَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷻ)). (راجع: ۲۹۳۶)

۲۹۴۱- قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأَخْبَرَنِي أَبُو سَفْيَانَ أَنَّهُ كَانَ بِالشَّامِ فِي رَجَالٍ مِنْ قُرَيْشٍ قَدِمُوا بِجَارَا فِي الْمُدَّةِ الَّتِي كَانَتْ بَيْنَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَبَيْنَ كُفَّارِ قُرَيْشٍ. قَالَ أَبُو سَفْيَانَ: فَوَجَدْنَا رَسُولَ قَيْسَرَ بِبَغْضِ الشَّامِ، فَانْطَلَقَ بِي

(बैतुल मक्दिस्) पहुँचे तो कैसर के दरबार में हमारी बारयाबी हुई उस वक़्त कैसर दरबार में बैठा हुआ था। उसके सर पर ताज था और रोम के उमरा उसके आसपास बैठे थे, उसने अपने तर्जुमान से कहा कि इनसे पूछो कि जिन्होंने इनके यहाँ नुबुव्वत का दा'वा किया है नसब के ए'तिबार से उनसे करीब इनमें से कौन शख्स है? अबू सुफयान ने बयान किया कि मैंने कहा मैं नसब के ए'तिबार से उनके ज्यादा करीब हूँ। कैसर ने पूछा तुम्हारी और उनकी क़राबत क्या है? मैंने कहा (रिश्ते में) वो मेरे चचाज़ाद भाई होते हैं, इत्तिफ़ाक़ था कि इस बार क़ाफ़िले में मेरे सिवा बनी अब्दे मुनाफ़ का और कोई आदमी मौजूद नहीं था। कैसर ने कहा कि इस शख्स (अबू सुफयान रज़ि.) को मुझसे करीब कर दो और जो लोग मेरे साथ थे उसके हुक्म से मेरे पीछे करीब में खड़े कर दिये गये। उसके बाद उसने अपने तर्जुमान से कहा कि इस शख्स (अबू सुफयान) के साथियों से कह दो कि इससे मैं उन साहब के बारे में पूछूँगा जो नबी होने के मुद्दे हैं, अगर ये उनके बारे में कोई झूठी बात कहे तो तुम फ़ौरन इसकी तकज़ीब कर दो (झूठला देना)। अबू सुफयान ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! अगर उस दिन इस बात की शर्म न होती कि कहीं मेरे साथी मेरी तकज़ीब न कर बैठें तो मैं उन सवालात के जवाबात में ज़रूर झूठ बोल जाता जो उसने आँहज़रत (ﷺ) के बारे में पूछे थे, लेकिन मुझे तो इसका ख़तरा लगा रहा कि कहीं मेरे साथी मेरी तकज़ीब न कर बैठे। इसलिये मैंने सच्चाई से काम लिया। उसके बाद उसने अपने तर्जुमान से कहा इससे पूछो कि तुम लोगों में उन साहब (ﷺ) का नसब कैसा समझा जाता है? मैंने बताया कि हममें उनका नसब बहुत उम्दा समझा जाता है। उसने पूछा अच्छा ये नुबुव्वत का दा'वा उससे पहले भी तुम्हारे यहाँ किसी ने किया था? मैंने कहा कि नहीं। उसने पूछा क्या इस दा'वे से पहले उन पर कोई झूठ का इल्ज़ाम था? मैंने कहा कि नहीं, उसने पूछा उनके बाप-दादों में कोई बादशाह गुजरा है? मैंने कहा कि नहीं। उसने पूछा तो अब बड़े अमीर लोग उनकी इतिबाज़ करते हैं या कमज़ोर और कम हैशियत के लोग? मैंने कहा कि कमज़ोर और मामूली हैशियत के लोग ही उनके (ज्यादातर मानने वाले हैं)

وَبِأَصْحَابِي حَتَّى قَدِمْنَا إِلَيْهَا، فَأَدْخَلَنَا عَلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ فِي مَجْلِسٍ مُلْكِهِ وَعَلَيْهِ التَّاجُ، وَإِذَا حَوْلَهُ عِظَمَاءُ الرُّومِ. فَقَالَ لِرَجْمَانِهِ: سَلْهُمْ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ نَسَبًا إِلَى هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يُزْعَمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَقُلْتُ أَنَا أَقْرَبُهُمْ إِلَيْهِ نَسَبًا. قَالَ: مَا قَرَابَةُ مَا بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ؟ فَقُلْتُ هُوَ ابْنُ عَمِّي. وَلَيْسَ فِي الرَّكْبِ يَوْمِيذٍ أَحَدٌ مِنْ بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ غَيْرِي. فَقَالَ قَبِضْ: أَذْنُوهُ. وَأَمَرَ بِأَصْحَابِي فَجَعَلُوا خَلْفَ ظَهْرِي عِنْدَ كَيْفِي. ثُمَّ قَالَ لِرَجْمَانِهِ: قُلْ لِأَصْحَابِهِ إِنِّي سَأَلْتُ هَذَا الرَّجُلَ عَنِ الَّذِي يُزْعَمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ، فَإِنْ كَذَبَ لَكُذُوبُهُ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: وَاللَّهِ لَوْ لَا الْحَيَاءُ يَوْمِيذٍ مِنْ أَنْ يَأْتِيَ أَصْحَابِي عَنِّي الْكَذِبَ لَكُذِبْتُ حِينَ سَأَلَنِي عَنْهُ، وَلَكِنِّي اسْتَحْيَيْتُ أَنْ يَأْتِيُوا الْكَذِبَ عَنِّي فَصَدَقْتُ. ثُمَّ قَالَ لِرَجْمَانِهِ: قُلْ لَهُ كَيْفَ نَسَبُ هَذَا الرَّجُلِ فِيكُمْ؟ قُلْتُ: هُوَ فِينَا ذُو نَسَبٍ. قَالَ: فَهَلْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ مِنْكُمْ قَبْلَهُ؟ قُلْتُ: لَا. فَقَالَ: كُتِّمْتُمْ تَهْمُونَهُ عَلَى الْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَهَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ؟ قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَأَشْرَافُ النَّاسِ يَتَّبِعُونَهُ أَمْ حُطَّافُهُمْ؟ قُلْتُ: بَلْ حُطَّافُهُمْ. قَالَ: فَيَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟



उसने पूछा कि उसके मानने वालों की ता'दाद बढ़ती रहती है या घटती जा रही है? मैंने कहा जी नहीं, ता'दाद बराबर बढ़ती जा रही है। उसने पूछा कोई उनके दीन से बेजार होकर इस्लाम लाने के बाद फिर भी गया है क्या? मैंने कहा कि नहीं, उसने पूछा, उन्होंने कभी वा'दा खिलाफ़ी की है? मैंने कहा कि नहीं, लेकिन आजकल हमारा उनसे एक मुआहिदा हो रहा है और हमें उनकी तरफ़ से मुआहिदा की खिलाफ़वर्ज़ी का ख़तरा है। अब सुफ़यान ने कहा कि पूरी बातचीत में सिवा उसके और कोई ऐसा मौक़ा न मिला जिसमें मैं कोई ऐसी बात (झूठी) मिला सकूँ जिससे ओहज़रत (ﷺ) की तौहीन हो। और अपने साथियों की तरफ़ से भी झुठलाने का डर न हो। उसने फिर पूछा क्या तुमने कभी उनसे लड़ाई की है या उन्होंने तुमसे जंग की है? मैंने कहा कि हाँ, उसने पूछा तुम्हारी लड़ाई का क्या नतीजा निकलता है? मैंने कहा लड़ाई में हमेशा किसी एक गिरोह ने फ़तह नहीं हासिल की। कभी वो हमें मलूब कर लेते हैं और कभी हम उन्हें, उसने पूछा वो तुम्हें किन कामों का हुक्म देते हैं? कहा हमें वो उसका हुक्म देते हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें और उसका किसी को भी शरीक न ठहराएँ, हमें उन बुतों की इबादत से वो मना करते हैं जिनकी हमारे बाप-दादा इबादत करते थे, नमाज़, स़दक़ा, पाकबाज़ी व मुख़्त, वफ़ा-ए-अहद और अमानत के अदा करने का हुक्म देते हैं। जब मैं उसे ये तमाम बातें बता चुका तो उसने अपने तर्जुमान से कहा, उनसे कहो कि मैंने तुमसे उन के नसब के बारे में पूछा तो तुमने बताया कि वो तुम्हारे यहाँ म़ाहिबे नसब और शरीफ़ समझे जाते हैं और अंबिया भी यूँ ही अपनी क़ौम के आला नसब में पैदा किये जाते हैं। मैंने तुमसे ये पूछा था कि क्या नुबुव्वत का दा'वा तुम्हारे यहाँ उससे पहले भी किसी ने किया था तुमने बताया कि हमारे यहाँ ऐसा दा'वा पहले किसी ने नहीं किया था, उससे मैं ये समझा कि अगर उससे पहले तुम्हारे यहाँ किसी ने नुबुव्वत का दा'वा किया होता तो मैं ये भी कह सकता था कि ये म़ाहब भी उसी दा'वे की नक़ल कर रहे हैं जो उससे पहले किया जा चुका है। मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुमने दा'वा-ए-नुबुव्वत से पहले कभी उनकी तरफ़ झूठ

क़त्: بَلْ يَزِيدُونَ. قَالَ : فَهَلْ يَزِيدُ أَحَدٌ سَخَطَةً لِدِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ؟ كُتِبَ: لَا. قَالَ: فَهَلْ يَغْيِرُ؟ كُتِبَ: لَا، وَنَحْنُ الْآنَ مِنْهُ فِي مَدَّةٍ نَحْنُ نَخَافُ أَنْ يَغْيِرَ. قَالَ أَبُو سَفْيَانَ: وَلَمْ يُمْكِنِي كَلِمَةً أَدْخُلُ فِيهَا شَيْئًا أَنْتَصِفُهُ بِهِ - لَا أَخَافُ أَنْ تُؤْثِرَ عَلَيَّ - غَيْرَهَا. قَالَ: فَهَلْ قَاتَلْتُمُوهُ أَوْ قَاتَلَكُمْ؟ كُتِبَ: نَعَمْ. قَالَ: فَكَيْفَ كَانَتْ حَرْبُهُ وَحَرْبُكُمْ؟ كُتِبَ: كُتِبَ: ذُوْلًا وَسِجَالًا : يُدَالُ عَلَيْنَا الْمَرَّةَ وَتُدَالُ عَلَيْهِ الْأُخْرَى. قَالَ: فَمَاذَا يَأْمُرُكُمْ؟ قَالَ: يَأْمُرُنَا أَنْ نَعْبُدَ اللَّهَ وَنُحَدِّثَ لَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا، وَنُتِمِّتَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا، وَنَأْمُرُنَا بِالصَّلَاةِ، وَالصَّدَقَةِ، وَالْعَقَابِ، وَالْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ، وَأَدَاءِ الْأَمَانَةِ. فَقَالَ لِرَجُلَيْنِهِ جَعِنَ كُتِبَ: ذَلِكَ لَهُ: قُلْ لَهُ إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ نَسَبِهِ لَكُمْ، فَرَعَيْتَ أَنَّهُ ذُو نَسَبٍ، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْعَثُ فِي نَسَبٍ قَوْمِيهَا. وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَالَ أَحَدٌ مِنْكُمْ هَذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ؟ فَرَعَيْتَ أَنْ لَا، فَقُلْتُ لَوْ كَانَ أَحَدٌ مِنْكُمْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ قُلْتُ رَجُلٌ يَأْتِي بِقَوْلٍ قَدْ قِيلَ قَبْلَهُ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كُنْتُمْ تَتَّبِعُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ فَرَعَيْتَ أَنْ لَا، فَعَرَفْتُ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ يَدْعُ بِالْكَذِبِ عَلَى النَّاسِ وَيَكْذِبُ عَلَى اللَّهِ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كَانَ

मन्सूब किया था। तुमने बताया कि ऐसा कभी नहीं हुआ। उससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि ये मुम्किन नहीं कि एक शख्स जो लोगों के बारे में कभी झूठ न बोल सका हो वो अल्लाह के बारे में झूठ बोल दे। मैंने तुमसे पूछा कि उनके बाप दादों में कोई बादशाह था, तुमने बताया कि नहीं। मैंने उससे ये फ़ैसला किया कि अगर उनके बाप दादों में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं ये भी कह सकता था कि (नुबुव्वत का दा'वा करके) वो अपने बाप-दादा की सल्तनत हासिल करना चाहता है, मैंने तुमसे पूछा कि उनकी इत्तिबाअ क़ौम के बड़े लोग करते हैं या कमज़ोर और बे-हैषियत लोग, तुमने बताया कि कमज़ोर ग़रीब क्रिस्म के लोग उनकी ताबेदारी करते हैं और यही गिरोह अंबिया की (हर दौर में) इत्ताअत करने वाला रहा है। मैंने तुमसे पूछा कि उन ताबेदारों की ता'दाद बढ़ती रहती है या घटती भी है? तुमने बताया कि वो लोग बराबर बढ़ ही रहे हैं, इमान का भी यही हाल है, यहाँ तक कि वो मुकम्मल हो जाए, मैंने तुमसे पूछा कि क्या कोई शख्स उनके दीन में दाख़िल होने के बाद कभी उससे फिर भी गया है? तुमने कहा कि ऐसा कभी नहीं हुआ, इमान का भी यही हाल है जब वो दिल की गहराइयों में उतर जाए तो फिर कोई चीज़ उससे मोमिन को हटा नहीं सकती। मैंने तुमसे पूछा कि क्या उन्होंने वा'दाख़िलाफ़ी भी की है? तुमने उसका भी जवाब दिया कि नहीं, अंबिया की यही शान है कि वो वा'दाख़िलाफ़ी कभी नहीं करते। मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुमने कभी उनसे या उन्होंने तुमसे जंग भी की है? तुमने बताया कि ऐसा हुआ है और तुम्हारी लड़ाइयों का नतीजा हमेशा किसी एक ही के हक़ में नहीं गया बल्कि कभी तुम मरलूब हुए हो और कभी वो। अंबिया के साथ भी ऐसा ही होता है वो इम्तिहान में डाले जाते हैं लेकिन अंजाम उन्हीं का बेहतर होता है। मैंने तुमसे पूछा कि वो तुमको किन कामों का हुक्म देते हैं? तुमने बताया कि वो हमें उसका हुक्म देते हैं कि अल्लाह की इबादत करो। और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और तुम्हें तुम्हारे उन मा'बूदों की इबादत से मना करते हैं जिनकी तुम्हारे बाप-दादा इबादत किया करते थे। तुम्हें वो नमाज़, स़दक़ा, पाकबाज़ी, वा'दा निभाने और अमानत अदा

من آتاه من ملك؟ فرعمت أن لا، فقلت لو كان من آتاه ملك قلت يطلب ملك آتاه. وسألتك أشراف الناس يتبعونه أم ضعافهم؟ فرعمت أن ضعافهم اتبعوه، وهم أتباع الرسل. وسألتك هل يزيئون أو ينفصون؟ فرعمت أنهم يزيئون، وكذلك الإيمان حتى يتم. وسألتك هل يرتد أحد سخطه لدينه بعد أن يدخل فيه؟ فرعمت أن لا، وكذلك الإيمان حين تخلط بشائعه القلوب لا يسخطه أحد. وسألتك هل يغير؟ فرعمت أن لا، وكذلك الرسل لا يغيرون. وسألتك هل فالتّموه وفاتلكم؟ فرعمت أن قد فعل، وأن حربكم وحربه تكون ذولا، ويذل عليكم المرأة وتذالون عليه الأخرى، وكذلك الرسل تنلى وتكون لها العاقبة. وسألتك بماذا يأمركم؟ فرعمت أنه يأمركم أن تعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا، وينهاكم عما كان يعبد آباؤكم، ويأمركم بالصلاة، والصّدق والعفاف، والأوفاء بالعهد، وأداء الأمانة. قال: وهذِهِ صِفَةُ نَبِيٍّ قَدْ كُنْتُ أَظُنُّ أَنَّهُ مِنْكُمْ، وَإِنْ يَكُ مَا قُلْتُ حَقًّا فَيُوشِكُ أَنْ يَمْلِكَ مَوْضِعَ قَدَمَيَّ هَاتَيْنِ،

करने का हुक्म देते हैं, उसने कहा कि एक नबी की यही सिफ़त है मेरे भी इल्म में ये बात थी कि वो नबी मबरूर होने वाले हैं। लेकिन ये ख़याल न था कि तुममें से वो मबरूर होंगे, जो बातें तुमने बताईं अगर वो सहीह हैं तो वो दिन बहुत करीब है जब वो इस जगह पर हुक्मरान होंगे जहाँ इस वक़्त मेरे दोनों क़दम मौजूद हैं, अगर मुझे उन तक पहुँच सकने की तवक़्क़ल होती तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होने की पूरी कोशिश करता और अगर मैं उनकी ख़िदमत में मौजूद होता तो उनके पाँव धोता। अब सुफ़यान ने बयान किया कि उसके बाद क़ैसर ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का नामा-ए-मुबारक तलब किया और वो उसके सामने पड़ा गया उसमें लिखा हुआ था,

وَلَوْ أَرْجُوا أَنْ أَخْلَصَ إِلَيْهِ لَجِئْتُمْ لِقَائِهِ، وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهُ لَفَسَلْتُ لِقَائِهِ.  
قَالَ أَبُو سَفْيَانَ: ثُمَّ دَخَلَ بَيْتَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَفَرَعَهُ، فَإِذَا فِيهِ.

[راجع: ٧]

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान निहायत रहम करने वाला है। ये ख़त है मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल की तरफ़ से रोम के बादशाह हिरक्ल की तरफ़, उस शख्स पर सलामती हो जो हिदायत कुबूल कर ले। अम्मा बअद! मैं तुम्हें इस्लाम की दा'वत देता हूँ। इस्लाम कुबूल कर लो, तुम्हें भी सलामती व अमन हासिल होगी और इस्लाम कुबूल करो अल्लाह तुम्हें दोहरा अज़्र देगा (एक तुम्हारे अपने इस्लाम का और दूसरा तुम्हारी क़ौम के इस्लाम का जो तुम्हारी वजह से इस्लाम में दाख़िल होगी) लेकिन अगर तुमने इस दा'वत से मुँह मोड़ लिया तो तुम्हारी रिआया का गुनाह भी तुम पर होगा। और ऐ अहले किताब! एक ऐसे कलिमे पर आकर हमसे मिल जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच एक ही है ये कि हम अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत न करें न उसके साथ किसी को शरीक ठहराएँ और न हममें से कोई अल्लाह को छोड़कर आपस में एक-दूसरे को परवरदिगार बनाए अब भी अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो इसका इक्रार कर लो कि (अल्लाह तआला के वाक़ई) फ़र्मावरदार हम ही हैं। अब सुफ़यान ने बयान किया कि जब हिरक्ल अपनी बात पूरी कर चुका तो रोम के सरदार उसके आसपास जमा थे, सब एक साथ चीखने लगे और शोरो-गुल बहुत बढ़ गया। मुझे कुछ पता नहीं चला कि ये लोग क्या कह रहे थे। फिर हमें हुक्म दिया गया और हम वहाँ से निकाल दिये गये। जब मैं अपने साथियों के साथ वहाँ से चला आया और उनके साथ तन्हाई हुई तो मैंने कहा कि इब्ने अबी कब्शा (मुराद हज़ूरे अकरम ﷺ से है) का मामला बहुत

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ، إِلَى هِرَقْلَ  
عَظِيمِ الرُّومِ.

سَلَامٌ عَلَى مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَى. إِنَّا نَعُدُّ لِنَاقِي  
أَذْعُوكَ بِدَعَايَةِ الْإِسْلَامِ، أَسْلِمْنَا نَسْلَمُ،  
وَأَسْلِمْنَا يُؤْتِيكَ اللَّهُ أَجْرًا مَرَّتَيْنِ، فَإِنْ  
تَوَلَّيْتَ لَعَنَّاكَ إِنْهُمُ الْآرِنَسِيُّينَ هَلْ لَنَا أَهْلُ  
الْكِتَابِ نَقَالُوا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا  
وَبَيْنَكُمْ أَلَا نَعْبُدُ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكُ بِهِ  
شَيْئًا، وَلَا نَعْبُدُ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ  
دُونِ اللَّهِ. فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا  
مُسْلِمُونَ [آل عمران: ٦٤].

قَالَ أَبُو سَفْيَانَ: فَلَمَّا أَنْ قَضَى مَقَالَتَهُ  
عَلَتْ أَصَوَاتُ الَّذِينَ حَوْلَهُ مِنْ عَظَمَاءِ  
الرُّومِ وَكَثُرَ لَعْنُهُمْ، فَلَا أَدْرِي مَاذَا قَالُوا،  
وَأَمَرَ بَنُو فَارُخِجَا. فَلَمَّا أَنْ خَرَجْتُ مَعَ  
أَصْحَابِي وَخَلَوْتُ بِهِمْ قُلْتُ لَقَدْ أَمَرَ أَمْرٌ  
إِنِّي أَمِي كَبْشَةَ، هَذَا مَلِكُ بَنِي الْأَصْفَرِ

आगे बढ़ चुका है, अबू सुफयान (रोमियों) का बादशाह भी उससे डरता है, अबू सुफयान ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मुझे उसी दिन से अपनी ज़िल्लत का यक़ीन हो गया था और बराबर उस बात का भी यक़ीन रहा कि आँहज़रत (ﷺ) ज़रूर ग़ालिब होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में भी इस्लाम दाख़िल कर दिया हालाँकि (पहले) मैं इस्लाम को बुरा जानता था। (राजेअ: 7)

يَخَافُهُ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ وَاللَّهِ مَا زِلْتُ ذَلِيلًا مُسْتَيْقِنًا بِأَنَّ أَمْرَهُ سَيُظْهَرُ، حَتَّى أَدْخَلَ اللَّهُ قَلْبِي الْإِسْلَامَ وَأَنَا كَارِهٌ.

**तशरीह:** इस लम्बी हदीस को हज़रत मुज्ताहिदे मुत्तलक़ इमाम बुखारी (रह.) कई जगह लाए हैं और उससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है। यहाँ इस ग़र्ज़ से लाए कि इससे यहाँ ग़ैर-मुस्लिमों को दा'वते इस्लाम पेश करने के तरीक़ों पर रोशनी पड़ती है। इस में हिरक्ल की तरफ़ दा'वते इस्लामी का ज़िक्र है जिसका लक़ब कैसर था हिरक्ल इज्मा और अलम होने की वजह से ग़ैर मुंसरिफ़ है। किसरा भी उसको कहते थे उसने इकतीस साल तक हुकूमत की थी। आँहज़रत (ﷺ) का उसी दौरान इतिक्काल हो चुका था। लफ़्जे ईलिया से बैतुल मक़िदिस मुराद है यहाँ हज़रत अबू सुफयान (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को अपने चचा का बेटा बतलाया था हालाँकि आप (ﷺ) उनके दादा के चचा के बेटे हैं, अबू सुफयान का नसब ये है अबू सुफयान सख़र बिन हर्ब बिन उमय्या बिन अब्दे शम्स बिन अब्दे मुनाफ़। और रसूले करीम (ﷺ) का नसबनामा ये है मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़। आपको यहाँ अबू सुफयान (रज़ि.) ने इब्ने अबी कब्शा से तश्बीह दी जो बनू ख़ुज़ाआ का एक आदमी था और सारे अरब के ख़िलाफ़ वो सितारा शुअरा का पुजारी था और उसी मुख़ालफ़ते अरब की वजह से लोग आँहज़रत (ﷺ) को भी इब्ने अबी कब्शा से तश्बीह दिया करते थे।

2942. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़र्माया था कि इस्लामी झण्डा मैं एक ऐसे शाय्स के हाथ में दूँगा जिसके ज़रिये अल्लाह तआला फ़तह इनायत फ़र्माएगा। अब सब उस इतिज़ार में थे कि देखें झण्डा किसे मिलता है, जब सुबह हुई तो सब सरकदा लोग इसी उम्मीद में रहे कि काश! उन्हीं को मिल जाए लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा अली कहाँ हैं? अर्ज़ किया गया कि वो आँखों के दर्द में मुब्तला हैं, आख़िर आप (ﷺ) के हुक्म से उन्हें बुलाया गया। आप (ﷺ) ने अपना लुआबे दहने मुबारक उनकी आँखों में लगा दिया और फ़ौरन ही वो अच्छे हो गये। जैसे पहले कोई तकलीफ़ ही न रही हो। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा हम उन (यहूदियों से) उस वक़्त तक जंग करेंगे जब तक ये हमारे जैसे (मुसलमान) न हो जाएँ। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अभी ठहरो पहले उनके मैदान में उतरकर उन्हें तुम इस्लाम की दा'वत दे लो और उनके लिये जो चीज़ ज़रूरी है उनकी

٢٩٤٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَنْبِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ رَضِيِّ اللَّهِ عَنْهُ: سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ: ((لَأُعْطِيَنَّ الرَّأْيَةَ رَجُلًا يَفْتَحَ اللَّهُ عَلَى يَدَيْهِ)), فَقَامُوا يَرْجُونَ لِذَلِكَ أَنَّهُمْ يُعْطَى، فَقَدُوا وَكُلُّهُمْ يَرْجُو أَنْ يُعْطَى، فَقَالَ: ((أَيْنَ عَلِيٌّ؟)) فَقِيلَ: بِشَتَكِي عَيْنَيْهِ، فَأَمَرَ فَدُعِيَ لَهُ فَبَصَقَ فِي عَيْنِهِ فَبَرَأَ مَكَانَهُ حَتَّى كَانَهُ لَمْ يَكُنْ بِهِ شَيْءٌ، فَقَالَ فَقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا. فَقَالَ: ((عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ، فَوَاللَّهِ لَأَنْ

खबर कर दो (फिर वो न मानें तो लड़ना) अल्लाह की कसम! अगर तुम्हारे जरिये एक शत्रु को भी हिदायत मिल जाए तो ये तुम्हारे हक में सुख ऊँटों से बेहतर है। (दीगर मक़ाम : 3009, 3701, 4210)

يَهْدِي بِكَ رَجُلٌ وَاحِدٌ خَيْرٌ لَكَ مِنْ خُمْرِ النَّعَمِ).

[أطرافه في : 3009, 3701, 4210].

इस हदीष से बाब की मुताबकत यँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने लड़ाई शुरू करने से पहले फ़रीक मुकाबिल के सामने हज़रत अली (रज़ि.) को दा'वत पेश करने का हुक्म फ़र्माया साथ ही यँ इशार्द हुआ कि पहले मुखालिफ़ीन को राहे-रास्त पर लाने की पूरी कोशिश करो और याद रखो अगर एक आदमी भी तुम्हारी तब्लीगी कोशिश से नेक रास्ते पर आ गया तो तुम्हारे लिये सुख ऊँट से भी ज़्यादा कीमती चीज़ है। अरब में काले ऊँटों के मुकाबले पर सुख ऊँटों की बड़ी कीमत थी। इसलिये मिशाल के तौर पर आप (ﷺ) ने ये इशार्द फ़र्माया। इस्लाम किसी से जंग जिहाद लड़ाई का ख़वाहर्न हर्गिज़ नहीं है। वो सिर्फ़ सुलह सफ़ाई अमन व अमान चाहता है मगर जब मुदाफ़िअत नागुज़ेर हो तो फिर भरपूर मुकाबला का हुक्म भी देता है।

2943. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने कहा कि मैं ने अनस (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी क्रौम पर चढ़ाई करते तो उस वक़्त तक कोई इक्दाम न फ़र्माते जब तक सुबह न हो जाती, जब सुबह हो जाती और अज़ान की आवाज़ सुन लेते तो रुक जाते और अगर अज़ान की आवाज़ सुनाई न देती तो सुबह होने के बाद हमला करते। चुनौचे ख़ैबर में भी हम रात में पहुँचे थे। (राजेअ : 371)

٢٩٤٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرِو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ رَضِيٍّ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ إِذَا غَزَا قَوْمًا لَمْ يُبْرِزْ حَتَّى يُصْبِحَ، فَإِنَّهُ سَمِعَ أَذَانًا أَمْسَكَ، وَإِنْ لَمْ يَسْمَعْ أَذَانًا أَغَارَ بَعْدَ مَا يُصْبِحُ. فَتَرَكْنَا خَيْرَ لَيْلٍ. [راجع: 371]

इस हदीष में भी इशारा है कि जंग शुरू करने से पहले हर वो मौक़ा तलाश कर लेना चाहिये जिससे जंग का ख़तरा टल सके क्योंकि इस्लाम का मक़्सद जंग हर्गिज़ नहीं है।

2944. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) हमें साथ लेकर एक ग़ज़वे के लिये तशरीफ़ ले गए। (राजेअ : 371)

٢٩٤٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيٍّ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ غَزَا بَنِي ح.)).

[راجع: 371]

2945. (दूसरी सनद) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूल करीम (ﷺ) रात में ख़ैबर तशरीफ़ ले गए और आप (ﷺ) की आदत थी कि जब किसी क्रौम तक रात के वक़्त पहुँचते तो सुबह से पहले उन पर हमला नहीं करते थे। जब सुबह हुई तो यहूदी अपने फ़ावड़े और टोकरे लेकर बाहर (खेतों में काम करने के लिये) निकले जब उन्होंने इस्लामी लश्कर देखा तो चीख पड़े मुहम्मद वल्लाह मुहम्मद लश्कर समेत आ गये। इस पर नबी

٢٩٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلَمَةَ بْنِ مَالِكٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيٍّ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ إِلَى خَيْبَرَ فَبَاجَعَهَا لَيْلًا - وَكَانَ إِذَا جَاءَ قَوْمًا بِلَيْلٍ لَا يُبْرِزُ عَلَيْهِمْ حَتَّى يُصْبِحَ - فَلَمَّا أَصْبَحَ خَرَجَتْ يَهُودُ بِمَسَاجِيهِمْ وَمَكَائِلِهِمْ، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَآلُ مُحَمَّدٍ وَالْعَمَتِيُّ.

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की ज़ात सबसे बड़ी है। अब ख़बर तो ख़राब हो गया कि जब हम किसी क़ौम के मैदान में मुजाहिदीन उतर आते हैं तो (कुफ़्र से) डराये हुए लोगों की मुबह मन्हुस हो जाती है। (राजेअ: 371)

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّهُ أَكْبَرُ، غَرِبَتْ غَيْرُهُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ لَفَسَتْ صَبَاحُ الْمُتَلَبِّينَ)). [راجع: 371]

जंगे ख़ैबर का पसमंज़र यहूदियों की मुसलसल ग़दारी और तबई फ़साद अंगेज़ी थी। तफ़सीली हलालत अपने मौक़े पर बयान होंगे। हदीष में लफ़्ज़ मसाहीहिम मिस्हात की जमा है जिससे मुराद फावड़े हैं और मकातिलुहुम मकतल की जमा है, वो टोकरी जो पन्द्रह साज़ वज़न की वुस्तत रखती हो। ख़मीस से मुराद जो पाँच हिस्सों पर तक्सीम होता है मयमनति और मयसरति क़ल्ब और साक़त और मुकद्दमति इसी निस्बत से लश्कर को ख़मीस कहा गया है और साहति से मुराद अलान है, व अस्लुहा अल्फ़ज़ाउ बैनल्मनाज़िल कज़ा फिल्मज़मइ वल्ऐनी वल्किर्मानि।

2946. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा कि हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक जंग करता रहूँ यहाँ तक कि वो इसका इक़रार कर लें कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, पस जिसने इक़रार कर लिया कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं तो उसकी जान और माल हमसे महफूज़ है सिवाए उस हक़ के जिसकी बिना पर क़ानूनन उसकी जान व माल ज़द में आए और उसका हिसाब अल्लाह के ज़िम्मे है। इसकी रिवायत इमर और इब्ने इमर (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से की है।

٢٩٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُثَنَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَمِرْتُ أَنْ أَقْبِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، فَمَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَصَمَ لَقَدْ بَنَى نَفْسَهُ وَمَالَهُ إِلَّا بِحَقِّهِ، وَجَسَدُهُ عَلَى اللَّهِ)). رَوَاهُ عُمَرُ وَابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

**तशरीह:** इस हदीष में रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी हयाते तय्यिबा का मक्सदे अज़ीम बयान फ़र्माया कि मुल्के अरब में मुझको अपनी हयात में उम्सूले इस्लाम या'नी ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मद रसूलुल्लाहि का निफ़ाज़ कर देना है जो लोग खुशी से इस दा'वत को कुबूल कर लेंगे वो हमारी इस्लामी बिरादरी के मेम्बर बनकर उन सारे हुक्क के मुस्तहिक़ हो जाएँगे जो इस्लाम ने मुसलमानों के लिये मुकरर किये हैं और जो लोग इस दा'वत के मद्दे मुकाबिल बनकर लड़ाई ही चाहेंगे उनसे मैं बराबर लड़ता रहूँगा यहाँ तक कि अल्लाह पाक हक़ व बातिल का फैसला करे। वैसे जो लोग न मुसलमान हों और न लड़ाई झगड़ा करें उनके लिये इस्लाम का उम्सूल ला इक्बराह फिद्दीन का है या'नी दीने इस्लाम की इशाअत में किसी पर ज़बरदस्ती जाइज़ नहीं है। ये सबकी मज़ी पर है, आज़ादी के साथ जो चाहे कुबूल करे जो न चाहे वो कुबूल न करे, इस्लाम ने मज़हब के बारे में किसी भी ज़बरदस्ती को रवा नहीं रखा।

**बाब 103 : लड़ाई का मुक़ाम छुपाना (दूसरा मुक़ाम बयान करना) और जुमेरात के दिन सफ़र करना**

2947. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन कअब

١٠٣- بَابُ مَنْ أَرَادَ غَزْوَةَ هُرَيْرَى لَعْنَهَا، وَمَنْ أَحَبَّ الْعُرُوجَ يَوْمَ الْعَصَصِ ٢٩٤٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْرِ حَنَّكَ الثَّيْتُ عَنْ حَقِيلٍ عَنْ ابْنِ جُهَيْنٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

(रज़ि.) ने, कअब (रज़ि.) (जब नाबीना हो गये थे) के साथ उनके दूसरे साहबज़ादों में यही अब्दुल्लाह उन्हें लेकर रास्ते में उनके आगे आगे चलते थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) का उसूल ये था कि जब आप (ﷺ) किसी ग़ज़वा का इरादा करते तो (मस्लिहत के लिये) दूसरा मुक्राम बयान करते (ताकि दुश्मन को खबर न हो)। (राजेअ : 2757)

كَفَبُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَفَبٍ -  
وَكَانَ قَائِدَ كَفَبٍ مِنْ بَنِيهِ - قَالَ :  
سَمِعْتُ كَفَبَ بْنَ مَالِكٍ حِينَ تَخْلَفَ عَنْ  
رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَتَمَّ يَكُنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
يُرِيدُ غَزْوَةً إِلَّا وَرَى بِغَيْرِهَا.

[راجع: ٢٧٥٧]

**तशरीह:** लफ़ज़ तोरिया के मा'नी ये कि किसी बात को इशारे किनाए से कह देना कि साफ़ तौर से कोई न समझ सके। ऐसा तोरिया जंगी मसालेह के लिये जाइज़ है। लअल्लिल्हिक्मत फीहि मारूबिय अन कौलिही (ﷺ) बूरिक लिउम्मतौ फी बुकूरिहा यौमल्लखमीस व कौनुहू (ﷺ) कान युहिब्बुल्लखुरूज यौमल्लखमीस ला यस्तल्लिजमुल्मुवाज़बत अलैहिल्कियाम मानिउम्मिन्हु व सयाती बअद बाबिन अन्नहू खरज फी बअजि अस्फारिही यौमस्सबति शुम्म औरदल्मुसन्निफ़ तरफम्मिन हदीषि कअब इब्नि मालिक अत्तवील व हुव जाहिरुन फीमा तरज्जमुन लहू क़ालल्किर्मा'नी कअब हुव इब्नि मालिक अल्अन्सारी अहदुष़लाषतुल्लज़ीन खुल्लिफू व सार आमा व कान लहू अब्नाउन व कान अब्दुल्लाहि यकूदुहू मिम्बैनि साइरि बनीहि. (हाशिया बुखारी) या'नी उसमें हिक्मत ये कि आँहज़रत (ﷺ) से मरवी है कि मेरी उम्मत के लिये जुमेरात के रोज़ सुबह सफ़र करने में बरकत रखी गई है मगर उससे मुवाबिज़त प्राबित नहीं होती क्योंकि कुछ सफ़र आप (ﷺ) ने हफ़्ते को भी शुरू किये हैं। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) यहाँ कअब बिन मालिक की तवील हदीष लाए हैं जिससे तर्जुमतुल बाब जाहिर है। कअब बिन मालिक वही अंसारी सहाबी हैं जो तबूक में पीछे रह गये थे। आप (रज़ि.) के कई लड़के थे जिनमें से अब्दुल्लाह नामी आपका हाथ पकड़ के चला करता था।

2948. और मुझसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें यूनस ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक ने खबर दी, उन्होंने कहा कि मैंने कअब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना आप बयान करते थे कि ऐसा कम इत्तिफ़ाक़ होता कि आँहज़रत (ﷺ) किसी जिहाद का क़सद करें और वही मुक्राम बयान करके उसको न छुपाएँ। जब आप (ﷺ) ग़ज़व-ए-तबूक को जाने लगे तो चूँकि ये ग़ज़वा बड़ी सख़्त गर्मी में होना था, लम्बा सफ़र था और जंगलों को तै करना था और मुक्राबला भी बहुत बड़ी फ़ौज से था, इसलिये आप (ﷺ) ने मुसलमानों से साफ़ साफ़ कह दिया था कि दुश्मन के मुक्राबले के लिये पूरी तैयारी कर लें चुनाँचे (ग़ज़वा के लिये) जहाँ आप (ﷺ) को जाना था (या'नी तबूक) उसका आपने साफ़ ऐलान कर दिया था। (राजेअ : 2757)

٢٩٤٨ - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا  
عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ:  
أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ  
كَفَبٍ بْنُ مَالِكٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَفَبَ بْنَ  
مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ قَلَمًا يُرِيدُ غَزْوَةً يَغْزُوهَا إِلَّا وَرَى  
بِغَيْرِهَا، حَتَّى كَانَتْ غَزْوَةُ تَبُوكَ فَهَازَهَا  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي حَرٍّ شَدِيدٍ، وَاسْتَقْبَلَ  
سَفَرًا بَعِيدًا وَمَقَارًا وَاسْتَقْبَلَ غَزْوًا عَدُوًّا  
كَثِيرًا، فَجَلَّى لِلْمُسْلِمِينَ أَمْرَهُمْ لِيَأْتُوا  
أَهْلَ عَدُوِّهِمْ، وَأَخْبَرَهُمْ بِوَجْهِهِ الَّذِي  
يُرِيدُ. [راجع: ٢٧٥٧]

2949. यूनस से रिवायत है, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्होंने

٢٩٤٩ - وَعَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ:

कहा कि मुझे अब्दुरहमान बिन कअब बिन मालिक ने खबर दी कि हजरत कअब बिन मालिक (रज़ि.) कहा करते थे कि कम ऐसा होता कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी सफ़र में जुमेरात के सिवा और किसी दिन निकलें। (राजेअ: 2757)

أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ كَانَ يَقُولُ: لَقَلَّمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَخْرُجُ إِذَا خَرَجَ فِي سَفَرٍ إِلَّا يَوْمَ الْخُمَيْسِ.

[راجع: ٢٧٥٧]

2950. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें मअमर ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें अब्दुरहमान बिन कअब बिन मालिक ने और उन्हें उनके वालिद हजरत कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) ग़च्च-ए-तबूक के लिये जुमेरात के दिन निकले थे। आप (ﷺ) जुमेरात के दिन सफ़र करना पसन्द करते थे। (राजेअ: 2757)

٢٩٥٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمَ الْخُمَيْسِ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يَخْرُجَ يَوْمَ الْخُمَيْسِ. [راجع: ٢٧٥٧]

ग़च्चा तबूक के मौक़े पर आँहजरत (ﷺ) ने तौरिया नहीं फ़र्माया बल्कि साफ़-साफ़ लफ़्ज़ों में उस जंग का ऐलान कर दिया था हर लिहाज़ से ये मुकाबला बहुत ही सख़्त था और मुसलमानों को उसके लिये पूरे-पूरे तौर पर तैयार होना था। मक्क़े के बाबू ये कि इमाम हालात के तहत मुख़्तार है कि वो हस्बे मौक़ा तौरिया से काम ले या न ले जैसा मौक़ा महल देखे वैसा ही कर ले।

#### बाब 104 : जुहर की नमाज़ के बाद सफ़र करना

#### ١٠٤- بَابُ الْخُرُوجِ بَعْدَ الظُّهْرِ

कुछ दफ़ा जुहर के बाद में सफ़र में निकलना आपसे प्राबित है। गुज़िश्ता हदीष में सुबह की कैद सिर्फ़ इसलिये मज़कूर हुई कि वो वक़्त खुशी का होता है सुबह की खुसूसियत नहीं है।

2951. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना में जुहर चार रकअत पढ़ी फिर अम्र की नमाज़ जुलहुलैफ़ा में दो रकअत पढ़ी और मैंने सुना कि महाबा हज्ज और उमरह दोनों का लब्बैक एक साथ पुकार रहे थे। (राजेअ: 1089)

٢٩٥١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِالْمَدِينَةِ الظُّهْرَ أَرْبَعًا، وَالْعَصْرَ بِدَوِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ، وَسَمِعْتُهُمْ يَصْرُخُونَ بِهِمَا جَمِيعًا. [راجع: ١٠٨٩]

आँहजरत (ﷺ) का ये सफ़र हज्ज के लिये था मगर सफ़रे जिहाद को भी इस पर क़यास किया जा सकता है कि बेहतर है जुहर की नमाज़ पढ़कर इत्मीनान से ये सफ़र शुरू किया जाए।

#### बाब 105 : महीना के आखिरी दिनों में सफ़र करना

#### ١٠٥- بَابُ الْخُرُوجِ آخِرَ الشَّهْرِ



और कुरैब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) (हज्जतुल विदाअ के लिये) मदीना से उस वक़्त निकले जब ज़ी क़अदा के पाँच दिन बाकी थे। और चार ज़िल्हिज्ज को मक्का पहुँच गए थे।

وَقَالَ كُرَيْبٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ لِخَمْسِ بَقِيْنَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ وَقَدِمَ مَكَّةَ لِأَرْبَعِ لَيَالٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ)).

या'नी महीना के आखिरी दिनों में सफ़र करना जाइज़ है कुछ बुरा नहीं जैसे कुछ जाहिल समझते हैं कि चाँद के उरूज में सफ़र करना चाहिये न नुज़ूल में। हदीषे बाब में मज़क़ूर सफ़र का ता'ल्लुक हज्ज से है मगर जिहाद के सफ़र को भी इस पर क़यास किया जा सकता है कि हस्बे मौक़ा अगर आखिर माह में सफ़रे जिहाद पर निकलना पड़े तो उसमें कोई क़बाहत नहीं है।

2952. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया इमाम मालिक से, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अम्रा बिनते अब्दुर्रहमान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना से (हज्जतुल विदाअ के लिये) रसूले करीम (ﷺ) के साथ हम उस वक़्त निकले जब ज़ीक़अदा के पाँच दिन बाकी थे, हफ़्ता के दिन हमारा मक्क़द हज्ज के सिवा और कुछ भी न था। जब हम मक्का से करीब हुए तो रसूले करीम (ﷺ) ने हुक्म फ़र्माया कि जिसके साथ कुर्बानी का जानवर न हो जब वो बैतुल्लाह के तवाफ़ और सफ़ा और मरवा की सड़ से फ़ारिग हो जाए तो एहराम खोल दे। (फिर हज्ज के लिये बाद में एहराम बाँधे) हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि दसवीं ज़िल्हिज्ज को हमारे यहाँ गाय का गोश्त आया, मैंने पूछा की गोश्त क्या है? तो बताया गया कि रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी बीवियों की तरफ़ से जो गाय कुर्बानी की है ये उसी का गोश्त है। यह्या ने बयान किया कि मैंने उसके बाद इस हदीष का ज़िक़्र क़ासिम बिन मुहम्मद से किया तो उन्होंने बताया कि क़सम अल्लाह की! अम्रा बिनते अब्दुर्रहमान ने तुमसे ये हदीष ठीक ठीक बयान की है। (राजेज़: 294)

٢٩٥٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهَا سَمِعَتْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لِخَمْسِ لَيَالٍ بَقِيْنَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ وَلَا نَرَى إِلَّا الْحَجَّ، فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنْ مَكَّةَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَذِي إِذَا طَافَ بِأَيْتِ وَسْقَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ أَنْ يَحِلَّ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَدَخَلَ عَلَيْنَا يَوْمَ النُّخْرِ بِلَحْمٍ بَقَرٍ، فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ فَقَالَ: نَحْرُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَنْ أَزْوَاجِهِ)) قَالَ يَحْيَى فَذَكَرْتُ هَذَا الْحَدِيثَ لِلْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ فَقَالَ أَتَيْتُكَ وَاللَّهِ بِالْحَدِيثِ عَلَى

(وَجْهٍ)). [راجع: ٢٩٤]

यहाँ भी आँहज़रत (ﷺ) के सफ़रे हज्जे मुबारक का ज़िक़्र है कि आप (ﷺ) आखिर माह में उसके लिये निकले और ये मौक़ा भी ऐसा ही था। पस जिहाद के लिये भी इमाम जैसा मौक़ा देखे सफ़र शुरू करे। अगर महीना के आखिरी दिनों में निकलने का मौक़ा मिल सके तो ये और बेहतर होगा कि सुन्नते नबवी पर अमल हो सकेगा। बहरहाल ये इमाम की सवाबदीद पर है।

रिवायत में हज़रत इमाम मालिक (रह.) का नाम आया है, जिनका नाम मालिक बिन अनस बिन मालिक बिन आमिर अस्बही है। अबू अब्दुल्लाह कुत्रियत है, इमाम दारुल हुज्ज़रह व अमीरुल मोमिनीन फ़िल् हदीष के लक़ब से मशहूर हैं इनके दादा आमिर अस्बही सहाबी हैं जो बद्र के सिवा तमाम ग़ज़ात में शरीक हुए। इमाम साहब 93 हिजरी में पैदा हुए। तब्ज़े ताबेईन में से हैं।

अगरचे मदीना मौलिव व मस्कन था मगर किसी सहाबी के दीदार से मुशरफ़ नहीं हुए। ये शर्फ़ क्या कम है कि इमाम

दारुल हुजरा थे। हमें मुहतरम नबी (ﷺ) के मुदरिस व मुफती नाफेअरबी आराई, इमाम जा'फर सादिक और अबू हाजिम वगैरह बहुत शयूख से इल्म हासिल किया जिनकी ता'दाद नौ सौ बयान की गई है। नाफेअ ने वफात पाई तो इमाम साहब उनके जानशीन हुए, उस वक़्त आपकी सत्रह साल की उम्र थी। इमाम साहब की जाए सुकूनत (निवास स्थान) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) का मकान और नशिस्तगाह हज़रत उमर (रज़ि.) का मकान था। इमाम साहब की मज्लिसे दर्स निहायत आरास्ता व पैरास्ता होती थी। सब लोग अदब के साथ बैठते थे, इमाम साहब गुस्ल करके खुशबू लगाकर उमदा लिबास पहनकर निहायत वक्रार व मतानत से बैठते थे, खलीफा हारून रशीद खुद हाज़िरे दर्स होता था, आलमे शर्क से गुर्ब तक इमाम साहब के शोहरत की आवाज़ों से गूँज उठा। शैख अब्दुरहमान बिन महदी का कौल है कि रूए ज़मीन पर मालिक से बढ़कर कोई हदीषे नबवी का अमानतदार नहीं। इमाम साहब ने एक लाख हदीषें लिखी थीं उनका इतिखाब मौता है (मुकहमा शरह मौता)। इमाम साहब सखी व आबिद व मुस्ताज़ थे। अहले इल्म की बहुत मदद करते थे, इमाम शाफ़िई (रह.) को ग्यारह हज़ार देते थे, इमाम साहब के अस्तबल में बहुत से घोड़े थे मगर कभी घोड़े पर सवार होकर मदीना में न निकलते थे। फ़र्माया करते थे कि मुझे शर्म आती है कि जो ज़मीन रसूले करीम (ﷺ) के क़दमे मुबारक से मुशरफ़ हुई है उसको मैं जानवरों के सिमों से रौंदू। इमाम साहब के तलामिज़ा (शागिर्दों) की ता'दाद तेरह सौ है, उनमें बड़े बड़े अइम्मा और मुहदिषीन और उम्मा शामिल हैं। मालिकी मज़हब की पैरवी करने वाले अरब और शिमाली (दक्षिणी) अफ़्रीका में हैं। इमाम मालिक की बहुत सी तज़ानीफ़ (किताबें) हैं उनमें ज़्यादा मशहूर मौता है, किताबुल मसाइल हैं। खलीफा अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह के सामने बहुत से मुतशिर औराक़ पड़े थे जिनके बारे में खलीफा ने कहा कि ये इमाम मालिक के सत्तर हज़ार मसाइल का मज्मूआ है। (तज़ईनुल मालिक) जिस हदीष का सिलसिल-ए-रिवायत मालिक अन नाफेअ अन इब्ने उमर होगा, उसको सिलसिलतुज़ज़हब कहते हैं। मदीना के गवर्नर जा'फर ने इमाम साहब को हुक्म दिया था कि आइन्दा तलाके (जबरी) का फ़त्वा न दिया करें, इमाम साहब को कित्माने हक़ गवारा न हुआ। हुक्म की ता'मील न की, जा'फर ने ग़ज़बनाक होकर सत्तर कोड़े लगाए तमाम पीठ खून आलूद हो गई, दोनों हाथ मूँकों से उतर गये। खलीफा मंसूर जब मदीना आया तो इमाम साहब से उज़्र किया और कहा कि मुझको आपकी तज़ज़ीर का इल्म नहीं। मैं जा'फर को सज़ा दूँगा। इमाम साहब ने फ़र्माया मैंने मुआफ़ किया, आपने 179 हिजरी में वफात पाई, इब्ने मुबारक व यह्या क़त्तान उनके शागिर्द थे। इमाम साहब अपने इस शेर को अक़वर पढ़ा करते थे जिसमें उन्होंने एक हदीष के मज़मून को लिया है।

खैरुलउमूरिदीनि मा कान सुन्नतुहू

व शरैलउमूर अल्मुहदघातुल्बदाइज़

### खात्मा पारा नम्बर ग्यारह

अर्सा-ए-दराज़ (काफ़ी अर्से) की मुसलसल जद्दोज़हद के बाद महज़ अल्लाह जुल जलालि वल् इकराम की तौफ़ीक़ व इआनत से आज बुखारी शरीफ़ के पारा 11 का तर्जुमा और मुस्तसर तशरीहात की तस्वीद से फ़राग़त हासिल हुई। काम जिस क़दर अहम और मरहूला जितना कठिन था वो अहले फ़न ही जानते हैं, ख़ास तौर पर ये पारा जिसका किताबुल वसाया के बाद सारा हिस्सा किताबुल जिहाद पर मुस्तमिल है जाहिर है कि लफ़्ज़े जिहाद पर कुछ मुतअस्सिब ग़ैर-मुस्लिम हज़रात ने ख़्वाह मख़्वाह बेजा मुहम्मल ए'तिराज़ात किये हैं जिनकी मुदाफ़िअत भी ज़रूरी थी, इसलिये इस किताब में हत्तल इम्कान इस अमर पर ख़ास तवज़ह दी गई है जैसा कि फ़ारेईने किराम खुद अंदाज़ा लगा सकेंगे हर मुम्किन कोशिश के बावजूद ये भी ऐन मुम्किन है कि उलमा-ए-फ़न को तर्जुमा और तशरीहात में कुछ ख़ामियाँ नज़र आएँ, ऐसे मुअज़ज़ हज़रात से मुअदेबाना इल्तिमास करूँगा कि जहाँ भी वाक़ई कुछ ख़ामी नज़र आए मुत्तलअ करके शुक्रिया का मौक़ा दें।

मैं इस मुबारक मुक़द्दस किताब का एक अदनातरीन तालिबे इल्म हूँ इसकी गहराइयों तक कुल्लियतन पहुँचना मुझ जैसे ख़ाम-तबअ, कम इल्म इंसान का काम नहीं है। इस हकीक़त के बावजूद महज़ ज़च्च-ए-ख़िदमते नबवी के तहत जो भी मुझसे हो सका है वो आपके सामने है। इख़्तिसार व ईज़ार भी ज़रूरी था कि आजकल शाएकीने किराम (शौक़ रखने वाले लोग) अगर इस क़दर भी मुतालअ करके हदीषे नबवी से अपने ईमान रोशन कर सकें तो ये भी बहुत कुछ है वरना त्वालत

का मैदान बेहद वसीअ है कि अल्फाज़ हदीषे नबवी व सनद व रिजाल व तराजिम पर तफ़्सीलन क़लम उठाया जाता तो हर पारा एक मुस्तक़िल दफ़्तर बन जाता जिसका तब्अ (प्रकाशन) करना, शाएकीने किराम का हासिल करना, फिर मुतालआ करना बहुत ही भारी हो जाता। अगरचे फ़त्री हैशियत से अकाबिरे फ़न शायद इस ख़ामी को महसूस करें मगर बाअदब अर्ज करूंगा कि ऐसे ही मौक़ों के लिये ख़ैरुल क़लाम मा क़ल्ल व दल्ल कहा गया है।

आख़िर में तहेदिल से बारगाहे अहदियत में दस्ते दुआ दराज़ करता हूँ कि ऐ परवरदिगार! सारी कायनात के पालनहार नाचीज़ की इस हकीर ख़िदमतें इस्लाम को कुबूल फ़र्माकर कुबूले आम अता कर दे और न सिर्फ़ मेरे लिये बल्कि मेरे तमाम मुआविनीने किराम के लिये मेरे वालिदैन् मरहूमीन् के लिये, मेरी आल-औलाद के लिये, असातिज़ा-ए-इज़ाम के लिये और तमाम मुतालआ करने वालों के लिये इस किताब को दोनों ज़हान की तरक्की का ज़रिया बना दे और इससे ईमान में तरक्की अता कर और अपनी और अपने हबीब (ﷺ) की मुहब्बत से हम सबके दिलों को भरपूर करके ख़ातिमा बिल ख़ैर नसीब फ़र्मा आमीन!

या अल्लाह! जिस तरह इस अहम ख़िदमत को तूने इस मंज़िल तक पहुँचाया है उसी तरह बल्कि उससे भी ज़्यादा अहसन तरीक़े पर बाक़ी मनाज़िल को तै करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माइयो।

रब्बिशरह ली स़दरी व यस्सिर ली अम्पी वग़्फ़िरली ख़ताई व जहली (आमीन) व सल्लल्लाहु अला ख़ैरिलख़लाइकि सय्यिदुलअम्बियाइ मुहम्मदिनिल्मुस्तफ़ा व आलिहिल्मुज्जबा व अम्हाबिही मस्राबिहिल्हुदा इला यौमिद्दीन् बिरहमतिक या अर्हमररहिमीन्

खादिम हदीषे नबवी

मुहम्मद दाऊद राज़ बिन अब्दुल्लाह सलफ़ी देहलवी

मुक़ीम मस्जिद अहले हदीष नम्बर 4121

अजमेरी गेट देहली-6 भारत

अव्वल मुहर्रमुल हुराम 1391 हिजरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## बारहवां पारा

### बाब 106 : रमज़ान के महीने में सफ़र करना

2953. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, कहा मुझसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तहे मक्का के लिये मदीना से) रमज़ान में निकले और रोज़े से थे। जब आप (ﷺ) मुकामे-कदीद पर पहुँचे तो आप (ﷺ) ने इफ़्तार किया।

सुफयान ने कहा कि जुहरी ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फिर यही हदीस बयान की। (राजेअ: 1944)

### ١٠٦ - بَابُ الْخُرُوجِ فِي رَمَضَانَ

٢٩٥٣ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي رَمَضَانَ فَهَئِمَّا حَتَّى بَلَغَ الْكَدِيدَ أَفْطَرَ)).

فَإِنْ سُفْيَانُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ. وَسَأَلَ الْحَدِيثَ.

[راجع: ١٩٤٤.]

**तशरीह:** इस आखिरी सनद के बयान करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि अब्दुल्लाह से सिमाअ की उसमें जुहरी ने तसरीह की है और यही पहली रिवायत में उसकी स़राहत नहीं है, कुछ नुस्खों में यहाँ इबारत ज़ाइद है। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा औ हज़रत (ﷺ) के आखिरी फ़ैअल को लिया जाए या नी आखिर काम आप (ﷺ) का ये है कि आप (ﷺ) ने कदीद में पहुँचकर इफ़्तार कर लिया।

तो मा'लूम हुआ कि अगर रमज़ान में सफ़र पेश आये तो इफ़्तार करना दुरुस्त है और ये मसला आयते कुर्आनी, व मन कान मरीज़न औ अला सफरिन फइद्दतुम्मिन अय्यामिन उखर (अल बकर: 185) से प्राबित है। यहाँ इस हदीस को लाने से हज़रत मुज्ताहिदे मुत्लक इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि जिस शरह ने रमज़ान में सफ़र मकरूह बताया, उसका क़ौल सहीह नहीं है।

आज 26 मुहर्रम 1391 हिजरी को दानापुर पटना में मुखिलस व मुहिब्बी हज़रत हाजी अब्दुल ग़फ़ार टेलर के दौलतकदा पर नज़रे प्रानी शुरू कर रहा हूँ। अल्लाह पाक मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और मेरे मुहतरम भाई को दोनों जहाँ की बरकतों से मज़ीद दर मज़ीद नवाज़े और उनके हसनाते जारिया को कुबूल करे आमीन। 18 मार्च 1971 ईस्वी

### बाब 107 : सफ़र शुरू करते वक़्त मुसाफ़िर को रुख़सत करना

### ١٠٧ - بَابُ التَّوْدِيعِ

2954. और अब्दुल्लाह बिन वहब ने कहा कि मुझको अमर बिन हारिष ने खबर दी, उन्हें बुकैर ने, उन्हें सुलैमान बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें एक फ़ौज में भेजा और हिदायत की कि अगर फ़लों फ़लों दो कुरैशी (हिबा बिन अस्वद और नाफ़ेअ बिन अब्दु इमर) जिनका आपने नाम लिया तुमको मिल जाएँ तो उन्हें आग में जला देना। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि जब हम आप (ﷺ) की खिदमत में आप (ﷺ) से रुख़सत होने की इजाज़त के लिये हाज़िर हुए, उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें पहले हिदायत की थी कि फ़लों फ़लों कुरैशी अगर तुम्हें मिलें तो उन्हें आग में जला देना। लेकिन ये हक़ीक़त है कि आग की सज़ा देना अल्लाह पाक के सिवा किसी के लिये सज़ावार नहीं है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिल जाएँ तो उन्हें क़त्ल कर देना (आग में न जलाना)। (दीगर मक़ाम : 3016)

**तशरीह :** इन दोनों मरदूनों ने आँहज़रत (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) को रास्ते में बहालते हमल ऐसा बरछा मारा था कि उनका हमल साक़ित हो गया। इसलिये आप (ﷺ) ने पहले उनको मिलने पर आग में जलाने का हुक्म दिया, फिर बाद में क़त्ल का हुक्म दिया। मा'लूम हुआ कि आग में जलाना हराम है, पहले आप (ﷺ) ने अपनी राय से हुक्म दिया था, फिर वज़्रो इलाही से इसको मन्सूख़ कर दिया। क़स्तलानी (रह.) ने कहा पिस्सू और खटमल वग़ैरह का भी आग में जलाना मकरूह है और कुछ डाकुओं के लिये जो आप (ﷺ) ने आँखों में गर्म सिलाइयाँ डालने का हुक्म दिया था वो क़िसासन था क्योंकि उन ज़ालिमों ने अस्फ़ाबे रसूल (ﷺ) के साथ यही हरकत की थी। इशदि बारी तआला है, या अघ्युहल्लज़ीन आमनू कुतिब अलैकुमुल्किस्मासु फिलक़त्ला अल्हुर्लु बिल्हुरि अल्अब्दु बिल्अब्दि वल्उन्ना बिल्उन्ना (अल् बकरः) या'नी क़िसास में आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत क़त्ल की जाएगी बल्कि आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत तोड़े जाएँगे। इसी क़ानून इलाही के तहत उन डाकुओं को ये संगीन सज़ा दी गई थी।

### बाब 108 : इमाम (बादशाह या हाकिम) की इताअत करना

2955. हमसे मुसद्दद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से। (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (ख़लीफ़-ए-वक़्त के अहक़ाम) सुनना और उन्हें बजालाना (हर

٢٩٥٤ - وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي عَمْرُو عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: بَقِيَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِهِ وَقَالَ لَنَا: ((إِنْ لَقِيتُمْ فَلَانًا وَفَلَانًا - لَوْجَلَيْنِ مِنْ قَوْمَيْهِمَا - فَعَرِّقُوهُمَا بِالنَّارِ)). قَالَ: ثُمَّ اتَّيْنَاهُ نُوْدَعُهُ حِينَ أَرَدْنَا الْخُرُوجَ فَقَالَ: ((إِنِّي كُنْتُ أَمُرُكُمْ أَنْ تَحَرَّقُوا فَلَانًا وَفَلَانًا بِالنَّارِ، وَإِنَّ النَّارَ لَا يُعَذِّبُ بِهَا إِلَّا اللَّهُ، فَإِنْ أَحَدُكُمُوهَا فَاقْتُلُوهُمَا)).

[طريقه ب : ٣٠١٦]

### ١٠٨ - بَابُ السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِلْإِمَامِ

٢٩٥٥ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنْ غُنَيْدٍ أَنَّ اللَّهَ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ زَكْرِيَّا عَنْ غُنَيْدٍ أَنَّ اللَّهَ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ حَقٌّ، مَا لَمْ يُؤْمَرْ بِالْمَعْصِيَةِ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلَا سَمْعَ

मुसलमान के लिये) वाजिब है, जब तक कि गुनाह का हुक्म न दिया जाए। अगर गुनाह का हुक्म दिया जाए तो फिर न उसे सुनना चाहिये और न उस पर अमल करना चाहिये। (दीगर मक्काम : 7144)

وَلَا طَاعَةَ)). [طرفه في : 7144]

क्योंकि दूसरी हदीष में है, ला ताअत लिमखलूकिन फी मअसियतिलखालिक बड़ा बादशाह हक़ तआला है, उसके हुक्म के खिलाफ़ में किसी का हुक्म न सुनना चाहिये। अगर कोई बादशाह खिलाफ़े-शरअ हुक्म दे तो उसको समझाना चाहिये। वरना सब लोग मिलकर ऐसे बादशाह को मअज़ूल (अपदस्थ) कर दें। इस हदीष से उन लोगों का भी रद्द हुआ जो आयाते कुआनी व हदीषे नबविया के होते हुए अपने इमामों के क़ौल पर जमे रहते हैं और आयात व अह्लादीष की ग़लत तावीलात करके उनको टाल देते हैं। जिनकी बहुत सी मिषालें अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) की किताब ईलामुल मूकिईन में देखी जा सकती हैं। बक़ौल हुज्जतुल हिन्द शाह वलीउल्लाह (रह.) ऐसे लोग क्या जवाब देंगे जिस दिन अल्लाह की अदालत आलिया में खड़े होना होगा। कुआन मज़ीद में जहाँ इताअत वालिदैन् का हुक्म है वहाँ साफ़ मौजूद है कि अगर माँ-बाप शिकं करने का हुक्म दें तो उनकी इताअत हरिज़ न की जाए। इस हदीष से तक्लीदे जामिद की जड़ कट जाती है। कहने वाले ने सच कहा है :-

फहरब अनित्तक्लीदि फहुव ज़लालतुन,

इन्नल्मुकल्लिद फी सबीलिल्हालिक

या'नी तक्लीदे जामिद से दूर रहो ये बर्बादी का रास्ता है। ये नुक्ता भी याद रखना ज़रूरी है। मज़ीद तफ़सील के लिये मेअयारुल हक़ हज़रत शैखुल कुल मौलाना सय्यद नज़ीर हुसैन साहब (रह.) मुहद्दिष देहलवी का मुतालआ किया जाए।

बाब 109 : इमाम (बादशाह इस्लाम) के साथ होकर लड़ना और उसके ज़ेरे साया अपना (दुश्मन के हमलों से) बचाव करना

2956. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, हमको शुएब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़रमाते थे कि हम लोग गो दुनिया में सबसे पीछे आए लेकिन (आख़िरत में) जन्नत में सबसे आगे होंगे। (राजेअ : 238)

2957. और इसी सनद के साथ रिवायत है कि जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और जिसने अमीर की इताअत की उसने मेरी इताअत की और जिसने अमीर की नाफ़रमानी की, उसने मेरी नाफ़रमानी की। इमाम की मिषाल ढाल जैसी है कि उसके पीछे रहकर उसकी आड़ में (या'नी उसके साथ होकर) जंग की जाती है और उसी के ज़रिये (दुश्मन के हमले से) बचा जाता है, पस अगर इमाम तुम्हें अल्लाह से डरते रहने का हुक्म दे और इंसाफ़ करे उसका प्रवाब उसे मिलेगा, लेकिन अगर बेइंसाफ़ी करेगा तो उसका बवाल उस पर होगा। (दीगर मक्काम : 7137)

١٠٩ - بَابُ يُقَاتِلُ مِنْ وَرَاءِ الْإِمَامِ،

وَيُتَّقَى بِهِ

٢٩٥٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ أَنَّ الْأَعْرَجَ حَدَّثَنَا أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((نَحْنُ الْآخِرُونَ السَّابِقُونَ)). [راجع : ٢٣٨]

٢٩٥٧ - وَبِهَذَا الْإِسْنَادِ: ((مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللَّهَ. وَمَنْ يَطْعُ الْأَمِيرَ فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ يَعْصِي الْأَمِيرَ فَقَدْ عَصَانِي. وَإِنَّمَا الْإِمَامُ جُنَّةٌ يُقَاتَلُ مِنْ وَرَائِهِ، وَيُتَّقَى بِهِ. فَإِنْ أَمَرَ بِتَقْوَى اللَّهِ وَعَدَلَ فَإِنَّ لَهُ بِذَلِكَ أَجْرًا، وَإِنْ قَالَ بِغَيْرِهِ فَإِنَّ عَلَيْهِ جُنَّةً)).

[طرفه في : 7137]

**तशरीह:**

या'नी इमाम की ज्ञात लोगों का बचाव होती है। कोई किसी पर जुल्म करने नहीं पाता। दुश्मनों के हमले से उसी की वजह से हिफाजत होती है क्योंकि वो हर वक़्त मुदाफ़िअत (रक्षा) के लिये तैयार रहता है। इन अह्दादीष से इमामे वक़्त की शख़्सियत और उसकी ताक़त पर रोशनी पड़ती है और सियासते इस्लामी और हुकूमते शरई का मुक़ाम ज़ाहिर होता है जिसके न होने की वजह से आज हर जगह इस्लाम ग़रीब है और मुसलमान गुलामाना ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर हैं। इन अह्दादीष पर उन हज़रात को भी ग़ौर करना चाहिये जो अपने किसी मौलवी साहब को इमामे वक़्त का नाम देकर उसकी बेअत के लिये लोगों को दा'वत देते हैं और हालत ये कि मौलवी साहब को हुकूमत के मा'मूली चपरासी जितनी ताक़त व सियासत हासिल नहीं है।

**बाब 110 : लड़ाई से न भागने पर और कुछ ने कहा मर जाने पर बेअत करना**

क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह फ़तह में फ़र्माया, बेशक अल्लाह मुसलमानों से राज़ी हो चुका है जब वो पेड़ (शजरे रिज़्वान) के नीचे आपके हाथ पर बेअत कर रहे थे। (अल फ़तह: 18)

۱۱۰- بَابُ الْبَيْعَةِ فِي الْحَرْبِ أَنْ لَا يَفِرُّوْا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: عَلَى الْمَوْتِ  
إِقْوَالُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾  
[الفتح: ۱۸]

**तशरीह:**

लफ़्जे बेअत बाआ यबीउ का मसदर है, जिसके मा'नी बेच डालने के है। एक मुसलमान, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हाथ पर जन्नत के बदले अपने आपको बेच डालने का इक़रार करता है, इस इक़रार का नाम बेअत है। अहदे नबवी में ये बेअत इस्लाम के लिये और जिहाद के लिये की जाती थी। अहदे ख़िलाफ़त में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की इत्ताअत फ़र्माबरदारी करने के लिये बेअत होती थी। इस्लाम लाने के लिये किसी बुजुर्ग के हाथ पर बेअत करना ये अब भी जारी है।

2958. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि (सुलह हुदैबिया के बाद) जब हम दूसरे साल फिर आए, तो हममें से (जिन्होंने सुलह हुदैबिया के मौक़े पर आँहज़रत ﷺ से बेअत की थी) दो शख़्स भी उस पेड़ की निशानदेही पर मुत्तफ़िक़ नहीं हो सके जिसके नीचे हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की थी और ये सिर्फ़ अल्लाह की रहमत थी। जुवैरिया ने कहा, मैंने नाफ़ेअ से पूछा, आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा से किस बात पर बेअत की थी, क्या मौत पर ली थी? फ़र्माया कि नहीं, बल्कि सब्र व इस्तिक़्ामत पर बेअत ली थी।

۲۹۵۸- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((رَجَعْنَا مِنَ الْمَامِ الْمُقْبِلِ، فَمَا اجْتَمَعَ بِنَا اثْنَانِ عَلَى الشَّجَرَةِ الَّتِي بَايَعْنَا تَحْتَهَا، كَانَتْ رَحْمَةً مِنَ اللَّهِ. فَسَأَلْتُ نَافِعًا: عَلَى أَيِّ شَيْءٍ بَايَعْتُهُمْ، عَلَى الْمَوْتِ؟ قَالَ: لَا، بَلْ بَايَعْتُهُمْ عَلَى الصَّبْرِ)).

**तशरीह:**

सुलहे हुदैबिया से पहले मक्का से जब हज़रत उम्मान (रज़ि.) के क़त्ल की अफ़वाह आई, तो आँहज़रत (ﷺ) ने उस नाहक ख़ून का बदला लेने के लिये तमाम सहाबा (रज़ि.) से एक पेड़ के नीचे बैठकर बेअत ली थी कि इस नाहक ख़ून के बदले के लिये आखिरी दम तक कुफ़्रफ़ार से लड़ेंगे। इस बेअत पर अल्लाह तआला ने अपनी रज़ा का इज़हार कुर्आन में फ़र्माया था और ये इस बेअत में शरीक होने वाले तमाम सहाबा (रज़ि.) के लिये फ़ख़्र और दीन-दुनिया का सबसे बड़ा ऐज़ाज़ हो सकता था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि फिर बाद में जब हम सुलहे हुदैबिया के साल उमरह की कज़ा करने आँहज़रत (ﷺ) के साथ गये तो हम उस जगह की निशानदेही न कर सके जहाँ बैठकर आप (ﷺ) ने हमसे अहद लिया था। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि ये इस्लाम की तारीख़ का एक अज़ीमुशान वाक़िया था और ये

जाहिर है कि उस जगह पर अल्लाह तआला की रहमतों का नुजूल हुआ जहाँ बैठकर आँहज़रत (ﷺ) ने अपने तमाम सहाबा (रज़ि.) से अल्लाह के दीन के लिये इतनी अहम बेअत ली थी। इसलिये मुम्किन था कि अगर वो जगह हमें मा'लूम होती तो उम्मत के कुछ लोग उसकी वजह से फ़ितने (आज़माइश) में पड़ जाते और मुम्किन था कि जाहिल और खुशअक़ीदा किस्म के मुसलमान उसकी पूजापाठ शुरू कर देते। इसलिये ये भी अल्लाह की बहुत बड़ी रहमत थी कि उस जगह के आभार व निशानात हमारे ज़हनों से भुला दिये और उम्मत के एक तबके को अल्लाह ने शिर्क में मुब्तला होने से बचा लिया। शिर्क के अक़्बर मराकिज़ (केन्द्रों) का आगाज़ ऐसे ही तवह्हुमात की बिना (वहमों के आधार) पर शुरू हुआ करते हैं। शुरू में लोग कुछ यादगारें बनाते हैं, बाद में वहाँ पूजा पाठ शुरू हो जाती है।

2959. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, कहा हमसे अम्म बिन यह्याने, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि हरह की लड़ाई के ज़माने में एक स्राहब उनके पास आए और कहा कि अब्दुल्लाह बिन हज़ला लोगों से (यज़ीद के खिलाफ़) मौत पर बेअत ले रहे हैं। तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद, मैं मौत पर किसी से बेअत नहीं करूँगा। (दीगर मक़ाम : 4167)

۲۹۵۹- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عُبَادِ بْنِ تَمِيمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا كَانَ زَمَنُ الْخُرَّةِ آتَاهُ آتٍ فَقَالَ لَهُ: إِنَّ بَنِي حَظَلَةَ يَتَّبِعُونَ النَّاسَ عَلَى الْمَوْتِ. فَقَالَ: لَا أَتَّبِعُ عَلَى هَذَا بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

[طرمه ي : ۴۱۶۷]

**तशरीह:** हरह की लड़ाई की तफ़सील ये कि 63 हिजरी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ला और कई मदीना वाले यज़ीद को देखने गये। जबकि वो लोगों से अपनी खिलाफ़त की बेअत ले रहा था। मदीना के इस वफ़द (प्रतिनिधि मण्डल) ने जाइज़ा लिया तो यज़ीद को खिलाफ़त का नाअहल (अयोग्य) पाया और उसकी हरकाते नाशाइस्ता से बेज़ार होकर वापस मदीना लौटे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के हाथ पर बेअते खिलाफ़त कर ली। यज़ीद को जब ख़बर मिली तो उसने मुस्लिम बिन इक्बा को सरदार बनाकर एक बड़ा लश्कर मदीना ख़वाना कर दिया। जिसने अहले मदीना पर बहुत से जुल्म ढाए, सैकड़ों हज़ारों सहाबा व ताबेईन और अवाम व ख़वास, मर्दों और औरतों और बच्चों तक को क़त्ल किया। ये हादसा हरह नामी एक मैदान, जो मदीना से जुड़ा हुआ है, वहाँ हुआ, इसीलिये उसकी तरफ़ मन्सूब हुआ। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद का मतलब ये था कि हम तो खुद रसूले करीम (ﷺ) के दस्ते हक़ परस्त पर मौत की बेअत कर चुके हैं। अब दोबारा किसी और के हाथ पर उसकी तजदीद की ज़रूरत नहीं है। मा'लूम हुआ कि मौत पर भी बेअत की जा सकती है जिससे इस्तिक़्ामत और सन्न मुराद है।

2960. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया। कहा हमसे यज़ीद बिन अबी इब्बैदुल्लाह ने बयान किया, और उनसे सलमा बिन अल अक्वा ने बयान किया कि (हुदैबिया के मौक़े पर) मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की। फिर एक पेड़ के साये में आकर खड़ा हो गया। जब लोगों का हुज़ूम कम हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, इब्ने अल अक्वा! क्या बेअत नहीं करोगे? उन्होंने कहा कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं तो बेअत कर चुका हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, दोबारा और भी! चुनाँचे मैंने दोबारा बेअत की (यज़ीद बिन अबी इब्बैदुल्लाह कहते हैं कि) मैंने सलमा

۲۹۶۰- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ وَصِيٍّ اللَّهِ عَنْهُ قَالَ: ((بَايَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ثُمَّ عَدَلْتُ إِلَى ظِلِّ الشَّجَرَةِ، فَلَمَّا خَفَ النَّاسُ قَالَ: ((يَا ابْنَ الْأَكْحَوَعِ لَا تَبَايِعْ!)) قَالَ: قُلْتُ: قَدْ بَايَعْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: ((وَأَيْضًا)). فَبَايَعْتُهُ الثَّانِيَةَ. فَقُلْتُ لَهُ: يَا



बिन अल अक्वा (रज़ि.) से पूछा, अबू मुस्लिम उस दिन आप हज़रत ने किस बात बेअत की थी? कहा कि मौत पर। (दीगर मक़ाम : 4169, 7206, 7208)

أَنَا مُسْلِمٌ، عَلَى أَيْ شَيْءٍ كُنْتُمْ تَبَايَعُونَ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: عَلَى الْمَوْتِ.

[أطرافه في: ٤١٦٩، ٧٢٠٦، ٧٢٠٨]

यहाँ भी हुदैबिया मे बेअते रिज्वान मुराद है जो एक पेड़ के नीचे ली गई थी। सूरह फ़तह में अल्लाह तआला ने उन तमाम मुजाहिदीन के लिये अपनी रज़ा का ऐलान फ़र्माया है। रज़ियल्लाहु अन्हुम व रिज्वानुहू। आयते शरीफ़ा, लक़द रज़ियल्लाहु अनिल मूमिनीन इज़ युबायिकूनक तहतशशजरित (फ़तह : 18) में इसी का बयान है।

2961. हमसे हफ़स बिन उमर ने बयान किया। कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना। आप बयान करते थे कि अंसार ख़ंदक़ खोदते हुए (ग़ज्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर) कहते थे।

٢٩٦١ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍو حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَتْ الْأَنْصَارُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ يَقُولُ:

हम वो लोग हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) से जिहाद पर बेअत की है हमेशा के लिये, जब तक हमारे जिस्म में जान है।

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا

عَلَى الْجِهَادِ مَا حَيَّيْنَا أَبَدًا

فَأَجَابَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ:

औहज़रत (ﷺ) ने इस पर जवाब में यूँ फ़र्माया, ऐ अल्लाह! जिन्दगी तो बस आख़िरत ही की जिन्दगी है पस तू (आख़िरत में) अंसार व मुहाजिरीन का इकराम फ़र्माना।

((اللَّهُمَّ لَا عَيْشَ إِلَّا عَيْشُ الْآخِرَةِ

فَاكْرِمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ))

(राजेअ : 2834)

[راجع: ٢٨٣٤]

**तशरीह :** ग़ज्व-ए-ख़न्दक़ के बारे में सूरह अहज़ाब नाज़िल हुई जिसमें कुफ़फ़ारे मक्का, अरब के सारे धर्मों के पैरोकारों की एक बड़ी जमीअत अपने साथ लेकर मदीना पर हमलावर हुए थे। सदी मदीना में शबाब पर थी और मुसलमान हर तरफ़ से तंगदस्त थे। इसलिये औहज़रत (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) से मश्वरे के बाद शहर के अंदर रहकर ही मुदाफ़िअत (सुरक्षा) का फ़ैसला सादिर फ़र्माया। शहर की हिफ़ाज़त के लिये चारों ओर एक अज़ीम ख़ंदक़ खोदकर उसे पानी से भर दिया गया। ये तदबीर बड़ी कारगर हुई और कुफ़फ़ार को अंदर दाख़िल होने का मौक़ा न मिल सका। आख़िर एक दिन सख़्त आँधी से डरकर ये लोग मैदान छोड़ गये। दीगर तफ़सीलात आगे आएँगी।

2962, 63. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन फुज़ैल से सुना, उन्होंने आसिम से, उन्होंने अबू इब्म़ान नहदी से, और उनसे मजाशेअ बिन मसऊद सुलमी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने भाई के साथ (फ़तहे मक्का के बाद) औहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ किया कि हमसे हिज़रत पर बेअत ले लीजिए। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हिज़रत तो (मक्का के फ़तह होने के बाद, वहाँ से) हिज़रत करके आने वालों पर ख़त्म हो गई। मैंने अर्ज़ किया, फिर आप हमसे किस बात पर बेअत लेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि इस्लाम और जिहाद पर।

٢٩٦٢، ٢٩٦٣ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّهُ سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ فُضَيْلٍ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ مَجَاشِعٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَنَا وَأَخِي فَقُلْتُ: بَايَعْنَا عَلَى الْهَجْرَةِ، فَقَالَ: ((مَضَى الْهَجْرَةُ لِأَهْلِهَا)). فَقُلْتُ: عَلَامَ تَبَايَعْنَا؟ ((قَالَ: عَلَى الْإِسْلَامِ وَالْجِهَادِ)).

(दीगर मक़ाम : 3078, 3079, 4305, 4306, 4307, 4308)

[أطرافه في: ٤٣٠٧, ٤٣٠٥, ٣٠٧٨]

[أطرافه في: ٤٣٠٨, ٤٣٠٦, ٣٠٧٩]

अहदे-रिसालत में हिज्रत का जो निशाना था वो फ़तहे मक्का पर ख़त्म हो गया क्योंकि सारा अरब दारुल इस्लाम बन गया, बाद के ज़मानों में मक्की ज़िन्दगी का नक्शा सामने आने पर हिज्रत का सिलसिला जारी है। नीज़ इस्लाम और जिहाद भी बाक़ी है लिहाज़ा उन सब पर बेअत ली जा सकती है। बेअत से मुराद हलफ़ (शपथ) और इक़्रार है कि उस पर ज़रूर कायम रहा जाएगा ख़िलाफ़ हर्गिज़ न होगा। बेअत की बहुत सी किस्में हैं जो आगे बयान होंगी।

### बाब 111 : बादशाहे इस्लामी की इत्ताअत लोगों पर वाजिब है जहाँ तक वो ताक़त रखें

2964. हमसे इब्मान बिन अबी शैबाने बयान किया, कहा हमसे जरिर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास एक शख्स आया, और ऐसी बात पूछी कि मेरी कुछ समझ में न आया कि उसका जवाब क्या दूँ। उसने पूछा, मुझे ये मसला बताइये कि एक शख्स बहुत ही ख़ुश और हथियारबन्द होकर हमारे अमीरों के साथ जिहाद के लिये जाता है। फिर वो अमीर हमें ऐसी चीज़ों का मुकल्लफ़ करार देते हैं कि हम उनकी ताक़त नहीं रखते। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि तुम्हारी बात का जवाब क्या दूँ, अल्बत्ता जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (आप ﷺ की हयाते मुबारका में) थे तो आप (ﷺ) को किसी भी मामले में सिर्फ़ एक बार हुक्म की ज़रूरत पेश आती थी और हम फ़ौरन ही उसे बजा लाते थे, ये याद रखने की बात है कि तुम लोगों में उस वक़्त तक ख़ैर रहेगी जब तक तुम अल्लाह से डरते रहोगे, और अगर तुम्हारे दिल में किसी मामले में शुब्हा पैदा हो जाए (कि क्या चाहिये या नहीं) तो किसी आलिम से उसके बारे में पूछ लो ताकि तशफ़्फ़ी हो जाए, वो दौर भी आने वाला है कि कोई ऐसा आदमी भी (जो सहीह सहीह मसले बता दे) तुम्हें नहीं मिलेगा। उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं! जितनी दुनिया बाक़ी रह गई है वो वादी के इस पानी की तरह है जिसका साफ़ और अच्छा हिस्सा तो पिया जा चुका है और गंदला बाक़ी रह गया है।

### ١١١- بَابُ عَزْمِ الْإِمَامِ عَلَى النَّاسِ فِيمَا يُطِيقُونَ

٢٩٦٤- حَدَّثَنَا غُثَمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((لَقَدْ أَتَانِي الْيَوْمَ رَجُلٌ فَسَأَلَنِي عَنْ أَمْرِ مَا دَرَيْتُ مَا أَرُدُّ عَلَيْهِ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ رَجُلًا مُؤَدِّيًا نَشِيطًا يَخْرُجُ مَعَ أَمْرَانَا فِي السَّمَازِي، فَيَغْرِمُ عَلَيْنَا فِي أَحْيَاءٍ لَا نُحْصِيهَا. فَقُلْتُ لَهُ: وَاللَّهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لَكَ، إِلَّا أَنَا كَمَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَسَى أَن لَّا يَغْرِمَ عَلَيْنَا فِي أَمْرٍ إِلَّا مَرَّةً حَتَّى نَفْعَلَهُ، وَإِنْ أَحَدَكُمُ لَن يَزَالَ بِخَيْرٍ مَا اتَّقَى اللَّهَ. وَإِذَا شَكَّ فِي نَفْسِهِ شَيْءٌ سَأَلَ رَجُلًا فَشَفَّاهُ مِنْهُ، وَأَوْشَكَ أَن لَّا تَجِدُوهُ. وَالَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، مَا أَذْكَرُ مَا غَيَّرَ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا كَالْتَّغْيِيرِ شَرْبِ صَفْوَةٍ وَبَقِيَ كَثْرَةٌ)).

**तशरीह :** हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने गोल-मोल जवाब दिया। उनका मतलब यही है कि अफ़सर का हुक्म जब शरीअत के खिलाफ़ न हो तो उसकी इताअत लाज़िम और ज़रूरी है। आपने कुआन की आयत फ़स्अलु अहलज़िज़िर्वि इन कुन्तुम ला तअलमून (अन नहल : 43) के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया और ये तख़्सीस नहीं की कि फ़लाँ आलिम से पूछे बल्कि आम इन्सान का काम ये है कि जिस किसी आलिम को दीनदार और परहेज़गार और अल्लाहवाला समझे उसे दीन का मसला पूछ ले।

इससे तक्लीदे शख़्सी का भी रद्द हुआ कि ये ग़लत है कि आम आदमी एक आलिम ही के साथ चिमट जाए बल्कि जो भी आलिम उसको अच्छा नज़र आए उससे मसला पूछ ले। ये हुक्म भी उन आलिमों के लिये है जो ज़िन्दा मौजूद हों। फिर जिनको दुनिया से गये हुए सदियाँ बीत चुकी हैं, उन ही की तक्लीद किये जाना बल्कि उनके नाम पर एक मुस्तफ़िल शरीअत गढ़ लेना ये वो मर्ज़ है जिसमें आम मुकल्लिदीन गिरफ़्तार हैं। जिन्होंने दीने हक़ को चार टुकड़ों में तक्सीम करके वहदते मिल्ली को पारा पारा कर दिया है। स़द अफ़सोस! कि उम्मत में पहला मुहलिक़ फ़साद इसी तक्लीदे शख़्सी से शुरू हुआ।

दीने हक़ रा चार मज़हब साइतन्द - रखना दरे दीन नबी (ﷺ) अन्दाख़तन्द

हृदीष में लफ़ज़ ग़बर से मुराद गदला पानी लें तो निथरे पानी से तश्बीह होगी और जो बाक़ी रहने के मा'नी लें तो गन्दे से तश्बीह होगी। मतलब ये कि अच्छे लोग चले गये और बुरे रह गये।

**बाब 112 : नबी करीम (ﷺ) दिन होते ही अगर जंग न शुरू कर देते तो सूरज ढलने तक लड़ाई मुलतवी रखते**

۱۱۲ - بَابُ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا لَمْ يَبْقَايَ أَوَّلُ النَّهَارِ آخَرَ الْقِتَالِ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ

अय लिअन्नरियाह तहुब्बु ग़ालिबन बअदज़ज़वालि फयहसुलु मिन्हा तब्रीदुस्सलाहि वल्हर्बि व ज़ियादतु मिन्नशिाति (फतह) या'नी ये इसलिये कि अक़्बर ज़वाल के बाद हवाएँ चलनी शुरू हो जाती हैं बस इसे हथियारों की हिवत बुरुदत से बदल जाती है और लड़ाई में भी ठण्डक से ताक़त मिलती और फ़रहत में भी ज़्यादाती होती है।

2965. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ फ़ुज़ारी ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्रबा ने बयान किया, उनसे उमर बिन अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने उन्हें ख़त लिखा और मैंने उसे पढ़ा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक जिहाद के मौक़े पर जिसमें लड़ाई भी हुई थी, सूरज के ढलने तक जंग नहीं शुरू की। (राजेअ : 2933)

۲۹۶۵ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ هُوَ الْفَزَارِيُّ عَنْ مُوسَى بْنِ عُفَيْةَ عَنْ سَالِمِ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ وَكَانَ كَاتِبًا لَهُ قَالَ: كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَرَأَهُ (أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِي بَعْضِ أَتَابِيهِ الَّتِي لَقِيَ فِيهَا انْتَفَرَّ حَتَّى مَالَتْ الشَّمْسُ)).

[راجع: ۲۹۳۳]

2966. उसके बाद आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को ख़िताब

۲۹۶۶ - ثُمَّ قَامَ لِي النَّاسِ خَطِيْبًا قَالَ:

करते हुए फ़र्माया, लोगों! दुश्मन के साथ जंग की ख्वाहिश और तमन्ना दिल में न रखा करो, बल्कि अल्लाह तआला से अमन व आफ़ियत की दुआ किया करो, अल्बत्ता दुश्मन से मुठभेड़ हो ही जाए तो फिर सब्र व इस्तिस्कामत का पुखूत दो, याद रखो कि जन्नत तलवारों के साथे तले है, उसके बाद आप (ﷺ) ने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले, बादल भेजने वाले, अहज़ाब (दुश्मन के दस्तों) को शिकस्त देने वाले, उन्हें शिकस्त दे और उनके मुक़ाबले में हमारी मदद कर। (राजेअ: 2818)

«أَيُّهَا النَّاسُ، لَا تَتَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ، وَتَمَنُّوا اللَّهَ الْعَلِيَّةَ، فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا، وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلِّ السُّوفِ». ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، وَخَافِزِ السَّحَابِ، وَهَازِمِ الْأَحْزَابِ، اقْضِهِمْ وَانصُرْنَا عَلَيْهِمْ».

[راجع: 2818]

मा'लूम हुआ कि जहाँ तक मुम्किन हो लड़ाई को टालना अच्छा है। अगर कोई सुलह की उम्दा सूरत निकल सके क्योंकि इस्लाम फ़ित्ना व फ़साद के सख़्त खिलाफ़ है। हाँ, जब कोई सूरत न बने और दुश्मन मुक़ाबले ही पर आमादा हो जाए तो जमकर और खूब डटकर मुक़ाबला करना है और ऐसे मौक़े पर इस दुआ-ए-मस्तूना का पढ़ना ज़रूरी है जो यहाँ मज़कूर हुई है। या'नी अल्लाहुम्मा मुन्जिलुल्किताब व मुजिस्सहाब व हाज़िमुल्अहज़ाब अहज़िम्हुम वन्सुर्ना अलैहिम जन्नत तलवारों के साथे तले है। इसका मतलब ये कि जन्नत के लिये माली व जानी कुर्बानी की ज़रूरत है जन्नत का सौदा कोई सस्ता सौदा नहीं है। जैसा कि आयत, इन्नल्लाह शतरा मिनल्मुमिनीन अन्फसहुम व अम्वालहुम बिअन्न लहुम जन्नत (अत्तौबा: 111) में मज़कूर है।

۱۱۳- بَابُ اسْتِئْذَانِ الرَّجُلِ الْإِمَامِ

لِقَوْلِهِ :

«إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوهُ، إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ إِلَى أَعْمَارِ الْآيَةِ».

बाब 113 : अगर कोई जिहाद में से लौटना चाहे या जिहाद में न जाना चाहे तो इमाम से इजाज़त ले

अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की रोशनी में कि, बेशक मोमिन वो लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और जब वो अल्लाह के रसूल के साथ किसी जिहाद के काम में मज़रूफ़ होते हैं तो उनसे इजाज़त लिये बग़ैर उनके यहाँ से चले नहीं जाते। बेशक वो लोग जो आपसे इजाज़त लेते हैं। (आज़िब आयत तक)

۲۹۶۷- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا خُرَيْزٌ عَنِ الْمُفِيرَةِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَلَا حَقَّ بِي النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا عَلَى نَاصِحٍ لَنَا لَدُنَا أَعْيَا فَلَا يَكَاذُ بِمِيرٍ، فَقَالَ لِي: ((مَا لِيَعْبُرُكَ؟)) قَالَ: قُلْتُ: غَنَى. قَالَ:

2967. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें मुगीरह ने, उन्हें शअबी ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक ग़ज़वा (जंगे तबूक) में शरीक था। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पीछे से आकर मेरे पास तशरीफ़ लाए मैं अपने पानी लादने वाले एक ऊँट पर सवार था। चूँकि वो थक चुका था, इसलिये धीरे-धीरे चल रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे पूछा कि जाबिर! तुम्हारे ऊँट को क्या हो गया है? मैंने अर्ज़ किया कि थक गया है। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर

आप (ﷺ) पीछे गये और उसे डांटा और उसके लिये दुआ की। फिर तो वो बराबर दूसरे कैंटों के आगे आगे चलता रहा। फिर आप (ﷺ) ने पूछा, अपने कैंट के बारे में क्या ख्याल है? मैंने कहा कि अब अच्छा है। आपकी बरकत से ऐसा हो गया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर क्या इसे बेचोगे? उन्होंने बयान किया कि मैं शर्मिन्दा हो गया, क्योंकि हमारे पास पानी लाने को उसके सिवा और कोई कैंट नहीं रहा था। मगर मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर बेच दे। चुनाँचे मैंने वो कैंट आप (ﷺ) को बेच दिया और ये तै पाया कि मदीना तक मैं उसी पर सवार होकर जाऊँगा। बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी शादी अभी नई हुई है। मैंने आप (ﷺ) से (आगे बढ़कर अपने घर जाने की) इजाज़त चाही। तो आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। इसलिये मैं सबसे पहले मदीना पहुँच आया। जब मामूँ से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने मुझसे कैंट के बारे में पूछा। जो मामला मैं कर चुका था उसकी उन्हें इत्तिला दी। तो उन्होंने मुझे बुरा-भला कहा। (एक कैंट था तेरे पास वो भी बेच डाला अब पानी किस पर लाएगा) जब मैंने हज़ूरे अकरम (ﷺ) से इजाज़त चाही थी तो आपने मुझसे दरयाफ़्त फ़र्माया था कि कुँवारी से शादी की है या बेवा से? मैंने अर्ज़ किया था बेवा से इस पर आपने फ़र्माया था कि बाकिरा से क्यों न की, वो भी तुम्हारे साथ खेलती और तुम भी उसके साथ खेलते। (क्योंकि हज़रत जाबिर रज़ि. भी अभी कुँवारे थे) मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे बाप की वफ़ात हो गई है या (ये कहा कि) वो (उहद में) शहीद हो चुके हैं और मेरी छोटी छोटी बहनें हैं। इसलिये मुझे अच्छा नहीं मा'लूम हुआ कि उन्हीं जैसी किसी लड़की को ब्याह के लाऊँ, जो न उन्हें अदब सिखा सके न उनकी निगरानी करे और उन्हें अदब सिखाए। उन्होंने बयान किया, कहा फिर जब नबी करीम (ﷺ) मदीना पहुँचे तो सुबह के वक़्त में इसी कैंट पर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे उस कैंट की क़ीमत अज़ा की और फिर वो कैंट भी वापस कर दिया। मुगीरह रावी (रह.) ने कहा कि हमारे नज़दीक बेअ में ये शर्त लगाना अच्छा है कुछ बुरा नहीं।

فَخَلَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوَجَرَهُ وَدَعَا لَهُ، فَمَا زَالَ يَنْهَى الْإِبِلَ قُدَامَهَا يَسِيرُ، فَقَالَ لِي: ((كَيْفَ تَرَى بَعِيرَكَ؟)) قَالَ: قُلْتُ: بِخَيْرٍ، لَقَدْ أَصَابَتْهُ بَرَكَتُكَ. قَالَ: ((الْبَيْعِيهِ؟)) قَالَ: فَاسْتَحْيَيْتُ، وَلَمْ يَكُنْ لَنَا نَاصِحٌ غَيْرُهُ، قَالَ: قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((بَيْعِيهِ؟)) فَبَيْعْتُهُ إِيَّاهُ عَلَى أَنْ لِي فَقَارَ ظَهْرِهِ حَتَّى أُنْبَلِغَ الْمَدِينَةَ. فَقَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي عَرُومٌ، فَاسْتَاذَنْتُهُ فَإِذْنٌ لِي، فَتَقَبَّلْتُ النَّاسَ إِلَى الْمَدِينَةِ حَتَّى أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ، فَلَقِيَنِي خَالِي فَسَأَلَنِي عَنِ الْبَعِيرِ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا صَنَعْتُ فِيهِ فَلَا تَنْبِي.

قَالَ وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِي حِينَ اسْتَاذَنْتُهُ: ((هَلْ تَزَوَّجْتَ بَكْرًا أَمْ نَسِيًا؟)) قُلْتُ: تَزَوَّجْتُ نَسِيًا. فَقَالَ: ((هَلَا تَزَوَّجْتَ بَكْرًا تُلَاعِبُهَا وَتُلَاعِبُكَ؟)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، نُوَلِّيَ وَالِدِي - أَوْ اسْتَشْهَدَ - وَلِي أَخَوَاتٍ صِبَا، فَكَرِهْتُ أَنْ أَتَزَوَّجَ بِقَلْبِهِنَّ فَلَا تَزْدَبُهُنَّ وَلَا تَقُومَ عَلَيْهِنَّ، فَتَزَوَّجْتُ نَسِيًا لِقُومَ عَلَيْهِنَّ وَتَزْدَبُهُنَّ. قَالَ: فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ غَدَوْتُ عَلَيْهِ بِالْبَعِيرِ، فَأَعْطَانِي ثَمَنَهُ وَزَدَهُ عَلَيَّ. قَالَ الْمَغِيرَةُ: هَذَا لِي فَضَائِلًا حَسَنًا لَا تَرَى بِهِ بَأْسًا.

(राजेअ: 443)

[راجع: ११२]

बाब का तर्जुमा यहाँ से निकला कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) इजाज़त लेकर आप (ﷺ) से जुदा हुए। ये हदीष कई जगह गुज़र चुकी है और हज़रत इमाम (रह.) ने इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है।

### बाब 114 : नई-नई शादी होने के बावजूद जिन्होंने जिहाद किया

इस बाब में जाबिर (रज़ि.) की रिवायत नबी करीम (ﷺ) के हवाले से है (जो मज़कूर हुई)

### ११४- بَابُ مَنْ غَزَا وَهُوَ حَدِيثُ

عَهْدِ بَعْرَبِهِ،

بِهِ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

### ११५- بَابُ مَنْ اخْتَارَ الْقَزْوُ

بَعْدَ الْبَنَاءِ،

بِهِ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

### बाब 115 : शबे ज़िफ़ाफ़ के बाद ही जिसने

फ़ौरन जिहाद में शिर्कत को पसन्द किया इस बारे में अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत नबी करीम (ﷺ) के हवाले से मौजूद है।

जो आगे आएगी कि एक पैगम्बर जिहाद को गये और फ़र्माया कि मेरे साथ ऐसा कोई शख्स न निकले जिसने निकाह तो कर लिया हो मगर अभी उसने अपनी बीवी से सुहबत न की हो।

### बाब 116 : ख़ौफ़ और दहशत के वक़्त (हालात मा'लूम करने के लिये) इमाम का आगे बढ़ना

2968. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना में एक बार कुछ दहशत फैल गई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर सवार होकर (हालात मा'लूम करने के लिये सबसे आगे थे) फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमने तो कोई बात नहीं देखी। अल्बत्ता इस घोड़े को हमने दौड़ने में दरिया की ख़ानी जैसा तेज़ पाया है (बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है)। (राजेअ: 2627)

### ११६- بَابُ مَيَادَرَةِ الْإِمَامِ عِنْدَ

الْفَزَعِ

٢٩٦٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ

مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ

فَزَعٌ، فَرَكِبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَوْسًا لِأَبِي

طَلْحَةَ فَقَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ شَيْءٍ، وَإِنْ

وَجَدْنَاهُ لَنُخْرِجَنَّ)). [راجع: ٢٩٦٧]

### बाब 117 : ख़ौफ़ के मौक़े पर जल्दी से घोड़े को ऐड़ लगाना

2969. हमसे फ़ज़ल बिन सहल ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि (मदीना में) लोगों में दहशत फैल गई

### ११७- بَابُ السَّرْعَةِ وَالرَّكْضِ فِي

الْفَزَعِ

٢٩٦٩- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ قَالَ

حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ

بْنُ خَارِمْ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ

थी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर जो बहुत सुस्त था, सवार हुए और तन्हा ऐड़ लगाते हुए आगे बढ़े। सहाबा किराम (रज़ि.) भी आपके पीछे सवार होकर निकले। उसके बाद वापसी पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ौफ़ज़दा होने की कोई बात नहीं है, अल्बत्ता ये घोड़ा दरिया है। उस दिन के बाद फिर वो घोड़ा (दौड़ वगैरह के मौक़े पर) कभी पीछे नहीं रहा। (राजेअ: 2627)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَرَعَ النَّاسُ فَرَسَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَرَسًا لَا بِي طَلْحَةَ بَطْنًا، ثُمَّ خَرَجَ يَرْكُضُ وَخَدَهُ، فَرَكِبَ النَّاسُ يَرْكُضُونَ خَلْفَهُ فَقَالَ: «لَمْ تَرَوْهُ، إِنَّهُ لَيَخْرُ. لَمَّا سَبَقَ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْمَ».

[راجع: ٢٦٢٧]

आँहज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़ौरन ही मा'लूमात के लिये हज़रत तलहा (रज़ि.) के घोड़े पर ऐड़ लगाई और मदीना के दूर दूर चारों ओर घूम-फिरकर आप वापस तशरीफ़ लाए और वो फ़र्माया जो रिवायत में मज़कूर है। इसी से बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ।

### बाब 118 : ख़ौफ़ के वक़्त अकेले निकलना

### ١١٨ - بَابُ الْخُرُوجِ فِي الْقَرَعِ وَخَدَهُ

ऊपर ज़िक्र किया गया बाब हिन्दुस्तानी नुस्खों में नहीं, अल्बत्ता शैख़ फ़व्वाद अब्दुल बाकी की तहक़ीक़ वाले नुस्खे में है।

### बाब 119 : किसी को उज्रत देकर अपने तरफ़ से जिहाद कराना और अल्लाह की राह में सवारी देना

### ١١٩ - بَابُ الْجَعَائِلِ وَالْحُمْلَانِ فِي السَّبِيلِ

मुजाहिद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के सामने जिहाद में शिर्कत का इरादा ज़ाहिर किया तो उन्होंने फ़र्माया कि मेरा दिल चाहता है कि मैं भी इस मद में अपना कुछ माल खर्च करके तुम्हारी मदद करूँ। मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह का दिया हुआ मेरे पास काफ़ी है। लेकिन उन्होंने फ़र्माया कि तुम्हारी सरमायादारी तुम्हारे लिये है मैं तो सिर्फ़ ये चाहता हूँ कि इस तरह मेरा माल भी अल्लाह के रास्ते में खर्च हो जाए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि बहुत से लोग इस माल को (बैतुलमाल से) इस शर्त पर लेते हैं कि वो जिहाद में शरीक होंगे लेकिन फिर वो जिहाद नहीं करते। इसलिये जो शख्स ये हरकत करेगा तो हम उसके माल के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं और हम उससे वो माल जो उसने (बैतुलमाल से) लिया है वापस वमूल कर लेंगे। त़ाऊस और मुजाहिद ने फ़र्माया कि अगर तुम्हें कोई चीज़ इस शर्त के साथ दी जाए कि उसके बदले में तुम जिहाद के लिये निकलोगे। तो तुम उसे जहाँ जी चाहे खर्च कर सकते हो। और अपने अहलो-अयाल की

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: قُلْتُ لِابْنِ عُمَرَ: الْقَرَوُ. قَالَ: إِنِّي أَحِبُّ أَنْ أُعِينَكَ بِطَائِفَةٍ مِنْ مَالِي. قُلْتُ: أَوْسَعَ اللَّهُ عَلَيَّ. قَالَ: إِنَّ غِنَاكَ لَكَ، وَإِنِّي أَحِبُّ أَنْ يَكُونَ مِنْ مَالِي فِي هَذَا الْوَجْهِ. وَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ نَاسًا يَأْخُذُونَ مِنْ هَذَا الْمَالِ لِيُجَاهِدُوا، ثُمَّ لَا يُجَاهِدُونَ، لَمَنْ فَعَلَهُ فَخَنُّ أَحَقُّ بِمَالِهِ حَتَّى نَأْخُذَ مِنْهُ مَا أَخَذَ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُجَاهِدٌ: إِذَا دَفِعَ إِلَيْكَ شَيْءٌ تَخْرُجُ بِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاصْنَعْ بِهِ مَا شِئْتَ وَضَعَهُ عِنْدَ أَهْلِكَ.

ज़रूरियात में भी ला सकते हो। (मगर शत्रु के मुताबिक़ जिहाद में शिकत ज़रूरी है)

शाफ़िइया ने इसको जाइज़ रखा है कि उज़रत (मज़दूरी) लेकर किसी की तरफ़ से जिहाद करे। लेकिन मालिकिया और हन्फ़िया ने मकरूह रखा है। मगर जब बैतुलमाल में रुपया न हो और मुसलमान नातवाँ हों तो जाइज़ है। अल्बत्ता ग़ाज़ी की इआनत और मदद गो वो मालदार हो सबके नज़दीक़ दुस्त है। (वहीदी)

लफ़्जे ज़अ़ाइल ज़अ़लिया की जमा है, व हिय मा यज़ुल्लुहुल्काइदु मिनलउज़रति लिमय्यज़ू अन्हु या'नी ये चीज़ है जो बतौर उज़रत बैठने वाला अपनी तरफ़ से ग़ज़्वा करने वाले के लिये मुकरर करे। और हुम्लानि बिज़मिलहाइ हमल यहमिलु का मसदर है जिससे मुराद मुजाहिद को बतौर इमदाद सवारी देना है।

2970. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैं ने मालिक बिन अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से पूछा था और ज़ैद ने कहा कि मैंने अपने बाप से सुना था, वो बयान करते थे कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया मैंने अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के लिये) अपना एक घोड़ा एक शख़्स को सवारी के लिये दे दिया था। फिर मैंने देखा कि (बाज़ार में) वही घोड़ा बिक रहा है। मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि क्या मैं उसे ख़रीद सकता हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस घोड़े को तुम न ख़रीदो और अपना म़दक़ा (ख़्वाह ख़रीदकर ही हो) वापस न लो। (राजेअ: 1490)

٢٩٧٠- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكَ بْنَ أَنَسٍ سَأَلَ زَيْدَ بْنَ أَسْلَمَ، فَقَالَ زَيْدٌ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَأَرَيْتُهُ بَيْعًا، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَشْتَرِيهِ؟ فَقَالَ: ((لَا تَشْتَرُوهُ وَلَا تَعْدُ فِي صَدَقَتِكِ)).

[راجع: ١٤٩٠]

**तशरीह:** बाब का तर्जुमा में वो उज़रत मुराद है जो जिहाद में शिकत न करने वाला कोई शख़्स अपनी तरफ़ से किसी आदमी को उज़रत देकर जिहाद पर भेजता है। जहाँ तक जिहाद पर उज़रत का ता'ल्लुक है तो ज़ाहिर है कि उज़रत लेनी जाइज़ है। यूँ तो जिहाद का हुक़म सबके लिये बराबर है। इसलिये किसी मा'कूल उज़र के बग़ौर उसमें शिकत से पहलू बचाना मुनासिब नहीं। अल्बत्ता ये सू़रत इससे अलग है कि किसी पर जिहाद फ़र्ज़ या वाजिब न हो और वो जिहाद में जाने वाले की मदद करके प्रवाब में शरीक हो जाए। जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने किया था। हाँ, जिहाद में शिकत से बचने के लिये अगर ऐसा करता है तो बेहतर नहीं है।

2971. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाथ मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अल्लाह के रास्ते में अपना एक घोड़ा सवारी के लिये दे दिया था। फिर उन्होंने देखा कि वही घोड़ा बिक रहा है। अपने घोड़े को उन्होंने ख़रीदना चाहा और रसूले करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे न ख़रीदो। और इस तरह अपने म़दके को वापस न लो।

٢٩٧١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَوَجَدَهُ بَيْعًا فَارَادَ أَنْ يَتَّاعَهُ فَسَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((لَا تَتَّعْهُ وَلَا تَعْدُ فِي صَدَقَتِكِ)).



हजरत उमर (रज़ि.) ने वो घोड़ा एक शख्स को जिहाद के ख्याल से बतौर इमदाद दे दिया था। इसी से बाब का मतलब प्राबित हुआ। बाद में वो शख्स इसको बाज़ार में बेचने लगा जिसका ज़िक्र रिवायत में है।

2972. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे यहा बिन सईद अम्सारी ने बयान किया, कहा मुझसे अबू सलालेह ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मेरी उम्मत पर ये अम्र मुश्किल न गुज़रता तो मैं किसी सरिय्या (या'नी मुजाहिदीन का एक छोटा दस्ता जिसकी ता'दाद ज़्यादा से ज़्यादा चालीस हो) की शिकत भी न छोड़ता। लेकिन मेरे पास सवारी के इतने ऊँट नहीं हैं कि मैं उनको सवार करके च लूँ और ये मुझ पर बहुत मुश्किल है कि मेरे साथी मुझसे पीछे रह जाएँ। मेरी तो ये खुशी है कि अल्लाह के रास्ते में मैं जिहाद करूँ, और शहीद किया जाऊँ। फिर जिन्दा किया जाऊँ, फिर शहीद किया जाऊँ और फिर जिन्दा किया जाऊँ। (राजेज़: 36)

**बाब 120 : जो शख्स मज़दूरी लेकर जिहाद में शरीक हो**

इमाम हसन बसरी (रह.) और इब्ने सीरीन (रह.) ने कहा कि माले ग़नीमत में से मज़दूर को भी हिस्सा दिया जाएगा। अतिय्या बिन क़ैस ने एक घोड़ा (माले ग़नीमत में से) निस्फ़ की शर्त पर लिया। घोड़े के हिस्से में (फ़तह के बाद माले ग़नीमत से) चार सौ दीनार आए। अतिय्या ने दो सौ दीनार खुद रख लिये और दो सौ घोड़े के मालिक को दे दिये।

2973. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अत्ता ने, उनसे सप्रवान बिन यज़ला ने और उनसे उनके वालिद (यज़ला बिन उमय्या रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूले करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़व-ए-तबूक में शरीक था और एक जवान ऊँट मैंने चढ़ने को दिया था, मेरे ख्याल में मेरा ये अमल, तमाम दूसरे आयाल के मुकाबले मे सबसे ज़्यादा क़ाबिले भरोसा था। (कि अल्लाह तआला के यहाँ मक्बूल होगा) मैंने एक मज़दूर भी अपने साथ ले लिया था। फिर वो मज़दूर एक शख्स (ख़ुद यज़ला बिन उमय्या रज़ि.) से लड़ पड़ा और उनमें से एक ने दूसरे के हाथ में दांत से काट लिया। दूसरे ने झट जा

٢٩٧٢ - حَدَّثَنَا مُسْنَدُ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو صَالِحٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَوْ لَا أَنَا أَشَقُّ عَلَى أُمَّتِي مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِيَّةٍ وَلَكِنْ لَا أَجِدُ حِمُولَةً، وَلَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ عَلَيْهِ، وَيَشُقُّ عَلَيَّ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنِّي، وَلَوْ دِدْتُ أَنِّي قَاتَلْتُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقُتِلْتُ ثُمَّ أُحْيِيتُ، ثُمَّ قُتِلْتُ ثُمَّ أُحْيِيتُ)). [راجع: ٣٦]

١٢٠ - بَابُ الْأَجِيرِ

وَقَالَ الْحَسَنُ وَابْنُ مَيْرِينَ يَقْسَمُ لِلْأَجِيرِ مِنَ الْمَقْتَمِ. وَأَخَذَ عَطِيَّةُ بْنُ قَيْسٍ قَرَسًا عَلَى النَّصْفِ، فَبَلَغَ سَهْمُ الْفَرَسِ أَرْبَعِمِائَةَ دِينَارٍ، فَأَخَذَ مِائَتَيْنِ وَأَعْطَى صَاحِبَهُ مِائَتَيْنِ.

٢٩٧٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ صَلَّي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزْوَةَ بَكْرٍ فَحَمَلْتُ عَلَى بَكْرٍ، فَهُوَ أَوْثَقُ أَعْمَالِي فِي نَفْسِي، فَاسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا فَقَاتَلَ رَجُلًا فَغَضَّ أَحَدَهُمَا الْآخَرَ، فَانْتَزَعَ يَدَهُ مِنْ قِيهِ وَتَرَغَّ

अपना हाथ उसके मुँह से खींचा तो उसके आगे का दांत टूट गया। वो शख्स नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में फरयादी हुआ लेकिन आँहजरत ने हाथ खींचने वाले पर कोई तावान नहीं फर्माया। बल्कि फर्माया कि क्या तुम्हारे मुँह में वो अपना हाथ ही रहने देता ताकि तुम उसे चबा जाओ जैसे ऊँट चबाता है। (राजेअ: 1847)

ثَبْتُهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهَا فَقَالَ: ((أَبْدَعْ يَدَهُ إِلَيْكَ فَتَقْطِعُهَا كَمَا يَقْضُمُ الْفَحْلُ؟)).

[راجع: ١٨٤٨]

**तशरीह:** या'नी अगर किसी मुजाहिद ने जिहाद के लिये जाते वक़्त अगर कुछ मज़दूर, मज़दूरी पर अपनी ज़रूरियात के लिये अपने साथ ले लिये तो क्या ये मज़दूर अपनी मज़दूरी पा लेने के बाद माले गनीमत के भी मुस्तहिक होंगे या नहीं? उसी का जवाब इस बाब में दिया है। इमाम अहमद बिन हंबल और इस्हाक और औज़ाई के नज़दीक हिस्सा नहीं मिलेगा, दूसरे इलमा कहते हैं कि हिस्सा मिलेगा। अबू दारूद की रिवायत में यूँ है कि मैं बूढ़ा आदमी था। मेरे साथ कोई खिदमतगार भी न था तो मैंने एक शख्स को मज़दूरी पर ठहराया और उसके लिये दो हिस्से मुक़रर किये। मगर वो उस पर राज़ी न हुआ तो उसकी मज़दूरी तीन दीनार मुक़रर की। मुस्लिम की रिवायत में है कि यज़ला ने काटा और मज़दूर ने अपना हाथ खींचा तो यज़ला का दांत निकल पड़ा।

## बाब 121 : आँहजरत (ﷺ) के झण्डे का बयान باب ١٢١ - بَابُ مَا قِيلَ فِي لَوَاءِ النَّبِيِّ

**तशरीह:** हदीष में लिवा और राया दोनो एक हैं। तिमिज़ी की रिवायत में है कि आपका राया स्याह था और लिवा सफ़ेद इससे मा'लूम होता है कि दोनों में फ़र्क है। कुछ ने कहा लिवा जो नेज़े पर एक कपड़ा लगा दिया जाता है और गिरह नहीं दी जाती। राया वे जो गिरह देकर बाँधा जाता है जिसको अलम भी कहते हैं आँहजरत (ﷺ) के ज़माने में ये झण्डा लश्कर का जो सरदार होता वो थामे रखता। और आप (ﷺ) के झण्डे का नाम इकाब था।

रिवायत में कैस बिन सअद अंसारी (रज़ि.) का ज़िक्र है। जिन्होंने सर के एक तरफ़ कँधी की थी कि उनका एक गुलाम खड़ा हुआ और उसने हदी के जानवर को हार पहना दिया। उन्होंने जब ये देखा कि हदी की तक्लीद हो गई तो हज्ज की लम्बेक पुकारी और सर की दूसरी तरफ़ कँधी न की। ये कैस बिन सअद बिन इबादा (रज़ि.) के बेटे थे जो खज़रज क़बीला के सरदार थे। हज़रत कैस मुअज़्ज़ अस्हाब में थे। जंगी मुआमलात में साहिबे तदबीर लोगों में शुमार होते थे। हज़रत अली (रज़ि.) ने उनको मिस्र का गवर्नर मुक़रर किया। मदीना में 60 हिजरी में इतिकाल फर्माया, रज़ियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहु।

2974. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझे अक़ील ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें षअलबा बिन अबी मालिक कुर्ज़ी ने ख़बर दी कि कैस बिन सअद अंसारी (रज़ि.) ने, जो जिहाद में रसूलुल्लाह (ﷺ) के अलमबरदार थे, जब हज्ज का इरादा किया तो (एहरम बाँधने से पहले) कँधी की।

٢٩٧٤ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ثَعْلَبَةُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ الْفَرَطِيُّ: ((أَنَّ قَيْسَ بْنَ مَعْقِلٍ الْأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - وَكَانَ صَاحِبَ لَوَاءِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - أَرَادَ الْحَجَّ فَوَجَلَ)).

मा'लूम हुआ कि जिहाद में अलमे नबवी उठाया जाता था और उसके उठाने वाले कैस बिन सअद अंसारी (रज़ि.) हुआ करते। जंगे खैबर में ये झण्डा उठाने वाले हज़रत अली (रज़ि.) थे। जैसा कि आगे ज़िक्र है।

2975. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-खैबर के मौक़े पर हज़रत अली (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नहीं आए थे। उनकी आँखों में तकलीफ़ थी। फिर उन्होंने कहा कि क्या मैं रसूले करीम (ﷺ) के साथ जिहाद में शरीक नहीं हो सकूँगा? चुनौती को निकले और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं इस्लामी परचम उस शख्स को दूँगा या (आपने ये फ़र्माया कि) कल इस्लामी परचम उस शख्स के हाथ में होगा जिसे अल्लाह और उसके रसूल अपना महबूब रखते हैं। या आपने ये फ़र्माया कि जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है। और अल्लाह उस शख्स के हाथ पर फ़तह फ़र्माएगा फिर हज़रत अली (रज़ि.) भी आ गये। हालाँकि उनके आने की हमें कोई उम्मीद न थी। (क्योंकि वो आँख की बीमारी में मुत्तला थे) लोगों ने कहा कि ये अली (रज़ि.) भी आ गये और आप (ﷺ) ने झण्डा उन्हीं को दिया और अल्लाह ने उन्हीं के हाथ पर फ़तह फ़र्माई (दीगर मक़ाम : 3702, 4209)

۲۹۷۵- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَيْبَرٍ، وَكَانَ بِهِ رَمَدٌ، فَقَالَ: أَنَا أَخْلَفْتُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَخَرَجَ عَلَيَّ فَلَمَّحَ بِالنَّبِيِّ ﷺ. فَلَمَّا كَانَ مَسَاءَ اللَّيْلَةِ فَتَحَهَا لِي صَاحِبُهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا غَظِيْنَ الرَّايَةَ - أَوْ قَالَ: لَيَأْخُذَنَّ عَذَا رَجُلٌ يَجِبُهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ، أَوْ قَالَ: يُحِبُّ اللَّهُ وَرَسُولُهُ، يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَيْهِ)) فَإِذَا نَحْنُ بَعْلِي وَمَا تَرَجَوْهُ. فَقَالُوا: هَذَا عَلِيٌّ، فَأَعْطَاهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَفَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ)).

[طرفاه ي : ۳۷۰۲، ۹-۴۲].

हज़रत अली (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये ये काफ़ी है आप फ़ातेह खैबर हैं और उस मौक़े पर फ़तह का झण्डा आप ही के दस्ते मुबारक से लहराया गया। इससे भी अलमे नबवी का इश्बात हुआ। और इसी वजह से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस वाकिये को यहाँ लाए हैं।

2976. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे नाफ़ेअ बिन जुबैर ने बयान किया कि मैं ने सुना कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) हज़रत जुबैर (रज़ि.) से कह रहे थे कि क्या यहाँ पर नबी करीम (ﷺ) ने आपको परचम नमसब करने का हुक्म फ़र्माया था?

۲۹۷۶- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَلَاءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: ((سَمِعْتُ الْقَلْبَسَ يَقُولُ لِلزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا مَا هَذَا أَمْرُكَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تَرَكْتَ الرَّايَةَ)).

इन जुम्ला अह्दादीष में किसी न किसी तरह आँहज़रत (ﷺ) के झण्डे का ज़िक्र है। इसीलिये हज़रत इमाम इन अह्दादीष को यहाँ लाए। अह्दादीष से और भी बहुत से मसाइल प्राबित होते हैं जिनको हज़रत इमाम (रह.) ने मौक़ा ब मौक़ा बयान किया है। रहिमहुल्लाह।

बाब 122 : आँहज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि  
एक महीने की राह से अल्लाह ने मेरा रुअब  
(काफ़िरों के दिलों में) डालकर मेरी मदद की

۱۲۲- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ))

है और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, अन्करीब में उन लोगों के दिलों को मरक़ब कर दूंगा जिन्होंने कुफ़्र किया है। इसलिये कि उन्होंने अल्लाह के साथ शिर्क किया है। (आले इमरान : 151)

जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से ये हदीस रिवायत की है।

2977. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। मुझे जामे अ कलाम (जिसकी इबारत मुख़तसर और फ़सीह व बलीग़ हो और मा'नी बहुत वसीअ हों) देकर भेजा गया है और रुअब के ज़रिये मेरी मदद की गई है। मैं सोया हुआ था कि ज़मीन के ख़ज़ानों की कुँजियाँ मेरे पास लाई गईं और मेरे हाथ पर रख दी गईं।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तो (अपने रब के पास) जा चुके और (जिन ख़ज़ानों की वो कुँजियाँ थीं) उन्हें अब तुम निकाल रहे हो। (दीगर मक़ाम : 6998, 7013, 7273)

इस ख़्वाब में आँहज़रत (ﷺ) को ये बशारत दी गई थी कि आप (ﷺ) की उम्मत के हाथों दुनिया की बड़ी बड़ी सल्तनतें फ़तह होंगी और उनके ख़ज़ानों के वो मालिक होंगे। चूनाँचे बाद में इस ख़्वाब की मुकम्मल ता'वीर मुसलमानों ने देखी कि दुनिया की दो सबसे बड़ी सल्तनतें, ईरान और रोम मुसलमानों ने फ़तह कीं और अबू हुरैरह (रज़ि.) का भी इस तरफ़ इशारा है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने काम को पूरा करके अल्लाह पाक से जा मिले लेकिन वो ख़ज़ाने अब तुम्हारे हाथों में हैं। रिवायते मज़क़ूर में एक महीने की राह से ये मज़क़ूर नहीं है। लेकिन जाबिर (रज़ि.) की रिवायत जो इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुत तयम्मूम में निकाली है उसमें इसकी स़राहत मौजूद है।

2978. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे अबूदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (आँहज़रत ﷺ का नामा-ए-मुबारक जब शाहे रोम हिरक़ल को मिला तो) उसने अपना आदमी उन्हें तलाश करने के लिये भेजा। ये लोग उस वक़्त ईलिया में ठहरे हुए थे। आख़िर (तवील बातचीत के बाद) उसने नबी करीम (ﷺ) का नामा-ए-मुबारक मंगवाया। जब वो पढ़ा जा चुका तो उसके दरबार में हंगामा बरपा हो गया। (चारों तरफ़ से) आवाज़ बुलन्द होने लगी और हमें बाहर निकाल दिया गया। जब हम बाहर कर

وَقَوْلُهُ جَلَّ وَعَزَّ: «سَنَقِي فِي قُلُوبِ  
الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّغْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ»  
(آل عمران: ١٥١) قَالَهُ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ  
ﷺ

٢٩٧٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ  
عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ:  
«نُعْتَمِدُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ، وَنُصِيرُ  
بِالرُّغْبِ. فَيَبْنِي أَنْ نَاتِمَ أَوْ تَيْتَ بِمَقَاتِلِ  
خَزَائِنِ الْأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي يَدِي».

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: وَقَدْ ذَهَبَ رَسُولُ اللَّهِ  
ﷺ وَأَنْتُمْ تَنْتَلُونَهَا.

(أطرافه في: ٧٢٧٣، ٧٠١٣، ٦٩٩٨).

٢٩٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا  
شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ  
اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَفْيَانَ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ  
مِرْقَلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ - وَهُوَ بِبَلْبَاسٍ - ثُمَّ دَعَا  
بِكِتَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَلَمَّا فَرَّغَ مِنْ  
قِرَاءَةِ الْكِتَابِ كَثُرَ عِنْدَهُ الصَّخَبُ  
فَلَرْتَفَعَتِ الْأَصْوَاتُ وَأَخْرَجْنَا، فَقُلْتُ

दिये गये तो मैंने अपने साथियों से कहा कि इन्हे अबी कब्शा (मुराद रसूलुल्लाह ﷺ से है) का मामला तो अब बहुत आगे बढ़ चुका है। ये मुल्क बनी अम्फर (कैसे-रोम) भी उनसे डरने लगा है। (राजेअ : 7)

لأَصْحَابِي حِينَ أُخْرِجْنَا: لَقَدْ أَمَرَ أَمْرُ ابْنِ أَبِي كَبْشَةَ، إِنَّهُ يَخَافُهُ مَلِكُ بَنِي الْأَمْصَرِ. [راجع: ٧]

शाम का मुल्क (वर्तमान सीरिया) जहाँ उस वक़्त हिरकल था मदीना से एक महीने की राह पर है, तो बाब का मतलब निकल आया कि आँहज़रत (ﷺ) का रुअब एक महीने की राह से हिरकल पर पड़ा। आपके बेशुमार मुअजज़ात में से ये भी आपका अहम मुअजज़ा था। आपके दुश्मन जो आपसे सैकड़ों मील के फ़ासले पर रहते थे वो वहाँ से ही बैठे हुए आपके रुआब से मररूब (दबदबे से प्रभावित) रहा करते थे। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

**बाब 123 : सफ़रे जिहाद में तौशा (खर्च वगैरह) साथ रखना**

और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, अपने साथ तौशा ले जाया करो, पस बेशक इम्दा तौशा तक्वा है।

١٢٣- بَابُ حَمْلِ الزَّادِ فِي الْغَزْوِ  
وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى﴾ [البقرة: 197]

अशार बिहाजिहित्तर्जुमति इला अन्न हमलज़ादि फ़िस्सफ़रि लैस मुनाफ़ियल लिस्सवक़लि फ़िल्फ़तह या'नी तर्जुमा में इशारा फ़र्माया कि सफ़र में तौशा साथ ले जाना तक्व (अल्लाह पर भरोसे) के मनाफ़ी (विपरीत) नहीं है।

या'नी सफ़र में जाते वक़्त अपने साथ खाने-पीने का सामान साथ ले लिया करो, ताकि किसी के सामने माँगने के लिये हाथ फैलाना न पड़े। यही बेहतरीन तौशा है जिसके ज़रिये लोगों से मांगने से बच जाओगे और तक्वा हासिल हो सकेगा।

2979. हमसे इब्द बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, नीज़ मुझसे फ़ातिमा ने भी बयान किया, और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना की हिज़रत का इरादा किया, तो मैंने (वालिदे माजिद हज़रत) अबूबक्र (रज़ि.) के घर आपके लिये सफ़र का नाश्ता तैयार किया था। उन्होंने बयान किया कि जब आपके नाश्ते और पानी को बाँधने के लिये कोई चीज़ न मिली, तो मैंने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि बजुज़ मेरे कमरबन्द के और कोई चीज़ इसे बाँधने के लिये नहीं है। तो उन्होंने फ़र्माया कि फिर उसी के दो टुकड़े कर लो। एक से नाश्ता बाँध देना और दूसरे से पानी, चुनाँचे उसने ऐसा ही किया, और इसी वजह से मेरा नाम, ज़ातुन्नज़ाक़ैन (दो कमरबन्दों वाली) पड़ गया। (दीगर मक़ाम : 3907, 5388)

٢٩٧٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي - وَحَدَّثَنِي أَيْعَنُ فَاطِمَةُ - عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «حَضَرْتُ سَفَرَةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ حِينَ أَرَادَ أَنْ يَهَاجِرَ إِلَى الْمَدِينَةِ. قَالَتْ: لَمْ نَجِدْ لِسَفَرَتِهِ وَلَا لِسَفَاتِهِ مَا تَرْبِطُهُمَا بِهِ، فَقُلْتُ لِأَبِي بَكْرٍ: وَاللَّهِ مَا أَجِدُ حَتَّى أَرْبِطَ بِهِ إِلَّا بِطَاقِي. قَالَ: فَشَقَّيْهُ بِأَتْنَيْنِ فَارْبِطِيهِ: بِوَاحِدِ السَّفَاءِ، وَبِالْآخَرِ السَّفَرَةِ، فَقُلْتُ: فَلِذَلِكَ سُمِّيَتْ ذَاتُ الطَّاقَيْنِ. [طرمه ن : ٣٩٠٧، ٥٣٨٨].

**तशरीह :** हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की साहबज़ादी का नाम अस्मा (रज़ि.) है। ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की वालिदा हैं। मक्का ही में इस्लाम लाई। उस वक़्त तक सिर्फ़ सत्तरह आदमियों ने इस्लाम कुबूल किया था। ये हज़रत

आइशा (रज़ि.) से दस बरस बड़ी थीं। अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की शाहादत के बाद 73 हिजरी में सौ साल की उम्र में आपने मक्का ही में इंतिकाल फ़र्माया। बाब का मतलब यूँ प्राबित हुआ कि आप (ﷺ) के लिये इस नेक ख़ातून ने हिजरात के सफ़र के वक़्त नाश्ता तैयार किया। इसी से हर सफ़र में ख़्वाह हज़्ज का सफ़र हो या जिहाद का राशन साथ ले जाने का इस्बात हुआ। ख़ास तौर पर फ़ौजों के लिये राशन का पूरा इंतज़ाम करना हर समय हुकूमत के लिये ज़रूरी है।

2980. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उनसे अमर ने बयान किया, कहा मुझको अत्ता ने ख़बर दी, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि हम लोग नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में कुर्बानी का गोश्त (बत्तौर-तौशा) मदीना ले जाया करते थे। (ये ले जाना बत्तौर तौशा हुआ करता था। इससे आपका मतलब प्राबित हुआ)। (राजेअ: 1719)

2981. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे बशीर बिन यसार ने ख़बर दी और उन्हें सुवैद बिन नोज़मान ने ख़बर दी कि ख़ैबर की जंग के मौक़े पर वो नबी करीम (ﷺ) के साथ गये थे। जब लश्कर मुक़ामे सहबा पर पहुँचा जो ख़ैबर का नशीबी इलाक़ा है तो लोगों ने अस्त्र की नमाज़ पढ़ी और नबी करीम (ﷺ) ने खाना मंगवाया। आँहज़रत (ﷺ) के पास सत्तू के सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई गई और हमने वही सत्तू खाया और पिया। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) खड़े हुए और आपने कुल्ली की हमने भी कुल्ली की और नमाज़ पढ़ी। (ये सत्तू बत्तौर तौशा रखा गया था। इससे बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ)। (राजेअ: 209)

2982. हमसे बिशर बिन मरहूम ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने और उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब लोगों के पास ज़ादे राह ख़त्म होने लगा तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लोग अपने ऊँट ज़िबह करने की इजाज़त लेने हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। इतने में हज़रत इमर (रज़ि.) से उनकी मुलाक़ात हुई। इस इजाज़त की ख़बर उन्हें भी उन लोगों ने दी। इमर (रज़ि.) ने सुनकर कहा, उन ऊँटों के बाद फिर तुम्हारे पास बाक़ी क्या रह जाएगा? (क्योंकि उन्हीं पर सवार होकर इतनी दूर दराज़ की मसाफ़त भी तो तै करनी थी) उसके बाद इमर (रज़ि.) नबी करीम

۲۹۸۰- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو قَالَ أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا تَرَوُدُ لَحُومَ الْأَصْحَابِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ)). (راجع: ۱۷۱۹)

۲۹۸۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى قَالَ أَخْبَرَنِي بَشِيرُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّ سُوَيْدَ بْنَ النُّعْمَانِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَامَ خَيْبَرَ، حَتَّى إِذْ كَانُوا بِالْمُهَبَّاءِ - وَهِيَ أَدْنَى خَيْبَرَ - فَصَلُّوا الْقَصْرَ، فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِالْأَطْعِمَةِ، فَلَمْ يُؤْتِ النَّبِيُّ ﷺ إِلَّا بِسَوْنِقٍ، فَلَكَّنَا، فَالْكُنَّا وَشَرَبْنَا، ثُمَّ قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا وَصَلَّيْنَا)). (راجع: ۲۰۹)

۲۹۸۲- حَدَّثَنَا بِشَرُّ بْنُ مَرْحُومٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَفَّتْ أَرْوَاحُ النَّاسِ وَأَمْلَقُوا، فَأَتُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِي نَحْرَ إِلَيْهِمْ، فَأَذِنَ لَهُمْ، فَلَقِيَهُمْ عُمَرُ فَأَحْرَوهُ، فَقَالَ: مَا بَقَاؤُكُمْ بَعْدَ إِلَيْكُمْ؟ فَدَخَلَ عُمَرُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا بَقَاؤُهُمْ بَعْدَ إِلَيْهِمْ؟ قَالَ

(ﷺ) की खिदमत में हाजिर हुए और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! लोग अगर अपने ऊँट भी ज़िबह कर देंगे। तो फिर उसके बाद उनके पास बाकी क्या रह जाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर लोगों में ऐलान कर दो कि (ऊँटों को ज़िबह करने के बजाय) अपना बचा खुचा तौशा लेकर यहाँ आ जाएँ। (सब लोगों ने जो कुछ भी उनके पास खाने की चीज़ बाकी बच गई थी, आँहज़रत ﷺ के सामने लाकर रख दी) आप (ﷺ) ने दुआ की और उसमें बरकत हुई। फिर सबको उनके बर्तनों के साथ आपने बुलाया। सबने भर-भरकर उसमें से लिया और जब सब लोग फ़ारिग हो गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ। (राजेज़: 2484)

**तयरीह:** ये मुअजज़ा देखकर खुद आप (ﷺ) ने अपनी रिसालत पर गवाही दी, मुअजज़ा अल्लाह पाक की तरफ़ से होता है जिसे वो अपने रसूलों की सदाक़त ज़ाहिर करने के लिये उनके हाथों से दिखलाया करता है। हज़रत इमर (रज़ि.) ने ये इसलिये फ़र्माया कि तमाम ऊँट ज़िबह कर दिये जाते तो फिर फौजी मुसलमान सवारी किस पर करते और सारा सफ़र पैदल करना मुश्किल था। ये मश्वरा सहीह था इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उसे कुबूल किया और बाद में सारे फौजियों के राशन को जो बाकी रह गया था आप (ﷺ) ने इकट्ठा कराकर बरकत की दुआ की और अल्लाह ने उसमें इतनी बरकत दी कि सारे फौजियों को काफ़ी हो गया।

मुअजज़ा का वजूद बरहक़ है। मगर ये अल्लाह की मर्ज़ी पर है वो जब चाहे अपने मक्बूल बन्दों के हाथों ये दिखलाए। खुद रसूलों को अपने तौर पर उसमें कोई इख़्तियार नहीं है। ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहि युअतीहि मय्यश़ाउ.

इस हदीष के तहत हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व फिलहदीषि हुस्नु खल्कि रसूलिल्लहि (ﷺ) व इजाबतुहू इला मा यलतमिसु मिन्हु अस्हाबुहू व इज्जाएहू अललआदतिल बाश्शियति फिल्इहतियाजि इलज़ज़ादि फिस्सफरि व मन्क़बतुन जाहिरतुन लिउमर दाल्लतुन अला कुव्वतिन यक्कीनिय्यतिन बिइजाबति दुआइरसूलि (ﷺ) व अला हुस्नि नज़िही लिलमुस्लिमीन अला अन्नहू लैस फी इजाबतिन्नबिय्यि (ﷺ) लहुम अला नहरि इबिलिहम मा यन्हतिमु अन्नहुम यब्कून बिला ज़हरिन लिइहतियालि अय्यबअल्लाहु लहुम मा यहमिलहुम मिन गनीमतिन व नहबिहा लाकिन अजाब उमरू इला मा अशर बिही लितअजीलिलमुअजज़ति बिल्बर्कतिल्लती हसलत फित्तआमि व क्रद वक्रअ लिउमर शबीहुन बिहाज़िहिल्लिस्सति फिल्माइ व ज़ालिक फीमा अख़रजहू इब्नु अबी खुज़ैमत व गैरूहू व सतातिल्इश़ास्तु इलैहि फी अलामातिनुबुव्वति. (फ़त्हुल बारी) या'नी इस हदीष से आँहज़रत (ﷺ) के अख़लाक़े फ़ाज़िला (श्रेष्ठ आचरण) पर रोशनी पड़ती है और इस पर भी कि आप (ﷺ) सहाबा किराम (रज़ि.) के किसी भी बारे में इस्तिमास करने पर फ़ौरन तवज्जह फ़र्माते और सफ़र में तौशा राशन वगैरह हाज़ाते इंसानी का उनके लिये पूरा पूरा ख़याल रखते थे। इससे हज़रत इमर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई कि उनको आँहज़रत (ﷺ) की दुआओं की कुबूलियत पर किस क्रदर यक्कीने कामिल था और मुसलमानों के बारे में उनकी कितनी अच्छी नज़र थी। वो जानते थे कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये जो ऊँटों को ज़िबह करने का मश्वरा दिया है ये इस अन्देशा पर है कि उनको ज़िबह करने के बाद भी अल्लाह पाक उनके लिये ग़नीमत वगैरह से सवारियों का इतिज़ाम करा ही देगा। लेकिन हज़रत इमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की बरकत की दुआओं के लिये इज़लत फ़र्माई ताकि बर्तौर मुअजज़ा खाने में बरकत हासिल हो और ऊँटों को ज़िबह करने की नौबत ही न आने पाए। एक दफ़ा पानी के किस्से में भी हज़रत इमर (रज़ि.) को उसी के मुशाबेह (मिलता-जुलता) मामला पेश आया था। जिसका इशारा अलामातुन नुबुव्वह में आया।

رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((نَادَى فِي النَّاسِ يَأْتُونَ بِفَضْلِ أَزْوَاجِهِمْ، فَذَعَا وَبَرَكَةَ عَلَيْهِ، ثُمَّ دَعَاهُمْ بِأَوْعِيَتِهِمْ فَاحْتَى النَّاسُ حَتَّى فَرَّغُوا، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ)).

[راجع: ٢٤٨٤]

कुछ फुकहा ने इस हदीस से इस्तिम्बात किया है कि गिरानी के वक़्त इमाम लोगों के फ़ालतू अनाज के ज़ख़ीरों को बाज़ार में बेचने के लिये हुक्मन निकलवा सकता है। इसलिये कि लोगों के लिये उसी में ख़ैर है न कि अनाज के छुपाकर रखने में।

## बाब 124 : तौशा अपने कँधों पर लादकर खुद ले जाना - بَابُ حَمْلِ الزَّادِ عَلَى الرِّقَابِ

सफ़र में खास तौर पर जिहाद के सफ़र में हर सिपाही बक़दरे ज़रूरत राशन अपने साथ रखता है। मुसन्निफ़ (रह.) ने इसी का जवाज़ प्राबित फ़र्माया है।

2983. हमसे स़दक्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें वहब बिन कैसान ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम (एक शज्वा पर) निकले। हमारी ता'दाद तीन सौ थी, हम अपना राशन अपने कँधों पर उठाए हुए थे। आख़िर हमारा तौशा जब (तक्रीबन) ख़त्म हो गया, तो एक शख़्स को रोज़ाना सिर्फ़ एक खजूर खाने को मिलने लगी। एक शागिर्द ने पूछा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! (जाबिर रज़ि.) एक खजूर से भला एक आदमी का क्या बनता है? उन्होंने फ़र्माया कि उसकी क़द्र हमें उस वक़्त मा'लूम हुई जब एक खजूर भी बाक़ी नहीं रह गई थी। उसके बाद हम दरिया पर आए तो एक ऐसी मछली मिली जिसे दरिया ने बाहर फेंक दिया था। और हम अठारह दिन तक ख़ूब जी भरकर उसी को खाते रहे। (राजेअ: 2483)

٢٩٨٣- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجْنَا وَنَحْنُ ثَلَاثُمِائَةٍ نَحْمِلُ زَادَنَا عَلَى رِقَابِنَا، فَفُتِيَ زَادُنَا، حَتَّى كَانَ الرَّجُلُ مِمَّا يَأْكُلُ فِي كُلِّ يَوْمٍ تَمْرَةً. قَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا عَبْدِ اللَّهِ، وَأَيْنَ كَانَتِ التَّمْرَةُ تَقَعُ مِنَ الرَّجُلِ؟ قَالَ: لَقَدْ وَجَدْنَا فَقْدَهَا حِينَ فَقْدِنَاهَا، حَتَّى أَتَيْنَا الْبَحْرَ، فَإِذَا حَوَتْ قَدْ قَذَفَ الْبَحْرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ يَوْمًا

مَا أُخْبِتْنَا)). [راجع: ٢٤٨٣]

**तशरीह:** ग़ालिबन व्हेल जैसी कोई मछली रही होगी जो कुछ दफ़ा अस्सी फीट से सौ फीट तक लम्बी होती है और जो आयाते इलाही में से एक अजीब मछलूक है। अठारह दिन तक सिर्फ़ उसी मछली पर गुज़ारा करना ये महज़ अल्लाह की तरफ़ से ताईदे ग़ैबी थी। ये रजब 8 हिजरी का वाक़िया है। बाब का मतलब यँ प्राबित हुआ कि तीन सौ मुजाहिदीन अपना अपना राशन अपने अपने कँधों पर उठाए हुए थे। वो ज़माना भी ऐसी तंगियों का था। न आज जैसा कि हर किस्म की सहूलतें मयस्सर हो गई हैं फिर भी कुछ मौकों पर सिपाही को अपना राशन खुद उठाना पड़ जाता है।

## बाब 125 औरत का अपने भाई के पीछे एक ही ऊँट पर सवार होना

इस बारे में सफ़रे जिहाद को भी सफ़रे हज पर क़यास किया गया है। 2984. हमसे अमर बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमसे इम्रान बिन अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने अज़्र किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपके अस्हाब हज और उमरह दोनों करके वापस जा रहे हैं और मैं सिर्फ़ हज कर पाई हूँ। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जाओ (उमरह कर आओ) अब्दुर्रहमान (रज़ि.) (हज़रत आइशा

## 125 - بَابُ إِزْدَافِ الْمَرْأَةِ خَلْفَ أَخِيهَا

٢٩٨٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْأَسْوَدِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَرْجِعُ أَصْحَابُكَ بِأَجْرِ حَجٍّ وَعُمْرَةٍ، وَلَمْ أَرِدْ عَلَى الْحَجِّ؟ فَقَالَ لَهَا:



रज़ि. के भाई) तुम्हें अपनी सवारी के पीछे बिठा लेंगे। चुनौचे आपने अब्दुरहमान (रज़ि.) को हुक्म दिया कि तन्ईम से (एहराम बाँधकर) आइशा (रज़ि.) को उमरह करा लाएँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस अमें में मक्का के बालाई इलाके पर उनका इंतिज़ार किया, यहाँ तक कि वो आ गई। (राजेअ: 294)

2985. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उनसे अम्र बिन औस ने और उनसे अब्दुरहमान बिन अबीबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने बयान किया मुझे नब करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि अपनी सवारी पर अपने पीछे हज़रत आइशा (रज़ि.) को बिठा ले जाऊँ, और तन्ईम से (एहराम बाँधकर) उन्हें उमरह करा लाऊँ। (राजेअ: 1784)

उस मौके पर हज़रत अब्दुरहमान बिन अबीबक्र ने अपने मुहतरमा बहन हज़रत आइशा (रज़ि.) को सवारी पर पीछे बिठाया। इससे बाब का मक़सद प्राबित हुआ। पहली हदीस में मज़ीद तफ़सील भी मणकूर हुई।

### बाब 126 : जिहाद और हज्ज के सफ़र में दो आदमियों का एक सवारी पर बैठना

2986. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अबू तलहा (रज़ि.) की सवारी पर उनके पीछे बैठा हुआ था। तमाम सहाबा हज्ज और उमरह ही के लिये एक साथ लब्बैक कह रहे थे। (राजेअ: 1089)

### बाब 127 : एक गधे पर दो आदमियों का सवार होना

2987. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू सप्रवान ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा ने, उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) एक गधे पर उसकी पालान रखकर सवार हुए। जिस पर एक चादर बिछी हुई थी और उसामा (रज़ि.) को आपने अपने पीछे बिठा रखा था।

((اذْمَعِي وَتَرِدْفِكَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ)). فَأَمَرَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ أَنْ يُعْمِرَهَا مِنَ التَّعِيمِ. فَانْتَظَرَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِأَعْلَى مَكَّةَ حَتَّى جَاءَتْ)). [راجع: 294]

2985 - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عُمَرُو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عُمَرُو بْنِ أَوْسٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ الصَّدِيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَمَرَنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنْ أُرْدِفَ عَائِشَةَ وَأَعْمِرَهَا مِنَ التَّعِيمِ)). [راجع: 1784]

### 126 - بَابُ الْإِرْتِدَافِ فِي الْغَزْوِ وَالْحَجِّ

2986 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ رَدِيفَ أَبِي طَلْحَةَ، وَإِنَّهُمْ لَيَمْرُؤُونَ بَيْنَهُمَا جَمِيعًا: الْحَجَّ، وَالْعُمْرَةَ)). [راجع: 1089]

### 127 - بَابُ الرَّدْفِ عَلَى الْحِمَارِ

2987 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى إِكَاْفٍ عَلَيْهِ

(दीगर मक़ाम : 4566, 5663, 5964)

قَطِيفَةً، وَأَزْدَفَ أَسَافَةَ وَرَافَةً)).

[أَطْرَافُهُ ي: ٤٥٦٦، ٥٦٦٣، ٥٩٦٤]

[٦٣٠٧]

मा'लूम हुआ कि एक गधे पर दो आदमी सवार हो सकते हैं, बशर्ते कि वो तत्क़तवर हो लफ़्ज़ इकाफ़ गधे के पालान के लिये इसी तरह इस्ते'माल किया गया है जिस तरह घोड़े के लिये लफ़्ज़ सरजुन का इस्ते'माल होता है।

2988. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि फ़तहे मक्का के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) मक्का के बालाई इलाक़े से अपनी सवारी पर तशरीफ़ लाए। उसामा (रज़ि.) को आपने अपनी सवारी पर पीछे बिठा रखा था और आपके साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे और इब्माम बिन तलहा (रज़ि.) भी जो का'बा के कलीद बरदार (चाबी रखने वाले) थे। आँहज़रत (ﷺ) ने मस्जिदुल हुराम में अपनी सवारी बिठा दी और इब्माम (रज़ि.) से कहा कि बैतुल हुराम की कुंजी लाएँ। उन्होंने का'बा का दरवाज़ा खोल दिया और रसूले करीम (ﷺ) अंदर दाख़िल हो गये। आप (ﷺ) के साथ उसामा, बिलाल और इब्माम (रज़ि.) भी थे। आप काफ़ी देर तक अंदर ठहरे रहे। और जब बाहर तशरीफ़ लाए तो सहाबा ने (अंदर जाने के लिये) एक-दूसरे से आगे होने की कोशिश की सबसे पहले अंदर दाख़िल होने वाले अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) थे। उन्होंने बिलाल (रज़ि.) को दरवाज़े के पीछे खड़ा पाया और उनसे पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ कहाँ पढ़ी है? उन्होंने उस जगह की तरफ़ इशारा किया जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे ये पूछना याद नहीं रहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने कितनी रकअतें पढ़ी थीं। (राजेअ : 397)

٢٩٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْبَلَ يَوْمَ الْفَتْحِ مِنْ أَغْلَى مَكَّةَ عَلَى رَاحِلَتِهِ مُرْدِفًا أَسَافَةَ بْنَ زَيْدٍ وَمَعَهُ بِلَالٌ وَمَعَهُ غُفْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ مِنَ الْحِجَابَةِ حَتَّى أَنَاخَ فِي الْمَسْجِدِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْتِيَ بِمِفْتَاحِ الْكَلْبَةِ، فَفَتَحَ وَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ أَسَافَةُ وَبِلَالٌ وَغُفْمَانُ، فَكَثَّتْ لَيْهَا نَهَارًا طَوِيلًا، ثُمَّ خَرَجَ فَاسْتَبَقَ النَّاسُ، وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ أَوَّلَ مَنْ دَخَلَ، فَوَجَدَ بِلَالًا وَرَافَةَ الْبَابِ قَائِمًا فَسَأَلَهُ أَيْنَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَشَارَ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَتَسَيَّتُ أَنْ أَسْأَلَ: كَمْ صَلَّى مِنْ سَجْدَةٍ)).

[راجع: ٣٩٧]

**तशरीह:** बाब का तर्जुमा इससे निकला कि रसूले करीम (ﷺ) ने कैटनी पर अपने पीछे हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को भी बिठा रखा था। कैटनी भी एक जानवर है जब इस पर दो सवारी का सवार होना प्राबित हुआ तो गधे को भी इस पर क़यास किया जा सकता है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को कई जगह लाए हैं और इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है जैसा कि अपने अपने मुक़ाम पर बयान हुआ है। यही आपके मुज्ताहिदे मुत्लक़ होने की अहम दलील है और ये अमर रोज़े-रोशन की तरह प्राबित है कि एक मुज्ताहिदे मुत्लक़ के लिये जिन शराइत का होना ज़रूरी है वो सब आपकी ज़ाते-गिरामी में बदर्ज-ए-अतम पाई जाती हैं। अल्लाह सारे मुज्ताहिदीने किराम को जज़ाए ख़ैर दे जिन्होंने ख़िदमते इस्लाम के लिये अपने आपको पूरी तरह वक़फ़ कर दिया था, रज़ियल्लाहु अन्हुम अज़ाहु। हदीष में लफ़्ज़ हजबतुन हाजिब की जमा है जो

दरबान के लिये बोला जाता है। का'बा शरीफ के कलीद बरदार और दरबान यही खानदान चला आ रहा है।

भुज के इलाके कच्छ के तारीखी दौरे अज़ मई ता 8 जून 1971 ईस्वी के दौरान इस पारे की हद्दीष 2948 और 2988 तक तस्वीद व तब्यीज़ की गई, अल्लाह पाक ख़िदमते हद्दीष को तमाम भाइयों, उन शाऐकीने बुखारी शरीफ के हक़ में बतौर सदक-ए-जारिया कुबूल फ़र्माए आमीन।

## बाब 128 : जो रकाब पकड़कर किसी को सवारी पर चढ़ा दे या कुछ ऐसी ही मदद करे, उसका घ़वाब

2989. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान के हर एक जोड़ पर स़दका लाज़िम होता है। हर दिन जिसमें सूरज तुलूअ होता है। फिर अगर वो इंसानों के दरम्यान इंस़ाफ़ करे तो ये भी एक स़दका है और किसी को सवारी के मामले में अगर मदद पहुँचाए, इस तरह पर कि उसे उस पर सवार कराए या उसका सामान उठाकर रख दे तो ये भी स़दका है और अच्छी बात मुँह से निकालना भी स़दका है और हर क़दम जो नमाज़ के लिये उठता है वो भी स़दका है और अगर कोई रास्ते से किसी तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटा दे तो ये भी एक स़दका है। (राजेअ : 2707)

## ۱۲۸- بَابُ مَنْ أَخَذَ بِالرَّكَابِ

وَنَحْوِهِ

۲۹۸۹- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((كُلُّ سَلَامَةٍ مِنَ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلُّ يَوْمٍ تَطْلُعُ فِيهِ الشَّمْسُ: يَغْدُلُ بَيْنَ الْإِثْنَيْنِ صَدَقَةٌ، وَيَعِينُ الرَّجُلَ عَلَى ذَاتِهِ فَيُخِيلُ عَلَيْهَا- أَوْ يَرْفَعُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ- صَدَقَةٌ، وَالْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ خَطْوَةٍ يَخْطُوهَا إِلَى الصَّلَاةِ صَدَقَةٌ وَيُعِيطُ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ صَدَقَةٌ))

[راجع: ۲۷۰۷]

चूँकि इस हद्दीष में स़दकात के बयान के तहत किसी इंसान की सवारी के सिलसिले में कोई मुम्किन मदद करना भी मज़कूर हुआ है इसलिये इस रिवायत को इस बाब के ज़ैल में लाया गया। इस हद्दीष से ये भी साबित हुआ कि हर मुसलमान के लिये लाज़िम है कि वो रोज़ाना अपने हर जोड़ की सलामती के शुक्रिये में कुछ न कुछ कारे ख़ैर ज़रूर करता रहे। लफ़्ज़े सुलामा आदमी का हर जोड़ और उँगली के पोर मुराद हैं। कुछ ने कहा कि हर जोफ़दार हड्डी को सुलामा कहा जाता है वाहिद और जमा के लिये यही लफ़्ज़ है। कुछ ने इसे लफ़्ज़े सलामिया की जमा कहा है।

## बाब 129 : मुस्हफ़ या'नी लिखा हुआ कुआन शरीफ़ लेकर दुश्मन के मुल्क में जाना मना है

## ۱۲۹- بَابُ السَّفَرِ بِالْمَصَاحِفِ إِلَى

أَرْضِ الْعَدُوِّ

दुश्मन से मुराद वो मुल्क है जिसकी हुकूमत इस्लामी हुकूमत से इस्लाम के खिलाफ़ बर-सरे-पैकार हो जिसे दारुल हरब (दुश्मान देश) कहा जाता है।

और मुहम्मद बिन बिशर से इसी तरह मरवी है। वो अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं, वो नाफ़ेअ से वो इब्ने ज़मर (रज़ि.) से और वो नबी करीम (ﷺ) से और अब्दुल्लाह के साथ इस हद्दीष को मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने भी नाफ़ेअ से, उन्होंने इब्ने ज़मर (रज़ि.) से रिवायत किया है और खुद नबी करीम (ﷺ) ने अपने सहाबा के साथ

وَكَذَلِكَ يُرَوَّى عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ بَشَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَتَابِعَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَدْ سَافَرَ النَّبِيُّ ﷺ

दुश्मनों के इलाक़े में सफ़र किया, हालाँकि वो सब हज़रत कुआन मजीद के आलिम थे।

وَأَصْحَابُهُ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ وَهُمْ يَقْلَمُونَ  
الْقُرْآنَ.

**तशरीह:** इससे हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की ये गर्ज नहीं है कि मुस्हफ़ का दुश्मन के मुल्क में ले जाना जाइज़ है क्योंकि मुस्हफ़ की बात और है और हाफ़िज़े कुआन का दुश्मन के मुल्क में जाना तो किसी ने मना नहीं रखा है। पस ऐसा इस्तिदलाल हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की शान से बड़द है। बल्कि गर्ज इमाम बुखारी (रह.) की ये है कि बाब की हदीष में जो कुआन को लेकर दुश्मन के मुल्क में सफ़र करने में मना किया है उससे मुराद मुस्हफ़ है या नो लिखा हुआ कुआन; न कि वो कुआन जो हाफ़िज़ों के सीने में होता है। (वहीदी)

आज दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ किसी न किसी सूरत में कुआन मजीद न पहुँचा हो और ये कुआन मजीद के लिये फ़तहे मुबीन है जो बिफ़ज़िलही तआला हासिलशुदा है।

2990. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुश्मन के इलाक़े में कुआन मजीद लेकर जाने से मना किया था।

٢٩٩٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ لَا يُسَافِرُ بِالْقُرْآنِ إِلَى أَرْضِ الْعَدُوِّ)).

दुश्मन के इलाक़ों में कुआन पाक लेकर जाने से इसलिये रोका ताकि उसकी बेहुर्मती न हो, क्योंकि जंग वगैरह के मौकों पर हो सकता है कि कुआन मजीद दुश्मन के हाथ लग जाए और वो उसकी तौहीन करें। कुछ दुश्माने-इस्लाम की तरफ़ से ऐसे वाकियात अब भी होते रहते हैं। कि अगर कुआन मजीद उनके हाथ लग जाए तो वो बेहुर्मती में कोई कसर नहीं छोड़ते, हालाँकि ये हरकत अज़लाक़ व शराफ़त से बहुत ही दूर है। जिस किताब को दुनिया के करोड़ों लोग अपनी मज़हबी मुकद्दस किताब मानते हैं, उसकी इस तौर बेहुर्मती करना गोया दुनिया के करोड़ों इंसानों का दिल दुखाना है। ऐसे गुस्ताख़ लोग किसी न किसी शकल में अपनी हरकतों की सज़ा भुगतते रहते हैं जैसा कि मुशाहिदा है। इस्लाम की पाकीज़ा ता'लीम ये है कि किसी भी आसमानी मज़हबी किताब का एहतियाम ज़रूरी है जो उसकी हद के अंदर ही होना चाहिये बशर्ते कि वो किताब आसमानी किताब हो।

### बाब 130 : जंग के वक़्त नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना

2991. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सुबह हुई तो नबी करीम (ﷺ) ख़ौबर में दाख़िल थे। इतने में वहाँ के रहने वाले (यहूदी) फावड़े अपनी गर्दनों पर लिये हुए निकले। जब आँहज़रत (ﷺ) को (आपके लश्कर के साथ) देखा तो चिल्ला उठे कि ये मुहम्मद लश्कर के साथ (आ गये), मुहम्मद लश्कर के साथ, मुहम्मद लश्कर के साथ! (ﷺ) चुनाँचे उन सब ने भागकर क़िले में पनाह ले ली। उस वक़्त नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ उठाए और नारा-ए-तक्बीर

١٣٠ - بَابُ التَّكْبِيرِ عِنْدَ الْحَرْبِ

٢٩٩١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَبَحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرَ وَقَدْ خَرَجُوا بِالْمَسَاحِي عَلَى أَغْنَابِهِمْ، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ، مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ، مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ، فَلَجَزُوا إِلَى الْحَصْنِ. فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ وَقَالَ:

बुलन्द किया, साथ ही इर्शाद हुआ कि खैबर तो तबाह हो चुका। कि जब किसी क़ौम के आंगन में हम उतर आते हैं तो डराए हुए लोगों की सुबह मन्हूस हो जाती है। और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमको गधे मिल गये, और हमने उन्हें ज़िबह करके पकाना शुरू कर दिया था कि नबी करीम (ﷺ) के मुनादी ने ये पुकारा कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) तुम्हें गधे के गोश्त से मना करते हैं। चुनाँचे हाँडियों में जो कुछ था, सब उलट दिया गया। इस रिवायत की मुताबअत अली ने सुफ़यान से की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने दोनों हाथ उठाए थे। (राजेज़: 371)

اللَّهُ أَكْبَرُ، غَرَبَتْ خَيْرٌ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ لَفَسَاءَ صَبَاحِ الْمُتَطَرِّقِينَ. وَأَصْبَحْنَا حُمْرًا فَطَبَخْنَاهَا، فَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانَكُمْ عَنْ لَحْمِ الْخَمْرِ. فَكَفَيْتِ الْقُدُورَ بِمَا فِيهَا)). تَابَعَهُ عَلِيُّ عَنْ سُفْيَانَ (رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ)).

[راجع: ٣٧١]

**तरीह:** रसूले करीम (ﷺ) ने खैबर में दाखिल होते वक़्त नारा-ए-तक्बीर बुलन्द किया, इससे बाब का मतलब प्राबित हुआ। हर मुनासिब मौक़े पर शौक़ते इस्लाम के इज़हार के लिये नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना इस्लामी शिआर है। मगर स़द अफ़सोस कि आजकल के बेशतर नामोनिहाद मुसलमानों ने इस पाक नारे की अहमियत घटाने के लिये नारा-ए-रिसालत, या रसूलुल्लाह। नारा-ए-गोशिया या शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी जैसे शिर्किया नारे इजाद करके शिर्क व बिदअत का ऐसा दरवाज़ा खोल दिया है जो तालीमाते इस्लाम के सरासर बरअक्स (विपरीत) है। अल्लाह उनको हिदायत नसीब फ़र्माए।

ऐसे नारे लगाना शिर्क का इर्तिकाब करना है जिनसे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और औलिया की भी नाफ़रमानी होती है। मगर मुसलमाननुमा मुश्रिकों ने उनको मुहब्बते रसूल (ﷺ) और मुहब्बते औलिया से ता'बीर किया है जो सरासर शैतानी धोखा और उनके नफ़से अम्मारा का फ़रेब है।

### बाब 131 : बहुत चिल्लाकर तक्बीर कहना मना है

2992. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे आसिम ने, उनसे अबू उम्मान ने, उनसे अबू मूसा अश़अरी (रज़ि.) ने कि हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। जब हम किसी वादी में उतरते तो ला इलाहा इल्लल्लाहु और अल्लाहु अक़बर कहते और हमारी आवाज़ बुलन्द हो जाती इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ लोगों! अपनी जानों पर रहम खाओ क्योंकि तुम किसी बहरे या गायब अल्लाह को नहीं पुकार रहे हो। वो तो तुम्हारे साथ ही है। बेशक वो सुनने वाला और तुमसे बहुत क़रीब है। बरकतों वाला है। उसका नाम और उसकी अज़मत बहुत ही बड़ी है। (दीगर मक़ाम

: 4205, 6384, 6409, 6610, 7386)

### ١٣١ - بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ رَفْعِ

#### الصَّوْتِ فِي التَّكْبِيرِ

٢٩٩٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَاثِمٍ عَنْ أَبِي غَفَّانٍ عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَكُنَّا إِذَا أَشْرَقْنَا عَلَى وَادٍ هَلَلْنَا وَكَبَّرْنَا، ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُنَا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ، ارْتَفِعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ، فَإِنَّكُمْ لَا تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلَا غَائِبًا، إِنَّهُ مَعَكُمْ، إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ، تَبَارَكَ اسْمُهُ، وَتَعَالَى جَدُّهُ)).

[أطرافه ي: ٤٢٠٥، ٦٣٨٤، ٦٤٠٩،

{٧٣٨٦، ٦٦١٠}

**तशरीह:**

कस्तलानी ने तबरी से नक़ल किया कि इस हदीष से ज़िक्र बिल जहर की कराहियत प्राबित हुई और अक़्बर सलफ़ सहाबा और तबेईन का यही कौल है। मैं (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम) कहता हूँ तहकीक़ इस बाब में ये है कि सुन्नत की पैरवी करना चाहिये जहाँ जहर आँहज़रत (ﷺ) से मन्कूल है वहाँ जहर करना बेहतर है। जैसे अज़ान में और बाक़ी मुक़ामों में आहिस्ता ज़िक्र करना बेहतर है। कुछ ने कहा इस हदीष में जिस जहर से आप (ﷺ) ने मना किया वो बहुत ज़ोर का जहर है जिससे लोग परेशान हों, न जहरे मुतसब्बित, बिल जुम्ला बहुत ज़ोर से नारे मारना और ज़रबें लगाना जैसा कि कुछ दरवेशों का मा'मूल है, सुन्नत के ख़िलाफ़ है और हज़रत (ﷺ) की पैरवी उन पीरों की पैरवी पर मुक़द्दम है। (वहीदी)

मगर इस्लामी शान-शौक़त के इन्हार के लिये जंग जिहाद वग़ैरह मौक़ों पर नारा-ए-तक्बीर बुलन्द करना ये अम्र दीगर है जैसा कि पीछे मज़कूर हुआ। रिवायत में अल्लाह के साथ होने से मुराद ये है कि वो हर वक़्त तुम्हारी हर बुलन्द और आहिस्ता आवाज़ को सुनता है और तुमको हर वक़्त देख रहा है। वो अपनी ज़ात व सिफ़ात से अशें अज़ीम पर मुस्तवी है। मगर अपने इल्म और सिक्क़ा (सुनने) के लिहाज़ से हर इंसान के साथ है।

### बाब 132 : किसी नशेब (ढलान वाली) जगह में उतरते वक़्त सुब्हानल्लाह कहना

### ۱۳۲- بَابُ التَّسْبِيحِ إِذَا هَبَطَ وَادِيًا

2993. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने उनसे सालिम बिन अबी अल ज़अदि ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम (किसी बुलन्दी पर) चढ़ते, तो अल्लाहु अकबर कहते और जब (किसी नशीब में) उतरते तो सुब्हानल्लाह कहते थे। (दीगर मक़ाम : 2994)

۲۹۹۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَرْنَا، وَإِذَا نَزَلْنَا سَبَّحْنَا)). [طَرَفُهُ فِي : ۲۹۹۴].

कोई भी सफ़र हो, रास्ते में नशेबो-फ़राज़ (चढ़ाई और ढलान) अक़्बर आते ही रहते हैं। लिहाज़ा इस हिदायते पाक को महेनज़र रखना ज़रूरी है। यहाँ सफ़रे जिहाद के लिये इस अम्र का मशरूअ होना मक्सूद है।

### बाब 133 : जब बुलन्दी पर चढ़े तो अल्लाहु अकबर कहना

### ۱۳۳- بَابُ التَّكْبِيرِ إِذَا عَلَا شَرَفًا

2994. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे सालिम ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो अल्लाहु अकबर कहते और नशीब में उतरते तो सुब्हानल्लाह कहते थे। (राजेअ : 2993)

۲۹۹۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ حُصَيْنِ عَنْ سَالِمِ بْنِ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَرْنَا، وَإِذَا نَزَلْنَا سَبَّحْنَا)). [رَاجِعُ : ۲۹۹۳]

2995. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलामा ने बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम

۲۹۹۵- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْقَرِيرِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ

(ﷺ) हज या उमरह से वापस होते जहाँ तक मैं समझता हूँ यूँ कहा जब आप जिहाद से लौटते, तो जब भी आप किसी बुलन्दी पर चढ़ते या (नशीब से) कंकरीले मैदान में आते तो तीन बार अल्लाहु अकबर कहते। फिर फ़र्माते, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वो एक है। उसका कोई शरीक नहीं। मुल्क उसका है और तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं और वो हर काम पर कुदरत रखता है। हम वापस हो रहे हैं तौबा करते हुए, इबादत करते हुए। अपने रब की बारगाह में सज्दा-रेज होते और उसकी हम्द पढ़ते हुए, अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा (कुम्फ़ार की) तमाम जमाअतों को शिकस्त दे दी। मालेह ने कहा कि मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से पूछा क्या अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने लफ़्ज़े आइबून के बाद इंशाअल्लाह नहीं कहा था तो उन्होंने बताया कि नहीं। (राजेअ: 1797)

اللّٰهُ بْنُ عَمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَفَلَ مِنَ الْحَجِّ أَوْ الْقُمْرَةِ - وَلَا أَعْلَمُهُ إِلَّا قَالَ: الْقَرْوُ - يَقُولُ كُلَّمَا أَوْفَى عَلَى نَبِيَّةٍ أَوْ لَدَفْدٍ كَثَرَتْ ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)). أَيُّونَ، قَائِبُونَ، غَائِبُونَ، سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَائِدُونَ. صَدَقَ اللّٰهُ وَعُذَّةٌ وَتَصَرَّ عُنْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَخْزَابَ وَحْدَهُ)). قَالَ صَالِحٌ: فَقُلْتُ لَهُ أَلَمْ يَقُلْ عَبْدُ اللّٰهِ، إِنْ شَاءَ اللّٰهُ؟ قَالَ: لَا)).

[راجع: 1797]

रसूले करीम (ﷺ) ने हम्दे मज़कूरा में सदक़ल्लाहु वअदहू अल्ख के अल्फ़ाज़ ग़ज़व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर इश़ाद फ़र्माए थे, और हज्जतुल विदाअ से वापसी पर भी जबकि इस्लाम को फ़तहे का मिल हो चुकी थी अब भी उन पाक अव्याम की याद ताज़ा करने के लिये उन जुम्ला कलिमाते तय्यिबात को ऐसे मुबारक मौक़ों पर पढ़ा जा सकता है। लफ़्ज़े मुबारक इंशाअल्लाह का ता'ल्लुक़ मुस्तज़िबल के साथ है न कि माज़ी के इसीलिये इस मौक़े पर जो माज़ी के बारे में था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने लफ़्ज़ इंशाअल्लाह नहीं कहा।

**बाब 134 : मुसाफ़िर को उस इबादत का जो वो घर में रहकर किया करता था प्रवाब मिलना (गो वो सफ़र में न कर सके)**

2996. हमसे मतर बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अवाम बिन हौशब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम अबू इस्माईल सकसकी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू बुर्दा बिन अबी मूसा से सुना, वो और यज़ीद बिन अबी कब्शा एक सफ़र मे साथ थे और यज़ीद सफ़र की हालत में भी रोज़ा रखा करते थे। अबू बुर्दा ने कहा कि मैंने (अपने वालिद) अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से बारहा सुना। वो कहा करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब बन्दा बीमार होता है या सफ़र करता है तो उसके लिये उन तमाम इबादतों का प्रवाब लिखा जाता है जिन्हें इक़ामत

۱۳۴ - بَابُ يُكْتَبُ لِلْمَسَافِرِ مَا

كَانَ يَعْمَلُ فِي الْإِقَامَةِ

۲۹۹۶ - حَدَّثَنَا مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ قَالَ حَدَّثَنَا الْقَوَامُ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ أَبُو إِسْمَاعِيلَ السَّكْبَكِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا بُرْدَةَ وَاصْطَحَبَ هُوَ وَيَزِيدُ بْنُ أَبِي كُبَيْشَةَ فِي سَفَرٍ فَكَانَ يَزِيدُ يَصُومُ فِي السَّفَرِ، فَقَالَ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ: سَمِعْتُ أَبَا مُوسَى مِرَاثًا يَقُولُ: ((قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: إِذَا مَرَضَ الْعَبْدُ أَوْ سَافَرَ كُتِبَ لَهُ مِثْلُ مَا كَانَ يَعْمَلُ

या सिहत के वक्त वो किया करता था।

مَقِيمًا صَحِيحًا))

**तशरीह:** बाब में मुसाफिर से सफ़र जिहाद का मुसाफिर मुराद है। उसके बाद हर नेक सफ़र का मुसाफिर जिससे मजबूरी की वजह से बहुत से नवाफ़िल, विर्द, वज़ाइफ़, नमाज़े तहज्जुद वगैरह तर्क हो जाती हैं। ये अल्लाह का फ़ज़ल है कि ऐसे मुसाफ़िर के लिये इन सारे आमाले सालिहानाफ़िला का प्रवाब मिलता रहता है। जो वो हालते हज़र में करता रहता था और अब हालते सफ़र में वो अमल उससे तर्क हो गये। मुसलमान मरीज़ के लिये भी यही हुक्म है। ये अल्लाह का फ़ज़ल है जो उम्मेते मुहम्मदिया की खुसूसियात में से है। ये अल्लाह का महज़ फ़ज़ल है कि सफ़र व हज़र हर जगह मुझ नाचीज़ का अमल तस्वीदे बुखारी शरीफ़ जारी रहता है। जिसे मैं नफ़ली इबादत की जगह अदा करता रहता हूँ। अल्लाह कुबूल करे और खुलूस अता करे आमीन।

### बाब 135 : अकेले सफ़र करना

### १३५ - بَابُ السَّيْرِ وَحْدَهُ

2997. हमसे हुयैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन मुकदिर ने बयान किया, कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक काम के लिये) ग़ज़व-ए-ख़ंदक के मौक़े पर सहाबा को पुकारा, तो जुबैर (रज़ि.) ने उसके लिये कहा कि मैं हाज़िर हूँ। फिर आप (ﷺ) ने सहाबा को पुकारा, और इस बार भी जुबैर (रज़ि.) ने अपने को पेश किया, आप (ﷺ) ने फिर पुकारा और फिर जुबैर (रज़ि.) ने अपने को पेश किया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आख़िर फ़र्माया कि हर नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी जुबैर हैं। सुफ़यान ने कहा कि हवारी के मा'नी मुआविन मददगार के हैं (या वफ़ादार महरमे राज़ को हवारी कहा गया है)। (राजेअ: 2846)

٢٩٩٧ - حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُكَدِيرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: نَذَبَ النَّبِيُّ ﷺ النَّاسَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ، ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ خَوَارِيًا وَخَوَارِيَّ الزُّبَيْرِ)). قَالَ سُفْيَانُ: الْخَوَارِيُّ النَّاصِرُ.

[راجع: ٢٨٤٦]

**तशरीह:** कुछ ने कहा हज़रत ईसा (अलै.) के मानने वालों को हवारी इस वजह से कहते कि वो सफ़ेद पोशाक पहनते थे। क़तादा ने कहा हवारी वो जो ख़िलाफ़त के लायक़ हो या वज़ीर वा तदबीर हो। इस हदीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब इस तरह शाबित किया कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) अकेले काफ़िरा की ख़बर लाने गये। ये जंगे ख़ंदक के बारे में है जिसे जंगे अहज़ाब भी कहा गया है। सूरह अहज़ाब में उसकी कुछ तफ़सीलात मज़कूर हैं और किताबुल मराज़ी में ज़िक्र आया।

2998. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि (दूसरी सनद) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जितना मैं जानता हूँ, अगर लोगों को भी अकेले सफ़र (की बुराइयों) के बारे में इतना इल्म होता तो कोई सवार रात में अकेला सफ़र न करता।

٣٠٠٠ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدٌ - هُوَ ابْنُ أَسْلَمَ - عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كَانَتْ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا بِطَرِيقِ مَكَّةَ، فَلَقَهُ عَنْ صَاحِبَةٍ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ شِدَّةً وَجَعَ فَاسْرَعَ السَّوْرَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّمْسِ ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ وَالْعَمَةَ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا



अक़्बर इलमाने अकेले सफ़र करने को मकरूह रखा है। क्योंकि हदीष में है कि अकेला मुसाफ़िर शैतान है, और दो शैतान हैं और तीन जमाअत हैं। इमाम बुखारी (रह.) की ग़र्ज़ इस बाब के लाने से ये है कि ज़रूरत के वक़्त जैसे जासूसी वग़ैरह के लिये अकेले सफ़र करना दुस्त है। कुछ ने कहा कि अगर राह में कुछ डर न हो तो अकेले सफ़र करने में कोई क़बाहत नहीं और मुमानअत की हदीष इस पर महमूल है जब डर हो (वहीदी)। आजकल रेल, मोटर, हवाई जहाज़ के सफ़र भी अगर बसूरते जमाअत ही किये जाएँ तो उसके बहुत से फ़वाइद हैं जो तन्हाई की हालत में नहीं हैं। सफ़र में अकेले होना फ़िल वाक़ेअ बेहद तकलीफ़ का मौजिब है ख़्वाह वो सफ़र रेल, मोटर, हवाई जहाज़ का भी क्यों न हो।

### बाब 136 : सफ़र में तेज़ चलना

अबू हुरैद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं मदीना जल्दी पहुँचना चाहता हूँ, इसलिये अगर कोई शख्स मेरे साथ जल्दी चलना चाहे तो चले।

मक्सदे बाब ये है कि किसी ख़ास ज़रूरत के तहत सफ़रे जिहाद या सफ़रे हज्ज या आम सफ़र में साथियों से कहकर तेज़ी से सफ़र करना और साथियों से आगे चलना मअयूब नहीं है।

2999. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) के हज्जतुल विदाअ के सफ़र की रफ़्तार के बारे में पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) किस किस चाल चलते, यह्या ने कहा इर्वा ने ये भी कहा था (कि मैं सुन रहा था) लेकिन मैं उसका कहना भूल गया। ग़र्ज़ उसामा (रज़ि.) ने कहा आप ज़रा तेज़ चलते जब फ़राख़ जगह पाते तो सवारी को दौड़ा देते। नस्र ऊँट की चाल जो अनक्र से तेज़ होती है। (राजेअ: 1666)

۱۳۶ - بَابُ السَّرْعَةِ فِي السَّفَرِ  
وَقَالَ أَبُو حَتْمٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((إِنِّي مُتَعَجِّلٌ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَنْ أَرَادَ أَنْ يَتَعَجَّلَ مَعِيَ فَلْيَتَعَجَّلْ)).

۲۹۹۹ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - كَانَ يَحْيَى يَقُولُ: وَأَنَا أَسْمَعُ، فَسَقَطَ عَنِّي - عَنْ مَسِيرِ النَّبِيِّ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوُدَاعِ قَالَ: فَكَانَ يَسِيرُ الْعَتَقَ. فَإِذَا وَجَدَ مَخْرَجَ نَصْرٍ. وَالنَّصْرُ فَوْقَ الْعَتَقِ)).  
[راجع: ۱۶۶۶]

वलनकु अस्सैरुस्सहलु वल्फ़ज्वतु अल्फ़र्जतु बैनशशीऐन वन्नस्सु अस्सैरुशदीद. (किरमानी)

3000. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ज़ैद बिन असलम ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के साथ मक्का के रास्ते में था, इतने में उनको सफ़िया बन्ते अबी इब्बैद (रज़ि.) (उनकी बीवी) के बारे में सख़्त बीमारी की ख़बर मिली। चुनाँचे आपने तेज़ चलना शुरू कर दिया और जब (सूरज गुरुब होने के बाद) शफ़रक़ डूब गई तो आप सवारी से उतरे और मरिब और इशा की नमाज़ मिलाकर पढ़ी, फिर कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि जब आप तेज़ी

۳۰۰۰ - حَدَّثَنَا صَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْثَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي زَيْدٌ - هُوَ ابْنُ أَسْلَمَ - عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا بِطَرِيقِ مَكَّةَ، فَلَبِقْنَا عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ شِدَّةَ وَجَعٍ فَأَسْرَعَ السَّرْعَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّفَقِ ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ وَالْعَتَمَةَ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا

के साथ सफ़र करना चाहते तो मरिब में ताख़ीर करके दोनों नमाज़ें (मरिब और इशा) एक साथ अदा फ़रमाते। (राजेअ: 1091)

وَعَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ إِذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ أَخَّرَ الْمَغْرِبَ وَجَمَعَ بَيْنَهُمَا)).

[راجع: ١٠٩١]

3001. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबूबक्र के मौला सुमय ने, उन्हें अबू सालेह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सफ़र क्या है गोया अज़ाब का एक टुकड़ा है, आदमी की नींद, खाने-पीने सब में रुकावट पैदा करता है। इसलिये जब मुसाफ़िर अपना काम पूरा कर ले तो उसे जल्दी घर वापस आ जाना चाहिये। (राजेअ: 1804)

٣٠٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ الْعَذَابِ، يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ نَوْمَهُ وَطَعَامَهُ وَشَرَابَهُ، فَإِذَا قَضَى أَحَدُكُمْ نَهْمَتَهُ فَلْيَعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ)). [راجع: ١٨٠٤]

ऊपर बयान हुई अह्लादीष में आदाबे सफ़र बतलाया जा रहा है जिनमें सफ़रे जिहाद भी दाख़िल है। वापसी का मामला हालात पर मौकूफ़ है। बहरहाल फ़रागत के बाद घर जल्द वापस होना आदाबे सफ़र में से है। गुज़िश्ता हदीष में अगरचे मरिब और इशा की नमाज़ को मिलाकर पढ़ने से जमा ताख़ीर मुराद है मगर दूसरी रिवायत की बिना पर जमा तक्दीम भी जाइज़ है।

### बाब 137 : अगर अल्लाह की राह में सवारी के लिये घोड़ा दे फिर उसको बिकता पाये?

### ١٣٧- بَابُ إِذَا حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ فَرَأَاهَا تُبَاعُ

3002. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में सवारी के लिये दे दिया था, फिर उन्होंने देखा कि वही घोड़ा बिक रहा है। उन्होंने चाहा कि उसे ख़रीद लें। लेकिन जब रसूलुल्लाह (ﷺ) से इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि अब तुम उसे न ख़रीदो, और अपने स़दका को वापस न फेरो। (राजेअ: 1489)

٣٠٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حَمَلَ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَوَجَدَهُ يُبَاعُ، فَأَرَادَ أَنْ يَشْتَاَهُ، فَسَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((لَا تَبْتَعْهُ، وَلَا تَعُدْ لِي صَدَقَتِكَ)). [راجع: ١٤٨٩]

ऐसी चीज़ जो बर्तौर स़दका ख़ैरात किसी को दी जाए उसका वापस क़ीमत देकर भी लेना जाइज़ नहीं है, जैसा कि यहाँ मज़कूर है।

3003. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि मैंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि मैंने अल्लाह के रास्ते में एक

٣٠٠٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ،

घोड़ा सवारी के लिये दिया, और जिसे दिया था वो उसे बेचने लगा या (आपने ये फ़र्माया था कि) उसने उसे बिलकुल कमज़ोर कर दिया था। इसलिये मेरा इरादा हुआ कि मैं उसे वापस ख़रीद लूँ, मुझे ये ख़याल आया कि वो शरूब सस्ते दामों पर उसे बेच देगा। मैंने उसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से जब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर वो घोड़ा तुम्हें एक दिरहम में मिल जाए फिर भी उसे न ख़रीदना क्योंकि अपने ही मदक़ा को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी क़ै ख़ुद ही चाटता है। (राजेअ : 1490)

**बाब 138 : माँ-बाप की इजाज़त लेकर जिहाद में जाना**

माँ-बाप की इजाज़त और उनसे नेक सुलूक करना फ़र्ज़ ऐन है और जिहाद फ़र्ज़ किफ़ाय़ा है। इसलिये जुम्हूर इलमा का क़ौल यही है कि अगर माँ-बाप मुसलमान हों और वो जिहाद की इजाज़त न दें तो जिहाद में जाना हुराम है। अगर जिहाद फ़र्ज़ ऐन हो जाए तब माँ-बाप की इजाज़त की ज़रूरत नहीं और दादा, दादी, नाना, नानी का भी हुक्म माँ-बाप का है (वहीदी)। क़ाल जुम्हूरुल इलमा व युहूरु मुल्जिहाद इज़ा मन अल्बवानि औ अहदुहुमा बिशर्तिन अन्ध्यकूना मुस्लिमैनि लिअन्न बिर्हुमा फ़र्ज़ुन ऐनुन अलैहि वल्जिहादु फ़र्ज़ुन किफ़ायतुन फ़इज़ा तअध्यनल्जिहाद फ़ला अज़िन (फ़तह)

3004. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने कहा, हमसे हबीब बिन अबी श़ाबित ने बयान किया, कहा कि मैंने अबुल अब्बास शायर से सुना, अबुल अब्बास (शायर होने के साथ) रिवायते हदीस में भी शिक़ह और क़ाबिले ए'तिमाद थे, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्म (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि एक सहाबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) से जिहाद में शिक़त की इजाज़त चाही। आपने उनसे पूछा, क्या तुम्हारे माँ-बाप जिन्दा हैं? उन्होंने कहा कि जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उन ही में जिहाद करो। (या'नी उनको ख़ुश रखने की कोशिश करो)। (दीगर मक़ाम : 5972)

या'नी उनकी ख़िदमत बजा लाना यही तेरा जिहाद है। इसी से इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब निकाला कि माँ-बाप की रज़ामन्दी जिहाद में जाने के वास्ते लेना ज़रूरी है क्योंकि आहज़रत (ﷺ) ने उनकी ख़िदमत जिहाद पर मुक़दम रखी। कहते हैं कि हज़रत उवैस क़नी (रह.) की वालिदा ज़ईफ़ा जिन्दा थीं और ये उनकी ख़िदमत में मसरूफ़ थे। इसलिये आहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर न हो सके और सहाबियत के शर्फ़ (श्रेय) से महरूम रह गये। (वहीदी)

**बाब 139 : ऊँटों की गर्दन में घंटी वगैरह जिससे आवाज़ निकले, लटकाना कैसा है?**

3005. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे

فَاتْبَاعُهُ - أَوْ فَاحْصَاةٌ - الَّذِي كَانَ عِنْدَهُ،  
فَارْذَتْ أَنْ أَشْتَرِيَهُ وَطَنَتْ أَنَّهُ بَاتِعُهُ  
بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَا  
تَشْتَرِهِ وَإِنْ بَدَلْتَهُمْ، فَإِنَّ الْعَائِدَ لِي فِيهِ  
كَالْكَلْبِ يَقُودُ لِي قَيْدَهُ)).

[راجع : 1490]

**۱۳۸ - بَابُ الْجِهَادِ بِإِذْنِ الْآبَوَيْنِ**

۳۰۰۴ - حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا قَالَ شَعْبَةُ  
قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ:  
سَمِعْتُ أَبَا الْعَبَّاسِ الشَّاعِرَ - وَكَانَ لَا  
يُعْتَمِدُ فِي حَدِيثِهِ - قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ  
بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: جَاءَ  
رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَسَأَلَهُ فِي الْجِهَادِ  
لِقَالَ: ((أَحْيِ الْوَالِدَيْنِ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ:  
((فِيهِمَا قَبَاهِدٌ)).

[طرفه في : 972]

**۱۳۹ - بَابُ مَا قِيلَ فِي الْجَرَسِ**

وَنَحْوِهِ فِي أَغْصَانِ الْإِبِلِ

۳۰۰۵ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ

इमाम मालिक (रह.) ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने, उन्हें अब्बाद बिन तमीम ने और उन्हें बशीर अंसारी (रज़ि.) ने कि वो एक सफ़र में रसूल करीम (ﷺ) के साथ थे। अब्दुल्लाह (बिन अबीबक्र बिन हज़म हदीष के रावी) ने कहा कि मेरा खयाल है अबू बशीर ने कहा कि लोग अपनी ख्वाबगाहों में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना एक क़ासिद (ज़ैद बिन हारिषा रज़ि.) ये ऐलान करने के लिये भेजा कि जिस शख्स के ऊँट की गर्दन में तांत का गंडा हो या यूँ फ़र्माया कि जो गंडा (हार) हो वो उसे काट डाले।

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ تَمِيمٍ أَنَّ أَبَا بَشِيرٍ الْأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَصْفَارِهِ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: خَبَرْتُ أَنَّهُ قَالَ: وَاللَّيْلِ فِي مِجَنِّهِمْ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رَسُولًا: (وَأَنْ لَا تَلْقَيْنَ فِي رَقَبَةٍ بَعْضَ قِلَادَةٍ مِنْ وَتَرٍ أَوْ قِلَادَةٍ إِلَّا قَطَعْتِ)).

**तशरीह:**

मा'लूम हुआ कि किसी जानवर के गले में महज़ ज़ीनत और फ़ख़र के लिये घंटी या कोई बाजे की किसिम का लटकाना मना है। क़ाल इब्नुल्जौज़ी व फिल्मुरादि बिल्औतारि षलाषत अक्वाल अहदुहम अन्नहुम कानू युक्लल्लिदूनल्इबिल औतारल्कीसी लिअल्ला युमीबहाल्ऐनु बिज़अमिहिम फउमिरू बिक़तइहा इलामन बिअन्नल्औतार ला तरुहु मिन अमिल्लाहि शयआ या'नी पहला क़ौल ये कि अरब के जाहिल ऊँटों के गलों में कोई तांत बतौर ता'वीज़ लटका देते थे ताकि उनको नज़र न लगे। पस उनके काट फेंकने का हुक्म दिया गया, ताकि वो जान लें कि अल्लाह के हुक्म को ये लौटा नहीं सकती।

दूसरा क़ौल ये कि ऐसे तांत वग़ैरह जानवरों के गलों में लटकाने इस डर से मना किये गये कि मुम्किन है वो उनके गले में तंग होकर उनका गला घोट दें या किसी पेड़ से उलझकर तकलीफ़ का बाइष बन जाएँ और जानवरों को ईज़ा पहुँचे।

तीसरा क़ौल ये कि वो घंटे लटकाते हालाँकि बजने वाले घंटों की जगह में रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने दारे कुत्नी की रिवायतक़र्दा इस हदीष पर इशारा किया है। जिसमें साफ़ यूँ है, ला तब्कियन्न किलादतम्मिन वतरिन वला जरसिन फी उनुकि बईसिन इल्ला कुतिअ या'नी किसी भी जानवर के गले में कोई तांत हो या घंटा वो बाक़ी न रखे जाएँ। (फ़तहूल बारी)

### बाब 140 : एक शख्स अपना नाम मुजाहिदीन में लिखवा दे

फिर उसकी औरत हज़्ज को जाने लगे या और कोई उज्र पेश आए तो उसको इज़ाज़त दी जा सकती है (कि जिहाद में न जाए)

3006. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे अबू मअबद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि कोई मर्द किसी (ग़ैर महरम) औरत के साथ तन्हाई में न बैठे और कोई औरत उस वक़्त तक सफ़र न करे जब तक उसके साथ उसका कोई महरम न हो। इतने में एक सहाबी खड़े हुए और अज़्र किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने फ़लों जिहाद में अपना नाम लिखवा दिया है और इधर मेरी बीवी हज़्ज के लिये जा रही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तू भी जा और अपनी बीवी को हज़्ज करा ला।

١٤٠- بَابُ مَنْ اكْتَسَبَ فِي جَيْشٍ فَخَرَجَتْ امْرَأَتُهُ حَاجَةً وَكَانَ لَهُ غُلَرٌ مَلَّ يُوْذَنُ لَهُ؟

٣٠٠٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانٌ عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا يَخْلُونَ وَجُلٌّ بِامْرَأَةٍ، وَلَا تَسَافِرُنَ امْرَأَةٌ إِلَّا وَمَعَهَا مَحْرَمٌ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ اكْتَسَبْتُ فِي غَزْوَةٍ كَذَا وَكَذَا، وَخَرَجَتْ امْرَأَتِي حَاجَةً قَالَ ((اذْهَبْ فَأَخْبِجْ مَعَ امْرَأَتِكَ)).

(राजेअ: 1862)

क्योंकि उसकी औरत के साथ दूसरा मर्द नहीं जा सकता और जिहाद में उसके बदल दूसरा शख्स शरीक हो सकता है तो आपने ज़रूरी काम को ग़ैर ज़रूरी पर मुकद्दम रखा। औरत अपनी शख्सियत में एक मुस्तक़िल हैशियत रखती है। इसलिये वो अपने माल से खुद हज्ज पर जा सकती है। मगर शौहर का साथ होना या उसकी तरफ़ से किसी ज़ी महरम का साथ भेज देना ज़रूरी है।

### बाब 141 : जासूसी का बयान

और अल्लाह तआला ने सूरह मुस्तहिना में फ़र्माया कि, मुसलमानों! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ। लफ़्ज़े-जासूस तजस्सुस से निकला है या'नी किसी बात को खोदकर निकालना।

### ١٤١ - بَابُ الْجَاسُوسِ

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿لَا تَتَّخِذُوا غَدَوِيَّ  
وَعَدُوَكُمْ أَوْلِيَاءَ﴾ [الممتحنة ١] التَّجَسُّسُ  
التَّبَحُّثُ.

या'नी काफ़ि़रों के लिये जासूसी करना मना है जैसे हातिब ने की थी कि मुश्किों को मुसलमानों के आने की ख़बर दे दी, अल्बत्ता मुसलमानों की तरफ़ से जासूसी दुरुस्त है। आँहज़रत (ﷺ) ने एक शख्स को जासूस बनाकर भेजा था और जंग का काम बग़ैर जासूसी के चल ही नहीं सकता। सूरह मुस्तहिना की आयते मन्कूला से हज़रत इमाम बुखारी ने काफ़ि़रों की तरफ़ से जासूसी की मुमानअत निकाली, क्योंकि जासूस जिनका जासूस होता है उनका दोस्त होता है और उनको फ़ायदा पहुँचाता है। (वहीदी)

3007. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, सुफ़यान ने ये हदीस अम्र बिन दीनार से दो बार सुनी थी। उन्होंने बयान किया कि मुझे हसन बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अबी राफ़ेअ ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे और जुबैर और मित्रदाद बिन अस्वद (रज़ि.) को एक मुहिम पर भेजा और आपने फ़र्माया कि जब तुम लोग ख़ाख़ (जो मदीना से बारह मील के फ़ासले पर एक जगह का नाम है) पर पहुँच जाओ तो वहाँ एक बुढ़िया औरत तुम्हें कैंट पर सवार मिलेगी और उसके पास एक ख़त होगा, तुम लोग उससे वो ख़त ले लेना। हम खाना हुए और हमारे घोड़े हमें तेज़ी के साथ लिये जा रहे थे। आख़िर हम ख़ाख़ पर पहुँच गये और वहाँ वाक़ई एक बूढ़ी औरत मौजूद थी जो कैंट पर सवार थी। हमने उससे कहा कि ख़त निकाल। उसने कहा कि मेरे पास तो कोई ख़त नहीं। लेकिन जब हमने उसे धमकी दी कि अगर तूने ख़त न निकाला तो तुम्हारे कपड़े हम खुद उतार देंगे। इस पर उसने अपनी

٣٠٠٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ  
سَمِعْتُ مِنْهُ مَرَّتَيْنِ قَالَ : أَخْبَرَنِي حَسَنُ  
بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي  
رَافِعٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
يَقُولُ: ((بَغَيْثِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنَا وَالزُّبَيْرُ  
وَالْمِقْدَادُ بْنُ الْأَسْوَدِ وَقَالَ: ((انْطَلِقُوا  
حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَازٍ فَإِنَّ بِهَا طَعِينَةً  
وَمَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوهُ مِنْهَا)). فَانْطَلَقْنَا  
تُعَادِي بِنَا خَيْلَنَا، حَتَّى اتَّهَيْنَا إِلَى  
الرَّوْضَةِ، فَإِذَا نَحْنُ بِالطَّعِينَةِ، فَقُلْنَا:  
أَخْرِجِي الْكِتَابَ. فَقَالَتْ: مَا مَعِيَ مِنْ  
كِتَابٍ. فَقُلْنَا: لَنُخْرِجَنَّ الْكِتَابَ، أَوْ  
لَنُلْقِيَنَّ النَّيَابَ. فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ حَقَائِمِهَا،  
فَأَتَيْنَا بِهِ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَإِذَا فِيهِ مِنْ

गूँथी हुई चोटी के अंदर से खत निकाल कर दिया, और हम उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में लेकर हाज़िर हुए, उसका मज़मून ये था, हातिब बिन अबी बलत्ता की तरफ से मुश्किने मक्का के चन्द आदमियों की तरफ, उसमें उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ भेदों की खबर दी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ हातिब! ये क्या वाक़िया है? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे बारे में उज्जलत से काम न लीजिए। मेरी हैषियत (मक्का में) ये थी कि कुरैश के साथ मैंने रहना-सहना इख़्तियार कर लिया था, उनसे रिश्ता नाता मेरा कुछ भी न था। आपके साथ जो दूसरे मुहाजिरीन हैं उनकी तो मक्का में सबकी रिश्तेदारी है और मक्का वाले उसी वजह से उनके अज़ीज़ों की और उनके मालो की हिफ़ाज़त व हिमायत करेंगे मगर मक्का वालों के साथ मेरा कोई नसबी रिश्ता नहीं है, इसलिये मैंने सोचा कि उन पर कोई एहसान कर दूँ जिससे अघ़र लेकर वो मेरे भी अज़ीज़ों की मक्का में हिफ़ाज़त करें। मैंने ये काम कुफ़्र या इर्तिदाद की वजह से हर्गिज़ नहीं किया है और न इस्लाम के बाद कुफ़्र से ख़ुश होकर। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुनकर फ़र्माया कि हातिब ने सच कहा है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इज़ाज़त दीजिए मैं इस मुनाफ़िक़ का सर उड़ा दूँ, आपने फ़र्माया, नहीं, ये बद्र की लड़ाई में (मुसलमानों के साथ मिलकर) लड़े हैं और तुम्हें मा'लूम नहीं, अल्लाह तआला मुजाहिदीने बद्र के अहवाल (मौत तक के) पहले ही से जानता था, और वो ख़ुद ही फ़र्मा चुका है कि, तुम जो चाहो करो मैं तुम्हें मुआफ़ कर चुका हूँ। सुफ़यान बिन ड़ययना ने कहा कि हदीष की ये सनद भी कितनी ड़म्दा है। (दीगर मक़ाम: 3081, 3983, 4274, 4890, 6290, 6939)

خَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى أَنَسِ بْنِ  
الْمُسَرِّكَينَ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ  
أَمْرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:  
(يَا خَاطِبُ مَا هَذَا؟) قَالَ: يَا رَسُولَ  
اللَّهِ ﷺ لَا تَفْعَلْ عَلَيَّ، إِنِّي كُنْتُ أَمْرًا  
مُتَصِفًا لِي قُرَيْشِي، وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ،  
وَكَانَ مِنْ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ لَهُمْ  
قُرَابَاتٌ بِمَكَّةَ يَحْمُونَ بِهَا أَهْلِيهِمْ  
وَأَمْوَالَهُمْ فَأَحْبَبْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنَ  
النَّسَبِ فِيهِمْ أَنْ أَتَّخِذَ حِذْنَهُمْ. هَذَا  
يَحْمُونَ بِهَا قُرَائِي، وَمَا فَكَلْتُ كُفْرًا وَلَا  
ارْتِدَادًا وَلَا رِشًا بِالْكَفْرِ بَعْدَ الْإِسْلَامِ.  
فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَقَدْ صَدَقْتُمْ)).  
فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ،  
ذَغِي أَطْرِبُ عَنْكَ هَذَا الْمُبَاقِلُ؟ قَالَ:  
(إِنَّهُ قَدْ شَهِدَ بَنُو، وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللَّهَ  
أَنْ يَكُونَ قَدْ طَلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ:  
اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ)). قَالَ  
سُفْيَانُ: وَآيُ إِسْنَادٍ هَذَا.

إطرايه ن: ٣٠٨١، ٣٩٨٣، ٤٢٧٤.

٤٨٩٠، ٦٢٩٠، ٦٩٣٩.

**तशरीह:** मज़मून खत का ये था, अम्मा बअद! कुरैश के लोगों! तुमको मा'लूम रहे कि आँहज़रत (ﷺ) एक ज़रार लश्कर लिये हुए तुम्हारे सर पर आते हैं। अगर आप अकेले आएँ तो भी अल्लाह आपकी मदद करेगा और अपना वा'दा पूरा करेगा, अब तुम अपना बचाव कर लो, वस्सलाम!

हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़ानूने शरई और क़ानूने सियासत के मुताबिक़ राय दी कि जो कोई अपनी क़ौम या सल्तनत की ख़बर दुश्मनों को पहुँचाए वो सज़ा-ए-मौत के क़ाबिल है लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत हातिब (रज़ि.) की निय्यत में कोई फ़ितूर नहीं देखा और ये भी कि वो बद्री सहाबा में से थे जिनकी जुष्वी लज़ि़शों को अल्लाह तआला ने पहले ही मुआफ़ कर दिया है। इसलिये उनकी इस सियासी ग़लती को आँहज़रत (ﷺ) ने नज़रअंदाज़ करके और हज़रत उमर (रज़ि.) की राय को पसन्द नहीं फ़र्माया। मा'लूम हुआ कि ज़िम्मेदार लोगों के कुछ इफ़ि़रादी या इज्तिमाई मुआमलात ऐसे भी आ जाते हैं कि

उनमें सख्ततरीन गलती को भी नज़रअंदाज़ कर देना ज़रूरी हो जाता है। ये भी मा'लूम हुआ कि फ़त्वा देने से पहले मामले के हर एक पहलू पर नज़र डाल लेना ज़रूरी है। जो लोग बग़ैर ग़ौरो-फ़िक्र किये सरसरी तौर पर फ़त्वा दे देते हैं कुछ बार उनके ऐसे फ़त्वे बहुत से फ़सादात के अस्बाब बन जाते हैं। खाख़ मक्का और मदीना के बीच एक गांव का नाम था। इस हदीस से अहले बद्र की भी फ़ज़ीलत प्राबित हुई कि अल्लाह पाक ने उनकी जुम्ला लज़ि़शों को मुआफ़ फ़र्मा दिया है।

### बाब 142 : कैदियों को कपड़े पहनाना

3008. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने डययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि बद्र की लड़ाई से कैदी (मुशिकीने मक्का) लाये गये। जिनमें हज़रत अब्बास (रज़ि.) भी थे। उनके बदन पर कपड़े नहीं था। नबी करीम (ﷺ) ने उनके लिये क़मीस तलाश करवाई। (वो लम्बे क़द के थे) इसलिये अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) की क़मीस ही उनके बदन पर आ सकी और आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें वो क़मीस पहना दी। नबी करीम (ﷺ) ने (अब्दुल्लाह बिन उबई की मौत के बाद) अपनी क़मीस उतारकर उसे पहनाई थी। इब्ने डययना ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) पर जो उसका एहसान था, आँहज़रत (ﷺ) ने चाहा कि उसे अदा कर दें।

आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अब्बास (रज़ि.) को क़मीस पहनाई जो कि हालते कुफ़्र में आप (ﷺ) की कैद में थे। इसी से बाब का मक़सद प्राबित हुआ कि कैदी को नंगा रखने की बजाय उसे मुनासिब कपड़े पहनाने ज़रूरी हैं। कैदियों के साथ हर अख़लाक़ी और इंसानी बर्ताव करना ज़रूरी है। बाब का यही इशारा है। अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ के हालात तफ़सील से बयान हो चुके हैं, ये भी प्राबित हुआ कि एहसान का बदला एहसान से अदा करना ज़रूरी है।

### बाब 142 : उस शख़्स की फ़ज़ीलत जिसके हाथ पर कोई शख़्स इस्लाम लाए

जिसकी तबलीगी कोशिशों से कोई इंसान नेक रास्ते पर लग जाए या इस्लाम कुबूल कर ले, उसकी नेकी का क्या ठिकाना है, ये स़दक़-ए-जारीया है जिसका प्रवाब मरने के बाद भी जारी रहता है।

3009. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल क़ारी ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम मुस्लिमा इब्ने दीनार ने बयान किया, उन्हें सहल बिन सअद अंसारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़र्माया, कल मैं ऐसे शख़्स के हाथ में इस्लाम का झण्डा दूँगा जिसके हाथ

### ١٤٢ - بَابُ الْكِسْوَةِ لِلْأَسَارَى

٣٠٠٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عُمَرَ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا كَانَ يَوْمَ بَدْرٍ أَمَرَ أَبِي بَسَّارٍ وَأَيُّهُ بِالْقَبَاسِ وَلَمْ يَكُنْ عَلَيْهِ قُبُورٌ، فَظَنَرَ النَّبِيُّ ﷺ لَهُ قَمِيصًا، فَوَجَدُوا قَمِيصَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَدْرٍ عَلَيْهِ، فَكَسَاهُ النَّبِيُّ ﷺ بِهَا، فَلِذَلِكَ نَزَعَ النَّبِيُّ ﷺ قَمِيصَهُ الَّذِي الْبَسَهُ)). قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: كَانَتْ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ يَدٌ، فَأَحَبَّ أَنْ يُكَافِئَهُ.

### ١٤٣ - بَابُ فَضْلِ مَنْ اسْلَمَ عَلَى يَدَيْهِ رَجُلٌ

٣٠٠٩ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُحَمَّدٍ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْقَارِيِّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَهْلٌ رَضِيَ اللَّهُ

पर इस्लामी फ़तह हासिल होगी, जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और जिससे अल्लाह और उसके रसूल मुहब्बत रखते हैं। रातभर सब सहाबा के ज़हन में यही खयाल रहा कि देखिये कि किसे झण्डा मिलता है। जब सुबह हुई तो हर शख्स उम्मीदवार था, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि अली कहाँ है? अर्ज़ किया गया कि उनकी आँखों में दर्द हो गया है। आँहज़रत (ﷺ) ने अपना मुबारक थूक उनकी आँखों में लगा दिया। और उससे उन्हें सेहत हो गई, किसी क्रिस्म की भी तकलीफ़ बाकी न रही। फिर आप (ﷺ) ने उन्हीं को झण्डा अज़ा फ़र्माया। अली (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक न लड़ूँ जब तक ये हमारे जैसे या'नी मुसलमान न हो जाएँ। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें हिदायत दी कि यँही चला जा। जब उनकी सरहद में उतरो तो उन्हें इस्लाम की दा'वत देना और उन्हें बताना कि (इस्लाम के नाते) उन पर कौन कौनसे काम ज़रूरी हैं। अल्लाह की क्रसम! अगर तुम्हारे ज़रिये अल्लाह एक शख्स को भी मुसलमान कर दे तो ये तुम्हारे लिये सुख़ कैंटों से बेहतर है। (राजेअ: 2942)

عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرٍ: ((لَأُعْطِينَ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلًا يَفْتَحُ عَلَى يَدَيْهِ جِبُّ اللَّهِ وَرَسُولُهُ وَيُجِئُهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ)). فَابْتِ النَّاسُ لِيَلْتَهُمْ أَتَاهُمْ يُعْطِي، فَعَدُّوا كُلَّهُمْ يَرْجُوهُ، فَقَالَ: ((أَيُّنَ عَلِيٍّ؟)) فَقِيلَ: يَشْكِي عَيْنَيْهِ، فَبَصَقَ فِي عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ قِرَاءَةً لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ، فَأَغْطَاهُ، فَقَالَ: أَقَاتِلَهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا، فَقَالَ: ((انْفُذْ عَلَى رَسُولِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ، فَوَ اللَّهُ لَأَنْ يَهْدِيَ اللَّهُ بِكَ رَجُلًا خَيْرَ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ خُسْرُ الْعَمَلِ)).

[راجع: ٢٩٤٢]

**तशरीह:** आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को हिदायत फ़र्माई कि वो लड़ाई से पहले दुश्मनों को इस्लाम की तबलीग़ करें, उनको राहे हिदायत पेश करें और जहाँ तक मुम्किन हो लड़ाई की नौबत न आने दें। लड़ाई मुदाफ़िअत के लिये आखिरी तदबीर है। बग़ैर लड़ाई ही अगर कोई दुश्मन सुलह कर ले या इस्लाम कुबूल कर ले तो ये नेकी अल्लाह के नज़दीक बहुत ही ज़्यादा क़ीमत रखती है। इस हदीष से हज़रत अली (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई कि अल्लाह ने जंगे ख़ैबर की फ़तह उनके हाथ पर रखी थी।

बाब का तर्जुमा हदीष के अल्फ़ाज़, ख़ैरुल्लक़ मिन अंग्यकून लक़ हुमुर्नुअमि से निकलता है। सुबहानल्लाह! किसी शख्स को राह पर लाना और कुफ़्र से ईमान पर लगा देना कितना बड़ा अज़र रखता है। मुसलमानों को चाहिये कि वा'ज़ और ता'लीम और तल्कीन में ज़मक़ कोशिशें करते रहें क्योंकि ये पैग़म्बरों की मीरास है और चुप होकर बैठ जाना और जुबान और क़लम को रोक लेना आलिमों के लिये ग़ज़ब की बात है। हमारे ज़माने के मौलवी और मशाइख़ जो घरों में आराम से बैठकर चर्ब लुक्मों पर हाथ मारते हैं और ख़िलाफ़े शरअ काम देखकर चुप्पी इख़्तियार करते हैं और जाहिलों को नज़ीहत नहीं करते, उमरा और दुनियादारों की खुशामद में ग़र्क़ (डूबे हुए) हैं। ये पैग़म्बर (अलै.) के सामने क़यामत के दिन क्या जवाब देंगे। अल्लाह तआला ने जो इल्म व फ़ज़ल की दौलत अज़ा की उसका शुक्रिया यही है कि वा'ज़ व नज़ीहत में सरगम रहें और ता'लीम व तल्कीन को अपना वज़ीफ़ा बना लें। देहात के मुसलमानों को जो दीनी मसाइल और ए'तिकात से नावाक़िफ़ हैं, उनको वाक़िफ़ कराएँ और हर जगह दा'वते-इस्लाम पहुँचाएँ। अफ़सोस है कि नसारा तो अपना बात्रिल खयाल या'नी तप़लीष फैलाने के लिये हर गाँव हर बस्ती और रास्ते और मज्मआ में वा'ज़ कहते फिरें और मुसलमान सच्चे ए'तिकादात या'नी तौहीद पर होकर जुबान बन्द रखें और सच्चा दीन फैलाने में कोई कोशिश न करें। अगर सच्चे दीन के फैलाने में कोई मुसलीबत पेश आए तो उसको ऐन सज़ादत और बरक़त और कामयाबी समझना चाहिये। देखो हमारे पैग़म्बर (अलै.) ने दा'वते इस्लाम में क्या-क्या तकलीफ़ें झेली थीं। ज़ख्मी हुए सर फूटे, दाँत टूटा, गालियाँ खाई, या अल्लाह! तेरी राह में अगर हमको गालियाँ पड़ें तो वो इम्दा और



शीरीं लुकमों से ज्यादा हमको लज़ीज़ हैं। और तेरा सच्चा दीन फैलाने में अगर हम मारे जाएँ या पीटे जाएँ तो वो इन दुनियादारी बादशाहों की खिलअत और सरफराज़ी से कहीं ज्यादा बढ़कर है। या अल्लाह! मुसलमानों की आँखें खोल दे कि वो भी अपने प्यारे पैगम्बर का दीन फैलाने में हमतन कोशिश करें, गांव-गांव वा'ज़ कहते फिरें। दीन की किताबों और रिसाले छपवा छपवाकर मुफ्त तक्सीम करें, आमीन या रब्बल आलमीन। (वहीदी)

अल्हम्दुलिल्लाह! कच्छ-भुज के इस तब्लीगी दौर में जो यहाँ के 25 देहात में किया गया, बुखारी शरीफ मुतर्जम उर्दू के तीन सौ से ज्यादा पारे और नमाज़ की किताबें दो सौ और कई मुतफरिफ़ तब्लीगी रिसाले दो सौ से ज़ाईद ता'दाद में बज़ौर तहाइफ़ व तब्लीग़ तक्सीम किये गये, अल्लाह पाक कुबूल करे और तमाम हिस्सा लेने वाले हज़रत को उसकी बेहतर जज़ाएँ अता करे। किताबी तब्लीग़ आज के दौर में एक ठोस तब्लीग़ है जिसके नतीजे बहुत दूरगामी हो सकते हैं वबिल्लाहित तौफ़ीका

### बाब 144 : कैदियों को जंजीरों में बांधना

3010. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐसे लोगों पर अल्लाह को ता'ज़ुब होगा, जो जन्नत में दाख़िल होंगे हालाँकि दुनिया में अपने कुफ़ की वजह से वो बेड़ियों में थे।

लेकिन बाद में इस्लाम लाए और फ़ौरन ही शहीद हो गये।

या'नी अल्लाह ने उन लोगों पर ता'ज़ुब किया जो बहिश्त में दाख़िल होंगे और दुनिया में जंजीरों पहनते थे या'नी पहले लड़ाई में कैद होकर आए फिर खुशी से मुसलमान हो गये और बहिश्त पाई। इस हदीस से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कैदियों के लिये जंजीरों का पहनना घ्राबित फ़र्माया। अय अल्लज़ीन उसिरू फिलहर्बि व जाअ बिहिमुल्मुस्लिमून बिस्सलासिलि फअस्लमू औ अन्नहुमुल्मुस्लिमूनल्लज़ीन असारू फी अयदिल्कुफ़्फ़ारि मुसल्सलीन फयमूतून औ युक्तलून अला हाज़िहिलहालति फयहशुरून अलैहा व यदाखुलूनल्लज़न्नत कजा फिल्खैरिल्जारी इस इबारात का खुलासा मतलब वही है जो ऊपर बयान हुआ।

### बाब 145 : यहूद या नसारा मुसलमान हो जाएँ तो उनके प्रवाब का बयान

3011. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन हय्यि अबू हसन ने बयान किया, कहा कि मैंने शअबी से सुना, वो बयान करते थे कि मुझसे अबू बुर्दा ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद (अबू मूसा अशअरी रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तीन तरह के आदमी ऐसे हैं जिन्हें दोगुना प्रवाब मिलता है। अब्बल वो शख़्स जिसकी कोई लौण्डी हो, वो उसे ता'लीम दे और ता'लीम देने में अच्छा तरीक़ा इख़्तियार करे, उसे अदब सिखाए और उसमें अच्छे तरीक़े से काम ले, फिर उसे आज़ाद

### ۱۴۴ - بَابُ الْأَسَارَى فِي السَّلَاسِلِ

۳۰۱۰ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((عَجَبَ اللَّهُ مِنْ قَوْمٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ فِي السَّلَاسِلِ)).

### ۱۴۵ - بَابُ فَضْلِ مَنْ أَسْلَمَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابَيْنِ

۳۰۱۱ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ خَيْمٍ أَبُو حَسَنِ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ يَقُولُ: حَدَّثَنِي أَبُو بُرْدَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((ثَلَاثَةٌ يُؤْتُونَ آخَرَهُمْ مَرَّتَيْنِ: الرَّجُلُ تَكُونُ لَهُ الْأَمَةُ فَيُعَلِّمُهَا فَيُخْسِنُ تَعْلِيمَهَا، وَيُؤَدِّبُهَا

करके उससे शादी कर ले तो उसे दोहरा अज़्र मिलेगा। दूसरा वो मोमिन जो अहले किताब में से हो कि पहले (अपने नबी पर) ईमान लाया था, फिर नबी करीम (ﷺ) पर भी ईमान लाया तो उसे भी दोहरा अज़्र मिलेगा, तीसरा वो गुलाम जो अल्लाह तआला के हुक्म की भी अदायगी करता है और अपने आक्रा के साथ भी भलाई करता है। उसके बाद शअबी (हदीष के रावी) ने कहा कि मैंने तुम्हें ये हदीष बिना किसी मेहनत व मुशक़त के दे दी है। एक ज़माना वो भी था जब उससे भी कम हदीष के लिये मदीना मुनव्वरा तक का सफ़र करना पड़ता था। (राजेज़: 97)

فَيُحْسِنُ أَدَبَهَا، ثُمَّ يُعْطِيهَا فَتَزَوَّجُهَا، فَلَهُ أَجْرَانِ. وَمُؤْمِنٌ أَهْلُ الْكِتَابِ الَّذِي كَانَ مُؤْمِنًا ثُمَّ آمَنَ بِالنَّبِيِّ ﷺ، فَلَهُ أَجْرَانِ. وَالْعَبْدُ الَّذِي يُؤَدِّي حَقَّ اللَّهِ وَتَنْصَحُ لِسَيِّدِهِ لَهُ. ثُمَّ قَالَ الشَّعْبِيُّ: وَأَعْطَيْتُكَهَا بِغَيْرِ شَيْءٍ، وَقَدْ كَانَ الرَّجُلُ يُوَحِّلُ فِي أَهْوَاؤِهَا إِلَى الْمَدِينَةِ.

[راجع: ٩٧]

मक़सद इमाम बुखारी (रह.) का यह है कि जंग से पहले यहूद व नज़ारा को इस्लाम की दा'वत दी जाए और उनको ये बशारत भी पेश की जाए कि वो इस्लाम कुबूल कर लेंगे तो उनको दोगुना प़वाब मिलेगा। या'नी पहले नबी पर ईमान लाना और फिर इस्लाम कुबूल कर लेना, ये दोगुने प़वाब का मौजिब होगा। बहरसूरत लड़ाई न हो तो बेहतर है।

**बाब 142 : अगर (लड़ने वाले) काफ़िरों पर रात को छापा मारें और बग़ैर इरादे के औरतें और बच्चे भी ज़ख़मी हो जाएँ तो फिर कुछ**

١٤٦- بَابُ أَهْلِ الدَّارِ يَبْتَغُونَ

فِيصَابِ الْوِلْدَانِ وَالذَّرَارِيِّ

﴿يَمَانًا﴾ [الأعراف: ٤، ٩٧، يونس:

٥]: لَيْلًا. ﴿لَيْلًا﴾ [النمل: ٤٩]: لَيْلًا

﴿وَبَيْتًا﴾ [النساء: ٨١]: لَيْلًا.

क्रबाहत नहीं है कुआन मजीद की सूरह अज़राफ़ में लफ़ज़ बयातन और सूरह नमल में लफ़ज़ लनुबय्यित ब्रहु और सूरह निसा में लफ़ज़ यबीतु आया है। इन सब लफ़ज़ों का वही माहा है जो यबीतून का है। मुराद सबसे रात का वक़्त है।

यबीतून बाब की हदीष में है, हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की आदत है कि जब कोई लफ़ज़ ऐसा हदीष में आता है जिसके मुशतक्रकात या मवाद कुआन मजीद में भी हों तो कुआन शरीफ़ के लफ़ज़ों की भी तफ़सीर कर देते हैं। उनकी राज़ ये है कि जो आदमी सहीह बुखारी समझकर पढ़े वो कुआन के अल्फ़ाज़ भी बख़ूबी समझ ले। रिवायत में मज़क़ूरा अब्बा नामी जगह मदीना से 23 मील की दूरी पर और वदान अब्बाअ से आगे आठ मील की दूरी पर है।

3012. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने और उनसे स़अब बिन ज़षामा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मक़ामे अब्बा या वदान में मेरे पास से गुज़रे तो आपसे पूछा गया कि मुशरिकीन के जिस क़बीले पर शब ख़ून मारा जाएगा क्या उनकी औरतों और बच्चों को भी क़त्ल करना दुरुस्त होगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो भी

٣٠١٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا

سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ

ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ الصَّغْبِيِّ بْنِ جُنَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُمْ قَالَ: مَرَّ بِالنَّبِيِّ ﷺ بِالْأَنْبَاءِ - أَوْ بِوَدَانَ

- وَسُئِلَ عَنْ أَهْلِ الدَّارِ يَبْتَغُونَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

فِيصَابٍ مِنْ نِسَائِهِمْ وَذُرَارِيهِمْ، قَالَ: ((هُمْ

उन्हीं में से हैं और मैंने आप (ﷺ) से सुना कि आप फ़र्मा रहे थे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के सिवा और किसी की चरागाह नहीं है।

مِنْهُمْ)). وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((لَا حِمَى إِلَّا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ ﷺ)).

3013. (साबिक़ा सनद के साथ) जुहरी से रिवायत है कि उन्होंने अबैदुल्लाह से सुना बवास्ता इब्ने अब्बास (रज़ि.) और उनसे सअब (रज़ि.) ने बयान किया, और सिर्फ़ ज़रारी (बच्चों) का ज़िक्र किया, सुफियान ने कहा कि अमर हमसे हदीष बयान करते थे। उनसे इब्ने शिहाब, नबी अक़रम (ﷺ) से, (सुफियान ने) बयान किया कि फिर हमने हदीष खुद जुहरी (इब्ने शिहाब) से सुनी। उन्होंने बयान किया कि मुझे अबैदुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने और उन्हें सअब (रज़ि.) ने कि औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, (मुश्किन की औरतों और बच्चों के बारे में कि) वो भी उन्हीं में से हैं। (जुहरी के वास्ते से) जिस तरह अमर ने बयान किया था कि (हुम मिन आबाइहिम) वो भी उन्हीं के बाप-दादों की नस्ल हैं। जुहरी ने खुद हमसे इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान नहीं किया (या'नी हुम मिन आबाइहिम नहीं कहा बल्कि हुम मिन्हुम कहा)। (राजेअ : 237)

٣٠١٣- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا الصُّغْبُ فِي الذَّرَائِرِ. كَانَ عَمْرُو يُحَدِّثُنَا عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَمِعْنَاهُ مِنَ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((عَنِ الصُّغْبِ قَالَ: هُمْ مِنْهُمْ، وَلَمْ يَقُلْ كَمَا قَالَ عَمْرُو: هُمْ مِنْ آبَائِهِمْ)).

[راجع: ٢٣٧]

**तशरीह:** इस्लाम का हुक्म ये है कि लड़ाई में औरतों बच्चों या बूढ़ों को कोई तकलीफ़ न पहुँचाई जाए। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) यहाँ ये बताना चाहते हैं कि अगर रात के वक़्त मुसलमान उन पर हमलावर हों तो ज़ाहिर है कि अंधेरे में औरतों बच्चों की तमीज़ मुश्किल हो जाएगी। अब अगर ये क़त्ल हो जाते हैं तो ये कोई गुनाह नहीं होगा। शरीअत का मक़सद सिर्फ़ ये है कि क़स्दन और इरादा करके औरतों और बच्चों का या लड़ाई वग़ैरह से आजिज़ बूढ़ों को लड़ाई में कोई तकलीफ़ न पहुँचाई जाए और न उन्हें क़त्ल किया जाए लेकिन अगर मजबूरी की हालत हो तो ज़ाहिर है कि इसके बग़ैर कोई चारा नहीं।

चरागाह के बारे में अरबों का क़ायदा था, कहीं आबाद और सर-सब्ज़ जंगल में पहुँचते तो कुत्ते को इशारा करते वो भौंकता जहाँ तक उसके भौंकने की आवाज़ जाती वो जंगल बग़ैर चरागाह अपने लिये महफूज़ कर लेते, कोई दूसरा उसमें न चरा सकता। औहज़रत (ﷺ) ने ये तरीका, जो सरासर जुल्म है मौकूफ़ (रद्द) किया और फ़र्माया कि महफूज़ चरागाह (संरक्षित क्षेत्र) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) का हो सकता है। और इमाम या हाकिम भी रसूल का क़ायमे-मुक़ाम है, दूसरे लोग कोई चरागाह महफूज़ नहीं कर सकते, ये इस्लामी अहद की बात है। आजकल हुकूमतें चरागाहों के लिये खुद क़िदआत छोड़ देती हैं जो आम पब्लिक के लिये होती हैं कि वो उनमें मुक़रर टैक्स अदा करके अपने जानवरों को चराते हैं। इस्लाम की ये अहम ख़ूबी है कि उसने तमदुनी, मआशरती, इक़तिसादी, सियासी ज़िन्दगी का एक मुकम्मलतरीन ज़ाब्त-ए-हयात पेश किया है। दीने कामिल की यही शान थी। सच है, व मय्यब्तिग़ गैरल्इस्लामि दीनन फलव्युक्बल मिन्हु व हुव फिलआखिरति मिन ख़ासिरीन (आले इमरान : 85) सदक़ल्लाहु तबारक व तआला (आले इमरान : 85) सदक़ल्लाहु तबारक व तआला)

कालन्नववी अत्फालुहुम फीमा यतअल्लकू बिलआखिरति फीहिम षलाष मज़ाहिब क़ाललअक्बरून हुम फिन्नार तबउन लिआबाइहिम व तवक्कफु ताइफतुन वप्प़ालिषु व हुवस्सहीहु अन्नहुम मिन अहलिलजन्नति कालहुल्किर्मांनी. (नववी)

या'नी मुश्किनी के बच्चों के बारे में अक़्बर इलमा का ख़याल है कि अपने वालिदेन के ताबेअ होने की वजह से दोज़खी हैं। एक जमाअत उसमें तवक्कुफ़ करती है और तीसरा मज़हब ये है कि वो जन्नती हैं और यही सहीह है (वलाहु अलाम)

### बाब 147 : जंग में बच्चों का क़त्ल करना कैसा है?

3014. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमको लैष ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) के एक ग़ज़वा (ग़ज़व-ए-फ़तह) में एक औरत मक्त्तूल पाई गई तो आँहज़रत (ﷺ) ने औरतों और बच्चों के क़त्ल पर इंकार का इज़हार फ़र्माया। (दीगर मक़ाम: 3015)

### ١٤٧- بَابُ قَتْلِ الصِّبْيَانِ فِي الْحَرْبِ

٣٠١٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ عِنْدَ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ امْرَأَةً وَجَدَتْ فِي بَعْضِ مَغَازِي النَّبِيِّ ﷺ مَقْتُولَةً فَأَتَتْهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَتَلَ النِّسَاءَ وَالصِّبْيَانَ)).

[طرفه في: ٣٠١٥]

जंग में क़स्दन (जान-बूझकर) औरतों और बच्चों का मारना इस्लाम में नापसन्दीदा काम है। सुद अफ़सोस कि ये नोट ऐसे वक़्त (1971) में लिख रहा हूँ कि मुल्क बंगाल मश्किनी पाकिस्तान में खुद मुसलमान के हाथों मुसलमान मर्द, औरत, बच्चे बकरियों की तरह ज़िबह किये जा रहे हैं। बंगालियों और बिहारियों और पंजाबियों के नामों पर मुसलमान अपने ही हाथों से अपने इस्लामी भाइयों की ख़ूँजी कर रहे हैं।

### बाब 148 : जंग में औरतों का क़त्ल करना कैसा है?

3015. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा, क्या इब्बदुल्लाह ने आपसे ये हदीष बयान की है कि उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि एक औरत रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में किसी ग़ज़वे में मक्त्तूल पाई गई तो नबी करीम (ﷺ) ने औरतों और बच्चों के क़त्ल से मना फ़र्माया (तो उन्होंने उसका इक़रार किया)। (दीगर मक़ाम: 3015)

### ١٤٨- بَابُ قَتْلِ النِّسَاءِ فِي الْحَرْبِ

٣٠١٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي أَسَمَةَ: حَدَّثَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((وَجَدْتُ امْرَأَةً مَقْتُولَةً فِي بَعْضِ مَغَازِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَتَنَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ قَتْلِ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ)). [راجع: ٣٠١٥]

अबू उसामा का ये जवाब इमाम बुखारी (रह.) की रिवायत में मज़्कूर नहीं है लेकिन इस्हाक़ बिन राहवै ने अपनी मुस्नद में ये हदीष निकाली उसमें साफ़ मज़्कूर है कि अबू उसामा ने इक़रार किया, हाँ! (वहीदी)

### बाब 149 : अल्लाह के अज़ाब (आग) से किसी को अज़ाब न करना

3016. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे बुकैर ने, उनसे सुलैमान बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें एक मुहिम पर ख़ाना किया और ये हिदायत की कि अगर तुम्हें फ़लाँ और फ़लाँ मिल जाएँ तो उन्हें आग में जला देना, फिर जब

### ١٤٩- بَابُ لَا يُعَذَّبُ بِعَذَابِ اللَّهِ

٣٠١٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي بَعْثٍ فَقَالَ: ((إِنْ وَجَدْتُمْ

हमने खानगी का इरादा किया तो अहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें हुक्म दिया था कि फ़लों और फ़लों को जला देना। लेकिन आग एक ऐसी चीज़ है जिसकी सज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआला ही दे सकता है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिलें तो उन्हें क़त्ल करना (आग में न जलाना)। (राजेअ : 2954)

فَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا جَاءَ بِالنَّارِ. ثُمَّ قَالَتْ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ جِئْنَا أَرْضَنَا الْخُرُوجَ: ((إِنِّي  
أَمَرْتُكُمْ أَنْ تَحْرِقُوا فَلَا تَأْكُلُوا، وَإِنَّ النَّارَ  
لَا يُعَذِّبُ بِهَا إِلَّا اللَّهُ، فَإِنْ وَجَدْتُمُوهَا  
فَاتَّقُواهَا)). [راجع : ٢٩٥٤]

**तशरीह :** कुछ सहाबा (रज़ि.) ने उसको मुत्लक़न मना जाना है गो बतौर किसान के हो, कुछ ने जाइज़ रखा है जैसे हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से मन्कूल है। मुहल्लिब ने कहा कि ये मुमानअत तहरीमो नहीं, बल्कि बतौर तवाज़ाअ के है। हमारे ज़माने में तो आलाते हर्ब तोप और बन्दूक और डायनामाइट, मिसाइल वगैरह सब अंगार हैं और चूँकि काफ़िरों ने उनका इस्तेमाल शुरू कर दिया है, लिहाज़ा मुसलमानों को भी उनका इस्तेमाल दुरुस्त है। (वहीदी)

मुतर्जिम के ख़्याले-नाकिस्स में उन जदीद हथियारों का इस्तेमाल अम्मे दीगर है और मुत्लक़ आग में जलाना अम्मे दीगर है जिसे शरअन व अख़लाक़न पसन्द नहीं किया जा सकता।

3017. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इकिमा ने कि अली (रज़ि.) ने एक क़ौम को (जो अब्दुल्लाह बिन सबा की पैरोकार थी और हज़रत अली रज़ि. को अपना ख़ुदा कहती थी) जला दिया था। जब ये ख़बर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) को मिली तो आपने कहा कि अगर मैं होता तो कभी उन्हें न जलाता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि अल्लाह के अज़ाब की सज़ा किसी को न दो, अल्बत्ता मैं उन्हें क़त्ल ज़रूर करता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है जो शख़्स अपना दीन तब्दील कर दे उसे क़त्ल कर दो। (दीगर मक़ाम : 6922)

٣٠١٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا  
سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ عَلِيًّا  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَرَّقَ قَوْمًا، قَبَّلَ ابْنُ  
عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ آتَا لَمْ أَحْرِقْهُمْ،  
لَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَا تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ  
اللَّهِ))، وَلَقَوْلُهُمْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:  
((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)).

[طرفه بي : ٦٩٢٢]

ये लोग सबाइया थे। अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी के ताबेदार जो मुसलमानों को ख़राब कर डालने के लिये बज़ाहिर मुसलमान हो गया था और अंदर से काफ़िर था। उस मर्द ने अपने ताबेदारों को ये तालीम दी कि हज़रत अली (रज़ि.) मज़ाज़ अल्लाह आदमी नहीं हैं बल्कि वो खुद अल्लाह हैं। कुछ कहते हैं कि ये बुतों की परस्तिश करते थे। राफ़ज़ियों में एक फ़िक़्री नसीरी है जो हज़रत अली (रज़ि.) को खुदा-ए-बुजुर्ग और इमाम जाफ़र सादिक को खुदा-ए-ख़ौरिद कहता है, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह. (वहीदी)

**बाब 150 : (अल्लाह तआला का सूरह मुहम्मद में ये फ़र्माना) कि क़ैदियों को मुफ़्त एहसान रखकर छोड़ दो या फ़िदया लेकर**

इस बाब में प्रमामा की हदीस है और अल्लाह तआला का इशार्द कि, नबी के लिये मुनासिब नहीं कि क़ैदी अपने पास रखे, जब तक काफ़िरों का ख़ूब सत्यानास न कर दे।

١٥٠- بَابُ ﴿فِيمَا مِمَّا بَعْدُ وَإِنَّمَا﴾

فَدَاءُ ﴿[محمد : ٤]

فِيهِ حَدِيثُ ثُمَامَةَ. وَقَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مَا كَانَ لِإِبْنِي أَنْ تَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُفْعَلَ فِي الْأَرْضِ - حَتَّى يَغْلِبَ فِي الْأَرْضِ -

पूरी आयत यूँ है, जब तुम काफ़ि़रों को ख़ूब क़त्ल कर चुको (उनका ज़ोर तोड़ दो) अब कैदियों के बाबत तुमको इख़्तियार है ख़्वाह एहसान रखकर छोड़ दो ख़्वाह फ़िदया लेकर। कुछ सलफ़ कहते हैं कि ये आयत मन्सूख है इस आयत से फ़क्तु लुलमुशिरकीन हैषु वजतुमहुम और अक़षर ये कहते हैं कि मन्सूख नहीं है। अब उनमें कुछ यूँ कहते हैं कि कैदियों का क़त्ल करना दुस्स्त नहीं या मुफ़्त छोड़ दिये जाएँ या फ़िदया लेकर छोड़ दे या मुफ़्त एहसान रखकर छोड़ दे। (वहीदी)

यकूलुलजुम्हूरु फी उसारल्कफरति मिरिजालि इलल्इमामि यफ़अलु मा हुवलअहफज़ लिलइस्लामि वल्मुस्लिमीन. (फ़तह) या'नी काफ़िर कैदियों के बारे में इमाम जिसमें इस्लाम और मुसलमानों का फ़ायदा देखे वो काम करे। जुम्हूर का यही क़ौल है। बुमामा की हदीष को हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कई जगह नक़ल किया है, उसने आँहज़रत (ﷺ) से अज़्र किया था कि आप मुझको मार डालेंगे तो मेरे ख़ून का बदला दूसरे लोग लेंगे। अगर एहसान रखकर छोड़ देंगे तो मैं शुक्रगुज़ार रहूँगा। अगर आप रुपया चाहते हैं तो जितना दरकार हो हाज़िर है, आँहज़रत (ﷺ) ने बुमामा के बयान पर सुकूत फ़र्माया, तो मा'लूम हुआ कि कैदी का क़त्ल भी दुस्स्त है मगर बाद में बुमामा मुसलमान हो गए थे।

**बाब 151 : अगर कोई मुसलमान काफ़िर की कैद में हो तो**

उसका ख़ून करना या काफ़ि़रों से दगा और फ़रेब करके अपने तई छुड़ा लेना जाइज़ है। इस बाब में मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) की हदीष है आँहज़रत (ﷺ) से।

**बाब 152 : अगर कोई मुश्रिक किसी मुसलमान को आग से जलावे तो क्या उसे भी बदले में जलाया जा सकता है?**

3018. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुइयतयानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि क़बीला इकल के आठ आदमियों की जमाअत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (इस्लाम कुबूल करने को) हाज़िर हुई लेकिन मदीना की आबो-हवा उन्हें मुवाफ़ि़क़ नहीं आई, उन्होंने अज़्र किया कि या रसूलल्लाह! हमारे लिये (कैंट के) दूध का इंतज़ाम कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारे लिये दूध नहीं दे सकता, तुम (सदका के) कैंटों में चले जाओ। उनका दूध और पेशाब पीयो, ताकि तुम्हारी स्नेहत ठीक हो जाए। वो लोग वहाँ चले गये और उनका दूध और पेशाब पीकर तन्दुरुस्त हो गये तो चरवाहे को क़त्ल कर दिया, और कैंटों को अपने साथ लेकर भाग निकले और इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र किया, एक शख्स ने उसकी ख़बर आँहज़रत (ﷺ) को दी, तो आप (ﷺ) ने उनकी तलाश के लिये

١٥١- بَابُ مَنْ لِّلْأَسِيرِ أَنْ يَقْتَلَ وَيَخَذَعَ الَّذِينَ أَسْرَوْهُ حَتَّى يَنْجُو مِنْ

الْكُفْرَةِ؟ فِيهِ الْمَسْنُورُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٥٢- بَابُ إِذَا حَرَّقَ الْمُشْرِكُ

الْمُسْلِمَ هَلْ يُحَرَّقُ؟

٣٠١٨- حَدَّثَنَا مُغَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا

وَهَبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قَلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ

بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَهْطًا مِنْ

عُكْلٍ ثَمَانِيَةٍ قَدِمُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاجْتَفَوْا الْمَدِينَةَ، فَقَالُوا: يَا

رَسُولَ اللَّهِ أَهْبَأْ رِسْلًا، قَالَ: ((مَا أَجِدُ

لَكُمْ إِلَّا أَنْ تَلْحَقُوا بِالذُّودِ))، فَانْطَلَقُوا

فَشَرِبُوا مِنْ آبِائِهَا وَأَلْبَانِهَا حَتَّى صَحُّوا

وَسَمِنُوا، وَقَتَلُوا الرَّاعِيَ وَاسْتَقْتُوا الذُّودَ،

وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ. فَاتَى الصَّرِيحُ

النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَبَعَثَ

सवार दौड़ाए, दोपहर से भी पहले वो पकड़कर लाये गये। उनके हाथ-पांव काट दिये गये। फिर आपके हुक्म से उनकी आँखों में सिलाई गर्म करके फेर दी गई और उन्हें हरह (मदीना की पथरीली ज़मीन) में डाल दिया गया। वो पानी मांगते थे लेकिन उन्हें नहीं दिया गया। यहाँ तक कि वो सब मर गये। (ऐसा ही उन्होंने कैदों के चराने वालों के साथ किया था, जिसका बदला उन्हें दिया गया) अबू क़िलाबा ने कहा कि उन्होंने क़त्ल किया था, चोरी की थी अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के साथ जंग की थी और ज़मीन में फ़साद बरपा करने की कोशिश की थी। (राजेअ: 233)

الطَّلَبُ، فَمَا تَرَ جُلَّ النَّهَارِ حَتَّى أَتَى بِهِمْ  
فَقَطَّعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ ثُمَّ أَمَرَ بِمَسَامِيرَ  
فَأَخْمِيَتْ فَكَحَلَهُمْ بِهَا وَطَرَحَهُمْ بِالْحَرَّةِ  
يَسْتَسْقُونَ فَمَا يُسْقَوْنَ حَتَّى مَاتُوا. قَالَ  
أَبُو قِلَابَةَ: قَتَلُوا وَسَرَقُوا وَحَارَبُوا اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ وَسَفَّوْا فِي الْأَرْضِ فَسَادًا.

[راجع: ٢٣٣]

**तस्बीह:** तो ऐसे बेईमान, शरीर, पाजियों, नमक हुरामों को सख्त सज़ा देना ही चाहिये ताकि दूसरे लोगों को इबरत हो और अल्लाह के बन्दे उनके जुल्मों से महफूज़ रहें। इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमे से मुश्किल है क्योंकि उसमें गर्म गर्म सिलाईयाँ आँखों में फेरने का ज़िक्र है जो आग है मगर ये कहाँ मज़कूर है कि उन्होंने भी मुसलमानों को आग से अज़ाब दिया था। और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ इस हदीष के दूसरे तरिक की तरफ़ इशारा किया है जिसको तैमी ने रिवायत किया। उसमें ये है कि उन लोगों ने भी मुसलमान चरवाहों के साथ ऐसा ही सुलूक किया था। (वहीदी)

### बाब 153 :

### باب ١٥٣

3019. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमान ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि एक चींटी ने एक नबी (अज़ीज़ या मूसा अलैहिस्सलाम) को काट लिया था। तो उनके हुक्म से चींटियों के सारे घर जला दिये गये। इस पर अल्लाह तआला ने उनके पास वहा भेजी कि अगर तुम्हें एक चींटी ने काट लिया था तो तुमने एक ऐसी ख़िल्कत को जलाकर खाक कर दिया जो अल्लाह की तस्बीह बयान करती थी। (दीगर मक़ाम: 3319)

٣٠١٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا  
اللَيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ  
سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((قَرَضَتْ نَمْلَةٌ  
نَبِيًّا مِنَ الْأَنْبِيَاءِ، فَأَمَرَ بِقَرْنَيْهِ النَّمْلِ  
فَأُخْرِقَتْ، فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ أَنْ قَرَضَتْكَ  
نَمْلَةٌ أَخْرَقْتَ أُمَّةً مِنَ الْأُمَمِ تُسَبِّحُ اللَّهَ)).

[طوله في: ٣٣١٩]

कहते हैं कि ये पैगम्बर एक ऐसी बस्ती पर से गुज़रे जिसको अल्लाह पाक ने बिलकुल तबाह कर दिया था। उन्होंने अज़ा किया परवरदिगार! इस बस्ती में तो क़सूर बे क़सूर हर तरह के लोग, लड़के, बच्चे, जानवर सब ही थे, तूने सबको हलाक कर दिया। फिर एक पेड़ के तले उतरे, एक चींटी ने उनको काट लिया, उन्होंने गुस्सा होकर चींटियों का सारा बिल जला दिया। तब अल्लाह तआला ने उनके मज़रूज़ा का जवाब अदा किया कि तूने क्यूँ बेकुसूर चींटियों को हलाक कर दिया। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से ये निकाला कि आग से अज़ाब करना दुरुस्त है, जैसे उन पैगम्बर ने किया। क़स्तलानी ने कहा इस हदीष से दलील

ली उसने जो मूजी जानवर का जलाना जाइज समझता है और हमारी शरीअत में चींटी और शहद की मक्खी को मार डालने से मुमानअत है। (वहीदी)

### बाब 154 : (हर्बी काफ़िरी के) घरों और बागों को जलाना

3020. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या कज़ान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा कि मुझसे जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जुलहुलैफ़ा को (बर्बाद करके) मुझे राहत क्यूँ नहीं दे देतो। ये जुलहुलैफ़ा क़बीला ख़फ़्रम का एक बुतख़ाना था और उसे क़अबतुल यमानिया कहते थे। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं क़बीला अहमस के एक सौ पचास सवारों को लेकर चला। ये सब हज़रात बड़े अच्छे घुड़सवार थे। लेकिन मैं घोड़े की सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता था। आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सीने पर (अपने हाथ से) मारा, मैंने अंगुश्ट हाथे-मुबारक का निशान अपने सीने पर देखा। फ़र्माया ऐ अल्लाह! घोड़े की पुशत पर इसे प्रबात अता फ़र्मा, और उसे दूसरों को हिदायत की राह दिखाने वाला और खुद हिदायत पाया हुआ बना, उसके बाद जरीर (रज़ि.) ख़वाना हुए, और जुलहुलैफ़ा की इमारत को गिराकर उसमें आग लगा दी। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) को उसकी ख़बर भिजवाई। जरीर (रज़ि.) के क़ासिद (अबू अरज़ात हुसैन बिन रबीआ) ने ख़िदमत नबवी में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम! जिसने आप (ﷺ) को हज़्र के साथ मब़रूज़ किया है। मैं उस वक़्त तक आपकी ख़िदमत में हाज़िर नहीं हुआ, जब तक हमने जुलहुलैफ़ा को एक ख़ाली पेट वाले ऊँट की तरह नहीं बना दिया, या (उन्होंने कहा) ख़ारिश वाले ऊँट की तरह (पुराद वीरानी से है) जरीर (रज़ि.) ने बयान किया कि ये सुनकर आप (ﷺ) ने क़बीला अहमस के सवारों और क़बीला के तमाम लोगों के लिये पाँच बार बरकतों की दुआ फ़र्माई। (दीगर मक़ाम : 3036, 3076, 3823, 4355, 4356, 4357, 6089, 6333)

**तफ़्सीह :**

जुलहुलैफ़ा नामी बुत हर्बी काफ़िरी का मंदिर था, जहाँ वो जमा होते, और इस्लाम की न सिर्फ़ तौहीन करते बल्कि इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने की मुशतलिफ़ तदबीरें सोचा करते थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उसे ख़त्म कराकर एक फ़साद के मर्कज़ को ख़त्म करा दिया ताकि आम मुसलमान सुकून हासिल कर सकें। ज़िम्मी काफ़िरी के इबादत ख़ाने मुसलमानों की हिफ़ाज़त में आ जाते हैं। लिहाज़ा उनके लिये हर दौर में इस्लामी सरबराहों ने बड़े-बड़े औकाफ़ मुक़र्रर

١٥٤- بَابُ حَرْقِ الدُّوْرِ وَالنَّخِيلِ

٣٠٢٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ أَبِي

حَازِمٍ قَالَ: قَالَ لِي جَرِيرٌ قَالَ لِي رَسُولُ

اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَا تُرِيدُنِي

مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ)) - وَكَانَ بَيْنَا فِي خَنْعَمٍ

يُسَمَّى كَعْبَةَ الْيَمَانِيَّةِ - قَالَ فَانْطَلَقْتُ فِي

خَمْسِينَ وَمِائَةِ فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ وَكَانُوا

أَصْحَابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لَا أَتُبْتُ عَلَى

النَّخِيلِ، فَضَرَبَ فِي صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ

أَثَرَ أَصَابِعِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ

كَيْفَهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًا)). فَانْطَلَقَ إِلَيْهَا

فَكَسَرَهَا وَخَرَقَهَا. ثُمَّ بَعَثَ إِلَيَّ رَسُولُ

لِللَّهِ ﷺ يُخْبِرُهُ فَقَالَ رَسُولُ جَرِيرٍ: وَاللَّيْلِ

بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرْكُتَهَا كَأَنَّهَا

جَمَلٌ أَخْوَفُ أَوْ أَجْرَبُ. قَالَ ((فَبَارَكَ فِي

خَيْلِ أَحْمَسَ وَرَجَالِهَا خَمْسَ مَرَّاتٍ)).

[أطرافه في: ٣٠٣٦، ٣٠٧٦، ٣٨٢٣،

٤٣٥٥، ٤٣٥٦، ٤٣٥٧، ٦٠٨٩،

٦٣٣٣.]



किये हैं और उनकी हिफाज़त को अपना फ़र्ज़ समझा है जैसा कि इतिहास गवाह है। बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है।

3021. हमसे मुहम्मद बिन क़बीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उययना ने ख़बर दी, उन्हें मूसा बिन इक्बान ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (यहूद) बनू नज़ीर के खज़ूर के बाग़ात जलवा दिये थे। (राजेअ: 2326)

۳۰۲۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَبِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((حَرَقَ النَّبِيُّ ﷺ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ)).

[راجع: ۲۳۲۶]

हालाते जंग मुख्तलिफ़ होते हैं। कुछ दफ़ा जंगी ज़रूरियात के तहत दुश्मनों के खेतों और बाग़ात को भी जलाना पड़ता है। वरना वैसे आम हालात में खेतों और बाग़ों को जलाना बेहतर नहीं है।

बाब 155 : (हबी) मुश्रिक सो रहा हो तो उसका मार डालना दुरुस्त है

۱۵۵- بَابُ قَتْلِ النَّائِمِ الْمُشْرِكِ

ये जब है कि उसको दा'वते इस्लाम पहुँच चुकी हो और वो कुफ़्र व शिर्क पर अड़ा रहे या उसके इमान लाने से मायूसी हो चुकी हो जैसे अबू राफ़ेअ यहूदी था, जो क़अब बिन अशरफ़ की तरह नबी (ﷺ) को सताता था, आपकी हिज्व करता और मुश्रिकीन को आपसे लड़ने के लिये उभारा करता।

3022. हमसे अली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार के चन्द आदमियों को अबू राफ़ेअ (यहूदी) को क़त्ल करने के लिये भेजा, उनमें से एक साहब (अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि.) आगे चलकर उसके क़िले के अंदर दाख़िल हो गये। उन्होंने बयान किया कि अंदर जाने के बाद मैं उस मकान में घुस गया, जहाँ उनके जानवर बँधा करते थे। बयान किया कि उन्होंने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया, लेकिन इत्तिफ़ाक़ कि उनका एक गधा उनके मवेशियों में से गुम था। इसलिये वो उसे तलाश करने के लिये बाहर निकले। (इस ख़याल से कि कहीं पकड़ान जाऊँ) निकलने वालों के साथ मैं भी बाहर आ गया, ताकि उन पर ये ज़ाहिर कर दूँ कि मैं भी तलाश करने वालों में शामिल हूँ, आख़िर गधा उन्हें मिल गया, और वो फिर अंदर आ गये। मैं भी उनके साथ अंदर आ गया और उन्होंने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया, रात का वक़्त था, कुंजियो का गुच्छा उन्होंने एक ऐसे त़ाक़ में रखा, जिसे मैंने देख लिया था। जब वो सब सो गये तो मैंने चाबियों का गुच्छा उठाया

۳۰۲۲- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْوَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَهْطًا مِنَ الْأَنْصَارِ إِلَى أَبِي رَافِعٍ لِيَقْتُلُوهُ، فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَدَخَلَ حِصْنَهُمْ، قَالَ: فَدَخَلْتُ فِي مَرْتَبِ ذَوَابِّ لَهُمْ، قَالَ: وَأَغْلَقُوا بَابَ الْحِصْنِ، ثُمَّ إِنَّهُمْ فَقَدُوا حِمَارًا لَهُمْ فَخَرَجُوا يَطْلُبُونَهُ، فَخَرَجْتُ مِنْ خَرَجِ أَرَبِهِمْ أَنِّي أطلبُهُ مَعَهُمْ، فَوَجَدُوا الْحِمَارَ، فَدَخَلُوا وَدَخَلْتُ، وَأَغْلَقُوا بَابَ الْحِصْنِ لَيْلًا، فَوَضَعُوا الْمَفَاتِيحَ فِي كُوَّةٍ حَيْثُ أَرَاهَا، فَلَمَّا نَامُوا أَخَذْتُ الْمَفَاتِيحَ فَقَسَحْتُ بَابَ الْحِصْنِ، ثُمَّ دَخَلْتُ عَلَيْهِ

और दरवाज़ा खोलकर अबू राफ़ेअ के पास पहुँचा। मैंने उसे आवाज़ दी, अबू राफ़ेअ! उसने जवाब दिया और मैं फ़ौरन उसकी आवाज़ की तरफ़ बढ़ा और उस पर वार कर बैठा। वो चीखने लगा तो मैं बाहर चला आया। उसके पास से वापस आकर मैं फिर उसके कमरे में दाख़िल हुआ, गोया मैं उसकी मदद को पहुँचा था। मैंने फिर आवाज़ दी, अबू राफ़ेअ! इस बार मैंने अपनी आवाज़ बदल ली थी, उसने कहा कि क्या कर रहा है, तेरी माँ बर्बाद हो। मैंने पूछा, क्या बात पेश आई? वो कहने लगा, न मा'लूम कौन शख्स मेरे कमरे में आ गया, और मुझ पर हमला कर बैठा है, उन्होंने कहा कि अब की बार मैंने अपनी तलवार उसके पेट पर रखकर इतनी जोर से दबाई कि उसकी हड्डियों में उतर गई, जब मैं उसके कमरे से निकला तो बहुत दहशत में था। फिर क़िले की एक सीढ़ी पर मैं आया ताकि उससे नीचे उतर जाऊँ मगर मैं उस पर से गिर गया और मेरे पाँव में मोच आ गई, फिर जब मैं अपने साथियों के पास आया तो मैंने उनसे कहा कि मैं तो उस वक़्त तक यहाँ से नहीं जाऊँगा जब तक उसकी मौत का ऐलान खुद न सुन लूँ। चुनौती में वहीं ठहर गया और मैंने रोने वाली औरतों से अबू राफ़ेअ हज़ाज के सौदागर की मौत का ऐलान बुलन्द आवाज़ से सुना। उन्होंने कहा कि फिर मैं वहाँ से उठा, और मुझे उस वक़्त कुछ भी दर्द मा'लूम नहीं हुआ, फिर हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और आप (ﷺ) को उसकी बशारत दी। (दीगर मक़ाम : 3023, 4038, 4039, 4040)

فَقُلْتُ: يَا أَبَا رَافِعٍ، فَأَجَابَنِي، فَتَعَمَّدْتُ الصَّوْتُ فَصُرْتُهُ، فَصَاحَ، فَخَرَجْتُ، ثُمَّ جِئْتُ ثُمَّ رَجَعْتُ كَأَنِّي مُيِّتٌ فَقُلْتُ يَا أَبَا رَافِعٍ - وَغَيَّرْتُ صَوْتِي - فَقَالَ: مَا لَكَ لَأَمْلِكَ الْوَيْلَ، قُلْتُ: مَا شَأْنُكَ؟ قَالَ: لَا أَذْرِئُ مَنْ دَخَلَ عَلَيَّ فَصُرْتُنِي، قَالَ: فَوَضَعْتُ سَيْفِي لِي بَطْنِي، ثُمَّ تَحَامَلْتُ عَلَيْهِ حَتَّى قَرَعَ الْعَظْمَ، ثُمَّ خَرَجْتُ وَأَنَا ذَهِيئٌ، فَاتَيْتُ سُلَمًا لَهُمْ لِأَنْزِلَ مِنِّي فَوَقَعْتُ، فَوُتِنْتُ رِجْلِي، فَخَرَجْتُ إِلَى أَصْحَابِي فَقُلْتُ: مَا أَنَا بِبَارِحٍ حَتَّى أَسْمَعَ النَّاعِيَةَ، فَمَا يَرْجُو حَتَّى مَسَعَتْ نَعَايَا أَبِي رَافِعٍ فَاجْرَأَ أَهْلُ الْحِجَازِ. قَالَ: فَقُمْتُ وَمَا بِي قَلْبَةً حَتَّى آتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْنَاهُ

[أطرافه لى: ٣٠٢٣، ٤٠٣٨، ٤٠٣٩، ٤٠٤٠]

[٤٠٤٠]

3023. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी ज़ायदा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन अज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार के चन्द आदमियों को अबू राफ़ेअ के पास (उसे क़त्ल करने के लिये) भेजा था। चुनौती रात में अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) उसके क़िले में दाख़िल हुए और उसे सोते हुए क़त्ल किया। (राजेअ : 3022)

٣٠٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ أَبِيهِ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ الْأَبْرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رِفْطًا مِنَ الْأَنْصَارِ إِلَى أَبِي رَافِعٍ، فَدَخَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَتِيكَ بَيْتَهُ لِيَأْخُذَهُ وَهُوَ نَائِمٌ)). [راجع: ٣٠٢٢]

**तशरीह:**

अब्दुल्लाह (रज़ि.) अबू राफ़ेअ की आवाज़ पहचानते थे, वहाँ अंधेरा छाया हुआ था, उन्होंने ये ख्याल किया, ऐसा न हो मैं और किसी को मार डालूँ, इसलिये उन्होंने अबू राफ़ेअ को पुकारा और उसकी आवाज़ पर ज़बर्लमाई गो अबू राफ़ेअ को अब्दुल्लाह ने जगा दिया मगर ये जगाना सिर्फ़ उसकी जगह मा'लूम करने के लिये था। अबू राफ़ेअ वहीं पड़ा रहा, तो गोया सोता ही रहा। इसलिये बाब की मुताबक़त हासिल हुई। कुछ ने कहा कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया, जिसमें ये साराहत है कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अबू राफ़ेअ को सोते में मारा। ये अबू राफ़ेअ (सलाम बिन अबुल हक़ीक़ यहूदी) काफ़िरों को मुसलमानों पर जंग के लिये उभारता और हर वक़्त फ़साद कराने पर आमदा रहता था। इसलिये मुल्क में क़याम अमन के लिये उसका ख़त्म करना ज़रूरी हुआ और इस तरह अल्लाह तआला ने उस ज़ालिम को नेस्त व नाबूद कराया।

**बाब 156 : दुश्मन से मुठभेड़ होने की आरज़ून करना**

3024. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आसिम बिन यूसुफ़ यरबूई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्रबा ने बयान किया, कि मुझसे इमर बिन इब्बैदुल्लाह के गुलाम सालिम अबुन नज़्र ने बयान किया कि मैं इमर बिन इब्बैदुल्लाह का मुंशी था। सालिम ने बयान किया कि जब वो ख़वारिज से लड़ने के लिये ख़ाना हुए तो उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) का ख़त मिला। मैंने उसे पढ़ा तो उसमें उन्होंने लिखा था कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक लड़ाई के मौक़े पर इतिज़ार किया, फिर जब सूरज ढल गया। (राजेअ : 2818)

3025. तो आप (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब करते हुए फ़र्माया ऐ लोगों! दुश्मन से लड़ाई-भिड़ाई की तमन्ना न करो, बल्कि अल्लाह तआला से सलामती मांगो। हाँ! जब जंग छिड़ जाए तो फिर सन्न किये रहो और डटकर मुक़ाबला करो और जान लो कि जन्नत तलवारों के साथे में है। फिर आपने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! किताब (कुर्आन) के नाज़िल फ़र्माने वाले, ऐ बादलों के चलाने वाले! ऐ अहज़ाब (या'नी काफ़िरों की जमाअतों को ग़ज़व-ए-ख़न्दक के मौक़े पर) शिकस्त देने वाले! हमारे दुश्मन को शिकस्त दे और उनके मुक़ाबले में हमारी मदद फ़र्मा। और मूसा बिन इब्रबा ने कहा कि मुझसे सालिम अबुन नज़्र ने बयान किया कि मैं इमर बिन इब्बैदुल्लाह का मुंशी था। उनके पास हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) का ख़त आया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था

**۱۵۶- بَابُ لَا تَمْنُوا لِقَاءَ الْعَدُوِّ**

۳۰۲۴- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ يُوسُفَ الْيَرْبُوعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عَمْرِ بْنِ عُثَيْبٍ أَنَّ اللَّهَ، كُنْتُ كَاتِبًا لَهُ قَالَ: كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى حِينَ خَرَجَ إِلَى الْخَوَارِجِ فَقَرَأَهُ فَرَادَى فِيهِ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَيَّامِهِ إِلَيَّ لَقِي فِيهَا الْعَدُوَّ أَنْتَظِرُ حَتَّى مَالَتْ الشَّمْسُ)).

[راجع: ۲۸۱۸]

۳۰۲۵- ثُمَّ قَامَ فِي النَّاسِ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ لَا تَمْنُوا لِقَاءَ الْعَدُوِّ وَسَلُّوا إِلَهُ الْعَاقِبَةِ، فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا. وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوفِ)). ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، وَمَجْرِيَ السَّحَابِ، وَهَازِمَ الْأَحْزَابِ، اهْزِمْنَاهُمْ وَانصُرْنَا عَلَيْهِمْ)). وَقَالَ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ: قَالَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ أَبِي النَّضْرِ: كُنْتُ كَاتِبًا لِعَمْرِ بْنِ عُثَيْبٍ اللَّهُ، فَاتَاهُ كِتَابُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى

कि दुश्मन से लड़ाई लड़ने की तमन्ना न करो। (राजेअ: 2933)

3026. अबू आमिर ने कहा, हमसे मुगीरह बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दुश्मन से लड़ने-भिड़ने की तमन्ना न करो, हाँ! अगर जंग शुरू हो जाए तो फिर सब्र से काम लो।

बाब और हदीष की मंशा ज़ाहिर है कि दुश्मन से बरसरे पेकार रहने की कोशिश कोई अच्छी चीज़ नहीं है। सुलह सफ़ाई, अमन व अमान बहरहाल ज़रूरी हैं। इसलिये कभी भी ख़्वाह-मख़्वाह जंग न छेड़ी जाए न उसके लिये आरजू की जाए। हाँ जब सर से पानी गुजर जाए और जंग बग़ैर कोई चारा-ए-कार न हो तो फिर सब्र और इस्तिक्ामत के साथ पूरी कुव्वत से दुश्मन से मुकाबला करना ज़रूरी है।

### बाब 157 : लड़ाई मक्र व फ़रेब का नाम है

### ١٥٧- بَابُ الْحَرْبِ خَدْعَةً

या'नी लड़ाई में मक्र और तदबीर ज़रूरी है। इसका ये मतलब नहीं कि अहद तोड़ दे या दगाबाज़ी करे वो तो हुराम है। ग़ज़व-ए-खन्दक में मुसलमानों के खिलाफ़ यहूद और कुरेश और शफ़फ़न सब मुत्तफ़िक़ हो गये थे, औ हजरत (ﷺ) ने नईम बिन मसऊद (रज़ि.) को भेजकर उनमें नाइतिफ़ाक़ी करा दी, उस वक़्त आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि लड़ाई मक्र व फ़रेब ही का नाम है। या'नी इसमें दौब चलाना और दुश्मन को धोखा देना ज़रूरी है। (वहीदी)

3027. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्मा ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसरा (ईरान का बादशाह) बर्बाद व हलाक़ हो गया, अब उसके बाद किसरा नहीं आएगा। और कैसर (रोम का बादशाह) भी हलाक़ व बर्बाद हो गया, और उसके बाद (शाम में) कोई कैसर बाक़ी नहीं रह जाएगा। और उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में तक्सीम होंगे। (दीगर मक़ाम: 3120, 3618, 6630)

٣٠٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((هَلَكَ كِسْرَى، ثُمَّ لَا يَكُونُ كِسْرَى بَعْدَهُ. وَتَقْصَرُ لِيَهْلِكَنَّ، ثُمَّ لَا يَكُونُ قَيْصَرٌ بَعْدَهُ. وَلَتَقْسَمَنَّ كُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ)).

[أطرافه في: ٣١٢٠, ٣٦١٨, ٦٦٣٠]

3028. और आप (ﷺ) ने लड़ाई को मक्र व फ़रेब फ़र्माया। (दीगर मक़ाम: 3029)

٣٠٢٨- ((وَسُمِّيَ الْحَرْبُ خَدْعَةً)).

[طرفه في: ٣٠٢٩]

**तशरीह:** उस ज़माने में रोम और ईरान में मुस्तहक़म हुकूमतें क़ायम थीं। ईरानी बादशाह को लफ़्ज़े किसरा से और रूमी बादशाह को लफ़्ज़े कैसर से मुलक़ब करते थे। इन मुल्कों में बादशाहों को अल्लाह के दर्जे में समझा जाता था और रिआया उनकी परस्तिश किया करती थी। आख़िर इस्लाम ऐसे ही मज़ालिम और इंसानी दुखों को ख़त्म करने आया और उसने ला इलाहा इल्लल्लाह का नारा बुलन्द किया कि हक़ीक़ी बादशाह सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन है, दुनिया में बादशाही का गुरूर रखने वाले और रिआया का खून चूसने वाले लोग झूठे-मकार हैं। आख़िर ऐसे मज़ालिम का हमेशा के लिये दोनों मुल्कों

से खात्मा हो गया और अहदे खिलाफत में दोनों मुल्कों में इस्लामी परचम लहराने लगा। जिसके नीचे लोगों ने सुख और इत्मीनान की सांस ली और ये ज़ालिमाना शाहियत (राजतंत्र) दोनों मुल्कों से नेस्त व नाबूद हो गई।

3029. हमसे अबूबक्र बिन अमरम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हे हम्पाम बिन मुनब्बा ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया लड़ाई क्या है? एक चाल है। (राजेअ: 3028)

۳۰۲۹- حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَرَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامِ بْنِ مَنبَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ الْخَرْبَ خِدْعَةً)). [راجع: ۳۰۲۸]

3030. हमसे इदक्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको इब्ने इययना ने ख़बर दी, उन्हें अमर ने, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, जंग तो एक चालबाज़ी का नाम है।

۳۰۳۰- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَرْثَدٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((الْخَرْبُ خِدْعَةٌ)).

मतलब ये कि जो फ़रीक जंग में चुस्ती चालाकी से काम लेगा, जंग का पांसा उसके हाथ में होगा। पस मुसलमानों को ऐसे मौकों पर बहुत ज़्यादा होशियारी की ज़रूरत है। जंग में चुस्ती चालाकी बहरसूरत ज़रूरी है और इसी शकल में अल्लाह की मदद शामिल हो जाती है।

बाब 158 : जंग में झूठ बोलना (मस्लिहत के लिये) दुरुस्त है

۱۵۸- بَابُ الْكَذِبِ فِي الْخَرْبِ

तिर्मिज़ी की रिवायत में है कि तीन जगह झूठ बोलना दुरुस्त है। मर्द का अपनी बीवी से उसको राज़ी करने को और लड़ाई में और दो आदमियों में सुलह कराने को, अब इख़ितलाफ़ इसमें ये है कि ये सरीह झूठ बोलना उन मुक़ासिद में दुरुस्त है या तअरीज़ या'नी ऐसा कलाम कहना जिससे मुखात्तब एक मा'नी समझे वो झूठ हो, लेकिन मुतकल्लिम और दूसरा मा'नी मुराद ले और वो सच हो। एक रिवायत में है कि औहज़रत (ﷺ) ऐसे मुक़ामों में तोरिया करते, मषलन आपको एक मुक़ाम में चलना होता तो दूसरे मुक़ाम का हलाल लोगों से पूछते ताकि लोग समझे कि आप वहाँ जाना चाहते हैं। नववी ने कहा तअरीज़ बेहतर है सरीह झूठ से। (वहीदी)

3031. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने, उनसे अमर बिन दीनार ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कअब बिन अशरफ़ का काम कौन तमाम करेगा? वो अल्लाह और उसके रसूल को बहुत अज़िय्यतें पहुँचा चुका है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या आप मुझे इजाज़त बख़्श देंगे कि मैं उसे क़त्ल कर आऊँ? औहज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ। रावी ने बयान किया कि फिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) कअब यहुदी के पास आए और उससे कहने लगे कि नबी करीम (ﷺ) ने तो हमें थका दिया, और हमसे आप (ﷺ) ज़कात मांगते हैं। कअब ने कहा क़सम अल्लाह की! अभी क्या है अभी

۳۰۳۱- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ يَكْتُمُ بَنِي الْأَشْرَفِ، فَإِنَّهُ قَدْ آذَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ؟)) قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمَةَ: أَتَجِبُ أَنْ أَقْتُلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا - يَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَدْ عَنَانَا

और मुस्लीबत में पड़ोगे। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) इस पर कहने लगे कि बात ये है कि हमने उनकी पैरवी कर ली है। इसलिये उस वक़्त तक उसका साथ छोड़ना मुनासिब नहीं समझते हैं जब तक उनकी दा'वत का कोई अंजाम हमारे सामने न आ जाए। ग़र्ज़ मुहम्मद बिन मस्लमा उससे इसी तरह बातें करते रहे। आखिर मौक़ा पाकर उसे क़त्ल कर दिया। (राजेज़ : 2510)

وَسَأَلْنَا الصَّدُقَةَ. قَالَ: وَأَيْضًا وَاللَّهِ لَتَمْلَأَنَّ.  
قَالَ: - فَإِنَّا أَبْغَاهُ فَتَكْرَهُ أَنْ نَدْعُهُ حَتَّى  
نَنْظُرَ إِلَى مَا يَصِيرُ أَمْرُهُ. قَالَ: فَلَمْ يَزَلْ  
يُكَلِّمُهُ حَتَّى اسْتَمَكَّنَ مِنْهُ فَتَلَّهُ.

(راجع: ١٢٥١٠)

**तशरीह:** कअब बिन अशरफ़ यहूदी मदीना में मुसलमानों का सख़्ततरीन दुश्मन था जो रोज़ाना मुसलमानों के खिलाफ़ नित नई चालें करता रहता था। यहाँ तक कि कुरैशे मक्का को भी मुसलमानों के खिलाफ़ भड़काता और हमेशा मुसलमानों की घात में लगा रहता था लेकिन अल्लाह पाक को इस्लाम और मुसलमानों की बक्का मंज़ूर थी इसलिये बई सूरत इस फ़सादी को ख़त्म करके उसे जहन्नम रसीद किया गया, सच है:

नूरे खुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्द ज़न . फूँकों से ये चिराग़ बुझाया न जायेगा

अबू राफ़ेअ की तरह ये मर्दूद भी मुसलमानों की दुश्मनी पर तुला हुआ था। रसूले करीम (ﷺ) की हिज्र करत और शिर्क को दीने इस्लाम से बेहतर बताता, मुश्रिकों को मुसलमानों पर हमला करने के लिये उकसाता, उनकी रुपयों से मदद करता। हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसके ख़ात्मे के लिये इजाज़त मांगी कि मैं जो मुनासिब होगा आपकी निस्बत शिकायत के कलिमे कहूँगा, आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) की इससे ये ग़र्ज़ थी कि कअब को मेरा ए'तिबार पैदा हो, वरना वो पहले ही चोंक जाता और अपनी हिफ़ाज़त का बन्दोबस्त कर लेता। कुछ ने ये ए'तिराज़ किया है कि हदीष बाब के तर्जुमा के मुताबिक़ नहीं है क्योंकि मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) का कोई झूठ इसमें मज़कूर नहीं है। इसका जवाब ये है कि मुज्ताहिदे मुत्तलक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है जिसमें साफ़ ये मज़कूर है कि उन्होंने चलते वक़्त औहज़रत (ﷺ) से इजाज़त ले ली थी कि मैं आपकी शिकायत करूँगा, जो चाहूँ वो कहूँगा, आप (ﷺ) ने इजाज़त दे दी उसमें झूठ बोलना भी आ गया। आखिर मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कअब को बातों बातों में कहा यार! तेरे सर से क्या इम्दा खुशबू आती है। वो मर्दूद कहने लगा कि मेरे पास एक औरत है जो सारे अरब में अफ़ज़ल है। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा यार! ज़रा अपने बाल मुझको सूँघने दो उसने कहा सूँघो, मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) इस बहाने से उसके बाल दरम्याने सर से पकड़कर मज़बूत थाम लिये और साथियों को इशारा कर दिया, उन्होंने तलवार के एक ही वार से उसका सर कलम कर दिया, इसी से बाब का मज़मून प्राबित हुआ।

**बाब 159 : जंग में हर्बी काफ़िर को अचानक**

**धोखे से मार डालना**

١٥٩ - بَابُ الْقَتْلِ بِأَهْلِ الْحَرْبِ

इसी चालाकी होशियारी का नाम जंग है जिसके बग़ैर चारा नहीं। आज के मशीनी दौर में भी दुश्मन की घात में बैठना अक्वामे आलम का मा'मूल है। इस्लाम में ये इजाज़त सिर्फ़ हर्बी काफ़िरों के मुक़ाबले में है वरना धोखा बाज़ी किसी हालत में जाइज़ नहीं।

3032. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कअब बिन अशरफ़ के लिये कौन हिम्मत करेगा? मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा क्या मैं उसे क़त्ल कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! उन्होंने अज़्र किया कि फिर आप मुझे इजाज़त दें (कि मैं जा चाहूँ झूठ सच कहूँ) आप (ﷺ)

٣٠٣٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ عَنِ  
النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((مَنْ لِكَعْبِ بْنِ الْأَشْرَفِ))  
فَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمَةَ: أَتَجِبُ أَنْ أَقْتُلَهُ؟  
قَالَ: ((نَعَمْ)) قَالَ: فَأَذِنَ لِي فَأَقُولُ. قَالَ:

ने फ़र्माया कि मेरी तरफ़ से इसकी इजाज़त है। (राजेज़ : 2510)

((قَدْ فَعَلْتُ)). [راجع: 2510]

यहाँ चूँकि कअब बिन अशरफ़ पर धोखे से अचानक हमला करने का ज़िक्र है जो हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा ने किया था, इसी से बाब का मज़मून प्राबित हुआ। मज़ीद तफ़सील मज़कूर हो चुकी है।

## बाब 160 : अगर किसी से फ़साद या शरारत का अंदेशा हो तो उससे मक्क और फ़रेब कर सकते हैं

3033. लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूल करीम (ﷺ) इब्ने सय्याद (यहूदी के बच्चे) की तरफ़ जा रहे थे। आपके साथ उबई बिन कअब (रज़ि.) भी थे (इब्ने सय्याद के अजीबो-ग़रीब अहवाल के बारे में आप (ﷺ) खुद तहकीक़ करना चाहते थे) आप (ﷺ) को ख़बर दी गई थी कि इब्ने सय्याद उस वक़्त खज़ूर की आड़ में मौजूद है। जब आप (ﷺ) वहाँ पहुँचे तो शाखों की आड़ में चलने लगे। (ताकि वो आपको देख न सके) इब्ने सय्याद उस वक़्त एक चादर ओढ़े हुए चुपके-चुपके कुछ गुनगुना रहा था, उसकी माँ ने आँहज़रत (ﷺ) को देख लिया और पुकार उठी कि ऐ इब्ने सय्याद! ये मुहम्मद (ﷺ) आ पहुँचे, वो चौंक उठा, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर ये उसकी ख़बर न करती तो वो खोलता (या'नी उसकी बातों से उसका हाल खुल जाता)। (राजेज़ : 1355)

١٦٠ - بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْإِخْتِيَالِ،

وَالْحَذَرِ مَعَ مَنْ يَخْشَى مَعْرَتَهُ

٣٠٣٣ - قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: انْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ قِيلَ ابْنِ صَيَادٍ - فَحَدَّثَ بِهِ فِي نَخْلٍ - فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ النَّخْلُ، طَفِقَ يَقِي بِجُنُودِ النَّخْلِ وَابْنِ صَيَادٍ فِي قُطَيْفَةٍ لَهُ فِيهَا زَمْرَةٌ، قَرَأَتْ أُمَّ صَيَادٍ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا صَافٍ هَذَا مُحَمَّدٌ، فَوَثَبَ ابْنُ صَيَادٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَوْ تَرَكَتُهُ تَيْنَ)).

[راجع: ١٣٥٥]

**तशरीह :** इब्ने सय्याद मदीना में एक यहूदी बच्चा था, जो काहिन और नजूमियों की तरह लोगों को बहकाया करता था और अपने आपको कभी नबी और रसूल भी कहने लगता, वो भी एक किस्म का दज्वाल ही था, क्योंकि दज्जल-फ़रेब उसका काम था। हज़रत उमर (रज़ि.) की राय उसके ख़त्म कर देने की थी, मगर आँहज़रत (ﷺ) जो रहमतुल-लिल-आलमीन बनकर तशरीफ़ लाए थे आप (ﷺ) ने बहुत सी मुल्की व मिल्ली मसालेह की बिना पर उसे मुनासिब न समझा, सच है, ला इकराहा फ़िद् दीनी (अल् बकर: : 256) दीनी मुआमलात में किसी पर ज़बरदस्ती करना जाइज़ नहीं है। राहे हिदायत दिखला देना रसूल (ﷺ) का काम है और इस पर चलाना सिर्फ़ अल्लाह का काम है। इन्नक ला तहदी मन अहबबत व ला किन्नल्लाह यहदी मय्यशाउ. (अल् क़सस : 56)

बाब का मतलब इससे प्राबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) शाखों की आड़ में चलकर इब्ने सय्याद तक पहुँचे ताकि वो आपको देख न सके, इब्ने सय्याद ने आपके उम्मियों के रसूल होने की तस्दीक़ की, जिससे उसने आपकी रिसालते आम्मा से इंकार भी किया, उम्मी के मा'नी अनपढ़ के हैं। अहले अरब में लिखने पढ़ने का रिवाज न था। उसके बावजूद हर फन के माहिर थे और बेपनाह कुव्वत हाफ़िज़ा रखते थे बल्कि उनको अपने उम्मी होने पर फ़ख़ था। आँहज़रत (ﷺ) भी उन ही में पैदा हुए और अल्लाह पाक ने आपको उम्मी होने के बावजूद उलूमूल अव्वलीन वल् आख़िरीन से मालामाल किया।

## बाब 161 : जंग में शेर पढ़ना और खाई खोदते

١٦١ - بَابُ الرَّجْزِ فِي الْحَرْبِ،

### वक्त आवाज़ बुलन्द करना

इस बाब में सहल और अनस (रज़ि.) ने अहदीषे नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की हैं और यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) से भी इस बाब में एक हदीस रिवायत की है।

3034. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अहवज़ ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि ग़ज़व-ए-अहज़ाब में (ख़न्दक़ खोदते वक्त) रसूलुल्लाह (ﷺ) खुद मिट्टी उठा रहे थे। यहाँ तक कि सीना मुबारक के बाल मिट्टी से अट गये थे। आप (ﷺ) के (जिस्मे मुबारक पर) बाल बहुत घने थे। उस वक्त आप (ﷺ) अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) का ये शेर पढ़ रहे थे, (तर्जुमा)

ऐ अल्लाह! अगर तेरी हिदायत न होती तो हम कभी सीधा रास्ता न पाते,

न सदाक़ा कर सकते और न नमाज़ पढ़ते।

अब तू या अल्लाह! हमारे दिलों को सुकून और इत्मीनान अता कर, और अगर (दुश्मन से) मुठभेड़ हो जाए तो हमें शायित क़दम रखियो,

दुश्मनों ने हमारे ऊपर ज़्यादाती की है।

जब भी वो हमको फ़िल्ना-फ़साद में मुब्तला करना चाहते हैं तो हम इंकार करते हैं।

आप ये शेर बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहे थे। (राजेज़: 2836)

**तशरीह:** हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने उन अश्रार का तर्जुमा उर्दू में यूँ किया है,

तू हिदायत गर न करता तो कहाँ मिलती नजात	कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात
अब उतार हम पर तसल्ली ऐ शहेआली सिफ़ात	पाँव जमवा दे हमारे दे लड़ाई में षबात
बेसबब हम पर ये दुश्मन जुल्म से चढ़ आए हैं	जब वो बहकाएँ हमें सुनते नहीं हम उनकी बात

बाब के तर्जुमे में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **य कानलमुसन्नफ़ अशार फिज्जुमति बिकौलिही व रफ़उस्सौति फी हफ़िल्य़दकि इला अन्न कराहत रफ़इस्सौति मुख़्तस्सतुन बिहालतिल्लिक़तालि व ज़ालिक़ फीमा अख़रजहू अबू दाऊद मिन तरीक़ि कैस बिन उबाद काल कान अस्हाबु रसूलिल्लाहि (ﷺ) यक्वहुनस्सौत इन्दल्लिक़तालि (फ़त्ह)**

या'नी हज़रत इमाम (रह.) ने इसमें इशारा फ़र्माया है कि ऐन लड़ाई के वक्त आवाज़ बुलन्द करना मकरूह है जैसा कि एक रिवायत में है कि अस्हाबे रसूल लड़ाई के वक्त आवाज़ बुलन्द करना मकरूह जानते थे। हालांते किताल के अलावा मकरूह नहीं है जैसा कि यहाँ ख़न्दक़ की खुदाई के मौक़े पर मज़हूर है।

وَرَفَعَ الصَّوْتُ فِي حَفْرِ الْخَنْدَقِ  
فِي سَهْلٍ وَأَنْسَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَفِيهِ يَزِيدُ  
عَنْ مَلَمَةٍ.

۳۰۳۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو  
الْأَخْوَصِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْمَاقٍ عَنْ  
الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «رَأَيْتُ رَسُولَ  
لِلَّهِ ﷺ يَوْمَ الْخَنْدَقِ وَهُوَ يَنْقُلُ التُّرَابَ  
حَتَّى وَارَى التُّرَابَ شَعْرَ صَنْبَرِهِ - وَكَانَ  
رَجُلًا كَثِيرَ الشَّعْرِ - وَهُوَ يَرْتَجِزُ بِرَجَزِ  
عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ: وَيَقُولُ:

اللَّهُمَّ لَوْلَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا  
وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا  
فَأَنْزَلَنْ مَكِينَةَ عَلَيْنَا  
وَكَيْتَ الْأَقْدَامَ إِنْ لَأَقَيْنَا  
إِنَّ الْأَعْدَاءَ قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا  
إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَيْنَنَا  
يُوقَعُ بِهَا صَوْتُهُ»- [راجع: ۲۸۳۶]



### बाब 162 : जो घोड़े पर अच्छी तरह न जम सकता हो (उसके लिये दुआ करना)

3035. हमसे मुहम्मद बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी खालिद ने, उनसे कैस बिन अबी हाजिम ने और उनसे जरिर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि जबसे मैं इस्लाम लाया, रसूले करीम (ﷺ) ने (पर्दा के साथ) मुझे (अपने घर में दाखिल होने से) कभी नहीं रोका और जब भी आप मुझको देखते, खुशी से आप मुस्कुराने लगते। (दीगर मक़ाम : 3822, 6090)

3036. एक दफ़ा मैंने आप (ﷺ) की खिदमत में शिकायत की कि मैं घोड़े की सवारी पर अच्छी तरह नहीं जम पाता हूँ, तो आपने मेरे सीने पर अपना दस्ते मुबारक मारा, और दुआ की ऐ अल्लाह! इसे घोड़े पर जमा दे और दूसरों को सीधा रास्ता दिखाने वाला बना दे और खुद इसे भी सीधे रास्ते पर क़ायम रखियो। (राजेअ : 3020)

मुजाहिद के लिये दुआ करना प्राबित हुआ। किसी भी उसकी हाजत के बारे में हो। हज़रत जरिर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) घोड़े की सवारी में पुरखता नहीं थे। अल्लाह ने अपने हबीब (ﷺ) की दुआ से उनकी इस कमज़ोरी को दूर कर दिया। यही बुजुर्ग सहाबी हैं जिन्होंने यमन के बुतख़ाना जुलु ख़लसा को ख़त्म किया था जो यमन में का'बा शरीफ़ के मुक़ाबले पर बनाया गया था। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

### बाब 163 : बोरिया जलाकर ज़ख़म की दवा करना और औरत का अपने बाप के चेहरे से ख़ून धोना और ढाल में पानी भर-भरकर लाना

ज़ख़मों को खुश्क करने के लिये बोरिया जलाकर उसकी राख़ इस्ते'माल करना लम्बे ज़माने से मा'मूल चला आ रहा है। मुजाहिदीन के लिये ऐसे मौक़े पर यही हिदायत है और ये भी कि मैदाने जिहाद वग़ैरह में अगर बाप ज़ख़मी हो जाए तो उसकी लड़की उसकी हर मुम्किन खिदमत कर सकती है। यही मक़सदे-बाब है।

3037. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अबू हाजिम ने बयान किया, कहा कि सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) से शागिदों ने पूछा कि (जंगे उहूद में) नबी करीम (ﷺ) के ज़ख़मों का इलाज किस दवा से किया गया? सहल (रज़ि.) ने

١٦٢- بَابُ مَنْ لَا يَثْبُتُ عَلَى

الْخَيْلِ

٣٠٣٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ جُرَيْرِ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ قَالَ: ((مَا خَجَّيْتَنِي النَّبِيُّ ﷺ مُنْذُ أَسْلَمْتُ، وَلَا رَأَيْتَنِي إِلَّا تَسَمَّيْتَنِي فِي وَجْهِ))

[طرفاء ٣ : ٣٨٢٢، ٦٠٩٠]

٣٠٣٦- وَلَقَدْ شَكَوْتُ إِلَيْكَ لَا أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ، فَضَرَبَ بِيَدِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًا))

[راجع : ٣٠٢٠]

١٦٣- بَابُ دَوَاءِ الْجُرْحِ بِاخْرَاقِ

الْخَصِيرِ وَغَسْلِ الْوَرَأَةِ عَنْ أَيْهَا الذَّمِّ عَنْ وَجْهِهِ، وَغَسْلِ الْمَاءِ فِي التَّرْمِي.

٣٠٣٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ

حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ قَالَ: ((سَأَلُوا سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: بَأَيِّ شَيْءٍ دَوِيَ جُرْحُ رَسُولِ



खुद आयते बाब में ग़ैर मा' मूली तम्बीह मौजूद है कि तनाज़ोअ का नतीजा ये है कि तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और तुम बुज़दिल बन जाओगे। हवा उखड़ने का मतलब ज़ाहिर है कि ग़ैर अक्वाम की नज़रों में बे वक़अत हो जाओगे और जुअत व बहादुरी मफ़कूद होकर तुम पर बुज़दिली छा जाएगी।

दौरे हाज़रा (वर्तमान काल) में अरबों के बाहमी तनाज़ोअ का नतीजा सुकूते बैतुल मक्दिस की शक्ल में मौजूद है कि मुट्ठी भर यहूदी करोड़ो मुसलमानों को नज़रअंदाज़ करके मस्जिदे अक्सा पर काबिज़ बने बैठे हैं।

हदीषे मुआज़ की हिदायत भी बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल हैं। लोगों के लिये शरई दायरे के अंदर अंदर हर मुम्किन आसानी पैदा करना, सख्ती के हर पहलू से बचना, लोगों को खुश रखने की कोशिश करना, कोई नफ़रत पैदा करने का काम न करना, ये वो क़ौमती हिदायतें हैं जो हर आलिम, मुबल्लिग़, ख़तीब, मुदरिस, मुशिद, हादी के पेशेनज़र रहनी ज़रूरी हैं। उन इलमा व मुबल्लिगीन के लिये भी ग़ौर का मुक़ाम है जो सख्तियों और नफ़रतों के पैकर हैं। हदाहुमुल्लाह

3039. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूले करीम (ﷺ) ने जंगे उहुद के मौक़े पर (तीरंदाजों के) पचास आदमियों का अफ़सर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को बनाया था। आप (ﷺ) ने उन्हें ताकीद कर दी थी कि अगर तुम ये भी देख लो कि परिन्दे हम पर टूट पड़े हैं। फिर भी अपनी जगह से मत हटना, जब तक मैं तुम लोगों को कहला न भेजूँ। इसी तरह अगर तुम ये देखो कि कुफ़्रार को हमने शिकस्त दे दी है और उन्हें पामाल कर दिया है फिर भी यहाँ से न टलना, जब तक मैं तुम्हें खुद बुला न भेजूँ। फिर इस्लामी लश्कर ने कुफ़्रार को शिकस्त दे दी। बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मैंने मुश्रिक औरतों को देखा कि तेज़ी के साथ भाग रही थीं। उनके पाज़ेब और पिण्डलियाँ दिखाई दे रही थीं। और वो अपने कपड़ों को उठाए हुए थीं। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों ने कहा, कि ग़नीमत लूटो, ऐ क़ौम! ग़नीमत तुम्हारे सामने है। तुम्हारे साथी ग़ालिब आ गये हैं, अब डर किस बात का है। इस पर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने उनसे कहा क्या जो हिदायत रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी, तुम उसे भूल गए? लेकिन वो लोग उसी पर अड़े रहे कि दूसरे अस्हाब के साथ ग़नीमत जमा करने में शरीक रहेंगे। जब ये लोग (अक़्बरीयत) अपनी जगह छोड़कर चले आए तो उनके मुँह काफ़िरों ने फेर दिये और (मुसलमानों को) शिकस्त ज़दा पाकर भागते हुए आए, यही वो घड़ी थी (जिसका

३०३९ - حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الرَّجَالِ يَوْمَ أُحُدٍ - وَكَانُوا خَمْسِينَ رَجُلًا - عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جُبَيْرٍ فَقَالَ: ((إِنْ رَأَيْتُمُونَا تَخْطِفُ الطَّيْرُ فَلَا تَبْرَحُوا مَكَانَكُمْ هَذَا حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ، وَإِنْ رَأَيْتُمُونَا هَزَمْنَا الْقَوْمَ وَأَوْطَانَاهُمْ فَلَا تَبْرَحُوا حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ)). فَهَزَمُوهُمْ. قَالَ: فَأَنَا وَاللَّهُ رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَسْتَعِدْنَ، قَدْ بَدَتْ خَلَاجِلُهُنَّ وَأَسْوَفُهُنَّ، وَابْعَاثَ نِيَابِهِنَّ. فَقَالَ أَصْحَابُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جُبَيْرٍ: الْغَنِيْمَةُ أَيْ قَوْمُ الْغَنِيْمَةِ، ظَهَرَ أَصْحَابُكُمْ فَمَا تَنْتَبِرُونَ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جُبَيْرٍ: أَنْتُمْ مَا قَالَ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالُوا: وَاللَّهِ لَنَاتَيْنَ النَّاسَ فَلَنَصْبِتَنَّ مِنَ الْغَنِيْمَةِ فَلَمَّا أَتَوْهُمْ صُرِفَتْ وَجُوهُهُمْ، فَأَقْبَلُوا مِنْهُمْ مِهْرَمِينَ، فَذَلِكَ إِذْ

ज़िक्र सूरह आले इमरान में है कि) जब रसूल करीम (ﷺ) तुमको पीछे खड़े हुए बुला रहे थे। उससे यही मुराद है। उस वक़्त रसूल करीम (ﷺ) के साथ बारह अम्हाब के सिवा और कोई भी बाक़ी न रह गया था। आख़िर हमारे सत्तर आदमी शहीद हो गये। बद्र की लड़ाई में आँहज़रत (ﷺ) ने अपने म्हाबा के साथ मुश्किनीन के एक सौ चालीस आदमियों का नुक़्सान किया था, सत्तर उनमें से कैदी थे और सत्तर मक्तूल, (जब जंग ख़त्म हो गई तो एक पहाड़ पर खड़े होकर) अबू सुफ़यान ने कहा क्या मुहम्मद (ﷺ) अपनी क़ौम के साथ मौजूद हैं? तीन बार उन्होंने यही पूछा। लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने जवाब देने से मना कर दिया था। फिर उन्होंने पूछा, क्या इब्ने अबी क़ह्राफ़ा (अबू बक्र रज़ि.) अपनी क़ौम में मौजूद हैं? ये सवाल भी तीन बार किया, फिर पूछा क्या इब्ने ख़त्ताब (उमर रज़ि.) अपनी क़ौम में मौजूद हैं? ये भी तीन बार पूछा, फिर अपने साथियों की तरफ़ मुड़कर कहने लगे कि ये तीनों क़त्ल हो चुके हैं। उस पर उमर (रज़ि.) सेन रहा गया और आप बोल पड़े कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह गवाह है कि तू झूठ बोल रहा है। जिनके तूने अभी नाम लिये थे वो सब ज़िन्दा हैं और अभी तेरा बुरा दिन आने वाला है। अबू सुफ़यान ने कहा अच्छा! आज का दिन बद्र का बदला है। और लड़ाई भी एक डोल की तरह (कभी इधर कभी उधर) तुम लोगों को अपनी क़ौम के कुछ लोग मुषला किये हुए मिलेंगे। मैंने इस तरह करने का कोई हुक्म (अपने आदमियों को) नहीं दिया था, लेकिन मुझे उनका ये अमल बुरा भी नहीं मा'लूम हुआ। उसके बाद वो फ़ज़्रिया रज़ज़ पढ़ने लगा, हुबुल (बुत का नाम) बुलन्द रहे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग इसका जवाब क्यूँ नहीं देते। म्हाबा (रज़ि.) ने पूछा हम इसके जवाब में क्या कहें, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कहो कि अल्लाह सबसे बुलन्द और सबसे बड़ा बुजुर्ग है। अबू सुफ़यान ने कहा हमारा मददगार इज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारा कोई भी नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जवाब क्यूँ नहीं देते, म्हाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसका जवाब क्या दिया जाए? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कहो कि अल्लाह हमारा हामी है और तुम्हारा हामी कोई नहीं।

(दीगर मक्काम : 3986, 4043, 4067, 4561)

يَذْعُرُهُمُ الرُّسُولُ فِي آخِرَاتِهِمْ، فَلَمْ يَتَّعِ  
مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيْرَ اتْنَى  
عَشَرَ رَجُلًا، فَأَصَابُوا مِنَّا سِتِينَ، وَكَانَ  
النَّبِيُّ ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ  
أَصَابَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ بَدْرٍ أَرْبَعِينَ  
وَمِائَةً وَسِتِينَ أَسِيرًا وَسِتِينَ قَتِيلًا، فَقَالَ  
أَبُو سَفْيَانَ: أَفِي الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ؟ ثَلَاثَ  
مَرَّاتٍ. فَتَهَاكُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
وَسَلَّمَ أَنْ يَجِيبُوهُ. ثُمَّ قَالَ: أَفِي الْقَوْمِ ابْنُ  
أَبِي قُحَافَةَ؟ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. ثُمَّ قَالَ: أَفِي  
الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ؟ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ  
رَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَمَا هَؤُلَاءِ فَقَدْ  
قُتِلُوا. فَمَا مَلِكٌ عَمَرَ نَفْسَهُ فَقَالَ: كَذَبْتَ  
وَاللَّهِ يَا عَذْرُو اللَّهِ، إِنَّ الَّذِينَ عَدَدْتَ  
لأَحْيَاءَ كُلَّهُمْ، وَقَدْ بَقِيَ لَكَ مَا يَسْوَأُكَ.  
قَالَ: يَوْمَ يَوْمٍ يَذْرُءُ وَالْحَرْبُ سَبْعَالٍ.  
إِنَّكُمْ سَتَجِدُونَ فِي الْقَوْمِ مِثْلَهُ لَمْ أَمُرْ بِهَا  
وَلَمْ تَسْأَلْنِي. ثُمَّ أَخَذَ يَرْتَجِزُ: أَعْلَى هُبْلٍ.  
قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَا  
تُجِيبُونَهُ؟)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا نَقُولُ؟  
قَالَ: ((قُولُوا: اللَّهُ أَغْلَى وَأَجَلُ)). قَالَ:  
إِنَّ لَنَا الْغَزَى وَلَا غَزَى لَكُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((أَلَا تُجِيبُونَهُ)) قَالَ:  
قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا نَقُولُ؟ قَالَ: ((اللَّهُ  
مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَى لَكُمْ)).

[أطرافه ي : ٣٩٨٦، ٤٠٤٣، ٤٠٦٧،

**तशरीह :**

जंगे उहुद इस्लामी तारीख का एक बड़ा हादसा है जिसमें मुसलमानों को जानी और माली काफ़ी नुक़सान बर्दाश्त करना पड़ा। रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों को सख़्त ताकीद की थी कि हम भाग जाएँ या मारे जाएँ और परिन्दे हमारा गोशत उचक-उचककर खा रहे हों, तुम लोग ये दर्रा हमारा हुक्म आए बग़ैर हर्गिज़ न छोड़ना, ये दर्रा बहुत ही नाजुक मुक़ाम था। वहाँ से मुसलमानों पर पीछे से हमला हो सकता था, अगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथी उस दर्रे को न छोड़ते तो काफ़िरों का लश्कर कभी पीछे से हमला न कर सकता था और मुसलमानों को शिकस्त न होती, मगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों ने जब मैदान मुसलमानों के हाथ देखा तो वो अम्वाले ग़नीमत लूटने के ख़याल से दर्रा छोड़कर भाग निकले, और फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी राय क़यास के आगे उन्होंने बिल्कुल फ़रामोश कर दिया, नतीजा ये हुआ कि काफ़िरों के उस अचानक हमले से मुसलमानों के पाँव उखड़ गये और बेशतर मुसलमान मुजाहिदीन ने राहे-फ़रार इख़्तियार कर ली। रसूले करीम (ﷺ) के साथ सिर्फ़ अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.), उमर फ़ारूक़ (रज़ि.), अली मुर्तज़ा (रज़ि.), अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक्कास, तलहा बिन उबैदुल्लाह, जुबैर बिन अवाम, अबू उबैदा बिन ज़र्राह, ख़ब्बाब बिन मुज़िर, सअद बिन मुआज़ और उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) बाक़ी थे। सत्तर अकाबिर सहाबा शहीद हो गये जिनमें हज़रत अमीर हम्ज़ा को सय्यदुशुहदा कहा जाता है। हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) जो उस वक़्त कुफ़्फ़ारे कुरैश के लश्कर की कमान कर रहे थे, जंग के ख़ात्मे पर उन्होंने फ़ख़्रिया मुसलमानों को ललकारा और ये भी कहा कि मुसलमानों! तुम्हारे कुछ शुहदा मुषला किये मिलेंगे, या'नी उनके नाक-कान काटकर उनकी सूरतों को मसख़ कर दिया गया है। मैंने ऐसा हुक्म नहीं दिया, मगर मैं उसे बुरा भी नहीं समझता।

मुश्किने ने सबसे ज़्यादा गुस्ताख़ी हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) के साथ की थी। वहशी नामी एक गुलाम ने उन पर छुपकर वार किया, वो गिर गये। अबू सुफ़यान की बीवी हिन्दा ने अपने बाप और भाई का मारा जाना याद करके उनकी नअश का मुषला कर दिया और उनका कलेजा निकालकर चबाया और उनकी नअश पर खड़ी हुई और फ़ख़्रिया शे'र पढ़े।

हुबुल एक बुत का नाम था जो का'बा के बुतों में बड़ा माना जाता था। गोया अबू सुफ़यान ने फ़तहे जंग पर हुबुल की जय का नारा बुलन्द किया कि आज तेरा ग़लबा हुआ और अल्लाह वाले मज़लूब हुए। उसके जवाब में आँहज़रत (ﷺ) ने हक़ीक़त अफ़रोज़ नारा अल्लाह आला व अजल के लफ़्ज़ों में बुलन्द फ़र्माया, जो इसलिये बुलन्द और बरतर प्राबित हुआ कि बाद में हुबुल और तमाम बुतों का का'बा से ख़ात्मा हो गया और अज़ज़ व जल्ल का नाम वहाँ हमेशा के लिये बुलन्द हो रहा है।

इस हदीस से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब यँ प्राबित किया कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथ वालों ने अपने सरदार से इख़्तिलाफ़ किया और उनका क़हान माना, मोर्चा से हट गये, इसलिये सज़ा पाई, शिकस्त उठाई यहीं से नज़्मे स़रीह के सामने राय क़यास करने की इतिहाई मुज़म्मत प्राबित हुई मगर स़द अफ़सोस कि उम्मत के एक क़षीर तब्क़ा को इस राय व क़यास ने तबाह बर्बाद करके रख दिया है, नीज़ इफ़्तिराके उम्मत का अहम सबब तक्लीदे ज़ामिद है जिसने मुसलमानों को मुख़तलिफ़ फ़िरक़ों में तक्सीम कर दिया।

**बाब 165 : अगर रात के वक़्त दुश्मन का डर पैदा हो (तो चाहिये कि हाकिम उसकी ख़बर ले)**

3040. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे प्राबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा हसीन, सबसे ज़्यादा सख़ी और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। उन्होंने कहा कि एक बार रात के वक़्त अहले मदीना घबरा गये थे, क्योंकि एक आवाज़ सुनाई दे

١٦٥- بَابُ إِذَا فَرِعُوا بِاللَّيْلِ

٣٠٤٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ أَحْسَنَ النَّاسِ، وَأَجْوَدَ النَّاسِ، وَأَشَجَعَ النَّاسِ.

रही थी। फिर अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर जिसकी पीठ नंगी थी रसूले करीम (ﷺ) हकीकते हाल मा'लूम करने के लिये तन्हा मदीना के आसपास सबसे आगे तशरीफ़ ले गये। फिर आप (ﷺ) वापस आकर सहाबा (रज़ि.) से मिले तो तलवार आप (ﷺ) की गर्दन में लटक रही थी और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि घबराने की कोई बात नहीं, घबराने की कोई बात नहीं। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने तो उसे दरिया की तरफ़ पाया। (तेज़ दौड़ने में) आप (ﷺ) का इशारा घोड़े की तरफ़ था। (राजेअ: 2627)

कुछ दुश्मन क़बोलों की तरफ़ से मदीना मुनव्वरा पर अचानक शबाख़ूनी का ख़तरा था और एक दफ़ा अंधेरी रात में किसी नामा'लूम आवाज़ पर ऐसा शुबहा हो गया था जिसकी तहकीक के लिये सबसे पहले खुद रसूले करीम (ﷺ) निकले और आप मदीना के चारों तरफ़ दूर-दूर तक पता लेकर वापस लौटे और मुसलमानों की तसल्ली दिलाई कि कोई ख़तरा नहीं है, इसी से बाब का मज़मून साबित हुआ।

### बाब 166 : दुश्मन को देखकर बुलन्द आवाज़ से या सबाहा पुकारना

۱۶۶- بَابُ مَنْ رَأَى الْعَدُوَّ فَنَادَى

بِأَعْلَى صَوْتِهِ :

يَا صَبَاحَاهُ. حَتَّى يُسْمِعَ النَّاسَ

क़ाल इब्नुलमुनीर मौज़ुअ हाज़िहि तजुमति अन्न हाज़िहि हवत लैसत मिन दअवल्लाहिलियति अल्मन्ही अन्हा लिअन्नहा इस्तिगाथतुन अलल्कुफ़फ़ारि (फ़त्ह) या'नी इस तरह पुकारना मना नहीं है।

3041. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने ख़बर दी, उन्हें सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैं मदीना मुनव्वरा से गाबा (शाम के रास्ते में एक मुक़ाम) जा रहा था, गाबा की पहाड़ी पर अभी मैं पहुँचा था कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) का एक गुलाम (रबाह) मुझे मिला। मैंने कहा, क्या बात पेश आई? कहने लगा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दो दहील कैंटनियाँ (दूध देने वालीयाँ) छीन ली गई हैं। मैंने पूछा किसने छीना है? बताया कि क़बीला ग़त्फ़ान और फ़ज़ारा के लोगों ने। फिर मैंने तीन बार बहुत ज़ोर से चीख़कर या सबाहा, या सबाहा कहा। इतनी ज़ोर से कि मदीना के चारों तरफ़ मेरी आवाज़ पहुँच गई। उसके बाद मैं बहुत तेज़ी के साथ आगे बढ़ा, और डाकुओं तक जा पहुँचा, कैंटनियाँ उनके साथ थीं, मैंने उन पर तीर बरसाना शुरू कर दिया, और कहने लगा, मैं अक्वा का बेटा सलमा हूँ और आज का दिन कमीनों की हलाकत का दिन है। आख़िर तमाम कैंटनियाँ मैंने

۳۰۴۱- حَدَّثَنَا الْمُكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي غَنْبَرٍ عَنْ سَلَمَةَ أُمِّهِ أَخْبَرَهُ قَالَ: ((خَرَجْتُ مِنَ الْمَدِينَةِ ذَاهِبًا نَحْوَ الْغَابَةِ. حَتَّى إِذَا كُنْتُ بِبَيْتَةِ الْغَابَةِ لَقِيَنِي غُلَامٌ لِبَعْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ. قُلْتُ: وَبِحُكِّكَ، مَا بَكَ؟ قَالَ: أَخَذَتْ لِقَاحُ النَّبِيِّ ﷺ. قُلْتُ: مَنْ أَخَذَهَا؟ قَالَ: غَطَفَانٌ وَفَزَارَةٌ. فَصَرَخْتُ ثَلَاثَ صَرَخَاتٍ أَسْمِعْتُ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا : يَا صَبَاحَاهُ، يَا صَبَاحَاهُ. ثُمَّ انْدَفَعْتُ حَتَّى أَلْقَاهُمْ وَقَدْ أَخَذُوها، فَجَعَلْتُ أَرْمِيهِمْ وَأَقُولُ : أَا إِنُّ الْإِسْكَوعِ. وَالْيَوْمَ يَوْمَ الرُّضْعِ. فَاسْتَفَذَّتْهَا

उनसे छुड़ा लीं, अभी वो लोग पानी न पीने पाए थे और उन्हें हाँक कर वापस ला रहा था कि इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी मुझको मिल गए। मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! डाकू प्यासे हैं और मैंने मारे तीरों के पानी भी नहीं पीने दिया। इसलिये उनके पीछे कुछ लोगों को भेज दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्नुल अक्वा! तू उन पर ग़ालिब हो चुका अब जाने दे, दरगुज़र कर वो तो अपनी क़ौम में पहुँच गये जहाँ उनकी मेहमानी हो रही है। (दीगर मक़ाम : 4194)

مِنْهُمْ قَبْلَ أَنْ يَشْرَبُوا، فَأَقْبَلْتُ بِهَا  
أَسْرَقَهَا، فَلَقِيَنِي النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ  
اللَّهِ، إِنَّ الْقَوْمَ عَطَاشٌ، وَإِنِّي أَعْجَلْتُهُمْ أَنْ  
يَشْرَبُوا سِقْيَهُمْ، فَأَبَيْتَ فِي بَيْتِهِمْ. فَقَالَ:  
(يَا ابْنَ الْأَكْحَوَعِ مَلَكْتُ فَاسْتَجِبْ، إِنَّ  
الْقَوْمَ يَقْرَءُونَ فِي قَوْمِهِمْ)).

[طرفه في : ٤١٩٤].

**तशरीह :**

लफ़्ज़ रज़अ, राज़अ की जमा है जिसका मा'नी पाजी, कमीना और बदमाश कुछ ने कहा बख़ील जो बुख़ल की वजह से अपने जानवर का दूध मुँह से चूसता है दुहता नहीं कि कहीं दुहने की आवाज़ सुनकर दूसरे लोग न आ जाएँ और उनको दूध देना पड़े, एक बख़ील का ऐसा ही किस्सा मशहूर है। कुछ ने कहा कि बाब का तजुर्मा यूँ है आज मा'लूम हो जाए किसने शरीफ़ माँ का दूध पिया है और किसने कमीनी का।

अरब का कायदा है कि कोई आफ़त आती है तो ज़ोर से पुकारते हैं, या सबाहाह! या'नी ये सुबह मुसीबत की है, जल्द आओ और हमारी मदद करो। गाबा एक मुक़ाम का नाम है मदीना से कई मील पर शाम की तरफ़। वहाँ पेड़ बहुत थे, वहीं के झाड़ू से मिन्बरे नबवी बनाया गया था। ग़त्फ़ान और फ़ुज़ारा दो क़बीलों के नाम हैं सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने कहा था कि वो डाकू को पानी पीने को ठहरे होंगे, फौज के लोग उनको पा लेंगे और पकड़ लाएँगे। इन्हे सअद की रिवायत में है कि मेरे साथ सौ आदमी दीजिए तो मैं उनके साथ उनके अस्बाब को भी गिरफ़्तार करके लाता हूँ। आप (ﷺ) ने जो जवाब दिया वो आपका मुअजज़ा था। वाक़ई वो डाकू अपने क़बीला ग़त्फ़ान में पहुँच चुके थे।

**बाब 167 : हमला करते वक़्त यूँ कहना अच्छा ले मैं फ़लाँ का बेटा हूँ, सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने डाकूओं पर तीर चलाए और कहा, ले मैं फ़लाँ का बेटा हूँ**

١٦٧- بَابُ مَنْ قَالَ : خُذْنَا وَأَنَا

ابْنُ فُلَانٍ

وَقَالَ سَلَمَةُ: خُذْنَا وَأَنَا ابْنُ الْأَخْوَعِ.

लड़ाई के वक़्त म जब दुश्मन पर वार करे ऐसा कहना जाइज़ है, और ये उस फ़ख़र और तकबुर में शामिल नहीं है जो मना है क़ालि इब्नुल्मुनीर मौक़उहा मिनलअहक़ामि अन्नहा ख़ारिजतुन अनिल्इफ़्तिख़ारि अल्मन्ही अन्हू लिइक्तिजाइल्हालि ज़ालिक व हुव करीबुम्पिन जवाज़िल्इख़्तियालि बिल्खाइल्मुअजमति फिल्हर्बि दून गैरिहा. (फ़ह)

3042. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि उन्होंने बराअ बिन अज़िब (रज़ि.) से पूछा था, ऐ अबू अम्पारा! क्या आप लोग हुनैन की जंग में वाक़ई फ़रार हो गये थे? अबू इस्हाक़ ने कहा मैं सुन रहा था, बराअ (रज़ि.) ने ये जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उस दिन अपनी जगह से बिलकुल नहीं हटे थे। अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुत्तलिब आपके ख़च्चर की लगाम थामे हुए थे, जिस वक़्त मुश्रीकीन ने आपको चारों तरफ़ से घेर लिया था तो आप

٣٠٤٢- حَدَّثَنَا عُمَيْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ  
عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: ((سَأَلَ رَجُلٌ الْبَرَاءَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: يَا أَبَا عَمْرَةَ، أَوَلَيْعَمَ  
يَوْمَ خُتِنٍ؟ قَالَ الْبَرَاءُ وَأَنَا أَسْمَعُ: أَمَا  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَمْ يُولَ يَوْمَئِذٍ، كَانَ أَبُو  
سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ آخِذًا بِعِمَامٍ يَغْلِيهِ،  
فَلَمَّا غَشِيَتْهُ الْمَشْرِكُونَ نَزَلَ فَجَعَلَ

सवारी पर से उतरे और (तन्हा मैदान में आकर) फ़र्माने लगे मैं अल्लाह का नबी हूँ, इसमें बिलकुल झूठ नहीं। मैं अब्दुल मुजलिब का बेटा हूँ। बराअ (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से ज़्यादा बहादुर उस दिन कोई भी न था। (राजेअ: 2864)

يَقُولُ: ((أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)). فَمَا رَأَى مِنَ النَّاسِ يَوْمَئِذٍ أَشَدَّ مِنْهُ)). [راجع: ٢٨٦٤]

**तारीख:** जंगे हुनैन का ज़िक्र कुआन मजीद में आया है, व यौम हुनैनन इज़ा अज़बत्कुम कफ़तुकुम (अतू तौबा : 25) या 'नी हुनैन की लड़ाई में तुमको तुम्हारी क़त्ल ने घमण्ड और गुरूर में डाल दिया था जिसका नतीजा ये निकला कि तुम्हारी क़त्ल ने तुमको कुछ भी फायदा न पहुँचाया और कबीला हवाज़िन के तीरंदाजों ने आम मुसलमानों के मुँह मोड़ दिये। बाद में रसूले करीम (ﷺ) की इस्तिफ़ामत व बहादुरी ने उखड़े हुए मुजाहिदीन के दिल बढ़ा दिये और ज़रा सी हिम्मत व बहादुरी ने मैदाने जंग का नक्शा बदल दिया, उस मौक़े पर आँहज़रत (ﷺ) ने अना अनन्बी ला कज़िब का नारा बुलन्द किया, मैदाने जंग में ऐसे क़ौमी नारे बुलन्द करना मज़मूम नहीं है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का यही मक़सद है।

**अगर 168 : काफ़िर लोग एक मुसलमान के फ़ैसले पर राज़ी होकर अपने क़िले से उतर आएँ?**

١٦٨ - بَابُ إِذَا نَزَلَ الْعَدُوُّ عَلَى حُكْمِ رَجُلٍ

3043. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू उमामा ने, जो सहल बिन हनीफ़ के लड़के थे कि अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया जब बन्ू कुरैज़ा सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की प्रालिषी (मध्यस्थता) की शर्त पर हथियार डालकर क़िले से उतर आए तो रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें (सअद रज़ि. को) बुलाया। आप वहीं करीब ही एक जगह ठहरे हुए थे (क्योंकि वे ज़ख़मी थे) हज़रत सअद (रज़ि.) गधे पर सवार होकर आए, जब वो आप (ﷺ) के करीब पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने सरदार की तरफ़ खड़े हो जाओ (और उनको सवारी से उतारो) आख़िर आप उतरकर आँहज़रत (ﷺ) के करीब आकर बैठ गये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन लोगों (बन्ू कुरैज़ा के यहूदी) ने आपकी प्रालिषी की शर्त पर हथियार डाल दिये हैं। (इसलिये आप इनका फ़ैसला कर दें) उन्होंने कहा कि फिर मेरा फ़ैसला ये है कि इनमें जितने आदमी लड़ने वाले हैं, उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और उनकी औरतों और बच्चों को गुलाम बना लिया जाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया तूने अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला किया है। (दीगर मक़ाम: 3804, 4121, 6262)

٣٠٤٣ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَعْلَانَ بْنِ إِسْرَافِيلَ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ هُوَ ابْنُ سَهْلِ ابْنِ حَنْفٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ بَنُو قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ مَعْلَانَ هُوَ بْنُ مَعْلَانَ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - وَكَانَ قَرِيبًا مِنْهُ - فَبَجَاءَ عَلَى حِمَارٍ، فَلَمَّا دَنَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((فَوُومُوا إِلَيَّ سَيِّدُكُمْ))، فَبَجَاءَ لَجَلَسَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُ: ((إِنَّ هَؤُلَاءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ)). قَالَ: فَإِنِّي أَحْكُمُ أَنْ تُقْتَلَ الْمُقَاتِلَةُ، وَأَنْ تُسَيَّ الدَّرِيَّةُ. قَالَ: ((لَقَدْ حَكَمْتَ فِيهِمْ بِحُكْمِ الْمَلِكِ)).

[أطرافه في: ٣٨٠٤، ٤١٢١، ٦٢٦٢]

कुछ लोगों ने कहा कि हज़रत सअद (रज़ि.) कुछ बीमार थे, उनको सवारी से उतारने के लिये दूसरे की मदद दरकार थी, इसलिये आपने सहाबा (रज़ि.) को हुक्म दिया कि खड़े होकर उनको उतार लो, बाब के तर्जुमे की मुताबक़त ज़ाहिर है। एक रिवायत में यूँ है कि तूने वो हुक्म दिया जो अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर से दिया। (वहीदी)



हज़रत सअद (रज़ि.) का फैसला हालाते हाज़रा के तहत बिलकुल मुनासिब था और उसके बग़ैर क़यामे अमन नामुम्किन था। वो बनू कुरैज़ा के यहूदियों की फ़ितरत से वाकिफ़ थे, उनका ये फैसला यहूदी शरीअत के मुताबिक़ था।

### बाब 169 : कैदी को क़त्ल करना और किसी को खड़ा करके निशाना बनाना

۱۶۹- بَابُ قَتْلِ الْأَسِيرِ وَقَتْلِ الصَّيْرِ

जिसको अरबी में क़त्ले सन्न कहते हैं। वो ये है कि जानदार आदमी हो या जानवर उसको किसी झाड़ या पेड़ से बाँध देना और तीर या गोली का निशाना बनाना, इस बाब को लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया है जो कैदियों को क़त्ल करना जाइज़ नहीं रखते।

3044. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे मक्का के दिन जब शहर में दाख़िल हुए तो आपके सरे मुबारक पर ख़ूद था। आप जब उसे उतार रहे थे तो एक शख़्स (अबूबर्जा असलमी) ने आकर आपको ख़बर दी कि इब्ने ख़त्तल (इस्लाम का बदतरीन दुश्मन) का बा के पर्दे से लटका हुआ है। आपने फ़र्माया उसे वहीं क़त्ल कर दो। (राजेअ : 1864)

۳۰۴۴- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ دَخَلَ غَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْغِمْفَرُ، فَلَمَّا تَرَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ عَطْلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْنَانِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((أَقْلُوهُ)).

[راجع: ۱۸۶۶]

ये अब्दुल्लाह बिन ख़त्तल कमबख़्त मुर्तद होकर एक मुसलमान का ख़ून करके काफ़िरों में मिल गया था और आँहज़रत (ﷺ) की और मुसलमानों की हिज्व (निन्दा) वेश्याओं से गवाता। ये हदीष उस हदीष की मुख़स्सस है कि जो शख़्स मस्जिदे ह़राम में आ जाए वो बेख़ौफ़ है और इससे ये निकला कि मस्जिदे ह़राम में हद्दे कि़सास लिया जा सकता है। ख़ूद, लोहे का टोप जो मैदाने जंग में सर के बचाने के लिये इस्ते माल किया जाता था जिस तरह लोहे के कुर्ते (ज़िरह) से बाक़ी बदन को बचाया जाता था।

### बाब 170 : अपने तर्ई क़ैद करा देना और जो शख़्स क़ैद न कराये उसका हुक्म

۱۷۰- بَابُ هَلْ يَسْتَأْصِرُ الرَّجُلُ؟

और क़त्ल के वक़्त दो रकअत नमाज़ पढ़ना.

وَمَنْ لَمْ يَسْتَأْصِرْ،

وَمَنْ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ

3045. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें अमर बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया ब्रक़्फ़ी ने ख़बर दी, वो बनी जुह्रा के हलीफ़ थे और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के दोस्त, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दस सहाबा की एक जमाअत कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजी, उस जमाअत का अमीर आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के नाना आसिम बिन श़ाबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया और जमाअत रवाना हो गई। जब ये लोग मुक़ामे हिदात पर पहुँचे जो इस्फ़ान और मक्का के बीच में है तो क़बीला हुज़ैल की

۳۰۴۵- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سَفْيَانَ بْنِ أَسَدٍ بْنِ جَارِيَةَ الْكَلْبِيِّ - وَهُوَ خَلِيفَةُ ابْنِ زُفَرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ - أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَشْرَةً رَهْطَ سَرِيَّةٍ عَيْنًا، وَأَمَرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ

एक शाख बनु लहयान को किसी ने खबर दे दी और उस कबीले के दो सौ तीरंदाजों की एक जमाअत उनकी तलाश में निकली, ये सब सहाबा के कदमों के निशानों से अंदाज़ा लगाते हुए चलते-चलते आखिर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये जहाँ सहाबा ने बैठकर खजूरें खाई थीं, जो वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लेकर चले थे। पीछा करने वालों ने कहा कि ये (गुठलियाँ) तो यज़िब (मदीना) की (खजूरों की) हैं और फिर कदम के निशानों से अंदाज़ा करते हुए आगे बढ़ने लगे। आखिर आसिम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब उन्हें देखा तो उन सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली, मुश्किनी ने उनसे कहा कि हथियार डालकर नीचे उतर आओ, तुमसे हमारा अहद व पैमान है। हम किसी शख्स को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आसिम बिन अबीत (रज़ि.) मुहिम के अमीर ने कहा कि मैं तो आज किसी मूरत में भी एक काफ़िर की पनाह में नहीं उतरूँगा। ऐ अल्लाह! हमारी हालत से अपने नबी को खबर कर दे। इस पर उन काफ़िरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और आसिम (रज़ि.) और सात दूसरे सहाबा को शहीद कर डाला और बाक़ी तीन सहाबी उनके अहद व पैमान पर उतर आए, ये खुबैब अंसारी (रज़ि.), इब्ने दघिना (रज़ि.) और एक तीसरे सहाबी (अब्दुल्लाह बिन तारिक़ बलवी रज़ि.) थे। जब ये सहाबी उनके क़ाबू में आ गये तो उन्होंने अपनी कमानों के तांत उतारकर उनको उनसे बाँध लिया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये तुम्हारी पहली ग़दारी है। मैं तुम्हारे साथ हर्गिज़ न जाऊँगा बल्कि मैं तो उन्हीं हज़रत का उस्वा इख़्तियार करूँगा, उनकी मुराद शुद्द से थी, मगर मुश्किनी उन्हें खींचने लगे और ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहा। जब वो किसी तरह न गये तो उनको भी शहीद कर दिया। अब ये खुबैब (रज़ि.) और इब्ने दघिना (रज़ि.) को साथ लेकर चले और उनको मक्का में ले जाकर बेच दिया। ये जंगे बद्र के बाद का वाक़िया है। खुबैब (रज़ि.) को हारिष बिन अमिर बिन नौफ़िल बिन अब्दे मुनाफ़ के लड़कों ने ख़रीद लिया, खुबैब (रज़ि.) ने ही बद्र की लड़ाई में हारिष बिन अमिर को क़त्ल किया था। आप उनके यहाँ कुछ दिनों तक कैदी बनकर रहे, (ज़ुहरी ने बयान किया) कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अयाज़ ने ख़बर दी और उन्हें हारिष की बेटी (जैनब

بِن ثَابِتِ الْأَنْصَارِيِّ - جَدِّ عَاصِمِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْخَطَّابِ - فَأَنْطَلَقُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدَاةِ - وَهُوَ بَيْنَ عُسْتَانَ وَمَكَّةَ - وَذَكُرُوا لِحَيٍّ مِنْ هَذِلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لَحْيَانَ، فَتَفَرَّوْا لَهُمْ قَرِيْبًا مِنْ مَائَتِي رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ، فَاقْتَصَوْا أَنْوَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَا كُلُّهُمْ تَمَرًا تَزَوَّدُوهُ مِنَ الْمَدِينَةِ فَقَالُوا هَذَا تَمَرٌ يَشْرَبُ فَاقْتَصَوْا أَنْوَارَهُمْ فَلَمَّا رَأَوْهُمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَزُوا إِلَى فَذَلَدٍ، وَأَخَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ، فَقَالُوا لَهُمْ: أَنْزِلُوا وَأَعْطُونَا بِأَيْدِيكُمْ، وَلَكُمْ الْفَهْدُ الْمَيْثَاقُ وَلَا نَقْتُلُ مِنْكُمْ أَحَدًا. قَالَ عَاصِمٌ بْنُ ثَابِتٍ أَمِيرُ السَّرِيَةِ: أَمَا أَنَا فَوَ اللَّهِ لَا أَنْزِلُ الْيَوْمَ فِي دِمَةٍ كَافِرٍ، اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ، فَرَمَوْهُمْ بِالْأَنْبِلِ، فَقَتَلُوا عَاصِمًا فِي سَبْعَةٍ. فَتَزَلَّ إِلَيْهِمْ ثَلَاثَةٌ وَخَطَبَ بِالْفَهْدِ وَالْمَيْثَاقِ، مِنْهُمْ خَيْبُ الْأَنْصَارِيِّ وَابْنُ ذَيْلَةَ وَرَجُلٌ آخَرٌ. فَلَمَّا اسْتَمَكَّنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَنْوَارَ قِسِيهِمْ فَأَوْتَقَوْهُمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّلَاثُ: هَذَا أَوَّلُ الْفَتْرِ، وَاللَّهِ لَا أَصْحَبَكُمْ، إِنْ فِي هَؤُلَاءِ لَأَسْوَأَ - يُرِيدُ الْقَتْلَ - فَجَرَّوْهُ وَعَالَجَوْهُ عَلَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَأَبَى، فَقَتَلُوهُ، فَأَنْطَلَقُوا بِخَيْبٍ وَابْنِ ذَيْلَةَ حَتَّى بَاغَرُوهُمَا بِمَكَّةَ بَعْدَ وَثِقَةٍ بِذَرٍّ، فَلَبَّغَ خَيْبًا بَنُو الْخَارِثِ. بْنُ عَامِرٍ بْنِ نَوْفَلٍ بْنِ عَبْدِ

रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब (उनको क़त्ल करने के लिये) लोग आए तो ज़ैनब से उन्होंने ने मू-ए-ज़ेरे नाफ़ मूँडने के लिये उस्तरा मांगा। उन्होंने उस्तरा दे दिया, (ज़ैनब ने बयान किया) फिर उन्होंने मेरे एक बच्चे को अपने पास बुलाया, जब वो उनके पास गया तो मैं गाफ़िल थी, ज़ैनब ने बयान किया कि फिर जब मैंने अपने बच्चे को उनकी रान पर बैठा हुआ देखा और उस्तरा उनके हाथ में था, तो मैं इस बुरी तरह धबरा गई कि ख़ुबैब (रज़ि.) भी मेरे चेहरे से समझ गये उन्होंने कहा, तुम्हें इसका डर होगा कि मैं इसे क़त्ल कर डालूँगा, यक़ीन करो मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता। अल्लाह की क़सम! मैंने कोई कैदी ख़ुबैब (रज़ि.) से बेहतर कभी नहीं देखा। अल्लाह की क़सम! मैंने एक दिन देखा कि अंगूर का खोशा उनके हाथ में है और वो उसमे से खा रहे हैं। हालाँकि वो लोहे की ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे और मक्का में फलों का मौसम भी नहीं था। कहा करती थीं कि वो तो अल्लाह तआला की रोज़ी थी जो अल्लाह ने ख़ुबैब (रज़ि.) को भेजी थी। फिर जब मुश्रीकीन उन्हें हरम से बाहर लाये, ताकि हरम के हद्द से निकलकर उन्हें शहीद कर दें तो ख़ुबैब (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे सिर्फ़ दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने दो। उन्होंने उनको इजाज़त दे दी। फिर ख़ुबैब (रज़ि.) ने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़र्माया, अगर तुम ये ख़याल न करने लगते कि मैं (क़त्ल से) धबरा रहा हूँ तो मैं इन रकअतों को और लम्बा करता। ऐ अल्लाह! इन ज़ालिमों से एक-एक को ख़त्म कर दे, (फिर ये अशआर पढ़े) जबकि मैं मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ, तो मुझे किसी क़िस्म की भी परवाह नहीं है। ख़्वाह अल्लाह के रास्ते में मुझे किसी पहलू पर भी पछाड़ा जाए, ये सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये है और अगर वो चाहे तो उस ज़िस्म के टुकड़ों में भी बरकत दे सकता है जिसकी बोटी-बोटी कर दी गई हो। आख़िर हारिष के बेटे (इब्रबा) ने उनको शहीद कर दिया। हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) से ही हर उस मुसलमान के लिये जिसे क़ैद करके क़त्ल किया जाए (क़त्ल से पहले) दो रकअतें मशरूअ हुई हैं। इधर हादघा के शुरू ही में हज़रत आसिम बिन प्राबित (रज़ि.) (मुहिम के अमीर) की दुआ अल्लाह तआला ने कुबूल कर ली थी (कि ऐ अल्लाह! हमारी

مَنَافٍ، وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْحَارِثَ  
بْنَ غَامِرٍ يَوْمَ بَدْرٍ، فَلَبِثَ خُبَيْبٌ عِنْدَهُمْ  
أَسِيرًا فَأَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عِيَّاضٍ أَنَّ  
بَنَاتَ الْحَارِثِ أَخْبَرْتُهُ أَنَّهُمْ حِينَ  
اجْتَمَعُوا اسْتَفَازَ مِنْهَا مُوسَى يَسْتَجِدُّ بِهَا  
فَأَعَارَتْهُ، فَأَحَدَ أَبَا لِيٍّ وَأَنَا غَافِلَةٌ حِينَ  
أَنَا، قَالَتْ: فَوَحَدْتُهُ فَمَجَلَسْتُهُ عَلَى  
فُخْذِهِ وَالْمُوسَى سَدَدٌ، فَفَرَعْتُ فَرْعَةً  
عَرَفْتُهَا خُبَيْبٌ فِي وَجْهِهِ، فَقَالَ:  
تَحْسِنِ أَنْ أَقْتُلَهُ مَا كُنْتُ لِأَفْعَلَ ذَلِكَ.  
وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُ اسِيرًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ  
خُبَيْبٍ. وَاللَّهِ لَقَدْ وَجَدْتُهُ يَوْمًا يَأْكُلُ مِنْ  
قِطْفِ عَسَبٍ فِي يَدِهِ وَإِنَّهُ لَمَوْثِقٌ فِي  
الْحَدِيدِ وَمَا بِمَكَّةَ مِنْ ثَمَرٍ. وَكَانَتْ  
تَقُولُ إِنَّهُ لَرِزْقٌ مِنَ اللَّهِ رَزَقَهُ خُبَيْبًا.  
فَلَمَّا حَرَجُوا مِنَ الْحَرَمِ لِيَقْتُلُوهُ فِي  
الْحَلِّ قَالَ لَهُمْ خُبَيْبٌ: ذَرُونِي أَرْكَعَ  
رُكْعَتَيْنِ فَتَرَكُوهُ فَوَرَّكَعَ رُكْعَتَيْنِ ثُمَّ  
قَالَ: لَوْ لَا أَنْ تَنْظُرُوا أَدَّ مَا بِي جَزَعٌ  
لَطَوَّلْتُهَا، اللَّهُمَّ أَحْصِهِمْ عَذَابًا. وَقَالَ:

مَا أَبَالِي حِينَ أَقْتُلُ مُسْلِمًا  
عَلَى أَيْ شَيْءٍ كَانَ لِلَّهِ مُصْرَعِي  
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الْإِلَهِ. وَإِنْ يَشَاءُ  
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شَلْوِ مُمْرَعٍ

فَقَتْلَةُ ابْنِ الْحَارِثِ، فَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ مَنْ  
الرُّكْعَتَيْنِ لِكُلِّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ قَتَلَ صَبْرًا.  
فَاسْتَجَابَ اللَّهُ لِغَاصِمِ بْنِ ثَابِتٍ يَوْمَ.

हालात की खबर अपने नबी को दे दे) और नबी करीम (ﷺ) ने अपने सहाबा को वो सब हालात बता दिये थे जिसे ये मुहिम दो चार हुई थी। कुप्फारे कुरैश के कुछ लोगों को जब मा'लूम हुआ कि हजरत आसिम (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो उन्होंने उनकी लाश के लिये अपने आदमी भेजे ताकि उनकी जिस्म का कोई ऐसा हिस्सा काट लाएँ जिससे उनकी शिनाख्त हो सकती हो। आसिम (रज़ि.) ने बद्र की जंग में कुप्फारे कुरैश के एक सरदार (उक्बा बिन अबी मुईत) को क़त्ल किया था। लेकिन अल्लाह तआला ने भिड़ों का एक छत्ता आसिम (रज़ि.) की नअश पर कायम कर दिया उन्होंने कुरैश के आदमियों से आसिम की लाश को बचा लिया और वो उनके बदन का कोई टुकड़ा न काट सके। (दीगर मक़ाम : 3989, 4086, 7402)

أَمِيبٌ، فَأَخْبَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْحَابَهُ خَبْرَهُمْ وَمَا أَصْبَحُوا، وَبَعَثَ نَاسًا مِنْ كُفَّارِ قُرَيْشٍ إِلَى عَاصِمٍ حِينَ حَدَّثُوا أَنَّهُ قُتِلَ يُزَوِّتُوا بِشَيْءٍ مِنْهُ يُعْرِفُ، وَكَانَ قَدْ قَتَلَ رَجُلًا مِنْ عَظَمَائِهِمْ يَوْمَ بَدْرٍ قَبِيعَتٍ عَلَى عَاصِمٍ مِثْلَ الظِّلَّةِ مِنَ الدَّبَرِ، فَحَمَلَتْهُ مِنْ رَسُولِهِمْ، فَلَمْ يَقْدِرُوا عَلَى أَنْ يَقْطَعُوا مِنْ لَحْمِهِ شَيْئًا)).

[أطرافه في: ٣٩٨٩، ٤٠٨٦، ٧٤٠٢].

**तशरीह :** आसिम बिन इमर (रज़ि.) की वालिदा जमीला आसिम बिन श़ाबित की बेटी थीं। कुछ ने कहा ये आसिम बिन इमर (रज़ि.) के मामूँ थे और जमीला उनकी बहन थीं। ख़ैर उन छः आदमियों को आप (ﷺ) ने अज़ल और क़ारा वालों की दरख्वास्त पर भेजा था। वो जंगे उहूद के बाद आँहज़रत (ﷺ) के पास आए और आपसे अर्ज़ किया हम मुसलमान होना चाहते हैं। हमारे साथ चन्द सहाबा (रज़ि.) को कर दीजिए जो हमको दीन की ता'लीम दें। आपने मरषद बिन अबी मरषद और ख़ालिद बिन बुकैर और खुवैब बिन अदी और ज़ैद बिन दहिना और अब्दुल्लाह बिन तारिक को उनके साथ कर दिया, रास्ते में बनू लहयान के लोगों ने उन पर हमला किया और दगाबाज़ी से मार डाला। (वहीदी)

### बाब 171 : (मुसलमान) कैदियों को आज़ाद कराना

इस बारे में हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) की एक हदीष नबी करीम (ﷺ) से मरवी है.

3046. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंभूर ने बयान किया, उनसे अबू वार्ईल ने बयान किया और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आनी या'नी कैदी को छुड़ाया करो, भूखे को खिलाया करो और बीमार की अयादत किया करो। (दीगर मक़ाम : 5174, 5373, 5649, 7173)

### 171- بَابُ فَكَاكِ الْأَسِيرِ. فِيهِ عَن

أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

٣٠٤٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ «فَكُّوا الْعَامِيَّ - يَعْنِي الْأَسِيرَ - وَأَطْعَمُوا الْجَائِعَ، وَعَوَّدُوا التَّمْرُؤُصَ»)). [أطرافه في: ٥١٧٤، ٥٣٧٣، ٥٦٤٩، ٧١٧٣].

ये तीनों ने कियाँ ईमान व अख़लाक की दुनिया में बड़ी अहमियत रखती हैं। मज़लूम कैदी को आज़ाद कराना इतनी बड़ी नेकी है जिसके प्रवाब का कोई अंदाज़ा नहीं किया जा सकता, इसी तरह भूखों को खाना खिलाना वो अमल है जिसकी ता'रीफ़ बहुत सी आयाते कुआनी व अहदीषे नबी में वारिद हुई है और मरीज़ का मिज़ाज पूछना भी मसून तरीका है।

3047. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहर ने बयान किया, उनसे मुतरिफ ने बयान किया, उनसे आमिर ने बयान किया, और उनसे अबू जुहैफा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) से पूछा, आप हज़रात (अहले बैत) के पास किताबुल्लाह के सिवा और भी कोई वह्य है? आपने उसका जवाब दिया। उस ज्ञात की कसम! जिसने दाने को (जमीन) चीरकर (निकाला) और जिसने रूह को पैदा किया, मुझे तो कोई ऐसी वह्य मा'लूम नहीं (जो कुआन में न हो) अल्बत्ता समझ एक-दूसरी चीज़ है, जो अल्लाह किसी बन्दे को कुआन में अता फर्माए (कुआन से तरह-तरह के मताल्लिब निकाले) या इस वरक़ में है। मैंने पूछा, इस वरक़ में क्या लिखा है? उन्होंने बतलाया कि दियत के अहक़ाम और कैदी का छुड़ाना और मुसलमान का काफ़िर के बदले में न मारा जाना, (ये मसाइल इस वरक़ में लिखे हुए हैं और बस)। (राजेअ: 111)

۳۰۴۷- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ أَنَّ عَامِرًا حَدَّثَهُمْ عَنْ أَبِي جَحْفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قُلْتُ لِغُلَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ مِنَ الْوَحْيِ إِلَّا مَا فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ قَالَ: لَا وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ، مَا أَعْلَمُهُ إِلَّا فَهَمَّا يُعْطِيهِ اللَّهُ رَحْلًا فِي الْقُرْآنِ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ. قُلْتُ: وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قَالَ: الْعَقْلُ، وَفِكَائِكَ الْأَسِيرِ، وَإِنْ لَا يَقْتُلَ مُسْلِمٌ بَكَافِرٍ)). [راجع: ۱۱۱]

**तरीह:** इससे उन शिया लोगों का रद्द होता है जो कहते हैं मज़ाज़-अल्लाह कुआन की और बहुत सी आयतें थीं जिनको औहज़रत (ﷺ) ने फ़ाश (सार्वजनिक) नहीं किया बल्कि ख़ास हज़रत अली (रज़ि.) और अपने अहले बैत को बतलाई, ये सरीह झूठ है। औहज़रत (ﷺ) जब अकेले बे-यार व मददगार मुशिकों में फंसे हुए थे उस वक़्त तो आपने कोई बात छुपाई ही नहीं, अल्लाह का पैग़ाम बेख़ौफ़ व ख़तर सुना दिया, जिसमें मुशिकीन की और उनके मा'बूदों की खुली बुराइयाँ थीं। फिर जब आपके जानिघार व फ़िदाई सैंकड़ों सहाबा मौजूद थे आपको किसी का कुछ भी डर न था, आप अल्लाह का पैग़ाम कैसे छुपाकर रखते। अब रहें वो रिवायतें जो शिया अपनी किताबों में अहले बैत से नक़ल करते हैं तो उनमें अक़षर झूठ और ग़लत और बनाई हुई हैं।

बाब का तर्जुमा लफ़ज़, वला युक्तलु मुस्लिमुन बिकाफ़िरिन से निकला। क़स्तलानी ने कहा जुम्हूर इलमा और अहले हदीष का यही क़ौल है कि मुसलमान काफ़िर के बदले क़त्ल न किया जाएगा, और सहीह हदीष से यही प्राबित है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने एक ज़ईफ़ रिवायत से जिसको दारे कुत्नी ने निकाला कि मुसलमान ज़िम्मी काफ़िर के बदल क़त्ल किया जाएगा, फ़त्वा दिया है। (वह्नीदी)

## बाब 172 : मुशिकीन से फ़िदया लेना

3048. हमसे इस्माईल बनी अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन इब्बा ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्बा ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार के कुछ लोगों ने रसूले करीम (ﷺ) से इजाज़त चाही और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप हमें इसकी इजाज़त दे दें कि हम अपने भांजे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का फ़िदया मुआफ़ कर दें,

## ۱۷۲- بَابُ فِدَاءِ الْمُشْرِكِينَ

۳۰۴۸- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُقْبَةَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ اسْتَأْذَنُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ ائْذَنْ فَلْتَرَلَا

लेकिन आपने फ़र्माया, उनके फ़िदये में से एक दिरहम भी न छोड़ो। (राजेअ: 2537)

3049. और इब्राहीम बिन तहमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बहरीन का ख़िराज आया तो हज़रत अब्बास (रज़ि.) ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस माल से मुझे भी दीजिए क्योंकि (बद्र के मौक़े पर) मैंने अपना और अक़ील दोनों का फ़िदया अदा किया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर आप ले लें, चुनाँचे आपने उन्हें उनके कपड़े में नक़दी को बाँधवा दिया। (राजेअ: 421)

वलلهज़कु अन्नल्लमालल्मज़कूर कान मिनल्ख़राजि अविल्जिज़्यति व हुमा मिम्मालिल्मसालिहि या'नी वो माल ख़िराज या जिज़्या का था इसलिये हज़रत अब्बास (रज़ि.) को उसका लेना जाइज़ हुआ, तफ़्सीली बयान किताबुल जिज़्या में आया। ईशाअल्लाह तआला)

3050. मुझसे मज़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मज़मर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने, उन्हें उनके बाप (जुबैर बिन मुत्ज़िम रज़ि.) ने वो बद्र के क़ैदियों को छुड़ाने औ हज़रत (ﷺ) के पास आए (वो अभी इस्लाम नहीं लाए थे) उन्होंने बयान किया कि मैंने सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मरिब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ी। (राजेअ: 765)

दोनों अह्दादीष में मुश्किन से फ़िदया लेने का ज़िक्र है, मुश्किन ख़्वाह अपने अज़ीज़ रिश्तेदार ही क्यों न हों असल रिश्ता दीन का रिश्ता है। ये है तो सब कुछ है, ये नहीं तो कुछ भी नहीं। हज़रत अब्बास (रज़ि.) के फ़िदये के बारे में आपका इश्राद गिरामी बहुत सी मस्लिहतों पर मबनी था। वो आपके चचा थे, उनसे ज़रा सी भी रिआयत बरतना दूसरे लोगों के लिये सूअे ज़न का ज़रिया बन सकता था, इसीलिये आपने ये फ़र्माया, जो ह्दोष में मज़कूर है।

**बाब 173 : अगर हर्बी काफ़िर मुसलमानों के**

**मुल्क में बेअमान चला आए**

(तो उसका मार डालना दुरुस्त है)

3051. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ज़मेस उल्बा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अयास बिन सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने, उनसे उनके बाप (सलमा रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास सफ़र में मुश्किनों का एक जासूस आया। (आप ग़ज़व-ए-हवाज़िन के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे) वो जासूस सहाबा की जमाअत में बैठा, बातें कीं, फिर वो

لَا بِنِ اخْتِا عَنَّا فِدَاءً. فَقَالَ: ((لَا تَدْعُونَ مِنَهَا دِرْهَمًا)). [راجع: 2537]

3049- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَبَدَأَ الْعَبَّاسُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَعْطِنِي، فَإِنِّي قَدَدْتُ نَفْسِي، وَقَدَدْتُ عَقِيلًا، فَقَالَ: ((عُدَّ، فَأَعْطَاهُ فِي ثَوْبِهِ)). [راجع: 421]

3050- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَدَّاقٍ عَنْ الزُّوَالِي قَالَ أَخْبَرَنَا مَقْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ - وَكَانَ جَاءَ فِي أَسَارَى بَدْرٍ - قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ)). [راجع: 765]

173- بَابُ الْحَرْبِيِّ إِذَا دَخَلَ دَارَ

الْإِسْلَامِ بِغَيْرِ أَمَانٍ

3051- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْمُعَنَّى عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ عَيْنٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ - وَهُوَ فِي سَفَرٍ - فَجَلَسَ

वापस चला गया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि उसे तलाश करके मार डालो। चुनौचे उसे (सलमा बिन अब्बार रज़ि. ने) क़त्ल कर दिया, और आँहज़रत (ﷺ) ने उसके हथियार और औज़ार क़त्ल करने वाले को दिलवा दिये।

عِنْدَ أَصْحَابِهِ يَخْدُثُ، ثُمَّ انْفَلَّ، فَقَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: ((اَطْلُبُوهُ، وَاَقْتُلُوهُ، فَقَتَلْتَهُ،  
فَفَلَّه سَلْبَةً)).

बाब 174 : ज़िम्मी काफ़िरों को बचाने के लिये  
लड़ना, उनका गुलाम लौण्डी न बनाना।

١٧٤- بَابُ يُقَاتِلُ عَنْ أَهْلِ الذِّمَّةِ  
وَلَا يُسْتَرْقُونَ

ज़िम्मी वो काफ़िर जो मुसलमानों की अमान में रहते हैं, उनको जिज़्या देते हैं। ऐसे काफ़िरों के जान व माल की हिफ़ाज़त मुसलमानों के ज़िम्मे है। अगर वो अहद तोड़ डालें और मुसलमानों को दगा दें तब तो उनको मारना और उनका लौण्डी गुलाम बनाना दुरुस्त है। (वहीदी)

3052. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अबाना ने बयान किया, उन्हें हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे अमर बिन मैमून ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने (वफ़ात से थोड़ी देर पहले) फ़र्माया कि मैं अपने बाद आने वाले खलीफ़ा को उसकी वसियत करता हूँ कि अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) का (ज़िम्मियों से) जो अहद है उसको वो पूरा करे और ये कि उनकी हिमायत में उनके दुश्मनों से जंग करे और उनकी ताक़त से ज़्यादा कोई बोज़ उन पर न डाला जाए। (राजेअ: 1392)

٣٠٥٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ  
حَدَّثَنَا أَبُو غَوَاثَةَ عَنْ خُصَيْنٍ عَنْ عُمَرَوِ  
بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
((وَأَوْصِيَهُ بِلِيقَةِ اللَّهِ وَذِمَّةِ رَسُولِهِ ﷺ أَنْ  
يُؤَدِّيَ لَهُمْ بِمَهْدِهِمْ، وَأَنْ يُقَاتِلَ مِنْ  
وَرَأْيِهِمْ، وَلَا يَكْلَفُوا إِلَّا طَائِفَهُمْ)).

[راجع: ١٣٩٢]

ज़िम्मी उन ग़ैर-मुस्लिमों को कहते हैं जो इस्लामी हुकूमत के हुदूद (क्षेत्राधिकार) में रहते हैं। इस्लाम में ऐसे तमाम ग़ैर-मुस्लिमों की जान व माल इज़्जत व आबरू मुसलमानों की तरह है और अगर उन पर किसी तरफ़ से कोई आँच आती हो तो हुकूमते इस्लामी का फ़र्ज़ है कि उनकी हिफ़ाज़त के लिये उनके दुश्मनों से अगर जंग भी करनी पड़े तो ज़रूर करें और उनसे कोई बद अहदी न करें। आख़िर में जिज़्या की तरफ़ इशारा है कि वो इसी क़दर लगाया जाए जिसे वो बख़ुशी बर्दाश्त कर सकें।

बाब 175 : जो काफ़िर दूसरे मुल्कों से ऐलची  
बनकर आएँ उनसे अच्छा सुलूक करना

١٧٥- بَابُ جَوَائِزِ الْوَفْدِ

**तशरीह:** वफ़द या'नी वो जमाअत जो अपने मुल्क वालों की तरफ़ से बतौर सफ़ारत (प्रवक्ता) के आती है, इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कोई हदीष बयान नहीं की, कुछ नुस्खों में ये बाब मुख़्तार और बाब हल यस्तशफ़उ अलख़ मुकद्दम है और ये ज़्यादा मुनासिब है क्योंकि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष इस बाब के मुताबिक़ है और बाब हल यस्तशफ़उ से इसकी मुताबक़त मुश्किल है। मैं कहता हूँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इन दोनों अब्बाब के लिये इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष बयान की है। वफ़द के साथ उम्दा सुलूक करने का तो उसमें साफ़ मज़कूर है, अब ज़िम्मियों की सिफ़ारिश तो उसकी नफ़ी इमाम बुखारी (रह.) ने आपके इस फ़र्मान से निकाली कि मुश्किों को जज़ीर-ए-अरब के बाहर कर देना, मा'लूम हुआ उनकी सिफ़ारिश न सुनना चाहिये और उनके साथ जो मामला आपने किया या'नी इख़राज उसका भी इस हदीष में ज़िक़्र है। (वहीदी)

### बाब 176 : ज़िम्मियों की सिफारिश और उनसे कैसा मामला किया जाए?

3053. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अहवल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जुमेरात के दिन, और मा'लूम है जुमेरात का दिन क्या है? फिर आप इतना रोये कि कंकरियों तक भोग गई। आखिर आपने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीमारी में शिद्दत इसी जुमेरात के दिन हुई थी। तो आप (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया कि क़लम दवात लाओ, ताकि मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी किताब लिखवा जाऊँ कि तुम (मेरे बाद उस पर चलते रहो तो) कभी गुमराह न हो सको। इस पर सहाबा में इख़ितलाफ़ हो गया। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नबी के सामने झगड़ा मुनासिब नहीं है। सहाबा ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) (बीमारी की शिद्दत से) घबरा रहे हैं। आँहुज़ूरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा, अब मुझे मेरी हालत पर छोड़ दो, मैं जिस हाल में इस वक़्त हूँ वो उससे बेहतर है जो तुम कराना चाहते हो। आखिर आप (ﷺ) ने अपनी वफ़ात के वक़्त तीन वसियतें फ़र्माई थीं। एक ये मुशिकीन को जज़ीर-ए-अरब से बाहर कर देना। दूसरे ये कि वफ़ूद (प्रतिनिधि मण्डलों) से ऐसा ही मुलूक करते रहना, जैसे मैं करता रहा (उनकी खातिरदारी ज़ियाफ़त वगैरह) और तीसरी हिदायत मैं भूल गया। और यअक़ूब बिन मुहम्मद ने बयान किया कि मैंने मुगीरह बिन अब्दुर्रहमान से जज़ीर-ए-अरब के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि मक्का, मदीना, यमामा और यमन (का नाम जज़ीर-ए-अरब) है। और यअक़ूब ने कहा कि अर्ज से तहामा शुरू होता है। (अर्ज मक्का और मदीना के रास्ते में एक मंज़िल का नाम है)। (राजेअ: 114)

**तशरीह:** हिज़ के मा'नी बीमारी की हालत में हिज़्यानी कैफ़ियत का होना। आँहुज़ूरत (ﷺ) बीमारी और ग़ैर बीमारी हर हालत में हिज़्यान से महफूज़ थे। कुछ रिवायतों में हज़र इस्तफ़तमूह है। या'नी क्या पैगम्बर साहब (ﷺ) की बातें हिज़्यान हैं? आपसे अच्छी तरह पूछ लो, समझ लो गोया ये उन लोगों का कलाम है जो किताब लिखवाने के हक़ में थे। कुछ ने कहा ये कलाम हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा था और करीना भी यही है क्योंकि वो किताब लिखे जाने के मुख़ालिफ़ थे। इस सूत्र में हिज़ के मा'नी ये होंगे कि क्या आप दुनिया को छोड़ने वाले हैं? या'नी आप क्या वफ़ात पा जाएंगे। हज़रत उमर (रज़ि.) को घबराहट और रंज में ये ख़्याल समा गया था कि आप आपको मौत नहीं आ सकती, इस हालत में किताब लिखने की क्या ज़रूरत है?

क़स्तालानी (रह.) ने कहा, ज़ाहिर ये है कि आप हज़रत अबूबक्र (रज़ि) की ख़िलाफ़त लिखवाना चाहते थे, जैसे

۱۷۶- بَابُ هَلْ يُسْتَشْفَعُ إِلَى أَهْلِ الدِّمَةِ؟ وَمُعَامَلَتُهُمْ

۳۰۵۳- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَخْوَلِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: يَوْمَ الْخُمَيْسِ وَمَا يَوْمَ الْخُمَيْسِ. ثُمَّ بَكَى حَتَّى غَضِبَ ذَمْعُهُ الْخَصْبَاءَ، فَقَالَ: اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَجَعُهُ يَوْمَ الْخُمَيْسِ فَقَالَ: ((التَّوْبِي بِكِتَابِ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا. لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا)). فَتَنَازَعُوا، وَلَا يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ. فَقَالُوا: هَجَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. قَالَ: ((دَعُونِي، فَإِلَيْي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونِي إِلَيْهِ)). وَأَوْصَى عِنْدَ مَوْتِهِ بِثَلَاثٍ: ((أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ، وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِخَوْفٍ مَا كُنْتُمْ أَجِيزُهُمْ، وَنَسِيتُ الثَّالِثَةَ)). وَقَالَ يَغْقُوبُ بْنُ مُحَمَّدٍ: سَأَلْتُ الْمُبَيْرَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ فَقَالَ: مَكَّةُ وَالْمَدِينَةُ وَالْيَمَامَةُ وَالْيَمَنُ. وَقَالَ يَغْقُوبُ: وَالْعَرَجُ أَوَّلُ بِهَامَةٍ.

[راجع: ۱۱۴]



इमाम मुस्लिम की रिवायत में है कि आपने हज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया, तू अपने बाप और भाई को बुला ले, मैं डरता हूँ कहीं कोई और ख़िलाफ़त की आरज़ू करे, अल्लाह और मुसलमान सिवाय अबूबक्र (रज़ि.) के और किसी की ख़िलाफ़त नहीं मानते।

वसाया-ए-नबवी में एक अहम वसियत ये थी कि जज़ीर-ए-अरब में से मुश्किनी और यहूद व नसारा को निकाल दिया जाए, अरब का मुल्क तूल में अदन से इराक़ तक और अर्ज में जिह्रा से शाम तक है। और उसको जज़ीरा इसलिये फ़र्माया कि तीन तरफ़ समुन्दर उसको घेरे हुए है। ये वसियत हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में पूरी की। मुल्के अरब को चारों दिशाओं से बहरे हिन्द व बहरे कुल्जुम व बहरे फ़ारस व बहरे हब्शा ने घेरा हुआ है इसलिये इसे जज़ीरा कहा गया है।

हदीष के जुम्ला, व ला यम्बगी इन्द नबियिन तनाज़उन पर अल्लामा कस्तलानी लिखते हैं, अज़्ज़ाहिरु अन्नहू मिन क़ौलिही (ﷺ) ला मिन क़ौलि इब्नि अब्बास कमा वक्रअन्नसरीह बिही फी किताबिल्इल्मि क़ालन्नबियु (ﷺ) कुमू अन्नी व ला यम्बगी इन्दी अत्तनाज़अ इन्तिहा वज़्ज़ाहिरु अन्न हाज़ल्किताबल्लज़ी अरादहू इन्मा हुव फिन्नस्सि अला ख़िलाफ़ति अबी बक्र लाकिन्नहू अदल अन्हु मुअव्विलन अला मा हुव अस्लुहू मिन इस्तिख़लाफ़िही फिस्सलाति लितनाज़ुइहिम वशतह मर्जुहू (ﷺ) व यदुल्लु अलैहि मा इन्द मुस्लिम अन आयशत अन्नहू (ﷺ) क़ाल उदई ली अब्बा बक्र व अखाकि अस्तुबु किताब फइन्नी अखाफु अय्यतमन्ना मुतमन्निन व यकूलु क़ाइलुन अना औला व याबल्लाहु वल्मुमिनून इल्ला अब्बा बक्र व इन्दल्बज़्ज़ार मिन रिवायतिहा अन्नहू क़ाल इन्द इश्तिदादि मर्ज़िही ईतूनी बिदवातिन औ कतिफिन औ किर्तासिन अक्तबु लिअबी बक्र किताबन ला यख़तलिफ़न्नासु अलैहि घुम्म क़ाल मआज़ल्लाह अय्यख़तलिफ़न्नासु अला अबी बक्र फहाज़न्नस्मु सरीहुन अला तक्दीमि ख़िलाफ़ति अबी बक्र. (कस्तलानी)

ज़ाहिर है कि अल्फ़ाज़ कूमूअन्नी खुद आँहज़रत (ﷺ) ही के फ़रमूदा हैं ये इब्ने अब्बास (रज़ि.) के लफ़ज़ नहीं हैं जैसा कि किताबुल इल्म में सराहत के साथ मौजूद है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे पास झगड़ना मुनासिब नहीं लिहाज़ा यहाँ से खड़े हो जाओ, और ये भी ज़ाहिर है कि जिस किताब के लिखने का आँहज़रत (ﷺ) ने इरादा फ़र्माया था वो किताब ख़िलाफ़त अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के बारे में आप लिखना चाहते थे। फिर आपने लोगों के तनाज़ोअ और अपनी तकलीफ़े मर्ज़ देखकर उस इरादे को तर्क कर दिया और इसलिये भी कि आप अपनी हयाते तय्यिबा ही में हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) को नमाज़ में इमाम बनाकर अपनी गद्दी उनके हवाले फ़र्मा चुके थे जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने वालिद अबूबक्र (रज़ि.) को बुला लो और अपने भाई को भी ताकि मैं एक किताब लिखवा दूँ, मैं डरता हूँ कि मेरे बाद कोई ख़िलाफ़त की तमन्ना लेकर खड़ा हो और कहे कि मैं इसका ज़्यादा मुस्तहक़ हूँ। हालाँकि अल्लाह पाक ने और तमाम ईमान वालों ने इस अज़ीम ख़िदमत के लिये अबूबक्र (रज़ि.) ही को मुतख़ब कर लिया है और बज़ार में उन्हीं की रिवायत से यूँ है कि आपने शिद्दते मर्ज़ में फ़र्माया, मेरे पास दवात काग़ज़ वगैरह लाओ कि मैं अबूबक्र (रज़ि.) के लिये दस्तावेज़ लिखवा दूँ, ताकि लोग इस पर इख़्तिलाफ़न करें। फिर फ़र्माया कि अल्लाह की पनाह उससे कि लोग ख़िलाफ़ते अबूबक्र में इख़्तिलाफ़ करें। पस हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त पर ये नस्से सरीह है।

### बाब 177 : बुफूद से मुलाक़ात के लिये अपने को आरास्ता करना

3054. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने देखा कि बाज़ार में एक

### ١٧٧ - بَابُ التَّجَمُّلِ لِلْوُفُودِ

٣٠٥٤ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ

عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَجَدَ عُمَرُ حَلَّةً يُسْتَرْقَى

रेशमी जोड़ा बिक रहा है। फिर उसे वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में लाए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये जोड़ा आप खरीद लें और इंद और बुफूद की मुलाकात पर उससे अपनी जेबाइश फर्माया करें। औ हजरत (ﷺ) ने फर्माया ये उन लोगों का लिबास है जिनका (आखिरत में) कोई हिस्सा नहीं या (आपने ये जुम्ला फर्माया) इसे तो वही लोग पहन सकते हैं जिनका (आखिरत में) कोई हिस्सा नहीं। फिर अल्लाह ने जितने दिनों चाहा हजरत उमर (रज़ि.) खामोश रहे। फिर जब एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके पास एक रेशमी जुब्बा भेजा तो हजरत उमर (रज़ि.) उसे लेकर खिदमते नबवी में हाज़िर हुए और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने तो ये फर्माया था कि ये उनका लिबास है जिनका (आखिरत में) कोई हिस्सा नहीं, या (उमर रज़ि. ने ये बात कही कि) उसे वही लोग पहन सकते हैं जिनका (आखिरत में) कोई हिस्सा नहीं। और फिर आप (ﷺ) ने यही मेरे पास इस्साल फर्मा दिया। इस पर आपने फर्माया कि (मेरे भेजने का मक्सद ये था कि) तुम इसे बेच लो, या (फर्माया कि) इससे अपनी कोई जरूरत पूरी कर सको। (राजेअ: 886)

## बाब 178 : बच्चे पर इस्लाम किस

### तरह पेश किया जाए

3055. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने खबर दी कि नबी करीम (ﷺ) के साथ सहाबा की एक जमाअत जिनमें हजरत उमर (रज़ि.) भी शामिल थे, इब्ने सय्याद (यहूदी लड़का) के यहाँ जा रही थी। आखिर बनू मगाला (एक अंझारी कबीले) के टीलों के पास बच्चों के साथ खेलते हुए उसे उन लोगों ने पा लिया, इब्ने सय्याद बालिग होने के करीब था। उसे (रसूले करीम ﷺ की आमद का) पता नहीं हुआ। औ हजरत (ﷺ) ने (उसके करीब पहुँचकर) अपना हाथ उसकी पीठ पर मारा, और फर्माया क्या इसकी गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। इब्ने सय्याद ने आपकी तरफ देखा, फिर कहने लगा। हाँ! मैं गवाही देता हूँ कि आप अनपढ़ों के

نَاغٍ فِي السُّوقِ، فَأَتَى بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْنِعْ هَذِهِ الْحُلَّةَ فَجَعَلَ بِهَا لِلْعِيْدِ وَالْوَفْدِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذِهِ لِبَاسٌ مِنْ لَا خَلَاقَ لَهُ - أَوْ إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لَا خَلَاقَ لَهُ)) - فَلَبِثَ مَا شَاءَ اللَّهُ. ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ بِجَنَّةٍ دِيْبَاجٍ، فَأَقْبَلَ بِهَا عُمَرُ حَتَّى أَتَى بِهَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، قُلْتَ إِنَّمَا هَذِهِ لِبَاسٌ مِنْ لَا خَلَاقَ لَهُ، أَوْ إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لَا خَلَاقَ لَهُ، ثُمَّ أَرْسَلْتَ إِلَيَّ بِهَذِهِ. فَقَالَ: ((بَيْعُهَا، أَوْ تَصِيْبُ بِهَا بَعْضُ خَاجِكَ)).

[راجع: ٨٨٦]

## 178- بَابُ كَيْفَ يُغَرِّضُ الْإِسْلَامَ

### عَلَى الصَّبِيِّ؟

٣٠٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ انْطَلَقَ لِي وَهَطٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قَبْلَ ابْنِ صَيَادٍ حَتَّى وَجَدُوهُ يَلْعَبُ مَعَ الْغُلَمَانِ عِنْدَ أَطْمِ بَنِي مَعَالَةَ وَقَدْ قَارَبَ يَوْمَئِذٍ ابْنُ صَيَادٍ لِيُخْلِمَ فَلَمْ يَشْمَرْ بِشَيْءٍ حَتَّى ضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ ظَهْرَهُ بِيَدِهِ، ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

नबी हैं। उसके बाद उसने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा क्या आप गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? आपने उसका जवाब (सिर्फ़ इतना) दिया कि मैं अल्लाह और उसके (सच्चे) अंबिया पर ईमान लाया। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, तू क्या देखता है? उसने कहा कि मेरे पास एक ख़बर सच्ची आती है तो दूसरी झूठी भी। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि हकीक़ते हाल तुझ पर मुश्तबह हो गई है। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया, अच्छा मैंने तेरे लिये अपने दिल में एक बात सोची है (बता वो क्या बात है?) इब्ने सय्याद बोला कि दुख, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़लील हो, कम्बड़त! तू अपनी हैशियत से आगे न बढ़ सकेगा। हज़रत इमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे इजाज़त हो तो मैं इसकी गर्दन मार दूँ लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर ये वही (दज्जाल) है तो तुम उस पर क़ादिर नहीं हो सकते और अगर दज्जाल नहीं है तो उसकी जान लेने में कोई ख़ैर नहीं। (राजेअ 1354)

3056. अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि (एक बार) उबई बिन कअब (रज़ि.) को साथ लेकर आँहज़रत (ﷺ) उस खज़ूर के बाग़ में तशरीफ़ लाए जिसमें इब्ने सय्याद मौजूद था। जब आप (ﷺ) बाग़ में दाख़िल हो गये तो खज़ूर के तनों की आड़ लेते हुए आप (ﷺ) आगे बढ़ने लगे। आप चाहते थे थे कि उसे आपकी मौजूदगी का एहसास न हो सके और आप उसकी बातें सुन लें। इब्ने सय्याद उस वक़्त अपने बिस्तर पर एक घादर ओढ़े पड़ा था और कुछ गुनगुना रहा था। इतने में उसकी माँ ने आँहज़ूर (ﷺ) को देख लिया कि आप खज़ूर के तनों की आड़ लेकर आगे आ रहे हैं और उसे आगाह कर दिया कि ऐसाफ़! ये उसका नाम था, इब्ने सय्याद ये सुनते ही उछल पड़ा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अगर उसकी माँ ने उसे यूँ ही रहने दिया होता तो हकीक़त खुल जाती। (राजेअ: 1355)

3057. सालिम ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सहाबा को

((أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ)). قَطَرَ  
إِلَيْهِ ابْنُ صَيَادٍ فَقَالَ : أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ  
الْأَمِينِ. فَقَالَ ابْنُ صَيَادٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَتَشْهَدُ  
أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟ قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ:  
((أَمْسَتْ بِاللهِ وَرَسُولِهِ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:  
((مَاذَا تَرَى؟)) قَالَ ابْنُ صَيَادٍ : يَأْتِنِي  
صَادِقٌ وَكَاذِبٌ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَعَلَيْكَ  
عَلَيْكَ الْأَمْرُ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي قَدْ  
خَبَرْتُ لَكَ خَبِيرًا)). قَالَ ابْنُ صَيَادٍ: هُوَ  
الدُّخْ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَخْسَأُ، فَلَنْ تَعْدُوَ  
قُدْرَكَ)). قَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ  
لِي فِيهِ أَضْرِبٌ غَفَقَ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ  
يَكُنْهُ فَلَمْ تُسَلِّطْ عَلَيْهِ، وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فَلَا  
خَيْرَ لَكَ فِي قَبْلِهِ)). [راجع: 1354]

٣٠٥٦- قَالَ ابْنُ عُمَرَ: انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ  
وَأَمْرُ ابْنِ كَعْبٍ يَأْتِيَانِ النَّخْلَ الَّذِي فِيهِ ابْنُ  
صَيَادٍ، حَتَّى إِذَا دَخَلَ النَّخْلَ طَفِقَ النَّبِيُّ  
ﷺ يَقْبِي بِجَذْوَعِ النَّخْلِ وَهُوَ يَخِيلُ أَنْ  
يَسْمَعَ مِنْ ابْنِ صَيَادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ،  
وَأَبْنُ صَيَادٍ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشِهِ فِي  
لُطَيْفَةٍ لَهُ فِيهَا رَمْزَةٌ، فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَادٍ  
النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يَقْبِي بِجَذْوَعِ النَّخْلِ،  
فَقَالَتْ لِابْنِ صَيَادٍ: أَيُّ صَافٍ - وَهُوَ  
اسْمُهُ - فَإِنَّ ابْنَ صَيَادٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:  
((لَوْ تَرَكْتَهُ بَيْنَ)). [راجع: 1355]

٣٠٥٧- وَقَالَ سَالِمٌ : قَالَ ابْنُ عُمَرَ ثُمَّ  
قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَتَى عَلَى اللَّهِ

खिताब किया, आपने अल्लाह तआला की पना बयान की, जो उसकी शान के मुताबिक थी। फिर दज्जाल का जिक्र फर्माया, और फर्माया कि मैं भी तुम्हें उसके (फितनों से) डराता हूँ, कोई नबी ऐसा नहीं गुजरा जिसने अपनी क़ौम को उसके फितनों से न डराया हो, नूह (अलै.) ने भी अपनी क़ौम को उससे डराया था लेकिन मैं उसके बारे में तुमसे एक ऐसी बात कहूँगा जो किसी नबी ने अपनी क़ौम से नहीं कही, और वो बात ये है कि दज्जाल काना होगा और अल्लाह तआला इससे पाक है। (दीगर मक़ाम : 3337, 3439, 4402, 6175, 7123, 7127, 8404)

بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَالَ فَقَالَ: ((إِنِّي أَنْذِرُكُمْ هُوَ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا قَدْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ لَقَدْ أَنْذَرَ نُوحٌ قَوْمَهُ: وَلَكِنْ سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلًا لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ: تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَغْوَرٌّ، وَإِنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِأَغْوَرٍّ)).

[أطرافه في: 3337, 3439, 4402, 6175, 7123, 7127, 8404]

[8404, 6175, 7123, 7127, 8404]

**तशरीह:** बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ अतशहदु अना रसूलुल्लाह से निकलता है कि बच्चे के सामने इस्लाम इस तरह पेश किया जाए, आँहज़रत (ﷺ) को इब्ने सय्याद से चन्द बातें पूछना मंज़ूर थीं, आपने खयाल किया कि अगर मैं ये कह दूँ कि तू झूठा है तू रसूल कहाँ से हुआ, तो शायद वो चिढ़ जाए और हमारा मक्क़द पूरा न हो, इसलिये ऐसा जामेअ जवाब दिया कि इब्ने सय्याद चिढ़ा भी नहीं और उसकी पैगम्बरी का इन्कार भी निकल आया। आँहज़रत (ﷺ) ने आयत, य़ौमा तअतिसूस्माउ बिदुखानिम् मुबीन (अद दुखान : 10) का तस्लवूर फर्माया था, इब्ने सय्याद ने, दुखान के लफ़्ज़ से सिर्फ़ दख़्क़ बतलाया जैसे शैतानों की आदत होती है। सुनी सुनाई एक आध बात ले मरते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने हक्कीकी दज्जाल के बारे में बतलाया कि वो काना होगा, ये बड़े दज्जाल का जिक्र है। एक हदीष में है कि मेरी उम्मत में तीस झूठे दज्जाल पैदा होंगे, जो नुबुव्वत का दा'वा करेंगे। ये दज्जाल उम्मत में पैदा हो चुके हैं।

हिन्दुस्तान पंजाब में भी एक शख्स नुबुव्वत का मुद्दई बनकर खड़ा हुआ। जिसने एक क़बीर मख़लूक को गुमराह कर दिया और अब तक उसके मुरीदीन (क़ादयानी या अहमदिया फ़िर्का) सारी दुनिया में दज्जल फैलाने में मशगूल हैं जो बज़ाहिर इस्लाम का नाम लेते हैं और दरपदा अपने फ़ज़ी नामो-निहाद रसूल की रिसालत की तबलीग़ करते हैं और भी उन्होंने बहुत से ग़लत अक़ाइद ईजाद किये हैं। जो सरासर कुआन व अह्दादीष के ख़िलाफ़ हैं। इलमा-ए-इस्लाम ने बहुत सी किताबों में इस फ़िर्के क़ादयानिया का इन्कार किया है। हमारे मरहूम उस्ताद हज़रत मौलाना अबुल वफ़ा पनाउल्लाह अमृतसरी (रह.) ने भी इस फ़िर्के की तर्दीद में बेनज़ीर क़लमी ख़िदमात अंजाम दी हैं। अल्लाहुम्मग़फ़िलहू व हम्हू व अफ़ु अन्हु व अक्विम नुजुलहु आमीन इस हदीष में तीन फ़िस्से हैं। किताबुल जनाइज़ में ये हदीष मुफ़स्सल गुज़र चुकी है।

**बाब 179 : रसूले करीम (ﷺ) का (यहूद से) यूँ फ़र्मांना (दुनिया व आख़िरत में) सलामती पाओगे.**

मक्क़बरी ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से इस हदीष को नक़ल किया है।

**बाब 180 : अगर कुछ लोग जो दारुल हरब में मुक्कीम हैं, इस्लाम ले आएँ और वो माल व जायदाद मन्कूला व ग़ैर मन्कूला के मालिक है तो वो उन ही की होगी**

١٧٩- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْيَهُودِ:

اسْلِمُوا تَسْلَمُوا

قَالَ السَّقْفَرِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

١٨٠- بَابُ إِذَا اسْلَمَ قَوْمٌ فِي دَارِ

الْعَرَبِ وَلَهُمْ مَالٌ وَأَرْضُونَ فَهِيَ

لَهُمْ

ये बाब लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने हफ़िया का रद्द किया है। वो कहते हैं अगर हरबी काफ़िर मुसलमान होकर दारुल हरब में रहे फिर मुसलमान उस मुल्क को फ़तह करें तो जायदाद ग़ैर मन्कूला या 'नी ज़मीन बाग़ वगैरह उसको न मिलेगी मुसलमानों की मिल्क हो जाएगी।

3058. हमसे महमूद बिन गीलान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुर्रज्जाक ने खबर दी, उन्होंने कहा हमको मअमर ने खबर दी उन्हें जुहरी ने, उन्हें अली बिन हुसैन ने, उन्हें अमर बिन इम्रान बिन अफ्रान (रज़ि.) ने और उनसे उसामा बिन जैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हजतुल विदाअ के मौके पर अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कल आप (मक्का में) कहीं क्रयाम करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अजी! अकील (रज़ि.) ने हमारे लिये कोई घर छोड़ा ही कब है? फिर फ़र्माया कि कल हमारा क्रयाम ख़ैफ़ बनी किनाना के मुक़ाम मुहम्मब में होगा, जहाँ पर कुरैश ने कुफ़्र पर क़सम खाई थी। वाकिया ये हुआ था कि बनी किनाना और कुरैश ने (यहीं पर) बनी हाशिम के खिलाफ़ इस बात की क़समें खाई थीं कि उनसे ख़रीद व फ़रोख़्त की जाए और न उन्हें अपने घरों में आने दें। जुहरी ने कहा कि ख़ैफ़ वादी को कहते हैं। (राजेअ: 1588)

**तुसीह:**

हुआ ये था कि अबू तालिब अब्दुल मुत्तलिब के बड़े बेटे थे। उनकी वफ़ात के बाद जाहिलियत की रस्म के मुवाफ़िक़ कुल मिल्क इस्लाक पर अबू तालिब ने कब्ज़ा कर लिया। जब अबू तालिब का इतिक़ाल हुआ तो उनके इतिक़ाल के कुछ दिन बाद आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत अली (रज़ि.) तो मदीना मुनव्वरा हिज़रत कर आए, अकील उस वक़्त तक ईमान न लाए थे, वो मक्का में ही रहे। उन्होंने तमाम जायदाद और मकानात बेचकर उसका रुपया ख़ूब उड़ाया। इस हदीष से बाब का मतलब इमाम बुखारी (रह.) ने इस तरह निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने मक्का फ़तह होने के बाद भी उन मकानों और जायदाद की बेअ क़ायम रखी और अकील की मिल्कियत तस्लीम कर ली, तो जब अकील के तस्लूफ़ात इस्लाम से पहले नाफ़िज़ हुए तो इस्लाम के बाद बतरीके औला नाफ़िज़ रहेंगे।

व क़ाललकुतुबी यहतमिलु अय्यकून मुरादुलबुखारी अन्नन्नबिय्य (ﷺ) मिन अहलि मक्कत बिअम्वालिहिम व दुरिहिम मिन क़ल्बि अय्युसल्लिमू व सलकहाऊदी अशशारिहु तरीक़ल्जम्द फ़क़ाल लअल्लहुम कतबू मर्रातिन फी मवातिन. (फ़तह) या'नी शायद इमाम बुखारी (रह.) की मुराद ये है कि रसूले करीम (ﷺ) ने मक्का वालों पर उनके इस्लाम से पहले ही ये एहसान फ़र्मा दिया था कि उनके माल और घर हर हालत में उनकी ही मिल्कियत तस्लीम कर लिये, इस तरह अकील (रज़ि.) के लिये अपने घर सब पहले ही बख़्श दिये थे।

3059. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे जैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हनी नामी अपने एक गुलाम को (सरकारी) चरागाह का हाकिम बनाया, तो उन्हे ये हिदायत की, ऐ हनी! मुसलमानों से अपने हाथ रोके रखना (उन पर जुल्म न करना) और मज़्लूम की बददुआ से हर वक़्त बचते रहना, क्योंकि मज़्लूम की दुआ कुबूल होती है। और हौं! इब्ने औफ़ और इब्ने अफ़फ़ान और उन जैसे (अमीर सहाबा) के मवेशियों के बारे में तुझे डरते रहना चाहिये। (या'नी उनके अमीर

٣٠٥٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ بْنِ عُثَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: ((قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيْنَ تَنْزِلُ عَدَا - فِي حَجَّهِ - قَالَ: ((وَهَلْ تَرَى لَنَا عَقِيلَ مَثَلًا؟)) ثُمَّ قَالَ: ((نَحْنُ نَأْكُلُونَ عَدَا بِحَقِّهِ نَبِي كَنَانَةَ الْمُحَضَّبِ حَيْثُ قَامَتِ قُرَيْشٌ عَلَى الْكُفْرِ)). وَذَلِكَ أَنَّ نَبِي كَنَانَةَ خَالَفَتْ قُرَيْشًا عَلَى نَبِي هَاشِمٍ أَنَّ لَا يَبْغَوْهُمْ وَلَا يُؤْذَوْهُمْ)) قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَالْمُخَيَّفُ الْوَادِي. [راجع: ١٥٨٨]

٣٠٥٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّ عَمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ اسْتَمْعَلَ مَوْلَى لَهُ يُدْعَى هُبَاً عَلَى الْحَجَى فَقَالَ: يَا هُبَى اسْمِعْ جَنَاحَكَ عَنِ الْمُسْلِمِينَ، وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ مُسْتَجَابَةٌ. وَأَذِيعِلْ رَبَّ الصُّرَيْمَةَ وَرَبَّ

होने की वजह से दूसरे गरीबों के मवेशियों पर चरागाह में उन्हें मुकद्दम रखना) क्योंकि अगर उनके मवेशी हलाक भी हो जाएंगे तो ये उमरा अपने खजूर के बाग़ात और खेतों से अपनी मज़ाश हासिल कर सकते हैं। लेकिन गिने-चुने ऊँटों और गिनी-चुनी बकरियों का मालिक (गरीब) कि अगर उसके मवेशी हलाक हो गये, तो वो अपने बच्चों को लेकर मेरे पास आएगा और फ़रियाद करेगा या अमीरल मोमिनीन! या अमीरल मोमिनीन! (उनको पालना तेरा बाप न हो) तो क्या मैं उन्हें छोड़ दूँगा? इसलिये (पहले ही से) उनके लिये चारे और पानी का इतिज़ाम कर देना मेरे लिये इससे ज़्यादा आसान है कि मैं उनके लिये सोने-चाँदी का इतिज़ाम करूँ और अल्लाह की क़सम! वो (अहले मदीना) ये समझते होंगे कि मैंने उनके साथ ज़्यादाती की है क्योंकि ये ज़मीनें उन्हीं की हैं। उन्होंने जाहिलियत के ज़माने में उसके लिये लड़ाइयाँ लड़ी हैं और इस्लाम लाने के बाद भी उनकी मिल्कियत को बहाल रखा गया है। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर वो अम्बाल (घोड़े वगैरह) न होते जिन पर जिहाद में लोगों को सवार करता हूँ तो उनके इलाक़ों में एक बालिशत ज़मीन को भी मैं चरागाह न बनाता।

**तशरीह:** हज़रत अब्दुलमान बिन ओफ़ और हज़रत उस्मान गनी (रज़ि.) दोनों मालदार थे, हज़रत उमर (रज़ि.) का मतलब ये था कि उनके तमव्वुल से मरऊब होकर उनके जानवरों को मुकद्दम न किया जाए बल्कि गरीबों के जानवरों का हक़ पहले है। अगर गरीबों के जानवर भूखे मर गये तो बैतुलमाल से उनको नक़द वज़ीफ़ा देना पड़ेगा।

आखिर हदीष में हज़रत उमर (रज़ि.) का जो क़ौल मरवी है उसी से बाब का तर्जुमा निकलता है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ज़मीन की निस्बत फ़र्माया कि इस्लाम की हालत में भी उन ही की रही, तो मा'लूम हुआ कि काफ़िर की जायदाद ग़ैर-मन्कूला भी इस्लाम लाने के बाद उसी की मिल्क में रहती है गो वो काफ़िर दारुल हरब में रहे। (वहीदी)

## बाब 181 : खलीफ़ा-ए-इस्लाम की तरफ़ से मरदुम शुमारी कराना

## ١٨١- بَابُ كِتَابَةِ الْإِمَامِ النَّاسِ

कहते हैं कि ये मरदुम शुमारी (जनगणना) जंगे उहूद या जंगे खन्दक या सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर की गई।

3060. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो लोग इस्लाम का कलिमा पढ़ चुके हैं उनके

الْغَنِيمَةِ، وَإِيَّايَ وَنَعَمْ ابْنِ عَوْفٍ وَنَعَمْ ابْنِ عَفَّانٍ، لِأَنَّهُمَا إِنْ تَهْلِكَ مَاشِيَتُهُمَا يَرْجِعَانِ إِلَى نَحْلٍ وَزَرْعٍ، وَإِنْ رُبَّ الصُّرْمَةِ وَرُبَّ الْغَنِيمَةِ إِنْ تَهْلِكَ مَاشِيَتُهُمَا يَأْتِي بَيْنَهُ قَيْلُولٌ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَفْتَارِكُهُمْ أَنَا لَا أَمَا لَكَ؟ فَالْمَاءُ وَالْكَلَأُ أُنْسَرُ عَلَى مِنَ الذَّهَبِ وَالْوَرَقِ، وَأَيْمُ اللَّهِ إِنَّهُمْ لَيَرَوْنَ أَنِّي قَدْ ظَلَمْتُهُمْ، إِنَّهَا لَيَلَاذُهُمْ، فَقَاتِلُوا عَلَيْهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَأَسْلَمُوا عَلَيْهَا فِي الْإِسْلَامِ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لَا الْمَالُ الَّذِي أُخِمْ عَلَيْهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا حَمَيْتُ عَلَيْهِمْ مِنْ بِلَادِهِمْ شَيْئًا).

٣٠٦٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ

नाम लिखकर मेरे पास लाओ। चुनौचे हमने डेढ़ हजार मर्दों के नाम लिखकर आप (ﷺ) की खिदमत में पेश किये और हमने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया हमारी ता'दाद डेढ़ हजार हो गई है। अब हमको क्या डर है। लेकिन तुम देख रहे हो कि (आँहज़रत ﷺ के बाद) हम फ़िलों में इस तरह घिर गये हैं कि अब मुसलमान तन्हा नमाज़ पढ़ते हुए भी डरने लगा है।

हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, और उनसे आ'मश ने (मज़कूरा बाला सनद के साथ) कि हमने पाँच सौ मुसलमानों की ता'दाद लिखी (हज़ार का ज़िक्र इस रिवायत में नहीं हुआ) और अबू मुआविया ने (अपनी रिवायत में) यूँ बयान किया कि छः सौ से सात सौ तक।

अबू मुआविया की रिवायत को इमाम मुस्लिम और अहमद और निसाई और इब्ने माजा ने निकाला है। व सलक़हाबदी अश्शारिह तरीक़लजम्ह फ़क्राल लहुम कतबू मर्रातिन फ़ी मवातिन या'नी ता'दाद में इख़िलाफ़ इसलिये हुआ कि शायद उन लोगों ने कई जगह मरदुम शुमारी (जनगणना) की हो, कुछ ने ये भी कहा कि डेढ़ हजार से मुराद मर्द व औरत और बच्चे गुलाम जो भी मुसलमान सब मुराद हैं और छः सौ से सात सौ तक ख़ास मर्द मुराद हैं और पाँच सौ से ख़ालिस लड़ने वाले मुराद हैं। व फ़िल्हदीषि किताबति दवाबीनलजुयूशि व क़द यत अद्यनु ज़ालिक इन्दलइहति याजि इला तमीज़िम्मय्युस्लिह लिलमुक़ाबलति बिमन ला युस्लिह. (फ़ह)

हुज़ैफ़ा (रज़ि.) का मतलब ये था कि आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में तो हम डेढ़ हजार का शुमार होने पर निडर हो गये थे और अब हज़ारों-लाखों मुसलमान हैं, पर हज़रत कहते हुए डरते हैं। कोई कोई तो डर के मारे अपनी नमाज़ अकेले पढ़ लेता है और मुँह से कुछ नहीं कह सकता। ये हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने उस ज़माने में कहा जब वलीद बिन उक्बा हज़रत इब्मान (रज़ि.) की तरफ़ से कूफ़ा का हाकिम था और नमाज़ इतनी देर करके पढ़ता कि मज़ाज़ल्लाह। आख़िर कुछ मुत्तक़ी लोग अब्बले वक़्त नमाज़ पढ़ लेते फिर जमाअत में भी उसके डर से शरीक हो जाते।

3061. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अम् बिन दीनार ने, उनसे अबू मअबद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया किएक शख़्स नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा नाम फ़लौ जिहाद में जाने के लिये लिखा गया है। इधर मेरी बीवी हज़्न करने जा रही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जा और अपनी बीवी के साथ हज़्न कर आ। (राजेअ: 1862)

النَّبِيُّ : ((اَكْتُبُوا لِي مَنْ تَلَفَطَ بِالْإِسْلَامِ مِنَ النَّاسِ)). فَكُتِبَ لَهُ أَلْفًا وَخَمْسِمِائَةً رَجُلًا. فَقُلْنَا: نَخَافُ وَنَحْزُنُ أَلْفًا وَخَمْسِمِائَةً؟ فَلَقَدْ رَأَيْنَا ابْنَيْنَا حَتَّى إِنَّ الرُّجُلَ لَيَصْلِي وَحَدَهُ وَهُوَ خَائِفٌ)).

حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حُمَيْرَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ ((فَوَجَدْنَاهُمْ خَمْسِمِائَةً)). قَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ: ((مَا بَيْنَ سِتْمِائَةٍ إِلَى سِتْمِائَةٍ)).

٣٠٦١- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ أَبِي جُرَيْجٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كُنْتُ فِي غَزْوَةٍ كَذَا وَكَذَا، وَفَرَأَيْتُ حَاجَةً، قَالَ: ((ارْجِعْ فَصَحِّحْ مَعَ أَمْرَائِكَ)). [راجع: ١٨٦٢]

इससे भी नाम लिखे जाने का पुबूत हुआ, यही बाब का तर्जुमा है। ये भी मा'लूम हुआ कि कोई औरत हज़्न को जाए तो ज़रूरी है कि उसका शौहर या कोई महरम उसके साथ हो।

बाब 182 : अल्लाह तआला कभी अपने दीन की मदद एक फ़ाजिर शख्स से भी करा लेता है

3062. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने (दूसरी सनद) मुझसे महमूद बिन गीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मज़मर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इब्ने मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा में मौजूद थे। आप (ﷺ) ने एक शख्स के बारे में जो अपने को मुसलमान कहता था, फ़र्माया कि ये शख्स दो ज़ख़ वालों में से है। जब जंग शुरू हुई तो वो शख्स (मुसलमानों की तरफ़ से) बड़ी बहादुरी से लड़ा और ज़ख़मी भी हो गया। सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जिसके बारे में आपने फ़र्माया था कि वो जहन्नम में जाएगा। आज तो वो बड़ी बे-जिगरी (निडरता) के साथ लड़ा है और (ज़ख़मी होकर) मर भी गया है। आप (ﷺ) ने अब भी वही जवाब दिया कि वो जहन्नम में गया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुम्किन था कि कुछ लोगों के दिल में कुछ शुब्हा पैदा हो जाता। लेकिन अभी लोग उसी ग़ौरो-फ़िक्क में पड़े थे कि किसी ने बताया कि अभी वो मरा नहीं है। अल्बत्ता ज़ख़म कारी है। फिर जब रात आई तो उसने ज़ख़मों की ताब न ला कर खुदकुशी कर ली। जब आँहज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने फ़र्माया अल्लाहु अकबर! मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। फिर आपने बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया, और उन्होंने लोगों में ये ऐलान किया कि मुसलमान के सिवा जन्नत में कोई और दाख़िल नहीं होगा और अल्लाह तआला कभी अपने दीन की इम्दाद किसी फ़ाजिर शख्स से भी करा लेता है।

(दीगर मक़ाम : 4293, 4203, 6606)

۱۸۲- بَابُ إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ الدِّينَ

بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ

۳۰۶۲- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. ح. وَحَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ غِيلَانَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ لِرَجُلٍ مِمَّنْ يَدْعِي الْإِسْلَامَ: «هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ». فَلَمَّا خَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ قِتَالًا شَدِيدًا فَأَصَابَهُ جَرَاحَةٌ. فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، الَّذِي قُلْتَ إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَإِنَّهُ قَاتَلَ الْيَوْمَ قِتَالًا شَدِيدًا، وَلَقَدْ مَاتَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «(إِلَى النَّارِ)». قَالَ فَكَأَذَ بَعْضُ النَّاسِ أَنْ يَرْتَابَ. فَيَسْتَأْهِمُ عَلَى ذَلِكَ إِذْ قِيلَ إِنَّهُ لَمْ يَمُتْ، وَلَكِنْ بِهِ جَرَاخٌ شَدِيدٌ. فَلَمَّا كَانَ مِنَ اللَّيْلِ لَمْ يَعْصِرْ عَلَى الْجِرَاحِ فَلَقِيَ نَفْسَهُ، فَأَخْبَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِذَلِكَ فَقَالَ: «اللَّهُ أَكْبَرُ، أَشْهَدُ أَنِّي عِنْدَ اللَّهِ وَرَسُولُهُ». ثُمَّ أَمَرَ بِأَنَّا نَقْدِي فِي النَّاسِ: «أَنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا نَفْسٌ مُسْلِمَةٌ، وَأَنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ هَذَا الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ».

[أطرافه في: ۴۲۹۳، ۴۲۰۳، ۶۶۰۶].

**तारीह:**

कहते हैं उस शख्स का नाम फज़्मान था जो बज़ाहिर मुसलमान हो गया था, उसकी मुजाहिदाना कैफ़ियत देखकर शैतान ने बज़ाहिर तो लोगों को यूँ बहकाया कि ऐसा शख्स जो अल्लाह की राह में इस तरह लड़कर मारा जाए क्यूँकर जहन्नमी हो सकता है। ये हदीष उस हदीष के खिलाफ़ नहीं है कि हम मुश्रिक से मदद न लेंगे क्योंकि वो एक मौक़े के साथ खास है और जंगे हुनैन में सफ़वान बिन उमय्या आपके साथ थे। हालाँकि वो मुश्रिक थे और दूसरे ये कि ये शख्स बज़ाहिर तो मुसलमान



था। मगर आपको वहा से मा'लूम हो गया कि ये मुनाफ़िक है और उसका खात्मा बुरा होगा। (वहीदी)

**बाब 183 : जो शख्स मैदाने जंग में जबकि दुश्मन का खौफ़ हो इमाम के किसी नए हुक्म के बग़ैर अमीरे लश्कर बन जाए**

۱۸۳- بَابُ مَنْ تَأَمَّرَ فِي الْحَرْبِ مِنْ غَيْرِ إِمْرَةٍ إِذَا خَافَ الْعَدُوَّ

इस्लाम पर कोई नाजुक वक़्त आ जाए कि मैदाने जंग मुसलमानों के हाथ से निकल रहा हो और क़यादत भी ख़त्म कर दी गई हो तो कोई भी समझदार आदमी फ़ौरी तौर पर कण्ट्रोल कर ले तो ये जाइज़ है जैसा कि हदीसे ज़ेल में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के अमीरे लश्कर बन जाने का ज़िक्र है।

3063. हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उलथ्या ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मदीना में) ग़ज़व-ए-मौता के मौक़े पर ख़ुत्बा दिया, (जबकि मुसलमान सिपाही मौता के मैदान में दादे शुजाअत दे रहे थे) आपने फ़र्माया, कि अब इस्लामी अलम ज़ैद बिन हारिषा ने सम्भाला और उन्हें शहीद कर दिया गया, फिर जा'फ़र ने अलम अपने हाथ में उठा लिया और वो भी शहीद कर दिये गये। अब अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अलम थामा, ये भी शहीद कर दिये गये। आख़िर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने किसी नई हिदायत के बग़ैर इस्लामी अलम उठा लिया है। और उनके हाथ फ़तह हासिल हो गई, और मेरे लिये उसमें कोई खुशी की बात नहीं थी या आपने फ़र्माया कि उनके लिये कोई खुशी की बात नहीं थी कि वो (शुहदा) हमारे पास ज़िन्दा होते। (क्योंकि शहादत के बाद वो जन्नत में ऐश कर रहे हैं) और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। (राबेअ: 1246)

۳۰۶۳- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: (وَأَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ عَنْ غَيْرِ إِمْرَةٍ فَفُتِحَ عَلَيْهِ، وَمَا يَسُورُنِي - أَوْ قَالَ: مَا يَسُورُهُمْ - أَنَّهُمْ عِنْدَنَا. وَقَالَ: وَإِنْ عَيْنِي لَتَلْقَاَنَّ)).  
[راجع: ۱۲۴۶]

**बाब 184 : मदद के लिये फ़ौज रवाना करना**

۱۸۴- بَابُ الْغَوْنِ بِالْمَدَدِ

3064. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अदी और सहल बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में रअल, ज़क़ान, उसय्या और बनू लहयान क़बाईल के कुछ लोग आए और यक़ीन दिलाया कि वो लोग इस्लाम ला चुके हैं और उन्होंने अपनी काफ़िर क़ौम के मुक़ाबिल इमदाद और ता'लीम व तबलीग़ के

۳۰۶۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ وَسَهْلُ بْنُ يُونُسَ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: (رَأَى النَّبِيَّ ﷺ أَنَاءَ إِتَاءِهِ وَعَلَى وَدَّخْوَانٍ وَغُصْبَةٍ وَتَبَوُّ لِحْيَانٍ فَرَزَعُمَا أَنَّهُمْ قَدْ اسْتَلَمُوا، وَاسْتَمَدُّوهُ عَلَى قَوْمِهِمْ، فَأَمَّتْهُمْ

लिये आपसे मदद चाही। तो नबी करीम (ﷺ) ने 70 अंगारियों को उनके साथ कर दिया। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हम उन्हें क़ारी कहा करते थे। वो लोग दिन में जंगल से लकड़ियाँ जमा करते और रात में नमाज़ पढ़ते रहते। ये हज़रात उन क़बीले वालों के साथ चले गये, लेकिन जब बीरे मक़ना पर पहुँचे तो उन क़बीले वालों ने उन सहाबा के साथ दगा की और उन्हें शहीद कर डाला, हज़ूर अकरम (रज़ि.) ने एक महीना तक (नमाज़ में) कुनूते-नाज़िला पढ़ी और रज़ल और ज़क्वान और बनू लहयान के लिये बददुआ करते रहे। क़तादा ने कहा कि हमसे अनस (रज़ि.) ने कहा कि (उन शुहदा के बारे में) कुर्आन मजीद में हम ये आयत यूँ पढ़ते रहे (तर्जुमा) हौं! हमारी क़ौम (मुस्लिम) को बता दो कि हम अपने रब से जा मिले। और वो हमसे राजी हो गया है और हमें भी उसने खुश किया है। फिर ये आयत मनसूख हो गई थी। (राजेज़: 1001)

कहते हैं कि उन क़ारियों को आमिर बिन तुफ़ैल ने क़त्ल किया, उसने बनू सुलेम के आदमी उन पर जमा किये और रज़ल और ज़क्वान और बनी लहयान ने आसिम (रज़ि.) और उनके साथियों को क़त्ल किया, हज़रत खुबैब (रज़ि.) को बेचा, आँहज़रत (रज़ि.) को दोनों की ख़बर हो गई इसलिये आपने दोनों के लिये बददुआ की।

### बाब 185 : जिसने दुश्मन पर फ़तह पाई और फिर तीन दिन तक उनके मुल्क में ठहरा रहा

3065. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन इबादा ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने अबू तलहा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को जब किसी क़ौम पर फ़तह हासिल होती, तो मैदाने जंग में तीन रात क़याम करते। रौह बिन इबादा के साथ इस हदीस को मुआज़ और अब्दुल आला ने भी रिवायत किया। दोनों ने कहा हमसे सईद ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से, उन्होंने अनस से, उन्होंने अबू तलहा से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम : 3976)

### बाब 186 : सफ़र में और जिहाद में माले ग़नीमत को तक्सीम करना

النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَعِينُ مِنَ الْأَنْصَارِ، قَالَ أَنَسُ: كُنَّا نُسَمِّيهِمُ الْفُرَاءَ، يَخْطُبُونَ بِالنَّهَارِ وَيُصَلُّونَ بِاللَّيْلِ. فَنَاطِلُقُوا بِهِمْ حَتَّى نَلْقَوْا بَرًّا مَغُونَةً غَدَرُوا بِهِمْ وَقَتَلُوهُمْ. فَكُنْتُ شَهْرًا يَذْعُو عَلَى رِغْلِ وَذَكَوَانٍ وَتَبَى لِحَيَّانٍ. قَالَ قَتَادَةُ: وَحَدَّثَنَا أَنَسٌ أَنَّهُمْ قَرَأُوا بِهِمْ قُرْآنًا: أَلَا نَلْقَوْا قَوْمَنَا، بَأَنَّا قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا، فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا. ثُمَّ رُفِعَ ذَلِكَ (بَعْدَ). [راجع: ١٠٠١]

### ١٨٥- بَابُ مَنْ غَلَبَ الْعَدُوَّ، فَأَقَامَ

عَلَى غَرَضَتِهِمْ ثَلَاثًا

٣٠٦٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: ((ذَكَرَ لَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ إِذَا ظَهَرَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْغُرُصَةِ ثَلَاثَ لَيَالٍ)). تَابِعَهُ مُعَاذٌ وَعَبْدُ الْأَعْلَى: ((حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)). [طره ن: ٣٩٧٦]

### ١٨٦- بَابُ مَنْ قَسَمَ الْغَنِيمَةَ فِي

غَزْوِهِ وَسَفَرِهِ

और राफ़ेअ बिन खदीज (रज़ि.) ने कहा कि हम जुलहुलैफ़ा में नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, हमको बकरियाँ और कैंट ग़नीमत में मिले थे, और नबी करीम (ﷺ) ने दस बकरियों को एक कैंट के बराबर करार देकर तक्सीम की थी।

3066. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़त्तादा ने और उन्हें अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मक्कामे जिअराना से, जहाँ आपने जंगे हुनैन का माले ग़नीमत तक्सीम किया था, उमरह का एहराम बाँधा था। (राजेअ: 1778)

हुनैन एक वादी है मक्का से तीन मील पर जहाँ पर बड़ी लड़ाई हुई थी। बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि आपने जिअराना में ऐन सफ़र में अम्वाले ग़नीमत तक्सीम फ़र्माया, आजकल अय्यामे हज्ज में हरम शरीफ़ से जिअराना को हर वक़्त गाड़ियाँ मिलती हैं। 1970 के हज्ज में मुझको भी जिअराना जाने का इतिफ़ाक़ हुआ। जहाँ एक वसीअ मस्जिद और कुआ है, पुरफ़िज़ा जगह है।

**बाब 187 : किसी मुसलमान का माल मुश्रीकीन लूटकर ले जाएँ फिर (मुसलमानों के ग़लबे के बाद) वो माल उस मुसलमान को मिल गया**

3067. और अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने कहा, कि हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उनका एक घोड़ा भाग गया था और दुश्मनों ने उसे पकड़ लिया था। फिर मुसलमानों को ग़लबा हासिल हुआ तो उनका घोड़ा उन्हें वापस कर दिया गया। ये वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) के अहदे मुबारक का है। इसी तरह उनके एक गुलाम ने भागकर रोम में पनाह ली थी। फिर जब मुसलमानों को उस मुल्क पर ग़लबा हासिल हुआ तो ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उनका गुलाम उन्हें वापस कर दिया। ये वाक़िया नबी करीम (ﷺ) के बाद का है। (दीगर मक्काम: 3068, 3069)

**तशरीह :** इस मसला में इख़िलाफ़ है। शाफ़िइया और अहले हदीष यही कहते हैं कि काफ़िर मुसलमानों के किसी माल के मालिक नहीं हो सकते और जब किसी मुसलमान का माल उनके पास मिले तो वो उस मुसलमान को दिला दिया जाएगा ख़्वाह माल तक्सीम हो चुका हो या न हो चुका हो। और इमाम मालिक (रह.) और अहमद के नज़दीक तक्सीम के बाद उनको नहीं दिलाया जाएगा। और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) फ़र्माते हैं कि काफ़िर जब माल लूट ले जाए और अपने मुल्क में पहुँच जाएँ तो वो उसके मालिक हो जाते हैं और इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर उनका रद्द किया है।

3068. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी कि इब्ने उमर (रज़ि.) का एक

وَقَالَ رَافِعٌ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَدِي  
الْخَلِيفَةِ فَأَصَبْنَا غَنَمًا وَإِبِلًا، فَعَدَلْ عَشْرَةٌ  
مِنَ الْغَنَمِ بِبَعِيرٍ.

٣٠٦٦- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا أَخْبَرَهُ  
قَالَ: اغْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْجِجَارَانَةِ حَتَّى  
قَسَمَ غَنَائِمَ حُنَيْنٍ. [راجع: ١٧٧٨]

١٨٧- بَابُ إِذَا غَنِمَ الْمُشْرِكُونَ  
مَالَ الْمُسْلِمِ ثُمَّ وَجَدَهُ الْمُسْلِمُ  
٣٠٦٧- وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ  
اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا قَالَ: ((ذَهَبَ قَوْمٌ لَهُ فَأَخَذَهُ  
الْعَدُوُّ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ الْمُسْلِمُونَ فَرَدُّ عَلَيْهِ  
فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. وَأَبَى عَبْدٌ لَهُ  
فَلَحِقَ بِالرُّومِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ الْمُسْلِمُونَ  
فَرَدُّهُ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ بَعْدَ النَّبِيِّ  
ﷺ)). [طرفاء في: ٣٠٦٨, ٣٠٦٩].

٣٠٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي  
نَافِعٌ أَنَّ عَبْدًا لَابْنِ عُمَرَ أَبَى فَلَحِقَ

गुलाम भागकर रोम के काफ़िरोँ में मिल गया था। फिर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) की सरक़र्दगी में (इस्लामी लश्कर ने) उस पर फ़तह पाई और ख़ालिद (रज़ि.) ने वो गुलाम उनको वापस कर दिया। और ये कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का एक घोड़ा भागकर रोम पहुँच गया था। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को जब रोम पर फ़तह हुई, तो उन्होंने वो घोड़ा भी अब्दुल्लाह (रज़ि.) को वापस कर दिया था। (राजेअ: 3067)

3069. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक्ब़ा ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस दिन इस्लामी लश्कर की मुठभेड़ (रूमियों से) हुई तो वो एक घोड़े पर सवार थे। सालारे फौज हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की तरफ़ से ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) थे। फिर घोड़े को दुश्मनों ने पकड़ लिया, लेकिन जब उन्हें शिकस्त हुई तो हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने घोड़ा अब्दुल्लाह (रज़ि.) को वापस कर दिया। (राजेअ: 3067)

मा'लूम हुआ कि किसी मुसलमान का कोई माल किसी दुश्मन हर्बी काफ़िर के हवाले पड़ जाए तो फ़तह इस्लाम के बाद वो माल उसके असली मालिक मुसलमान ही को मिलेगा वो अम्वाले ग़नीमत में दाख़िल नहीं किया जाएगा।

### बाब 188 : फ़ारसी या और

#### किसी भी अज्मी जुबान में बोलना

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि (अल्लाह की निशानियों में) तुम्हारी जुबान और रंग का इख़ितलाफ़ भी है। और (अल्लाह तआला का इशार्द कि) हमने कोई रसूल नहीं भेजा, लेकिन ये कि वो अपनी क़ौम का हम जुबान होता था। (इब्राहीम: 4)

इमाम बुखारी (रह.) का इस बाब के लाने से मतलब है कि हर एक जुबान का सीखना और बोलना दुस्त है क्योंकि सब जुबानें अल्लाह की तरफ़ से हैं। अंग्रेज़ी, हिन्दी का भी यही हुक्म है।

और दूसरी रिवायत में है व इन मिन उम्मतिन इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर तो मा'लूम हुआ कि हर एक जुबान पैग़म्बर की जुबान है, क्योंकि उस क़ौम में जो पैग़म्बर आया होगा वो उन ही की जुबान बोलता होगा। इन आयतों से ये प्राबित हुआ कि अंग्रेज़ी, हिन्दी, मराठी, रूसी, जर्मनी जुबानें सीखना और बोलना दुस्त है। जुबानों का तअस्सुब इंसानी बदबख़्ती की दलील है, हर जुबान से मुहब्बत करना ऐन मंशा-ए-इलाही है।

लफ़्ज़े रताना राअ की ज़ेर और ज़बर के साथ ग़ैर अरबी में बोलना। आयत, वमा अर्सलना अल्ख़ में मुसन्निफ़ का इशारा है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रिसालत दुनिया की तमाम क़ौमों के लिये है इसलिये भी ज़रूरी है कि आप दुनिया की सारी जुबानों की हिमायत करें। उनको खुद या बज़रिया तर्जुमान समझें।

بِالرُّومِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ قُوَّةَهُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ. وَأَنَّ فَرَسًا لِابْنِ عُمَرَ عَارَ فَلَجِقَ بِالرُّومِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ قُوَّةُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ. (راجع: ٣٠٦٧)

٣٠٦٩ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ عَقَبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّهُ كَانَ عَلَى فَرَسٍ يَوْمَ لَقِيَ الْمُسْلِمُونَ، وَأَمِيرُ الْمُسْلِمِينَ يَوْمَئِذٍ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ بَعَثَهُ ابْنُ بَكْرٍ، فَأَخَذَهُ الْغَنُوءُ، فَلَمَّا هَرِمَ الْغَدُورُ رَدَّ خَالِدُ فَرَسَهُ.)) (راجع: ٣٠٦٧)

### ١٨٨ - بَابُ مَنْ تَكَلَّمَ بِالْفَارِسِيَّةِ

#### وَالرُّطَانَةِ

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَاعْتِلَافُ السِّبْكِكُمْ وَالْوَايَكُمْ﴾ [الرُّوم: ٢٢] وَقَالَ: ﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ قَوْمِهِ﴾ [إِبْرَاهِيم: ٤].

3070. हमसे अमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उन्हें हज़ल बिन अबी सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन मीना ने ख़बर दी, कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया, कि मैंने (जंगे ख़ंदक्र में आँहज़रत ﷺ को भूखा पाकर चुपके से) अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हमने एक छोटा सा बकरी का बच्चा ज़िबह किया है और एक साँझ जौ का आटा पकवाया है। इसलिये आप दो चार आदमियों को साथ लेकर तशरीफ़ लाएँ। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने बाआवाज़े बुलन्द फ़र्माया, ऐ ख़न्दक्र खोदने वालों! जाबिर ने दा'वत का खाना तैयार कर लिया है। आओ चलो, जल्दी चलो। (दीगर मक़ाम : 4101, 4102)

حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا حَظَلَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ قَالَ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَةٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَبَحْنَا بَهِيمَةً لَنَا وَطَخْنَتْ صَاغًا مِنْ شَعِيرٍ فَصَالَ أَنْتَ وَنَفَرْنَا فَصَاخَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا أَهْلَ الْخَنْدَقِ، إِنَّ جَابِرًا قَدْ صَنَعَ مَوْرًا، فَحِيلًا بِكُمْ)).

[طرمه ي. ٥١٠١، ٥١٠٢، ٥١٠٣]

**तशरीह :** लफ़्जे सूरन फ़ारसी है जो आपने इस्ते'माल किया, इसी से बाब का तर्जुमा साबित हुआ। फ़सादाते इंसानी में बड़ा फ़साद ख़तरनाक लिसानी (भाषागत या जुबानी) तअस्सुब भी है। हालाँकि सारी जुबानें अल्लाह पाक ही की पैदा की हुई है। इस्लाम ने सख़्ती से इस तअस्सुब का मुकाबला किया है। आज के दौर में जुबानों पर भी दुनिया में बड़े-बड़े फ़सादात बरपा हैं जो सब जहालत व ज़लालत व कज़-रवी के नतीजे हैं। जो लोग किसी भी जुबान से तअस्सुब बरतते हैं उनकी ये इतिहाई हिमाक़त है।

लफ़ज़ सूरन से दा'वत का खाना मुराद है ये फ़ारसी लफ़ज़ है। हज़रत इमाम (रह.) ने उस हदीष के जुअफ़ पर भी इशारा किया है जिसमें मज़कूर है कि दोज़खी लोग फ़ारसी जुबान बोलेंगे।

3071. हमसे हब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद बिन सईद ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे उम्मे ख़ालिद बिन ख़ालिद बिन सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने वालिद के साथ हाज़िर हुई, मैं उस वक़्त एक ज़र्द रंग की क़मीज़ पहने हुए थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, सन: सन:; अब्दुल्लाह ने कहा कि ये लफ़ज़ हब्शी जुबान में इम्दा के मा'नी में बोला जाता है। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं मुह्ये नुबुव्वत के साथ (जो आपकी पुश्त पर थी) खेलने लगी तो मेरे वालिद ने मुझे डाँटा, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे मत डाँटो, फिर आपने उम्मे ख़ालिद को (लम्बी उग्र की) दुआ दी कि इस क़मीज़ को ख़ूब पहन और पुरानी कर, फिर पहन और पुरानी कर, और फिर पहन और पुरानी कर। अब्दुल्लाह ने कहा कि चुनाँचे ये क़मीज़ इतने दिनों तक बाक़ी रही कि जुबानों पर उसका चर्चा होने लगा। (दीगर मक़ाम : 3874, 5823)

٣٠٧١ - حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ خَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أُمِّ خَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ قَالَتْ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَعَ أَبِي وَعَلَى فَيْصَمٍ أَصْفَرٍ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((سَنَةٌ سَنَةٌ)). قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: وَهِيَ بِالْحَشِيَّةِ حَسَنَةٌ. قَالَتْ: فَلَقِيتُ الْقَبْ بِيَخَاتِمِ النَّبِيِّ، فَزَيَّرَنِي أَبِي. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((دَعْنَهَا)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَبْلِي وَأَخْلَقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلَقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلَقِي)). قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَقَبِيتُ: حَتَّى ذَكَرْتُ [طرمه ي. ٣٨٧٤، ٥٨٢٣]

बाब का तर्जुमा इससे ये निकला कि आप (ﷺ) ने सनः सनः फर्माया जो हब्शी जुबान है उम्मे खालिद इतने दिनों ज़िन्दा रही कि वो कपड़ा पहनते पहनते काला हो गया। ये रसूले करीम (ﷺ) की दुआ की बरकत थी।

3072. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हसन बिन अली (रज़ि.) ने सद्का की खजूर में से (जो बैतुलमाल में आई थी) एक खजूर उठा ली और अपने मुँह के क़रीब ले गये। लेकिन औहज़रत (ﷺ) ने उन्हें फ़ारसी जुबान का ये लफ़्ज़ कहकर रोक दिया कि, क़ख़-क़ख़ क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि हम सद्का नहीं खाया करते हैं। (राजेज़: 1485)

۳۰۷۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ أَخَذَ تَمْرَةً مِنْ تَمْرِ الصَّدَقَةِ لِيَجْعَلَهَا لِي فِيهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْفَارِسِيَّةِ: ((كَخْ، كَخْ، كَخْ، أَمَا تَعْرِفُونَ أَنَّا لَا نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ؟)) [راجع: ۱۴۸۵]

**तशरीह:** क़ख़ क़ख़ फ़ारसी जुबान में बच्चों को डांटने के लिये कहते हैं जब वो कोई ग़दा काम करें। इससे भी अरबी के अलावा दुसरी जुबानों का इस्ते'माल जाइज़ षाबित हुआ। ख़ुसूसन फ़ारसी जुबान जो अरबों दराज़ से मुसलमानों की महबूब तरीन जुबान रही है। जिसमें इस्लामियात का एक बड़ा ख़ज़ाना महफूज़ है। मैदाने जंग में हस्बे ज़रूरत हर जुबान का इस्ते'माल जाइज़ है।

फ़ारसी की वजह तस्मिया हाफ़िज़ साहब बयान फ़र्माते हैं, क़ील अन्नहुम यन्तसिबून इला फ़ारस बिन कूमरष व़ख़तुलिफ़ फ़ी कूमरष क़ील अन्नहु मिन ज़ुरियति साम बिन नूह व क़ील मिन ज़ुरियति याफ़ष बिन नूह व क़ील अन्नहु मिन आदम लिसुल्बिही व क़ील अन्नहु आदम नफ़सुहू व क़ील लहुमुल्फुसु लिअन्न जहहमुल्आला वलदुन लहू सछ़अतु अशर वलदन कान कुल्लु मिन्हुम शुजाअन फारिसन फसम्मुल्फुरुस (फत्ह)

या'नी इस मुल्म के बाशिन्दे फ़ारस बिन कोमरष की तरफ़ मन्सूब हैं जो साम बिन नूह या याफ़ष बिन नूह की औलाद में से हैं, कुछ ने उनको आदम का बेटा और कुछ ने खुद आदम भी कहा है। ये भी कहा गया है कि उनके मूरिषे आला के सत्रह लड़के पैदा हुए जो सब बहादुर शहसवार थे इसलिये उनकी औलाद को फ़ारस कहा गया, वल्लाहु आलम।

### बाब 189 : माले ग़नीमत में से तक्सीम से पहले कुछ चुरा लेना

और अल्लाह तआला ने सूरह आले इमरान में फ़र्माया, और जो कोई ख़यानत करेगा वो क़यामत में उसे लेकर आएगा।

3073. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यहा ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें ख़त्ताब फ़र्माया, और गुलूल (ख़यानत) का ज़िक्र फ़र्माया, इस जुर्म की हौलनाकी को वाज़ेह करते हुए फ़र्माया कि मैं तुमसे किसी को भी क़यामत के दिन इस हालत में न पाऊँ कि उसकी गर्दन पर बकरी लदी हुई हो और वो चिल्ला रही हो या उसकी गर्दन पर घोड़ा लदा हुआ हो और वो चिल्ला रहा हो और

۱۸۹- بَابُ الْغُلُولِ، وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَغْلِبْ بَابًا مِمَّا هُنَّ﴾ [ال عمران: १११]

۳۰۷۳- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي حَيَّانٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو زُرْعَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ إِلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ الْغُلُولَ لِعَظَمَتِهِ وَعَظَمِ أَمْرِهِ، قَالَ: ((لَا أَقْبِئُ أَحَدَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ شاةٌ لَهَا ثَغَاءٌ عَلَى رَقَبَتِهِ فَرَمَنَ لَهُ

वो शरूम मुझसे कहे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद फ़र्माइये लेकिन मैं ये जवाब दे दूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। मैं तो (अल्लाह का पैग़ाम) तुम तक पहुँचा चुका था। और उसकी गर्दन पर ऊँट लदा हुआ और चिल्ला रहा हो और वो शरूम कहे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद फ़र्माइए। लेकिन मैं ये जवाब दूँगा कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं तो अल्लाह का पैग़ाम तुम्हें पहुँचा चुका था, या (वो इस हाल में आए कि) वो अपनी गर्दन पर सोना, चाँदी, अस्बाब लादे हुए हो और मुझसे कहे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद कीजिए, लेकिन मैं उससे ये कह दूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं अल्लाह तआला का पैग़ाम तुम्हें पहुँचा चुका था। या उसकी गर्दन पर कपड़े का टुकड़े हवा से हरकत कर रहे हों और वो कहे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी मदद कीजिए और मैं कह दूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं तो (अल्लाह का पैग़ाम) पहले ही पहुँचा चुका था। और अय्यूब सुख्तियानी ने भी अबू हथियान से रिवायत किया है घोड़ा लादे देख जो हिनहिना रहा हो। (राजेअ: 1402)

حَمَمَةً، يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اغْنِي،  
فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا، قَدْ أَبْلَغْتُكَ.  
وَعَلَى رَقَبِهِ بَعِيرٌ لَهُ رُغَاءٌ يَقُولُ: يَا رَسُولَ  
اللَّهِ اغْنِي، فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا، قَدْ  
أَبْلَغْتُكَ. وَعَلَى رَقَبِهِ صَائِتٌ يَقُولُ: يَا  
رَسُولَ اللَّهِ اغْنِي، فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ  
شَيْئًا، قَدْ أَبْلَغْتُكَ. أَوْ عَلَى رَقَبِهِ رِقَاعٌ  
تَخْفِقُ، يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اغْنِي،  
فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ)).  
وَقَالَ أَيُّوبُ عَنْ أَبِي حَتَّانٍ قَوْمٌ لَهُ  
حَمَمَةٌ.

[راجع: 1402]

**तस्रीह:** फ़तहे इस्लाम के बाद मैदाने जंग में जो भी माल मिले वो माले ग़नीमत कहलाता है। उसे बाज़ाब्ता अमीरे इस्लाम के यहाँ जमा कराना होगा। बाद में शरई तक्सीम के तहत वो माल दिया जाएगा। उसमें ख़यानत करने वाला अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा मुजरिम है जैसा कि इस हदीष में बयान हुआ है। बकरी, घोड़ा, ऊँट ये सब चीज़ें मिर्पाल के तौर पर बयान की गई हैं। रिवायत में ग़नीमत में से एक चादर के चुराने वाले को भी दोज़ख़ी कहा गया है। चुनाँचे वो हदीष आगे मज़कूर है। क़ाललमुहलिब हाज़लहदीषु वर्ईदुन लिमन अन्कज़हुल्लाहु अलैहि मिन अहलिल्मआप्सी व यहतमिलु अय्यकूनल्हमलुल्मज़कूर लाबुद् मिन्हु उकूबतुन लहू बिज़ालिक लियफ़्तज़िह अला रुऊसिल्अश्हाद व अम्मा बअद ज़ालिक फइलल्लाहिल्अम्न फी तअज़ीबिही अविल्अफ़िव अन्हु व क़ाल गैरूह हाज़लहदीषु युफस्सिरु कौलहू अज़ज़ व जल्ल याति बिमा गल्ल यौमल्क्रियामति अय याति हिबी हामिलन लहू अला रुक्बतिही (फत्ह) या'नी इस हदीष में वर्ईद है अहले मआप्सी के लिये। अन्देशा है कि ये उठाना बतौर अज़ाब उसके लिये ज़रूरी हो, ताकि वो सबके सामने ज़लील हो, बाद में अल्लाह को इख़्तियार है चाहे वो उसे अज़ाब दे, चाहे मुआफ़ कर दे। ये हदीष आयते-करीमा यअति बिमा गल्ल यौमल् क्रियामति (आले इमरान: 161) की तफ़सीर भी है कि वो आप्सी इस ख़यानत को क़ियामत के दिन अपनी गर्दन पर उठाकर लाएगा।

**बाब 190: माले ग़नीमत में से ज़रा सी चोरी कर लेना**

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बाब की हदीष में नबी करीम (ﷺ) से ये रिवायत नहीं किया कि आपने चुराने वाले का अस्बाब जला दिया था और ये ज़्यादा सहीह है उस रिवायत से जिसमें जलाने का ज़िक्र है।

3074. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे सालिम बिन

١٩٠- بَابُ الْقَلِيلِ مِنَ الْغُلُولِ

وَلَمْ يَذْكُرْ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ حَرَّقَ مَنَاعَهُ، وَهَذَا أَصَحُّ.

٣٠٧٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُمَرَ عَنْ سَالِمِ بْنِ

अबी अल जअदि ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के सामान व अस्बाब पर एक साहब मुकर्रर थे, जिनका नाम करकरा था। उनका इंतिकाल हो गया, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो तो जहन्नम में गया। सहाबा उन्हें देखने गये तो एक अब्बाज जिसे ख़यानत करके उन्होंने छुपा लिया था उनके यहाँ मिली।

अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि मुहम्मद बिन सलाम ने (इब्ने डयेयना से नक़ल किया और) कहा ये लफ़्ज़ करकरा काफ़ के फ़तहा के साथ है और इसी तरह मन्कूल है।

मा'लूम हुआ कि माले ग़नीमत में से ज़रा सी चोरी भी हुराम है जिसकी सज़ा यकीनन दोज़ख़ होगी। इस हदीष से उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि मोमिन गुनाहों की वजह से दोज़ख़ में नहीं जाएगा। कुर्आन पाक ने साफ़ ऐलान किया है, व मय्यगलुल याति बिमा गल्ल यौमल्क़यामति (आले इमरान : 161) ख़यानत करने वाला ख़यानत की चीज़ को अपने सर पर उठाए क़यामत के दिन हाज़िर होगा। ये वो जुर्म है कि अगर किसी मुजाहिद से भी सरज़द हो तो उसका अमले जिहाद इससे बातिल हो जाता है जैसा कि हदीषे हाज़ा से ज़ाहिर हुआ, व फिलहदीषि तहरीमुन क़लीलुलुलूल व क़षीरूह व क़ौलुहू व फिन्नार अय युअज़्ज़िबु अल्ला मअसियतिन अविल्लपुरादु हुब फिन्नार इल्लम यअफिल्लाहु अन्हु. (फतह)

### बाब 191 : माले ग़नीमत के ऊँट, बकरियों को तक्सीम से पहले जिब्ह करना मकरूह है

3075. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना वज़ाह शकरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मसरूक ने, उनसे अबाय़ा बिन रफ़ाआ ने और उनसे उनके दादा राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि मुक़ामे जुल हुलैफ़ा में हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ पड़ाव किया। लोग भूखे थे। इधर ग़नीमत में हमे ऊँट और बकरियाँ मिली थीं। आँहज़रत (ﷺ) लश्कर के पीछे के हिस्से में थे। लोगों ने (भूख के मारे) जल्दी की हाण्डियाँ चढ़ा दीं। बाद में नबी करीम (ﷺ) के हुक्म से उन हाँडियों को औंधा दिया गया फिर आपने ग़नीमत की तक्सीम शुरू की दस बकरियों को एक ऊँट के बराबर रखा। इत्तिफ़ाक़ से माले ग़नीमत का एक ऊँट भाग निकला। लश्कर में घोड़ों की कमी थी। लोग उसे पकड़ने के लिये दौड़े लेकिन ऊँट ने सबको थका दिया। अख़िर एक सहाबी (ख़ुद राफ़ेअ रज़ि.) ने उसे तीर मारा। अल्लाह तआला के हुक्म से ऊँट जहाँ था वहीं रह गया। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन (पालतू)

أَبِي الْجَعْفَرِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: ((كَانَ عَلَى ثِقَلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جُلٌّ يُقَالُ لَهُ كِرْكِرَةٌ، فَمَاتَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَوْ فِي النَّارِ)), فَتَنَبَّأُوا نَظَرُونَ إِلَيْهِ فَوَجَدُوا عَبَاءَةً قَدْ غَلَّهَا)).  
قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ قَالَ ابْنُ سَلَامٍ: كِرْكِرَةٌ: نَغْيٌ يَفْتَحُ الْكَافَ. وَهُوَ مَضْطُوطٌ كَذَا.

### ١٩١- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ ذَنْحِ الْإِبِلِ وَالنَّعَمِ فِي الْمَغَائِمِ

٣٠٧٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَالِعٍ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِدْيِ الْخَلِيفَةِ فَأَصَابَ النَّاسَ جُوعٌ، وَأَصْبَحْنَا إِبِلًا وَغَنَمًا - وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَخْرِيَاتِ النَّاسِ - فَعَجَلُوا فَتَنَبَّأُوا الْقُدُورَ، فَأَمَرَ بِالْقُدُورِ فَكُفِّنَتْ ثُمَّ قَسَمَ، فَعَدَلَ عَشْرَةٌ مِنَ النَّعَمِ بَعِيرٍ، قَدْ مِنْهَا بَعِيرٌ، وَلِي الْقَوْمِ خَيْلٌ يَسِيرُ، فَطَلَبُوهُ فَأَعْيَاهُمْ، فَأَهْوَى إِلَيْهِ رَجُلٌ بِهِمْ لَحَبَسَهُ اللَّهُ، فَقَالَ: ((مَلَيْهِ الْبَهَائِمُ لَهَا أَوَابِدُ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا نَدَّ عَلَيْكُمْ



जानवरों में भी जंगली जानवरों की तरह कुछ दफा वहशत हो जाती है। इसलिये अगर उनमें से कोई क़ाबू में न आए तो उसके साथ ऐसा ही करो अबाया कहते हैं कि मेरे दादा (राफ़ेअ रज़ि.) ने ख़िदमते नबवी में अर्ज़ किया, कि हमें उम्मीद है या (ये कहा कि) डर है कि कल कहीं हमारी दुश्मनों से मुठभेड़ न हो जाए। इधर हमारे पास छुरी नहीं है। तो क्या हम बांस की खपच्चियों से ज़िबह कर सकते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो चीज़ ख़ून बहा दे और ज़िबह करते वक़्त उस पर अल्लाह तआला का नाम भी लिया गया हो, तो उसका गोश्त खाना हलाल है। अल्बत्ता वो चीज़ (जिससे ज़िबह किया गया हो) दांत और नाखून न होना चाहिये। तुम्हारे सामने मैं इसकी वजह भी बयान करता हूँ दांत तो इसलिये नहीं क्योंकि वो हड्डी है और नाखून इसलिये नहीं कि वो हथियारों की छुरी हैं। (राजेअ : 2488)

राफ़ेअ (रज़ि.) के कलाम का मतलब ये है कि तलवार से हम जानवरों को इसलिये नहीं काट सकते कि कल परसों जंग का अंदेशा है। ऐसा न हो तलवारें कुन्द हो जाएँ तो क्या हम बांस की खपच्चियों से काट लें कि उनमें भी धार होती है। हड्डी जिन्नों की ख़ुराक होती है ज़िबह करने से नजिस हो जाएगी। नाखून हथियारों की छुरियाँ हैं हथियार उस वक़्त काफ़िर थे तो आपने उनकी मुशाबिहत से मना फ़र्माया। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व मौज़उत्तर्जुमति मिन्हु अमरहू (ﷺ) बिइक्फाइलकुदूर फइन्नहू मुशइरून बिकराहति मा सनऊ मिनज़ज़बि बिगैरि इज़्जिन (फ़तह) या'नी बाब का मतलब इससे ज़ाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) ने हौडियों को उलटा कर दिया। इसलिये कि बौर इजाज़त उनका ज़बीहा मकरूह था। शोरबा बहा दिया गया। व अम्मल्लहमु फलम यत्लफ बल युहमलु अला अन्नहू जुमिअ व रूद इलल्मगानिमि या'नी गोश्त को तल्फ़ करने की बजाय जमा करके माले ग़नीमत में शामिल कर दिया गया। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

## बाब 192 : फ़तह की ख़ुशख़बरी देना

3076. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबू ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मुझसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि मुझसे जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जुल ख़लसा (यमन के का'बे) को तबाह करके मुझे क्यूँ ख़ुश नहीं करते। ये जुल ख़लसा (यमन के क़बीले) ख़प्पम का बुतकदा (मन्दिर) था (जो का'बे के मुकाबिल बनाया था) जिसे का'बतु यमानिया कहते थे। चुनौचे में (अपने क़बीले) अहमस के डेढ़ सौ सवारों को लेकर तैयार हो गया। ये सब अच्छे शहसवार

## 192 - بَابُ الْبَشَارَةِ فِي الْفَتْوحِ

3076 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي قَيْسٌ قَالَ قَالَ لِي جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَا تُرِيدُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) وَكَانَ بَيْنَنَا فِيهِ خَيْفَمٌ يُسَمَّى كَتَمَةَ الْيَمَانِيَةِ. فَأَنْطَلَقْتُ فِي عَمَسِينَ وَمِائَةٍ مِنْ أَحْمَسَ - وَكَانُوا

थे। फिर मैंने आँह ज़रत (ﷺ) से अर्ज किया कि मैं घोड़े पर अच्छी तरह से जम नहीं पाता तो आपने मेरे सीने पर (दस्ते मुबारक) मारा और मैंने आपकी उंगलियों का निशान अपने सीने पर देखा। आप (ﷺ) ने फिर ये दुआ दी, ऐ अल्लाह! उसे घोड़े पर जमा दे और उसे सहीह रास्ता दिखाने वाला बना दे और खुद उसे भी राह पाया हुआ कर दे। फिर जरिर (रज़ि.) मुहिम पर खाना हुआ। और जुलखल्ला को तोड़कर जला दिया। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में खुशखबरी भिजवाई। जरिर (रज़ि.) के कासिद (हमैन बिन रबीआ) ने (खिदमतते नबवी में) हाज़िर होकर अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) उस ज्ञात पाक की कसम! जिसने आपको सच्चा नबी बनाकर मक़ज़ज़ किया। मैं उस वक़्त तक आपकी खिदमत में हाज़िर नहीं हुआ जब तक वो बुतक़दा जलकर ऐसा (स्याह) नहीं हो गया जैसा ख़ारिश वाला बीमार कैंट स्याह हुआ करता है। ये सुनकर आँह ज़रत (ﷺ) ने क़बीला अहमस के सवारों और उनके पैदल जवानों के लिये पाँच बार बरकत की दुआ की। मुसहद ने इस हदीस में यूँ कहा जी ख़ल्ला ख़ज़म क़बीले में एक घर था। (राजेअ: 3020)

ख़ारिश ज़दा कैंट बाल वगैरह झड़कर काला और दुबला पड़ जाता है। इसी तरह जुलखल्ला जल भुनकर छत वगैरह गिरकर काला पड़ गया था। बाब का मतलब इस तरह निकला कि जरिर (रज़ि.) ने काम पूरा करके आप (ﷺ) को खुशखबरी भेजी फ़साद और बदअमनी के मर्कज़ों को ख़त्म करना, अमन कायम करने के लिये ज़रूरी है। ख़वाह वो मर्कज़ मज़हब ही के नाम पर बनाए जाएँ जैसा कि आँह ज़रत (ﷺ) ने मदीना में एक मस्जिद को भी गिरा दिया जो मस्जिदे ज़रार के नाम से मशहूर हुई।

**बाब 193 : (फ़तहे इस्लाम की) खुशखबरी देने वाले को इन्आम देना**

और कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने जब उन्हें तौबा के कुबूल होने की खुशखबरी सुनाई गई तो खुशखबरी सुनाने वाले को दो कपड़े इन्आम दिये थे।

ये खुशखबरी सलमा बिन अक्वा या हमज़ा बिन अमर असलमी ने दी थी। इस हदीस को हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल मग़ाज़ी में वज़ल किया है। इससे प़ाबित हुआ कि किसी भी अमर की खुशखबरी सुनाने वाले को इन्आम दिया जाना मुस्तहब है। फिर जंग में फ़तह की बशारत तो बड़ी अहम चीज़ है। उसकी बशारत देने वाला यकीनन इन्आम का हक़दार है।

**बाब 194 : फ़तहे मक्का के बाद वहाँ से हिजरत करने की जरूरत नहीं रही**

3077. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा

أَصْحَابُ غَيْلٍ - فَأَعِزَّتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنِّي لَا أَثْبِتُ عَلَى الْغَيْلِ، فَضَرَبَ لِي صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ أَصَابِعِهِ فِي صَدْرِي، فَقَالَ : ((اللَّهُمَّ كُنْ، وَاجْعَلْهَا هَادِيًا مُهْدِيًا)). فَأَنْطَلَقَ إِلَيْهَا فَكَسَرَهَا وَخَوَّقَهَا، فَأَرْسَلَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَشِّرُهُ، فَقَالَ رَسُولُ جَرْمٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرْكَبَهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْرَبُ. ((فَبَارَكَ عَلَى غَيْلٍ أَحْمَسَ وَرَجَالِهَا عَمَسَ مَرَاتٍ)). قَالَ مُسَدَّدٌ : ((يَثُ لِي حَقِّم)).

[راجع: 3020]

**193- بَابُ مَا يُعْطَى الْبَشِيرُ**

وَأُعْطِيَ كَقَبُ بْنُ مَالِكٍ لَوَيْنٍ حِينَ بُشِّرَ بِالتَّوْبَةِ

**194- بَابُ لَا هِجْرَةَ**

بَعْدَ الْفَتْحِ

3077- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ

हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे त्राऊस ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन फ़र्माया, अब हिजरत (मक्का से मदीना के लिये) बाक़ी नहीं रही, अल्बत्ता हुस्ने निय्यत और जिहाद बाक़ी है। इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो फ़ौरन निकल जाओ। (राजेअ: 1349)

**तारीख़**

खास मक्का से मदीना मुनव्वरा की हिजरत मुराद है। पहले जब मक्का दारुल इस्लाम नहीं था और मुसलमानों को वहाँ आज़ादी नहीं थी तो वहाँ से हिजरत ज़रूरी हुई। लेकिन अब मक्का इस्लामी हुकूमत के तहत आ चुका। इसलिये यहाँ से हिजरत का कोई सवाल ही बाक़ी नहीं रहता। ये मा'नी हर्गिज़ नहीं कि सिरे से हिजरत का हुकूम ही ख़त्म हो गया क्योंकि जब तक दुनिया क़ायम है और जब तक कुफ़्र व इस्लाम की कश्मकश बाक़ी है, उस वक़्त तक हर उस ख़िस्ते से जहाँ मुसलमानों को अहकामे इस्लाम पर अमल करने की आज़ादी न हो, दारुल इस्लाम की तरफ़ हिजरत करना फ़र्ज़ है।

हिजरत के ल'वी मा'नी छोड़ना, इस्तिलाह में इस्लाम के लिये अपना वतन छोड़कर दारुल इस्लाम में जाकर रहना, अगर ये हिजरत रज़ा-ए-इलाही के लिये मुकर्रर असूलों के तहत की जाए तो इस्लाम में उसका बड़ा दर्जा है। और अगर दुनिया तलबी या और कोई ग़र्ज़े फ़ासिद हो तो उस हिजरत का अल्लाह के नज़दीक कोई प्रवाब नहीं है। जैसा कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) शुरू ही में हदीष, इन्नमल आमालु बिन्नियात नक़ल कर चुके हैं। इस पुरफ़ितन दौर में भी यही हुकूम है। जो लोग किसी मुल्क में मुहाजिर के नाम से मशहूर हों उनको खुद फ़ैसला करना चाहिये वो मुहाजिर किस किसिम के हैं। बलिल्इन्सानु अला नफ़िसही बस्रीरतुन वलौ अल्क़ा मआज़ीरा (अल क़ायम: 14-15) का यही मतलब है कि लोगों को चाहिये कि वो खुद ग़िरेबानों में मुँह डालकर देखें और अपने बारे में खुद फ़ैसला कर लें।

3078. 79. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद ने, उन्हें अबू इब्मन नहदी ने और उनसे मजाशेअ बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मजाशेअ अपने भाई मुजालिद बिन मसऊद (रज़ि.) को लेकर ख़िदमते नबवी (ﷺ) में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ये मुजालिद हैं। आपसे हिजरत पर बेअत करना चाहते हैं। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़तहे मक्का के बाद अब हिजरत बाक़ी नहीं रहीं। हाँ मैं इस्लाम पर उनसे बेअत ले लूँगा। (राजेअ: 2962, 2963)

۳۰۷۸، ۳۰۷۹- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي عُمَانَ التَّهَوِيّ عَنْ مُجَاشِعِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ مُجَاشِعٌ بِأَخِيهِ مُجَالِدِ بْنِ مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: هَذَا مُجَالِدٌ يُبَايِعُكَ عَلَى الْهَجْرَةِ. فَقَالَ: ((لَا هِجْرَةَ بَعْدَ فَتْحِ مَكَّةَ، وَلَكِنْ أَبَايَعُهُ عَلَى الْإِسْلَامِ)). [راجع: ۲۹۶۲، ۲۹۶۳]

इस हदीष में इब्तिदा-ए-इस्लाम की हिजरत अज़ मक्का बराए मदीना मुराद है। जब मक्का शरीफ़ फ़तह हो गया तो वहाँ से हिजरत का सवाल ही ख़त्म हो गया। रिवायत का यही मतलब है।

3080. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि अम्म और इब्ने ज़ुरैज बयान करते थे कि हमने अत्ता से सुना था, वो बयान करते थे कि मैं अबैद बिन ज़मैर

۳۰۸۰- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرُو بْنُ جُرَيْجٍ:

के साथ हजरत आइशा (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप प्रबीर पहाड़ के करीब क़याम कर रही थीं। आपने हमसे फ़र्माया कि जब अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) को मक्का पर फ़तह दी थी, उसी वक़्त से हिजरत का सिलसिला ख़त्म हो गया था। (प्रबीर मशहूर पहाड़ है)। (दीगर मक़ाम : 3900, 4212)

### बाब 195 : ज़िम्मी या मुसलमान औरतों के ज़रूरत के वक़्त बाल देखना दुरुस्त है

इस तरह उनका नंगा करना भी जब वो अल्लाह की नाफ़रमानी करें 3081. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ताइफ़ी ने बयान किया, उनसे हुशैम ने बयान किया, उन्हें हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें सअद बिन इबैदा ने और उन्हें अबी अब्दुर्रहमान ने और वो इप्मानी थे, उन्होंने इब्ने अतिया से कहा, जो अल्वी थे, कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हारे आहब (हज़रत अली रज़ि.) को किसी चीज़ से ख़ून बहाने पर जुअत हुई, मैंने खुद उनसे सुना, वो बयान करते थे कि मुझे और जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) ने भेजा। और हिदायत की कि रौज़-ए-खाख़ पर जब तुम पहुँचो, तो तुम्हें एक औरत (सारा नामी) मिलेगी। जिसे हातिब इब्ने बलतआ (रज़ि.) ने एक ख़त देकर भेजा है (तुम वो ख़त उससे लेकर आओ) चुनौचे जब हम उस बाग़ तक पहुँचे हमने उस औरत से कहा ख़त ला। उसने कहा कि हातिब (रज़ि.) ने मुझे कोई ख़त नहीं दिया। हमने उससे कहा कि ख़त खुद ब खुद निकालकर दे दे वरना (तलाशी के लिये) तुम्हारे कपड़े उतार लिये जाएँगे। तब कहीं उसने ख़त अपने नेफ़े में से निकाल कर दिया। (जब हमने वो ख़त रसूले करीम (ﷺ) की खिदमत में पेश किया, तो) आपने हातिब (रज़ि.) को बुला भेजा। (राजेअ : 3007)

उन्होंने (हाज़िर होकर) अज़्र किया। हज़ूर! मेरे बारे में जल्दी न करें! अल्लाह की क़सम! मैंने न कुफ़्र किया है और न मैं इस्लाम से हटा हूँ, सिर्फ़ अपने ख़ानदान की मुहब्बत ने इस पर मजबूर किया था। आप (ﷺ) के अरहाब (मुहाजिरीन) में कोई शख्स ऐसा नहीं

سَمِعْتُ عَطَاءَ يَقُولُ: دَفَعْتُ مَعَ عَبْدِ بْنِ عُمَيْرٍ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَهِيَ مُجَاوِرَةٌ بِبَيْرٍ فَقَالَتْ: لَنَا ((انْقَطَعَتِ الْهَجْرَةُ مِنْذُ فَتَحَ اللَّهُ عَلَى نَبِيِّهِ ﷺ مَكَّةَ)) (طرفاء ن : 3900, 4212).

### 195- باب إِذَا اضْطُرَّ الرَّجُلُ إِلَى النَّظَرِ فِي شُعُورِ أَهْلِ الدِّمَةِ

وَالْمُؤْمِنَاتِ إِذَا غَضِبَ اللَّهُ، وَتَجَرَّيْنِ ٣٠٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَوْشَبٍ الطَّائِفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُيَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَكَانَ عُثْمَانِيًّا، فَقَالَ لَأَبْنِ غَطِيَّةٍ وَكَانَ غُلَوِيًّا: إِنِّي لَا عَلَمَ مَا الَّذِي جَرَأَ صَاحِبَكَ عَلَى الدَّمَاءِ، سَمِعْتُهُ يَقُولُ: بَغَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالزُّبَيْرَ فَقَالَ: ((اتُّوا رَوْضَةَ كَذَا، وَتَجِدُونَ بِهَا امْرَأَةً أَغْطَاهَا حَاطِبٌ كِتَابًا)). فَأَتَيْنَا الرَّوْضَةَ فَقَلْنَا: الْكِتَابَ. قَالَتْ: لَمْ يُعْطِنِي. فَقَلْنَا: لَنُخْرِجَنَّ أَوْ لَأَجْرُ ذَلِكَ. فَأَخْرَجَتْ مِنْ حُجْرَتِهَا. فَأَرْسَلَتْ إِلَى حَاطِبٍ.

[راجع : 3007]

فَقَالَ: لَا تَعْجَلْ، وَاللَّهِ مَا كَفَرْتُ وَلَا أَزْدَدْتُ لِلْإِسْلَامِ إِلَّا حُبًّا، وَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِكَ إِلَّا وَلَهُ بِمَكَّةَ مَنْ يَدْفَعُ اللَّهُ

जिसके रिश्तेदार वगैरह मक्का में न हों। जिनके जरिये अल्लाह तआला उनके खानदान वालों और उनकी जायदाद की हिमायत हिफाजत न कराता हो। लेकिन मेरा वहाँ कोई भी आदमी नहीं, इसलिये मैंने चाहा कि उन मक्का वालों पर एक एहसान कर दूँ, नबी करीम (ﷺ) ने भी उनकी बात की तस्दीक़ फ़र्माई। हज़रत इमर (रज़ि.) फ़र्माने लगे कि मुझे उसका सर उतारने दीजिए, ये मुनाफ़िक़ हो गया है। लेकिन अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें क्या मा'लूम! अल्लाह तआला अहले बद्र के हालात से ख़ूब वाकिफ़ था और वो खुद अहले बद्र के बारे में फ़र्मा चुका है कि, जो चाहो करो। अबू अब्दुर्रहमान ने कहा, हज़रत अली (रज़ि.) को इसी इश्रादिने (कि तुम जो चाहो करो, खूँ-रेज़ी पर) दिलेर बना दिया है।

**तशीह:** अबू अब्दुर्रहमान का कलाम मुबालागा है। हज़रत अली (रज़ि.) की अल्लाह पर तक्वा और परहेजगारी से बर्ईद है कि वो खूने नाहक करें। इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से ये निकाला कि ज़रूरत के वक़्त औरत की तलाशी लेना, उसका बरहना करना दुस्त है। कुछ रिवायतों में ये है कि उस औरत ने वो ख़त अपनी चोटी में से निकालकर दिया। इस पर हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वल्जम्अ बैन हू व बैन रिवायति अख़रजतू मिन हजज़िहा अय मक़अदल् इज़ारि लिअन्न अक़ीसतिहा तवीलतुन बिहैषु तसिलु इला हजज़िहा फ़रबतू फी अक़ीसतिहा व ग़ज़रतू बिहजज़िहा (फ़तह) या'नी दोनों रिवायतों में मुताबक़त ये है कि उस औरत के सर की चोटी इतनी लम्बी थी कि वो इज़ारबन्द बाँधने की जगह तक लटकी हुई थी, उस औरत ने उसको चुटिया के अंदर गूँधकर नीचे मक़अद के पास इज़ार में टंक लिया था। चुनौचे उस जगह से निकालकर दिया। रावियों ने जैसा देखा बयान कर दिया।

सलफ़े उम्मत में जो लोग हज़रत इम्रान (रज़ि.) को हज़रत अली (रज़ि.) पर फ़ज़ीलत देते हैं उन्हें इम्रानी कहते हैं और जो हज़रत अली (रज़ि.) को हज़रत इम्रान (रज़ि.) पर फ़ज़ीलत देते हैं उन्हें अल्वी कहते थे। ये इस्तिलाह एक ज़माने तक रही, फिर ख़त्म हो गई। अहले सुन्नत में ये अक़ीदा क़रार पाया कि किसी सहाबी को किसी पर फ़ौक़ियत नहीं देना चाहिये। वो सब अल्लाह के नज़दीक़ मज़बूल हैं, उनमें फ़ाज़िल कौन है और मफ़ज़ूल कौन, ये अल्लाह ही बेहतर जानता है। यँ खुलफ़ा-ए-अरबअ को हस्बे तर्तीब ख़िलाफ़त और सहाबा पर फौक़ियत हासिल है, फिर अशर-ए-मुबशशरा को (रज़ि. अफ़मईन)।

## बाब 196 : गाज़ियों के इस्तिफ़ाल को जाना (जब वो जिहाद से लौटकर आएँ)

3082. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबिल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ और हुमैद बिन अल् अस्वद ने बयान किया, उनसे हबीब बिन शहीद ने और उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) से कहा, तुम्हें वो किस्सा याद है जब मैं और तुम अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) तीनों आगे जाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से मिले थे (आप ﷺ जिहाद से वापस आ रहे थे) अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र

## ١٩٦ - بَابُ اسْتِيفَالِ الْغَزَاةِ

٣٠٨٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ وَحُمَيْدُ بْنُ الْأَسْوَدِ عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ: ((قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ لَأَبِي جَعْفَرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ: أَتَذْكُرُ إِذْ تَلَقَّيْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنَا وَأَنْتَ وَابْنُ عَبَّاسٍ؟ قَالَ:

ने कहा, हाँ याद है। और आँहजरत (ﷺ) ने मुझको और इब्ने अब्बास (रज़ि.) को अपने साथ सवार कर लिया था, और तुम्हें छोड़ दिया था।

نعم، فحملنا وتركنا.

**तशरीह:** हाफिज़ साहब फर्माते हैं, ज़ाहिरू अन्नल्काइल फहमलना हुब अब्दुल्लाह बिन जअफ़र व अन्नल्मत्सूक हुब इब्नुज्जुबैर या'नी ज़ाहिर है कि सवार होने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ा'फ़र (रज़ि.) हैं और मत्सूक हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) हैं। मगर मुस्लिम में उसके बरअक्स मज़कूर है। वक्रद नब्बह अयाज़ अला अन्नल्लज़ी वक्रअ फिल बुख़ारी हुसुसवाब या'नी काज़ी अयाज़ ने तम्बीह की है कि बुख़ारी का बयान ज़्यादा सहीह है। इससे गाज़ियों का आगे बढ़कर इस्तिक्बाल करना प्राबित हुआ।

नीज़ इससे यतीमों का ज़्यादा ख़याल रखना भी प्राबित हुआ क्योंकि हज़रत अब्दुल्लाह के वालिद ज़ा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) इतिक्काल कर चुके थे। आँहजरत (ﷺ) ने उनके यतीम बच्चे अब्दुल्लाह (रज़ि.) का दिल खुश करने के लिये सवारी पर उनको मुकद्दम किया, अगर किसी सहाबी पर आँहजरत (ﷺ) ने कभी किसी अम्र में नज़रे इनायत फर्माई तो उस पर उस सहाबी के फ़ख़र करने का जवाज़ भी प्राबित हुआ, किसी बुजुर्ग की तरफ़ से किसी पर नज़रे इनायत हो तो वो आज बतौर फ़ख़र इसे बयान कर सकते हैं।

3083. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया कि साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने कहा, (जब रसूलु करीम ﷺ ग़ज़्व-ए-तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो) हम सब बच्चे षनिव्यतुल विदाअ तक आपका इस्तिक्बाल करने गए थे। (दीगर मक़ाम : 4426, 4427)

मुजाहिदीन का वापसी पर पुरख़लूस इस्तिक्बाल करना सुन्नत है। हज़रत इमाम (रह.) इसी मक़सद को बयान कर रहे हैं। मदीना के करीब एक घाटी तक लोग अपने मेहमानों को रुख़सत करने जाया करते थे। इसी का नाम षनिव्यतुल विदाअ करार दिया। ग़ज़्व-ए-तबूक की फ़ज़ीलत किताबुल मगाज़ी में आएँगी।

### बाब 197 :

### जिहाद से वापस होते हुए क्या कहे

3084. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (जिहाद से) वापस होते तो तीन बार अल्लाहु अकबर कहते, और ये दुआ पढ़ते, इंशाअल्लाह हम अल्लाह की तरफ़ लौटने वाले हैं। हम तौबा करने वाले हैं। अपने ख़ब की इबादत करने वाले हैं। उसकी तअरीफ़ करने वाले और उसके लिये सज्दा करने वाले हैं। अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया, अपने बन्दे की मदद की, और काफ़िरों के लश्कर को उसी अकेले ने शिकस्त दे दी। (राजेअ : 1797)

٣٠٨٣ - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : (( قَالَ السَّائِبُ بْنُ يَزِيدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، ذَعَبْنَا نَلْقَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَعَ الصَّيَّانِ إِلَى ثِيَابِ الْوَدَاعِ )) . [طريقه في : ٤٤٢٦ ، ٤٤٢٧ .]

### ١٩٧ - بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا رَجَعَ مِنَ

### الْفُرُوزِ

٣٠٨٤ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ كَرَّرَ ثَلَاثًا قَالَ : (( أَيُّونَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ، نَائِيُونَ، عَابِدُونَ، حَامِدُونَ، لِرَبِّنَا سَاجِدُونَ، صَادِقُ اللَّهِ وَعَدُهُ، وَنَصْرُهُ عِنْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَخْزَابَ وَخَدَعَهُ )) .

[راجع : ١٧٩٧]

आइबून का मतलब अय नहनु राजिऊन इलल्लाह या'नी हम अल्लाह की तरफ रुजूअ करने वाले है।

3085. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि मुझसे यहा बिन अबी इस्हाक ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़्वा बनु लहयान में जो 6 हिजरी में हुआ) अस्फ़ान से वापस होते हुए हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। आप अपनी कैंटनी पर सवार थे और आपने सवारी पर पीछे (उम्मुल मोमिनीन) हज़रत सफ़िया बिनते हुय्यि (रज़ि.) को बिठा लिया था। इत्तिफ़ाक़ से आपकी कैंटनी फिसल गई और आप दोनों गिर गये। ये हाल देखकर अबू तलहा (रज़ि.) भी फ़ौरन अपनी सवारी से कूद पड़े और कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह मुझे आप पर कुर्बान करे, कुछ चोट तो नहीं लगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया पहले औरत की ख़बर लो। अबू तलहा (रज़ि.) ने एक कपड़ा अपने चेहरे पर डाल लिया, फिर हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के करीब गये और वह कपड़ा उनके ऊपर डाल दिया। उसके बाद दोनों हज़रात की सवारी दुरुस्त की, जब आप सवार हो गये तो हम आँहज़रत (ﷺ) के चारों तरफ़ जमा हो गये। फिर जब मदीना दिखाई देने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने ये दुआ पढ़ी। हम अल्लाह की तरफ़ वापस लौटने वाले हैं। तौबा करने वाले, अपने रब की इबादत करने वाले और उसकी हम्द पढ़ने वाले हैं। आँहज़रत (ﷺ) ये दुआ बराबर पढ़ते रहे यहाँ तक कि मदीना में दाख़िल हो गये। (राजेअ: 371)

٣٠٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مَقْفَلَةً مِنْ غَسْقَانٍ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَيَّ وَاجِلِيَّةٍ، وَقَدْ أَرْدَفَ صَفِيَّةُ بِنْتُ حُجْرٍ، فَعُتِرَتْ نَاقَتُهُ لَصُرْعِهَا جَمِيعًا، فَاتَّخَمَ أَبُو طَلْحَةَ لَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ جَعَلَنِي اللَّهُ فِدَاكَ. قَالَ: ((عَلَيْكَ الْمَرْأَةُ)). فَقَلَبَ نَوْبًا عَلَيَّ وَجْهَهُ وَأَنَاقًا فَأَنَاقَهُ عَلَيْهَا، وَأَصْلَحَ لَهُمَا مَرْكَبُهُمَا فَرَكِبْنَا، وَاسْتَقْفَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَلَمَّا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: ((أَيُّونَ، تَائِبُونَ، غَائِبُونَ لِرَبِّنَا حَائِدُونَ)). فَلَمْ يَزَلْ يَقُولُ ذَلِكَ حَتَّى دَخَلَ الْمَدِينَةَ.

[راجع: ٣٧١]

**तशरीह:** रिवायत में रावी से सद्द हो गया है। सहीह यूँ है कि जब आँहज़रत (ﷺ) ख़ैबर से लौटे उस वक़्त हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आपके साथ थीं क्योंकि ये खातून आपको जंगे ख़ैबर में मिली थीं जो 7 हिजरी में हुआ था। जंगे बनु लहयान 6 हिजरी में हुई है उस वक़्त हज़रत सफ़िया (रज़ि.) मौजूद न थीं। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) अपने मुँह पर कपड़ा डालकर इसलिये आए कि हज़रत सफ़िया (रज़ि.) पर नज़र न पड़े। वापसी पर आँहज़रत (ﷺ) की जुबाने मुबारक पर अल्फ़ाज़ तय्यिबा आइबून ताइबून जारी थे। बाब से यही वजह मुनासबत है। अब भी सुन्नत यही है कि सफ़रे हज्ज हो यो और कोई सफ़र ख़ैरियत से वापसी पर इस दुआ को पढ़ा जाए। औरत को अपने मर्द के पीछे कैंटनी पर सवारी करना भी इस हदीष से प्राबित हुआ। व फिलखैरिल्जारी इन्नमा क़ालत मिन अस्फ़ान लिअन्न ग़ज़वत ख़ैबर कानत उक्बहा कअन्नहू लम यअतद बिल्इक़ामतिल्मुतखल्ललति बैनहुमा लितुक्कार बिहिमा या'नी अस्फ़ान का लफ़ज़ लाने की वजह ये भी हो सकती है कि ग़ज़व-ए-ख़ैबर उसके बाद ही हुआ, इतने करीब कि रावी ने दरम्यानी अर्से को कोई अहमियत नहीं दी और दोनों को एक ही सतह पर रख लिया जैसा कि हदीषे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) में तहरीम मुतआ के बारे में ग़ज़व-ए-औतास का ज़िक्र आया है। हालाँकि वो मक्का ही में ह़राम हो चुका था मगर औतास और मक्का में त़कारुब की वजह से वो इसकी तरफ़ मन्सूब कर दिया।

3086. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा

٣٠٨٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ

हमसे बिश्र बिन मुफज़ल ने बयान किया, कहा हमसे यहाया बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि वो और अबू तलहा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी सवारी पर पीछे बिठा रखा था। रास्ते में इत्तिफ़ाक़ से आपकी ऊँटनी फिसल गई और आँहज़रत (ﷺ) गिर गये और उम्मुल मोमिनीन भी गिर गई। अबू तलहा (रज़ि.) ने यूँ कहा कि मैं समझता हूँ, उन्होंने भी अपने आपको ऊँट से गिरा दिया और आँहज़रत (ﷺ) के करीब पहुँचकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह मुझे आप पर कुर्बान करे कोई चोट तो हज़ूर को नहीं आई? आपने फ़र्माया कि नहीं लेकिन तुम औरत की ख़बर लो। चुनाँचे उन्होंने एक कपड़ा अपने चेहरे पर डाल लिया, फिर उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ बड़े और वही कपड़ा उन पर डाल दिया। अब उम्मुल मोमिनीन खड़ी हो गई। फिर अबू तलहा (रज़ि.) ने आप दोनों के लिये ऊँटनी को मज़बूत किया तो आप सवार हुए और सफ़र शुरू किया। जब मदीना मुनव्वरा के सामने पहुँच गये या रावी ने ये कहा कि जब मदीना दिखाई देने लगा तो नबी करीम (ﷺ) ने ये दुआ पढ़ी। हम अल्लाह की तरफ़ लौटने वाले हैं। तौबा करने वाले, अपने रब की इबादत करने वाले और उसकी तारीफ़ करने वाले हैं! आप (ﷺ) ये दुआ बराबर पढ़ते रहे, यहाँ तक कि मदीना में दाख़िल हो गये। (राजेअ : 371)

الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي اسْحَاقَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ أَقْبَلَ هُوَ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَعَ أَنَسٍ ﷺ صَفِيَّةُ، مُرِدُّلَهَا عَلَى رَاحِلَتِهِ، فَلَمَّا كَانُوا بِنَعْرِ الطَّرِيقِ غَرَبَتِ الشَّافَةُ فَصَرَعَ النَّبِيُّ ﷺ وَالْمَرْأَةُ، وَإِنْ أَبَا طَلْحَةَ قَالَ أَحْسِبُ قَالَ: اقْنَعِمَ. عَنْ تَبَيُّرِهِ فَاتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، جَفَلَنِي اللَّهُ فِدَاءَكَ، هَلْ أَصَابَكَ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالَ: ((لَا، وَلَكِنْ عَلَيَّكَ بِالسَّيِّئَةِ)). فَالْفَقَى أَبُو طَلْحَةَ نَوْبَهُ عَلَى وَجْهِهِ لَقَضَ لَقَضَتَهَا، فَالْفَقَى نَوْبَهُ عَلَيْهَا، فَقَامَتِ الْمَرْأَةُ، فَشَدَّ لَهَا عَلَى رَاحِلَتَيْهَا فَرَكِبَتْ، فَسَارُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِظَهْرِ الْمَدِينَةِ - أَوْ قَالَ: أَشْرَفُوا عَلَى الْمَدِينَةِ - قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّونَ، تَائِبُونَ، غَائِبُونَ لِرَبِّنَا حَائِبُونَ)). فَلَمْ يَزَلْ يَقُولُهَا حَتَّى دَخَلَ الْمَدِينَةَ. (راجع: 371)

ये भी जंगे ख़ैबर ही के बारे में है। दोनों अहादीस में अल्फ़ाज़े मुख्तलिफ़ा के साथ एक ही वाक़िया बयान किया गया है। ये भी दोनों में मुत्तफ़िह है कि आँहज़रत (ﷺ) के साथ सफ़िया (रज़ि.) थीं, ग़ल्चा बनू लहयान से इस वाक़िये का जोड़ नहीं है, जो 6 हिजरी में हुआ और हज़रत सफ़िया (रज़ि.) का इस्लाम और हरम में दाख़िला 7 हिजरी से मुताल्लिक है।

## बाब 198 : सफ़र से वापसी पर नफ़ल नमाज़

### (बतौर नमाज़े शुक्राना अदा करना)

3087. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे महारिब बिन दहशर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में था। जब हम मदीना पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि

## ١٩٨- بَابُ الصَّلَاةِ إِذَا قَلِمَ مِنْ

### مَسْفَرٍ

٣٠٨٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَخَارِبِ بْنِ دَهَّارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَسْفَرٍ



पहले मस्जिद में जा और दो रकअत (नफ़ल) नमाज़ पढ़। (राजेअ : 443)

3088. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब ने, उनसे उनके वालिद (अब्दुल्लाह) और चचा इब्नेदुल्लाह बिन कअब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब दिन चढ़े सफ़र से वापस होते तो बैठने से पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नफ़ल नमाज़ पढ़ते थे। (राजेअ : 2757)

सफ़रे जिहाद पर सफ़रे हज्ज वगैरह को भी क़यास किया जा सकता है। ऐसे लम्बे सफ़र से ख़ैरियत के साथ वापसी पर बतौर शुक़राना दो रकअत नमाज़े नफ़ल अदा करना अम्मे मस्नून है, अल्लाह हर मुसलमान को नज़ीब फ़र्माए, आमीन।

### बाब 199 : मुसाफ़िर जब सफ़र से लौटकर आए तो लोगों को ख़ाना खिलाए

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) (जब सफ़र से वापस आते तो) मुलाक्रातियों के आने की वजह से रोज़ा नहीं रखते थे।

3089. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें मुहारिब बिन दब्बार ने और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए (ग़ज़व-ए-तबूक या ज़ातुरिकाअ से) तो कैंट या गाय ज़िबह की (रावी को शुब्हा है) मुआज़ अम्बरी ने (अपनी रिवायत में) कुछ ज़्यादाती के साथ कहा। उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहारिब बिन दब्बार ने, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे कैंट ख़रीदा था। दो औक्रिया और एक दिरहम या (रावी को शुब्हा है कि दो औक्रिया) दो दिरहम में। जब आप मक़ामे सिरार पर पहुँचे तो आपने हुक्म दिया और गाय ज़िबह की गई और लोगों ने उसका गोश्त खाया। फिर जब आप मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो मुझे हुक्म दिया कि पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ो, उसके बाद मुझे मेरे कैंट की क़ीमत वज़न करके इनायत फ़र्माई। (राजेअ : 443)

فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ قَالَ لِي: ((ادْخُلِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ رَكَعَتَيْنِ)). (راجع: ٤٤٣)  
٣٠٨٨ - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ أَبِيهِ وَعَمِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ كَعْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ طُحِيَ دُخْلُ الْمَسْجِدِ فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ)). (راجع: ٢٧٥٧)

### ١٩٩ - بَابُ الطَّعَامِ عِنْدَ الْقُدُومِ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُفْطِرُ لِمَنْ يَفْتَاةً

٣٠٨٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دَثَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ نَحَرَ حَزُوزًا أَوْ بَقَرَةً. وَإِذَا مَغَازٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ: اشْتَرَى مِنِّي النَّبِيُّ ﷺ بَعِيرًا بِأَوْقِيَتَيْنِ وَدَوَاهِمَ أَوْ دِرْهَمَيْنِ. فَلَمَّا قَدِمَ حِرَارًا أَمَرَ بِقَرَّةٍ فَلَذِيحَتْ فَأَكَلُوا مِنْهَا. فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ أَمَرَنِي أَنْ آتِيَ الْمَسْجِدَ فَاصْلَى رَكَعَتَيْنِ وَوَزَنَ لِي ثَمَنَ الْبَعِيرِ)).

[راجع: ٤٤٣]

**तशीह:**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) सफ़र में रोज़ा नहीं रखते थे न फ़र्ज़ न नफ़ल, जब घर पर होते तो बक़रत रोज़े रखा करते, अगरचे उनकी आदत हालते इक़ामत में बक़रत रोज़े रखने की थी, लेकिन जब आप सफ़र से वापस आते तो दो एक दिन इस ख़्याल से रोज़ा नहीं रखते थे कि मुलाक़ात के लिये लोग आएँगे और उनकी ज़ियाफ़त ज़रूरी है और ये भी ज़रूरी है कि मेज़बान, मेहमान के साथ खाए, इसलिये आप ऐसे मौक़े पर नफ़ल रोज़ा छोड़ देते थे।

आप तहज़ुद पढ़ा करते, सुन्नते नबवी से बाल बराबर भी तजावुज़ न करते, बिदअत से इस क़दर नफ़रत करते कि एक बार एक मस्जिद में गये, वहाँ किसी ने अस्सलात अस्सलात पुकारा, तो आप ये कहकर खड़े हो गये, कि इस बिदअती की मस्जिद से निकल चलो।

मुआज़ की सनद बयान करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि मुहारिब का सिमाअ जाबिर से प्राबित हो जाए। मुआज़ की इस रिवायत को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया है। इस रिवायत को इमाम बुखारी (रह.) ने कई जगह बयान करके इससे बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया है। ता'ज्जुब है कि ऐसे फ़िक्हे अहले हदीष के माहिर मुज्ताहिदे मुत्लाक़ इमाम को कुछ कोरे बातें मुतअस्सिब मुज्ताहिद नहीं मानते, जो खुद उनकी कोरे बातों का पुबूत है।

3090. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने बयान किया, उनसे महारिब बिन दह़शार ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सफ़र से वापस मदीना पहुँचा तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया कि मस्जिद में जाकर दो रकअत नफ़ल नमाज़ पढ़ो, सिरार (मदीना मुनव्वरा से तीन मील की दूरी पर मश्रिक में) एक जगह का नाम है। (राजेअ: 443)

٣٠٩٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَخَارِبِ بْنِ دَهْشَارٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: ((قَدِمْتُ مِنْ سَفَرٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «مَنْ رَكَعَتَيْنِ»)) صِرَازُ مَوْضِعٍ لَاحِيَةٍ بِالْمَدِينَةِ.

[راجع: ٤٤٣]

इस हदीष की मुनासबत बाब का तर्जुमा से मुश्किल है। कुछ ने कहा ये पहली हदीष ही का एक टुकड़ा है, इसकी मुनासबत से इसको ज़िक्र कर दिया। मा'लूम हुआ कि सफ़र से वापसी पर मस्जिद में जाकर शुक्राना के दो नफ़ल पढ़ना मस्नून है।

## 57. किताबु फ़र्ज़िल ख़ुमुस

# किताब ख़ुमुस के फ़र्ज़ होने का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 : ख़ुमुस के फ़र्ज़ होने का बयान

### ١ - بَابُ فَرَضِ الْخُمْسِ

लफ़ज़ ख़ुमुस उस पाँचवें हिस्से पर बोला जाता है, जो अम्वाले शनीमत से निकालकर ख़ास मसाराफ़ि में खर्च होता है। बाक़ी बचा मुजाहिदीन में तक्सीम हो जाता है।

3091. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उनसे ज़ुहरी ने

٣٠٩١ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ:

बयान किया, उन्हें ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन ने ख़बर दी और उन्हें हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया, जंगे बद्र के माले ग़नीमत से मेरे हिस्से में एक जवान ऊँटनी खुमुस के माल में से दी थी, जब मेरा इरादा हुआ कि फ़ातिमा (रज़ि.) बिनते रसूलुल्लाह (ﷺ) से शादी करूँ, तो बनी क़ैनकाअ (क़बीला यहुद) के एक सहाब से जो सुनार थे, मैंने ये तै किया कि वो मेरे साथ चले और हम दोनों इज़्रर घास (जंगल से) लाएँ। मेरा इरादा ये था कि मैं वो घास सुनारों को बेच दूँगा और उसकी क़ीमत से अपने निकाह का वलीमा करूँगा। अभी मैं इन दोनों ऊँटनियों का सामान, पालान और थैले और रस्सियाँ वग़ैरह जमा कर रहा था और ये दोनों ऊँटनियाँ एक अंसारी सहाबी के घर के पास बैठी हुई थीं कि जब सारा सामान फ़राहम करके वापस आया तो क्या देखता हूँ कि मेरी दोनों ऊँटनियों के कोहान किसी ने काट दिये हैं। और उनके पेट चीरकर अंदर से उनकी कलेजी निकाल ली गई है। जब मैंने ये हाल देखा तो मैं बेइख़्तियार रो दिया मैंने पूछा किये सब कुछ किसने किया है? तो लोगों ने बताया कि हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने और वो उसी घर में कुछ अंसार के साथ शराब पी रहे हैं। मैं वहाँ से वापस आ गया और सीधा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपकी ख़िदमत में उस वक़्त ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) भी बैठे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) मुझे देखते ही समझ गये कि मैं किसी बड़े स़दमे में हूँ। इसलिये आप (ﷺ) ने पूछा, अली! क्या हुआ? मैंने अज़ा किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने आज के दिन जैसा स़दमा कभी नहीं देखा। हम्ज़ा (रज़ि.) ने मेरी दोनों ऊँटनियों पर जुल्म कर दिया। दोनों के कोहान काट डाले और उनके पेट चीर डाले। अभी वो उसी घर में कई यारों के साथ शराब की मज़लिस जमाए हुए मौजूद हैं। नबी करीम (ﷺ) ने ये सुनकर अपनी चादर मांगी और उसे ओढ़कर पैदल चलने लगे। मैं और ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) भी आपके पीछे-पीछे हुए। आख़िर जब वो घर आ गया जिसमें

أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيًّا قَالَ: ((كَانَتْ لِي شَارِفٌ مِنْ نَصِيبِي مِنَ الْمَنْعَمِ يَوْمَ بَدْرٍ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَعْطَانِي شَارِفًا مِنَ الْخُمُسِ، فَلَمَّا أَرَدْتُ أَنْ أَتِيَ بِفَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَاعَدْتُ رَجُلًا صَوَاغًا مِنْ بَنِي قَيْنَقَافٍ أَنْ يُوَفِّقَ لِي لِقَائِي بِأَذْخِرٍ أَرَدْتُ أَنْ أَبِيعَهُ الصَّوَاغِينَ وَأَسْتَعِينَ بِهِ فِي وَلِيْمَةٍ عُرْسِي. فَبَيْنَمَا أَنَا أَجْمَعُ لِشَارِفِي مَقَامًا مِنَ الْأَتْقَابِ وَالْفَرَايِرِ وَالْحَبَالِ، وَشَارِفَايَ مُنَاخَانَ إِلَى جَنْبِ حُجْرَةِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، رَجَعْتُ حِينَ جَمَعْتُ مَا جَمَعْتُ، فَإِذَا شَارِفَايَ قَدْ أَجَبْتُ أَسْمَتَهُمَا، وَتَفَرَّتْ خَوَاصِرُهُمَا، وَأَخَذَ مِنْ أَكْبَادِهِمَا، فَلَمْ أَتْلِكْ عَنِّي حِينَ رَأَيْتُ ذَلِكَ الْمَنْظَرَ مِنْهُمَا، فَقُلْتُ: مَنْ فَعَلَ هَذَا؟ فَقَالُوا: فَعَلَ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَهُوَ فِي هَذَا الْبَيْتِ فِي شَرْبِ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَانْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ - وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ - فَعَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ فِي وَجْهِ الْبَيْتِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا لَكَ؟)) فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ قَطُّ، عَدَا حَمْزَةُ عَلَى نَاقَتِي فَأَجَبَ أَسْمَتَهُمَا، وَتَفَرَّتْ خَوَاصِرُهُمَا وَهِيَ هُوَ ذَا فِي بَيْتٍ مَعَهُ شَرْبٌ. فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِرِدَائِهِ فَارْتَدِي،

हम्ज़ा (रज़ि.) मौजूद थे तो आपने अंदर आने की इजाज़त चाही और अंदर मौजूद लोगों ने आपको इजाज़त दे दी। वो लोग शराब पी रहे थे। हम्ज़ा (रज़ि.) ने जो कुछ किया था। उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें मलामत करना शुरू की। हम्ज़ा (रज़ि.) की आँखें शराब के नशे में मखमूर और सुर्ख हो रही थीं। उन्होंने नज़र उठाकर आप (ﷺ) को देखा। फिर नज़र ज़रा और ऊपर उठाई, फिर वो आँहज़रत (ﷺ) के घुटनों पर नज़र ले गए उसके बाद निगाह और उठा के आप (ﷺ) की नाफ़ के करीब देखने लगे। फिर चेहरे पर जमा दी। फिर कहने लगे कि तुम सब मेरे बाप के गुलाम हो, ये हाल देखकर आँहज़रत (ﷺ) ने जब महसूस किया कि हम्ज़ा (रज़ि.) बिलकुल नशे में हैं, तो आप वहीं से उल्टे पाँव वापस आ गये और हम भी आपके साथ निकल आए। (राजेअ: 2089)

ثُمَّ نَظَرَ بِمَشْيٍ، وَاتَّبَعَهُ أَنَا وَزَيْدُ بْنُ حَارَفَةَ، حَتَّى جَاءَ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ حَمْرَةٌ فَاسْتَأْذَنَ، فَأَذِنُوا لَهُمْ، فَإِذَا هُمْ حَرَبٌ، لَطْفَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَلُومُ حَمْرَةَ فِيمَا فَعَلَتْ، إِذَا حَمْرَةٌ قَدْ فَعِلَ مُحَمَّرَةٌ عَيْنَاهُ، فَنَظَرَ حَمْرَةَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ، فَنَظَرَ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى سُرْبِهِ، ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى وَجْهِهِ. ثُمَّ قَالَ حَمْرَةُ: هَلْ أَنْتُمْ إِلَّا عَيْنٌ لَا بَيٍّ؟ فَعَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ قَدْ فَعِلَ فَتَكَنَّنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى عَيْنَيْهِ الْفَقْهَرِيُّ، وَخَوَّجْنَا مَعَهُ. [راجع: ٢٠٨٩]

**तशरीह:** इस लम्बी हदीस को हज़रत इमाम यहाँ इसलिये लाए कि उसमें अम्बाले गनीमत के खुमूस में से हज़रत अली (रज़ि.) को एक जवान ऊँटनी मिलने का ज़िक्र है। ये ऊँटनी उस माल में से थी जो अब्दुल्लाह बिन जहश (रज़ि.) की मातहत फौज ने हासिल किया था। ये जंगे बद्र से दो महीने पहले का वाकिया है। उस वक़्त तक खुमूस का हुक्म नहीं उतरा था। लेकिन अब्दुल्लाह बिन जहश ने चार हिस्से तो फौज में तक्सीम कर दिये और पाँचवाँ हिस्सा अपनी राय से आँहज़रत (ﷺ) के लिये रख छोड़ा। फिर कुआन शरीफ़ में भी ऐसा ही हुक्म नाज़िल हुआ। दूसरी रिवायत में है कि उस वक़्त हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के पास एक गाने वाली भी थी जिसने गाने के दौरान उन जवान ऊँटनियों के कलेजे से कबाब बनाने और खाने की हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को तर्गीब दिलाई और उस पर वो नशे की हालत में खड़े हुए और उन ऊँटनियों को काटकर उनके कलेजे निकाल लिये। हज़रत अली (रज़ि.) का स़दमा भी जाइज़ था और अदब का लिहाज़ रखना भी ज़रूरी था, इसलिये वो गुस्सा को पीकर दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए। आँहज़रत (ﷺ) मुक़दमा के हालात का मुआयना करने के लिये खुद तशरीफ़ ले गये। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) उस वक़्त नशे में चूर थे। शराब उस वक़्त तक ह़राम नहीं हुई थी, नशे की हालत में हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के मुँह से बेअदबी के अल्फ़ाज़ निकल गये। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि हज़रत हम्ज़ा के होश में आने के बाद रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को उन ऊँटनियों का तावान दिलाया।

3092. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने किरसूले करीम (ﷺ) की साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) से मुतालबा किया था कि आँहज़रत (ﷺ) के उस तर्के से उन्हें उनकी मीरास का हिस्सा दिलाया जाए जो अल्लाह

٣٠٩٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ أَبِي شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ ابْنَةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ سَأَلَتْ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ بَعْدَ وَفَاةِ

तआला ने आँहजरत (ﷺ) को फे की मूरत में दिया था। (जैसे फ़दक वगैरह)।

(दीगर मक़ाम : 3711, 4035, 4240, 6725)

3093. अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से कहा कि आँहजरत (ﷺ) ने (अपनी हयात में) फ़र्माया था कि हमारा (गिरोहे अंबिया अलैहिमुस्सलाम का) वरषा तक्सीम नहीं होता, हमारा तर्का सदक्का है। फ़ातिमा (रज़ि.) ये सुनकर गुस्सा हो गई और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से मुलाक़ात छोड़ दी और वफ़ात तक उनसे न मिलीं। वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद छः महीने ज़िन्दा रही थीं। हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कहा कि फ़ातिमा (रज़ि.) ने आँहजरत (ﷺ) के ख़ैबर और फ़दक और मदीना के सदक़े की विराषत का मुतालबा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से किया था। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को इससे इंकार था, उन्होंने कहा कि मैं किसी भी ऐसे अमल को नहीं छोड़ सकता जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी ज़िन्दगी में करते रहे होंगे। (आइशा रज़ि. ने कहा कि) फिर आँहजरत का मदीना का जो सदका था वो हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत अब्बास (रज़ि.) को (अपने अहदे ख़िलाफ़त में) दे दिया। अल्बत्ता ख़ैबर और फ़दक की जायदाद को उमर (रज़ि.) ने रोक रखा और फ़र्माया कि ये दोनों रसूलुल्लाह (ﷺ) का सदका हैं और उन हुक्क के लिये जो वक्ती तौर पर पेश आते या वक्ती हादसात के लिये रखी थीं। ये जायदाद उस शाख़्स के इख़्तियार में रहेंगी जो ख़लीफ़ा - ए - वक्ती हो। जुहरी ने कहा, चुनाँचे उन दोनों जायदादों का इतिज़ाम आज तक (बज़रिया हुक्मत) इसी तरह होता चला आता है। (दीगर मक़ाम : 3713, 4036, 4241, 6726)

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَقْسِمَ لَهَا مِنْهَا مِمَّا تَوَكَّلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ عَلَيْهِ) [أطرافه ج: ٣٧١١، ٤٠٣٥، ٤٢٤٠]

[٦٧٢٥]

٣٠٩٣ - ((قَالَ لَهَا أَبُو بَكْرٍ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا تَوَكَّلْ، مَا تَوَكَّلْنَا صَدَقَةً»)). فَطَعِنَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَهَجَرَتْ أَبَا بَكْرٍ، فَلَمْ تَزَلْ مُهَاجِرَةً حَتَّى تَوَلَّيْتُ، وَغَاشَتْ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ سِتَّةَ أَشْهُرٍ. قَالَتْ: وَكَانَتْ فَاطِمَةُ تَسْأَلُ أَبَا بَكْرٍ نَصِيبَهَا مِمَّا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ خَيْرٍ وَفَدَكٍ، وَصَدَقَةٍ بِالْمَدِينَةِ، فَأَبَى أَبُو بَكْرٍ عَلَيْهَا ذَلِكَ وَقَالَ: لَسْتُ تَارِكًا شَيْئًا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَفْعَلُ بِهِ إِلَّا عَمِلْتُ بِهِ، فَإِنِّي أَخْشَى أَنْ تَوَكَّلَ شَيْئًا مِنْ أَمْرِهُ أَنْ أَرْبِغَ، فَأَمَّا صَدَقَةُ الْمَدِينَةِ فَذَلَمْتُهَا عَمْرُؤُا إِلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ، وَأَمَّا خَيْرٌ وَفَدَكٌ فَأَمْسَكْتُهَا عَمْرُؤُا وَقَالَ: هُمَا صَدَقَةُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كَانَتْما لِعَقْرَوَيْهِ إِلَيَّ تَغْرُؤُهُ وَتَوَائِبُهُ، وَأَمْرُهُمَا إِلَيَّ وَلِيَّ الْأَمْرِ، قَالَ فَهُمَا عَلَى ذَلِكَ إِلَيَّ (أَبُو بَكْرٍ) [أطرافه ج: ٣٧١٣، ٤٢٤١]

[٦٧٢٦، ٤٠٣٦]

**तशरीह :** इस लम्बी हदीष में बहुत से उमूर के साथ खुमस का भी जिक्र है। इसीलिये हज़रत इमाम उसे यहाँ लाए। आँहजरत (ﷺ) ने अपने तर्के के बारे में वाज़ेह तौर पर फ़र्मा दिया कि हमारा तर्का तक्सीम नहीं होता। वो जो भी हो सब सदका है। लेकिन हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) से अपनी विराषत का मुतालबा किया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने हदीषे नबवी ला नूरिषु मा तरक्नाहु सदक़तन खुद आँहजरत (ﷺ) से सुनी थी। इसलिये उसके ख़िलाफ़ क्यूँकर कर सकते थे। और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की नाराज़गी इस पर मबनी (आधारित) थी कि उनको इस हदीष की ख़बर न थी इसीलिये वो मतरूका जायदादे नबवी में अपने हिस्से की तालिब हुई।

जायदाद की तफसील ये है कि फ़दक एक मुकाम है मदीना से तीन मंज़िल दूरी पर, वहाँ की ज़मीन आँहज़रत (ﷺ) ने खास अपने लिये रखी थी और खास मदीना में बन् नज़ीर के खज़ूर के बागात, मुखैरीक के सात बागात, अंसार की दो हुई अराज़ी, वादी-ए-कुरा की तिहाई ज़मीन वगैरह अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने उन जायदादों की तक्सीम से इंकार कर दिया। अगर आप हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का हिस्सा अलग कर देते तो फिर आपकी बीवियों का और हज़रत अब्बास (रज़ि.) का हिस्सा भी अलग-अलग करना पड़ता और वो तर्ज़े अमल जो आँहज़रत (ﷺ) का इस जायदाद में था पूरा करना मुम्किन न रहता। लिहाज़ा आपने तक्सीम से इंकार कर दिया। जिसका मतलब ये था कि सब काम और सब मस़ारिफ़ (खर्च) उसी तरह जारी रहें जिस तरह आँहज़रत (ﷺ) की हयाते दुनियावी में किया करते थे, और ये उनका कमाले एह्तियाज़ और परहेज़गारी थी। बैहक़ी की रिवायत में है कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बीमारी में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) उनकी अयादत के लिये गये और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को राज़ी कर लिया और वो राज़ी हो गयी थीं। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) अपनी ख़िलाफ़त में उन जायदादों से आप (ﷺ) की बीवियों के मस़ारिफ़ और दूसरे ज़रूरी मस़ारिफ़ अदा करते रहे लेकिन हज़रत उमरान (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में बतौर मुक़ा आ के मरवान को फ़दक दे दिया। वो खुद ग़नी थे उनको ये हाज़त न थी कि फ़दक से अपने मस़ारिफ़ चलाते। (ख़ुलासा वहीदी)

व क़द जाअ फी किताबिलमगाज़ी अन्न फातिमत जाअत तस्अलु नसीबहा मिम्मा तरक रसूलुल्लाहि (ﷺ) मिम्मा अफाअल्लाहु अलैहि वप़दक वमा बक्रिय मिन खुमुसि ख़ैबर व इला हाज़ा अशारलबुखारी

3094. हमसे इस्हाक़ बिन मुहम्मद फ़रवी ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन अनस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मालिक बिन औस बिन हदधान ने (ज़ुहरी ने बयान किया कि) मुहम्मद बिन जुबैर ने मुझसे (इसी आने वाली) हदीष का ज़िक्र किया था। इसलिये मैं ने मालिक बिन औस की ख़िदमत में खुद हाज़िर होकर उनसे इस हदीष के बारे में (बतौर तस्दीक) पूछा उन्होंने कहा कि दिन चढ़ आया था और मैं अपने घरवालों के साथ बैठा था, इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का एक बुलाने वाला मेरे पास आया और कहा कि अमीरुल मोमिनीन आपको बुला रहे हैं। मैं उस क़ासिद के साथ ही चला गया और हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप एक तरछत पर बोरिया बिछाए, बोरे पर कोई बिछौना न था, सिर्फ़ एक चमड़े के तकिये पर टेक दिये हुए बैठे थे। मैं सलाम करके बैठ गया। फिर उन्होंने फ़र्माया, मालिक! तुम्हारी क़ौम के कुछ लोग मेरे पास आए थे, मैंने उनके लिये कुछ हकीर सी इमदाद का फ़ैसला कर लिया है। तुम उसे अपनी निगरानी में उनमें तक्सीम करा दो, मैंने अर्ज़ किया, या अमीरल मोमिनीन! या अमीरल मोमिनीन अगर आप इस काम पर किसी और को मुकर्रर कर देते तो बेहतर होता। लेकिन उमर (रज़ि.) ने यही इस्सरार किया कि नहीं, अपनी ही तहवील में बांट दो। अभी

٣٠٩٤ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْفَرَوِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ بْنِ الْحَدَثَانِ - وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جَبْرِ ذَكَرَ لِي ذِكْرًا مِنْ حَدِيثِهِ ذَلِكَ، فَأَنْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ الْحَدِيثِ فَقَالَ مَالِكٌ - : يَتِمُّ آتَا جَالِسٍ لِي أَهْلِي حِينَ مَتَعَ النَّهَارَ، إِذَا رَمَوُا عَمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ بِأَيْتِي فَقَالَ: أَجِبْ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، فَأَنْطَلَقْتُ مَعَهُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى عَمَرَ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى رِمَالٍ مَرِيرٍ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ إِرَاشٌ، مَكِيَّةٌ عَلَى وَمَادَةٍ مِنْ أَدَمَ. فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ جَلَسْتُ، فَقَالَ: يَا مَالِكُ إِنَّهُ قَدِيمٌ عَلَيْنَا مِنْ قَوْمِكَ أَهْلُ آيَاتٍ، وَقَدْ أَمَرْتُ فِيهِمْ بِرَحْمَةٍ، فَأَقْبَضَهُ، فَأَقْبَضَهُ يَتْنَهُمْ، فَقُلْتُ:

में वहीं हाज़िर था कि अमीरुल मोमिनीन के दरबान यरफा आए और कहा कि उम्मान बिन अफ़फ़ान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, जुबैर बिन अवाम और सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) अंदर आने की इजाज़त चाहते हैं? हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ, उन्हें अंदर बुला लो। आपकी इजाज़त पर ये हज़रात दाख़िल हुए और सलाम करके बैठ गये। यरफा भी थोड़ी देर बैठे रहे और फिर अंदर आकर अर्ज़ किया अली और अब्बास (रज़ि.) को भी अंदर आने की इजाज़त है? आपने फ़र्माया कि हाँ, उन्हें अंदर बुला लो। आपकी इजाज़त पर ये हज़रात भी अंदर तशरीफ़ ले आए और सलाम करके बैठ गये। अब्बास (रज़ि.) ने कहा, या अमीरल मोमिनीन! मेरा और इनका फ़ैसला कर दीजिए। उन हज़रात का झगड़ा उस जायदाद को लेकर था जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को बनी नज़ीर के अम्बाल में से (खुम्स के तौर पर) इनायत फ़र्माई थी। इस पर हज़रत उम्मान और उनके साथ जो दीगर सहाबा थे कहने लगे, हाँ, अमीरुल मोमिनीन! उन हज़रात में फ़ैसला कर दीजिए और हर एक को दूसरे की तरफ़ से बेफ़िक़र कर दीजिए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, अच्छा, तो फिर ज़रा ठहरिये और दम ले लीजिए मैं आप लोगों से उस अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ जिसके हुक्म से आसमान और ज़मीन कायम हैं। क्या आप लोगों को मा'लूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि, हम पैग़म्बरों का कोई वारिष नहीं होता, जो कुछ हम (अंबिया) छोड़कर जाते हैं वो स़दका होता है, जिससे आँहज़रत (ﷺ) की मुराद खुद अपनी ज़ाते गिरामी भी थी। उन हज़रात ने तस्दीक की, कि जी हाँ, बेशक आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया था। अब हज़रत उमर (रज़ि.) अली और अब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुखातिब हुए, उनसे पूछा। मैं आप हज़रात को अल्लाह की क़सम देता हूँ, क्या आप हज़रात को भी मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा फ़र्माया है या नहीं? उन्होंने भी उसकी तस्दीक की कि आँहज़रत (ﷺ) ने बेशक ऐसा फ़र्माया है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि अब मैं आप लोगों से इस मामले की शरह बयान करता हूँ। बात ये है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूले करीम (ﷺ) के लिये इस ग़नीमत का एक मख़सूस हिस्सा मुकर्रर कर दिया था। जिसे आँहज़रत (ﷺ)

يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، لَوْ أَمَرْتُ لَهُ غَيْرِي. قَالَ: فَأَبِضْهُ أَيُّهَا السَّوَدُ. فَبِضْنَا أَنَا جَالِسٌ عِنْدَهُ أَنَا حَاجِبُهُ يَرْفَأُ فَقَالَ: هَلْ لَكَ فِي غُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ يَسْتَأْذِنُونَ. قَالَ: نَعَمْ، فَإِذِنْ لَهُمْ، فَدَخَلُوا، فَسَلَّمُوا وَجَلَسُوا. ثُمَّ جَلَسَ يَرْفَأُ يَسِيرًا، ثُمَّ قَالَ: هَلْ لَكَ فِي عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَإِذِنْ لَهُمَا، فَدَخَلَا، فَسَلَّمَا فَجَلَسَا فَقَالَ عَبَّاسٌ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَفْضِي بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا - وَهَذَا بِخَتْمِنَا فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ مِنْ بَنِي النَّضِيرِ - فَقَالَ الرَّحُطُ - غُثْمَانُ وَأَصْحَابُهُ - يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَفْضِي بَيْنَهُمَا وَارْخِ أَحَدَهُمَا مِنَ الْآخَرِ. فَقَالَ عُمَرُ: تَبَدُّكُمْ؛ أُنْشِدْكُمْ يَا اللَّهُ الَّذِي يَأْذِيهِ تَقَرُّمُ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ، هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تُورَثُ، مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً)) يُرِيدُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَفْسَهُ. قَالَ الرَّحُطُ: لَقَدْ قَالَ ذَلِكَ. فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: أُنْشِدْكُمْمَا اللَّهُ أَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَقَدْ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالَا: قَدْ قَالَ ذَلِكَ. قَالَ عُمَرُ: فَإِنِّي أَخَذْتُكُمْ عَنْ هَذَا الْأَمْرِ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ خَصَّ رَسُولَهُ ﷺ فِي هَذَا الْقَبْرِ بِشَيْءٍ لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَمَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - فَدَيِّرْ﴾ فَكَانَتْ هَذِهِ خَالِصَةً لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَاللَّهُ مَا اخْتَارَهَا فَوْنَكُمْ، وَلَا

ने भी किसी दूसरे को नहीं दिया था। फिर आपने इस आयत की तिलावत की मा अफ़ाअल्लाहु अला रसूलिही मिन्हुम से अल्लाह तआला के इर्शाद क़दीर तक और वो हिम्मा औहज़रत (ﷺ) ने तुमको छोड़कर अपने लिये जोड़ न रखी, न ख़ास अपने खर्च में लाए बल्कि तुम ही लोगो को दीं और तुम्हारे ही कामों में खर्च कीं। ये जो जायदाद बच रही है उसमें से आप अपनी बीवियों का साल भर का खर्चा लिया करते थे। उसके बाद जो बाक़ी बच जाता वो अल्लाह के माल में शरीक कर देते (जिहाद के सामान फ़राहम करने में) ख़ैर औहज़रत (ﷺ) तो अपनी ज़िन्दगी में ऐसा ही करते रहे। हाज़िरीन तुमको अल्लाह की क़सम! क्या तुम ये नहीं जानते? उन्होंने कहा बेशक जानते हैं। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अली और अब्बास (रज़ि.) से कहा मैं आप हज़रात से भी अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, क्या आप लोग ये नहीं जानते हैं? (दोनों हज़रात ने जवाब दिया कि हाँ!) फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने यूँ फ़र्माया कि फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी करीम (ﷺ) को दुनिया से उठा लिया तो अबूबक्र (रज़ि.) कहने लगे कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़लीफ़ा हूँ, और इसलिये उन्होंने (औहज़रत ﷺ की इस मुख़िलस) जायदाद पर क़ब्ज़ा किया और जिस तरह औहज़रत (ﷺ) उसमें से मस़ारिफ़ किया करते थे, वो करते रहे। अल्लाह ख़ूब जानता है कि अबूबक्र (रज़ि.) अपने इस तर्ज़े अमल में सच्चे मुख़िलस, नेकोकार और हक़ की पैरवी करने वाले थे। फिर अल्लाह तआला ने अबूबक्र (रज़ि.) को भी अपने पास बुला लिया और अब मैं अबूबक्र (रज़ि.) का नाइब मुकर्रर हुआ। मेरी ख़िलाफ़त को दो साल हो गये हैं और मैंने भी इस जायदाद को अपनी तहवील में रखा है। जो मस़ारिफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) उसमें किया करते थे वैसा ही मैं भी करता रहा और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं अपनी इस तर्ज़े अमल में सच्चा, मुख़िलस और हक़ की पैरवी करने वाला हूँ। फिर आप दोनों मेरे पास मुझसे बातचीत करने आए और बिल इत्तिफ़ाक़ बातचीत करने लगे कि दोनों का मक्सद एक था। अब्बास! आप तो इसलिये तशरीफ़ लाए कि आपको अपने भतीजे (रसूलुल्लाह ﷺ) की मीरास का दा'वा मेरे सामने पेश करना था। फिर अली

اسْتَأْثَرَ بِهَا عَلَيْكُمْ، قَدْ أَغْطَاكُمْوه وَبَدَّهَا  
لَكُمْ حَتَّى بَقِيَ مِنْهَا هَذَا الْمَالُ، فَكَانَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةً سَتِيهِمْ  
مِنْ هَذَا الْمَالِ، ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ  
مَجْفَلًا مَالِ اللَّهِ. فَعَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ كَذَلِكَ  
حَيَاتِهِ. أُنْشِدُكُمْ بِاللَّهِ، هَلْ تَعْلَمُونَ بِذَلِكَ؟  
قَالُوا: نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ لِعَلِيِّ وَعَبَّاسٍ: أُنْشِدُكُمْ  
اللَّهُ هَلْ تَعْلَمَانِ ذَلِكَ؟ قَالَ غَمَرٌ: ثُمَّ تَوَفَّى  
اللَّهُ نَبِيَّهُ ﷺ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ، فَقَبَضْتُهَا أَبُو بَكْرٍ فَعَمِلَ فِيهَا بِمَا  
عَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُ فِيهَا  
لَصَادِقُ بَارٍ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ. ثُمَّ تَوَفَّى اللَّهُ  
أَبَا بَكْرٍ، فَكُنْتُ أَنَا وَلِيُّ أَبِي بَكْرٍ، فَقَبَضْتُهَا  
سَتَيْنِ مِنْ إِمَارَتِي أَغْمَلْتُ فِيهَا بِمَا عَمِلَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُو بَكْرٍ، وَاللَّهُ  
يَعْلَمُ إِنِّي فِيهَا لَصَادِقُ بَارٍ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ.  
ثُمَّ جِئْتُمَانِي تَكْلِمَانِي وَكَلِمَتُكُمَا وَاحِدَةٌ  
وَأَمْرُكُمَا وَاحِدٌ، جِئْتَنِي يَا عَبَّاسُ تَسْأَلُنِي  
نَصِيئَتِكَ مِنْ ابْنِ أَخِيكَ، وَجَاءَنِي هَذَا -  
يُرِيدُ عَلِيًّا - يُرِيدُ

نَصِيئَتِ ابْنِ أَخِيكَ مِنْ أَبِيهَا. فَقُلْتُ لَكُمَا: إِنْ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَوَرَّثْ، مَا تَرَكَنا  
صَدَقَهُ)). فَلَمَّا بَدَأَ لِي أَنْ أَذْلِقَهُ إِلَيْكُمَا  
قُلْتُ: إِنْ شِئْتُمَا ذَلَعْتُهَا إِلَيْكُمَا عَلَى أَنْ  
عَلَيْكُمَا عَهْدُ اللَّهِ وَمِيثَاقُهُ لِعَمَلَانِ فِيهَا بِمَا  
عَمِلَ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَبِمَا عَمِلَ فِيهَا  
أَبُو بَكْرٍ وَبِمَا عَمِلْتُ فِيهَا مِنْذُ وَلِيْتُهَا.



(रज़ि.) से फ़र्माया कि आप इसलिये तशरीफ़ लाए कि आपको अपनी बीवी (हज़रत फ़ातिमा रज़ि) का दा'वा पेश करना था कि उनके वालिद (रसूलुल्लाह ﷺ) की मीरास उन्हें मिलनी चाहिये, मैंने आप दोनों हज़रत से अर्ज कर दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) खुद फ़र्मा गये कि हम पैग़म्बरों का कोई मीरास तक्सीम नहीं होता, हम जो कुछ छोड़ जाते हैं वो सद्का होता है। फिर मुझको ये मुनासिब मा'लूम हुआ कि मैं उन जायदादों को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दूँ, तो मैंने तुमसे कहा, देखो अगर तुम चाहो तो मैं ये जायदादें तुम्हारे सुपुर्द कर देता हूँ, लेकिन इस अहद और इस इकरार पर कि तुम उसकी आमदनी से वो सब काम करते रहोगे जो आँ हज़रत (ﷺ) और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) अपनी ख़िलाफ़त में करते रहे और जो काम मैं अपनी हुकूमत के शुरू से करता रहा। तुमने इस शर्त को कुबूल करके दरख़्वास्त की कि जायदादें हमको दे दो। मैंने उसी शर्त पर दे दी, हाज़िरीन कहो मैंने ये जायदादें उसी शर्त पर उनके हवाले की हैं या नहीं? उन्होंने कहा, बेशक उसी शर्त पर आपने दी हैं। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अली (रज़ि.) और अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, मैं तुमको अल्लाह की क़सम देता हूँ, मैंने उसी शर्त पर ये जायदादें आप हज़रत के हवाले की हैं या नहीं? उन्होंने कहा बेशक। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, फिर मुझसे किस बात का फ़ैसला चाहते हो? (क्या जायदाद को तक्सीम कराना चाहते हो) क़सम अल्लाह की! जिसके हुक्म से ज़मीन और आसमान क़ायम हैं मैं तो उसके सिवा और कोई फ़ैसला करने वाला नहीं। हाँ! ये और बात है कि अगर तुमसे उसका इतिज़ाम नहीं हो सकता तो फिर जायदाद मेरे सुपुर्द कर दो। मैं उसका भी काम देख लूँगा। (राजेअ: 2904)

فَقُلْنَا: اَدْفَعْنَاهَا اِلَيْنَا، فَبِذَلِكَ دَفَعْنَاهَا اِلَيْكُمَا. فَاَنْشَدُكُمُ بِاللّٰهِ، هَلْ دَفَعْنَاهُ اِلَيْهِمَا بِذَلِكَ؟ قَالَ الرَّهْطُ: نَعَمْ. ثُمَّ اَقْبَلَ عَلٰى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: اَنْشَدُكُمَا بِاللّٰهِ هَلْ دَفَعْنَاهُ اِلَيْكُمَا بِذَلِكَ؟ قَالَا: نَعَمْ، قَالَ: فَتَقْبِسَانِ مِنِّي قَضَاءً غَيْرَ ذٰلِكَ؟ فَوَاللّٰهِ الَّذِي يَاْذِيهِ تَقُوْمُ السَّمَاءُ وَالْاَرْضُ، لَا اَقْضِيْ فِيْهَا قَضَاءً غَيْرَ ذٰلِكَ، لِاِنْ عَجَزْتُمَا عَنْهَا فَادْفَعْنَاهَا اِلَيَّ، لِاِنِّيْ اُكْفِيْكُمَاَهَا)).

[راجع: ٢٩٠٤]

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस जायदाद का इतिज़ाम हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत अब्बास (रज़ि.) के हाथों में दे दिया था। फिर भी ये हज़रत ये मुक़द्दमा अदालत फ़ारूक़ी में लाए तो आपने ये तोज़ीही बयान दिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

इस लम्बी रिवायत में ये मल्हूज़ रहे कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की नाराज़गी अबूबक्र (रज़ि.) से विरासत के मसले में नहीं थी क्योंकि ये सबको मा'लूम हो गया था कि आँ हज़ूर (ﷺ) ने उसकी नफ़ी पहले ही कर दी थी कि अंबिया की विरासत तक्सीम नहीं होती और तमाम सज़ाबा ने इसे मान लिया था। खुद हज़रत फ़ातिमा, हज़रत अली, या हज़रत अब्बास (रज़ि.)

से भी किसी मौके पर उसकी नफ़ी मन्कूल नहीं बल्कि नज़ाअ सिर्फ़ उस माल के इतिज़ाम व इंसिराम के मामले पर हुआ था। यही वजह थी कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसका इतिज़ाम अहले बैत रिज़वानुल्लाह अलैहिम के हाथ में दे भी दिया था। इस हदीष में ये भी है कि हज़ूर अकरम (ﷺ) की वफ़ात के बाद सय्यिदा फ़ातिमा (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) से क़तअ ता'ल्लुक़ कर लिया था और अपनी वफ़ात तक नाराज़ रही थीं। मशहूर रिवायात में इसी तरह है लेकिन कुछ रिवायात से ये प्राबित होता है कि जब फ़ातिमा (रज़ि.) नाराज़ हुई तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उनकी ख़िदमत में पहुँचे और उस वक़्त तक नहीं उठे जब तक वो राज़ी नहीं हो गई। मुअतबर मुसन्निफ़ीन ने उसकी तौषीक़ भी की है और वाक़िया ये है कि सहाबा की ज़िन्दगी खुसूसन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की सीरत से यही तर्ज़ अमल ज़्यादा जोड़ भी खाता है। (तफ़हीमुल बुख़ारी)

यहाँ कोई ये ए'तिराज़ न करे कि जब आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हम पैगम्बरों का कोई वारिष नहीं होता और अबूबक्र (रज़ि.) ने भी इसी हदीष की बिना पर ये जायदाद हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के हवाले नहीं की, हालाँकि वो नाराज़ भी हुई तो फिर उमर (रज़ि.) ने हदीष के ख़िलाफ़ क्यूँ किया और हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के तरीक़ को क्यूँ मौकूफ़ किया? इसका जवाब ये है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस जायदाद को तक्सीम नहीं किया, बल्कि उसका इतिज़ाम करने वाला हज़रत अली और हज़रत अब्बास (रज़ि.) को बना दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) के लिये ख़िलाफ़त के काम बहुत हो गये थे, उन जायदादों की निगरानी की फ़र्सत भी न थी। दूसरे हज़रत अली (रज़ि.) को खुश कर देना भी मंज़ूर था और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से तक्सीम की दरख़वास्त की थी जो हदीष के ख़िलाफ़ होने की वजह से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने मंज़ूर न की।

## बाब 2 : माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा अदा करना दीन ईमान में दाख़िल है

## ۲- بَابُ أَذَاءِ الْخُمْسِ

مِنَ الدِّينِ

3095. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ज़ब्ज़ी ने बयान किया, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़द (दरबारे रिसालत में) हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारा ता'ल्लुक़ क़बीला रबीआ से है और क़बीला मुज़र के कुफ़्फ़ार हमारे और आपके बीच में बसते हैं। (इसलिये उनके ख़तरे की वजह से हम लोग) आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ अदब वाले महीनों में हाज़िर हो सकते हैं। आप हमें कोई ऐसा वाज़ेह हुक्म फ़र्मा दीजिए जिस पर हम खुद भी मज़बूती से क़ायम रहें और जो लोग हमारे साथ नहीं आ सके हैं उन्हें भी बता दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तुम्हें चार चीज़ों का हुक्म देता हूँ और चार चीज़ों से रोकता हूँ (मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ) अल्लाह पर ईमान लाने का कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, नमाज़ क़ायम करने का, ज़कात देने का, रमज़ान के रोज़े रखने का, और इस बात का कि जो कुछ भी तुम्हें ग़नीमत का माल मिले। उसमें पाँचवाँ हिस्सा (खुम्स) अल्लाह के लिये

۳۰۹۵- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَدِمَ وَفَدَ عَبْدُ الْقَيْسِ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا هَذَا الْحَيَّ مِنْ رِبِيعَةٍ، بَيْنَا وَبَيْنَكَ كَفَارٌ مُضَرٌّ، فَلَسْنَا نَصِلُ إِلَيْكَ فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ، فَمَرْنَا بِأَمْرِ نَأْخُذُ مِنْهُ وَنَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ وَرَاءِنَا. قَالَ: ((أَمَرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الْإِيمَانُ بِاللَّهِ شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ - وَعَقْدُ بَيْدِهِ - وَإِقَامُ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ، وَصِيَامُ رَمَضَانَ، وَأَنْ تَزِدُوا لِلَّهِ خُمْسَ مَا غَنِمْتُمْ. وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الدِّبَاءِ، وَالْفَيْعِ وَالْخَتَمِ،

निकाल दो और तुम्हें में दुब्बा, नक़ीर, हन्तुम और मुज़फ़फ़त के इस्ते'माल से रोकता हूँ। (राजेअ: 53)

والمزفت)). [راجع: ٥٣]

दुब्बा कद्दू की तूम्बी और नक़ीर कुरेदी हुई लकड़ी के बर्तन, हन्तुम सब्ज़ लाखी बर्तन, और मुज़फ़फ़त रोगानी बर्तन, ये सब शराब रखने के लिये इस्ते'माल किये जाते थे। इसलिये उन सबको दूर फेंक देने का आप (ﷺ) ने हुक्म फ़र्माया, खुमस की अदायगी का खास हुक्म दिया। यही बाब से वजहे मुनासबत है।

**बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद आपकी अज़्वाजे मुतहहरात के नफ़का का बयान**

٣- باب نفقة نساء النبي ﷺ

بعد وفاته

3096. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उन्हें अबुज़्जिनाद ने बयान किया, उन्हें अअरज ने और उन्हें हज़रत अबू हु़रैरह (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे वारिष मेरे बाद एक दीनार भी न बांटे (मेरा तर्का तक्सीम न करें) मैं जो छोड़ जाऊँ उसमें से मेरे आमिलों की तनख़्वाह और मेरी बीवियों का ख़र्च निकालकर बाक़ी सब सद्का है। (राजेअ: 2776)

٣٠٩٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَتَقَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا، مَا تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي، وَمُؤْنَةِ عَائِلَتِي، فَهُوَ صَدَقَةٌ)). [راجع: ٢٧٧٦]

या'नी जिस तरह इस्लामी हुक्मत के कारिन्दों की तनख़्वाह दी जाएँगी। अज़्वाजे मुतहहरात का नफ़का भी इसी तरह बैतुलमाल से अदा किया जाएगा।

3097. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, कहा हमसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूले करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो मेरे घर में आधे वस्क्र जौ के सिवा जो एक त़ाक़ में रखे हुए थे और कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जो किसी ज़िगर वाले (जानदार) की ख़ुराक बन सकती। मैं उसी में से खाती रही और बहुत दिन गुज़र गये। फिर मैंने उसमें से नापकर निकालना शुरू किया तो वो जल्दी ख़त्म हो गये। (दीगर मक़ाम: 6451)

٣٠٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((تَوَفَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَا فِي بَيْتِي مِنْ شَيْءٍ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ، إِلَّا شَطْرَ شَعِيرٍ فِي رَفْءٍ لِي، فَاتَّكَلْتُ مِنْهُ حَتَّى طَالَ عَلَيَّ، فَكَيْتَبُهُ فَقَبِنِي)). [طرفه في: ٦٤٥١]

**तशरीह:** अल्लाह ने उस जौ में बरकत दी थी। जब हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उसको मापा, तो गोया तवक्कल में फ़र्क़ आ गया, बरकत जाती रही। ये जो दूसरी हदीष में है कि अनाज मापो उसमें तुम्हारे लिये बरकत होगी। उससे मुराद ये है कि ख़रीदते वक़्त या लेते वक़्त या जितना उसमें से निकालो वो माप लो, सबको मत मापो, अल्लाह पर भरोसा रखो। इस हदीष की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ये है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) को ये जौ तर्का में नहीं मिले थे, बल्कि उनका ख़र्चा बैतुलमाल पर था। अगर ये ख़र्चा बैतुलमाल के ज़िम्मे न होता तो आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद वो जौ उनसे ले लिये जाते।

3098. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने

٣٠٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

बयान किया, उनसे सुफयान शरीने, कहा कि मुझसे अबू इस्हाक ने बयान किया, कहा कि मैंने अम्म बिन हारिष से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने (अपनी वफात के बाद) अपने हथियार, एक सफेद खच्चर, और एक ज़मीन जिसे आप खुद सड़का कर गये थे, के सिवा और कोई तर्का नहीं छोड़ा था। (2739)

عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرُو بْنَ الْحَارِثِ قَالَ ((مَا تَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَّا سِلَاحَهُ وَبَعْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ وَأَرْضًا تَرَكَهَا صَدَقَةً)). [٢٧٣٩]

बाब का तर्जुमा हदीस के अल्फ़ाज़ व अरज़न तरकहा सदक़तन से निकला क्योंकि अज़्वाजे मुतहहरात का खर्चा उसी ज़मीन से दिया जाता था। जिसको आप (ﷺ) सड़का कर गये थे। मज़ीद तफ़सील पीछे गुज़र चुकी है।

#### बाब 4 : रसूले करीम (ﷺ) की बीवियों के घरों का उनकी तरफ़ मन्सूब करना

#### ٤ - بَابُ مَا جَاءَ فِي ثُبُوتِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ

और अल्लाह पाक ने सूरह अहज़ाब में फ़र्माया कि, तुम लोग (अज़्वाजे मुतहहरात) अपने घरों ही में इज़ाज़त से रहा करो। और (उसी सूरह में फ़र्माया कि) नबी के घर में उस वक़्त तक न दाख़िल हो, जब तक तुम्हें इज़ाज़त न मिल जाए। (अल अहज़ाब: 53)

وَمَا نَسَبَ مِنَ الثُّبُوتِ إِلَيْهِمْ وَقَوْلًا: اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ﴾ [الاحزاب: ٣٣]، ﴿وَلَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ﴾ [الاحزاب: ٥٣].

**तशरीह:** मुज्ताहिदे मुतलक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बाब मुनअकिद करके बतलाना चाहते हैं कि अब्यात व हुजराते नबवी आपकी हयाते तय्यिबा में जिस जिस तौर पर जिन जिन बीवियों को तक्सीम थे। आपकी वफ़ात के बाद वो उसी तरह रहे। उनमें कोई वरषा नहीं तक्सीम किया गया और ये इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) खुद फ़र्मा गये थे कि हमारा कोई तर्का तक्सीम नहीं होता। ग़िरोहे अंबिया में अल्लाह का यही क़ानून रहा है, वो सिर्फ़ इल्मे दीन की दौलत छोड़कर जाते हैं। ब सिलसिला तज़्किर-ए-खुमुस इस मसले को भी बयान कर दिया गया और खुमुस का ता'ल्लुक जिहाद से है। इसलिये ज़ैली तौर पर ये मसाइल किताबुल जिहाद में मज़कूर है।

पहली आयत में घरों की निस्बत बीवियों की तरफ़ फ़र्माई, दूसरी आयत में उन ही घरों को पैग़म्बर (ﷺ) के घर फ़र्माया इससे हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब प्राबित किया कि आँहज़रत (ﷺ) की बीवियों को जैसे आपकी वफ़ात के बाद अपने खर्च का हक़ था। वैसे ही अपने अपने हुज्रों पर भी उनका हक़ था और उसकी वजह ये हुई कि अल्लाह तआला ने उनको मुसलमानों की माँएं करार दिया और किसी और से उन पर निकाह ह़राम कर दिया। (वहीदी)

3099. हमसे हिब्बान बिन मूसा और मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर और यूनुस ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मसऊद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (मर्जुल वफ़ात में) जब नबी करीम (ﷺ) का मर्ज़ बहुत बढ़ गया तो आपने सब बीवियों से इसकी इज़ाज़त चाही कि मर्ज़ के दिन आप भरे घर में गुज़ारें। इसकी इज़ाज़त आप (ﷺ) को मिल गई थी।

٣٠٩٩ - حَدَّثَنَا حِثَّانُ بْنُ مُوسَى وَمُحَمَّدٌ قَالَا: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ وَيُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: ((لَمَّا نَفَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يَمْرُضَ لِي بَيْتِي، فَأَذِنَ لَهُ)).

(राजेअ: 198)

[راجع: 198]

3100. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे नाफेअ ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना। उन्होंने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे घर, मेरी बारी के दिन, मेरे हलक़ और सीने के दरम्यान टेक लगाए हुए वफ़ात पाई, अल्लाह तआला ने (वफ़ात के वक़्त) मेरे थूक और आँहज़रत (ﷺ) के थूक को एक साथ जमा कर दिया था, बयान किया (वो इस तरह कि) अब्दुर्रहमान (रज़ि.) (हज़रत आइशा रज़ि. के भाई) मिस्वाक लिये हुए अंदर आए। आप (ﷺ) उसे चबा न सके। इसलिये मैंने उसे अपने हाथ में ले लिया और मैंने उसे चबाने के बाद वो मिस्वाक आपके दांतों पर मली। (राजेअ: 890)

٣١٠٠ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعٌ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((تَوَفَّى النَّبِيُّ ﷺ لِي تَنِي، وَلِي نَوْصِي، وَتَنَ سَخْرِي وَتَحْرِي، وَجَمَعَ اللَّهُ تَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ. قَالَتْ: دَخَلَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ بِسَوَاكٍ فَضَغَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْهُ فَأَخَذَتْهُ لِمَضْغَتِهِ ثُمَّ مَسَّتْهُ بِهِ)).

[راجع: 890]

**तशरीह:** वफ़ाते नबवी के बाद कुछ लोगों ने ये वहम फैलाना चाहा कि रसूले करीम (ﷺ) अपनी वफ़ात के वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) को अपना वसी करार देकर गये हैं। ये बात हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी सुनी, इस पर आपने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के आखिरी दिन पूरे तौर पर मेरे हुजरे में गुजरे। उन दिनों में एक लम्हा भी मैंने आपको तन्हा नहीं छोड़ा। वफ़ात के वक़्त हुजूर (ﷺ) अपना सारे मुबारक मेरी छाती पर रखे हुए थे। उन हालात में मैं नहीं समझ सकती कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को कब वसी करार दे दिया?

3101. हमसे सईद बिन इफ़ेर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैश बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हज़रत अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबेदीन ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत सफ़िया (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मिलने के लिये हाज़िर हुई। आँहज़रत (ﷺ) रमज़ान के आखिरी अशरे का मस्जिद में ए'तिकाफ़ किये हुए थे। फिर वो वापस होने के लिये उठी तो आँहज़रत (ﷺ) भी उनके साथ उठे। जब आँहज़रत (ﷺ) अपनी ज़ोजा मुतहहरा हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के दरवाज़े के करीब पहुँचे जो मस्जिद नबवी के दरवाज़े से मिला हुआ था तो दो अंसारी सहाबी (उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिश्र रज़ि.) वहाँ से गुजरे। और आँहज़रत (ﷺ) को उन्होंने सलाम किया और आगे बढ़ने लगे। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, ज़रा ठहर जाओ (मेरे साथ मेरी बीवी सफ़िया रज़ि. हैं या'नी कोई दूसरा नहीं) उन दोनों ने अज़र्ज किया। सुब्हानल्लाह! या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उन हज़रत पर

٣١٠١ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ غَفِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ حُسَيْنٍ أَنَّ صَفِيَّةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَزُورُهُ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فِي الْمَسْجِدِ - فِي الْمَشْرِ الْأَوَّخِرِ مِنْ رَمَضَانَ - ثُمَّ قَامَتْ تَقْلِبُ فَقَامَ مَعَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا بَلَغَ قَرِيبًا مِنْ بَابِ الْمَسْجِدِ عِنْدَ بَابِ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ مَرَّ بِهِمَا رَجُلَانِ مِنَ الْأَنْصَارِ فَلَسَمَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ نَفَذَا، فَقَالَ لَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((عَلَى رِسَالِكُمَا)). قَالََا: سُبْحَانَ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ

आपका ये फर्माना बड़ा शाक्र गुजरा कि हज़रत (ﷺ) ने उस पर फर्माया कि शैतान इंसान के अंदर इस तरह दौड़ता रहता है जैसे जिस्म में खून दौड़ता है। मुझे यही खतरा हुआ कि कहीं तुम्हारे दिलों में भी कोई वस्वसा पैदा न हो जाए। (राजेअ: 2035)

اللَّهُ، وَكَبُرَ عَلَيْهِمَا ذَلِكَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَتْلُغُ مِنَ الْإِنْسَانِ مَتْلَغَ الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْذِفَ فِي قُلُوبِكُمْ شَيْئًا)). [راجع: ٢٠٣٥]

**तशरीह:** उन अस्हाबे किराम पर शाक्र इसलिये गुजरा क्योंकि वो दोनों सच्चे मोमिन थे, उनको ये रंज हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने हमारी निस्बत ये ख्याल फर्माया कि हम आप पर बदगुमानी करेंगे। दरहकीकत आप (ﷺ) ने उनका ईमान बचा लिया, पैगम्बरों की निस्बत एक ज़रा सी बदगुमानी करना भी कुफ़्र और बाअि़बे ज़वाले ईमान है, इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ निकाला कि दरवाज़े को उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) का दरवाज़ा कहा।

3102. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन हिब्बान ने, उनसे वासेअ बिन हिब्बान ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं (उम्मुल मोमिनीन) हफ़सा (रज़ि.) के घर के ऊपर चढ़ा, तो देखा कि नबी करीम (ﷺ) क़ज़ा-ए-हाजत कर रहे थे। आप (ﷺ) की पीठ क़िबले की तरफ़ थी और चेहरा मुबारक शाम की तरफ़ था। (राजेअ: 145)

٣١٠٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُثَنِّبِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بَحْثِيِّ بْنِ جَبَانَ عَنْ وَاسِعِ بْنِ جَبَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((ارْتَقَيْتُ فَوْقَ بَيْتِ حَفْصَةَ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْضِي حَاجَتَهُ مُسْتَذْبِرَ الْقِبْلَةِ مُسْتَقْبِلَ الشَّامِ)). [راجع: ١٤٥]

घर को हज़रत हफ़सा (रज़ि.) की तरफ़ मन्सूब किया, उसी से बाब का मतलब निकला।

3103. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अन्न की नमाज़ पढ़ते तो धूप अभी उनके हुज़े में बाक़ी रहती थी। (राजेअ: 522)

٣١٠٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُثَنِّبِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي الْفَصْرَ وَالشُّمُسُ لَمْ تَخْرُجْ مِنْ حُجْرَتِهَا)). [راجع: ٥٢٢]

हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरफ़ हुज़े को मन्सूब किया गया, इसी से बाब का मतलब प्राबित हुआ। ये हदीष किताबुल मवाक़ीत में भी गुज़र चुकी है।

3104. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने खुत्बा देते हुए आइशा (रज़ि.) के हुज़े की तरफ़ इशारा किया और फर्माया कि इसी तरफ़ से (या'नी मशरिफ़ की तरफ़ से) फ़िल्ले बरपा होंगे, तीन बार आप (ﷺ) ने इसी तरह फर्माया कि यहीं से शैतान का सर

٣١٠٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ النَّبِيُّ ﷺ عَطِثًا فَأَشَارَ نَحْوَ مَنْسَكِنِ عَائِشَةَ فَقَالَ: هَا هُنَا الْفَيْسَةُ - ثَلَاثًا - مِنْ حَيْثُ يُطْلَعُ قُرْنُ

नमूदार होगा। (दीगर मक़ाम : 3279, 3511, 5296, 7092, 7093)

الشَّيْطَانُ)). [أطرافه : 3, 3279, 3511, 5296, 7092, 7093]

[7093, 7092, 5296]

**तशरीह :** अलमुरादु बिकर्निशैतानि तर्फुरासिही अय यदनी रासहू इलशशमि फी वक्ति तुलूहा फयकूनु-स्साजिदून लिशशमि मिनल्कुफ़फ़ारि कस्साजिदीन लहू व क़ौल कर्नुह उम्मतुहू व शीअतुहू व फी बअज़िहा कर्नुशशमि (हाशिया बुखारी) या'नी कर्नुशैतान से उसके सर का किनारा मुराद है। वो सूरज के निकलने के वक्त उसकी तरफ अपना सर कर देता है ताकि सूरज को सज्दा करने वाले काफ़िर उसको सज्दा करें। गोया वो उसी को सज्दा कर रहे हैं। कहा गया है कि कर्न से मुराद उसके मानने वाले हैं, जो शैतान के पुजारी हैं। अल्लामा ऐनी (रह.) फ़र्माते हैं कि मशरिफ़ से आप (ﷺ) ने इराक़ की सरज़मीन की तरफ़ इशारा किया था, जो फ़िल्वाक़ेअ फ़िल्नों का मर्कज़ (केन्द्र) रही है।

3105. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने, उन्हें अमरह बन्ति अब्दुर्रहमान ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलु करीम (ﷺ) उनके घर में मौजूद थे। अचानक उन्होंने सुना कि कोई साहब हफ़्सा (रज़ि.) के घर में अंदर आने की इजाज़त मांग रहे हैं। (आइशा रज़ि. ने बयान किया) मैंने अज़्र किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप देखते नहीं, ये शरूफ़ घर में जाने की इजाज़त मांग रहा है। औहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मेरा ख़याल है ये फ़लाँ साहब हैं, हफ़सा (रज़ि.) के रज़ाई चचा! रज़ाअत भी उन तमाम चीज़ों को हराम कर देती है जिन्हें विलादत हराम करती है। (राजेअ : 2644)

3105- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عُمَرَ أَيْبَةَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ((أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ عِنْدَهَا، وَأَنَّهَا سَمِعَتْ صَوْتَ إِنْسَانٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَرَأَيْتَ فَلَانًا - لَعَمْرُ حَفْصَةَ مِنَ الرِّضَاعَةِ - الرِّضَاعَةُ تُحَرِّمُ مَا تُحَرِّمُ الْوِلَادَةُ)). [راجع: 2644]

इसमें भी घर को हज़रत हफ़सा (रज़ि.) की तरफ़ मन्सूब किया गया। जिससे बाब का मतलब प्राबित हुआ कि किसी बच्चे ने अपनी चाची का दूध पिया है तो चाचा रज़ाई बाप होगा। और चाचा के लड़के लड़कियाँ रज़ाई भाई-बहन होंगे। उनसे पर्दा भी नहीं है क्योंकि रज़ाअत से ये सब मह़रम बन जाते हैं।

**बाब 5 : नबी करीम (ﷺ) की ज़िरह, अस्मा-ए-मुबारक, आप (ﷺ) की तलवार, प्याला और अंगूठी का बयान**

और आप (ﷺ) के बाद जो ख़लीफ़ा हुए उन्होंने ये चीज़ें इस्ते'माल कीं, उनको तक्सीम नहीं किया, और आप (ﷺ) के मूए मुबारक और नअलैन (जूतों) और बर्तनों का बयान जिनको आपके अइह़ाब क़ौरह ने आपकी वफ़ात के बाद (तारीख़ी तौर पर) मुतबर्क सभझा।

5- بَابُ مَا ذُكِرَ مِنْ دِرْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَغَصَاةٍ وَسَيْفِهِ وَقَدْحِهِ وَخَاتَمِهِ وَمَا اسْتَعْمَلَ الْخُلَفَاءُ بَعْدَهُ

مِنْ ذَلِكَ مِمَّا لَمْ يُذَكَّرْ قِسْمَتُهُ وَمِنْ خِفَرِهِ وَنَعْلِهِ وَأَيْتِهِ مِمَّا تَرَكَ أَمْتَحَانَهُ وَغَيْرَهُمْ بَعْدَ وَفَاتِهِ

अल्गरज़ु मिन हाज़िहित्तर्जुमति तब्बीतुन अन्नहू (ﷺ) लम यूरषु व ला बीअ मौजूदहू बल तुरिक बियदि मन सार इलैहि लिन्नबर्क़ि बिही व लौ कान मीराषन लबीअत व कुस्सिमत व लिहाज़ा क़ाल बअद ज़ालिक मिम्मा लम युज़्कर किस्मतुहू (फ़तुहलबारी) इस बाब की गर्ज़ इस अमर को प्राबित करना है कि आप (ﷺ) का किसी को वारिष नहीं बनाया

और न आपका तर्का बेचा गया, बल्कि जिसकी तहवील में वो तर्का पहुँच गया तब रूक के लिये उसी के पास छोड़ दिया गया और अगर आप (ﷺ) का तर्का मीरास होता तो वो बेचा जाता और तक्सीम किया जाता। इसीलिये बाद में कहा गया कि उन चीजों का बयान जिनकी तक्सीम षाबित नहीं।

3106. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे पुमामा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि जब अबूबक्र (रज़ि.) खलीफ़ा हुए तो उन्होंने उनको (या'नी अनस रज़ि.) को) बहरीन (आमिल बनाकर) भेजा और एक परवाना लिखकर उनको दिया और उस पर नबी करीम (ﷺ) की अंगूठी की मुहर लगाई, मुहरे मुबारक पर तीन सत्तें कन्दा थीं, एक सत्तर में मुहम्मद दूसरी में रसूल तीसरी में अल्लाह कुन्दा था। (राजेअ : 1448)

٣١٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثَمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ ((أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَمَّا اسْتَخْلَفَ بَعَثَهُ إِلَى الْبَحْرَيْنِ، وَكَتَبَ لَهُ هَذَا الْكِتَابَ وَخَتَمَهُ بِخَاتَمِ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ ثَلَاثُ الْخَتَمِ ثَلَاثَةَ أَسْطُرٍ: مُحَمَّدٌ سَطْرٌ، وَرَسُولٌ سَطْرٌ، وَاللَّهُ سَطْرٌ)).

[راجع: ١٤٤٨]

**तशरीह:** ये मुहर आँहज़रत (ﷺ) की थी उसका नक्श इस तरह था, मुहम्मद रसूलुल्लाह। बाब का मतलब इससे यूँ निकला कि आँहज़रत (ﷺ) की मुहर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) इस्ते'माल करते रहे, उनके बाद ये मुहर हज़रत इमर (रज़ि.) के पास रही, उनके बाद हज़रत इब्मान (रज़ि.) के पास, फिर उनके हाथ से उरैस कुँए में गिर गई बहुत दूँदा मगर न मिली। सच है, कुल्लु मन अलैहा फ़ान. (अर्रहमान : 26)

3107. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह असदी ने बयान किया, उनसे ईसा बिन तहमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने हमें दो पुराने जूते निकालकर दिखाए जिनमें दो तस्मे लगे हुए थे, उसके बाद फिर षाबित बिनानी ने मुझसे अनस (रज़ि.) से बयान किया कि वो दोनों जूते नबी करीम (ﷺ) के थे। (दीगर मक़ाम : 5857, 5858)

٣١٠٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَسَدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ طَهْمَانَ قَالَ: أَخْرَجَ إِلَيْنَا أَنَسٌ ثَلَاثَيْنِ جُرْذَاوَيْنِ لَهُمَا قَبَالَانِ، فَحَدَّثَنِي ثَابِتُ الْبُنَائِي عَنْ أَنَسٍ أَنََّّهُمَا ثَمَلَا النَّبِيَّ ﷺ. [طرفاء: ١ : ٥٨٥٧, ٥٨٥٨].

3108. मुझसे मुहम्मद बिन बशार ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहेहाब बक्रफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अबूबुर्दा बिन अबूमूसा ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने हमे एक पेवन्द लगी हुई चादर निकालकर दिखाई और बतलाया कि इसी कपड़े में नबी करीम (ﷺ) की रूह कब्ज़ हुई थी। और सुलैमान बिन मुगीरह ने हुमैद से बयान किया, उन्होंने अबूबुर्दा से इतना ज़्यादा बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने यमन की बनी हुई एक मोटी इज़ार (तहबंद) और एक कम्बल उन्हीं कम्बलों में से जिनको तुम मल्बद (या'नी मोटा पेवन्द दार कहते हो) हमें

٣١٠٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: ((أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا كِسَاءً ثَلَاثًا وَقَالَتْ: فِي هَذَا ثَرَعُ رَوْحِ النَّبِيِّ ﷺ. وَزَادَ سُلَيْمَانٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ إِزَارًا غَلِيظًا مِمَّا يُصْنَعُ بِالْيَمَنِ، وَكِسَاءً مِنْ



निकालकर दिखाई। (दीगर मक़ाम : 5818)

هَذِهِ الَّتِي يَذْكُرُونَهَا الْمَلَكَةُ).

[طرفه في : ٥٨١٨.]

**तशरीह :** क़स्तलानी ने कहा, शायद आपने बनज़रे तवाज़ोअ या इतिफ़ाक़न् इस कमली को ओढ़ लिया होगा न ये कि आप क़स्दन् पेवन्द की हुई कमली ओढ़ा करते, क्योंकि आदते शरीफ़ा ये थी कि जो कपड़ा मयस्सर आता उसको पहनते, कपड़े बहुत सफ़ा शफ़फ़ाफ़, सुथरे-उजले पहनते। मगर बनाव-सिंगार से परहेज़ करते थे। आप (ﷺ) के जूते, आप (ﷺ) की कमली, आप (ﷺ) का प्याला, आप (ﷺ) की अंगूठी उन सबको बतौर यादगार महफूज़ रखा गया, मगर तक्सीम नहीं किया गया। जिससे प्राबित हुआ कि सहाबा व खुलफ़-ए-राशिदीन ने आप (ﷺ) के इश्राद, नहनु मअशरुल्अम्बिया ला नूरिषु को पूरे तौर पर मल्हूजे नज़र रखा।

3109. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आसिम ने, उनसे इब्ने सीरीन ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का पानी पीने का प्याला टूट गया तो आपने टूटी हुई जगहों को चाँदी की जंजीर से जोड़ लिया। आसिम कहते हैं कि मैंने वो प्याला देखा है। और उसमें मैंने पानी भी पिया है। (दीगर मक़ाम : 5638)

٣١٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ مَيْمُونٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ لَدَخَ النَّبِيَّ ﷺ انْكَسَرَ فَاتَّخَذَ مَكَانَ الشَّعْبِ مِئْسِلَةً مِنْ فِضَّةٍ. قَالَ عَاصِمٌ: رَأَيْتُ الْقَدَحَ وَضُرْبَتُ فِيهِ)). [طرفه في : ٥٦٣٨.]

मक़सद हज़रत इमाम का ये है कि अगर आप (ﷺ) का तर्का तक्सीम किया जाता तो वो प्याला तक्सीम होता, हालाँकि वो तक्सीम नहीं हुआ। बल्कि खुलफ़ा उसे यँही बतौर तबर्क अपने पास महफूज़ रखते चले आए। इसी तरह पिछली अह्दादीज़ में आँहज़रत (ﷺ) के पुराने जूतों का ज़िक्र है और हदीषे आइशा (रज़ि.) में आप (ﷺ) की कमली और तहबन्द का ज़िक्र है। मा'लूम हुआ कि रसूल करीम (ﷺ) की छोड़ी हुई चीज़ों में से कोई चीज़ तक्सीम नहीं की गई।

3110. हमसे सईद बिन मुहम्मद जर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे वलीद बिन क़शीर ने, उनसे मुहम्मद बिन अमर बिन हल्हला दूली ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अली बिन हुसैन (ज़ैनुल आबेदीन रह) ने बयान किया कि जब हम सब हज़रात हुसैन बिन अली (रज़ि.) की शहादत के बाद यज़ीद बिन मुआविया के यहाँ से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) ने आपसे मुलाक़ात की, और कहा अगर आपको कोई ज़रूरत हो तो मुझे हुक्म दीजिए, (हज़रत ज़ैनुल आबेदीन ने बयान किया कि) मैंने कहा, मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। फिर मिस्वर (रज़ि.) ने कहा तो क्या आप मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की तलवार इनायत फ़र्माएँगे? क्योंकि मुझे डर है कि कुछ लोग (बनू उमय्या) उसे आपसे न छीन लें और अल्लाह की क़सम! अगर वो तलवार आप मुझे इनायत कर दें तो कोई शख्स भी जब तक मेरी जान

٣١١٠- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّجَرْمِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي أَنَّ الْوَلِيدَ بْنَ كَثِيرٍ حَدَّثَهُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ عَمْرٍو بْنِ خَلْعَلَةَ التَّمِيمِيِّ حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ حَدَّثَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ حُسَيْنٍ حَدَّثَهُ ((أَنَّهُمْ حِينَ قَدِمُوا الْحَبَشَةَ مِنْ عِنْدِ يَزِيدَ بْنِ مُعَاوِيَةَ مَقَتَلَ حُسَيْنٍ بْنَ عَلِيٍّ رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ لَقِيَهُ التَّمُوزُ بْنُ مَخْرَمَةَ فَقَالَ لَهُ: هَلْ لَكَ إِلَيَّ مِنْ حَاجَةٍ تَأْمُرُنِي بِهَا؟ فَقُلْتُ لَهُ: لَا. فَقَالَ فَهَلْ أَنْتَ مُعْطِي سَيْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَغْلِبَكَ الْقَوْمُ عَلَيْهِ،

बाक़ी है इसे छीन नहीं सकेगा। फिर मिस्वर (रज़ि.) ने एक किस्सा बयान किया कि अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की मौजूदगी में अबू जहल की एक बेटी को पैग़ामे निकाह भेज दिया था। मैंने खुद सुना कि इसी मसले पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने उसी मिम्बर पर खड़े होकर सहाबा को खिताब किया। मैं उस वक़्त बालिग़ था। आप (ﷺ) ने खुत्बा में फ़र्माया कि फ़ातिमा मुझसे है और मुझे डर है कि कहीं वो (इस रिश्ते की वजह से) किसी गुनाह में न पड़ जाए कि अपने दीन में वो किसी फ़िल्ते में मुब्तला हो। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ानदान बनी अब्दे शम्स के एक अपने दामाद (आस बिन रबीअ) का ज़िक्र किया और दामादी से मुता'ल्लिक आपने उनकी ता'रीफ़ की, आपने फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जो बात कही सच कही, जो वा'दा किया, उसे पूरा किया। मैं किसी हलाल (या) नी निकाह श्रानी) को हुराम नहीं कर सकता, और न किसी हुराम को हलाल बनाता हूँ, लेकिन अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी एक साथ जमा नहीं होंगी।

**तशरीह:** अना अरबाफ़ु अन तुफ़्तन फ़ी दीनिहा से मुराद ये कि अली (रज़ि.) दूसरी बीवी लाएँ और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) सौकनपने की अदावत से जो हर औरत के दिल में होती है, किसी गुनाह में मुब्तला हो जाएँ। मसलन शौहर को सताएँ, उनकी नाफ़रमानी करें या सौकन को बुरा-भला कह बैठें। दूसरी रिवायत में है कि आपने ये भी फ़र्माया कि अली (रज़ि.) का निकाह श्रानी यूँ मुम्किन है कि वो मेरी बेटी को तलाक़ दे दें और अबू जहल की बेटी से निकाह कर लें। जब हज़रत अली (रज़ि.) ने आपका ये इशार्द सुना तो फ़ौरन ये इरादा तर्क कर दिया और जब तक हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ज़िन्दा रहीं उन्होंने कोई दूसरा निकाह नहीं किया। क़स्तलानी (रह.) ने कहा आपके इशार्द से ये मा'लूम हुआ कि पैग़म्बर की बेटी और अल्लाह के दीन के दुश्मन की बेटी में जमा करना हुराम है।

मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ये किस्सा इसलिये बयान किया कि हज़रत ज़ेनुल आबेदीन की फ़ज़ीलत मा'लूम हो कि वो किस के पोते हैं, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि.) के, जिनके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) पर इताब (गुस्सा) फ़र्माया और जिनको आँहज़रत (ﷺ) ने अपने बदन का एक टुकड़ा करार दिया। इससे हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत प्राबित हुई।

व फ़िल्फ़त्हि कालल्किर्मांनी मुनासबतु ज़िक्रिल्मिस्वर लिक्त्सति ख़ित्बति बिन्ति अबी जहल इन्द तलबिही लिस्सैफ़िमिन् जिहति अन्न रसूलुल्लाहि (ﷺ) कान यहतरिजु अम्मा यूजिबु वुकूअत्तकदीरि बैनलअक़्रबाइ फ़क्ज़ालिक यम्बगी अन तुअत्तीनी अस्सैफ़ला यहसुलु बैनकव बैन अक़्रबाइक कदूरतुन बिसबबिही या'नी मिस्वर (रज़ि.) ने बिन्ते अबू जहल की मंगनी का किस्सा इसलिये बयान किया जबकि उन्होंने हज़रत ज़ेनुल आबेदीन से तलवार का सवाल किया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ऐसी चीज़ों से परहेज़ फ़र्माया करते थे जिनसे अक़्रबा में बाहमी कदूरत पैदा हो। पस मुनासिब है कि आप ये तलवार मुझको दे दें ताकि आपके अक़्रबा में उसकी वजह से आपसे कदूरत न पैदा हो।

3111. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सूकाने, उनसे मुज़िअ

وَأَيْمُ اللَّهِ لَئِنْ أَغْطَيْتَنِي لَا يَخْلُصُنِي إِلَيْهِمْ  
أَهْدًا حَتَّى تَبْلُغَ نَفْسِي. إِنْ عَلَيَّ مِنْ أَبِي  
طَالِبٍ خَطْبٌ أَهْتَأُ أَبِي جَهْلٍ عَلَى فَاطِمَةَ  
عَلَيْهَا السَّلَامُ، فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
يَخْطُبُ النَّاسَ فِي ذَلِكَ عَلَى مَنبَرِهِ هَذَا  
- وَأَنَا يَوْمَئِذٍ الْمُخْلَمُ - فَقَالَ: ((إِنْ  
فَاطِمَةُ مِنِّي، وَأَنَا أَتَخَوَّفُ أَنْ تَقْتَلَ فِي  
دِينِهَا. ثُمَّ ذَكَرَ صَهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ  
شَمْسٍ فَأَتَى عَلَيْهِ فِي مُصَافَرَتِهِ إِيَّاهُ قَالَ:  
خَذْنِي فَصَدَّقْنِي، وَوَعَدْنِي فَوَلِّ لِي،  
وَأَنَا لَسْتُ أَحَرَّمَ خِلَافًا وَلَا أَحِلُّ حَرَامًا،  
وَلَكِنْ وَاللَّهِ لَا تَجْتَمِعُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ  
وَبِنْتُ عَدُوِّ اللَّهِ أَهْدًا)).

۳۱۱۱- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوْقَةَ عَنْ

बिन यअला ने और उनसे मुहम्मद बिन हनीफ़ा ने, उन्होंने कहा कि अगर हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत उम्रान (रज़ि.) को बुरा कहने वाले होते तो उस दिन होते जब कुछ लोग हज़रत उम्रान (रज़ि.) के आमिलों की (जो ज़कात वसूल करते थे) शिकायत करने उनके पास आए। उन्होंने मुझसे कहा उम्रान (रज़ि.) के पास जा और ये ज़कात का परवाना ले जा। उनसे कहना कि ये परवाना आँहज़रत (ﷺ) का लिखवाया हुआ है। तुम अपने आमिलों को हुक्म दो कि वो इसी के मुताबिक़ अमल करें। चुनौचे मैं उसे लेकर हज़रत उम्रान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन्हें पैग़ाम पहुँचा दिया, लेकिन उन्होंने फ़र्माया कि हमें उसकी कोई ज़रूरत नहीं (क्योंकि हमारे पास इसकी नक़ल मौजूद है) मैंने जाकर हज़रत अली (रज़ि.) से ये वाक़िया बयान किया, तो उन्होंने फ़र्माया कि अच्छा, फिर इस परवाने को जहाँ उठाया है वहीं रख दो। (दीगर मक़ाम : 3112)

3112. हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन सूक़ा ने कहा कि मैंने मुंज़िर शौरी से सुना, वो मुहम्मद बिन हन्फ़िया से बयान करते थे कि मेरे वालिद (अली रज़ि.) ने मुझको कहा कि ये परवाना उम्रान (रज़ि.) को ले जाकर दे आओ, इसमें ज़कात के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) के बयान कर्दा अहक़ामात दर्ज हैं। (राजेअ : 3111)

**तशरीह :** हुआ ये था कि मुहम्मद बिन हन्फ़िया के पास एक शख्स ने हज़रत उम्रान (रज़ि.) को बुरा कहा, उन्होंने कहा ख़ामोश! लोगों ने पूछा क्या तुम्हारे बाप या'नी हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत उम्रान (रज़ि.) को बुरा कहते थे? तब मुहम्मद बिन हन्फ़िया ने ये क़िस्सा बयान किया, या'नी अगर हज़रत अली (रज़ि.) उनको बुरा कहने वाले होते तो उस मौक़े पर कहते। इस हदीष की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ये है कि आपका लिखवाया हुआ परवाना हज़रत अली (रज़ि.) के पास रहा। उन्होंने उससे काम लिया, इमाम बुख़ारी (रह.) ने ज़िरह और अस्मा और बालों के बारे में हदीषें बयान नहीं कीं, हालाँकि बाब का तर्जुमा में उनका ज़िक़र है। मुम्किन है कि उन्होंने इशारा किया हो हज़रत आइशा (रज़ि.) और इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीषों की तरफ़ जो दूसरे बाबों में मज़कूर हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष ये है कि वफ़ात के वक़्त आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास गिरवी थी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष ये है कि आप हज़रे अस्वद को एक लकड़ी से चूमते थे। अनस (रज़ि.) की हदीष किताबुत तहारत में गुजरी, इसमें इब्ने सीरीन का ये क़ौल है कि हमारे पास आँहज़रत (ﷺ) के कुछ मूए मुबारक हैं और प्याला पर बाकी बर्तनों को क़यास कर सकते हैं। हुमैदी की सनद बयान करने से इमाम बुख़ारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि सुफ़यान का सिमाअ मुहम्मद बिन सूक़ा से और मुहम्मद बिन सूक़ा का मुंज़िर से बसराहत मा'लूम हो जाए। (वहीदी)

### बाब 6 : इस बात की दलील

कि ग़नीमत का पाँचवाँ हिस्सा रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में आपकी ज़रूरतों (जैसे ज़ियाफ़ते मेहमान, सामाने जिहाद की

مُنْبِرٍ عَنْ ابْنِ الْحَنْفِيَّةِ قَالَ: ((لَوْ كَانَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ذَاكِرًا عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ذِكْرَهُ يَوْمَ جَاءَهُ نَاسٌ فَشَكُّوا سَعَةَ عُثْمَانَ، فَقَالَ لِي عَلِيٌّ: اذْهَبْ إِلَى عُثْمَانَ فَأَخْبِرْهُ أَنَّهَا صَدَقَةٌ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَمُرْ سَعَاتَكَ يَغْمَلُونَ فِيهَا. فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَالَ: أَغْنِيهَا عَنَّا. فَأَتَيْتُ بِهَا عَلِيًّا فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ضَعْفَهَا حَيْثُ أَخَذْتَهَا)).

[طرفه في : 3112]

3112- قَالَ الْحَمْدِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَوْفَةَ قَالَ: سَمِعْتُ مِنْبِرًا الثَّوْرِيَّ عَنْ ابْنِ الْحَنْفِيَّةِ قَالَ: أَرْسَلَنِي أَبِي، خُذْ هَذَا الْكِتَابَ فَادْهَبْ بِهِ إِلَى عُثْمَانَ، فَإِنْ قَبِلَ أَمَرَ النَّبِيَّ ﷺ فِي الصَّدَقَةِ)). (راجع : 3111)

### ٦- بَابُ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ

الْخُمْسُ لِنَوَائِبِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَالْمَسَاكِينِ

तैयारी वगैरह) और मुहताजों के लिये था। क्योंकि आँहजरत (ﷺ) ने सुफ़्फ़ा वालों (मुहताजों) और बेवा औरतों की खिदमत हजरत फ़ातिमा के आराम पर मुकद्दम रखी। जब उन्होंने क़ैदियों में से एक खिदमतगार आपसे मांगा और अपनी तकलीफ़ का ज़िक्र किया, जो आटा गूंधने और पीसने में होती है। आप (ﷺ) ने उनका काम अल्लाह पर रखा।

कौलुहू अहलुस्सुफ़्फ़ति हुमुल्फुक्क़राउ बल्मसाकीनुल्लज़ीन कानू यस्कुनून सुफ़्फ़त मस्जिदिन्नबिद्यि (ﷺ) बल्अरामिलु जम्अल्अर्मल अर्जुजुलुल्लज़ी ला मर्अत लहू बल्अर्मलुल्लती ला ज़ौज लहा बल्अरामिलुल्मसाकीनु मिनरिज़ालि वन्निसाइ. (किर्मानि)

3113. हमसे बदल बिन मुहब्बर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे हक़म ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इब्ने अबी लैला से सुना, कहा मुझसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को चक्की पीसने की बहुत तकलीफ़ होती। फिर उन्हें मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए हैं। इसलिये वो भी उनमें से एक लौण्डी या गुलाम की दरख़वास्त लेकर हाज़िर हुई। लेकिन आँहजरत (ﷺ) मौजूद नहीं थे। वो हज़रत आइशा (रज़ि.) से इसके बारे में कहकर (वापस) चली आई। फिर जब आँहजरत (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आप (ﷺ) के सामने उनकी दरख़वास्त पेश कर दी। हज़रत अली (रज़ि.) कहते हैं कि उसे सुनकर आँहजरत (ﷺ) हमारे यहाँ (रात ही को) तशरीफ़ लाए। जब हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे (जब हमने आँहजरत (ﷺ) को देखा) तो हम लोग खड़े होने लगे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस तरह हो वैसे ही लेटे रहो। (फिर आप (ﷺ) मेरे और फ़ातिमा (रज़ि.) के बीच में बैठ गये और इतने करीब हो गये कि) मैंने आप (ﷺ) के दोनों क़दमों की ठण्डक अपने सीने पर पाई। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जो कुछ तुम लोगों ने (लौण्डी या गुलाम) मांगे हैं, मैं तुम्हें इससे बेहतर बात क्यूँ न बताऊँ, जब तुम दोनों अपने बिस्तर पर लेट जाओ, (तो सोने से पहले) अल्लाहु अक़बर 34 बार और अल्हम्दु लिल्लाह 33 बार और सुब्हानल्लाह 33 बार पढ़ लिया करो, ये अमल बेहतर है उससे जो तुम दोनों ने मांगा है। (दीगर मक़ाम : 3705, 5361, 5362, 6318)

अल्लाह तुमको इन कलिमात की वजह से ऐसी ताक़त देगा कि तुमको खादिम की हाज़त न रहेगी। अपना काम आप कर लोगी। बज़ाहिर ये हदीष बाब के तर्जुमे के मुताबिक़ नहीं है लेकिन इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा

وَاِذَا رَ الْنَّبِيَّ ﷺ اَقْلَ الصُّفَّةِ وَالْاَرَامِلَ حِينَ سَأَلَتْهُ فَاُطِمَّةٌ وَشَكَتْ اِلَيْهِ الطُّحْنَ وَالرَّحَى اَنْ يُخْدِمَهَا مِنَ السَّيِّ، فَوَكَّلَهَا اِلَى اللّٰهِ.

۳۱۱۳- حَدَّثَنَا بِذَلِكَ عَنْ الْمَحْبُورِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي الْحَكَمُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى أَخْبَرَنَا عَلِيُّ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ اشْتَكَتْ مَا تَلْقَى مِنَ الرَّحَى مِمَّا تَطْحَنُهُ، فَبَلَغَهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى بَيْتِي، فَاتَتْهُ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تَوَالِفْهُ، فَذَكَرَتْ لِعَائِشَةَ، فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ عَائِشَةُ لَهُ، فَآتَانَا وَقَدْ دَخَلْنَا مُضَاجِعَنَا فَلَدَعَبْنَا لِنَقُومَ لِقَائِهِ ((عَلَى مَكَائِكُنَا) حَتَّى وَجَدَتْ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، فَقَالَ: أَلَا أَدُلُّكُمَا عَلَى خَيْرٍ مِمَّا سَأَلْتُمَاهُ؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مُضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا اللَّهَ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ، وَاحْمَدَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، وَسَبَّحَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، فَإِنَّ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمَا مِمَّا سَأَلْتُمَاهُ)).

[أطرافه ن: ۳۷۰۵، ۵۳۶۱، ۵۳۶۲]

[۶۳۱۸]

किया है जिसे इमाम अहमद ने निकाला है। उसमें यूँ है कसम अल्लाह की मुझसे यूँ नहीं हो सकता कि तुमको दूँ और सुफ़्फा वालों को महरूम कर दूँ, जिनके पेट भूख की वजह से पेच खा रहे हैं। मेरे पास कुछ नहीं है जो उन पर खर्च करूँ, इन कैदियों को बेचकर उनकी कीमत उन पर खर्च करूँगा। इससे आँहज़रत (ﷺ) की शाने रहमत इस क़दर नुमायाँ हो रही है कि बार बार आप पर दुरूदो-सलाम पढ़ने को दिल चाहता है। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

**बाब 7 : सूरह अन्फ़ाल में अल्लाह तआला का इर्शाद कि जो कुछ तुम ग़नीमत में हासिल करो, बेशक उसका पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह के लिये है या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) उसको तक्सीम करेंगे.**

क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है मैं तो बाँटने वाला हूँ, ख़ज़ान्ची और देने वाला तो सिर्फ़ अल्लाह पाक ही है।

कुआन शरीफ़ में खुमस के मसारिफ़ छः मज़कूर हैं। अल्लाह और रसूल और नाते वाले और यतीम और मिल्कीन और मुसाफ़िरा अक़षर उलमा का मज़हब ये है कि अल्लाह का ज़िक्र महज़ ता'ज़ीम के लिये है और खुमस के पाँच ही हिस्से किये जाएंगे। एक हिस्सा अल्लाह और रसूल (ﷺ) का जो हाकिमे वक़्त लेगा और बाक़ी चार हिस्से नाते वालों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों की ख़िदमत में खर्च होंगे। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने हिस्से के मालिक होते हैं या नहीं? इमाम बुख़ारी (रह.) का मज़हब ये है कि मालिक नहीं होते बल्कि उसकी तक्सीम आप (ﷺ) की तरफ़ मफ़ूज़ है।

3114. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सुलैमान, मंसूर और क़तादा ने, उन्होंने सालिम बिन अबी अल ज़अदि से सुना और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम अंसारियों के क़बीले में एक अंसारी के घर बच्चा पैदा हुआ तो उन्होंने बच्चे का नाम मुहम्मद रखने का इरादा किया और शुअबा ने मंसूर से रिवायत करके बयान किया है कि उन अंसारी ने बयान किया (जिनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ था) कि मैं बच्चे को अपनी गर्दन पर उठाकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और सुलैमान की रिवायत में है कि उनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ, तो उन्होंने उसका नाम मुहम्मद रखना चाहा। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुत्रियत (अबुल क़ासिम) पर कुत्रियत न रखना, क्योंकि मुझे तक्सीम करने वाला (क़ासिम) बनाया गया है। मैं तुममें तक्सीम करने वाला (क़ासिम) बनाकर भेजा गया हूँ, मैं तुममें तक्सीम करता हूँ। अमर बिन मरज़ूक ने कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उनसे क़तादा ने बयान किया, उन्होंने

۷- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿فَإِنْ كَانَ خُمْسَهُ وَلِلرَّسُولِ﴾ [الأنفال: ४१]  
يَغْنِي لِلرَّسُولِ قَسَمَ ذَلِكَ  
قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ  
وَحَازِنٌ، وَاللَّهُ يَغْنِي)).

۳۱۱۴- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ وَمَنْصُورٍ وَقَتَادَةَ أَنَّهُمْ سَمِعُوا سَالِمَ بْنَ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ وَحُضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: وَلَدَ لِرَجُلٍ مِنَّا مِنَ الْأَنْصَارِ غُلَامٌ، فَأَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ مُحَمَّدًا - قَالَ شُعْبَةُ لِي حَدِيثٌ مَنْصُورٍ: إِنَّ الْأَنْصَارِيَّ قَالَ: حَمَلْتُهُ عَلَى غُفِي، فَأَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ. وَفِي حَدِيثِ سُلَيْمَانَ: وَلَدَ لَهُ غُلَامٌ فَأَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ مُحَمَّدًا - قَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي وَلَا تَكُونُوا بِكُنْيَتِي، فَإِنِّي إِنَّمَا جِئْتُ قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ)). وَقَالَ حُمَيْدٌ: بُعِثْتُ قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ. وَقَالَ عَمْرُو: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ: سَمِعْتُ

सालिम से सुना और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से कि उन अंसारी सहाबी ने अपने बच्चे का नाम क़ासिम रखना चाहा तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन कुन्नियत पर न रखो। (दीगर मक़ाम : 3115, 3537, 6186, 6187, 6189, 6196)

سَالِمًا عَنْ جَابِرٍ: ارَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ الْقَاسِمَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((سَمُّوا بِالنَّبِيِّ، وَلَا تَكُونُوا بِكُنْيَتِي)).

[أطرافه (3): 3115, 3537, 6186, 6187, 6189, 6196]

[6187, 6189, 6196]

**तशरीह:** अबुल क़ासिम कुन्नियत रखने के बारे में इमाम मालिक (रह.) कहते हैं कि आपकी हयात में ये काम नाजाइज़ था। कुछ ने इसे मुमान अते तज़ीही करार दिया है। कुछ ने कहा मुहम्मद या अहमद नामों के साथ अबुल क़ासिम कुन्नियत रखनी मना है। इमाम मालिक (रह.) के क़ौल को तरजीह हासिल है।

3115. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान घौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबु सालिम ने, उनसे अबुल ज़अदि ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि हमारे क़बीला में एक शख्स के यहाँ बच्चा पैदा हुआ, तो उन्होंने उसका नाम क़ासिम रखा, अंसार कहने लगे कि हम तुम्हें अबुल क़ासिम कहकर कभी नहीं पुकारेंगे और हम तुम्हारी आँख ठण्डी नहीं करेंगे। ये सुनकर वो अंसारी आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे घर एक बच्चा पैदा हुआ है। मैंने उसका नाम क़ासिम रखा है तो अंसार कहते हैं हम तेरी कुन्नियत अबुल क़ासिम नहीं पुकारेंगे और तेरी आँख ठण्डी नहीं करेंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार ठीक कह रहे हैं मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुन्नियत मत रखो, क्योंकि क़ासिम मैं हूँ। (राजेअ : 3115)

3115- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْحَكَمِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيِّ: قَالَ ((وُلِدَ لِرَجُلٍ مِنَّا غُلَامٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ، فَقَالَتْ الْأَنْصَارُ: لَا نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلَا نَنْعَمُكَ غَنِيًّا. فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وُلِدَ لِي غُلَامٌ فَسَمَّيْتُهُ الْقَاسِمَ، فَقَالَتْ الْأَنْصَارُ: لَا نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلَا نَنْعَمُكَ غَنِيًّا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اخْتَارُوا الْأَنْصَارُ، سَمُّوا بِالنَّبِيِّ وَلَا تَكُونُوا بِكُنْيَتِي، فَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ)). (راجع: 3115)

**तशरीह:** इमाम बुखारी (रह.) ने इमाम सुफ़यान घौरी की रिवायत लाकर इस अम्र को कुव्वत दी कि अंसारी ने अपने लड़के का नाम क़ासिम रखना चाहा था ताकि लोग उसे अबुल क़ासिम कहें मगर अंसार ने उसकी मुखालफ़त की जिसकी आँहज़रत (ﷺ) ने तहसीन फ़र्माई। इसमें रावियों ने शुअबा से इख़ितलाफ़ किया है। जैसे अबुल वलीद की रिवायत ऊपर गुज़री। उन्होंने ये कहा है कि अंसारी ने मुहम्मद नाम रखना चाहा था।

क़ालशैख़ इब्नुलहज़र बय्यनलबुखारी अल्इख़ितलाफ़ अला शुअबत हल अरादलअंसारी अन्न इब्नुहू मुहम्मदन अबिल्क़ासिम व अशार इला तर्जीहि अन्नहू अराद अय्युसम्मियहू अल्क़ासिम बिर्रिवायति सुफ़यान व हुवज़ौरी लहू अनिलअमश फसम्माहू अल्क़ासिम व यतरज्जहू अयज़न मिन हैषुल्मअना लिअन्नहू लम यकअ अल्इन्कारू मिनलअंसारि अलैहि इल्ला हैषु लज़िम मिन तस्मियति वलदिही अय्युसगीर बिकुना अबल्क़ासिम इन्तिहा (हाशिया बुखारी) या'नी हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने शुअबा पर इख़ितलाफ़ को बयान किया है जो इस बारे में वाक़ेअ है कि अंसारी क़ासिम रखना चाहता था या मुहम्मद और इस तरजीह पर आपने इशारा फ़र्माया है कि वो क़ासिम रखना चाहता था या'नी के लिहाज़ से भी इसी को तरजीह हासिल है, अंसार का इंकार इसी वजह से था कि वो बच्चे का नाम क़ासिम रखकर खुद को अबुल क़ासिम कहलाना चाहें।

3116. हमसे हिब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उन्हें यूनुस ने, उन्हें जुत्सी ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने, उन्होंने मुआविया (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसके साथ अल्लाह तआला भलाई चाहता है उसे दीन की समझ अता करता है और देने वाला तो अल्लाह ही है मैं तो सिर्फ़ तक्सीम करने वाला हूँ और अपने दुश्मनों के मुकाबले में ये उम्मत (मुस्लिमा) हमेशा ग़ालिब रहेगी। यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आ जाए और उस वक़्त भी वो ग़ालिब ही होंगे। (राजेअ: 71)

۳۱۱۶- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَاللَّهُ الْمُفْطِي وَأَنَا الْقَاسِمُ، وَلَا تَرَأَى هَذِهِ الْأُمَّةَ ظَاهِرِينَ عَلَى مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ)). [راجع: ۷۱]

**तशरीह:** रिवायत में आँहज़रत (ﷺ) के कासिम होने का ज़िक्र है, बाब से यही मुताबक़त की वजह है। दीनी फ़ुकाहत बिला शुब्हा अल्लाह का दीन है, ये जिसको मिल जाए। राय और क़यास की फ़ुकाहत और किताब व सुन्नत की रोशनी में दीन की फ़ुकाहत दो अलग-अलग चीज़ें हैं। दीनी फ़ुकाहत का बेहतरीन नमूना हज़रत उस्ताज़ शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी मरहूम की किताब हुज्जतुल्लाहिल बालिगा है, जिसकी एक-एक लाइन से दीनी फ़ुकाहत रोज़े रोशन की तरह अयाँ है, उसमें ज़ाहिर परस्तों के लिये भी तम्बिह है जो महज़ सरसरी नज़र से दीनी उमूर में फ़त्वेबाज़ी के आदी हैं, ऐसे लोग भी राय क़यास के खूंगारों से मिल्लत के लिये कम नुक्क़सानदेह नहीं हैं। मशहूर मक़ूला है कि, यक मन इल्मरा देह मन अक्ल बायद, एक मन इल्म के लिये दस मन अक्ल की भी ज़रूरत है। शैतान आलिम था मगर अक्ल से कोरा, इसीलिये उसने अपनी राय को मुकद्दम रखकर इन्ना ख़ैरम् मिन्हु का नारा लगाया और दरबारे इलाही में मत्तरूद क़रार पाया। ये हदीष किताबुल इल्म में भी मज़कूर हो चुकी है मगर लफ़्ज़ों में ज़रा फ़र्क है।

ये जो फ़र्माया कि उम्मत इस्लामिया हमेशा मुख़ालिफ़ीन पर ग़ालिब रहेगी, सो ये मुत्तलक़ ग़लबा मुराद है, ख़्वास सियासी तौर पर हो या हुज्जत और दलाइल के तौर पर हो, ये मुम्किन है कि मुसलमान सियासी तौर पर किसी ज़माने में कमज़ोर हो जाएँ, मगर अपनी मज़हबी ख़ूबियों के आधार पर अमल में हमेशा अक्वामे-आलाम (दुनिया की अन्य क़ौमों) पर ग़ालिब रहेंगे। आज इस नाजुकतरीन दौर में तमाम मुसलमानों पर हर किस्म का इंहितात (कमी, हास) तारी है। मगर बहुत सी ख़ूबियों के आधार पर आज भी दुनिया की सारी क़ौमों मुसलमानों का लोहा मानती हैं और क़यामत तक यही हाल रहेगा। गुज़िश्ता चौदह सदियों में मुसलमानों पर किस्म किस्म के ज़वाल आए मगर उम्मत ने उन सबका मुकाबला किया और इस्लाम अपनी मुस्ताज़ ख़ूबियों के आधार पर मज़ाहिबे आलाम पर आज भी ग़ालिब है।

फ़ुकाहत से कुआन व हदीष की समझ मुराद है जो अल्लाह पाक अपने मख़सूस बन्दों को अता करता है। जैसा कि अल्लाह पाक ने हज़रत इमाम बुखारी (रह.) को ये फ़ुकाहत अता की कि एक ही हदीष से कितने कितने मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया।

3117. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह ने बयान किया, कहा हमसे हिलाल ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी अमर ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, न मैं तुम्हें कोई चीज़ देता हूँ, न तुमसे किसी चीज़ को रोकता हूँ। मैं तो सिर्फ़ तक्सीम करने वाला हूँ। जहाँ-जहाँ का मुझे हुक्म होता है वस वहीं रख देता हूँ।

۳۱۱۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْهٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِلَالٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرٍة عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا أَفْطَيْتُكُمْ وَلَا أَمْنَعُكُمْ، إِنَّا قَاسِمٌ أَمْنٌ حَتَّى أَمْرُ)).

अम्वाले-ग़नीमत पर इशारा है कि इसकी तक्सीम अमरे इलाही के मुताबिक़ मेरा काम है, देने वाला अल्लाह पाक ही है, इसलिये

जिसको जो कुछ मिल जाए उसे खुशी के साथ कुबूल कर लेना चाहिये और जो मिलेगा वो ऐन उसके हक के मुताबिक ही होगा।

3118. हमसे अब्दुल्लाह बिन यजीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी अयाश ने बयान किया, और उनका नाम नोअमान था, उनसे खौला बिनते कैस अंझारिया (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मैंने सुना, आप (ﷺ) फर्मा रहे थे कि कुछ लोग अल्लाह तआला के माल को बेजा उड़ाते हैं, उन्हें क़यामत के दिन आग मिलेगी।

۳۱۱۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنْ ابْنِ أَبِي عَتَّابٍ - وَاسْمُهُ نَعْمَانٌ - عَنْ خَوْلَةَ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: «إِنَّ رَجُلًا يَتَخَوَّضُونَ لِي مَالِ اللَّهِ بِغَيْرِ حَقٍّ، فَلَهُمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ».

अल्लाह के माल से यूँ तो सारे ही हलाल माल मुराद हैं जिनमें फ़िज़ूल खर्ची करना गुनाहे अज़ीम करार दिया गया है। मगर यहाँ अम्वाले ग़नीमत पर भी मुसत्रिफ़ का इशारा है कि उसे नाहक़ तौर पर हासिल करना दुखूले नार (जहन्नम में दाखिले) का मौजिब है। शरीअत ने उसकी तक्सीम जिस तौर पर की है उसी तौर पर उसे हासिल करना होगा।

### बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तुम्हारे लिये ग़नीमत के माल हलाल किये गये

۸- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: «أَحَلَّتْ لَكُمْ الْغَنَائِمُ».

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, अल्लाह तआला ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वा'दा किया है जिसमें से ये (ख़ैबर की ग़नीमत) पहले ही दे दी है। तो ये ग़नीमत का माल (कुआन की रू से) सब लोगों का हक़ है मगर आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्मा दिया कि कौन कौन इसके मुस्तहिक्क हैं।

وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: «وَعَدَكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَذِهِ الْآيَةَ [الفتح: २०] وَهِيَ لِلْغَنَائِمِ حَتَّى يُبَيِّنَ الرُّسُلُ ﷺ».

**तशरीह:** या'नी कुआन मुज्मल है इसकी रू से तो हर माले ग़नीमत में सारी दुनिया के मुसलमानों का हिस्सा होगा। मगर हदीष शरीफ़ से इसकी तशरीह हो गई कि हर ग़नीमत का माल उन लोगों का हक़ होगा जो लड़े और ग़नीमत हासिल की, उसमें से पाँचवाँ हिस्सा हाकिमे-वक़््त मुसलमानों के इमूमी मसालेह के लिये निकाल लेगा। इमाम बुखारी (रह.) की इस तक्रीर से उन लोगों का रह हुआ जो सिर्फ़ कुआन शरीफ़ को अमल करने के लिये काफ़ी समझते हैं और कहते हैं कि हदीष शरीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं। ऐसे लोग कुआन मजीद के दोस्त नहीं कहे जा सकते बल्कि उनको कुआन मजीद का पहला दुश्मन समझना चाहिये जिसमें साफ़ कहा गया है, व अन्ज़ल्लना इलैकज़िज़र लितुबय्यिन लिन्नास (अन नहल: 44) या'नी मैंने इस किताब कुआन मजीद को ऐ रसूल! आपकी तरफ़ उतारा है ताकि आप लोगों के सामने इसे अपनी खुदादाद तशरीह के मुताबिक़ पेश कर दो। आपकी तशरीह व तबय्युन का दूसरा नाम हदीष है। जिसके बग़ैर कुआन मजीद अपने मतलब में मुकम्मल नहीं कहा जा सकता। आँहज़रत (ﷺ) की तशरीह भी वही इलाही ही के ज़ेल में है जो वो व मा यन्तिकु अनिल्हवा इन हुव इल्ला वहयुय्यूहा (अन् नज्म: 3-4) के तहत है। फ़र्क़ इतना ही है कि कुआन मजीद वही ज़ली और हदीष नबवी वही ख़फ़ी है जिसे वही ग़ैर मल्लू कहा जाता है।

319. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, उनसे आभिर ने और उनसे

۳۱۱۹- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَامِرٍ عَنْ عُرْوَةَ الْبَارِقِيِّ



उर्वा बारक्री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़ों की पेशानियों से क़यामत तक ख़ैरो-बरकत (आख़िरत में) और ग़नीमत (दुनिया में) बँधी हुई है। (राजेअ : 2850)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ ((الْخَيْلُ مَقْفُودَةٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ وَالْأَجْرُ وَالْمَغْنَمُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٢٨٥٠]

इशारा ये है कि जिहाद में शरीक होने वालों को इशाअल्लाह माले ग़नीमत मिलेगा। इसका मतलब ये कि ग़नीमत का मुस्तहिक़ हर शाख्स नहीं है। गोया आयत में जो इन्माल था उसकी तफ़सील व वज़ाहत सुन्नत ने कर दी है।

3120. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अज़रज ने और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा मर जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा पैदा न होगा। और जब क़ैसर मर जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर पैदा न होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे। (राजेअ : 3027)

٣١٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلَا كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرٌ فَلَا قَيْصَرٌ بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَقْفُنَّ كُنُوزَهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ)). [راجع: ٣٠٢٧]

रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह प्राबित हुई कि ईरानी क़दीम सल्तनत ख़त्म हो गई और वहाँ हमेशा के लिये इस्लाम आ गया। शाम (सीरिया) में भी यही हुआ। उनके ख़ज़ानों का मुसलमानों के हाथ आना और उन ख़ज़ानों का फ़ी सबीलल्लाह तक्सीम होना मुराद है।

3121. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, उन्होंने जरीर से सुना, उन्होंने अब्दुल मलिक से और उनसे जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा मर जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा पैदा न होगा और जब क़ैसर मर जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर पैदा न होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम लोग उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे। (दीगर मक़ाम : 3619, 6629)

٣١٢١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ سَمِعَ جَرِيرًا عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلَا كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرٌ فَلَا قَيْصَرٌ بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَقْفُنَّ كُنُوزَهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ)). [طرفاه: ٣٦١٩, ٦٦٢٩].

**तशरीह:** रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह प्राबित हुई कि इरूजे इस्लाम के बाद क़दीम ईरानी सल्तनत का हमेशा के लिये ख़ात्मा हो गया और चौदह सौ साल से ईरान इस्लाम ही के ज़ेरे नगीं है। यही हाल शाम का हुआ। उनके ख़ज़ाने जो हज़ारों सालों के जमा कर्दा थे, मुसलमानों के हाथ आए और वो मुस्तहिक़ीन में तक्सीम कर दिये गये। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)

3122. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको सय्यार बिन अबी सय्यार ने ख़बर दी, कहा हमसे यज़ीद फ़क़ीर ने बयान किया, कहा हमसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह

٣١٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ الْفَقِيرُ قَالَ حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ

(ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे लिये (मुसलम उम्मत है) ग़नीमत के माल हलाल किये गये हैं।

(राजेअ: 335)

3123. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे, जिहाद ही की निश्चयत से निकले, अल्लाह के कलाम, (उसके वादे) को सच जानकर, तो अल्लाह उसका ज़ामिन है। या तो अल्लाह तआला उसको शहीद करके जन्नत में ले जाएगा, या उसको प्रवाब और ग़नीमत का माल दिलाकर उसके घर लौटा लाएगा। (राजेअ: 36)

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का इशारा इस हदीस के लाने से भी यही है कि माले ग़नीमत जिहाद में शरीक होने वालों के लिये है और ये कि हकीकी मुजाहिद कौन है। इस पर भी इस हदीस में काफ़ी रोशनी डाली गई है। ऐसे मुजाहिदीन भी होते हैं जो महज़ हुसूले दुनिया व नाम व नमूद के लिये जिहाद करते हैं। जिनके लिये कोई अज़्रो-प्रवाब नहीं है, बल्कि क़यामत के दिन उनको दोज़ख़ में धकेल दिया जाएगा कि तुम्हारे जिहाद करने का मक़सद सिर्फ़ इतना ही था कि तुमको दुनिया में बहादुर कहकर पुकारा जाए। तुम्हारा ये मक़सद दुनिया में तुमको हासिल हो गया। अब आख़िरत में जहन्नम के सिवा तुम्हारे लिये और कुछ नहीं है।

3124. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल के पैग़म्बरों में से एक नबी (यूशअ अलैहिस्सलाम) ने ग़ज़वा करने का इरादा किया तो अपनी क़ौम से कहा कि मेरे साथ कोई ऐसा शख़्स जिसने अभी नई शादी की हो और बीवी के साथ कोई रात भी न गुज़ारी हो और वो रात गुज़ारना चाहता हो और वो शख़्स जिसने घर बनाया हो और अभी उसकी छत न पाट सका हो और वो शख़्स जिसने हामला बकरी या हामला कैंटनियाँ खरीदी हैं और उसे उनके बच्चे जनने का इंतज़ार हो तो (ऐसे लोगों में से कोई भी) हमारे साथ जिहाद में न चले। फिर उन्होंने जिहाद किया, और जब उस आबादी (अरीजा) से करीब हुए तो अम्र का वक्त हो

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَجَلْتُ لِي الْغَنَائِمَ)).

[راجع: 335]

3123- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((كَفَّلَ اللَّهُ لِمَنْ جَاهَدَ فِي سَبِيلِهِ لَا يُغْرِبُهُ إِلَّا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِهِ، وَتَصَدِيقُ كَلِمَاتِهِ، بَأَن يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، أَوْ يُرْجِعَهُ إِلَى مَسْكَنِهِ الَّذِي خَرَجَ مِنْهُ مَعَ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ)). [راجع: 36]

3124- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((غَزَا نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ: لَا يَتَخَذِي رَجُلٌ مِلْكًا يَضَعُ امْرَأَةً وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَنْبِيَّ بِهَا وَلَمَّْا بَنِي بِهَا، وَلَا أَحَدٌ بَنَى بَيْتًا وَلَمْ يَرْفَعْ سَقُوفَهَا، وَلَا أَحَدٌ اشْتَرَى غَنَمًا أَوْ خِلْفَاتٍ وَهُوَ يَنْتَظِرُ وَلَدَهَا، فَنَزَا. فِدْنَا مِنَ الْقُرْبَى صَلَاةَ الْقَصْرِ أَوْ قُرْبَى مِنَ ذَلِكَ، فَقَالَ لِلشَّمْسِ: إِنَّكَ

गया या उसके करीब वक्त हुआ। उन्होंने सूरज से फ़र्माया कि तू भी अल्लाह के फ़र्मान के ताबेअ है और मैं भी उसके फ़र्मान के ताबेअ हूँ। ऐ अल्लाह! हमारे लिये उसे अपनी जगह पर रोक दे। चुनौचे सूरज रुक गया, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें फ़तह इनायत फ़र्माई। फिर उन्होंने अम्वाले ग़नीमत को जमा किया और आग उसे जलाने के लिये आई लेकिन जला न सकी, उस नबी ने फ़र्माया कि तुममें से किसी ने माले ग़नीमत में से चोरी की है। इसलिये हर क़बीले का एक आदमी आकर मेरे हाथ पर बेअत करे (जब बेअत करने लगे तो) एक क़बीला के शख्स का हाथ उनके हाथ के साथ चिमट गया। उन्होंने फ़र्माया कि चोरी तुम्हारे ही क़बीले वालों ने की है। अब तुम्हारे क़बीले के सब लोग आएँ और बेअत करें। चुनौचे उस क़बीले के दो या तीन आदमियों का हाथ इस तरह उनके हाथ से चिमट गया, तो आपने फ़र्माया कि चोरी तुम्हीं लोगों ने की है। (आखिर चोरी मान ली गई) और वो लोग गाय के सर की तरह सोने का एक सर लाए (जो ग़नीमत में से चुरा लिया गया था) और उसे माले ग़नीमत में रख दिया, तब आग आई और उसे जला गई। फिर ग़नीमत अल्लाह तआला ने हमारे लिये जाइज़ करार दे दी, हमारी कमज़ोरी और आजिज़ी को देखा। इसलिये हमारे वास्ते हलाल करार दे दी। (दीगर मक़ाम : 5157)

مَأْمُورَةٌ وَأَنَا مَأْمُورٌ، اللَّهُمَّ! احْبِسْهَا عَلَيْنَا، فَحَبَسَتْ حَتَّى فَتَحَ اللَّهُ، فَجَمَعَ الْغَنَائِمَ، فَجَاءَتْ - يَغْنَى النَّارَ - لِتَأْكُلَهَا فَلَمْ تَطْعَمَهَا، فَقَالَ: إِنَّ فِيكُمْ غُلُولًا، فَلْيَأْبِغْنِي مِنْ كُلِّ قَبِيلَةٍ رَجُلٌ، فَلَزَّزْتُ يَدَ رَجُلٍ بِيَدِي، فَقَالَ: فِيكُمْ الْغُلُولُ، فَلْيَأْبِغْنِي قَبِيلَتَكَ، فَلَزَّزْتُ يَدَ رَجُلَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةٍ بِيَدِي، فَقَالَ: فِيكُمْ الْغُلُولُ، فَجَاوُوا بِرَأْسٍ مِثْلِ رَأْسٍ بَقَرَةٍ مِنَ الذَّنَبِ فَوْضَعُوهَا، فَجَاءَتْ النَّارُ فَأَكَلَتْهَا. ثُمَّ أَحْلَى اللَّهُ لَنَا الْغَنَائِمَ، وَرَأَيْ صَفْعَتَنَا وَعَجَزْنَا فَأَحْلَاهَا لَنَا. [طرفة ي: ٥١٥٧].

**तशरीह:** हदीस में इस्राईली नबी यूशअ अलैहिस्सलाम का ज़िक्र है जो जिहाद को निकले थे कि नमाज़े अस्त्र का वक्त हो गया। उन्होंने दुआ की, अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल कर ली, यही वो चीज़ है जिसे मुअजिज़ा कहा जाता है जिसका होना हक़ है। पहले ज़माने में अम्वाले ग़नीमत मुजाहिदीन के लिये हलाल नहीं था बल्कि आसमान से एक आग आती और उसे जला देती जो अल्लाह के नज़दीक कुबूलियत की दलील होती थी। अम्वाले ग़नीमत में ख़यानत करना पहले भी गुनाहे अज़ीम था और अब भी यही हुक्म है। मगर उम्मत मुस्लिमा के लिये अल्लाह ने अम्वाले ग़नीमत को हलाल कर दिया है। वो शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ तक्सीम होंगे। कम ताक़ती और आजिज़ी से ये मुराद है कि मुसलमान मुस्लिस और नादार थे और अल्लाह की बारगाह में आजिज़ी और फ़िरौतनी से हाज़िर होते थे परवरदिगार को उनकी आजिज़ी पसन्द आई और ये सरफ़राज़ी हुई कि ग़नीमत के माल उनके लिये हलाल कर दिये गये।

हम उन बेवकूफ़ पादरियों से पूछते हैं जो ग़नीमत का माल लेना बड़ा ऐब जानते हैं कि तुम्हारे मज़हब वाले नज़ारा तो दूसरों के मुल्क के मुल्क और खज़ाने हज़म कर जाते हैं। डकार तक नहीं लेते। जिस मुल्क को फ़तह करते हैं वहाँ सब मुअज़ज़ कामों पर अपनी क़ौम वालों को मामूर करते हैं, अहले मुल्क का ज़रा लिहाज़ नहीं रखते फिर ये लूट नहीं तो क्या है। लूट से भी बदतर है। लूट तो घड़ी भर होती है। और जुल्मी इतिक़ाम तो सैंकड़ों बरस तक होता रहता है। मआज़ अल्लाह! इंजील शरीफ़ की वही मिशाल है कि अपनी आँख का तो शहतीर नहीं देखते और दूसरे की आँख का तिनका देखते हैं। (वहीदी)

बाब 9 : मालेगनीमत उन लोगों को मिलेगा जो जंग में हाज़िर हों

3125. हमसे सद्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रहमान बिन मद्दी ने ख़बर दी, उन्हें इमाम मालिक ने, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें उनके वालिद ने कि इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, अगर मुसलमानों की आने वाली नस्लों का ख़याल न होता तो जो शहर भी फ़तह होता मैं उसे फ़ातिहों में इसी तरह तक्सीम कर दिया करता जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की तक्सीम की थी। (राजेअ: 2334)

٩- بَابُ الْفَيْعَةِ لِمَنْ شَهِدَ الْوَقْعَةَ  
٣١٢٥- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ  
الرَّحْمَنِ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ  
أَبِيهِ قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((لَوْ  
لَا آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا قَحَحْتُ قَرْبَةً إِلَّا  
لَسَمْتُهَا بَيْنَ أَهْلِهَا كَمَا لَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ  
غَيْرَ)). (راجع: ٢٣٣٤)

अक़्बर अइम्मा का फ़त्वा है कि जीते हुए मुल्क के लिये इमाम को इख़्तियार है वो चाहे तक्सीम कर दे चाहे मुल्क के ख़ज़ाने के तौर पर रहने दे। लेकिन ये ख़िराज इस्लामी कायदे के मुवाफ़िक़ मुसलमानों ही पर ख़र्च किया जाए, या'नी मुहताजों, यतीमों की ख़बरगीरी, जिहाद के सामान और अस्बाब की तैयारी में। गुर्ज़ ये कि मुल्क का महासिल बादशाह की मिल्क नहीं है बल्कि आम मुसलमानों और गाज़ियों का माल है। बादशाह भी बतौर एक सिपाही के उसमें से अपना ख़र्च ले सकता है। ये शर्इ निज़ाम है मगर सद्द अफ़सोस कि आज ये बेशरत इस्लामी मुमालिक से मफ़कूद है। फ़ल्यब्कि अललइस्लामि इन कान बाकियन

बाब 10 : अगर कोई ग़नीमत हासिल करने के लिये लड़े (मगर निय्यत दीन की तरक्की भी हो) तो क्या प्रवाब कम होगा?

١٠- بَابُ مَنْ قَاتَلَ لِلْمَقَامِ هَلْ  
يُنْقُصُ مِنْ أَجْرِهِ؟

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मतलब इस बाब के लाने से ये है कि जिहाद में अगर अल्लाह का हुक्म बुलन्द करने की निय्यत हो और जिम्नन ये गुर्ज़ भी हो कि माले ग़नीमत भी मिले तो इससे प्रवाब में कुछ फ़र्क नहीं आता, जैसे जंगे बद्र में सहाबा काफ़िला लूटने की गुर्ज़ से निकले थे। अल्बत्ता अगर सिर्फ़ लूटमार ही गुर्ज़ हो दीन की तरक्की मक्सूद न हो तो प्रवाब कम तो क्या बल्कि कुछ भी प्रवाब नहीं मिलेगा।

3126. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे अमर बिन मुरह ने बयान किया, उन्होंने अबू वाइल से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक अअराबी (लाहक़ बिन ज़मीरह बाहिली) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा एक शख्स है जो ग़नीमत हासिल करने के लिये जिहाद में शरीक हुआ, एक शख्स है जो इसलिये शिकत करता है कि उसकी बहादुरी के चर्चे जुबानों पर आ जाएँ, एक शख्स इसलिये लड़ता है कि उसकी धाक बैठ जाए, तो उनमें से अल्लाह के रास्ते में कौनसा होगा। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जो शख्स जंग में शिकत इसलिये करे ताकि अल्लाह का कलिमा (दीन) ही बुलन्द रहे।

٣١٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا  
غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو قَالَ:  
سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى  
الْأَشْعَرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ أَهْرَابِيُّ  
لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الرَّجُلُ  
يُقَاتِلُ لِلْمَقَامِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُذَكَّرَ،  
وَيُقَاتِلُ لِيُرَى مَكَانَهُ، مَنْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ؟  
فَقَالَ: ((مَنْ قَاتَلَ لِيَكُونَ كَلِمَةً لِلَّهِ هِيَ  
الْعَلَا فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)).

(راجع: ١٢٣)

फ़क़त वही अल्लाह के रास्ते में है। (राजेअ : 123)

इस्लामी जिहाद का मक़सद वाहिद सिर्फ़ शरीअते इलाही की रोशनी में सारी दुनिया में अमन अमान कायम करना है, ज़मीन या दौलत का हासिल करना इस्लामी जिहाद का मंशा हर्गिज़ नहीं है। इसलिये तारीख़ से रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है कि जिन मुल्कों ने इस्लाम के मक़सिद से इश्तिराक़ किया, उन मुल्कों के सरबराहों को उनकी जगह पर कायम रखा गया। इस हदीष में मुजाहिदीने इस्लाम के लिये हिदायत है कि वो अम्वाले ग़नीमत के हुसूल के इरादे से हर्गिज़ जिहाद न करें बल्कि उनकी निर्यत ख़ालिस अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने की होनी ज़रूरी है। यूँ बसूरते फ़तह माले ग़नीमत भी उनको मिलेगा जो एक ज़िम्नी चीज़ है।

**बाब 11 : ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन के पास ग़ैर लोग जो तोहफ़े भेजें उनका बांट देना और उनमें से जो लोग मौजूद न हो उनका हिस्सा छुपाकर महफूज़ रखना**

3127. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में दीबाज की कुछ क़बाएँ ताहफ़े के तौर पर आई थीं। जिनमें सोने की घण्टियाँ लगी हुई थीं, उन्हें आँहज़रत (ﷺ) ने अपने चन्द अरहाब में तक्सीम कर दिया और एक क़बा मख़रमा बिन नौफ़िल (रज़ि.) के लिये रख ली। फिर मख़रमा आए और उनके साथ उनके साहबज़ादे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) भी थे। आप दरवाज़े पर खड़े हो गये और कहा कि मेरा नाम लेकर नबी करीम (ﷺ) को बुला ला। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी आवाज़ सुनी तो क़बा लेकर बाहर तशरीफ़ लाए और उसकी घण्टियाँ उनके सामने कर दीं। फिर फ़र्माया अबू मिस्वर! ये क़बा मैंने तुम्हारे लिये छुपाकर रख ली थी, अबू मिस्वर! ये क़बा मैंने तुम्हारे लिये छुपाकर रख ली थी। मख़रमा (रज़ि.) ज़रा तेज़ तबीअत के आदमी थे। इब्ने उलथ्या ने अय्यूब के वास्ते से ये हदीष (मुसलन ही) रिवायत की है। और हातिम बिन वरदान ने बयान किया कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने उनसे मिस्वर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ कुछ क़बाएँ आई थीं, इस रिवायत की मुताबअत लैष ने इब्ने अबी मुलैका से की है। (राजेअ : 2599)

۱۱- بَابُ قِسْمَةِ الْإِمَامِ مَا يَهْتَمُّ عَلَيْهِ، وَيَخْبَأُ لِمَنْ لَمْ يَحْضُرْ أَوْ غَابَ عَنْهُ

۳۱۲۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَهْدَيْتَ لَهُ أَقْبِيَّةٌ مِنْ دِيَارِ مُزْرَةَ بِاللَّسْبِ، فَسَمَّيْنَاهَا فِي أَنْسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، وَعَزَّلَ مِنْهَا وَاحِدًا لِمَخْرَمَةِ بْنِ نَوَلٍ، فَجَاءَ وَمَعَهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ مِسْوَرًا مِنْ مَخْرَمَةِ، فَقَامَ عَلَى الْبَابِ، فَقَالَ: ادْعُهُ لِي، فَسَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ صَوْتَهُ فَآخَذَ قَبْلَهُ فَتَلَقَّاهُ بِهِ وَاسْتَقْبَلَهُ بِأَزْوَارِهِ فَقَالَ: ((يَا أَبَا الْمِسْوَرِ خَبَأْتَ هَذَا لَكَ، يَا أَبَا الْمِسْوَرِ خَبَأْتَ هَذَا لَكَ)) وَكَانَ فِي عُنُقِهِ حِقَّةٌ. وَرَوَاهُ ابْنُ عُثَيْمٍ عَنْ أَيُّوبَ وَقَالَ حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ الْمِسْوَرِ ((لَبِغْتَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقْبِيَّةً)). تَابَعَهُ اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ.

[راجع: ۲۵۹۹]

**तशरीह:**

हातिम बिन वरदान की रिवायत को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने बाब शहादतुल आमा में वस्ल किया है। मख़रमा (रज़ि.) में तबई गुस्सा था। जल्दी से गर्म हो जाते जैसे अक़षर तुनक मिज़ाज लोग होते हैं। इस हदीष से मा'लूम

हुआ कि इमाम या बादशाह को काफिर लोग जो तोहफे तहाइफ भेजें उनका लेना इमाम को दुस्त है। और उसको इख्तियार है कि जो चाहे खुद रखे जो चाहे जिसको दे, गैरों के तोहफे कुबूल करना भी इससे प्राबित हुआ।

## बाब 12 : नबी करीम (ﷺ) ने बनू कुरैजा और बनू नज़ीर की जायदाद किस तरह तक्सीम की थी?

और अपनी ज़रूरतों में उनको कैसे खर्च किया?

3128. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबुल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, उनसे उनके बाप सुलैमान ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि महाबा (अंसार) कुछ खजूर के पेड़ नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में बतौर तोहफा दे दिया करते थे लेकिन जब अल्लाह तआला ने बनू कुरैजा और बनू नज़ीर के कबीलों पर फ़तह दी तो आँहज़रत (ﷺ) उसके बाद इस तरह के हदये वापस फ़र्मा दिया करते थे। (राजेअ: 2630)

**तशीह:** जब मुहाजिरीन अव्वल अव्वल मदीना में आए तो अक़बर नादार और मुहताज थे, अंसार ने अपने बागात में उनको शरीक कर लिया था, आँहज़रत (ﷺ) को भी कई पेड़ दिये गए थे। जब बनी कुरैजा और बनी नज़ीर के बागात बिन लड़े-भिड़े आँहज़रत (ﷺ) के कब्जे में आए तो वे आपका माल थे, मगर आपने उनसे कई बाग मुहाजिरीन में तक्सीम कर दिये और उनको ये हुक्म दिया कि अब अंसार के बाग और पेड़ जो उन्होंने तुमको दिये थे, वो उनको वापस कर दो, और कई बाग आपने खास अपने लिये रखे। उसमें से जिहाद का सामान किया जाता और दूसरी ज़रूरियात मषलन आपकी बीवियों का खर्चा वगैरह पूरे किये जाते, हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये हदीष जिक्र करके उसी पूरे खर्च की तरफ़ इशारा किया है जिससे बाब का मतलब बख़ूबी निकलता है। (वहीदी)

## बाब 13 : अल्लाह पाक ने मुजाहिदीने किराम को जो आँहज़रत (ﷺ) या दूसरे बादशाहाने इस्लाम के साथ होकर लड़े कैसी बरकत दी थी, उसका बयान

3129. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा, क्या आप लोगों से हिशाम बिन इर्वा ने ये हदीष अपने वालिद से बयान की है कि उनसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि जमल की जंग के मौक़े पर जब जुबैर (रज़ि.) खड़े हुए तो मुझे बुलाया मैं उनके पहलू में जाकर खड़ा हो गया, उन्होंने कहा बेटे! आज की लड़ाई में ज़ालिम मारा जाएगा या

## ۱۲- بَابُ كَيْفَ قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ

فَرِيشَةً وَالنَّصِيرَ،

وَمَا أَغْنَىٰ مِنْ ذَلِكَ مِنْ تَوَاتِيهِ

۳۱۲۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ قَالَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ الرَّجُلُ يَجْعَلُ لِلنَّبِيِّ ﷺ النَّخْلَاتِ حَتَّى افْتَتَحَ قَرْيَةَ وَالنَّصِيرَ، فَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ يَرُدُّ عَلَيْهِمْ)). [راجع: ۲۶۳۰]

## ۱۳- بَابُ بَرَكَاتِ الْغَارِي فِي مَالِهِ

حَيًّا وَمَيِّتًا، مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَوَلَاةِ الْأَمْرِ

۳۱۲۹- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي أَسَامَةَ: أَخَذْتُكُمْ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ؟ قَالَ: ((لَمَّا وَقَفَ الزُّبَيْرُ يَوْمَ الْجَمَلِ دُعَانِي فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ فَقَالَ: يَا بَنِيَّ إِنَّهُ

मज़्लूम और मैं समझता हूँ कि आज मैं मज़्लूम क़त्ल किया जाऊँगा और मुझे सबसे ज़्यादा फ़िक्र अपने क़र्जों की है। क्या तुम्हें भी कुछ अंदाज़ा है कि क़र्ज अदा करने के बाद हमारा कुछ माल बच सकेगा? फिर उन्होंने कहा बेटे! हमारा माल बेच करके उससे क़र्ज अदा कर देना। उसके बाद उन्होंने एक तिहाई की मेरे लिये और उस तिहाई के तीसरे हिस्से की वसियत मेरे बच्चों के लिये की, या'नी अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के बच्चों के लिये। उन्होंने फ़र्माया था कि उस तिहाई के तीन हिस्से कर लेना और अगर क़र्ज की अदायगी के बाद हमारे अम्वाल में से कुछ बच जाए तो उसका एक तिहाई तुम्हारे बच्चों के लिये होगा। हिशाम रावी ने बयान किया कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) के कुछ लड़के जुबैर (रज़ि.) के लड़कों के हम उम्र थे। जैसे खुबैब और अब्बाद। और जुबैर (रज़ि.) के उस वज़्रत नौ लड़के और नौ लड़कियाँ थीं। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जुबैर (रज़ि.) मुझे अपने क़र्ज के सिलसिले में वसियत करने लगे और फ़र्माने लगे कि बेटा! अगर क़र्ज अदा करने से आजिज़ हो जाए तो मेरे मालिक व मौला से उसमें मदद चाहना। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि क़सम अल्लाह की! मैं उनकी बात न समझ सका, मैंने पूछा कि बाबा आपके मौला कौन हैं? उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह पाक! अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, क़सम अल्लाह की! क़र्ज अदा करने में जो भी दुश्वारी सामने आई तो मैंने उसी तरह दुआ की, कि ऐ जुबैर के मौला! उनकी तरफ़ से उनका क़र्ज अदा करा दे और अदायगी की मूरत पैदा हो जाती थी। चुनौचे जब जुबैर (रज़ि.) (उसी मौके पर) शहीद हो गये तो उन्होंने तर्का में दिरहम व दीनार नहीं छोड़े बल्कि उनका तर्का कुछ तो अराज़ी की मूरत में था और उसी में गाबा की ज़मीन भी शामिल थी। ग्यारह मकानात मदीना में थे, दो मकान बमरा में थे, एक मकान कूफ़ा में था और एक मिस्र में था। अब्दुल्लाह ने बयान किया कि उन पर जो इतना सारा क़र्ज हो गया था उसकी मूरत ये हुई थी कि जब उनके पास कोई शख्स अपना माल लेकर अमानत रखने आता तो आप उससे कहते कि नहीं अल्बत्ता उस मूरत में रख सकता हूँ कि ये मेरे ज़िम्मे बतौर क़र्ज रहे क्योंकि मुझे उसके जाये होने का भी डर है। हज़रत जुबैर

لَا يَقْتُلُ الْيَوْمَ إِلَّا ظَالِمٌ أَوْ مَظْلُومٌ، وَإِنِّي لَا أُرَانِي إِلَّا سَاقِلُ الْيَوْمِ مَظْلُومًا، وَإِنِّ مِنْ أَكْثَرِ هَمِّي لَدِينِي، الْفَرَى يَتَقَي دَيْنًا مِنْ مَالِنَا شَيْئًا؟ فَقَالَ : يَا بُنَيَّ، بَيْعْ مَا لَنَا، فَأَقْضِ دَيْنِي. وَأَوْصَى بِاللُّثُ، وَتَلَّاهُ لِنَبِيهِ - يَعْنِي نَبِيَّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، يَقُولُ : ثَلُثُ الثَّلَثِ - فَإِنْ فَضَلَ مِنْ مَالِنَا فَضْلٌ بَعْدَ قَضَاءِ الدَّيْنِ شَيْءٌ فَلْتُهُ لَوْلِيكَ. قَالَ هِشَامٌ: وَكَانَ بَعْضُ وَلَدِ عَبْدِ اللَّهِ قَدْ وَازَى بَعْضَ نَبِيِّ الزُّبَيْرِ - خُصِبَ وَعَبَادٌ - وَلَهُ يَوْمَئِذٍ سَعَةً بَيْنَ وَتَسْعَ بَنَاتٍ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ لَجَعَلُ يُوَصِّصُنِي بِدَيْنِي وَيَقُولُ: يَا بُنَيَّ إِنْ عَجَزْتَ شَيْءٌ مِنْهُ فَاسْتَعِنْ عَلَيْهِ مَوْلَايَ. قَالَ: فَوَ اللَّهِ مَا ذَرَيْتُ مَا أَرَادَ حَتَّى قُلْتُ: يَا أَبَتِ مَنْ مَوْلَاكَ؟ قَالَ: اللَّهُ. قَالَ: فَوَ اللَّهِ مَا وَقَعْتُ فِي كَرَمَةٍ مِنْ دَيْنِي إِلَّا قُلْتُ: يَا مَوْلَى الزُّبَيْرِ اقْضِ عَنْهُ دَيْنَهُ، فَيَقْضِيهِ. فَقِيلَ الزُّبَيْرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَلَمْ يَدْعُ دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا، إِلَّا أَرْضَيْنِ مِنْهَا الْغَابَةَ، وَآخَذَى عَشْرَةَ دَارًا بِالْمَدِينَةِ، وَدَارَتَيْنِ بِالْبَصْرَةِ، وَدَارًا بِالْكُوفَةِ، وَدَارًا بِمِصْرَ. قَالَ: وَإِنَّمَا كَانَ دَيْنُهُ الَّذِي عَلَيْهِ إِنْ الرَّجُلُ كَانَ يَأْتِيهِ بِالنَّالِ قِسْوَ دَعَا إِلَيْهِ، فَيَقُولُ الزُّبَيْرُ: لَا، وَلَكِنَّهُ سَلَفَ، فَإِنِّي أَخْشَى عَلَيْهِ الضُّعْفَ. وَمَا وَلِي إِمَارَةً قَطُّ وَلَا جَبَابَةَ خَوَاجٍ وَلَا حِيَا إِلَّا أَنْ يَكُونَ فِي غَزْوَةٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَوْ مَعَ أَمِي

(रज़ि.) किसी इलाक़े के अमीर कभी नहीं बने थे। न वो खिराज वसूल करने पर कभी मुकर्रर हुए और न कोई दूसरा ओहदा उन्होंने कुबूल किया, अल्बत्ता उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ और अबूबक्र व उमर और इब्मान (रज़ि.) के साथ जिहादों में शिरकत की थी। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि जब मैंने उस रक़म का हिसाब लगाया जो उन पर क़र्ज़ थी तो उसकी ता'दाद बाईस लाख थी। बयान किया कि फिर हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) से मिले तो पूछा, बेटे! मेरे (दीनी) भाई पर कितना क़र्ज़ रह गया है? अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने छुपाना चाहा और कह दिया कि एक लाख, उस पर हकीम (रज़ि.) ने कहा क़सम अल्लाह की! मैं तो नहीं समझता कि तुम्हारे पास मौजूद सरमाया से ये क़र्ज़ अदा हो सकेगा। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अब कहा, कि अगर क़र्ज़ की ता'दाद बाईस लाख हुई फिर आपकी क्या राय होगी? उन्होंने फ़र्माया फिर तो ये क़र्ज़ तुम्हारी बर्दाश्त से भी बाहर है। ख़ैर अगर कोई दुश्वारी पेश आए तो मुझसे कहना, अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) ने गा़बा की जायदाद एक लाख सत्तर हज़ार में ख़रीदी थी, लेकिन अब्दुल्लाह ने वो सोलह लाख में बेची। फिर उन्होंने ऐलान किया कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) पर जिसका क़र्ज़ हो वो गा़बा में आकर हमसे मिल ले, चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) आए, उनका जुबैर (रज़ि.) पर चार लाख रुपया चाहिये था। उन्होंने तो यही पेशकश की कि अगर तुम चाहो तो मैं ये क़र्ज़ छोड़ सकता हूँ, लेकिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नहीं फिर उन्होंने कहा कि अगर तुम चाहो तो मैं सारे क़र्ज़ की अदायगी के बदले लूँगा। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने इस पर भी यही कहा कि ताख़ीर की भी कोई ज़रूरत नहीं। आख़िर उन्होंने कहा कि फिर इस ज़मीन में मेरे हिस्से का क़िआ (टुकड़ा) मुकर्रर करो। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि आप अपने क़र्ज़ में यहाँ से यहाँ तक ले लीजिए। (रावी ने) बयान किया कि जुबैर (रज़ि.) की जायदाद और मकानात वगैरह बेचकर उनका क़र्ज़ अदा कर दिया गया। और सारे क़र्ज़ की अदायगी हो गई। गा़बा की जायदाद में साढ़े चार हिस्से अभी बिक नहीं सके थे। इसलिये अब्दुल्लाह (रज़ि.) मुआविया (रज़ि.) के यहाँ (शाम) तशरीफ़ ले गये, वहाँ

بَكَرَ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: فَحَسَبْتُ مَا عَلَيَّ مِنَ الدِّينِ فَوَجَدْتُهُ أَلْفِي أَلْفٍ وَمِائَتِي أَلْفٍ. قَالَ: فَلَقِي حَكِيمُ بْنُ حِزَامٍ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ فَقَالَ: يَا ابْنَ أُخِي: كَمْ عَلَى أُخِي مِنَ الدِّينِ؟ فَكَتَمَهُ فَقَالَ مِائَةُ أَلْفٍ. فَقَالَ حَكِيمٌ: وَاللَّهِ مَا أَرَى أَمْوَالَكُمْ تَسَعُ لِهَذِهِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ: أَلَمْ تَرَ أَنِّي كُنْتُ أَلْفِي أَلْفٍ وَمِائَتِي أَلْفٍ؟ قَالَ: مَا أَرَأَيْتَ تَطِيقُونَ هَذَا، فَإِنْ عَجَزْتُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَاسْتَعِينُوا بِي. قَالَ: وَكَانَ الزُّبَيْرُ اشْتَرَى الْغَابَةَ بِسِتَمِينَ وَمِائَةِ أَلْفٍ. فَبَاغَهَا عَبْدُ اللَّهِ بِأَلْفٍ أَلْفٍ وَسِتَمِائَةِ أَلْفٍ: ثُمَّ قَامَ فَقَالَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى الزُّبَيْرِ حَقٌّ فَلْيُؤَايِضْ بِالْغَابَةِ. فَلَمَّا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ - وَكَانَ لَهُ عَلَى الزُّبَيْرِ أَرْبَعُمِائَةِ أَلْفٍ - فَقَالَ لِعَبْدِ اللَّهِ: إِنْ شِئْتُمْ تَرَكْتُهَا لَكُمْ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: لَا. قَالَ: فَإِنْ شِئْتُمْ جَعَلْتُهَا فِيَّ مَا تَوْخَرُونَ إِنْ أَخَرْتُمْ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: لَا. قَالَ: قَالَ: فَلَأَقْطُرُوا لِي قِطْعَةً. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: لَكَ مِنْهَا مَا هُنَا إِلَى مَا هُنَا. قَالَ فَبَاغَ مِنْهَا لِقَضَى دَيْنِهِ فَأَوْفَاهُ. وَبَقِيَ مِنْهَا أَرْبَعَةُ أَسْهُمٍ وَنِصْفٌ، فَقَدِمَ عَلَى مُعَاوِيَةَ - وَعِنْدَهُ عُمَرُ بْنُ عُثْمَانَ وَالْمُنْبِيرُ بْنُ الزُّبَيْرِ، وَابْنُ زَمْعَةَ - فَقَالَ لَهُ مُعَاوِيَةُ: كَمْ قَوْمَتِ الْغَابَةُ؟ قَالَ: كُلُّ سِتَمِائَةِ أَلْفٍ. قَالَ: كَمْ بَقِيَ؟ قَالَ: أَرْبَعَةُ أَسْهُمٍ وَنِصْفٌ. قَالَ



अम् बिन इब्मान, मुंजिर बिन जुबैर और इब्ने जम्आ भी मौजूद थे। मुआविया (रज़ि.) ने उनसे पूछा कि गाबा की जायदाद की कीमत कितनी तै हुई, उन्होंने बताया कि हर हिस्से की कीमत एक लाख तय पाई थी। मुआविया (रज़ि.) ने पूछा कि अब बाक़ी कितने हिस्से रह गये हैं? उन्होंने बताया कि साढ़े चार हिस्से, इस पर मुंजिर बिन जुबैर ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं लेता हूँ, अम् बिन इब्मान ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं लेता हूँ। इब्ने जम्आ ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं लेता हूँ, उसके बाद मुआविया (रज़ि.) ने पूछा कि अब कितने हिस्से बाक़ी बचे हैं? उन्होंने कहा कि डेढ़ हिस्सा! मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि फिर उसे मैं डेढ़ लाख में लेता हूँ। बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) ने अपना हिस्सा बाद में मुआविया (रज़ि.) को छः लाख में बेच दिया। फिर जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) का क़र्ज़ की अदायगी कर चुके तो जुबैर (रज़ि.) की औलाद ने कहा कि अब हमारी मीरास तक्सीम कर दीजिए, लेकिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, कि अभी तुम्हारी मीरास उस वक़्त तक तक्सीम नहीं कर सकता, जब तक चार साल तक अय्यामे हज्ज में ऐलान न करा लूँ कि जिस शख्स का भी जुबैर (रज़ि.) पर क़र्ज़ हो वो हमारे पास आए और अपना क़र्ज़ ले जाए, रावी ने बयान किया कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अब हर साल अय्यामे हज्ज में इसका ऐलान कराना शुरू किया और जब चार साल गुज़र गये तो अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनकी मीरास तक्सीम कर दी, रावी ने बयान किया कि जुबैर (रज़ि.) की चार बीवियाँ थीं और अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने (वसियत के मुताबिक़) तिहाई हिस्सा बची हुई रक़म में से निकाल लिया था, फिर भी हर बीवी के हिस्से में बारह बारह लाख की रक़म आई, और कुल जायदाद हज़रत जुबैर (रज़ि.) की पाँच करोड़ दो लाख हुई।

النَّسَائِيُّ بْنُ الزُّبَيْرِ: قَدْ أَخَذْتُ مَهْمَا بِمِائَةِ أَلْفٍ. قَالَ عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ: قَدْ أَخَذْتُ مَهْمَا بِمِائَةِ أَلْفٍ. وَقَالَ ابْنُ زَمْعَةَ: قَدْ أَخَذْتُ مَهْمَا بِمِائَةِ أَلْفٍ. فَقَالَ مُعَاوِيَةُ كَمْ بَقِيَ؟ فَقَالَ: مِنْهُمْ وَتَصَفَّ. قَالَ: أَخَذْتُ بِخَمْسِينَ وَمِائَةِ أَلْفٍ. قَالَ: وَتَبَاغَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ نَصِيْبَهُ مِنْ مُعَاوِيَةَ بِسِتِّمِائَةِ أَلْفٍ. فَلَمَّا فَرَّغَ ابْنُ الزُّبَيْرِ مِنْ قَضَاءِ دَيْنِهِ فَقَالَ بَنُو الزُّبَيْرِ: أَقْسِمُ بَيْنَنَا مِيرَاقًا. قَالَ: لَا وَاللَّهِ لَا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ حَتَّى أَنَادِيَ بِالْمَوْسِمِ أَرْبَعَ مِائِينَ: أَلَا مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى الزُّبَيْرِ دَيْنٌ فَلْيَأْتِنَا فَلْنَقْضِهِ: قَالَ: فَجَمَلَ كُلُّ مَنَةٍ يُنَادِي بِالْمَوْسِمِ. فَلَمَّا مَضَى أَرْبَعَ مِائِينَ قَسَمَ بَيْنَهُمْ. قَالَ: فَكَانَ لِلزُّبَيْرِ أَرْبَعُ سِنَوَةٍ، وَرَفَعَ الثَّلَاثَ فَاصْطَبَ كُلُّ امْرَأَةٍ أَلْفَ أَلْفٍ وَمِائَتَا أَلْفٍ. فَجَمِيعُ مَالِهِ خَمْسُونَ أَلْفَ أَلْفٍ وَمِائَتَا أَلْفٍ.

**तशरीह:** ये हज़रत जुबैर बिन अ्वाम (रज़ि.) हैं, कुनियत अबू अब्दुल्लाह कुरैशी है। उनकी वालिदा हज़रत सफ़िया (रज़ि.) अब्दुल मुत्तलिब की बेटी और आँहज़रत (ﷺ) की फूफी हैं ये और उनकी वालिदा शुरू ही में इस्लाम ले आये थे। जबकि उनकी उम्र सोलह साल की थी। ये तमाम ग़ुच्चात में आँहज़रत (ﷺ) के साथ रहे। अशर-ए-मुबशरह में से हैं। जंगे जमल में शहीद हुए, ये जंग हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) के दरम्यान माहे जमादिल अव्वल 36 हिजरी में बाबुल बसरा में हुई थी। हज़रत आइशा (रज़ि.) कैंट पर सवार थीं इसलिये इसका नाम जंगे जमल रखा गया। लड़ाई की वजह हज़रत इब्मान (रज़ि.) का खूने नाहक़ था। हज़रत आइशा (रज़ि.) कातिलीने इब्मान (रज़ि.) से किसान की तलबगार थीं। ये जंग इसी बिना पर हुई।

इस हदीष के जेल मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम फर्माते हैं :-

जंगे जमल 36 हिजरी में हुई, जो मुसलमानों की खानाजंगी (गृहयुद्ध) की बदतरीन मिशाल है, फ़रीक़ेन में एक तरफ़ सरबराह हज़रत अली (रज़ि.) थे और दूसरी तरफ़ हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं। हज़रत जुबैर (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ थे। हुआ ये था कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) के कातिल हज़रत अली (रज़ि.) के लश्कर में शरीक हो गये थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) और उनके साथी ये चाहते थे कि वो कातिलीने उस्मान फ़ौरन उनके हवाले कर दिये जाएँ ताकि उनसे किंसास लिया जाए। हज़रत अली (रज़ि.) ये फ़र्माते थे कि जब तक अच्छी तरह दरयाफ़्त और तहक्कीक़ न हो मैं किस तरह किसी को तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ कि तुम उनका ख़ून नाहक़ करो। यही झगड़ा था जो समझने और समझाने से तै न हुआ। दोनों तरफ़ वालों को जोश था। आख़िर नौबत जंग तक पहुँची बाक़ी ख़िलाफ़त की कोई तक़रार न थी। हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ जो सहाबा (रज़ि.) थे वो सब हज़रत अली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त तस्लीम कर चुके थे।

जब लड़ाई शुरू हुई तो हज़रत अली (रज़ि.) ने हज़रत जुबैर (रज़ि.) को बुलाकर आँहज़रत (ﷺ) की हदीष याद दिलाई कि जुबैर एक दिन ऐसा होगा, तुम अली (रज़ि.) से लड़ोगे और तुम ज़ालिम होगे। हज़रत जुबैर (रज़ि.) ये हदीष सुनते ही मैदाने जंग से लौट गये। रास्ते में ये एक मुक़ाम पर सो गये। अम्र बिन ज़रमूज़ मर्दूद ने वादी अस् सबाअ में सोते हुए उनको क़त्ल कर दिया और उनका सर हज़रत अली (रज़ि.) के पास लाया। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से सुना है कि जुबैर (रज़ि.) का कातिल दोज़खी है।

**बाब 14 : अगर इमाम किसी शख़्स को सिफ़ारत पर भेजे या किसी ख़ास जगह ठहरने का हुक्म दे तो क्या उसका भी हिस्सा (ग़नीमत में) होगा?**

3130. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे उस्मान बिन मौहब ने बयान किया, और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शरीक न हो सके थे। उनके निकाह में रसूले करीम (ﷺ) की एक साहबज़ादी थीं और वो बीमार थीं। उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें भी उतना ही प्रवाब मिलेगा जितना बद्र में शरीक होने वाले किसी शख़्स को, और उतना ही हिस्सा भी मिलेगा। (दीगर मुक़ाम : 3698, 3704, 4066, 4513, 4514, 4566, 4650, 4651, 7095)

١٤- بَابُ إِذَا بَعَثَ الْإِمَامُ رَسُولًا لِي حَاجَةٍ، أَوْ أَمْرَهُ بِالْمَقَامِ، هَلْ يُنْتَهَمُ لَهُ؟  
٣١٣٠- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَّانَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَوْهَبٍ عَنْ ابْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّمَا تَغِيبُ عُثْمَانُ عَنْ بَدْرٍ لِإِنَّهُ كَانَ تَحْتَ بَيْتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَكَانَتْ مَرِيضَةً، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ)).

وأطرافه في: ٣٦٩٨، ٣٧٠٤، ٤٠٦٦، ٤٠١٣، ٤٠٦٦، ٤٠١٤، ٤٠١٣، ٤٠١٤.  
[٧٠٩٥، ٤٦٥١، ٤٦٥٠، ٤٠١٤]

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने इसी हदीष के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया है कि जो शख़्स इमाम के हुक्म से बाहर गया हो, या ठहर गया हो उसका भी हिस्सा माले ग़नीमत में लगाया जाए और इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) और अहमद (रह.) इसके ख़िलाफ़ कहते हैं और इस हदीष को हज़रत उस्मान (रज़ि.) के हक़ में ख़ास करार देते हैं।

**बाब 15 : इस बात की दलील कि पाँचवाँ**

١٥- بَابُ وَمِنْ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ

## हिस्सा मुसलमानों की ज़रूरतों के लिये है वो वाक़िया है कि हवाज़िन की क़ौम ने

अपने दूध नात्रे की वजह से जो आँहज़रत (ﷺ) के साथ था, आपसे दरख्वास्त की, उनके माल क़ैदी वापस हों तो आपने लोगों से मुआफ़ कराया कि अपना हक़ छोड़ दो और ये भी दलील है कि आप (ﷺ) लोगों को उस माल में से देने का वा'दा करते जो बिला जंग हाथ आया था और खुमुस में से इन्आम देने का और ये भी दलील है कि आपने खुमुस में से अंसार को दिया और जाबिर (रज़ि.) को ख़ैबर की खज़ूर दी।

3131, 32. हमसे सईद बिन ज़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझको लैष ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि ज़र्वा कहते थे कि मरवान बिन हकम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि जब हवाज़िन का वफ़द रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपने मालों और क़ैदियों की वापसी का सवाल किया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि सच्ची बात मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। उन दोनों चीज़ों में से तुम एक ही वापस ले सकते हो। अपने क़ैदी वापस ले लो या फिर माल ले लो, और मैंने तुम्हारा इतिज़ार भी किया। आँहज़रत (ﷺ) ने तक्रीबन दस दिन तक ताड़फ़ से वापसी पर उनका इतिज़ार किया और जब ये बात उन पर वाज़ेह हो गई कि आँहज़रत (ﷺ) उनकी सिर्फ़ एक ही चीज़ (क़ैदी या माल) वापस कर सकते हैं तो उन्होंने कहा कि हम अपने क़ैदी ही वापस लेना चाहते हैं। अब आँहज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को ख़िताब किया, आप (ﷺ) ने अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्दो-प्रना बयान करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअद! तुम्हारे ये भाई अब हमारे पास तौबा करके आए हैं और मैं मुनासिब समझता हूँ कि उनके क़ैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ। इसीलिये जो शख़्स अपनी खुशी से गनीमत के अपने हिस्से के (क़ैदी) वापस करना चाहता है वो कर दे और जो शख़्स चाहता हो कि उसका हिस्सा बाक़ी रहे और हमें जब उसके बाद सबसे पहली गनीमत मिले ता

الْعُمَسَ لِنَوَائِبِ الْمُسْلِمِينَ مَا  
سَأَلَ هَوَازِنُ النَّبِيِّ ﷺ

— بِرِضَائِهِ بِهِمْ — فَحَلَّلَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ،  
وَمَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعِدُّ النَّاسَ أَنْ يُعْطِيَهُمْ  
مِنَ الْفَيْءِ وَالْأَنْفَالِ مِنَ الْعُمَسِ، وَمَا  
أَعْطَى الْأَنْصَارَ، وَمَا أُعْطِيَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ  
اللَّهِ تَمْرَ خَيْرٍ.

٣١٣١، ٣١٣٢ — حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ غَفِيرٍ  
قَالَ : حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ  
عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : وَزَعَمَ عَزْوَةُ أَنْ  
مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ  
أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ حِينَ جَاءَهُ  
وَقَدْ هَوَازِنُ مُسْلِمِينَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يُرَدَّ  
إِلَيْهِمْ أَمْوَالُهُمْ وَسَبَبُهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ : ((أَحَبُّ الْخَلَيْئِثِ إِلَيَّ أَسَدَلُهُ،  
فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ : إِمَّا السَّيِّ  
وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِهِمْ))  
— وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ انْتَظَرَ آخِرَهُمْ  
بِضْعِ عَشْرَةَ لَيْلَةً مَعِينَ قَلِيلٌ مِنَ الطَّائِفَةِ —  
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ هُوَ رَادُّ  
إِلَيْهِمْ إِلَّا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا : فَإِنَّا  
نَخْتَارُ سَبَبَنَا، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى  
الْمُسْلِمِينَ فَاتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ  
ثُمَّ قَالَ : ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هَؤُلَاءِ  
فَإِنْ جَاءُوا نَابِلِينَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرَادُوا

उसमें से उसके हिस्से की अदायगी कर दी जाए तो वे भी अपने क़ैदी वापस कर दे, (और जब हमें दूसरी ग़नीमत मिलेगी तो उसका हिस्सा अदा कर दिया जाएगा) इस पर सहाबा किराम (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अपनी खुशी से उन्हें अपने हिस्से वापस कर देते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन हमें ये मा'लूम न हो सका कि किन लोगों ने अपनी खुशी से इजाज़त दी और किन लोगों ने नहीं दी है। इसलिये सब लोग (अपने ख़ैमों में) वापस चले जाएँ और तुम्हारे सरदार लोग तुम्हारी बात हमारे सामने आकर बयान करें। सब लोग वापस चले गये और उनके सरदारों ने इस मसले पर बातचीत की और फिर आँहज़रत (ﷺ) को आकर ख़बर दी कि सब लोग खुशी से इजाज़त देते हैं। यही वो ख़बर है जो हवाज़िन के क़ैदियों के सिलसिले में हमें मा'लूम हुई है। (राजेज़ : 2307, 2308)

إِنَّهُمْ سَيِّئُهُمْ، مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُطْلَبَ  
لَلْفَيْلِ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى  
خَطِّهِ حَتَّى نَغْطِيَهُ بِبَاهٍ مِنْ أَوَّلِ مَا بَغِيءُ  
اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ قَدْ طَبِعْنَا  
ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّا لَا نَدْرِي مَنْ أَوْثَرُ مِنْكُمْ فِي  
ذَلِكَ مِنْكُمْ لَمْ يَأْذَنْ، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ  
إِلَيْنَا غُرُفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ))، فَوَجَعَ النَّاسُ.  
فَكَتَمَهُمْ غُرُفَاؤُهُمْ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قَدْ طَبِعُوا فَالْوُثَرُ.  
فَهَذَا الَّذِي بَلَّغْنَا عَنْ سَيِّئِ هَوَارِئِ)).

[راجع: ٢٣٠٨، ٢٣٠٧]

**तशरीह:** कौमे हवाज़िन में आप (ﷺ) की अब्वलीन दाया हलीमा सअदिया थीं। इन्हे इस्त्राक़ ने मगाज़ी में निकाला है कि हवाज़िन वालों ने आँहज़रत (ﷺ) से यूँ अर्ज़ किया था आप उन औरतों पर एहसान कीजिए जिनका आपने दूध पिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी बिना पर हवाज़िन वालों को भाई करार दिया और मुजाहिदीन से फ़र्माया कि वो अपने अपने हिस्से के लौण्डी गुलाम इनको वापस कर दें, चुनाचे ऐसा ही किया गया। इस हदीष में कई एक तमहुनी उमूर भी बतलाए गये हैं जिनमे अक्वाम में नुमाइन्दगी का उस्लू भी शामिल है जिसे इस्लाम ने सिखाया है इसी उस्लू पर मौजूदा जम्हूरी तर्ज़ें हुकूमत वजूद में आया है। इस रिवायत की सनद में मरवान बिन हकम का भी नाम आया है, इस पर मौलाना बह्दीदुज्जमाँ मरहूम फ़र्माते हैं:—

मरवान ने न तो आँहज़रत (ﷺ) से सुना है, न आप (ﷺ) की सुहबत हासिल की है। उसके आमाल बहुत ख़राब थे और इसी वजह से लोगों ने हज़रत इमाम बुखारी (रह.) पर तअन किया है कि मरवान से रिवायत करते हैं। हालाँकि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अकेले मरवान से रिवायत नहीं की, बल्कि मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) के साथ, जो सहाबी हैं, रिवायत की है और अक़बर ऐसा भी होता है कि कुछ बुरा शख्स हदीष की रिवायत में सच्चा और बाएहतियात् होता है तो मुहदिप्पीन इससे रिवायत करते हैं। और कोई शख्स बहुत नेक और सालेह होता है लेकिन वो इबादत या दूसरे इल्म में मसरूफ़ रहने की वजह से हदीष के अल्फ़ाज़ और मतन का ख़ूब ख़याल नहीं रख पाता है, तो मुहदिप्पीन उससे रिवायत नहीं करते हैं या उसकी रिवायत को ज़ईफ़ जानते हैं। ऐसी बहुत सी मिषालें मौजूद हैं। मुज्ताहिदीने इज़ाम में कुछ हज़रात तो ऐसे हैं जिनका तरीक़-ए-कार इस्तिख़ाज व इस्तिम्बाते मसाइल इज्तिहाद के तरीक़ पर था। कुछ फ़िक़ह और हदीष दोनों के जामेअ थे। बहरहाल हज़रत इमाम बुखारी (रह.) अपनी जगह पर मुज्ताहिदे मुत्तलक़ हैं। अगर वो किसी जगह मरवान जैसे लोगों की रिवायत नक़ल करते हैं तो उनके साथ किसी और मुअतबर शाहिद को भी पेश कर देते हैं। जो उनके कमाले एहतियात् की दलील है और इस बिना पर उन पर तअन करना महज़ तअस्सुब और कोरे बातिनी का पुबूत देना है।

3133. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान

٣١٣٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ  
الرَّوَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ قَالَ حَدَّثَنَا

किया, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया और (अध्वूब ने एक दूसरी सनद के साथ इस तरह रिवायत की है कि) मुझसे कासिम बिन आसिम कुलैबी ने बयान किया और कहा कि कासिम की हदीष (अबू क़िलाबा की हदीष की बनिस्बत) मुझे ज़्यादा अच्छी तरह याद है, ज़हदम से, उन्होंने ने बयान किया कि हम अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) की मजलिस में हाज़िर थे (खाना लाया गया और) वहाँ मुर्गी का ज़िक्र होने लगा। बनी तमीम अल्लाह के एक आदमी सुख़ रंग वाले वहाँ मौजूद थे। ग़ालिबन मवाली में से थे। उन्हें भी अबू मूसा (रज़ि.) ने खाने पर बुलाया, वो कहने लगे कि मैंने मुर्गी को गन्दी चीज़ें खाते एक बार देखा था तो मुझे बड़ी नफ़रत हुई और मैंने क़सम खा ली कि अब कभी मुर्गी का गोश्त न खाऊँगा। हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि क़रीब आ जाओ (तुम्हारी क़सम पर) मैं तुमसे एक हदीष इस सिलसिले में बयान करता हूँ, क़बीला अशअर के चन्द लोगों को साथ लेकर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (ग़ज़व-ए-तबूक के लिये) हाज़िर हुआ और सवारी की दरख्वास्त की। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे लिये सवारी का इतिज़ाम नहीं कर सकता, क्योंकि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो तुम्हारी सवारी के काम आ सके, फिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में शनीमत के कुछ क़ैट आए, तो आप (ﷺ) ने हमारे बारे में पूछा, और फ़र्माया कि क़बीला अशअर के लोग कहाँ हैं? चुनौचे आप (ﷺ) ने पाँच क़ैट हमें दिये जाने का हुक्म दिया, ख़ूब मोटे-ताज़े और फ़रबा। जब हम चलने लगे तो हमने आपस में कहा कि जो नामुनासिब तरीक़ा हमने इख़्तियार किया उससे आँहज़रत (ﷺ) के इस अज़िये में हमारे लिये कोई बरकत नहीं हो सकती। चुनौचे हम फिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमने पहले जब आपसे दरख्वास्त की थी तो आपने क़सम खाकर फ़र्माया था कि मैं तुम्हारी सवारी का इतिज़ाम नहीं कर सकूँगा। शायद आप हज़रत (ﷺ) को वो क़सम याद न रही हो, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मैंने तुम्हारी सवारी का इतिज़ाम वाक़ई नहीं किया, वो अल्लाह तआला है जिसने तुम्हें ये सवारियाँ दे दी हैं। अल्लाह की क़सम! तुम उस पर यक़ीन रखो कि इंशाअल्लाह जब भी मैं कोई क़सम खाऊँ, फिर मुझ पर ये बात

أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قَلَابَةَ قَالَ: وَخَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ عَاصِمٍ الْكَلْبِيُّ - وَأَنَا لِحَدِيثِ الْقَاسِمِ أَحْفَظُ - عَنْ زُهْدَمٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى، فَأَتَى ذِكْرُ ذِجَاجَةٍ وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ اللَّهُ أَحْمَرُ كَأَنَّهُ مِنَ الْمَوَالِي، فَدَعَاَهُ لِلطَّعَامِ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا فَقَدِيرَتُهُ فَحَلَفْتُ لَا أَكُلُ. فَقَالَ: هَلُمُّ فَلَاخُذْكُمْ عَنْ ذَلِكَ: إِنِّي أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَفَرٍ مِنَ الْأَشْعَرِيِّينَ نَسْتَحْمِلُهُ، فَقَالَ: ((وَاللَّهِ لَا أُحْمِلُكُمْ، وَمَا عِنْدِي مَا أُحْمِلُكُمْ)). وَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَنَهَبَ إِبِلَ فَسَأَلَ عَنْهَا فَقَالَ: أَيْنَ الْفَرَّ الْأَشْعَرِيُّونَ؟ فَأَمَرْنَا بِحَمْسِي ذَوْدِ غُرِّ الدَّرَى، فَلَمَّا انْطَلَقْنَا قُلْنَا: مَا صَنَعْنَا؟ لَا يَبَارِكُ لَنَا. فَرَجَعْنَا إِلَيْهِ فَقُلْنَا: إِنَّا سَأَلْنَاكَ أَنْ تَحْمِلَنَا، فَحَلَفْتَ أَنْ لَا تَحْمِلَنَا، أَلَمْ يَسِيتْ؟ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَنَا حَمَلْتُكُمْ، وَلَكِنَّ اللَّهَ حَمَلَكُمْ، وَإِنِّي وَاللَّهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَا أُحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَارَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلَّا أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُمَا)).

أطرافه في: ٤٣٨٥، ٤٤٥١، ٥٥١٧

٥٥١٨، ٦٦٢٣، ٦٦٤٩، ٦٦٧٨

٦٦٨٠، ٦٧١٨، ٦٧١٩، ٦٧٢١

ज़ाहिर हो जाए कि बेहतर और मुनासिब तर्जें अमल इसके सिवा में है तो मैं वही करूँगा जिसमें अच्छाई होगी और क्रसम का कफ़ारा दे दूँगा। (दीगर मक़ाम : 4385, 4451, 5517, 5518, 6623, 6649, 6678, 6680, 6718, 6719, 6721, 7555)

अबू मूसा का ये मतलब था कि तू ने भी जो क्रसम खाली है कि मुर्गी न खाऊँगा ये क्रसम अच्छी नहीं है कि मुर्गी हलाल जानवर है। फ़रागत से खा और क्रसम का कफ़ारा अदा कर दे, बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अशअरियों को अपने हिस्से या'नी खुमस में से ये कूँट दिये। अबू मूसा और उनके साथियों ने ये ख़्याल किया कि शायद आँहज़रत (ﷺ) को वो क्रसम याद न रही हो कि मैं तुमको सवारियों नहीं देने का और हमने आपको याद नहीं दिलाया, गोया फ़रेब से हम ये कूँट ले आए, ऐसे काम में भलाई क्यों कर हो सकती है। इसी सफ़ाई के लिये उन्होंने ने मुराजिअत की जिससे मामला साफ़ हो गया।

3134. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नजद की तरफ़ एक लश्कर ख़ाना किया। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी लश्कर के साथ थे। ग़नीमत के तौर पर कूँटों की एक बड़ी ता'दाद इस लश्कर को मिली इसलिये उसके हर सिपाही को हिस्से में भी बारह बारह ग्यारह ग्यारह कूँट मिले थे और एक एक कूँट और इन्आम में मिला। (दीगर मक़ाम : 4338)

٣١٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعَثَ سَرِيَّةً فِيهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ قَبْلَ تَجْدِوٍ فَغَنِمُوا إِبِلًا كَثِيرَةً، فَكَانَتْ سَهْمَانِهِمِ اثْنِي عَشَرَ بَعِيرًا أَوْ أَخَذَ عَشَرَ بَعِيرًا، وَنَقَلُوا بَعِيرًا بَعِيرًا. [طَرَفُهُ ي : ٤٣٣٨].

और ज़ाहिर है कि लश्कर के सरदार ने ये इन्आम खुमस में से दिया होगा। गो ये फ़ेअल लश्कर के सरदार का था मगर आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में हुआ, आप (ﷺ) ने सुना होगा और उस पर सुकूत फ़र्माया तो वो हुज्जत हुआ।

3135. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको लैष ने ख़बर दी, उन्हें अक़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) कुछ मुहिमों के मौक़े पर उसमें शरीक होने वालों को ग़नीमत के आम हिस्सों के अलावा (खुमस वगैरह में से) अपने तौर पर भी दिया करते थे।

٣١٣٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُنْقَلُ بَعْضُ مَنْ يَبْتَغِي مِنَ السَّرَايَا لَأَنْفُسِهِمْ خَاصَّةً مِوَى قَسَمَ غَاةَ الْجَيْشِ)).

3136. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की हिजरत की ख़बर हमें मिली, तो हम यमन में थे। इसलिये हम भी आपकी ख़िदमत में मुहाज़िर की हैषियत से हाज़िर होने के लिये ख़ाना हुए। मैं था, मेरे दो भाई थे।

٣١٣٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْأَعْلَاءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَلَّغْنَا مَخْرَجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ، فَخَرَجْنَا

(मेरी उम्र उन दोनों से कम थी, दोनों भाईयों में) एक अबू बुर्दा (रज़ि.) थे और दूसरे अबू रहम। या उन्होंने ये कहा कि अपनी क़ौम के चन्द अफ़राद के साथ या ये कहा 53 या 52 आदमियों के साथ (ये लोग ख़ाना हुए थे) हम कश्ती में सवार हुए तो हमारी कश्ती नज़ाशी के मुल्क हब्शा पहुँच गई और वहाँ हमें जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) अपने दूसरे साथियों के साथ मिले। जा'फ़र (रज़ि.) ने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें यहाँ भेजा था और हुक्म दिया था कि हम यहीं रहें। इसलिये आप लोग भी हमारे साथ यहीं ठहर जाएँ। चुनाँचे हम भी वहीं ठहर गये। और फिर सब एक साथ (मदीना) हाज़िर हुए, जब हम ख़िदमते नबवी पहुँचे, तो आँहज़रत (ﷺ) ख़ैबर फ़तह कर चुके थे। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने (दूसरे मुजाहिदों के साथ) हमारा भी हिस्सा माले ग़नीमत में लगाया। या उन्होंने ये कहा कि आपने ग़नीमत में से हमें भी अत्ता किया, हालाँकि आप (ﷺ) ने किसी ऐसे शख्स का ग़नीमत में हिस्सा नहीं लगाया जो लड़ाई में शरीक न रहा हो। सिर्फ़ उन्हीं लोगों को हिस्सा मिला था, जो लड़ाई में शरीक हुए थे। अल्बत्ता हमारे कश्ती के साथियों और जा'फ़र और उनके साथियों को भी आपने ग़नीमत में शरीक किया था। (हालाँकि हम लोग लड़ाई में शरीक नहीं हुए थे)। (दीगर मक़ाम : 3876, 4230, 4233)

مُهَاجِرِينَ إِلَيْهِ - أَنَا وَأَخْوَانِي لِي أَنَا أَصْفَرُهُمْ أَحَدُهُمَا أَبُو بُرْدَةَ وَالْآخَرُ أَبُو رَهْمٍ - وَإِنَّمَا قَالَ فِي بَضْعٍ وَإِنَّمَا قَالَ فِي ثَلَاثَةِ وَخَمْسِينَ أَوْ اثْنَيْنِ وَخَمْسِينَ رَجُلًا مِنْ قَوْمِي، فَرَكِبْنَا سَفِينَةً، فَأَلْقَيْنَا سَفِينَتَنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِأَلْحَبَةِ، وَوَالَقْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأَصْحَابَهُ عِنْدَهُ، فَقَالَ جَعْفَرٌ : إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَنَا هَذَا، وَأَمَرَنَا بِالْإِقَامَةِ، فَأَقِيمُوا مَعَنَا. فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيعًا، فَوَالَقْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَتَبَيَّنَ لَنَا - أَوْ قَالَ : فَأَعْطَانَا - مِنْهَا، وَمَا قَسَمَ لِأَحَدٍ غَابٍ عَنْ فَتْحِ خَيْبَرٍ مِنْهَا شَيْئًا، إِلَّا لِمَنْ شَهِدَ مَعَهُ، إِلَّا أَصْحَابَ سَفِينَتِنَا مَعَ جَعْفَرٍ وَأَصْحَابِهِ، قَسَمَ لَهُمْ مَعَهُمْ)).

[أطرافه ن: 3876, 4230, 4233].

ज़ाहिर ये है कि ये हिस्सा आप (ﷺ) ने माले ग़नीमत में से दिलवाया न कि खुम्स में से, फिर बाब की मुनासबत क्यूँ कर होगी, मगर जब इमाम को माले ग़नीमत में जो दूसरे मुजाहिदीन का हक़ है ऐसा तसर्फ़ करना जाइज़ हुआ तो खुम्स में बतरीक़े औला जाइज़ होगा जो ख़ास इमाम के सुपुर्द किया जाता है। पस बाब का मतलब हासिल हो गया।

3137. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह भदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन डययना ने, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने, और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जब बहरीन से वसूल होकर मेरे पास माल आएगा तो मैं तुम्हें इस तरह इस तरह, इस तरह (तीन लप) दूँगा उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई और बहरीन का माल उस वक़्त तक नहीं आया। फिर जब वहाँ से माल आया तो अबूबक्र (रज़ि.) के हुक्म से मुनादी ने ऐलान किया कि जिसका भी नबी करीम (ﷺ) पर कोई क़र्ज़ हो या आपका कोई

٣١٣٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَدِيجٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفِيَّانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَكِّيرِ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَقَدْ أَغْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا)). فَلَمْ يَجِبْ حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَلَمَّا

वा'दा हो तो हमारे पास आए। मैं अबूबक्र (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये फ़र्माया था। चुनौचे उन्होंने तीन लप भरकर मुझे दिया। सुफ़यान बिन इययना ने अपने दोनों हाथों से इशारा करके (लप भरने की) कैफ़ियत बताई फिर हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि इब्ने मुंकदिर ने भी हमसे इसी तरह बयान किया था। और एक बार सुफ़यान ने (साबिक़ा सनद के साथ) बयान किया कि जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि मैं अबूबक्र (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझे कुछ नहीं दिया। फिर मैं हाज़िर हुआ, और इस बार भी मुझे कुछ नहीं दिया। फिर मैं तीसरी बार हाज़िर हुआ और अर्ज किया कि मैंने एक बार आपसे मांगा और आपने इनायत नहीं किया। दोबारा मांगा, फिर भी आपने इनायत नहीं किया और फिर मांगा लेकिन आपने इनायत नहीं किया। अब या आप मुझे दीजिए या फिर मेरे बारे में बुख़ल से काम लीजिए, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम कहते हो कि मेरे मामले में बुख़ल से काम लेता है। हालाँकि तुम्हें देने से जब भी मैंने मुँह फेरा तो मेरे दिल में ये बात होती थी कि तुम्हें कभी न कभी देना ज़रूर है। सुफ़यान ने बयान किया कि हमसे अम्म ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अली ने और उनसे जाबिर ने, फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे एक लप भरकर दिया और फ़र्माया कि इसे शुमार कर मैंने शुमार किया तो पाँच सौ की ता'दाद थी, उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इतना ही दो बार और ले ले। और इब्नुल मुंकदिर ने बयान किया (कि अबूबक्र रज़ि. ने फ़र्माया था) बुख़ल से ज़्यादा बदतरीन और क्या बीमारी हो सकती है।

جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَمْرَ أَبُو بَكْرٍ مُنَادِيًا  
فَنَادَى: مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَيْنَ أَوْ عِدَّةٍ  
فَلْيَأْتِنَا فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ لِي كَذَا  
وَكَذَا. فَخَفَا لِي فَلَا تَأْتِي. وَجَعَلَ سَفِيَانُ  
يَحْثُو بِكَفِّهِ جَمِيعًا، ثُمَّ قَالَ لَنَا: هَكَذَا  
قَالَ لَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ. وَقَالَ مَرَّةً فَأَتَيْتُ  
أَبَا بَكْرٍ فَسَأَلْتُ فَلَمْ يُعْطِنِي ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَلَمْ  
يُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُهُ الثَّلَاثَةَ فَقُلْتُ: سَأَلْتُكَ  
فَلَمْ تُعْطِنِي ثُمَّ سَأَلْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ  
سَأَلْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، فِيمَا أَنْ تُعْطِنِي وَإِنَّمَا  
أَنْ تَبْعَلَ عَنِّي. قَالَ: قُلْتُ تَبْعَلَ عَلَيَّ  
مَا مَنَعَكَ مِنْ مَرَّةٍ إِلَّا وَأَنَا أَرِيدُ أَنْ  
أُعْطِيكَ)) قَالَ سَفِيَانُ: وَحَدَّثَنَا عَمْرُو  
عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرٍ فَخَفَا لِي  
حَتَّىةً وَقَالَ: عُدَّهَا، فَوَجَدْتُهَا خَمْسَ  
مِائَةٍ فَقَالَ: فَخَذْتُ بِثَلَاثَةِ مَرَّتَيْنِ وَقَالَ يُغْنِي  
ابْنُ الْمُنْكَدِرِ: وَأَيُّ ذَاكَ أَدْوَأُ مِنَ  
الْبُخْلِ.

हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का पहली बार मैं न देना किसी मस्लिहत से था ताकि जाबिर (रज़ि.) को मा'लूम हो जाए उसका देना कुछ उन पर बतौर कर्ज़ के लाज़िम नहीं है बल्कि बतौर तबरूअ के देना है।

3138. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे कुरह बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे अम्म बिन दीनार ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में ज़िअराना में ग़नीमत तक्सीम कर रहे थे कि एक शख्स जुल् खुवेसिरा ने आपसे कहा, ईसाफ़ से काम

٣١٣٨ - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ  
حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ  
دِينَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقْسِمُ



लीजिए। आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं भी इस्लाम से काम न लूँ तो तू बदबख्त हुआ। (राजेअ : 2296)

غَيْمَةً بِالْجَمْرِانَةِ إِذْ قَالَ لَهُ رَجُلٌ: اغْدِلْ. فَقَالَ لَهُ: ((شَقِيتَ إِنْ لَمْ أُغْدِلْ)).

[راجع: ٢٢٩٦]

शकीत का लफ़्ज़ दोनों तरह मन्कूल है या'नी बसैगा हाज़िर और बसैगा मुतकल्लिम। पहले का मतलब ये है कि अगर मैं ही ग़ैर आदिल (अन्यायी) हूँ तो फिर तू तो बदनसीब हुआ क्योंकि तू मेरा ताबेअ है। जब मुश्रिद और मत्बूअ आदिल न हो तो मुरीद का क्या ठिकाना और ये हदीष आइन्दा पूरे तौर से मज़कूर होगी। बाब की मुनासबत ये है कि आँहजरत (ﷺ) ने खुमुस में से अपनी राय के मुवाफ़िक़ किसी को कम ज़्यादा दिया होगा, जब तो जुल् खुवेसिरा ने ये ए'तिराज़ किया, क्योंकि बाकी चार हिस्से तो बराबर सब मुजाहिदीन में तक्सीम होते हैं। मगर उसका ए'तिराज़ ग़लत था कि उसने आँहजरत (ﷺ) की बाबत ऐसा गुमान किया। जबकि आप (ﷺ) से बढ़कर बनी नोअे इंसान मे कोई आदिल मुसिफ़ पैदा नहीं हुआ, न होगा।

**बाब 16 : आँहजरत (ﷺ) का एहसान रखकर कैदियों को मुफ्त छोड़ देना, और खुमुस वग़ैरह न निकालना**

١٦- بَابُ مَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى الْأَسَارَى مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمَّسَ

बाब का मतलब ये है कि ग़नीमत का माल इमाम के इख्तियार में है। अगर चाहे तो तक्सीम करने से पहले वो काफ़िरों को फेर दे। या उनके कैदी मुफ्त आज़ाद कर दे। तक्सीम के बाद फिर वो माल मुजाहिदीन की मिल्क हो जाता है।

3139. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें जुहसी ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने और उन्हें उनके वालिद (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने बद्र के कैदियों के बारे में फ़र्माया था कि अगर मुहम्म बिन अदी (जो कुफ़्र की हालत में मर गये थे) ज़िन्दा होते और नजिस, नापाक लोगों की सिफ़ारिश करते तो मैं उनकी सिफ़ारिश से उन्हें (फ़िदया लिये बग़ैर) छोड़ देता। (दीगर मक़ाम : 4024)

٣١٣٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَبْرِ عَنْ أَبِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِي أَسَارَى بَدْرٍ: ((لَوْ كَانَ الْمُطْعِمُ بْنُ عَبْدِ حَيٍّ حَيًّا لَمْ كَلَّمْتَنِي فِي هَؤُلَاءِ النَّسَى لَرَكَّتْهُمْ لَهُ)).

[طرنه في : ٤٠٢٤]

आयते करीमा इन्नमल मुश्रिकूना नजिस (अत् तौबा : 28) की बिना पर उनको नजिस कहा, शिक़ ऐसी ही नजासत है। मगर हजार अफ़सोस कि आज कितने नामो-निहाद मुसलमान भी इस नजासत में आलूदा हो रहे हैं।

**बाब 17 : उसकी दलील कि खुमुस में इमाम को इख्तियार है वो उसे अपने कुछ (मुस्तहिक)**

रिश्तेदारों को भी दे सकता है। और जिसको चाहे न दे, दलील ये है कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के खुमुस में से बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब को दिया, (और दूसरे कुरैश को न दिया) उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने कहा कि आँहजरत (ﷺ) ने तमाम रिश्तेदारों को नहीं दिया और उसकी भी रिआयत नहीं की

١٧- بَابُ وَمِنَ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْخُمْسَ لِلْإِمَامِ، وَأَنَّهُ يُعْطِي بَعْضَ قُرَائِهِ دُونَ بَعْضٍ مَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ لِبَنِي الْمُطَّلِبِ وَبَنِي هَاشِمٍ مِنْ خُمْسِ خَيْبَرَ. قَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ: لَمْ يَعْطَهُمْ بِذَلِكَ وَلَمْ يَخْصُ قُرْبَاهُ دُونَ مَنْ أَخُوَ

कि जो क़रीबी रिश्तेदार हो उसी को दें बल्कि जो ज़्यादा मुहताज होता, आप उसे इनायत फ़र्माते, ख़्वाह रिश्ते में वो दूर ही क्यों न हो। अगरचे आपने जिन लोगों को दिया वो यही देखकर वो मुहताजी का आपसे शिकवा करते थे और ये भी देखकर कि आँहज़रत (ﷺ) की जांबदारी और तरफ़दारी में उनको जो नुक़सान अपनी क़ौम वालों और उनके हम क्रिस्मों से पहुँचा (वो बहुत था)

3140. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैज़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इब्ने मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे जुबैर बिन मुत्तइम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं और इब्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने बनू मुत्तलिब को तो इनायत किया लेकिन हमको छोड़ दिया, हालाँकि हमको आपसे वही रिश्ता है जो बनू मुत्तलिब को आपसे है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि बनू मुत्तलिब और बनू हाशिम एक ही हैं। लैज़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया और (इस रिवायत में) ये ज़्यादाती की कि जुबैर (रज़ि.) ने कहा नबी क़रीम (ﷺ) ने बनू अब्दे शम्स और बनू नौफ़िल को नहीं दिया था, और इब्ने इस्हाक़ (साहिबे मराज़ी) ने कहा है कि अब्दे शम्स, हाशिम और मुत्तलिब एक माँ से थे, और उनकी माँ का नाम आतिका बिन्ते मुरह़ था और नौफ़िल बाप की तरफ़ से उनके भाई थे। (उनकी माँ दूसरी थीं)। (दीगर मक़ाम : 3502, 4229)

बाब 18 : मक्तूल के जिस्म पर जो सामान हो (कपड़े हथियार वग़ैरह) वो सामान तक्सीम में शरीक होगान उसमें से ख़ुमुस लिया जाएगा बल्कि वो सारा क़ातिल को मिलेगा और इमाम का ऐसा हुक्म देने का बयान

3141. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यूसुफ़ बिन माजिशून ने, उनसे स़ालेह बिन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे स़ालेह के दादा

إِلَيْهِ، وَإِنْ كَانَ الَّذِي أُعْطِيَ لَمْا يَشْكُوا إِلَيْهِ مِنَ الْحَاجَةِ، وَلَمْا مَسْتَهُمْ فِي جَنْبِهِ مِنْ قَوْمِهِمْ وَخَلْفَائِهِمْ.

۳۱۴۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: مَنَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَغْضَيْتَ بَيْنِي الْمُطَّلِبَ وَتَرَكْتَنَا. وَنَحْنُ وَهُمْ مِنْكَ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّمَا بَيْنُ الْمُطَّلِبِ وَبَنِي هَاشِمٍ شَيْءٌ وَاحِدٌ)). قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ وَزَادَ: ((قَالَ جُبَيْرٌ: وَلَمْ يَقْسِمِ النَّبِيُّ ﷺ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَلَا لِبَنِي نَوْفَلٍ. وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: عَبْدُ شَمْسٍ وَهَاشِمٌ وَالْمُطَّلِبُ إِخْوَةٌ لِأُمٍّ. وَأُمُّهُمْ عَاتِكَةُ بِنْتُ مُرَّةٍ. وَكَانَ نَوْفَلٌ أَخَاهُمْ لِأَبِيهِمْ)).

[طرمه ي ۳۵۰۲، ۴۲۲۹]

۱۸- بَابُ مَنْ لَمْ يُخَمَسِ الْأَسْلَابُ وَمَنْ قَتَلَ قَتِيلًا فَلَهُ سَلْبُهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمَسَ، وَحُكْمُ الْإِمَامِ فِيهِ

۳۱۴۱- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ الْمُجَاشِقِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنْ

(अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में, मैं सफ़ के साथ खड़ा हुआ था। मैंने जो दाएँ-बाएँ जानिब देखा, तो मेरे दोनों तरफ़ कबीला अंसार के दो नौ उग्र लड़के थे। मैंने आरजू की काश! मैं उनसे ज़बरदस्त ज्यादा उग्र वालों के बीच होता। एक ने मेरी तरफ़ इशारा किया, और पूछा चचा! आप अबू जहल को भी पहचानते हैं? मैंने कहा कि हाँ! लेकिन बटे तुम लोगों को उससे क्या काम है? लड़के ने जवाब दिया मुझे मा'लूम हुआ है कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) को गालियाँ देता है, उस ज़ात की कसम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मुझे वो मिल गया तो उस वक़्त तक मैं उससे जुदा न होऊँगा जब तक हममें से कोई जिसकी किस्मत में पहले मरना होगा, मर न जाए, मुझे उस पर बड़ी हैरत हुई। फिर दूसरे ने इशारा किया और वही बातें उसने भी कहीं। अभी चन्द मिनट ही गुजरे थे कि मुझे अबू जहल दिखाई दिया जो लोगों में (कुफ़्रार के लश्कर में) घूमता फिर रहा था। मैंने उन लड़कों से कहा कि जिसके बारे में तुम लोग मुझसे पूछ रहे थे, वो सामने (फिरता हुआ नज़र आ रहा) है। दोनों ने अपनी तलवारें सम्भाल लीं और उस पर झपट पड़े और हमला करके उसे क़त्ल कर डाला। उसके बाद रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको ख़बर दी, आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि तुम दोनों में से किसने उसे मारा है? दोनों जवानों ने कहा कि मैंने क़त्ल किया है। इसलिये आपने उनसे पूछा कि क्या अपनी तलवारें तुमने साफ़ कर ली हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि नहीं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों तलवारों को देखा और फ़र्माया कि तुम दोनों ही ने उसे मारा है। और उसका सारा सामान मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह को मिलेगा। वो दोनों नौजवान मुआज़ बिन इफ़रा और मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह थे। मुहम्मद ने कहा कि यूसुफ़ ने स़ालेह से सुना और इब्राहीम ने अपने बाप से सुना। (दीगर मक़ाम : 3964, 3988)

أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ : بَيْنَا أَنَا وَاقِفٌ فِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ، فَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي وَشِمَالِي، فَإِذَا أَنَا بِغَلَامَيْنِ مِنَ الْأَنْصَارِ حَدِيثَةٍ أَسْنَاهُمَا تَمَنَيْتُ أَنْ أَكُونَ بَيْنَ أَضْلَعٍ مِنْهُمَا، فَغَمَزَنِي أَحَدُهُمَا فَقَالَ : يَا عَمَّ هَلْ تَعْرِفُ أَبَا جَهْلٍ؟ قُلْتُ : نَعَمْ، مَا حَاجَتَكَ إِلَيْهِ يَا ابْنَ أُخِي؟ قَالَ : أَخْبِرْتُ أَنَّهُ يَسُبُّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَئِنْ رَأَيْتُهُ لَا يَفَارِقُ سَوَادِي سَوَادَةً حَتَّى يَمُوتَ الْأَعْجَلُ مِنَّا. فَصَحَبْتُ لِدَلِّكَ، فَغَمَزَنِي الْآخَرُ فَقَالَ لِي مِثْلَهَا، فَلَمْ أَتَسَبَّبْ أَنْ نَظَرْتُ إِلَى أَبِي جَهْلٍ يَجُولُ فِي النَّاسِ فَقُلْتُ : أَلَا إِنَّ هَذَا صَاحِبُكُمَا الَّذِي سَأَلْتُمَانِي، فَأَبْتَلَرَاهُ بَسِيفَتَيْهِمَا فَضْرَبَاهُ حَتَّى قَتَلَاهُ. ثُمَّ انْصَرَفَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَخْبَرَاهُ . فَقَالَ : ((أَيُّكُمَا قَتَلَهُ؟)) قَالَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا : أَنَا قَتَلْتُهُ. فَقَالَ : ((هَلْ مَسَحْتُمَا سَيْفَيْكُمَا؟)) قَالَا : لَا. فَظَرَّ فِي السَّيْفَيْنِ فَقَالَ : ((كِلَاكُمَا قَتَلَهُ)). وَسَلَبَ لِمُعَاذِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْجُمُوحِ. وَكَانَا مُعَاذُ ابْنِ عَمْرٍو وَمُعَاذُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ الْجُمُوحِ.

[طرمه في : 3964, 3988]

**तुहरीह:**

हुआ ये था कि मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह ने उस मर्दूद को बेदम किया था तो असल क़ातिल वही हुए, उन्हीं को आपने अबू जहल का सामान दिलाया और मुआज़ बिन इफ़रा का दिल खुश करने के लिये आपने यूँ फ़र्माया कि तुम दोनों ने मारा है। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने ख़याल किया कि ये बच्चे नातजुर्बेकार हैं, मा'लूम नहीं जंग के वक़्त ठहर सकते हैं या नहीं, अगर ये भागे तो मा'लूम नहीं मेरे दिल की भी क्या हालत हो, उनको ये मा'लूम न था कि ये दोनों बेशा शुजाअत के शेर और बूढ़ों से भी ज्यादा दिलेर हैं, उन अंसारी बच्चों ने लोगों से अबू जहल मर्दूद का हाल सुना था कि उसने

आँहज़रत (ﷺ) को कैसी-कैसी ईज़ाएँ दी थीं। चूँकि ये मदीना वाले थे लिहाज़ा अबू जहल की सूरत नहीं पहचानते थे। ईमान का जोश उनके दिलों में था, उन्होंने ये चाहा कि मारें तो बड़े मूज़ी को मारें, उसी मर्द का काम तमाम करें। जिसमें वो कामयाब हुए। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन

कुछ रिवायतों में अबू जहल के कातिल मुआज़ और मुअव्वज़ उफ़रा के बेटे बतलाए गए हैं। और इब्ने मसज़द (रज़ि.) को भी शामिल किया गया है। अन्देशा है कि ये लोग भी बाद में शरीके क़त्ल हो गये हों।

3142. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे यहा बिन सईद ने, उनसे इब्ने अफ़लह ने, उनसे अबू क़तादा के गुलाम अबू मुहम्मद ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़व-ए-हुनैन के साल हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ाना हुए। फिर जब हमारा दुश्मन से सामना हुआ तो (इब्तिदा में) इस्लामी लश्कर हारने लगा। इतने में मैंने देखा कि मुश्रीकीन के लश्कर का एक शख़्स एक मुसलमान के ऊपर चढ़ा हुआ है। इसलिये मैं फ़ौरन ही धूम पड़ा और उसके पीछे से आकर तलवार उसकी गर्दन पर मारी। अब वो शख़्स मुझ पर टूट पड़ा, और मुझे इतनी ज़ोर से उसने भींचा कि मेरी रूह जैसे क़ब्ज़ होने को थी। आख़िर जब उसको मौत ने आ दबोचा, तब कहीं जाकर उसने मुझे छोड़ा। उसके बाद मुझे इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मिले, तो मैंने उनसे पूछा कि मुसलमान अब किस हालत में हैं? उन्होंने कहा कि जो अल्लाह का हुक्म था वही हुआ। लेकिन मुसलमान हारने के बाद फिर मुक़ाबला पर सम्मिल गये तो नबी करीम (ﷺ) बैठ गये और फ़र्माया कि जिसने भी किसी काफ़िर को क़त्ल किया हो और उस पर वो गवाह भी पेश कर दे तो मक्कतूल का सारा साज़ो-सामान उसे ही मिलेगा। (अबू क़तादा रज़ि. ने कहा) मैं भी खड़ा हुआ। और मैंने कहा कि मेरी तरफ़ से कौन गवाही देगा? लेकिन (जब मेरी तरफ़ से कोई न उठा तो) मैं बैठ गया। फिर दोबारा आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (आज) जिसने काफ़िर को क़त्ल किया और उस पर उसकी तरफ़ से कोई गवाह भी हो तो मक्कतूल का सारा सामान उसे मिलेगा। इस बार फिर मैंने खड़े होकर कहा कि मेरी तरफ़ से कौन गवाही देगा? और फिर मुझे बैठना पड़ा।

٣١٤٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ ابْنِ أَلْفَح عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ عَنْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ حُنَيْنٍ، فَلَمَّا اتَّفَقْنَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِينَ جَوْلَةٌ، فَرَأَيْتُ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ عَلَا رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ؛ فَاسْتَدْبَرْتُ حَتَّى أَتَيْتُهُ مِنْ وَرَائِهِ حَتَّى ضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ عَلَى خَبَلٍ عَائِقِهِ، فَأَقْبَلَ عَلَيَّ فَضَمَّنِي ضَمًّا وَجَدْتُ مِنْهَا رِيحَ الْمَوْتِ؛ ثُمَّ أَذْرَكُهُ الْمَوْتَ فَأَرْسَلَنِي، فَلَجَفْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقُلْتُ: مَا بَالُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَمْرُ اللَّهِ، ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ رَجَعُوا، وَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: ((مَنْ قَتَلَ قَيْلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلْبَةٌ)). فَقُمْتُ فَقُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ. ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ قَتَلَ قَيْلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلْبَةٌ)) - فَقُمْتُ فَقُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ. ثُمَّ قَالَ: النَّائِلَةُ مِثْلَهُ، فَقُمْتُ

तीसरी बार फिर आँहज़रत (ﷺ) ने वही इर्शाद दोहराया और इस बार जब मैं खड़ा हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने खुद ही दरयाफ्त फ़र्माया, किस चीज़ के बारे कह रहे हो) अबू क़तादा! मैंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने सारा वाक़िया बयान कर दिया, तो एक साहब (अस्वद बिन ख़ुज़ाई असलमी) ने बताया कि अबू क़तादा सच कहते हैं, या रसूलल्लाह (ﷺ)! और इस मक्तूल का सामान मेरे पास महफूज़ है। और मेरे हक़ में उन्हें राजी कर दीजिए (कि वो मक्तूल का सामान मुझसे न लें) लेकिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम! अल्लाह के एक शेर के साथ, जो अल्लाह और उसके रसूल के लिये लड़े, आँहज़रत (ﷺ) ऐसा नहीं करेंगे कि उनका सामान तुम्हें दे दें, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अबू बक्र ने सच कहा है। फिर आपने सामान अबू क़तादा (रज़ि.) को अत्ता फ़र्माया। अबू क़तादा ने कहा कि फिर उसकी ज़िरह बेचकर मैंने बनी सलमा में एक बाग़ ख़रीद लिया। और ये पहला माल था जो इस्लाम लाने के बाद मैंने हासिल किया था। (राज़ेअ : 2100)

[راجع: 2100]

इस हदीस से भी यही प्राबित हुआ कि मक्तूल काफ़िर का सामान कातिल मुजाहिद ही का हक़ है जो उसे मिलना चाहिये, मगर ये खुद अमीरे लश्कर उसको तहक़ीक़ करने के बाद देंगे।

**बाब 19 : तालीफ़े कुलूब के लिये आँहज़रत (ﷺ) का कुछ काफ़िरों वग़ैरह (नौ मुस्लिमों या पुराने मुसलमानों) को खुमस में से देना,**

इसको अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया है।

3143. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने कि हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने रसूलल्लाह (ﷺ) से कुछ रुपया मांगा तो आप (ﷺ) ने मुझे अत्ता किया, फिर दोबारा मैंने मांगा और इस बार भी आपने अत्ता किया, फिर इर्शाद फ़र्माया, हकीम! ये माल देखने में सरसब्ज़ बहुत मीठा और मजेदार है लेकिन जो शख्स इसे दिल की बेतम्नी के साथ ले उसके माल में तो बरकत होती है और जो शख्स उसे लालच और हिम्स के साथ

فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَا لَكَ يَا أَبَا قَتَادَةَ؟)) فَأَقْصَصْتُ عَلَيْهِ الْقِصَّةَ، فَقَالَ رَجُلٌ: صَدَقَ يَا رَسُولَ اللَّهِ! وَسَلْبُهُ عِنْدِي، فَأَرْضِيهِ عَنِّي. قَالَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: لَهَا اللَّهُ، إِذَا لَا يَغْبِدُ إِلَى-أَسَدٍ مِنْ أَسَدِ اللَّهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِيكَ سَلْبَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((صَدَقَ)). فَأَعْطَاهُ قَبِضَتِ الدَّرْعِ، فَأَنْتَفَتْ بِهِ مَخْرُفًا لِي بَنِي سَلَمَةَ، فَإِنَّهُ لِأَوَّلِ مَالٍ تَأْتَلُهُ لِي (الإسلام).

١٩- بَابُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْطِي

الْمُؤَلَّفَةَ قُلُوبُهُمْ وَغَيْرُهُمْ مِنْ

الْخُمْسِ وَنَحْوِهِ

رَوَاهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

٣١٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ

حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ

بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ حَكِيمَ

بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَأَلْتُ

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ

فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ لِي: ((يَا حَكِيمُ، إِنَّ هَذَا

الْمَالَ خَضِرٌ خُلُوٌّ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةٍ

ले तो उसके माल में बरकत नहीं होती, बल्कि उसकी मिशाल उस शख्स जैसी है जो खाए जाता है लेकिन उसका पेट नहीं भरता और ऊपर का हाथ (देने वाला) नीचे के हाथ (लेने वाले) से बेहतर होता है हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके बाद अब मैं किसी से कुछ भी नहीं माँगूंगा, यहाँ तक कि इस दुनिया में से चला जाऊँ। चुनौती (आँहज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उन्हें देने के लिये बुलाते, लेकिन वो उसमें से एक पैसा भी लेने से इंकार कर देते। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) (अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में) उन्हें देने के लिये बुलाते और उनसे भी लेने से उन्होंने इंकार कर दिया था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पर कहा कि मुसलमानों! मैं उन्हें उनका हक़ देता हूँ जो अल्लाह तआला ने फ़ै के माल से उनका हिस्सा मुकर्रर किया है। लेकिन ये उसे भी कुबूल नहीं करते। हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) की वफ़ात हो गई लेकिन आँहज़रत (ﷺ) के बाद उन्होंने किसी से कोई चीज़ नहीं ली। (राजेअ : 1472)

نَفْسٍ يُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافٍ  
نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي  
يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ  
السُّفْلَى)). قَالَ حَكِيمٌ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ  
اللَّهِ ﷺ، وَالَّذِي بَعَثْتَ بِالْحَقِّ لَا أَرْزَأُ  
أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتَّى أَفَارِقَ الدُّنْيَا، فَكَانَ  
أَبُو بَكْرٍ يَدْعُو حَكِيمًا لِيُعْطِيَهُ الْقَطْعَاءَ فَيَأْتِي  
أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، ثُمَّ إِنْ عَمَرَ دَعَاهُ  
لِيُعْطِيَهُ فَأْتِي أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ  
الْمُسْلِمِينَ، إِنِّي أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقِّهِ الَّذِي  
قَسَمَ اللَّهُ لَهُ مِنْ هَذَا الْقِيَمِ فَيَأْتِي أَنْ  
يَأْخُذَهُ. فَلَمْ يَرْزَأُ حَكِيمٌ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ  
بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى تُوَفِّي)).

[راجع: ١٤٧٢]

तस्वीह:

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि हज़रत हकीम बिन हज़ाम (रज़ि.) नये-नये मुशरफ़ ब इस्लाम हुए थे, आपने उनकी तालीफ़े क़ल्ब के लिये उनको दो-दो बार रुपया दिया। बाद में आँहज़रत का इशदि गिरामी सुनकर हज़रत हकीम (रज़ि.) ताहयात अपने वादे को निभाया और अपना जाइज़ हक़ भी छोड़ दिया कि कहीं नफ़्स को इस तरह मुफ़्त ख़ोरी की आदत न हो जाए। मदाने हक़ ऐसे ही होते हैं जो इस दुनिया में किब्रियते अहमर का हुक्म रखते हैं। इल्ला माशा अल्लाह। आज की दुनिया में जिसे ऐसी बातें करता पाऊँ उसके अंदर जाइज़ा लगे तो मा'लूम होगा कि यही खुद दुनिया का बदतरीन हरीस (लालची) है इल्ला माशा अल्लाह। यही हाल बहुत से मुद्इयाने तदय्युन का है जो ज़ाहिर में बड़े हक़ गो और अंदरूने खाना बदतरीन, बद मामला प्राबित होते हैं। इल्ला मन रहिमहुल्लाह

3144. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हममाद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़मान-ए-जाहिलियत (कुफ़्र) में मैंने एक दिन ए'तिकाफ़ की मन्नत मानी थी, तो रसूले करीम (ﷺ) ने उसे पूरा करने का हुक्म दिया। नाफ़ेअ ने बयान किया कि हुनैन के कैदियों में से उमर (रज़ि.) को दो बांदियाँ मिली थीं। तो आपने उन्हें मक्का के किसी घर में रखा। उन्होंने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने हुनैन के कैदियों पर एहसान किया (और सब को मुफ़्त आज़ाद कर दिया) तो

٣١٤٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا  
حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ ((أَنَّ  
عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا  
رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ كَانَ عَلَيَّ اغْتِكَافٌ يَوْمَ فِي  
الْجَاهِلِيَّةِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَقْبَلَ بِهِ. قَالَ: وَأَصَابَ  
عُمَرَ جَارِبَتَيْنِ مِنْ سَبَوِ حَتِّينَ فَوَضَعَهُمَا  
فِي بَغْضِ بَيْتٍ مَكَّةَ، قَالَ فَمَنْ رَسُولُ

गलियों में वो दौड़ने लगे। उमर (रज़ि.) ने कहा, अब्दुल्लाह! देखो तो ये क्या मामला है। उन्होंने बताया कि रसूले करीम (ﷺ) ने उन पर एहसान किया है और हुनैन के तमाम कैदी मुफ्त आज़ाद कर दिये गये हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि फिर जा उन दोनों लड़कियों को भी आज़ाद कर दे। नाफ़ेअ ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक़ामे जिअराना से उमरह का एहराम नहीं बाँधा था। अगर आँहज़रत (ﷺ) वहाँ से उमरह का एहराम बाँधते तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को ये ज़रूर मा'लूम होता। (राजेअ: 2032)

और जरीर बिन हाज़िम ने जो अय्यूब से रिवायत की, उन्होंने नाफ़ेअ से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से, उसमें यूँ है कि (वो दोनों बान्दियों जो उमर (रज़ि.) को मिली थीं) खुमस में से थीं। (ए'तिकाफ़ के बारे में ये रिवायत) मअमर ने अय्यूब से नक़ल की है, उनसे नाफ़ेअ ने उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने नज़्र का हिस्सा जो रिवायत किया है उसमें एक दिन का लफ़ज़ नहीं है।

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने खुमस में से दो लौण्डियाँ बतौर एहसान हज़रत उमर (रज़ि.) को दीं। रिवायत में आँहज़रत (ﷺ) का जिअराना से उमरह का एहराम न बाँधना मज़कूर है। हालाँकि दूसरे बहुत से लोगों ने नक़ल किया है कि आप जब हुनैन और ताइफ़ से फ़ारिग हुए तो आप (ﷺ) ने जिअराना से उमरे का एहराम बाँधा और इब्नात नफ़ी पर मुकद्दम है। मुम्किन है अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को इसकी ख़बर हो लेकिन उन्होंने नाफ़ेअ से न बयान किया हो, इस हद्दीस से ये भी ज़ाहिर हुआ कि कोई शख्स हालते कुफ़्र में कोई नेक काम करने की नज़्र माने तो इस्लाम लाने के बाद वो नज़्र पूरी करनी होगी। हुनैन के कैदियों को भी बिला मुआवज़ा आज़ाद कर देना इंसानियत परवरी के सिलसिले में रसूले करीम (ﷺ) का वो अज़ीम कारनामा है जिस पर उम्मत मुस्लिमा हमेशा नाज़ा रहेगी।

اللَّهُ ﷻ عَلَى سَبْعِ حُنَيْنٍ، فَجَعَلُوا يَسْتَمُونَ فِي السُّكَلِ، فَقَالَ عُمَرُ: يَا عَبْدَ اللَّهِ أَنْظِرْ مَا هَذَا؟ فَقَالَ: مَنْ رَسُولُ اللَّهِ ﷻ عَلَى السُّبْحِ؟ قَالَ: أَذْهَبَ فَأَرْسِلَ الْخَارِيتَيْنِ. قَالَ: نَافِعٌ: وَلَمْ يَفْتَمِرْ رَسُولُ اللَّهِ ﷻ مِنَ الْجَفَرَانِ، وَلَوْ اغْتَمَرَ لَمْ يَخَفْ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ. [راجع: ٢٠٣٢]

وَرَوَاهُ جَرِيرُ بْنُ حَارِثٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ وَقَالَ: ((مِنَ الْخُمْسِ)). وَرَوَاهُ مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ فِي النَّذْرِ وَلَمْ يَقُلْ: ((يَوْمًا)).

3145. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा हमसे हसन बसरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अमर बिन तग़िब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ लोगों को दिया और कुछ लोगों को नहीं दिया। ग़ालिबन जिन लोगों को आप (ﷺ) ने नहीं दिया था, उनको नागवार हुआ। तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मैं कुछ ऐसे लोगों को देता हूँ कि मुझे जिनके बिगड़ जाने (इस्लाम से फिर जाने) और बेसब्री का डर है। और कुछ लोग ऐसे हैं जिन पर मैं भरोसा करता हूँ, अल्लाह तआला ने उनके दिलों में भलाई और बेनियाज़ी रखी है (उनको मैं नहीं देता) अमर बिन

٣١٤٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَارِثٍ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُو بْنُ تَغْلِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷻ قَوْمًا وَمَنْعَ آخَرِينَ، فَكَأَنَّهُمْ غَبَوْا عَلَيْهِ فَقَالَ: ((إِنِّي أُعْطِي قَوْمًا أَخَافُ ظَلْعَهُمْ وَخَزَعَهُمْ، وَأَكِلُ أَقْوَامًا إِلَى مَا جَعَلَ اللَّهُ فِي قُلُوبِهِمْ مِنَ الْخَيْرِ وَالْغِنَى، مِنْهُمْ

तग़लिब (रज़ि.) कहा करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी निस्वत ये जो कलिमा फ़र्माया अगर उसके बदले सुख कैंट मिलते तो भी मैं इतना खुश नहीं होता। अबू आसिम (रज़ि.) ने जरीर से बयान किया कि मैंने हसन बसरी (रह.) से सुना, वो बयान करते थे कि हमसे अम्र बिन तग़लिब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास माल या क़ैदी आए थे और उन्हीं को आपने तक्सीम किया था। (राजेज़: 923)

عَمْرُو بْنُ تَغْلِبٍ: «فَقَالَ عَمْرُو بْنُ تَغْلِبٍ: مَا أَحِبُّ أَنْ لِي بِكَلِمَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ خُمْرُ النَّعَمِ». زَادَ أَبُو عَاصِمٍ عَنْ جَرِيرٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: «حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغْلِبٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ آتَى بِمَالٍ - أَوْ بَسِي - فَقَسَمَهُ.

بِهَذَا». [راجع: ٩٢٣]

**तस्रीह:**

हदीष और बाब में मुताबकत ये कि आँहज़रत (ﷺ) ने अम्वाले ग़नीमत को अपनी स़वाब दीद के मुताबिक़ तक्सीम फ़र्माया, जिसमें अहमतरिन इस्लामी मसालेह शामिल थे, ए' तिराज़ करने वालों को भी आपने अहसन तरीक से मुत्तमइन कर दिया। प्राबित हुआ कि ऐसे मौकों पर ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम को कुछ खुसूसी इख्तियारात दिये गये हैं, मगर उनका फ़र्ज है कि कोई ज़ाती गुर्जे फ़ासिद (व्यक्तिगत बुरा स्वार्थ) बीच में शामिल न हो, महज़ अल्लाह व रसूल की रज़ा व इस्लाम की सरबुलन्दी मदेनज़र हो, रिवायत में मज़कूर हज़रत अम्र बिन तग़लिब (रज़ि.) अब्दी हैं। क़बीला अब्दुल कैस से उनका ता'ल्लुक है, मशहूर अंसारी स़हाबी हैं। (रज़ि.)

3146. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुरैश को मैं उनका दिल मिलाने के लिये देता हूँ, क्योंकि उनकी जाहिलियत (कुफ़्र) का ज़माना अभी ताज़ा गुज़रा है। (उनकी दिलजोई करना ज़रूरी है)। (दीगर मक़ाम: 3147, 3528, 3778, 4331, 4332, 4333, 4334, 4337, 5860, 6762, 7441)

٣١٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِنِّي أُعْطِي قُرَيْشًا أَنَا لِفُتُهِمْ، لِأَنَّهُمْ حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ».

[أطرافه في: ٣١٤٧, ٣٥٢٨, ٣٧٧٨, ٤٣٣١, ٤٣٣٢, ٤٣٣٣, ٤٣٣٤]

[٤٣٣٧, ٥٨٦٠, ٦٧٦٢, ٧٤٤١].

3147. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को क़बीला हवाज़िन के अम्वाल में से ग़नीमत दी और आप (ﷺ) कुरैश के कुछ आदमियों को (तालीफ़े क़ल्ब की ग़र्ज से) सौ सौ कैंट देने लगे तो कुछ अंसारी लोगों ने कहा अल्लाह तआला रसूलुल्लाह (ﷺ) की बख़िश करे। आप कुरैश को तो दे रहे हैं और हमें छोड़ दिया। हालाँकि उनका ख़ून अभी तक हमारी तलवारों से टपक रहा है। (कुरैश के लोगों को हाल ही में हमने

٣١٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ نَاسًا مِنَ الْأَنْصَارِ قَالُوا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أَلْفَاةَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَمْوَالِ هَوَازِنَ مَا أَلْفَاءَ، فَطَفِقَ يُعْطِي رِجَالًا مِنْ قُرَيْشِ أَلْفَةَ مِنَ الْإِبِلِ، فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يُعْطِي



मारा, उनके शहर को हम ही ने फतह किया) अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) को जब ये ख़बर पहुँची तो आप (ﷺ) ने अंसार को बुलाया और उन्हें चमड़े के एक डेरे में जमा किया, उनके सिवा किसी दूसरे सहाबी को आपने नहीं बुलाया। जब सब अंसारी लोग जमा हो गये तो आँहज़रत (ﷺ) भी तशरीफ़ लाए और पूछा कि आप लोगों के बारे में जो बात मुझे मा'लूम हुई वो कहाँ तक सहीह है? अंसार के समझदार लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम में जो अक्ल वाले हैं, वो तो कोई ऐसी बात जुबान पर नहीं लाए हैं, हाँ चन्द नौ उम्र लड़के हैं, उन्होंने ही ये कहा है कि अल्लाह रसूलल्लाह (ﷺ) की बख़िश करे, आप (ﷺ) कुरैश को तो दे रहे हैं और हमको नहीं देते हालाँकि हमारी तलवारों से अभी तक उनके ख़ून के क़तरें टपक रहे हैं। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं कुछ ऐसे लोगों को देता हूँ जिनका कुफ़्र का ज़माना अभी गुज़रा है। (और उनको देकर उनका दिल मिलाता हूँ) क्या तुम इस पर ख़ुश नहीं हो कि जब दूसरे लोग माल व दौलत लेकर वापस जा रहे होंगे, तो तुम लोग अपने घरों को रसूलल्लाह (ﷺ) को लेकर वापस जा रहे होंगे। अल्लाह की क़सम! तुम्हारे साथ जो कुछ वापस जा रहा है वो उससे बेहतर जो दूसरे लोग अपने साथ वापस ले जाएँगे। सब अंसारियों ने कहा बेशक या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम इस पर राज़ी और ख़ुश हैं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, मेरे बाद तुम ये देखोगे कि तुम पर दूसरे लोगों को मुक़द्दम किया जाएगा, उस वक़्त तुम सन्न करना, (दंगा-फ़साद न करना) यहाँ तक कि अल्लाह तआला से जा मिलो और उसके रसूल (ﷺ) से हौज़े कौज़र पर। अनस (रज़ि.) ने बयान किया, फिर हमसे सन्न न हो सका। (राजेअ: 3146)

قُرَيْشًا وَيَدْعُدُ وَسِيوفًا تَقَطُّرُ مِنْ دِمَائِهِمْ، قَالَ أَنَسٌ: فَحَدَّثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَقَالَتِهِمْ، فَأَرْسَلَ إِلَى الْأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمَ، وَلَمْ يَدْخُ مَعَهُمْ أَحَدًا غَيْرَهُمْ، فَلَمَّا اجْتَمَعُوا جَاءَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا كَانَ حَدِيثُ بَلْعَبِي عَنْكُمْ؟)) قَالَ لَهُ فَقَهَاءُهُمْ أَمَا ذَوُورَ رَأَيْنَا فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا. وَأَمَّا أَنَسٌ مِنْ حَدِيثَةِ اسْتَأْنَهُمْ فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُ الْأَنْصَارَ، وَسِيوفًا تَقَطُّرُ مِنْ دِمَائِهِمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنِّي لَأُعْطِي رِجَالًا حَدِيثُ عَهْدِهِمْ بِكُفْرٍ، أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَلْهَبَ النَّاسُ بِالْأَمْوَالِ، وَتَرْجَعُوا إِلَى رِجَالِكُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ، فَوَ اللَّهُ مَا تَنْفَلِبُونَ بِهِ غَيْرَ مِمَّا يَنْفَلِبُونَ بِهِ)). قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَدْ رَضِينَا. فَقَالَ لَهُمْ: ((إِنَّكُمْ سَتَرُونَ بَغْدِي أَوْرَةَ شَدِيدَةٍ، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْخَوْصِ)). قَالَ أَنَسٌ: فَلَمْ نَصْبِرْ)). [راجع: ٣١٤٦]

**तशरीह:** ये लोग कुरैश के सरदार और रईस थे जो हाल ही में मुसलमान हुए थे, आप (ﷺ) ने उनकी दिलजोई के लिये उनको बहुत सामान दिया। उन लोगों के नाम ये थे। अबू सुफ़यान, मुआविया बिन अबी सुफ़यान, हकीम बिन हज़िज़, हारिष बिन हारिष, हारिष बिन हिशाम, सहल बिन अम्र, हवेतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा, अलाअ बिन हारिषा प्रकफ़ी, उययना बिन हुसैन, सफ़वान बिन उमय्या, अक्ररअ बिन हाबिस, मालिक बिन औफ़, इन हज़रात को रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी कुछ दिया उसका जिक्र साफ़ तारीख़ में बाक़ी रह गया, मगर अंसार का आपने अपनी ज़ाते गिरामी से जो शर्फ़ बख़्शा वो रहती दुनिया तक के लिये दरख़्शाँ व ताबाँ है। जिस शर्फ़ की बरकत से मदीना मुनव्वरा को वो ख़ास शर्फ़ हासिल है जो दुनिया में किसी भी शहर को नसीब नहीं।

अम्वाले हवाज़िन के बारे में जो गनीमत में हासिल हुआ, साहिबे लम्आत लिखते हैं, मा अफ़ाअल्लाहु फ़ी हाज़लइब्हामि तफ़ख़ीमुन व तक्वीरून लिमा अफ़ाअ फ़इन्नल्फ़ैअल्हासिल मिन्हुम कान अज़ीमन क़यीरन मिम्मा ला युअहु व ला युहसा व जाअ फिरिवायाति सित्तत आलाफ़ मिनस्सबिद्यि व अब्वउठव इशरून अल्फ़म्मिनल्इबिलि व अब्वअत आलाफ़ औक्रियतिन मिनलिफ़ज़जति व अक्शर अब्वईन अल्फ़ शातिन (हाशिया बुखारी करातिशी जिल्द 1, पेज 445) या'नी अम्वाले हवाज़िन इस क़दर हासिल हुआ जिसका शुमार करना भी मुश्किल है। रिवायात में क़ैदियों की ता'दाद छः हज़ार, और चौबीस हज़ार क़ैत और चार हज़ार औक्रिया चाँदी और चालीस हज़ार से ज़्यादा बकरियाँ मज़कूर हुई हैं।

3148. हमसे अब्दुल अज़ीज बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अमर बिन मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने ख़बर दी कि मेरे बाप मुहम्मद बिन जुबैर ने कहा, और उन्हें जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। आपके साथ और भी सहाबा थे। हुनैन के जिहाद से वापसी हो रही थी। रास्ते में कुछ बहू आपसे लिपट गये। (लूट का माल) आपसे मांगते थे। वो आपसे ऐसा लिपटे कि आप (ﷺ) को एक बबूल के पेड़ की तरफ़ धकेल ले गये। आपकी चादर उसमें अटककर रह गई। उस वक़्त आप ठहर गये। आपने फ़र्माया कि (भाईयों) मेरी चादर तो दे दो। अगर मेरे पास उन कांटे दरख़तों की ता'दाद में क़ैत होते तो वो भी तुममें तक्सीम कर देता। तुम मुझे बख़ील झूठा और बुजदिल हर्गिज़ नहीं पाओगे। (राजेअ: 2821)

٣١٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَوْسِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جَبْرِ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَبْرِ بْنُ مُطْعِمٍ أَنَّهُ يَنَاقُشُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ النَّاسُ مُقْبِلًا مِنْ حُنَيْنٍ عَلِقَتْ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْأَعْرَابُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطُرُّوا إِلَى سَمَرَةٍ فَخَطَفَتْ رِداءَهُ، فَوَقَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَعْطُونِي رِداءِي، فَلَوْ كَانَ عَذُّ هَذِهِ الْعِصَاوِ نَعْمًا لِقَسَمْتُهُ بَيْنَكُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُونَنِي بَيْعِلًا وَلَا كَذُوبًا وَلَا جَبَانًا)). (راجع: ٢٨٢١)

बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है कि इमाम को इख़्तियार है माले गनीमत जिन लोगों को चाहे मस्लिहतन तक्सीम कर सकता है। ऐनी ने कहा व मुताबक़तुन लिक्तर्जुमति तस्तानिसु मिन क़ौलिही लिक्लिस्मति बैनिकुम.

3149. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ जा रहा था। आप नज्जान की बनी हुई चौड़े हाशिये की एक चादर ओढ़े हुए थे। इतने में एक देहाती ने आपको घेर लिया और ज़ोर से आपको खींचा, मैंने आपके शाने को देखा, उस पर चादर के कोने का निशान पड़ गया, ऐसा खींचा। फिर कहने लगा, अल्लाह का माल जो आपके पास है। उसमें से कुछ मुझको दिलाइए। आप (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा और हंस दियो

٣١٤٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِيٌّ غَلِيظٌ الْحَاشِيَّةُ، فَأَذْرَكُهُ أَغْرَابِيٌّ فَجَذَبَهُ جَذْبَةً شَدِيدَةً حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاقِبِ النَّبِيِّ ﷺ قَدْ أَثَرَتْ بِهِ حَاشِيَةُ

फिर आप (ﷺ) ने उसे देने का हुक्म फर्माया (आखिरी जुम्ला में से बाब का तर्जुमा निकलता है)

(दीगर मक़ाम : 5809, 6088)

3150. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाईल ने कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हुनैन की लड़ाई के बाद नबी करीम (ﷺ) ने (गनीमत की) तक्सीम में कुछ लोगों को ज्यादा दिया। जैसे अकरआ बिन हाबिस (रज़ि.) को सौ ऊँट दिये, इतने ही ऊँट इययना बिन हुसैन (रज़ि.) को दिये और कई अरब के अशराफ़ लोगों को इसी तरह तक्सीम में ज्यादा दिया। इस पर एक शख़्स (मुअत्तब बिन क़शीर मुनाफ़िक़) ने कहा, कि अल्लाह की क़सम! इस तक्सीम में न तो अदल को मल्हज़ रखा गया है और न अल्लाह की खुशनुदी का ख़याल हुआ। मैंने कहा कि वल्लाह! उसकी ख़बर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज़रूर दूँगा। चुनौचे मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, और आपको उसकी ख़बर दी। औहज़रत (ﷺ) ने सुनकर फ़र्माया कि अगर अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) भी अदल न करे तो फिर कौन अदल करेगा? अल्लाह तआला मूसा (अलै.) पर रहम करे कि उनको लोगों के हाथ इससे भी ज्यादा तकलीफ़ पहुँची लेकिन उन्होंने सब्र किया। (दीगर मक़ाम : 3405, 4335, 4336, 6059, 6100, 6291, 6336)

الرّادّ من شدّة جدّيّة ثمّ قال : مرّ لي من مال الله الذي عندك. فالتفت إليه فضحك ثمّ أمر له بقطاء).

[طرفاء في : ٥٨٠٩، ٦٠٨٨].

٣١٥٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ حُنَيْنٍ آتَى النَّبِيَّ ﷺ أَنَسًا فِي الْقِسْمَةِ: فَأَعْطَى الْأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ مِائَةً مِنَ الْإِبِلِ. وَأَعْطَى عُثْمَةَ مِثْلَ ذَلِكَ. وَأَعْطَى أَنَسًا مِنْ أَشْرَافِ الْعَرَبِ قَاتِرَهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْقِسْمَةِ. قَالَ رَجُلٌ: وَاللَّهِ إِنَّ هَذِهِ الْقِسْمَةَ مَا عُدِلَ فِيهَا وَمَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهٌ لِلَّهِ. فَقُلْتُ وَاللَّهِ لَا خَيْرَ فِي النَّبِيِّ ﷺ. فَأَتَيْتُهُ فَأَخْبَرْتُهُ. فَقَالَ: ((فَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ يَعْدِلِ اللَّهُ وَرَسُولُهُ؟ رَحِمَ اللَّهُ مُوسَى. قَدْ أَوْدِيَ بِأَكْثَرِ مِنْ هَذَا قَمَرٍ)).

[أطرافه في : ٣٤٠٥، ٤٣٣٥، ٤٣٣٦].

[٦٠٥٩، ٦١٠٠، ٦٢٩١، ٦٣٣٦].

आपने उस मुनाफ़िक़ को सज़ा नहीं दिलवाई, क्योंकि वो अपने क़ौल से इंकारी हो गया या सिर्फ़ एक शख़्स अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की गवाही थी और एक की गवाही पर जुर्म प्राबित नहीं हो सकता, या आप (ﷺ) ने उसको सज़ा देना मस्लिहत न समझा हो। क़ालिल क़स्तलानी लम यन्कुल अन्नहू (ﷺ) आकबहू.

व फिल्मक़ासिदि क़ाल काज़ी अयाज़ हुक्मुशशरइ अन्न मन सबबन्नबिय्य (ﷺ) क़फ़र व युक्तलु व लाकिन्नहू लम युक्तल तालीफ़न लिगैरिहिम व लिअल्ला यशतहिर फिन्नासि अन्नहू (ﷺ) यक्तलु अन्हाबहू फयन्फिरू या'नी औहज़रत (ﷺ) को गाली देने वाला काफ़िर हो जाता है। जिसकी सज़ा शरअन क़त्ल है मगर आपने मस्लिहतन उसको नहीं मारा।

3151. हमसे महमूद बिन शीलान ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया,

٣١٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غِلَافٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ:

कहा कि मुझे मेरे वालिद ने खबर दी, उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जुबैर (रज़ि.) को जो ज़मीन इनायत की थी, मैं उसमें से गुठलियाँ (सूखी खजूरें) अपने सर पर लाया करती थी। वो जगह मेरे घर से दो मील फ़र्सख की दो तिहाई पर थी। अबू ज़मरह ने हिशाम से बयान किया और उन्होंने अपने बाप से (मुरसलन) बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जुबैर (रज़ि.) को बनी नज़ीर की अराज़ी में से एक ज़मीन मुक़तज़ के तौर पर दी थी।

أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: ((كَنتُ أَقْلُ النَّوَى مِنْ أَرْضِ الزُّبَيْرِ الَّتِي أَقْطَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى رَأْسِي. وَهِيَ بَيْنِي عَلَى ثَلَاثِي فَرَسَخٍ)). وَقَالَ أَبُو حُمْرَةَ عَنْ هِشَامِ عَنْ أَبِيهِ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَقْطَعَ الزُّبَيْرَ أَرْضًا مِنْ أَمْوَالِ بَنِي النَّضِيرِ)).

हाफ़िज़ ने कहा मैंने इस तज़लीक को मौसूलन नहीं पाया, उसके बयान करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज ये है कि अबू ज़मरह ने अबू उसामा के खिलाफ़ इस हदीस को मुरसलन रिवायत किया है न कि मौसूलन। आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत जुबैर (रज़ि.) को कुछ जागीर इनायत की, इसी से बाब का मतलब निकला कि इमाम खुमुस वग़ैरह में से हस्बे मस्लिहत तकसीम करने का मुख्तार है।

3152. मुझसे अहमद बिन मिक्दाम ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन इब्बा ने बयान किया, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उमर ने यहूद व नज़ारा को सरज़मीने हिजाज़ से निकालकर दूसरी जगह आबाद कर दिया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब ख़ैबर फ़तह किया आपका भी इरादा हुआ था कि यहूदियों को यहाँ से निकाल दिया जाए। जब आपने फ़तह पाई, तो उस वक़्त वहाँ की कुछ ज़मीन यहूदियों के क़ब्ज़े में थी। लेकिन फिर यहूदियों ने आँहज़रत (ﷺ) से दरख़वास्त की, आप ज़मीन उन्हीं के पास रहने दें। वो (खेतों और बाग़ों में) काम किया करेंगे। और आधी पैदावार लेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा जब तक हम चाहेंगे उस वक़्त तक के लिये तुम्हें इस शर्त पर यहाँ रहने देंगे। चुनौचे ये लोग वहीं रहे और फिर उमर (रज़ि.) ने उन्हें अपने दौरे ख़िलाफ़त में (मुसलमानों के खिलाफ़ उनके फ़िलों और साजिशों की वजह से यहूद ख़ैबर को) तैमाअ या अरीहा की तरफ़ निकाल दिया था। (राजेअ: 2285)

٣١٥٢ - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ الْمُقْدَامِ قَالَ حَدَّثَنَا الْفَضِيلُ بْنُ سَلِيمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَجْلَى الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَمَّا ظَهَرَ عَلَى أَهْلِ حَيْبَرَ أَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ الْيَهُودَ مِنْهَا. وَكَانَتْ الْأَرْضُ - لَمَّا ظَهَرَ عَلَيْهَا - لِلْيَهُودِ وَلِلرَّسُولِ وَلِلْمُسْلِمِينَ. فَسَأَلَ الْيَهُودَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَتْرُكَهُمْ عَلَى أَنْ يَكْفُوا الْعَمَلَ وَلَهُمْ يَصِفُ النَّصْرَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((تَقْرُكُمُ عَلَى ذَلِكَ مَا شِئْنَا)). فَأَقْرُوا، حَتَّى أَجْلَاهُمْ عُمَرُ فِي إِتَارِهِ إِلَى تَيْمَاءَ أَوْ أَرِينَا)). [راجع: ٢٢٨٥]

**तशरीह:** हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वलमुरादु बिकौलिही लम्मा ज़हर अलैहा फतह अक्वरहा क़बल अंध्यस्लहुल् यहूद व अंध्यसालिहुहु फकानत लिल्यहूद कुल्लुहा मालहहुम अला अय्युसल्लिमू लहुल् अर्जु कानतिल् अर्जु लिल्लाहि व लिरसूलिही व क़ाल इब्नुल्मुनीर अहादीसुल्बाबि मुताबकतुल्लित्तर्जुमति

इल्ला हाज़लअखीर फलैस फीहि लिलअताइ ज़िब्रुन व लाकिन फीहि ज़िब्रु जिहातिन क़द उलिम मिम्मकानिन आखर अन्नहा कानत जिहात अताइन फबिहाज़त्तरीक़ तदख़ुलु तहततर्जुमति वल्लाहु आलमु (फतुल बारी) या'नी मुराद ये है कि ज़मीने ख़ैबर को फ़तह करने के बाद यहूद से मुआहिदा हो गया था। पहले वो सब ज़मीनें उन ही की थीं। बाद में ग़लब—ए—इस्लाम के बाद वो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की हो गई थीं। उसमें एक तरह से उन ज़मीनों को बतौर बख़्शिश देना भी मक्सूद है। बाब का तर्जुमा से उसी में मुताबक़त है। इस हदीष से मुआमलात के बहुत से मसाले निकलते हैं जिनको हज़रत इमाम ने जगह जगह बयान फ़र्माया है।

## बाब 20 : अगर खाने की चीज़ें काफ़िरों के मुल्क में हाथ आ जाएँ

## ۲۰- بَابُ مَا يُصِيبُ مِنَ الطَّعَامِ فِي أَرْضِ الْعَرَبِ

अल्जुम्हूर अला जवाज़ि अख़िज़लग़ानिमीन मिनल्कूति व मा यज़्लुह बिही व कुल्लु तआमिन युअताहु अवलुह इमूमन व कज़ालिक अल्फहवाब्बि सवाअन कान क़बलल्किस्मति और बादहा बिइज़्जिल्इमामि व बिगैरि इज़्जिही. (फतुल बारी) या'नी जुम्हूर का यही फ़त्वा है कि खाने—पीने की चीज़ों को ग़नीमत पाने वाले पहले तक्सीम से पहले और खा सकते हैं। इसी तरह चारा है, इसे भी अपने जानवरों को खिला—पिला सकते हैं।

3153. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल (रज़ि.) ने बया- किया कि हम ख़ैबर के महल का मुहम्मिरा किये हुए थे। किसी शाइस ने एक कुप्पी फेंकी जिसमें चर्बी भरी हुई थी। मैं उसे लेने के लिये लपका, लेकिन मुड़कर जो देखा तो पास ही नबी करीम (ﷺ) मौजूद थे। मैं शर्म से पानी पानी हो गया। (दीगर मक़ाम : 4224, 5508)

۳۱۵۳- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حَمِيدِ بْنِ جَلَالٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغْفَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مُحَاصِرِينَ قَصْرَ خَيْبَرَ، فَرَمَى إِنْسَانٌ بِجِرَابٍ فِيهِ شَحْمٌ، فَزَوْتُ لِأَخِي، فَالْتَفَتُ فَإِذَا النَّبِيُّ ﷺ، فَامْتَحَيْتُ مِنْهُ)). [طرفاه ن: ۴۲۲۴، ۵۵۰۸.]

यहीं से बाब का तर्जुमा निकला क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मना नहीं किया।

3154. हमसे मुसद्द बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि (नबी करीम ﷺ के ज़माने में) ग़ज़्वों में हमें शहद और अंगूर मिलता था हम उसे उसी वक़्त खा लेते। (तक्सीम के लिये उठाकर न रखते)

۳۱۵۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كُنَّا نَصِيبُ فِي مَغَازِنِنَا الْقَمَلِ وَالْبُسْبِ، فَكُلُّهُ وَلَا نُرْفَعُهُ)).

इस हदीष से ये निकला कि खाने—पीने की चीज़ें रखने से खराब होती हैं तक्सीम से पहले उनके इस्ते'माल में कोई हर्ज़ नहीं जैसे तरकारियाँ मेवे वगैरह।

3155. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे शैबानी ने बयान किया, कहा मैंने इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि जंगे ख़ैबर के मौक़े पर फ़ाक़ों पर फ़ाक़े होने लगे। आख़िर जिस दिन ख़ैबर फ़तह हुआ तो (माले ग़नीमत में) घरेलू गधे भी हमें

۳۱۵۵- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((أَصَابَتَنَا مَجَاعَةٌ لَيَالِي

मिलो चुनौचे उन्हें ज़िबह करके (पकाना शुरू कर दिया गया) जब हॉडियों में जोश आने लगा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुनादी ने ऐलान किया कि हॉडियों को उलट दो और घरेलू गधे के गोشت में से कुछ न खाओ। अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कुछ लोगों ने उस पर कहा कि ग़ालिबन आँहज़रत (ﷺ) ने इसलिये रोका है कि अभी तक उसमें से ख़ुमुस नहीं निकाला गया था। लेकिन कुछ दूसरे सहाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने गधे का गोشت क़तई तौर पर ह़राम क़रार दिया है। (शैबानी ने बयान किया कि) मैंने सईद बिन जुबैर (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसे क़तई तौर पर ह़राम कर दिया था। (दीगर मक़ाम: 4220, 4222, 4224, 5526)

خَيْرٌ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ خَيْبَرَ وَقَعْنَا فِي  
الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ فَاتَّخَرْنَاَهَا، فَلَمَّا غَلَّتِ  
الْقُدُورُ نَادَى مُنَادِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ  
أَكْفَيْتُمُ الْقُدُورَ فَلَا تَطْعَمُوا مِنْ لُحُومِ  
الْحُمْرِ شَيْئًا)). قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَقُلْنَا إِنَّهَا  
نَهَى النَّبِيَّ ﷺ لِأَنَّهَا لَمْ تُخَمْسَ. قَالَ:  
وَقَالَ آخَرُونَ حُرْمُهَا اثْنَةٌ. وَسَأَلْتُ سَعِيدَ  
بْنَ جُبَيْرٍ فَقَالَ: حُرْمُهَا اثْنَةٌ.

[أطرافه في: ٤٢٢٠، ٤٢٢٢، ٤٢٢٤،  
٥٥٢٦]

## 58. किताबुल जिज़्या वल मुरादिअत

# किताब जिज़्या वगैरह के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : जिज़्या का और काफ़िरों से एक मुद्दत  
तक लड़ाई न करने का बयान

١- باب الجزية والمواذعة، مع  
أهل الذمة والحرب

وقول الله تعالى :

और अल्लाह तआला का इश्राद कि, उन लोगों से जंग करो जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाए और न आखिरत के दिन पर और न उन चीज़ों को वो ह़राम मानते हैं जिन्हें अल्लाह व रसूल (ﷺ) ने ह़राम क़रार दिया है और न दीने हक़ को उन्होंने कुबूल किया (बल्कि उल्टे वो लोग तुम्हीं को मिटाने और इस्लाम को ख़त्म करने के लिये जंग पर आमादा हो गये)। उन लोगों से जिन्हें किताब दी गई थी (मज़लन यहूद व नस्रारा) यहाँ तक (मुदाफ़िअत करो) कि वो तुम्हारे ग़लबा की वजह से जिज़्या देना कुबूल कर लें और वो तुम्हारे मुक़ाबले पर दब गये हों। (साग़िरून के मा'नी) अजिल्ला

﴿ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ  
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ  
وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا  
الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ  
صَاغِرُونَ ﴾ [التوبة: ٢٩] أَدِلَّةٌ. وَمَا جَاءَ  
فِي أَخْلِ الْجِزْيَةِ مِنَ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى  
وَالْمَجُوسِ وَالْمَغَظَمِ وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ

के हैं। और इन अहादीष का जिक्र जिनमें यहूद, नसारा, मजूस, और अहले अजम से जिज्या लेने का बयान हुआ है। इब्ने इययना ने कहा, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने कहा कि मैंने मुजाहिद से पूछा, इसकी क्या वजह है कि शाम के अहले किताब पर चार दीनार (जिज्या) है और यमन के अहले किताब पर सिर्फ एक दीनार! तो उन्होंने कहा कि शाम के काफिर ज्यादा मालदार हैं।

इसको अब्दुर्रज्जाक ने वस्ल किया है। मा'लूम हुआ कि जिज्या की कमी बेशी के लिये इमाम को इख्तियार है। जिज्या के नाम से हकीरी रकम गैर—मुस्लिम रिआया पर इस्लामी हुकूमत की तरफ से एक हिफाजती टेक्स है जिसकी अदायगी उन गैर—मुस्लिमों की वफादारी का निशान है और इस्लामी हुकूमत पर जिम्मेदारी है कि उनके माल व जान व मज्ज हब की पूरे तौर पर हिफाजत की जाएगी। अगर इस्लामी हुकूमत इस बारे में नाकाम रह जाए तो उसे जिज्या लेने का कोई हक न होगा। कमा ला यखफ़ा

(लफ़्ज़ अजिल्ला से आगे कुछ नुस्खों में ये इबारत ज़ाईद है, वल्मस्कनतु मस्दरुल्मिस्कीन अस्कनु मिन फुलानिन अहवजु मिनु व लम यज़हब इलस्मुकून।

3156. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अमर बिन दीनार से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं जाबिर बिन ज़ैद और अमर बिन औस के साथ बैठा हुआ था तो उन दोनों बुजुर्गों से बजाला ने बयान किया कि 70 हिजरी में जिस साल मुहअब बिन जुबैर (रज़ि.) ने बसरा वालों के साथ हज्र किया था। ज़मज़म की सीढ़ियों के पास उन्होंने बयान किया था कि मैं अह्नफ़ बिन कैस (रज़ि.) के चचा जिज़आ बिन मुआविया का कातिब था। तो वफ़ात से एक साल पहले इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का एक मक्तूब हमारे पास आया कि जिस पारसी ने अपनी महरम औरत को बीवी बनाया हो तो उनको जुदा कर दो और हज़रत इमर (रज़ि.) ने पारसियों से जिज्या नहीं लिया था।

3157. लेकिन जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने गवाही दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हजर के पारसियों से जिज्या लिया था। (तो वो भी लेने लगे थे)

ابن أبي نَجِيحٍ : قُلْتُ لِمُجَاهِدٍ مَا شَأْنُ أَهْلِ الشَّامِ عَلَيْهِمْ أَرْبَعَةُ دِينَاتٍ، وَأَهْلُ الْيَمَنِ عَلَيْهِمْ دِينَارٌ؟ قَالَ: جُعِلَ ذَلِكَ مِنْ قَبْلِ الْإِسْلَامِ.

3156- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ قَالَ: ((كُنْتُ جَالِسًا مَعَ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ وَعَمْرٍو بْنِ أَوْسٍ فَحَدَّثَنِي بِحَالَةِ سَنَةِ سِتِينَ - غَامَ حَجَّ مُصْطَفِ بْنِ الزُّبَيْرِ بِأَهْلِ الْبَصْرَةِ - عِنْدَ ذَرْجِ زَمْرَمَ قَالَ: كُنْتُ كَاتِبًا لِحِزْبِهِ بْنِ مُعَاوِيَةَ غَمَ الْأَخْنَفِ، فَأَنَانَا كِتَابَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَبْلَ مَوْتِهِ بِسَنَةٍ، فَرَأَوْا أَنَّهُ كُلُّ ذِي مَخْرَمٍ مِنَ الْمَجُوسِ. وَلَمْ يَكُنْ عُمَرُ إِخَذَ الْحِزْبَةَ مِنَ الْمَجُوسِ)).

3157- حَتَّى شَهِدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَزَفٍ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَخَذَ الْحِزْبَةَ مِنَ مَجُوسِ هَجَرَ)).

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि पारसियों को भी हुक्म अहले किताब का सा है। इमाम शाफ़िई और अब्दुर्रज्जाक ने निकाला कि पारसी अहले किताब थे, फिर उनके सरदार ने बदतमीज़ी की, अपनी बहन से सुहबत की और दूसरों को भी ये समझाया कि उसमें कोई कबाहत नहीं है आदम (अलैहिस्सलाम) अपनी लड़कियों का निकाह अपने लड़कों से कर देते थे। कुछ लोगों ने उसका कहना माना और जिन्होंने इंकार किया, उनको उसने मार डाला। आखिर उनकी किताब मिट गई और

मौता में मर्फूअ हदीष है कि पारसियों के साथ अहले किताब का सुलूक करो।

3158. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुऐब ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने कहा कि मुझसे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) ने और उन्हें अम्म बिन औफ़ (रज़ि.) ने खबर दी। वो बनी आमिर बिन लवी के हलीफ़ थे और जंगे बद्र में शरीक थे। उन्होंने उनको खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू उबैदह बिन जर्रह (रज़ि.) को बहरीन जिज्या वसूल करने के लिये भेजा था। आँहज़रत (ﷺ) ने बहरीन के लोगों से सुलह की थी और उन पर अलाअ बिन हज़रमी (रज़ि.) को हाकिम बनाया था। जब अबू उबैदह (रज़ि.) बहरीन का माल लेकर आए तो अंसार को मा'लूम हो गया कि अबू उबैदह (रज़ि.) आ गये हैं। चुनौचे फ़ज़्र की नमाज़ सब लोगों ने नबी करीम (ﷺ) के साथ पढ़ी। जब आँहज़रत (ﷺ) नमाज़ पढ़ा चुके तो लोग आँहज़रत (ﷺ) के सामने आये। आँहज़रत (ﷺ) उन्हें देखकर मुस्क्राए और फ़र्माया कि मेरा ख़याल है कि तुमने सुन लिया है कि अबू उबैदह कुछ लेकर आए हैं? अंसार (रज़ि.) ने अर्ज़ किया जी हाँ! या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें खुशख़बरी हो, और उस चीज़ के लिये तुम पुर उम्मीद रहो। जिससे तुम्हें खुशी होगी, लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बारे में मुहताजी और फ़क़्र से नहीं डरता। मुझे अगर डर है तो उस बात का कुछ दुनिया के दरवाज़े तुम पर इस तरह खोल दिये जाएंगे जैसे तुमसे पहले लोगों पर खोल दिये गये थे, तो ऐसा न हो कि तुम भी उनकी तरह एक-दूसरे से जलने लगे और ये जलना तुमको भी उसी तरह तबाह कर दे जैसा कि पहले लोगों को किया था।

सुब्हानल्लाह! क्या उम्दा नसीहत फ़र्माई, मुसलमानों को। जितनी दौलतें और रियासतें तबाह हुई वो इसी आपस के रश्क और हसद और ना इतिफ़ाकी की वजह से हुई। आज भी अरब मुमालिक को देखा जा सकता है कि यहूदी उनकी छातियों पर सवार हैं और वो आपस में लड़ लड़कर कमज़ोर हो रहे हैं।

3159. हमसे फ़ज़ल बिन यअकूब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र अर रक्की ने, कहा हमसे मुअतमिर बिन

۳۱۵۸- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي غُرُورَةُ بْنُ الرَّبِيعِ عَنِ الْمَسُورِ بْنِ مَخْرَمَةَ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ غُمَرُو بْنَ غَوْفٍ الْأَنْصَارِيَّ- وَهُوَ خَلِيفَةُ لِنَبِيِّ غَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ، وَكَانَ شَهِيدَ بَدْرًا - أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَقِيَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجُرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِحِجْزَتَيْهَا، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ هُوَ صَالِحُ أَهْلِ الْبَحْرَيْنِ وَأَمْرٌ عَلَيْهِمُ الْعَلَاءُ بِنِ الْحَضَرَمِيِّ، فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَسَمِعَتِ الْأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَوَافَتْ صَلَاةَ الصُّبْحِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ. فَلَمَّا صَلَّى بِهِمُ الْفَجْرَ الصَّرَفَ، فَعَرَضُوا لَهُ، فَتَسَمَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ رَأَوْهُمْ وَقَالَ: ((أَطْنَبَكُمْ قَدْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدْ جَاءَ بِشَيْءٍ)), قَالُوا: أَجَلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ ((فَأَبْشِرُوا وَأَمْلُوا مَا يَسُرُّكُمْ، فَرَأَى اللَّهُ لَا الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ، وَلَكِنْ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تَبْسُطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بَسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا، وَتُهْلِكَكُمُ كَمَا أَهْلَكَهُمْ)).

۳۱۵۹- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِيُّ قَالَ



सुलैमान ने, कहा हमसे सईद बिन अब्दुल्लाह बक्रफी ने बयान किया, उनसे बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज्नी और जियाद बिन जुबैर दोनों ने बयान किया और उनसे जुबैर बिन खय्या ने बयान किया कि कुफ़रार से जंग के लिये उमर (रज़ि.) ने फौजों को (फ़ारस के) बड़े बड़े शहरों की तरफ़ भेजा था। (जब लश्कर कादसिया पहुँचा और लड़ाई का नतीजा मुसलमानों के हक़ में निकला) तो हुमुज़ान (शोस्तर का हाकिम) इस्लाम ले आया। उमर (रज़ि.) ने इससे फ़र्माया, कि मैं तुमसे उन (मुमालिक फ़ारस वगैरह) पर फौज भेजने के सिलसिले में मशवरा चाहता हूँ (कि पहले उन तीन मुक़ामों फ़ारस, अस्फ़हान और अजर बैजान में कहीं से लड़ाई शुरू की जाए) उसने कहा जी हाँ! इस मुल्क की मिषाल और उसमें रहने वाले इस्लाम दुश्मन बाशिन्दों की मिषाल एक परिन्दे जैसी है जिसका सर है, दो बाजू हैं। अगर उसका एक बाजू तोड़ दिया जाए तो वो अपने दोनों पांव पर एक बाजू और एक सर के साथ खड़ा रह सकता है। अगर दूसरा बाजू भी तोड़ दिया जाए तो दोनों पांव और सर के साथ खड़ा रह सकता है। लेकिन अगर सर तोड़ दिया जाए तो दोनों पांव दोनों बाजू और सर सब बेकार रह जाता है। पस सर तो किसरा है, एक बाजू कैसर है और दूसरा फ़ारस! इसलिये आप मुसलमानों को हुक्म दे दें कि पहले वो किसरा पर हमला करें और बक्र बिन अब्दुल्लाह और जियाद बिन जुबैर दोनों ने बयान किया कि उनसे जुबैर बिन हथिय ने बयान किया कि हमें हज़रत उमर (रज़ि.) ने (जिहाद के लिये) बुलाया और नोअमान बिन मुकरिन (रज़ि.) को हमारा अमीर मुकर्रर किया। जब हम दुश्मन की सरज़मीन (नहावन्द) के करीब पहुँचे तो किसरा का एक अफ़सर चालीस हज़ार का लश्कर साथ लिये हुए हमारे मुकाबले के लिये बढ़ा। फिर एक तर्जुमान ने आकर कहा कि तुममें से कोई एक शख़्स (मामलात पर) बातचीत करे, मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने (मुसलमानों की नुमाइन्दगी की और) फ़र्माया कि जो तुम्हारे मुतालिबात हों, उन्हें बयान करो। उसने पूछा आख़िर तुम लोग हो कौन? मुगीरह (रज़ि.) ने कहा कि हम अरब के रहने वाले हैं, हम इतिहाई बदनख़्तों और मुसीबतों में मुब्तला थे। भूख की शिद्दत में हम चमड़े, और गुठलियाँ चूसा करते थे। ऊन और बाल हमारी पोशाक थी और पत्थरों और पेड़ों की हम इबादत किया करते थे। हमारी मुसीबतें इसी तरह कायम थीं कि आसमान और ज़मीन के

حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُثَيْدٍ أَنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْمُزَنِّيُّ وَزِيَادُ بْنُ جَبْرِ بْنِ خَيْثَةَ قَالَ: ((بَعَثَ عُمَرُ النَّاسَ فِي أَقْيَامِ الْأُمَصَارِ يَفْتَلُونَ الْمُشْرِكِينَ، فَاسْتَلَمَ الْهَرَمُزَانَ، فَقَالَ: إِنِّي مُسْتَشِيرُكَ فِي مَغَازِي هَذِهِ. قَالَ: نَعَمْ، مَثَلُهَا وَمَثَلُ مَنْ فِيهَا مِنَ النَّاسِ مِنْ عَدُوِّ الْمُسْلِمِينَ مَثَلُ طَائِرٍ لَهُ رَأْسٌ وَلَهُ جَنَاحَانِ وَلَهُ رِجْلَانِ، فَإِنْ كَسِرَ أَحَدَ الْجَنَاحَيْنِ نَهَضَتْ الرُّجْلَانِ بِجَنَاحِ وَالرَّأْسِ. فَإِنْ كَسِرَ الْجَنَاحَ الْآخَرَ نَهَضَتْ الرُّجْلَانِ وَالرَّأْسُ. وَإِنْ شَدِخَ الرَّأْسُ دَهَمَتِ الرُّجْلَانِ وَالْجَنَاحَانِ وَالرَّأْسُ. فَالرَّأْسُ كَسَرَى وَالْجَنَاحُ قِصَرٌ وَالْجَنَاحُ الْآخَرُ قَارِسٌ. فَمَرِ الْمُسْلِمِينَ فَلْيَنْفِرُوا إِلَى كَسَرَى. وَقَالَ بَكْرُ وَزِيَادُ جَمِيعًا عَنْ جَبْرِ بْنِ خَيْثَةَ: قَالَ فَتَدَبَّرْنَا عُمَرُ. وَاسْتَفْعَلَ عَلَيْنَا النُّعْمَانُ بْنُ مَقْرُونٍ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِأَرْضِ الْعَدُوِّ، وَخَرَجَ عَلَيْنَا عَامِلٌ كَسَرَى فِي أَرْبَعِينَ أَلْفًا، فَقَامَ تَرْحُمَانُ فَقَالَ: لِيَكْلَمْنِي رَجُلٌ مِنْكُمْ. فَقَالَ الْمُغِيرَةُ: سَلْ عَمَّا شِئْتَ. قَالَ: مَا أَنْتُمْ؟ قَالَ: نَحْنُ أَنْاسٌ مِنَ الْعَرَبِ كُنَّا فِي شِقَاءٍ شَدِيدٍ وَبَلَاءٍ شَدِيدٍ. نَمَصُّ الْجِلْدَ وَالنَّوَى مِنَ الْجُوعِ. وَنَلْبَسُ الْوَبَرَ وَالشُّغْرَ. وَنَعْبُدُ الشَّجَرَ وَالْحَجَرَ. فَيَبْنِي نَحْنُ كَذَلِكَ إِذْ

रब ने, जिसका जिक्र अपनी तमाम अजमत व जलाल के साथ बुलन्द है। हमारी तरफ़ हमारी ही तरह (के इंसानी आदात व ख़साइस रखने वाला) एक नबी भेजा। हम उसके बाप और माँ को जानते हैं। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि हम तुमसे उस वक़्त तक जंग करते रहें। जब तक तुम सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत न करने लगो। या फिर इस्लाम न कुबूल करने की मूरत में जिज्या देना कुबूल कर लो और हमारे नबी करीम (ﷺ) ने हमें अपने रब का ये पैग़ाम भी पहुँचाया है कि (इस्लाम के लिये लड़ते हुए) जिहाद में हमारा जो आदमी भी क़त्ल किया जाएगा वो ऐसी ज़न्नत में जाएगा, जो उसने कभी नहीं देखी और जो लोग हममें से ज़िन्दा बाक़ी रह जाएँगे वो (फ़तह हासिल करके) तुम पर हाकिम बन सकेंगे। (मुगीरह रज़ि. ने ये बात चीत तमाम करके नोअमान रज़ि. से कहा लड़ाई शुरू करो)। (दीगर मक़ाम : 7530)

بَعَثَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِينَ -  
تَعَالَى ذِكْرُهُ وَجَلَّتْ عَظَمَتُهُ - إِنَّا نَبِئًا  
مِنْ أَنْفُسَا نَعْرِفُ أَبَاهُ وَأُمَّهُ فَأَمَرْنَا نَبِيًّا  
رَسُولَ رَبِّنَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ  
نُقَاتِلَكُمْ حَتَّى تَعْبُدُوا اللَّهَ وَخُدَّةَ. أَوْ  
تُؤَدُّوا الْحَرْبَ. وَأَخْبَرْنَا نَبِيًّا صَلَّى اللَّهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رَسُولِ رَبِّنَا أَنَّهُ مَنْ قُتِلَ  
مَنْ صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ فِي نَعِيمٍ لَمْ يَرِ مِثْلَهَا  
قَطُّ. وَمَنْ بَقِيَ مِنْ مَلَكَ رِقَابِكُمْ)).

[صحه في : ٧٥٣٠]

3160. नोअमान (रज़ि.) ने कहा तुमको अल्लाह पाक ऐसी कई लड़ाइयों में आँहज़रत (ﷺ) के साथ शरीक रख चुका है। और उसने (लड़ाई में देर करने पर) तुमको न शर्मिन्दा किया न ज़लील किया और मैं तो आँहज़रत (ﷺ) के साथ लड़ाई में मौजूद था। आपका क़ायदा था अगर सुबह सवेरे लड़ाई शुरू न करते और दिन चढ़ जाता तो उस वक़्त तक ठहरे रहते कि सूरज ढल जाए, हवाएँ चलने लगें, नमाज़ों का वक़्त आ पहुँचे।

٣١٦٠- فَقَالَ النُّعْمَانُ : رَبَّنَا أَشْهَدُكَ  
اللَّهُ بِمِثْلَهَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنْتَمِكْ وَلَمْ  
يُخْرِكْ وَلَكِنِّي شَهِدْتُ الْقِتَالَ مَعَ رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ. كَانَ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ فِي أَوَّلِ النَّهَارِ  
انْتَظَرَ حَتَّى تَهْبُ الْأَرْوَاحُ. وَتُخْضَرُ  
الصَّلَوَاتُ))

**तशरीह :** हुआ ये कि लश्करे इस्लाम हज़रत उमर (रज़ि.) की खिलाफ़त में ईरान की तरफ़ चला। जब कादसिया में पहुँचा तो यज़्दगर बादशाह ईरान ने एक बड़ी फौज उसके मुकाबले के लिये खाना की। 14 हिजरी में ये जंग वाक़ेअ हुई, जिसमें मुसलमानों को काफ़ी नुक़सान पहुँचा, तलीहा असदी और अमर बिन मअद यक़्रिब और ज़रार बिन ख़त्ताब जैसे इस्लामी बहादुर शहीद हो गये। बाद में अल्लाह पाक ने काफ़िरों पर एक तेज़ आँधी भेजी। उनके डेरे ख़ैमे सब उखड़ गये, इधर से मुसलमानों ने हमला किया, वो भागे, उनका नामी गिरामी पहलवान रस्तम शानी मारा गया और मुसलमानी फौज़ पीछा करती हुई मरायन पहुँची, वहाँ का रईस हुर्मज़ान महसूर हो गया, आख़िर उसने अमान चाही और खुशी से मुसलमान हो गया।

अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) जो फौज के सरदार थे, उन्होंने उनको हज़रत उमर (रज़ि.) के पास भेज दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़र्माई, इसे अक्लमन्द और साहिबे तदबीर पाकर उसको मुशारे ख़ास बनाया, चुनाँचे हुर्मज़ान ने किसरा के बारे में सहीह मश्वरा दिया। हर चन्द वो रोम का बादशाह था मगर उस ज़माने में किसरा का मर्तबा सब बादशाहों से ज़्यादा था, उसका तबाह होना ईरान और रोम दोनों के ज़वाल का सबब बना, किसरा की फौज का सरदार जुल्

जनाहैन नामी सरदार था, जो खच्चर से गिरा और उसका पेट फट गया। सख्त जंग के बाद काफ़िरी को हज़ीमत (शिकस्त) हुई, मज़ीद तफ़्सील आगे आणी।

## बाब 2 : अगर बस्ती के हाकिम से सुलह हो जाए तो बस्ती वालों से भी सुलह समझी जाएगी

3161. हमसे सहल बिन बक्रर ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अमर बिन यह्या ने, उनसे अब्बास साएदी ने और उनसे अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ हम ग़ज़व-ए-तबूक में शरीक थे। ईला के हाकिम (योहन्ना बिन रोवबा) ने आँहज़रत (ﷺ) को एक सफ़ेद खच्चर भेजा और आप (ﷺ) ने उसे एक चादर बतौर खिलअत के और एक तहरीर के ज़रिये उसके मुल्क पर उसे ही हाकिम बाक़ी रखा। (राजेअ: 1481)

ये रिवायत इब्ने इस्हाक़ में यूँ है कि जब आप (ﷺ) तबूक को जा रहे थे, तो योहन्ना बिन रोवबा ईला का हाकिम आपकी खिदमत में आया। उसने जिज्या देना कुबूल कर लिया, और आपने उससे सुलह करके सनदे अमान लिखकर दे दी, इससे बाब का तर्जुमा यूँ निकला कि आपने योहन्ना से सुलह की तो सारे ईला वाले अमन और सुलह में आ गए।

## बाब 3 : आँहज़रत (ﷺ) ने जिन काफ़िरी को अमान दी (अपने ज़िम्मे में लिया) उनके अमान को कायम रखने की वसियत करना

ज़िम्मे कहते हैं अहद और इकरार को और आल का लफ़्ज़ जो कुर्आन में आया है उसके मा'नी रिस्तेदारी के हैं।

3162. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू जम्रह ने बयान किया, कहा कि मैंने जुवेरिया बिन कुदामा तमीमी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) से सुना था, (जब वो ज़ख़मी हुए) आपसे हमने अर्ज़ किया था कि हमें कोई वसियत कीजिए! तो आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला के अहद की (जो तुमने ज़िम्मियों से किया है) वसियत करता हूँ (कि उसकी हिफ़ाज़त में कोताही न करना) क्योंकि वो तुम्हारे नबी का ज़िम्मा है और तुम्हारे घरवालों की रोज़ी है (कि जिज्या के रुपया से तुम्हारे बाल-बच्चों की गुज़रान होती है)। (राजेअ: 1392)

## ۲- بَابُ إِذَا وَاذَعَ الْإِمَامُ مَلَكَ

الْقَرْيَةِ، هَلْ يَكُونُ ذَلِكَ لِبَقِيَّتِهِمْ؟

۳۱۶۱- حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ قَالَ

حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ غَمْرٍو بْنِ يَحْيَى عَنْ

عُثْبَانَ السَّاعِدِيِّ عَنْ أَبِي خُثَيْبٍ السَّاعِدِيِّ

قَالَ: ((عَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تَبُوكَ، وَأَهْدَى

مَلِكٌ أَيْلَةَ لِلْنَّبِيِّ ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ، وَكَسَاهُ

بُرْذًا، وَكُتِبَ لَهُ بِخُرُوجِهِمْ)).

[راجع: ۱۴۸۱]

## ۳- بَابُ الْوَصَاةِ بِأَهْلِ دِمَةٍ

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ،

وَالذَّمَّةُ الْغَنَدُ، وَالْإِلُّ الْقَرَابَةُ

۳۱۶۲- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو جَمْرَةَ قَالَ:

سَمِعْتُ جُوَيْرِيَةَ بْنَ قُدَامَةَ التَّمِيمِيَّ قَالَ:

((سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُ : قُلْنَا أَوْصِنَا يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَ:

أَوْصِيَكُمْ بِدِمَةِ اللَّهِ، فَإِنَّهُ دِمَةٌ نَبِيكُمْ،

وَرِزْقُ عِبَالِكُمْ)).

[راجع: ۱۳۹۲]



इस्लाम का मक़सद महज़ काफ़िरी को क़त्ल कर डालना और उनके अम्वाल व जायदाद को हासिल कर लेना नहीं है बल्कि जिहाद का मतलब इस्तिलाए इस्लाम है जो दीने हक़ है और दरअसल हकीकतन दीन व दुनिया का ए'तिदाल व तवाजुन इस्लाम के निज़ाम में मुज़्मर (पोशीदा) है। इसको तमाम आलम में आम करना मक़सूद है। जैसा कि इर्शाद है, अल्लज़ीन आमनू युक्रातिलून फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ीन कफरु युक्रातिलून फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़क्रातिलू औलियाअश्शैतानि इन्न कैदश्शैतानि कान ज़ईफ़ा

इसी मा'नी में दूसरी जगह इर्शाद है वक्तुलुहुम हत्ता ला तकून फ़िलतव्वं यकूनहीनु लिल्लाहि फ़इनिन्तहौ फ़ला उदवान इल्ला अलज़ज़ालिमीन (अल बक़र: 193) या'नी और उनसे जिहाद करो, यहाँ तक कि फ़िल्ना बाक़ी न रहे (और दीन अल्लाह ही का हो जाए) पस अगर वो बाज़ आ जाएँ, तो फिर ज़्यादती न करो मगर ज़ालिमों पर)

अगर इस्लाम का मक़सद महज़ किताले कुफ़्रफ़ार होता तो फिर औरतों, बच्चों, बूढ़ों, मा'ज़ूरों, और गोशागीर फ़क़ीरों को किताल के हुक्म से क्यूँ अलग किया जाता? क्योंकि इल्लते कुफ़्र तो सब में मुश्तरक है। हालाँकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान हज़रत जाबिर (रज़ि.) से इसी तरह मरवी है कि ला तक्रतुलु जुख़ियतन व ला असीफ़न व ला शैख़न फ़ानियन व ला तिफ़लन सगीरन व ला इम्रातन या'नी छोटे बच्चों, बेगार में पकड़े हुए मज़दूरों, कमज़ोर और बूढ़ों, नाबालिग़ लड़कों और औरतों को क़त्ल न करो। (अस्सियास्तुशशरइय्यतु पेज 51, मुअता मअहू मस्वा जिल्द घानी पेज 132)

इसी तरह अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अमीरे लश्कर हज़रत उसामा (रज़ि.) से फ़र्माया था कि देखो ख़यानत न करना, फरेब न करना और दुश्मन का हाथ पांव मत काटना, छोटे बच्चों, बूढ़ों और औरतों को क़त्ल न करना। और उन लोगों को कुछ न कहना जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी इबादतगाहों, गिरजाघरों में वक़फ़ कर दी हो। (सिद्दीक़े अकबर मोअल्लिफ़ा मौलाना सईद अहमद अकबर आबादी बहवाला तबरी पेज नं. 329)

शैख़ुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया (रह.) इस हदीष को नक़ल करने के बाद लिखते हैं कि अगर कुफ़्र का इक्तिदार फ़िल्ने की वजह बन जाए तो फ़िल्ना को ख़त्म करने के लिये किताल ज़रूरी है या नहीं? फ़र्माते हैं, फ़मल्लम यमन इल्लमुस्लिमीन मिन इक्रामतिदीनिल्इस्लामि लम यकून मुजिर्तुन कुफ़रुहु इल्ला अला नफ़िसही (अस्सियास्तुशशरइय्या इब्ने तैमिया पेज 59)

जिज्या भी इस्लाम के इक्तिदार व बालादस्ती को तस्लीम करने की गर्ज़ से है, वरना महज़ तहज़ील ख़िराज व जिज्या इस्लाम का हरिज मक़सद न था। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने ख़ुरासान के आमिल ज़र्राह बिन अब्दुल्लाह को इसलिये मुअज़ल कर दिया कि उन्होंने जिज्या को कम देखकर नौ मुस्लिमों से कहा कि तुम लोग इसलिये इस्लाम ले आए हो कि जिज्या से बच जाओ। ये बात हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ तक पहुँची तो आमिल को मअज़ूल (निलम्बित) करते हुए एक सुनहरा मक़ूला तहरीर फ़र्माया कि, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) दुनिया में दा'वते-हक़ के लिये भेजे गये थे। आप ख़िराज व जिज्या के मुहस्सिल बनाकर नहीं भेजे गये थे। (अल बिदाया वन् निहाया जिल्द तासेअ पेज नं. 188)

बहरहाल इस्लाम का मक़सद हुसूले-इक्तिदार व इस्तिलाअ सिर्फ़ इसलिये है ताकि दीन व दुनिया में ए'तिदाल व तवाजुन और अमन व अमान कायम रहे और निज़ामे इस्लाम के ज़रिये अक्वामे आलम को सुकूने क़ल्ब और अमन व इस्तिक्लाल के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने के मौक़े हासिल हों।

**बाब 4 : आँहज़रत (ﷺ) का बहरीन से (मुजाहिदीन को कुछ मआश) देना और बहरीन की आमदनी और जिज्या में से किसी को कुछ देने का वा'दा करना उसका बयान और उसका कि जो माल काफ़िरी से बिन लड़े हाथ आए या जिज्या वो किन लोगों में तक्सीम किया जाए**

3163. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर

٤- بَابُ مَا أَقْطَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ  
الْبَحْرَيْنِ، وَمَا وَعَدَ مِنْ مَالِ لُبَخْرَيْنِ  
وَالْجَزْيَةِ وَلَمَنْ يُقَسِّمُ الْقِيَاءُ  
وَالْجَزْيَةَ؟

٣١٦٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ

ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को बुलाया, ताकि बहरीन में उनके लिये कुछ ज़मीन लिख दें। लेकिन उन्होंने अज़ा किया कि नहीं! अल्लाह की क़सम! (हमें उसी वक़्त वहाँ ज़मीन इनायत कीजिए) जब इतनी ज़मीन हमारे भाई कुरैश (मुहाजिरीन) के लिये भी आप लिखें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तक अल्लाह को मंज़ूर है ये मआश उनको भी (या'नी कुरैश वालों को) मिलती रहेगी। लेकिन अंसार यही इस्मरार करते रहे कि कुरैश वालों के लिये भी सनदें लिख दीजिए। जब आपने अंसार से फ़र्माया, कि मेरे बाद तुम ये देखोगे कि दूसरों को तुम पर तरजीह दी जाएगी, लेकिन तुम सज़ा से काम लेना, यहाँ तक कि तुम आख़िर में मुझसे आकर मिलो। (जंग और फ़साद न करना)। (राजेअ: 2376)

حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْأَنْصَارَ لِيَكْتُبَ لَهُمْ بِالْبَحْرَيْنِ، فَقَالُوا لَا وَاللَّهِ حَتَّى تَكْتُبَ لِإِخْوَانِنَا مِنْ قُرَيْشٍ بِمِثْلِهَا، فَقَالَ: ((ذَاكَ لَهُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ يَقُولُونَ لَهُ. قَالَ: فَإِنَّكُمْ مَسْرُورُونَ بَعْدِي أَوْرَةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي)).

[راجع: ٢٣٧٦]

3164. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे खवहा बिन क़ासिम ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अगर हमारे पास बहरीन से रुपया आया, तो मैं तुम्हें इतना, इतना और इतना (तीन लप) दूँगा। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई और उसके बाद बहरीन का रुपया आया तो अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अगर किसी से कोई देने का वा'दा किया हो तो वो हमारे पास आए। चुनाँचे मैं हाज़िर हुआ और अज़ा किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अगर बहरीन का रुपया हमारे यहाँ आया तो मैं तुम्हें इतना, इतना और इतना दूँगा। इस पर उन्होंने फ़र्माया कि अच्छा एक लप भरो, मैंने एक लप भरी, तो उन्होंने फ़र्माया, कि इसे शुमार करो, मैंने शुमार किया तो पाँच सौ था, फिर उन्होंने मुझे डेढ़ हज़ार इनायत फ़र्माया।

(राजेअ: 2296)

٣١٦٤ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبرَاهِيمَ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُثَنَّبِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ لِي: ((لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَدْ أَغْطَيْتَكَ مَكْدًا وَهَكَذَا وَهَكَذَا)). فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَجَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَنْ كَانَتْ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عِدَّةٌ فَلْيَأْتِنِي، فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ كَانَ قَالَ لِي: لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَأَغْطَيْتَكَ مَكْدًا وَهَكَذَا وَهَكَذَا. فَقَالَ لِي: اخْذْهُ. فَخَرْتُ حَتَّىةً. فَقَالَ لِي: غَدَا. فَعَدَدْتُهَا، فَإِذَا هِيَ خَمْسُمِائَةٍ. فَأَغْطَانِي أَلْفًا وَخَمْسُمِائَةٍ.

[راجع: ٢٢٩٦]

3165. और इब्राहीम बिन तहमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल अजीज बिन सुहैब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ बहरीन से खिराज का रुपया आया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे मस्जिद में फैला दो, बहरीन का वो माल उन तमाम अम्वाल में सबसे ज़्यादा था जो अब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) के यहाँ आ चुके थे। इतने में अब्बास (रज़ि.) तशरीफ लाए और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मुझे भी इनायत कीजिए (मैं ज़ेरे-बार/कर्जदार हूँ) क्योंकि मैंने (बद्र के मौक़े पर) अपना भी फ़िदया अदा किया था और अक़ील (रज़ि.) का भी! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा ले लीजिए। धुनाँचे उन्होंने अपने कपड़े में रुपया भर लिया, (लेकिन उठान सका) तो उसमें से कम करने लगे। लेकिन कम करने के बाद भी उठान सका तो अज़्र किया कि आँहज़र (ﷺ) किसी को हुक्म दें कि उठाने में मेरी मदद करे, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि फिर आप खुद ही उठवा दें। फ़र्माया कि ये भी नहीं हो सकता। फिर अब्बास (रज़ि.) ने उसमें से कुछ कम किया, लेकिन उस पर भी न उठा सके तो कहा कि किसी को हुक्म दीजिए कि वो उठा दे, फ़र्माया कि नहीं ऐसा नहीं हो सकता, उन्होंने कहा, फिर आप ही उठा दें, हज़ुरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि ये भी नहीं हो सकता। आख़िर उसमें से उन्हें फिर कम करना पड़ा और तब कहीं जाकर उसे अपने काँधे पर उठा सके और लेकर जाने लगे। आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त तक उन्हें बराबर देखते रहे, जब तक वो हमारी नज़रों से छुप न गये। उनके हिरम पर आप (ﷺ) ने तअजुब किया, और आप उस वक़्त तक वहाँ से न उठे जब तक वहाँ एक दिरहम भी बाक़ी रहा। (राजेज़: 421)

٣١٦٥- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ ((أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَقَالَ: اثْرَوْهُ فِي الْمَسْجِدِ، فَكَانَ أَكْثَرَ مَالٍ أَتَى بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِذْ جَاءَهُ الْعُمَاسُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغْطِينِي، إِنِّي لَأَدَيْتُ نَفْسِي وَلَأَدَيْتُ غَنِيًّا. فَقَالَ خُذْ. فَحَتَّى فِي ثَوْبِهِ، ثُمَّ دَهَبَ يَقُولُ فَلَمْ يَسْتَطِعْ فَقَالَ: مَرُّ بَعْضُهُمْ يَرْفَعُهُ عَلَيَّ، قَالَ: لَا. قَالَ: فَارْفَعُهُ أَنتَ عَلَيَّ، قَالَ: لَا. فَتَنَزَّ مِنْهُ ثُمَّ دَهَبَ يَقُولُ فَلَمْ يَرْفَعُهُ فَقَالَ: فَمَرَّةً بَعْضُهُمْ يَرْفَعُهُ عَلَيَّ، قَالَ: لَا. فَارْفَعُهُ أَنتَ عَلَيَّ، قَالَ: لَا. فَتَنَزَّ ثُمَّ اخْتَمَلَهُ عَلَيَّ كَاهِلِي ثُمَّ انْطَلَقَ، فَمَا زَالَ يُبْعَثُ بِصَرَّةٍ حَتَّى خَفِيَ عَلَيْنَا، عَجَبًا مِنْ جَرْمِهِ، فَمَا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَثُمَّ مِنْهَا دِرْهَمٌ)).

[راجع: ٤٢١]

### बाब 5 : किसी ज़िम्मी काफ़िर को नाहक मार डालना कैसा गुनाह है?

3166. हमसे क़ैस बिन हफ़्ज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हसन बिन अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुजाहिद ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी

### ٥- بَابُ إِثْمٍ مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا يَغِيرُ جُرْمٌ

٣١٦٦- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ خَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَمْرِو قَالَ حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने किसी ज़िम्मी को (नाहक) क़त्ल किया वो जन्नत की खुशबू भी न पा सकेगा। हालाँकि जन्नत की खुशबू चालीस साल की राह से सूँधी जा सकती है। (दीगर मक़ाम : 6914)

## बाब 6 : यहूदियों को अरब के मुल्क से निकालकर बाहर करना

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने (ख़ैबर के यहूदियों से) फ़र्माया कि मैं तुम्हें उस वक़्त तक यहाँ रहने दूँगा जब तक अल्लाह तुमको यहाँ रखे।

3167. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद मन्नबरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (अबू सईद) ने कि अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया, हम अभी मस्जिदे नबवी में मौजूद थे कि नबी करीम तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि यहूदियों की तरफ़ चलो। चुनाँचे हम खाना हुए और जब बैतुल मिदरास (यहूदियों का मदरसा) पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि इस्लाम लाओ तो सलामती के साथ रहोगे और समझ लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। और मेरा इरादा है कि तुम्हें इस मुल्क से निकाल दूँ, फिर तुममें से अगर किसी की जायदाद की क़ीमत आए तो उसे बेच डाले। अगर तुम इस पर तैयार नहीं हो, तो तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल ही की है। (दीगर मक़ाम : 6944, 7348)

रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी हयाते तथ्यिबा ही में यहूदियों को मदीना से निकालने की निय्यत कर ली थी, मगर आपकी वफ़ात हो गई। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में उनकी मुसलसल ग़द्दारियों और साज़िशों की वजह से उनको वहाँ से निकाल दिया।

3168. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अह्वल ने, उन्होंने सईद बिन जुबैर से सुना और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आपने जुमेरात के दिन का ज़िक्र करते हुए कहा, तुम्हें मा'लूम है कि जुमेरात का दिन, हाय! ये कौनसा दिन है? उसके बाद वो इतना रोये कि उनके आंसुओं से कंकरियाँ तर हो गईं। सईद ने कहा कि

عَمَرُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَإِنْ رِيحَهَا تَوَحَّدَ مِنْ مَسِيرَةٍ أَرْبَعِينَ عَامًا)). طرفه في: ٦٩١٤.

## ٦- بَابُ إِخْرَاجِ الْيَهُودِ

مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ

وَلَا نَعْمَرُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَقْرَبُكُمْ مَا أَقْرَبُكُمْ اللَّهُ)).

٣١٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودِ))، فَخَرَجْنَا حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمَدْرَاسِ فَقَالَ: ((اسْلُمُوا تَسْلُمُوا، وَاعْلُمُوا أَنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ، إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَجْلِبَكُمْ مِنْ هَذِهِ الْأَرْضِ، لَمَنْ يَجِدْ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيُعْطِهِ، وَإِلَّا فَاغْلُمُوا أَنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ)).

طرفاه في: ٦٩٤٤، ٧٣٤٨.

٣١٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي مُسْلِمٍ الْأَخْوَلِ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: يَوْمَ الْخُمَيْسِ وَمَا يَوْمَ الْخُمَيْسِ. ثُمَّ بَكَى حَتَّى بَلَ



मैंने अर्ज किया, या अबू अब्बास! जुमेरात के दिन से क्या मतलब है? उन्होंने कहा कि इसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) की तकलीफ (मर्जुल वफ़ात) में शिहत पैदा हुई थी और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मुझे (लिखने का) कागज़ दे दो ताकि मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी किताब लिख जाऊँ, जिसके बाद तुम कभी गुमराह न हो। इस पर लोगों का इख़्तिलाफ़ हो गया फिर आँहज़रत (ﷺ) ने खुद ही फ़र्माया कि नबी की मौजूदगी में झगड़ना ग़ैर मुनासिब है, दूसरे लोग कहने लगे, भला किया आँहज़रत (ﷺ) बेकार बातें फ़र्माएंगे अच्छा, फिर पूछ लो, ये सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मुझे मेरी हालत पर छोड़ दो, क्योंकि इस वक़्त मैं जिस आलम में हूँ, वो इससे बेहतर है जिसकी तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने तीन बातों का हुक्म दिया, कि मुश्रिकों को जज़ीर-ए-अरब से निकाल देना और वुफूद के साथ उसी तरह खातिर तवाजोह का मामला करना, जिस तरह मैं किया करता था। तीसरी बात कुछ भली सी थी, या तो सईद ने उसको बयान न किया, या मैं भूल गया। सुफ़यान ने कहा ये जुम्ला (तीसरी बात कुछ भली सी थी) सुलैमान अहवल का कलाम है। और ये थी कि उसामा का लश्कर तैयार कर देना, या नमाज़ की हिफ़ाज़त करना, या लौण्डी गुलामों से अच्छा सुलूक करना। (राजेअ: 114)

دَمَعَةُ الْخَصِي. قُلْتُ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ مَا يَوْمَ الْخَمِيسِ؟ قَالَ اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَجَعُهُ فَقَالَ: ((اتَّوْنِي بِكَيْفِ أَكْتُبَ لَكُمْ كِتَابًا لَا تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا)). فَتَنَازَعُوا. وَلَا يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيِّ تَنَازُعٍ. فَقَالُوا: مَا لَهُ؟ أَمْحَرَّ؟ اسْتَفْهَمُوهُ. فَقَالَ: ذَرُونِي، فَإِلَيْي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونِي إِلَيْهِ. فَأَمَرَهُمْ بِثَلَاثٍ قَالَ أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ حَزْرَةِ الْعَرَبِ وَأَجِزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أَجِزُهُمْ، وَالثَّلَاثَةُ خَيْرٌ إِمَّا أَنْ سَكَتَ عَنْهَا، وَإِمَّا أَنْ قَالَهَا فَسَيِّئَتْهَا)) قَالَ سَفِيَّانُ: هَذَا مِنْ قَوْلِ سُلَيْمَانَ. [راجع: ١١٤]

**तशरीह:** अहज़र अल्हम्जतु लिलइस्तिफ़हामिलइन्कारी लिअन्न मअन हज़र हिज़्युन व इन्नमा जाअ मन क़ाइलुहु इस्तिफ़हामन लिलइन्कारि अला मन क़ाल ला तवतुबू अय तत्कू अम्म रसूलिल्लाहि (ﷺ) व ला तज़अलूहु कअमिम्मन हज़र फ़ी कलमिही लिअन्नहु (ﷺ) ला यहज़ुरू कज़ा फ़िज़ीबी या'नी यहाँ हमज़ा इस्तिफ़हाम इन्कार के लिये है। जिसका मतलब ये कि जिन लोगों ने कहा था कि हुज़ूर (ﷺ) को अब लिखवाने की तकलीफ़ न दो, उनसे कहा गया कि हुज़ूर (ﷺ) को हिज़्यान नहीं हो गया है इसलिये आप (ﷺ) को हिज़्यान वाले पर क़यास करके तर्क न करो। आपसे हिज़्यान हो ये नामुम्किन है। इस सिलसिले की तफ़सीली बहस इसी पारा में गुज़र चुकी है।

किताब के लिखे जाने पर सहाबा का इख़्तिलाफ़ इस वजह से हुआ था कि कुछ सहाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को इस शिहत तकलीफ़ में मज़ीद तकलीफ़ न देनी चाहिये।

बाद में खुद आँहज़रत (ﷺ) ख़ामोश हो गये। जिसका मतलब ये कि अगर लिखवाना फ़र्ज़ होता तो आप किसी के कहने से ये फ़र्ज़ तर्क न करते, फ़क़त मस्लिहत के तहत एक बात ज़हन में आई थी, बाद में आपने खुद उसे ज़रूरी नहीं समझा। मन्कूल है कि आप ख़िलाफ़ते सिद्दीकी के बारे में क़तई फ़ैसला लिखकर जाना चाहते थे ताकि बाद में इख़्तिलाफ़ न हो। इसीलिये आप (ﷺ) ने खुद अपने मर्जुल मौत में हज़रत सिद्दीक अकबर (रज़ि.) को मिम्बर व मेहराब हवाले कर दिया था।

बाब 7 : अगर काफिर मुसलमानों से दगा करें तो  
उनको मुआफी दी जा सकती है या नहीं?

3169. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमसे  
लैस बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद मक्बरी ने  
बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब  
खैबर फ़तह हुआ तो (यहूदियों की तरफ से) नबी करीम (ﷺ) की  
ख़िदमत में बकरी का या ऐसे गोश्त का हृदिया पेश किया गया  
जिसमें ज़हर था। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जितने  
यहूदी यहाँ मौजूद हैं। उन्हें मेरे पास जमा करो, चुनौचे वो सब आ  
गये। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि देखो, मैं तुमसे एक  
बात पूछूंगा। क्या तुम लोग सहीह सहीह जवाब दोगे? सबने कहा  
जी हाँ, आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, तुम्हारे बाप कौन थे?  
उन्होंने कहा कि फ़र्ला! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि तुम झूठ  
बोलते हो, तुम्हारे बाप तो फ़र्ला थे। सबने कहा कि आप सच  
फ़र्माते हैं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं तुमसे एक और  
बात पूछू तो तुम सहीह वाक़िया बयान कर दोगे? सबने कहा, जी  
हाँ, ऐ अबुल क़ासिम! और अगर हम झूठ भी बोलें तो आप हमारे  
झूठ को इसी तरह पकड़ लेंगे जिस तरह आपने अभी हमारे बाप के  
बारे में हमारे झूठ को पकड़ लिया, हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने उसके बाद  
दरयाफ़्त फ़र्माया कि दो ज़ख़्र मे जाने वाले कौन लोग होंगे? उन्होंने  
कहा कि कुछ दिनों के लिये तो हम उसमें दाख़िल हो जाएँगे  
लेकिन फिर आप लोग हमारी जगह दाख़िल कर दिये जाएँगे। हुज़ूर  
अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम उसमें बर्बाद रहो, अल्लाह गवाह है कि  
हम तुम्हारी जगह उसमें कभी दाख़िल नहीं किये जाएँगे। फिर  
आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि अगर मैं तुमसे कोई बात पूछू तो क्या  
तुम मुझसे सहीह वाक़िया बता दोगे? इस बार भी उन्होंने यही कहा  
कि हाँ! ऐ अबुल क़ासिम! आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त तो क्या  
तुमने इस बकरी के गोश्त में ज़हर मिलाया है? उन्होंने कहा जी हाँ,  
आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुमने ऐसा क्यों किया?

۷- بَابُ إِذَا غَدَرَ الْمُشْرِكُونَ

بِالْمُسْلِمِينَ هَلْ يُعْفَى عَنْهُمْ؟

۳۱۶۹- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا لَبِثَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْفٌ فِيهَا سَمٌّ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اجْمَعُوا إِلَيَّ مَنْ كَانَ هَا هُنَا مِنْ يَهُودٍ))، فَجُمِعُوا لَهُ، فَقَالَ: ((إِلَيَّ سَائِلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ، فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْهُ؟)) فَقَالُوا نَعَمْ. قَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ أَبُوكُمْ؟)) قَالُوا: فَلَانٌ فَقَالَ: ((كَذَبْتُمْ، بَلْ أَبُوكُمْ فَلَانٌ)) قَالُوا: صَدَقْتَ. قَالَ: ((فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُ عَنْهُ فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ وَإِنْ كَذَبْنَا عَرَفْتَ كَذِبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي آيَاتِنَا فَقَالَ لَهُمْ مَنْ أَهْلُ النَّارِ؟)) قَالُوا: نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا، ثُمَّ تَحَلَّفُونَا لِيَهَا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اخْشَوْا فِيهَا، وَاللَّهِ لَا نَخْلُفُكُمْ فِيهَا أَبَدًا)). ثُمَّ قَالَ: ((هَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ. قَالَ: ((هَلْ جَمَعْتُمْ فِي هَلِوِ الْبَشَاءِ سَمًا؟)) قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: ((مَا حَمَلَكُمْ عَلَى

उन्होंने कहा कि हमारा मक़सद ये था कि आप झूठे हैं (नुबुव्वत में) तो हमें आराम मिल जाएगा और अगर आप वाक़ई नबी हैं तो ये ज़हर आपको कोई नुक़सान न पहुँचा सकेगा। (दीगर मक़ाम : 4249, 5777)

ذَلِكَ؟) قَالُوا أَرَدْنَا : إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا نَسْتَرِيحُ، وَإِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرْكُ)).  
[طرفاه ل: ٤٢٤٩، ٥٧٧٧].

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आप (ﷺ) ने उस यहूदी औरत ज़ैनब बिनते हारिष नामी को, जिसने ज़हर मिलाया था कुछ सज़ा न दी, बल्कि मुआफ़ कर दिया, मगर जब बिशर बिन बराअ सहाबी (रज़ि.) जिन्होंने उस गोश्त में से कुछ खा लिया था, मर गये तो आपने उनका क्रिसास लिया और उस औरत को क़त्ल करा दिया।

### बाब 8 : वादे तोड़ने वालों के हक़ में इमाम की बददुआ

3170. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे प्रभावित बिन यज़ीद ने बयान किया, हमसे आसिम अहव़ल ने, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से दुआए कुनूत के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि रुकूअ से पहले होनी चाहिये, मैंने अर्ज़ किया कि फ़र्लाँ सहाब (मुहम्मद बिन सीरीन) तो कहते हैं कि आपने कहा था कि रुकूअ के बाद होती है, अनस (रज़ि.) ने इस पर कहा कि उन्होंने ग़लत कहा है। फिर उन्होंने हम से ये हदीष बयान की कि नबी करीम (ﷺ) ने एक महीने तक रुकूअ के बाद दुआए कुनूत की थी और आपने उसमें क़बीला बन् सुलैम के क़बीलों के हक़ में बददुआ की थी। उन्होंने बयान किया कि औहज़रत (ﷺ) ने चालीस या सत्तर कुआन के आलिम सहाबा की जमाअत, रावी को शक था, मुश्रिकीन के पास भेजी थी। लेकिन ये बनी सुलैम के लोग (जिनका सरदार आमिर बिन तुफ़ैल था) उनके आड़े आए और उन्हें मार डाला। हालाँकि नबी करीम (ﷺ) से उनका मुआहिदा था। (लेकिन उन्होंने दगा दी) औहज़रत (ﷺ) को किसी मामले पर इतना रंजीदा और गमगीन नहीं देखा जितना उन सहाबा की शहादत पर आप रंजीदा थे। (राजेअ : 1001)

### ٨ - بَابُ دُعَاءِ الْإِمَامِ عَلَى مَنْ نَكَثَ عَهْدًا

٣١٧٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا قَالَ قَابُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا رَضِيٍّ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ الْقَنُوتِ قَالَ: قَبْلَ الرُّكُوعِ. فَقُلْتُ إِنْ فَلَانًا يُزَعَمُ أَنَّكَ قُلْتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ، فَقَالَ: كَذَبَ. ثُمَّ حَدَّثَنَا عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَلَّتْ شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ يَدْعُو عَلَى أَهْلِاءِ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ قَالَ: بَعَثَ أَرْبَعِينَ أَوْ سِتِينَ - يَشْكُ إِلَيْهِ - مِنَ الْقُرَاءِ إِلَى أَنَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، فَعَرَضَ لَهُمْ هَؤُلَاءِ فَقَتَلُوهُمْ، وَكَانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهْدٌ، لَمَّا رَأَيْتُهُ وَجَدَ عَلَى أَحَدٍ مَا وَجَدَ عَلَيْهِمْ)).

[راجع: ١٠٠١]

**तशरीह :** क्योंकि ये लोग क़ारी और आलिम थे। अगर ये ज़िन्दा रहते तो उनसे हज़ारों लोगों को फ़ायदा पहुँचता। इसीलिये एक सच्चे आलिम की मौत को जहान की मौत कहा गया है।

कुनूते नाज़िला रुकूअ से पहले और बाद के बारे में शैख़ुल हदीष मौलाना उस्ताज़ अब्दुल्लाह सहाब मुबारकपुरी फ़रमति

हैं :-

रवाहु इब्नुलमुन्ज़िर अन अनसिन बिलफ़िज़ अन्न बअज़ अस्हाबिहीन्नबिद्यि (ﷺ) कनतू फी

सलातिल्फज्रि क़बलरूकूइ व बअजुहुम बअदरूकुइ व हाज़ा कुल्लुहु यदुल्लु अला इखितलाफ़ि अमलिस्सहाबति फी महल्लि कुनूतिल्मक्तूबति फ़क़नत बअजुहुम क़बलरूकूइ व बअजुहुम बअदुहु व अम्मन्नबिय्यु (ﷺ) फलम यषुत अन्हुलकुनुतु फिल्मक्तूबति इल्ला इन्दन्नाज़िलतिलायक्नुतु फिन्नाज़िलति इल्ला अबदरूकूइ हाज़ा मा तहक्कुकुन ली वल्लाहु आलमु (मिआतुल्मफातीह जिल्द 2, पेज 224) या'नी हज़रत अनस (रज़ि.) की उसी रिवायत को इब्ने मुज़िर ने इस तरह रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ सहाब-ए-रसूल (ﷺ) फ़ज्र में कुनूत रूकूअ से पहले पढ़ते, कुछ रूकूअ के बाद पढ़ते और उन सबसे मा'लूम होता है कि फ़र्ज़ नमाज़ों में महल्ले कुनूत के बारे में सहाबा में इखितलाफ़ था और नबी करीम (ﷺ) से फ़र्ज़ नमाज़ों में सिवाय कुनूते नाज़िला के और कोई क़बाह़त प्राबित नहीं हुई, आपने सिर्फ़ कुनूते नाज़िला पढ़ी और वो रूकूअ के बाद पढ़ी है मेरी तहक़ीक़ यही है वल्लाहु आलम।

इमाम नववी इस्तिहबाबुल कुनूत में फ़र्माते हैं, व महल्लुल्कुनूति बअद रफ़र्सि फिस् रूकूइ फिरकअतिल्आखिरति या'नी कुनूत पढ़ने का महल आखिरी रकअत में रूकूअ से सर उठाने के बाद है। इस हदीस में हज़रत अनस (रज़ि.) के बयान के मुता'ल्लिक़ कुनूत का ता'ल्लुक़ उनकी अपनी मा'लूमात की हद तक है वल्लाहु आलम।

## बाब 9 : (मुसलमान) औरतें अगर किसी (गैर-मुस्लिम) को अमान और पनाह दें?

### ٩- بَابُ أَمَانِ النِّسَاءِ

#### وَجَوَارِهِنَ

3171. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें उमर बिन अब्दुल्लाह के गुलाम अबुन नज़्र ने, उन्हें उम्मे हानी बिनते अबी तालिब के गुलाम अबू मुरह ने ख़बर दी, उन्होंने उम्मे हानी बिनते अबी तालिब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करती थीं कि फ़तहे मक्का के मौक़े पर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई (मक्का में) मैंने देखा कि आप गुस्ल कर रहे थे और फ़ातिमा (रज़ि.) आपकी साहबज़ादी पदों किये हुए थीं। मैंने आपको सलाम किया, तो आपने दरयाफ़्त किया कि कौन साहिबा हैं? मैंने अर्ज़ किया कि मैं उम्मे हानी बिनते अबी तालिब हूँ, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आओ अच्छी आई, उम्मे हानी! फिर जब आप (ﷺ) गुस्ल से फ़ारिग़ हुए तो आप (ﷺ) ने खड़े होकर आठ रकअत चाश्त की नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) सिर्फ़ एक कपड़ा जिस्मे अह्र पर लपेटे हुए थे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरी माँ के बेटे हज़रत अली (रज़ि.) कहते हैं कि वो एक शाख़्स को जिसे मैं पनाह दे चुकी हूँ, क़त्ल किये बग़ैर नहीं रहेंगे। ये शाख़्स हबीरा का फ़लाँ लड़का (जअदह) है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्मे हानी! जिसे तुमने पनाह दे दी, उसे हमारी तरफ़ से भी पनाह है। उम्मे हानी (रज़ि.) ने बयान किया कि ये वक़््त चाश्त का था। (राजेअ : 280)

٣١٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى غَمَرَ بْنِ غَنْبِلَةَ أَنَّ أَبَا مَرْثَةَ مَوْلَى أُمِّ هَانِيَةَ ابْنَةِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أُمَّ هَانِيَةَ ابْنَةَ أَبِي طَالِبٍ تَقُولُ: «رَفَعْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَطَائِفَةُ ابْنَتِهِ تَسْرُوهُ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: (مَنْ هَذِهِ؟) فَقُلْتُ أَنَا أُمُّ هَانِيَةَ بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: (مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِيَةَ)، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ غُسْلِهِ قَامَ فَصَلَّى ثَمَانِ رَكَعَاتٍ مُتَعَجِّفًا فِي نَوْبٍ وَاحِدٍ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، زَعَمَ ابْنُ أُمِّي عَلِيُّ أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلًا قَدْ أَجْرْتُهُ، فَلَا ابْنَ هَبِيرَةَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: (قَدْ أَجْرْنَا مَنْ أَجَرْتَ يَا أُمُّ هَانِيَةَ)، قَالَتْ أُمُّ هَانِيَةَ: وَذَلِكَ ضَحَى. [راجع: ٢٨٠]

हबीरा उम्मे हानी के शौहर थे, जअदह उनके बेटे थे। ये समझ में नहीं आता कि हज़रत अली (रज़ि.) अपने भांजे को क्यों मारते,

कुछ ने कहा फ़लाँ इब्ने हबीरा से हारिष बिन हिशाम महरूमी मुराद है। गर्ज हदीष से ये निकला कि औरत का पनाह देना दुरुस्त है। चारों इमामों का यही क़ौल है। कुछ ने कहा इमाम को इख़्तियार है। चाहे उस अमान को मंजूर करे चाहे न करे।

### बाब 10 : मुसलमान सब बराबर हैं अगर एक अदना मुसलमान किसी काफ़िर को पनाह दे तो सब मुसलमानों को कुबूल करना चाहिये

3172. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके बाप (यज़ीद बिन शुरैक तैमी) ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ने हमारे सामने ख़ुत्बा दिया, जिसमें फ़र्माया कि किताबुल्लाह और उस वरक़ में जो कुछ है, उसके सिवा और कोई किताब (अहकाम शरीअत के) ऐसी हमारे पास नहीं जिसे हम पढ़ते हों, फिर आपने फ़र्माया कि उसमें ज़ख़्मों के क़िसास के अहकाम हैं और दियत में दिये जाने वाले की ड़म्र के अहकाम हैं और ये कि मदीना हरम है अयरि पहाड़ी से फ़लाँ (उहुद पहाड़ी) तक। इसलिये जिस शख़्स ने कोई नई बात (शरीअत के अंदर दाख़िल की) या किसी ऐसे शख़्स को पनाह दी तो उस पर अल्लाह, मलाइका और इंसान सबकी ला'नत है, न उसकी कोई फ़र्ज इबादत कुबूल होगी और न नफ़ल। और ये बयान है जो लौण्डी गुलाम अपने मालिक के सिवा किसी दूसरे को मालिक बनाए उस पर भी इस तरह (ला'नत) है। और मुसलमान मुसलमान सब बराबर हैं हर एक का ज़िम्मा यकसाँ है। पस जिस शख़्स ने किसी मुसलमान की पनाह में (जो किसी काफ़िर को दी गई हो) दाख़ल अंदाज़ी की तो उस पर भी इसी तरह ला'नत है। (राजेअ: 111)

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि हज़रत अली (रज़ि.) भी इसी मुरव्वजा कुआन मजीद को पढ़ते थे, सूरतों की कुछ तक्दीम व ताख़ीर और बात है। अब जो कोई ये समझे कि हज़रत अली (रज़ि.) या दूसरे अहले बैत के पास कोई और कुआन था जो कामिल था और मुरव्वजा कुआन मजीद नाक़िस है, उस पर भी अल्लाह और फ़रिश्तों की और सारे अंबिया किराम की तरफ़ से फटकार और ला'नत है।

बाब 11 : अगर काफ़िर लड़ाई के वक़्त घबराकर अच्छी तरह यूँ कह सकें हम मुसलमान हुए और यूँ कहने लगे हमने दीन बदल दिया, दीन बदल दिया तो क्या हुक्म है?

### ۱۰- بَابُ ذِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ

وَجَوَارُهُمْ وَاحِدَةً، يَسْنَى بِهَا أَذْنَاہُمْ  
۳۱۷۲- حَدَّثَنِي قَالَ مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا  
وَكَيْعٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ  
عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((حَطَبْنَا عَلَيَّ فَقَالَ: مَا  
عِنْدَنَا كِتَابٌ نَقْرُؤُهُ إِلَّا كِتَابُ اللَّهِ وَمَا لِي  
هَذِهِ الصَّحِيفَةُ، فَقَالَ: فِيهَا الْجَرَاحَاتُ،  
وَأَسْنَانُ الْإِبِلِ، وَالْمَدِينَةُ حَرَمٌ مَا يَنْ غَيْرِ  
إِلَى كَذَا، فَمَنْ أَخَذَتْ فِيهَا حَدَثًا أَوْ أَوَى  
فِيهَا مُحَدِّثًا فَقَلْبُهُ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ  
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا  
عَدْلٌ، وَمَنْ تَوَلَّى غَيْرَ مَوَالِيهِ فَقَلْبُهُ مِثْلُ  
ذَلِكَ. وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ، فَمَنْ  
أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَقَلْبُهُ مِثْلُ ذَلِكَ)).

[راجع: ۱۱۱]

### ۱۱- بَابُ إِذَا قَالُوا صَبَأْنَا وَلَمْ

يُحْسِنُوا أَسْلَمْنَا

وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ: ((لَجَعَلْ خَالِدٌ يَقْتُلُ،

أَبْدُلِلَّاهُ بَيْنَ دَمَرِ (رज़ि.) ने कहा ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.)

ने (बनी हिदबा की जंग में) काफ़िरों को मारना शुरू कर दिया, हालाँकि वो कहते जाते थे। हमने दीन बदल दिया, हमने दीन बदल दिया, और हज़रत (ﷺ) ने जब ये हाल सुना तो फ़र्माया, या अल्लाह! मैं तो ख़ालिद के काम से बेज़ार हूँ, और हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, कहा जब कि (मुसलमान) ने (किसी फ़ारसी आदमी से) कहा कि मतरस (मत डरो) तो गोया उसने उसे अमान दे दी, क्योंकि अल्लाह तआला तमाम ज़ुबानों को जानता है और हज़रत उमर (रज़ि.) ने (हुर्मुज़ान से) कहा (जब उसे मुसलमान गिरफ़्तार करके लाए) कि जो कुछ कहना हो कहो, डरो मत।

**तशरीह:** साबी के मा'नी अपने पुराने दीन से निकल जाना, मतलब ये है कि ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम में दाख़िल होने के लिये सिर्फ़ ये कहे कि मैंने अपने पुराने दीन को छोड़ दिया है, क्योंकि उसे इस्लाम के बारे में कुछ ज़्यादा मा'लूमात नहीं, इसलिये वो इतना नहीं कह सका कि मैं इस्लाम लाया, तो क्या उसे मुसलमान समझ लिया जाएगा। जबकि करीना भी मौजूद हो कि उसकी मुराद इस्लाम में दाख़िल होने से ही है, तो साबी हो गये। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनके इस लफ़्ज़ को दुखूले इस्लाम के बारे में नहीं समझा, इसलिये आपने उनको क़त्ल किया जैसा कि शारेहीने बुखारी लिखते हैं :-

फजअल ख़ालिदुन अय तफिक ख़ालिदुब्नुल्बलीद यक्तुलु मन कान यकूलु सबाना हैषु जन्न अन्न लफ़्जत सबाना इन्दल्ज़िज़ अनित्तलफ़्फ़ज़ि बिअस्लमना ला यक्फ़ी फिल्ख़बर अनिल्इस्लाम बल ला बुद् मिनत्तस्रीहि बिल्इस्लाम फ़क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इन्नी बरीउम्मिममा सनअ ख़ालिद व लम अकुन राज़ियन बिक्त्लिहिम कज़ा फिल्किर्मानि वल्ख़रल्ज़ारी अल्ख़ या'नी हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनके लफ़्ज़ सबाना को दुखूले इस्लाम के लिये काफ़ी न समझा बल्कि उनके ख़याल में अस्लमना कहना ज़रूरी था। इस पर और हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं ख़ालिद की इस हरकते क़त्ल से राज़ी नहीं हूँ।

मा'लूम हुआ कि कोई नावाक़िफ़ आदमी किसी इशारा किनाया से भी इस्लाम कुबूल कर ले, तो उसका इस्लाम सहीह तसब्बुर किया जाएगा। इस बारे में नफ़्से कुआनी मौजूद है। वला तक्कूलु लिमन अल्का इलैकुस्सलाम लस्त मूमिनन (अन् निसा : 94) या'नी जो तुमको इस्लामी नाते के तौर पर अस्सलामु अलैयकुम कहे, तुम उनको ये न कहो कि तू मोमिन नहीं है। इस्लाम ज़ाहिर ही का नाम है जो ज़ाहिर में इस्लाम का दम भरे और कलिमा तौहीद पढ़े उसे ज़ाहिरी हैयियत में मुसलमान ही कहेंगे। रहा बातिन का मामला वो अल्लाह के हवाले है।

**बाब 12 : मुश्रिकों से माल वग़ैरह पर सुलह करना, लड़ाई छोड़ देना, और जो कोई अहद पूरा न करे उसका गुनाह**

और (सूरह अन्फ़ाल में) अल्लाह का ये फ़र्माना कि, अगर काफ़िर सुलह की तरफ़ झुकें तो तू भी सुलह की तरफ़ झुक जा, अख़ीर आयत तक।

3173. हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्जल ने, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे बुशैर बिन यसार ने और उनसे सहल बिन अबी हज़्म ने बयान

١٢- بَابُ الْمَوَادِعَةِ وَالْمَصَالِحَةِ

مَعَ الْمُشْرِكِينَ بِالْمَالِ وَغَيْرِهِ،

وَأَنَّمْ مَنْ لَمْ يَفِ بِالْعَهْدِ

وَقَوْلِهِ : ﴿وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ

لَهَا﴾ [الأنفال : ٦١] الآية.

٣١٧٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بَشَرٌ

هُوَ ابْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ

किया कि अब्दुल्लाह बिन सहल और महीसा बिन मसऊद बिन जैद (रज़ि.) ख़ैबर गये। उन दिनों (ख़ैबर के यहूदियों से मुसलमानों की) सुलह थी। फिर दोनों हज़रात (ख़ैबर पहुँचकर अपने अपने कामों के लिये) जुदा हो गये। उसके बाद महीसा (रज़ि.) अब्दुल्लाह बिन सहल (रज़ि.) के पास आए, तो क्या देखते हैं कि वो खून में लौट रहे हैं। किसी ने उनको क़त्ल कर डाला, ख़ैर महीसा (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह (रज़ि.) को दफ़न कर दिया। फिर मदीना आए, उसके बाद अब्दुर्रहमान बिन सहल (अब्दुल्लाह रज़ि. के भाई) और मसऊद के दोनों साहबज़ादे महीसा और हुवैसा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, बातचीत अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने शुरू की, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जो तुम लोगों में झग़म में बड़े हों, वो बात करें। अब्दुर्रहमान सबसे कम झग़म थे, वो चुप हो गये। और मुहैसा और हुवैसा ने बात शुरू की। आपने दरयाफ़्त किया, क्या तुम लोग इस पर क़सम खा सकते हो, कि जिस शख़्स को तुम क़ातिल कह रहे हो, उस पर तुम्हारा हक़ प्राबित हो सके। उन लोगों ने अज़्र किया कि हम एक ऐसे मामले में किस तरह क़सम खा सकते हैं जिसको हमने खुद आँखों से न देखा हो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर क्या यहूद तुम्हारे दावे से अपनी बराअत अपनी तरफ़ से पचास क़समें खा करके कर दें? उन लोगों ने अज़्र किया कि कुफ़्रार की क़समों का हम किस तरह ए'तिबार कर सकते हैं। चुनौचे आँहज़रत (ﷺ) ने खुद अपने पास से उनकी दियत अदा कर दी। (राजेअ: 2702)

بَشِيرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَتْمَةَ قَالَ: انْطَلَقَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ بْنُ مَسْعُودٍ بِنِ زَيْدٍ إِلَى خَيْبَرٍ، وَهُوَ يَوْمَئِذٍ صُلْحٌ، فَتَفَرَّقَا، فَأَتَى مُحَيِّصَةُ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَهْلٍ وَهُوَ يَتَشَحَّطُ لِي ذِمِّهِ فَيَنَالُ، فَلَدَقَهُ، ثُمَّ قَدِمَ الْمَدِينَةَ فَاَنْطَلَقَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ وَخُوَيْصَةُ ابْنَا مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَحَبَّ عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَتَكَلَّمُ، فَقَالَ: ((كَبِيرٌ كَبِيرٌ)) - وَهُوَ أَخَذْتُ الْقَوْمَ - فَسَكَتَ، فَتَكَلَّمَا، فَقَالَ: ((أَتَخْلِفُونَ وَتَسْتَحْفِقُونَ قَاتِلَكُمْ)) - أَوْ صَاحِبَكُمْ - قَالُوا: وَكَيْفَ نَخْلِفُ وَكَيْفَ نَشْهَدُ وَلَمْ نَرِ؟ قَالَ: ((فَبِرْئُكُمْ يَهُودُ بِخَمْسِينَ)). فَقَالُوا: كَيْفَ نَأْخُذُ أَيْمَانَ قَوْمٍ كُفَّارٍ؟ فَعَقَّلَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عَيْنِهِ.

[راجع: ٢٧٠٢]

**तशरीह:**

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने पास से दियत अदा करके ख़ैबर के यहूदियों से सुलह कायम रखी, बाब का ये तर्जुमा जो कोई अहद को पूरा न करे उसका गुनाह हदीष से नहीं निकलता। शायद हज़रत इमाम बुखारी (रह.) को इस बाब में कोई हदीष लिखनी मंज़ूर थी मगर इतिफ़ाक़ न हुआ या इस मज़मून की हदीष उनको उनकी शर्त के मुताबिक़ न मिली। क़ातिल पर हक़ प्राबित होने से मक्तूल के आदमियों को दियत देनी होगी। वो क़ातिल अगर क़त्ल का इक़रार कर ले तो क़िसास भी लिया जा सकता है ये क़सामत की सूरत है। उसमें मुद्दई से पचास क़समें ली जाती हैं कि मेरा गुमान फ़लाँ शख़्स पर है कि उसी ने मारा है।

उससे आँहज़रत (ﷺ) की सुलह जोई, अमन पसन्द पॉलिसी, फ़राख़दिली भी प्राबित हुई, बावजूद ये कि मक्तूल एक मुसलमान था जो यहूद के माहौल में क़त्ल हुआ, मगर आँहज़रत (ﷺ) ने यहूदियों की इस हरकत को नज़रअंदाज़ कर दिया, ताकि अमन की फ़िज़ा कायम रहे और कोई तबील फ़साद न खड़ा हो जाए, आपने मुसलमान मक्तूल के वारिषों को खुद बैतुल माल से दियत अदा कर दी, ऐसे वाक़ियात से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो इस्लाम को तलवार के ज़ोर पर फैलाने का ग़लत प्रोपेगण्डा करते रहते हैं। मज़ाहिब की दुनिया में सिर्फ़ इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जो बनी नोअे इंसान को ज़्यादा से ज़्यादा अमन देने का हामी है।

### बाब 13 : अहद पूरा करने की फ़ज़ीलत

3174. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी, और उन्हें अबू सुफ़यान बिन हर्ब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक्ल (फ़र्माँवा-ए-रोम) ने उन्हें कुरैश के काफ़िले के साथ भेजा, (ये लोग शाम उस ज़माने में तिजारत की गर्ज़ से गये हुए थे) जब आँहज़रत (ﷺ) ने अबू सुफ़यान से (सुलह हुदैबिया में) कुरैश के काफ़िरों के मुक़द़मा में सुलह की थी। (राजेअ : 7)

या'नी सुलह हुदैबिया जो 6 हिजरी में हुई, ये हदीष मुफ़स्सल गुज़र चुकी है। उसमें ये बयान है कि हिरक्ल ने कहा कि पैग़म्बर दगा या'नी अहदशिकनी नहीं करते, उसी से इमाम बुख़ारी ने बाब का मतलब निकाला कि अहद का पूरा करना अंबिया की ख़सलत है जो बड़ी फ़ज़ीलत रखती है और अहद तोड़ना दगाबाज़ी करना हर शरीअत में मना है।

### बाब 14 : अगर किसी ज़िम्मी ने किसी पर जादू कर दिया तो क्या उसे मुआफ़ किया जा सकता है?

इब्ने व्हब ने बयान किया, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी कि इब्ने शिहाब (रह.) से किसी ने पूछा, क्या अगर किसी ज़िम्मी ने किसी पर जादू कर दिया तो उसे क़त्ल कर दिया जाए? उन्होंने बयान किया कि ये हदीष हम तक पहुँची है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू किया गया था। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी वजह से जादू करने वाले को क़त्ल नहीं करवाया था और आप पर जादू करने वाला अहले किताब में से था।

ज़ाहिरन इब्ने शिहाब की दलील पूरी नहीं होती क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला नहीं लेते थे। दूसरे उसके जादू से आपको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा था, सिर्फ़ ज़रा तख़य्युल पैदा हो गया था कि आप कोई काम न करते और ख़याल आता कि कर चुके हैं। अल्लाह ने उसकी भी ख़बर देकर ये आफ़त आपके ऊपर से दूर कर दी, आपने उस जादूगर को क़त्ल नहीं कराया, बल्कि मुआफ़ कर दिया। इसी से बाब का मज़मून प्राबित होता है।

3175. मुझसे मुहम्मद बिन मुघ़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि

۱۳- بَابُ فَضْلِ الْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ  
۳۱۷۴- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَفْيَانَ بْنِ خَرْبٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي رَكِيبٍ مِنْ قُرَيْشٍ كَانُوا تَجَارًا بِالشَّامِ فِي الْمُدَّةِ الَّتِي مَادَ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَبَا سَفْيَانَ فِي كُفَّارٍ قُرَيْشٍ)). [راجع: ۷]

۱۴- بَابُ هَلْ يُغْفَى عَنِ الذَّمِّ إِذَا سَحَرَّ؟

وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ: ((عَنْ ابْنِ شِهَابٍ سَمِعَ: أَخْلَى مِنْ سَحَرٍ مِنْ أَهْلِ الْعَهْدِ قَتْلًا؟ قَالَ: بَلَعْنَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَصِبْ لَهُ ذَلِكَ فَلَمْ يَقْتُلْ مِنْ صَنَعَةٍ، وَكَانَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ)).

۳۱۷۵- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ:



नबी करीम (ﷺ) पर जादू कर दिया गया था। तो कुछ दफा ऐसा होता कि आप समझते कि मैंने फ़लों का काम कर लिया है। हालाँकि आपने वो काम न किया होता। (दीगर मक़ाम : 2268, 5763, 5765, 5766, 6063, 6391)

### बाब 15 : दगाबाज़ी करना कैसा गुनाह है?

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि,

और अगर ये काफ़िर लोग आपको धोखा देना चाहें (ऐनबी ﷺ) तो अल्लाह आपके लिये काफ़ी है। आख़िर तक।

3176. मुझसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन अलाअ बिन जुबेर ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने बुस् बिन अब्दुल्लाह से सुना, उन्होंने अबू इदरीस से सुना, कहा कि मैंने और फ़ बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि मैं ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप उस वक़्त चमड़े के एक ख़ेमे में तशरीफ़ फ़र्मा थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि क़यामत की छः निशानियाँ शुमार कर लो, मेरी मौत, फिर बैतुल मन्दिस् की फ़तह, फिर एक वबा जो तुममें शिहत से फैलेगी जैसे बकरियों में त़ाऊन फैल जाती है। फिर माल की क़प्रत इस दर्जा में होगी कि एक शख्स सौ दीनार भी अगर किसी को देगा तो उस पर भी वो नाराज़ होगा। फिर फ़िल्ता इतना तबाहकुन आम होगा कि अरब का कोई घर बाक़ी न रहेगा जो उसकी लपेट में न आ गया होगा। फिर सुलह जो तुम्हारे और बनी अल् अस्फ़र (नसारा-ए-रोम) के बीच होगी, लेकिन वो दगा करेंगे और एक अज़ीम लश्कर के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे। उसमें अस्सी झण्डे होंगे और हर झण्डे के मातहत बारह हज़ार फ़ौज होगी (या'नी नौ लाख साठ हज़ार फ़ौज से वो तुम पर हमलावर होंगे)।

حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سَجَرَ حَتَّى كَانَ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ صَنَعَ شَيْئًا وَلَمْ يَصْنَعْهُ. [أطرافه ١: ٢٢٦٨، ٥٧٦٣، ٥٧٦٥، ٥٧٦٦، ٦٠٦٣، ٦٣٩١].

### ١٥- بَابُ مَا يُحْذَرُ مِنَ الْغَدْرِ

وَقَوْلِهِ تَعَالَى:

﴿وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنْ حَسِبْتَ اللَّهُ الْآيَةَ [الأنفال: ٦٢]

٣١٧٦- حَدَّثَنِي الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْأَعْلَاءِ بْنُ زَبْرِ قَالَ: سَمِعْتُ سُرَّ بْنَ غَنْدٍ اللَّهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا إِدْرِيسَ قَالَ: سَمِعْتُ عَوْفَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ - وَهُوَ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمَ - فَقَالَ: ((اعْذُذْ بِنَا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ: مَوْتِي، ثُمَّ فَتْحُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ، ثُمَّ مَوْتَانِ يَأْخُذُ فِيكُمْ كَقِصَاصِ الْقَتْلِ، ثُمَّ اسْتِيفَاضَةُ الْمَالِ حَتَّى يَغْطِيَ الرَّجُلُ مِائَةَ دِينَارٍ فَيَظُلُّ سَاحِطًا، ثُمَّ لِقْنَةٌ لَا يَتَقَى مِنَ الْقَرْبِ إِلَّا دَخَلَتْهُ، ثُمَّ هَذَانِ تَكُونُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ نَبِيِّ الْأَصْفَرِ قَهْقِرُونَ، فَيَأْتُونَكُمْ تَحْتَ قَمَائِينَ غَايَةٍ، تَحْتَ كُلِّ غَايَةٍ اثْنَا عَشَرَ أَلْفًا)).

**तशरीह**

पहली दूसरी निशानी तो हो चुकी है या'नी त़ाऊने अम्वास (प्लेग की बीमारी) जो हज़रत उमर (रज़ि.) को ख़िलाफ़त में आया था जिसमें हज़ारों मुसलमान मर गये थे। चौथी निशानी भी हो चुकी है, मुसलमान रोम और ईरान की फ़तह से बेहद मालदार हो गये थे। पाँचवीं निशानी कहते हैं हो चुकी है जिससे बनू उमय्या का फ़िल्ता मुराद है। छठी निशानी क़यामत के करीब होगी, इस हदीष से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि दगाबाज़ी करना काफ़िरों का काम है और ये भी क़यामत की एक निशानी है कि दगाबाज़ी आम हो जाएगी।

### बाब 16 : अहद क्यूँकर वापस किया जाए?

और अल्लाह पाक ने सूरह अन्फाल में फ़र्माया कि, अगर आपको किसी क़ौम की तरफ़ से दगाबाज़ी का डर हो तो आप उनका अहद मा'कूल तौर से उनको वापस कर दें आख़िर आयत तक।

मा'कूल तरीक़ा ये है कि उनको कहला भेजे, भाई हमारा तुम्हारा दोस्ती का अहद टूट गया, ये नहीं कि दफ़अतन उन पर हमला कर बैठे।

3177. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें हमैद बिन अब्दुरहमान ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने (हज्जतुल विदाअसे पहले वाले हज्ज के मौक़े पर) दसवीं ज़िलहिज्ज के दिन कुछ दूसरे लोगों के साथ मुझे भी मीना में ये ऐलान करने भेजा था कि इस साल के बाद कोई मुशरिक हज्ज करने न आए और कोई शज़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे होकर न करे और हज्जे अकबर का दिन दसवीं तारीख़ ज़िलहिज्ज का दिन है। इसे हज्जे अकबर इसलिये कहा गया कि लोग (उमरह को) हज्जे अज़्ज़र कहने लगे थे, तो अबूबक्र (रज़ि.) ने इस साल मुशरिकों से जो अहद लिया था उसे वापस कर दिया, और दूसरे साल हज्जतुल विदाअ में जब औहज़रत (ﷺ) ने हज्ज किया तो कोई मुशरिक शरीक नहीं हुआ। (राजेअ : 369)

١٦- بَابُ كَيْفَ يُبْذَلُ إِلَى أَهْلِ الْعَهْدِ وَقَوْلُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَإِذَا تَسَلَّطْنَا قَوْمَ خِيَانَةٍ فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ﴾ الْآيَةُ [الأنفال : ٥٨]

٣١٧٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَنِي أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لِيَمْنَنَ يُؤْذَنَ يَوْمَ النَّحْرِ بِمَنِيٍّ: لَا يَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكًا، وَلَا يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانًا. وَيَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ يَوْمَ النَّحْرِ، وَإِنَّمَا قِيلَ: «الْأَكْبَرُ» مِنْ أَجْلِ قَوْلِ النَّاسِ «الْحَجُّ الْأَصْفَرُ»)) فَانْبَذَ أَبُو بَكْرٍ إِلَى النَّاسِ فِي ذَلِكَ الْعَامِ، فَلَمْ يَحُجَّ عَامَ حَجَّةِ الْوُدَّاعِ الَّذِي حَجَّ فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ (مُشْرِكًا)).

[راجع : ٣٦٩]

मा'लूम हुआ कि हज्जे अकबर हज्ज ही का नाम है और ये जो अवाम में मशहूर है कि हज्जे अकबर वो हज्ज है जिसमें अरफ़ा का दिन जुमा को पड़े, उस बारे में कोई सहीह हदीष नहीं है।

### बाब 17 : मुआहिदा करने के बाद दगाबाज़ी करने वाले पर गुनाह

और सूरह अन्फाल में अल्लाह तआला का इशार्द है कि, वो लोग (यहूद) आप जिनसे मुआहदा करते हैं, और फिर हर बार वो दगाबाज़ी करते हैं, और वो बाज़ नहीं आते।

3178. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुरह ने, उनसे मसरूक ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) ने बयान

١٧- بَابُ إِنْ مَنَ عَاهَدَ ثُمَّ عَدَّى وَقَوْلُهُ: ﴿الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ، وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ﴾ [الأنفال : ٥٦]

٣١٧٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चार आदतें ऐसी हैं कि अगर ये चारों किसी एक शख्स में जमा हो जाएँ तो वो पक्का मुनाफ़िक़ है। वो शख्स जो बात करे तो झूठ बोले, और जब वा'दा करे, तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे। और जब मुआहदा करे तो उसे पूरा न करे। और जब किसी से लड़े तो गाली-गुलूच पर उतर आए। और अगर किसी शख्स के अंदर इन चारों आदतों में से एक ही आदत है, तो उसके अंदर निफ़ाक़ की एक आदत है जब तक कि वो उसे छोड़ न दे। (राजेअ : 34)

عَمْرُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَرْبَعٌ خِلَالٍ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَتْ مُنَافِقًا خَالِصًا: مَنْ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ، وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ. وَمَنْ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدْعُوهَا)). (راجع: ٣٤)

मन्सूद ये है कि वा'दा ख़िलाफ़ी करना मुसलमान की शान नहीं है वो वा'दा ख़्वाह काफ़िरों से ही क्यूँ न किया गया हो, फिर जो वा'दा गैरों से सियासी सत्तह पर किया जाए उसकी और भी ऊँची हैशियत है, उसे पूरा करना मुसलमान के लिये ज़रूरी हो जाता है। इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने सुलह हूदैबिया को पूरे तौर पर निभाया, हालाँकि उसमें कुरैश की कई शर्तें सरासर नामा'कूल थीं, मगर अल्करीमु इज़ा वअद वफ़ा मशहूर मक़ला है।

3179. हमसे मुहम्मद बिन क़़ाय़ी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान प्रौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम तैमी ने, उन्हें उनके बाप (यज़ीद बिन शुरैक तैमी) ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) से बस यही कुआन मजीद लिखा और जो कुछ इस वरक़ में है, नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मदीना आइर पहाड़ी और फ़लों (कुदा) पहाड़ी के दरम्यान तक हरम है। पस जिसने यहाँ (दीन में) कोई नई चीज़ दाख़िल की या किसी ऐसे शख्स को उसके हूद में पनाह दी तो उस पर अल्लाह तआला, मलाइका और इंसान सबकी ला'नत होगी। न उसका कोई फ़र्ज़ कुबूल और न नफ़ल कुबूल होगा। और मुसलमान, मुसलमान पनाह देने में सब बराबर हैं। मा'मूली से मा'मूली मुसलमान (औरत या गुलाम) किसी काफ़िर को पनाह दे सकते हैं। और जो कोई किसी मुसलमान का क्या हुआ अहद तोड़ डाले उस पर अल्लाह और मलाइका और इंसान सबकी ला'नत होगी, न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत कुबूल होगी और न नफ़ल! और जिस गुलाम या लौण्डी ने अपने आक्रा अपने मालिक की इजाज़त के बग़ैर किसी दूसरे को अपना मालिक बना लिया, तो उस पर अल्लाह और मलाइका और इंसान सबकी ला'नत होगी, न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत मक्बूल होगी और न नफ़ल। (राजेअ : 111)

٣١٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كَتَبْنَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَّا الْقُرْآنَ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْمَدِينَةُ حَرَامٌ مَا بَيْنَ غَابِرٍ إِلَى كَذَا، فَمَنْ أَخَذَتْ حَدَّثًا أَوْ آوَى مُحَدِّثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ عَذْلٌ وَلَا صَرَفٌ. وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ يَسْتَقِي بِهَا أَذْنَاؤُهُمْ، فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ صَرَفٌ وَلَا عَذْلٌ. وَمَنْ وَالَى قَوْمًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوْلَاهُ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ صَرَفٌ وَلَا عَذْلٌ)). (راجع: ١١١)

٣١٨٠- قَالَ أَبُو مُوسَى: حَدَّثَنَا هَاشِمٌ

3180. अबू मूसा (मुहम्मद बिन मुषत्रा) ने बयान किया कि हमसे

हाशिम बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सईद बिन अम्र ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब (जिज्या और ख़िराज में से) न तुम्हें दिरहम मिलेगा और न दीनार! इस पर किसी ने कहा। कि जनाब अबू हुरैरह (रज़ि.) तुम कैसे समझते हो कि ऐसा होगा? अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा हौं उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में अबू हुरैरह (रज़ि.) की जान है। ये झादिक़ व मसूदक़ (ؓ) का फ़र्मान है। लोगों ने पूछा था कि ये कैसे हो जाएगा? तो आपने फ़र्माया, जबकि अल्लाह और उसके रसूल का अहद (इस्लामी हुकूमत और—मुस्लिमों से उनकी जान व माल की हिफ़ाज़त के बारे में) तोड़ा जाने लगे, तो अल्लाह तआला भी ज़िम्मियों के दिलों को सख़्त कर देगा और वो जिज्या देना बन्द कर देंगे (बल्कि लड़ने को मुस्तैद होंगे)।

यहाँ भी मज़सूदे बाब इससे हासिल हुआ कि जब मुसलमान ज़िम्मी लोगों से मुआहिदा करके उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी करेंगे और ज़िम्मियों को सताने लगेंगे, तो अल्लाह पाक ज़िम्मियों को सख़्त दिल बना देगा और वो जिज्या बन्द कर देंगे। मा'लूम हुआ कि ग़ैरों से जो भी सुलह अमन का मुआहिदा किया जाए, आख़िर वक़्त तक उसको मल्हूज़ रखना ज़रूरी है।

### बाब 18 :

3181. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू हम्ज़ा ने ख़बर दी, कहा कि मैंने आ'मश से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू वाईल से पूछा, क्या आप सिफ़फ़ीन की जंग में मौजूद थे? उन्होंने बयान किया कि हाँ (मैं था) और मैंने सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) को ये कहते सुना था कि तुम लोग खुद अपनी राय को ग़लत समझो, जो आपस में लड़ते मरते हो। मैंने अपने तई देखा जिस दिन अबू जन्दल आया। (या'नी हुदैबिया के दिन) अगर मैं आँहज़रत (ؓ) का हुक्म फेर सकता तो उस दिन फेर देता और हमने जब किसी मुसीबत में डरकर तलवारें अपने कैयों पर रखीं तो वो मुसीबत आसान हो गई। हमको उसका अंजाम मा'लूम हो गया। मगर यही एक लड़ाई है (जो सख़्त मुश्किल है उसका अंजाम बेहतर नहीं मा'लूम होता)। (दीगर मक़ाम : 3182, 4189, 4844, 7308)

3182. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने, उनसे

### १८- बाब

३१८१- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَازِمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ الْأَعْمَشَ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَبَا وَائِلٍ: شَهِدْتَ صِفِّينَ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَسَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حَنْظَلٍ يَقُولُ: إِنَّهُمْ رَأَوْكُمْ رَأَيْتُمْ يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ وَلَوْ اسْتَطِيعَ أَنْ أَرُدَّ أَمْرَ النَّبِيِّ ﷺ لَرَدَدْتُهُ، وَمَا وَضَعْنَا أَسْيَافَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا لِأَمْرِ يُفْطِنُنَا إِلَّا أَنْهَلْنَا بِنَا إِلَى أَمْرِ نَعْرِفُهُ غَيْرَ أَمْرِنَا هَذَا)). [أطرافه في: ३१८२، ४१८९، ४८४४، ७३०८].

३१८२- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ

उनके बाप अब्दुल अजीज बिन स्याह ने, उनसे हबीब बिन अबी घाबित ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू वाईल ने बयान किया कि हम मुकामे सिफ्फीन में डेरे डाले हुए थे। फिर सहल बिन हनीफ (रज़ि.) खड़े हुए और फ़र्माया ऐ लोगों! तुम खुद अपनी राय को ग़लत समझो। हम सुलह हुदैबिया के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे, अगर हमें लड़ना होता तो उस वक़्त ज़रूर लड़ते। इमर (रज़ि.) उस मौक़े पर आए (या'नी हुदैबिया में) और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या हम हज़रत पर और वो बातिल पर नहीं हैं? आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्यूँ नहीं! इमर (रज़ि.) ने कहा क्या हमारे मन्तुल जन्नत में और उनके मन्तुल जहन्नम में नहीं जाएंगे? आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि क्यूँ नहीं! फिर इमर (रज़ि.) ने कहा कि फिर हम अपने दीन के मामले में क्यूँ दबें? क्या हम (मदीना) वापस चले जाएंगे, और हमारे और उनके दरम्यान अल्लाह कोई फैसला नहीं करेगा। आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इब्ने ख़त्ताब! मैं अल्लाह का रसूल हूँ और अल्लाह मुझे कभी बर्बाद नहीं करेगा। उसके बाद हज़रत इमर (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास गये और उनसे वही सवालात किये, जो नबी करीम (ﷺ) से अभी कर चुके थे। उन्होंने भी यही कहा कि आहज़रत (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह उन्हें कभी बर्बाद नहीं होने देगा। फिर सूरह फ़तह नाज़िल हुई और आहज़रत (ﷺ) ने हज़रत इमर (रज़ि.) को उसे आख़िर तक पढ़कर सुनाया, तो हज़रत इमर (रज़ि.) ने अर्ज किया क्या यही फ़तह है? आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! बिला शक़ यही फ़तह है। (राजेअ: 3181)

عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو وَائِلٍ قَالَ: ((كُنَّا بِصَفَيْنَ، فَقَامَ سَهْلُ بْنُ خَنْبَرٍ فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ اتَّهَمُوا أَنْفُسَكُمْ، فَإِنَّا كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ - يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ وَلَوْ نَرَى قِتَالًا لَقَاتَلْنَا، فَجَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَهُمْ عَلَى الْبَاطِلِ؟ فَقَالَ: ((بَلَى)). فَقَالَ: أَلَيْسَ قِتَالًا فِي الْحَبَّةِ وَقِتَالُهُمْ فِي النَّارِ؟ قَالَ: ((بَلَى)). قَالَ: فَعَلَى مَا نُعْطِي الذِّبَّةَ فِي دِينِنَا؟ أَوْجِبْ وَلَمَّا يَحْكُمُ اللَّهُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ؟ فَقَالَ: ((يَا ابْنَ الْخَطَّابِ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَنِي اللَّهُ أَبَدًا)). فَأَنْطَلَقَ عُمَرُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: إِنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَهُ اللَّهُ أَبَدًا. فَتَوَلَّى سُورَةَ الْفَتْحِ، فَقَرَأَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى عُمَرَ إِلَى آخِرِهَا، فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوْ فَتَحَ هُوَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). (راجع: 3181)

**तशरीह:**

हज़रत सहल बिन हनीफ (रज़ि.) लड़ाई में किसी तरफ़ भी शरीक नहीं थे। इसलिये दोनों गिरोह उनको इल्जाम दे रहे थे। उसका जवाब उन्होंने ये दिया कि रसूल करीम (ﷺ) ने हमें मुसलमानों से लड़ने का हुक्म नहीं दिया था। ये तो खुद तुम्हारी ग़लती है कि अपनी ही तलवार से अपने ही भाईयों को क़त्ल कर रहे हो। बहुत से दूसरे सहाबा भी हज़रत मुआविया (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) के झगड़े में शरीक नहीं थे। हज़रत सहल (रज़ि.) का मतलब ये था कि जब आहज़रत (ﷺ) ने काफ़िरों के मुकाबले में जंग में जल्दी न की और उनसे सुलह कर ली तो तुम मुसलमानों से लड़ने के लिये क्यूँ पिले पड़े हो। ख़ूब सोच लो कि ये जंग जाइज़ है या नहीं, और इसका अंजाम क्या होगा? जंगे सिफ्फ़ीन जब हुई तो तमाम जहाँ के काफ़िरों ने ये ख़बर सुनकर शादयाने बजाये कि अब मुसलमानों का ज़ोर आपस ही में खर्च होने लगा। हम सब बाल बाल बचे रहेंगे।

आज भी यही हाल है कि मुसलमानों में सियासी, मज़हबी आपसी इतनी लड़ाइयाँ हैं कि आज के दुश्मनाने इस्लाम देख देखकर खुश हो रहे हैं। मुसलमानों का ये हालां बदन होता तो उनका क़िबल-ए-अव्वल मज़हब क़ौम यहूद के हाथ न जाता

। मुस्लिम अरब कौमों की खानाजंगी ने आज उम्मत को ये बुरा दिन भी दिखलाया कि यहूदी आज मुसलमानों के सर पर सवार हो रहे हैं।

सहल (रज़ि.) की हदीष की मुताबकत बाब से यँ है कि जब कुरैश ने अहदशिकनी की तो अल्लाह ने उनको सज़ा दी और मुसलमानों को उन पर ग़ालिब कर दिया। सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) ने जंगे सिफ़फ़ीन के मौक़े पर जो कहा उसका मतलब ये था कि सुलह हदैबिया के मौक़े पर कुरैश ने मुसलमानों की बड़ी तौहीन की थी फिर भी आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे लड़ना मुनासिब न जाना और हम आपके हुक्म के ताबेअ रहे, उसी तरह आँहज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों पर हाथ उठाने से मना किया है। मैं क्यूँकर मुसलमानों को मारूँ, ये सहल (रज़ि.) ने उस वक़्त कहा जब लोगों ने उनको मलामत की कि सिफ़फ़ीन में मुकातला क्यूँ नहीं करते? सिफ़फ़ीन नामी फ़रात नदी के किनारे एक गांव था। जहाँ हज़रत अली और मुआविया (रज़ि.) के बीच जंग हुई थी।

3183. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि कुरैश से जिस ज़माने में रसूले करीम (ﷺ) ने (हदैबिया की) सुलह की थी, उसी मुद्दत में मेरी बालिदा (कुतेला) अपने बाप (हारिब बिन मुदरक) को साथ लेकर मेरे पास आई, वो इस्लाम में दाख़िल नहीं हुई थीं। (उर्वा ने बयान किया कि) हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने इस बारे में आँहज़रत (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी बालिदा आई हुई हैं और मुझसे रबत के साथ मिलना चाहती हैं, तो क्या मैं उनके साथ मिलारहमी करूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! उनके साथ मिलारहमी कर। (राजेअ : 2620)

٣١٨٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَاتَمٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ ابْنَةِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَدِمْتُ عَلَى أُمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ لِي عَهْدٍ قُرَيْشٍ إِذَا عَاهَدُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَمُذَبِّهِمْ مَعَ أَبِيهَا، فَاسْتَفْتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ عَلَى وَهْيٍ رَاحِيَةٍ، أَفَأَمِلُهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ، مِلْ بِهَا)).

[راجع: ٢٦٢٠]

**तशरीह:** बाब से इस हदीष की मुताबकत इस तरह है कि उनकी बालिदा भी कुरैश के काफ़िरों में शामिल थीं और चूँकि उनसे और आँहज़रत (ﷺ) से सुलह थी, इसलिये रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत अस्मा (रज़ि.) को इजाज़त दी कि अपनी बालिदा से अच्छा सुलूक करें।

### बाब 19 : तीन दिन या एक मुअय्यन मुद्दत के लिये सुलह करना

3184. हमसे अहमद बिन उप्मान बिन हकीम ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा मुझसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब उमरह करना चाहा तो आपने मक्का में दाख़िला के लिये मक्का के लोगों से इजाज़त लेने के लिये आदमी भेजा। उन्होंने इस शर्त के साथ (इजाज़त दी) कि मक्का में तीन दिन से ज़्यादा

### ١٩- بَابُ الْمُصَالَحَةِ عَلَى ثَلَاثَةِ

#### أَيَّامٍ أَوْ وَقْتٍ مَعْلُومٍ

٣١٨٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَرِيحُ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((رَأَى النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَغْمِرَ أَرْسَلَ إِلَى أَهْلِ

क्रयाम न करें। हथियार नियाम में रखे बगैर दाखिल न हों और (मक्का के) किसी आदमी को अपने साथ (मदीना) न ले जाएँ (अगरचे वो जाना चाहे) उन्होंने बयान किया कि फिर उन शराइत को अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने लिखना शुरू किया और इस तरह, ये मुहम्मद अल्लाह के रसूल के सुलहनामे की तहरीर है। मक्का वालों ने कहा कि अगर हम जान लेते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो फिर आपको रोकते ही नहीं बल्कि आप पर ईमान लाते, इसलिये तुम्हें यूँ लिखना चाहिये, ये मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के सुलहनामे की तहरीर है। इस पर आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह गवाह है कि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ और अल्लाह गवाह है कि मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ। आँहजरत (ﷺ) लिखना नहीं जानते थे। रावी ने बयान किया कि आप (ﷺ) ने अली (रज़ि.) से फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) का लफ़्ज़ मिटा दे, हजरत अली (रज़ि.) ने अज़ किया कि अल्लाह की क़सम! ये लफ़्ज़ तो मैं कभी न मिटाऊँगा, आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मुझे दिखलाओ, रावी ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ने आँहजरत (ﷺ) को वो लफ़्ज़ दिखाया। और आप (ﷺ) ने खुद अपने हाथ से उसे मिटा दिया। फिर जब आँहजरत (ﷺ) मक्का तशरीफ़ ले गये और (तीन) दिन गुज़र गये तो कुरैश हजरत अली (रज़ि.) के पास आए और कहा कि अब अपने साथियों से कहो कि अब यहाँ से चले जाएँ (अली रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने इसका ज़िक्र आँहजरत (ﷺ) से किया, तो आपने फ़र्माया कि हाँ, चुनौती आप वहाँ से खाना हो गये। (राजेज़: 1781)

مَكَّةَ يَسْتَأْذِنُهُمْ يَدْخُلُ مَكَّةَ، فَاشْتَرَطُوا عَلَيْهِ أَنْ لَا يَفْتِمَ بِهَا إِلَّا ثَلَاثَ لَيَالٍ، وَلَا يَدْخُلُهَا إِلَّا بِحِلْيَانِ السِّلَاحِ، وَلَا يَدْغُو مِنْهُمْ أَحَدًا. قَالَ: فَأَخَذَ يَكْتُبُ الشَّرْطَ يَتَنَهَّمُ عَلَيْهِ بَنُو أَبِي طَالِبٍ: فَكَتَبَ: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ. فَقَالُوا: لَوْ عَلِمْنَا أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ لَمْ نَمْنَعَكَ وَلِبَاسِكَ، وَلَكِنْ أَكْتُبَ: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ. فَقَالَ: (أَنَا وَاللَّهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَأَنَا وَاللَّهِ رَسُولُ اللَّهِ)). قَالَ: وَكَانَ لَا يَكْتُبُ، قَالَ فَقَالَ لِعَلِيٍّ: ((أُمْنِعْ رَسُولُ اللَّهِ)). فَقَالَ عَلَيْهِ: وَاللَّهِ لَا أُمْنِعُهُ أَبَدًا. قَالَ: ((فَارْبِعُوهُ)). قَالَ: فَارْأَاهُ إِنَاءً، فَمَحَاهُ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ. فَلَمَّا دَخَلَ وَمَقُصَّتِ الْيَامُ أَتَوْا عَلَيْهِ فَقَالُوا: مَرُّ صَاحِبِكَ فَلْيَرْتَحِلْ. فَلَاكَرَ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: ((نَعَمْ)). فَلَارْتَحَلَ.

[راجع: 1781]

**तशरीह:** हजरत अली (रज़ि.) का इन्कार हुक्मइदूली और मुखालफ़त के तौर पर न था बल्कि आँहजरत (ﷺ) की मुहब्बत और खैर-ख़वाही और जोशे ईमान की वजह से था। इसलिये कोई गुनाह हजरत अली (रज़ि.) पर न हुआ। यहाँ से शिया हज़रात को सबक लेना चाहिये कि जैसे हजरत अली (रज़ि.) ने महज़ मुहब्बत की वजह से आँहजरत (ﷺ) के फ़र्मान के खिलाफ़ किया, वैसा ही हजरत उमर (रज़ि.) ने भी किस्स-ए-किरतास में आँहजरत (ﷺ) की तकलीफ़ के ख़याल से लिखे जाने में मुखालफ़त की। दोनों की निर्यत बख़ैर थी। कारे पाकों अज़ क़यास ख़ूद मगीर एक जगह हुस्ने-ज़न करना, दूसरी जगह बदज़नी सरीह इन्साफ़ से दूर है।

**बाब 20 : नामा'लूम मुदत के लिये सुलह करना**

और नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों से फ़र्माया था, मैं उस वक़्त तक तुम्हें यहाँ रहने दूँगा, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा।

٢٠- بَابُ الْمَوَادَعَةِ مِنْ غَيْرِ وَقْتٍ،

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَقْرَبُكُمْ عَلَيَّ مَا أَقْرَبُكُمْ

اللَّهِ))

इसी से बाब का मतलब साबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने ग़ैर मुकर्ररा मुहत्त के लिये यहूदे ख़ैबर से मामला फ़र्माया। जो हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने तक बाक़ी रहा। फिर यहूदियों की मुसलसल शरारतों और नापाक साज़िशों की बिना पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनका जलावतन कर देना मुनासिब समझा और उनको जलावतन कर दिया। स़द अफ़सोस! कि इस चौदहवीं सदी में वही यहूदी आज इस्लाम के किब्ल-ए-अव्वल पर क़ब्ज़ा करके मुसलमानों के मुँह आ रहे हैं। ख़जलहुमुल्लाह (आमीन)

## बाब 21 : मुश्रिकों की लाशों को कुँए में फिंकवा देना

## ۲۱- بَابُ طَرَحِ جِيفِ الْمُشْرِكِينَ فِي الْبُئْرِ، وَلَا يُؤْخَذُ لَهُمْ نَعَمٌ

और उनकी लाशों की (अगर उनके वरषा देना भी चाहें तो भी)

क़ीमत न लेना.

**तशीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब की हदीष से दूसरा मतलब इस तरह निकाला कि अगर आँहज़रत (ﷺ) चाहते तो बद्र की मक्तूलौन की लाशें मक्का के काफ़िरों के हाथ बेच सकते थे क्योंकि वो मक्का के रईस थे और उनके रिश्तेदार बहुत मालदार थे, मगर आपने ऐसा इरादा न किया और लाशों को अंधे कुँए में डलवा दिया। कुछ ने कहा कि इमाम बुखारी (रह.) दूसरे मतलब की हदीष को अपनी शर्त पर न होने की वजह से न ला सके, लेकिन उन्होंने इस तरह इशारा कर दिया। जिसको इब्ने इस्हाक ने मराज़ी में निकाला कि मुश्रिकीन नौफ़िल बिन अब्दुल्लाह की लाश के बदल जो खन्दक में घुस आया था और वहीं मारा गया, आँहज़रत (ﷺ) को रुपया देते रहे, लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हमको उसकी क़ीमत दरकार नहीं है न उसकी लाश। जुहरी ने कहा मुश्रिक दस हज़ार दिरहम उस लाश के बदल मुआवज़ा देने पर राज़ी थे। (वहीदी)

3185. हमसे अब्दान बिन ब्रह्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अमर बिन मैमून ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मक्का में (शुरू इस्लाम के ज़माने में) रसूलुल्लाह (ﷺ) सज्दा की हालत में थे और क़रीब ही कुरैश के कुछ लोग बैठे हुए थे। फिर उक्बबा बिन अबी मुईत्त ऊँट की ओझड़ी लाया और नबी करीम (ﷺ) की पीठ पर उसे डाल दी। नबी करीम (ﷺ) सज्दा से अपना सर न उठा सके। आख़िर फ़ातिमा (रज़ि.) आई और आप (ﷺ) की पीठ पर से उस ओझड़ी को हटाया, और जिसने ये हरकत की थी उसे बुरा भला कहा, नबी करीम (ﷺ) ने भी बद् दुआ की कि ऐ अल्लाह! कुरैश की इस जमाअत को पकड़। ऐ अल्लाह अबू जहल बिन हिशाम, उतबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, उक्बबा बिन अबी मुईत्त, उमय्या बिन ख़ल्फ़ या उबई बिन ख़ल्फ़ को बर्बाद कर। फिर मैंने देखा कि ये सब बद्र की लड़ाई में क़त्ल कर दिये गये और एक कुँए में उन्हें डाल दिया गया था। सिवा उमय्या या उबई के कि ये शख्स बहुत भारी भरकम था। जब उसे सहाबा ने खींचा तो कुँए में डालने से पहले ही उसके जोड़-जोड़ अलग हो गये।

۳۱۸۵- حَدَّثَنَا عَدَانُ بْنُ عُمَانَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عُمَرُو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَاجِدًا وَخَوْلَتُهُ نَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِذْ جَاءَهُ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ يَسْتَلِي خَزِيرٍ لَقَدْ لَعَنَ عَلَى ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يَرْفَعْ رَأْسَهُ حَتَّى جَاءَتْ فَاطِمَةُ خَلَّتْهَا السَّلَامُ فَأَخَذَتْ مِنْ ظَهْرِهِ وَدَعَتْ عَلَى مَنْ صَنَعَ ذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ عَلَيكَ السَّلَامُ مِنْ قُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيكَ أَبَا جَهْلٍ بْنُ هِشَامٍ وَعُقْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَهَيْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَعُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ وَأُمَيَّةُ بْنُ خَلْفٍ - أَوْ أَبِي بْنُ خَلْفٍ)) - فَلَقَدْ رَأَيْتَهُمْ قَبِلُوا يَوْمَ بَدْرٍ فَالْقُوا فِي بَيْرٍ، غَيْرَ أَمِيَّةٍ - أَوْ أَبِي - فَإِنَّهُ كَانَ رَجُلًا ضَخْمًا، فَلَمَّا



(राजेअ : 240)

جَزْرُهُ تَقَطَّعَتْ أَوْصَالُهُ قَبْلَ أَنْ يَلْقَى فِي

النَّيْرِ)). [راجع: ٢٤٠]

करीब ही एक ऊँटनी ने बच्चा जना था। मुशिकीन उसकी बच्चादानी का सामान मलबा उठाकर ले आए और ये हरकत की जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने जब पानी सर से गुज़र गया, तो उनके हक़ में ये बददुआ की जिसका रिवायत में ज़िक्र है। बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है। लफ़ज़ सला ज़ूर इज़ाफ़त के साथ है। (मुराद ऊँटनी की बच्चादानी)

## बाब 22 : दगाबाज़ी करने वाले पर गुनाह ख़्वाह किसी नेक आदमी के साथ हो या बेअमल के साथ

3186, 87. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उसे अबू वार्ईल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने और प्राबित ने अनस (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन हर दगाबाज़ के लिये एक झण्डा होगा, उनमें से एक साहब ने ये बयान किया कि वो झण्डा (उसके पीछे) गाड़ दिया जाएगा और दूसरे साहब ने बयान किया कि उसे क़यामत के दिन सब देखेंगे, उसके ज़रिये उसे पहचाना जाएगा।

## ٢٢- بَابُ إِمْنِ الْغَادِرِ

### لِلنَّيْرِ وَالْفَاجِرِ

٣١٨٦، ٣١٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ - وَعَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لِكُلِّ غَادِرٍ لَوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))، قَالَ أَحَدُهُمَا، يُنْصَبُ - وَقَالَ الْآخَرُ: يُرَى - يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُعْرَفُ بِهِ.

एक रिवायत में है कि ये झण्डा उसकी मक़अद पर लगाया जाएगा। गर्ज़ ये है कि उसकी दगाबाज़ी से तमाम अहले महशर मुत्तलअ होंगे और नफ़रत करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसी बुरी आदतों से बचाए। आमीन

3188. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर दगाबाज़ के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा होगा जो उसकी दगाबाज़ी की अलामत के तौर पर (उसके पीछे) गाड़ दिया जाएगा। (दीगर मक़ाम : 6177, 6178, 6966, 7111)

٣١٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لِكُلِّ غَادِرٍ لَوَاءٌ يُنْصَبُ لِعَذْرَتِهِ)). (أطرافه في: ٦١٧٧، ٦١٧٨)

[٦٩٦٦, ٧١١١]

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) किताबु जिहाद को ख़त्म करते हुए इन अह्दादीष को लाकर ये बतला रहे हैं कि इस्लाम में नाहक़ क़त्ल व ग़ारत, फ़साद व दगाबाज़ी हर्गिज़ हर्गिज़ जाइज़ नहीं है। अगर कोई मुसलमान इन हरकतों का मुर्तकिब होगा तो उनका वो ख़ुद ज़िम्मेदार होगा। इस्लाम को उससे कोई ज़रर न पहुँच सकेगा।

3189. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे

٣١٨٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ

ताऊस ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन फ़र्माया था, अब (मक्का से) हिजरत फ़र्ज नहीं रही, अल्बत्ता जिहाद की निग्रह और जिहाद का हुक्म बाकी है। इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये निकाला जाए तो फ़ौरन निकल जाओ और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन ये भी फ़र्माया था कि जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन पैदा किये, उसी दिन इस शहर (मक्का) को हरम करार दे दिया। पस ये शहर अल्लाह की हुर्मत के साथ क़यामत तक के लिये हारम ही रहेगा, और मुझसे पहले यहाँ किसी के लिये लड़ना जाइज़ नहीं किया गया। पस अब ये मुबारक शहर अल्लाह तआला की हुर्मत के साथ क़यामत तक के लिये हारम है, इसकी हुदूद में न (किसी पेड़ का) कांटा तोड़ा जाए, न यहाँ के शिकार को सताया जाए, और कोई यहाँ की गिरी हुई चीज़ न उठाए सिवा उस शख्स के जो (मालिक तक चीज़ को पहुँचाने के लिये) ऐलान करे और न यहाँ की हरी, घास काटी जाए। इस पर अब्बास (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इज़्ज़र की इजाज़त दे दीजिए क्योंकि ये यहाँ के सुनारों और घरों की छतों पर डालने के काम आती है। तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा इज़्ज़र की इजाज़त है। (राजेअ: 1349)

**तशरीह:** ये हदीष पहले भी कई बार गुज़र चुकी है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उसमें इस बात की तरफ़ इशारा किया है कि बावजूद ये कि वो हुर्मत वाला शहर था और वहाँ लड़ना अल्लाह ने किसी के लिये दुरुस्त नहीं किया, मगर चूँकि मक्का वालों ने दगा की और आँहज़रत (ﷺ) के साथ जो अहद बाँधा था वो तोड़ दिया, बनू ख़ुज़ाआ के मुकाबले पर बनू बक्र की मदद की तो अल्लाह तआला ने उस जुर्म की सज़ा में ऐसे हुर्मत वाले शहर में भी उनका मारना और क़त्ल करना अपने रसूल (ﷺ) के लिये दुरुस्त कर दिया। इससे ये निकला कि दगाबाज़ी बड़ा गुनाह है और उसकी सज़ा बहुत सख़्त है। बाब का यही मतलब है।

طَاوُسٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ قَحِ مَكَّةَ: ((لَا حِجْرَةَ، وَلَكِنْ جِهَادَ وَبَيَّةَ، وَإِذَا اسْتَفْرَغْتُمْ فَأَنْفِرُوا)). وَقَالَ يَوْمَ قَحِ مَكَّةَ: ((إِنَّ هَذَا الْبَلَدَ حَرَمَةٌ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، فَهُوَ حَرَامٌ بِحَرَمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَإِنَّهُ لَمْ يَجْعَلِ الْفِتَانَ لَهُ لِأَحَدٍ قَبْلِي، وَلَمْ يَجْعَلْ لِي إِلَّا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، فَهُوَ حَرَامٌ بِحَرَمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لَا يَغْنَصُ شَوْكُهُ، وَلَا يُنْقَرُ حَبْنُهُ، وَلَا يَنْقَطُ لُقَطَتُهُ إِلَّا مَنْ عَرَفَهَا، وَلَا يُحْتَلَى خِلَافَهُ)). فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا الْإِذْخِرَ، فَإِنَّهُ لَفَيْنَهُمْ وَلَمْ يَطْرُقْهُمْ. قَالَ: ((إِلَّا الْإِذْخِرَ)). [راجع: ١٣٤٩]

## खातिमा

अल्हम्दुलिल्लाह घुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह कि आज जुमा का दिन है चाश्त का वक़्त है। ऐसे मुबारक दिन में पारा बारह की तस्वीद से फ़रागत हासिल कर रहा हूँ, ये तवील पारा अज़ अव्वल ता अख़िर किताबुल जिहाद पर मुश्तमिल था, जिसमें बहुत से जिम्नी मसाइल भी आ गये। इस्लामी जिहाद के मालू व मा अलैहि को जिस तफ़्सील से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी इस मुबारक किताब में कुर्आन मजीद व फ़रामीने सरकारे रिसालत मआब (ﷺ) की रोशनी पेश फ़र्माया है उससे ज़्यादा नामुम्किन था। साथ ही इस्लामी नज़रिया सियासत, इस्लामी तर्ज़े हुकूमत, ग़ैर-मुस्लिमों से मुसलमानों का बर्ताव, आदाबे जिहाद और बहुत से तमहुनी मसाइल पर इस क़दर तफ़्सील से बयानात आ गये हैं कि बग़ैर मुतालाआ करने वालों के दिल व दिमाग़ रोशन हो जाएँगे और आज के बदतरीन दौर में जबकि इंकारे मज़हब की बुनियाद पर तहज़ीब व तरक्की के राग अलापे जा रहे हैं। जिसके नतीजे बद में सारा आलम इंसानियत बदअम्नी व बद अख़लाक़ी का शिकार होता चला जा रहा है। कम अज़क़म नौजवानाने इस्लाम के लिये जिनको अल्लाह ने सलीम फ़ितरत अता की है इस मुबारक किताब के इस पारे का मुतालाआ उनको बहुत कुछ बज़ीस्त अता करेगा।

खादिम ने तर्जुमा और तशरीहात में कोशिश की है कि अह्दादीष पाक के हर लफ़्ज़ को अहसन तौर पर बामुहावरा उर्दू में मुंतक़िल कर दिया जाए और इख़्तिसार व एजाज़ के साथ कोई गोशा तश्न-ए-तक्मील (अधूरा) न रहे। अब ये माहिरीने फ़न ही फ़ैसला करेंगे कि मैं इस पाकीज़ा मक्क़सद में कहाँ तक कामयाबी हासिल कर सका हूँ। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि मुझसे किस क़दर लज़िश्ते हुई होंगी जिनका मैं पहले ही ए'तिराफ़ करता हूँ और उन इलमा-ए-किराम व फुज़ला ए इज़ाम का पेशगी शुक्रिया अदा करता हूँ जो मुझको किसी भी वाक़ई ग़लती पर ख़बर देकर मुझको नज़रे घ़ानी का मौक़ा देंगे और अल इंसान मुरक़ब मिनल् ख़ताइ वन् निस्थानि के तहत मुझे मा'ज़ूर समझेंगे।

या अल्लाह! जिस तरह तूने मुझको यहाँ तक पहुँचाया और इन पारों को मुकम्मल कराया, बाक़ी अजज़ा को भी मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा और मेरे जितने भी क़द्रदान हैं जो इस मुबारक किताब की ख़िदमत व इशाअत व मुतालाआ में हिस्सा ले रहे हैं उन सबको या अल्लाह! ज़ज़ा-ए-ख़ैर अता कर और उसे उन सबके लिये क़यामत के दिन वसील-ए-नजात का सबब बना, आमीन (बिरह मतिका या अरहमर् राहिमीन)

नाचीज़ खादिम

मुहम्मद राज़ अस् सलफ़ी अद् देहलवी

मुक़ीम मस्जिद अहले हदीष 4121

अजमेरी गेट देहली, इण्डिया,

21 जमादिष़ घ़ानी 1391 हिजरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तेरहवां पारा

## 59. किताब बदउल खलक

# किताब इस बयान में कि मख्लूक की पैदाइश क्योंकर शुरू हुई?

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 :

और अल्लाह पाक ने (सूरह रूम में) जो फ़र्माया उसकी तफ़्सीर कि अल्लाह ही है जिसने मख्लूक को पहली बार पैदा किया, और वही फिर दोबारा (मौत के बाद) ज़िन्दा करेगा और ये (दोबारा ज़िन्दा करना) तो उस पर और भी आसान है।

और रबीआ बिन ख़ुषैम और इमाम हसन बसरी ने कहा कि यूँ तो दोनों 'या' नी (पहली बार पैदा करना फिर दोबारा ज़िन्दा कर देना) उसके लिये बिलकुल आसान है। (लेकिन एक को 'या' नी पैदाईश के बाद दोबारा ज़िन्दा करने को ज़्यादा आसान ज़ाहिर करने के ए'तिबार से कहा) हयनुन और हय्यिनुन को लयनुन और लय्यिनुन, मयतुन और मय्यितुन, जयकुन और जय्यिकुन की तरह (मुशहद और मुखफ़फ़) दोनों तरह पढ़ना जाइज़ है और सूरह क़ाफ़ में जो लफ़ज़ अफ़ऐना आया है, उसके मा'नी हैं कि क्या मुझे पहली बार पैदा करने ने आजिज़ कर दिया था। जब उस अल्लाह ने

### ١ - بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ اللَّهِ

تَعَالَى :

﴿وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ، وَهُوَ

أَهْوَنُ عَلَيْهِ﴾ [الرّوم : ٢٧]

قَالَ الرَّبِّيعُ بْنُ خَتِيمٍ وَالْحَسَنُ : كُلُّ عَلَيْهِ

هَيْنٌ. وَهَيْنٌ : بِمِثْلِ لَيْنٍ وَلَيْنٌ، وَمِيتٌ

وَمِيتٌ. وَضَيِّقٌ وَضَيِّقٌ.

﴿وَأَنشَأْنَا﴾ : أُنْشِئْنَا عَلَيْهِ. حِينَ أَنْشَأْتُمْ

وَأَنشَأْنَا خَلْقَكُمْ.

﴿لَقُوبٌ﴾ : النِّسَبُ. ﴿وَاطْوَارًا﴾ : طَوْرًا

كَذَا، وَطَوْرًا كَذَا. عَدَا طَوْرَهُ : إِيْ قَنْزَهُ.

तुमको पैदा कर दिया था और तुम्हारे माँह को पैदा किया और उसी सूरत में (अल्लाह तआला के इर्शाद में) लुगूब के मा'नी थकन के हैं और सूरह नूह में जो फ़र्माया अत्वारन उसके मा'नी ये हैं कि मुख्तलिफ़ सूरतों में तुम्हें पैदा किया। कभी नुत्फ़ा, ऐसे खून की फुटकी, फिर गोशत फिर हड्डी पोस्त। अरब लोग बोला करते हैं अदा तौरहू या'नी फ़लों अपने मर्तबे से बढ़ गया। यहाँ अत्वार के मा'नी रुत्बे के हैं।

कुर्आन शरीफ़ में सूरह मरयम में लफ़ज़ ख़ुवा हय्यिन आया है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस मुनासबत से इस लफ़ज़ की तशरीह कर दी कि रबीआ और हसन के क़ौल में ये लफ़ज़ आया है और सूरह काफ़ और सूरह नूह के लफ़ज़ों की तशरीह इसलिये कि उन आयतों में आसमान और ज़मीन और इंसान की पैदाइश का बयान है और ये बाब भी उसी बयान में है।

3190. हमसे मुहम्मद बिन क़बीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ब़ारी ने ख़बर दी, उन्हें जामेअ बिन शहाद ने, उन्हें सफ़वान बिन मुहरिज़ ने और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी तमीम के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने उनसे फ़र्माया कि ऐ बनी तमीम के लोगों! तुम्हें बशारत हो। वो कहने लगे कि बशारत जब आपने हमको दे दी है तो अब हमें कुछ माल भी दे दीजिए। उस पर आँहज़रत (ﷺ) के चेहरा मुबारक का रंग बदल गया, फिर आपकी ख़िदमत में यमन के लोग आए तो आपने उनसे भी फ़र्माया कि ऐ यमन के लोगों! बनू तमीम के लोगों ने तो ख़ुशख़बरी को कुबूल नहीं किया, अब तुम उसे कुबूल कर लो। उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने कुबूल किया। फिर आप मख़लूक और अशें इलाही की इब्तिदा के बारे में बातचीत करने लगे। इतने में एक (नामा'लूम) शख्स आया और कहा कि इमरान! तुम्हारी कैटनी भाग गई। (इमरान रज़ि. कहते हैं) काश! मैं आपकी मज्लिस से न उठता तो बेहतर होता। (दीगर मक़ाम: 3191, 4365, 4386, 7418)

٣١٩٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُخْرَزٍ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((جَاءَ نَفَرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا نَبِيَّ تَوَصَّي أَتَشِيرُونَ)). قَالُوا: بَشَرْتَنَا فَأَعْطَيْنَا. فَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ. فَجَاءَهُ أَهْلُ الْيَمَنِ، فَقَالَ: ((يَا أَهْلَ الْيَمَنِ اقْبَلُوا الْبَشْرَى إِذْ لَمْ يَقْبَلَهَا بَنُو تَمِيمٍ)). قَالُوا: قَبَلْنَا. فَأَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ يُحَدِّثُ بَذَى الْخَلْقِ وَالْفَرْشِ. فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا عِمْرَانُ وَهَلْ لَكَ تَقَلَّتْ لَيْتِي لَمْ أَلَمْ)). [أطرافه ١: ٣١٩١، ٤٣٦٥، ٤٣٨٦، ٧٤١٨].

**तशरीह:** आँहज़रत (ﷺ) ने बनू तमीम को इस्लाम लाने की वजह से आखिरत की भलाई की खुशख़बरी दी थी। बनू तमीम के लोगों ने अपनी कम अक़ली से ये समझा कि आप दुनिया का माल व दौलत देने वाले हैं उनको इस सोच से आप (ﷺ) को दुख हुआ।

3191. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़ियाथ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे जामेअ बिन शहाद ने बयान किया, उनसे सफ़वान बिन मुहरिज़ ने और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ

٣١٩١- حَدَّثَنَا عُثْمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ عِيَّاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ شَدَّادٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُخْرَزٍ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ

और अपने ऊँट को मैंने दरवाजे पर ही बाँध दिया था। उसके बाद बनी तमीम के कुछ लोग आपकी खिदमत में हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया ऐ बन् तमीम! खुशख़बरी कुबूल करो। उन्होंने दोबारा कहा कि जब आपने हमें खुशख़बरी दी है तो अब माल भी दीजिए। फिर यमन के चन्द लोग खिदमते नबवी में हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने उनसे भी यही फ़र्माया कि खुशख़बरी कुबूल कर लो ऐ यमन वालों! बन् तमीम वालों ने तो नहीं कुबूल की। वो बोले या रसूलुल्लाह (ﷺ)! खुशख़बरी हमने कुबूल की। फिर वो कहने लगे हम इसलिये हाज़िर हुए हैं ताकि आपसे इस (आलम की पैदाइश) का हाल पूछें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला अज़ल से मौजूद था और उसके सिवा कोई चीज़ मौजूद न थी और उसका अर्श पानी पर था। लौहे महफूज़ में उसने हर चीज़ को लिख लिया था। फिर अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया। (अभी ये बातें हो ही रही थीं कि) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि इब्नुल हुसैन! तुम्हारी ऊँटनी भाग गई। मैं उसके पीछे दौड़ा। देखा तो वो सराब की आड़ में है (मेरे और उसके बीच में सराब हाइल है या'नी वो रेती जो धूप में पानी की तरह चमकती है) अल्लाह तआला की क़सम, मेरा दिल बहुत पछताया कि काश, मैंने उसे छोड़ दिया होता (और आँहज़रत ﷺ की हदीस सुनी होती)। (राजेअ: 3190)

خَصَيْنَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَقَلْتُ نَاقِي بِأَبَابٍ. فَأَتَاهُ نَاسٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ فَقَالَ: ((اقْبُلُوا الْبَشْرَى يَا بَنِي تَمِيمٍ)). قَالُوا: قَدْ بَشَرْنَا فَأَعْطِنَا (مَرْتَيْنِ). ثُمَّ دَخَلَ عَلَيْهِ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اقْبُلُوا الْبَشْرَى يَا أَهْلَ الْيَمَنِ إِذْ لَمْ يُقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ)). قَالُوا: قَبَلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالُوا: جِئْنَاكَ نَسْأَلُكَ عَنْ هَذَا الْأَمْرِ. قَالَ: ((كَانَ اللَّهُ وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ غَيْرُهُ. وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ. وَكَتَبَ لِي الدُّكْرُ كُلُّ شَيْءٍ. وَخَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ)). فَنَادَى مُنَادٌ: ذَهَبَتْ نَاقَتُكَ يَا ابْنَ الْحَصَيْنِ. فَاتَّطَلَفْتُ لِإِذَا هِيَ يَقْطَعُ دُونَهَا السَّرَابَ. فَرَأَى اللَّهُ لَوْدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ تَرَكْتُهَا)).

[راجع: 3190]

3192. और ईसा ने रक्बा से रिवायत किया, उन्होंने कैस बिन मुस्लिम से, उन्होंने तारिक बिन शिहाब से, उन्होंने बयान किया कि मैंने उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि एक बार नबी करीम (ﷺ) ने मिम्बर पर खड़े होकर हमें वा'ज़ फ़र्माया और इब्तिदा-ए-ख़ल्क के बारे में हमें ख़बर दी। यहाँ तक कि जब जन्नत वाले अपनी मंज़िलों में दाख़िल हो जाएँगे और जहन्नम वाले अपने ठिकानों को पहुँच जाएँगे (वहाँ तक सारी तफ़्सील को आपने बयान फ़र्माया) जिसे इस हदीस को याद रखना था उसने याद रखा और जिसे भूलना था वो भूल गया।

٣١٩٢- وَرَوَى عِيسَى عَنْ رَقَبَةَ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ: ((سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَامَ لَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا، فَأَخْبَرَنَا عَنْ بَدْءِ الْخَلْقِ حَتَّى دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ مَنَازِلَهُمْ وَأَهْلُ النَّارِ مَنَازِلَهُمْ، حَفِظَ ذَلِكَ مَنْ حَفِظَهُ، وَنَسِيَ مَنْ نَسِيَ)).



इस हदीष से मा'लूम होता है कि अल्लाह के सिवा सब चीजें हादिष और मख्लूक हैं। अर्श, फ़र्श आसमान व ज़मीन सब में इतनी बात है कि अर्श उसका और सब चीजों से पहले वजूद रखता था। मगर हादिष और मख्लूक वो भी है। ग़र्ज इस हदीष से हुकमा का मज़हब बातिल हुआ जो अल्लाह के सिवा मादे और इदराक या'नी अक्ल और आसमान और ज़मीन सब चीजों को कदीम मानते हैं और उन सूफ़िया का भी रद्द होता है जो रूहे इंसानी को मख्लूक नहीं कहते। इस हदीष से मा'लूम हुआ कि अल्लाह ने सबसे पहले पानी को पैदा किया, फिर ज़मीन व आसमान वगैरह वजूद में आए।

3193. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, उनसे अबू अहमद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान शौरी ने उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अउरज ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इब्ने आदम ने मुझे गाली दी और उसके लिये मुनासिब न था कि वो मुझे गाली देता। उसने मुझे झुठलाया और उसके लिये ये भी मुनासिब न था। उसकी गाली ये है कि वो कहता है, मेरा बेटा है और उसका झुठलाना ये है कि वो कहता है कि जिस तरह अल्लाह ने मुझे पहली बार पैदा किया, दोबारा (मौत आने के बाद) वो मुझे ज़िन्दा नहीं कर सकेगा। (दीगर मक़ाम : 4974, 4975)

۳۱۹۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ عَنْ أَبِي أَحْمَدَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ)) «أَرَأَيْتُمْ يَقُولُ اللَّهُ قَالَ: شَتَمَنِي ابْنُ آدَمَ)). وَمَا يَنْبَغِي لِي أَنْ يَشْتُمَنِي وَيَكْذِبَنِي وَمَا يَنْبَغِي لِي أَمَا شَتَمُهُ فَقَوْلُهُ: إِنَّ لِي وَلَدًا. وَأَمَا تَكْذِبُهُ فَقَوْلُهُ: لَيْسَ يُعِيدُنِي كَمَا بَدَأَنِي)). (طرفاء: ۹۱۷۴, ۹۱۷۵)



**तशरीह:** मौत के बाद उखरवी ज़िन्दगी का तसव्वुर वो है जिस पर तमाम अंबिया किराम का इतिफ़ाक़ रहा है, तौरात, जबूर, इंजील, कुर्आन यहाँ तक कि इस मुल्क (हिन्दुस्तान) की मज़हबी किताबों में भी मरने के बाद एक नई ज़िन्दगी का तसव्वुर मौजूद है। उसके बावजूद कुफ़्रान ने हमेशा इस अक्लीदे की तक्ज़ीब की और इसे नामुम्किन करार दिया है और इस पर बहुत से इस्तिहलात पेश करते चले आ रहे हैं जो सब बातिले महज़ और तवह्दुमाते फ़ासिदा है। इस हदीष में इस अक्लीदे पर वज़ाहत की गई है कि आख़िरत की ज़िन्दगी का इन्कार करना अल्लाह पाक को झुठलाना है। जिस अल्लाह ने इंसान को पहला वजूद अत्ता फ़र्माया, उसके लिये इंसान को दोबारा ज़िन्दा करना बर्‍या मुश्किल हो सकता है। ऐसा ही बातिल अक्लीदा ईसाइयों का है जो अल्लाह के लिये इब्नियत प्राबित करते हैं। हालाँकि ये शाने बारी तआला के ऊपर बहुत ही बेहूदा इल्ज़ाम है, वो अल्लाह ऐसे इल्ज़ामात से बरी है और ऐसी बेहूदा बात मुँह से निकालना और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा करार देना बहुत ही बड़ा झूठ है। जो सरासर ग़लत बईद अज़अक्ल व बेहूदगी है। सच है कुल हुवल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम यूल्द व लम यकुल्लहु कुफुवन अहद (इख़लास : 1-4)

3194. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुगीरह बिन अब्दुरहमान कुरशी ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अउरज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह तआला मख्लूक को पैदा कर चुका तो अपनी किताब (लौहे महफूज़) में, जो उसके पास अर्श पर मौजूद है, उसने लिखा कि मेरी रहमत मेरे गुस्से पर ग़ालिब है।

۳۱۹۴- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ مَعِينٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُعِينَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيُّ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَمَّا فَضَى اللَّهُ الْخَلْقَ كَتَبَ لِي كِتَابِهِ، فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ الْعَرْشِ: إِنَّ

(दीगर मक्काम : 7404, 7412, 2413, 7553, 7554)

رَحْمَتِي غَلَبَتْ غَضَبِي. [أطرافه ١]

٧٥٥٣, ٧٤٥٣, ٧٤١٢, ٧٤٠٤

[٧٥٥٤]

**तारीख**

इस हदीस से भी इब्तिदा-ए-खल्क पर रोशनी डालना मकसूद है। सिफाते इलाही के लिये जो अल्फाज़ वारिद हो गये हैं उनकी हकीकत अल्लाह के हवाले करना और ज़ाहिर पर बिला चूँ चरा ईमान लाना यही सलामती का रास्ता है। तीबी ने कहा कि रहमत के गालिब होने में इशारा है कि रहमत के मुस्तहिक्कीन भी ता'दाद के लिहाज़ से ग़ज़ब के मुस्तहिक्कीन पर गालिब रहेंगे, रहमत ऐसे लोगों पर भी होगी जिनसे नेकियाँ का सुदूर ही नहीं हुआ। बरखिलाफ़ उसके ग़ज़ब उन ही लोगों पर होगा जिनसे गुनाहों का सुदूर प्राबित होगा। अल्लाहुम्महम अलेना या अहमर्राहिमीन

बाब 2 :

सात ज़मीनों का बयान

٢- بَابُ مَا جَاءَ فِي سَبْعِ أَرْضِينَ

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

और अल्लाह तआला ने सूरह तलाक़ में फ़र्माया कि अल्लाह तआला ही वो ज़ात है जिसने पैदा किये सात आसमान और आसमान ही की तरह ज़मीनें। अल्लाह तआला के अहकाम उनके दरम्यान उतरते हैं। ये इसलिये ताकि तुमको मा'लूम हो कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को अपने इल्म के ए'तिबार से घेर रखा है और सूरह तूर में वस्सक़फ़ल मफ़ूअ से मुराद आसमान है और सूरह वन् नाज़िआत में जो (रफ़अ समकहा) है समक के मा'नी इमारत की बुनियाद के हैं। और सूरह वज़्ज़ारियात में जो हुबुक का लफ़ज़ आया है उसके मा'नी बराबर होना या'नी हमवार और ख़ूबसूरत होना। सूरह इज़स् समाउन् शक़त में जो लफ़ज़ अज़िनत है उसका मा'नी सुन लिया और मान लिया, और लफ़ज़ अल्क़त का मा'नी जितने मुद्दे उसमें थे उनको निकालकर बाहर डाल दिया, ख़ाली हो गई। और सूरह वन् नाज़िआत में जो साहिर का लफ़ज़ तहाहा है उसके मा'नी बिछाया और सूरह वन् नाज़िआत में जो साहिर का लफ़ज़ है उसके मा'नी रूए ज़मीन के हैं, वहीं जानदार रहते और सोते और जागते हैं।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ، يَتَزَوَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِيَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا [الطلاق: ١٢]. ﴿وَالسَّمَاءِ﴾ ﴿وَسَمَكُهَا﴾: بَنَاءُهَا. كَانَ فِيهَا حَيَوَانٌ ﴿الْحَبْكَ﴾: اسْبِوَاؤُهَا وَحُسْنُهَا. ﴿وَأَوْتَتْ﴾: سَمِعَتْ وَأَطَاعَتْ. ﴿وَأَلْقَتْ﴾: أَخْرَجَتْ مَا فِيهَا مِنَ الْمَوْتَى. ﴿وَوَضَعَتْ﴾ عَنْهُمْ. ﴿طَحَاةً﴾ دَحَاةً. ﴿السَّاهِرَةِ﴾: وَجْهَ الْأَرْضِ، كَانَ فِيهَا الْحَيَوَانُ نَوْمُهُمْ وَسَهَرُهُمْ.

जिनके लिये ज़मीन गोया बिछौना है जो अल्लाह पाक ने खुद बिछा दिया है। जिसके बारे में ये इशदि इलाही भी है मिन्हा खलक्नाकुम व फीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुखिरजुकुम तारतन उख़रा (ताहा : 55) या'नी मैंने तुमको इसी ज़मीन से पैदा किया, और इसी में तुमको लौटा दूंगा और क़यामत के दिन क़ब्रों से तुमको निकालकर मैदाने क़यामत में हाज़िर करूंगा।

नस्से कुआनी से सात आसमानों और उन्ही की तरह सात ज़मीनों का वजूद प्राबित हुआ है। पस जो उनका इंकार करे वो गोया कुआन का इंकारी है। अब सात आसमानों और सात ज़मीनों की बेहद खोज में लगना इंसानी हूदूद इख़्तियारात से आगे तजावुज़ (उल्लंघन) करना है।

तू कारे ज़मीन रांको साख़्ती बआसमाँ नेज़ पर दाख़ती



3195. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन उलथ्या ने खबर दी, उन्हें अली बिन मुबारक ने कहा, उनसे यह्या बिन अबी कबीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिष ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने, उनका एक-दूसरे साहब से एक ज़मीन के बारे में झगड़ा था। वो हज़रत आइशा (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुए और उनसे वाक़िया बयान किया। उन्होंने (जवाब में) फ़र्माया, अबू सलमा! किसी की ज़मीन (के नाहक लेने) से बचो, क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर एक बालिशत के बराबर भी किसी ने (ज़मीन के बारे में) जुल्म किया तो (क्रियामत के दिन) सात ज़मीनों का तौक़ उसे पहनाया जाएगा। (राजेअ: 2453)

3196. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें मूसा बिन इक्बान ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जिसने किसी की ज़मीन में से कुछ नाहक ले लिया, तो क्रियामत के दिन उसे सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा। (राजेअ: 2454)

इन अहदाइष से सात ज़मीनों का धुबूत हासिल हुआ। जिससे ज़ाहिर हुआ कि कुर्आन व हदीष की रोशनी में आसमानों और ज़मीनों का सात सात होना एक अटल हकीकत है।

3197. हमसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब फ़क़री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे अबूबक्र के साहबज़ादे (अब्दुर्रहमान) ने बयान किया और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़माना घूम फिरकर उसी हालत पर आ गया जैसे उस दिन था जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन की पैदाइश की थी। साल बारह महीनों का होता है, चार महीने उसमें से हुरमत के हैं। तीन तो पे दर पे (लगातार)। ज़िक़अदा, ज़िल्हिज्ज और मुहर्रम और (चौथा) रजब मुजर जो जमादिल उख़रा और शाबान के बीच में पड़ता है।

٣١٩٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ غُلَيْثٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ الْمُبَارَكِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - وَكَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَنَسٍ خُصُومَةٌ فِي أَرْضٍ، فَدَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَذَكَرَ لَهَا ذَلِكَ - فَقَالَتْ: يَا أبا سَلَمَةَ اجْتَنِبِ الْأَرْضَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ ظَلَمَ قِدْرَ شِبْرٍ طَوْفَهُ مِنْ سِتْعِ أَرْضِينَ)) [راجع: ٢٤٥٣]

٣١٩٦- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَخَذَ شَيْئًا مِنَ الْأَرْضِ بِغَيْرِ حَقِّهِ خُسِفَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سِتْعِ أَرْضَيْنِ)).

[راجع: ٢٤٥٤]

٣١٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الرَّحْمَنُ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ. السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا، مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ: ثَلَاثَةٌ مُتَوَالِيَاتٌ - ذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ وَالْمَحَرَّمُ - وَرَجَبُ مَضَرَ الَّذِي بَيْنَ جُمَادِي

(राजेअ: 97)

[شُعَبَان: ٦٧]

**तस्हीह**

हुआ ये था कि अरबों की ये भी एक जहालत थी कि वो कभी मुहर्रम को सफ़र कर देते। कहीं अपने अगाराज़े फ़ासिदा के तहत ज़िल्हिज्ज को मुहर्रम बना देते। गर्ज कुल अजीब ख़बल मचा रखा था। आँहज़रत (ﷺ) को अल्लाह पाक ने सहीह महीना बतला दिया। ज़माना के घूम आने से यही मतलब है कि जो असल महीना उस दिन से शुरू हुआ था, जिस दिन उसने ज़मीन आसमान पैदा किये थे। इसी हिसाब से अब सहीह महीना कायम हो गया। उससे कमरी महीनों की फ़ज़ीलत भी प्रबित हुई, जिनसे माह व साल का हिसाब ऐन फ़ितरत के मुताबिक है। जिसका दिन शाम को ख़त्म होता और सुबह से शुरू होता है। उसका महीना कभी तीस दिन का और कभी 29 दिन का होता है। उसका हिसाब हर मुल्क में रूइयते हिलाल पर मौकूफ़ है।

3198. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) ने कि अर्वा बिनते अबी औस से उनका एक (ज़मीन के) बारे में झगड़ा हुआ। जिसके बारे में अरवा कहती थी कि सईद ने मेरी ज़मीन छीन ली। ये मुक़द्दमा ख़लीफ़ा मरवान के यहाँ फैसला के लिये गया जो मदीना का हाकिम था। सईद (रज़ि.) ने कहा भला क्या मैं उनका हक़ दबा लूँगा, मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि जिसने एक बालिशत ज़मीन भी जुल्म से किसी की दबा ली तो क़यामत के दिन सातों ज़मीनों का तौक़ उसकी गर्दन में डाला जाएगा। इब्ने अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, और उनसे सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद था (तब आपने ये हदीष बयान की थी)। (राजेअ: 2452)

٣١٩٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ عُمَرُو بْنِ نُفَيْلٍ أَنَّهُ خَاصَمْتُهُ أَرْوَى - فِي حَقِّ زَعَمَتِ أَنَّهُ انْتَقَصَتْ لَهَا - إِلَى مَرْوَانَ، فَقَالَ سَعِيدٌ: أَنَا أَنْتَقِصُ مِنْ حَقِّهَا شَيْئًا أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَنْ أَخَذَ شَيْئًا مِنَ الْأَرْضِ ظُلْمًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ مَنَعِ أَرْضِيْنِ)). قَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لِي سَعِيدُ بْنُ زَيْدٍ: ((وَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ)).

[راجع: ٢٤٥٢]

### बाब 3 : सितारों का बयान

क़तादा ने (कुर्आन मजीद की इस आयत के बारे में), कि मैंने ज़ीनत दी आसमाने दुनिया को (तारों के) चरागों से कहा कि अल्लाह तआला ने उन सितारों को तीन फ़ायदे के लिये पैदा किया है। उन्हें आसमान की ज़ीनत बनाया, शयातीन पर मारने के लिये बनाया। और (रात की अंधेरियों में) उन्हें सहीह रास्ते पर चलते रहने के लिये निशानात क़रार दिया। पस जिस शख़्स ने उनके सिवा दूसरी बातें कहीं, उसने ग़लती की, अपना हिस्सा तबाह

### ٣- بَابُ فِي النُّجُومِ

وَقَالَ قَتَادَةُ «وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ» [الملك: ٥]: خُلِقَ هَذِهِ النُّجُومُ لِثَلَاثٍ: جَعَلَهَا زِينَةً لِلسَّمَاءِ: وَرَجُومًا لِلشَّيَاطِينِ، وَعَلَامَاتٍ يَهْتَدِي بِهَا، لِمَنْ تَأَوَّلَ لَهَا بِغَيْرِ ذَلِكَ أَخْطَأَ وَأَضَاعَ نَصِيئَهُ وَتَكَلَّفَ مَا لَا عِلْمَ لَهُ بِهِ.

किया (अपना वक्त जाया किया या अपना ईमान खोया) और जो बात ग़ैब की मा'लूम नहीं हो सकती उसको उसने मा'लूम करना चाहा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सूरह कहफ़ में लफ़्ज़ हशीम है उसका मा'नी मवेशियों का चारा। ये लफ़्ज़ सूरह अबस में है और सूरह रहमान में लफ़्ज़ अल अनाम बामा'नी मखलूक है और लफ़्ज़ बरज़ख़ बमा'नी पर्दा है। और मुजाहिद ताबेई ने कहा कि लफ़्ज़ अल्फ़ाफ़ा बमा'नी मुतल्लफ़ा है। उसके मा'नी गहरे लिपटे हुए। अल ग़लब भी बमा'नी अल् मुतल्लफ़ा और लफ़्ज़ फ़िराशा बमा'नी मिहादा है। जैसे अल्लाह तआला ने सूरह बक्रः में फ़र्माया। वलकुम फ़िल् अरज़ि मुस्तकर्र (मुस्तकर्र भी बमा'नी मिहादा है) और सूरह अअराफ़ में जो लफ़्ज़ नकिदा है उसका मा'नी थोड़ा है।

**तशरीह:** हज़रत क़तादा के क़ौल को अब्द बिन हुमैद ने वस्ल किया है। उससे सितारा शनासों (ज्योतिषियों) का रद्द हुआ जो गुमान करते हैं कि सितारों से लोगों पर असर पड़ता है। सच फ़र्माया कि कज़िबलमुन्जिमून व रब्बिल क़अबति का'बा के रब की क़सम नज़्मी झूठे हैं जो सितारों को जुम्ला तावीरात का मालिक बताते हैं।

#### बाब 4 : सूरह रहमान की उस आयत की तफ़्सीर कि सूरज और चाँद दोनों हिसाब से चलते हैं

मुजाहिद ने कहा या'नी चक्की की तरह घूमते हैं और दूसरे लोगों ने यूँ कहा या'नी हिसाब से मुकर्ररह मंजिलों में फ़िरते हैं, ज़्यादा नहीं बढ़ सकते। लफ़्ज़े हुस्बान हिसाब की जमा है। जैसे लफ़्ज़ शिहाब की जमा शहबान है। और सूरह वश् शम्स में जो लफ़्ज़ जुहाहा आया है। जुहा रोशनी को कहते हैं और सूरह यासीन में जो ये आया है कि सूरज चाँद को नहीं पा सकता, या'नी एक की रोशनी दूसरे को मांद नहीं कर सकती न उनको ये बात सज़ावार है और उसी सूरत में जो अल्फ़ाज़ वल्लैलु साबिकुन्नहार हैं उनका मतलब ये कि दिन और रात हर एक-दूसरे के तालिब होकर लपके जा रहे हैं और उसी सूरह में लफ़्ज़ अन्सलखा का मा'नी ये है कि दिन को रात से और रात को दिन से मैं निकाल लेता हूँ और सूरह हाक्का में जो वाहिया का लफ़्ज़ है। वाहिया के मा'नी फट जाना, और उसी सूरत में जो ये है (वल मलकु अला अरजाइहा) या'नी फ़रिश्ते आसमानों के किनारों पर होंगे जब तक वो फटेंगे नहीं। जैसे कहते हैं वो कुँए के किनारे पर है और वन्नाज़िआत में जो लफ़्ज़ व अतशा और सूरह

#### 4 - بَابُ صِفَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ

بِحُسْبَانٍ

قَالَ مُجَاهِدٌ كَحُسْبَانِ  
الرُّوحِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: بِحَسَابٍ وَمَنَازِلٍ لَا  
يَغْدُوَانِيهَا. حُسْبَانٌ: جَمَاعَةُ الْحِسَابِ،  
مِثْلُ شِهَابٍ وَشَهْبَانٍ. ضَوْأُهَا: ضَوْؤُهَا.  
أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ: لَا يَسْتُرُ ضَوْءُ أَحَدِهِمَا  
ضَوْءَ الْآخَرِ، وَلَا يَنْبَغِي لَهُمَا ذَلِكَ. سَابِقُ  
النَّهَارِ: يُطَاقَانِ خَيْشَانٌ. نَسْلَخُ: نُخْرِجُ  
أَحَدَهُمَا مِنَ الْآخَرِ، وَنُجْرِي كُلَّ وَاحِدٍ  
مِنْهُمَا: وَاهِيَةً. وَهِيَ تَشَقُّقُهَا. أَرْجَانِيهَا:  
مَا لَمْ يَنْشَقْ مِنْهَا، فَهِيَ عَلَى خَافَتَيْهَا  
كَقَوْلِكَ: عَلَى أَرْجَاءِ الْبَيْتِ. أَغْطَشَ وَجْهُ:  
أَظْلَمَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: كُوِّرَتْ كُكُورُ  
حَتَّى يَذْهَبَ ضَوْؤُهَا. وَاللَّيْلُ وَمَا وَسَقَ:

अन्आम में लफ़्ज़ जन्मा है उनके मा'नी अंधेरी के हैं। या'नी अंधियारी की और अंधियारी हुई और इमाम हसन बसरी ने कहा कि सूरह इजशशम्सु में कुव्विरत का जो लफ़्ज़ है उसका मा'नी ये है जब लपेट कर तारीक कर दिया जाएगा और सूरह अन्शक्रत में जो वमा वसक का लफ़्ज़ है उसके मा'नी जो इकट्ठा करे। उसी सूरह में इत्तसक का मा'नी सीधा हुआ और सूरह फ़ुर्कान में जो बुरूजा का लफ़्ज़ है। बुरूज सूरज और चाँद की मंजिलों को कहते हैं और सूरह फ़ातिर में जो हुरुर का लफ़्ज़ है। उसके मा'नी धूप की गर्मी के हैं। और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, हुरुर रात की गर्मी और समूम दिन की गर्मी। और सूरह फ़ातिर में जो यूलिजु का लफ़्ज़ है उसके मा'नी लपेटता है अंदर दाखिल करता है। और सूरह तौबा में जो वलीजतु का लफ़्ज़ है उसके मा'नी अंदर घुसा हुआ या'नी राजदार दोस्त।

3199. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ब़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके बाप यज़ीद बिन शुरैक ने और उनसे अबू जर ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने, जब सूरह गुरुब हुआ तो उनसे पूछा कि तुमको मा'लूम है ये सूरज कहाँ जाता है? मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह व उसके रसूल ही को इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये जाता है और अर्श के नीचे पहुँचकर पहले सज्दा करता है। फिर (दोबारा आने की) इजाज़त चाहता है और उसे इजाज़त दी जाती है और वो दिन भी करीब है, जब ये सज्दा करेगा तो उसका सज्दा कुबूल न होगा और इजाज़त चाहेगा लेकिन इजाज़त न मिलेगी बल्कि उससे कहा जाएगा कि जहाँ से आया था वहीं वापस चला जा। चुनौचे उस दिन वो मरिब ही से निकलेगा। अल्लाह तआला के फ़र्मान वशशम्सु तज्रि लिमुस्तक़रिल्लहा ज़ालिक तव्दीरुल अज़ीज़िल् अलीम (यासीन : 38) में इसी तरफ़ इशारा है।

(दीगर मक़ाम : 4802, 4803, 7424, 7433)

جَمَعَ مِنْ دَائِبَةٍ. اتَّسَقَ : اسْتَوَى. بَرُوجًا :  
مَنَازِلَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ. الْحُرُورُ بِالنَّهَارِ  
مَعَ الشَّمْسِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : الْحُرُورُ  
بِاللَّيْلِ، وَالسُّمُومُ بِالنَّهَارِ. يَقَالُ : يُولِجُ  
يُكَوِّرُ وَنَاجِدَةً، كُلُّ شَيْءٍ أَدْخَلَتْهُ فِي شَيْءٍ.

3199- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ  
حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ  
التَّمِيمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَبِي ذَرٍّ حِينَ غَرَبَتِ  
الشَّمْسُ : ((أَتَذَرِي أَنِّي تَلْهَبُ؟)) قُلْتُ:  
اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: ((فَإِنَّهَا تَلْهَبُ  
حَتَّى تَسْجُدَ تَحْتَ الْعَرْشِ، فَتَسْتَأْذِنُ  
فَيُؤْذَنُ لَهَا، وَتُوشِكُ أَنْ تَسْجُدَ فَلَا يَقْبَلُ  
مِنْهَا، وَتَسْتَأْذِنُ فَلَا يُؤْذَنُ لَهَا، فَيَقَالُ لَهَا:  
ارْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ، فَتَطْلُعُ مِنْ  
مَقَرِّبِهَا)). فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: هُوَ وَالشَّمْسُ  
تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا، ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ  
الْعَلِيمِ [يس: 38]. [أطرافه في:

[٧٤٣٣، ٧٤٢٤، ٤٨٠٣، ٤٨٠٢]

**तरीह:**

इस हदीष में मुंकिरीने हदीष ने कई अंदेशे पैदा किये हैं, एक ये कि सूरज ज़मीन के नीचे जाता है न अर्श के नीचे। और दूसरी रिवायत में ये मजूम मौजूद है तरुबु फी औनिन् हमिअतिन् दूसरे ये कि ज़मीन और आसमान गोल हैं तो सूरज हर वक़्त अर्श के नीचे है। फिर ख़ास गुरुब के वक़्त जाना क्या मा'नी? तीसरे सूरज एक बेरूह और बे अक्ल जिस्म है उसका सज़्दा करना और उसको इज़ाज़त होने के क्या मा'नी? चौथे अक़्बर हकीमों ने मुशाहिदे से मा'लूम किया है कि ज़मीन मुतहरिक (गतिमान) और सूरज साकिन (स्थिर) है तो सूरज के चलने के क्या मा'नी?

पहले इश्काल का जवाब ये है कि जब ज़मीन करवी हुई तो हर तरह से अर्श के नीचे हुई इसलिये गुरुब के वक़्त ये कह सकते हैं कि सूरज ज़मीन के नीचे गया और अर्श के नीचे गया। दूसरे इश्काल का जवाब ये है कि बेशक हर नुक़्ते और हर मुक़ाम पर सूरज अर्श के नीचे है और वो हर वक़्त अपने मालिक के लिये सज़्दा कर रहा है और उससे आगे बढ़ने की इज़ाज़त मांग रहा है लेकिन चूँकि हर मुल्क वालों का मरिब और मशरूक़ मुख़्तलिफ़ है इसलिये तुलूअ और गुरुब के वक़्त को ख़ास किया। तीसरे इश्काल का जवाब ये है कि ये कहाँ से मा'लूम हुआ कि सूरज बेजान और बेअक्ल है। बहुत सी आयात व अह्दादीष से सूरज और चाँद और ज़मीन और आसमान सबका अपने अपने दर्जा में साहिबे रूह होना प्राबित है। चौथे इश्काल का जवाब ये है कि बहुत से हकीम इस अम्र के भी काइल हैं कि ज़मीन साकिन (स्थिर) है और सूरज उसके गिर्द घूमता है और इस बारे में तरफ़ैन् (पक्षकारों) के दलाइल मुतआरिज़ है और ज़ाहिर कुआन् व हदीष से तो सूरज और चाँद और तारों ही की हरकत निकलती है। (मुख़्तसर अज़ वहीदी)

आयते शरीफ़ा, वशशम्सु तजरीलिमुस्तकरिल्लहा (यासीन 38) में मुस्तकर से मुराद बक्रा-ए-आलम का इकिताअ है या'नी इला इन्किताइ बक्राइ मुहतिलआलमि व अम्मा कौलुहु मुस्तकरुल्लहा तहतलअर्शि फला युन्करू अंध्यकून लहा इस्तिवराउन तहतलअर्शि मिन हैषु ला नुदरिकुहू व ला नुशाहिदुहू व इन्मा अख़बर अन ग़ाबिन फला नुकज़िबुहू व ला नकीफुहू लिअन्न इल्मना ला युहीतु बिही इन्तिहा कलामुतीबी

3200. हमसे मुसइद बिन मुसहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन फ़िरोज़ दानाज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे अबू हरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन सूरज और चाँद दोनों तारीक (बेनूर) हो जाएँगे।

۳۲۰۰- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ  
الْقَزِيزِ بْنُ الْمُخْتَارِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ  
الدَّنَاجُ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ  
الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الشمس والقمر  
مَكْرُورانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

3201. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अम्र बिन हारिष ने ख़बर दी, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके बाप क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया। वो नबी करीम (ﷺ) से नक़ल करते थे कि आपने फ़र्माया कि सूरज और चाँद मे किसी की मौत व हयात की वजह से ग्रहण नहीं लगता। बल्कि ये अल्लाह तआला की निशानियों में से एक निशानी है।

۳۲۰۱- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَلَمَانَ قَالَ:  
حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ  
عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ  
عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا  
أَنَّهُ كَانَ يُخْبِرُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ  
الشمس والقمر لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ  
وَلَا لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ

इसलिये जब तुम उनको देखो तो नमाज़ पढ़ा करो। (राजेअ : 1042)

اللَّهُ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَصَلُّوا))

[रअ: १०४२]

3202. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अत्ताअ बिन यसार ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरज और चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं किसी की मौत व ज़िन्दगी से उनमें ग्रहण नहीं लगता। इसलिये जब तुम ग्रहण देखो तो अल्लाह की याद में लग जाया करो।

۳۲۰۲- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ غَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتٍ أَوْ حَيَاتٍ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَادْكُرُوا اللَّهَ)).

क्योंकि ये सारे इंकिलाबात कुदरते इलाही के तहत होते रहते हैं पस ऐसे मौकों पर खुसूसियत के साथ अल्लाह को याद करना और नमाज़ पढ़ना ईमान की तरक्की का ज़रिया है।

3203. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैप्र बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उर्बा ने खबर दी, और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने खबर दी कि जिस दिन सूरज ग्रहण लगा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) (मुसल्ले पर) खड़े हुए। अल्लाहु अकबर कहा और बड़ी देर तक किरात करते रहे। फिर आप (ﷺ) ने रुकूअ किया, एक बहुत लम्बा रुकूअ, फिर सर उठाकर समिअल्लाहुलिमन हमिदा कहा और पहले की तरह खड़े हो गये। इस क़याम में भी लम्बी किरात की। अगरचे पहली किरात से कम थी और फिर रुकूअ में चले गये और देर तक रुकूअ में रहे, अगरचे पहले रुकूअ से ये कम था। उसके बाद सज्दा किया, एक लम्बा सज्दा, दूसरी रकअत में भी आप (ﷺ) ने इसी तरह किया और उसके बाद सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। अब आप (ﷺ) ने सहाबा को खिताब किया और सूरज और चाँद ग्रहण के बारे में बतलाया कि ये अल्लाह तआला की निशानियों में से निशानी हैं और उनमें किसी की मौत व हयात की वजह से ग्रहण नहीं लगता, इसलिये जब तुम ग्रहण देखो तो फौरन नमाज़ की तरफ लपक जाओ।

۳۲۰۳- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرْتَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ قَامَ فَكَبَّرَ وَقَرَأَ قِرَاءَةً طَوِيلَةً، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، وَقَامَ كَمَا هُوَ فَقَرَأَ قِرَاءَةً طَوِيلَةً وَهِيَ أَذْنَى مِنَ الْقِرَاءَةِ الْأُولَى، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهِيَ أَذْنَى مِنَ الرُّكُوعَةِ الْأُولَى، ثُمَّ سَجَدَ سُجُودًا طَوِيلًا، ثُمَّ فَعَلَ فِي الرُّكُوعَةِ الْآخِرَةِ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ سَلَّمَ وَقَدْ تَجَلَّتِ الشَّمْسُ، فَخَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ فِي كُشُوفِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ: ((إِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتٍ أَوْ حَيَاتٍ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَادْكُرُوا اللَّهَ إِلَى

(राजेअ : 1044)

[[الصلاة: 1044]]

आज चाँद और सूरज के ग्रहण की जो वजह बयान की जाती हैं वो भी शाने कुदरत ही के मज़ाहिर हैं, लिहाज़ा हदीषे सहीहा और कुआन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

3204. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया और उनसे अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरज और चाँद में किसी की मौत व हयात पर ग्रहण नहीं लगता। बल्कि ये अल्लाह की निशानियों में से निशानी हैं इसलिये जब तुम उनमें ग्रहण देखो तो नमाज़ पढ़ो। (राजेअ : 1941)

۳۲۰۴ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ : حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الشمس والقمر لا ينكسفان لموت أحدٍ ولا لحياة، ولكنهما آياتان من آيات الله، فإذا رأيتموهما فصلوا)). [راجع: 1941]

**तशीह** इन तमाम अह्दादीष में किसी न किसी तरह से चाँद और सूरज का जिक्र आया है इसलिये उनको यहाँ नकल किया गया है। उनके बारे में जो कुछ जुबाने रिसालत मआब (ﷺ) से मन्कूल हुआ उससे आगे बढ़कर बोलना मुसलमान के लिये रवा नहीं है। आज के हालात ने चाँद और सूरज के वजूद को मज़ीद वाज़ेह कर दिया है।

अल्लाह तआला ने कुआन मज़ीद में फ़र्माया कि **لَا تَسْجُدْ لِيْشَاشِمِيسَ وَ لَا لَلِلكَمَرِ** (हामीम अस्सज्दा: 37) या'नी चाँद और सूरज को सज्दा न करो, ये तो अल्लाह पाक की पैदा की हुई मखलूक हैं। सज्दा करने के क़ाबिल सिर्फ़ अल्लाह है जिसने इन सबको वजूद बाख़शा।

चाँद पर जाने के दावेदार ने जो कुछ बतलाया है उससे भी कुआन पाक की तस्दीक होती है कि चाँद भी दीगर मखलूक़ात की तरह एक मखलूक है वो कोई देवी देवता या मा फ़ौक़ल मखलूक़ कोई और चीज़ नहीं है।

**बाब 5 : अल्लाह पाक का सूरह अआफ़ में ये इशार्द कि, वो अल्लाह तआला ही है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले खुशख़बरी देने वाली हवाओं को भेजता है**

۵ - بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى :

﴿وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ﴾ [الأعراف : ۵۷]

सूरह बनी इस्राईल में क़ासिफ़ा का जो लफ़्ज़ है उसके मा'नी सख़्त हवा जो हर चीज़ को रौंद डाले। सूरह हज्ज में जो लफ़्ज़ लवाक़ेह है उसके मा'नी मलाक़ेह जो मल्क़हा की जमा है या'नी हामिला कर देने वाली। सूरह बक्रः में जो इअसार का लफ़्ज़ है तो इअसार बगोले को कहते हैं जो ज़मीन से आसमान तक एक सतून की तरह है। उसमें आग होती है। सूरह आले इमरान में जो सिरा का लफ़्ज़ है उसके मा'नी पाला (सर्दी) नुशूरा के मा'नी जुदा जुदा।

فَاصِفًا : تَقْصِيفُ كُلِّ شَيْءٍ. لَوَاقِحُ : مَلَأَحَ مَلْفَحَةً. إِعْصَارٌ : رِيحٌ غَاصِفَةٌ تَهْبُ مِنْ الْأَرْضِ إِلَى السَّمَاءِ كَعَمُودٍ فِيهِ نَارٌ. صِرٌّ : بُرْدٌ. نَشْرًا. مُتَفَرِّقَةٌ.

सहीह ये है कि लवाक़ेह लाक़िहतुन की जमा या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए चलती हैं। आयते करीमा व हुवल्लज़ी युर्सिलुरियाह बुशरन बैन यदैय रहमतिही (अल आराफ़ : 57) में लफ़्ज़ बुशरा की जगह नुशरा पढ़ा है या'नी हर तरफ़ से

जुदा चलने वाली हवाएँ लवाकिह लाकिंतुन की जमा है या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए हुए चलती हैं गोया हामला हैं। मौलाना जमालुद्दीन अफगानी कहते हैं कि हामला करने वाली हवा का मा'नी उसूल नबातात की रू से ठीक है क्योंकि इल्मे नबातात में प्राबित हुआ है कि हवा नर पेड़ का मादा उड़ाकर मादा पेड़ पर ले जाती है। इस वजह से पेड़ खूब फलता फूलता है गोया हवा दरख्तों को हामला करती है। तहकीकात से भी यही मुशाहिदा हुआ है।

3205. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बादे मबा (मशरिकी हवा) के ज़रिया मेरी मदद की गई और क्रौमे आद, बादे दबूर (मशरबी हवा) से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ: 1035)

3206. हमसे मक़ी बिन इब्राहिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अत्ता ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बादल का कोई ऐसा टुकड़ा देखते जिससे बारिश की उम्मीद होती तो आप कभी आगे आते, कभी पीछे जाते, कभी घर के अंदर तशरीफ़ लाते, कभी बाहर आ जाते और चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल जाता लेकिन जब बारिश होने लगती तो फिर ये कैफ़ियत बाक़ी न रहती। एक बार हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उसके बारे में आपसे पूछा। तो आपने फ़र्माया। मैं नहीं जानता मुम्किन है ये बादल भी वैसा ही हो जिसके बारे में क्रौमे आद ने कहा था, जब उन्होंने बादल को अपनी वादियों की तरफ़ आते देखा था। आख़िर आयत तक (कि उनके लिये रहमत का बादल आया है, हालाँकि वो अज़ाब का बादल था)। (दीगर मक़ाम: 4829)



हवा भी अल्लाह की एक मख़लूक है जो मुख़्तलिफ़ तासीर रखती है और मख़लूकात की ज़िन्दगी में जिसका कुदरत ने बड़ा देखल रखा है। क्रौमे आद पर अल्लाह ने क़द्दत का अज़ाब नाज़िल किया। उन्होंने अपने कुछ लोगों को मक्का शरीफ़ भेजा कि वहाँ जाकर बारिश की दुआ करें। मगर वहाँ वो लोग ऐश व इशरत में पड़कर दुआ करना भूल गये इधर क्रौम की बस्तियों पर बादल छाये। क्रौम ने समझा कि ये हमारे उन आदमियों की दुआओं का अघर है। मगर उस बादल ने अज़ाब की शक़ल इख़्तियार करके उस क्रौम को तबाह कर दिया।

## बाब 6 : फ़रिश्तों का बयान

## ٦- بَابُ ذِكْرِ الْمَلَائِكَةِ

मिन जुम्ला उसूलै ईमान में एक ये भी है कि अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाए। वो अल्लाह के मुअज़्ज़ बन्दे हैं। उनके जिस्म लतीफ़ हैं वो हर शक़ल में जाहिर हो सकते हैं। वो सब नेक और अल्लाह के ताबेदार बन्दे हैं। फ़रिश्तों का इन्कार करना कुफ़्र है। उनके वजूद पर तमाम कुतुबे आसमानी व अंबिया-ए-किराम का इतिफ़ाक़ है।

क़ाल जुम्हुरू अहलिल्क़लामि मिनल्मुस्लिमीन अल्मलाइकतु अज्सा मुन लतीफ़तुन उअतीयत कुदरतुन अलत्तशक्वुलि बिअश्कालिन मुख़्तलिफ़तिन व मसाकिनुहा अस्समावात व अब्दलमन क़ाल इन्नहल्क़वाकिबु औ इन्नहल्अन्फ़सुल्खैरतुल्लती फ़ारक़त अज्सादहा व ग़ैरहू ज़ालिक मिनल्अक़्वालिल्लती ला यूजदु



फिल्अदिल्लतिस्समइय्यति शैउम्मिन्हा (फतुल बारी)

या'नी जुम्ला अहले कलाम मुस्लिमीन का ये कौल है कि फ़रिश्ते अज्जामे लतीफ़ा हैं जिनको ये कुदरत दी गई है कि वो मुख्तलिफ़ शक्लें इख्तियार करने की कुदरत रखते हैं। (जो उनको अल्लाह की तरफ़ से मिली हुई है) उनका मस्कन (ठिकाना) आसमान है और जिन लोगों ने कहा कि फ़रिश्तों से तारे मुराद हैं या वो अच्छी रूहें जो अपने जिस्मों से जुदा हो चुकी हैं, मुराद हैं। ये सारे क़ौल बातिल हैं जिनकी दलील किताब व सुन्नत से नहीं है।

हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम को यहूदी फ़रिश्तों में से अपना दुश्मन समझते हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने सूरह वसूसाफ़फ़ात में बयान किया कि लनहननुस्साफ़फ़ून में मुराद मलायका हैं।

**तशरीह :** यहूदी अपनी जिहालत से जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को अपना दुश्मन समझते और कहते थे कि हमारे राज़ की बातें वही आँहज़रत (ﷺ) से कह जाता है या ये कि ये हमेशा अज़ाब ही लेकर उतरता है। उस अषर को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने बाबुल हुज्रा में वस्ल किया है। लनहननुस्साफ़फ़ून फ़रिश्तों की जुबान से नक़ल किया कि हम क़तार बाँधने वाले अल्लाह की पाकी बयान करने वाले हैं। इस अषर को तबरानी ने वस्ल किया है।

3207. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्मा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने (दूसरी सनद) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा और हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे मालिक बिन सअसआ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। मैं एक दफ़ा बैतुल्लाह के करीब नौंद और बेदारी के बीच की हालत में था। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने दो आदमियों के दरम्यान लेटे हुए एक तीसरे आदमी का ज़िक्र फ़र्माया। उसके बाद मेरे पास सोने का एक त़श्त लाया गया, जो हिक्मत और ईमान से भर दिया गया। उसके बाद मेरे पास एक सवारी लाई गई। सफ़ेद, ख़च्चर से छोटी और गधे से बड़ी या'नी बुराक़, मैं उस पर सवार होकर जिब्रईल (अलै.) के साथ चला। जब हम आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो पूछा गया किये कौन साहब हैं? उन्होंने कहा कि जिब्रईल। पूछा गया कि आपके साथ और कौन साहब आए हैं? उन्होंने बताया कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा गया कि क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? उन्होंने कहा

۳۲۰۷ - حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَامٌ عَنْ قَتَادَةَ. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ وَهَشَامٌ قَالَا: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَفْصَعَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا عِنْدَ النَّبِيِّ بَيْنَ النَّائِمِ وَالْقِطْطَانِ - وَذَكَرَ يَغْنِي رَجُلًا بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ - فَأَتَيْتُ بِطَبَسٍ مِنْ ذَقَبٍ مَلِيءٍ حِكْمَةً وَإِيمَانًا. فَشَقُّ مِنْ النَّحْرِ إِلَى مَرَاقِ الْبَطْنِ، ثُمَّ غَسِيلُ الْبَطْنِ بِمَاءٍ زَمْزَمَ، ثُمَّ مَلِئُهُ حِكْمَةً وَإِيمَانًا. وَأَتَيْتُ بِدَابَّةٍ أَتَيْتُ دُونَ الْبَعْلِ وَفَوْقَ الْحِمَارِ الْبَرَقِ، فَأَنْطَلَقْتُ مَعَ جِبْرِيلَ، حَتَّى أَتَيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ. قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَيَغْمُ الْمَعْجِئُ جَاءَ.

कि हाँ उस पर जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आने वाले क्या ही मुबारक हैं, फिर मैं आदम (अलैहिस्सलाम) की खिदमत में हाज़िर हुआ और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, आओ प्यारे बेटे और अच्छे नबी। उसके बाद हम दूसरे आसमान पर पहुँचे यहाँ भी वही सवाल हुआ। कौन साहब हैं? कहा कि जिब्रईल (अलै.), सवाल हुआ, आपके साथ कोई और साहब भी आए हैं? कहा कि मुहम्मद (ﷺ), सवाल हुआ, उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? कहा कि हाँ। अब इधर से जवाब आया, अच्छी कुशादा जगह आए हैं, आने वाले क्या ही मुबारक हैं। उसके बाद मैं ईसा और यह्या (अलैहिस्सलाम) से मिला, उन हज़रात ने भी खुश आमदीद, मरहबा कहा अपने भाई और नबी को। फिर हम तीसरे आसमान पर आए यहाँ भी सवाल हुआ कौन साहब हैं? जवाब मिला जिब्रईल, सवाल हुआ, आपके साथ भी कोई है? कहा कि मुहम्मद (ﷺ), सवाल हुआ, उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? उन्होंने बताया कि हाँ, अब आवाज़ आई अच्छी कुशादा जगह आए आने वाले क्या ही सालेह हैं, यहाँ यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) से मैं मिला और उन्हें सलाम किया, उन्होंने फ़र्माया, अच्छी कुशादा जगह आए हो मेरे भाई और नबी, यहाँ से हम चौथे आसमान पर आए उस पर भी यही सवाल हुआ, कौन साहब, जवाब दिया कि जिब्रईल, सवाल हुआ, आपके साथ और कौन साहब हैं? कहा कि मुहम्मद (ﷺ) हैं। पूछा क्या उन्हें लाने के लिये आपको भेजा गया था, जवाब दिया कि हाँ, फिर आवाज़ आई, अच्छी कुशादा जगह आए क्या ही अच्छे आने वाले हैं। यहाँ मैं इदरीस (अलैहिस्सलाम) से मिला और सलाम किया, उन्होंने फ़र्माया, मरहबा, भाई और नबी। यहाँ से हम पाँचवें आसमान पर आए। यहाँ भी सवाल हुआ कि कौन साहब? जवाब दिया कि जिब्रईल, पूछा गया और आपके साथ और कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा गया, उन्हें बुलाने के लिये भेजा गया था? कहा कि हाँ, आवाज़ आई, अच्छी कुशादा जगह आए हैं। आने वाले क्या ही अच्छे हैं। यहाँ हम हासून (अलैहिस्सलाम) से मिले और मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, मुबारक, मेरे भाई और नबी, तुम अच्छी

فَأَتَيْتُ عَلَى آدَمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ ابْنِ وَنِيِّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ. قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قِيلَ: وَلَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ. قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَيَعْمُ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ عَلَى عِيسَى وَمُحْسَى، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخِ وَنِيِّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الثَّالِثَةَ. قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَلَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَيَعْمُ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ يُوسُفَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخِ وَنِيِّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الرَّابِعَةَ، قِيلَ مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ ﷺ. قِيلَ: وَلَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَيَعْمُ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْتُ عَلَى إِدْرِيسَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخِ وَنِيِّ. فَأَتَيْنَا السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَلَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، وَلَيَعْمُ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَأَتَيْنَا عَلَى هَارُونَ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخِ وَنِيِّ. فَأَتَيْنَا عَلَى السَّمَاءِ السَّادِسَةِ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَلَقَدْ

कुशादा जगह आए, यहाँ से हम छठे आसमान पर आए, यहाँ भी सवाल हुआ, कौन साहब? जवाब दिया कि जिब्रईल, पूछा गया, आपके साथ और कोई है? कहा कि, हाँ मुहम्मद (ﷺ) हैं, पूछा गया, क्या उन्हें बुलाया गया था कहा हाँ, कहा अच्छी कुशादा जगह आए हैं, अच्छे आने वाले हैं। यहाँ मैं मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, मेरे भाई और नबी अच्छी कुशादा जगह आए, जब मैं वहाँ से आगे बढ़ने लगा तो वो रोने लगे किसी ने पूछा, बुजुर्गवार आप क्यूँ रो रहे हैं? उन्होंने फ़र्माया, कि ऐ अल्लाह! ये नौजवान जिसे मेरे बाद नुबुव्वत दी गई, उसकी उम्मत में से जन्नत में दाखिल होने वाले, मेरी उम्मत के जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों से ज़्यादा होंगे। उसके बाद हम सातवें आसमान पर आए, यहाँ भी सवाल हुआ कि कौन साहब हैं? जवाब दिया कि जिब्रईल, सवाल हुआ कि कोई साहब आपके साथ भी हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा, उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? मरहबा, अच्छे आने वाले। यहाँ मैं इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़र्माया, मेरे बेटे और नबी, मुबारक, अच्छी कुशादा जगह आए हो, उसके बाद मुझे बैतुल मअमूर दिखाया गया। मैंने जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से उसके बारे में पूछा, तो उन्होंने बतलाया कि ये बैतुल मअमूर है। उसमें सत्तर हजार फ़रिश्ते रोज़ाना नमाज़ पढ़ते हैं और एक बार जो पढ़कर उससे निकल जाता है तो फिर कभी दाखिल नहीं होता। और मुझे सिदरतुल मुन्तहा भी दिखाया गया, उसके फल ऐसे थे जैसे मक्कामे हिज्र के मटके होते हैं और पत्ते ऐसे थे जैसे हाथी के कान, उसकी जड़ से चार नहरें निकलती थीं, दो नहरें तो बातिनी थीं और दो ज़ाहिरी, मैंने जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से पूछा तो उन्होंने बताया कि जो दो बातिनी नहरें हैं वो तो जन्नत में हैं और दो ज़ाहिरी नहरें दुनिया में नील और फ़रात हैं। उसके बाद मुझ पर पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई। मैं जब वापस हुआ और मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिला तो उन्होंने पूछा कि क्या करके आए हो? मैंने अर्ज़ किया कि पचास नमाज़ें मुझ पर फ़र्ज़ की गई हैं। उन्होंने कहा कि इंसानों को मैं तुमसे

أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ مَرْحَبًا بِهِ، وَلَبَّغَ الْمَجِيءَ خَاءً. فَأَتَيْتُ عَلَى مُوسَى فَسَلَّمْتُ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَلَمَّا جَاوَزْتُ بَنِي إِفْرَاقَ: مَا أَبْكَاكُ؟ قَالَ: يَا رَبِّ، هَذَا الْفُلَامُ الَّذِي بَعَثَ بَعْدِي يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أَمْرِ أَفْضَلُ مِنِّي يَدْخُلُ مِنْ أَمْرِي. فَأَتَيْتُ السَّمَاءَ السَّابِعَةَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قِيلَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيلَ: مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ مَرْحَبًا بِهِ وَلَبَّغَ الْمَجِيءَ جَاءً. فَأَتَيْتُ عَلَى إِبْرَاهِيمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ ابْنِ وَنَبِيٍّ. فَرَفَعَ لِي الْبَيْتُ الْمَغْمُورُ، فَسَأَلْتُ جِبْرِيلَ فَقَالَ: هَذَا بَيْتُ الْمَغْمُورِ، يُصَلِّي فِيهِ كُلُّ يَوْمٍ سِتُّونَ أَلْفَ مَلَكٍ، إِذَا خَرَجُوا لَمْ يَبُودُوا إِلَيْهِ آخِرَ مَا عَلَيْهِمْ. وَرَفَعْتُ لِي سِدْرَةَ الْمُنْتَهَى، لِإِذَا نَبَقَهَا كَأَنَّهُ قِلَافٌ مَجْرٍ. وَوَرَفَقَهَا كَأَنَّهُ آذَانُ الْفِيلِ، لِي أَصْلُهَا أَرْبَعَةُ أَهْوَارٍ: نَهْرَانِ بَاطِنَانِ وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ. فَسَأَلْتُ جِبْرِيلَ فَقَالَ: أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَفِي الْجَنَّةِ، وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ: النَّيْلُ وَالْفَرَاتُ. ثُمَّ فَرَضْتُ عَلَى خَمْسُونَ صَلَاةً، فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جِئْتُ مُوسَى فَقَالَ: مَا صَنَعْتَ؟ قُلْتُ: فَرَضْتُ عَلَى خَمْسُونَ صَلَاةً. قَالَ أَنَا أَعْلَمُ بِالنَّاسِ مِنْكَ، غَالَجْتُ بَيْنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ، وَإِنْ أَمْنَكَ لَا تَطِيقُ، فَارْجِعْ

ज्यादा जानता हूँ, बनी इस्राईल का मुझे बड़ा तजुर्बा हो चुका है। तुम्हारी उम्मत भी इतनी नमाज़ों की ताकत नहीं रखती, इसलिये अपने रब की बारगाह में दोबारा हाज़िरी दो। और कुछ कमी की दरख्वास्त करो। मैं वापस हुआ तो अल्लाह तआला ने नमाज़ें चालीस वक़्त की कर दीं। फिर भी मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी बात (या'नी तख़फ़ीफ़ कराने) पर इसरार करते रहे। इस बार तीस वक़्त की रह गई। फिर उन्होंने वही फ़र्माया तो अब बीस वक़्त की अल्लाह तआला ने कर दीं। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने वही फ़र्माया और इस बार बारगो रब्बुल इज़्जत में मेरी दरख्वास्त की पेशी पर अल्लाह तआला ने उन्हें दस कर दिया। मैं जब मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आया तो अब भी उन्होंने कम कराने के लिये अपना इसरार जारी रखा। और इस बार अल्लाह तआला ने पाँच वक़्त की कर दीं। अब मैं मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिला, तो उन्होंने फिर दरयाफ़्त किया कि क्या हुआ? मैंने कहा कि अल्लाह तआला ने पाँच कर दी हैं। इस बार भी उन्होंने कम कराने का इसरार किया। मैंने कहा कि अब तो मैं अल्लाह तआला के सुपुर्द कर चुका। फिर आवाज़ आई। मैंने अपना फ़रीज़ा (पाँच नमाज़ों का) जारी कर दिया। अपने बन्दों पर तख़फ़ीफ़ कर चुका और मैं एक नेकी का बदला दस गुना देता हूँ। और हम्माम ने कहा, उनसे क़तादा ने, उनसे हसन ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बैतुल मअमूर के बारे में अलग रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 3393, 3430, 3887)

**तशरीह :** ये तवील हदीष मेअराज के वाक़िये से मुता'ल्लिक है। इमाम बुखारी (रह.) उसको यहाँ इसलिये लाए कि इसमें फ़रिश्तों का ज़िक्र है और ये फ़रिश्ते बेशुमार हैं। दूसरी हदीष में है कि आसमान में बालिशत भर जगह ख़ाली नहीं जहाँ एक फ़रिश्ता अल्लाह के लिये सज़्दा न कर रहा हो।

मेअराज का आगाज़ हत्तीम से हुआ। जहाँ नबी अकरम (ﷺ) हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) और हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के दरम्यान सोये हुए थे। वहाँ से आपका ये मुबारक सफ़र बुराक के ज़रिये शुरू हुआ, जो बर्क़ बमा'नी बिजली से मुश्तक़ है। मेअराज बरहक़ है उसका मुकिर गुमराह और ख़ात्री (ख़ताकार) है। तफ़सील के लिये कुतुबे शुरूह मुलाहिज़ा हों।

क़ालल्काज़ी अयाज़ इख़्तलफ़ फ़िल्इस्माइलस्समावाति फ़कील अन्नहू फिल्मनामि वल्हक्कुल्लजी अलैहिल्जुम्हूरु अन्नहू अस्त्रा बिजसदिही फ़इन क़ील बैनन्नाइमि वल् यक्ज़ान यदुल्लु अला अन्नहू रुया नौमिन कुल्ना ला हुज्जत फीहि इज़ क़द यकूनु ज़ालिक हाल अव्वलि वुसूलिल्मुल्कि इलैहि व लैस फीहि यदुल्लु अला कौनिही फ़इनमा जी अल्किस्सतु कुल्लुहा व क़ालल्हाफ़िज़ु अब्दुल्हक़ फ़िल्जम्द बैनस्सहीहैन व मा रवा शरीक अन अनसिन अन्नहू कान नाइमन फ़हुव ज़ियादतुन मज्हुलतुन व क़द खल्हुफ़्फ़ाज़ुल्मुत्तकून वल् अइम्मतुल्महूरून

إِلَىٰ رَبِّكَ لَسَلَهُ. فَرَجَعْتُ لَسَأَلَهُ، فَجَعَلَهَا أَرْبَعِينَ، ثُمَّ مِثْلَهُ ثُمَّ لثَلَاثِينَ، ثُمَّ مِثْلَهُ فَجَعَلَ عِشْرِينَ، ثُمَّ مِثْلَهُ فَجَعَلَ عَشْرًا. فَأَتَيْتُ مُوسَىٰ لَقَالَ مِثْلَهُ فَجَعَلَهَا خَمْسًا. فَأَتَيْتُ مُوسَىٰ لَقَالَ: مَا صَنَعْتَ؟ قُلْتُ؟ جَعَلَهَا خَمْسًا. لَقَالَ مِثْلَهُ: قُلْتُ: لَسَلْتُ. فَنُودِيَ: إِنِّي قَدْ أَنْصَبْتُ فَرِيضَتِي. وَخَفَّتْ عَنْ عِبَادِي، وَأَجَزَى الْحَسَنَةُ (عَشْرًا)). وَقَالَ هَمَامٌ عَنْ قَتَادَةَ بْنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي مُرَيْزَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فِي آيَةِ الْمُعْمُورِ)). [أطرافه بي: ٣٢٩٣، ٣٤٣٠، ٣٨٨٧].

कइब्नि शिहाब व षाबितुल्बनाइ व क़तादा अन अनस व लम याति अहदुम्मिन्हुम बिहा व शरीकुन बिल्हाफ़िज़ अन्हु अहलुल्हदीप्ति (फत्हुल बारी) इस तवील इबारत का खुलासा यही है कि मेअराज जिस्मानी ही हक़ है।

आप (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी पर हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का रोना इस खुशी की बिना पर था कि अल्लाह तआला ने उस नौजवान को मुख़्तसर उम्र देने के बावजूद अपनी नेअमतों से किस क़दर नवाज़ा और कैसे कैसे दरजाते आलिया अज़ा फ़र्माए हैं। ये रोना फ़रहत से था न कि हसद और बुग़्ज़ से फइन्न ज़ालिक ला यलीकु बिसिफातिल्अम्बियाइ वल्अख़लाकिल्अजिल्लति मिन औलियाइ क़ालहुल्ख़ताबी

3208. हमसे हसन बिन रबीआ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अहवस ने, उनसे आ'मश ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हमसे सादिकुल मसदूक रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान किया और फ़र्माया कि तुम्हारी पैदाइश की तैयारी तुम्हारी माँ के पेट में चालीस दिन तक (नुत्फ़ा की सूरत में) की जाती है। इतने ही दिनों तक फिर एक बस्ता खून की सूरत में इख़्तियार किये रहता है और फिर वो इतने ही दिनों तक एक मुज़ा गोशत रहता है। उसके बाद अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता भेजता है और उसे चार बातों (के लिखने) का हुक्म देता है। उससे कहा जाता है कि उसके अमल, उसका रिज़क, उसकी मुद्दते ज़िन्दगी और ये कि बद है या नेक, लिख ले। अब उस नुत्फ़े मेरूह डाली जाती है। (याद रख) एक शख्स (ज़िन्दगी भर नेक) अमल करता रहता है और जब जन्नत और उसके बीच सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तन्नदीर सामने आ जाती है और दोज़ख वालों के अमल शुरू कर देता है। इसी तरह एक शख्स (ज़िन्दगी भर बद) अमल करता रहता है और जब दोज़ख और उसके दरम्यान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तन्नदीर ग़ालिब आ जाती है और जन्नत वालों के काम शुरू कर देता है। (दीगर मक़ाम : 3332, 6594, 7454)

۳۲۰۸- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - قَالَ: ((إِنْ أَحَدَكُمْ يَجْمَعُ خَلْفَهُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، ثُمَّ يَكُونُ عِلْقَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ. ثُمَّ يَبْعَثُ اللَّهُ مَلَكًَا يُؤَمِّرُ بَارِئَةً كَلِمَاتٍ وَيَقَالَ لَهُ: اكْتُبْ عَمَلَهُ وَرِزْقَهُ وَأَجَلَهُ وَشَقِيًّا أَوْ سَعِيدًا. ثُمَّ يَنْفَخُ فِيهِ الرُّوحَ، فَإِنَّ الرَّجُلَ مِنْكُمْ لَيَعْمَلُ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ إِلَّا ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ كِتَابُهُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ. وَيَعْمَلُ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ إِلَّا ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ)).

[أطرافه ي: ۳۳۳۲، ۶۵۹۴، ۷۴۵۴]

**तशरीह:** दूसरी रिवायत में है कि जब मर्द औरत से सुहबत करता है तो मर्द का पानी औरत के हर रग व पे में समा जाता है। सातवें दिन अल्लाह उसको इकट्ठा करके उससे एक सूरत जोड़ता है। फिर नफ़से नातिका चौथे चिल्ले में या'नी चार महीने के बाद उससे मुता'ल्लिक हो जाता है। जो लोग ए'तिराज़न कहते हैं कि चार माह से कब्बल ही हमल में जान पड़ जाती है उनका जवाब ये है कि हदीष में रूह से नफ़से नातिका मुदारिका की मुराद है उसे रूहे इंसानी कहा जाता है और रूहे हैवानी पहले ही से बल्कि नुत्फ़े के अंदर भी मौजूद रहती है लिहाज़ा ए'तिराज़ बातिल हुआ। इस हदीष से ये भी ज़ाहिर हुआ कि ए'तिबार ख़ात्मा का है इसलिये आदमी कैसे ही अच्छे काम कर रहा हो फिर भी ख़राबी-ए-ख़ात्मा से डरते रहना चाहिये। बुजुर्गों ने तजुर्बा किया है कि जो लोग हदीष शरीफ़ से मुहब्बत रखते हैं और इसी फ़न्ने शरीफ़ में मशगूल रहते हैं। अक़्बर उनकी उम्र लम्बी होती है और ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब होता है। या अल्लाह! अपने हकीर बन्दे मुहम्मद दाऊद राज़ को भी हदीष की ये बरकात अज़ा फ़र्माइयो और मेरे तमाम मुआविनीने किराम को जिनकी हदीष दोस्ती ने मुझको इस अज़ीम ख़िदमत के अंजाम देने के लिये

आमादा किया। अल्लाह पाक उन सबको बरकाते दारेन से नवाज़ियो। आमीन शुम्म आमीन।

3209. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुखलद ने खबर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने खबर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन इक्बान ने खबर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। और इस रिवायत की मुताबअत अबू आसिम ने इब्ने जुरैज से की है कि मुझे मूसा बिन इक्बान ने खबर दी उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माता है कि अल्लाह तआला फ़लाँ शख्स से मुहब्बत करता है। तुम भी इससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) भी उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तमाम अहले आसमान को पुकार कर कहते हैं कि अल्लाह तआला फ़लाँ शख्स से मुहब्बत रखता है। इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। उसके बाद रूए ज़मीन वाले भी उसको मक्बूल समझते हैं। (दीगर मक़ाम : 6040, 7485)

**तशरीह :** इस्माईल की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि जब अल्लाह किसी बन्दे से दुश्मनी करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से ज़ाहिर करता है फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) और सारे फ़रिश्ते उसके दुश्मन हो जाते हैं यहाँ तक कि रूए ज़मीन पर उसके लिये बुराई फैल जाती है। इस हदीष से अल्लाह के कलाम में आवाज़ और पुकार प्राबित हुई और उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में सौत (आवाज़) और हुरूफ़ नहीं हैं।

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैप्र ने खबर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्हमान ने बयान किया, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहहरा आइशा सिदीका (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अनान में उतरते हैं और अनान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन कामों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी खबर कर देते

۳۲۰۹ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مُخَلَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: وَتَابَعَهُ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَحَبَّ اللَّهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيلُ: إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّهُ، فَيَحِبُّهُ جِبْرِيلُ. فَيُنَادِي جِبْرِيلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّوهُ، فَيَحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ. ثُمَّ يُوسِّعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الْأَرْضِ)). [طَرَاهُ ن : ٦٠٤٠، ٧٤٨٥].

۳۲۱۰ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَدَا الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذَكُرُ الْأُمُورَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرْقِي الشَّيَاطِينُ السَّمْعَ

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी तरफ से मिलाकर बयान करते हैं।  
(दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

3211. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा और अगर ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब जुमा का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते खड़े हो जाते हैं और सबसे पहले आने वाले और फिर उसके बाद आने वालों को नम्बर वार लिखते जाते हैं। फिर जब इमाम (खुतबे के लिये मिम्बर पर) बैठ जाता है तो ये फ़रिश्ते अपने रजिस्टर बन्द कर लेते हैं और ज़िक्र सुनने लग जाते हैं (ये हदीस किताबुल जुम्आ में मज़कूर हो चुकी है यहाँ फ़रिश्तों का वजूद प्राबित करना मक़सूद है)। (राजेअ : 929)

3212. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि इमर बिन खज़ाब (रज़ि.) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो हस्सान (रज़ि.) शे'र पढ़ रहे थे। उन्होंने मस्जिद में शे'र पढ़ने पर नापसन्दीदगी फ़र्माई तो हस्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं उस वक़्त यहाँ शे'र पढ़ा करता था जब आपसे बेहतर शख़्स (औ'हज़रत ﷺ) यहाँ तशरीफ़ रखते थे। फिर हज़रत हस्सान (रज़ि.) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते तुमने नहीं सुना था कि ऐ हस्सान! (कुफ़ारे मक्का को) मेरी तरफ़ से जवाब दे। ऐ अल्लाह! रूहुल कुदस के ज़रिये हस्सान की मदद कर। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि हौं बेशक (मैंने सुना था)। (राजेअ : 453)

इससे हम्दो—नअत के अश'आर पढ़ने और कहने का जवाज़ प्राबित हुआ।

3213. हमसे हफ़्स बिन इमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन प्राबित ने और उनसे बराअ बिन

لَتَسْمَعُهُ فَرَحْنِهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ  
مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).

[أطرافه في: 3288, 5762, 6213, 7561]

[7561]

3211- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ  
حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ  
شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَالْأَعْرَضِ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ  
: ((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ كَانَ عَلَى كُلِّ  
بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلَائِكَةُ  
يَكْتُبُونَ الْأَوَّلَ لِلأَوَّلِ، فَإِذَا جَلَسَ الْإِمَامُ  
طَوَّرُوا الصُّحُفَ وَجَاءُوا بِسُتُورِ  
الدُّخَانِ)). [راجع: 929]

3212- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ  
سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((مَرَّ عُمَرُ فِي  
الْمَسْجِدِ وَخِشَانٌ يُنْشِدُ فَقَالَ: كُنْتُ  
أُنْشِدُ لِيهِ وَلِيهِ مِنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ. ثُمَّ  
الْتَفَتَ إِلَى أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ: أُنْشِدْنَا بِأَمْرِ  
أَسْمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
يَقُولُ: ((أَجِبْ عَنِّي، اللَّهُمَّ أَئِذْهُ يَرْوِجُ  
الْقُلُوبُ)). قَالَ : نَعَمْ)).

[راجع: 453]

3213- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ  
حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ بْنِ لَابِثٍ عَنِ الْبَرَاءِ

आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हस्सान (रज़ि.) से फ़र्माया, मुस्किने मक्का की तुम भी हिज्व करो या (ये फ़र्माया कि) उनकी हिज्व का जवाब दो, जिब्रईल (अलै.) तुम्हारे साथ हैं। (दीगर मक्काम : 4123, 4124, 6153)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَسَّانَ ((الْمُحْجَمِ - أَوْ هَاجِمِهِ - وَجِبْرِيلَ مَعَكُمْ))  
[أطرافه ي: ٤١٢٣، ٤١٢٤، ٦١٥٣]

**तरीह:** फिर हज़रत हस्सान (रज़ि.) ने ऐसा जवाब दिया कि मुस्किने के धुंए उड़ गये। उनकी सारी हकीकत खोलकर रख दी। एक शेर हज़रत हस्सान (रज़ि.) का ये है। लना फी कुल्लि यौमिन मिम्म अरकिन, सबाबुन औ कितालुन औ हिजाउन.

या'नी हम तो हर रोज़ सामान की तैयारी में मशगूल हैं-तुमसे जंग करने में या तुमको जवाबन गाली देने में या तुम्हारे हिज्व करने में। मा'लूम हुआ कि मस्जिद में दीनी इस्लामी अश'आर का पढ़ना जाइज़ है।

3214. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको वहब बिन जरीर ने ख़बर दी, उनसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हुमैद बिन हिलाल से सुना और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जैसे वो गुबार मेरी नज़रों के सामने है। मूसा ने रिवायत में यूँ ज़यादती की कि, हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) के (साथ आने वाले) सवार फ़रिश्तों की वजह से। जो गुबार ख़ानदाने बनू ग़ानम की गली में उठा था।

٣٢١٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ حُمَيْدَ بْنَ هِلَالٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى غَبَارٍ سَاطِعٍ فِي سَبْكَةِ نَبِيِّ غَنَمٍ زَادَ مُوسَى : مُوَكَّبٍ حَبْرِيْلٍ)).

बनू ग़ानम कबीला ख़ज़रज की एक शाख़ है जो अंसार में से थे, हज़रत अबू अय्यूब अंसारी उसी ख़ानदान से थे।

3215. हमसे फ़र्वा बिन अबी मुग़राअने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके बाप ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हारिष बिन हिशाम (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि वह्य आपके पास किस तरह आती है? और हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कई तरह से आती है। कभी फ़रिश्ते के ज़रिये आती है तो वो घंटी बजने की आवाज़ की तरह नाज़िल होती है। जब वह्य ख़त्म हो जाती है तो जो कुछ फ़रिश्ते ने नाज़िल किया होता है, मैं उसे पूरी तरह याद कर चुका होता हूँ। वह्य उतरने की ये सूरत मेरे लिये बहुत दुश्वार होती है। कभी फ़रिश्ता मेरे सामने एक मर्द की सूरत में आ जाता है वो मुझसे बातें करता है और जो कुछ कह जाता है मैं उसे पूरी तरह याद कर लेता हूँ। (राजेअ: 2)

٣٢١٥- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ الْحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ يَأْتِيكَ الْوَحْيُ؟ قَالَ: ((كُلُّ ذَلِكَ يَأْتِيَنِي الْمَلَكُ أَحْيَانًا فِي مِثْلِ صَلَافَةِ الْجَرَسِ، فَيَقْصِمُ عَلَيَّ وَقَدْ وَعَيْتُ مَا قَالَ، وَهُوَ أَشَدُّ عَلَيَّ، وَيَتَمَثَّلُ لِي الْمَلَكُ أَحْيَانًا رَجُلًا فَيَكَلِّمُنِي، فَأَعُو مَا يَقُولُ)).

[راجع: ٢]

नुज़ूले वह्य की तफ़सीलात पारा अब्बल किताबुल वह्य में तफ़सील से लिखी गई है।

3216. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा

٣٢١٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ



हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कप्रीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने और उनसे अबू हुसैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जो शख्स किसी चीज़ का भी जोड़ा दे, तो जन्नत के चौकीदार फ़रिश्ते उसे बुलाएँगे कि ऐ फ़लों इस दरवाज़े से अंदर आ जा। अबूबक्र (रज़ि.) ने इस पर कहा कि ये तो वो शख्स होगा जिसे कोई नुक़सान न होगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तू भी उन्हीं में से होगा। (राजेअ : 1897)

अल्लाह की राह में जो चीज़ भी ख़र्च की जाए वो जोड़े की शक़ल में ज्यादा बेहतर है जैसे कपड़ों के दो जोड़े या दो रुपये या दो कुर्आन शरीफ़ वगैरह वगैरह। ये बेहतरीन स़दक़ा होगा। यहाँ फ़रिश्तों का अहले जन्नत को बुलाना उनका वजूद और उनका हम कलाम होना प्राबित करना मक्सूद है।

3217. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहुरी ने, उन्हें अबू सलमान ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए हैं, तुमको सलाम कह रहे हैं। आइशा (रज़ि.) ने जवाब में कहा, व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि बरकातुहु। आप वो चीज़ें देखते हैं जिन्हें मैं नहीं देख सकती, आइशा (रज़ि.) की मुराद नबी करीम (ﷺ) से थी। (दीगर मक़ाम : 3768, 6201, 6249, 6153)

3218. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा हमसे इमर बिन ज़र ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे इमर बिन ज़र ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलै.) से एक मर्तबा फ़र्माया, हमसे मुलाक़ात के लिये जितनी मर्तबा आप आते हैं उससे ज्यादा क्यों नहीं आते? बयान किया कि उस पर ये आयत नाज़िल हुई, और हम नहीं उतरते लेकिन तेरे रब के हुक्म से, उसी का है जो कुछ कि हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीछे है, आख़िर आयत तक। (दीगर मक़ाम : 4731, 7455)

قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: «مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ دَعَتْهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ: أَيُّ فُلٍ هَلُمَّ». فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ ذَلِكَ الَّذِي لَا تَوَى عَلَيْهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «أَرْخُو أَنْ تَكُونُوا مِنْهُمْ». [راجع: 1897]

3217- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: «أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: (يَا عَائِشَةُ، هَذَا جِبْرِيلُ يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامَ)»، فَقَالَتْ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ تَرَى مَا لَا أَرَى. تُرِيدُ النَّبِيَّ ﷺ.

[أطرافه ي: 3768, 6201, 6249, 6153].

3218- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ. ح. قَالَ: وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ عُمَرَ بْنِ ذَرٍّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَعِيدٍ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَجِبْرِيلَ: «أَلَا تَزُورُونَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُونَ؟ قَالَ: فَتَرَأَتْ: «وَمَا نَتَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ، لَمْ يَأْتِنَا أَيْدِينَا وَمَا خَلَفْنَا» [مریم: 64]. [طرفاه ي: 4731, 7455]

मा'लूम हुआ कि फ़रिश्ते हैं और वो हुक्मे इलाही के ताबेअ हैं।

3219. हमसे इस्माईल बिन अबी इदरीस ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब जुहरी ने, उनसे अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मसऊद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिब्रईल (अलै.) ने कुआन मजीद मुझे (अरब के) एक ही मुहावरे के मुताबिक पढ़कर सिखाया था, लेकिन मैं उसमें बराबर इज़ाफ़ा की ख्वाहिश का इज़हार करता रहा, यहाँ तक कि अरब के सात मुहावरों पर उसका नुज़ूल हुआ। (दीगर मक्काम : 4991)

۳۲۱۹- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثَيْبٍ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((أَقْرَأَنِي جِبْرِيلُ عَلَى حَرْفٍ، فَلَمْ أَزَلْ أَسْتَزِيدُهُ حَتَّى انْتَهَى إِلَى سَبْعَةِ أَحْرَافٍ)).

[طرفه في: ۴۹۹۱].

**तरीह:** कुआन मजीद की सात क़िरातों पर इशारा है। जिनका तफ़्सीली षुबूत सहीह रिवायात व अह्दादीष से है। जैसा कि हर जुबान में मुख्तलिफ़ मुकामात की जुबान का इख़्तिलाफ़ होता है। अरब में हर कबीला एक अलग दुनिया में रहता था, जिनमें मुहावरे बल्कि ज़ेर, ज़बर तक के फ़र्क को इतिहाई दर्जे में मल्हूज रखा जाता था, मक्क़सद ये है कि कुआन मजीद अगरचे एक ही है। लेकिन क़िरात के ए'तिबार से खुद अल्लाह पाक ने उसकी सात क़िरातें क़रार दी हैं।

इस हदीष के यहाँ लाने से हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) का वजूद और उनके मुख्तलिफ़ कारनामे बयान करना मक्क़सूद है। ख़ास तौर पर वद्व लाने के लिये यही फ़रिश्ता मुक़रर है। जैसा कि मुख्तलिफ़ आयात व अह्दादीष से प्राबित है। कुआन मजीद की क़िराते सबआ पर उम्मत का इतिफ़ाक़ है। मुतादविल और मशहूर क़िरात यही है जो उम्मत में मा'मूल है।

3220. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे ज़्यादा सख़ी थे और आपकी सखावत रमज़ान शरीफ़ के महीने में और बढ़ जाती, जब हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आपसे मुलाक़ात के लिये हर रोज़ आने लगते। हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आप (ﷺ) से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात के लिये आते और आपसे कुआन का दौर किया करते थे। औहज़रत (ﷺ) खुसूसन इस दौर में जब हज़रत जिब्रईल (अलै.) रोज़ाना आपसे मुलाक़ात के लिये आते तो आप ख़ैरात व बरकात में तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ी हो जाते थे और अब्दुल्लाह बिन मुबारक से रिवायत है, उनसे मअमर ने इसी इस्नाद

۳۲۲۰- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ، وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ لِي رَمَضَانَ حِينَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ، وَكَانَ جِبْرِيلُ يَلْقَاهُ لِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْآنَ. فَلَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ أَجْوَدَ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ)). وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ بِهَذَا الْإِسْنَادِ نَحْوَهُ. وَرَوَى أَبُو

के साथ इसी तरह बयान किया और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने नक़ल किया नबी करीम (ﷺ) से कि हज़रत जिब्रईल (अलै.) आँहज़रत (ﷺ) के साथ कुआन मजीद का दौर किया करते थे। (राजेअ: 6)

مُرُورَةً وَلَاطِمَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ  
((أَنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُهُ الْقُرْآنَ)).

[راجع: ٦]

**तशरीह:** या'नी हर साल में एक बार आते मगर जिस साल में आपकी वफ़ात हुई तो हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने दो बार हाज़िरे ख़िदमत होकर दौर किया। कहते हैं कि ज़ैद बिन षाबित की किरअत आँहज़रत (ﷺ) के अखीर दौर के मुवाफ़िक़ है। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की जो रिवायात मज़कूर हुई हैं उनको खुद हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब अलामाते नबविया और फ़ज़ाइल कुआन में वस्ल किया है।

3221. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने एक दिन अमर की नमाज़ कुछ देर करके पढ़ाई। उस पर इर्वा बिन जुबैर (रह.) ने उनसे कहा। लेकिन जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) (नमाज़ का तरीका आँहज़रत (ﷺ) को सिखाने के लिये) नाज़िल हुए और रसूलुल्लाह (ﷺ) के आगे होकर आपको नमाज़ पढ़ाई। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा, इर्वा! आपको मा'लूम भी है आप क्या कह रहे हैं? इर्वा ने कहा कि (और सुन लो) मैंने बशीर बिन अबी मसऊद से सुना और उन्होंने अबू मसऊद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि हज़रत जिब्रईल (अलै.) नाज़िल हुए और उन्होंने मुझे नमाज़ पढ़ाई। मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर (दूसरे वक़्त की) उनके साथ मैंने नमाज़ पढ़ी, फिर उनके साथ मैंने नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी, अपनी उँगलियों पर आपने पाँचों नमाज़ों को गिनकर बताया। (राजेअ: 521)

٣٢٢١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا ثَيْبٌ  
عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْكَرِيمِ  
آخِرَ الْعَصْرِ شَيْئًا، فَقَالَ لَهُ عُرْوَةُ : أَمَا إِنَّ  
جِبْرِيلَ قَدْ نَزَلَ فَصَلَّى أَمَامَ رَسُولِ اللَّهِ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ عُمَرُ: أَكْثَمُ  
مَا تَقُولُ يَا عُرْوَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ بِشِيرَ بْنَ  
أَبِي مَسْعُودٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا مَسْعُودٍ  
يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ:  
((نَزَلَ جِبْرِيلُ فَأَتَانِي فَصَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ  
صَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ  
مَعَهُ، ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ، يَحْسُبُ بِأَصَابِعِهِ  
خَمْسَ صَلَوَاتٍ)).

[راجع: ٥٢١]

**तशरीह:** हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आप (ﷺ) को अमली तौर पर औक़ाते नमाज़ की ता'लीम देने आए थे। चुनाँचे अव्वल वक़्त और आखिर वक़्त दोनों में पाँचों नमाज़ों को पढ़कर आपको बतलाया। यहाँ हदीष में इस पर इशारा है। इर्वा बिन जुबैर ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) को ताख़ीर नमाज़ अमर पर टोका और हदीषे मज़कूर बतौर दलील पेश फ़र्माई फिर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर हदीष मअसनद बयान की, जिसे सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को यक़ीन कामिल हासिल हो गया। इस हदीष से नमाज़े अमर का अव्वल वक़्त पर अदा करना षाबित हुआ। जैसा कि जमाअत अहले हदीष का मा'लूम है। उन लोगों का अमल ख़िलाफ़ सुन्नत भी मा'लूम हुआ जो अमर की नमाज़ ताख़ीर करके पढ़ते हैं। कुछ लोग तो बिलकुल ग़ुरूब के वक़्त नमाज़ अमर अदा करने के आदी हैं, ऐसे लोगों को मुनाफ़िक़ कहा गया है।

3222. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबाने, उनसे हबीब बिन

٣٢٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ حَبِيبٍ

अबीषाबित ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने और उनसे अबूज़र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिब्रईल (अलै.) कह गये हैं कि तुम्हारी उम्मत का जो आदमी उस हालत में मरेगा कि वो अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराता रहा होगा, तो वो जन्नत में दाखिल होगा या (आपने ये फ़र्माया कि) जहन्नम में दाखिल नहीं होगा। ख़्वाह उसने अपनी ज़िन्दगी में ज़िना किया हो, ख़्वाह चोरी की हो। और ख़्वाह ज़िना और चोरी करता हो। (राजेअ: 1237)

**तशरीह:** मतलब ये है कि अल्लाह पाक चाहेगा तो उनको मुआफ़ कर देगा और अगर चाहेगा तो उनको गुनाहों की सज़ा देकर बाद में जन्नत में दाखिल कर देगा। बशर्त कि वो दुनिया में कभी शिर्क के मुर्तकिब न हुए हों क्योंकि मुश्रिक के लिये अल्लाह ने जन्नत को क़त्अन ह़राम कर दिया है। वो नामो-निहाद मुसलमान ग़ौर करें जो बुजुर्गों के मज़ारात पर जाकर शिर्किया अफ़आल का इर्तिकाब करते हैं, क़ब्रों पर सज्दा और तवाफ़ करते हैं। उनके मुश्रिक होने में कोई शक नहीं है, ऐसे लोग हरिज़ जन्नत में न जाएँगे ख़्वाह कितने ही नेक काम करते हों, अल्लाह ने अपने नबी करीम (ﷺ) के बारे में ख़ुद फ़र्मा दिया है। लइन अशरकत लयहिबतन्न अमलुक व लतकुन्न मिनल्खासिरीन (अज़ुमर: 65) ऐरसूल! अगर आप भी शिर्क कर बैठें तो आपकी सारी नेकियाँ बर्बाद हो जाएँगी और आप ख़सारा उठाने वालों में से हो जाएँगे। किरमानी ने कहा कि रिवायत में ऐसे गुनाहगारों के दोज़ख़ में न दाखिल होने से मुराद उन का हमेशगी का दुखूल मुराद है। व यजिबुत्ताबीलु बिमिष्निही जम्अन बैनल्आयाति वल्अह्वादीवि (किर्मानी)

3223. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़रिश्ते आगे-पीछे ज़मीन पर आते-जाते रहते हैं, कुछ फ़रिश्ते रात के हैं और कुछ दिन के और ये फ़ज़्र और अम्र की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। फिर वो फ़रिश्ते जो तुम्हारे यहाँ रात में रहे। अल्लाह के हुज़ूर में जाते हैं, अल्लाह तआला उनसे दरयाफ़्त फ़र्माता है, — हालाँकि वो सबसे ज़्यादा जानने वाला है— कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा, वो फ़रिश्ते अर्ज करते हैं कि जब हमने उन्हें छोड़ा तो वो (फ़ज़्र की) नमाज़ पढ़ रहे थे। और इसी तरह जब हम उनके यहाँ गये थे, जब भी वो (अम्र की) नमाज़ पढ़ रहे थे। (राजेअ: 555)

۳۲۲۳- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الْمَلَائِكَةُ يَتَفَقَّحُونَ: مَلَائِكَةُ اللَّيْلِ وَمَلَائِكَةُ النَّهَارِ، وَيَحْتَمِلُونَ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ وَالْمَغْرِبِ، ثُمَّ يَخْرُجُ إِلَيْهِ اللَّيْلُ بَأَنَؤُا يَكُفُّكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ - وَهُوَ أَغْلَمُ - فَيَقُولُونَ: كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ يُصَلُّونَ، وَأَتَيْنَاهُمْ يُصَلُّونَ)).

[راجع: ۵۵۵]

**तशरीह:** इन जुम्ला अह्वादीष के लाने से मुज्ताहिद मुल्लक इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ फ़रिश्तों का वजूद प्राबित करना है। जिन पर ईमान लाना अरकाने ईमान से है। फ़रिश्तों में हज़रत जिब्रईल (अलै.), मीकाईल (अलै.), इस्राफ़ील (अलैहिस्सलाम) ज़्यादा मशहूर हैं। बाक़ी उनकी ता'दाद इतनी है जिसे अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, वो सब अल्लाह के बन्दे हैं, अल्लाह के फ़र्माबरदार हैं। उसकी इजाज़त बग़ैर वो दम भी नहीं मार सकते न वो किसी नफ़ा-नुक्सान के मालिक हैं।

बाब 7 : इस हदीष के बयान में कि जब एक तुम्हारा (जहरी नमाज़ में सूरह फ़ातिहा के ख़त्म पर बाआवाज़े बुलन्द) आमीन कहता तो फ़रिश्ते भी आसमान पर (ज़ोर से) आमीन कहते हैं और इस तरह दोनों की जुबान से एक साथ (बाआवाज़े बुलन्द) आमीन निकलती है तो बन्दे के गुज़रे हुए तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं।

۷- بَابُ إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ ((آمین))  
وَالْمَلَائِكَةُ فِي السَّمَاءِ فَوَافَقَتْ  
إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ  
مِنْ ذَنْبِهِ

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उस हदीष की तरफ़ इशारा किया है जिसमें जहरी नमाज़ों में सूरह फ़ातिहा के ख़त्म पर आमीन बिल जहर या 'नी बुलन्द आवाज़ से आमीन बोलने की फ़ज़ीलत वारिद हुई है, उम्मत में सवादे अज़ाम का यही मा'मूल है। यहाँ तक कि मसालिके अरबआ (चारों मसलकों) में से तीनों मसलक शाफ़िई, मालिकी, हंबली सब आमीन बिल जहर के काइल और आमिल हैं। मगर बहुत से हनफ़ी हज़रात न सिर्फ़ इस सुन्नत से नफ़रत करते हैं और उस सुन्नत पर अमल करने वालों को हिक़ारत की नज़र से देखते हैं बल्कि कुछ जगह अपनी मस्जिदों में ऐसे लोगों को नमाज़ अदा करने से रोकते हैं जो जहरी आमीन पढ़ते हैं। ये बहुत ही ज़्यादा अफ़सोसनाक हरकत है। बहुत से मुन्सिफ़ मिज़ाज हनफ़ी अकाबिर इलमान ने उसका सुन्नत होना तस्लीम किया है और उसके आमिलीन को प्रवाबे सुन्नत का हक़दार बतलाया है। काश! सारे बिरादरान ऐसे उमूरे मस्नूना पर लड़ना झगड़ना छोड़कर इतिफ़ाक़ व इतिहादे मिल्लत पैदा करें और उम्मत को इतिशार से निकालें। आमीन बिल जहर का मस्नून होना और दलाइले मुख़ालिफ़ीन का जवाब पीछे तफ़्सील से लिखा जा चुका है। यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को इसलिये लाए कि फ़रिश्तों का वजूद और उनका कलाम करना प्राबित किया जाए।

3224. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा हमको जुरैज ने ख़बर दी, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के लिये एक तकिया भरा, जिस पर तस्वीरें बनी हुई थीं। वो ऐसा हो गया जैसे नक़्शी तकिया होता है। फिर आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो दरवाज़े पर खड़े हो गये और आपके चेहरे का रंग बदलने लगा। मैंने अज़ी किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमसे क्या ग़लती हुई? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तकिया कैसा है? मैंने अज़ी किया, ये तो मैंने आपके लिये बनाया है ताकि आप इस पर टेक लगा सकें। इस पर आपने फ़र्माया, क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कोई तस्वीर होती है और ये कि जो शख़्स भी तस्वीर बनाएगा, क़यामत के दिन उसे उस पर अज़ाब दिया जाएगा। उससे कहा जाएगा कि जिसकी मूरत तूने बनाई, अब उसे ज़िन्दा भी करके दिखा। (राजेअ : 2105)

۳۲۲۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ  
قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ  
أُمَيَّةَ أَنَّ نَافِعًا حَدَّثَهُ أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ  
حَدَّثَهُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ:  
(«خَشَوْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
وِسَادَةً فِيهَا تَمَائِيلٌ كَأَنَّهَا لَمْرُوءٌ، فَجَاءَ  
لِقَامِ بَيْنَ الْبَائِنِ وَجَعَلَ يَتَغَيَّرُ وَجْهُهُ،  
فَقُلْتُ: مَا لَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((مَا بَالُ  
هَذِهِ؟)) وَسَادَةً قُلْتُ وَسَادَةً جَعَلَتْهَا لَكَ  
لِتُصْطَبِحَ عَلَيْهَا. قَالَ: ((أَمَّا عَلِمْتُ أَنَّ  
الْمَلَائِكَةَ لَا تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ وَأَنَّ مَنْ  
صَنَعَ الصُّورَةَ يُعَذَّبُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَقُولُ  
أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ))

जानदारों की सूरत बनाना इससे नाजाइज होना प्राबित हुआ और यही ठीक है और फ़रिश्तों का वजूद भी प्राबित हुआ और ये भी कि वो नेकी देखकर खुश होते हैं और बदी देखकर नाखुश होते हैं।

3225. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि मैंने अबू तलहा (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कुत्ते हों और उसमें भी नहीं जिसमें मूरत हो। (दीगर मक़ाम: 3226, 3322, 4002, 5949, 5968)

۳۲۲۵- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا طَلْحَةَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ ((لَا تَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلَا صُورَةٌ تَصَائِلُ)). [أطرافه في : ۳۲۲۶]

[۵۹۶۸, ۵۹۴۹, ६००२, ۳۲۲۲]

इससे भी फ़रिश्तों का वजूद और नेकी बदी से उनका अप्र लेना प्राबित हुआ।

3226. हमसे अहमद बिन मालेह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा हमको अमर बिन हारिष ने ख़बर दी, उनसे बुक़ैर बिन अशज ने बयान किया, उनसे बुस् बिन सईद ने बयान किया और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया और (रावी हदीष) बुस् बिन सईद के साथ अब्दुल्लाह ख़ौलानी भी रिवायते हदीष में शरीक हैं, जो कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा मैमूना (रज़ि.) की परवरिश में थे। उन दोनों से ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि उनसे अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़रिश्ते उस घर में नहीं दाख़िल होते जिसमें (जानदार की) तस्वीर हो। बुस् ने बयान किया कि फिर ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) बीमार पड़े और हम उनकी अयादत के लिये उनके घर गये। घर में एक पर्दा पड़ा हुआ था और उस पर तस्वीर बनी हुई थी। मैंने अब्दुल्लाह ख़ौलानी से कहा, क्या उन्होंने हमसे तस्वीरों के बारे में एक हदीष नहीं बयान की थी? उन्होंने बताया कि हज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने ये भी कहा था कि कपड़े पर अगर नक़शो-निगार हों (जानदार की तस्वीर न हो) तो वो इस हुक्म से अलग है। क्या आपने हदीष का ये हिस्सा नहीं सुना था? मैंने कहा कि नहीं।

۳۲۲۶- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ بُكَيْرٍ ابْنُ الْأَشْجِ حَدَّثَنَا أَنَّ بُسْرَ بْنَ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ الْجُهَنِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَنَا - وَفَعِ بُسْرُ بْنُ سَعِيدٍ عَبْدُ اللَّهِ الْخَوْلَانِيُّ الَّذِي كَانَ فِي حَجَرٍ مَمُونَةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ - حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا تَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ)). قَالَ بُسْرُ: فَمَرَضَ زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ، فَمَدَّنَاهُ، فَإِذَا نَحْنُ فِي بَيْتِهِ بَسْرُ بْنُ تَصَاوِيرٍ، فَقُلْتُ لِعَمِيدِ اللَّهِ الْخَوْلَانِيِّ: أَلَمْ يُحَدِّثْنَا فِي التَّصَاوِيرِ؟ فَقَالَ: إِنَّهُ قَالَ: ((إِلَّا رَقْمٌ فِي ثَوْبٍ)). أَلَا سَمِعْتَهُ؟ قُلْتُ: لَا. قَالَ: بَلَى

उन्होंने बताया कि जी हाँ! हज़रत ज़ैद ने ये भी बयान किया था।

فَذَكَرَ.

मा'लूम हुआ कि फ़रिश्ते उम्रे मआसी (नाफ़रमांन के कामों) से नफ़रत करते हैं। जानदार की तस्वीर बनाना भी अल्लाह के नज़दीक मअसियत है। इसलिये जिस घर में ऐसी तस्वीर हो उसमें रहमत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते हैं, वो घर रहमते इलाही से मह़रूम होता है। इशादि नबवी (ﷺ) में जो कुछ वारिद हुआ वो बरहक़ है। उसमें कुरेद करना बिदअत है। फ़रिश्ते रूहानी मख़लूक हैं। वो जैसे हैं ऐसे ही उनके कारनामे हैं। हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद के घर में पर्दे के कपड़े पर ग़ैर जानदार की तस्वीरें थीं जो इस हुक्म से अलग हैं।

3227. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन यहयब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अमर ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके बाप अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) से जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आने का वा'दा किया था (लेकिन नहीं आए) फिर जब आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे वजह पूछी, उन्होंने कहा कि हम किसी भी ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें तस्वीर या कुत्ता मौजूद हो। (दीगर मक़ाम : 5960)

3227- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهَبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي غَمْرُو عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((وَعَدَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِبْرِيلُ لِقَائِي إِنْ لَا نَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ وَلَا كَلْبٌ)). [طرفه في: 5960].

जो कुत्ते हिफ़ाज़त के लिये पाले जाएँ वो इस हुक्म से अलग हैं, जैसा कि दीगर रिवायात में वज़ाहत मौजूद है। रिवायत में एक रावी का नाम अमर नक़ल हुआ है, जो सहीह नहीं है। सहीह नुस्खा में इमर है जो मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन इमर के बेटे हैं और यही दुरुस्त है।

3228. हमसे इस्माईल बिन इदरीस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सुमय ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब (नमाज़ में) इमाम कहे कि समिअल्लाहुलिमन हमिदा तो तुम कहा करो, अल्लाहुम्मा रब्बना लक़ल हम्द क्योंकि जिसका ज़िक्र मलायका के साथ मुवाफ़िक़ हो जाता है उसके पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। (राजेज़ : 796)

3228- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الْإِمَامُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، فَقَالُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، لِإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلَهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ جُفِيَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). [راجع: 796].

इमाम के साथ मुक्तदी का समिअल्लाहुलिमन हमिदा कहना फिर अल्लाहुम्मा रब्बना लक़ल हम्द पढ़ना या इमाम के समिअल्लाहु लिमन हमिदा के बाद मुक्तदी का ख़ाली रब्बना लक़ल हम्द कहना दोनों उमूर जाइज़ हैं। तफ़सील पीछे मज़कूर हो चुकी है।

3229. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने बयान किया, उनसे मेरे बाप ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने, उनसे अब्दुरहमान बिन अबी अमर ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख़्स नमाज़ की वजह से जब तक कहीं ठहरा रहेगा उसका

3229- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُثَنِّبِ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرٍو عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ

ये सारा वक्त नमाज़ में शुमार होगा और फ़रिश्ते उसके लिये ये दुआ करते रहेंगे कि ऐ अल्लाह! उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा, और उस पर अपनी रहमत नाजिल कर (उस वक्त तक) जब तक वो नमाज़ से फ़ारिग होकर अपनी जगह से उठ न जाए या बात न करे। (राजेअ : 176)

इससे फ़रिश्तों का नेक दुआएँ करना प्रामाणिकता से प्रमाणित हुआ।

3230. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे अता बिन अबी रिबाह ने, उनसे सप्रवान बिन यअला ने और उनसे उनके वालिद (यअला बिन उमय्या रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप मिम्बर पर सूरह अहज़ाब की इस आयत की तिलावत फ़र्मा रहे थे, व नादौ या मालिक और वो दोज़ख़ी पुकारेंगी, ऐ मालिक! (ये जहन्नम के दारोगा का नाम है) और सुफ़यान ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की क़िरात में यँ है (व नादौ या माल)। (दीगर मक़ाम: 3266, 4819)

النَّبِيُّ قَالَ: ((إِنْ أَخَذَكُمْ فِي صَلَاةٍ مَا دَامَتِ الصَّلَاةُ تَخِيْسُهُ، وَالْمَلَائِكَةُ تَقُولُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، مَا لَمْ يَقُمْ مِنْ صَلَاتِهِ أَوْ يُخْبِثْ)). [راجع: ١٧٦]

٣٢٣٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ غَطَاءٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَى الْعَمِيرِ: ﴿وَنَادُوا-يَا مَالِكُ﴾ قَالَ سُفْيَانُ فِي قِرَاءَةِ عَبْدِ اللَّهِ: ﴿وَنَادُوا يَا مَالٍ﴾)).

[طرقه: ٤٨١٩، ٣٢٦٦]

**तशीह:** पूरी आयत यँ है व नादौ या मालिकु लियकिज़ अलैना रब्बुक क़ाल इन्नकुम माकिपून (अज़्जुख़रुफ़: 77) या 'नी दोज़ख़ी, दारोगा-ए-दोज़ख़, मालिक को पुकारेंगे कि अपने रब से कहो कि वो हमको मौत दे दे वो जवाब देगा कि तुम मरने वाले नहीं हो, बल्कि सब हमेशा इसी अज़ाब में मुब्तला रहोगे। इससे भी फ़रिश्तों का वजूद और उनका मुख्तलिफ़ ख़िदमात पर मामूर होना प्रामाणिकता से प्रमाणित हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की क़िरात में लफ़्ज़ व नादौ या माल या मालिक का मुखफ़फ़ है। मतलब दोनों का एक ही है कि दोज़ख़ी दोज़ख़ के दारोगा मालिक को पुकारेंगे। इससे भी फ़रिश्तों का वजूद प्रामाणिकता से प्रमाणित हुआ।

3231. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा, उनसे इब्ना ने कहा और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा, क्या आप पर कोई दिन उहुद के दिन से भी ज़्यादा सख़्त गुज़रा है? आप (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तुम्हारी क़ौम (क़ुरैश) की तरफ़ से मैंने कितनी मुसीबतें उठाई हैं लेकिन उस सारे दौर में इब्रबा का दिन मुझ पर सबसे ज़्यादा सख़्त था ये वो मौक़ा था जब मैंने (ताईफ़ के सरदार) किनाना इब्ने अब्द यालैल बिन अब्दे किलाल के यहाँ अपने आपको पेश किया था।

٣٢٣١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ: أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَتْهُ أَنَّهَا قَالَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ: هَلْ أَتَى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ أَشَدَّ مِنْ يَوْمٍ أَخَذَ؟ قَالَ: ((لَقَدْ لَقِيتُ مِنْ قَوْمِكَ مَا لَقِيتُ، وَكَانَ أَشَدَّ مَا لَقِيتُ مِنْهُمْ يَوْمَ الْقَعْبَةِ إِذْ عَرَضْتُ نَفْسِي عَلَى ابْنِ عَبْدِ يَاسٍ



लेकिन उसने (इस्लाम कुबूल नहीं किया और) मेरी दा'वत को रद्द कर दिया। मैं वहाँ से इतिहाई रंजीदा होकर वापस हुआ। फिर जब मैं क़नुष प्रआलिब पहुँचा, तब मुझको कुछ होश आया, मैंने अपना सर उठाया तो क्या देखता हूँ कि बदली का एक टुकड़ा मेरे ऊपर साया किये हुए है और मैंने देखा कि हज़रत जिब्रईल (अलै.) उसमें मौजूद हैं, उन्होंने मुझे आवाज़ दी और कहा कि अल्लाह तआला आपके बारे में आपकी क़ौम की बातें सुन चुका और जो उन्होंने रद्द किया है वो भी सुन चुका। आपके पास अल्लाह तआला ने पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है, आप उनके बारे में जो चाहें उसका उसे हुक्म दे दें। उसके बाद मुझे पहाड़ों के फ़रिश्ते ने आवाज़ दी, उन्होंने मुझे सलाम किया और कहा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! फिर उन्होंने भी वही बात कही, आप जो चाहें (उसका मुझे हुक्म फ़र्माएँ) अगर आप चाहें तो मैं दोनों तरफ़ के पहाड़ उन पर लाकर मिला दूँ (जिनसे वो चकनाचूर हो जाएँ) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे तो इसकी उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनकी नस्ल से ऐसी औलाद पैदा करेगा जो अकेले अल्लाह की इबादत करेगी, और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएगी। (दीगर मक़ाम : 7389)

لَيْلِ بْنِ عَبْدِ كَلَالٍ فَلَمْ يُجِبْنِي إِلَى مَا أَرَدْتُ، فَانْطَلَقْتُ. وَأَنَا مَهْمُومٌ، عَلَى وَجْهِهِ، فَلَمْ أَسْتَفِيقْ إِلَّا وَأَنَا بِقَرْنِ الثَّغَالِيهِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ لَمْ أَظَلِّتِي، فَظَنَرْتُ فَإِذَا فِيهَا جِبْرِيلُ، فَقَادَانِي فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَسْمَعْ قَوْلَ لَوْمِكَ لَكَ وَمَا زِدُوا عَلَيْكَ، وَقَدْ بَعَثَ اللَّهُ إِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ بِأَمْرَةٍ بِمَا شِئْتَ فِيهِمْ، فَقَادَانِي مَلَكَ الْجِبَالِ فَسَلَّمَ عَلَيَّ ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ، فَقَالَ: ذَلِكَ لِيَمَّا شِئْتَ، إِنَّ شِئْتَ أَنْ أَطْبِقَ عَلَيْهِمُ الْأَخْشَينَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((بَلْ أَرْجُو أَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ مِنْ أَصْلَابِهِمْ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ وَخُدَّه لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا)). [طهره في : ٧٣٨٩].

**तशरीह :** ये ताईफ़ का मशहूर वाक़िया है जब आँहज़रत (ﷺ) अपने शफ़ीक़ चचा अबू तालिब के इतिहाल के बाद बग़ज़ तब्लीगे इस्लाम ताईफ़ तशरीफ़ ले गये थे, आप (ﷺ) ने वहाँ के सरदारों को खुसूसियत के साथ इस्लाम की दा'वत दी, मगर वो लोग बदतमीज़ी से पेश आए और आपके पीछे बदमाश लड़कों को लगा दिया जिनकी हरकतों से आपको सख़्त तकलीफ़ का सामना हुआ, मगर उन हालात में भी आपने उन पर अज़ाब पसन्द नहीं किया, बल्कि उनकी हिदायत की दुआ फ़र्माई जो कुबूल हुई। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस को लाकर उससे भी फ़रिश्तों का वजूद प्राबित फ़र्माया। अख़शबैन से मुराद मक्का के दो मशहूर पहाड़ जबले अबू कुबैस और जबले क़अक़ेआन मुराद है।

लफ़ज़ उक़बा जो रिवायत में आया है ये ताईफ़ की तरफ़ एक घाटी का नाम है। ताईफ़ की तरफ़ आप (ﷺ) शव्वाल 10 नबवी में तशरीफ़ ले गए थे। पहले वहाँ के लोगों ने खुद आपको बुला भेजा था बाद में वो मुख़ालिफ़ हो गये और उन्होंने आप (ﷺ) पर पत्थर मारे, एक पत्थर आपकी ऐड़ी में लगा और आप ज़ख्मी हो गये। इस क़दर सताने के बावजूद आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ-ए-ख़ैर फ़र्माई।

3232. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़िर् बिन हुबैश से अल्लाह तआला के (सूरह नज़्म में) इशाद (फ़काना क़ाबा क़वसयनि औ अदना फ़औहा इला अब्दिही मा औहा) के बारे में पूछा, तो उन्होंने बयान किया

٣٢٣٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَرَانَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ زُرَّ بْنَ خُبَيْشٍ عَنْ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى، فَأَوْخَى إِلَى عَتِيدِهِ مَا أَوْخَى﴾ [النجم: ٩]

कि हमसे इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया था औहज़रत (ﷺ) हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को (अपनी असली मूरत में) देखा, तो उनके छः सौ बाज़ू थे। (दीगर मक़ाम: 4856, 4857)

3233. हमसे हफ़्सा बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आ' मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्कमा ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने (अल्लाह तआला के इर्शाद) लक़द रआ मन आयाति रब्बिहिल कुब्रा के बारे में बतलाया कि औहज़रत (ﷺ) ने एक सब्ज़ रंग का बिछौना देखा था जो आसमान में सारे किनारों को घेरे हुए था। (दीगर मक़ाम: 4858)

इस पर हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) बैठे हुए थे या उनके पर थे।

3234. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने, कहा हमको क़ासिम ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिसने गुमान किया कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने अपने ख़ को देखा था तो उसने बड़ी झूठी बात ज़ुबान से निकाली, लेकिन आप (ﷺ) ने जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को (मेअराज की रात में) उनकी असल मूरत में देखा था। उनके वजूद आसमान का किनारा ढांप लिया था। (दीगर मक़ाम: 3235, 4612, 4855, 7380, 7531)

3235. मुझसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे सईद बिन अल अश्वआ ने, उनसे शअबी ने और उनसे मसरूक ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा (उनके उस कहने पर कि औहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह तआला को देखा नहीं था) फिर अल्लाह तआला के उस इर्शाद (धुम्मा दना फ़तदल्ला फ़कान क़ाब कौसेनि औ अदना) के बारे में आपका क्या ख़याल है? उन्होंने कहा कि ये आयत तो जिब्रईल (अलै.) के बारे में है, वो इंसानी शक्ल में औहज़रत (ﷺ) के पास आया करते थे और इस मर्तबा अपनी इस शक्ल में

قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ مِئْمَانَةٌ جَنَاحٌ.

[طرمه ن: ٤٨٥٦, ٤٨٥٧.]

٣٢٣٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: (لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى) قَالَ: ((رَأَى زُفْرًا أَخْضَرَ سَدَّ أَفْقَ السَّمَاءِ)).

[طرمه ن: ٤٨٥٨.]

٣٢٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ عَنْ ابْنِ عُزُونَ قَالَ أَنْبَأَنَا الْقَاسِمُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ، وَلَكِنْ لَقَدْ رَأَى جِبْرِيلَ فِي صُورِهِ وَخَلْقِهِ سَادًا مَا بَيْنَ الْأَفْقَيْنِ)).

[أطرافه ن: ٣٢٣٥, ٤٦١٢, ٤٨٥٥.]

[٧٣٨٠, ٧٥٣١.]

٣٢٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ ابْنِ الْأَشْوَعِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ((قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَأَيْنَ قَوْلُهُ: (وَلَمْ دَنَا فَعَدَلِي، لَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى)؟ قَالَتْ: ذَلِكَ جِبْرِيلُ كَانَ يَأْتِيهِ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ، وَإِنَّمَا أَنَا هَذِهِ الْمَرْءَةُ فِي صُورِهِ

आए थे जो असली थी और उन्होंने ने तमाम आसमान के किनारों को ढांप लिया था। (राजेअ: 3234)

النَّيْمِ مِنْ صُورَتِهِ، فَسَدَ الْأَفْقُ)).

[راجع: ٣٢٣٤]

**तशरीह:** शबे मेअराज में आँहजरत (ﷺ) ने अल्लाह को देखा था या नहीं, उस बारे में उलमा में इख्तिलाफ है। हजरत आइशा (रजि.) का खयाल यही है कि आपने अल्लाह पाक को नहीं देखा। बहरहाल आयते मज़कूरा के बारे में हजरत आयशा (रजि.) ने उन लोगों का रद्द किया जो उससे आपका दीदार इलाही प्राबित करते हैं। फ़र्माया कि आयत में जिसकी कुर्बत का जिक्र है। इससे हजरत ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) मुराद हैं।

व कालन्नववी अर्राजिह अलमुखतार इन्द अकथरिलउलमाइ अन्नहूर अहू बि बस्तिही वल्लाहु आलाम वक्तवक्कुफ़ फ़ीहा लिअदमिहलाइलिलवाजिहति अला अहदिलजानिबैनि खैर या'नी इमाम नववी (रह.) ने कहा कि अकथर उलमा के नज़दीक यही राजेह है कि आप (ﷺ) ने अपनी आँखों से अल्लाह तआला को देखा चूँकि किसी खयाल की ताईद में वाज़ेह दलाइल नहीं हैं, इसलिये इस मसले में खामोश रहना बेहतर है।

3236. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ ने बयान किया, उनसे समुरह बिन जुन्दब (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने आज रात (ख़्वाब में) देखा कि दो शख्स मेरे पास आए। उन दोनों ने मुझे बताया कि वो जो आग जला रहा है। वो जहन्नम का दारोगा मालिक नामी फ़रिश्ता है। मैं ज़िब्रईल (अलै.) हूँ और ये मीकाइल हैं। (राजेअ: 845)

٣٢٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ آتَيْنِي قَالَا : أَلَدَيْ يُولَدُ النَّارَ مَالِكٌ خَارِجُ النَّارِ، وَأَنَا جِبْرِيلُ، وَهَذَا مِيكَائِيلُ)).

[راجع: ٨٤٥]

ये एक त्वील हदीष का टुकड़ा है जो पारा नम्बर छ: में गुजर चुकी है। यहाँ उससे फ़रिश्तों का वजूद प्राबित करना मक्सूद है।

3237. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी मर्द ने अपनी बीबी को अपने बिस्तर पर बुलाया, लेकिन उसने आने से इंकार कर दिया और मर्द उस पर गुस्सा होकर सो गया, तो सुबह तक फ़रिश्ते उस औरत पर ला'नत करते रहते हैं। इस रिवायत की मुताबअत, अबू हम्ज़ा, इब्ने दाऊद और अबू मुआविया ने आ'मश के वास्ते से की है। (दीगर मक्कास: 5193, 5194)

٣٢٣٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا قَالَ أَبُو غَوَاثَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَارِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ فَلَمَّتْ، قَبَاتَ غَضَبَانِ عَلَيْهَا، لَعْنَتُهُمَا الْمَلَائِكَةُ حَتَّى تَصْبِحَ)). تَابَعَهُ شُعْبَةُ وَأَبُو حَسْرَةَ وَابْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ. [طرفاه في: ٥١٩٣، ٥١٩٤].

**तशरीह:** अबू अवाना के साथ इस हदीष को शुअबा और अबू हम्ज़ा और अब्दुल्लाह बिन दाऊद और अबू मुआविया ने भी आ'मश से रिवायत किया है। शुअबा की रिवायत खुद मुअल्लिफ़ ने किताबुन्निकाह में वस्ल की है और अबू हम्ज़ा की रिवायत मौसूलन नहीं मिली और इब्ने दाऊद की रिवायत मुसद्द ने अपनी बड़ी मुस्नद में वस्ल की और अबू मुआविया की रिवायत इमाम मुस्लिम और निसाई ने मौसूलन निकाली है।

इस हदीष को यहाँ लाने से फ़रिश्तों का वजूद प्राबित करना मक्सूद है कि वो ऐसी नाफ़र्मान औरत पर अल्लाह के हुक्म से रात भर ला'नत भेजते रहते हैं। इससे ये भी प्राबित होता कि मर्द की इत्ताअत औरत के लिये कितनी ज़रूरी है। मर्द की ख़्वाहिश

की कद्रन करना औरत के लिये बदबख्ती का सबब बन सकता है। औरत की ज़ीनत यही है कि बच्चे से उसकी गोद भरपूर हो और बच्चे के लिये मर्द से मिलाप ज़रूरी था जिसके लिये औरत ने इन्कार कर दिया। मुन्किन है इसी मिलाप में उसको औलाद की नेअमत हासिल हो जाती, उसके अलावा और भी बहुत से मसाले हैं जिनकी बिना पर औरत के लिये मर्द की इताअत ज़रूरी है। अदमे इताअत की सूरत में बहुत से फ़सादात पैदा हो सकते हैं।

3238. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको लैष ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अकील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया था कि (पहले ग़ारे हिरा में जो हज़रत जिब्रईल अलै. मुझको सूरह इक्रा पढ़ाकर गये थे उसके बाद) मुझ पर वाह्य का नुज़ूल (तीन साल) बन्द रहा। एक बार मैं कहीं जा रहा था कि मैंने आसमान में से एक आवाज़ सुनी और नज़र आसमान की तरफ़ उठाई, मैंने देखा कि वही फ़रिश्ता जो ग़ारे हिरा में मेरे पास आया था (या'नी हज़रत जिब्रईल अलै.) आसमान और ज़मीन के दरम्यान एक कुर्सी पर बैठा हुआ है। मैं उन्हें देखकर इतना डर गया कि ज़मीन पर गिर पड़ा फिर मैं अपने घर आया और कहने लगा कि मुझे कुछ ओढ़ा दो, मुझे कुछ ओढ़ा दो। उसके बाद अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। (या अय्युहल मुहम्मिर) अल्लाह तआला के इशार्द, फ़हजुर तक। अबू सलमा (रज़ि.) ने कहा कि आयत में वरज़ज़ा से बुत मुराद हैं। (राजेअ: 4)

इस्लाम के नज़दीक बुत परस्ती एक गन्दा अमल है। इसीलिये बुत परस्तों को इन्नमलमुश्रिकून नजसुन (अत तौबा: 28) कहा गया है कि शिर्क करने वाले गन्दे हैं। वो बुतों के पुजारी हों या क़ब्रों के दोनों का अल्लाह के नज़दीक एक ही दर्जा है।

3239. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, (दूसरी सनद) इमाम बुखारी ने कहा और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अरूबा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आलिया ने और उनसे तुम्हारे नबी के चचाज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शबे मेअराज में मैंने मूसा (रज़ि.) को देखा था। गन्दुमी रंग, क़द लम्बा और बाल घुँघराले थे, ऐसे लगते थे जैसे क़बीला शनुवह का कोई शख्स हो और मैंने ईसा (अलै.) को भी देखा था।

۳۲۳۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((ثُمَّ فَرَزَ عَلَيَّ الْوَحْيُ فَرَةً، فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ بَصَرِي قِبَلَ السَّمَاءِ فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِوَاءِ قَاعِدٍ عَلَى كُرْسِيِّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ، فَجِئْتُ مِنْهُ حَتَّى هَوَيْتُ إِلَى الْأَرْضِ، فَجِئْتُ أَهْلِي فَقُلْتُ: زَمَلُونِي زَمَلُونِي، فَأَنزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَالرُّجُزَ فَاهْجُرْ﴾. قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَالرُّجُزَ الْأَوَّلَانِ)). [راجع: 4]

۳۲۳۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ: وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ: قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْغَالِيَةِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَمْرٍو نَبِيكُم - يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَيْتُ لَيْلَةَ أُسْرِي بِي مُوسَى رَجُلًا أَدَمَ طَوَالًا جَعَلًا كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَوْءَةٍ،

दरम्याना क्रद, मियाना जिस्म, रंग सुखी और सफेदी लिये हुए और सर के बाल सीधे थे (या'नी घुंघराले नहीं थे) और मैंने जहन्नम के दारोगा को भी देखा और दज्जाल को भी, मिन जुम्ला इन आयात के जो अल्लाह तआला ने मुझको दिखाई थीं (सूरह सज्दा में उसी का जिक्र है कि) पस (ऐ नबी ﷺ!) उनसे मुलाक़ात के बारे में आप किसी किसिम का शक व शुब्हा न करें, या'नी मूसा (अलै.) से मिलने में। अनस और अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यँ बयान किया कि जब दज्जाल निकलेगा, तो फ़रिश्ते दज्जाल से मदीना की हिफ़ाज़त करेंगे। (दीगर मक़ाम : 3396)

وَرَأَيْتُ عَيْسَى رَجُلًا مَرْبُوعًا، مَرْبُوعٌ الْخَلْقِ إِلَى الْخُمْزَةِ وَالْيَاسِ، سَطَّ الرَّأْسِ، وَرَأَيْتُ مَالِكًا خَارُونَ النَّارِ، وَالْذِّجَالِ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَرَاهُنَّ اللَّهُ إِيَّاهُ، فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ. قَالَ أَنَسٌ وَأَبُو بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: نَحْرُسُ الْمَلَائِكَةَ الْمُدِينَةَ مِنَ الدَّجَالِ.

[طرفه في : 3396].

उन दोनों रिवायतों को खुद इमाम बुखारी ने किताबुल हज्ज और किताबुल फ़ितन में रिवायत किया है।

**बाब 8 : जन्नत का बयान और ये बयान कि जन्नत पैदा हो चुकी है**

۸- بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الْجَنَّةِ وَأَنَّهَا مَخْلُوقَةٌ

इसी तरह दोज़ख दोनों मौजूद हैं, जुम्ला अहले सुन्नत का ये मुत्तफ़का अक़ीदा है। हाफ़िज़ साहब फ़मति हैं,

अय मौजूदतुन अल्लआन व अशार बिज़ालिक इलरहि अला मन ज़अम मिनल मुअतजिलति अन्हा ला तुजदु इल्ला यौमिलिक्रियामति व क्रद ज़करल्बुखारी फिल्बाबि रिवायातुन क़रीरतु दाल्लतुन अला मा तर्जम बिही फमिन्हा मा यतअल्लकु बिकौनिहा मौजूदतुन अल्लआन व मिन्हा मा यतअल्लकु बिस्फ़तिहा व अमरहु मिम्मा ज़करहु फी ज़ालिक मा अखरजहु अहमद व अबू दाऊद बिइस्नादिन क़विथियन अन अबी हुरैरत अनिन्बिथिय (ﷺ) क़ाल लम्मा खलकल्लाहुलजन्नत क़ाल लिज़िन्नइल इज़हब फन्जुर इलैहा अल्हदीष (फतुल बारी)

या'नी जन्नत अब मौजूद है और उसमें मुअतज़िला की तर्दीद है जो कहते हैं कि जन्नत क़यामत ही के दिन पैदा होगी। मुसन्निफ़ ने यहाँ कई अहदीष ज़िक्र की हैं। जिनसे जन्नत का वजूद साबित होता है और कुछ अहदीष जन्नत की सिफ़ात से मुता'ल्लिक हैं और इस बारे में ज़्यादा सरीह वो हदीष है जिसको अहमद और अबू दाऊद ने सहीह सनद के साथ रिवायत किया है कि जब अल्लाह पाक ने जन्नत को पैदा किया तो हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माया कि जाओ और जन्नत को देखो।

अबुल आलिया ने कहा (सूरह बक्रः में) जो लफ़ज़ अज़्वाजे मुतहहरात आया है उसका मा'नी ये है कि जन्नत की हूरें हैं और पेशाब और थूक और सब गन्दगियों से पाक साफ़ होंगी और जो ये आया है कुल्ल मा रुज़िकू मिन्हा मिन् षमरतिर रिज़कन आख़िर आयत तक उसका मतलब ये है कि जब उनके पास एक मेवा लाया जाएगा फिर दूसरा मेवा तो जन्नती कहेंगे ये तो वही मेवा है जो हमको पहले मिल चुका है। मुतशाबिहा के मा'नी सूरत और रंग मे मिले—जुले होंगे लेकिन मजे में जुदा जुदा होंगे (सूरह हाक्का में) जो लफ़ज़ कुतू फुहा दानिया आया है उसका मतलब ये है कि बहिश्त के मेवे ऐसे नज़दीक होंगे कि बहिश्ती लोग खड़े-बैठे जिस

قَالَ أَبُو الْعَالِيَةِ: «مَنْظُورَةٌ»: مِنَ الْخَيْصِ وَالْيُولِ وَالْزَّاقِ. «كَلِمًا رَزَقُوا»: أَوْ بِشْيءٍ، ثُمَّ أَوْ بَأَخَرٍ. «قَالُوا هَذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلُ»: أَوْ بِنَا مِنْ قَبْلُ. «وَأَوْتُوا بِهِ مَشَابِهًا»: يُشَبِّهُ بَقِصَّةٍ بَقِصَةً وَتُخْتَلِفُ فِي الطَّعْمِ. «فَطُورُهَا»: يَقْطُفُونَ كَيْفَ شَاءُوا «وَدَابَّتْ»: قَرِيْبَةً. «أَلَا وَابِلُكَ»: السَّرَرِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: النَّظَرَةُ فِي

तरह चाहेंगे उनको तोड़ सकेंगे। दानिया का मा'नी नजदीक के हैं, अराइका के मा'नी तख्त के हैं, इमाम हसन बखरी ने कहा लफ़्ज़ नज़रति मुँह की ताज़गी को और लफ़्ज़ सुरूर दिल की खुशी को कहते हैं। और मुजाहिद ने कहा सलसबीला के मा'नी तेज़ बहने वाली और लफ़्ज़ गोल के मा'नी पेट के दर्द के हैं। युन्जफून के मा'नी ये कि उनकी अक्ल में फ़ितूर नहीं आया (जैसा कि दुनियावी शराब से आ जाता है) और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा (सूरह नबा में) जो दिहाक्रा का लफ़्ज़ आया है उसके मा'नी लबालब भरे हुए के हैं। लफ़्ज़ कवाकिब के मा'नी पिस्तान उठे हुए के हैं। लफ़्ज़ रहीक के मा'नी जन्नत की शराब, तस्नीम वो अक्र जो बहिशतों की शराब के ऊपर डाला जाएगा। बहिशती उसको पियेंगे। और लफ़्ज़ खिताम (सूरह मुतफ़िफ़ीन में) के मा'नी मुहर की मिट्टी (जिससे वहाँ की शराब की बोतलों पर मुहर लगी हुई होगी) नज़्माख़तान (सूरह रहमान में) दो जोश मारते हुए चश्मे, लफ़्ज़ मौज़ूअति (सूरह वाक़िया में) का मा'नी जड़ाव बना हुआ, उसी से लफ़्ज़ वज़ीनुन्नाक्रा निकला है। या'नी ऊँटनी की झोल वो भी बनी हुई होती है और लफ़्ज़ कूब का मा'नी जिसकी जमा अक्वाब (सूरह वाक़िया में) है, कूज़ा जिसमें न कान हो न कुण्डा और लफ़्ज़ अबारीक़ इबरीक़ की जमा वो कूज़ा जो कान और कुण्डा रखता हो। और लफ़्ज़ अरबा (सूरह वाक़िया में) ड़रूब की जमा है जैसे म़बूर की जमा मुबुर आती है। मक्का वाले ड़रूब को अरिबतु और मदीना वाले गुंजा और इराक़ वाले शक्ला कहते हैं। उन सबसे वो औरत मुराद है जो अपने शौहर की आशिक़ हो। और मुजाहिद ने कहा लफ़्ज़ रूह (सूरह वाक़िया में है) का मा'नी बहिशत और फ़राख़ी रिज़क के हैं। रेहान का मा'नी (जो उसी सूरह में है) रिज़क के हैं और लफ़्ज़ मंज़ूद (सूरह वाक़िया) का मा'नी केले के हैं। मड़ज़ूद वे बेर जिसमें कांटा न हो मेवे के बोझ से झुका हुआ है कुछ लोग कहते हैं लफ़्ज़ अरब (जो सूरह वाक़िया में है) उसके मा'नी वो औरतें जो अपने शौहर की महबूबा हों, मस्कूब का मा'नी (जो उसी सूरह में है) बहता हुआ पानी। और लफ़्ज़ वफ़ुरुश मर्फ़ूआ (सूरह वाक़िया) का मा'नी बिछौने ऊँचे या'नी ऊपर तले बिछे हुए। लफ़्ज़ लगव जो उसी सूरह में है। उसके मा'नी ग़लत झूठ के हैं। लफ़्ज़ ताघ़ीमा जो उसी सूरह में है उसका

الْوَجُوهُ، وَالسُّرُورُ فِي الْقَلْبِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿سَلْسِلًا﴾: حَدِيدَةُ الْحِجْرَةِ. ﴿غَوْلٌ﴾: وَجَعُ الْبَطْنِ. ﴿يَنْزُقُونَ﴾: لَا تَذْهَبُ عُقُولُهُمْ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿دِهَاقًا﴾: مُتَلَبِّيًا. ﴿كَوَاعِبُ﴾: نَوَاحِدُ. ﴿الرَّحِيقُ﴾: الْخَمْرُ. ﴿التَّسْنِيمُ﴾: يَغْلُو شَرَابُ أَهْلِ الْجَنَّةِ. ﴿خِتَامُهُ﴾: طِينُهُ. ﴿مِيسَكٌ﴾: لِنِصَاحَتَانِ. ﴿فَيَاصْتَانِ﴾ يُقَالُ: ﴿مَوْضُونَةٌ﴾: مَسْجُوجَةٌ مِنْهُ. ﴿وَضِيقُ النَّافَةِ﴾. وَ(الْكُوبُ) مَا لَا أَذْنَ لَهُ وَلَا غُرُوفَ. وَ(الْأَبَارِيقُ) ذَوَاتِ الْأَذَانِ وَالْعَرَا، غُرَبَاءَ. مُثْقَلَةٌ. وَاحِذَا غُرُوبٌ، مِثْلُ صُورٍ وَصَبْرٍ. يُسَمِّيَهَا أَهْلُ مَكَّةَ (الْعَرَبَةَ) وَأَهْلُ الْمَدِينَةِ (الْفَسْحَةَ) وَأَهْلُ الْعِرَاقِ (الشَّكْلَةَ). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿رَوْحٌ﴾: جَنَّةٌ وَرَحَاءٌ. ﴿الرَّوَيْحَانُ﴾: الرَّزْقُ. وَ﴿الْمَنْضُودَةُ﴾: الْمَوْزُ. وَ﴿الْمَنْضُودَةُ﴾: الْمَوْزُ خَمَلًا، وَيُقَالُ أَيْضًا: لَا شَرَكَ لَهُ. وَالْعَرَبُ: الْمَخْبِيَّاتُ إِلَى أَرْوَاحِهِمْ. وَيُقَالُ: ﴿مَسْكُوبٌ﴾: جَارٍ. وَهُوَ فَرْشٌ مَرْفُوعَةٌ: بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ. ﴿لُعَابٌ﴾: بَاطِلٌ. ﴿تَأْتِيْمًا﴾: كَلِيًّا. ﴿أَقْنَانٌ﴾: أَعْصَانٌ. ﴿وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ ذَانِ﴾: مَا يُجْتَنَى قَرِيبٌ. ﴿مَذَاهِمَاتَانِ﴾: سَوْدَاوَانِ مِنَ الرَّيِّ.

मा'नी भी झूठ के हैं। लफ़्ज़ अफ़नान जो सूरह रहमान में है। उसके मा'नी शाख़ें डालियौं और वजनल् जन्नतैनि दान का मा'नी बहुत ताज़गी और शादाबी की वजह से वो काले हो रहे होंगे।

मुज्जहिदे आज़म हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब में उन अक़्बर अल्फ़ाज़ के मज़ानी व मतालिब बयान कर दिये जो जन्नत की ता'रीफ़ में कुर्आन मजीद में इस्तेमाल हुए हैं। अल्लाह पाक लिखने वाले और पढ़ने वालों को जन्नत की ये जुम्ला नेअमतेँ अता करे। आमीन।

3240. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख़्स मरता है तो (रोज़ाना) सुबह व शाम दोनों वक़्त उसका ठिकाना (जहाँ वो आख़िरत में रहेगा) उसे दिखलाया जाता है। अगर वो जन्नती है तो जन्नत में अगर वो दोज़ख़ी है तो दोज़ख़ में। (राजेअ: 1379)

۳۲۴۰- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((إِذَا مَاتَ أَحَدُكُمْ فَإِنَّهُ يُعْرَضُ عَلَيْهِ مِثْعَدَهُ بِالْعَدَاةِ وَالْعَشَى، فَإِنْ كَانَ مِنْ أَحْسَنِ لَحَةٍ فَهُوَ فِي أَهْلِ الْحَةِ. وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَهُوَ فِي أَهْلِ النَّارِ))

[رجع: ۱۳۷۹]

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि ये वाज़ेहतर दलील है कि जन्नत व दोज़ख़ उस वक़्त मौजूद हैं और वो उनके अहल को रोज़ाना दिखलाई जाती हैं, पूरा दुखूल क़यामत के दिन होगा।

3241. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सल्म बिन ज़रीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबूरजाअ ने बयान किया और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने जन्नत में झाँक कर देखा तो जन्नतियों में ज़्यादाती ग़रीबों की नज़र आई और मैंने दोज़ख़ में झाँक कर देखा तो दोज़ख़ियों में ज़्यादाती औरतों की नज़र आई।

۳۲۴۱- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ زَكْرِيَّا قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَحَاءٍ عَنْ عَمْرٍاءَ بْنِ خَصِيلٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أُطْلِعْتُ فِي الْحَةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ، وَأُطْلِعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)).

[اصطراحه في: ۵۱۹۸، ۶۴۴۹، ۶۵۴۶]

(दीगर मक़ाम: 5198, 6449, 6546)

जन्नत में ग़रीबों से मुबद्दिह, मुतबअे सुन्नत ग़रीब लोग मुराद हैं जो दीनदार मालदारों से कितने ही बरस पहले जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएँगे और दोज़ख़ में ज़्यादा औरतें नज़र आईं, जो नाशुक्री और लान-तान करने वाली आपस में हसद और बुज़्र रखने वाली होती हैं।

3242. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको सईद बिन

۳۲۴۲- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عَقِيلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَبِ

मुसय्यिब ने खबर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे, तो आपने फ़र्माया कि मैंने ख़्वाब में जन्नत देखी, मैंने उसमें एक औरत को देखा जो एक महल के किनारे वुजू कर रही थी। मैंने पूछा कि ये महल किसका है? तो फ़रिश्तों ने बताया कि ये उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का महल है। मुझे उनकी ग़ैरत याद आई और मैं वहाँ से फ़ौरन लौट आया। ये सुनकर उमर (रज़ि.) रो दिये और कहने लगे, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आपके साथ भी ग़ैरत करूँगा? (दीगर मक़ाम : 3680, 5227, 7023, 7025)

أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِذْ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرِ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ فَقَالُوا: لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَلَذَكَّرْتُ غَيْرَتَهُ، فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا. فَكَبَى عُمَرُ وَقَالَ: أَخْلَيْكَ أَعَارَ يَا رَسُولَ اللَّهِ)).

[أطرافه في : ٣٦٨٠، ٥٢٢٧، ٧٠٢٣]

[٧٠٢٥]

**तशरीह :** इन सारी अह्दादीष को यहाँ लाने से हज़रत इमाम का मक़सद जन्नत और उसकी नेअमतों का प्राबित करना है। नीज़ ये भी कि जन्नत महज़ कोई ख़्वाब व ख़याल की चीज़ नहीं है बल्कि वो एक प्राबित और बरहक़ चीज़ है जिसको अल्लाह पाक पैदा कर चुका है और उसकी सारी मज़क़ूरा नेअमतें अपना वजूद रखती हैं। इस सिलसिले में हज़रत इमाम ने मुख्तलिफ़ नेअमतों का ज़िक्र करते हुए जन्नत के मुख्तलिफ़ कवाईफ़ पर इस्तिदलाल फ़र्माया है। जो लोग मुसलमान होने के बावजूद जन्नत के बारे में किसी शैतानी वस्वसा में गिरफ़तार हों, उनको फ़ौरन तौबा करके अल्लाह और रसूल की फ़रमूदा बातों पर ईमान और यक़ीन रखना चाहिये। इससे ये भी मा'लूम हुआ कि बहिश्त मौजूद है, पैदा हो चुकी है। वहाँ हर एक जन्नती के मकानात और सामान वग़ैरह सब तैयार हैं।

हज़रत उमर (रज़ि.) का क़दज़ी जन्नती होना भी इस ह्दीष से और बहुत सी ह्दीषों से प्राबित हुआ। हज़रत उमर (रज़ि.) खुशी के मारे रो दिये और ये जो कहा कि क्या मैं आप पर ग़ैरत करूँगा, उसका मतलब ये है कि आप तो मेरे बुजुर्ग हैं। मेरे मुरब्बी हैं। ग़ैरत तो बराबर वाले से होती है न कि मालिक और मुरब्बी से।

3243. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू इमरान जूनी से सुना, उनसे अबूबक्र बिन अब्दुल्लाह बिन क्रैस अशअरी ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, (जन्नतियों का) ख़ैमा किया है। एक मोती है खोलदार जिसकी बुलन्दी ऊपर को तीस मील तक है। उसके हर किनारे पर मोघिन की एक बीवी होगी जिसे दूसरे न देख सकेंगे।

अबू अब्दुस्समद और हारिष बिन उबैद ने अबू इमरान से (बजाय तीस मील के) साठ मील बयान किया। (दीगर मक़ाम : 4879)

٣٢٤٣- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عِمْرَانَ الْجَوْنِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ الْأَشْجَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْمَةُ ذُرَّةٌ مُجَوَّفَةٌ طُولُهَا فِي السَّمَاءِ ثَلَاثُونَ مِيلًا فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا لِلْمُؤْمِنِ أَهْلٌ لَا يَرَاهُمُ الْآخَرُونَ)).

قَالَ أَبُو عَبْدِ الصَّمَدِ وَالْحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ: ((سِتُونَ مِيلًا)).

[طرفه في : ٤٨٧٩]



3244. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, कहा हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, उनसे अउरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला का इशार्द है कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिये वो चीज़ें तैयार कर रखी हैं, जिन्हें न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना और न किसी इंसान के दिल में उनका कभी खयाल गुजरा है। अगर जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, पस कोई शख्स नहीं जानता कि उसकी आँखों की ठण्डक के लिये क्या क्या चीज़ें छुपाकर रखी गई हैं। (दीगर मक़ाम: 4779, 4780, 7498)

۳۲۴۴- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((قَالَ اللَّهُ: أَغْدِثُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ، وَلَا أَذَنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ. فَافْرُقُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُوَّةٍ أَعَيْنَ﴾)).

[أطرافه في: ۴۷۷۹، ۴۷۸۰، ۷۴۹۸].

ये आयत सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा में है। क़यामत के दिन ये ईमानवालों के आमाले सालिहा का बदला होगा जो बिज़्ज़रूर उनको मिलेगा।

3245. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में दाख़िल होने वाले सबसे पहले गिरोह के चेहरे ऐसे रोशन होंगे जैसे चौदहवीं का चाँद रोशन होता है। न उसमें थूकेंगे न उनकी नाक से कोई आलाइश आएगी और न पेशाब, पाख़ाना करेंगे। उनके बर्तन सोने के होंगे। कंधे सोने-चाँदी के होंगे। अंगठियों का ईधन रुद का होगा। पसीना मुश्क जैसा खुशबूदार होगा और हर शख्स की दो बीवियाँ होंगी। जिनका हुस्न ऐसा होगा कि पिण्डलियों का गुदा गोश्त के ऊपर से दिख रहा होगा। न जन्नतियों में आपस में कोई इख़्तिलाफ़ होगा और न बुज़ व इनाद, उनके दिल एक होंगे और सुबह व शाम अल्लाह पाक की तस्बीह व तहलील में मशगूल रहा करेंगे।

۳۲۴۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَابِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُكَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَلِجُ الْجَنَّةَ صُورَتُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، لَا يَتَّخِذُونَ فِيهَا وَلَا يَمْتَحِطُونَ وَلَا يَتَفَوِّطُونَ. آيَتُهُمْ فِيهَا الذَّهَبُ، أَمْشَاتُهُمْ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَمَعَامِرُهُمُ الْأَلْوَقُ، وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ. وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ يُرَى مِنْهُ شَوْقُهُمَا مِنْ وَرَاءِ اللَّحْمِ مِنَ الْحُسْنِ. لَا اخْتِلَافَ بَيْنَهُمْ وَلَا تَبَاغُضَ، قُلُوبُهُمْ قَلْبٌ وَاحِدٌ، يُسَبِّحُونَ اللَّهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا)).

[أطرافه في: ۳۲۴۶، ۳۲۵۴، ۳۲۲۷].

3246. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, उनसे अउरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में दाख़िल होने वाले सबसे पहले गिरोह के चेहरे

۳۲۴۶- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ

ऐसे रोशन हों गे जैसे चौदहवीं का चाँद होता है। जो गिरोह उसके बाद दाखिल होगा उनके चेहरे सबसे ज्यादा चमकदार सितारे जैसे रोशन होंगे। उनके दिल एक होंगे कि कोई भी इख्तिलाफ़ उनमें आपस में न होगा और न एक-दूसरे से बुज़ व हसद होगा। हर शाख़्स की दो बीदियाँ होंगी, उनकी ख़ूबसूरती ऐसी होगी कि उनकी पिण्डलियों का गूदा गोश्त के ऊपर से दिखाई देगा। वो सुबह शाम अल्लाह की तस्बीह करते रहेंगे न उनको कोई बीमारी होगी, न उनकी नाक में कोई आलाइश आएगी और न थूक आएगा। उनके बर्तन सोने और चाँदी के और कंघे सोने के होंगे और उनकी अंगठियों का ईंधन अल्पा का होगा, अबुल यमान ने बयान किया कि अल्पा से ऊँचे हिन्दी मुराद है। और उनका पसीना मुश्क जैसा होगा। मुजाहिद ने कहा कि इब्कार से मुराद अक्वले फ़ज़्र है और बलअशी से मुराद सूरज का इतना ढल जाना कि वो गुरुब होता नज़र आने लगे। (राजेअ: 3245)

3247. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मुक्रहमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार था (आपने ये फ़र्माया कि) सात लाख की एक जमाअत जन्नत में एक ही वक़्त में दाख़िल होंगी और उन सबके चेहरे ऐसे चमकेंगे जैसे चौदहवीं का चाँद चमकता है। (दीगर मक़ाम: 6543, 6554)

3248. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ज़अफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में सुन्दस (एक ख़ास़ किस्म का रेशम) का एक जुब्बा

اللّٰهُ ﷻ قَالَ: ((أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ، وَالَّذِينَ عَلَى إِبْرِهِمْ كَأَشَدُّ كُتُوبٍ إِصْنَاءًا، قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ، لَا اخْتِلَافَ بَيْنَهُمْ وَلَا تَبَاعُضَ، لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ زَوْجَاتٌ: كُلٌّ وَاحِدَةٌ مِنْهُمَا يُرَى مَخُ سَاقِهَا مِنْ وَرَاءَ لَحْمِهَا مِنَ الْحَسَنِ. يُسَبِّحُونَ اللَّهَ بِكُرَّةٍ وَعَشِيًا. وَلَا يَسْتَمْنُونَ، وَلَا يَمْنَحُطُونَ وَلَا يَتَصَفَّقُونَ. آتَتْهُمْ الذَّهَبُ وَالْفِضَّةُ، وَأَمْسَاطُهُمُ الذَّهَبُ، وَلَقَدْ مَجَّاهِرُهُمُ الْاَلْوَةُ - قَالَ أَبُو الْيَمَانِ: يُغْنِي الْفُودُ - وَرَزَحُهُمُ الْمِسْكُ)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْإِبْكَارُ أَوَّلُ الْفَجْرِ، وَالْعَشِيُّ مِثْلُ الشَّمْسِ أَنْ تَقْرُبَ.

[راجع: ٣٢٤٥]

٣٢٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدِّمِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا فَضِيلُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيَدْخُلَنَّ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا - أَوْ سَبْعِمِائَةِ أَلْفٍ - لَا يَدْخُلُ أَوْلَهُمْ حَتَّى يَدْخُلَ آخِرُهُمْ، وَجُوهُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ)).

[طرفاه في: ٦٥٤٣، ٦٥٥٤]

٣٢٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْحَقْفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَهْدَيْ لِلنَّبِيِّ ﷺ

तो हफ़ा में पेश किया गया। आप (मदों के लिये) रेशम के इस्ते'माल से पहले ही मना फ़र्मा चुका थे। लोगों ने इस जुब्बे को बहुत ही पसन्द किया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के रूमाल इससे बेहतर होंगे। (राजेअ : 2615)

3249. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यहाा बिन सईद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह की ख़िदमत में रेशम का एक कपड़ा पेश किया गया उसकी ख़ूबसूरती और नज़ाकत ने लोगों को हैरत में डाल दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सअद बिन मुआज़ के रूमाल इससे बेहतर और अफ़ज़ल हैं। (दीगर मक़ाम : 3802, 5836, 6640)

आँहज़रत (ﷺ) का इशारा ये था कि दुनिया की कोई बड़ी से बड़ी नेअमत एक जन्नती के नाक मुँह पहुँचने के रूमाल से ज़्यादा कोई क़द्र व क़ीमत नहीं रखती।

3250. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक कोड़े की जगह दुनिया से और जो कुछ दुनिया में है, सबसे बेहतर है। (राजेअ : 2794)

3251. हमसे रौह बिन अब्दुल मोमिन ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक पेड़ है जिसके साये में एक सवार सौ साल तक चल सकता है और फिर भी उसको तय न कर सकेगा।

جَنَّةٌ سُدْسٌ. وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الْحَرِيرِ، فَعَجِبَ النَّاسُ مِنْهَا، فَقَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ. لِمَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هَذَا)). [راجع: ٢٦١٥]

٣٢٤٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ثَوْبٌ مِنْ حَرِيرٍ، فَجَعَلُوا يَغْتَبُونَ مِنْ حُسْنِهِ وَلِيَّهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لِمَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ أَفْضَلُ مِنْ هَذَا)).

[أطرافه في : ٣٨٠٢، ٥٨٣٦، ٦٦٤٠].

٣٢٥٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَوْضِعٌ سَوِطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)). [راجع: ٢٧٩٤]

٣٢٥١- حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عَبْدِ الْمُؤْمِنِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُوَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّكَّابُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لَا يَقْطَعُهَا)).

सूरह वाक़िया में अल्लाह पाक ने जन्नत के साये के बारे में फ़र्माया, वज़िल्लिमू मम्दूद (अल् वाक़िया : 30) या'नी वहाँ पेड़ों

का साया दूर-दराज़ तक फैला हुआ होगा। या अल्लाह हम सब इस किताब के कद्रदानों को जन्नत का वो साया अज़ा फ़र्मा।

अह्मदीय व आयात से रोज़े-रोशन की तरह वाज़ेह है कि जन्नत एक मुजस्सम हकीकत का नाम है जो लोग जन्नत को महज़ ख़्वाब व ख़याल की हद तक मानते हैं वो ख़तरनाक ग़लती में मुब्तला हैं। ऐसे ग़लत ख़याल वालों के लिये अगर जन्नत महज़ एक ख़्वाब नाक़ाबिले ता'बीर ही बनकर रह जाए तो अज़ब नहीं है, अल्लाहुम्म ला तज़अल्ना मिन्हुम आमीन।

3252. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी अमर ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक पेड़ है जिसके साये में एक सवार सौ साल तक चल सकेगा और अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, व ज़िल्लिम मम्दूद और लम्बा साया।

(दीगर मक़ाम : 4881)

3253. और किसी शख्स के लिये एक कमान के बराबर जन्नत में जगह इस पूरी दुनिया से बेहतर है जिस पर सूरज तुलूअ और गुरुब होता है। (राजेअ : 2793)

3254. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फुलैह ने बयान किया, कहा हमसे हमारे बाप ने बयान किया, उनसे हिलाल ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी अमर ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि सबसे पहला गिरोह वो जो जन्नत में दाख़िल होगा। उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाद की तरह रोशन होंगे। जो गिरोह उसके बाद दाख़िल होगा उनके चेहरे आसमान पर मोती की तरह चमकने वाले सितारों में जो सबसे ज़्यादा रोशन सितारा होता है इस जैसे रोशन होंगे, सबके दिल एक जैसे होंगे उनमें बुज़्ज व फ़साद होगा और न हसद, हर जन्नती की दो हूरें ऐन बीवियाँ होगी, इतनी हसीन कि उनकी पिण्डली की हड्डी और गोश्त के अंदर का गूदा भी देखा जा सकेगा।

3255. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे

۳۲۵۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا هِلَالُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عُمَرَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّائِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ سَنَةٍ، وَاقْرَءُوا إِنَّ شَيْئًا: «وَوَيْلٌ مُمَذَّذٌ».

[طرمه في: ۴۸۸۱]

۳۲۵۳- ((وَلَقَابُ قَوْسٍ أَحَدِكُمْ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ أَوْ تَغْرُبُ)). [راجع: ۲۷۹۳]

۳۲۵۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا هِلَالُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عُمَرَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبُثْرِ، وَالَّذِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ كَأَخْسَنِ كَوَكَبٍ ذُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً، قُلُوبُهُمْ عَلَى قُلُوبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ، لَا تَبَاغَضُ بَيْنَهُمْ وَلَا تَحَاسَدُ، لِكُلِّ امْرِئٍ زَوْجَتَانِ مِنَ الْخُورِ الْعَيْنِ، يُرَى مَخْ سَوْفَهُنَّ مِنْ وَرَاءِ الْعُظْمِ وَاللَّحْمِ)).

۳۲۵۵- حَدَّثَنَا حُجَّاجُ بْنُ مَهْدِيٍّ قَالَ

शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी बिन साबित ने खबर दी, कहा कि मैं ने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के (साहबज़ादे) इब्राहीम (रज़ि.) का इंतिकाल हुआ, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में उसे एक दूध पिलाने वाली अना के हवाले कर दिया गया है (जो उनको दूध पिलाती है)। (राजेअ : 1382)

3256. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे सफ़वान बिन सुलैम ने, उनसे अत्ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नती लोग अपने से बुलन्द कमरे वालों को ऊपर इसी तरह देखेंगे जैसे चमकते सितारे को जो सुबह के वक़्त रह गया हो, आसमान के किनारे पूरब या पश्चिम में देखते हैं। उनमें एक-दूसरे से अफ़ज़ल होगा। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये तो अंबिया के महल होंगे जिन्हें उनके सिवा और कोई न पा सकेगा। आपने फ़र्माया कि नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। ये उन लोगों के लिये होंगे जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और अंबिया की तस्दीक की।

(दीगर मक़ाम : 6556)

जो लोग दुनिया में अंबियाई तरीक़े-कार पर पर कारबन्द रहे और इस्लाम कुबूल करके आमाले सालिहा में ज़िन्दगी गुज़ारी, ये महल उन ही के होंगे, अल्लाहुम्मा अज्जअल्ना मिन्हुम आमीन.

## बाब 9 : जन्नत के दरवाज़ों का बयान

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने (अल्लाह के रास्ते में किसी चीज़ का) एक जोड़ा खर्च किया, उसे जन्नत के दरवाज़े से बुलाया जाएगा उस बाब में इब्बादा बिन सामित ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

3257. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुतरिफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। उनमें एक दरवाज़े का नाम सयान है। जिससे दाख़िल होने वाले

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: عَلِيٌّ بْنُ ثَابِتٍ أَخْبَرَنِي قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا مَاتَ إِبْرَاهِيمُ قَالَ: إِنَّ لِي مَرْصِعًا فِي الْجَنَّةِ)).

[راجع: 1382]

۳۲۵۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَتَرَاءَوْنَ أَهْلَ الْفَرْجِ مِنْ قُورَيْهِمْ كَمَا يَتَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ السُّرِّيَّ الْغَائِبَ فِي الْأَفْقِ مِنَ الْمَشْرِقِ أَوْ الْمَغْرِبِ، لَتَفَاضِلٍ مَا بَيْنَهُمْ. قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، بَلْكَ مَنَازِلُ الْأَنْبِيَاءِ لَا يَتَلَفَّاهَا غَيْرُهُمْ؟ قَالَ: بَلَى وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، رِجَالٌ آمَنُوا بِاللَّهِ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِينَ)).

[طهره في: 6556]

## 9- بَابُ صِفَةِ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ دَعِيَ مِنْ بَابِ الْجَنَّةِ)) فِيهِ عِبَادَةٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

۳۲۵۷- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لِي الْجَنَّةُ ثَمَانِيَةٌ

सिर्फ रोजेदार होंगे। (राजेअ : 1896)

## बाब 10 : दोज़ख का बयान और ये बयान कि दोज़ख बन चुकी है, वो मौजूद है

सूरह नबा मे जो लफ़्ज़ ग़साक़ा आया है उसका मा'नी पीप लहू, अरब लोग कहते हैं ग़स्कत अयनुहू उसकी आँख बह रही है यस्सिकुल जरह ज़ख़म बह रहा है। ग़स्साक़ और ग़सीक़ दोनों के एक ही मा'नी हैं। ग़िस्लीन का लफ़्ज़ जो सूरह हाक्का में है उसका मा'नी धोवन या'नी किसी चीज़ के धोने में जैसे आदमी का ज़ख़म हो या ऊँट का जो निकले फ़िअलीन के वज़न पर गुस्ल से मुश्तक़ है। इक्स्मा ने कहा हज़ब का लफ़्ज़ जो सूरह अंबिया में है मा'नी हतब या'नी ईधन के हैं। ये लफ़्ज़ हब्शी जुबान का है दूसरों ने कहा, हासिबन का मा'नी जो सूरह बनी इस्राईल में है तुन्द हुआ, आँधील और हासिब उसको भी कहते हैं जो हवा उड़ाकर लाए। उसी से लफ़्ज़ हज़ब जहन्नम निकला है जो सूरह अंबिया में है। या'नी दोज़ख में झोंके जाएँगे वो उसके ईधन बनेंगे। अरब लोग कहते हैं हज़ब फ़िल् अरज़ि या'नी वो ज़मीन में चला गया। हज़ब हज़बाअ से निकला है। या'नी पथरीली कंकरियाँ। सदीद का लफ़्ज़ जो सूरह इब्राहीम में है उसका मा'नी पीप और लहू के हैं। ख़बत का लफ़्ज़ जो सूरह बनी इस्राईल में है उसका मा'नी बुझा जाएगी। तूरून का लफ़्ज़ जो सूरह वाक़िया मे है उसका मा'नी आग सुलगाते हो, कहते हैं अवैरतु या'नी मैंने आग सुलगाई। मुक्वीन का लफ़्ज़ जो सूरह वाक़िया में है ये लफ़्ज़ कै से निकला है। कै उजाड़ ज़मीन को कहते हैं और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने सिवाउल जहीम की तफ़्सीर में कहा जो सूरह सफ़ात में है दोज़ख का बीचो-बीच का हिस्सा, लशौबा मिन हमीम (जो इसी सूरह में है) उसका मा'नी ये है कि दोज़खियों के खाने में गर्म खोलता हुआ पानी मिलाया जाएगा। अल्फ़ाज़ ज़फ़ीर और शहीक़ जो सूरह हूद में हैं उनके मा'नी आवाज़ से रोना और आहिस्ता से रोना, लफ़्ज़ वरदा जो सूरह मरयम में है या'नी प्यासे, लफ़्ज़ ग़या जो इसी सूरह में है। या'नी टूटा नुक़सान, और मुजाहिद

أَبواب. فِيهَا بَابُ يُسَمَّى الرِّبَانُ لَا يَدْخُلُهُ إِلَّا الصَّائِمُونَ. (راجع: ١٨٩٦)

١٠ - بَابُ صِفَةِ النَّارِ

وَأَنَّهَا مَخْلُوقَةٌ

﴿عَسَافًا﴾: يُقَالُ: عَسَفَتْ عَيْنُهُ. وَيَفْسِقُ الْجَوْحُ. وَكَانَ الْعَسَاقُ وَالْفَسِيقُ وَاحِدًا. ﴿غَسَلَيْنِ﴾: كُلُّ شَيْءٍ غَسَلْنَاهُ فَخَرَجَ مِنْهُ شَيْءٌ فَهُوَ غَسَلِيٌّ. فَعَلَيْنِ مِنَ الْغَسْلِ، مِنَ الْجَوْحِ وَالدُّبْرِ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: ﴿حَصَبُ جَهَنَّمَ﴾: حَطَبٌ بِالْحَبَشِيَّةِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿حَاصِبًا﴾: الرِّيحُ الْعَاصِفُ، وَالْحَاصِبُ مَا تَرْمِي بِهِ الرِّيحُ. وَمِنْهُ حَصَبُ جَهَنَّمَ. يُرْمَى بِهِ فِي جَهَنَّمَ. هُمْ حَصَبُهَا. وَيُقَالُ: حَصَبٌ فِي الْأَرْضِ ذَنْبٌ، وَالْحَصَبُ مُشْتَقٌّ مِنْ حَصَبَاءِ الْحِجَارَةِ. ﴿صَدِيدٌ﴾: قَيْحٌ وَذَمٌّ. ﴿خَبْتٌ﴾: طَفِئَتْ. ﴿تَوَزَّوْنَ﴾: تَسْتَخْرِجُونَ أَوْزَتَ، أَوْ لَذْتَ. ﴿لِلْمُقْرَبِينَ﴾: لِلْمَسَافِرِينَ. وَالْقِي: الْفَقْرُ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿صِرَاطُ الْجَحِيمِ﴾: سَوَاءُ الْجَحِيمِ وَوَسْطُ الْجَحِيمِ. وَلَشَوْبَا مِنْ حَمِيمٍ: يَخْلَطُ طَعَامُهُمْ وَيَسَاطُ بِالْحَمِيمِ. ﴿زَفِيرٌ وَشَهْقٌ﴾: صَوْتٌ شَدِيدٌ وَصَوْتٌ ضَعِيفٌ. ﴿وَرِزْدًا﴾: عِطَاشًا. ﴿عَيَاءٌ﴾: حُسْرَانًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿يَسْتَخْرِجُونَ﴾: يُوقِدُ بِهِمُ النَّارُ. ﴿وَنَحَاسٌ﴾: الصُّفْرُ

ने कहा लफ़्ज़ युस्ज़रून जो सूरह मोमिन में है, या'नी आग का ईंधन बनेंगे। लफ़्ज़ नुहास जो सूरह रहमान में है उसका मा'नी तांबा जो पिघलाकर उनके सिरों पर डाला जाएगा। लफ़्ज़ ज़ूकू जो कई सूरतों में आया है उसका मा'नी ये है कि अज़ाब को देखो, मुँह से चखना मुराद नहीं है। लफ़्ज़ मआरिज जो सूरह रहमान में है या'नी खालिस आग। अरब लोग कहते हैं, मरजल अमीरु रइय्यतहू या'नी बादशाह अपनी रइय्यत को छोड़ बैठा, वो एक-दूसरे पर जुल्म कर रहे हैं। लफ़्ज़ मरीज जो सूरह काफ़ में है, या'नी मिला हुआ, मुश्तबह कहते हैं मरज अम्फ़नास अख़्तलत या'नी लोगों का मामला सब ख़लत-मलत हो गया। लफ़्ज़ मरजल बह्रैनि जो सूरह रहमान में है मरज्त दाब्बतक से निकला है, या'नी तू ने अपना जानवर छोड़ दिया है।

3258. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहाजिर अबुल हसन ने बयान किया कि मैंने ज़ैद बिन वहब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.) से सुना वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) एक सफ़र में थे (जब हज़रत बिलाल रज़ि. जुहर की अज़ान देने उठे तो) आपने फ़र्माया कि वक़््त ज़रा ठण्डा हो लेने दो, फिर दोबारा (जब वो अज़ान के लिये उठे तो फिर) आपने उन्हें यही हुक्म दिया कि वक़््त और ठण्डा हो लेने दो, यहाँ तक कि टीलों के नीचे से साया ढल गया, उसके बाद आपने फ़र्माया कि नमाज़ ठण्डे औक़ात में पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम की भाप से पैदा होती है। (राजेअ: 535)

3259. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान घ़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मशाने, उनसे ज़ववान ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, नमाज़ ठण्डे वक़््त में पढ़ा करो, क्योंकि गर्मी शिद्दते जहन्नम की भाप से पैदा होती है। (राजेअ: 538)

3260. हमसे अबुल यमान ने बयान किया कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू

يُصَبُّ عَلَى رُؤُوسِهِمْ. ﴿يَقَالُ ذُوقُوا﴾: بِأَشْرُوا وَجَرَّبُوا، وَلَيْسَ هَذَا مِنْ ذُوقِ الْقَمِ. ﴿مَارِجٌ﴾: خَالِصٌ مِنَ النَّارِ، مَرَجَ الْأَمِيرُ رَعِيَّتَهُ إِذَا خَلَاوَهُمْ يَغْدُو بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ. ﴿مَرِيحٌ﴾: مُلْتَبِسٌ. مَرَجَ أَمْرُ النَّاسِ: اخْتَلَطَ. ﴿مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ﴾: مَرَجَتْ دَابَّتُكَ تَرَكْنَهَا.

۳۲۵۸- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُهَاجِرِ أَبِي الْحَسَنِ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَقَالَ: ابْرُدْ، ثُمَّ قَالَ: ابْرُدْ، حَتَّى فَاءَ الْفَاءِ - يَغْنِي لِلتَّلَوْلِ - ثُمَّ قَالَ: ابْرُدُوا بِالصَّلَاةِ. فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ.))

[راجع: ۵۳۵]

۳۲۵۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ ذُكْرَانَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ابْرُدُوا بِالصَّلَاةِ، فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ.))

[راجع: ۵۳۸]

۳۲۶۰- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو

सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जहन्नम ने अपने रब के हुज़ूर में शिकायत की और कहा कि मेरे रब! मेरे ही कुछ हिस्से ने कुछ को खा लिया है। अल्लाह तआला ने उसे दो सांसों की इजाज़त दी, एक सांस जाड़े में और एक गर्मी में। तुम इतिहाई गर्मी और इतिहाई सर्दी जो उन मौसमों में देखते हो, उसका यही सबब है। (राजेअ : 537)

سَلَّمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «اشْتَكَتِ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا فَقَالَتْ: رَبِّ أَكُلَ بَعْضِي بَعْضًا، فَأَوْذِنَ لَهَا بِنَفْسَيْنِ: نَفْسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفْسٍ فِي الصَّيفِ، فَأَشَدُّ مَا تَجِدُون فِي الْحَرِّ، وَأَشَدُّ مَا تَجِدُون مِنَ الزَّمْهَرِيِّ»۔ [راجع: ٥٣٧]

**तशरीह :** ये अस्बाब बातिनी हैं। जिनको जैसे रसूल करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इसी तरह तस्लीम कर लेना और मज़ीद कुरेद न करना ही अहले इमान के लिये जरूरी है जो लोग उमूरे बातिन को अपनी महदूद अक्ल के पैमाने से नापना चाहते हैं, उनको सिवाय घाटे और इमान में ख़राबी के और कुछ हासिल नहीं होता। मुंकिरीने हदीष ने अपनी कोरे बातिनी की बिना पर ऐसी अहदीष को खुसूसियत से तन्कीद का निशाना बनाया है वो इतना नहीं समझ पाते कि ऐसे इस्तिआरात खुद कुआन करीम में भी बहुत जगह इस्तेमाल किये गये हैं जैसे इशाद है इन मिन शौइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्ला तफ़्फ़्क़हुन तस्बीहहुम (बनी इस्राईल : 44) या 'नी कायनात की हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह पढ़ती है मगर तुम उनकी कैफ़ियत नहीं समझ सकते। या जैसे आयत यौम नक़ूल लिजहन्नम हलिम्लतलि व तक़ूलु हल मिम्मज़ीद (काफ़ : 30) में नार व दोज़ख़ का कलाम करना मज़कूर है। मुंकिरीने हदीष जो महज़ कुआन पर इमान का दावा करते हैं वो ऐसे कुआनी इस्तिआरात के बारे में क्या तन्कीद करेंगे।

प्राबित हुआ कि आलमे बरज़ख़ बातिनी, आलम आखिरत, आलमे ज़व्रत उन सबके लिये जो जो कवाइफ़ जिन जिन लफ़्ज़ों में कुआन व हदीष में वारिद हुए हैं उनको उनके ज़ाहिरी मआनी की हद तक तस्लीम करके आगे जुबान बन्द करना इमान वालों की शान है यही लोग रासिख़ीन फ़िल् इल्म और यही लोग अल्लाह के नज़दीक समझदार हैं। जअल्लल्लाहु मिन्हुम आमीन !

3261. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर अब्दुल मलिक अन्नदी ने बयान किया, उनसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अबू जमरह नसर बिन इमरान सबई ने बयान किया कि मैं पक्का मैं इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में बैठा करता था। वहाँ मुझे बुखार आने लगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इस बुखार को ज़मज़म के पानी से ठण्डा कर, क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जहन्नम की भाप के अन्नर से आता है, इसलिये इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो या ये फ़र्माया कि ज़मज़म के पानी से। ये शक हम्माम रावी को हुआ है।

٣٢٦١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ هُوَ الْقَعْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ أَبِي جَنْزَرَةَ الصُّبَعِيِّ قَالَ: كُنْتُ أَجَالِسُ ابْنَ عَبَّاسٍ بِمَكَّةَ، فَأَخَذَنِي الْحُمَى فَقَالَ: أَبْرِدْهَا عَنْكَ بِمَاءٍ زَمْزَمَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «الْحُمَى مِنْ قَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالمَاءِ، أَوْ قَالَ: بِمَاءِ زَمْزَمَ. شَكَ هَمَّامٌ»۔

सफ़रावी बुखारात में ठण्डे पानी से गुस्ल करना मुफ़ीद है। आजकल शदीद बुखार की हालत में डॉक्टर बर्फ़ का इस्तेमाल करते हैं। लिहाज़ा आबे ज़मज़म के बारे में जो कहा गया है, वो बिलकुल सिद्क और सवाब है। बुखार की ह़रारत भी एक ह़रारत है जिसे दोज़ख़ की ह़रारत का हिस्सा करार देना बर्ईद अज़अक्ल नहीं है। फ़फ़हम।



3262. मुझसे अमर बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन महदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान घौरी ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उनसे इब्बाया बिन रिफाआ ने बयान किया, कहा मुझको राफ़ेअ बिन खदीज (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया था कि बुखार जहन्नम के जोश मारने के अषर से होता है इसलिये इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (दीगर मक़ाम : 5723)

3263. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बुखार जहन्नम की भाप के अषर से होता है इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (दीगर मक़ाम : 5725)

3264. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यहा ने, उनसे इब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया, और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बुखार जहन्नम की भाप के अषर से होता है इसलिये इसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (दीगर मक़ाम : 5723)

3265. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुज्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारी (दुनिया की) आग जहन्नम की आग के मुकाबले में (अपनी गर्मी और हलाकत ख़ेज़ी में) सत्तरवाँ हिस्सा है। किसी ने पूछा, या रसूलुल्लाह! (कुप्फ़ार और गुनाहगारों के अज़ाब के लिये तो) ये हमारी दुनिया की आग भी बहुत थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि दुनिया की आग के मुकाबले में जहन्नम की आग उनहत्तर गुना बढ़कर है।

3266. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने,

۳۲۶۲- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَاسِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُبَايَةَ بْنِ رِافِعَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: «الْحُمَى مِنْ قَوْرِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالنَّاءِ».

[طوله في: ۵۷۲۳].

۳۲۶۳- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «الْحُمَى مِنْ قَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالنَّاءِ».

[طوله في: ۵۷۲۵].

۳۲۶۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «الْحُمَى مِنْ قَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالنَّاءِ».

[طوله في: ۵۷۲۳].

۳۲۶۵- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «نَارُكُمْ جُزْءٌ مِنْ مَتْنِينَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ. قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً، قَالَ: فَضَلْتُ عَنْهُمْ بِسَبْعَةِ مِائَتَيْنِ جُزْءًا كُلُّهُمْ بِمِثْلِ حَرِّهَا».

۳۲۶۶- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ عَنْ عَمْرُو مَسْعُودٍ عَنْ عَطَاءٍ يُخْبِرُ

उन्होंने अज्ञात से सुना, उन्होंने सप्रस्वान बिन यज़ला से ख़बर दी। उन्होंने अपने वालिद के वास्ते से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को मिम्बर पर इस तरह आयत पढ़ते सुना। व नादौ या मालिक (और वो दोज़खी पुकारेंगे, ऐ मालिक!)। (राजेअ: 3230)

3267. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से किसी ने कहा कि अगर आप फ़लाँ साहब (उप्मान रज़ि.) के यहाँ जाकर उनसे बातचीत करो तो अच्छा है (ताकि वो ये फ़साद दबाने की तदबीर करें) उन्होंने कहा क्या तुम लोग ये समझते हो कि मैं उनसे तुमको सुनाकर (तुम्हारे सामने ही) बात करता हूँ, मैं तन्हाई में उनसे बातचीत करता हूँ इस तरह पर कि फ़साद का दरवाज़ा नहीं खोलता, मैं ये भी नहीं चाहता कि सबसे पहले मैं फ़साद का दरवाज़ा खोलूँ और मैं आँहज़रत (ﷺ) से एक हदीष सुनने के बाद ये भी नहीं कहता कि जो शख्स मेरे ऊपर सरदार हो वो सब लोगों में बेहतर है। लोगों ने पूछा कि आपने आँहज़रत (ﷺ) से जो हदीष सुनी है वो क्या है? हज़रत उसामा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को मैंने ये फ़र्माते सुना था कि क़यामत के दिन एक शख्स को लाया जाएगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा। आग में उसकी आँतें बाहर निकल आएँगी और वो शख्स इस तरह चक्कर काटने लगेगा जैसे गधा अपनी चक्की पर गर्दिश किया करता है। जहन्नम में डाले जाने वाले उसने क़रीब आकर जमा हो जाएँगे और उससे कहेंगे, ऐ फ़लाँ! आज ये तुम्हारी क्या हालत है? क्या तुम हमें अच्छे काम करने के लिये नहीं कहते थे, और क्या तुम बुरे कामों से हमें मना नहीं करते थे? वो शख्स कहेगा जी हाँ, मैं तुम्हें अच्छे कामों के करने का हुक्म देता था लेकिन मैं खुद नहीं करता था। बुरे कामों से तुम्हें मना भी करता था, लेकिन मैं खुद किया करता था। इस हदीष को गुन्दर ने भी शुअबा से, उन्होंने आ'मश से रिवायत किया है। (दीगर मक़ाम: 7098)

عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى عَنْ أَبِيهِ: ((سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَى الْمُنْبَرِ: ((وَلَاذُوا يَا مَالِكُ)). (راجع: ٣٢٣٠)

٣٢٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَزَنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قِيلَ لَأَسَامَةَ لَوْ أَنَّكَ فَلَانًا فَكَلَّمْتَهُ، قَالَ: إِنَّكُمْ لَتَرَوْنَ أَنِّي لَا أَكَلِمَةَ إِلَّا أَسْمِعْكُمْ، إِنِّي أَكَلِمَةُ لِي السَّرَّ ذُونَ أَنْ أَفْتَحَ بَابًا أَكُونُ أَوَّلَ مَنْ فَتَحَهُ، وَلَا أَقُولُ لِرَجُلٍ - أَنْ كَانَ عَلَيَّ أَمِيرًا - إِنَّهُ خَيْرُ النَّاسِ، بَعْدَ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: وَمَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ: قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ، فَتَذِلُّ أَقْبَابُهُ فِي النَّارِ، فَيَذُورُ كَمَا يَذُورُ الْحِمَارُ بِرَحَاهُ، فَيَجْمَعُ أَهْلُ النَّارِ عَلَيْهِ فَيَقُولُونَ أَيُّ فَلَانٍ مَا شَأْنُكَ؟ أَلَيْسَ كُنْتَ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ؟ قَالَ: كُنْتُ أَمُرُكُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَلَا آتِيهِ، وَأَنْهَأَكُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَآتِيهِ))، رَوَاهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ.

[طرفه ي: ٧٠٩٨]

और मुजाहिद ने कहा (सूरह वस्साफ़ात में) लफ़्ज़ युक्ज़फून् का मा'नी फेंके जाते हैं (इसी सूरह में) दुहूरा के मा'नी धुत्कारे हुए के हैं। इसी सूरह में लफ़्ज़ वासिब का मा'नी हमेशा का है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा (सूरह अअराफ़ में) लफ़्ज़ मदहूरा का मा'नी धुत्कारा हुआ, मर्दूद (और सूरह निसा में) मरीदा का मा'नी मुतमर्द व शरीर के हैं। इसी सूरह में फ़ल यब्तकुन बतक से निकला है या'नी घीरा, काटा। (सूरह बनी इस्राईल में) वस्तफ़ज़िज़ का मा'नी उनको हल्का कर दे। इसी सूरह में ख़ैल का मा'नी सवार और ख़ुल या'नी प्यादे। या'नी अर्जालतु इसका मुफ़रद राजिल जैसे सहाब का मुफ़रद साहब और तजर का मुफ़रद ताजिर इसी सूरह में लफ़्ज़ ल अहतनिकन्ना का मा'नी जड़ से उखाड़ दूंगा। सूरह साफ़फ़ात में लफ़्ज़ क़रीन के मा'नी शैतान के

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿يَقْدِفُونَ﴾: يُرْمُونَ.  
﴿ذُخُورًا﴾: مَطْرُودِينَ. ﴿وَاصِبٌ﴾:  
دَائِمٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿مَذْخُورًا﴾:  
مَطْرُودًا، يُقَالُ: ﴿مُزِنْدًا﴾: مُتَمَرِّدًا.  
بِتَكَّةٍ قَطْعَةٍ. ﴿وَاسْتَفْزِزْ﴾: اسْتَحْفِ.  
﴿بِغِيلِكَ﴾: الْفُرْسَانِ. وَالرَّجُلُ:  
الرَّجَالَةُ، وَاجْذُهَا رَجَلٌ، مِثْلُ صَاحِبِ  
وَصَحْبٍ، وَتَاجِرٍ وَتَجَرٍ. ﴿لَا حَيْكُنْ﴾:  
لَا شَأْنِي. ﴿قَرِينٌ﴾: شَيْطَانٌ.

**तश्राह:** मैं बाब लाकर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उन मुलाहिदा का रद्द किया जो शैतान के वजूद का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि हमारा नफ़्स ही शैतान है बाकी इबलीस का अलग से कोई वजूद नहीं है। कस्तलानी ने कहा इबलीस एक शख्स है रूहानी जो आग से पैदा हुआ है और वो ज़िन्नो और शैतानों का बाप है। जैसे आदम आदमियों के बाप हैं। कुछ ने कहा वो फ़रिश्तो में से था अल्लाह की नाफ़रमानी से मर्दूद हो गया और ज़िन्नो की फ़ेहरिस्त में दाख़िल किया गया।

3268. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद इब्ना ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पर (जब आप ﷺ हुदैबिया से लौटे थे) जादू हुआ था। लैब बिन सअद ने बयान किया कि मुझे हिशाम ने लिखा था, उन्होंने अपने वालिद से सुना था और याद रखा था और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया था कि नबी करीम (ﷺ) पर जादू किया गया था। आपके ज़हन में ये बात होती थी कि फ़लों काम में कर रहा हूँ हालाँकि आप उसे न कर रहे होते। आख़िर एक दिन आपने दुआ की फिर दुआ की कि अल्लाह पाक इस जादू का अषर दफ़ा कर दे। उसके बाद आपने आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम्हें मा'लूम भी हुआ अल्लाह तआला ने मुझे वो तदबीर बता दी है जिसमें मेरी शिफ़ा मुक़दर है। मेरे पास दो आदमी आए, एक तो मेरे सर की तरफ़ बैठ गये और दूसरा पांव की तरफ़ा फिर एक ने दूसरे से कहा, उन्हें बीमारी क्या है? दूसरे आदमी ने

٣٢٦٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((سَجَّرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). وَقَالَ اللَّيْثُ: كَتَبَ إِلَيَّ هِشَامٌ أَنَّهُ سَمِعَهُ وَوَعَاذَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((سَجَّرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ يُحِيلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَفْعَلُ الشَّيْءَ وَمَا يَفْعَلُهُ، حَتَّى كَانَ ذَاتَ يَوْمٍ دَعَا وَدَعَا ثُمَّ قَالَ: أَشْعَرْتُ أَنْ اللَّهَ أَتَانِي فِيمَا فِيهِ شَفَاتِي؟ أَنَانِي وَجَلَانُ لَقَعْتُ أَحَدَهُمَا عِنْدَ رَأْسِي وَالْآخَرَ عِنْدَ رِجْلِي، فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِلْآخَرِ: مَا وَجَعَ الرَّجُلُ؟ قَالَ: مَطْبُوبٌ. قَالَ: وَمَنْ طَبَّهُ؟

जवाब दिया कि इन पर जादू हुआ है। उन्होंने पूछा, जादू इन पर किसने किया है? जवाब दिया कि लबीद बिन आसिम यहूदी ने, पूछा कि वो जादू (टोटा) रखा किस चीज में है? कहा कि कैधे में, कितान में और खजूर के खुशक खोशे के गिलाफ़ में। पूछा, और ये चीजें हैं कहाँ? कहा कि बीरेजरवान में। फिर नबी करीम (ﷺ) वहाँ तशरीफ़ ले गये और वापस आए तो हज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया, वहाँ के खजूर के पेड़ ऐसे हैं कि जैसे शैतान की खोपड़ी। मैंने आँ हज़रत (ﷺ) से पूछा, वो टोना आपने निकलवाया भी? आपने फ़र्माया कि नहीं मुझे तो अल्लाह तआला ने खुद शिफ़ा दी और मैंने उसे इस ख़याल से नहीं निकलवाया कि कहीं उसकी वजह से लोगों में कोई झगड़ा खड़ा कर दूँ। उसके बाद वो कुँआ पाट दिया गया। (राजेअ : 3175)

**तशरीह :** एक रिवायत में है कि इस जादू के अषर से आपको ऐसा मा'लूम होता था कि औरतों से सुहबत कर रहे हैं। हालाँकि ऐसा कुछ नहीं था। कहने का मतलब यह है कि इस सहर का अषर आप (ﷺ) के कुछ ख़यालात पर हुआ। बाक़ी वल्लह और तब्तीगे रिसालत में इसका कोई अषर न हो सका। इतना सा जो अषर हुआ उसमें भी अल्लाह पाक की कुछ मस्तिहत थी।

मदीना में बनी जुरैक के बाग़ में एक कुँआ था उसका नाम बीरे जरवान था। अगर आप इस जादू को निकलवाते तो सब में ख़बर उड़ जाती तो मुसलमान लोग इस यहूदी मर्दूद को मार डालते, मा'लूम नहीं क्या क्या फ़सादात हो जाते। दूसरी रिवायत में है कि आपने उसको निकलवाकर देखा लेकिन उसके खुलवाने का मंतर नहीं करया। एक रिवायत में है कि उस यहूदी ने आँ हज़रत (ﷺ) की मूरत मोम से बनाकर उसमें सूर्योपास की दीर्घा और तांत में ग्यारह गिरहें दी थीं। अल्लाह ने मुअव्वज़तैन की सूरतें उतारीं, आप उनकी एक एक आयत पढ़ते जाते तो एक एक गिरह खुलती जाती। इसी तरह जब उस मूरत में से सूर्य निकालते तो उसको तकलीफ़ होती, उसके बाद आराम हो जाता। (वहीदी)

दोनों रिवायत में तब्तीक़ ये है कि उस वक़्त आपने उसे नहीं निकलवाया, बाद में किसी दूसरे वक़्त उसे निकलवाया और उसकी उस तफ़सील को मुलाहिज़ा फ़र्माया।

3269. हमसे इस्माईल बिन अबी उवेस ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई (अब्दुल हमीद) ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। जब कोई तुम में से सोया हुआ होता है, तो शैतान उसके सर की गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है ख़ूब अच्छी तरह से और हर गिरह पर ये अफ़सून फूँक देता है कि अभी बहुत रात बाक़ी है। पड़ा सोता रह। लेकिन अगर वो शिख़र

قَالَ: لَبِيدُ بْنُ الْأَعْصَمِ. قَالَ: يَمْنَادُ؟  
قَالَ: لِي مَشْطَرٍ وَمَشْأَلَةٍ وَجَفَّ طَلْعُهُ  
ذَكَرَ. قَالَ: فَأَيْنَ هُوَ؟ قَالَ: لِي بَنُو  
ذُرَّوَانٍ. فَخَرَجَ إِلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ لِعَائِشَةَ حِينَ  
رَجَعَ: نَحَلُّهَا كَأَنَّهُ ذُرَّوْسُ الشَّيَاطِينِ.  
فَقُلْتُ: اسْتَخْرَجْتَهُ؟ فَقَالَ: لَا. أَمَا أَلَا  
لَقَدْ شَفَانِي اللَّهُ، وَخَشِيتُ أَنْ يُجِيرَ ذَلِكَ  
عَلَى النَّاسِ شَرًّا. ثُمَّ ذَلَّسْتُ الْبَيْتَ).

[راجع: 3175]

۳۲۶۹- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ  
قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ  
عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ  
الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ  
عَلَى قَائِلِهِ رَأْسَ أَخِيكُمْ - إِذَا هُوَ نَامَ -  
ثَلَاثَ عُقَدٍ، يَضْرِبُ عَلَى كُلِّ عُقْدَةٍ

जागकर अल्लाह का जिक्र शुरू करता है तो एक गिरह खुल जाती है। फिर जब खुजू करता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है। फिर जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ता है तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और सुबह को खुशमिज़ाज व खुशदिल रहता है वरना बदमिज़ाज, सुस्त रहकर वो दिन गुज़ारता है। (राजेअ: 1142)

مَكَانَهَا: عَلَيْكَ لَيْلٌ طَوِيلٌ، فَرَقْدُ. فَإِنْ اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللَّهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَإِنْ تَوَضَّأَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَإِنْ صَلَّى انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ كُلُّهَا فَاصْبَحَ نَشِيطًا طَيِّبَ النَّفْسِ، وَالْأَصْبَحَ خَيْثَ النَّفْسِ كَسَلَانٍ)).

[راجع: ١١٤٢]

3270. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हाज़िरे ख़िदमत था तो नबी करीम (ﷺ) के सामने एक ऐसे शख्स का ज़िक्र आया, जो रात भर दिन चढ़ते तक पड़ा सोता रहा हो, आपने फ़र्माया कि ये ऐसा शख्स है जिसके कान या दोनों कानों में शैतान ने पेशाब कर दिया है। (राजेअ: 1144)

٣٢٧٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ذَكَرَ جُنْدَ النَّبِيِّ ﷺ رَجُلٌ نَامَ لَيْلَةً حَتَّى أَصْبَحَ، قَالَ: ((ذَاكَ رَجُلٌ بَالِ الشَّيْطَانِ فِي أُذُنِهِ، أَوْ قَالَ: فِي أُذُنِهِ)). [راجع: ١١٤٤]

**तशरीह:** ये हदीस क्या है गोया तमाम सेहत और फ़रहत के नुस्खों का खुलासा है। तजुबों से भी ऐसा ही मा'लूम हुआ है, जो लोग तहज्जुद के वक़्त से या सुबह सवेरे से उठकर तहारत करते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं उनका सारा दिन चैन और आराम और खुशी से गुज़रता है और जो लोग सुबह को दिन चढ़े तक सोते पड़े रहते हैं वो अक़्शर बीमार और सुस्त मिज़ाज काहिल रहते हैं। तमाम हकीमों और डॉक्टरों ने इस पर इतिफ़ाक़ किया है कि सुबह सवेरे बेदार होना और सुबह की हवाख़ोरी करना इन्सान की सेहत के लिये बेहद मुफ़ीद है।

मैं (हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम) कहता हूँ जो लोग सुबह सवेरे उठकर तहारत से फ़ारिग़ होकर नमाज़ और ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहते हैं उनको अल्लाह त़आला रिज़्क की वुस्अत देता है और उनके घरों में बेहद बरकत और खुशी रहती है और जो लोग सुबह की नमाज़ नहीं पढ़ते, दिन चढ़े तक सोते रहते हैं वो अक़्शर इफ़लास (ग़रीबी) और बीमारी में मुब्तला होते हैं उनके घरों में नहसत फैल जाती है। अगरचे सब नमाज़ें फ़र्ज़ हैं मगर फ़ज्र की नमाज़ का और ज़्यादा ख़याल रखना चाहिये, क्योंकि दुनिया की सेहत और खुशी इससे हासिल होती है। (वहीदी)

3271. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्मा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने उनसे सालिम बिन अल ज़अदि ने, उनसे कुरैब ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख्स अपनी बीबी के पास आता है और ये दुआ पढ़ता है, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, ऐ अल्लाह! हमसे शैतान को दूर रख और जो कुछ हमें तू दे (औलाद) उससे भी शैतान को दूर रख। फिर अगर उनके यहाँ बच्चा पैदा होता है शैतान उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। (राजेअ: 141)

٣٢٧١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّادٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِي الْجَعْفَرِ عَنْ كُرَيْبٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَمَّا إِنْ أَخَذَكُمْ إِذَا آتَى أَهْلَهُ وَقَالَ: بِسْمِ اللَّهِ: اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ بَا رَزَقَنَا، فَرِزَقًا وَلَدًا، لَمْ يَضُرَّهُ الشَّيْطَانُ)).

[راجع: ١٤١]

ये अपनी औरत से जिमाअ करते वक़्त पढ़ने की दुआए मसनूना है। जिसके बहुत से फ़वाइद हैं जो तजुर्बे से मा'लूम होंगे।

3272. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दर ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब सूरज का ऊपर का किनारा निकल आए तो नमाज़ न पढ़ो जब तक वो पूरी तरह ज़ाहिर न हो जाए और जब गुरुब होने लगे तब भी उसी वक़्त तक के लिये नमाज़ छोड़ दो जब तक बिल्कुल गुरुब न हो जाए। (राजेअ : 509)

3273. और नमाज़ सूरज के निकलने और डूबने के वक़्त न पढ़ो, क्योंकि सूरज शैतान के सर के या शैतानों के सर के दोनों कोनों के बीच में से निकलता है। अब्दर ने कहा मैं नहीं जानता हिशाम ने शैतान का सर कहा या शैतानों का।

होता ये हे कि शैतान तुलूअ और गुरुब के वक़्त अपना सर सूरज पर रख देता है कि सूरज के पूजने वालों का सच्चा शैतान के लिये हो।

3274. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे यूनस ने बयान किया, उनसे हमैद बिन बिलाल ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुममें से नमाज़ पढ़ने में किसी शख्स के सामने से कोई गुज़रे तो उसे गुज़रने से रोको, अगर वो न रुके तो फिर रोको और अगर अब भी न रुके तो उससे लड़ो वो शैतान है।

3275. और इब्मान बिन हैषम ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मर्तबा स़दक़-ए-फ़ितर के ग़ल्ले की हिफ़ाज़त पर मुझे मुक़र्र किया, एक शख्स आया और दोनों हाथों से अनाज लप-भर-भरकर लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा कि अब मैं तुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश करूँगा। फिर उन्होंने आख़िर तक हदीष बयान की। इस (चोर) ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कहा कि जब तुम अपने बिस्तर पर सोने के लिये लेटने लगे तो आयतल कुर्सी पढ़ लिया करो, उसकी बरकत से अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम पर एक निगाहबान

۳۲۷۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا طَلَعَ حَاجِبُ الشَّمْسِ فَادْعُوا الصَّلَاةَ حَتَّى تَرَوْا، وَإِذَا غَابَ حَاجِبُ الشَّمْسِ فَادْعُوا الصَّلَاةَ حَتَّى تَغِيبَ)). [راجع: ۵۰۹]

۳۲۷۳- ((وَلَا تَحْتَوُوا بِصَلَاتِكُمْ طُلُوعَ الشَّمْسِ وَلَا غُرُوبَهَا، فَإِنَّهَا تَطْلُعُ بَيْنَ قَرْنَيْ شَيْطَانٍ، أَوِ الشَّيْطَانِ، لَا أَذْرِي أَيُّ ذَلِكَ قَالَ هِشَامٌ)).

۳۲۷۴- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا مَرَّ بَيْنَ يَدَيْ أَحَدِكُمْ شَيْءٌ وَهُوَ يُصَلِّي فَلْيَمْنَعْ، فَإِنْ أَبِي فَلْيَمْنَعْ، فَإِنْ أَبِي فَلْيَمْنَعْ، فَإِنْ أَبِي فَلْيَمْنَعْ، فَإِنْ أَبِي فَلْيَمْنَعْ)).

۳۲۷۵- وَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِفِيحْظِ رَكَعَةِ رَمَضَانَ: قَاتَانِي آتٍ فَيَجْعَلُ يَخْتُمِنُ الطَّعَامَ، فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لَا رَفْعَتِكَ إِلَيَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ- فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فَقَالَ -: إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَأَقْرَأْ آيَةَ الْكَرْسِيِّ، لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنْ

मुकर्रर हो जाएगा और शैतान तुम्हारे करीब मुबह तकन आ सकेगा। औहजरत (ﷺ) ने फर्माया, कि बात तो उसने सच्ची कही है अगरचे वो खुद झूठा है। वो शैतान था। (राजेज़: 2311)

3276. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक्रील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें इर्वा ने खबर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, तुममें से किसी के पास शैतान आता है और तुम्हारे दिल में पहले तो ये सवाल पैदा करता है कि फ़लों चीज़ किसने पैदा की, फ़लों चीज़ किसने पैदा की? और आखिर में बात यहाँ तक पहुँचाता है कि खुद तुम्हारे रब को किसने पैदा किया? जब किसी शख्स को ऐसा वस्वसा डाले तो उसे अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिये, शैतानी ख़याल को छोड़ दे।

**तशरीह:** शैतान ये वस्वसा इस तरह डालता है कि दुनिया में सब चीज़ें इलूल और मा'लूमात और अस्बाब और मुसब्बाब हैं या'नी एक चीज़ से दूसरी चीज़ पैदा होती है वो चीज़ दूसरी से मषलन बेटा बाप से, बाप दादा से, दादा परदादा से, अख़ीर में इतिहा अल्लाह तक होती है। तो शैतान ये कहता है कि तो फिर खुदा की भी कोई इल्लत होगी। उस मर्दूद का जवाब अज़्जुबिल्लाह पढ़ना है। अगर ख़वाम्खाह अक़ली जवाब मंगे तो जवाब ये है कि अगर अज़ल में बराबर इलल और मा'लूमात का सिलसिला चला जाए और किसी इल्लत पर ख़त्म न हो तो फिर लाज़िम आता है कि मअ बिल् अज़्ज बग़ैर माअ बिज़्जात के मौजूद हो और ये महाल है।

पस मालूम हुआ कि इस सिलसिले में इतिहा एक ऐसी ज़ाते मुकद्दस पर है जो इल्लते महज़ा है और वो किसी की मअलूल नहीं और वो मौजूद बिज़्जात है अपने वजूद में किसी की मुहताज नहीं। वही ज़ाते मुकद्दस अल्लाह है। बेहतर ये है कि ऐसे अक़ली ढकोसलों में न पड़े और अज़्जुबिल्लाहि भिनशैतानिर्ज़ीम पढ़कर अपने मालिके हकीक़ी से मदद चाहे। वो शैतान का वस्वसा दूर कर देगा जैसे उसने खुद फर्माया है, इन्न इबादी लैस लक़ अलैहिम सुल्तान या'नी ऐ शैतान! मेरे ख़ास बन्दों पर तेरी कोई दलील नहीं चल सकेगी। सदक़ल्लाहु तबारक व तअ़ाला।

3277. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक्रील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे तैमथीन के मौला इब्ने अबी अनस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते सुना था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को जंजीरों में जकड़ दिया जाता है।

اللّٰهُ خَالِطٌ، وَلَا يَفْرُكُ شَيْطَانٌ حَتَّى تُمْسَحَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَكَ وَهُوَ كَذُوبٌ، ذَاكَ شَيْطَانٌ)). [راجع: ٢٣١١]

٣٢٧٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ غَفِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ يَقُولُ: مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ حَتَّى يَقُولَ: مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ؟ فَإِذَا يَلْقَاهُ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ وَلْيَسْتَعِذْ)).

٣٢٧٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي غَفِيلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي أَنَسٍ مَوْلَى النَّبِيِّ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ فَتُحْتَفَتُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَتُغْلَقَتُ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَتُسَلْبَتُ

(राजेअ: 1898)

3278. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन जययना ने, कहा हमसे अमर बिन दीनार ने, कहा कि मुझे सईद बिन जुबैर ने खबर दी, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रजि.) से पूछा (नोफ़ बकाली कहता है कि ख़िज़र के पास जो मूसा गये थे वो दूसरे मूसा थे) तो उन्होंने कहा कि हमसे उबय बिन कअब (रजि.) ने बयान किया, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने रफ़ीक़े सफ़र (यूषा बिन नून) से फ़र्माया कि हमारा खाना ला, उस पर उन्होंने बताया कि आपको मा'लूम भी है जब हमने चट्टान पर पड़ाव डाला था तो मैं मछली वहीं भूल गया (और अपने साथ न ला सका) और मुझे उसे याद रखने से सिर्फ़ शैतान ने ग़ाफ़िल रखा और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस वक़्त तक कोई थकन मा'लूम नहीं की जब तक उस हद से न गुजर लिये, जहाँ का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया था। (राजेअ: 174)

3279. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप मश्रिक की तरफ़ इशारा करके फ़र्मा रहे थे कि हाँ! फ़ित्ना इसी तरफ़ से नमूदार होगा जहाँ से शैतान के सर का कोना निकलता है। (राजेअ: 3014)

3280. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अत्ता बिन अबी रिबाह ने खबर दी, और उन्हें हज़रत जाबिर (रजि.) ने खबर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रात का अंधेरा शुरू होने पर या रात शुरू होने पर अपने बच्चों को अपने पास (घर में) रोक लो, क्योंकि शयातीन उसी वक़्त फैलना शुरू करते हैं। फिर जब इशा के वक़्त में से एक घड़ी गुज़र जाए तो उन्हें छोड़ दो (चलें-फिरें)

(الشّياطين)). [راجع: 1898]

۳۲۷۸- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُو قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ خَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لَأَبِي عُبَّاسٍ فَقَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي بْنُ كَعْبٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنْ مُوسَى قَالَ لِفَتَاةٍ: أَتَبَا غَدَاةً، قَالَ: أَزَأَيْتِ ادُّوَيْبَ إِلَى الصُّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحَوْتَ وَمَا أَنْسَانِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ. وَلَمْ يَجِدْ مُوسَى النَّصَبَ حَتَّى جَاوَزَ الْمَكَانَ الَّذِي أَمَرَ اللَّهُ بِهِ)).

[راجع: ۱۷۴]

۳۲۷۹- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُشِيرُ إِلَى الْمَشْرِقِ فَقَالَ: هَا إِنْ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا، إِنْ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا، مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قُرْآنُ الشَّيْطَانِ)).

[راجع: ۳۱۰۴]

۳۲۸۰- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ خُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي غَطَّاءُ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَجْنَحَ اللَّيْلُ - أَوْ كَانَ جُنْحُ اللَّيْلِ - فَكَفُّوا صَبِيَّاتِكُمْ فَإِنَّ الشَّيَاطِينَ تَنْتَشِرُ حِينَئِذٍ، فَإِذَا ذَهَبَ سَاعَةٌ مِنْ



फिर अल्लाह का नाम लेकर अपना दरवाज़ा बन्द करो, अल्लाह का नाम लेकर अपना चिराग बुझा दो, पानी के बर्तन अल्लाह का नाम लेकर ढंक दो, (और अगर ढक्कन न हो) तो दरम्यान में ही कोई चीज़ रख दो। (दीगर मक़ाम : 3304, 3316, 5623, 5624, 6295, 6296)

الْبِشَاءِ فَخَلَوْهُمْ، وَأَغْلَقَ بَابَكَ وَادْكُرِ اسْمَ اللَّهِ، وَأَطْفِئْ مِصْبَاحَكَ وَادْكُرِ اسْمَ اللَّهِ، وَأَوْكُ مِيقَاتَكَ وَادْكُرِ اللَّهَ، وَحَمَرِ إِنَاءَكَ وَادْكُرِ اسْمَ اللَّهِ وَلَوْ تَفَرَّضُ عَلَيْهِ شَيْئًا)). [أطرافه في: 3304, 3316, 5623, 5624, 6295, 6296].

ज़मीन पर फैलने वाले शैतानों से मुराद यहाँ बदमाश जिन्न हैं। कुछ ने कहा सांप मुराद हैं। अक़बर सांप उस वक़्त अपने बिलों से हवा खाने के लिये निकलते हैं। ज़ाहिरे हृदीष की बिना पर शयातीन निकलते, ज़मीन पर फैलते और बनी आदम को नुक़सान पहुँचाने की कोशिश करते हैं। आमन्ना व सद्कना वल्लाहु अलम बि हक़ीक़तिल हाल।

3281. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें ज़ेनुल आबेदीन अली बिन हुसैन (रज़ि.) ने और उनसे सफ़िया बन्ते हुय़ि (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ए'तिकाफ़ में थे तो मैं रात के वक़्त आपसे मुलाक़ात के लिये (मस्जिद में) आई, मैं आपसे बातें करती रही, फिर जब वापस होने के लिये खड़ी हुई तो आप भी मुझे छोड़ आने के लिये खड़े हुए। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) का मकान उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के मकान ही में था। उसी वक़्त दो अंसारी सहाबा (उसैद बिन हज़ैर और इबादा बिन बशीर) गुज़रे। जब उन्होंने ओ'हज़रत (ﷺ) को देखा तो तेज़ चलने लगे। आपने उनसे फ़र्माया, ज़रा ठहर जाओ ये सफ़िया बन्ते हुय़ि हैं। उन दोनों सहाबा ने अर्ज़ किया, सुब्हानल्लाह! या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (क्या हम भी आपके बारे में कोई शुब्हा कर सकते हैं?) ओ'हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि शैतान इंसान के अंदर खून की तरह दौड़ता रहता है इसलिये मुझे डर लगा कि कहीं तुम्हारे दिलों में भी कोई वस्वसा न डाल दे, या आपने (लफ़ज़ सूअ की जगह) लफ़ज़ शयआ फ़र्माया। मा'नी एक ही हैं। (राजेअ : 2035)

٣٢٨١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ غَيْلَانَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرُ بْنُ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ صَفِيَّةِ بِنْتِ حُصَيْنٍ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مُتَعَكِّفًا، فَأَتَيْتُهُ أَرُورَهُ لَيْلًا، فَخَذَلْتُهُ ثُمَّ قُمْتُ فَأَنْقَلَبْتُ، فَقَامَ مَعِيَ لِقَلْبِي - وَكَانَ سَكْنَهَا فِي دَارِ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ - فَمَرَّ رَجُلَانِ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَلَمَّا رَأَى النَّبِيُّ ﷺ أَسْرَعَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكُمَا، إِنَّهَا صَفِيَّةُ بِنْتِ حُصَيْنٍ)) فَقَالَا: سُبْحَانَ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِي مِنَ الْإِنْسَانِ مَجْرَى الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْلِبَ فِي قُلُوبِكُمَا سُوءًا. أَوْ قَالَ: شَيْئًا)).

[راجع: ٢٠٣٥]

मा'लूम हुआ कि इंसान को किसी के लिये ज़रा भी शुब्हा पैदा करने का मौक़ा न देना चाहिये, ओ'हज़रत (ﷺ) ने यही सोचकर उनके सामने अज़ल मामला रख दिया, और उनको ग़लत वस्वसे से बचा लिया लिया।

3282. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे

٣٢٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ

आ'मश ने, उनसे अदी बिन प्राबित ने और उनसे सुलैमान बिन मुर्द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में बैठा हुआ था और करीब ही) दो आदमी आपस में गाली-गलूच कर रहे थे कि एक शख्स का मुँह सुख हो गया और गर्दन की रों फूल गई। आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे एक ऐसा कलिमा मा'लूम है कि अगर ये शख्स उसे पढ़ ले तो उसका गुस्सा जाता रहेगा। अगर ये शख्स पढ़ ले। (तर्जुमा) मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की शैतान मर्दद से। तो उसका गुस्सा जाता रहेगा। लोगों ने उस पर उससे कहा कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्मा रहे हैं कि तुम्हें शैतान से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिये, उसने कहा, क्या मैं कोई दीवाना हूँ? (दीगर मक़ाम: 6048, 6115)

عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ بْنِ قَابَسٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مَرْدٍ قَالَ: «كَتَبْتُ جَالِسًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَرَجُلَانِ يَسْتَبِيحَانِ، فَأَخَذَهُمَا أَحْمَرٌ وَجْهَهُ وَانْتَفَخَتْ أَوْدَاجُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لِأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ، لَوْ قَالَ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ. قَالُوا لَهُ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: تَعَوَّذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَقَالَ: وَهَلْ بِي جُنُونٌ؟)).

[طرفه ب: ٦٠٤٨، ٦١١٥].

वो समझा कि शैतान से पनाह जब ही मांगते हैं जब आदमी दीवाना हो जाए हालाँकि गुस्सापन भी दीवानापन या जुनून ही है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा शायद ये शख्स मुनाफ़िक़ या बिलकुल गुनाहगार किस्म का होगा।

3283. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी अल जअदि ने, उनसे कुरैब ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख्स जब अपनी बीवी के पास जाए और ये दुआ पढ़ ले। ऐ अल्लाह! मुझे शैतान से दूर रख और जो मेरी औलाद पैदा हो, उसे भी शैतान से दूर रखियो। फिर उस मुहबबत से अगर कोई बच्चा पैदा हो तो शैतान उसे कोई नुक़सान न पहुँचा सकेगा और न उस पर तसल्लुत कायम रख सकेगा। शुअबा ने बयान किया और हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सालिम ने, उनसे कुरैब ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ऐसी रिवायत की। (राजेअ: 141)

٣٢٨٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ كُرَيْبٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا آتَى أَهْلَهُ قَالَ: اللَّهُمَّ جَنِّبِي الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْنِي، فَإِنْ كَانَ بَيْنَهُمَا وَلَدٌ لَمْ يَضُرَّهُ الشَّيْطَانُ وَلَمْ يَسْلُطْ عَلَيْهِ)). قَالَ: وَحَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ سَالِمِ بْنِ كُرَيْبٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ. فَمَثَلُهُ.

[راجع: ١٤١]

3284. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा नमाज़ पढ़ी और फ़ारिग़ होने के बाद फ़र्माया कि शैतान मेरे सामने आ गया था और नमाज़ तुड़वाने की कोशिशें शुरू कर दी थीं। लेकिन अल्लाह तआला न

٣٢٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلَاةً فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ عَرَضَ لِي فَمَنَعَنِي عَلَى يَقْطَعُ

मुझे उस पर गालिब कर दिया। फिर हदीष को तफ्सील के साथ आखिर तक बयान किया। (राजेअ: 461)

3285. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती है तो शैतान अपनी पीठ फेरकर गूज़ मारता हुआ भागता है। जब अज़ान ख़त्म हो जाती है तो वापस आ जाता है। फिर जब तकबीर होने लगती है तो भाग खड़ा होता है और जब तकबीर ख़त्म हो जाती है तो फिर वापस आ जाता है और आदमी के दिल में बसबसे डालने लगता है कि फ़लों बात याद कर और फ़लों बात याद कर, नतीजा ये होता है कि उसको भी याद नहीं रहता कि तीन रक़अत नमाज़ पढ़ी थी या चार रक़अत, जब ये याद न रहे तो सहम के दो सज्दे करे। (राजेअ: 608)

जैसा शैतान है वैसा ही उसका गूज़ मारना भी है। अज़ान से नफ़रत करके वो भागता है और इस ज़ोर से भागता है कि उसका गूज़ निकलने लगता है। आमन्ना व सदक्कना मा क़ालन्नबियु (ﷺ) बहुत से इंसाननुमा शैतान भी है जो अज़ान जैसी प्यारी आवाज़ से नफ़रत करते हैं, उसके रोकने के जतन करते रहते हैं। ऐसे लोग बज़ाहिर इंसान दर हकीकत ज़ुरियाते शैतान (शैतान की सन्तान) हैं। क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना युफ़कून।

3286. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शैतान हर इंसान की पैदाइश के वक़्त अपनी डँगली से उसके पहलू में कचोके लगाता है सिवाए ईसा बिन मरयम (अलै.) के जब उन्हें वो कचोके लगाने गया तो पर्दे पर लगा हुआ था (जिसके अंदर बच्चा रहता है। उसकी रसाई वहाँ तक न हो सकी, अल्लाह ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उसकी इस हरकत से महफूज़ रखा)। (दीगर मक़ाम: 3431, 4548)

3287. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे मुगीरह ने, उनसे इब्राहीम ने और उनसे अल्क़मान ने बयान किया कि मैं शाम पहुँचा तो लोगों ने कहा, अबू दर्दा आए उन्होंने कहा, क्या तुम लोगों में वो शख्स है जिसको अल्लाह तआला ने अपने रसूल की जुबान पर (या'नी आपके

الصلاة على، لَأَمْكَنِي اللهُ مِنْهُ.  
لَذِكْرُهُ)). (راجع: ٤٦١)

٣٢٨٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ  
حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ  
عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ  
عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا نُودِيَ  
بِالصَّلَاةِ أَذْبَرَ الشَّيْطَانُ وَلَهُ ضَرْطَانِ، فَإِذَا  
قُضِيَ أَقْبَلَ. فَإِذَا نُوبَ بِهَا أَذْبَرَ، فَإِذَا  
قُضِيَ أَقْبَلَ حَتَّى يَخْطُرَ بَيْنَ الْإِنْسَانِ وَقَلْبِهِ  
فَيَقُولُ: اذْكُرْ كَذَا وَكَذَا، حَتَّى لَا يَتَذَكَّرَ  
أَلَّا مَلَائِكَةً أَوْ أَرْبَعًا، فَإِذَا لَمْ يَذْكُرْ ثَلَاثًا  
صَلَّى أَوْ أَرْبَعًا سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ السُّهُوَّ)).

[راجع: ٦٠٨]

٣٢٨٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا  
شُعَيْبٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ الْأَخْرَجِ عَنْ  
أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ  
((كُلُّ بَنِي آدَمَ يَطْفَنُ الشَّيْطَانُ فِي  
جَنْبِهِ بِإِصْبَعِهِ حِينَ يُولَدُ، غَيْرَ عِيسَى ابْنِ  
مَرْيَمَ ذَهَبَ يَطْفَنُ لَطْفَنَ فِي الْحِجَابِ)).  
[طرفه: ٣، ٣٤٣١، ٤٥٤٨]

٣٢٨٧ - حَدَّثَنَا عَالِبُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ  
حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ الضَّحِيرَةِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ  
عَنْ عُلْفَمَةَ قَالَ: قَدِمْتُ الشَّامَ، قَالُوا: أَبُو  
الدَّرْدَاءِ، قَالَ: ((إِنَّكُمْ الَّذِي أَخْبَرَهُ اللهُ

जमाने से) शैतान से बचा रखा है।

हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, और उनसे मुगीरह ने यही हदीष, उसमें ये है, जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी की जुबानी शैतान से अपनी पनाह में लेने का ऐलान किया था, आपकी मुराद हज़रत अम्मार (रज़ि.) से थी। (दीगर मक़ाम : 3742, 3743, 3761, 4943, 4944, 6278)

मतलब ये कि अम्मार शैतानी अग़वे में नहीं आएँगे। ऐसा ही हुआ कि अम्मार खलीफ़-ए-बरहक़ या'नी हज़रत अली (रज़ि.) के साथ रहे और बाग़ियों में शरीक़ न हुए, इस हदीष से हज़रत अम्मार की बड़ी फ़ज़ीलत निकली, वो ख़ास आहज़रत (ﷺ) के जानिघार थे।

3288. हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि लैय़ बिन सअद ने कहा कि मुज़से ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे अबुल अस्वद ने, उन्हें इर्वा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़रिश्ते अब्र में आपस में किसी अम्प में जो ज़मीन में होने वाला होता है बातें करते हैं। इनान से मुराद बादल है। तो शयातीन उसमें से कोई एक कलिमा सुन लेते हैं और वही काहिनों के कान में इस तरह लाकर डालते हैं जैसे शीशे का मुँह मिलाकर उसमें कुछ छोड़ते हैं और वो काहिन उसमें सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाते हैं।

(राजेअ : 3210)

शीशे में कुछ डालना मंज़ूर होता है तो उसका मुँह उस तरफ़ से लगाते हैं जिसमें अर्क पानी वगैरह कोई चीज़ होती है ताकि बाहर न गिरे। इसी तरह शैतान काहिनों के कान से मुँह लगाकर ये बात उनके कान में चुपके से फूँक देते हैं।

3289. हमसे आसिम बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे सईद मज़बरी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जम्हाई शैतान की तरफ़ से है। पस जब किसी को जम्हाई आए तो जहाँ तक हो सके उसे रोके क्योंकि जब कोई (जम्हाई लेते हुए) हा-हा करता है तो शैतान उस पर हंसता है।

(दीगर मक़ाम : 6223, 6226)

मा'लूम हुआ कि जम्हाई (उबासी) लेते वक़्त हत्तल इस्क़ान अपने मुँह को बन्द करके आवाज़ को बन्द करके आवाज़ न निकलने दे क्योंकि ये सुस्ती की अलामत है।

مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ (ﷺ)۔

حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُعِينَةَ وَقَالَ: ((الَّذِي أَجَارَهُ اللَّهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ. يَعْنِي عُمَارًا)).

[أطرافه في: ٣٧٤٢، ٣٧٤٣، ٣٧٦١]

[٤٩٤٣، ٤٩٤٤، ٦٢٧٨]

٣٢٨٨- قَالَ: وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلَالٍ أَنَّ أَبَا الْأَسْوَدِ أَخْبَرَهُ عَنْ غُرُورَةَ عَنْ غَابِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَلَائِكَةُ تَصْخَرُ فِي الْقَنَابِ - وَالْقَنَابِ الْقَنَامُ - بِالْأَمْرِ يَكُونُ فِي الْأَرْضِ - فَسَمِعَ الشَّيَاطِينُ الْكَلِمَةَ فَطَفَرُوا فِي أُذُنِ الْكَاهِنِ كَمَا تَفَرُّ الْقَارُورَةُ، فَيَزِيدُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَلِمَةٍ)). [راجع: ٣٢١٠]

٣٢٨٩- حَدَّثَنَا غَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الشَّيْطَانُ إِذَا تَنَاءَبَ أَحَدَكُمْ فَلْيُرُدِّهِ مَا اسْتَطَاعَ، فَإِنْ أَحَدَكُمْ إِذَا قَالَ مَا صَحَّكَ الشَّيْطَانُ)). [طرمه في: ٦٢٢٣، ٦٢٢٦]

3290. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने हमें अपने वालिद इर्वा से खबर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि उहुद की लड़ाई में जब मुशरिकीन को शिकस्त हो गई तो इब्लीस ने चलाकर कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दों! (या'नी मुसलमानों) अपने पीछे वालों से बचो, चुनौचे आगे के मुसलमान पीछे की तरफ पलटे और पीछे वालों को (जो मुसलमान ही थे) उनको उन्होंने मारना शुरू कर दिया। हुजैफ़ा (रज़ि.) ने देखा तो उनके वालिद यमान (रज़ि.) भी पीछे थे। उन्होंने बहुत बार कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दों! ये मेरे वालिद हैं, ये मेरे वालिद हैं। लेकिन अल्लाह गवाह है कि लोगों ने जब तक उन्हें क़त्ल न कर लिया न छोड़ा। बाद में हुजैफ़ा (रज़ि.) ने सिर्फ़ इतना कहा कि ख़ैर, अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे (कि तुमने ग़लत फ़हमी से एक मुसलमान को मार डाला)। इर्वा ने बयान किया कि फिर हुजैफ़ा (रज़ि.) अपने वालिद के क़ातिलों के लिये बराबर माफ़िरत मांगते रहे। यहाँ तक कि अल्लाह से जा मिले। (दीगर मक़ाम: 3824, 4065, 6668, 6883, 6890)

औँहज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ तो हुजैफ़ा (रज़ि.) को उनके बाप की दियत आप दिलाने गये। लेकिन हुजैफ़ा (रज़ि.) ने वो भी मुसलमानों को मुआफ़ कर दी, सुबहानल्लाह! सहाबा (रज़ि.) की एक एक नेकी हमारी उम्र भर की इबादत से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है।

3291. हमसे हसन बिन रबी'अ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अहवस ने, उनसे अफ़अन्न ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मसरूक ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से नमाज़ में इधर-उधर देखने के बारे में पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शैतान की एक उचक है जो वो तुममें से एक की नमाज़ में से कुछ उचक लेता है।

(राजेअ: 751)

3292. (दूसरी सनद) हमसे अबुल मुगीरह ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी क़बीर ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (मिस्ल रिवायते साबिका की हदीस बयान की)।

मुझसे सुलैमान बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे बलीद ने

۳۲۹۰- حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ قَالَ هِشَامُ : أَخْبَرَنَا عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: (لَمَّا كَانَ يَوْمَ أُحُدٍ هَزِمَ الْمُشْرِكُونَ، فَصَاحَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي عِيَادٍ اللَّهُ، أَخْرَأَكُمْ، فَرَجَعَتْ أَوْلَاهُمْ فَاجْتَلَدَتْ هِيَ وَأَخْرَأَهُمْ، فَتَنَظَّرَ حَدِيثُهُ فَإِذَا هُوَ بِأَبِيهِ الْيَمَانِ، فَقَالَ: أَيُّ عِيَادٍ اللَّهُ، أَيُّ أَبِي أَبِي. فَوَا اللَّهُ مَا اخْتَضَرُوا حَتَّى قَتَلُوهُ فَقَالَ حَدِيثُهُ : غَفَرَ اللَّهُ لَكُمْ. قَالَ عَزُوزُ: لَمَّا رَأَيْتَ فِي حَدِيثِهِ مِنْهُ بَيِّنَةٌ خَيْرٌ حَتَّى لَحِقَ بِاللَّهِ)).

[إطرافه في: ۳۸۲۴، ۴۰۶۵، ۶۶۶۸، ۶۸۸۳، ۶۸۹۰.]

۳۲۹۱- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ عَنْ أَشْعَثَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْيَفَاتِ الرَّجُلِ فِي الصَّلَاةِ فَقَالَ: ((هُوَ اخْتِلَاسٌ يَخْتَلِسُهُ الشَّيْطَانُ مِنْ صَلَاةٍ أَحَدِكُمْ)).

[راجع: ۷۵۱]

۳۲۹۲- حَدَّثَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ قَالَ حَدَّثَنَا الْبُؤْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ حَدَّثَنَا

बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने बयान किया, और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा ख़वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से है और बुरा ख़वाब शैतान की तरफ़ से है। इसलिये अगर कोई बुरा और डरावना ख़वाब देखे तो बाईं तरफ़ थू-थू करके शैतान के शर से अल्लाह की पनाह मांगे। इस अमल से शैतान उसे कोई नुक़सान न पहुँचा सकेगा। (दीगर मक़ाम : 5747, 6984, 6986, 6995, 6996, 7005)

3293. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबूबक्र के गुलाम सुमय ने, उन्हें अबू सलालेह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स दिन भर में सौ मर्तबा ये दुआ पढ़ेगा (तर्जुमा) नहीं है कोई मा'बूद, सिवा अल्लाह तआला के, उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी का है और तमाम ता'रीफ़ उसी के लिये है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। तो उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर प्रवाब मिलेगा। सौ नेकियाँ उसके नाम-ए-आमाल में लिखी जाएँगी और सौ बुराईयाँ उससे मिटा दी जाएँगी। इस रोज़ दिन भर ये दुआ शैतान से उसकी हिफ़ाज़त करती रहेगी। यहाँ तक कि शाम हो जाए और कोई शख़्स इससे बेहतर अमल लेकर न आएगा, मगर जो उससे भी ज़्यादा ये कलिमा पढ़ ले। (दीगर मक़ाम : 6403)

या'नी दो सौ या तीन सौ बार इसको इससे भी प्रवाब मिलेगा। क़स्तलानी (रह.) ने कहा ये कलिमा हर रोज़ सौ बार पे दर पे पढ़े या थोड़ा थोड़ा करके, हर हाल में वही प्रवाब मिलेगा लेकिन ये बेहतर है कि सुबह सवेरे और रात होते ही सौ-सौ बार पढ़े, ताकि दिन और रात दोनों में शैतान के शर से महफूज़ रहे।

3294. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे सलालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल हमीद बिन अब्दुरहमान बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन सअद बिन अबी वक्रकास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद हज़रत सअद बिन अबी वक्रकास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दफ़ा उमर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही।

الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللَّهِ، وَالْحُلُمُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمْ حُلُمًا يَخَافُهُ فَلْيَتَصَوَّ عَنْ يَمَانِهِ وَلْيَتَوَدَّ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّهَا، فَإِنَّهَا لَا تَضُرُّهُ)). [أطرافه في: ٥٧٤٧، ٦٩٨٤، ٦٩٨٦، ٦٩٩٥، ٦٩٩٦، ٧٠٠٥]. ٣٢٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَخَدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ كَانَتْ لَهُ عِزٌّ عَشْرَ رِقَابٍ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ وَمُحِيتَ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ وَكَانَتْ لَهُ حِزْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ، وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلَّا أَخَذَ عَمَلُ أَكْثَرٍ مِنْ ذَلِكَ)). [أطرافه في: ٦٤٠٣].

٣٢٩٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ زَيْدٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ سَعْدٍ بْنَ أَبِي وَقَاصٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَعْدٍ بْنَ أَبِي وَقَاصٍ قَالَ: ((اسْتَأْذَنَ

उस वक़्त चन्द कुरैशी औरतें (खुद आपकी बीवियाँ) आपके पास बैठी आपसे बातचीत कर रही थीं और आपसे (खर्च में) बढ़ाने का सवाल कर रही थीं, ख़ूब आवाज़ बुलन्द करके। लेकिन ज्यों ही हज़रत उमर (रज़ि.) ने इज़ाज़त चाही, वो ख़्वातीन जल्दी से पर्दे के पीछे चली गईं। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें इज़ाज़त दी। आँहज़रत (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे। उमर (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह तआला हमेशा आपको हंसाता रखे, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने फ़र्माया कि मुझे उन औरतों पर ता'जुब हुआ अभी अभी मेरे पास थीं, लेकिन जब तुम्हारी आवाज़ सुनी तो पर्दे के पीछे जल्दी से भाग गईं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अज़्र किया, लेकिन आप या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ज़्यादा इसके मुस्तह़ि़क़ थे कि आपसे घे डरतीं, फिर उन्होंने कहा, ऐ अपनी जान की दुश्मनों! मुझसे तो तुम डरती हो और आँहज़रत (ﷺ) से नहीं डरतीं। अज़्वाजे मुतहहरात बोलों कि वाक़िया यही है क्योंकि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) के बरख़िलाफ़ मिज़ाज में बहुत सख़्त हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर शैतान भी कहीं रास्ते में तुमसे मिल जाए तो, झट वो ये रास्ता छोड़कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है। (दीगर मक़ाम : 3683, 6085)

عَمْرُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَعِنْدَهُ نِسَاءٌ مِنْ قُرَيْشٍ يَكَلِّمَنَّهُ وَيَسْتَكْثِرْنَ عَلَيْهِ أَصْوَاتَهُنَّ، فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عَمْرُ فَمَنْ يَتَخَيَّرْنَ الْحِجَابَ فَأْذِنَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَضْحَكُ، فَقَالَ عَمْرُ: أَضْحَكَكَ اللَّهُ سَيِّدَا رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: ((عَجِبْتُ مِنْ هَؤُلَاءِ اللَّائِي كُنَّ عِنْدِي، فَلَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ)). قَالَ عَمْرُ: قَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ كُنْتُ أَحَقُّ أَنْ يَهَيَّنَ، ثُمَّ قَالَ: أَيُّ عَدَوَاتِ أَنْفُسِهِنَّ، أَنْهَنِي وَلَا تَهَيَّنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ قُلْنَ: ((نَعَمْ، أَنْتَ أَفْظُ وَأَغْلَطُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ)). قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، مَا لَقَيْكَ الشَّيْطَانُ قَطُّ سَالِكًا فُجًّا إِلَّا سَلَكَ فُجًّا غَيْرَ فُجِّكَ)). [طرفاء في : 3683، 6085].

**तशरीह :** दूसरी रिवायत में है कि शैतान हज़रत उमर (रज़ि.) के साथे से भागता है। राफ़ज़ियों ने इस हदीष की सिहत पर ए' तिराज़ किया है जो सरासर जहालत और नफ़्सानियत पर आधारित है। आँहज़रत (ﷺ) बादशाह वक़्त रहमतुल लिल आलमीन थे और बादशाहों का रहम व करम इस दर्जा होता है कि बदमाशों को भी बादशाह से फ़ज़ल व करम की तवक्क़अ होती है। हज़रत उमर (रज़ि.) कोतवाल की तरह थे। कोतवाल का असली फ़र्ज़ यही होता है कि बदमाशों और डाकुओं को पकड़े और बदमाश जितना कोतवाल से डरते हैं, उतना बादशाह से नहीं डरते।

3295. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे ईसा बिन त़लहा ने और उनसे हज़रत अबू हु़रैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख्स सोकर उठे और फिर वुज़ू करे तो तीन मर्तबा नाक झाड़े क्योंकि शैतान रातभर उसकी नाक के नथुने पर बैठा रहता है। (जिससे आदमी पर सुस्ती ग़ालिब आ जाती है। पस नाक झाड़ने से वो सुस्ती दूर हो जाएगी)।

3295 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ يَزِيدَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عِيْسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ أَبِي مُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَيْقَظَ أَرَاهُ أَخَذَكُمْ - مِنْ مَنَامِهِ قَتَوَصًا فَلْيَسْتَبْشِرْ فَلَا، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَبِيتُ عَلَى عَيْشُومِهِ)).

इन तमाम अह्दादीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने शयात्तीन का वजूद साबित किया है और जिन-जिन सूरतों से बनी आदम को गुमराह करते हैं, उनमें से अक़्शर सूरतें इन अह्दादीष में मज़कूर हो गई हैं। शैतान के वजूद का इन्कार करने वाले कुआन व हदीष की रोशनी में मुसलमान कहलाने के हक़दार नहीं हैं। बाब और अह्दादीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

## बाब 12 : जिन्नों का बयान और उनको ज़वाब और अज़ाब का होना

क्योंकि अल्लाह ने (सूरह अन्-आम में) फ़र्माया, ऐ जिन्नों और इन्सानों! क्या तुम्हारे पास तुम्हारे ही में से रसूल नहीं आए? जो मेरी आयतें तुमको सुनाते रहे आख़िर तक। (कुआन मजीद में सूरह जिन्न में) बख़सा बमा'नी नुक़सान के है। मुजाहिद ने कहा सूरह अस्-साफ़ात में जो ये है कि काफ़िरों ने परवरदिगार और जिन्नात में नाता ठहराया है, कुरैश कहा करते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं और उनकी माँए सरदार जिन्नों की बेटियाँ हैं। अल्लाह तआला ने उनके जवाब में फ़र्माया, जिन्न जानते हैं कि उन काफ़िरों को हिसाब किताब देने के लिये हाज़िर होना पड़ेगा (सूरह यासीन में जो ये है) वहुम लहुम जुन्दुम् महजुरून या'नी हिसाब के वक़््त हाज़िर किये जाएंगे।

**तशरीह :** नेचरियों (प्रकृतिवादी) और दहरियों (भौतिकतावादी लोगों) ने जहाँ फ़रिश्तों और शैतान का इन्कार किया है, वहाँ जिन्नों का भी इन्कार किया है। क़स्तालानी (रह.) ने कहा जिन्नों का वजूद कुआन मजीद और हदीष और इज्माअे उम्मत और तवातुर से साबित है और फ़लासफ़ा और नेचरियों का इन्कार क़ाबिले ए'तिबार नहीं। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह पाक ने आदम (अलैहिस्सलाम) से दो हज़ार बरस पहले जिन्नों को पैदा फ़र्माया था। (वहीदी)

## ۱۲- بَابُ ذِكْرِ الْجِنِّ وَتَوَابِهِمْ

### وَعِقَابِهِمْ

لَقَوْلِهِ: ﴿يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي - إِلَى قَوْلِهِ - عَمَّا يَغْمِلُونَ﴾. ﴿بَخْسًا﴾: نَقْصًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِجَابًا﴾: قَالَ كَفَّارٌ قُرَيْشِي: الْمَلَائِكَةُ بَنَاتُ اللَّهِ وَأُمَّهَاتُهُمْ بَنَاتُ سُرَوَاتِ الْجِنِّ, قَالَ اللَّهُ: ﴿وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْجِنَّةَ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ﴾: سَتُحْضَرُونَ لِلْجَنَابِ. ﴿جُنْدٌ مُحْضَرُونَ﴾: عِنْدَ الْجَنَابِ.

3296. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी सअसआ अंसारी ने और उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि उनसे हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कहा मैं देखता हूँ कि तुमको जंगल में रहकर बकरियाँ चराना बहुत पसन्द है। इसलिये जब कभी अपनी बकरियों के साथ तुम किसी बयाबान में मौजूद हो और (वक़््त होने पर) नमाज़ के लिये अज़ान दो तो अज़ान को जहाँ तक भी कोई इंसान, जिन्न या कोई चीज़ भी सुनेगी तो क़यामत के दिन उसके लिये गवाही देगी। हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कहा कि ये हदीष मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी

۳۲۹۶- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَنْغَةَ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ: ((أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَهُ: إِنِّي أَرَاكَ تُحِبُّ الْقَمَمَ وَالنَّادِيَةَ، فَإِذَا كُنْتَ فِي غَنَمِكَ وَبَادِيَتِكَ فَادْنَتْ بِالصَّلَاةِ فَارْفَعَ صَوْتَكَ بِالنِّدَاءِ، فَإِنَّهُ لَا يَسْمَعُ مَدَى صَوْتِ الْمُؤَذِّنِ جِنَّ وَلَا إِنْسٍ وَلَا شَيْءٍ إِلَّا شَهِدَ لَهُ يَوْمَ



थी। (राजेअ : 209)

الْقِيَامَةِ. قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ

اللَّهِ ﷺ. [راجع: ٦٠٩]

इस हदीष में मुअज्जिन की अज्ञान की आवाज़ को जिन्नों के सुनने का भी का जिक्र है। इससे जिन्नों का वजूद साबित हुआ और ये भी कि जिन्न क़यामत के दिन कुछ इंसानों के आमाले ख़ैर जैसे अज्ञान पर अल्लाह के यहाँ उस बन्दे के हक़ में ख़ैर की गवाही देंगे। जिन्नों का जिक्र आने से बाब का मतलब साबित हुआ।

**बाब 13 : और अल्लाह तआला का सूरह जिन्न में फ़र्मांना, और जब मैंने आपकी तरफ़ जिन्नो की एक जमाअत को भेज दिया, अल्लाह तआला के इर्शाद, उलाइका फ़ी ज़लालिम् मुबीन तक सूरह कहफ़ में लफ़्ज़ मस्फ़िफ़ा बमा'नी लौटने की जगह के है। सूरह जिन्न में लफ़्ज़ सरफ़्ना का मा'नी मुतवज्जह किया, भेज दिया।**

इस बाब के ज़ेल हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सिर्फ़ आयते कुआनी के नक़ल पर इक्तिफ़ा किया, जिसमें इशारा है कि जिन्नों का वजूद कुआनी नस से साबित है। जिससे ये साबित हुआ कि बहुत जिन्न आँहज़रत (ﷺ) की जुबाने मुबारक से कुआन शरीफ़ सुनकर मुसलमान हो गये। जिनके हालात बतलाने के लिये सूरह जिन्न नाज़िल हुई, यही बाब की आयात से मुताबक़त है।

١٣- بَابُ قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ:

﴿وَإِذْ صَرَقْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ - إِلَى قَوْلِهِ - أَوَّلِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ﴾.  
﴿مَضْرُوبًا﴾: مَغْدَلًا. ﴿صَرَقْنَا﴾: أَي وَجَّهْنَا.

**बाब 14 : अल्लाह तआला का सूरह बक्र:**

**में इर्शाद, और हमने ज़मीन पर हर तरह के जानवर फैला दिये**

इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (कुआन मजीद में) लफ़्ज़ घुअबान नर सांप के लिये आया है कुछ ने कहा, सांपों की कई क्रिस्में होती हैं। जान जो सफ़ेद बारीक हो, अफ़ाइ, ज़हरदार सांप और अस्वद काला नाग (वग़ैरह) सूरह हूद में आख़िज़ुम बिनासियतिहा से मुराद ये है कि हर जानवर की पेशानी थामे हुए है। था'नी हर जानवर उसकी मिल्क और उसकी हुकूमत में है। लफ़्ज़ साफ़फ़ात जो सूरह मुल्क में है, उसके मा'नी अपने पर फैलाए हुए और उसी सूरह में लफ़्ज़ यन्निबज़्ना बमा'नी अपने बाज़ुओं को समेटे हुए के है।

3297. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सालिम ने बयान

١٤- بَابُ قَوْلِهِ تَعَالَى:

﴿وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ﴾  
قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الثَّقَبَانِ الْحَيَّةُ الذَّكَرُ مِنْهَا، يُقَالُ الْحَيَّاتُ أَجْنَسٌ: الْجَانُّ وَالْأَفَاعِي وَالْأَسَاوِدُ. ﴿أَعَدَّ بِنَاصِيَتِهَا﴾ فِي مُلْكِهِ وَسُلْطَانِهِ. يُقَالُ: ﴿صَافَاتٍ﴾ بُسِطَ أَجْنِحَتُهُنَّ ﴿يَقْبِضْنَ﴾ يَضْرِبْنَ بِأَجْنِحَتَيْهِنَّ.

٣٢٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ

حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ

किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप मिम्बर पर ख़ुत्बा देते हुए फ़र्मा रहे थे कि सांपों को मार डाला करो (ख़ुसूसन) उनको जिनके सिरों पर दो नुक्ते होते हैं और दुम बुरीदा सांप को भी, क्योंकि दोनों आँख की रोशनी तक ख़त्म कर देते हैं और हमल तक गिरा देते हैं।

(दीगर मक़ाम : 3310, 3312, 4016)

3298. अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि एक मर्तबा मैं एक सांप को मारने की कोशिश कर रहा था कि मुझसे अबूलुबाबा (रज़ि.) ने पुकारकर कहा कि उसे न मारो, मैंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तो सांपों के मारने का हुक्म दिया था। उन्होंने बताया कि बाद में फिर आहज़रत (ﷺ) ने घरों में रहने वाले सांपों को जो जिन्न होते हैं दफ़ातन मार डालने से मना किया। (दीगर मक़ाम : 3311, 3313)

3299. और अब्दुरज़ाक़ ने भी इस हदीस को मअमर से रिवायत किया, उसमें य़ूँ है कि मुझको अबूलुबाबा (रज़ि.) ने देखा या मेरे चचा ज़ैद बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने और मअमर के साथ इस हदीस को यूनुस और इब्ने उययना और इस्हाक़ कल्बी और जुबेदा ने भी जुहरी से रिवायत किया और झालेह और इब्ने अबी हफ़्सा और इब्ने मज्मअ ने भी जुहरी से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने इमर (रज़ि.) से उसमें य़ूँ है कि मुझको अबूलुबाबा (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़त्ताब (दोनों) ने देखा।

अब्दुरज़ाक़ की रिवायत को इमाम मुस्लिम और इमाम अहमद और तबरानी ने, और यूनुस की रिवायत को मुस्लिम ने और इब्ने उययना को इमाम अहमद ने वस्ल किया, इस्हाक़ की रिवायत उनके नुस्खे में मौसूल है, झालेह की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया है। इब्ने अबी हफ़्सा की रिवायत में उनके नुस्खे में मौसूल है, इब्ने मज्मअ की रिवायत को बग़वी और इब्नुस्सकन ने वस्ल किया है।

घरेलू सांपों के बारे में मुस्लिम की रिवायत में है कि आपने उनके लिये ये इशारा फ़र्माया कि तीन दिन तक उनको डराओ कि हमारे घर से चले जाओ, अगर फिर भी वो न निकलें तो उनको मार डालो, सांपों में काला सांप सबसे बदतर है। उसके ज़हर से आदमी दम भर में मर जाता है। कहते हैं सांप की उम्र हज़ार साल होती है। हर साल में एक दफ़ा कैचुली बदलता है।

**बाब 15 : मुसलमान का बेहतरीन माल बकरियाँ हैं जिनको चराने के लिये पहाड़ों की चोटियों पर फिरता रहे**

3300. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने

يَنْخَطُبُ عَلَى الْمَوْتَرِ يَقُولُ: ((اَقْلُوا الْحَيَاتِ وَاَقْلُوا ذَا الطُّفَيْنِ وَالْأَثَرِ، فَإِنَّهُمَا يَطْمِسَانِ الْبَصَرَ وَيَسْتَقْطِآنِ الْحَبْلَ)).

[أطرافه ي: 3310, 3312, 4016].

3298- ((قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فِينَا أَنَا أَطَارِدُ حَيَّةً لِأَقْلَاهَا، فَأَذَانِي أَبُو لُبَابَةَ لَا تَقْتُلَهَا. فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ أَمَرَ بِقَتْلِ الْحَيَاتِ. فَقَالَ: إِنَّهُ نَهَى بَعْدَ ذَلِكَ عَنْ ذَوَاتِ الْبُيُوتِ، وَهِيَ الْغَوَامِرُ)).

[طرفاه ي: 3311, 3313].

3299- ((وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ: فَرَأَى أَبُو لُبَابَةَ، أَوْ زَيْدُ بْنُ الْخَطَّابِ، وَتَابَعَهُ يُونُسُ وَابْنُ عُيَيْنَةَ وَإِسْحَاقُ الْكَلْبِيُّ وَالزُّبَيْدِيُّ. وَقَالَ جَالِحٌ وَابْنُ أَبِي خَفْصَةَ وَابْنُ مُجَمِّعٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمرَ: رَأَى أَبُو لُبَابَةَ وَزَيْدُ بْنُ الْخَطَّابِ)).

١٥- بَابُ خَيْرِ مَالِ الْمُسْلِمِ غَنَمٌ

يَتَّبَعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ

٣٣٠٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ

कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी सअसआ ने, उनसे उनके वालिद ने, और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना आएगा जब मुसलमान का सबसे इम्दा माल उसकी वो बकरियाँ होंगी जिन्हें वो पहाड़ की चोटियों और बारिश की वादियों में लेकर चला जाएगा ताकि इस तरह अपने दीन व ईमान को फ़िलों से बचा लो (राजेअ: 19)

3301. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज्जिनाद ने ख़बर दी, उन्हें अअरज ने ख़बर दी, और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कुफ़्र की चोटी मश्रिक में है और फ़ख़र और तकब्बुर करना घोड़े वालों, ऊँट वालों और ज़मींदारों में होता है जो (इमूमन) गांव के रहने वाले होते हैं और बकरी वालों में दिल ज़म्ई होती है। (दीगर मक्राम: 3499, 4388, 4389, 4390)

पूरब में कुफ़्र की चोटी फ़र्माई, क्योंकि अरब के मुल्क से ईरान, तूरान ये सब मश्रिक में वाक़ेअ हैं और उस ज़माने में यहाँ के बादशाह बड़े मगरूर थे। ईरान के बादशाह ने आपका ख़त फाड़ डाला था।

3302. हमसे मुसद्द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यहाँ क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया कि मुझसे कैस ने बयान किया और उनसे इब्रबा बिन अमर बिन अबू मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यमन की तरफ़ अपने हाथ से इशारा करते हुए फ़र्माया कि ईमान तो इधर है यमन में! हाँ, और क़सावत और सख़्तदिली उन लोगों में है जो ऊँटों की दुमे पकड़े चलते रहते हैं। जहाँ से शैतान की चोटियाँ नमूदार होंगी, या'नी रबीआ और मुज़र की क़ौमों में। (दीगर मक्राम: 3498, 4387, 5303)

قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَفْصَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ خَيْرَ مَالِ الرَّجُلِ غَنَمٌ يَتَّبِعُ بِهَا شَقَفَ الْجَبَالِ وَمَوَاقِعَ الْقَطْرِ، يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١٩]

٣٣٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((رَأْسُ الْكُفْرِ نَحْوُ الْمَشْرِقِ، وَالْفَخْرُ وَالْخِيَلَاءُ فِي أَهْلِ الْخَيْلِ وَالْإِبِلِ، وَالْفَتَادِينِ أَهْلُ الْوَبَرِ، وَالسَّكِينَةُ فِي أَهْلِ الْقَمَمِ)). [أطرافه: ١٩]

[٤٣٩٠, ٤٣٨٩, ٤٣٨٨, ٣٤٩٩]

٣٣٠٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَمْرٍو أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: أَشَارَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدِيْهِ نَحْوَ الْيَمَنِ فَقَالَ: ((الْإِيمَانُ يَمَانٌ هَا هُنَا، أَلَا إِنَّ الْقَسْوَةَ وَغِلْظَ الْقُلُوبِ فِي الْفَتَادِينِ عِنْدَ أَصُولِ أَذْنَابِ الْإِبِلِ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ فِي رِبْعَةٍ وَمُضَرٍّ)).

[أطرافه: ١٩, ٤٣٨٧, ٣٤٩٨, ٥٣٠٣]

**तशरीह:** यमन वाले बग़ैर जंग और बग़ैर तकलीफ़ के अपनी रबत और खुशी से मुसलमान हो गये थे औहज़रत (ﷺ) ने उनकी ता'रीफ़ फ़र्माई और उसमें इस बात का इशारा है कि यमन वाले क़विय्युल ईमान (मज़बूत ईमान) रहेंगे

बनिस्बत और दूसरे मुल्क वालों के। यमन में बड़े-बड़े औलिया अल्लाह और आमिलीन बिल हदीष गुजरे हैं। आखिरी ज़माने में अल्लामा क़ाज़ी मुहम्मद बिन अली शौकानी यमनी हदीष के बड़े आलिम गुजरे हैं। उनसे पहले अल्लामा मुहम्मद बिन इस्माईल अमीर वगैरह। (वहीदी)

3303. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब मुर्ग की बांग सुनो तो अल्लाह से उसके फ़ज़ल का सवाल किया करो, क्योंकि उसने फ़रिश्ते को देखा है और जब गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैतान को देखा है।

३३०३- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَيْغَةَ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي مُرَّةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهيقَ الْحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا)).

हाफ़िज़ ने कहा इस हदीष से मुर्ग की फ़ज़ीलत निकली। अबू दाऊद ने ब सनदे सहीह निकाला कि मुर्ग को बुरा मत कहो वो नमाज़ के लिये बुलाता है या'नी नमाज़ के वक़्त जगा देता है। इस हदीष से ये भी निकला कि नेक लोगों की सुहबत में दुआ करना मुस्तहब है क्योंकि कुबूल होने की उम्मीद ज़्यादा होती है।

3304. हमसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको रौह बिन इबादा ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अत्ता बिन अबी रिबाह ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब रात का अंधेरा शुरू हो या (आपने ये फ़र्माया कि) जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को अपने पास रोक लिया करो, क्योंकि शयातीन उसी वक़्त फैलते हैं। अल्बत्ता जब एक घड़ी रात गुज़र जाए तो उन्हें छोड़ दो, और अल्लाह का नाम लेकर दरवाज़े बन्द कर लो, क्योंकि शैतान किसी बन्द दरवाज़े को नहीं खोल सकता, इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मुझे अमर बिन दीनार ने ख़बर दी कि उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से बिलकुल इसी तरह हदीष सुनी थी जिस तरह मुझे अत्ता ने ख़बर दी थी, अल्बत्ता उन्होंने उसका ज़िक्र नहीं किया कि, अल्लाह का नाम लो। (राजेअ : 3280)

३३०४- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا رَوْحٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا كَانَ جُنْحُ اللَّيْلِ - أَوْ أَمْسَتُمْ - لَكُفُّوا صِيَّانَكُمْ، فَإِنَّ الشَّيَاطِينَ تَنْشِيرُ جُنُبَهُ، فَإِذَا ذَهَبَتْ سَاعَةٌ مِنَ اللَّيْلِ فَخَلُّوهُمْ وَأَغْلِقُوا الْأَبْوَابَ وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَفْتَحُ بَابًا مُغْلَقًا)). قَالَ وَأَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا مَا أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ وَلَمْ يَذْكُرْ ((وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ)).

[راجع: ٣٢٨٠]

3305. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

३३०५- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ

वुहैब ने, उनसे खालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल में कुछ लोग ग़ायब हो गये (उनकी मूर्तें मस्ख हो गई यानी बदल गई)। मेरा तो ये ख़याल है कि उन्हें चूहे की मूर्त में मस्ख कर दिया गया क्योंकि चूहों के सामने जब कूट का दूध रखा जाता है तो वो उसे नहीं पीते (क्योंकि बनी इस्राईल के दीन में कूट का गोश्त हाराम था) और अगर बकरी का दूध रखा जाए तो पी जाते हैं। फिर मैंने ये हदीस कअब अहबार से बयान की तो उन्होंने (हैरत से) पूछा, क्या बाकई आपने आँहज़रत (ﷺ) से ये हदीस सुनी है? कई मर्तबा उन्होंने ये सवाल किया। इस पर मैंने कहा (कि आँहज़रत (ﷺ) से नहीं सुनी तो फिर किससे) क्या मैं तौरात पढ़ा करता हूँ? (कि उससे नक़ल करके बयान करता हूँ)

इसमें इख़्तिलाफ़ है कि मस्ख लोगो की नसल रहती है या नहीं? जुम्हूर के नज़दीक नहीं रहती और बाब की हदीस को इस पर महमूल किया है कि उस वक़्त तक आप पर वद्वान आई होगी, इसीलिये आपने गुमान के तौर पर फ़र्माया। (वहीदी)

3306. हमसे सईद बिन ज़फ़ैर ने बयान किया, उनसे इब्ने वहाब ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने, उन्होंने ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने गिरगिट (छिपकली) के बारे में फ़र्माया था कि वो मूजी जानवर है लेकिन मैंने आपसे उसे मार डालने का हुक्म नहीं सुना था और सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) बताते थे कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसे मार डालने का हुक्म दिया है। (राजेअ : 1831)

3307. हमसे सअद बिन ज़फ़ैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने ज़ययना ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल हमीद बिन जुबैर बिन शैबा ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उन्हें उम्मे शुरैक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने गिरगिट को मार डालने का हुक्म फ़र्माया है। (दीगर मक़ाम : 3359)

3308. हमसे इब्ने बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَقَدْتُ أُمَّةً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا يُدْرِي مَا فَعَلْتُ، وَإِنِّي لَا أَرَاهَا إِلَّا الْفَارَ: إِذَا وَضِعَ لَهَا أَلْبَانُ الْإِبِلِ لَمْ تَشْرَبْ، وَإِذَا وَضِعَ لَهَا أَلْبَانُ الشَّاءِ شَرِبَتْ». فَحَدَّثْتُ كَعْبًا فَقَالَ: أَنْتَ سَمِعْتَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُهُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ لِي مِرَارًا: قُلْتُ: أَفَأَلْرَأُ التَّوْرَةَ؟

٣٣٠٦ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ عَنْ ابْنِ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بِحَدَّثُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: «إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِلْوَزَغِ: ((الْوَزَغُ)) وَلَمْ أَسْمَعْهُ أَمْرًا بِقَتْلِهِ. وَزَعَمَ سَعِيدُ بْنُ أَبِي رَافٍ أَنْ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِهِ». [راجع: ١٨٣١]

٣٣٠٧ - حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جُبَيْرٍ بِنِ شَيْبَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أُمَّ شَرِيكٍ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَهَا بِقَتْلِ الْوَزَغِ. [طرفه في: ٣٣٥٩].

٣٣٠٨ - حَدَّثَنَا غَيْثُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ

अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस सांप के सर पर दो नुक्ते होते हैं, उन्हें मार डाला करो, क्योंकि वो अंधा बना देते हैं और हमल को भी नुक़सान पहुँचाते हैं।

अबू उसामा के साथ इसको हम्माद बिन सलमा ने भी रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3309)

3309. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दुम बुरीदा सांप को मार डालने का हुक्म दिया और फ़र्माया कि ये आँखों को नुक़सान पहुँचाता है और हमल को साक्रित कर देता है। (राजेअ : 3308)

या'नी उनमें ज़हरीला मादा इतना जोरदार अज़र रखता है कि उसकी तेज़ निगाही अगर किसी की आँख से टकरा जाए तो बज़ारत के ज़ाइल होने (अंधा होने) का डर है। इसी तरह हामिला औरतों का हमल साक्रित करने के लिये भी उनकी तेज़ निगाही ख़तरनाक है। फिर ज़हर किस क़दर मुहलिक (नुक़सानदायक) होगा उसका अंदाज़ा भी नहीं किया जा सकता।

3310. हमसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया उनसे अबू यूनस कुशैरी (हातिम बिन अबी सरीरा) ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि इब्ने डमर (रज़ि.) सांपों को पहले मार डाला करते थे। लेकिन बाद में उन्हें मारने से ख़ुद ही मना करने लगे। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपनी एक दीवार गिरवाई तो उसमें से एक सांप की कैंचुली निकली, आपने फ़र्माया कि देखो, वो सांप कहाँ है। सहाबा (रज़ि.) ने तलाश किया (और वो मिल गया तो) आपने फ़र्माया कि इसे मार डालो, मैं भी इसी वजह से सांपों को मार डाला करता था। (राजेअ : 3297)

3311. फिर मेरी मुलाक़ात एक दिन अबू लुबाबा से हुई तो उन्होंने मुझे ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि पतले या सफ़ेद सांपों को न मारा करो। अल्बत्ता दुम कटे हुए सांप को जिस पर दो सफ़ेद धारियाँ होती हैं उसको मार डालो, क्योंकि ये इतना ज़हरीला होता है कि हामिला के हमल को गिरा देता है और आदमी को अंधा बना देता है। (राजेअ : 3298)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اقْتُلُوا ذَا الطُّفَيْتَيْنِ، فَإِنَّهُ يَطْبِئُ الْبَصَرَ وَيَصِيبُ الْحَبْلَ)).

ثَابِتُهُ خَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ : ((أَخْبَرَنَا أُسَامَةُ)).  
[طرحه ب: 3309]

3309- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْتُلِ الْأَنْعَرِ وَقَالَ: إِنَّهُ يُصِيبُ الْبَصَرَ وَيُذْهِبُ الْحَبْلَ)).  
[راجع: 3308]

3310- حَدَّثَنِي عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ أَبِي يُونُسَ الْكُشَيْرِيِّ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يَقْتُلُ الْحَيَّاتِ، ثُمَّ نَهَى قَالَ: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ هَدَمَ حَائِطًا لَهُ فَوَجَدَ فِيهِ سَلَحَ حَيَّةٍ فَقَالَ: ((انظُرُوا أَيْنَ هُوَ فَانظُرُوا فَقَالَ: ((اقْتُلُوهُ))، فَكُنْتُ أَقْتُلُهَا لِلذِّكْرِ)).

[راجع: 3297]

3311- فَلَقِيتُ أَبَا لُبَابَةَ فَأَخْبَرَنِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقْتُلُوا الْحَيَّاتِ إِلَّا كُلَّ أَنْعَرٍ ذِي طُفَيْتَيْنِ، فَإِنَّهُ يُسْقِطُ الْوَلَدَ وَيُذْهِبُ الْبَصَرَ فَاقْتُلُوهُ)).

[راجع: 3298]

**तशरीह:** पहले जो हदीष गुजरी है उसमें धारियाँ वाले, और बेदुम के सांप के मारने का हुक्म फर्माया। यहाँ भी उसके मारने का हुक्म दिया, जिसमें ये दोनों बातें मौजूद हों वो और भी ज्यादा ज़हरीला होगा। ये हदीष अगली हदीष के खिलाफ नहीं है। मतलब ये है कि जिस सांप में इन दोनों में से कोई सिफ़त या दोनों सिफ़तें पाई जाती हो उसको मार डालो। (वहीदी)

3312. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने इमर (रज़ि.) सांपों को मार डाला करते थे। (राजेअ: 3297)

۳۳۱۲- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَانَ يَقْتُلُ الْحَيَّاتَ.

[راجع: ۳۲۹۷]

3313. फिर उनसे अबू लुबाबा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने घरों के पतले या सफ़ेद सांपों को मारने से मना किया है तो उन्होंने मारना छोड़ दिया। (राजेअ: 3298)

۳۳۱۳- فَحَدَّثَنَا أَبُو لُبَابَةَ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ قَتْلِ جَنَّاتِ الْبُيُوتِ، فَأَمْسَكَ عَنْهَا)). [راجع: ۳۲۹۸]

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अभी पीछे आयते शरीफ़ा, बबख़्शा फ़ीहा मिन कुल्लि दाब्बति (अल बकर: 164) के ज़ेल बाब मुनअक़िद किया था। इन तमाम अह्दादीष का ता'ल्लुक इसी बाब के साथ है। दरम्यान में बकरी का ज़िम्नी तौर पर ज़िक्र आ गया था। इसकी हिमायत के पेशे-नज़र इसके लिये अलग बाब बांधना मुनासिब जाना। फिर बकरी की अह्दादीष के बाद बाब ज़ेरे आयत ब बबख़्शा फ़ीहा मिन कुल्लि दाब्बतिन (अल बकर: 164) के ज़ेल इन तमाम अह्दादीष को लाए जिनमे हैवानात की मुख़्तलिफ़ किस्मों का ज़िक्र हुआ है। फ़तदब्बर वफ़फ़क़क़ल्लाह

**बाब 16 : पाँच बहुत ही बुरे (इंसान को तकलीफ़ देने वाले) जानवर हैं, जिनको हरम में भी मार डालना दुरुस्त है**

بَابُ خَمْسٍ مِنَ الدَّوَابِّ قَوَاسِقُ

يُقْتَلْنَ فِي الْحَرَمِ

3314. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन जुरेअ ने बयान किया, कहा हमसे मज़मर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे इर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पाँच जानवर मूजी हैं, उन्हें हरम मे भी मारा जा सकता है (तोहल में बतरीके औला उनका मारना जाइज़ होगा) चूहा, बिच्छू, चील, कौआ और काट लेने वाला कुत्ता। (राजेअ: 1829)

۳۳۱۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَمْسٌ قَوَاسِقُ يُقْتَلْنَ فِي الْحَرَمِ: الْفَأْرَةُ وَالْقُرْبُ وَالْحَدَّيَا وَالْقِرَابُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ)).

[راجع: ۱۸۲۹]

स्रेहते इंसानी के लिहाज़ से भी ये जानवर बहुत मुज़िर (नुक्सानदेह) हैं। अगर उनमे से हर जानवर को उसके मुज़िर अपरात की रोशनी मे देखा जाए तो हदीषे नबवी का बयान स़ाफ़ तौर पर ज़हन नशीन हो जाएगा।

3315. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हे अब्दुल्लाह बिन दीनार

۳۳۱۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ

ने और उन्हें हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पाँच जानवर ऐसे हैं जिन्हें अगर कोई शख्स हालते एहराम में भी मार डाले तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बिच्छू, चूहा, काट लेने वाला कुत्ता, कौआ और चील। (राजेअ: 1826)

3316. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे कशीर ने, उनसे अत्ता ने और उनसे हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पानी के बर्तनों को ढंक लिया करो, मशकीज़ों (के मुँह) को बाँध लिया करो, दरवाज़े बन्द कर लिया करो और अपने बच्चों को अपने पास जमा कर लिया करो, क्योंकि शाम होते ही जिन्नात (रूएज़मीन पर) फैलते हैं और उचकते फिरते हैं और सोते वक़्त चिराग़ बुझा लिया करो, क्योंकि मूजी (चूहा) कुछ औकात जलती बत्ती को खींच लाता है और इस तरह सारे घर को जला देता है। इब्ने जुरैज और हबीब ने भी इसको अत्ता से रिवायत किया, उसमें जिन्नात के बदले में शयातीन मज़कूर हैं। (राजेअ: 3280)

जिन्नात और शयातीन कुछ दफ़ा सांप की शकल में ज़मीन पर फैलकर ख़ास तौर पर रात में इंसानों की तकलीफ़ का सबब बन जाते हैं, हदीष का मफ़हूम यही है।

3317. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन आदम ने ख़बर दी, उन्हें इस्राईल ने, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अल्क्रमा ने और उनसे हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि (मुक्कामे मिना में) हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ार में बैठे हुए थे कि आयत, वल मुर्सलाति उरफ़ा नाज़िल हुई, अभी हम आपकी जुबाने मुबारक से उसे सुन ही रहे थे कि एक बिल में से एक सांप निकला। हम उसे मारने के लिये झपटे, लेकिन वो भाग गया और अपने बिल में दाख़िल हो गया, औ हजरत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, तुम्हारे हाथ से वो उसी तरह बच निकला, जैसे तुम उसके निशान से बच गये और यह्या ने इस्राईल से रिवायत किया है, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क्रमा ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने इसी

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((خَمْسٌ مِنَ الدَّوَابِّ مَنْ قَتَلَهُنَّ وَهُوَ مُحْرِمٌ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ: الْقَفُورُ وَالْقَارَةُ وَالْكَلْبُ الْقَفُورُ وَالْقَرَابُ وَالْحَدَأَةُ)). [راجع: ١٨٢٦]

٣٣١٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ كَثِيرٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ خَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ قَالَ: ((خَمَرُوا الْآنِيَةَ، وَأَوْكُوا الْأَسْفِيَةَ، وَأَجِفُّوا الْأَبْوَابَ، وَأَكْفِتُوا صَبِيَّانَكُمْ عِنْدَ الْعِشِيِّ، فَإِنَّ لِلْجِنِّ انْشَارًا وَخَطْفَةً، وَأَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ عِنْدَ الرُّقَادِ فَإِنَّ الْفُوتَيْسَةَ رُبَّمَا اخْتَرَتِ الْفَيْثِلَةَ فَأَخْرَقَتْ أَهْلَ النَّيْتِ)). قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ وَحَبِيبٌ عَنْ عَطَاءٍ: ((فَإِنَّ لِلشَّيْطَانِ)). [راجع: ٣٢٨٠]

٣٣١٧- حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَارٍ، فَزَلْتُ: «وَالْمُرْسَلَاتِ غُرَفًا» فَإِنَّا لَنَلْقَاهَا مِنْ فِيْهِ إِذْ خَرَجَتْ حَيْثُ مِنْ جُحْرَهَا، فَابْتَدَرْنَاهَا لِقَتْلِهَا، فَسَبَقْنَا فَدَخَلْتُ فِي جُحْرَهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((وَقَيْتُ شَرْكُمُ كَمَا وَقَيْتُمْ شَرْهًا)). وَعَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ



तरह रिवायत किया और कहा कि हम आँहजरत (ﷺ) की जुबाने मुबारक से इस सूरह को ताज़ा-ब-ताज़ा सुन रहे थे और इस्राईल के साथ इस हदीस को अबू अवाना ने मुगीरह से रिवायत किया और हफ़्स बिन गयास और अबू मुआविया और सुलैमान बिन क्रम ने भी आ'मश से बयान किया, उनसे इब्नाहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने। (राजेअ : 1830)

अबू अवाना की रिवायत को खुद मुअल्लिफ़ ने किताबुत तफ़सीर में और हफ़्स की रिवायत को भी मुअल्लिफ़ ने किताबुल हज्ज में और अबू मुआविया की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने क़ुल किया, सुलैमान बिन क्रम की रिवायत को हाफ़िज़ ने कहा, मैंने मौसूलन नहीं पाया।

33 18. हमसे नज़र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल आला ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया, एक औरत एक बिल्ली के सबब से दोज़ख़ में गई। उसने बिल्ली को बाँधकर रखा न तो उसे खाना दिया और न ही छोड़ा कि वो कीड़े-मकोड़े खाकर अपनी जान बचा लेती। अब्दुल आला ने कहा और हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सईद मन्नबरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया। (राजेअ : 2365)

मा'लूम हुआ कि मख़लूक़ात को जान-बूझकर कुछ भी तकलीफ़ देना अल्लाह के नज़दीक सख़्त मअयूब और गुनाहे अज़ीम है।

33 19. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गिरोहे अंबिया में से एक नबी एक पेड़ के साये में उतरे, वहाँ उन्हें किसी एक चींटी ने काट लिया। तो उन्होंने हुक्म दिया, उनका सारा सामान पेड़ के तले से उठा लिया गया। फिर चींटियों का सारा छत्ता जलवा दिया। इस पर अल्लाह तआला ने उन पर बह्म भेजी कि तुमको तो एक ही चींटी ने काटा था, फ़क़त उसी को जलाना था। (राजेअ : 3019)

إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ . مِثْلَهُ . قَالَ : ((وَأَنَا لَنَلْقَاهَا مِنْ فِيهِ رَطْبَةً)). وَكَاتِبُهُ أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مُغِيرَةَ . وَقَالَ حَفْصٌ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَسُلَيْمَانُ بْنُ قُرْمٍ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ . [راجع : ١٨٣٠]

٣٣١٨ - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُثَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((دَخَلَتْ امْرَأَةٌ النَّارَ فِي هِرَّةٍ وَرَبَطَتْهَا ، فَلَمْ تَقْطَعْهَا ، وَلَمْ تَدَعْهَا تَأْكُلْ مِنْ خَشَاشِ الْأَرْضِ)). قَالَ : وَحَدَّثَنَا عُثَيْدُ اللَّهِ عَنْ سَعِيدِ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . مِثْلَهُ . [راجع : ٢٣٦٥]

٣٣١٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((نَزَلَ نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَلَدَغَتْهُ نَمْلَةٌ ، فَأَمَرَ بِجَهَارِهِ فَأَخْرَجَ مِنْ تَحْتِهَا ، ثُمَّ أَمَرَ بِبَيْتِهَا فَأَخْرَقَ بِالنَّارِ ، فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ : فَهَلَا نَمْلَةٌ وَاحِدَةٌ؟)). [راجع : ٣٠١٩]

### ग़लत तर्जुमे का एक नमूना :-

बड़े अफ़सोस से कहना पड़ता है कि आजकल हमारे मुअज़्ज़ इलमा-ए-किराम बुखारी शरीफ़ के कई अनुवाद निकाल रहे हैं। मगर उनके तराजिम (अनुवाद) और तशरीहात में लफ़्ज़ी और मअनवी बहुत सी ग़लतियाँ मौजूद हैं। यहाँ तक कि कुछ जगह हदीष का मफ़हूम कुछ होता है और ये हज़रत उसके बरअक्स तर्जुमा कर जाते हैं। उसकी एक मिशाल यहाँ भी मौजूद है। हदीष के अल्फ़ाज़ फअमर बिजहाज़िही फउख़िरज मिन तहतिहा का तर्जुमा तफ़हीमुल बुखारी (देवबन्दी) में यूँ किया गया है :

तो उन्होंने उसके छते को पेड़ के नीचे से निकालने का हुक्म दिया। वो निकाला गया। ये तर्जुमा बिल्कुल ग़लत है, सहीह वो है जो हमने किया है, जैसा कि अहले इल्म पर रोशन है।

**बाब 17 : उस हदीष के बयान में जब मक्खी पानी या खाने में गिर जाए तो उसको डुबो दे क्योंकि उसके एक पर में बीमारी होती है और दूसरे पर में शिफ़ा होती है**

3320. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे इब्ना बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अबैद बिन हुनैन ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना। वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब मक्खी किसी के पीने (या खाने की चीज़) में पड़ जाए तो उसे डुबो दे और फिर निकालकर फेंक दे क्योंकि उसके एक पर में बीमारी है और दूसरे (पर) में शिफ़ा होती है। (दीगर मक़ाम : 5782)

3321. हमसे हसन बिन सबाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ अज़रक़ ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने बयान किया, उनसे हसन और इब्ने सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक फ़ाहिशा औरत सिर्फ़ इस वजह से बख़्शी गई कि वो एक कुत्ते के क़रीब से गुज़र रही थी, जो एक कुँए के क़रीब खड़ा प्यासा हाँफ़ रहा था। ऐसा मा'लूम होता था कि वो प्यास की शिद्दत से अभी मर जाएगा। उस औरत ने अपना मौज़ा निकाला और उसमें अपना दुपट्टा बाँधकर पानी निकाला और उस कुत्ते को पिला दिया, तो उसकी बख़्शिश उसी (नेकी) की वजह से हो गई। (दीगर मक़ाम : 3467)

۱۷- بَابُ إِذَا وَقَعَ اللَّذَابُ فِي

شَرَابٍ أَخَذْتُمْ فَلْيَمْسَهُ فَإِنَّ فِي إِحْدَى جَنَاحَيْهِ دَاءٌ وَفِي الْأُخْرَى شِفَاءٌ

۳۳۲۰- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُثَيْبُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُثَيْدُ بْنُ حُنَيْنٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا وَقَعَ اللَّذَابُ فِي شَرَابٍ أَخَذْتُمْ فَلْيَمْسَهُ ثُمَّ لِيَنْزَعْهُ، فَإِنَّ فِي إِحْدَى جَنَاحَيْهِ دَاءٌ وَالْأُخْرَى شِفَاءٌ)). [طرفه ب : ۵۷۸۲].

۳۳۲۱- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّاحِبِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْأَزْرقُ قَالَ حَدَّثَنَا عَوْفُ بْنُ الْحَسَنِ وَابْنُ سَيْرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((غَفِيرٌ لِمَرْأَةٍ مُؤْمِسَةٍ مَرَّتْ بِكَلْبٍ عَلَى رَأْسِ رَكْبٍ يَنْهَثُ، قَالَ: كَادَ يَقْتُلُهُ الْقَطْشُ - فَتَزَعَتْ خُفَّهَا فَأَوْثَقَتْهُ بِخِمَارِهَا فَتَزَعَتْ لَهُ مِنَ الْمَاءِ، فَغَفِرَ لَهَا بِذَلِكَ)).

[طرفه ب : ۳۴۶۷]

3322. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, कहा कि मैं ने जुहरी से इस हदीस को इस तरह याद रखा कि मुझे कोई शक ही नहीं, जैसे इसमें शक नहीं कि तू उस जगह मौजूद है। (उन्होंने ने बयान किया कि) मुझे अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने और उन्हें अबू तलहा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, (रहमत के) फ़रिश्ते उन घरों में नहीं दाखिल होते जिनमें कुत्ता या (जानदार की) तस्वीर हो। (राजेअ: 2325)

۳۳۲۲- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَفِظْتُهُ مِنَ الزُّهْرِيِّ كَمَا أَنْكَ هَا هُنَا، أَخْبَرَنِي عُثَيْدُ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلَا صُورَةٌ)).

[راجع: ۲۳۲۵]

3323. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्तों को मारने का हुक्म फ़र्माया है।

۳۳۲۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِ الْكِلَابِ)).

शिकार के लिये या घर बार की रखवाली के लिये कुत्ते पालने की इजाज़त दी गई है। पागल या जो कुत्ते इंसानों के दुश्मन हों और काटने के लिये दौड़ते हों उन्हें मारने का आपने हुक्म दिया है आपकी मुराद तमाम कुत्तों से नहीं।

3324. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हममाम ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख्स कुत्ता पाले, उसके अमले नेक में से रोज़ाना एक क़ीरात (प्रवाब) कम कर दिया जाता है, खेत के लिये या मवेशी के लिये जो कुत्ते पाले जाएँ वो उससे अलग हैं। (राजेअ: 2322)

۳۳۲۴- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَنِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ أَمْسَكَ كَلْبًا يَنْقُصُ مِنْ عَمَلِهِ كُلِّ يَوْمٍ قِيرَاطًا، إِلَّا كَلْبَ حَرْثٍ أَوْ كَلْبَ مَاشِيَةٍ)).

[راجع: ۲۳۲۲]

कुत्ते ज़रूर कभी न कभी किसी न किसी क्रिस्म का नुक़सान ज़रूर कर देते हैं, इस नुक़सान के बदले उसके पालने वाले पर ज़िम्मेदारी होगी, हिफ़ाज़त के लिये जो कुत्ते पाले जाएँ उन पर ज़रूर मालिक का कंट्रोल होगा लिहाज़ा वो अलग किये गये।

3325. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझे यज़ीद बिन खुस्सेफ़ा ने खबर दी, कहा कि मुझे साइब बिन यज़ीद ने खबर दी, उन्होंने सुफयान बिन अबी जुहैर शनवी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, कि जिसने कोई कुत्ता पाला। न तो पालने वाले का मक्क़सद खेत की हिफ़ाज़त है और न

۳۳۲۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ أَخْبَرَنِي يَزِيدُ بْنُ خُصَيْفَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي السَّائِبُ بْنُ يَزِيدَ سَمِعَ سُفْيَانَ بْنَ زُهَيْرٍ الشَّيْبِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ أَقْتَى كَلْبًا لَا

मवेशियों की, तो रोज़ाना उसके नेक अमल में से एक क़ीरात (प्रवाब) की कमी हो जाती है। साईब ने पूछा, क्या तुमने खुद ये हदीष रसूले करीम (ﷺ) से सुनी थी? उन्होंने कहा, हाँ! इस क़िब्ला के रब की क़सम (मैंने खुद इस हदीष को रसूले करीम ﷺ से सुना है)। (राजेअ: 2323)

يُغْنِي عَنْهُ زَرْعًا وَلَا صَرْعًا نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ  
كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطًا)). فَقَالَ السَّائِبُ: أَنْتَ  
سَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَ: بَلَى  
وَرَبُّ هَذِهِ الْقِبْلَةِ. [راجع: ٢٣٢٣]

## 60. किताब अहादीषुल अंबिया

# किताब अंबिया (अलैहि) के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**तशरीह:** अल्हम्दुलिल्लाह! आज जबकि दौराने सफ़र दक्षिण भारत में मुहतरम अल्हाज मुहम्मद इब्राहीम साहब त्रिचनापल्ली के यहाँ मुकीम हैं, किताब बदउल ख़ल्क पूरी हुई और किताबुल अंबिया का आगाज़ हुआ जिसमें मुख्तलिफ़ नबियों के हालात मज़कूर होंगे। बाब बदउल ख़ल्क में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) कई ऐसी अहादीष भी लाए हैं जिनका बज़ाहिर ता'ल्लुक बाब के तर्जुमे से मा'लूम नहीं होता। किरमानी ने ये तौजीह की है कि इस बाब में बदउल ख़ल्क का ज़िक्र था तो इमाम बुखारी (रह.) ने उसमें कुछ मख़लूकात का भी ज़िक्र कर दिया, जैसे कुत्ता, चूहा वगैरह। वल्लाहु आलम।

मख़लूकात में आसमान व ज़मीन, इंसान, हैवान सब ही दाख़िल हैं। इसी हकीक़त को वाज़ेह करने के लिये आप मुख्तलिफ़ किस्म की अहादीष इस बाब के ज़ेल में लाए ताकि फ़रामीने रसूले करीम (ﷺ) की रोशनी में हर किस्म की मख़लूकात के कुछ हालात मा'लूम हो सकें। अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) की ता'दाद के मुता'ल्लिक़ एक हदीष वारिद हुई है कि दुनिया में कुल एक लाख और चौबीस हज़ार नबी आए। जिनमें रसूल या'नी साहिबे शरीअत और किताब तीन सौ तेरह हैं। उन सब नबियों के आख़िर में ख़ातिमुर्सूल हमारे नबी (ﷺ) हैं। खुद कुर्आन शरीफ़ से साबित है कि आप ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के अफ़र में जो ये वारिद है कि सात ज़मीनें हैं और हर ज़मीन में एक नबी है तुम्हारे नबी की तरह। तो अव्वल तो ये अफ़र शाज़ है। दूसरे इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं है। मुम्किन है कि और ज़मीनों के नबी हमारे नबी (अलै.) से पहले आ चुके हों और हमारे पैग़म्बर (अलै.) उनके भी बाद तशरीफ़ लाए हों तो वो सब पैग़म्बर अपनी अपनी ज़मीनों के ख़ातिमुल अंबिया हुए और हमारे पैग़म्बर (अलै.) सब पैग़म्बरों के ख़ातिम हुए।

ख़ल्मे नुबुव्वत का अक़ीदा उम्मत का मुसल्लमा अक़ीदा है जिस पर तमाम मकातिबे फ़िक्क़ इस्लामी का इत्तिफ़ाक़ है मगर कुछ अर्सा पहले यहाँ हिन्दुस्तान में एक साहब पैदा हुए और उन्होंने इस अक़ीदे को मसख़ करने के लिये मुख्तलिफ़ किस्म की तावीलात का जाल फैलाकर बहुत से लोगों को इस बारे में मुतज़लज़ल (डगमग) कर दिया। फिर ये साहब खुद भी नुबुव्वत के दावेदार बन बैठे और कितने लोगो का अपना मुरीद बना लिया, उनसे मुराद मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादयानी हैं जो अर्सा पहले वफ़ात पा चुके हैं। मगर उनके जानशीन पूरी उम्मत इस्लामी से कटकर अपना एक अलग दीन बनाए हुए हैं।

जो मुसलमान अल्लाह और रसूल पर पुख्ता ईमान रखते हैं उनको हर्गिज़ ऐसे लोगों के जाल में न आना चाहिये, ख़ल्मे नुबुव्वत के खिलाफ़ अक़ीदा बनाकर नुबुव्वत का दा'वा करके हज़रत सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) के तख्ते नुबुव्वत पर क़ब्ज़ा करना है। जिसका पूरी शिद्दत से मुकाबला करना हर उस मुसलमान का फ़र्ज़ है जो अल्लाह को मा'बूदे बरहक़ और रसूले करीम (ﷺ) के रसूले बरहक़ और ख़ातिमुन्नबियीन होने का अक़ीदा रखता है। तफ़्सीलात के लिये मुसन्नफ़ात हज़रत फ़ातेहे क़ादियान मौलाना अबुल वफ़ाअ घनाउल्लाह साहब अमृतसरी (रह.) का मुतालआ ज़रूरी है। जो ख़ास इसी मिशन पर हज़रत मौलाना मरहूम ने तहरीर फ़र्माई हैं और भी बहुत से इलमा ने इस मौजूअ पर बहुत सी फ़ाज़िलाना किताबें लिखी हैं। जज़ाहुमुल्लाहु ख़ैरल जज़ा।

लफ़्ज़ अंबिया नबी की जमा है जो नुबुव्वत से है। जिसके मा'नी ख़बर देने के हैं। कुछ ख़ासाने इलाही बराहे-रास्त अल्लाह पाक से ख़बर पाकर दुनिया को ख़बरें देते हैं। यही नबी हैं। वन्नुबुव्वतु निअमतुन यमुन्नु बिल्लाहि अला मन शाअ व ला यब्लुगुहा अहदुन बि इल्मिही व ला कश्फिही व ला यस्तहिक्कुहा इस्तिअदादि विलायतिही व वक्कअ फ़ी ज़िक्रि अददिल्अम्बियाइ हदीषु अबी ज़रिन मफ़ूअन अन्नहुम मिअत अल्फ़िन व अर्बअतुव्वइशरुन अल्फ़िन अरूसुलु मिन्हुम प्रलाप्र मिअतिन व प्रलाप्र अशर सहहू इब्नु हिब्बान (फत्हुल बारी) या'नी अल्लाह पाक महज़ अपने फ़ज़लो करम से जिसे चाहता है अता करता है नुबुव्वत किसी को उसके इल्म या कशफ़ या इस्तेदादे विलायत की बिना पर नहीं हासिल होती। ये महज़ अल्लाह की तरफ़ से एक वहबी नेअमत है। अंबिया की ता'दाद के बारे में मफ़ूअन हदीषे अबूज़र में आया है कि उनकी ता'दाद एक लाख और चौबीस हज़ार है जिनमें तीन सौ तेरह रसूल हैं और बाक़ी सब नबी हैं। रिसालत का मुक़ाम नुबुव्वत से और भी बुलन्द व बाला है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

## बाब 1 : हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद की पैदाइश के बयान में

(सूरह रहमान में लफ़्ज़) मलज़ाल के मा'नी ऐसे गारे के हैं जिसमें रेत मिली हो और वो इस तरह से बजने लगे जैसे पकी हुई मिट्टी बजती है। कुछ ने कहा मलज़ाल के मा'नी मनतन या'नी बदबूदार के हैं। असल में ये लफ़्ज़ मल से निकला है। फ़कलिमा मुक़र्र कर दिया या जैसे सर सरा सर से। अरब लोग कहते हैं सरलबाब या सरसरलबाब जब बन्द करने से दरवाज़े मे से आवाज़ निकले जैसे कक्कबति कब से निकला है। सूरह आराफ़ में लफ़्ज़ फ़मरत बिही का मा'नी चलती फिरती रही, हमल की मुदत पूरी की, (सूरह आराफ़ में) लफ़्ज़ अल्ला ला तस्जुद का मा'नी अन तस्जुद के हैं या'नी तुझको सज्दा करने से किस बात ने रोका। ला का लफ़्ज़ यहाँ ज़ाइद है।

बाब 2 : अल्लाह तआला का सूरह बक्रर: मे ये फ़र्माना, ऐ रसूल! वो वक़््त याद करो जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा मैं ज़मीन में एक (क्रौम

## ١- بَابُ خَلْقِ آدَمَ صَلَوَاتُ اللَّهِ

عَلَيْهِ دُرَرِيهِ

﴿صَلَّاتٌ﴾: طَبْنٌ خَلِطَ بِرَمْلِ، فَصَلَّاتٌ  
كَمَا يُصَلِّى الْفَخَّارُ، وَثِقَانٌ مُنَيْنٌ  
يُرِيدُونَ بِهِ صَلً، كَمَا يُقَالُ صَرَّ الْبَابُ  
وَصَرَّصَرَّ عِنْدَ الْإِغْلَاقِ، بِطَلٍ كَبَّكْتُهُ يَغْنَى  
كَبَيْتُهُ. ﴿فَمَرَّتْ بِهِ﴾ بِهَا اسْتَمَرَّ الْحَمَلُ  
فَأَتَمَّتْهُ. ﴿أَنْ لَا تَسْجُدَ﴾: أَنْ تَسْجُدَ.

باب وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي

## को) जानशीन बनाने वाला हूँ

الأَرْضِ خَلِيفَةً ﴿البقرة: ३०﴾

(खलीफा के ये भी एक मा'नी हैं कि उनमें सिलसिलेवार एक के बाद दूसरे उनके कायम मुकाम होते रहेंगे)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, सूरह तारिक में जो लम्मा अलैहा हाफ़िज़ के अल्फ़ाज़ हैं, यहाँ लम्मा इल्ला के मा'नी में है या'नी कोई जान नहीं मगर उस पर अल्लाह की तरफ़ से एक निगाहबान मुकरर है, (सूरह बलद में जो) फ़ी कबद का लफ़्ज़ आया है मकबद के मा'नी सख़्ती के हैं। और (सूरह आराफ़ में) जो रियाशा का लफ़्ज़ आया है रियाश उसकी जमा है या'नी माल, ये हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर है दूसरों ने कहा, रियाश और रयशा का एक ही मा'नी है या'नी जाहिरी लिबास और (सूरह वाक्रिया में) जो तम्नून का लफ़्ज़ आया है उसके मा'नी नुत्फ़ा के हैं जो तुम औरतों के रहम में (जिमाअ के वक़्त) डालते हो। (और सूरह तारिक में है) इन्नहु अला रज्ज़ही लक्रादिर मुजाहिद ने कहा उसके मा'नी ये हैं कि वो अल्लाह मनी को फिर ज़कर में लौटा सकता है (इसको क्रयाबी ने वस्ल किया, अक़बर लोगों ने ये मा'नी किये हैं कि वो अल्लाह आदमी के लौटाने या'नी क्रयामत में पैदा करने पर भी क़ादिर है) (और सूरह सज्दा में) कुल्लू शेइन् ख़लक़हु का मा'नी ये है कि हर चीज़ को अल्लाह ने जोड़े जोड़े बनाया है। आसमान ज़मीन का जोड़ है (जिन्न आदमी का जोड़ है, सूरज चाँद का जोड़ है) और ताक़ अल्लाह की ज़ात है जिसका कोई जोड़ नहीं है। सूरह तीन में है फ़ी अहसनि तक्रवीम या'नी अच्छी सूरत अच्छी ख़िल्क़त में हमने इंसान को पैदा किया। (अस्फ़ला साफ़िलीन इल्ला मन आमन) का'नी फिर आदमी को मैंने पस्त से पस्ततर कर दिया (दोज़ख़ी बना दिया) मगर जो ईमान लाया। (सूरह अस्सर में) फ़ी ख़ुस्स् का मा'नी गुमराही में फिर ईमानवालों को मुस्तफ़ा किया। (फ़र्माया अल्लज़ीन आमनू) सूरह वस्त्राफ़ात में लाज़िब का मा'नी लाज़िम (या'नी चिमटती हुई लेसदार) सूरह वाक्रिया में अल्फ़ाज़ (व नुन्शिउकुम फ़ीमा ला तअलमून) या'नी जिस सूरत में मैं चाहूँ तुमको बना दूँ। (सूरह बक्रर: में) नस्बहु बि हम्दिका या'नी फ़रिश्तों ने कहा कि हम तेरी बड़ाई बयान करते हैं। अबुल आलिया ने कहा इसी सूरह में जो है फ़तललक़्ना आदम मिर् रब्बिही कलिमातिन वो कलिमे ये हैं। रब्बना

قال ابن عباس: ﴿لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ﴾: إِلَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ. ﴿فِي كِتَابٍ﴾: فِي شِدَّةِ خَلْقٍ. ﴿وَرِيَّاشًا﴾: الْمَالُ. وَقَالَ غَيْرُهُ: الرِّيَاشُ وَالرِّيشُ وَاحِدٌ وَهُوَ مَا ظَهَرَ مِنَ اللِّبَاسِ. ﴿مَا تَمْنُونُ﴾: النُّطْفَةُ فِي أَرْحَامِ النِّسَاءِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ﴾: النُّطْفَةُ فِي الْإِخْلِيلِ. كُلُّ شَيْءٍ حَلَقَهُ فَهُوَ «شَفَعٌ»: السَّمَاءُ شَفَعٌ. ﴿وَالْوَرَقُ﴾: اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ. ﴿فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ﴾: فِي أَحْسَنِ خَلْقٍ. ﴿أَسْفَلَ سَافِلِينَ﴾: إِلَّا مَنْ آمَنَ. ﴿خَسِرَ﴾: ضَلَّالٌ، ثُمَّ اسْتَشَى إِلَّا مَنْ آمَنَ. ﴿لَا رَبَّ﴾: لَا رَمَ. ﴿نَنشِكُمُ﴾: فِي أَيِّ خَلْقٍ نَشَاءُ. ﴿نَسْخُ بِحَمْدِكَ﴾: نَعْظُمُكَ. وَقَالَ أَبُو الْعَالِيَةِ: ﴿فَلَقَى آدَمَ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ﴾: فَهُوَ قَوْلُهُ: ﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا﴾. ﴿فَارْزُلْهُمَا﴾: فَاغْتَرِلْهُمَا. ﴿يَتَغَيَّرُ﴾: يَتَغَيَّرُ ﴿أَسِنَّ﴾: مُتَغَيِّرٌ. ﴿الْمَسْنُونُ﴾: الْمُتَغَيِّرُ. ﴿خَمَاءٌ﴾: جَمْعُ خَمَاءٍ وَهُوَ الطَّيْنُ الْمُتَغَيِّرُ. ﴿يَخْصِفَانِ﴾: أَخَذَ الْخِصَافُ ﴿مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ﴾ يُؤَلِّفَانِ الْوَرَقَ وَيَخْصِفَانِ بَعْضُهُ إِلَى بَعْضٍ. ﴿سَوَّاهُمَا﴾: كَيْفَاةً عَنْ فَرْجِهِمَا. ﴿وَمَتَّاعٌ إِلَى حِينٍ﴾: مَا هُنَا

ज़लमना अन्फुसाना इसी सूरह में फ़अज़ल्लहुमा का मा'नी या'नी उनको डिगा दिया फिसला दिया। (इसी सूरह में है) लम यतसन्नह या'नी बिगड़ा तक नहीं। इसी से (सूरह मुहम्मद में) लफ़ज़ आसिन है या'नी बिगड़ा हुआ (बदबूदार पानी) इसी से सूरह हिज़ में लफ़ज़ मसनून है। या'नी बदली हुई बदबूदार (इसी सूरह में) हमअ का लफ़ज़ है जो हमअतुन की जमा है या'नी बदबूदार की चड़ (सूरह आराफ़ में) लफ़ज़ यख़िसफ़ान के मा'नी या'नी दोनों आदम और हव्वा ने बहिश्त के पत्तों को जोड़ना शुरू कर दिया। एक पर एक रखकर अपना सतर छुपाने लगे। लफ़ज़ सवआतिहिमा से मुराद शर्मगाह हैं। लफ़ज़ मताइन इलाहीन में हीन से क्रयामत मुराद है, अरब लोग एक घड़ी से लेकर बेइंतिहा मुद्दत तक को हीन कहते हैं। कबीला से मुराद शैतान का गिरोह जिसमें वो खुद है।

إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، الْحَيْنَ عِنْدَ الْعَرَبِ : مِنْ سَاعَةٍ إِلَى مَا لَا يُخْصَى عَدْدُهُ. ﴿قَبِيلَةٌ﴾ جِيلُهُ الَّذِي هُوَ مِنْهُمْ.

हज़रत मुज्ताहिदे मुत्लक़ इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुताबिक़ कुआन शरीफ़ की मुख्तलिफ़ सूरतों के मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के मआनी यहाँ वाज़ेह फ़र्माए हैं। उन अल्फ़ाज़ का ज़िक्र ऐसे ऐसे मक़ामात पर आया है जहाँ किसी न किसी तरह से इस किताबुल अंबिया से मुता'ल्लिक़ किसी न किसी तरह से कुछ मज़ामीन बयान हुए हैं। यहाँ उन अक़ब़र सूरतों को ब्रेकेट में हमने बतला दिया है, वहाँ वो अल्फ़ाज़ तलाश करके आयाते सियाक़ व सिबाक़ से पूरे मतालिब को मा'लूम किया जा सकता है। इन तमाम आयतों और उनके मज़क़ूर बाला अल्फ़ाज़ की पूरी तफ़्सील तवालात (विस्तार) के डर से यहाँ छोड़ा गया है।

अल्लाह पाक ख़ैरियत के साथ इस पारे को भी पूरा कराए कि वो ही मालिक व मुख्तार है। अल् मरकूम बतारीख़ 15 शव्वाल 1391 हिजरी त्रिचनापल्ली बर मकान हाजी मुहम्मद इब्राहीम साहब अदामल्लाहु इब्बबालहुम आमीन।

3326. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह पाक ने आदम (अलै.) को पैदा किया तो उनको साठ हाथ लम्बा बनाया। फिर फ़र्माया कि जा और उन मलाइका को सलाम कर, देखना किन लफ़ज़ों में वो तुम्हारे सलाम का जवाब देते हैं क्योंकि वही तुम्हारा और तुम्हारी औलद का तरीक़-ए-सलाम होगा। आदम (अलै.) (गये और) कहा, अस्सलामु अलैयकुम फ़रिशतों ने जवाब दिया, व अस्सलामु अलैक़ व रहमतुल्लाह। उन्होंने व रहमतुल्लाह का जुम्ला बढ़ा दिया, पस जो कोई भी जन्नत में दाख़िल होगा वो आदम (अलै.) की शक्ल और क़ामत पर दाख़िल होगा, आदम (अलै.) के बाद

۳۳۲۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ وَطَوَّلَهُ سِتُونَ ذِرَاعًا، ثُمَّ قَالَ: اذْهَبْ فَسَلِّمْ عَلَى أَوْلِيكَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ فَاسْتَمِعَ مَا يُجِيبُونَكَ، تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ ذُرِّيَّتِكَ. فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ فَقَالُوا: السَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ. فَرَأَوْهُ: وَرَحْمَةُ اللَّهِ فَكُلُّ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ آدَمَ، فَلَمْ يَزَلْ

इंसानों में अब तक क्रुद छोटे होते रहे। (दीगर मक़ाम : 6227)

الْخَلْقُ يَنْقُصُ حَتَّى الْآنَ)).

[طرمه ي : ٦٢٢٧].

**तशरीह :** छोटे होते होते इस हद को पहुँच गये जिस हद पर ये उम्मत है। इब्ने कुतैबा ने कहा कि आदम बे रीश व बुरुव्वत थे, घुँघराले बाल और निहायत खूबसूरत थे। क्रस्तलानी (रह.) ने कहा बहिश्ती सब उन ही की सूरत पर और हुस्न व जमाल के साथ जन्नत में दाखिल होंगे और दुनिया में जो रंग की स्याही या बदसूरती है वो जाती रहेगी। या अल्लाह राक़िम (लेखक) को भी इसी सूरत जन्नत का दाखिला नज़ीब कीजियो और उन सब भाईयों मदों और औरतों को भी जो बुखारी शरीफ़ का ये मुक़ाम मुतालआ फ़र्माते वक़्त बा आवाज़े बुलन्द आमीन कहें।

3327. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अम्मारा ने उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे हज़रत अबू हुसैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे पहला ग़िरोह जो जन्नत में दाखिल होगा उनकी सूरतें ऐसी रोशन होंगी जैसे चौदहवीं का चौद रोशन होता है, फिर जो लोग उसके बाद दाखिल होंगे वो आसमान के सबसे ज़्यादा रोशन सितारे की तरह चमकते होंगे। न तो उन लोगों को पेशाब की ज़रूरत होगी न टट्टी की, न वो थूकेंगे न नाक से आलाइश निकालेंगे। उनके कंधे सोने के होंगे और उनका पसीना मुश्क की तरह होगा। उनकी अंगीठियों में खुशबूदार ऊद जलता होगा, ये निहायत पाकीज़ा खुशबूदार ऊद होगा। उनकी बीवियाँ बड़ी आँखों वाली हूँ होंगी। सबकी सूरतें एक होंगी या'नी अपने वालिद आदम (अलैहिस्सलाम) के क्रुद व क़ामत पर साठ-साठ हाथ ऊँचे होंगे। (राजेअ : 3245)

٣٣٢٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ عَمَارَةَ عَنْ أَبِي رَزَعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَيْتِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ عَلَى أَشَدِّ كَوَكَبٍ ذُرِّي فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً، لَا يَبُولُونَ وَلَا يَغْفُطُونَ وَلَا يَتَغَلَّطُونَ وَلَا يَمْتَسِحُّونَ، أَمْسَاطُهُمُ الذَّهَبُ وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ وَمَجَامِرُهُمُ الْإِلَاقُ، الْأَنْجُوحُ غُودُ الطَّيِّبِ، وَأَزْوَاجُهُمُ الْخُورُ الْعَيْنُ عَلَى خَلْقٍ وَجَلٍ وَاجِدٍ عَلَى صُورَةِ إِبْنِهِمْ آدَمَ سِتُونَ ذِرَاعًا فِي السَّمَاءِ)). [راجع : ٣٢٤٥]

बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है। ये हदीष ऊपर भी गुज़र चुकी है।

3328. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके बाप ने, उनसे ज़ैनब बिनते अबी सलमा ने, उनसे (उम्मुल मोमिनीन) उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला हक़ बात से नहीं शर्माता, तो क्या अगर औरत को एहतिलाम हो तो उस पर भी गुस्ल होगा? आपने फ़र्माया कि हौं बशर्त कि वो तरी देख ले, उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) को इस बात पर हंसी आ गई और फ़र्माने लगीं,

٣٣٢٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبِ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ: أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ، فَهَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ الْغُسْلُ إِذَا اخْتَلَمَتْ؟ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا رَأَتْ الْمَاءَ)). فَضَجَّكَتْ أُمُّ سَلَمَةَ فَقَالَتْ:



क्या औरत को भी एहतिला म होता है? आपने फ़र्माया, (अगर ऐसा नहीं है) तो फिर बच्चे में (माँ की) मुशाबिहत कहाँ से आती है। (राजेअ: 130)

3329. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मरवान फ़ज़ारी ने ख़बर दी। उन्हें हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) को जब रसूले करीम (ﷺ) के मदीना तशरीफ़ लाने की ख़बर मिली तो वो आपकी ख़िदमत में आए और कहा कि मैं आपसे तीन चीज़ों के बारे में पूछूँगा जिन्हें नबी के सिवा और कोई नहीं जानता। क़यामत की सबसे पहली अलामत क्या है? वो कौनसा खाना है जो सबसे पहले जन्नतियों को खाने के लिये दिया जाएगा? और किस चीज़ की वजह से बच्चा अपने बाप के मुशाबेह होता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिब्रईल (अलै.) ने अभी अभी मुझे आकर उसकी ख़बर दी है। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि मलायका में तो यही यहूदियों के दुश्मन हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत की सबसे पहली अलामत एक आग की मूरत में जाहिर होगी जो लोगों को मसिक से मसिब की तरफ़ हॉक ले जाएगी। सबसे पहला खाना जो अहले जन्नत की दा'वत के लिये पेश किया जाएगा, वो मछली की कलेजी पर जो टुकड़ा लटका रहता है वो होगा और बच्चे की मुशाबिहत का जहाँ तक ता'ल्लुक है तो जब मर्द औरत के करीब जाता है उस वज़त अगर मर्द की मनी पहल कर जाती है तो बच्चा उसी की शकल व मूरत पर होता है। अगर औरत की मनी पहल कर जाए तो फिर बच्चा औरत की शकल व मूरत पर होता है। (ये सुनकर) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बोल उठे, मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। फिर अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यहूद इतिहा की झूठी क़ौम है। अगर आपके दरयाफ्त करने से पहले मेरे इस्लाम कुबूल करने के बारे में उन्हें इल्म हो गया तो आप (ﷺ) के सामने मुझ पर हर तरह की तोहमतें धरनी शुरू कर देंगे। चुनौचे कुछ यहूदी आए और हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) घर के अंदर छुपकर बैठ गये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा तुम लोगों में अब्दुल्लाह बिन सलाम कौन साहब हैं? सारे यहूदी कहने लगे वो हममें से सबसे बड़े

تَخْلِمُ الْمَرْأَةُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((فَمَا يُشْبِهُ الْوَلَدُ؟)) [راجع: ١٣٠]

٣٣٢٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ عَنْ خَمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَلَغَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ مُقَدِّمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ، فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ ثَلَاثٍ لَا يَعْلَمُهُنَّ إِلَّا نَبِيٌّ، مَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ؟ وَمَا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ؟ وَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَنْزِعُ الْوَلَدُ إِلَى أَبِيهِ وَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَنْزِعُ إِلَى أُمِّهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَخْبَرَنِي بِهِنَّ آتِفَا جِبْرِيلُ)). قَالَ: فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: ذَلِكَ عَدُوُّ الْيَهُودِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ فَنَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ. وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَرِيَادَةُ كَبِدِ حُوتٍ. وَأَمَّا الشَّيْءُ فِي الْوَلَدِ فَإِنَّ الرَّجُلَ إِذَا عَشِيَ الْمَرْأَةَ فَسَبَقَهَا مَاءُهُ كَانَ الشَّيْءُ لَهُ، وَإِذَا سَبَقَ مَاءُهَا كَانَ الشَّيْءُ لَهَا)). قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ. ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ الْيَهُودَ قَوْمٌ بُهَتَ، إِنْ عَلِمُوا بِإِسْلَامِي قَبْلَ أَنْ تَسْأَلَهُمْ يَهْتَوِي عِنْدَكَ فَجَاءَتِ الْيَهُودُ، وَدَخَلَ عَبْدُ اللَّهِ الْيَمِينَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَيُّ

आलिम और सबसे बड़े आलिम के साहबजादे हैं। हममें सबसे ज्यादा बेहतर और हममें सबसे बेहतर के साहबजादे हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, अगर अब्दुल्लाह मुसलमान हो जाएँ तो फिर तुम्हारा क्या ख़याल होगा? उन्होंने कहा, अल्लाह तआला उन्हें उससे महफ़ूज़ रखे। इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बाहर तशरीफ़ लाए और कहा, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा और कोई इलाह नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अब वो सब उनके बारे में कहने लगे कि हममें से सबसे बदतरीन और सबसे बदतरीन का बेटा है, वहीं वो उनकी बुराई करने लगे। (दीगर मक़ाम : 3911, 3938, 4480)

رَجُلٍ لَيْكُم عِنْدَ اللَّهِ بَنُ سَلَامٍ؟ قَالُوا:  
أَعْلَمْنَا وَابْنُ أَعْلَمِنَا، وَأَخِيرُنَا وَابْنُ  
أَخِيرِنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
وَسَلَّمَ: ((أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ عِنْدَ اللَّهِ؟))  
قَالُوا: أَعَادَهُ اللَّهُ مِنْ ذَلِكَ. فَخَرَجَ عِنْدَ  
اللَّهِ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا  
اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ.  
فَقَالُوا: شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا. وَوَقَفُوا إِلَيْهِ)).  
[أطرافه في : 3911, 3938, 4480]

**तशरीह :** हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम यहूद के बड़े आलिम थे जो आँहज़रत (ﷺ) को देखकर फ़ौरन ही सदाक़ते-मुहम्मदी के क़ाइल हो गये और इस्लाम कुबूल कर लिया था। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू। ये जो कुछ लोग नक़ल करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन सलाम ने आँहज़रत (ﷺ) से हज़ार सवाल किये थे, ये ग़लत है इसी तरह हज़ार मसला का रिसाला भी मस़नूई (बनावटी) है। ता'ज़ुब है कि मुसलमान ऐसे झूठे रिसालों को पढ़ें और हदीष की सहीह किताबें न देखें। इसी तरह सुबह का सितारा, व क़ाइकुल अहबार और मुनहब्बहात और दलाइलुल ख़ैरात की अक़्बर रिवायतें मौजूद हैं।

आग से मुता'ल्लिक़ एक रिवायत यूँ है कि क़यामत उस वक़्त तक न आएगी जब तक हिजाज़ में एक ऐसी आग न निकले जिसकी रोशनी बस्रा के ऊँटों की गर्दनों को रोशन कर देगी। ये रिवायत सहीह मुस्लिम और हाकिम में है। इमाम नववी (रह.) इस हदीष की शरह में लिखते हैं कि ये आग हमारे ज़माने 654 हिजरी में मदीना में जाहिर हुई और ये आग इस क़दर बड़ी थी कि मदीना के पूर्वी छोर से लेकर पहाड़ी तक फैली हुई थी, इसका हाल शाम और तमाम शहरों में बतवातुर मा'लूम हुआ और हमसे उस शख्स ने बयान किया जो उस वक़्त मदीना में जमादिष़ प़ानी में मदीना में एक सख़्त धमाका हुआ, फिर बड़ा ज़लज़ला आया जो हर घड़ी बढ़ता रहा। यहाँ तक कि पाँचवीं तारीख़ को बहुत बड़ी आग पहाड़ी में क़ुरैज़ा के मुहल्ले के करीब नमूदार हुई, जिसको हम मदीना के अंदर अपने घरों से इस तरह देखते थे कि गोया वो हमारे करीब ही है। हम उसे देखने को चढ़े तो देखा कि पहाड़ आग बनकर बह रहे हैं और इधर उधर शोले बनकर जा रहे हैं। आग के शोले पहाड़ मा'लूम हो रहे थे। मुहल्लों के बराबर चिंगारियाँ उड़ रही थी। यहाँ तक कि ये आग मक्का मुक़र्रमा और सेहरा से भी नज़र आती थी, ये हालत एक माह से ज़्यादा रही। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा बहवाला अबू शाम्मा वाकिआत 654 हिजरी)

अल्लामा जहबी ने भी उस आग का ज़िक़्र किया है (मुख़्तसर तारीख़ुल इस्लाम ज़हबी, जिल्द : 2 / पेज नं. 121 हैदराबाद)। हाफ़िज़ सियूती लिखते हैं कि बहुत से लोगों से जो बस्रा में उस वक़्त मौजूद थे ये शहादत मन्कूल है कि उन्होंने रात को उसकी रोशनी में बस्रा के ऊँटों की गर्दनें देखीं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सियूती 654 हिजरी) ख़ुलासा अज़सीरुतुनबी, जिल्द 3 पेज नं. 712)

3330. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हममाम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया (अब्दुर्रज़ाक़ की) रिवायत की

۳۳۳۰- حَدَّثَنَا بَشَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ  
أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ  
هَمَامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ

तरह कि अगर क़ौमे बनी इस्राईल न होती तो गोश्त न सड़ा करता और अगर हव्वा न होती तो औरत अपने शौहर से दगा न करती।

النَّبِيُّ ﷺ نَحْوَهُ يَنْفِي ((أَوَّلَ لَا بَنَى إِسْرَائِيلَ لَمْ يَخْتَرْ اللَّحْمَ، وَلَوْلَا خَوَاءُ لَمْ تَخُنْ أَتَى زَوْجَهَا)).

**तरीह:** बनी इस्राईल को मन्न व सलवा बतौर इन्आमे इलाही मिला करता था और उन्हें उसके जमा करने की मुमानअत थी, मगर उन्होंने जमा करना शुरू कर दिया। सज़ा के तौर पर सलवा का गोश्त सड़ा दिया गया, उसी तरह हदीष शरीफ में इशारा है। इसी तरह सबसे पहले हज़रत हव्वा (अल्लैहिस्सलाम) ने शैतान की साज़िश से हज़रत आदम (अल्लैहि.) को जन्नत के पेड़ के खाने की तरगीब दिलाई थी। यही आदत उनकी औलाद में भी पैदा हो गई। ख़यानत से यही मुराद है। अब औरतों में आम बेवफ़ाई इसी फ़ितरत का नतीजा है। वो टेढ़ी पसली से पैदा हुई है, जैसा कि दर्ज ज़ेल हदीष में मज़कूर है।

3331. हमसे अबू कुरैब और मूसा बिन हिज़ाम ने बयान किया, कहा कि हमसे हुसैन बिन अली ने बयान किया, उनसे जायदा ने, उनसे मैसरह अश्जई ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, औरतों के बारे में मेरी वसियत का हमेशा ख़याल रखना, क्योंकि औरत पसली से पैदा की गई है। पसली में भी सबसे ज़्यादा टेढ़ा ऊपर का हिस्सा होता है। अगर कोई शख्स इसे बिलकुल सीधी करने की कोशिश करे तो अंजाम यह होगा कि टूट जाएगी और अगर उसे वो यूँ ही छोड़ देगा तो फिर हमेशा टेढ़ी ही रह जाएगी। पस औरतों के बारे में मेरी नज़ीहत मानो, औरतों से अच्छा मुलूक करो। (दीगर मक़ाम: 5184, 5186)

۳۳۳۱- حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ وَمُوسَى بْنُ حِزَامٍ قَالَا: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ زَائِدَةَ عَنْ مَيْسَرَةَ الْأَشْجَعِيِّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ، فَإِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ، وَإِنْ أَغْوَجَ شَيْءٌ فِي الضِّلَعِ أَغْلَاةٌ، فَإِنْ ذَعَبْتَ نَفْسَهُ كَسَرْتَهُ، وَإِنْ تَرَكَتَهُ لَمْ يَزَلْ أَغْوَجَ، فَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ)).

[طرفاء في: ۵۱۸۴، ۵۱۸۶].

3332. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मसज़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया और आप सच्चों के सच्चे थे कि इंसान की पैदाइश उसकी माँ के पेट में पहले चालीस दिन तक पूरी की जाती है। फिर वो उतने ही दिनों तक अलक्का या'नी ग़लीज़ और ज़ामिद ख़ून की सूरत में रहता है। फिर उतने ही दिनों के लिये मुज़्गा (गोश्त का लोथड़े) की शक्ल इख़ितयार कर लेता है। फिर (चौथे चिल्ला में) अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता को चार बातों का हुक्म देकर भेजता है। पस वो फ़रिश्ता उसके अमल, उसकी मुद्दे ज़िन्दगी, रोज़ी और ये कि वो नेक है या बद, को लिख लेता है। उसके बाद उसमें रूह फूँकी

۳۳۳۲- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَهَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ ((إِنْ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، ثُمَّ يَكُونُ عِلْقَةً مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَنْفُثُ اللَّهُ إِلَيْهِ مَلَكًا بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ: فَيَكْتُبُ عَمَلَهُ، وَأَجَلَهُ، وَرِزْقَهُ، وَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ. ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ

जाती है। पस इंसान (ज़िन्दगी भर) दो ज़खियों के काम करता रहता है और जब उसके और दो ज़ख के बीच सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तक्दीर सामने आती है और वो ज़न्नतियों के काम करने लगता है और जन्नत में चला जाता है। इसी तरह एक इंसान ज़न्नतियों के काम करता रहता है और जब उसके और जन्नत के बीच सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तक्दीर सामने आती है और वो जहन्नमियों के काम शुरू कर देता है और दो ज़ख में चला जाता है। (राजेअ : 3208)

الرُّوحُ. فَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّىٰ مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلَّا ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُ الْجَنَّةَ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّىٰ مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلَّا ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُ النَّارَ)).

[راجع: ٣٢٠٨]

3333. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबूदुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने माँ के रहम के लिये एक फ़रिश्ता मुक़रर कर दिया है वो फ़रिश्ता अर्ज़ करता है, ऐ रब! ये नुत्फ़ा है, ऐ रब! ये मुज़्गा है। ऐ रब! ये अल्का है। फिर जब अल्लाह तआला उसे पैदा करने का इरादा करता है तो फ़रिश्ता पूछता है, ऐ रब! ये मर्द है या ऐ रब! ये औरत है, ऐ रब! ये बंद है या नेक? उसकी रोज़ी क्या है? और मुद्दे ज़िन्दगी कितनी है? चुनाँचे उसी के मुताबिक़ माँ के पेट ही में सब कुछ फ़रिश्ता लिख लेता है। (राजेअ : 318)

٣٣٣٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ وَكَلَّ فِي الرَّحِمِ مَلَكًا يَقُولُ: يَا رَبُّ نُطْفَةٌ، يَا رَبُّ عُلَقَةٌ، يَا رَبُّ مُضْغَةٌ. فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْلُقَهَا قَالَ: يَا رَبُّ أَذْكَرٌ أَمْ أُنْثَى؟ يَا رَبُّ أَشَقِيٌّ أَمْ سَعِيدٌ؟ لِمَا الرُّزْقُ؟ لِمَا الْأَجَلُ؟ فَيَكْتُبُ كَذَلِكَ فِي بَطْنِ أُمِّهِ)).

[راجع: ٣١٨]

बच्चा अपनी उसी फ़ितरत पर पैदा होता है और धीरे-धीरे नविशत-ए-तक्दीर उसके सामने आता रहता है।

3334. हमसे क़ैस बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष् ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इमरान जवनी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि अल्लाह तआला (क़यामत के दिन) उस शख्स से पूछेगा जिसे दो ज़ख का सबसे हल्का अज़ाब किया गया होगा। अगर दुनिया में तुम्हारी कोई चीज़ होती तो क्या तू इस अज़ाब से नजात पाने के लिये उसे बदले में दे सकता था? वो शख्स कहेगा कि जी हाँ उस पर अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि जब तू आदम की पीठ में था तो मैंने तुझसे उससे भी मा'मूली चीज़ का मुतालबा किया था। (रोज़े अज़ल में) कि मेरा किसी को भी शरीक न

٣٣٣٤- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ أَنَسٍ يَرْفَعُهُ: ((إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ لَأَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا: لَوْ أَنَّ لَكَ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ كُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَقَدْ سَأَلْتُكَ مَا هُوَ أَهْوَنُ مِنْ هَذَا وَأَنْتَ فِي صُلْبِ آدَمَ: إِنَّ لَا تُشْرِكُ بِي، فَأَيُّتِ إِلَّا الشُّرْكَ)).

ठहराना, लेकिन (जब तू दुनिया में आया तो) उसी शिर्क का  
अमल इख्तियार किया। (दीगर मक़ाम : 6538, 6557)

[طرفه ن : ٦٥٥٧, ٦٥٣٨]

**तशरीह :** तमाम अंबिया व रसूल (अलै.) का अव्वलीन पैग़ाम यही रहा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया जाए, तमाम आसमानी किताबें इस मसला पर इतिफ़ाक़े कामिल रखती हैं। कुर्आन मजीद की बहुत सी आयतों में शिर्क की तर्दीद बड़े वाज़ेह और मुदल्लल अल्फ़ाज़ में मौजूद है जिनको नक़ल किया जाए तो एक दफ़्तर तैयार हो जाएगा। मगर स़द अफ़सोस कि दूसरी उम्मतों की तरह बहुत से नादान मुसलमानों को भी शैतान ने गुमराह कर के शिर्क में गिरफ़्तार करा दिया। अक़ीदत व मुहब्बत बुजुर्ग़ान के नाम से उनको धोखा दिया और वो भी मुश्रिकीने मक्का की तरह यही कहने लगे, मान अब्दुदुहम इल्ला लियुकरिबूना इलल्लाहि जुल्फ़ा (अज़्ज़ुमर : 3) हम उन बुजुर्ग़ों को सिर्फ़ इसीलिये मानते हैं कि ये हमको अल्लाह के नज़दीक पहुँचा दें, ये हमारे वसीले हैं जिनके पूजने से अल्लाह मिलता है। ये शैतान का वो फ़रेब है जो हमेशा मुश्रिक क़ौमों के लिये ज़लालत व गुमराही का सबब बना है। आज बहुत से बुजुर्ग़ों के मज़ारों पर नादान मुसलमान वो सब हरकतें करते हैं जो एक बुतपरस्त बुत के सामने करता है। उठते बैठते उनका नाम लेते हैं, इमदाद के लिये उनकी दुहाई देते हैं। या ग़ौ़ष या अली वग़ैरह उनके वज़ाइफ़ बने हुए हैं। जहाँ तक कुर्आन और सुन्नत की तशरीहत हैं ऐसे लोग खुले शिर्क के मुर्तकिब हैं और मुश्रिकीन के लिये अल्लाह ने जन्नत को हुराम कर दिया है। अक़ीद-ए-तौहीद जो इस्लाम ने पेश किया है, वो हर्गिज़ उन ख़ुराफ़ात के लिये जवाज़ का दर्जा नहीं देता। अल्लाह पाक ऐसे नामों-निहाद मुसलमानों को हिदायत बख़शे। आमीन।

3335. हमसे इमर बिन हफ़्स बिन ग़ियाथ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुरह ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब भी कोई इंसान जुल्म से क़त्ल किया जाता है तो आदम (अलै.) के सबसे पहले बेटे (क्राबील) के नाम-ए-आमाल में भी उस क़त्ल का गुनाह लिखा जाता है क्योंकि क़त्ले नाहक़ की बिना सबसे पहले उसीने क़ायम की थी। (दीगर मक़ाम : 6867, 7321)

٣٣٣٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَفْصٍ بْنِ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَرْثُةٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَقْتُلْ نَفْسَ ظُلْمًا إِلَّا كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الْأَوَّلِ كَيْفَلٌ مِنْ ذِمَّتِهَا، لِأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ سَنَّ الْقَتْلَ)).

[طرفه ن : ٦٨١٧, ٧٣٢١]

**तशरीह :** इंसान का ख़ूने नाहक़ तमाम अंबिया की शरीअतों में संगीन जुर्म क़रार दिया गया है। इंसान किसी भी क़ौम, मज़हब, नस्ल से ता'ल्लुक रखता हो उसका नाहक़ क़त्ल हर शरीअत में ख़ास तौर पर शरीअते इस्लामी में गुनाह कबीरा बतलाया गया है। तअज़ुब है उन मुआनिदीने इस्लाम पर जो वाज़ेह तशरीहत के होते हुए इस्लाम पर नाहक़ ख़ूँरजी का इल्ज़ाम लगाते हैं। अगर कोई मुसलमान इफ़ि़रादी या इज्तिमाई तौर पर ये जुर्म करता है तो वे ख़ुद उसका ज़िम्मेदार हैं। इस्लाम की निगाह में वो सख़्त मुजरिम है। चूँकि क़ाबील ने उस जुर्म का रास्ता अव्वलीन तौर पर इख्तियार किया, अब जो भी ये रास्ता इख्तियार करेगा उसका गुनाह क़ाबील पर भी बराबर डाला जाएगा हर नेकी और बदी के लिये यही उसूल है।

बाब 2 : रूहों के जत्थे हैं झुण्ड के झुण्ड

3336. इमाम बुखारी ने कहा कि लैष बिन स़अद ने रिवायत किया यह्या बिन सईद अंसारी से, उनसे अम्प ने, और उनसे हज़रत

٢- بَابُ الْأَرْوَاحِ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ

٣٣٣٦- قَالَ: وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ

आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि रूहों के झुण्ड के झुण्ड अलग अलग थे। फिर वहाँ जिन रूहों में आपस में पहचान थी उनमें यहाँ भी मुहब्बत होती है और जो वहाँ ग़ैर थीं यहाँ भी वो ख़िलाफ़ रहती हैं और यहाँ बिन अय्यूब ने भी इस हदीष को ख़िायात किया, कहा मुझसे यहाँ बिन सईद ने बयान किया, आख़िर तक।

عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْأَرْوَاحُ خُودٌ مُّجْتَنِدَةٌ، لَمَّا تَعَارَفَ مِنْهَا اِتْتَلَفَ، وَمَا تَنَافَرَ مِنْهَا اِخْتَلَفَ)). وَقَالَ يَحْيَى بْنُ أَبِي أُيُوبَ: حَدَّثَنِي يَعْقَى بْنُ سُوَيْدٍ بِهَذَا.

**तशरीह:** किताबुल अंबिया के शुरू में हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र हुआ। इस सिलसिले में मुनासिब था कि आदमियत के कुछ नेक व बद ख़साइल, उसकी फ़ितरत पर रोशनी डाली जाए, ताकि आदमी की फ़ितरत पढ़ने वालों के सामने आ सके। इसलिये हज़रत इमाम (रह.) इन अह्दादीषे मज़कूर को यहाँ लाए।

अब हदीष आदम (अलैहिस्सलाम) के बाद हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र ख़ैर शुरू होता है जिनको कुआन में अब्दे-शकूर के नाम से पुकारा गया है, आप रिक़ते क़ल्ब से बक़रत रोया करते थे, इसीलिये लफ़्ज़े नूह से मशहूर हो गये वल्लाहु आलम।

रूहें आलमे अज़ल में लशक़रों की तरह एकजा थीं जिन रूहों में वहाँ बाहमी तज़ारुफ़ (आपसी परिचय) हो गया उनसे दुनिया में भी किसी न किसी दिन मिलाप हो ही जाता है और जिनमें बाहमी तज़ारुफ़ न हो सका वो दुनिया में भी बाहमी तौर पर मेल नहीं खाती हैं। उसके तहत मुहतरम मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने शरहे वहीदी में एक मुफ़स्सल नोट तहरीर फ़र्माया है जो क़ारेईने किराम के लिये दिलचस्पी का मोजिब होगा। मौलाना फ़र्माते हैं:—

बग़ैर मुनासिबे रूहानी के मुहब्बत हो ही नहीं सकती, एक बुजुर्ग का क़ौल है अगर मोमिन ऐसी मज्लिस में जाए जहाँ सौ मुनाफ़िक़ बैठे हुए और एक मोमिन हो तो वो मोमिन ही के पास बैठेगा और अगर मुनाफ़िक़ उसी मज्लिस में जाए जहाँ सौ मोमिन हों और एक मुनाफ़िक़ हो तो उसकी तसल्ली मुनाफ़िक़ ही के पास बैठने से होगी। इसी मज़मून में एक शायर ने कहा कुन्द हम जिन्स बहाम जिन्स परवाज़ कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़, (वहीदी)

दिली दोस्ती जो ख़ालिफ़ अल्लाह के लिये बिला गर्ज़ होती है बग़ैर इत्तिहादे रूहानी के नहीं हो सकती। एक बिदअती कभी किसी मुवह्हिद मुतबअे-सुन्नत का दोस्त और उसी तरह सख़्त किस्म का मुकल्लिद अहले हदीष का ख़ैरख़्वाह नहीं हो सकता एक मजलिस में इत्तिफ़ाक़ से एक मौलवी ग़ाहब जो ज़हमिया के हम मशरब हैं मुझसे मिले और एक बेअमल जाहिल शख़्स से कहने लगे हममें और तुममें अल्अर्वाहु जुनुदुन मुजन्नदतुन इसी हदीष की रू से इत्तिहाद है मैंने उनका दिल लेने को कहा क्या आपके साथ ये इत्तिहाद नहीं है? उन्होंने कहा नहीं। मुझको उनकी सच्चाई पर ता'जुब हुआ। वाक़ई जहमी और अहले हदीष में किसी तरह इत्तिहाद नहीं हो सकता। जिस दिन से ये सहीह बुख़ारी मुतर्जम छपना शुरू हुई है क्या कहूँ कुछ लोगों के दिल पर सांप लौटता है और हदीष की किताब इस इम्दगी के साथ तबअ होने से देखकर आप ही आप जले मरते हैं। इत्तिहाद और इख़िलाफ़े रूहानी का अषर इसी से मा'लूम कर लेना चाहिये हालाँकि इस्लाम का दा'वा करते हैं मगर हदीष शरीफ़ की इशाअत नापसन्द करते हैं और नावीज़ मुतर्जिम पर झूठे इतिहाम धरकर ये चाहते हैं कि किसी तरह ये तर्जुमा अधूरा रह जाए। वल्लाहु मुतिप्पु नूरिही वलौ करिहल्काफ़िरून (अस्सफ़ : 8) (वहीदी)

हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने अपने ज़माने के हासिदों का ये हाल लिखा है। मगर आजकल भी मामला तक्रीबन ऐसा ही है। जो नावीज़ (मुहम्मद दाऊद राज़) के सामने आ रहा है। कितने हासिदीन इशाअते बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू का अज़ीम काम देखकर हसद की आग में जले जा रहे हैं। अल्लाह पाक उनके हसद से महफूज़ रखे और इस ख़िदमत को पूरा कराए। आमीन।

बाब 3 : हज़रत नूह (अलै.) का बयान में

۳- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ :

سُورَةُ هُودٍ مِنْ أَلْفَاظِ تَأْوِيلِهَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ، وَأَمَّا هُودُ (أَلَيْ.) كَوْنَهُ [هُود ٢٥]

को उनकी क्रौम के पास अपना रसूल बनाकर भेजा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (कुर्आन मजीद की उसी सूरह हूद में) बादियरायि के बारे में कहा कि वो चीज़ हमारे सामने ज़ाहिर हो। अक़लई या'नी रोक ले ठहर जा व फारसतन्नरू या'नी पानी उस तन्नूर में से उबल पड़ा और इक्स्मा ने कहा कि (तन्नूर बमा'नी) सतहे ज़मीन के है और मुजाहिद ने कहा कि अलजूदी जज़ीरा का एक पहाड़ है। दजला फ़रात के बीच में और सूरह मोमिन में लफ़ज़ दाब बमा'नी हाल है।

बाब 4 : सूरह नूह में अल्लाह का ये फ़र्माणा। हमने नूह को उसकी क्रौम की तरफ़ भेजा। उससे कहा कि अपनी क्रौम को तकलीफ़ का अज़ाब आने से पहले डरा। आख़िर सूरह तक और सूरह यूनस में फ़र्माणा, ऐ रसूल! नूह की ख़बर उन पर तिलावत कर, जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा था कि ऐ क्रौम! अगर मेरा यहाँ ठहरना और अल्लाह तआला की आयात को तुम्हारे सामने बयान करना तुम्हें ज़्यादा नागवार गुज़रता है। अल्लाह तआला के इश्राद मिनल् मुस्लिमीन तक।

3337. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने, उन्हें जुहरी ने कि सालिम ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों में खुत्बा सुनाने खड़े हुए। पहले अल्लाह तआला की, उसकी शान के मुताबिक़ घना बयान की, फिर दज्जाल का ज़िक्र फ़र्माया, और फ़र्माया कि मैं तुम्हें दज्जाल के फ़ित्ने से डराता हूँ और कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क्रौम को उससे न डराया हो। नूह (अलै.) ने अपनी क्रौम को उससे डराया था। लेकिन मैं तुम्हें उसके बारे में एक ऐसी बात बताता हूँ जो किसी नबी ने भी अपनी क्रौम को नहीं बताई थी, तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि दज्जाल काना होगा, और अल्लाह तआला इस ऐब से पाक है। (राजेअ: 3057)

3338. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, हमसे शैबान ने बयान

﴿قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: «بَادِي الرَّأْيِ»: مَا ظَهَرَ لَنَا. «أَقْلَعِي»: أَمْسِكِي. «وَقَارَ السُّورُ»: نَبَعَ الْمَاءُ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: وَجْهَ الْأَرْضِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: «الْجُودِي»: جَبَلٌ بِالْجَزِيرَةِ. «ذَابَ»: مِثْلُ خَالٍ.

٤- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ إِلَىٰ آخِرِ السُّورَةِ [نوح: ١-٢٨].

﴿وَأَنذِرْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذِكْرِي بآيَاتِ اللَّهِ - إِلَىٰ قَوْلِهِ - مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

٣٣٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَالِمٌ: وَقَالَ ابْنُ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَفْلَهُ، ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَالَ فَقَالَ: «إِنِّي لَا أُبْلِرُكُمْوه، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ لَا أَنْذَرُهُ قَوْمَهُ، لَقَدْ أَنْذَرَ نُوحٌ قَوْمَهُ، وَلَكِنِّي أَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلًا لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ: تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَغْوَرٌ، وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِأَغْوَرٍ».

[راجع: ٣٠٥٧]

٣٣٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ

किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्यूँ न मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में एक ऐसी बात बता दूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वो काना होगा और जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लाएगा। पस जिसे वो जन्नत कहेगा दरह क़ीक़त वही जहन्नम होगी और मैं तुम्हें उसके फ़िल्ने से इसी तरह डराता हूँ, जैसे नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम को डराया था। (राजेज़: 3057)

**तशरीह:**

अल्लाह पाक अपने बन्दों को आजमाने के लिये दज्जाल को पहले कुछ कामों की ताक़त दे देगा फिर बाद में उसकी आज़िज़ी ज़ाहिर कर देगा, ऐसी सूत खुद बता देगी कि वो अल्लाह नहीं है। अह्दाय में नूह (अलै.) का ज़िक्र आया है बाब से यही मुनासबत है।

3339. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू सलामे ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) नूह (अलै.) बारगाहे इलाही में हाज़िर होंगे। अल्लाह तआला दरयाफ़्त करेगा, क्या (मेरा पैग़ाम) तुमने पहुँचा दिया था? नूह (अलै.) अर्ज़ करेंगे मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, ऐ रब्बुल इज़्जत! अब अल्लाह तआला उनकी उम्मत से पूछेगा, क्या (नूह अलै. ने) ने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो जवाब देंगे नहीं, हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया। इस पर अल्लाह तआला नूह (अलै.) से पूछेगा, इसके लिये आपकी तरफ़ से कोई गवाही भी दे सकता है? वो अर्ज़ करेंगे कि मुहम्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत (के लोग मेरे गवाह हैं) चुनौचे हम उस बात की शहादत देंगे कि नूह (अलै.) ने पैग़ामे अल्लाह अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था और यही मफ़हूम अल्लाह जल्ला ज़िक्रू हू के इस इश़ाद का है कि, और इसी तरह हमने तुम्हें उम्मते वस्त बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाही दो और वस्त के मा'नी दरम्यानी के हैं। (दीगर मक़ाम: 4487, 7349)

3340. मुझसे इस्हाक़ बिन नसर ने बयान किया, हमसे मुहम्मद बिन इब्बैद ने बयान किया, हमसे अबू ह्ययान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)

يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَلَا أُخَذْتُكُمْ حَدِيثًا عَنِ الدَّجَالِ مَا حَدَّثَ بِهِ نَبِيٌّ قَوْمَهُ: إِنَّهُ أَعْوَرٌ، وَإِنَّهُ يَجِيءُ مَعَ بَعْثِ الْخَنَازِيرِ وَالنَّارِ، فَأَنَّى يَقُولُ إِنَّهَا الْخَنَازِيرُ مِنَ النَّارِ، وَإِنِّي أَنْذِرُكُمْ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ)). [راجع: ٣٠٥٧]

٣٣٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجِيءُ نُوحٌ وَأُمَّتُهُ. فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: هَلْ بَلَغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيُّ رَبِّ. فَيَقُولُ لِأُمَّتِهِ: هَلْ بَلَغْتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: لَا، مَا جَاءَنَا مِنْ نَبِيٍّ. فَيَقُولُ لِنُوحٍ مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ ﷺ وَأُمَّتُهُ. فَنَشْهَدُ أَنَّهُ قَدْ بَلَغَ، وَهُوَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [البقرة: ١٤٣] وَالْوَسَطُ الْعَدْلُ.

[طرمه: ٤٤٨٧، ٧٣٤٩].

٣٣٤٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَيْتٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:



ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक दा'वत में शरीक थे। आप (ﷺ) की खिदमत में बाजू का गोश्त पेश किया गया जो आपको बहुत पसन्द था। आपने उस दस्त की हड्डी का गोश्त दांतों से निकालकर खाया। फिर फ़र्माया कि मैं क़यामत के दिन लोगों का सरदार होऊँगा। तुम्हें मा'लूम है कि किस तरह अल्लाह तआला (क़यामत के दिन) तमाम मख़लूक को एक चटियल मैदान में जमा करेगा? इस तरह कि देखने वाला सबको एक साथ देख सकेगा। आवाज़ देने वाले की आवाज़ हर जगह सुनी जा सकेगी और सूरज बिलकुल करीब हो जाएगा। एक शख्स अपने करीब के दूसरे शख्स से कहेगा, देखते नहीं कि सब लोग कैसी परेशानी में मुब्तला हैं? और मुसीबत किस हद तक पहुँच चुकी है? क्यों न किसी ऐसे शख्स की तलाश की जाए जो अल्लाह पाक की बारगाह में हम सबकी शिफ़ाअत के लिये जाए। कुछ लोगों का मश्वरा होगा कि दादा आदम (अलै.) उसके लिये मुनासिब हैं। चुनाँचे लोग उनकी खिदमत में हाज़िर होंगे और अर्ज़ करेंगे, ऐ बाबा आदम! आप इंसानों के दादा हैं। अल्लाह पाक ने आपको अपने हाथ से पैदा किया था, अपनी रूह आपके अंदर फूँकी थी, मलाइका को हुक्म दिया था और उन्होंने आपको सज्दा किया था और जन्नत में आपको (पैदा करने के बाद) ठहराया था, आप अपने रब के हुज़ूर में हमारी शिफ़ाअत कर दें। आप खुद मुलाहिज़ा फ़र्मा सकते हैं कि हम किस दर्जा उलझन और परेशानी में मुब्तला हैं। वो फ़र्माएँगे कि (गुनाहगारों पर) अल्लाह तआला आज इस दर्जा ग़ज़बनाक है कि कभी इतना ग़ज़बनाक नहीं हुआ था और न आइन्दा कभी होगा और मुझे पहले ही पेड़ (जन्नत) के खाने से मना कर चुका था लेकिन मैं इस फ़र्मान को बजा लाने में कोताही कर गया। आज तो मुझे अपनी ही पड़ी है। (नफ़्सी-नफ़्सी) तुम लोग किसी और के पास जाओ। हाँ, नूह (अलै.) के पास जाओ। चुनाँचे सब लोग नूह (अलै.) की खिदमत में हाज़िर होंगे और अर्ज़ करेंगे, ऐ नूह (अलै.)! आप (आदम अलै. के बाद) रूएज़मीन पर सबसे पहले नबी हैं और अल्लाह तआला ने आपको अब्दे शकूर कहकर पुकारा है। आप मुलाहिज़ा फ़र्मा सकते हैं कि आज हम कैसी मुसीबत व परेशानी में मुब्तला हैं?

«كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ذَغْوَةٍ، فَرُفِعَتْ إِلَيْهِ الذَّرَاغُ - وَكَانَتْ تُغَجِّبُهُ. فَهَسَّ مِنْهَا نَفْسَةً وَقَالَ: «أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. هَلْ تَنْزَوْنَ بِمَنْ يَجْمَعُ اللَّهُ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَيَنْصُرُهُمُ النَّاطِرُ، وَيَسْمَعُهُمُ الدَّاعِي، وَتَذْنُو مِنْهُمْ الشَّمْسُ، فَيَقُولُ بَعْضُ النَّاسِ: أَلَا تَرَوْنَ إِلَى مَا أَنْتُمْ فِيهِ، إِلَى مَا بَلَعَكُمْ؟ أَلَا تَنْظُرُونَ إِلَى مَنْ يَشْفَعُ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ؟» فَيَقُولُ بَعْضُ النَّاسِ: أَبُوكُمْ آدَمُ: فَيَاثُونَ فَيَقُولُونَ يَا آدَمُ أَنْتَ أَبُو الْبَشَرِ، خَلَقَكَ اللَّهُ يَدَيْهِ، وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ، وَأَمَرَ الْمَلَائِكَةَ فَسَجَدُوا لَكَ، وَأَسْأَلُكَ الْخَلَّةَ: أَلَا تَشْفَعُ لَنَا إِلَى رَبِّكَ؟ أَلَا تَرَى مَا نَحْنُ فِيهِ وَمَا بَلَعْنَا؟ فَيَقُولُ: رَبِّي غَضِبَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَا يَغْضَبُ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَنَهَانِي عَنِ الشَّجَرَةِ فَفَضَيْتُ: نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِهِ، اذْهَبُوا إِلَى نُوحٍ. فَيَاثُونَ نُوحًا فَيَقُولُونَ: يَا نُوحُ أَنْتَ أَوَّلُ الرُّسُلِ إِلَى أَهْلِ الْأَرْضِ، وَسَمَّاكَ اللَّهُ عَبْدًا شَكُورًا. أَمَا تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ أَلَا تَرَى إِلَى مَا بَلَعْنَا؟ أَلَا تَشْفَعُ لَنَا إِلَى رَبِّكَ؟ فَيَقُولُ: رَبِّي غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَا يَغْضَبُ بَعْدَهُ مِثْلَهُ. نَفْسِي نَفْسِي، اتُّوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَيَاثُونَ، فَاتَّخَذَ تَحْتَ الْعُرْسِ، فَيَقَالُ: يَا

आप अपने रब के हज़ूर में हमारी शिफ़ाअत कर दीजिए। वो भी यही जवाब देंगे कि मेरा रब आज इस दर्जा ग़ज़बनाक है कि उससे पहले कभी ऐसा ग़ज़बनाक नहीं हुआ था और न कभी उसके बाद इतना ग़ज़बनाक होगा। आज तो मुझे खुद अपनी ही फ़िक्र है। (नफ़्सी-नफ़्सी) तुम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जाओ। चुनौचे वो लोग मेरे पास आएँगे। मैं (उनकी शिफ़ाअत के लिये) अर्श के नीचे सज्दे में गिर पड़ूँगा। फिर आवाज़ आएगी, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाओ और शिफ़ाअत करो, तुम्हारी शिफ़ाअत कुबूल की जाएगी। मांगो तुम्हें दिया जाएगा। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि सारी हदीस में याद न रख सका। (दीगर मक़ाम : 2261, 4712)

3341. हमसे नज़र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू अहमद ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अस्वद बिन यज़ीद ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (आयत) फ़हल मिम मुदकिर मशहूर क़िरअत के मुताबिक़ (इदग़ाम के साथ) तिलावत फ़र्माई थी। (दीगर मक़ाम : 3345, 3376, 4869, 4870, 4871, 4872, 4873)

**तशरीह :** कुछ ने मुज़कर ज़ाल के साथ पढ़ा है। चूँकि इस रिवायत में हज़रत नूह (अलै.) का ज़िक्र है इसलिये इस हदीस को यहाँ लाया गया है। हज़रत आदम (अलै.) के बाद हज़रत नूह (अलै.) बहुत अज़ीम रसूल गुजरे हैं। कुआन मजीद में उनका बयान कई जगह आया है। (सल्लल्लाहु अलैहिम अज्मईन)

#### बाब 4 : इल्यास (अलैहिस्सलाम) का बयान

सूरह साफ़फ़ात में अल्लाह तआला ने फ़र्माया और बेशक इल्यास रसूलों में से थे। जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम (अल्लाह को छोड़कर बुतों की इबादत करने से) डरते क्यों नहीं हो? तुम बअल (बुत) की तो इबादत करते हो और सबसे अच्छे पैदा करने वाले की इबादत को छोड़ते हो। अल्लाह ही तुम्हारा रब है और तुम्हारे बाप दादाओं का भी। लेकिन उनकी क़ौम ने उन्हें झुठलाया। पस बेशक वो सब लोग (अज़ाब के लिये) हाज़िर किये जाएँगे। सिवाए अल्लाह के बन्दों के जो मुख़िल्ल थे और मैंने बाद में आन

مُحَمَّدُ ارْفَعَ رَأْسَكَ، وَاشْفَعْ تَنْفَعُ،  
وَسَلْ نَفْطَةً. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ : لَا  
أَحْفَظُ سَائِرَهُ.

[طرفاه : 3361, 4712].

۳۳۴۱- حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ بْنُ نَصْرٍ  
أَخْبَرَنَا أَبُو أَحْمَدَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي  
إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَرَأَ  
: ﴿فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ﴾ فَقَالَ قِرَاءَةُ الْعَامَّةِ)).

[أطرافه : 3345, 3376, 4869, 4870, 4871, 4872, 4873]

۴۸۷۰ ۴۸۷۱ ۴۸۷۲ ۴۸۷۳

#### باب ۴ -

﴿وَإِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ الْكَافِرُ السَّغِيرُ، إِذْ قَالَ  
لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ أَتَدْعُونَ بَغْلًا وَتَذُورُونَ  
أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ  
الْأَوَّلِينَ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ إِلَّا  
عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ وَتَوَكَّلْنَا عَلَيْهِ فِى  
الْآخِرِينَ﴾ [الصافات : ۲۳] قَالَ ابْنُ  
عَبَّاسٍ : يُذَكَّرُ بِخَيْرٍ. ﴿سَلَامٌ عَلَى آلِ

वाली उम्मतों में उनका जिक्रे खैर छोड़ा है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने तरकना अलैहि फिल आखरीन के बारे में कहा कि भलाई के साथ उन्हें याद किया जाता रहेगा। सलामती हो इल्यासीन पर, बेशक मैं इसी तरह मुख़िलसीन को बदला देता हूँ। बेशक वो मेरे मुख़िलस बन्दों में से था। इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि इल्यास, इदरीस (अलै.) का नाम था।

**तशरीह:** ये इल्यास बिन यासीन बिन हारून थे। हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद भेजे गये थे। कुछ के नज़दीक इल्यास से हज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम) ही मुराद हैं। मगर इमाम बुखारी (रह.) ने इसको सहीह नहीं समझा, इसलिये हज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम) के लिये नीचे का बाब अलग बाँधा है।

### बाब 5 : हज़रत इदरीस (अलै.) का बयान

#### हज़रत नूह (अलै.) के वालिद के दादा थे

और ये भी कहा गया है कि खुद नूह (अलै.) के दादा थे और अल्लाह तआला का फ़र्माना कि, और मैंने उनको बुलन्द मकान (आसमान) पर उठा लिया था।

3342. अब्दान ने कहा कि हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी और उन्हें जुहरी ने, (दूसरी सनद) और हमसे अहमद बिन सलालेह ने बयान किया, कहा हमसे अम्बसाने, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू ज़र (रज़ि.) बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे घर की छत खोली गई। मेरा क़याम उन दिनों मक्का में था। फिर जिब्रईल (अलै.) उतरे और मेरा सीना चाक किया और उसे ज़मज़म के पानी से धोया। उसके बाद सोने का एक तश्त लाए जो हिकमत और ईमान से लबरेज़ था, उसे मेरे सीने में उण्डेल दिया। फिर मेरा हाथ पकड़कर आसमान की तरफ़ लेकर चले, जब आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो जिब्रईल (अलै.) ने आसमान के दारोशा से कहा कि दरवाज़ा खोलो, पूछा कि कौन साहब है? उन्होंने जवाब दिया कि मैं जिब्रईल, फिर पूछा कि आपके साथ कोई और साहब भी हैं? जवाब दिया कि मेरे साथ मुहम्मद (ﷺ) हैं, पूछा कि उन्हें लाने के लिये आपको भेजा गया था। जवाब दिया कि हाँ, अब दरवाज़ा खुला, जब हम आसमान पर पहुँचे तो वहाँ एक बुजुर्ग से मुलाक़ात हुई, कुछ इंसानी रूहें

يَاسِينَ، إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ، إِنَّا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿الصلوات: ١٣٠﴾. يُذَكَّرُ عَنْ ابْنِ مَسْعُودٍ وَابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ إِلْيَاسَ هُوَ إِدْرِيسُ.

٥- بَابُ ذِكْرِ إِدْرِيسَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَهُوَ جَدُّ أَبِي نُوحٍ، وَيُقَالُ جَدُّ نُوحٍ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا﴾ ٣٣٤٢- قَالَ عَبْدَانُ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ خَدِيجٍ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ أَنَسُ: كَانَ أَبُو ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَوْ أَنَّ عَنْ سَقْفِ بَيْتِي وَأَنَا بِمَكَّةَ، لَنَزَلَ جِبْرِيلُ فَفَرَجَ صَدْرِي، ثُمَّ غَسَلَهُ بِمَاءٍ زَمْزَمَ، ثُمَّ جَاءَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مُمْتَلِئٍ حِكْمَةً وَإِيمَانًا فَأَلْقَاهَا فِي صَدْرِي ثُمَّ أَطْبَقَهُ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَفَرَجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ، فَلَمَّا جَاءَ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا قَالَ جِبْرِيلُ لِحَازِنِ السَّمَاءِ: أَلْفَحْ. قَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا جِبْرِيلُ، قَالَ: مَعَكَ أَحَدٌ؟ قَالَ: مَعِيَ مُحَمَّدٌ، قَالَ: أَرْسِلْ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَالْتَحَ فَلَمَّا عَلَوْنَا السَّمَاءَ إِذَا رَجُلٌ عَنْ يَمِينِهِ أَسْوَدَةٌ وَعَنْ

उनके दाएँ जानिब थी और कुछ बाएँ जानिब, जब वो दाएँ तरफ देखते तो हंस देते और जब बाएँ तरफ देखते तो रो पड़ते। उन्होंने कहा खुश आमदीद, नेक नबी नेक बेटे! मैंने पूछा, जिब्रईल (अलै.)! ये साहब कौन बुजुर्ग हैं? तो उन्होंने बताया कि ये आदम (अलै.) हैं और ये इंसानी रूहें उनके दाएँ और बाएँ तरफ थीं उनकी औलाद बनी आदम की रूहें थीं उनके जो दाएँ तरफ थीं वो जन्नती थीं और जो बाएँ तरफ थीं वो जहन्नमी थीं, इसीलिये जब वो दाएँ तरफ देखते तो मुस्कराते और जब बाएँ तरफ देखते तो रोते थे। फिर जिब्रईल (अलै.) मुझे ऊपर लेकर चढ़े और दूसरे आसमान पर आए, उस आसमान के दारोगा से भी उन्होंने कहा कि दरवाज़ा खोलो, उन्होंने भी उसी तरह के सवालात किये जो पहले आसमान पर हो चुके थे, फिर दरवाज़ा खोला, अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने तफ़्सील से बताया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुख्तलिफ़ आसमानों पर इदरीस, मूसा, ईसा और इब्राहीम (अलै.) को पाया, लेकिन उन्होंने उन अंबिया किराम के मक़ामात की कोई तख़सीस नहीं की, सिर्फ़ इतना कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने आदम (अलै.) को आसमाने दुनिया (पहले आसमान पर) पाया और इब्राहीम (अलै.) को छठे पर और हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जब जिब्रईल (अलै.) इदरीस (अलै.) के पास से गुज़रे तो उन्होंने कहा खुश आमदीद, नेक नबी नेक भाई, मैंने पूछा कि ये कौन साहब हैं? जिब्रईल (अलै.) ने बताया कि ये इदरीस (अलै.) हैं, फिर मैं ईसा (अलै.) के पास से गुज़रा, उन्होंने भी कहा खुश आमदीद नेक नबी नेक भाई, मैंने पूछा ये कौन साहब हैं? तो बताया कि ईसा (अलै.)। फिर मैं इब्राहीम (अलै.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने फ़र्माया कि खुश आमदीद नेक नबी और नेक बेटे, मैंने पूछा ये कौन साहब हैं? जवाब दिया कि ये इब्राहीम (अलै.) हैं, इब्ने शिहाब से जुहरी ने बयान किया और मुझे अय्यूब बिन हज़म ने ख़बर दी कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) और अबू हय्या अंसारी (रज़ि.) बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर मुझे ऊपर लेकर चढ़े और मैं इतने बुलन्द मुक़ाम पर पहुँच गया जहाँ से क़लम के लिखने की आवाज़ साफ़ सुनने लगी थी, अबूबक्र बिन

نَسَارِهِ أَسْوَدَةً، فَإِذَا نَظَرَ قَبْلَ يَمِينِهِ ضَحِكَ، وَإِذَا نَظَرَ قَبْلَ شِمَالِهِ بَكَى، فَقَالَ مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالْإِنِّ الصَّالِحِ. قُلْتُ: مَنْ هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَذَا آدَمُ، وَهَذِهِ الْأَسْوَدَةُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ نَسَمٌ بَيْنَهُ، فَأَهْلُ الْيَمِينِ مِنْهُمْ أَهْلُ الْجَنَّةِ، وَالْأَسْوَدَةُ الَّتِي عَنْ شِمَالِهِ أَهْلُ النَّارِ. فَإِذَا نَظَرَ قَبْلَ يَمِينِهِ ضَحِكَ وَإِذَا نَظَرَ قَبْلَ شِمَالِهِ بَكَى. ثُمَّ عَرَجَ بِي جِبْرِيلُ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّابِتَةَ فَقَالَ لِحَاظِهَا: اقْبَحَ، فَقَالَ لَهُ حَاظُهَا مِثْلُ مَا قَالَ الْأَوَّلُ، فَفَتَحَ. قَالَ أَنَسٌ: فَذَكَرَ أَنَّهُ وَجَدَ فِي السَّمَاوَاتِ إِدْرِيسَ وَمُوسَى وَعِيسَى وَإِبْرَاهِيمَ، وَلَمْ يُفَسِّرْ لِي كَيْفَ مَنَازِلِهِمْ، غَيْرَ أَنَّهُ قَدْ ذَكَرَ أَنَّهُ وَجَدَ آدَمَ فِي السَّمَاءِ الدُّنْيَا وَإِبْرَاهِيمَ فِي السَّادِسَةِ. وَقَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا مَرَّ جِبْرِيلُ بِإِدْرِيسَ قَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالْأَخِ الصَّالِحِ. قُلْتُ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا إِدْرِيسُ. ثُمَّ مَرَّتُ بِمُوسَى فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالْأَخِ الصَّالِحِ. قُلْتُ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا مُوسَى. ثُمَّ مَرَّتُ بِعِيسَى فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالْأَخِ الصَّالِحِ. قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: عِيسَى. ثُمَّ مَرَّتُ بِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالْإِنِّ الصَّالِحِ. قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا إِبْرَاهِيمُ. قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ حَزْمٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ

हज़म ने बयान किया और अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर अल्लाह तआला ने पचास वक्रत की नमाज़ें मुझ पर फ़र्ज कीं। मैं उस फ़रीजे के साथ वापस हुआ और जब मूसा (अलै.) के पास से गुजरा तो उन्होंने पूछा कि आपकी उम्मत पर क्या फ़र्ज की गई है? मैंने जवाब दिया कि पचास वक्रत की नमाज़ें उन पर फ़र्ज हुई है। उन्होंने कहा कि आप अपने रब के पास वापस जाएँ, क्योंकि आपकी उम्मत में इतनी नमाज़ों की ताक़त नहीं है, चुनौचे मैं वापस हुआ और रब्बुल आलमीन के दरबार में मुराजिअत की, उसके नतीजे में उसका एक हिस्सा कम कर दिया गया, फिर मैं मूसा (अलै.) के पास आया और इस बार भी उन्होंने कहा कि अपने रब से फिर मुराजिअत करें फिर उन्होंने अपनी तफ़सीलात का ज़िक्र किया कि रब्बुल आलमीन ने एक हिस्से की फिर कमी कर दी, फिर मैं मूसा (अलै.) के पास आया और उन्हे खबर की, उन्होंने कहा कि आप अपने रब से मुराजिअत करें, क्योंकि आपकी उम्मत में उसकी भी ताक़त नहीं है, फिर मैं वापस हुआ और अपने रब से फिर मुराजिअत की, अल्लाह तआला ने इस बार फ़र्मा दिया कि नमाज़ें पाँच वक्रत की कर दी गई और प्रवाब पचास नमाज़ों ही का बाक़ी रखा गया, मेरा क़ौल बदला नहीं करता। फिर मैं मूसा (अलै.) के पास आया तो उन्होंने अब भी ज़ोर दिया कि अपने रब से आपको फिर मुराजिअत करनी चाहिये। लेकिन मैंने कहा कि मुझे अल्लाह पाक से बार-बार दरख़वास्त करते हुए अब शर्म आती है। फिर जिब्रईल (अलै.) मुझे लेकर आगे बढ़े और सिदरतुल मुन्तहा के पास लाए जहाँ मुख्तलिफ़ क़िस्म के रंग नज़र आए, जिन्होंने उस पेड़ को छुपा रखा था मैं नहीं जानता कि वो क्या थे। उसके बाद मुझे जन्नत में दाख़िल किया गया तो मैंने देखा कि मोती के गुम्बद बने हुए हैं और उसकी मिट्टी मुश्क की तरह खुशबूदार थी। (राजेअ : 349)

وَأَمَّا حَيْثُ الْأَنْصَارِيُّ كَانَا يَقُولَانِ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ثُمَّ عَرَجَ بِي حَتَّى ظَهَرَتْ لِمُسْتَوَى أَسْمَعُ صَوْتِ الْأَقْلَامِ. قَالَ ابْنُ خَزْمٍ وَأَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : فَرَضَ اللَّهُ عَلَى خَمْسِينَ صَلَاةً. فَوَجَعْتُ بِذَلِكَ حَتَّى أَمُرُ بِمُوسَى فَقَالَ مُوسَى : مَا الَّذِي فَرَضَ عَلَى أُمَّتِكَ؟ قُلْتُ : فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسِينَ صَلَاةً. قَالَ : فَرَاغِ رَّبِّكَ، فَإِنْ أُمَّتُكَ لَا تَطِيقُ ذَلِكَ، فَرَاغِ رَّبِّي، فَوَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ : رَاغِبِ رَّبِّكَ، فَذَكَرَ مِثْلَهُ فَوَضَعَ شَطْرَهَا، فَوَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ : رَاغِبِ رَّبِّكَ، فَإِنْ أُمَّتُكَ لَا تَطِيقُ ذَلِكَ، فَوَجَعْتُ فَرَاغِ رَّبِّي فَقَالَ : هِيَ خَمْسُونَ وَخَمْسُونَ، لَا يَبْدُلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ، فَوَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ : رَاغِبِ رَّبِّكَ، فَقُلْتُ : قَدْ اسْتَحْيَيْتُ مِنْ رَبِّي. ثُمَّ انْطَلَقَ حَتَّى أَتَى السُّدْرَةَ الْمُنْتَهَى، فَغَشِيَهَا أَلْوَانٌ لَا أَذْرِي مَا هِيَ. ثُمَّ أُدْخِلْتُ فَيَاذَا فِيهَا جَنَابِدُ اللُّؤْلُؤِ، وَإِذَا تَرَائِيهَا الْمِسْكَ)).

[راجع : ٣٤٩]

**तशरीह :** इस हदीष शरीफ़ में हज़रत इदरीस (अलै.) का ज़िक्र ख़ैर आया। इसी मुनासबत से इसे यहाँ दर्ज किया गया। मेअराज का वाक़िया अपनी जगह पर बयान किया जाएगा, ईशाअल्लाह

नोट : हदीषे मेअराज में ये अक़ीदा लाज़िमन रखना चाहिये कि मेअराजे जिस्मानी बरहक़ है और उसमें सीना चाक़ होने वग़ैरह

वगैरह जितने भी कवाइफ़ मज़कूर हुए हैं अपने ज़ाहिरी मज़ाही के लिहाज़ से सब बरहक़ हैं। ज़ाहिर पर ईमान लाना और दीगर कवाइफ़ अल्लाह के हवाले करना ईमान वालों का शेवा है। इसमें मज़ीद कुरैद करना जाइज़ नहीं।

### बाब 6 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया,

٦- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

और क़ौमे आद की तरफ़ मैंने उनके भाई हूद को (नबी बनाकर) भेजा उन्होंने कहा, ऐ क़ौम! अल्लाह की इबादत करो।

और सूरह अहक़ाफ़ में अल्लाह तआला ने फ़र्माया, कि जब हूद (अलै.) ने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ या'नी रेत के मैदानों में डराया, अल्लाह तआला का इर्शाद, यूँ ही मैं बदला देता हूँ मुजरिम क़ौमों को, तक। इस बाब में अत्ता इब्ने अबी रिबाह और सुलैमान बिन यसार ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत की है। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

﴿وَإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ﴾ [هود : ٥٠]

وَقَوْلِهِ : ﴿إِذْ أَنْذَرْتُ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ﴾ - إِلَى قَوْلِهِ - كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿[الأحقاف : ٢١]

فِيهِ عَنْ عَطَاءٍ وَسَلِيمَانَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

अत्ता की रिवायत को मुवल्लिफ़ ने सूरह अहक़ाफ़ की तफ़्सीर में और सुलैमान की रिवायत को मुवल्लिफ़ ने ही वस्ल किया है। अहक़ाफ़ हक़फ़ की जमा है, क़ौमे आद रेत के ऊँचे टीलों पर आबाद थी। इसीलिये उनकी बस्तियों को लफ़्ज़े अहक़ाफ़ से मौसूम किया गया है, यमन में एक वादी का नाम अहक़ाफ़ था जहाँ आद की क़ौम रहती थी। क़तादा का क़ौल है कि यमन में समन्दर के किनारे रेत के टीलों में क़ौमे आद के लोग बस्ते थे। कुआन मज़ीद में एक सूरह अहक़ाफ़ के नाम से मौसूम है। जिसमें क़ौमे आद पर अज़ाब जो आया उसकी तफ़्सील बयान हुई है।

### बाब

### باب

(और सूरह हाक्का में) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, लेकिन क़ौमे आद, तो उन्हें एक निहायत तेज़ आँधी से हलाक़ किया गया, जो बड़ी ग़ज़बनाक थी। इब्ने उययना ने (आयत के लफ़्ज़) आतिया की तशरीह में कहा कि (अय अतत अलल ख़ुजानि) या'नी वो अपने दारोगा फ़रिश्तों के क़ाबू से बाहर हो गई जिसे अल्लाह ने उन पर मुतवातिर सात रात और आठ दिन तक मुसल्लत किया (आयत में) लफ़्ज़े हुसूमन बमा'नी मुतताबिआ है। या'नी वो पे दर पे चलती रही (एक मिनट भी नहीं रुकी) पस अगर तू उस वक़्त मौजूद होता तो उस क़ौम को वहाँ यूँ गिरा हुआ देखता कि गोया वो खोखली खजूरों के तने पड़े हैं, सो क्या तुझको उनमें से कोई भी बचा हुआ नज़र आता है।

قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿وَأَمَّا عَادُ فَاطِلُكَوَابِرِجٍ صَرْصَرٍ﴾ [الحاقة : ٨]  
شَدِيدَةٍ ﴿عَائِدَةٍ﴾. قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: غَمَّتْ عَلَى الْخُزَّانِ ﴿سَخَرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَتَمَایَةِ أَيَّامٍ حُسُومًا﴾ مُتَتَابِعَةً ﴿فَقَرَى الْقَوْمُ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ أُغِصَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ﴾ أَصُولُهَا: ﴿فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ﴾ بَقِيَّةً.

(आतिया) का मतलब ये है कि उस हवा ने हुक्मे इलाही से अपने दारोगा फ़रिश्ते की भी एक न सुनी और एक दम निकल भागी। जैसे इमाम बुखारी (रह.) ने सुफ़यान बिन उययना से नक़ल किया, कुछ ने कहा तर्जुमा यूँ है कि वो क़ौमे आद पर ग़ालिब आ गई या'नी उनके रोके से न रुक सकी, हवा के अज़ाब अब भी आते रहते हैं।

3343. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हक़म ने, उनसे मुजाहिद ने, और

٣٣٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرُورَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ

उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (ग़ज़व-ए-ख़न्दक के मौक़े पर) पुरवाई हवा से मेरी मदद की गई और क़ौम आद पछुवा हवा से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ: 1035)

3344. (हज़रत इमाम बुखारी रह. ने कहा) कि इब्ने क़रीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान शौरी ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे इब्ने अबी नुऐम ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) ने (यमन से) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में कुछ सोना भेजा तो आपने उसे चार आदमियों में तक्सीम कर दिया, अक़रआ बिन हाबिस हन्ज़ली घुम्मल मजाशेई, इययना बिन बद्र फ़ुज़ारी, ज़ैद ताई बनू निहान वाले और अलक़मा बिन अल्लाह आमरी बनू किलाब वाले, उस पर क़ुरैश और अंसार के लोगों को गुस्सा आया और कहने लगे कि ओहज़रत (ﷺ) ने नजद के बड़ों को तो दिया और हमें नज़रअंदाज़ कर दिया है। ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं सिर्फ़ उनके दिल मिलाने के लिये उन्हें देता हूँ (क्योंकि अभी हाल ही में ये लोग मुसलमान हुए हैं) फिर एक शख़्स सामने आया, उसकी आँखें धंसी हुई थीं, कले फूले हुए थे, पेशानी भी उठी हुई, दाढ़ी बहुत घनी थी और सर मुंडा हुआ था। उसने कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अल्लाह से डरो! ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं ही अल्लाह की नाफ़रमानी करूँगा तो फिर उसकी फ़र्माबरदारी कौन करेगा? अल्लाह तआला ने मुझे रूए ज़मीन पर दयानतदार बनाकर भेजा है क्या तुम मुझे अमीन नहीं मानते? उस शख़्स की उस गुस्ताख़ी पर एक सहाबी ने उसके क़त्ल की इजाज़त चाही, मेरा ख़याल है कि ये हज़रत ख़ालिद बिन वलीद थे, लेकिन ओहज़रत (ﷺ) ने उन्हें इससे रोक दिया, फिर वो शख़्स वहाँ से चलने लगा तो ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इस शख़्स की नस्ल से या (आप ﷺ ने फ़र्माया कि) इस शख़्स के बाद उसी की क़ौम से ऐसे लोग झूठे मुसलमान पैदा होंगे, जो कुआन की तिलावत तो करेंगे, लेकिन कुआन मज़ीद उनकी हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, दीन से वो इस तरह निकल जाएँगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है, ये

ابن عباس رضي الله عنهما عن النبي  
ﷺ قال: ((نُصِرْتُ بِالسَّبَا، وَأَهْلِكْتُ عَادَ  
بِالدُّبُورِ)). [راجع: ١٠٣٥]

٣٣٤٤- قال: قال ابن كثير عن مفيان  
عن أبيه عن ابن أبي نعم عن أبي سعيد  
رضي الله عنه قال: ((أرسل عليّ إلى  
النبي ﷺ بدقيّة، فقسّمها بين الأربعة:  
الأقرع بن حابس الحنظليّ ثم  
المجاشعي، وعيينة بن بدر الفزاري،  
وزيد الطائي ثم أحد بني نهران، وعلقمة  
بن غلّة العامريّ ثم أحد بني كلاب.  
فقبضت قريش والأنصار قائلوا: يعطي  
صناديد أهل نجد ويدعونا. قال: ((إنما  
أتألفهم)). فأقبل رجل غائر العينين  
مشرف الوجنتين نأى الجنبين كثر  
اللحية مخلوق فقال: أتى الله يا محمد،  
فقال: ((من يطع الله إذا عصيت؟  
أيامني الله على أهل الأرض فلا  
تأمنوني؟)) فسأله رجل فقله - أحسبه  
خالد بن الوليد - فمنعه، فلما ولى قال:  
((إن من ضطيء هذا - أو لمي عقب  
هذا - قوم يقرؤون القرآن لا يجاوز  
حاجرتهم، يمرقون من الدين مروق  
السهم من الرميّة، يقتلون أهل الإسلام  
ويدعون أهل الأوثان، لين أنا أدركهم  
لأقتلهم قتل عاد)).

أطرافه في: ٣٦١، ٤٣٠، ٤٦٦٧

मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे, अगर मेरी ज़िन्दगी उस वक़्त तक बाक़ी रहे तो मैं उनको इस तरह क़त्ल करूँगा जैसे क़ौमे आद का (अज़ाबे इलाही से) क़त्ल हुआ था कि एक भी बाक़ी न बचा। (दीगर मक़ाम : 3610, 4301, 4667, 5057, 6163, 6931, 6933, 7432, 5762)

६९३३ ६९३१ ६९१३ ६००८  
[०५१२ १७६३२]

**तशरीह :** इस हदीष के आख़िर में क़ौमे आद के अज़ाबे इलाही से हलाक होने का ज़िक्र है इस मुनासबत से ये हदीष यहाँ दर्ज की गई। जिस बदबख़्त ग़िरोह का यहाँ ज़िक्र हुआ है ये ख़ारजी थे जिन्होंने हज़रत अली (रज़ि.) के खिलाफ़ ख़ुरूज किया उन पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया, ख़ुद इतिबाज़े कुआन का दा'वा किया। आख़िर हज़रत अली (रज़ि.) से मुकाबले में ये लोग मारे गये, दीनदारी का दा'वा करने और दूसरे मुसलमानों को बनज़रे हिक्कारत देखने वाले आज भी बहुत से लोग मौजूद हैं, लम्बे लम्बे कुतें पहने हुए हाथों में तस्बीह लटकाए हुए, बग़लों में कुआन दबाए हुए मगर उनके दिलों को देखो तो भेड़िये मा'लूम होते हैं।

3345. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे इस्त्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने, कहा कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आप आयत फ़हल मिम् मुहकिर की तिलावत फ़र्मा रहे थे। (राजेअ : 3341)

३३४५- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا  
إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ  
قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ قَالَ: ((سَمِعْتُ  
النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ: «فَهْلَ مِنْ مُذَكِّرٍ».

(راجع: ٣٣٤١)

ये आयत सूरह क्रम मे क़ौमे आद के किस्से में भी आई है। इस मुनासबत से ये हदीष बयान की।

### बाब 7 : याजूज व माजूज का बयान

अल्लाह तआला ने सूरह कहफ़ में फ़र्माया वो लोग कहने लगे याजूज माजूज लोग मुल्क में बहुत फ़साद मचा रहे हैं।

### ۷- بَابُ قِصَّةِ يَاجُوجَ وَمَاجُوجَ

وَلَوْلَا اللَّهُ تَعَالَى لَفَلَاوُا يَٰٓأَيُّهَا الْقُرْآنُ إِنَّا يَاجُوجَ  
وَمَاجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَكُفُّوا ۚ

**तशरीह :** ये दोनों क़बीलों के नाम हैं जो याफ़़्र बिन नूह की औलाद में हैं। कुछ ने कहा याजूज तुर्क लोग हैं और माजूज एक दूसरा ग़िरोह है। क़यामत के क़रीब ये लोग बहुत ग़ालिब होंगे और हर तरफ़ से निकल पड़ेंगे, उनका निकलना क़यामत की एक निशानी है। जो लोग याजूज माजूज के वजूद में शुब्हा करते हैं वो अहमक हैं, याजूज माजूज आदमी हैं, कोई अज़ूबा नहीं है और जो रिवायतें उनके क़द व क़ामत के बारे में मन्कूल हैं उनकी सनदें सहीह नहीं। तौरात शरीफ़ में याजूज माजूज का ज़िक्र है, कुछ ने कहा याजूज रूसी लोग हैं और माजूज तातारी कुछ ने कहा कि माजूज अंग्रेज़ हैं (वहीदी)। सहीह बात यही है कि हकीकतें हाल को अल्लाह ही बेहतर जानता है अहले ईमान का काम इशदि इलाही को आमन्ना व सद्कना कहना है।

अल्लाह तआला का ये फ़र्माना, और आपसे (ऐरसूल) जुलक़रनेन (बादशाह) के बारे में ये लोग पूछते हैं। (आप फ़र्मा दें कि उनका किस्सा मैं अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ मैंने उसे ज़मीन की हुकूमत दी थी और मैंने उसको हर तरह का सामान अता किया था फिर वो एक सिम्त चल निकला, अल्लाह तआला के इर्शाद, तुम

وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقُرْنَيْنِ ۖ [الكهف  
۸۳] ۖ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۚ إِنَّا  
نَكْنَاهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ  
سَبَبًا ۖ فَاتَّبِعْ سَبَأًا: طَرِيقًا. إِلَى قَوْلِهِ:



लोग मेरे पास लोहे की चादरें लाओ, तक। जुबुर का वाहिद जबरह है और जबरह दुकड़े को कहते हैं, यहाँ तक कि जब उसने उन दोनों पहाड़ों के बराबर दीवार उठा दी। मदफैन से पहाड़ मुराद हैं। इब्ने अब्बास (रजि.) से (बयन म् मदफैन की दूसरी किरअत भी अल जबलैन (दो पहाड़) के मा'नी में है, खरजा बमा'नी महमूले उज्जत, जुलकरनेन ने (इमला से) कहा कि अब उस दीवार को आग से धोंको यहाँ तक कि जब उसे आग बना दिया तो कहा अब मेरे पास पिघला हुआ सीसा व तांबा लाओ तो मैं उस पर डाल दूँ उप्प्रिग (अल्लिहि कित्ता) के मा'नी हैं कि मैं उस पर पिघला हुआ सीसा डाल दूँ (कित्ता के मा'नी) कुछ ने लोहे (पिघले हुए से) किये हैं और कुछ ने पीतल से, इब्ने अब्बास (रजि.) ने उसका मा'नी तांबा बताया है। फिर क्रौमे याजूज व माजूज के लोग (इस सद के बाँध) उस पर चढ़ न सके यज़्हरुहु से इस्तिफ़ाल का सेगा है। इसीलिये इस्ताअ यस्तीक्र, यस्ततीक्र भी पढ़ते हैं और याजूज माजूज उसमें मूराख भी न कर सके। जुलकरनेन ने कहा कि ये मेरे परवरदिगार की एक रहमत है फिर जब मेरे परवरदिगार का मुकररा वा'दा आ पहुँचेगा तो वो उस दीवार का दक्का या'नी ज़मीनदोज़ कर देगा, अरब के लोग उसी से बोलते हैं नाक़ति दक्का जिससे मुराद वो कैंट है जिसकी कोहान न हो। और वह वक्दाकु मिनल अर्ज़ि की मिशाल वो ज़मीन जो हमवार होकर सख़्त हो गई हो, कँची न हो और मेरे ख़ का वा'दा बरहक़ है और उस रोज़ मैं उनको इस तरह छोड़ दूंगा कि कुछ उनका कुछ से गडमड हो जाएगा। यहाँ तक कि जब याजूज माजूज को खोल दिया जाएगा और वो हर बुलन्दी से दौड़ पड़ेंगे। क्रतादा ने कहा कि हदब के मा'नी टीले के हैं। एक म्हाबी ने रसूले करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया कि मैंने इस दीवार को धारीदार चादर की तरह देखा है जिसकी एक धारी सुर्ख है और एक काली है, उस पर औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वाक़ई तुमने उसको देखा है।

﴿أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ﴾ وَاجْتَمَعَا زُبَرَ وَهِيَ الْقَطْعُ ﴿حَتَّى إِذَا سَاوَى تَمَنُّ الصَّدَفَيْنِ﴾ يُقَالُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ الْجَبَلَيْنِ وَالسَّيْلَيْنِ : الْجَبَلَيْنِ خَرَجَا أَجْرًا. ﴿قَالَ انْفُخُوا حَتَّى إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ أَتُونِي فِرْعَ عَلَيْهِ فِطْرًا﴾ أَصْبَحَ عَلَيْهِ وَصَاحًا، وَيُقَالُ الْحَدِيدُ، وَيُقَالُ الصُّفْرُ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: النَّحَاسُ، ﴿لَمَّا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ﴾ يَغْلُوهُ، اسْتَطَاعَ : اسْتَفْعَلَ مِنْ طَعَتْ لَهُ، فَلِلَّذَلِكَ فُجِعَ اسْتَطَاعَ يَسْتَطِيعُ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ اسْتَطَاعَ يَسْتَطِيعُ. ﴿وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا﴾ قَالَ هَذَا رَحْمَةً مِنْ رَبِّي. فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ أَلْزَقَهُ بِالْأَرْضِ. وَنَاقَهُ دَكَّاءٌ : لَا سَنَامَ لَهَا. وَالذَّكَاءُ مِنَ الْأَرْضِ مِثْلُهُ حَتَّى صُلِبَ مِنَ الْأَرْضِ وَتَلَبَّدَ. ﴿وَوَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا. وَتَوَكَّنَا بَعْضُهُمْ يُومِئِلُ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ، حَتَّى إِذَا فُجِعَتْ يَأْجُوجُ وَمَاجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ﴾ قَالَ قَتَادَةُ: حَذَبٌ أَكْمَةٌ. قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: رَأَيْتُ السُّدَّ مِثْلَ الثُّرَيِّدِ الْمَسْحُورِ. قَالَ: ((قَدْ رَأَيْتُهُ)).

तशरीह:

हुआ ये था कि दोनों तरफ़ दो ऊँचे पहाड़ थे बीच में रास्ता खुला हुआ था, उसमें से याजूज माजूज के लोग घुस आते और ग़रीब रिआया को सताते। जुलकरनेन ने ये दीवार लोहे की बनाकर उनका रास्ता ही बन्द कर दिया।

कुछ कम अक्ल लोग इस किस्से पर ए'तिराज करते हैं कि अगर ये दीवार बनी होती तो आजकल जरूर उसका पता लग जाता क्योंकि दुनिया की छानबीन आजकल बहुत हो चुकी है और कोई मुल्क और जज़ीरा ऐसा बाकी नहीं रहा जहाँ खोजी न पहुँचे हों। उनका जवाब ये है कि आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में तो ये दीवार मौजूद थी सहीह हदीष में है कि आपने फ़र्माया आज याजूज माजूज की सदमे इतना खुल गया। बाद के लिये भी हमारा अकीदा वही है जो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है। ये जरूरी नहीं है कि खोजियों ने सारे आलम का पता लगा लिया हो जिन लोगों ने दीवारे चीन को सदे सिकन्दरी समझा है उन्होंने ग़लती की है क्योंकि चीन की दीवार बहुत लम्बी है और वो लोहे की नहीं है इसे चीन के एक बादशाह ने बनवाया था। मज़कूर जुलकरनेन से सिकन्दरे आजम मुराद है। जिन्होंने दीने इब्राहीमी कुबूल कर लिया था, सिकन्दरे यूनानी मुराद नहीं है ये बाद के ज़माने में मसीह (अलैहि) से पहले पैदा हुआ है।

3346. हमसे यह्या बिन जुबेर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन जुबेर ने और उनसे हज़रत ज़ैनब बन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने, उनसे उम्मे हब्बीबा बन्ते अबी सुफ़यान ने, उनसे ज़ैनब बन्ते जहश (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उनके यहाँ तशरीफ़ लाए आप कुछ घबराए हुए थे फिर आपने फ़र्माया अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, मुल्के अरब में उस बुराई की वजह से बर्बादी आ जाएगी जिसके दिन करीब आने को हैं, आज याजूज माजूज ने दीवार में इतना सूराख़ कर दिया है फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अंगूठे और उसके करीब की उंगली से हल्का बनाकर बतलाया। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बन्ते जहश (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने सवाल किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम उसके बावजूद हलाक कर दिये जाएंगे कि हममें नेक लोग भी मौजूद होंगे? आपने फ़र्माया कि जब फ़िस्क व फ़िज़ूर बढ़ जाएगा (तो यकीनन बर्बादी होगी)। (दीगर मक़ाम : 3598, 7059, 7135)

3347. हमें मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने, उनसे इब्ने त़ाऊस ने, उनसे उनके वालिद त़ाऊस ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह पाक याजूज माजूज की दीवार से इतना खोल दिया है, फिर आपने अपनी उँगलियों से नब्बे (90) का अदद बनाकर बतलाया। (दीगर मक़ाम : 7136)

۳۳۴۶- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ حَدَّثَتْهُ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ بِنْتِ أَبِي سَفْيَانَ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَرِغًا يَقُولُ: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَيَلُ لِّلْفَرَبِ مِنْ شَرِّ مَا قَدْ اقْتَرَبَ، فَتَحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمٍ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ مِثْلَ هَذِهِ)) - وَخَلَقَ يَاصْبَعُهُ الْإِبْهَامَ وَالْيَمَى تَلِيهَا - قَالَتْ زَيْنَبُ بِنْتُ جَحْشٍ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا كَثُرَ الْغَيْثُ)).

[أطرافه في : ۳۵۹۸، ۷۰۵۹، ۷۱۳۵].

۳۳۴۷- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَتَحَ اللَّهُ مِنْ رَدْمٍ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ مِثْلَ هَذِهِ، وَغَقَدَ بِيَدِهِ تِسْعِينَ)).

[طرفه في : ۷۱۳۶].

**तशरीह:** अक़दे अनामिल में उसकी मूरत यूँ है कि खिन्सिर और बिन्सिर को बन्द करे और कलिमे की उँगली बन्द कर दे, अंगूठे को बीच की उँगली पर रखे। कस्तलानी ने कहा उससे ये मकसूद नहीं है कि इतना ही सा खुला है, एक रिवायत में यूँ है कि याजूज माजूज रोज़ उसको खोदते हैं थोड़ी ही रह जाती है तो कहते हैं कल आकर तोड़ लेंगे, अल्लाह तआला

रात भर मे फिर उसको वैसा ही मजबूत कर देता है, जब टूटने का वक़्त आ पहुँचेगा उस रोज़ यूँ कहेंगे कल ईशाअल्लाह आकर तोड़ डालेंगे, इस रात में वो दीवार वैसी ही रहेगी सुबह को तोड़कर निकल पड़ेंगे। (वहीदी)

3348. मुझे से इस्हाक़ बिन नसर ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू सालेह ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला (क़यामत के दिन) फ़र्माएगा, ऐ आदम! आदम (अलै.) अर्ज़ करेंगे मैं इत्ताअत के लिये हाज़िर हूँ, मुस्तैद हूँ, सारी भलाइयाँ सिर्फ़ तेरे ही हाथ में हैं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, जहन्नम में जाने वालों को (लोगों में से अलग) निकाल लो। हज़रत आदम (अलै.) अर्ज़ करेंगे। ऐ अल्लाह! जहन्नमियों की ता'दाद कितनी है? अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि हर एक हज़ार में से नौ सौ निन्नावे। उस वक़्त (की हौलनाकी और वहशत से) बच्चे बूढ़े हो जाएँगे और हर हामिला औरत अपने हमल गिरा देगी। उस वक़्त तुम (डर व दहशत से) लोगो को मदहोशी के आलम में देखोगे, हालाँकि वो बेहोश न होंगे। लेकिन अल्लाह का अज़ाब बड़ा ही सख़्त होगा। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! वो एक शख़्स हममें से कौन होगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें बशारत हो, वो एक आदमी तुममें से होगा और एक हज़ार दोज़ख़ी याजूज माज़ूज की क़ौम से होंगे फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मुझे उम्मीद है कि तुम (उम्मत मुस्लिमा) तमाम जन्नत वालों के एक तिहाई होओगे। फिर हमने अल्लाहु अक्बर कहा तो आपने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तुम तमाम जन्नत वालों के आधे होगे फिर हमने अल्लाहु अक्बर कहा। फिर आपने फ़र्माया कि (महशर में) तुम लोग तमाम इंसानों के मुकाबले में इतने होगे जितने किसी सफ़ेद बैल के जिस्म पर एक काला बाल, या जितने किसी काले बैल के जिस्म पर एक सफ़ेद बाल होता है। (दीगर मक़ाम : 4741, 6530, 7483)

۳۳۴۸- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ عَنْ الْأَعْمَشِ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: يَا آدَمُ. قُبُولُ: لَيْتَكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ. قُبُولُ: أَخْرِجْ بَعَثَ النَّارَ. قَالَ: وَمَا بَعَثَ النَّارَ؟ قَالَ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ سِتْمِائَةٍ وَكِسْفَةٍ وَسِتْمِينَ. فَعِنْدَهُ يَشِيبُ الصُّغِيرُ، وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمَلٍ حَمْلَهَا، وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى، وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ)).  
قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَأَيْنَا ذَلِكَ الْوَاحِدُ؟ قَالَ: ((أَبْشِرُوا فَإِنَّ مِنْكُمْ رَجُلًا وَمِنْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ أَلْفَ. ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا رُبْعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. فَكَبَّرْنَا. فَقَالَ: أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. فَكَبَّرْنَا. فَقَالَ: أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا بِصَفِّ أَهْلِ الْجَنَّةِ. فَكَبَّرْنَا فَقَالَ: مَا أَنْتُمْ فِي النَّاسِ إِلَّا كَالشُّغْرَةِ السُّودَاءِ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَيْضٍ، أَوْ كَشُغْرَةِ بَيْضَاءٍ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَسْوَدَ)).

[أطرافه في : ٤٧٤١، ٦٥٣٠، ٧٤٨٣].

**तशरीह :** बाब का तर्जुमा इस फ़िक्रे से निकलता है कि तुममें से एक आदमी के मुकाबिल याजूज माज़ूज में से हज़ार आदमी पड़ते हैं क्योंकि उससे याजूज माज़ूज की ऐसी क़हरते नस्ल मा'लूम होती है कि उम्मत इस्लामिया उन काफ़िरों का हज़ारवाँ हिस्सा होगी। याजूज माज़ूज दो क़बीलों के नाम हैं जो याफ़़ि़ बिन नूह की औलाद में से हैं। क़यामत के करीब ये

लोग बहुत होंगे और हर तरफ से निकल पड़ेंगे। उनका निकलना क़यामत की एक निशानी है जो लोग याजूज माजूज के वजूद में शुब्हा करते हैं वो खुद अहमक हैं। हदीष से उम्मत मुहम्मदिया का बक़रत जन्नती होना भी प्राबित हुआ मगर जो लोग कलिम-ए-इस्लाम पढ़ने के बावजूद कब्रों, ता'ज़ियों, झण्डों की पूजा-पाठ में मशगूल हैं वो कभी भी जन्नत में नहीं जाएंगे। इसलिये कि वो मुश्कि हैं और मुश्किों के लिये अल्लाह तआला ने जन्नत को क़तअन ह़राम कर दिया है जैसा कि आयते शरीफ़ा इन्नल्लाह ला यगफिरु अय्युशरक बिही (अन् निसा : 48) से ज़ाहिर है।

### बाब 8 : (सूरह निसा में) अल्लाह तआला का फ़र्मान कि,

और अल्लाह ने इब्राहीम को खलील बनाया, और (सूरह नहल में) अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, बेशक इब्राहीम (तमाम खूबियों का मज्मूआ होने की वजह से खुद) एक उम्मत थे, अल्लाह तआला के मुत्तीअ व फ़र्माबरदार, एक तरफ़ होने वाले और (सूरह तौबा में) अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, बेशक इब्राहीम निहायत नरम तबीअत और बड़े ही बुर्दबार थे। अबू मैसरा (अमर बिन शुरहबील) ने कहा कि (अवाह) हब्शी जुबान में रहीम के मा'नी में है।

3349. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान घौरी ने ख़बर दी, उनसे मुगीरह बिन नोअमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग हज़र में नंगे पाँव, नंगे जिस्म और बिन ख़त्ना उठाए जाओगे फिर आपने उस आयत की तिलावत की कि, जैसा कि मैंने पैदा किया था पहली मर्तबा, मैं ऐसे ही लौटाऊँगा। ये मेरी तरफ़ से एक वा'दा है जिसको मैं पूरा करके रहूँगा (सूरह अंबिया) और अंबिया में सबसे पहले हज़रत इब्राहीम (अलै.) को कपड़ा पहनाया जाएगा और मेरे अस्हाब में से कुछ को जहन्नम की तरफ़ ले जाया जाएगा तो मैं पुकार उठूँगा कि ये तो मेरे अस्हाब हैं, मेरे अस्हाब! लेकिन मुझे बताया जाएगा कि आपकी वफ़ात के बाद उन लोगों ने फिर कुफ़र इख़ितयार कर लिया था। उस वक़्त मैं भी वही जुम्ला कहूँगा जो नेक बन्दे (ईसा अलै.) कहेंगे कि, जब तक मैं उनके साथ था उन पर निगरान था। अल्लाह तआला के इश्राद अल हकीम तक। (दीगर मक़ाम : 3447, 4625, 4626, 4740, 5624, 6525, 6526)

### ۸- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا﴾ [النساء 165] وَقَوْلِهِ : ﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِيًا لِلَّهِ﴾ [النحل : 120] وَقَوْلِهِ : ﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ خَلِيمٌ﴾ [التوبة : 114]. وَقَالَ أَبُو مَيْسَرَةَ : الرَّحِيمُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ.

۳۳۴۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الْمُفَيْرَةُ بْنُ الْأَعْمَانِ قَالَ : حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ قَالَ : ((إِنَّكُمْ تُخْشَرُونَ حُفَاةَ عَرَاةٍ غُرْلًا ثُمَّ قَرَأَ : ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ، وَغَدَاً عَلَيْنَا، إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ﴾ وَأَوَّلُ مَنْ يَكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ. وَإِنْ أَنَا مِنْ أَصْحَابِي يُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشَّمَالِ، فَأَقُولُ : أَصْحَابِي، أَصْحَابِي. فَيَقَالُ : إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَيَّ أَغْطَاهُمْ مِنْذُ فَارَقْتَهُمْ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ : ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ.﴾ إِلَى قَوْلِهِ - الْحَكِيمُ.﴾

[مرامه فی : ۳۴۴۷، ۴۶۲۵، ۴۶۲۶، ۴۷۴۰، ۵۶۲۴، ۶۵۲۵، ۶۵۲۶]

मुराद वो लोग हैं जो आँहजरत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की खिलाफ़त में मूर्तद हो गये थे। हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे जिहाद किया। ये देहात के वो बदवी थे जो बराए नाम इस्लाम में दाखिल हो गये थे और आँहजरत (ﷺ) की वफ़ात के साथ ही फिर मूर्तद होकर इस्लाम के खिलाफ़ मुकाबले के लिये खड़े हो गये थे जो या तो मुनाफ़िक़ थे या इस्लाम के ग़लबा से ख़ौफ़ज़दा होकर इस्लाम में दाखिल हो गए थे और उन्होंने इस्लाम से कभी कोई दिलचस्पी सिरे से ली ही नहीं थी। उन मूर्तदीन ने खिलाफ़ते इस्लामिया के खिलाफ़ जंग की और शिकस्त खाई या क़त्ल किये गये।

3350. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि मुझे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी जिब ने, उन्हें सईद मज़बरी ने और उन्हें हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हजरत इब्राहीम (अलै.) अपने वालिद आज़र से क़यामत के दिन जब मिलेंगे तो उनके (वालिद के) चेहरे पर स्याही और गुबार होगा। हजरत इब्राहीम (अलै.) कहेंगे कि क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि मेरी मुखालफ़त न कीजिए। वो कहेंगे कि आज मैं आपकी मुखालफ़त नहीं करता। हजरत इब्राहीम (अलै.) अर्ज़ करेंगे कि ऐ रब! तूने वा'दा किया था कि मुझे क़यामत के दिन रुस्वा नहीं करेगा। आज इस रुस्वाई से बढ़कर और कौनसी रुस्वाई होगी कि मेरे वालिद तेरी रहमत से सबसे ज़्यादा दूर हैं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मैंने जन्नत काफ़िरोँ पर हराम करार दी है। फिर कहा जाएगा कि ऐ इब्राहीम! तुम्हारे क़दमों के नीचे क्या चीज़ है? वो देखेंगे तो एक ज़िबह किया हुआ जानवर खून में लथड़ा हुआ वहाँ पड़ा होगा और फिर उसके पाँव पकड़कर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (दीगर मक़ाम: 4768, 4769)

۳۳۵۰- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَخِي عَبْدُ الْحَمِيدِ عَنْ أَبِي أَبِي ذُنَبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَلْقَى إِبْرَاهِيمُ أَبَاهُ آزَرَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَى وَجْهِ آزَرَ قَرَّةٌ وَغَيْرَةٌ، فَيَقُولُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ لَا تَغْضَبْنِي؟ فَيَقُولُ: فَالْيَوْمَ لَا أَغْضَيْكَ. فَيَقُولُ إِبْرَاهِيمُ: يَا رَبِّ إِنَّكَ وَعَدْتَنِي أَنْ لَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُنْفَخُونَ، فَأَيُّ خِزْيٍ أَخْزَى مِنْ أَبِي الْإِبْتَدَاءِ؟ فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: ((إِنِّي خَرَمْتُ الْجَنَّةَ عَلَى الْكَافِرِينَ. ثُمَّ يَقَالُ: يَا إِبْرَاهِيمُ مَا تَحْتَ رِجْلَيْكَ، فَيَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ بِذِيخٍ مُلْتَطِحٍ، فَيُؤْخَذُ بِقَوَائِمِهِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ)).

[طرفاه في: ٤٧٦٨، ٤٧٦٩.]

**तर्ज़ुह:** इस हदीष से उन नामोनिहाद मुसलमानों को इबरत पकड़नी चाहिये जो औलिया अल्लाह के बारे में झूठी हिकायात व करामात गढ़-गढ़कर उनको बदनाम करते हैं। मज़लन ये कि बड़े पीर जीलानी साहब ने रूहों की थैली हजरत इज़राईल (अलै.) से छीन ली जिनमें मोमिन व काफ़िर सबकी रूहें थीं और वो सब जन्नत में दाखिल हो गये। ऐसे बहुत से किस्से बहुत से बुजुर्गों के बारे में मुश्किन ने गढ़ रखे हैं। जब हजरत खलीलुल्लाह जैसे पैग़म्बर क़यामत के दिन अपने बाप के काम न आ सकेंगे तो और दूसरे किसी की क्या मजाल है कि बग़ैर इज़्ने इलाही किसी मुरीद या शागिर्द को बख़्शवा सकें।

3351. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अम्म बिन हारिष ने ख़बर दी, उनसे बुकैर ने बयान किया, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब ने और उनसे हजरत इब्ने अब्बास (रज़ि.)

۳۳۵۱- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهَبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ كُرَيْبِ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ

ने कि नबी करीम (ﷺ) बैतुल्लाह में दाखिल हुए तो उसमें हज़रत इब्राहीम और हज़रत मरयम (अलै.) की तस्वीरें देखीं, आपने फ़र्माया कि कुरैश को क्या हो गया? हालाँकि उन्हें मा'लूम है कि फ़रिश्ते किसी ऐसे घर में दाखिल नहीं होते जिसमें तस्वीरें रखी हों, ये हज़रत इब्राहीम (अलै.) की तस्वीर है और वो भी पांसा फेंकते हुए। (राजेअ: 398)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْبَيْتَ فَوَجَدَ فِيهِ صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ وَصُورَةَ مَرْيَمَ فَقَالَ: اللَّهُ أَمَا هُمُ لَقَدْ سَمِعُوا أَنَّ الْمَلَائِكَةَ لَا تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ، هَذَا إِبْرَاهِيمُ مُصَوَّرٌ، فَمَا لَهُ يَسْتَقْسِمُ)). [راجع: ٣٩٨]

**तशरीह:** अरब के मुश्रिकों ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) की मूर्ति बनाकर उनके हाथ में पांसे का तीर दिया था। आँ हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीर को पांसा बनाना, उससे जुआ खेलना या फ़ाल निकालना किसी भी नबी को शान नहीं हो सकती। कस्तुरलानी (रह.) ने कहा कि मक्का के काफ़िर जब सफ़र वगैरह पर निकलते तो उन पांसों से फ़ाल निकाला करते थे। इस हदीस से ये भी मा'लूम हुआ कि बतौर मा'बूद किसी बुत को पूजा जाए या किसी नबी और वली की क़ब्र या मूरत को, शिर्क होने में दोनों बराबर हैं। जो नादान मुसलमान कहते हैं कि कुआन शरीफ़ में जिस शिर्क को मज़म्मत है वो काफ़िरों की बुतपरस्ती मुराद है। हम मुसलमान औलिया अल्लाह को महज़ बतौर वसीला पूजते हैं। उन नादानों का ये कहना सरासर फ़रेब नपस है।

3352. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हे मअमर ने, उन्हें अय्यूब ने, उन्हे इकिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब बैतुल्लाह में तस्वीरें देखीं तो अंदर उस वक़्त तक दाखिल न हुए जब तक वो मिटान दी गई और आपने इब्राहीम (अलै.) और इस्माईल (अलै.) की तस्वीरें देखीं कि उनके हाथों में तीर (पांसे के) थे तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह उन पर बर्बादी लाए। वल्लाह उन हज़रत ने कभी तीर नहीं फेंके। (राजेअ: 398)

٣٣٥٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((رَأَى النَّبِيُّ ﷺ لَمَّا رَأَى الصُّورَ فِي الْبَيْتِ لَمْ يَدْخُلْ حَتَّى أَمَرَ بِهَا فَمُحِيتْ. وَرَأَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ بِأَيْدِيهِمَا الْأَزْلَامَ فَقَالَ: قَاتِلَهُمَا اللَّهُ وَاللَّهِ إِنْ اسْتَقْسَمَا بِالْأَزْلَامِ قَطُّ)). [راجع: ٣٩٨]

या'नी उन बुजुर्गों ने फ़ाल निकालने के लिये कभी तीर इस्ते'माल नहीं किये, वो ऐसी बेहूदा हरकत से खुद ही बेज़ार थे। ऐसे ही वो बुजुर्ग भी हैं जिनकी क़ब्रों पर ढोल ताशे बजाए जा रहे हैं।

3353. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इब्नेदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम हज़ूर (ﷺ) से इसके बारे में नहीं पूछते। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर अल्लाह के नबी यूसुफ़ (अलै.) बिन नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह बिन ख़लीलुल्लाह (सबसे ज़्यादा शरीफ़

٣٣٥٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَتْقَاهُمْ. فَقَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ، قَالَ: يُوسُفُ بْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنُ خَلِيلِ اللَّهِ

हैं) सहाबा ने कहा हम उसके बारे में भी नहीं पूछते। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा अब के ख़ानदानों के बारे में तुम पूछना चाहते हो। सुनो जो जाहिलियत में शरीफ़ थे इस्लाम में भी वो शरीफ़ हैं जबकि दीन की समझ उन्हें आ जाए। अबू उसामा और मुअतमिर ने अबू दुल्लाह (रज़ि.) से बयान किया, उनसे सईद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (दीगर मक़ाम: 3374, 3383, 3490, 4689)

3354. हमसे मुअम्मल ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने, कहा हमसे अबू रजाआ ने, कहा हमसे समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आज की रात मेरे पास (ख़ाब में) दो फ़रिश्ते (जिब्रईल और मीकाईल अलै.) आए। फिर ये दोनों फ़रिश्ते मुझे साथ लेकर एक लम्बे क़द के बुजुर्ग के पास गये, वो इतने लम्बे थे कि उनका सर में नहीं देख पाता था और ये हज़रत इब्राहीम (अलै.) थे। (राजेअ: 845)

3355. हमसे बुयान बिन अमर ने बयान किया, कहा हमसे नज़् ने बयान किया, कहा हमको इब्ने औन ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने और उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आपके सामने लोग दज्जाल का तज़्किरा कर रहे थे कि उसकी पेशानी पर लिखा हुआ होगा, काफ़िर या (यूँ लिखा होगा) कफ़र हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से मैंने ये हदीष नहीं सुनी थी। अल्बत्ता आपने एक मर्तबा ये हदीष बयान की कि इब्राहीम (अलै.) (की शक्ल व वज़अ मा'लूम करने) के लिये तुम अपने सहाब को देख सकते हो और हज़रत मूसा (अलै.) का बदन ग़ठा हुआ, गन्दुमी, एक सुख़ कैंट पर सवार थे जिसकी नकेल खज़ूर की छाल की थी। जैसे मैं उन्हें इस वक़्त तक भी देख रहा हूँ कि वो अल्लाह की बड़ाई बयान करते हुए वादी में उतर रहे हैं। (राजेअ: 1555)

اللّٰهُ. قَالُوا: كَيْسَ عَنْ هَذَا نَسَأَلُكَ. قَالَ: عَنْ مَعَادِنِ الْقَرْبِ تَسْأَلُونَ؟ خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فَهَمُوا. قَالَ أَبُو أُسَامَةَ وَمُعْتَمِرٌ: ((عَنْ سَعِيدٍ الْهَلَبِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)). [أطرافه في: ٣٣٧٤, ٣٣٨٣, ٣٤٩٠, ٤٦٨٩].

٣٣٥٤- حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا عَوْفٌ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ حَدَّثَنَا سَمُرَةُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((آتَانِي اللَّيْلَةُ آتِيَانِ، فَأَتَانَا عَلَى رَجُلٍ طَوِيلٍ لَا أَكَادُ أَرَى رَأْسَهُ طَوِيلًا، وَإِنَّهُ إِبْرَاهِيمُ ﷺ)). [راجع: ٨٤٥]

٣٣٥٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَمْرِو حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - وَذَكَرُوا لَهُ الدُّجَالَ بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَكْتُوبٌ كَالرَّأْيِ أَوْ كَف. ر- قَالَ: لَمْ أَسْمَعْهُ، وَلَكِنَّهُ قَالَ: أَمَّا إِبْرَاهِيمُ فَانْظُرُوا إِلَى صَاحِبِكُمْ، وَأَمَّا مُوسَى فَجَعَدُ آدَمَ عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ مَخْطُومٍ بِخَلْقَةٍ؛ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ أَنْتَحِزَ فِي الْوَادِي يُكَبِّرُ)).

[راجع: ١٥٥٥]

सहाब के लफ़्ज़ से ये इशारा आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी ज़ाते मुबारक की तरफ़ किया था क्योंकि आप हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से बहुत ज़्यादा मुशाबेह थे।

3356. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुगीरह बिन अब्दुर्रहमान अल कुरशी ने बयान किया, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने अस्सी साल की उम्र में बसौले से ख़त्ना किया। (दीगर मक़ाम: 6298)

۳۳۵۶- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا مُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيُّ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اخْتَنَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَهُوَ ابْنُ ثَمَانِينَ سَنَةً بِالْقُدُومِ)). [طرفه ۳: ۶۲۹۸]

उसी उम्र में उनको ख़त्ने का हुक्म आया, उस्तरा पास न था इसलिये हुक्मे इलाही की ता' मील में खुद ही बसौले से ख़त्ना कर लिया। अबू यअला की रिवायत में इतनी सराहत है। कुछ मुकिरीने हदीष ने इस हदीष पर भी ए' तिराज़ किया है जो उनकी हिमाक़त की दलील है। जब एक इंसान खुदकुशी कर सकता है। खुद अपने हाथ से अपनी गर्दन काट सकता है तो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का खुद बसौले से ख़त्ना कर लेना कौनसी ता' जुब की बात है और अस्सी साल की उम्र में ख़त्ने पर ए' तिराज़ करना भी हिमाक़त है जब हुक्मे इलाही हुआ, उसकी ता' मील की गई। मुकिरीने हदीष महज़ अक्ल से कोरे हैं।

हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, फिर यही हदीष नक़ल की लेकिन पहली रिवायत में क्रदूम ब तशदीदे दाल है और उसमें क्रदूम बतख़फ़ीफ़े दाल है। दोनों के मा' नी एक ही हैं या' नी बसौला (जो बड़इयों का एक मशहूर हथियार होता है उसे बस्वा भी कहते हैं)

حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ وَقَالَ: ((بِالْقُدُومِ)) مُخَفَّفَةً. تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ. وَتَابَعَهُ عَجْلَانُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. وَرَوَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ.

शुऐब के साथ इस हदीष को अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ ने भी अबुज्जिनाद से रिवायत किया है और अज्लान ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और मुहम्मद बिन अम्र ने अबू सलमा से रिवायत किया है, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से।

**तशरीह:** हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उसी उम्र में ख़त्ने का हुक्म आया, उस वक़्त उस्तरा उनके पास न था। ताख़ीर मुनासिब नहीं समझी और उसी सूरत से हुक्मे इलाही अदा किया, अबू यअला की रिवायत में उसकी सराहत मौजूद है। अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ की रिवायत को मुसद्द ने अपनी मुस्नद में और इज्लान की रिवायत को इमाम अहमद ने और मुहम्मद बिन अम्र की रिवायत को अबू यअला ने वस्ल किया है।

3357. हमसे सईद बिन तलीद रुअयनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन ब्रहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे जरीर बिन हाज़िम ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुख्तियानी ने, उन्हें मुहम्मद बिन सीसीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इब्राहीम (अलै.) ने तोरिया तीन मर्तबा के सिवा और कभी नहीं किया।

۳۳۵۷- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلَيْدٍ الرُّعَيْنِيُّ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ



(राजेअ: 2217)

السلام إلا ثلاث كذبات)).

[راجع: 2217]

तोरिया का मतलब ये है कि वाकिया कुछ और हो लेकिन कोई शख्स किसी खास मस्तिहत की वजह से उसे दो मरानी वाले अल्फाज़ के साथ इस अंदाज़ में कहे कि सुनने वाला असल वाकिये को न समझ सके बल्कि उसका ज़हन ख़िलाफ़े वाकिया चीज़ की तरफ़ मुन्ताकिल हो जाए। शरीअत ने कुछ मख़सूस हालात में उसकी इजाज़त दी है।

3358. हमसे मुहम्मद बिन महबूब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्राहीम (अलै.) ने तीन बार झूठ बोला था, दो उनमें से ख़ालिस अल्लाह अज़ज़ व जल्ल की रज़ा के लिये थे। एक तो उनका फ़र्माना (बतौर तोरिया के) कि मैं बीमार हूँ, और दूसरा उनका ये फ़र्माना कि बल्कि ये काम तो उनके बड़े (बुत) ने किया है और बयान किया कि एक बार इब्राहीम (अलै.) और सारा अलैहिस्सलाम एक ज़ालिम बादशाह की हुदूदे सल्तनत से गुज़र रहे थे। बादशाह को ख़बर मिली कि यहाँ एक शख्स आया हुआ है और उसके साथ दुनिया की एक बेहद ख़ूबसूरत औरत है। बादशाह ने इब्राहीम (अलै.) के पास अपना आदमी भेजकर उन्हें बुलवाया और हज़रत सारा (अलै.) के मुताल्लिक पूछा कि ये कौन हैं? हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया कि ऐ सारा! यहाँ मेरे और तुम्हारे सिवा और कोई भी मोमिन नहीं है और इस बादशाह ने मुझसे पूछा तो मने उससे कह दिया कि तुम मेरी (दीनी ए' तिबार से) बहन हो। इसलिये अब तुम कोई ऐसी बात न कहना जिससे मैं झूठा बनूँ। फिर उस ज़ालिम ने हज़रत सारा (अलै.) को बुलवाया और जब वो उसके पास गई तो उसने उनकी तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहा लेकिन फ़ौरन ही पकड़ लिया गया। फिर वो कहने लगा कि मेरे लिये अल्लाह से दुआ करो (कि इस मुसीबत से नजात दे) मैं अब तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचाऊँगा, चुनौचे उन्होंने अल्लाह से दुआ की और वो छोड़ दिया गया। लेकिन फिर दूसरी मर्तबा उसने हाथ बढ़ाया और इस मर्तबा भी उसी तरह पकड़ लिया गया, बल्कि उससे भी ज़्यादा सख़्त और फिर कहने लगा कि अल्लाह से मेरे लिये दुआ करो, मैं अब तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचाऊँगा। सारा (अलै.) ने दुआ की और वो छोड़ दिया गया। उसके बाद उसने अपने किसी ख़िदमतगार को बुलाकर कहा कि तुम लोग मेरे पास किसी इंसान को नहीं लाए हो, ये तो कोई सरकश जिन्न है (जाते हुए) सारा (अलै.) के लिये उसने

۳۳۵۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ إِلَّا ثَلَاثَ كَذَبَاتٍ : فَيَتَيْنِ مِنْهُنَّ فِي ذَاتِ اللَّهِ غَرٌّ وَجَلٌّ : قَوْلُهُ : «إِنِّي سَقِيمٌ» وَقَوْلُهُ : «بَلْ لَعَلَّهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا» وَقَالَ : بَيْنَا هُوَ ذَاتَ يَوْمٍ وَمَارَةٌ إِذْ أَتَى عَلَى جَبَّارٍ مِنَ الْجَبَّارَةِ ، فَقِيلَ لَهُ : إِنَّ هَا هُنَا رَجُلًا مَعَهُ امْرَأَةٌ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ ، فَأَرْسَلْ إِلَيْهِ فَسَأَلَهُ عَنْهَا فَقَالَ : مَنْ هِيَ؟ قَالَ : أُخْتِي. فَأَتَى مَارَةً قَالَ : يَا مَارَةُ لَيْسَ عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ مُؤْمِنٌ غَيْرِي وَغَيْرِكَ ، وَإِنْ هَذَا سَأَلَنِي فَأَخْبِرْتُهُ أَنَّكَ أُخْتِي ، فَلَا تُكَذِّبِينِي. فَأَرْسَلْ إِلَيْهَا ، فَلَمَّا دَخَلَتْ عَلَيْهِ ذَهَبَ بِتَوَاتُلِهَا بِيَدِهِ فَأَخَذَ. فَقَالَ : ادْعِي اللَّهَ لِي وَلَا أَصْرُكَ ، فَدَعَتْ اللَّهَ فَأَطْلِقْ. ثُمَّ تَوَاتُلَهَا الثَّانِيَةَ فَأَخَذَ مِثْلَهَا أَوْ أَشَدَّ ، فَقَالَ : ادْعِي اللَّهَ لِي وَلَا أَصْرُكَ ، فَدَعَتْ فَأَطْلِقْ. فَدَعَا بَعْضَ حَجَبِيهِ فَقَالَ : إِنَّكُمْ لَمْ تَأْتُونِي بِإِنْسَانٍ ، إِنَّمَا أَتَيْتُمُونِي بِشَيْطَانٍ. فَأَخَذَهَا هَاجِرًا. فَأَتَتْهُ وَهُوَ قَائِمٌ

हाजरा (अलै.) को ख़िदमत के लिये दिया। जब सारा आई तो इब्राहीम (अलै.) खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। आपने हाथ के इशारे से उनका हाल पूछा। उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला ने काफ़िर या (ये कहा कि) फ़ाजिर के फ़रेब को उसी के मुँह पर दे मारा और हाजरा को ख़िदमत के लिये दिया। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि ऐ बनी माउस्समाअ (ऐ आसमानी पानी की औलाद! या'नी अहले अरब) तुम्हारी वालिदा यही (हज़रत हाजरा अलै.) हैं। (राजेअ : 2217)

يُصَلِّي، فَأَوْثَمًا يَدِيهِ : مَهْمٌ؟ قَالَتْ: رَزَا اللَّهُ  
كَتَبَ الْكَافِرِ - أَوْ الْفَاجِرِ - فِي نَحْوِهِ  
وَأَخَذَهُمْ هَاجَرٌ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: بَلَدُكُمْ  
يَا بَنِي مَاءِ السَّمَاءِ)).

[راجع : ٢٢١٧]

**तशरीह :** रिवायत में हज़रत इब्राहीम (अलै.) के बारे में तीन झूठ का ज़िक्र है जो हकीकत में झूठ न थे क्योंकि लफ्ज़े झूठ अंबिया (अलै.) की शान से बहुत दूर है। ऐसे झूठ को दूसरे लफ्ज़ों में तोरिया कहा जाता है। एक तोरिया वो है जिसका ज़िक्र कुआन पाक में आया है कि उन्होंने अपनी क़ौम के साथ जाने से इंकार करते हुए कहा था कि इन्नी सक्रीमुन में अपने दुख की वजह से चलने से मजबूर हूँ। वो दुख क़ौम के अफ़आल और हरकाते बद देखकर दिल के दुखी होने पर इशारा था। अंबिया अलैहिस्सलाम व मुस्लिहीन अपनी क़ौम की ख़राबियों पर दिल से कुद्वते रहते थे। आयत का यही मतलब है। इसको तोरिया करके लफ्ज़े झूठ से ता'बीर किया गया। दूसरा ज़ाहिरी झूठ जो इस हदीष में मजकूर है हज़रत सारा (अलै.) को उस ज़ालिम बादशाह से बचाने के लिये अपनी बहन करार देना। ये दीनी ए'तिबार से था। दीनी ए'तिबार से सारे मोमिन मर्द और औरत एक-दूसरे के भाई बहन होते हैं। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मुराद यही थी। तीसरा झूठ बुतों के बारे में था कुआन मजीद में वारिद हुआ है कि उन्होंने अपनी क़ौम के बुतखाने को उजाड़कर कुल्हाड़ा बड़े बुत के हाथ में दे दिया था और दरयाफ्त करने पर फ़र्माया था कि ये काम उस बड़े बुत ने किया होगा। बुतपरस्तों की हिमाक़त ज़ाहिर करने के लिये ये तंज़ के तौर पर फ़र्माया था। बतौर तोरिया उसे भी झूठ के लफ्ज़ से ता'बीर नहीं किया गया है। बहरहाल इस हदीष पर भी मुंकिरीने हदीष का ए'तिराज़ महज़ हिमाक़त है। अल्लाह उनको नेक समझ अज़ा करे, आमीन। रिवायत में अरबों को आसमान से पानी पीने वाली क़ौम कहा गया है क्योंकि अहले अरब का ज़्यादातर गुज़रान बारिश ही पर है। अगरचे आजकल वहाँ कुँए और नहरें बनाई जा रही हैं और ये सज़्ज़दी हुकूमत के कारनामे हैं। अद्यदल्लाहु बिनस्त्रिहिलअज़ीज़ (आमीन)। हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) इस बादशाह की बेटी थीं जिसे उसने बरकत हासिल करने के लिये हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के हरम में दाख़िल कर दिया था।

3359. हमसे इब्बदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, या इब्ने सलाम ने (हमसे बयान किया इब्बदुल्लाह बिन मूसा के वास्ते से) उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जुबैर ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें हज़रत उम्मे शुरैक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने गिरगिट को मारने का हुक्म दिया था और फ़र्माया था कि उसने हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की आग पर फूँका था।

٣٣٥٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى - أَوْ  
ابْنُ سَلَامٍ عَنْهُ - أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ  
عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَبْرِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ  
الْمُسَيَّبِ عَنْ أُمِّ شَرِيكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا:  
(أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِ الْوَزَغِ وَقَالَ

(2307)

كَانَ يَنْفُخُ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ)).

[२३०७]

या'नी उसने फूँके मारकर आग को और भड़काने की कोशिश की थी। ये गिरगिट एक मशहूर ज़हरीला जानवर है जो हर वक़्त अपने रंग भी बदलता रहता है। जिसे मारने का हुक्म खुद हदीज़ शरीफ़ में है और उसे मारने पर प्रवाब भी है। रिवायत में उसकी हरकते बद का ज़िक्र है, ये भी वाक़िया बिलकुल बरहक़ है क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जो फ़र्मा दिया उसमें शक व शुब्हा हो ही नहीं सकता।

3360. हमसे उमर बिन हफ़्म बिन गयाज़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अल्क्रमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत उतरी, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी किस्म के जुल्म की मिलावट न की, तो हमने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हममें ऐसा कौन होगा जिसने अपनी जान पर जुल्म न किया होगा? हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाक़िया वो नहीं जो तुम समझते हो, जिसने अपने ईमान के साथ जुल्म की मिलावट न की, (में जुल्म से मुराद) शिर्क है क्या तुमने लुक्मान (अलै.) की अपने बेटे को ये नसीहत नहीं सुनी कि, ऐ बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, बेशक शिर्क बहुत ही बड़ा जुल्म है। (राजेअ: 32)

किरमानी ने कहा कि आयते मज़क़ूर में बाद ही हज़रत इब्राहीम (अलै.) का ज़िक्र आया है। यही बाब से मुनासबत है। कुछ ने कहा कि आयत अल्लज़ीन आमनू व लम यल्बिसू ईमानहुम बिजुल्म (अल अन्आम: 82) हज़रत इब्राहीम (अलै.) ही का मक़ूला है और हाकिम ने हज़रत अली (रज़ि.) से निकाला कि ये आयत हज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनके साथ वालों के हक़ में है।

**बाब 9 : सूरह साफ़फ़ात में जो लफ़ज़ यज़िफ़्फून् वारिद हुआ है, उसके मा'नी हैं दौड़कर चले**

3361. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम बिन नसर ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान ने, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक मर्तबा गोश्त पेश किया गया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला क्रयामत के दिन अव्वलीन व आख़िरीन को एक हमवार और वसीअ मैदान में जमा करेगा, इस तरह कि पुकारने वाला सबको अपनी बात सुना सकेगा और देखने वाला सबको एक साथ देख सकेगा (क्योंकि मैदान हमवार होगा, ज़मीन की तरह

۳۳۶۰- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا حَدَّثَنَا أَبِي الْأَعْمَشُ قَالَ : حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا لَا نَظْلِمُ نَفْسَهُ؟ قَالَ: ((لَيْسَ كَمَا تَقُولُونَ، لَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ)) : بِشِرْكٍ. أَوَلَمْ تَسْمَعُوا إِلَى قَوْلِ لُقْمَانَ لِبْنِهِ ﴿يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ ((راجع: ۳۲)

۹- بَابُ يَزِفُونَ : التَّسْلَانُ فِي

الْمَشْيِ

۳۳۶۱- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ نَصْرِ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَّا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا بَلَغَهُمْ، فَقَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ يَجْمَعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَيَسْمِعُهُمُ الدَّاعِيَ وَيَفْقَهُمُ الْبَصَرُ، وَتَذْنُو الشَّمْسُ

गोल न होगा) और लोगों से सूरज बिलकुल करीब हो जाएगा। फिर आपने शिफाअत का जिक्र किया कि लोग हजरत इब्राहीम (अलै.) की खिदमत में हाजिर होंगे और अर्ज करेंगे कि आप रूए ज़मीन पर अल्लाह के नबी और खलील हैं। हमारे लिये अपने रब के हुज़ूर में शिफाअत कीजिए, फिर उन्हें अपने झूठ (तोरिया) याद आ जाएंगे और कहेंगे कि आज तो मुझे अपनी ही फिक्र है। तुम लोग हजरत मूसा (अलै.) के पास जाओ। अबू हुदैरह (रज़ि.) के साथ हजरत अनस (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से इस हदीष की रिवायत किया है। (राजेअ: 3340)

इस हदीष से उन जाहिल नादान मुसलमानों की मज़मूत निकली जो अपने मस्नूद इमामों और पीरों पर भरोसा किये बैठे हैं कि क़ायमत के दिन वो उनको बख़्शवा लेंगे। मुक़ल्लिदीने अइम्म-ए-अरबआ में से अक़बर जाहिलों का यही ख़याल है कि उनके इमाम उनकी बख़्शिश के ज़िम्मेदार हैं, ऐसे नाक़ि़स ख़यालात से हर मुसलमान को बचना ज़रूरी है।

3362. मुझसे अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, हमसे बहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे अय्युब सुडितयानी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन सईद बिन जुबैर ने, उनसे उनके वालिद सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह इस्माईल (अलै.) की वालिदा (हजरत हाजरा) पर रहम करे, अगर उन्होंने जल्दी न की होती (और ज़मज़म के पानी के गिर्द मुँडेर न बनाती) तो आज वो एक बहता हुआ चश्मा होता। (राजेअ: 2368)

3363. मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने कहा कि हमसे इसी तरह ये हदीष इब्ने जुरैज ने बयान किया लेकिन क़बीर बिन क़बीर ने मुझसे ये बयान किया कि मैं और इब्मान बिन अबू सुलैमान दोनों सईद बिन जुबैर के पास बैठे हुए थे, इतने में उन्होंने कहा कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने मुझसे ये हदीष इस तरह बयान नहीं की बल्कि यूँ कहा कि इब्राहीम (अलै.) अपने बेटे इस्माईल (अलै.) और उनकी वालिदा हजरत हाजरा (अलै.) को लेकर मक्का की सरज़मीन की तरफ़ आए हजरत हाजरा (अलै.) इस्माईल (अलै.) को दूध पिलाती थीं। उनके साथ एक पुरानी मश्क थी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इस हदीष को मर्फूअ नहीं किया। (राजेअ: 2368)

مِنْهُمْ - فَذَكَرَ حَدِيثَ الشَّفَاعَةِ - فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُونَ : أَنْتَ نَبِيُّ اللَّهِ وَخَلِيلُهُ مِنَ الْأَرْضِ، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، فَيَقُولُ - فَذَكَرَ كَذْبَابَهُ - نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى مُوسَى)). فَانْفَعَهُ أُنْسٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

(راجع: ٣٣٤٠)

٣٣٦٢ - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعِيدٍ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((يَرْحُمُ اللَّهُ أُمَّ إِسْمَاعِيلَ، لَوْ لَا أَنَّهَا عَجَلَتْ لَكَانَ زَمْزَمُ عَيْنًا مَعِينًا)). (راجع: ٢٣٦٨)

٣٣٦٣ - قَالَ الْأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَمَّا كَثِيرُ بْنُ كَثِيرٍ فَحَدَّثَنِي قَالَ : ((إِنِّي وَغُلَمَانُ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ جُلُوسٌ مَعَ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ فَقَالَ : مَا هَكَذَا حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ : أَقْبَلَ إِبْرَاهِيمُ بِإِسْمَاعِيلَ وَأُمُّهُ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ - وَهِيَ تُرَضِّعُهُ - مَعَهَا شاةٌ لَمْ يَرْفَعْهُ، ثُمَّ جَاءَ بِهَا إِبْرَاهِيمُ وَبِأَيْهَا إِسْمَاعِيلُ)). (راجع: ٢٣٦٨)

**तरीह:** हजरत इब्राहीम (अलै.) वही मश्क भर पानी हजरत हाजरा को देकर उनको और उनके दूध पीते बच्चे को उस उजाड़ बयाबान जंगल में बेआब व दाना महज़ अल्लाह के भरोसे पर छोड़कर चले आए। जब वो पानी ख़त्म हो

गया और बच्चा प्यास से बेकरार होने लगा तो हज़रत हाजरा (अलै.) घबराकर पानी की तलाश में निकलीं, उन्होंने सफ़ा व मरवा पहाड़ियों के बीच सात चकर लगाए लेकिन पानी का निशान न मिला। आखिर हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) उतरे और उन्होंने ज़मीन पर अपना एक पर मारा जिससे ज़मज़म का चश्मा ज़ाहिर हो गया। हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) ने उस चश्मे का पानी एक मेड़ बनाकर रोक दिया। वो हौज़ की शक्ल में हो गया। आज तक ये चश्मा कायम है जिसको ज़मज़म कहते हैं और उसका पानी बरकत वाला है। हदीष में आया है कि ज़मज़म का पानी जिस मक़सद के लिये पिया जाए अल्लाह पाक उसे पूरा कर देता है। इस हदीष में ज़मज़म के बारे में ये अल्फ़ाज़ वारिद हैं कि अगर हज़रत हाजरा उस पर मेड़ न लगातीं तो लकान ऐनन मईनन वो एक बहता हुआ चश्मा होता। कुछ तर्जुमा करने वालों ने यहाँ तर्जुमा में ये और इज़ाफ़ा कर दिया है कि (रूप ज़मीन पर) वो एक बहता हुआ चश्मा होता। रूप ज़मीन से तर करने वालों की अगर सारी ज़मीन या नी रबअ मस्कन मुराद है तो ये खुद उनका इज़ाफ़ा है। हदीष में सिर्फ़ यही है कि वो एक बहता हुआ चश्मा होता। तर्जुमा में ऐसे इज़ाफ़ात ही से मुकिरीने हदीष को मौक़ा मिला है कि वो हदीष के खिलाफ़ अपनी हफ़्वाते बातिला से अवाम को गुमराह करें। अज़ाज़नल्लाह अन्हुम आमीन।

3364. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मज़मर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुखितयानी और क़शीर बिन क़शीर बिन मुत्तलिब बिन अबी विदाआ ने। ये दोनों कुछ ज़्यादा और कमी के साथ बयान करते हैं, वो दोनों सईद बिन जुबैर से कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, औरतों में कमरपट्टा बाँधने का रिवाज़ इस्माईल (अलै.) की वालिदा (हाजरा अलै.) से चला है। सबसे पहले उन्होंने कमरपट्टा इसलिये बाँधा था ताकि सारा (अलै.) उनका सुराग़ न पाएँ (वो जल्द भाग जाएँ) फिर उन्हें और उनके बेटे इस्माईल को साथ लेकर इब्राहीम (अलै.) मक्का में आए, उस वक़्त अभी वो इस्माईल (अलै.) को दूध पिलाती थीं। इब्राहीम (अलै.) ने दोनों को एक बड़े दरख़्त के पास बिठा दिया जो उस जगह था जहाँ अब ज़मज़म है मस्जिद की बुलन्द जानिब में। उन दिनों मक्का में कोई इंसान नहीं था। इसलिये वहाँ पानी भी नहीं था। इब्राहीम (अलै.) ने उन दोनों को वहीं छोड़ दिया और उनके लिये एक चमड़े के थैले में ख़जूर और एक मशक़ में पानी रख दिया। फिर इब्राहीम (अलै.) (अपने घर के लिये) ख़ाना हुए। उस वक़्त इस्माईल (अलै.) की वालिदा उनके पीछे पीछे आई और कहा कि ऐ इब्राहीम (अलै.)! इस ख़ुशक जंगल में जहाँ कोई भी आदमी और कोई चीज़ मौजूद नहीं, आप हमें छोड़कर कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने कई दफ़ा इस बात को दोहराया लेकिन इब्राहीम (अलै.) उनकी तरफ़ देखते नहीं थे। आख़िर हाजरा (अलै.) ने पूछा क्या अल्लाह तआला ने आपको उसका हुक्म दिया है? इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया कि हाँ, इस पर हाजरा (अलै.) बोल उठी कि

۳۳۶۴- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ السَّخِينِيِّ وَكَثِيرِ بْنِ كَثِيرٍ بْنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَقَّاعَةَ - يَزِيدُ أَخْبَرَنَا عَلَى الْآخَرِ - عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ((أَوَّلُ مَا أَخَذَتِ النِّسَاءُ الْمِنْطَلِقَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَسْمَاعِيلُ أَخَذَتْ مِنْطَلِقًا لِعَمَلِي أَثَرًا عَلَى سَارَةِ، ثُمَّ جَاءَ بِهَا إِبْرَاهِيمُ وَبَابِهَا إِسْمَاعِيلُ. وَهِيَ تَرْبِعُهُ - حَتَّى وَضَعَهُمَا عِنْدَ الْبَيْتِ عِنْدَ ذُوخَةِ فَوْقَ زَمْزَمٍ فِي أَعْلَى الْمَسْجِدِ، وَلَيْسَ بِمَكَّةَ يَوْمَئِذٍ أَخَذَ، وَلَيْسَ بِهَا مَاءٌ لَوْضَعَهُمَا هُنَاكَ، وَوَضَعَ عِنْدَهُمَا جِرَابًا فِيهِ تَمْرٌ وَسِقَاءٌ فِيهِ مَاءٌ، ثُمَّ قَفَى إِبْرَاهِيمُ مِنْطَلِقًا، فَبَيَعَهُ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ فَقَالَتْ: يَا إِبْرَاهِيمُ أَيْنَ تَذْهَبُ وَتَتْرَكُنَا بِهَذَا الْوَادِي الَّذِي لَيْسَ فِيهِ إِنْسٌ وَلَا شَيْءٌ، فَقَالَتْ لَهُ ذَلِكَ مِرَارًا، وَجَعَلَ لَا يَلْتَفِتُ إِلَيْهَا. فَقَالَتْ لَهُ: اللَّهُ الَّذِي أَمَرَكَ بِهَذَا؟ قَالَ:

फिर अल्लाह तआला हमारी हिफाजत करेगा, वो हमको हलाक नहीं करेगा। चुनौचे वो वापस आ गई और इब्राहीम (अलै.) खाना हो गये जब वो षनिय्या पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ से वो दिखाई नहीं देते थे तो इधर रुख किया, जहाँ अब का'बा है (जहाँ पर हाजरा और इस्माईल अलै. को छोड़कर आए थे) फिर आपने दोनों हाथ उठाकर ये दुआ की ऐ मेरे रब! मैंने अपनी औलाद को उस बेआब व दाना मैदान में ठहराया है (सूरह इब्राहीम) यश्कुरून तक। इधर इस्माईल (अलै.) की वालिदा उनको दूध पिलाने लगीं और खुद पानी पीने लगीं। आखिर जब मशक का सारा पानी खत्म हो गया तो वो प्यासी रहने लगीं और उनके लख्खे जिगर भी प्यासे रहने लगे। वो अब देख रही थीं कि सामने उनका बेटा (प्यास की शिद्दत से) पेच व ताब खा रहा है या (कहा कि) ज़मीन पर लौट रहा है। वो वहाँ से हट गई क्योंकि उस हालत में बच्चे को देखने से उनका दिल बेचैन होता था। सफ़ा पहाड़ी वहाँ से नज़दीक तर थी। वो (पानी की तलाश में) उस पर चढ़ गई और वादी की तरफ़ रुख करके देखने लगीं कि कहीं कोई इंसान नज़र आए लेकिन कोई इंसान नज़र नहीं आया, वो सफ़ा से उतर गई और जब वादी में पहुँची तो अपना दामन उठा लिया (ताकि दौड़ते वक़्त न उलझें) और किसी परेशान हाल की तरह दौड़ने लगीं फिर वादी से निकलकर मरवा पहाड़ी पर आई और उस पर खड़ी होकर देखने लगीं कि कहीं कोई इंसान नज़र आए लेकिन कोई नज़र नहीं आया। इस तरह उन्होंने सात चक्कर लगाए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (सफ़ा व मरवा के दरम्यान) लोगों के लिये दौड़ना इसी वजह से मशरूअ हुआ। (सातवीं मर्तबा) जब वो मरवा पर चढ़ीं तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी, उन्होंने कहा, ख़ामोश! ये खुद अपने ही से वो कह रही थीं और फिर आवाज़ की तरफ़ उन्होंने कान लगा दिये। आवाज़ अब भी सुनाई दे रही थी और फिर उन्होंने कहा कि तुम्हारी आवाज़ मैंने सुनी। अगर तुम मेरी कोई मदद कर सकते हो तो करो। क्या देखती हैं कि जहाँ अब ज़मज़म (का कुँआ) है, वहीं एक फ़रिश्ता मौजूद है। फ़रिश्ते ने अपनी ऐड़ी से ज़मीन में गड्ढा कर दिया, या ये कहा कि अपने बाजू से, जिससे वहाँ पानी उबल आया। हज़रत हाजरा ने उसे हौज़ की शकल में बना दिया और अपने हाथ से इस तरह कर दिया (ताकि पानी बहने न पाए) और चुल्लू से पानी

نَعْمَ. قَالَتْ : إِذْنٌ لَّائِيْهِمْ. ثُمَّ رَجَعَتْ. فَانْطَلَقَ اِبْرَاهِيْمُ حَتّٰى اِذَا كَانَ عِنْدَ النَّبَةِ حَيْثُ لَا يَرُوْنَهُ اسْتَقْبَلَ بِوَجْهِهِ النَّبْتَ ثُمَّ دَعَا بِهٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ وَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ﴿رَبَّنَا اِنِّىْ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ نَبَتِكَ الْمَحْرُومِ - حَتّٰى يَبْلُغَ - يَشْكُرُوْنَ﴾. وَجَعَلْتُ اَمْ اِسْمَاعِيْلَ تَرْوِىْعُ اِسْمَاعِيْلَ وَتَشْرَبُ مِنْ ذٰلِكَ الْمَاءِ، حَتّٰى اِذَا نَفِدَ مَا فِى السَّقَاءِ غَطِشْتُ وَغَطِشْتُ اَنْفَهَا، وَجَعَلْتُ تَنْظُرُ اِلَيْهِ يَتَلَوٰى - اَوْ قَالَ: يَتَلَبّطُ - فَانْطَلَقْتُ كَوَاهِمَةٍ اَنْ تَنْظُرُ اِلَيْهِ، فَوَجَدْتُ الصَّفَا اَقْرَبَ جَمَلٍ فِى الْاَرْضِ يَلِيْهَا، فَقَامْتُ عَلَيْهِ، ثُمَّ اسْتَقْبَلْتُ الْوَادِىَّ تَنْظُرُ هَلْ تَرٰى اَحَدًا، فَلَمْ تَرَ اَحَدًا، فَهَبَطْتُ مِنَ الصَّفَا، حَتّٰى اِذَا بَلَغْتُ الْوَادِىَّ رَفَعْتُ طَرَفَ بَرِيْعَهَا، ثُمَّ سَعَتُ سَعًى الْاِنْسَانِ الْمَجْهُوْدِ حَتّٰى جَاوَزْتُ الْوَادِىَّ، ثُمَّ اَتَتِ الْمَرْوَةَ لِقَامَتْ عَلَيْهَا وَنَظَرْتُ هَلْ تَرٰى اَحَدًا، فَلَمْ تَرَ اَحَدًا، فَفَعَلْتُ ذٰلِكَ سَبْعَ مَرَّاتٍ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَذٰلِكَ سَعًى النَّاسِ بَيْنَهُمَا)). فَلَمَّا اَشْرَفْتُ عَلَى الْمَرْوَةِ سَمِعْتُ صَوْتًا فَقَالَتْ: صَوْتُ حُرَيْدٍ نَفْسَهَا - ثُمَّ تَسَمَعْتُ اَيْضًا فَقَالَتْ : قَدْ اَسْمَعْتُ اِنْ كَانَ عِنْدَكَ غَوَاثٌ، فَاِذَا هِيَ بِالْمَلِكِ عِنْدِ مَوْضِعِ زَمْزَمَ، فَهَبْتُ بِعَقْبِهِ

अपने मशकीजे में डालने लगीं। जब वो भर चुकीं तो वहाँ से चश्मा फिर उबल पड़ा। इब्ने अब्बास (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह! उम्मे इस्माईल (अलै.) पर रहम करे, अगर ज़मज़म को उन्होंने यूँ ही छोड़ दिया होता या आपने फ़र्माया कि चुल्लू से मशकीजे न भरा होता तो ज़मज़म एक बहते हुए चश्मे की मूरत में होता। बयान किया कि फिर हाजरा (अलै.) ने खुद भी वो पानी पिया और अपने बेटे को भी पिलाया। उसके बाद उनसे फ़रिश्ते ने कहा कि अपने बर्बाद होने का डर हर्गिज़ न करना क्योंकि यहीं अल्लाह का घर होगा, जिसे ये बच्चा और इसका बाप ता'मीर करेंगे और अल्लाह अपने बन्दों को ज़ाये नहीं करता, अब जहाँ बैतुल्लाह है, उस वक़्त वहाँ टीले की तरह ज़मीन उठी हुई थीं। सैलाब का धारा आता और उसके दाएँ-बाएँ से ज़मीन काटकर ले जाता। इस तरह वहाँ के दिन व रात गुज़रते रहे और आखिर एक दिन क़बीला ज़ुरहुम के कुछ लोग वहाँ से गुज़रे या (आपने ये फ़र्माया कि) क़बीला ज़ुरहुम के चन्द घराने मुक़ामे कुदाअ (मक्का का बालाई हिस्सा) के रास्ते से गुज़रकर मक्का के नशीबी इलाक़े में उन्होंने पड़ाव किया (क़रीब ही) उन्होंने मंडलाते हुए कुछ परिन्दे देखे, उन लोगों ने कहा कि ये परिन्दा पानी पर मंडला रहा है। हालाँकि उससे पहले जब भी हम इस मैदान से गुज़रे हैं यहाँ पानी का नाम व निशान न था। आखिर उन्होंने अपना एक आदमी या दो आदमी भेजे। वहाँ उन्होंने वाक़ई पानी पाया चुनौचे उन्होंने वापस आकर पानी की ख़बर दी। अब ये सब लोग यहाँ आए। रावी ने बयान किया कि इस्माईल (अलै.) की बालिदा उस वक़्त पानी पर ही बैठी हुई थीं। उन लोगों ने कहा कि क्या आप हमे अपने पड़ौस में पड़ाव डालने की इज़ाज़त देंगी। हाजरा (अलै.) ने फ़र्माया कि हाँ लेकिन इस शर्त पर कि पानी पर तुम्हारा कोई हक़ न होगा। उन्होंने उसे तस्लीम कर लिया। इब्ने अब्बास (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अब उम्मे इस्माईल को पड़ौसी मिल गये। इंसानों की मौजूदगी उन के लिये दिलजोई का बाज़िब हुई। उन लोगों ने खुद भी यहाँ क़याम किया और अपने क़बीले के दूसरे लोगों को भी बुलवा लिया और वो सब लोग भी यहीं आकर बस गये। इस तरह यहाँ उनके कई घराने आकर आबाद हो गये और बच्चा (इस्माईल अलै. ज़ुरहुम के बच्चों में)

— أَوْ قَالَ بِجَنَاحِهِ — حَتَّى ظَهَرَ الْمَاءُ، فَجَعَلَتْ تَحْوِضَهُ وَقَوَّلَ يَتِيمًا هَكَذَا، وَجَعَلَتْ تَعْرِفُ مِنَ الْمَاءِ فِي سِفَاتِهَا وَهُوَ يَقُورُ بَعْدَ مَا تَعْرِفُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يُوحَمُّ اللَّهُ أَمْ إِسْمَاعِيلُ لَوْ تَوَكَّتْ زَمْزَمٌ — أَوْ قَالَ: لَوْ لَمْ تَعْرِفُ مِنَ الْمَاءِ لَكَانَتْ زَمْزَمٌ عَيْنًا مَعِينًا)). قَالَ: فَتَشْرِبَتْ وَأَرْضَعَتْ وَلَدَهَا، فَقَالَ لَهَا الْمَلَكُ: لَا تَحَاوُوا الضَّيْعَةَ، فَإِنَّ هَا هُنَا بَيْتُ اللَّهِ يَتَنِي هَذَا الْغَلَامَ وَأَبُوهُ، وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَهْلَهُ. وَكَانَ الْبَيْتُ مُرْتَفِعًا مِنَ الْأَرْضِ كَالْوَابِيَةِ، تَأْتِيهِ السُّيُوفُ فَتَأْخُذُ عَنْ يَمِينِهِ وَشِمَالِهِ، فَكَانَتْ كَذَلِكَ حَتَّى مَوْتِ بَيْتِ بَنِي جَرْهُمَ — أَوْ أَهْلِ بَيْتِ بَنِي جَرْهُمَ — مُقْبِلِينَ مِنْ طَرَفِي كَذَا، فَتَزَلُّوا فِي أَسْفَلِي مَكَّةَ، فَرَأَوْا طَائِرًا غَائِبًا، فَقَالُوا: إِنَّ هَذَا الطَّائِرَ لَيَذُورُ عَلَى مَاءٍ، لَفَهَدْنَا بِهِذَا الْوَادِي وَمَا فِيهِ مَاءٌ، فَأَرْسَلُوا جَرِيًّا أَوْ جَرَّتَيْنِ فَإِذَا هُم بِالْمَاءِ، فَرَجَعُوا فَخَبَرُوهُمْ بِالْمَاءِ، فَاقْبَلُوا — قَالَ وَأُمُّ إِسْمَاعِيلَ عِنْدَ الْمَاءِ — فَقَالُوا: أَتَأْذِنِينَ لَنَا أَنْ نَنْزِلَ عِنْدَكَ؟ فَقَالَتْ: نَعَمْ، وَلَكِنْ لَا حَقَّ لَكُمْ فِي الْمَاءِ. قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((قَالَ ذَلِكَ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ وَهِيَ تُحِبُّ الْإِنْسَ)), فَزَلُّوا، وَأَرْسَلُوا إِلَى أَهْلِهِمْ

जवान हुआ और उनसे अरबी सीख ली। जवानी में इस्माईल (अलै.) ऐसे खूबसूरत थे कि आप पर सबकी नज़रें उठती थीं और सबसे ज्यादा आप भले लगते थे। चुनौचे जुरहुम वालों ने आपकी अपने कबीले की एक लड़की से शादी कर दी। फिर इस्माईल (अलै.) की बालिदा (हाजरा अलै.) का इंतिकाल हो गया। इस्माईल (अलै.) की शादी के बाद इब्राहीम (अलै.) यहाँ अपने छोड़े हुए खानदान को देखने आए। इस्माईल (अलै.) घर पर नहीं थे। इसलिये आपने उनकी बीवी से इस्माईल (अलै.) के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि रोज़ी की तलाश में कहीं गये हैं। फिर आपने उनसे उनकी मआश वग़ैरह के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि हालत अच्छी नहीं है, बड़ी तंगी से गुज़रे औकात होती है। इस तरह उन्होंने शिकायत की। इब्राहीम (अलै.) ने उनसे फ़र्माया कि जब तुम्हारा शौहर आए तो उनसे मेरा सलाम कहना और ये भी कहना कि वो अपने दरवाज़े की चौखट बदल डालें। फिर जब इस्माईल (अलै.) वापस तशरीफ़ लाए तो जैसे उन्होंने कुछ उंसियत सी, महसूस की और दरयाफ़्त किया, क्या कोई साहब यहाँ आए थे? उनकी बीवी ने बताया कि हाँ एक बुजुर्ग इस इस शक्ल के यहाँ आए थे और आपके बारे में पूछ रहे थे, मैंने उन्हें बताया (कि आप बाहर गये हुए हैं) फिर उन्होंने पूछा कि तुम्हारी गुज़रे औकात का क्या हाल है? तो मैंने उनसे कहा कि हमारी गुज़रे औकात बड़ी तंगी से होती है। इस्माईल (अलै.) ने दरयाफ़्त किया कि उन्होंने तुम्हें कुछ नसीहत भी की थी? उनकी बीवी ने बताया कि हाँ मुझसे उन्होंने कहा था कि आपको सलाम कह दूँ और वो ये भी कह गये हैं कि आप अपने दरवाज़े की चौखट बदल दें। इस्माईल (अलै.) ने फ़र्माया कि वो बुजुर्ग मेरे बालिद थे और मुझे ये हुक्म दे गये हैं कि मैं तुम्हें जुदा कर दूँ, अब तुम अपने घर जा सकती हो। चुनौचे इस्माईल (अलै.) ने उन्हें तलाक़ दे दी और बनी जुरहुम ही में एक दूसरी औरत से निकाह कर लिया। जब तक अल्लाह तआला को मंज़ूर रहा, इब्राहीम (अलै.) उनके यहाँ नहीं आए। फिर जब कुछ दिनों के बाद वो तशरीफ़ लाए तो इस मर्तबा भी इस्माईल (अलै.) घर पर मौजूद नहीं थे। आप उनकी बीवी के यहाँ गये और उनसे इस्माईल (अलै.) के बारे में पूछा। उन्होंने

فَنَزَلُوا مَعَهُمْ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِهَا أَهْلُ  
أَيَّامٍ مِنْهُمْ، وَشَبَّ الْغُلَامُ وَتَعَلَّمَ الْعَرَبِيَّةَ  
مِنْهُمْ، وَأَنْفَسَهُمْ وَأَغْنَتْهُمْ حِينَ شَبَّ،  
فَلَمَّا أَذْرَكَ زَوْجَهُ امْرَأَةً مِنْهُمْ. وَمَاتَتْ أُمُّ  
إِسْمَاعِيلَ، فَجَاءَ إِبْرَاهِيمُ بَعْدَ مَا تَزَوَّجَ  
إِسْمَاعِيلُ يُطَالِعُ تَرْكَتَهُ، فَلَمْ يَجِدْ  
إِسْمَاعِيلَ، فَسَأَلَ امْرَأَتَهُ عَنْهُ فَقَالَتْ:  
خَرَجَ يَتَّبِعِي لَنَا، ثُمَّ سَأَلَهَا عَنْ غَيْبِهِمْ  
وَهَيْبَتِهِمْ فَقَالَتْ: نَحْنُ بَشَرٌ، نَحْنُ فِي  
طَبِيقٍ وَشِدَّةٍ. فَشَكَتَ إِلَيْهِ. قَالَ: فَإِذَا جَاءَ  
زَوْجُكَ فَأَقْرِئِي عَلَيْهِ السَّلَامَ وَقُولِي لَهُ  
يُغَيِّرُ عَتَبَةَ بَابِهِ. فَلَمَّا جَاءَ إِسْمَاعِيلُ كَانَهُ  
أَنْتَرُ شَيْئًا فَقَالَ: هَلْ جَاءَكُمْ مِنْ أَحَدٍ؟  
قَالَتْ: نَعَمْ، خَاءَنَا شَيْخٌ كَذَّاءٌ وَكَذَّاءٌ،  
فَسَأَلْنَا عَنْكَ فَأَخْبَرْتُهُ، وَسَأَلَنِي كَيْفَ  
عَيْشِنَا، فَأَخْبَرْتُهُ أَنَا فِي جَهْدٍ وَشِدَّةٍ. قَالَ:  
فَهَلْ أَوْصَاكَ بِشَيْءٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَمَرَنِي  
أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ السَّلَامَ، وَيَقُولَ: غَيْرُ عَتَبَةٍ  
بَابِكَ. قَالَ: ذَاكَ أَبِي، قَدْ أَمَرَنِي أَنْ  
أَفَارِقَكَ، الْحَقِّي بِأَهْلِكَ. فَطَلَّقَهَا، وَتَزَوَّجَ  
مِنْهُمْ أُخْرَى. فَلَبِثَ عَنْهُمْ إِبْرَاهِيمُ مَا شَاءَ  
اللَّهُ، ثُمَّ أَنَاهُمْ بَعْدَ فَلَمْ يَجِدْهُ، فَدَخَلَ  
عَلَى امْرَأَتِهِ فَسَأَلَهَا عَنْهُ فَقَالَتْ: خَرَجَ  
يَتَّبِعِي لَنَا. قَالَ: كَيْفَ أَنْتُمْ؟ وَسَأَلَهَا عَنْ  
غَيْبِهِمْ وَهَيْبَتِهِمْ فَقَالَتْ: نَحْنُ بِخَيْرٍ  
وَسَعَةٍ، وَأَنْتَ عَلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ. فَقَالَ:  
مَا طَعَامُكُمْ؟ قَالَتْ: اللَّحْمُ. قَالَ فَمَا



बताया कि हमारे लिये रोज़ी तलाश करने गये हैं। इब्राहीम (अलै.) ने पूछा कि तुम लोगों का हाल कैसा है? आपने उनकी गुज़र-बसर और दूसरे हालात के बारे में पूछा, उन्होंने बताया कि हमारा हाल बहुत अच्छा है, बड़ी फ़राख़ी है, उन्होंने इसके लिये अल्लाह की ता'रीफ़ व प्रशंसा की। इब्राहीम (अलै.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग खाते क्या हो? उन्होंने बताया कि गोश्त! आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि पीते क्या हो? बताया कि पानी! इब्राहीम (अलै.) ने उनके लिये दुआ की, ऐ अल्लाह! इनके गोश्त और पानी में बरकत नाज़िल फ़र्मा। औहज़रत (ع) ने फ़र्माया कि उन दिनों उन्हें अनाज मयस्सर नहीं था। अगर अनाज भी उनके खाने में शामिल होता तो ज़रूर आप उसमें भी बरकत की दुआ करते। सिर्फ़ गोश्त और पानी की ख़ुराक में हमेशा गुज़ारा करना मक्का के सिवा और किसी ज़मीन पर भी मुवाफ़िक़ नहीं पड़ता। इब्राहीम (अलै.) ने (जाते हुए) उससे फ़र्माया कि जब तुम्हारे शौहर वापस आ जाएँ तो उनसे मेरा सलाम कहना और उनसे कह देना कि वो अपने दरवाज़े की चौखट बाक़ी रखें। जब इस्माईल (अलै.) तशरीफ़ लाए तो पूछा कि क्या यहाँ कोई आया था? उन्होंने बताया कि जी हाँ एक बुजुर्ग, बड़ी अच्छी शक्ल व सूरत के आये थे। बीबी ने आने वाले बुजुर्ग की बड़ी ता'रीफ़ की फिर उन्होंने मुझसे आपके बारे में पूछा (कि कहाँ है?) और मैंने बता दिया, फिर उन्होंने पूछा कि तुम्हारी गुज़र बसर का क्या हाल है? तो मैंने बताया कि हम अच्छी हालत में हैं। इस्माईल (अलै.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि क्या उन्होंने तुम्हें कोई वसियत भी की थी? उन्होंने कहा जी हाँ! उन्होंने आपको सलाम कहा था और हुक्म दिया था कि अपने दरवाज़े की चौखट को बाक़ी रखें। इस्माईल (अलै.) ने फ़र्माया कि ये बुजुर्ग मेरे वालिद थे, चौखट तुम हो और आप मुझे हुक्म दे गये हैं कि मैं तुम्हें अपने साथ रखूँ। फिर जितने दिनों अल्लाह तआला को मंज़ूर रहा, के बाद इब्राहीम (अलै.) उनके यहाँ तशरीफ़ लाए तो देखा कि इस्माईल (अलै.) ज़मज़म के करीब एक बड़े पेड़ के साये में (जहाँ इब्राहीम अलै. उन्हें छोड़ गये थे) अपने तीर बना रहे हैं। जब इस्माईल (अलै.) ने इब्राहीम (अलै.) को देखा तो उनकी तरफ़ खड़े हो गये और जिस तरह एक बाप अपने बेटे के साथ और बेटा

شَرَابُكُمْ؟ قَالَتْ : الْمَاءُ . قَالَ : اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي اللَّحْمِ وَالْمَاءِ . قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ يَوْمَئِذٍ حُبٌّ)) وَلَوْ كَانَ لَهُمْ دَعَا لَهُمْ فِيهِ، قَالَ : فَهَمَا لَا يَخْلُو عَلَيْهِمَا أَحَدٌ بِغَيْرِ مَكَّةَ إِلَّا لَمْ يُؤْثِقَاهُ . قَالَ : فَإِذَا جَاءَ زَوْجُكَ فَأَقْرِئْهُ عَلَيْهِ السَّلَامَ . وَمُرِيهِ يُبْتُ غُبَّةَ بَابِهِ . فَلَمَّا جَاءَ إِسْمَاعِيلُ قَالَ : هَلْ أَتَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ؟ قَالَتْ : نَعَمْ ، أَنَا شَيْخٌ حَسَنُ الْهَيْئَةِ - وَأَتَيْتُ عَلَيْهِ - فَسَأَلَنِي عَنْكَ فَأَخْبَرْتُهُ ، فَسَأَلَنِي كَيْفَ عَيْشُنَا فَأَخْبَرْتُهُ أَنَا بِخَيْرٍ . قَالَ : فَأَوْصَاكَ بِشَيْءٍ؟ قَالَتْ : نَعَمْ ، هُوَ يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامَ ، وَيَأْمُرُكَ أَنْ تُبْتُ غُبَّةَ بَابِكَ . قَالَ : ذَاكَ أَبِي ، وَأَتَيْتُ الْعَبَةَ ، أَمَرَنِي أَنْ أُمْسِكَ . ثُمَّ لَبِثْتُ عَنْهُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ ، ثُمَّ جَاءَ بَعْدَ ذَلِكَ وَإِسْمَاعِيلُ يَبْرِي نَبْلًا لَهُ تَحْتَ دَوْحَةٍ قَرِيبًا مِنْ رَمْزٍ ، فَلَمَّا رَأَاهُ قَامَ إِلَيْهِ ، فَصَنَعَا كَمَا يَصْنَعُ الْوَالِدُ بِالْوَلَدِ وَالْوَلَدُ بِالْوَالِدِ . ثُمَّ قَالَ : يَا إِسْمَاعِيلُ ، إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي بِأَمْرٍ . قَالَ : فَاصْنَعْ مَا أَمَرَكَ رَبُّكَ . قَالَ : وَتَعَيَّنِي؟ قَالَ : وَأَعْيُنُكَ . قَالَ : فَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَبْنِيَ هَاهُنَا بَيْنَنَا - وَأَشَارَ إِلَى أُكْحَمَةِ مُرْتَفَعَةٍ عَلَى مَا حَوْلَهَا - قَالَ : فَعِنْدَ ذَلِكَ رَفَعَا الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ ، فَجَعَلَ إِسْمَاعِيلُ نَاتِيًا بِالْحِجَارَةِ وَإِبْرَاهِيمُ نَاتِيًا . حَتَّى إِذَا ارْتَفَعَ الْبِنَاءُ جَاءَ بِهَذَا الْحَجَرِ فَوَضَعَهُ

अपने बाप के साथ मुहब्बत करता है वही तर्जें अमल उन दोनों ने भी एक-दूसरे के साथ इखितयार किया। फिर इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया, इस्माईल अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है। इस्माईल (अलै.) ने अर्ज़ किया, आपके रब ने जो हुक्म आपको दिया है आप उसे ज़रूर पूरा करें। उन्होंने फ़र्माया और तुम भी मेरी मदद कर सकोगे? अर्ज़ किया कि मैं आपकी मदद करूँगा। फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं इसी मुकाम पर अल्लाह का एक घर बनाऊँ और आपने एक और ऊँचे टीले की तरफ़ इशारा किया कि उसके चारों तरफ़! हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस वक़्त उन दोनों ने बैतुल्लाह की बुनियाद पर इमारत की ता' मीर शुरू की। इस्माईल (अलै.) पत्थर उठा उठाकर लाते और इब्राहीम (अलै.) ता' मीर करते जाते थे। जब दीवारें बुलन्द हो गईं तो इस्माईल (अलै.) ये पत्थर लाए और इब्राहीम (अलै.) के लिये उसे रख दिया। अब इब्राहीम (अलै.) उस पत्थर पर खड़े होकर ता' मीर करने लगे, इस्माईल (अलै.) पत्थर देते जाते थे और दोनों ये दुआ पढ़ते जाते थे। हमारे रब! हमारी ये ख़िदमत तू कुबूल कर बेशक तू बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है। फ़र्माया कि ये दोनों ता' मीर करते रहे और बैतुल्लाह के चारों तरफ़ घूम-घूमकर ये दुआ पढ़ते रहे। ऐ हमारे रब! हमारी तरफ़ से ये ख़िदमत कुबूल फ़र्मा। बेशक तू बड़ा सुनने वाला बहुत जानने वाला है। (राजेअ : 2368)

لَهُ، لَقَامَ عَلَيْهِ وَهُوَ يَنْبِي وَإِسْمَاعِيلُ يُنَادِيهِ  
الْحِجَارَةَ، وَهُمَا يَقُولَانِ: ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا،  
إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ قَالَ: لَجَعَلَا  
يَتَيْنَانِ حَتَّى يَذُورَا حَوْلَ الْبَيْتِ وَهُمَا  
يَقُولَانِ: ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ  
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾  
[راجع: ٢٣٦٨]

3365. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर अब्दुल मलिक बिन अमर ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे क़षीर बिन क़षीर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्राहीम (अलै.) और उनकी बीवी (हज़रत सारा) के दरम्यान जो कुछ झगड़ा होना था जब वो हुआ तो आप इस्माईल (अलै.) और उनकी वालिदा (हज़रत हाजरा अलै.) को लेकर निकले, उनके साथ एक मशकीज़ा था। जिसमें पानी था, इस्माईल (अलै.) की वालिदा उसी मशकीज़े का पानी पीती रहीं और अपना दूध अपने बच्चे को पिलाती रहीं। जब इब्राहीम (अलै.) मक्का पहुँचे तो उन्हें एक बड़े दरख़त के पास ठहराकर अपने घर वापस जाने लगे। इस्माईल (अलै.) की वालिदा उनके पीछे-पीछे आई। जब मुक़ामे कुदा पर पहुँचे तो उन्होंने पीछे से

٣٣٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ  
حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرِو  
قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ كَثِيرِ بْنِ  
كَثِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا كَانَ بَيْنَ  
إِبْرَاهِيمَ وَبَيْنَ أَهْلِهِ مَا كَانَ خَرَجَ  
يَسْمَاعِيلَ وَأُمُّ إِسْمَاعِيلَ، وَتَعْتُمُ هُنَا فِيهَا  
مَاءٌ، فَجَعَلَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ تَشْرِبُ مِنَ  
الشَّيْءِ فَيَدْرُ لَبَنَهَا عَلَى صَبِيحَتِهَا حَتَّى قَلِمَ  
مَكَّةَ لَوْضَعَهَا نَحْتِ دَوْخِهَا ثُمَّ رَجَعَ

आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! हमें किस पर छोड़कर जा रहे हो? उन्होंने कहा कि अल्लाह पर! हाजरा (अलै.) ने कहा कि फिर मैं अल्लाह पर खुश हूँ। बयान किया कि फिर हज़रत हाजरा अपनी जगह पर वापस चली आई और उसी मशकीजे से पानी पीती रहीं और अपना दूध अपने बच्चे का पिलाती रहीं जब पानी खत्म हो गया तो उन्होंने सोचा कि इधर-उधर देखना चाहिये, मुम्किन है कि कोई आदमी नज़र आ जाए। रावी ने बयान किया कि यही सोचकर वो सफ़ा (पहाड़ी) पर चढ़ गई और चारों तरफ़ देखा कि शायद कोई नज़र आ जाए लेकिन कोई नज़र न आया। फिर जब वादी में उतरीं तो दौड़कर मरवा तक आई। इसी तरह कई चक्कर लगाए, फिर सोचा कि चलूँ ज़रा बच्चे को तो देखूँ किस हालत में है। चुनौचे आई और देखा तो बच्चा उसी हालत में था (जैसे तकलीफ़ के मारे) मौत के लिये तड़प रहा हो। ये हाल देखकर उनसे सब्र न हो सका, सोचा चलो दोबारा देखूँ मुम्किन है कि कोई आदमी नज़र आ जाए, आई और सफ़ा पहाड़ पर चढ़ गई और चारों तरफ़ नज़र फेर-फेरकर देखती रहीं लेकिन कोई नज़र न आया। इस तरह हज़रत हाजरा (अलै.) ने सात चक्कर लगाए फिर सोचा, चलो देखूँ बच्चा किस हालत में है? उसी वक़्त उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने (आवाज़ से मुखातिब होकर) कहा कि अगर तुम्हारे पास कोई भलाई है तो मेरी मदद करो। वहाँ ज़िब्रईल (अलै.) मौजूद थे। उन्होंने अपनी ऐड़ी से यूँ किया (इशारा करके बताया) और ज़मीन ऐड़ी से खोदी। रावी ने बयान किया कि इस अमल के नतीजे में वहाँ से पानी फूट पड़ा। उम्मे इस्माईल डर्रीं। (कहीं ये पानी ग़ायब न हो जाए) फिर वो ज़मीन खोदने लगीं। रावी ने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ؑ) ने फ़र्माया, अगर वो पानी को यूँ ही रहने देतीं तो पानी ज़मीन पर बहता रहता। गर्ज़ हाजरा (अलै.) ज़मज़म का पानी पीती रहीं और अपना दूध अपने बच्चे को पिलाती रहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उसके बाद क़बीला ज़ुरहुम के कुछ लोग वादी के नशीब से गुज़रे उन्हें वहाँ परिन्दे नज़र आए। उन्हें ये कुछ ख़िलाफ़े आदत मा'लूम हुआ। उन्होंने आपस में कहा कि परिन्दे तो सिर्फ़ पानी ही पर (इस तरह) मँडला सकता है। उन लोगों ने अपना आदमी वहाँ भेजा। उसने जाकर देखा तो वाक़ई वहाँ पानी मौजूद था। उसने आकर अपने क़बीले वालों को ख़बर दी तो ये सब लोग यहाँ आ गये और

إِبْرَاهِيمَ إِلَى أَغْلِهِ، فَاتَّبَعَهُ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ حَتَّى لَمَّا بَلَغُوا كَدَاءَ نَادَتْهُ مِنْ وَرَائِهِ : يَا إِبْرَاهِيمُ إِلَى مَنْ تَرُكُنَا؟ قَالَ : إِلَى اللَّهِ. قَالَتْ : وَهَيْتُ يَا هُوَ. قَالَ : فَرَجَعْتُ لَفَجَعْتُ تَشْرَبُ مِنَ الشَّيْءِ وَيَبْرُ لَبْنَهَا عَلَى صَبِيهَا، حَتَّى لَمَّا قَبِيَ الْمَاءُ قَالَتْ : لَوْ ذَهَبْتُ لَنَظَرْتُ لَعَلِّي أَحْسَنُ أَخْداً. قَالَ : فَلَذَهَبْتُ فَصَبَدْتُ الصَّفَا فَنَظَرْتُ وَنَظَرْتُ مَلَّ نَجِسٌ أَخْداً؟ فَلَمْ تَجِسْ أَخْداً. فَلَمَّا بَلَغَتْ الْوَادِي مَسَتْ وَأَتَتْ الْمَرْوَةَ، فَفَعَلَتْ ذَلِكَ أَشْوَاطًا، ثُمَّ قَالَتْ : لَوْ ذَهَبْتُ لَنَظَرْتُ مَا لَعَلَّ - تَجِبِي الصَّبِي - فَلَذَهَبْتُ لَنَظَرْتُ لَعَلِّي فَإِذَا هُوَ عَلَى خَالِهِ كَأَنَّهُ يَنْشَغُ لِلْمَوْتِ فَلَمْ تَبْرُهَا نَفْسَهَا قَالَتْ لَوْ ذَهَبْتُ لَنَظَرْتُ أَحْسَنُ أَخْداً، فَلَذَهَبْتُ فَصَبَدْتُ الصَّفَا فَنَظَرْتُ وَنَظَرْتُ فَلَمْ تَجِسْ أَخْداً. حَتَّى أَتَمْتُ مَسَبًا، ثُمَّ قَالَتْ : لَوْ ذَهَبْتُ لَنَظَرْتُ مَا لَعَلَّ، فَإِذَا هِيَ بِصَوْتٍ، فَقَالَتْ : أَجِثْ إِنْ كَانَ عِنْدَكَ خَيْرٌ، فَإِذَا جِبْرِيْلُ، قَالَ : فَقَالَ بِمَقْبِهِ هَكَذَا، وَعَمَرَ عَقِبَهُ عَلَى الْأَرْضِ، قَالَ : فَابْتَنَى الْمَاءَ، فَلَذَهَبْتُ ثُمَّ إِسْمَاعِيلُ لَفَجَعْتُ تَخْفِرُ، قَالَ : فَقَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَوْ تَرَكْتَهُ كَانَ الْمَاءُ ظَاهِرًا))، قَالَ : فَجَعَلْتُ تَشْرَبُ مِنَ الْمَاءِ وَيَبْرُ لَبْنَهَا عَلَى صَبِيهَا. قَالَ لَمَرُّ نَاسٍ مِنْ جُرْهُمَ بَبْطُنِ الْوَادِي فَإِذَا هُمْ

कहा कि ऐ उम्मे इस्माईल! क्या आप हमें अपने साथ रहने की या (ये कहा कि) अपने साथ क्रयाम करने की इजाजत देंगी? फिर उनके बेटे (इस्माईल अलै.) बालिग हुए और कबीला जुरहुम ही की एक लड़की से उनका निकाह हो गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इब्राहीम (अलै.) को खयाल आया और उन्होंने अपनी अहलिया (हज़रत सारा अलै.) से फ़र्माया कि मैं जिन लोगों को (मक्का में) छोड़ आया था उनकी ख़बर लेने जाऊँगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इब्राहीम (अलै.) मक्का तशरीफ़ लाए और सलाम करके दरयाफ़्त फ़र्माया कि जब वो आई तो उनसे कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट बदल डालें। जब इस्माईल (अलै.) आए तो उनकी बीवी ने वाक्रिया की इज़िला दी। इस्माईल (अलै.) ने फ़र्माया कि तुम्हीं हो (जिसे बदलने के लिये इब्राहीम अलै. कह गये हैं) अब तुम अपने घर जा सकती हो। बयान किया कि फिर एक मुदत के बाद दोबारा इब्राहीम (अलै.) को खयाल हुआ और उन्होंने अपनी बीवी से फ़र्माया कि मैं जिन लोगों को छोड़ आया हूँ उन्हें देखने जाऊँगा। रावी ने बयान किया कि इब्राहीम (अलै.) तशरीफ़ लाए और पूछा कि इस्माईल (अलै.) कहाँ हैं? उनकी बीवी ने बताया कि शिकार के लिये गये हैं। उन्होंने ये भी कहा कि आप ठहरिये और खाना तनावुल फ़र्मा लीजिए। इब्राहीम (अलै.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग खाते पीते क्या हो? उन्होंने बताया कि गोश्त खाते हैं और पानी पीते हैं। आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! उनके खाने और उनके पानी में बरकत नाज़िल फ़र्मा। बयान किया कि अबुल क़ासिम (रज़ि.) ने फ़र्माया, इब्राहीम (अलै.) की उस दुआ की बरकत अब तक चली आ रही है। रावी ने बयान किया कि फिर (तीसरी बार) इब्राहीम (अलै.) को एक मुदत के बाद खयाल हुआ और अपनी अहलिया से उन्होंने कहा कि जिनको मैं छोड़ आया हूँ उनकी ख़बर लेने मक्का जाऊँगा। चुनौचे आप तशरीफ़ लाए और इस मर्तबा इस्माईल (अलै.) से मुलाक़ात हुई, जो ज़मज़म के पीछे अपने तीर ठीक कर रहे थे। इब्राहीम (अलै.) ने फ़र्माया, ऐ इस्माईल! तुम्हारे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं यहाँ उसका एक घर बनाऊँ, बेटे ने अज़्र किया कि फिर आप अपने रब का हुक्म बजा लाइये। उन्होंने फ़र्माया और मुझे ये भी हुक्म दिया है कि तुम इस काम में मेरी मदद करो। अज़्र किया कि मैं उसके लिये तैयार हूँ या इसी क्रिस्म के और अल्फ़ाज़ अदा किये। रावी ने

بَطْنٍ، كَانَتْهُمْ أَنْكُرُوا ذَلِكَ، وَقَالُوا : مَا يَكُونُ الطَّيْرُ إِلَّا عَلَى مَاءٍ، فَبَعَثُوا رَسُولَهُمْ فَنَظَرُوا، فَإِذَا هُمْ بِالسَّمَاءِ، فَاتَاهُمْ فَأَخْبَرَهُمْ، فَاتُوا إِلَيْهَا فَقَالُوا : يَا أُمُّ إِسْمَاعِيلَ إِنَّا ذُنُوبٌ لَنَا أَنْ نَكُونَ مَعَكَ، أَوْ نَسْكُنَ مَعَكَ؟ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهَا فَتَكْخِ لِيَهُمْ امْرَأَةً. قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ بَدَأَ لِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ لِأَهْلِيهِ : إِنِّي مُطْلِعٌ تَرْكِي. قَالَ : فَجَاءَ فَسَلَّمَ فَقَالَ : أَيُّنَ إِسْمَاعِيلَ؟ فَقَالَتْ امْرَأَتُهُ : ذَهَبَ بِعِيْدٍ. قَالَ : فَوَلِي لَهُ إِذَا جَاءَ : عَيْرٌ عَتَبَةٌ بِأَيْدِكَ. فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ، قَالَ: أَنْتَ ذَلِكَ، فَادْخُلِي إِلَى أَهْلِكَ. قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ بَدَأَ لِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ لِأَهْلِيهِ : إِنِّي مُطْلِعٌ تَرْكِي. قَالَ فَجَاءَ فَقَالَ : أَيُّنَ إِسْمَاعِيلَ؟ فَقَالَتْ امْرَأَتُهُ : ذَهَبَ بِعِيْدٍ، فَقَالَتْ: أَلَا تَنْزِلُ قَتَطْعَمٍ وَتَشْرَبُ؟ فَقَالَ: وَمَا طَعَامُكُمْ، وَمَا شَرَابُكُمْ؟ قَالَتْ: طَعَامُنَا اللَّحْمُ وَشَرَابُنَا الْمَاءُ - قَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي طَعَامِهِمْ وَشَرَابِهِمْ. قَالَ: فَقَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((تَرْكَةُ بِدَغْوَةِ إِبْرَاهِيمَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ بَدَأَ لِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ لِأَهْلِيهِ : إِنِّي مُطْلِعٌ تَرْكِي، فَجَاءَ فَوَافَقَ إِسْمَاعِيلَ مِنْ وَرَاءِ زَمْرَمٍ يَصْلُحُ نَيْلًا لَهُ، فَقَالَ: يَا إِسْمَاعِيلُ إِنَّ رَبَّكَ أَمَرَنِي أَنْ أَنْبِيَ لَكَ نَيْسًا. قَالَ: أَطْعِمَ رَبَّكَ. قَالَ: إِنَّهُ قَدْ أَمَرَنِي أَنْ نَعْبُدَكَ عَلَيْهِ، قَالَ: إِذَنْ أَفْعَلُ - أَوْ كَمَا قَالَ. قَالَ: فَقَامَا فَجَعَلَ إِبْرَاهِيمُ

बयान किया कि फिर दोनों बाप बैठे उठे। इब्राहीम (अलै.) दीवारें उठाते थे और इस्माईल (अलै.) उन्हें पत्थर ला लाकर देते थे और दोनों ये दुआ करते जाते थे। ऐ हमारे रब! हमारी तरफ से ये खिदमत कुबूल कर। बेशक तू बड़ा सुनने वाला, बहुत जानने वाला है। राबी ने बयान किया कि आखिर जब दीवार बुलन्द हो गई और बुजुर्ग (इब्राहीम अलै.) को पत्थर (दीवार पर) रखने में दुश्चारी हुई तो वो मुकामे (इब्राहीम) के पत्थर पर खड़े हुए और इस्माईल (अलै.) उनको पत्थर उठा उठा कर देते जाते और उन हज़रात की जुबान पर ये दुआ जारी थी। ऐ हमारे रब! हमारे तरफ से इसे कुबूल फ़र्मा ले। बेशक तू बड़ा सुनने वाला बहुत जानने वाला है। (राजेअ : 2368)

يُنِي وَإِسْمَاعِيلُ يُنَاوِلُهُ الْحِجَارَةَ، وَيَقُولَانِ: «رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ»۔ قَالَ: حَتَّى ارْتَفَعَ الْبَنَاءُ وَضَعَفَ الشَّيْخُ عَلَى نَقْلِ الْحِجَارَةِ لَقَامَ عَلَى حَجَرِ الْمَقَامِ فَجَعَلَ يُنَاوِلُهُ الْحِجَارَةَ وَيَقُولَانِ: «رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ»۔

[راجع: ٢٣٦٨]

**तशीह:** इस तवील (लम्बी) हदीस में बहुत से उमूर मज़कूर हुए हैं। शुरू में हज़रत हाजरा (अलैहस्सलाम) के कमरपट्टा बाँधने का ज़िक्र है जिससे औरत जल्द चल फिरकर कामकाज आसानी से कर सकती है। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है, ताकि उस कमरपट्टा से अपने पाँव के निशान जो रास्ते में पड़ते हैं वो मिटाती जाएँ ताकि हज़रत सारा (अलैहस्सलाम) उनका पता न पा सकें। हुआ ये था कि हज़रत सारा (अलैहस्सलाम) को कोई औलाद न थी (बाद में हुई) और हज़रत हाजरा (अलैहस्सलाम) जो एक शाहे मिस्र की शाहज़ादी थीं और जिसे उस बादशाह ने उस ख़ानदान की बरकतें देखकर हज़रत इब्राहीम (अलैहस्सलाम) के हरम में दाखिल कर दिया था चुनाँचे हज़रत हाजरा को हमल रह गया और हज़रत इस्माईल (अलैहस्सलाम) आलम में वजूद में आए। हज़रत सारा (अलैहस्सलाम) के रस्क में बहुत इज़ाफ़ा हो गया, तो उस डर से हज़रत हाजरा (अलैहस्सलाम) घर से निकलतीं और हज़रत इस्माईल (अलै.) को भी साथ ले लिया और कमर से पट्टा बाँधा ताकि उसके ज़रिये अपने पाँव के निशानात को मिटाती चलें। इस तरह हज़रत सारा उनका पता न पा सकीं। इस तरह हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने उनको मक्का की बे-आब व म्याह सरज़मीन पर ला बसाया जहाँ अल्लाह पाक ने उनके हाथों अपना घर नये सिरे से ता'मीर कराया। ज़रुहम जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है, यमन का एक कबीला है। यही कबीला हज़रत हाजरा से इजाज़त लेकर यहाँ आबाद हुआ और जवान होने पर हज़रत इस्माईल (अलै.) की उसी ख़ानदान में शादी हो गई। पहली शादी को हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने पसन्द नहीं फ़र्माया जो इशारे से तलाक़ के लिये कह गए। दूसरी बीवी को साबिरा व शाकिरा पाकर उनसे खुशी का इज़हार फ़र्माया, बेशक इन वाकिआत में अहले बस्रीत के लिये बहुत से हिदायत के सबक छुपे हुए हैं, जिनको समझने के लिये नज़रे बस्रीत की ज़रूरत है। अल्लाह पाक हर बुखारी शरीफ़ मुतालआ करने वाले भाई को नज़रे बस्रीत अता फ़र्माए, आमीन।

## बाब 10 :

3366. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद यज़ीद बिन शुरैक ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)!

## ١- باب :

٣٣٦٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّاحِدِ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ التَّمِيمِيُّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : «قُلْتُ: يَا رَسُولَ

सबसे पहले रूप जमीन पर कौनसी मस्जिद बनी है? हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मस्जिदे हुराम। उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने अर्ज किया और उसके बाद? फ़र्माया कि मस्जिद अक्सा (बैतुल मक्दिस्) मैंने अर्ज किया इन दोनों की ता' मीर के बीच में कितना फ़ासला है? आपने फ़र्माया कि चालीस साल। फिर फ़र्माया अब जहाँ भी तुझको नमाज़ का वक़्त हो जाए वहाँ नमाज़ पढ़ ले। बड़ी फ़ज़ीलत नमाज़ पढ़ना है। (दीगर मक़ाम : 3425)

**तशरीह :**

मुकिरीने हदीष ने इस रिवायत को भी तख़्त-ए-मश्क बनाकर हदीषे नबवी से मुसलमानों को बदज़न करने की नापाक कोशिश की है और ये शुब्हा यहाँ ज़ाहिर किया है कि का'बा को तो हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने बनाया था और मस्जिद अक्सा को हज़रत सुलैमान (अलै.) ने बनाया और उन दोनों में हजार साल से भी ज़्यादा का फ़ासला है। इस शुब्हा का जवाब ये है कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने का'बा को पहले पहल नहीं बनाया था बल्कि का'बा की पहली बनावट हज़रत आदम (अलै.) के हाथों हुई है तो मुम्किन है का'बा बनने के चालीस साल बाद खुद हज़रत आदम (अलै.) ने या उनकी औलाद में से किसी ने मस्जिद अक्सा की बुनियाद रखी हो। हज़रत इब्राहीम (अलै.) और हज़रत सुलैमान (अलै.) की दोनों बनावट से उन मक़ामाते मुक़द्दसा की तजदीद मुराद है। शारेहीने हदीष लिखते हैं, व युफ़उल्लइश्कालु बिअय्युक़ाल अलआयतु वलहदीषु ला यदुल्लानि अला बिनाइ इब्राहीम व सुलैमान लिमा बनया इब्तिदाअन वज़दहुमा लहुमा बल ज़ालिक तजदीदुन लिमा कान अस्ससहू गैरुहुमा व बदाहु व कदरुविय अन्न अव्वल मम्बनलबैत आदमु व अला हाज़ा फयज़ू अय्यकून गैरुहु मिव्वलदिही वज़अ बैतल्मक्दिस् मिम्बअदिही अर्बईन सनतन इन्तिहा कुलतु बल आदमु हुवल्लज़ी वज़अहु अयज़न कालल्हाफ़िज़ु इब्नु हज़र फी किताबिही अत्तीजानलिइब्नि हिशाम इन्न आदम लम्मा बनल्कअबत अमरहुल्लाहु तअला अस्सैर इला बैतिल्मक्दिस् व अय्यब्निहू फबनाहु व नसक फीहि (सुनन नसई जिल्द अव्वल, पेज 112) या'नी आयत और हदीष दोनों का इश्काल यूँ रफ़ा किया जा सकता है कि दोनों इस अम्पर दलालत नहीं करती हैं कि उन दोनों की इब्तिदाई बुनियाद उन दोनों बुजुगों ने रखी है बल्कि हकीकत ये है कि दोनों की इब्तिदाई बुनियाद ग़ैरों के हाथों की है और ये दोनों हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) उन दोनों मुक़ामात की तजदीद करने वाले हैं और मरवी है कि शुरू में बैतुल्लाह को हज़रत आदम (अलै.) ने बनाया और उसकी बुनियाद पर मुम्किन है कि उनकी औलाद में से किसी ने उनके चालीस साल बाद बैतुल मक्दिस् की बुनियाद रखी हो। मैं कहता हूँ कि खुद आदम (अलै.) ने उसकी भी बुनियाद रखी है जैसा कि हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने नक़ल किया है कि जब हज़रत आदम (अलै.) ने का'बा को बनाया तो अल्लाह तअला ने उनको हुक्म फ़र्माया कि बैतुल मक्दिस् जाएँ और उसकी बुनियाद रखें। चूनाँचे वो तशरीफ़ लाए और बैतुल मक्दिस् को बनाया और वहाँ इबादते इलाही बजा लाए।

अल्लामा सनदी फ़र्माते हैं, लैसलमुरादु बिनाउ इब्राहीम लिल्मस्जिदिल्हुरामि व बिनाउ सुलैमान लिल्मस्जिदिल्अक्सा फइन्न बैनहुमा मुद्हतुन तवीलतुन बलिल्मुरादु अल्बिनाउ सिवल्लाज़ैनिबिनाऐन (हवाला मज़कूर) या'नी हदीष में उन दोनों मसाजिद की इब्राहीमी और सुलैमानी बुनियादें मुराद नहीं हैं। उनके दरम्यान तो तवील मुद्हत का फ़ासला है बल्कि उन दोनों के सिवा इब्तिदाई बिना मुराद हैं। बाइबिल तवारीख़ 2 बाब 3 आयात 1-2 में मज़कूर है कि बैतुल मक्दिस् को हज़रत सुलैमान (अलै.) ने अपने आबा व अज्दाद की पुरानी निशानियों पर ता' मीर किया था जिससे भी वाज़ेह है कि बैतुल मक्दिस् के अव्वल बानी हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) नहीं हैं।

3367. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे मुत्तलिब के आज़ादकर्दा गुलाम अम्र बिन अबी अम्र ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उहुद पहाड़ को देखकर फ़र्माया कि ये पहाड़

اللّٰهُ اَيُّ مَسْجِدٍ وَضَعَ فِي الْاَرْضِ اَوَّلًا؟  
قَالَ : الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ. قَالَ : قُلْتُ : ثُمَّ  
اَيُّ؟ قَالَ : الْمَسْجِدُ الْاَقْصَى قُلْتُ : كَمْ  
كَانَ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ : اَرْبَعُونَ سَنَةً. ثُمَّ اَيْنَمَا  
اَذْرَكْتَ الصَّلَاةَ بَعْدَ فَصَلَةٍ، فَإِنَّ الْفَضْلَ  
فِيهِ. (طرفه في : 3425).

۳۳۶۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ  
مَالِكٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى  
الْمُطَلِّبِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ

हमसे मुहब्बत रखता है और हम उससे मुहब्बत रखते हैं। ऐ अल्लाह! हजरत इब्राहीम (अलै.) ने मक्का मुकर्रमा को हुर्मत वाला शहर करार दिया था और मैं मदीना के दो पत्थरीले इलाके के दरम्यानी इलाके के हिस्से को हुर्मत वाला करार देता हूँ। इस हदीष को अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ: 371)

عَنْ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ طَلَعَ لَهُ أَخَذَ فَقَالَ: هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنَحْنُهُ، اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ، وَإِنِّي أَحَرِّمُ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا)). رَوَاهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: 371]

**तपरीह:** उहद पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है। मुहब्बत रखना हकीकतन मुराद है क्योंकि अल्लाह पाक ने अपनी हर मखलूक को उसकी शान के मुताबिक इल्म व इदराक दिया है जैसे कि आयत व इन भिन शौइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही (बनी इस्राईल: 44) में मुराद है। इस हदीष से मदीना मुनव्वरा की हुर्मत भी मक्कतुल मुकर्रमा के समान प्राबित हुई। जो हजरत हुर्मते मदीना के काइल नहीं हैं उनको इस पर मजीद गौर करने की ज़रूरत है। ये हदीष किताबुल हज्ज में गुजर चुकी है। उसमें हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है इसलिये इस बाब में लाए।

3368. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को इब्ने अबीबक्र ने खबर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हजरत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम नहीं कि जब तुम्हारी क़ौम ने का'बा की (नई) ता'मीर की तो का'बा की इब्राहीमी बुनियाद को छोड़ दिया। मैंने अज़ा किया था रसूलुल्लाह! फिर आप इब्राहीमी बुनियादों के मुताबिक दोबारा उसकी ता'मीर क्यों नहीं कर देते? हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी क़ौम का ज़माना कुफ़्र से क़रीब न होता (तो मैं ऐसा ही करता) अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि जबकि ये हदीष हजरत आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है तो मेरा ख़याल है कि हज़ूर (ﷺ) ने उन दोनों रुक्नों के, जो हज़रे अस्वद के क़रीब हैं, बोसा लेने को सिर्फ़ इसी वजह से छोड़ा था कि बैतुल्लाह हजरत इब्राहीम (अलै.) की बुनियाद पर नहीं बना है (ये दोनों रुक्न आगे हट गये हैं) इस्माईल बिन अबी उवैस ने इस हदीष में अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र कहा। (राजेअ: 126)

٣٣٦٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ أَبِي بَكْرٍ أَخْبَرَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْمُ تَرَى أَنَّ قَوْمَكَ بَنَوْا الْكَعْبَةَ اقْصُرُوا عَنْ قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا تَرَوْهَا عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ؟ فَقَالَ: لَوْ لَا جِدْتَانِ قَوْمَكَ بِالْكَفْرِ)). فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: لَئِنْ كَانَتْ عَائِشَةُ سَمِعَتْ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَا أَرَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَرَكَ اسْتِغْلَامَ الرُّسُومِ الْبَلَدَيْنِ بِلِيَانِ الْحَبَشَةِ إِلَّا أَنَّ النَّبِيَّ لَمْ يُنْمِمْ عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ. وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ ((عِنْدَ اللَّهِ مِنْ أَبِي بَكْرٍ)). [راجع: 126]

या'नी अब्दुल्लाह को अबूबक्र का पोता कहा है। कुछ नुस्खों में अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र है। तो मतलब ये होगा कि इस रिवायत में उनका नाम अब्दुल्लाह मज़कूर है और तनीसी की रिवायत में सिर्फ़ इब्ने अबीबक्र था। इस्माईल की रिवायत को खुद मुअल्लिफ़ ने तपसीर में वस्ल किया है।

3369. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी। उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़म ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें अम्र बिन सुलैम ज़रक़ी ने, उन्होंने कहा मुझको अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सहाबा ने अज़्र किया या रसूलुल्लाह! हम आप पर किस तरह दरूद भेजा करें? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों पर और उनकी औलाद पर जैसा कि तू ने रहमत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर और अपनी बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों और औलाद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर। बेशक तो इतिहाई ख़ूबियों वाला और अज़मत वाला है। (दीगर मक़ाम: 6360)

۳۳۶۹- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ بْنِ مُحَمَّدٍ بْنِ عَمْرٍو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَمْرٍو بْنِ سُلَيْمٍ الزَّرَقِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُمْ قَالُوا: ((يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ: إِنَّكَ خَيْرُ مَجِدِّ)). [طرمه ب: ۶۳۶۰].

आल से मुराद वो लोग हैं जिन पर ज़कात हुराम है। आपके अहले बैत या'नी हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हुसैन व हुसैन (रज़ि.) हैं। दरूद से मुराद ये है कि आपकी नस्ल बरकत के साथ दुनिया में हमेशा बाक़ी रहे।

3370. हमसे क़ैस बिन हफ़्स और मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू कुरह मुस्लिम बिन सालिम हम्दानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा क़अब बिन इज़ह (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा क्यूँ न मैं तुम्हें (हदीष का) एक तोहफ़ा पहुँचा दूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैंने अज़्र किया जी हाँ मुझे ये तोहफ़ा ज़रूर इनायत फ़र्माइये। उन्होंने बयान किया कि हमने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा था या रसूलुल्लाह (ﷺ) हम आप पर और आपके अहले बैत पर किस तरह दरूद भेजा करें? अल्लाह तआला ने सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें खुद ही सिखा दिया है। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद (ﷺ) पर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर जैसा कि तू ने अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम (ﷺ) पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बुजुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और

۳۳۷۰- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ خَفْصٍ وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا أَبُو قُرَّةٍ مُسْلِمُ بْنُ سَالِمٍ الْهَمْدَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عِيْسَى سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيتُ كَعْبُ بْنَ عُجْرَةَ فَقَالَ: أَلَا أَهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقُلْتُ: بَلَى فَأَهْدِيهَا لِي، فَقَالَ: سَأَلْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ الصَّلَاةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْاَيْتِ، فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ. قَالَ: ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ



आले मुहम्मद पर जैसा कि तूने बरकत नाजिल फर्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। बेशक तू बड़ी खूबियों वाला और बड़ी अज़मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 4797, 6357)

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ))

[طرفاء ی : ۴۷۹۷، ۶۳۵۷]

**तशरीह :** अहले बैत या'नी हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा और हस्नेन मुराद हैं।

3371. हमसे ब्रह्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मिन्हाल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज़रत हसन व हुसैन (रज़ि.) के लिये पनाह तलब किया करते थे और फ़र्माते थे कि तुम्हारे बुजुर्ग दादा (इब्राहीम अलै.) भी उन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह इस्माईल और इस्हाक़ (अलै.) के लिये मांगा करते थे, मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे पूरे कलिमात के ज़रिये हर एक शैतान से और हर ज़हरीले जानवर से और हर नुक़्सान पहुँचाने वाली नज़रे बंद से।

۳۳۷۱- حَدَّثَنَا غُفَّانُ بْنُ أَبِي حَتَّةٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ السَّمْعَالِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ وَيَقُولُ: إِنَّ أَبَاكَمَا كَانَ يُعَوِّذُهَا بِإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَةٍ، وَمِنْ كُلِّ غَيْنٍ لَئِيمَةٍ))

**तशरीह :** मुस्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ तक जिस क़दर अह्लादीष इस बाब के तहत में बयान की हैं उन सब में किसी न किसी पहलू से हज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम का ज़िक्र मौजूद है और बाब और अह्लादीष में यही वजह मुनासबत है। ज़िम्नी तौर पर अह्लादीष में और भी बहुत से मसाइल का ज़िक्र आ गया है जो तदबीर करने से मा'लूम किये जा सकते हैं। दरूद से मुराद दीन व दुनिया की वो बरकतें जो अल्लाह पाक ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनकी औलाद को अत्ता फ़र्माई कि आज भी बेशतर अक्वामे आलम का नस्ली ता'ल्लुक़ हज़रत इब्राहीम (अलै.) से मिलता है और बिला शक़ अल्लाह पाक ने यही बरकात हज़रत सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को अत्ता की हैं कि आपका कलिमा पढ़ने वाले आज रूए ज़मीन पर करोड़ों-करोड़ की ता'दाद में मौजूद हैं और रोज़ाना पंजवक्ता फ़िज़ाए आसमानी में आपकी रिसालते हक्का का ऐलान इस शान से किया जाता है कि दुनिया के तमाम पेशवायाने मज़हब में नज़ीर नामुम्किन है। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिं व अला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम आमीन

**बाब 11 : अल्लाह तआला ने सूरह हिज्र में फ़र्माया, ऐ नबी! उन लोगों को इब्राहीम (अलै.) के मेहमानों का क्रिस्सा सुनाइये**

और अल्लाह तआला ने सूरह बक्रः में फ़र्माया, ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मदों को ज़िन्दा किस तरह करेगा लेकिन ये सिर्फ़ में इसलिये चाहता हूँ कि मेरे दिल को और ज़्यादा इत्मीनान हो जाए तक।

۱۱- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَبَنَيْنَاهُمْ عَنْ صَيْفٍ إِبْرَاهِيمَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ﴾  
الاية [الحجر: ۵۱] ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى﴾  
إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾  
[البقرة: ۲६۰]

**तशरीह :** मतलब ये है कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने जो ये सवाल बारगाहे इलाही में किया उसकी वजह ये न थी कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) को अल्लाह की क़ुदरत में कोई शक था, मज़ाज़ल्लाह अदना से मोमिन को भी उसमें शक नहीं है तो इब्राहीम (अलै.) तो अल्लाह के ख़लील थे, उनको क्यूँकर शक हो सकता था। गर्ज़ सिर्फ़ ये है कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) को मुर्दों के ज़िलाए जाने पर कामिल यक़ीन था मगर उन्होंने ये चाहा कि ये यक़ीन और बढ़ जाए या'नी मुशाहिदा भी कर लें। इसलिये कि ऐनुल यक़ीन का मर्तबा इल्मुल यक़ीन के मर्तबे से बढ़ा हुआ है। मशहूर क़ौल है, सुनी हुई चीज़ देखी हुई की तरह हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) इस हदीस के ज़ेल में फ़र्माते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) का ये सवाल महज़ मज़ीद दर मज़ीद इत्मीनाने क़ल्ब के हसूल के लिये था जैसा कि खुद कुआन मज़ीद में ये बतफ़सील मौजूद है। रवत्तबानी वब्नु अबी हातिम मिन त़रीकिस्सदी क़ाल लम्मतार खज़ल्लाहु इब्राहीम खलीला इस्ताज़नहू मलिकुल मौत अय्युब शिशारहू फअज़िन लहू फज़कर किस्सत मअहू फी कैफ़ियत कब्ज़ रुहिल्काफ़िर वल्मूमिन क़ाल फक्राम इब्राहीमु यदक़ रब्बहू रब्बि अरिनी कैफ़ तुहयिल्मौता हत्ता आलम अन्नी खलीलुक व मिन त़रीकि अलिय्यिब्नि अबी तल्हत अन्हु लआलमु इन्नक तुहिब्बुनी इज़ा दअवतुक व इला हाज़ा जनहल्काज़ी अबू बकर अल्बाक़िलानी (फत्हुल बारी) या'नी जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) को अपना खलील बनाया तो मलकुल मौत ये बशारत देने के लिये उनके पास आए और साथ ही उन्होंने ने काफ़िर व मोमिन की रूहों को कब्ज़ करने की कैफ़ियत भी सुनाई। ये सुनकर हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने दुआ की कि परवरदिगार! मुझको भी दिखा कि तू किस तरह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। मेरी ये दुआ कुबूल कर ताकि मैं जान लूँ कि मैं तेरा खलील हूँ। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ ये है कि, ताकि मैं जान लूँ कि तू मुझको दोस्त रखता है और मैं जब भी तुझसे कुछ दुआ करूँगा तो ज़रूर तू इसे कुबूल कर लेगा। मज़ीद तफ़सीलात के लिये फ़तहूल बारी के उस मुक़ाम का मुतालआ किया जाए।

3372. हमसे अहमद बिन स़ालेह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने हिशाब ने, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, हम हज़रत इब्राहीम (अलै.) के मुक़ाबले में शक करने के ज़्यादा मुस्तिहिक़ हैं जबकि उन्होंने कहा था कि मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को ज़िन्दा किस तरह करता है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, क्या तुम ईमान नहीं लाए, उन्होंने अज़्र किया कि क्यूँ नहीं, लेकिन ये सिर्फ़ इसलिये ताकि मेरे दिल को और ज़्यादा इत्मीनान हो जाए। और अल्लाह लूत (अलै.) पर रहम करे कि वो ज़बरदस्त रुक्न (या'नी खुदावन्दे करीम) की पनाह लेते थे और अगर मैं उतनी मुद्दत तक क़ैदख़ाने में रहता जितनी मुद्दत तक यूसुफ़ (अलै.) रहे थे तो मैं बुलाने वाले बात ज़रूर मान लेता। (दीगर मक़ाम : 3375, 3387, 4537, 4694, 6992)

۳۳۷۲- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا  
ابْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ  
شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ  
وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ:  
(«نَحْنُ أَحَقُّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ: رَبِّ  
أَرِنِي كَيْفَ تُخْرِجُ الْمَوْتَى. قَالَ: أَوَلَمْ  
تُؤْمِنْ؟ قَالَ: بَلَى وَلَكِنْ لَيَطْمَئِنَّ قَلْبِي»)  
وَيَرْحَمُ اللَّهُ لَوْطًا لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى  
رُكْنٍ شَدِيدٍ، وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السَّجْنِ طَوْلَ  
مَا لَبِثَ يُوسُفُ لَأَخْبَيْتُ الدَّاعِيَ».

أُطْرَافُهُ فِي : ۳۳۷۵، ۳۳۸۷، ۴۵۳۷

[६१९२, ६१९६]

**तशरीह :** या'नी क़ैद से छूटना ग़नीमत समझता। हज़रत यूसुफ़ (अलै.) के सब्ब पर आफ़रीन है कि इतनी मुद्दत तक क़ैद में रहने के बाद भी उस बुलाने वाले के बुलावे पर न निकले जो बादशाह की तरफ़ से आया था और पहले अपनी सफ़ाई के ख़्वाहों हुए। ये आँहज़रत (ﷺ) ने तवाजोअ की राह से फ़र्माया और हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) का मर्तबा बढ़ाने के लिये

वरना आँहजरत (ﷺ) का सब व इस्तिक्लाल भी कुछ कम न था। आँ चे खूबाँ हमा दारंद तु तन्हा दारी (वहीदी)

**बाब 12 : (हजरत इस्माईल अल्लैहि. का बयान)**

और अल्लाह तआला का फ़र्मान, और याद करो इस्माईल को किताब में बेशक वो वा'दे के सच्चे थे

3373. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़बीला असलम की एक जमाअत से गुज़रे जो तीरंदाज़ी में मुकाबला कर रही थी। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ बन् इस्माईल! तीरंदाज़ी किये जाओ क्योंकि तुम्हारे बुजुर्ग दादा भी तीरंदाज़ थे और मैं बन् फ़लाँ के साथ हूँ। राबी ने बयान किया कि ये सुनते ही दूसरे फ़रीक़ ने तीरंदाज़ी बन्द कर दी। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या बात हुई, तुम लोग तीर क्यों नहीं चलाते? उन्होंने अज़्र किया या रसूलल्लाह! जब आप फ़रीक़ मुकाबिल के साथ हो गये तो अब हम किस तरह तीर चला सकते हैं। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मुकाबला जारी रखो, मैं तुम सबके साथ हूँ। (राजेअ : 2899) -

रिवायत में सय्यिदना इस्माईल (अल्लै.) का ज़िक्र है। बाब और हदीष में यही वजह मुनासबत है। ये भी मा'लूम हुआ कि बाप-दादा के अच्छे कामों को फ़ख़र के साथ अपनाना बेहतर तरीक़ा है।

**बाब 13 : हजरत इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अल्लै.)**

का बयान इस बाब मे इब्ने उमर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

उन दोनों हदीषों को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने वस्ल किया है। इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष से मुराद वो रिवायत है अल करीम बिन अल करीम बिन अल करीम यूसुफ़ बिन यअकूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अल्लै.) हैं क्योंकि उसमें हजरत इस्हाक़ और उनके क़रीम होने का बयान है।

**बाब 14 : हजरत यअकूब (अल्लै.) का बयान और अल्लाह तआला का सूरह बक्रः में यूँ फ़र्माना कि, क्या तुम लोग उस वक़्त मौजूद थे जब यअकूब (अल्लै.) की मौत हाज़िर हुई। आख़िर आयत व नहनु लहू मुस्लिमून तक.**

۱۲- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ

كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ﴾ [مریم : ۵۴]

۳۳۷۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا

خَاتَمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ

الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ

ﷺ عَلَى نَفَرٍ مِنْ أَسْلَمَ يَتَتَبِعُونَ، فَقَالَ

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ارْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيلَ فَإِنَّ

أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا، وَأَنَا مَعَ بَنِي فَلَانٍ. قَالَ:

فَأَمْسَكَ أَحَدُ الْفَرِيقَيْنِ بِأَيْدِيهِمْ، فَقَالَ

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: مَا لَكُمْ لَا تَرْمُونَ؟ فَقَالُوا:

يَا رَسُولَ اللَّهِ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمْ؟ قَالَ:

ارْمُوا وَأَنَا مَعَكُمْ كُلُّكُمْ)).

[راجع: ۲۸۹۹]

۱۳- بَابُ قِصَّةِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ

عَلَيْهِمَا السَّلَامُ فِيهِ ابْنُ عَمَرَ وَأَبُو هُرَيْرَةَ

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

۱۴- بَابُ ﴿أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ

حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتَ إِذْ قَالَ

لِبَنِيهِ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَنَحْنُ لَهُ

مُسْلِمُونَ﴾ الْآيَةِ [البقرة : ۱۳۳]

3374. हमसे इस्हाक बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमने मुअतमिर बिन सुलैमान से सुना, उन्होंने अब्दुल्लाह इमरी से, उन्होंने सईद बिन अबी सईद मक्बरी से और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया, सबसे ज्यादा शरीफ कौन है? आपने फ़र्माया कि जो सबसे ज्यादा मुत्तक़ी हो, वो सबसे ज्यादा शरीफ है। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमारे सवाल का मक़सद ये नहीं है। आपने फ़र्माया कि फिर सबसे ज्यादा शरीफ यूसुफ़ नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह (यअक़ूब) बिन नबी अल्लाह (इस्हाक़) बिन खलीलुल्लाह (इब्राहीम अलै.) थे सहाबा ने अर्ज़ किया, हमारे सवाल का मक़सद ये भी नहीं है। आपने फ़र्माया कि क्या तुम लोग अरब के शरीफ़ों के बारे में पूछना चाहते हो? सहाबा ने अर्ज़ किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया कि फिर जाहिलियत में जो लोग शरीफ़ और अच्छे आदात व अख़लाक़ के थे वो इस्लाम लाने के बाद भी शरीफ़ और अच्छे समझे जाएँगे जबकि वो दीन की समझ भी हासिल करें। (राजेअ : 3353)

۳۳۷۴- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ الْمُتَمِيرَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ : مَنْ أَكْرَمَ النَّاسِ؟ قَالَ : أَكْرَمُهُمْ أَنْفُسُهُمْ. قَالُوا يَا نَبِيَّ اللَّهِ لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ : فَأَكْرَمَ النَّاسِ يُوسُفُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ ابْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ خَلِيلِ اللَّهِ. قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ : فَمَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونَنِي؟ قَالُوا : نَعَمْ. قَالَ : فَيُخَارَكُمُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُكُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا لَقِيتُوهَا)).

[راجع: ۳۳۵۳]

रिवायत में हज़रत यअक़ूब (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र आया है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

### बाब 15 :

### باب ١٥

(हज़रत लूत अलै. का बयान) और अल्लाह तआला का सूरह नमल में फ़र्माया कि मैंने लूत को भेजा, उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम जानते हुए भी क्यों फ़हश काम करते हो। तुम आख़िर क्यों औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी शहवत बुझाते हो, कुछ नहीं तुम महज़ जाहिल लोग हो, इस पर उनकी क़ौम का जवाब उसके सिवा और कुछ नहीं हुआ कि उन्होंने कहा, आले लूत को अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज़ बनते हैं। पस मैंने लूत को और उनके ताबेदारों को नजात दी। सिवा उनकी बीवी के। मैंने उसके बारे में फ़ैसला कर दिया था कि वो अज़ाब वालों में बाक़ी रहने वाली होगी और हमने उन पर पत्थरों की बारिश बरसाई। पस डराए हुए लोगों पर बारिश का अज़ाब बड़ा ही सख़्त था।

﴿وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ، أَمْ أَنْتُمْ لِقَوْمِ الرَّجُلِ شَهْوَةٌ مِنْ دُونِ النِّسَاءِ، بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ. فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنْاسٌ يَنْظُرُونَ. فَانْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ فَدَرَبْنَاهَا مِنْ الْعَابِرِينَ، وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا نِسَاءً مَطَرُ الْمُنْكَرِينَ﴾ [النمل ٤٥-٥٨]

3375. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला हज़रत लूत (अलै.) की मफ़िरत फ़र्माए

۳۳۷۵- حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ:

कि वो जबरदस्त रुक्न (या'नी अल्लाह) की पनाह में गए थे।

يَغْفِرُ اللهُ لِلْوَطِ إِنَّ كَانَ لَيَاوِي إِلَى

(राजेअ: 3372)

رُكْنٍ شَدِيدٍ. [راجع: 3372]

**तशरीह:** इस हदीष के जेल हाफिज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, यगफिरुल्लाहु लिलूत इन कान लयावी इला रुक्निन शदीद अय इलल्लाहि मुब्नानिहो व तआला युशीरु इला क्रौलिही तआला लौ अन्न ली बिकुम कुव्वतन औ आवा इला रुक्निन शदीद व युकालु अन्न क्रौम लूतिन लम यकुन फीम अहदुन यजतमिड मअहू फी नसबिही लिअन्नहुम मिन सहूम व हिय अनिश्शामि व कान अस्तु इब्नाहीम व लूत मिनल्इराकि फलम्मा हाजर इब्नाहीमु इलश्शामि हाजर मअहू लूतुन फबअषल्लाहु लूतुन इला अहलि सहूम फ़क्राल लौ अन्न ली अकारिबु व अशीरतुन लकुन्तु अस्तन्मिरु बिहिम अलैकुम लियदफ़्क़ अन ज़ैफ़नी व लिहाज़ा जाअ फी बअज़ि तुरुकि हाज़ल्हदीषि कमा अख़जहू अहमद मिन तरीकि मुहम्मद बिन अमर अन सबी सलमत अन अबी हुसैरत अनिन्नबिय्यि (ﷺ) काल क़ाल लूत औ अन्न ली बिकुम कुव्वतन औ आवी इला रुक्निन शदीदिन क़ाल फ़इन्नुहू कान यावी इला रुक्निन शदीदिन अय इला अशीरतिही लाकिन्नुहू लम याबि इलैहिम व आवा इलल्लाहि (पारा 13, फ़त्हुल बारी पेज 244)

या'नी अल्लाह पाक लूत (अलै.) की मफ़िरत फ़र्माए। उनका सहारा तो बहुत ही मज़बूत था या'नी अल्लाह पाक उनका सहारा था, गोया आँहज़रत (ﷺ) ने इशारे बारी तआला औ आवी इला रुक्निन शदीद (हूद: 80) की तरफ़ इशारा फ़र्माया है। कहा जाता है कि क्रौम लूत में कोई भी नस्बी आदमी लूत से मुतअल्लिक नहीं था इसलिये कि उस बस्ती वाले सहूम से थे जो शाम से है और इब्नाहीम (ﷺ) और लूत (अलै.) की अज़ल नस्ल इराक़ वालों से थी जब हज़रत इब्नाहीम (अलै.) ने शाम की तरफ़ हिज़रत की तो हज़रत लूत (अलै.) ने भी उनके साथ हिज़रत की। फिर अल्लाह ने हज़रत लूत (अलै.) को सहूम वालों की तरफ़ मबज़्रज़ फ़र्माया। इसीलिये उन्होंने ये जुम्ला कहा कि अगर मेरे भी मददगार, अकारिब व अइज़ा और ख़ानदान वाले होते तो मैं उनसे तुम्हारे मुकाबले पर मदद हासिल करता ताकि वो मेरे मेहमानों से तुमको दफ़ा करते। इसीलिये कुछ रिवायात में मरवी है कि बिला शक़ हज़रत लूत अपनी मदद के लिये एक अपना ख़ानदान रखते थे लेकिन उन्होंने उनकी पनाह नहीं ली बल्कि अल्लाह पाक की तरफ़ पनाह हासिल की।

क्रौमे लूत और उनकी बद किरदारियों का तज़्किरा कुआन मजीद में कई जगह हुआ है। बद अख़लाकी और बेईमानी में ये क्रौम बढ़ गई थी। अल्लाह पाक ने उनकी बस्तियों को नेस्त व नाबूद कर दिया। कहा जाता है कि जहाँ आज बहीरा मुरदार बाक़ेअ है उसी जगह उस क्रौम की बस्तियाँ थीं। वल्लाहु आलम।

### बाब 16 :

(सूरह हिज़ में अल्लाह तआला ने फ़र्माया) फिर जब आले लूत के पास हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते आए तो लूत ने कहा कि तुम लोग तो किसी अंजान मुल्क वाले मा'लूम होते हो, (सूरह वज़्ज़ारियात में) मूसा (अलै.) के ज़िक़्र में, बिरुक्निही से मुराद वो लोग हैं जो फ़िरअन के साथ था क्योंकि वो उसके कुव्वत बाज़ू थे (सूरह हूद में) वला तर्कनू का मा'नी मत झुको (सूरह हूद में) अन्करहुम, नकरहुम और वस्तन्करहुम का एक ही मा'नी है (सूरह हूद में यहरक़न का मा'नी डरते हैं (सूरह हिज़ में) दाबिर के मा'नी आख़िर दम है (सूरह हिज़ में) सयहता का मा'नी हलाकत (सूरह हिज़ में) लिल् मुतवस्सिमीन का मा'नी देखने वालों के लिये (सूरह हिज़ में) लबि सबील का मा'नी रास्ते के हैं (या'नी रास्ते में)

١٦- بَابُ ١٦ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطِ

الْمُرْسَلُونَ، قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّشْكِرُونَ ﴿

الحجر: ٦٢﴾ ﴿بِرُكْنَيْهِ﴾: بِمَنْ مَقَّةُ

لَأَنَّهُمْ قَوْمُهُ. ﴿تَرَكُّوْا﴾: تَبَيَّنُوا.

فَأَنكَرَهُمْ وَنَكَرَهُمْ وَاسْتَكْرَهُمْ وَاحِدٌ.

﴿يَهْرَعُونَ﴾: يَسْرِعُونَ. ﴿ذَابِرٌ﴾: آخِرٌ.

﴿صَيِّحَةٌ﴾: هَلَكَةٌ. ﴿الْمُتَوَسِّمِينَ﴾:

لِلنَّاطِرِينَ. ﴿لَيْسَبِيلٌ﴾: لَيْطَرِيْقٌ.

**तशरीह:** बाब के जेल लफ़ज़ बिरुक्निही आया है या'नी कुव्वत। रुक्न के मा'नी कुव्वत, ज़ोर। ये लफ़ज़ तो हज़रत मूसा (अलै.) के किस्से में वारिद हुआ है और हज़रत लूत (अलै.) के किस्से में भी रुक्न का लफ़ज़ आया है। अव

आबिया इला रुक्नन शदीद) (हूद : 80) इसलिये इमाम बुखारी (रह.) ने इसको जिक्र कर दिया वस्तुनकरहुम का लफ्ज़ उन फ़रिश्तों के बाब में है जो हज़रत इब्राहीम (अलै.) के पास बतौर मेहमानों के आए थे। मगर चूँकि यही फ़रिश्ते फिर हज़रत लूत (अलै.) के पास गये थे, इस मुनासबत की वजह से उसका भी जिक्र कर दिया। कुछ ने कहा लूत के किस्से में भी इन्नकुम क्रौमुम् मुन्करून (अल हिज्र : 62) वारिद है और नकिरहुम इसी से है। लफ्ज़ सयहति आयते शरीफा फअख्तहुमुस्सैहतु मुस्किनीन (अल हिज्र : 73) में है जो हज़रत लूत की उम्मत के बारे में है। नीज़ आयत में जो सूरह यासीन में है, इन कानत इल्ला सैहतंवाहिदतन (यासीन : 53) लफ्ज़ सयहति मज़कूर है।

3376. हमसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अहमद ने बयान किया, उनसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक ने, उनसे अस्वद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़हल मिम् मुदकिर पढ़ा था। (राजेअ : 3341)

۳۳۷۶- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ: ﴿فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ﴾».

[راجع : ۳۳۴۱]

ये आयत सूरह कमर में हज़रत लूत के किस्से में वारिद है। इस मुनासबत से इस हदीष को इस बाब में भी जिक्र कर दिया है। जैसे पहले भी कई बार गुजर चुकी है।

### बाब 17 :

(क्रौमे षमूद और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का बयान) अल्लाह पाक का सूरह आराफ़ में फ़र्माया हमने षमूद की तरफ़ उनके भाई सालेह अलैहिस्सलाम को भेजा (सूरह हिज्र में) जो फ़र्माया, हिज्र वालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया। हिज्र षमूद वालों का शहर था लेकिन (सूरह अन्आम में) जो हर्ष हिज्र आया है वहाँ हिज्र के मा'नी हाराम और मम्नूअ के हैं। अरब लोग कहते हैं हिज्र महजूर या'नी हाराम व मम्नूअ और हिज्र इमारत को भी कहते हैं और जिस ज़मीन को घेर लिया जाए (दीवार या बाड़े से) उसी से ख़ाना का'बा के हत्तीम को हिज्र कहते हैं। हत्तीम महतूम से निकला है। महतूम के मा'नी टूटा हुआ। पहले वो काबा के अंदर था। उसको तोड़कर बाहर कर दिया इसलिये हत्तीम कहने लगे। जैसे क़त्तील मज़तूल से, और मादयान घोड़ी को भी। हिज्र के मा'नी अक्ल के भी हैं जैसे हिजी के मा'नी भी अक्ल के हैं (सूरह फ़ज्र में है)। (हल फ़ी ज़ालिका क़समुल लिज़ी हिज्र) और हिज्रुल यमामा (हिजाज़ और यमन के बीच में) एक मुक़ाम का नाम है।

۱۷- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى : ﴿وَأَيُّ قَوْمٍ أَخَافُهُمْ صَالِحًا﴾ [الأعراف : ۷۳] «كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ﴾ [الحجر : ۸۰]. الْحِجْرُ مَوْضِعٌ قَوْمُ. وَأَمَّا «حِجْرٌ حِجْرٌ» : حَرَامٌ، وَكُلُّ مَمْنُوعٍ فَهُوَ حِجْرٌ، وَمِنْهُ : «حِجْرٌ مَخْجُورٌ». وَالْحِجْرُ كُلُّ بَاءٍ نَبْتَةٍ، وَمَا حَجَرَتْ عَلَيْهِ مِنَ الْأَرْضِ فَهُوَ حِجْرٌ، وَمِنْهُ سُمِّيَ حِطْيَمُ النَّبْتِ حِجْرًا، كَانَ مُشْتَقًّا مِنْ مَخْطُومٍ، مِثْلُ قَتِيلٍ مِنْ مَقْتُولٍ، وَيُقَالُ لِلْأَثْنِ مِنَ الْخَيْلِ الْحِجْرُ، وَيُقَالُ لِلْمَقْلِ حِجْرٌ. وَجِئْتُ وَأَمَّا حِجْرُ الْيَمَامَةِ فَهُوَ الْمَنْزِلُ.

**तशरीह :** षमूद अरब का एक क़बीला था। उनके दादा का नाम षमूद बिन आमिर बिन इरम बिन साम बिन नूह था इसलिये उनको षमूद कहने लगे। अल्लाह ने हज़रत सालेह (अलै.) को पैग़म्बर बनाकर उन लोगों की तरफ़ भेजा। क़ुर्आन मजीद में इनका जिक्र बक़रत आया है।

2377. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन

۳۳۷۷- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ

उययना ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन जम्आ ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना (खुतबे के दौरान) आपने उस क़ौम का ज़िक्र किया जिन्होंने कैटनी को ज़िबह कर दिया था। आपने फ़र्माया कि (अल्लाह की क़सम भेजी हुई) उस (कैटनी को) ज़िबह करने वाला क़ौम का एक बहुत ही बाइज़त आदमी (क़ैदारनामी) था, जैसे हमारे ज़माने में अबू जम्आ (अस्वद बिन मुतलिब) है। (दीगर मक़ाम: 4942, 5204, 6042)

3378. हमसे मुहम्मद बिन मिस्कीन अबुल हसन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन हस्सान बिन हय्यान अबू ज़करिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब हिज्र (प्रमूद की बस्ती) में ग़ज़व-ए-तबूक के लिये जाते हुए पड़ाव किया तो आपने सहाबा (रज़ि.) को हुक्म फ़र्माया कि यहाँ के कुँओं का पानी न पीना और न अपने बर्तनों में साथ लेना। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि हमने तो उससे अपना आटा भी गूँध लिया है और पानी अपने बर्तनों में भी रख लिया है। हज़ूर (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि गुँधा हुआ आटा फेंक दिया जाए और अबू ज़र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है कि जिसने आटा उस पानी से गूँध लिया हो (वो उसे फेंक दे)। (दीगर मक़ाम: 3379)

حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَمْعَةَ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ - وَذَكَرَ إِلَيَّ عَمْرُ النَّاقَةِ - قَالَ: اتَّخَذَ لَهَا رَجُلٌ ذُو عِزٍّ وَمَنْعَهُ فِي قَوْمِهِ كَأَيِّ زَمْعَةٍ)).

[أطرافه في: ٤٩٤٢، ٥٢٠٤، ٦٠٤٢].

٣٣٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ أَبُو الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ بْنِ حَبَّانٍ أَبُو زَكَرِيَاءَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمَّا نَزَلَ الْحِجْرَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ أَمَرَهُمْ أَنْ لَا يَشْرَبُوا مِنْ بَرِيحِهَا وَلَا يَسْتَقُوا مِنْهَا، فَقَالُوا: لَقَدْ عَجَبْنَا مِنْهَا وَاسْتَقَيْنَا، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَطْرَحُوا ذَلِكَ الْفَجِينِ وَيَهْرِثُوا ذَلِكَ الْمَاءَ)). وَتَرَوْنِي عَنْ سَبْرَةَ بْنِ مَعْبُدٍ وَأَبِي الشُّمُوسِ: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِإِلْقَاءِ الطَّعَامِ)). وَقَالَ أَبُو ذَرٍّ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ اغْتَسَحَ بِمَائِهِ)). [أطرافه في: ٣٣٧٩].

**तशरीह:** सबरह की हदीष को तबरानी और अबू नुऐम ने और अबुशशमूस की रिवायत को तबरानी और इब्ने मुन्दह ने और अबू ज़र की रिवायत को बज़ार ने वस्ल किया है। चूँकि उस मुक़ाम पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हुआ था लिहाज़ा आपने वहाँ के पानी को इस्तेमाल करने से मना फ़र्माया, ऐसा न हो कि उससे दिल सख़्त हो जाएँ या कोई और बीमारी पैदा हो जाए।

3379. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सहाबा ने नबी करीम (ﷺ) के साथ प्रमूद की बस्ती हिज्र में पड़ाव किया तो वहाँ के कुँओं का पानी अपने बर्तनों में भर लिया और आटा भी उस पानी से गूँध लिया। लेकिन हज़ूर (ﷺ) ने उन्हें हुक्म

٣٣٧٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّاسَ نَزَلُوا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَرْضَ لُمُودَ، الْحِجْرَ، وَاسْتَقُوا

दिया कि जो पानी उन्होंने अपने बर्तनों में भर लिया उसे उण्डेल दें और गुँधा हुआ आटा जानवरों को खिला दें। उसके बजाय हुजूर (ﷺ) ने उन्हें ये हुक्म दिया कि उस कुँए से पानी लें जिससे झालेह (अलै.) की ऊँटनी पानी पिया करती थी। (राजेअ: 3378)

3380. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्हें मअमर ने, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझको सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी और उन्हें उनके वालिद (अब्दुल्लाह रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब मुकामे हिज्र से गुजरे तो फ़र्माया कि उन लोगों की बस्ती में जिन्होंने जुल्म किया था न दाखिल हो, लेकिन उस मूरत में कि तुम रोते हुए हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम पर भी वही अज़ाब आ जाए जो उन पर आया था। फिर आपने अपने चादर चेहर-ए-मुबारक पर डाल ली। आप उस वक़्त कजावे पर तशरीफ़ रखते थे। (राजेअ: 433)

अल्लाह के अज़ाब से किस क़दर डरना चाहिये और अल्लाह और रसूल (ﷺ) की खुल्लम खुला मुख़ालफ़त करने वालों से कितना बचना चाहिये, ये मज़क़ूर हदीषों से ज़ाहिर है कि उन लोगों की बस्ती का पानी भी न लेने दिया और उस पानी से जो आटा गुँध लिया था, उसे भी जानवरों के आगे डाल देने का हुक्म आपने फ़र्माया। अल्लाहुम्महफ़िज़ना

3381. मुझसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने यूनस से सुना, उन्होंने जुहरी से, उन्होंने सालिम से और उनसे हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम्हें उन लोगों की बस्ती से गुज़रना पड़े जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था तो रोते हुए गुज़रो। कहीं तुम्हें भी वो अज़ाब आ न पकड़े जिसमें ये ज़ालिम लोग गिरफ़्तार किये गये थे।

अगरचे ये हदीष तमाम मुत्लक़ बद किरदारों को शामिल है मगर आपने ये हदीष उस वक़्त फ़र्माई जब आप हिज्र पर से गुज़रे जहाँ धमूद की क़ौम बस्ती थी जैसे पिछली रिवायत से मा'लूम होता है।

बाब 18 : हज़रत यअक़ूब (अलै.) का बयान, अल्लाह तआला ने सूरह बक्र: में फ़र्माया कि क्या तुम उस वक़्त

مِنْ بَنِيهَا وَاعْتَجَبُوا بِهِ، فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يُهْرِقُوا مَا اسْتَقُوا مِنْ بَنِيهَا وَأَنْ يَغْلِقُوا الْإِبِلَ الْعَجِينَ، وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَسْتَقُوا مِنَ الْبَيْرِ الَّتِي كَانَ تَرُدُّهَا النَّاقَةُ)).

تَابَعَهُ أَسَامَةُ عَنْ نَافِعٍ. [راجع: 3378]

3380- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ ﷺ : ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا مَرَّ بِالْحِجْرِ قَالَ : ((لَا تَدْخُلُوا مَسَاكِينَ الَّذِينَ ظَلَمُوا إِلَّا أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ أَنْ يُصِيبَكُمْ مَا أَصَابَهُمْ. ثُمَّ تَقَعَّ بِرِذَائِهِ وَهُوَ عَلَى الرَّحْلِ)).

[راجع: 433]

3381- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا أَبِي سَمِعْتُ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَدْخُلُوا مَسَاكِينَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ - إِلَّا أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ - أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَهُمْ)).

١٨- بَابُ

﴿إِنَّمَا كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ﴾



मौजूद थे जब हज़रत यअकूब (अलै.) की मौत हाज़िर हुई

3382. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अब्दुस्समद ने ख़बर दी, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शरीफ़ बिन शरीफ़ बिन शरीफ़ बिन शरीफ़, यूसुफ़ बिन यअकूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अलै.) थे। (दीगर मक़ाम : 3390, 4688)

इस रिवायत में हज़रत यअकूब (अलै.) का ज़िक्र ख़ैर हुआ है। यही बाब से मुनासबत की वजह है जो पहले भी गुज़र चुका है यहाँ इख़ित्तिसार के साथ एक दूसरी रिवायत में इस वाक़िये का बयान करना मक्सूद है।

बाब 19 : हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) का बयान अल्लाह पाक ने फ़र्माया कि बेशक यूसुफ़ और उनके भाईयों के वाक़ियात में पूछने वालों के लिये कुदरत की बहुत सी निशानियाँ हैं

3383. मुझसे अबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे अबैदुल्लाह ने बयान किया, उन्हें सईद बिन अबी सईद ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी (ﷺ) से पूछा गया कि सबसे ज़्यादा शरीफ़ आदमी कौन है? आपने फ़र्माया, जो अल्लाह का डर सबसे ज़्यादा रखता हो, सहाबा ने अर्ज़ किया कि हमारे सवाल का मक्सद ये नहीं है। आपने फ़र्माया कि फिर सबसे ज़्यादा शरीफ़ अल्लाह के नबी यूसुफ़ बिन नबीउल्लाह बिन नबीउल्लाह बिन ख़लीलुल्लाह हैं। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हमारे सवाल का मक्सद ये भी नहीं है। आपने फ़र्माया अच्छा तुम लोग अरब के ख़ानदानों के बारे में पूछना चाहते हो। देखो! लोगों की मिशाल ख़ानों की सी है (किसी ख़ान में से अच्छा माल निकलता है किसी में से बुरा) जो लोग तुममें से ज़मान-ए-जाहिलियत में शरीफ़ और बेहतर अख़लाक़ के थे वही इस्लाम के बाद भी अच्छे और शरीफ़ हैं बशर्ते कि वो दीन की समझ हासिल करें।

الْمَوْتُ ﴿البقرة : १२३﴾

۳۳۸۲- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((الكَرِيمُ ابْنُ الْكَرِيمِ ابْنُ الْكَرِيمِ: يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ)). [طرفاه في : ۳۳۹۰، ۴۶۸۸].

۱۹- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى : ﴿لَقَدْ

كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ

لِلْمُتَعَلِّينَ﴾ [يوسف : ۷]

۳۳۸۳- حَدَّثَنِي عَبْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أَسَامَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَتَقَاهُمْ اللَّهُ. قَالُوا : لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسَأُكَ. قَالَ: فَأَكْرَمُ النَّاسِ يُوسُفُ بْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ خَلِيلِ اللَّهِ. قَالُوا : لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسَأُكَ. قَالَ: فَقَدْ مَعَادِنُ الْعَرَبِ تَسْأَلُونَنِي النَّاسُ مَعَادِنَ، خِيَارُهُمْ فِي الْخَالِيَةِ خِيَارُهُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فَهِمُوا)).

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ

मुझसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुह ने खबर दी, उन्हें इब्बदुल्लाह ने, उन्हें सईद ने, उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीस रिवायत की। (राजेअ: 3353)

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि इस्लाम में बुनियाद शराफ़त दीनदारी और दीन की समझ हासिल करना है जिसे लफ़्ज़ फ़ुकाहत से याद किया गया है। दूसरी हदीस में है मय्युरिदिल्लाहु बिही खैरन युफ़किरहु फ़िदीन अल्लाह तआला अपने जिस बन्दे पर नज़रे करम करता है। इस सिलसिले में उम्मत के सामने ज़िन्दा मिशालें मुहदिषीने किराम की हैं जिनको अल्लाह पाक ने दीनी फ़ुकाहत से नवाज़ा कि आज इस्लाम उन ही की खूबसूरत कोशिशों से ज़िन्दा है कि सीरते नबवी अहदीषे सहीहा की रोशनी में मुकम्मल तौर पर मुतालआ की जा सकती है। अल्लाह पाक जुम्ला मुहदिषीन किराम व मुत्तहिदीने इज़ाम को उम्मत की तरफ़ से हज़ारों हज़ार जज़ाएँ अता फ़र्माएँ और क़यामत के दिन सबको फ़िरदौसे बर्री में जमा करे और मुझ नाचीज़ गुनाहगार अदना ख़ादिम और मेरे क़द्रदानों को बारी तआला हस्त्र के मैदान में अपने हबीबे-पाक और जुम्ला बुजुगाने ख़ास की रफ़ाक़त अता फ़र्माएँ आमीन।

3384. हमसे बदल बिन महब्बिर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने खबर दी, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने बयान किया। उन्होंने इर्वा बिन जुबैर से सुना और उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने (मर्ज़ुल मौत में) उनसे फ़र्माया, अबूबक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ, आइशा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि वो बहुत नरम दिल हैं, आपकी जगह जब खड़े होंगे तो उन पर रिक्कत तारी हो जाएगी। हुज़ूर (ﷺ) उन्हें दोबारा यही हुक्म दिया। लेकिन उन्होंने भी दोबारा यही इज़र बयान किया, शुअबा ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने तीसरी या चौथी बार फ़र्माया कि तुम तो यूसुफ़ (अलै.) की साथवालियाँ हो। (ज़ाहिर में कुछ बातिन में कुछ) अबूबक्र (रज़ि.) से कहो, नमाज़ पढ़ाएँ। (राजेअ: 198)

3385. हमसे रबीआ बिन यह्या बमरी ने बयान किया, कहा हमसे ज़ायदान ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन इमैर ने, उनसे अबू बुर्दा बिन अबी मूसा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब बीमार पड़े तो आपने फ़र्माया कि अबूबक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ। आइशा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि अबूबक्र (रज़ि.) निहायत नरमदिल इंसान हैं लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने दोबारा यही हुक्म फ़र्माया और उन्होंने भी वही इज़र दोहराया। आख़िर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनसे कहो नमाज़ पढ़ाएँ। तुम तो यूसुफ़ (ﷺ) की साथवालियाँ हो (ज़ाहिर कुछ बातिन कुछ) चुनाँचे अबूबक्र (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) की

اَللّٰهُ عَنْ سَعْدٍ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اَللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا. [راجع: 3353]

۳۳۸۴- حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ مَهْبَبٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ اِبْرَاهِيمَ قَالَ : قَالَ : سَمِعْتُ هُرَيْرَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اَللّٰهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا : ((مُرِّي اَنَّا نَكْرِ بِعَتَلٍ بِالنَّاسِ)). قَالَتْ : اِنَّهُ رَجُلٌ اَسِيفٌ، مَنَى يَقُمُ مَقَامَكَ رَقِيٍّ. فَقَادَتْ، فَقَالَتْ : قَالَ شُعْبَةُ : فَقَالَ فِي الْاُتْلَاقِ - اَوْ الرَّابِعَةِ - : ((اِنَّكُمْ صَوَاحِبُ يُوْسُفَ، مُرُّوْا اَنَّا نَكْرِ)). [راجع: 198]

۳۳۸۵- حَدَّثَنَا الزُّبَيْعُ بْنُ يَحْيَى النُّصْرِيُّ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ اَبِي بُرْدَةَ عَنْ اَبِي مُوسَى عَنْ اَبِيهِ قَالَ : ((مَرَضَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: مُرُّوْا اَنَّا نَكْرِ فَلْيُعَلِّ بِالنَّاسِ. فَقَالَتْ عَائِشَةُ: اِنَّ اَنَّا نَكْرِ رَجُلٌ - فَقَالَ مِقْلَةٌ، فَقَالَتْ مِقْلَةٌ - فَقَالَ: مُرُّوْا، فَاِنَّكُمْ صَوَاحِبُ يُوْسُفَ - فَاَمَّا اَبُو نَكْرِ فِي حَتَاةٍ وَرَسُولِ اَللّٰهِ ﷺ)).

जिन्दगी में इमामत की और हुसैन बिन अली ज़अफ़ी ने जायदा से रज़ुलुन रक्कीक के अलफ़ाज़ नक़ल किये कि अबूबक्र नरम दिल आदमी हैं। (राजेअ: 678)

وَقَالَ حُسَيْنٌ عَنْ زَائِدَةَ ((رَجُلٌ رَلِيقٌ)).

[راجع: ٦٧٨]

यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की साथ वालियों से वे औरतें मुराद हैं जिनको जुलैखा ने जमा किया था जिन्होंने बज़ाहिर जुलैखा को उसकी मुहब्बत पर मलामत की थी मगर दिल से सब हज़रत यूसुफ़ (अलै.) के हुस्न से मुताबिर थीं। आँहज़रत (ﷺ) का मक़सद इस जुम्ल से ये था कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बारे में तुम्हारी ये राय ज़ाहिरी तौर पर है वरना दिल से उनकी इमामत तस्तीम है।

3386. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई, ऐ अल्लाह! अयाश बिन अबी रबीआ को नजात दे, ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को नजात दे, ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद को नजात दे, ऐ अल्लाह तमाम ज़ईफ़ और कमज़ोर मुसलमानों को नजात दे। ऐ अल्लाह! क़बीला मुज़र को सख़्त गिरफ़्त में पकड़ ले। ऐ अल्लाह! यूसुफ़ (अलै.) के ज़माने की सी क़ह्रतसाली इन (ज़ालिमों) पर नाज़िल फ़र्मा।

٣٣٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ عِيَّاشَ بْنَ أَبِي رَيْثَةَ، اللَّهُمَّ أَنْجِ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَغْفِقِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ. اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطَأَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا سَيِّئًا كَسِيْفًا.))

3387. हमसे अबुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा इब्ने अज़्जी जुवेरिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवेरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे मालिक ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनको सईद बिन मुसय्यिब और अबू उबैदह ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला लूत (अलै.) पर रहम करे कि वो ज़बरदस्त रुक्न (या'नी अल्लाह करीम) की पनाह लेते थे और अगर मैं इतनी मुदत तक क़ैद में रहता जितनी यूसुफ़ (अलै.) रहे थे और फिर मेरे पास (बादशाह का आदमी) बुलाने के लिये आता तो मैं फ़ौरन उसके साथ चला जाता। (राजेअ: 3372)

٣٣٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي جُوَيْرِيَةَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَأَبَا عُبَيْدٍ أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَرْحَمُ اللَّهُ لُوطًا، لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى رُكْنَيْ شِدْبِهِ، وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السَّجْنِ مَا لَبِثَ يُوسُفُ ثُمَّ أَنَابِي الدَّاعِي لِأَجْتَنِّهُ)). [راجع: ٣٣٧٢]

आँहज़रत (ﷺ) हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सब व इस्तिक़्लाल की ता'रीफ़ बयान फ़र्मा रहे हैं कि उन्होंने अपनी बराअत का साफ़ शाही ऐलान हुए बग़ैर जेलखाना छोड़ना पसन्द नहीं फ़र्माया। रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्य मिम्मा यदक़रनी (यूसुफ़: 33) आयत से भी उनके मुक़ामे रिफ़अत व अज़ीम मर्तबत का इज़हार होता है। सल्लल्लाहु अलैहिम अज़्मईन, आमीन। अल्लाह के प्यारों की यही शान होती है।

3388. हमसे मुहम्मद बिन सलमा ने बयान किया, कहा हमको

٣٣٨٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا

मुहम्मद बिन फुजैल ने खबर दी, कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, उनसे सुफयान ने, उनसे मसरूक ने बयान किया कि मैंने आइशा (रज़ि.) की वालिदा उम्मे रुम्मान (रज़ि.) से आइशा (रज़ि.) के बारे में जो बोहतान तराशा गया था उसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि आइशा (रज़ि.) के साथ बैठी हुई थी कि एक अंसारिया औरत हमारे यहाँ आई और कहा कि अल्लाह फ़लाँ (मस्तह बिन अषाषा) को तबाह कर दे और वो उसे तबाह कर भी चुका। उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा, आप ये क्या कह रही हैं? उन्होंने बताया कि उसी ने तो ये झूठ मशहूर किया है। फिर अंसारिया औरत ने हज़रत आइशा पर तोहमत का सारा वाक़िया बयान किया (हज़रत आइशा रज़ि.) ने (अपनी वालिदा से) पूछा कि कौनसा वाक़िया है? तो उनकी वालिदा ने उन्हें वाक़िया की तफ़्सील बताई। आइशा (रज़ि.) ने पूछा कि क्या ये क़िस्सा अबूबक्र (रज़ि.) और रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी मा'लूम हो गया है? उनकी वालिदा ने बताया कि हाँ। ये सुनते ही हज़रत आइशा (रज़ि.) बेहोश होकर गिर पड़ीं और जब होश आया तो जाड़े के साथ बुखार चढ़ा हुआ था। फिर नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और दरयाफ़्त किया कि इन्हें क्या हुआ? मैंने कहा कि एक बात उनसे ऐसी कही गई थी और उसी के सदमे से उनको बुखार आ गया है। फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) उठकर बैठ गईं और कहा अल्लाह की क़सम! अगर मैं क़सम खाऊँ जब भी आप लोग मेरी बात नहीं मान सकते और अगर कोई इज़र बयान करूँ तो उसे भी तस्लीम नहीं कर सकते। बस मेरी और आप लोगों की मिषाल यज़कूब (अलै.) और उनके बेटों की सी है (कि उन्होंने अपने बेटों की मनगढ़त कहानी सुनकर फ़र्माया था कि) जो कुछ तुम कह रहे हो मैं उस पर अल्लाह ही की मदद चाहता हूँ। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) वापस तशरीफ़ ले गए और अल्लाह तआला को जो कुछ मंज़ूर था वो नाज़िल फ़र्माया। जब आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी ख़बर आइशा (रज़ि.) को दी तो उन्होंने कहा कि उसके लिये मैं सिर्फ़ अल्लाह का शुक्र अदा करती हूँ किसी और का नहीं। (दीगर मक़ाम : 4143, 4691, 4751)

ابْنُ فَطْرِيْلٍ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ : ((سَأَلْتُ أُمَّ رُوْمَانَ وَهِيَ أُمُّ عَائِشَةَ عَمَّا قِيلَ فِيهَا مَا قِيلَ قَالَتْ : يَتِمُّ أَنَا مَعَ عَائِشَةَ جَالِسَتَانِ، إِذْ وَلَجَتْ عَلَيْنَا امْرَأَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ وَهِيَ تَقُولُ: قَعَلَ اللَّهُ بِفُلَانٍ وَقَعَلَ. قَالَتْ: فَقُلْتُ: لِمَ؟ قَالَتْ: إِنَّهُ نَمَى ذَكَرَ الْحَدِيثِ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: أَيُّ حَدِيثٍ؟ فَأَخْبَرْتُهَا. قَالَتْ: فَسَمِعْتُ أَبُوبَكْرٍ وَرَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، فَخَرْتُ مَفْشِيًا عَلَيْهَا، فَمَا أَفَأْتُ إِلَّا وَعَلَيْهَا حُمَى بِبَالٍ. فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا لِهَذِهِ؟)) قُلْتُ حُمَى أَخَذْتُهَا مِنْ أَجْلِ حَدِيثٍ تَحَدَّثُ بِهِ. فَقَعَدَتْ فَقَالَتْ: وَاللَّهِ لَئِنْ خَلَفْتُ لَا تُصَدِّقُونَنِي، وَلَئِنْ اغْتَدَرْتُ لَا تَعْلِمُونَنِي، فَمَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ يَعْقُوبَ وَبَنِيهِ، وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ. فَانصَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ مَا أَنْزَلَ، فَأَخْبَرَهَا قَالَتْ: بِحَمْدِ اللَّهِ لَا بِحَمْدِ أَحَدٍ)).

[أطرافه في : ٤١٤٣، ٤٦٩١، ٤٧٥١.]

**तशरीह :** हज़रत यूसुफ़ (अलै.) और उनके भाइयों के ज़िक्र से बाब का तर्जुमा निकलता है और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ भी इशारा किया हो जिसमें यूँ है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने दौराने बातचीत

यूँ कहा कि मुझे जो हजरत यअकूब (अलै.) का नाम याद न आया तो मैंने यूसुफ का बाप कह दिया।

3389. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक्रील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे उर्वा ने खबर दी कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आइशा (रज़ि.) से आयत के बारे में पूछा, हत्ता इजस तय असरुसुल जन्नू अन्नहुम कुजिबू (तशदीद के साथ) है या कुजिबू (बगैर तशदीद के) या'नी यहाँ तक कि जब अंबिया नाउम्मीद हो गये और उन्हें खयाल गुजरने लगा कि उन्हें झुठला दिया गया तो अल्लाह की मदद पहुँची तो उन्होंने कहा कि (ये तशदीद के साथ है और मतलब ये है कि) उनकी क़ौम ने उन्हें झुठलाया था। मैंने अर्ज किया कि फिर मा'नी कैसे बनेंगे, पैगम्बरों को यक़ीन था ही कि उनकी क़ौम उन्हें झुठला रही है। फिर कुर्आन में लफ़्ज़ जन्न गुमान और खयाल के मा'नी में इस्ते'माल क्यों किया गया? आइशा (रज़ि.) ने कहा ऐ छोटे से उर्वा! बेशक उनको तो यक़ीन था मैंने कहा तो शायद उस आयत में बगैर तशदीद के कुजिबू होगा या'नी पैगम्बर ये समझे कि अल्लाह ने जो उनकी मदद का वा'दा किया था वो ग़लत था। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, मअज़ल्लाह! अंबिया अपने रब के साथ भला ऐसा गुमान कर सकते हैं। आइशा (रज़ि.) ने कहा मुराद ये है कि पैगम्बरों के ताबेदार लोग जो अपने मालिक पर ईमान लाए थे और पैगम्बरों की तशदीक की थी उन पर जब मुद्दत तक अल्लाह की आजमाइश रही और मदद आने में देर हुई और पैगम्बर लोग अपनी क़ौम के झुठलाने वालों से नाउम्मीद हो गये (समझे कि अब वो ईमान नहीं लाएँगे) और उन्होंने ये गुमान किया कि जो लोग उनके ताबेदार बने हैं वो भी उनको झूठा समझने लगेंगे, उस वक़्त अल्लाह की मदद आ पहुँची। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि इस्तयअसू, इफ़्तअलू के वज़न पर है जो यइसत मिन्हू से निकला है, अय मिन यूसुफ़ (सूरह यूसुफ़ की आयत का एक जुम्ला है या'नी जुलैखा यूसुफ़ (अलै.) से नाउम्मीद हो गई) ला तयअसू मिर खवहिल्ला (यूसुफ़ : 87) या'नी अल्लाह से उम्मीद रखवाना उम्मीद न हो। (दीगर मक़ाम : 4525, 4695, 4696)

۳۳۸۹- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي عَزْرَةُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرَأَيْتَ قَوْلَ اللَّهِ: ((حَتَّى إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا)) أَوْ كُذِّبُوا، قَالَتْ: بَلْ كَذَّبَهُمْ قَوْمُهُمْ، فَقُلْتُ وَاللَّهِ لَقَدْ اسْتَفْتَيْتُهَا أَنْ قَوْمَهُمْ كَذَّبُوهُمْ وَمَا هُوَ بِالظَّنِّ. فَقَالَتْ: يَا عَزْرَةُ، لَقَدْ اسْتَفْتَيْتُهَا بِذَلِكَ، فَقُلْتُ: فَلَعَلَّهَا ((أَوْ كُذِّبُوا)) قَالَتْ: مَعَاذَ اللَّهِ، لَمْ تَكُنِ الرُّسُلُ تَظُنُّ ذَلِكَ بِرَبِّهَا، وَأَمَّا هَذِهِ الْآيَةُ قَالَتْ: هُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ الَّذِينَ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَصَدَّقُوهُمْ وَطَاعُوا عَلَيْهِمُ الْبِلَاءَ وَاسْتَأْخَرُوا عَنْهُمْ النَّصْرَ، حَتَّى إِذَا اسْتَيْسَسَتْ مِنْهُمْ كَذَّبَهُمْ مِنْ قَوْمِهِمْ وَظَنُوا أَنَّ أَتْبَاعَهُمْ كَذَّبُوهُمْ جَاءَهُمْ نَصْرُ اللَّهِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ((اسْتَيْسَسُوا)) اسْتَفْعَلُوا مِنْ يَسَسَ. مِنْ يَوْسُفَ ((لَا تَيَاسُوا مِنْ رُوحِ اللَّهِ مَعْنَاهُ الرَّجَاءُ. (أَطْرَافُهُ فِي: ٤٥٢٥، ٤٦٩٥، ٤٦٩٦)).

3390. मुझे अब्दुल्लह बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्होंने कहा हमसे

۳۳۹۰- أَخْبَرَنِي عُبَيْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ



तज़िया और जमा सबके लिये लफ़्ज़ नजिय्यन बोला जाता है। सूरह यूसुफ़ में है 'ख़लमून नजिय्यन या' नी अकेले में जाकर मश्विरा करने लगे (अगर नजिय्यन का लफ़्ज़ मुफ़रद के लिये इस्ते'माल हुआ हो तो) उसकी जमा अन्जियतुन होगी। सूरह मुजादिला में लफ़्ज़ यतनाजवना भी इसी से निकला है।

**तशरीह :** इसाईली पैगम्बरों में हज़रत मूसा (अलै.) जलीलुल क़द्र साहिबे-शरीअत नबी हैं। उनके ज़िक्रे खैर में कुर्आन मजीद की बेशतर आयात नाज़िल हुई हैं। उनकी पैदाइश और बाद की पूरी ज़िन्दगी कुदरते इलाही का बेहतरीन नमूना है। वक़्त की एक जाबिर हुकूमत से टकर लेना बल्कि उसका तख़्ता उलट देना ये हज़रत मूसा (अलै.) का वो कारनामा है जो रहती दुनिया तक याद रहेगा। अल्लाह पाक ने उन पर अपनी मुक़द्दस किताब तौरात नाज़िल फ़र्माई जिसके बारे में कुर्आन मजीद की शहादत है, इन्ना अन्ज़ल्न तौरात फ़ीहा हुदव्वं नूर (अल माइदा : 44)

बाब 22 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया) और फ़िअ्रों के ख़ानदान के एक मोमिन मर्द (शम्आन नामी) ने कहा जो अपने ईमान को पोशीदा रखे हुए था, अल्लाह तआला के इशार्द मुस्लिफ़ कज़ाब तक।

3392. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैय़ बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक्कील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने इर्वा बिन जुबैर से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, फिर नबी करीम (ﷺ) (ग़ारे हिरा से) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पास लौट आए तो आपका दिल धड़क रहा था। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) आपको वरक्का बिन नौफ़िल के पास ले गई, वो नसरानी हो गये थे और इंजील को अरबी में पढ़ते थे। वरक्का ने पूछा कि आप क्या देखते हैं? आपने उन्हें बताया तो उन्होंने कहा कि यही हैं वो नामूस जिन्हें अल्लाह तआला ने मूसा (अलै.) के पास भेजा था और अगर मैं तुम्हारे ज़माने तक ज़िन्दा रहा तो मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा। नामूस महारये राज़ को कहते हैं जो ऐसे राज़ से भी आगाह हो जो आदमी दूसरों से छुपाए। (राजेअ : 3)

هَارُونَ نَبِيًّا يُقَالُ لِلوَاحِدِ وَالْإِثْنَيْنِ وَالْجَمْعِ : نَحْيٌ. وَيُقَالُ : خَلَصُوا نَجْيًا اغْتَرَلُوا نَجْيًا، وَالْجَمْعُ أَنْجِيَّةٌ يَتَأَخَّرُونَ.

۲۲- باب  
«وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ - إِلَى - مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَابٌ»  
[غافر : ۲۸].

۳۳۹۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ سَمِعْتُ عُرْوَةَ قَالَ : قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : ((فَرَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى خَدِيجَةَ يَرْجِفُ فَرَادُهُ، فَانْطَلَقَتْ بِهِ إِلَى وَرَقَةَ بْنِ نَوْفَلٍ - وَكَانَ رَجُلًا تَنْصُرُ، يَقْرَأُ الْإِنْجِيلَ بِالْعَرَبِيَّةِ- فَقَالَ وَرَقَةُ : مَاذَا تَرَى؟ فَأَخْبَرَهُ، فَقَالَ وَرَقَةُ : هَذَا النَّامُوسُ الَّذِي أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى مُوسَى، وَإِنْ أَذْرَكِي يَوْمَكَ أَنْصُرَكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا)). النَّامُوسُ : صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي يُطْلَعُهُ بِمَا يَسْتُرُهُ عَنْ غَيْرِهِ.

[راجع : ۳]

बाब 23 : अल्लाह तआला का (सूरह ताहा) में फ़र्माना ऐ नबी तू ने मूसा (अलै.) का क्रिस्सा सुना है जब उन्होंने आग देखी। आख़िर आयत बिलवादिल मुक़द्दसि तुवा, तक। आनस्तु का मा'नी मैंने आग देखी (तुम यहाँ ठहरो) मैं उसमें से एक चिंगारी

۲۳- بابُ قولِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ : «وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى إِذْ رَأَى نَارًا- إِلَى قَوْلِهِ - بِالْوَادِي الْمَقْدَسِ طَوًى» [طه : ۹-۱۲] «أَنْتَ» أَبْصَرْتَ

तुम्हारे पास लेकर आता हूँ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, मुक़द्दस का मा'नी मुबारक। तुवा उस वादी का नाम था जहाँ अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा (अलै.) से कलाम किया था। सीरतुहा या'नी पहली हालत पर। नुहा या'नी परहेज़गारी। बिमल्किना या'नी अपने इख़्तियार से। हवा या'नी बदबख़्त हुआ। फ़ारिगन या'नी मूसा के सिवा और कोई ख़याल दिल में न रहा। रिदा या'नी फ़रियादरस या मददगार। यक्लिशु बिज़मि ता और यक्लिश बिकसरिता दोनों तरह क्रिअत है। यातमिरून या'नी मश्वरा करते हैं। जिज़्वतन या'नी लकड़ी का एक मोटा टुकड़ा जिसमें से आग का शोला न निकले (सिर्फ़ उसके मुँह पर आग रोशन हो) सनशदु अज़ुदक या'नी तेरी मदद करेंगे। जब तू किसी चीज़ को ज़ोर दे गोया तूने उसको अज़ुद बाज़ू दिया। (ये सब तफ़्सीरें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. से मन्कूल हैं) औरों ने कहा उक्दतुन का मा'नी ये है कि जुबान से कोई हर्फ़ यहाँ तक कि तयाफ़ भी न निकल सके। अज़री या'नी पीठ फ़युस्हितकुम या'नी तुमको हलाक करे। मुषला, अम्षल की मुअन्नष है। या'नी तुम्हारा दीन ख़राब करना चाहते हैं। अरब लोग कहते हैं। ख़ुज़िल मुषला ख़ुज़िल अम्षल या'नी अच्छी रविश, अच्छा तरीका सम्भाल। धुम्मा उइतू सफ़्फ़ा या'नी क़तार बाँधकर आओ। अरब लोग कहते हैं आज तू सफ़ में गया या नहीं या'नी नमाज़ के मुक़ाम पर। फ़औजस या'नी मूसा का दिल धड़कने लगा ख़ीफ़ता की असल ख़वफ़ता थी वाव को बवजहे कसरा मा क़बल के य से बदल दिया गया, फ़ी जज़ूअन नख़ल या'नी अला जज़ूअन नख़ल। ख़त्बुका या'नी तेरा हाल। मिसास मसदर है मास्सा मिसास से। ला मिसास या'नी तुझको कोई न छुए, न तू किसी को छुए। लिनफ़िसही या'नी हम उसको राख़ करके दरिया में उड़ा देंगे। ला तज़ ही जुहा से है या'नी गर्मी। कुस्सीहि या'नी उसके पीछे पीछे चली जा कभी कुस्स का मा'नी कहना और बयान करना भी आता है। (सूरह यूसुफ़ में) इसी से नहनु नकुस्सु अलयका नब्बअहुम है। लफ़ज़ अन जुनुब और अन जनाबतुन सबका मा'नी एक ही है या'नी दूर से। मुजाहिद (रह.) ने कहा अला क़दरिया'नी वा'दा पर। ला तनिया या'नी सुस्ती न करो। यबसा या'नी ख़ुश्क मिन ज़ीनतिल क़ौम।

﴿نَارًا لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ﴾ الآية.  
 قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿الْمُقَدَّسُ﴾: الْمُبَارَكُ.  
 ﴿طَوًى﴾: اسْمُ الْوَادِي. ﴿سِيرَتُهَا﴾:  
 حَالَتُهَا. ﴿وَالنُّهْيُ﴾: التَّقْيُ. ﴿بِمَلِكِنَا﴾:  
 بِأَمْرِنَا. ﴿هَوًى﴾: شَقِي. ﴿فَارِعَا﴾: إِلَّا  
 مِنْ ذِكْرِ مُوسَى. ﴿رِذَاءً﴾: كَيْ يُصَدِّقِي,  
 وَيُقَالَ: مُعِينًا، أَوْ مُعِينًا. ﴿يَنْطَشُ،  
 وَيَنْطَشُ﴾. ﴿يَأْتِمُرُونَ﴾: يَتَشَاوَرُونَ.  
 وَالْجَذْوَةُ: قِطْعَةُ غَلِيظَةٍ مِنَ الْخَشَبِ  
 لَيْسَ فِيهَا لَهَبٌ. ﴿سَنَشُدُّ﴾: سَعْيُكَ،  
 كُلَّمَا عَزَزْتَ شَيْئًا فَقَدْ جَعَلْتَ لَهُ عَضْدًا.  
 وَقَالَ غَيْرُهُ: كُلَّمَا لَمْ يَنْطِقْ بِحَرْفٍ، أَوْ  
 فِيهِ تَمَنَّةٌ أَوْ قَافَاةٌ فِيهِ: ﴿غَفْدَةٌ﴾.  
 ﴿أَزْرِي﴾: طَهْرِي. ﴿فَيَسْحِكُكُمْ﴾:  
 فَيَهْلِكُكُمْ. ﴿الْمُتْلَى﴾: تَأْنِيثُ الْأَمْتَلِ،  
 يَقُولُ: بِدِينِكُمْ. يُقَالَ: خَذِ الْمُتْلَى خُذِ  
 الْأَمْتَلِ. ﴿ثُمَّ آتَوْا صَفَا﴾ يُقَالَ: هَلْ  
 أَتَيْتَ الصَّفَّ الْيَوْمَ؟ يَعْنِي الْمُصَلَّى الَّذِي  
 يُصَلِّي فِيهِ. ﴿فَأَوْجَسَ﴾: أَضْمَرَ خَوْفًا،  
 فَذَقْتَ الْوَأْوِ مِنْ ﴿خَيْفَةٍ﴾ لِكَسْرَةِ  
 الْخَاءِ. ﴿فِي جَذْوَعِ النَّخْلِ﴾: عَلَى  
 جَذْوَعٍ. ﴿خَطْبُكَ﴾: بَالِكَ. ﴿مَسَاسٌ﴾:  
 مَصْنَعٌ مَأْسَهُ مَسَاسًا. ﴿تَنْسِفُهُ﴾:  
 تَنْذِرُهُ. ﴿الصَّحَاءُ﴾: الْخَرُّ. ﴿قَصِيهِ﴾:  
 اتَّبِعِي آثَرَهُ، وَقَدْ يَكُونُ أَنْ نَقُصَّ الْكَلَامَ  
 ﴿نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ﴾. ﴿عَنْ جُنُبٍ﴾ عَنْ  
 بَعْضٍ، وَعَنْ جُنَابَةٍ وَعَنْ اجْتِنَابٍ وَاحِدٌ.



या'नी ज़ेवर में से जो बनी इसाईल न फ़िऑन वालों से मांगकर लिये थे। फ़क़ज़फ़तहा या'नी मैंने उसको डाल दिया। अल्का या'नी बनाया। फ़ नसिय उसका मतलब ये है कि सामरी और उसके लोग कहते हैं कि मूसा (अलै.) ने ग़लती की जो उस बछड़े को अल्लाह न समझकर दूसरी जगह चल दिया। इन्ना ला यरजिज़ इलयहिम क़ौला। या'नी वो बछड़ा उनकी बात का जवाब नहीं दे सकता था।

فَالْمُحَاجِدُ: ﴿عَلَى قَدَرٍ﴾: مَوْعِدٌ. ﴿لَا تَبْأَسْ﴾: لَا تَضْغَفَا. ﴿يَسَا﴾: يَابَسَا. ﴿مِنْ زِينَةِ الْقَوْمِ﴾: التَّخْلِیُّ الَّذِي اسْتَعَارُوا مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ. ﴿فَلَقَدْ فَتَنَّا﴾: أَلْقَيْنَاهَا. ﴿وَالْقَى﴾: صَنَعَ ﴿فَقَسَى﴾: يُوسَى: هُمْ يَقُولُونَ الرُّبَّ أَنْ لَا يَرْجِعَ إِلَيْهِمْ قَوْلًا فِي الْعِجْلِ.

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ कुआन मजीद के बहुत से उन अल्फ़ाज़ की वज़ाहत फ़र्माई है जो मुख्तलिफ़ आयात में ज़िक्र-मूसा (अलै.) के सिलसिले से वारिद हुआ है। कुआन पाक का मुताअला करने वालों के लिये मौक़ा ब मौक़ा उन अल्फ़ाज़ का समझना भी ज़रूरी है और ऐसे शाएकीने किराम के लिये बुखारी शरीफ़ के उस मुक़ाम से बेहतरीन रोशनी मिल सकेगी। अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द और औरत को कुआन पाक और बुखारी शरीफ़ का मुतालआ करने और गौर व तदब्बुर के साथ उनको समझने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए आमीन। ये बात हर भाई को याद रखनी ख़हिए कि कुआन व हदीष के समझने के लिये सरसरी मुतालआ काफ़ी नहीं है। जो लोग महज़ सरसरी मुतालआ करके उन पाकीज़ा इलूम के माहिर बनना चाहते हैं वो एक ख़तरनाक ग़लती में मुब्तला हैं बल्कि कुआन व हदीष को गहरी निगाह से बार बार मुतालआ करने की ज़रूरत है। सच है, **वल्लज़ीन जाहदु फीना लनहदियन्नहुम सुबुलना** (अल अन्कबूत : 69) आयेते शरीफ़ा के मज़कूर मुजाहदा में किताब व सुन्नत का बनज़रे बसोरेत गहरा मुतालआ करना भी दाख़िल है। वबिल्लाहिताफ़ीक़।

3393. हमसे हदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत मालिक बिन सअसआ (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे उस रात के मुता'ल्लिक़ बयान किया जिसमें आपको मेअराज हुआ कि जब आप पाँचवें आसमान पर तशरीफ़ ले गए तो वहाँ हारून (अलै.) से मिले। जिब्रईल (अलै.) ने बताया कि ये हारून (अलै.) हैं, उन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया तो उन्होंने जवाब देते हुए फ़र्माया, खुश आमदीद, झालेह भाई और झालेह नबी। इस हदीष को क़तादा के साथ ग़ाबित बिनानी और अब्बाद बिन अबी अली ने भी अनस (रज़ि.) से, उन्होंने आँ हज़रत (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 3207)

कुछ नुस्खों में इस मुक़ाम पर बाब नम्बर 22 जो गुज़िश्ता मफ़्हात में गुज़रा है बयान हुआ है। अल्बत्ता उसके तहत कोई हदीष ज़िक्र नहीं हुई।

۳۳۹۳- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَفْصَعَةَ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ حَدَّثَهُمْ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِي بِهِ، حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ فَإِذَا هَارُونُ، قَالَ: هَذَا هَارُونُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَوَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ)). تَابَعَهُ ثَابِتٌ وَعَبَادُ بْنُ أَبِي عَلِيٍّ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ۳۲۰۷]

फ़र्मान और क्या तुझको मूसा का वाक़िया  
मा'लूम हुआ है और (सूरह निसा में) अल्लाह  
तआला ने मूसा (अलै.) से कलाम किया।

अल्लाह का कलाम करना बरहक़ है जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और उसमें क़ुदेद करना बिदअत है।

3394. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको  
हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी,  
उन्हें जुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे हज़रत अबू  
हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस रात की  
कैफ़ियत बयान की जिसमें आपको मेअराज हुआ कि मैंने मूसा  
(अलै.) को देखा कि वो एक दुबले पतले सीधे बालों वाले  
आदमी हैं। ऐसा मा'लूम होता था कि क़बीला शन्वह में से हों और  
मैंने ईसा (अलै.) को भी देखा, वो म्याना क्रद और निहायत  
सुख़ व सफ़ेद रंग वाले थे। ऐसे तरोताज़ा और पाक व साफ़ कि  
मा'लूम होता था कि अभी गुस्ल ख़ाना से निकले हैं और मैं  
इब्राहीम (अलै.) से उनकी औलाद में सबसे ज़्यादा मुशाबेह हूँ।  
फिर दो बर्तन मेरे सामने लाए गये। एक में दूध था और दूसरे में  
शराब थी। जिब्रईल (अलै.) ने कहा कि दोनों चीज़ों में से आपका  
जो जी चाहे पीजिए, मैंने दूध का प्याला अपने हाथ में ले लिया  
और उसे पी गया। मुझसे कहा गया कि आपने फ़ितरत को  
इख़्तियार किया (दूध आदमी की पैदाइशी ग़िज़ा है) अगर उसके  
बजाय आपने शराब पी होती तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती।  
(दीगर मक़ाम : 3437, 4709, 5576, 5603)

3395. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे  
गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा  
ने बयान किया, उनसे अबुल आलिया ने बयान किया और उनसे  
तुम्हारे नबी के चचाज़ाद भाई या'नी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.)  
ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी शख़्स को  
यूँ कहना चाहिये कि मैं यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हों, हज़ूर (ﷺ)  
ने उनका नाम उनके वालिद की तरफ़ मन्सूब करके लिया। (दीगर  
मक़ाम : 3413, 4630, 7539)

3396. और हज़ूर (ﷺ) ने शबे मेअराज का ज़िक्र करते हुए

﴿وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى - وَكَلَّمَ اللَّهُ  
مُوسَى نَكِيلًا﴾

3394 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى  
أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُسُفَ أَخْبَرَنَا مَقْمَرٌ عَنْ  
الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ: ((ثَلَاثَةُ أَسْرِيَ بِي رَأَيْتُ مُوسَى  
وَإِذَا رَجُلٌ ضَرَبَ رَجُلٌ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ  
شَوْءَةٍ، وَرَأَيْتُ عَيْسَى فَإِذَا رَجُلٌ رَتَقَةٌ  
أَحْمَرُ كَأَنَّمَا خَرَجَ مِنْ دِيمَاسٍ، وَأَنَا أَشَبُّ  
وَلَدِ إِبْرَاهِيمَ بِهِ. ثُمَّ أُنِيتُ بِإِنَاءَيْنِ فِي  
أَحَدِهِمَا لَبَنٌ وَلِیِ الْآخَرِ خَمْرٌ فَقَالَ:  
اشْرَبْ أَيُّهُمَا شِئْتَ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ  
فَشَرَبْتُهُ، فَقِيلَ: أَخَذْتَ الْفَطْرَةَ، أَمَا إِنَّكَ  
لَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ)).

[اطرافه في: 3437, 4709, 5576, 5603]

[5603]

3395 - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ  
حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ: قَالَ  
سَمِعْتُ أَبَا الْعَالِيَةِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَمٍّ نَبِيَكُمْ  
- يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:  
((لَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ: أَنَا خَيْرٌ مِنْ  
يُونُسَ بْنِ مَتَّى. وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيهِ)).

[اطرافه في: 3413, 4630, 7539]

3396 - وَذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ ثَلَاثَةَ أَسْرِيَ بِهِ

फ़र्माया कि मूसा (अलै.) गुन्दमी रंग और लम्बे कद के थे। ऐसा मा'लूम होता था जैसे क़बीला शनूआ के कोई साहब हों और फ़र्माया कि ईसा (अलै.) घुँघराले बाल वाले और म्याना क़द के थे और हुज़ूर (ﷺ) ने जहन्नम के दारोगा मालिक का भी ज़िक्र किया और दज्जाल का भी। (राजेअ: 3239)

3397. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख्तिथानी ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर के साहबजादे (अब्दुल्लाह) ने अपने वालिद से और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो वहाँ के लोग एक दिन या'नी आशूरा के दिन रोज़ा रखते थे। उन लोगों (यहूदियों) ने बताया कि ये बड़ी अज़मत वाला दिन है, उसी दिन अल्लाह तआला ने मूसा (अलै.) को नजात दी थी और आले फिरऔन को शर्क़ किया था। उसके शुक्र में मूसा (अलै.) ने इस दिन का रोज़ा रखा था। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं मूसा (अलै.) का इनसे ज़्यादा करीब हूँ। चुनाँचे आपने खुद भी उस दिन का रोज़ा रखना शुरू किया और सहाबा को भी उसका हुक्म दिया। (राजेअ: 2004)

इन जुम्ला मरवियात में हज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्र खैर वारिद हुआ है। अहादीष और बाब में यही मुनासबत है। दीगर उम्मे मज़कूरा ज़िम्न ज़िक्र में आ गये हैं।

### बाब 25 :

सूरह आराफ़ में अल्लाह तआला का इश्राद, और हमने मूसा से तीस रात का वा'दा किया फिर उसमें दस रातों का और इज़ाफ़ा कर दिया और इस तरह उनके रब की मेअ्याद चालीस रातें पूरी कर दीं। और मूसा (अलै.) ने अपने भाई हारून (अलै.) से कहा कि मेरी ग़ैर मौजूदगी में मेरी क़ौम में मेरे ख़लीफ़ा रहो। और उनके साथ नरम रविय्या रखना और मुफ़्फ़िदों के रास्ते पर मत चलना। फिर जब मूसा (अलै.) हमारे ठहराए हुए वक़्त पर (एक चिल्ला के) बाद आए और उनके रब ने उनसे बातचीत की तो उन्होंने अज़्र किया मेरे परवरदिगार! मुझे अपना दीदार करा कि मैं तुझको देख लूँ। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि तुम मुझे हरिज़ न देख सकोगे, अल्लाह तआला के आख़िर इश्राद व अना अब्वलुल मूमिनीन तक। अरब लोग बोलते हैं दक्का या'नी उसे हिला दिया। इसी से है (सूरह हाक्का में) फ़दुक्कता दक्कतवं वाहिदा तज़्निया का सेगा इस तरह दुरुस्त

فَقَالَ: (مُوسَى آذَمَ طَوَالَ كَأَنَّهُ مِنْ رَجَالِ شَوْءٍ. وَقَالَ: عَيْسَى جَعَدَ مَرْبُوعٌ، وَذَكَرَ مَالِكَا خَارِجِ النَّارِ، وَذَكَرَ الدَّجَالَ)). (ر. ح. 3239)

3397 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَبِيبٍ اللَّهُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ السَّخْتِيَانِيُّ عَنْ ابْنِ سَعِيدٍ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: (أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا قَبِمَ الْمَدِينَةَ وَجَدَهُمْ يَصُومُونَ يَوْمًا - يَغْنِي عَاشُورَاءَ - فَقَالُوا: هَذَا يَوْمٌ عَظِيمٌ، وَهُوَ يَوْمٌ نَجَّى اللَّهُ فِيهِ مُوسَى، وَأَغْرَقَ آلَ فِرْعَوْنَ، فَصَامَ مُوسَى شُكْرًا لِلَّهِ. فَقَالَ: أَنَا أَوْلَى بِمُوسَى مِنْهُمْ، فَصَامَهُ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ)). (راجع: 3239)

### 25- باب

قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَوَاعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ قَتْمٍ مِيقَاتِ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً. وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ: اخْلُفْنِي فِي قَوْمٍ وَأَصْلِحْ، وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ. وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ: رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ، قَالَ: لَنْ تَرَانِي - إِلَى قَوْلِهِ - وَأَنَا أَوْلَى الْمُؤْمِنِينَ. يَقَالُ ذِكْرُهُ: زَلْزَلَهُ فَذَكَّرَهُ، فَذَكَّرَهُ فَذَكَّرَهُ. فَجَعَلَ الْجِبَالُ كَالْوَاحِدَةِ كَمَا قَالَ اللَّهُ غَرُوجَلْ: ﴿إِنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ

हुआ कियहाँ पहाड़ों को एक चीज़ फ़र्ज़ किया और ज़मीन को एक चीज़ कायदे के मुवाफ़िक़ यूँ होना था फ़दक़ना बसेगा जमा। उसकी मिश्राल वो है जो सूरह अंबिया में है, इन्सू समावाति वल अरज़ि कानता रत्का और यूँ नहीं फ़र्माया कुन रत्का बसेगा जमा (हालाँकि क़यास यही चाहता था) रत्का के मा'नी जुड़े हुए मिले हुए। उश्शिबू (जो सूरह बक्रः में है) उस शरिब से निकला है जो रंगने के मा'नों में आता है जैसे अरब लोग कहते हैं शौबुन मुशरबुन या'नी रंगा हुआ कपड़ा (सूरह अअराफ़ में) नतक्रना का मा'नी हमने उठा लिया।

3398. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने, उनसे अमर बिन यह्या ने, उनसे उनके वालिद यह्या बिन अम्मारा ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन सब लोग बेहोश हो जाएँगे, फिर सबसे पहले मैं होश में आऊँगा और देखूँगा कि मूसा अर्श के पायों में से एक पाया थामे हुए हैं। अब मुझे ये मा'लूम नहीं कि वो मुझसे पहले होश में आ गये होंगे या (बेहोश ही नहीं किये गये होंगे बल्कि) उन्हें कोहे तूर की बेहोशी का बदला मिला होगा। (राजेअ : 2412)

3399. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जोअफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हममाम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर बनी इस्राईल न होते (सल्वा का गोश्त जमा न करते) तो गोश्त कभी न सड़ता। और अगर हव्वा न होती (या'नी हज़रत आदम अलै. से दगा न करती) तो औरत अपने शौहर की ख़यानत कभी न करती।

मतलब ये है कि गोश्त को जमा करने की आदत बनी इस्राईल में पैदा हुई। पस गोश्त सड़ना शुरू हो गया। अगर ये आदत इख़्तियार न करते तो और गोश्त को बरवक़्त खा लिया जाता तो उसके सड़ने का सवाल ही पैदा न होता। इसी तरह हज़रत हव्वा (अलै.) हज़रत आदम (अलै.) से दगा न करती तो उनकी बेटियों में भी ये आदत पैदा न होती। अल्लाह पाक मुंकिरीने हदीष को समझ दे कि फ़हमे हदीष के लिये वो अक्ले सलीम से काम लें।

बाब 26 सूरह अअराफ़ में तूफ़ान से मुराद सैलाब का तूफ़ान है बक़रत अम्वात को भी तूफ़ान कहते हैं

كَانَا رَتْقًا وَتَمَّ يَقُلْ كُنْ رَتْقًا : مُتَصِفَتَيْنِ. ﴿أَشْرَبُوا﴾ نَوْبٌ مُشْرَبٌ مَصْبُوعٌ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿أَتَجَسَّتْ﴾ الْفَجْرَتِ. ﴿وَإِذْ تَقَعْنَا الْجَبَلَ﴾ : رَقَعْنَا.

3398- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو بْنِ يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((النَّاسُ يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يَفِيقُ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْعَرْشِ، فَلَا أَذْرِي أَفَاقَ قُلُوبِي أَمْ جُورِي بِصَعْقَةِ الطُّورِ)). (راجع: 2412)

3399- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ لَا بُنُو إِسْرَائِيلَ لَمْ يَخْتَرْ اللَّحْمُ، وَلَوْ لَا حَوَاءُ لَمْ نَخْنِ أَتَى رُوحَهَا الدَّهْرُ)).

26- بَابُ طُوفَانٍ مِنَ السَّيْلِ وَيُقَالُ: لِلْمَوْتِ الْكَثِيرِ : طُوفَانٌ

अल्कुम्मल उस चीचड़ी को कहते हैं जो छोटी जूँ के मुशाबेह होती है। हक्कीक बमा'नी हक्क लाज़िम। सुक्किन्न बमा'नी नादिम हुआ। जो शख्स शर्मिन्दा होता है उसके लिये अरब लोग कहते हैं सुक्किन्न फ़ियदिही तो (गोया) वो अपने हाथ में गिर पड़ा।

﴿الْقَمَلُ﴾: الْحَمَانُ يُشَبِّهُ مِغَارَ  
الْحَلَمِ. ﴿حَقِيقٌ﴾ حَقٌّ. ﴿سُقِطٌ﴾: كُلُّ  
مَنْ نَدِمَ فَقَدْ سُقِطَ فِي يَدِهِ.

**तशरीह:** या'नी कभी हाथ को दांतों से शिद्दते गम में काटता है और कभी हाथ से दूसरी हरकत करता है जो गम व अलम को ज़ाहिर करती हैं। सूरह अअराफ़ की पूरी आयत ये है। फअर्सल्ला अलैहिमुत्तूफ़ान वल्जररद वल्कुम्मल वज़ज़फादिअ वहुम आयातिन मुफ़स़लातिन फस्तवबखू वकानू कौमम्मुज़िमीन (अल अराफ़: 33) या'नी हमने फिरऔनियों पर तूफ़ान का अज़ाब नाज़िल किया (एक हफ़्ता बराबर पानी बरसता रहा) और टिड्डी दल भेजा और जूएँ और मेंढ़क बक़रत पैदा हो गये और खून का अज़ाब नाज़िल किया जो हमारी कुदरत के खुले हुए निशानात थे। उन सबको देखते हुए भी वो लोग मुतकब्बिर और मुजरिम ही बने रहे। उन अज़ाबों का ज़िक्र तौरात में भी आया है। नीज़ लिखा है कि दरिया-ए-नील का पानी लहू की तरह हो गया था और तमाम मछलियाँ मर गई थीं (खुरूज) हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ पर उन ही से मुता'ल्लिक चन्द अल्फ़ाज़ की वज़ाहत की है।

## बाब 27 : हज़रत ख़िज़ और हज़रत मूसा (अलै.) के वाक्किआत

3400. हमसे अम्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें इब्बदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि हुर बिन क्रैस फ़ुज़ारी (रज़ि.) से स़ाहिबे मूसा (अलै.) के बारे में उनका इख़ितलाफ़ हुआ। फिर हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) वहाँ से गुज़रे तो अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उन्हें बुलाया और कहा कि मेरा अपने उन साथी से स़ाहिबे मूसा के बारे में इख़ितलाफ़ हो गया है जिनसे मुलाक़ात के लिये मूसा (अलै.) ने रास्ता पूछा था, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) से आपने उनके बारे में कुछ सुना है? उन्होंने कहा जी हाँ, मैंने हज़ूर (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि मूसा (अलै.) बनी इस्राईल की एक जमाअत में तशरीफ़ रखते थे कि एक शख्स ने उनसे पूछा, क्या आप किसी ऐसे शख्स को जानते हैं जो इस तमाम ज़मीन पर आपसे ज़्यादा इल्म रखने वाला हो? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं। इस पर अल्लाह तआला ने मूसा (अलै.) पर वह्द नाज़िल की कि क्यूँ नहीं, हमारा बन्दा ख़िज़ है। मूसा (अलै.) ने उन तक पहुँचने का

## 27- بَابُ حَدِيثِ الْخَضِيرِ مَعَ

### مُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ

3400- حَدَّثَنَا غَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ  
حَدَّثَنَا يَغْفَرُ بْنُ إِبرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي  
أَبِي عَنْ صَالِحِ بْنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُبَيْدَ  
اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ: عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ  
أَنَّهُ تَمَارَى هُوَ وَالْأَحْوَرُ بْنُ قَيْسٍ الْفَزَارِيُّ  
فِي صَاحِبِ مُوسَى، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: هُوَ  
خَضِيرٌ، فَمَرُّ بِهِمَا أَبِي بْنُ كَعْبٍ، فَذَاعَهُ  
ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ: إِنِّي تَمَارَيْتُ أَنَا  
وَصَاحِبِي هَذَا فِي صَاحِبِ مُوسَى الَّذِي  
سَأَلَ السَّبِيلَ إِلَى لُقْيِهِ، هَلْ سَمِعْتَ رَسُولَ  
اللَّهِ ﷺ يَذْكُرُ شَأْنَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ، سَمِعْتُ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَمَا مُوسَى فِي  
مَلَا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ:  
هَلْ تَعْلَمُ أَحَدًا أَكْثَمَ مِنْكَ؟ قَالَ: لَا.  
فَأَوْخَى اللَّهُ إِلَى مُوسَى: بَلَى عَبْدُنَا خَضِيرٌ،

रास्ता पूछा ता उन्हें मछली को उसकी निशानी के तौर पर बताया गया और कहा गया कि जब मछली गुम हो जाए (तो जहाँ गुम हुई हो वहाँ) वापस आ जाना वहीं उनसे मुलाकात होगी। चुनौचे मूसा (अलै.) दरिया में (सफ़र के दौरान) मछली की बराबर निगरानी करते रहे। फिर उनसे उनके रफ़ीके सफ़र ने कहा कि आपने ख़याल नहीं किया जब हम चट्टान के पास ठहरे तो मैं मछली के बारे में आपको बताना भूल गया था और मुझे शैतान ने उसे याद रखने से ग़ाफ़िल रखा। मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि उसी की तो हमें तलाश है चुनौचे ये बुजुर्ग उसी रास्ते से पीछे की तरफ़ लौटे और हज़रत ख़िज़्र (अलै.) से मुलाकात हुई उन दोनों के वो हालात हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी किताब में बयान फ़र्माया है। (राजेअ: 74)

**तशरीह:** कुआन मजीद की सूरह कहफ़ में हज़रत ख़िज़्र और हज़रत मूसा (अलै.) की उस मुलाकात का ज़िक्र तफ़्सील से आया है। वहाँ मुतालआ करने से मा'लूम होगा कि बहुत से ज़ाहिरी उमूर काबिले ए' तिराज़ नज़र आ जाते हैं मगर उनकी हक़ीक़त खुलने पर उनका हक़ होना तस्लीम करना पड़ता है। इसलिये फ़त्वा देने में हर हर पहलू पर ग़ौर करना ज़रूरी होता है। अल्लाह पाक इलमा व फ़ुकहा सबको नेक समझ अता करे कि वो हज़रत ख़िज़्र और हज़रत मूसा (अलै.) के वाक़िया से बज़ीरत हासिल करें। आमीन।

3401. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा हमसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझे सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से अज़्र किया कि नौफ़ बक़ाली ये कहता है कि मूसा, साहब ख़िज़्र बनी इस्राईल के मूसा नहीं हैं बल्कि वो दूसरे मूसा हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह के दुश्मन ने बिलकुल ग़लत बात कही है। हज़रत अबई बिन कअब (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हुए हमसे बयान किया कि मूसा (अलै.) बनी इस्राईल को खड़े होकर ख़िताब फ़र्मा रहे थे कि उनसे पूछा गया कौनसा शाज़्ज़ सबसे ज़्यादा इल्म वाला है, उन्होंने फ़र्माया कि मैं। इस पर अल्लाह तआला ने उन पर इताब (गुस्सा) फ़र्माया क्योंकि उन्होंने इल्म की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं की। अल्लाह तआला ने उनसे फ़र्माया कि क्यूँ नहीं मेरा एक बन्दा है जहाँ दो दरिया आकर मिलते हैं वहाँ रहता है और तुमसे ज़्यादा इल्म वाला है। उन्होंने अज़्र

سَأَلَ مُوسَى السَّيْلَ إِلَيْهِ، فَجُعِلَ لَهُ  
الْحَوْتَ آيَةً، وَقِيلَ لَهُ: إِذَا فَقَدْتَ  
الْحَوْتَ فَارْجِعْ فَإِنَّكَ سَتَقْدَأُ، فَكَانَ يَتَّبِعُ  
الْحَوْتَ فِي الْبَحْرِ، فَقَالَ لِمُوسَى قَدَأُ:  
أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ  
الْحَوْتَ وَمَا أَنَا بِإِلَى الشَّيْطَانِ أَنْ  
أَذْكُرَهُ. فَقَالَ مُوسَى: ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي،  
فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا، فَوَجَدَا  
خَضِرًا، فَكَانَ مِنْ شَأْنِهِمَا الَّذِي قَصَصَ اللَّهُ  
فِي كِتَابِهِ. [راجع: ٧٤]

٣٤٠١ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا  
سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ:  
أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ قَالَ: ((قُلْتُ لَابْنِ  
عَبَّاسٍ إِنَّ نَوْفًا الْبَكَّالِي يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى  
صَاحِبَ الْخَضِرِ لَيْسَ هُوَ مُوسَى بَنِي  
إِسْرَائِيلَ، إِنَّمَا هُوَ مُوسَى آخَرُ، فَقَالَ:  
كَذَبَ عَدُوُّ اللَّهِ، حَدَّثَنَا أَبِي بْنُ كَعْبٍ عَنْ  
النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ مُوسَى  
قَامَ خَطِيبًا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ فُسِيلَ: أَيُّ  
النَّاسِ أَعْلَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا. فَتَعَبَ اللَّهُ عَلَيْهِ  
إِذْ لَمْ يَزِدْ الْعِلْمَ إِلَيْهِ فَقَالَ لَهُ: بَلَى، لِي  
عَبْدٌ بِمَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ.  
قَالَ: أَيُّ رَبٍّ وَمَنْ لِي بِهِ؟ - وَرَبُّمَا قَالَ

किया ऐ रब्बुल आलमीन! मैं उनसे किस तरह मिल सकूंगा? सुफयान ने (अपनी रिवायत में ये अल्फ़ाज़) बयान किये कि, ऐ रब! वकीफ़ ली बह, अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि एक मछली पकड़कर उसे अपने थैले में रख लेना, जहाँ वो मछली गुम हो जाए बस मेरा वो बन्दा वहीं तुमको मिलेगा। कुछ दफ़ा राबी ने (बजाय फ़हुवा प्रम्मा) ... कहा। चुनौचे मूसा (अलै.) ने मछली ले ली और उसे एक थैले में रख लिया। फिर वो और एक उनके रफ़ीक़े सफ़र यूशा बिन नून खाना हुए, जब ये चट्टान पर पहुँचे तो सर से टेक लगाई, मूसा (अलै.) को नींद आ गई और मछली तड़पकर निकली और दरिया के अंदर चली गई और उसने दरिया में अपना रास्ता बना लिया। अल्लाह तआला ने मछली से पानी के बहाव को रोक दिया और वो मेहराब की तरह हो गई, उन्होंने वाज़ेह किया कि यूँ मेहराब की तरह। फिर ये दोनों उस दिन और रात के बाक़ी हिस्से में चलते रहे, जब दूसरा दिन आया तो मूसा (अलै.) ने अपने रफ़ीक़े सफ़र से फ़र्माया कि अब हमारा खाना लाओ क्योंकि हम अपने इस सफ़र में बहुत थक गये हैं। मूसा (अलै.) ने उस वक़्त तक कोई थकान महसूस नहीं की थी जब तक वो उस मुकररा जगह से आगे न बढ़ गये जिसका अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया था। उनके रफ़ीक़े ने कहा कि देखिए तो सही जब हम चट्टान पर उतरे थे तो मैं मछली (के बारे में कहना) आपसे भूल गया और मुझे उसकी याद से शैतान ने ग़ाफ़िल रखा और उस मछली ने तो वहीं (चट्टान के क़रीब) दरिया में अपना रास्ता अजीब तौर पर बना लिया था। मछली को तो रास्ता मिल गया और ये दोनों हैरान थे। मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि यही वो जगह थी जिसकी तलाश में हम निकले हैं। चुनौचे ये दोनों उसी रास्ते से पीछे की तरफ़ वापस हुए और जब उस चट्टान पर पहुँचे तो वहाँ एक बुजुर्ग अपना सारा जिस्म एक कपड़े में लपेटे हुए मौजूद थे। हज़रत मूसा (अलै.) ने उन्हें सलाम किया और उन्होंने जवाब दिया फिर कहा कि तुम्हारे ख़ित्ते में सलाम का रिवाज कहाँ से आ गया? मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं मूसा हूँ। उन्होंने पूछा, बनी इस्राईल के मूसा? फ़र्माया कि जी हाँ। मैं आपकी ख़िदमत में इसलिये हाज़िर हुआ हूँ कि आप

سَفِيَانُ: أَيُّ رَبِّ وَكَيْفَ لِي بِهِ؟ - قَالَ: تَأْخُذْ خُوتًا فَتَجْعَلُهَا فِي مِكْتَلٍ، حَيْثُمَا فَقَدْتَ الْخُوتَ فَهُوَ ثَمٌّ - وَرُبَّمَا قَالَ: فَهُوَ ثَمٌّ - وَأَخَذَ خُوتًا فَجَعَلَهَا فِي مِكْتَلٍ ثُمَّ انْطَلَقَ هُوَ وَفَتَاهُ يَوْشَعَ بْنُ نُونٍ حَتَّى آتَيَا الصَّخْرَةَ وَضَعَا رُؤُوسَهُمَا، فَرَفَعَهُ مُوسَى، وَاضْطَرَبَ الْخُوتَ فَخَرَجَ فَسَقَطَ فِي الْبَحْرِ، فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا، فَأَمْسَكَ اللَّهُ عَنِ الْخُوتِ جَرِيَةَ الْمَاءِ فَمَسَارَ مِثْلِ الطَّاقِ - فَقَالَ: هَكَذَا مِثْلُ الطَّاقِ - فَانْطَلَقْنَا يَمْشِيَانِ بَقِيَّةَ لَيْلَتَيْهِمَا وَيَوْمَيْهِمَا، حَتَّى إِذَا كَانَ مِنَ الْغَدِ قَالَ لِفَتَاهُ: آتِنَا غَدَاةَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا. وَثُمَّ يَجِدُ مُوسَى النَّصَبَ حَتَّى جَاوَزَ حَيْثُ أَمَرَهُ اللَّهُ. قَالَ لَهُ فَتَاهُ: أَرَأَيْتَ إِذْ أَوْتَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْخُوتَ، وَمَا أَنْسَانِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ، وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا، فَكَانَ لِلْخُوتِ سَرَبًا وَلَهُمَا عَجَبًا. قَالَ لَهُ مُوسَى: ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي، فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا - رَجَعَا يَقْصَصَانِ آثَارَهُمَا - حَتَّى اتَّهَبَا إِلَى الصَّخْرَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ مُسَجًى بِثَوْبٍ، فَسَلَّمَ مُوسَى، فَقَرَأَ عَلَيْهِ فَقَالَ: وَأَنِّي بِأَرْضِكَ السَّلَامُ قَالَ: أَنَا مُوسَى، قَالَ مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ؟ قَالَ: نَعَمْ، أَتَيْتُكَ لِتُعَلِّمَنِي مِمَّا عَلَّمْتَ رُشْدًا. قَالَ: يَا مُوسَى إِنِّي عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ

मुझे वो नफ़ाबख़्श इल्म सिखा दें जो आपको सिखलाया गया है। उन्होंने फ़र्माया ऐ मूसा! मेरे पास अल्लाह का दिया हुआ एक इल्म है अल्लाह तआला ने मुझे वो इल्म सिखाया है और आप उसको नहीं जानते। इसी तरह आपके पास अल्लाह का दिया हुआ एक इल्म है अल्लाह तआला ने आपको सिखाया है और मैं उसे नहीं जानता। मूसा (अलै.) ने कहा क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ उन्होंने कहा कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर पाएँगे और वाक़ई आप उन कामों के बारे में स़ब्र कर भी कैसे सकते हैं जो आपके इल्म में नहीं हैं। अल्लाह तआला का इश़ाद है इम्न तक आख़िर मूसा और ख़िज़्र (अलै.) दरिया के किनारे किनारे चले। फिर उनके करीब से एक कश्ती गुज़री। उन हज़रात ने कहा कि उन्हें भी कश्ती वाले कश्ती पर सवार कर लें। कश्ती वालों ने ख़िज़्र (अलै.) को पहचान लिया और कोई मज़दूरी लिये बग़ैर उनको सवार कर लिया। जब ये हज़रात उस पर सवार हो गये तो एक चिड़िया आई और कश्ती के एक किनारे बैठकर उसने पानी में अपनी चोंच को एक या दो मर्तबा डाला। ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया ऐ मूसा! मेरे और आपके इल्म की वजह से अल्लाह के इल्म में इतनी भी कमी नहीं हुई जितनी इस चिड़िया के दरिया में चोंच मारने से दरिया के पानी में कमी हुई होगी। इतने में ख़िज़्र (अलै.) ने कुल्हाड़ी उठाई और उसी कश्ती में से एक तख़्ता निकाल लिया, मूसा (अलैहि.) ने नज़र उठाई तो वो अपनी कुल्हाड़ी से तख़्ता निकाल चुके थे। इस पर हज़रत मूसा (अलै.) बोल पड़े कि ये आपने क्या किया? जिन लोगों ने हमें बग़ैर किसी उजरत के सवार कर लिया उन्हीं की कश्ती पर आपने बुरी नज़र डाली और उसे चीर दिया कि सारे कश्ती वाले डूब जाएँ। उसमें कोई शुब्हा नहीं कि आपने निहायत नागवार काम किया। हज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया, क्या मैंने आपसे पहले ही नहीं कह दिया था कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर सकते। मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि (ये बेसब्री अपने वा'दा को भूल जाने की वजह से हुई, इसलिये) आप उस चीज़ का मुझसे मुवाख़िज़ा न करें जो मैं भूल गया था और मेरे मामले में तंगी न करें। ये पहली बात हज़रत मूसा (अलै.) से भूल

عَلِمْتِهِ اللَّهُ لَا تَعْلَمُهُ، وَأَنْتَ عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ عِلْمُكَ اللَّهُ لَا أَعْلَمُهُ. قَالَ: هَلْ أَتَيْتُكَ؟ قَالَ: إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا، وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِط بِهِ خَبْرًا - إِلَى قَوْلِهِ - إِمْرًا. فَانْطَلَقَا يَمْشِيَانِ عَلَى سَاحِلِ الْبَحْرِ، فَمَرَّتْ بِهِمَا سَفِينَةٌ كَلَّمُوهُمْ أَنْ يَحْمِلُوهُمْ، فَعَرَفُوا الْخَصِيرَ فَحَمَلُوهُ بِغَيْرِ نَوْلٍ. فَلَمَّا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ جَاءَ غَصَقُورٌ فَوَقَعَ عَلَى خَرَفِ السَّفِينَةِ، فَتَقَرَّ فِي الْبَحْرِ نَفْرَةً أَنْ تَقْرَبِينَ، قَالَ لَهُ الْخَصِيرُ: يَا مُوسَى، مَا نَقَصَ عِلْمِي وَعِلْمُكَ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ إِلَّا بِمِثْلِ مَا نَقَصَ هَذَا الْغَصَقُورُ بِمِثْقَالِهِ مِنَ الْبَحْرِ. إِذْ أَخَذَ الْفَأْسَ فَتَزَعَّ لَوْحًا، فَلَمَّ يَفْعًا مُوسَى إِلَّا وَقَدْ قَلَعَ لَوْحًا بِالْقُدُومِ، فَقَالَ لَهُ مُوسَى: مَا صَنَعْتَ؟ قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ عَمَدَتْ إِلَى سَفِينَتِهِمْ فَخَرَقَتْهَا لِتُفَرَّقَ أَهْلُهَا، لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا. قَالَ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ: لَا تَزِاجِدْنِي بِمَا نَسِيتُ، وَلَا تُؤْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا. فَكَاتَتِ الْأَوَّلَى مِنْ مُوسَى نِسْيَانًا. فَلَمَّا خَرَجَا مِنَ الْبَحْرِ مَرُّوا بِغُلَامٍ يَلْعَبُ مَعَ الصَّيَّانِ، فَأَخَذَ الْخَصِيرُ بِرَأْسِهِ فَقَلَعَهُ بِيَدِهِ هَكَذَا - وَأَوْثَمَا سَفِينًا بِأَطْرَافِ أَصَابِعِهِ كَأَنَّهُ يَقْطِفُ شَيْئًا - فَقَالَ لَهُ مُوسَى: أَتَقْلَتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ؟ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا. قَالَ:



कर हुई थीं फिर जब दरियाई सफ़र ख़त्म हुआ तो उनका गुज़र एक बच्चे के पास से हुआ जो दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था। हज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने उसका सर पकड़कर अपने हाथ से (धड़ से) जुदा कर दिया। सुफ़यान ने अपने हाथ से (जुदा करने की कैफ़ियत बताने के लिये) इशारा किया जैसे वो कोई चीज़ तोड़ रहे हों। उस पर हज़रत मूसा (अलै.) ने फ़र्माया कि आपने एक जान को ज़ाया कर दिया। किसी दूसरी जान के बदले में भी ये नहीं था। बिला शुब्हा आपने एक बुरा काम किया। ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया, क्या मैंने आपसे पहले ही नहीं कहा था कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर सकते। हज़रत मूसा (अलै.) ने कहा, अच्छा इसके बाद अगर मैंने आपसे कोई बात पूछी तो फिर आप मुझे साथ न ले चलियेगा, बेशक आप मेरे बारे में हूँ इज़्र को पहुँच चुके हैं। फिर ये दोनों आगे बढ़े और जब एक बस्ती में पहुँचे तो बस्ती वालों से कहा कि वो उन्हें अपना मेहमान बना लें, लेकिन उन्होंने इंकार किया। फिर उस बस्ती में उन्हें एक दीवार दिखाई दी जो बस गिरने ही वाली थी। ख़िज़्र (अलै.) ने अपने हाथ से यूँ इशारा किया। सुफ़यान ने (कैफ़ियत बताने के लिये) इस तरह इशारा किया जैसे वो कोई चीज़ ऊपर की तरफ़ फेर रहे हों। मैंने सुफ़यान से माइला का लफ़ज़ सिर्फ़ एक बार सुना था। हज़रत मूसा (अलै.) ने कहा कि ये लोग तो ऐसे थे कि हम उनके यहाँ आए और उन्होंने हमारी मेज़बानी से भी इंकार किया। फिर उनकी दीवार आपने ठीक कर दी, अगर आप चाहते तो उसकी उज्रत उनसे ले सकते थे। हज़रत ख़िज़्र (अलै.) ने फ़र्माया कि बस यहाँ से मेरे और आपके दरम्यान जुदाई हो गई जिन बातों पर आप स़ब्र नहीं कर सके, मैं उनकी तावील व तौजीह अब तुम पर वाज़ेह करूँगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हमारी तो ख़्वाहिश ये थी कि मूसा (अलै.) स़ब्र करते और अल्लाह तआला तक्वीनी वाक्रियात हमारे लिये बयान करता। सुफ़यान ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह हज़रत मूसा (अलै.) पर रहम करे, अगर उन्होंने स़ब्र किया होता तो उनके (मज़ीद वाक्रियात) हमें मा'लूम होते। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (जुम्हूर की क़िरात वराअहुम के बजाय) इमाम हुम मलिकुध्याख़ु जू कुल्ला सफ़ीनतिन ग़स्बा) पढ़ा है।

أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ: إِن سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي، قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا. فَنُتَلَقَا حَتَّى إِذَا آتَىٰ أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلُهَا، فَأَبَوْا أَنْ يُصَيِّفُوهُمَا، فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ عَلَيْهِمْ - أَوْ مَا بَيْنَهُمَا هَكَذَا، وَأَخَارَ سَفِيَانٌ كَأَنَّهُ يَمْسَحُ شَيْئًا إِلَىٰ فَوْقَ، فَلَمْ أَسْمَعْ سَفِيَانٍ يَذْكُرُ ((مَابِلًا)) إِلَّا مَرَّةً - قَالَ: قَوْمٌ آتَيْنَاهُمْ فَلَمْ يُطِيعُونَا وَلَمْ يُصَيِّفُونَا، عَمِدَتْ إِلَىٰ خَائِبِهِمْ ﴿لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِمْ أَجْرًا. قَالَ: هَذَا يَوْمَاقُ بَيْنِي وَبَيْنَكَ، سَأَلْتُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا﴾. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((وَوَدِدْنَا أَنْ مُوسَىٰ كَانَ صَبْرًا فَقَصَّ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنْ خَيْرِهِمَا)). قَالَ سَفِيَانٌ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يُرْخَمُ اللَّهُ مُوسَىٰ لَوْ كَانَ صَبْرًا يَقْصُ عَلَيْنَا مِنْ أَمْرِهِمَا)). قَالَ: وَقَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَكَانَ أَمَانُهُمْ مَبْلَكٌ يَأْخُذُ كُلُّ سَفِينَةٍ صَالِحَةٍ غَضَبًا. وَأَمَّا الْعَلَامُ فَكَانَ كَافِرًا وَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ. ثُمَّ قَالَ لِي سَفِيَانٌ: سَمِعْتُهُ مِنْهُ مَرَّتَيْنِ وَحَفِظْتُهُ مِنْهُ. قِيلَ لِسَفِيَانٍ: حَفِظْتَهُ قَبْلَ أَنْ تَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِهِ أَوْ تَحَفِظْتَهُ مِنْ إِنْسَانٍ؟ فَقَالَ: مِمَّنْ أَتَحَفِظُهُ، وَرَوَاهُ أَحَدٌ عَنْ غَيْرِهِ غَيْرِي؟ سَمِعْتُهُ مِنْهُ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا وَحَفِظْتُهُ مِنْهُ)).

और वो बच्चा (जिसकी हज़रत ख़िज़्र अलै. ने जान ली थी) काफ़िर था और उसके वालिदैन मोमिन थे। फिर मुझसे सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने ये हदीष अम्र बिन दीनार से दो मर्तबा सुनी थी और उन्हीं से (सुनकर) याद की थी। सुफ़यान ने किसी से पूछा था कि क्या ये हदीष आपने अम्र बिन दीनार से सुनने से पहले ही किसी दूसरे शख्स से सुनकर (जिसने अम्र बिन दीनार से दो मर्तबा सुनी हो) याद की थी? या (उसके बजाय ये जुम्ला कहा) हफ़िज़्तु मिन इन्सानिन (शक़ अली बिन अब्दुल्लाह को था) तो सुफ़यान ने कहा कि दूसरे किसी शख्स से सुनकर मैं याद करता, क्या इस हदीष को अम्र बिन दीनार से मेरे सिवा किसी और ने भी रिवायत किया है? मैंने उनसे ये हदीष दो या तीन मर्तबा सुनी और उन्हीं से सुनकर याद की। (राजेअ : 74)

3402. हमसे मुहम्मद बिन सईद अस्वहानी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़िज़्र (अलै.) का ये नाम इस वजह से हुआ कि वो एक सूखी ज़मीन (जहाँ सबज़ी का नाम भी न था) पर बैठे। लेकिन ज्यों ही वो वहाँ से उठे तो वो जगह सर सबज़ होकर लहलहाने लगी।

३४०२- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيدٍ  
الاصْبَهَانِيُّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ  
عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((إِنَّمَا سُمِّيَ  
الْغَضَبُ لِأَنَّهُ جَلَسَ عَلَى فُرُوقٍ يَبْضَاءٍ،  
فَبَادَا فِي تَهْتُرٍ مِنْ خَلْفِهِ غَضْرَاءٌ)).

**तशरीह :** कहते हैं हज़रत ख़िज़्र (अलै.) का नाम बुलिया बिन मल्कान बिन क़ानेअ बिन आयबा बिन शालिख़ बिन अफ़्छशद बिन साम बिन नूह (अलै.) है। वो हज़रत इब्राहीम (अलै.) से पहले पैदा हो चुके थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मन्कूल है कि वो हज़रत आदम (अलै.) के सुल्बी बेटे थे और भी मुख्तलिफ़ रिवायात हैं। बक़ौल क़स्तलानी (रह.) अक़बर इलमा व सूफ़िया कहते हैं कि वो ज़िन्दा हैं मगर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) और मुहक्किकीने उम्मत अहले हदीष ने कहा है कि वो मौजूद नहीं हैं। वल्लाहु आलम बिस्सवाब। उनके बैठने से ज़मीन का सरसबज़ होना उनकी करामत थी। औलिया अल्लाह की करामत बरहक़ है बशर्ते कि सहीह तौर पर प्राबित हो। मनघड़त न हो मगर ये करामत महज़ अल्लाह तआला का अ़तिया होती है। औलिया अल्लाह हर वक़्त उसके मुहताज हैं। फ़रवति बेज़ात की तफ़सीर में इमाम इब्ने हज़र लिखते हैं। अल्फ़र्वतु क़ील हिय जिल्दतु वल्हिल् अज़िं जलस अलैहा फाम्बतत व सारत ख़िज़्रन व जाज़ फिलख़िज़्रि फत्हुल्खाइ व कस्रिहा वख्तुलिफ़ी नुबुव्वतिही क़ालिष़ अलबी कान फ़ी ज़मनि इब्राहीमल्ख़लील व क़ालल् अक्वर्रून अन्नहू हय्युन मौजूदुन अल्यौम इला आख़िरिही क़ज़ा फिल्लिर्मानी क़ाललैनी वल्मुताबक़तु मिन हदीषि अन्नलिख़िज़्र मज़कूरून फ़ीहि क़ज़ा फिल्लफ़्तिह।

रिवायत में जिस शख्स नौफ़िल बक़ाली का ज़िक़्र है अहले दमिश्क़ से एक फ़ाज़िल था। और ये भी मरवी है कि ये कअब अहबार का भतीजा था, उसका ख़्याल था कि साहिबे ख़िज़्र मूसा बिन मैशा हैं जो तौरात की बिना पर रसूल हैं मगर सहीह बात यही है कि ये साहिबे ख़िज़्र हज़रत मूसा बिन इमरान (अलै.) थे। मज्मउल बहरैन जिसका ज़िक़्र है वो जगह है जहाँ बहरे फ़ारस और बहरे रूम मिलते हैं। मछली जो नाश्ता के लिये साथ में भूनकर रखी गई थी जब हज़रत मूसा (अलै.)

उसे साथ लेकर सखरह के पास पहुँचे तो वहाँ आबे ह्यात का चश्मा था जिससे वो मछली ज़िन्दा होकर दरिया में कूद गई। हज़रत खिज़र (अलै.) के कामों पर हज़रत मूसा (अलै.) के ए'तिराज़ात ज़ाहिरी हालात की बिना पर थे। हज़रत खिज़र (अलै.) ने जब ह्काईक का इन्हार किया तो हज़रत मूसा (अलै.) के लिये बजुज तस्लीम के कोई चारा न था। मज़ीद तफ़्सीलात तफ़्सीर की किताबों में मुलाहिज़ा की जा सकती है।

### बाब 28 :

### باب - ٢٨

3403. मुझसे इस्हाक़ बिन नज़्म ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उन्होंने हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल को हुक्म हुआ था कि बैतुल मक़्दिस में सज्दा व रुकूअ करते हुए दाख़िल हों और ये कहते हुए कि ऐ अल्लाह! हमको बख़्श दे। लेकिन उन्होंने उसको उल्टा किया और अपने कूल्हों के बल घसीटते हुए दाख़िल हुए और ये कहते हुए हब्बतु फ़ी शअरा (या'नी बालियों में दाने ख़ूब हों) दाख़िल हुए। (दीगर मक़ाम : 4479, 4661)

परवरदिगार से हंसी-ठ्ठ्ठा के तौर पर ये कहना शुरू किया तो अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हुए।

3404. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादा ने बयान किया, उनसे औफ़ बिन अबू जमीला ने बयान किया, उनसे इमाम हसन बसरी और मुहम्मद बिन सीरीन और ख़िलास बिन अमर ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज़रत मूसा (अलै.) बड़े ही शर्म वाले और बदन ढांपने वाले थे। उनकी हया की वजह से उनके बदन का कोई हिस्सा भी नहीं देखा जा सकता था। बनी इस्राईल के जो लोग उन्हें अज़िय्यत पहुँचाने के दर पे थे, वो क्यूँ बाज़ रह सकते थे, उन लोगों ने कहना शुरू किया कि इस दर्जा बदन छुपाने का एहतिमाम सिर्फ़ इसलिये है कि उनके जिस्म में ऐब है या कोढ़ है या उनके ख़ुस्यतैन बड़े हुए हैं या फिर कोई बीमारी है। इधर अल्लाह तआला को ये मंज़ूर हुआ कि मूसा (अलै.) की उनकी हफ़्वात से पाकी दिखलाए। एक दिन हज़रत मूसा (अलै.) अकेले गुस्ल करने के लिये आए और एक पत्थर पर अपने कपड़े (उतारकर) रख दिये। फिर गुस्ल शुरू किया। जब फ़ारिग़ हुए तो कपड़े उठाने के लिये बड़े लेकिन पत्थर उनके कपड़ों समेत भागने लगा। हज़रत मूसा (अलै.) ने अपना अस्मा उठाया

٣٤٠٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((قِيلَ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ: ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةً، فَبَدَلُوا وَدَخَلُوا يَزْحَفُونَ عَلَى أَسْنَانِهِمْ وَقَالُوا حِثَّةً فِي شَعْرَةٍ)).

[طرمه و : ٤٤٧٩، ٤٦٦١].

٣٤٠٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ الْحَسَنِ وَمُحَمَّدٍ وَخَلَّاسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ مُوسَى كَانَ رَجُلًا حَيًّا سَتِيرًا لَا يُرَى مِنْ جِلْدِهِ شَيْءٌ اسْتَحْيَاءَ مِنْهُ، فَأَذَاهُ مَنْ أَذَاهُ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ فَقَالُوا: مَا يَسْتُرُ هَذَا السُّتْرَ إِلَّا مِنْ غَيْبٍ بِجِلْدِهِ: إِمَّا بَرَصٌ وَإِمَّا أَذَرَةٌ، وَإِمَّا آفَةٌ. وَإِنَّ اللَّهَ أَرَادَ أَنْ يَبْرُتَهُ مِمَّا قَالُوا لِمُوسَى، فَخَلَّأَ يَوْمًا وَخَذَهُ فَوَضَعَ ثِيَابَهُ عَلَى الْحَجَرِ ثُمَّ اغْتَسَلَ، فَلَمَّا فَرَّغَ أَقْبَلَ إِلَى ثِيَابِهِ لِيَأْخُذَهَا، وَإِنَّ الْحَجَرَ عَدَا بِثَوْبِهِ، فَأَحْذَ مُوسَى عَصَاهُ فَطَلَبَ الْحَجَرَ، فَجَعَلَ

और पत्थर के पीछे दौड़े ये कहते हुए कि पत्थर! मेरा कपड़ा दे दे। आखिर बनी इस्राईल की एक जमाअत तक पहुँच गये और उन सबने आपका नंगा देख लिया, अल्लाह की मखलूक में सबसे बेहतर हालत में और इस तरह अल्लाह तआला ने तोहमत से उनकी बरात कर दी। अब पत्थर भी रुक गया और आपने कपड़ा उठाकर पहना। फिर पत्थर को अपने असा से मारने लगे। अल्लाह की क्रसम! उस पत्थर पर हजरत मूसा (अलै.) के मारने की वजह से तीन या चार या पाँच निशान पड़ गये थे। अल्लाह तआला के इस फ़र्मान, तुम उनकी तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा (अलै.) को अज़िघ्यत दी थी, फिर उनकी तोहमत से अल्लाह तआला ने उन्हें बरी करार दिया और वो अल्लाह की बारगाह में बड़ी शान वाले और इज़्जत वाले थे मैं इसी वाक़िया की तरफ़ इशारा है। (राजेअ: 278)

يَقُولُ: ثَوْبِي حَجَرٌ، ثَوْبِي حَجَرٌ. حَتَّى  
انتهى إِلَى مَلَاٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ قَرَأُوهُ  
عَرَاتَانَا أَحْسَنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ وَأَبْرَاهُ مِمَّا  
يَقُولُونَ وَقَامَ الْحَجَرُ فَأَخَذَ ثَوْبَهُ فَلَبَسَهُ  
وَطَفِقَ بِالْحَجَرِ ضَرْبًا بِعَصَاهُ قَوْلًا إِنَّ  
بِالْحَجَرِ لَنَدَبًا مِنْ أَلَمِ حَرْبِهِ ثَلَاثًا أَوْ أَرْبَعًا  
أَوْ خَمْسًا، فَلِذَلِكَ قَوْلُهُ: هِيَ أَيْهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى  
قَرَأَهُ اللَّهُ مِنْهَا قَالُوا: وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ  
وَجِبَاهُ ﴿الْأَحْزَابُ: ٦٩﴾.

[راجع: ٢٧٨]

हदीष में हजरत मूसा (अलै.) और बनी इस्राईल का जिक्र है। बाब से यही मुनासबत है। कुआन पाक की आयत या अधुहल्लज़ीन आमनू ला तकून कल्लज़ीन आज़ो मूसा (अल अहज़ाब: 69) में इसी वाक़िया की तरफ़ इशारा है।

3305. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वाईल से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसज़द (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा माल तक्सीम किया, एक शख्स ने कहा कि ये एक ऐसी तक्सीम है जिसमें अल्लाह की रज़ाजोई का कोई लिहाज़ नहीं किया गया। मैंने आँहज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको इसकी ख़बर दी। आप गुस्सा हुए और मैंने आपके चेहरा मुबारक पर गुस्से के आज़ार देखे। फिर फ़र्माया, अल्लाह हजरत मूसा (अलै.) पर रहम करे, उनको इससे भी ज़्यादा अज़िघ्यतें दी गई थी मगर उन्होंने सब्र किया। (राजेअ: 3150)

٣٤٠٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ  
عَنِ الْأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَابِلٍ قَالَ:  
سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
(سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَسَمًا. فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ  
هَذِهِ لِقَسَمَةٌ مَا أُرِيدُ بِهَا وَجْهَ اللَّهِ. فَاتَّيْتُ  
النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَغَضِبَ حَتَّى رَأَيْتُ  
الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ: ((يُوحَمُ  
اللَّهُ مُوسَى، لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرِ مِنْ هَذَا  
فَصَبْرًا)). [راجع: ٣١٥٠]

कहने वाला एक मुनाफ़िक़ था। आँहज़ूर (ﷺ) ने उस मुनाफ़िक़ की बकवास पर सब्र किया और उस बारे में हजरत मूसा (अलै.) का ज़िक्र किया। यही बाब से वजहे मुनासबत है।

बाब 29 : अल्लाह पाक का (सूरह आराफ़ में)

फ़र्माना कि वो अपने बुतों की पूजा कर रहे थे और इसी सूरत में मुतब्बरुन के मा'नी तबाही, नुक्सान। सूरह बनी इस्राईल में वलि युतब्बिर का मा'नी ख़राब करें। मा अलव का मा'नी जिस जगह

٢٩- بَابُ ﴿يَعْكِفُونَ عَلَى أَصْنَامٍ

لَهُمْ﴾ [الأعراف: ١٣٨]

﴿مُتَّبِعِينَ: خُسْرَانٍ﴾ ﴿وَلْيَتَبَرَّأُوا﴾: يَذْمُرُوا.

हुकूमत पाएँ, गालिब हों।

مَا غَلَبُوا: مَا غَلَبُوا.

सूरह बनी इस्राईल का लफ़्ज़ वलियतब्बिरु गो हज़रत मूसा (अलै.) के किस्से के बारे में न था मगर मुतब्बरुन और उसका माहा एक होने से उसको यहाँ बयान कर दिया और लफ़्ज़ मा अलौ, लि युतब्बरु के बाद सूरह बनी इस्राईल में मज़कूर था इसलिये उसको भी बयान कर दिया।

3406. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि (एक मर्तबा) हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (सफ़र में) पीलू के फल तोड़ने लगे। आपने फ़र्माया कि जो स्याह हों उन्हें तोड़ो, क्योंकि वो ज़्यादा लज़ीज़ होता है। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज़मईन ने अज़्र किया, क्या हज़र (ﷺ) ने कभी बकरियाँ चराई हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने बकरियाँ न चराई हों (दीगर मक़ाम : 5453)

٣٤٠٦ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نَجْمِي الْكَبَاثَ، وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((عَلَيْكُمْ بِالْأَسْوَدِ مِنْهُ فَإِنَّهُ أَطْيَبُ)). قَالُوا: أَكُنْتُ تَرْغِي الْغَنَمَ؟ قَالَ : ((وَهَلْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا وَقَدْ رَعَاهَا؟)).

[طرفه في : ٥٤٥٣.]

**तशरीह:** इस हदीष में चूँकि सब पैगम्बरों का ज़िक्र है तो उनमें हज़रत मूसा (अलै.) भी आ गये बल्कि नसाई की रिवायत में हज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्र सराहत के साथ मौजूद है। बकरियाँ हर पैगम्बर ने इसलिये चराई हैं कि उनके चराने के बाद फिर आदमियों के चराने का काम उनको सौंपा जाता है। कुछ ने कहा इसलिये कि लोग ये समझ लें कि नुबुव्वत और पैगम्बरी अल्लाह की देन है जिसे वो अपने नातवाँ बन्दों को देता है या नी चरवाहों को, दुनिया के मगरूर लोग इससे महकूम रहते हैं। क़ाल फिलफल्हि वल्मुनासिबु बिक़र्रसि मूसा मिन जिहति उमूमिन क़ालुहु व हल मिन नबिद्यिन इल्ला व क़द रज़ाहा फदखल फीहि मूसा

**बाब 30 : अल्लाह तआला का सूरह बक़रः में फ़र्माया,**

٣٠ - بَابُ ٣٠ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ

वो वक़्त याद करो जब मूसा (अलै.) ने अपनी क़ौम से कहा कि, अल्लाह तआला तुम्हें हुकूम देता है कि एक गाय ज़िबह करो, आख़िर आयत तक।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۚ

الآية | البقرة : ٦٧

इसका मुख्तसर वाक़िया ये है कि बनी इस्राईल में एक शख्स बड़ा मालदार था जिसकी लड़की थी और एक भतीजा था। भतीजे ने वरासत और लड़की से शादी की तिमज़ा मे अपने चचा का क़त्ल कर डाला और लाश को दूसरी जगह ले जाकर डाल दिया। फिर सुबह खुद ही शोरो-गुल, रोना-पीटना शुरू किया और जहाँ लाश को डाला था वहाँ के रहने वालों के ज़िम्मे उस खून को लगाया। अहले मुहल्ला इस किस्से को हज़रत मूसा (अलै.) के पास ले गए। आपने ये हुकूम फ़र्माया जो सूरह बक़रः की आयात मज़कूर में तफ़सील के साथ मौजूद है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बारे में अपने शराहत के मुताबिक कोई हदीष नहीं पाई। लिहाज़ा आयाते कुआनी पर इशारा करना काफ़ी समझा। इन आयात में मुश्किल अल्फ़ाज़ की वज़ाहत भी इसी सिलसिले में है।

अबुल अलिया ने कहा कि (कुआन मजीद में लफ़्ज़) अल अवान नौजवान और बूढ़े के दरम्यान के मा'नी में है। फ़ाक़ेअ बमा'नी साफ़। ला ज़लूल या'नी जिसे काम ने निढाल और ला

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الْغَوَاثُ الصَّفَ بَيْنَ الْبِكْرِ وَالْهَرَمَةِ. ۚ فَالْقَرَةُ: صَافٍ. ۚ وَلَا دُولَ: لَمْ يَذَلِّهَا الْعَمَلُ ۚ وَتَنَبَّرُ

लागर न कर दिया हो। तुषिरुल अरजा या'नी वो इतनी कमजोर न हो कि जमीन न जोत सके और न खेती बाड़ी के काम की हो। मुसल्लमतु या'नी सहीह सालिम और इयूब से पाक हो। ला शैय या'नी दागी (न हो) मफराअ अगर तुम चाहो तो उसके मा'नी स्याह के भी हो सकते हैं और जर्द के भी जैसे जिमालातुन मुफुर में है। फ़दारातुम बमा'नी फ़ख़तलफ़तुम तुमने इख़ितलाफ़ किया। मज़ीद मा'लूमात के लिये इन मुकामाते कुर्आन का मुतालआ ज़रूरी है जहाँ ये अलफ़ाज़ आए हैं।

### बाब 31 : हज़रत मूसा (अलै.) की वफ़ात और उनके बाद के हालात का बयान

3407. हमसे यहा बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मज़मर ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै.) के पास मलकुल मौत को भेजा, जब मलकुल मौत हज़रत मूसा (अलै.) के पास आए तो उन्होंने ने चांटा मारा (क्योंकि वो इंसान की सूरत में आया था) मलकुल मौत, अल्लाह रब्बुल इज़त की बारगाह में वापस हुए और अज़्र किया कि तूने अपने एक ऐसे बन्दे के पास मुझे भेजा जो मौत के लिये तैयार नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि दोबारा उनके पास जाओ और कहो कि अपना हाथ किसी बैल की पीठ पर रखें, उनके हाथ में जितने बाल उसके आ जाएँ उनमें से हर बाल के बदले एक साल की उम्र उन्हें दी जाएगी (मलकुल मौत दोबारा आए और अल्लाह तआला का फ़ैसला सुनाया) हज़रत मूसा (अलै.) बोले ऐ रब! फिर उसके बाद क्या होगा? अल्लाह तआला ने फ़र्माया फिर मौत है। हज़रत मूसा (अलै.) ने अज़्र किया कि फिर अभी क्यों न आ जाए। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हज़रत मूसा (अलै.) ने अल्लाह तआला से दुआ की कि बैतुल मक्दिस् से मुझे इतना करीब कर दिया जाए कि (जहाँ उनकी क़ब्र हो वहाँ से) अगर कोई पत्थर फेंके तो वो बैतुल मक्दिस् तक पहुँच सके। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मैं वहाँ मौजूद

الأرض): لَيْسَتْ بِذَلُولٍ يُبْزِ الْأَرْضَ وَلَا تَعْمَلُ فِي الْحَرْثِ. «مُسْلَمَةٌ»: مِنَ الْغُيُوبِ. «لَا شَيْءَ»: يَأْخُ. «صَفْرَاءُ»: إِنَّ شَيْئَ سَوْدَاءَ وَيَقَالُ صَفْرَاءُ كَقَوْلِهِ: «حِمَالَاتٌ صَفْرَاءُ». «فَإِذَا رَأَيْتُمْ» اخْتَلَفْتُمْ.

### 31- بابُ وَفَاةِ مُوسَى، وَذِكْرِهِ مَا بَعْدَهُ

3407- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أُرْسِلَ مَلَكَ الْمَوْتِ إِلَى مُوسَى عَلَيْهِمُ السَّلَامُ، فَلَمَّا جَاءَهُ صَكَّهُ، فَرَجَعَ إِلَى رَبِّهِ فَقَالَ: أُرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لَا يُرِيدُ الْمَوْتَ قَالَ: ارْجِعْ إِلَيْهِ فَقُلْ لَهُ يَضَعُ يَدَهُ عَلَى مَنْ تَوَرَّ، فَلَهُ بِمَا غَطَّتْ يَدُهُ بِكُلِّ شَعْرَةٍ سَنَةٌ. قَالَ: أَيُّ رَبِّ، ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ثُمَّ الْمَوْتَ. قَالَ: فَلَا نَ. قَالَ: فَسَأَلَ اللَّهُ أَنْ يُدِينَهُ مِنَ الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ رَمِيَةً بِحَجَرٍ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كُنْتُ ثُمَّ لَأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ إِلَى جَانِبِ الطَّرِيقِ نَحْتِ الْكُثْبِ الْأَخْضَرِ». قَالَ: وَأَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامٍ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.

होता तो बैतुल मक्दिस में, मैं तुम्हें उनकी कब्र दिखाता जो रास्त के किनारे पर है, रेत के सुर्ख टीले से नीचे। अब्दुर्रहमान बिन हम्माम ने बयान किया कि हमें मअमर ने खबर दी, उन्हें हम्माम ने और उनको अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह बयान किया।

**तशीह:** मलकुल मौत हज़रत मूसा (अलै.) के पास इंसानी सूरत में आए थे। लिहाज़ा आदमी जानकर आपने उनको तमाचा मारा, ये चीज़ अक्ल से दूर नहीं है। मगर मुंकिरीने हदीष को बहाना चाहिये। उन्होंने इस हदीष को भी तख़्त-ए-मश्क़ (प्रेक्टिस बोर्ड) बनाया है जो सरासर उनकी जहालत है। जब हज़रत मूसा (अलै.) को हक्कीक़त मा'लूम हुई तो उन्होंने अल्लाह तआला की मुलाक़ात के शौक में मौत ही को पसन्द किया। हमारे हुज़ूर (ﷺ) से भी आख़िर वक़्त में यही कहा गया था आपने भी रफ़ीक़े आला से इल्हाक़ के लिये दुआ की जो कुबूल हुई। कहा गया है कि मूसा (अलै.) ने खुद बैतुल मक्दिस में दफ़न होने की दुआ इसलिये नहीं की कि आपको बनी इस्राईल की तरफ़ से ख़तरा था कि वो आपको क़ब्र को पूजने लग जाएँगे जैसा कि मुश्किन का हाल है कि अपने अंबिया व स़ालेहीन (नेक लोगों) के मज़ारत को इबादतगाह बनाते चले आ रहे हैं। हमारे हुज़ूर (ﷺ) को भी का'बा शरीफ़ से ढाई सौ मील दूर मदीना तय्यिबा में अल्लाह ने आरामगाह नसीब फ़र्माई। अगर हुज़ूर (ﷺ) मक़तुल मुकर्रमा में दफ़न होते तो उम्मत इस्लामिया के जाहिलों की तरफ़ से भी यही ख़तरा था। फिर भी आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई कि या अल्लाह! मेरी क़ब्र को वफ़न (बुत) न बनाइयो कि लोग यहाँ आकर पूजा-पाठ शुरू कर दें। अल्लहुमुलिज़्ज़ल्लिहु! हुज़ूर (ﷺ) की दुआ कुबूल हुई और आज तक मुसलमान नुमा मुश्किनों को वहाँ आपकी क़ब्र की पूजा करने की हिम्मत नहीं है।

3408. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और सईद बिन मुसय्यिब ने खबर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुसलमानों की जमाअत के एक आदमी और यहूदियों में से एक शख़्स का झगड़ा हुआ। मुसलमान ने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिसने मुहम्मद (ﷺ) को सारी दुनिया में बरगुज़ीदा बनाया, क़सम खाते हुए उन्होंने ये कहा। इस पर यहूदी ने कहा, क़सम है उस ज़ात की जिसने मूसा (अलै.) को सारी दुनिया में बरगुज़ीदा बनाया। इस पर मुसलमान ने अपना हाथ उठाकर यहूदी को थप्पड़ मार दिया। वो यहूदी, नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया और अपने और मुसलमान के झगड़े की आपको खबर दी। आपने उसी मौक़े पर फ़र्माया कि मुझे हज़रत मूसा (अलै.) पर तरजीह मत दिया करो। लोग क़यामत के दिन बेहोश कर दिये जाएँगे और सबसे पहले मैं होश में आऊँगा फिर देखूँगा कि हज़रत मूसा (अलै.) अर्श का पाया पकड़े हुए खड़े हैं। अब मुझे मा'लूम नहीं कि वो भी बेहोश होने वालों में थे और

٣٤٠٨ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : اسْتَبْرَأَ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ، فَقَالَ الْمُسْلِمُ : وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا ﷺ عَلَى الْعَالَمِينَ - فِي قَسَمٍ يَقْسِمُ بِهِ - فَقَالَ الْيَهُودِيُّ : وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْعَالَمِينَ. فَرَفَعَ الْمُسْلِمُ عِنْدَ ذَلِكَ يَدَهُ فَلَطَمَ الْيَهُودِيَّ، فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ الَّذِي كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمَرَ الْمُسْلِمَ، فَقَالَ : «لَا تَخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْتَفُونَ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفَيَّقُ، فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ بِجَنَابِي»

मुझसे पहले ही होश में आ गए या उन्हें अल्लाह तआला ने बेहोश होने वालों में ही नहीं रखा था। (राजेअ : 2411)

العرش. فَلَا أَذْرِي أَكَانَ فِيمَنْ صَبَقَ  
فَأَفَاقَ قَلْبِي. أَوْ كَانَ مِمَّنْ اسْتَشْنَى اللَّهَ.

[راجع: ٢٤١١]

**तशरीह :**

या'नी मुझको दूसरे नबियों पर इस तरह फ़ज़ीलत न दो कि उनकी तौहीन निकले। या ये हुक्म उस वक़्त का है जब आपको ये नहीं बतलाया गया था कि आप तमाम पैग़म्बरों से अफ़ज़ल हैं। या ये मतलब है कि अपनी राय से फ़ज़ीलत न दो जितना शरअ में वारिद हुआ है उतना ही कहो। हज़र में बेहोश न होने वालों का इस्तिज़्ना इस आयत में है, नुफ़िख़ फ़िस्सूरि फ़सइक़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल्अर्जि इल्ला मन शाअल्लाहु (अर्रुजुमर : 68) या'नी जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा तो सब अहले महशर बेहोश हो जाएँगे मगर जिसको अल्लाह चाहेगा वो बेहोश न होगा, मुम्किन है कि हज़रत मूसा भी इस इस्तिज़्ना में शामिल हों।

3409. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हज़रत मूसा (अलै.) और हज़रत आदम (ﷺ) ने आपस में बहस की। हज़रत मूसा (अलै.) ने उनसे कहा कि आप आदम हैं जिन्हें उनकी लज़िश ने जन्नत से निकाला। हज़रत आदम (अलै.) बोले और आप मूसा (अलै.) हैं कि जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी रिसालत और अपने कलाम से नवाज़ा, फिर भी आप मुझे एक ऐसे मामले पर मलामत करते हैं जो अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से भी पहले मुक़द्दर कर दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, चुनाँचे हज़रत आदम (अलै.) हज़रत मूसा (अलै.) पर ग़ालिब आ गये। ओहज़रत (ﷺ) ने ये जुम्ला दो मर्तबा फ़र्माया। (दीगर मक़ाम : 4736, 4738, 6614, 7515)

٣٤٠٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اُخْتِجَ آدَمُ وَمُوسَى، فَقَالَ لَهُ مُوسَى: أَنْتَ آدَمُ الَّذِي أَخْرَجْتَكَ خَطِيئَتِكَ مِنَ الْجَنَّةِ. فَقَالَ لَهُ آدَمُ: أَنْتَ مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللَّهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلَامِهِ ثُمَّ تَلَوْنِي عَلَى أَمْرِ قَدَرٍ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: فَخِجَ آدَمُ مُوسَى مُرَّتَيْنِ)). [أطرافه في : ٤٧٣٦، ٤٧٣٨،

٦٦١٤].

इस हदीष में भी हज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्र ख़ैर है कि अल्लाह तआला ने उनको चुन लिया और पैग़म्बरी अज़ा फ़र्माई। बाब और हदीष में यही मुनासबत की वजह है।

3410. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन नुमैर ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मेरे सामने तमाम उम्मतें लाई गईं और मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी जमाअत आसमान के किनारों पर छाई

٣٤١٠ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا قَالَ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الْأُمَمُ، وَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الْأَفْقَ، فَقِيلَ: هَذَا



हुई है। फिर बताया गया कि ये अपनी क़ौम के साथ हज़रत मूसा (अलै.) हैं। (दीगर मक़ाम : 5705, 5752, 6472, 6541)

مُوسَى فِي قَوْمِهِ)). [أطرافه في : ٥٧٠٥،  
٥٧٥٢، ٦٤٧٢، ٦٥٤١].

**बाब 32 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया, और ईमान वालों के लिये अल्लाह तआला फिरऔन की बीवी की मिषाल बयान करता है**

**अल्लाह तआला के फ़र्मान बकानत मिनल् क़ानेतीन तक**

3411. हमसे यह्या बिन जअफर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरह ने, उनसे मुरह हम्दानी ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया मदों में तो बहुत से कामिल लोग उठे लेकिन औरतों में फिरअोन की बीवी आसिया और मरयम बन्ते इमरान अलैहिमुस्सलाम के सिवा और कोई कामिल नहीं पैदा हुई, हाँ औरतों पर हज़रत आइशा (रजि.) की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम ख़ानों पर षरीद की फ़ज़ीलत है।

(दीगरमक्रामः 3433, 3769, 5418)

۳۲- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ  
يُزْعَنَ - إِلَى قَوْلِهِ - وَكَانَتْ مِنْ  
الْمُتَّقِينَ ﴿١١﴾ [التَّحْرِيمُ : ١١]

٣٤١١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا  
وَكَيْعٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ  
مُرَّةَ الهمداني عن أبي موسى رضي الله  
عنه قال: قال رسول الله ﷺ: ((كَمَلَ  
مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ، وَلَمْ يَكْمَلْ مِنَ النِّسَاءِ  
إِلَّا آسِيَةُ امْرَأَةِ فِرْعَوْنَ وَمَرْيَمُ بِنْتُ  
عِمْرَانَ، وَإِنَّ فَضْلَ عَابِثَةٍ عَلَى النِّسَاءِ  
كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ)).

[أطرافه في : ٣٤٣٣ ، ٣٧٦٩ ، ٥٤١٨].

**तशरीह :** प्रीद उस खाने को कहते हैं जो रोटी और शोरबा मिलाकर बनाया जाता है। कमाल से मुराद यहाँ वो कमाल है जो विलायत से बढ़कर नुबुव्वत के करीब पहुँचा, मगर नुबुव्वत न मिली हो। इस तावील की ज़रूरत इसलिये हुई कि वली तो बहुत सी औरतें गुज़री हैं और पैगम्बर कोई औरत नहीं गुज़री। इस पर इज्माअ है मगर अशअरी ने कहा है कि छः औरतें पैगम्बर गुज़री हैं हव्वा, सारा, मूसा की वालिदा, हाजरा, आसिया और मरयम। वल्लाह आलम बिस्सवाब।

**बाब 33 : कारून का बयान, बेशक कारून, मूसा (अलै.) की कौम में से था, अल आयति (सरह कसस)**

(आयत में) लतनुक बमअ नी लतष्कुलु या'नी भारी होती थीं। इब्ने अब्बास (रजि.) ने ऊलुल कुव्वत की तपसीर में कहा कि उसकी कुँजियों को लोगों की एक ताक़तवर जमाअत भी न उठा पाती थी। अल फ़रिहीन उतराने वाले वयकअन्न, अलम तरा अन्न की तरह है। अल्लाह यब्सितुर्रिज़्का लिमय्यंशाऊ वयत्तिरु या'नी क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह तआला जिसके लिये चाहता है रिज़्क में फ़राखी कर देता है और जिसके लिये चाहता है तंगी कर

۳۳- بَابُ إِنْ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ

مُوسَى ﴿الْآيَةُ﴾ [الْقَصص : ٧٦]  
﴿لَتَنوُوءَ﴾: لَتَنْقُلْ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿أُولَى  
الْقُوَّةِ﴾: لَا يَرْفَعُهَا الْفُصَيْةُ مِنَ الرِّجَالِ.  
يُقَالُ: ﴿الْفَرَجَيْنِ﴾: الْمَرْجَيْنِ. وَيَكُنَّ  
اللَّهُ بِمِثْلِ ﴿أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْطُ الرِّزْقَ  
لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ﴾ يُوسَعُ عَلَيْهِ وَيَضَيِّقُ.

देता है।

कहते हैं कारून हजरत मूसा (अलै.) का चचाजाद भाई था मगर दुनियावी दौलत में मग़रूर होकर काफ़िर हो गया। हालाँकि तौरात का आलिम था मगर दुनियादारी ने उसे इस हद तक गुमराह कर दिया कि आखिर नतीजा वो हुआ जो कुर्आन में मज़कूर है।

### बाब 34 : इस बयान में कि व इला मदयना अखाहुम शुअयबा से अहले मदयन मुराद हैं क्योंकि एक शहर था बहरे कुल्जुम पर

उसकी मिशाल जैसे सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया वस्अलिल क़र्यत वस्अलिल ईरा या'नी बस्ती वालों से और काफ़िला वालों से पूछ ले। जिहरीय्या या'नी इधर उधर फिरकर नहीं देखते। अरब लोग जब उनका काम न निकले तो कहते हैं ज़हरत हाजती व ज़अलतनी जिहरीय्या तूने मेरा काम पसे पुश्त डाल दिया, या मुझको पसे पुश्त कर दिया। जिहरी उस जानवर या ज़फ़ को कहते हैं जिसको तू अपनी कुव्वत बढ़ाने के लिये साथ रखे मकानतिहिम और मकानहुम दोनों का एक ही मा'नी है। लम यनौ जिन्दा नहीं रहे थे वहाँ बसे ही न थे (सूरह माइदा में) फ़ला तास रंजीदा न हो, सूरह आराफ़ में) आसा रंजीदा हों, ग़म करो। इमाम हसन बसरी ने कहा (सूरह हूद में) काफ़िरी का जो ये क़ौल नक़ल किया। (इन्नक लअन्त हकीमुर्शीद) तो ये काफ़िरी ने ठठे के तौर पर कहा था। मुजाहिद ने कहा सूरह शुअरा में लयकता से मुराद एकता है या'नी झाड़ी में। यौमुज़ ज़िल्लति या'नी जिस दिन अज़ाब एक साथबान की शक्ल में नमूदार हुआ (अब्र में से आग़ बरसी)।

### बाब 35 : हज़रत यूनस (अलै.) का बयान

सूरह झाफ़फ़ात में अल्लाह तआला का फ़र्माना, और बेशक यूनस (अलै.) आखिर आयत वहुवा मुलीम तक। मुजाहिद ने कहा मुलीम गुनाहगार, अल मशहून बोझल भरी हुई। फ़लवला इन्नहू काना मिनल मुसब्बिहीन। आखिर तक। फ़नबज़्नाहू बिल्अराइ का मा'नी रूएज़मीन यक्तीनी वो पेड़ जो अपनी जड़ पर खड़ा नहीं रहता जैसे कड़ू वगैरह। व अरसल्ला इला मिअता अल्फ़ अव यज़ीदूना फ़ आमिनु फ़ मत्तअना हुम इलाहीन (सूरह नून में

### ३४- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى

﴿وَأِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا﴾ [الأعراف :

٨٥، هود: ٨٤، العنكبوت: ٣٦] إِلَى أَهْلِ مَدْيَنَ، لِأَنَّ مَدْيَنَ بَلَدٌ، وَمِنْهُ : ﴿وَأَسْأَلُ الْقَرْيَةَ﴾ وَأَسْأَلُ الْعِمْرَ يَغِي أَهْلَ الْقَرْيَةِ وَأَهْلَ الْعِمْرِ، ﴿وَوَرَاءَكُمْ ظَهْرِي﴾ لَمْ يَلْتَفِتُوا إِلَيْهِ، يُقَالُ إِذَا لَمْ تَقْضِ حَاجَتَكَ: ظَهَرْتَ حَاجَتِي، وَجَعَلْتَنِي ظَهْرِي. قَالَ: الظَّهْرِيُّ أَنْ تَأْخُذَ مَعَكَ ذَابَّةً أَوْ وَغَاءً تَسْتَظْهِرُ بِهِ. ﴿مَكَانَهُمْ﴾ وَمَكَانُهُمْ وَاحِدٌ. ﴿يَعْمَلُونَ﴾: يَعْمَلُونَ. ﴿يَأْسُ﴾: يَحْزَنُ ﴿آسَى﴾: أَحْزَنَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: ﴿أَنْتَ لَأَنْتَ الْخَلِيمُ الرَّشِيدُ﴾ يَسْتَهْزِئُونَ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿لَيْكَةٌ﴾: الْآيَةُ. ﴿الْطَّلَبَةُ﴾: إِظْلَالُ الْعَذَابِ عَلَيْهِمْ

### ३५- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ﴾ - إِلَى قَوْلِهِ- ﴿وَهُوَ مِنْهُمْ﴾ [الصافات: ١٣٩] قَالَ مُجَاهِدٌ: مُذِيبٌ. الْمَشْحُونُ: الْمَوْقُورُ. ﴿فَلَوْ لَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ﴾ الْآيَةُ ﴿فَلْيَذَّاتَهُ بِالْقَرَاءِ﴾ يَوْجُهُ الْأَرْضِ ﴿وَهُوَ صَقِيمٌ وَأَنْتَ عَلَيَّ

फर्माया) मक्ज़ूम जो क़ज़ीम के मा'नी में है या'नी मःमूम रंजीदा।

شَجَرَةً مِنْ بَقِيطِينَ مِنْ غَيْرِ ذَاتِ أَصْلٍ،  
الذَّبَابِ وَنَحْوِهِ. وَوَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى بَنَاتِ الْفِ  
أَوْ يَزِيدُونَ، فَأَمِنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَى حِينٍ.  
وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَى  
وَهُوَ مَكْظُومٌ. [القلم : ٤٨]،  
﴿كَظِيمٌ﴾ وَهُوَ مَغْمُومٌ.

3412. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा कि मुझसे आ'मश ने बयान किया (दूसरी सनद) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई शख्स मेरे बारे में ये न कहे कि मैं हज़रत यूनस (अलै.) से बेहतर हूँ। मुसद्द ने यूनस बिन मत्ता (अलै.) के लफ़्ज़ बढ़ाकर रिवायत किया। (दीगर मक्ज़म: 4603, 4804)

٣٤١٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ  
سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْأَعْمَشُ ح. حَدَّثَنَا  
أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ  
أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ  
النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ إِنِّي  
خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ)) زَادَ مُسَدَّدٌ: ((يُونُسَ  
بْنُ مَتَى)). [طرفة في : ٣-٤٦، ٤-٤٨].

3413. हमसे हफ़्स बिन इमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आलिया ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी शख्स के लिये मुनासिब नहीं कि मुझे यूनस बिन मत्ता से बेहतर करार दे। आपने उनके वालिद की तरफ़ मन्सूब करके उनका नाम लिया था। (राजेअ: 3395)

٣٤١٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ حَدَّثَنَا  
شُعْبَةُ عَنْ قَادَةَ عَنْ أَبِي الْغَالِيَةِ عَنْ ابْنِ  
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ  
قَالَ: ((مَا يَنْبَغِي لِغُلَامٍ أَنْ يَقُولَ إِنِّي خَيْرٌ  
مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَى. وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيهِ)).

[راجع: ٣٣٩٥]

तशरीह:

हज़रत यूनस (अलै.) को कुआन मजीद ने जुन्नू या'नी मछली वाला भी कहा है जिन्होंने मछली के पेट में जाकर आयते करीमा, ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तुम मिनज़्ज़ालिमीन का विर्द किया था। अल्लाह तआला ने उसकी बरकत से उनको मछली के पेट से ज़िन्दा बाहर निकाल लिया। इस आयते करीमा के विर्द में अब भी यही ताप्सीर है।

3414. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैइ बिन सअद ने, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू सलमान ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने, उनसे अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा लोगों को एक यहूदी अपना सामान दिखा रहा था लेकिन उसे उसकी जो क़ीमत लगाई गई उस पर वो राज़ी न था। इसलिये कहने लगा कि हर्गिज़ नहीं,

٣٤١٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ عَنْ  
اللَّيْثِ عَنْ عَبْدِ الرَّزَّازِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ  
عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْفَضْلِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَتِمَّا يَهُودِيٌّ  
يَغْرِضُ سِلْعَتَهُ أَغْطِي بِهَا شَيْئًا كَرِهَهُ،

उस ज्ञात की क्रसम जिसने मूसा को तमाम इंसानों में बरगुजीदा करार दिया। ये लफ़्ज़ एक अंगरारी सहाबी ने सुन लिया और खड़े होकर उन्होंने एक थप्पड़ उसके मुँह पर मारा और कहा कि नबी करीम (ﷺ) अभी हममें मौजूद हैं और तू इस तरह क्रसम खाता है कि उस ज्ञात की क्रसम जिसने हज़रत मूसा (अलै.) को तमाम इंसानों में बरगुजीदा करार दिया। इस पर वो यहूदी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा, ऐ अबुल क़ासिम! मेरा मुसलमानों के साथ अमन व सुलह का अहद व पैमान है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस सहाबी से पूछा कि तुमने उसके मुँह पर तमाचा क्यों मारा? उन्होंने वजह बयान की तो आप गुस्से हो गये इस क़दर कि गुस्से के आग़ार चेहर-ए-मुबारक पर नुमायाँ हो गये फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला के अंबिया में आपस में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत न दिया करो, जब सूर फूँका जाएगा तो आसमान व ज़मीन की तमाम मख़लूक पर बेहोशी तारी हो जाएगी, सिवा उनके जिन्हें अल्लाह तआला चाहेगा। फिर दूसरी मर्तबा सूर फूँका जाएगा और सबसे पहले मुझे उठाया जाएगा, लेकिन मैं देखूँगा कि मूसा (अलै.) अर्श को पकड़े हुए खड़े होंगे, अब मुझे मा'लूम नहीं कि ये उन्हीं तूर की बेहोशी का बदला दिया गया होगा या मुझसे भी पहले उनकी बेहोशी ख़त्म कर दी गई होगी। (राजेअ: 2411)

فَقَالَ: لَا وَالَّذِي اصْطَفَىٰ مُوسَىٰ عَلَى الْبَشَرِ، لَسَمِعْتُهُ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَامَ فَلَطَمَ وَجْهَهُ وَقَالَ: تَقُولُ وَالَّذِي اصْطَفَىٰ مُوسَىٰ عَلَى الْبَشَرِ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَنَظَّرُ بَيْنَ أَطْهَرِنَا؟ فَذَهَبَ إِلَيْهِ فَقَالَ: يَا الْقَاسِمُ، إِنَّ لِي ذِمَّةً وَغَدًا، فَمَا بَالُ فَلَانٍ لَطَمَ وَجْهِي؟ فَقَالَ: لِمَ لَطَمْتَ وَجْهَهُ؟ فَذَكَرَهُ فَغَضِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى رُبِّي فِي وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ: ((لَا تُفَضِّلُوا بَيْنَ أَنْبِيََاءِ اللَّهِ، فَإِنَّهُ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَيَصْغَقُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَىٰ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُبْعَثُ، إِذَا مَا مُوسَىٰ أَخَذَ بِالْعَرْشِ، فَلَا أَذْرِي أَحْوَسَ بِصَفَقَتِهِ يَوْمَ الطُّورِ، أَمْ يُبْعَثُ قَلِيلًا)).

[راجع: ٢٤١١]

3415. और मैं तो ये भी नहीं कह सकता कि कोई शख्स हज़रत यूनुस बिन मता से बेहतर है। (दीगर मक़ाम: 3416, 4604, 4631, 4805)

٣٤١٥- ((وَلَا أَقُولُ إِنَّ أَحَدًا أَفْضَلُ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى)). [أطرافه في: ٣٤١٦، ٤٦٠٤، ٤٦٣١، ٤٨٠٥].

3416. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उन्होंने हुमैद बिन अब्दुरहमान से सुना और उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी शख्स के लिये ये कहना लायक नहीं कि मैं हज़रत यूनुस बिन मता से अफ़ज़ल हूँ। (राजेअ: 3415)

٣٤١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ سَمِعْتُ حَمِيدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى)). [راجع: ٣٤١٥]

**तशरीह :**

या'नी अपनी राय और अक़ल से क्योंकि फ़ज़ीलत एक मछली अम्र है। उसका अल्लाह के इल्म पर छोड़ना बेहतर है मगर चूँकि दूसरी हदीषों में उसकी सहायत आ गई कि आहज़रत (ﷺ) सब अंबिया के सरदार हैं, इसलिये आपको उनसे बेहतर कहना जाइज़ हुआ मगर अदब के साथ कि दूसरे पैग़म्बरों की तौहीन न हो (वहीदी)

**बाब 36 : अल्लाह पाक का (सूरह आराफ़ में) ये फ़र्मांना उन यहूदियों से उस बस्ती (ईला) का हाल पूछ जो समुन्दर के नज़दीक थी**

ये लोग हफ़्ते के दिन ज़्यादाती करने लगे। शुरुअन या'नी शवारेअ, पानी पर तैरती हुई। आखिर आयत (कूनू क़िरदतन खासेईन) तक

۳۶- بَابُ ۳۶ «وَأَسْأَلُهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ خَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ» [الأعراف : ۱۶۳] :

يَعْدُونَ، يَتَجَاوَزُونَ فِي السَّبْتِ «إِذْ تَأْتِيهِمْ حِينَتُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرْعًا - شَوَارِعَ إِلَى قَوْلِهِ - كُونُوا قِرْدَةً خَاسِيْنَ».

उन बस्ती वालों ने हीला साज़ी से काम लिया कि हफ़्ता के दिन मछली का शिकार छोड़ा मगर उस दिन मछलियाँ बक़रत आतीं और ये उनको रोककर एक जगह घेर रखते फिर दूसरे दिनों में शिकार करते। इसी हक़्त का आयत मज़क़ूर में ज़िक्र है। स़द अफ़सोस कि मुसलमानों में भी ऐसे फ़ुक़हा-ए-किराम पैदा हो गये हैं जिन्होंने किताबुल हियल या'नी हीला साज़ी के मुख्तलिफ़ तरीक़े बतलाने के लिये किताबें लिख डालीं और इस बारे में यहूदियों से भी आगे बढ़ गये। अल्लाह सबको सिराते मुस्तक़ीम नसीब करे। आमीन।

**बाब 37 : अल्लाह तआला का इर्शाद और दी मैंने दाऊद (अलै.) को ज़बूर,**

अज़़ुबर बमा'नी अल कुतुब उसका वाहिद ज़बूर है। ज़बरतु बमा'नी कतबतु मैं ने लिखा। और बेशक हमने दाऊद को अपने पास से फ़ज़ल दिया (और हमने कहा था कि) ऐ पहाड़! उनके साथ तस्बीह पढ़ा करो। मुजाहिद (रह.) ने कहा कि (अविब्बी मअहू) के मा'नी सब्बिही मअहू है और परिन्दों को भी हमने उनके साथ तस्बीह पढ़ने का हुक्म दिया और लोहे को उनके लिये नरम कर दिया था कि उससे ज़िरहें बनाई। साबिगात के मा'नी दरुअ के हैं या'नी ज़िरहें। वक्रदरा फ़िस्सरदि) का मा'नी हैं, और बनाने में एक ख़ास अंदाज़ रख (या'नी ज़िरह की) कीलों और हल्के के बनाने में। कीलों को इतना बारीक भी न कर कि ढीली हो जाएँ और न उतनी बड़ी हों कि हल्का टूट जाए और अच्छे अमल करो। बेशक तुम जो भी अमल करोगे मैं उसे देख रहा हूँ।

۳۷- بَابُ ۳۷ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى : «وَأَتَيْنَا دَاوُدَ رِبْرَاقًا» [النساء : ۱۶۲] : الإِسْرَاءُ : ۱۵۵

«الرِّبْرَاقُ: الْكُتُبُ وَاحِدُهَا رِبْرُورٌ. وَتَبَرَتْ: كُنْتُ. «وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا، يَا جِبَالُ أَوْبِي مَعَهُ» [سبا : ۱۰-۱۱]. قَالَ مُجَاهِدٌ سَحِي مَعَهُ. «وَالطَّيْرُ، وَأَلْنَا لَهُ الْحَدِيدَ. أَنْ أَعْمَلَ سَابِغَاتٍ» : الدَّرُوعُ «وَفَنَرٌ فِي السَّرْدِ» الْمَسَامِيرُ وَالْحُلُقُ، وَلَا يُدَقُّ الْمَسْمَارُ فَيَسْلُسَلُ، وَلَا تَغْطَمُ فَيَقْصَمُ. «أَفْرِغْ» : أَنْزِلْ. «بَسْطَةً» : زِيَادَةً وَفَضْلًا. «وَأَعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ».

34 17. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हममाम

۳۴۱۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ

ने और उन्हें हज़रत अबू हुसैरह (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हज़रत दाऊद (अलै.) के लिये कुआन (या'नी ज़बूर) की किरात बहुत आसान कर दी गई थी। चुनाँचे वो अपनी सवारी पर ज़ीन कसने का हुक्म देते और ज़ीन कसी जाने से पहले ही पूरी ज़बूर पढ़ लेते थे और आप सिर्फ़ अपने हाथों की कमाई खाते थे। उसकी रिवायत मूसा बिन इक्बाल ने की, उनसे सफ़वान ने, उनसे अत्ता बिन यसार ने, उनसे हज़रत अबू हुसैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 2073)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خُفِيفَ عَلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ الْقُرْآنَ، فَكَانَ يَأْتُرُ بِدَوَائِهِ فَتَسْرَجُ، فَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَبْلَ أَنْ تُسْرَجَ ذَوَابُهُ، وَلَا يَأْكُلُ إِلَّا مِنْ عَمَلٍ يَدُوهُ)) رَوَاهُ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ عَنْ غَطَاءَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٠٧٣]

**तशरीह:** इस क़दर जल्द ज़बूर पढ़ लेना हज़रत दाऊद (अलै.) का एक मुअजिज़ा था। लेकिन अब आम मुसलमानों के लिये कुआन का ख़त्म तीन दिन से पहले करना सुन्नत के खिलाफ़ है। जिसने कुआन पाक तीन दिन से पहले और तीन से कम में ख़त्म किया उसने कुआन फ़हमी का हक़ अदा नहीं किया। हज़रत दाऊद (अलै.) अपने सब भाइयों में परस्त क़द थे इसलिये लोग उनको हिक़ारत की नज़र से देखते थे। लेकिन अल्लाह पाक ने हज़रत दाऊद (अलै.) को उनके भाइयों पर फ़ज़ीलत दी और उन पर ज़बूर नाज़िल फ़र्माई। इस तरह इंजील का फ़िक्सा सहीह हुआ कि जिस पत्थर को मेअमारों ने ख़राब देखकर फेंक दिया था, वही महल के कोने का स़दरे नशीन हुआ। हज़रत दाऊद (अलै.) को अल्लाह तआला ने लोहे का काम बतौर मुअजिज़ा अत्ता फ़र्माया कि लोहा उनके हाथ में मोम हो जाता और वो उनसे ज़िरेहें और मुख़तलिफ़ सामान बनाते। यही उनका ज़रिया-ए-मआश था। हदीष शरीफ़ में उनके रोज़े की भी ता'रीफ़ की गई है और कुआन मजीद में उनकी इबादत व रियाज़त और इनाबत इलल्लाह को बड़े अच्छे अंदाज़ में बयान किया गया है।

3418. हमसे यह्या बिन खुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर मिली कि मैंने कहा है कि अल्लाह की क़सम! जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा, दिन में रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत किया करूँगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हीं ने ये कहा है कि अल्लाह की क़सम जब तक ज़िन्दा रहूँगा दिन भर रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत करूँगा? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ मैंने ये जुम्ला कहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे निभा नहीं सकोगे, इसलिये रोज़ा भी रखा करो और बग़ैर रोज़े के भी रहा करो और रात में इबादत भी किया करो और सोया भी करो। हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखा करो, क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है इस तरह रोज़े का ये तरीक़ा भी (प्रवाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर के रोज़े जैसा हो जाएगा। मैंने कहा कि मैं इससे अफ़ज़ल तरीक़ा की त़ाक़त रखता हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल

٣٤١٨ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْرِ بْنِ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَهُ وَأَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: أَخْبَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنِّي أَقُولُ: وَاللَّهِ لَا صَوْمَ النَّهَارِ وَالْأَقْوَمَ اللَّيْلِ مَا عِشْتُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَنْتَ الَّذِي تَقُولُ: وَاللَّهِ لَا صَوْمَ النَّهَارِ وَالْأَقْوَمَ اللَّيْلِ مَا عِشْتُ؟)) قُلْتُ: قَدْ قُلْتُهُ. قَالَ: ((إِنَّكَ لَا تَسْتَطِيعُ ذَلِكَ، فَصُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، وَصُمْ مِنَ الشَّهْرِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ الْحَسَنَةَ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، وَذَلِكَ مِثْلُ صِيَامِ الدَّهْرِ)).

(ﷺ)! आपने उस पर फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और दो दिन बग़ैर रोज़े के रहा करो। उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज किया कि मैं इससे भी अफ़ज़ल तरीक़े की ताक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और एक दिन बग़ैर रोज़ा के रहा करो, हज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े का तरीक़ा भी यही था और यही सबसे अफ़ज़ल तरीक़ा है। मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं इससे भी अफ़ज़ल तरीक़े की ताक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि उससे अफ़ज़ल और कोई तरीक़ा नहीं। (राजेअ: 1131)

[راجع: 1131]

3419. हमसे ख़ल्लाद बिन यज़ा ने बयान किया, कहा हमसे मिस्र ने बयान किया, कहा हमसे हबीब बिन अबी प्राबित ने बयान किया, उनसे अबुल अब्बास ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलल्लाह (ﷺ) ने दर्यापस्त फ़र्माया, क्या मेरी ये ख़बर सहीह है कि तुम रात भर इबादत करते हो और दिन भर (रोज़ाना) रोज़ा रखते हो? मैंने अर्ज किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया लेकिन अगर तुम इसी तरह करते रहे तो तुम्हारी आँखें कमज़ोर हो जाएँगी और तुम्हारा जी उकता जाएगा। हर महीने में तीन रोज़े रखा करो कि यही (प्रवाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर का रोज़ा है, या (आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि) ज़िन्दगी भर के रोज़े की तरह है। मैंने अर्ज किया कि मैं अपने में महसूस करता हूँ, मिस्र ने बयान किया कि आपकी मुराद कुव्वत से थी। ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े की तरह रोज़े रखा करो। वो एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहा करते थे और अगर दुश्मन से मुकाबला करते तो मैदान से भागा नहीं करते थे। (राजेअ: 1131)

अह्मदीये मज़क़ूरा में हज़रत दाऊद (अलै.) का ज़िक्र है। बाब से यही वजह मुताबक़त है।

### बाब 38 : हज़रत दाऊद (अलै.)

#### का बयान

सूरह बनी इस्राईल में अल्लाह ने फ़र्माया कि उसकी बारगाह में सबसे पसन्दीदा नमाज़ दाऊद (अलै.) की नमाज़ है और सबसे

فَقُلْتُ: إِنِّي أَطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمَيْنِ)). قَالَ: قُلْتُ: إِنِّي أَطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)). قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمًا، وَذَلِكَ صِيَامُ دَاوُدَ وَهُوَ أَغْذَلُ الصِّيَامِ)). قُلْتُ: إِنِّي أَطِيقُ أَفْضَلَ مِنْهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: ((لَا أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)).

۳۴۱۹- حَدَّثَنَا خَلَادُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مِسْرَرٌ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي قَابَتَةَ عَنْ أَبِي الْعَاسِمِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْقَاصِي قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَلَمْ أَتَاكَ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ؟ فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: فَإِنَّكَ إِذَا فَعَلْتَ هَجَمَتِ الْعَيْنُ، وَتَفَهَتِ النَّفْسُ، صُمَّ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، فَذَلِكَ صَوْمُ الدَّهْرِ، أَوْ كَصَوْمِ الدَّهْرِ. قُلْتُ: إِنِّي أَجِدُ بِي - قَالَ مِسْرَرٌ: يَغْنِي قُرْآنًا - قَالَ: فَصُمْ صَوْمَ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ، وَكَانَ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا، وَلَا يَفْرُ إِذَا لَاقَى)).

[راجع: 1131]

### ۳۸- بَابُ أَحَبِّ الصَّلَاةِ إِلَى اللَّهِ

#### صَلَاةُ دَاوُدَ،

وَأَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللَّهِ صِيَامُ دَاوُدَ: كَانَ

पसन्दीदा रोज़ा हज़रत दाऊद (अलै.) का रोज़ा है। वो (इब्तिदाई) आधी रात में सोया करते और एक तिहाई रात में इबादत किया करते थे। फिर जब रात का छटा हिस्सा बाक़ी रह जाता तो सोया करते। इसी तरह एक दिन रोज़ा रखा करत और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहा करते। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी उसी के बारे में कहा था कि जब भी सेहर के वक़्त मेरे यहाँ नबी करीम (ﷺ) मौजूद रहे तो सोये हुए होते थे।

3420. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उनसे अम्र बिन औस ब्रक़फी ने, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, अल्लाह तआला के नज़दीक रोज़े का सबसे पसन्दीदा तरीक़ा दाऊद (अलै.) का तरीक़ा था। आप एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहते थे। इसी तरह अल्लाह तआला के नज़दीक नमाज़ का सबसे ज़्यादा पसन्दीदा तरीक़ा हज़रत दाऊद (अलै.) की नमाज़ का तरीक़ा था, आप आधी रात तक सोते और एक तिहाई हिस्से में इबादत किया करते थे, फिर बक़िया छटे हिस्से में भी सोते थे। (राजेअ: 1131)

हज़रत दाऊद (अलै.) का रोज़ा हमेशा रोज़ा रखने से अफ़जल है क्योंकि हमेशा रोज़ा रखने में नफ़्स को रोज़े की आदत हो जाती है और आदत की वजह से इबादत के लिये जो मशक़त होनी चाहिये वो बाक़ी नहीं रहती। हज़रत दाऊद (अलै.) आधी रात के बाद उठकर तहज़ुद पढ़ते, फिर सो जाते, फिर सुबह की नमाज़ के लिये उठते। ये और ज़्यादा मुश्किल और नफ़्स पर ज़्यादा शाक़ (भारी) है।

**बाब 39 : अल्लाह पाक का सूरह साद में फ़र्माया,**  
हमारे ज़ोरदार बन्दे दाऊद का ज़िक्र कर, वो  
अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होने वाला था।

अल्लाह तआला के इशार्द व फ़सलल ख़िताब तक (या'नी फ़ैसला करने वाली तक्ऱीर हमने उन्हें अता की थी) मुजाहिद ने कहा कि फ़सलल ख़िताब से मुराद फ़ैसले की सूझ-बूझ है। वला तुश्तिता या'नी बेइस्साफ़ी न कर और हमें सीधी राह बता, ये शख़्स मेरा भाई है उसके पास नित्रावे नअजअ (दुम्बियाँ) हैं, औरत के लिये भी नअजत का लफ़ज़ इस्ते'माल होता है और नअजत बकरी को भी कहते हैं, और मेरे पास सिर्फ़ एक दुम्बी है, सो ये कहता है वो भी मुझको दे डाल, ये कफ़लहा ज़करिया की तरह है बया'नी

يَتِمُّ نَصْفَ اللَّيْلِ، وَيَقُومُ ثُلُثَهُ وَيَتِمُّ سُدُسَهُ. وَيَصُومُ يَوْمًا وَيَفْطِرُ يَوْمًا قَالَ غُلَيْبٌ: وَهُوَ قَوْلُ عَائِشَةَ: ((مَا أَفَاءَ الشَّحْرِ عِنْدِي إِلَّا نَابِغًا)).

٣٤٢٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ غَمْرٍو وَبِزْدَادٍ عَنْ غَمْرٍو بْنِ أَوْسٍ التَّفَقِيُّ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ غَمْرٍو قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللَّهِ صِيَامُ دَاوُدَ، كَانَ يَصُومُ يَوْمًا وَيَفْطِرُ يَوْمًا. وَأَحَبُّ الصَّلَاةِ إِلَى اللَّهِ صَلَاةُ دَاوُدَ، كَانَ يَتِمُّ نَصْفَ اللَّيْلِ وَيَقُومُ ثُلُثَهُ وَيَتِمُّ سُدُسَهُ)). (راجع: ١١٣١)

٣٩- بَابُ «وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ»- إِلَى قَوْلِهِ- وَفَصْلُ الْخِطَابِ  
[ص: ١٧-٢٠] قَالَ مُجَاهِدٌ: الْقَهْمُ فِي الْقَضَاءِ. وَلَا تُشْطِطُ: لَا تُسْرِفُ. وَوَاهِدُنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ. إِنَّ هَذَا أَحْيَى لَمْ نَسْعَ وَتَسْعُونَ نَعَجَةً - يُقَالُ لِلْمَرْأَةِ نَعَجَةً، وَيُقَالُ لَهَا أَنْصَا: شَاةٌ - وَلِي نَعَجَةٌ وَاحِدَةٌ. فَقَالَ: أَكْفَلْنِيهَا. - مَثَلٌ وَكَفَلْنَاهَا وَكَرَيْتَاهُ. ضَمَّهَا -



ज़म्महा और बातचीत में मुझे दबाता है। दाऊद (अलै.) ने कहा कि उसने तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने की दसख्वास्त करके व क़ई तुझ पर जुल्म किया और अक़बर साझी यूँ ही एक-दूसरे के ऊपर जुल्म किया करते हैं, अल्लाह तआला के इशारे, इन्नमा फ़तन्नाहु तक। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (फ़तन्नाहु के मा'नी हैं) हमने उनका इम्तिहान किया। इमर (रज़ि.) उसकी क़िरअत ताअ की तशदीद के साथ फ़तन्नाहु किया करते थे, सो उन्होंने अपने परवरदिगार के सामने तौबा की और वो झुक पड़े और रुजूअ हुए।

وَعَرْنِي: غَلْبَنِي. صَارَ أَغْرُ مِنِّي.  
أَغْرَزْنَاهُ: جَعَلْنَاهُ غَزِيرًا فِي الْخُطَابِ.  
يُقَالُ: الْمُحَاوَرَةُ. قَالَ لَقَدْ ظَلَمْتُكَ  
بِسَوَالٍ نَجَحْتُ إِلَىٰ مَعَاذِهِ. وَإِنْ كَثُرَ مِنَ  
الْخُلُطَاءِ الشُّرَكَاءُ تَيْغِي - إِلَىٰ قَوْلِهِ  
- إِنَّمَا فِتْنَانَا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: اخْتَبَرْنَاهُ.  
وَقَرَأَ عُمَرُ: «فِتْنَانَا» - بِتَشْدِيدِ التَّاءِ -  
«فَاسْتَفْزَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ».

**तशरीह:** कुछ ने कहा कि हज़रत दाऊद (अलै.) ने एक कम सौ बीवियाँ रखकर फिर किसी की हसीन बीवी देखी। उनके दिल में उस औरत को हासिल करने का ख़याल आया। अल्लाह पाक ने उस ख़याल पर भी उनको मलामत की और दो फ़रिश्तों को मुद्ई और मुद्आ अलैहि बनाकर उन ही से फ़ैसला कराया जो हक़ था। पहले तो हज़रत दाऊद (अलै.) को ख़याल न आया, फिर समझ गये कि ये सब मेरे ही हस्बे हाल है। उस वक़्त अल्लाह के डर से रोए और इस्तिफ़ार किया। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि ये जो कुछ मुफ़स्सिरन ने दास्तान लिखी है कि हज़रत दाऊद (अलै.) एक औरत के बाल खुले देखकर उस पर आशिक़ हो गये थे और उसके शौहर को क़त्ल करा दिया, ये सब झूठ है। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा कि जो कोई ये क़िस्सा हज़रत दाऊद (अलै.) का नाम लेकर बयान करेगा मैं उसको एक सौ साठ कोड़े मारूँगा।

3421. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे सहल बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्बास से सुना, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा, क्या मैं सूरह साद में सज्दा किया करूँ? तो उन्होंने आयत वमिन ज़ुरियतिही दाऊदा व सुलैमान की तिलावत की (फ़बिहुदाहुमुक़् तदिह) तक। नेज़ उन्होंने कहा कि तुम्हारे नबी (ﷺ) उन लोगों में से थे जिन्हें अंबिया (अलै.) की इक़्तिदा का हुक्म था। (दीगर मक़ाम: 4632, 4806, 4807)

٣٤٢١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ  
يُوسُفَ قَالَ: سَمِعْتُ الْقَوَامَ عَنْ مُجَاهِدٍ  
قَالَ: ((قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ أَسْجُدُ فِي صِرٍّ؟  
فَقَرَأَ: «وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ -  
حَتَّىٰ آتَىٰ - فَبَهَذَاهُمْ أَقْتَدِي» فَقَالَ:  
نَبِيُّكُمْ ﷺ بِمَنْ أَمَرَ أَنْ يَقْتَدِيَ بِهِمْ)).  
[أَطْرَافُهُ ي: ٤٦٣٢, ٤٨٠٦, ٤٨٠٧].

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष को क़िताबुत तफ़सीर में भी निकाला है। उसमें ये है कि आपने सूरह साद में सज्दा किया। हमारे रसूले करीम (ﷺ) को जो अगले रसूलों की इक़्तिदा करने का हुक्म हुआ, उसका मतलब ये है कि अक़ाइद व उसूल सब पैग़म्बरों के एक हैं गो फ़ुरूआत में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है।

3422. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इकिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि सूरह साद का सज्दा ज़रूरी नहीं, लेकिन मैंने नबी करीम (ﷺ) को इस

٣٤٢٢ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ  
حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ  
عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:

सूरह में सज्दा करते देखा है।

(राजेज़: 1069)

गो हदीष इस बाब से ता'ल्लुक नहीं रखती मगर सूरह साद में हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का बयान है और उसमें सज्दा भी हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) की तौबा कुबूल होने के शुक्रिया में है, इस मुनासबत से उसको यहाँ बयान कर दिया।

#### बाब 40 : अल्लाह तआला का इशार्द

और मैंने दाऊद को सुलैमान (बतौर बेटा) अन्ना फ़र्माया, वो बहुत अच्छा बन्दा था, बहुत ही रूजूअ होने वाला और तबज्जह करने वाला। सुलैमान का ये कहना कि मालिक मेरे मुझको ऐसी बादशाहत दे कि मेरे सिवा किसी को मयस्सर न हो। और सूरह तौबा में अल्लाह तआला का फ़र्मान, और ये लोग पीछे लग गये उस इल्म के जो सुलैमान की बादशाहत में शैतान पढ़ा करते थे। और सूरह सबा में फ़र्माया, (मैंने) सुलैमान (अलै.) के लिये हवा को (ताबेअ) कर दिया कि उसकी सुबह की मंज़िल महीना भर की होती और उसकी शाम की मंज़िल महीना भर की होती और क़ित्ता या'नी हमने उनके लिये लोहे का चश्मा बहा दिया (व असल्ला लहू अयनल क़ित्ता बमा'नी) व अज़ब्ना लहू अैनल हदीद है और जिन्नात में कुछ वो थे जो उनके आगे उनके परवरदिगार के हुक्म से ख़ूब काम करते थे। आख़िर आयत मिम् महारिब तक। मुजाहिद ने कहा कि महारिब वो इमारतें जो महलों से कम हों तमाज़ील तस्वीरों और लगन और जवाब या'नी हौज़ जैसे कूटों के लिये हौज़ हुआ करते हैं। और (बड़ी बड़ी) जमी हुई दें आयतुशकूर तक। फिर जब मैंने उन पर मौत का हुक्म जारी कर दिया तो किसी चीज़ ने उनकी मौत का पता न दिया बजुज़ एक ज़मीन के कीड़े (दीमक) के कि वो उनके अम्मा को खाता रहा, सो जब वो गिर पड़े तब जिन्नात ने जाना कि वो मर गये। अल्लाह तआला के फ़र्मान मुहीन तक सुलैमान (अलै.) कहने लगे कि मैं उस माल की मुहब्बत में परवरदिगार की याद से ग़ाफ़िल हो गया, फ़ तफ़्रिका मस्हा अल्ख या'नी उसने घोड़ों की अयाल और अगाड़ी पछाड़ी की रस्सियों पर हाथ फेरना शुरू कर दिया। अल् अस्फ़ाद बमा'नी अल विफ़ाक़ बेड़ियाँ जंजीरें। मुजाहिद ने कहा कि अस्फ़ाफ़िनात, सफ़फ़नल फ़रसुन से मुश्तक़ है, उस वक़्त बोलते हैं जब घोड़ा एक पाँव उठाकर खुर की नोक पर खड़ा हो जाए, अल जियाद या'नी दौड़ने में तेज़। जसदन बमा'नी शैतान

((أَنَسَ ص مِنْ غَزَائِمِ السُّجُودِ، وَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْجُدُ فِيهَا)). [راجع: ١٠٦٩]

४० - بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ، نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ﴾ [ص: ٣٠] الرَّاجِعُ: الْمُنِيبُ. وَقَوْلُهُ: ﴿مَنْ لِي مَلَكًا لَا يُبْغِي لِأَخِي مِنْ بَغْدِي﴾ [ص: ٣٥] وَقَوْلُهُ: ﴿وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيَاطِينُ عَلَى مُلْكِ سُلَيْمَانَ﴾ [البقرة: ١٠٢]، ﴿وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غَدُوًّا شَهَرَ وُزُوحَهَا شَهَرَ وَأَسَلْنَا لَهُ عُثْنَ الْفِطْرِ﴾ - أَذْبْنَا لَهُ عُثْنَ الْخَدِيدِ - ﴿وَوَيْنَ الْجِنُّ مَنْ يَفْعَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ إِلَى مِنْ مَحَارِبٍ﴾ [سَبَأ: ١٢] قَالَ مُجَاهِدٌ: بُنْيَانٌ مَا دُونَ الْقُصُورِ ﴿وَتَمَائِيلُ وَجِفَانٌ كَالْجَوَابِ﴾ كَالْحِجَابِ لِلْإِبِلِ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَأَجْرِيَةِ مِنَ الْأَرْضِ ﴿وَالْدُّورُ رَامِيَاتُ اعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشُّكُورُ. فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةٌ الْأَرْضِ - الْأَرْضَةُ - تَأْكُلُ مِنْسَانَهُ﴾ عَصَاهُ ﴿فَلَمَّا سَوَّاهُ - إِلَى قَوْلِهِ - الْمُنْهِنِ﴾ [سَبَأ: ١٣-١٤]. ﴿حُبُّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي. فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَغْنَقِ﴾ يَمْسَحُ أَغْرَافَ الْخَيْلِ وَغَرَاقِبَهَا. ﴿الْأَصْفَادُ﴾ الْوَتَاقُ.

(जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम) की अंगूठी पहनकर उनकी कुर्सी पर बैठ गया था।) ख़्वाअनर्मी से, खुशी से। हयबु असाबा या'नी जहाँ वो जाना चाहते फ़म्नुन अअतिके मा'नी में है, जिसको चाहे दे। बिगैरि हिसाब बगैर किसी तकलीफ़ के, बिना हर्ज।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿الصَّافَاتِ﴾: صَفَنَ  
الْفَرَسَ رَفَعَ إِخْدَى وَجَلَّيْهِ حَتَّى تَكُونَ عَلَى  
طَرَفِ الْحَاوِي. ﴿الْجِيَادُ﴾: السَّرَاغُ.  
﴿جَسَدًا﴾: شَيْطَانًا. ﴿رُخَاءَ﴾: طَيِّبَةً.  
﴿حَيْثُ أَصَابَ﴾: حَيْثُ شَاءَ. ﴿فَافْئُتْ﴾:  
أَغْطِ. ﴿بَغَيْرِ حِسَابٍ﴾: بِغَيْرِ حَرَجٍ.

**तशरीह:** फ़तफ़िक अल्ख की ये तफ़सीर इमाम बुखारी (रह.) ने की है कि वो घोड़ों का मुलाहिज़ा फ़र्माने लगे। अक़्फ़र मुफ़स्सिर ने ये मा'नी किये हैं कि उनके पाँव और गर्दन तलवार से काटने लगे। चूँकि उनके देखने में अस्त्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई थी।

3423. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक सरकश जिन्न कल रात मेरे सामने आ गया ताकि मेरी नमाज़ ख़राब कर दे लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे उस पर कुदरत दे दी और मैंने उसे पकड़ लिया। फिर मैंने चाहा कि उसे मस्जिद के किसी सुतून से बाँध दूँ ताकि तुम सब लोग भी देख सको। लेकिन मुझे अपने भाई हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की दुआ याद आ गई कि, या अल्लाह! मुझे ऐसी सलतनत दे जो मेरे सिवा और किसी को मयस्सर न हो, इसलिये मैंने उसे नामुराद वापस कर दिया। इफ़रीत सरकश के मा'नी में है, ख़्वाह इंसानों में से हो या जिन्नों में से। (राजेअ: 461)

٣٤٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا  
مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ  
مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ (إِنْ عَفَرْنَا مِنَ  
الْجِنِّ تَفَلَّتْ الْبَارِحَةُ لِقَطْعِ عَلِيِّ صَلَاتِهِ،  
فَأَمَكَّنِي اللَّهُ مِنْهُ، فَأَخَذْتُهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ  
أَرْبِطَهُ عَلَى سَارِيَةٍ مِنْ مَوَارِي الْمَسْجِدِ  
حَتَّى تَنْظُرُوا إِلَيْهِ كُلُّكُمْ، فَذَكَرْتُ دَعْوَةَ  
أَخِي سُلَيْمَانَ ﴿رَبِّ هَبْ لِي مَلَكًا لَا  
يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِنْ بَغْدِي﴾ فَرَدَّدْتُهُ خَامِسًا)).  
عَفَرْتُ: مَتَمَرَّدٌ مِنْ إِنْسٍ أَوْ جَانٍّ، مِثْلُ  
زَيْنَبَةَ جَمَاعَتِهَا الزَّيْنَانِيَّةِ. [راجع: ٤٦١]

रिवायत में हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है, बाब से यही मुनासबत है। हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की दुआ आयत रब्बिफ़िली वहब ली मुल्कल् ला यम्बगी लि अहदिम् मिम् बअदि (स़ाद: 35) मज़कूर है।

3424. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे मुगीरह बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सुलैमान बिन दाऊद (अलै.) ने कहा कि आज रात मैं अपनी सत्तर बीवियों के पास जाऊँगा और हर बीवी

٣٤٢٤- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا  
مُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ  
عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ

एक शहसवार जनेगी जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेगा। उनके साथी ने कहा इंशाअल्लाह, लेकिन उन्होंने नहीं कहा। चुनौती किसी बीवी के यहाँ भी बच्चा नहीं हुआ, सिर्फ एक के यहाँ हुआ और उसकी भी एक जानिब बेकार थी। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर हज़रत सुलैमान (अलै.) इंशाअल्लाह कह देते (तो सबके यहाँ बच्चे पैदा होते) और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते। शुऐब और इब्ने अबुज्ज़िनाद ने (बजाय सत्तर के) नब्बे कहा है और यही बयान ज़्यादा सहीह है।

3425. मुझसे इमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम तैमी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! सबसे पहले कौनसी मस्जिद बनाई गई थी? फ़र्माया कि मस्जिदे हुराम! मैंने सवाल किया, उसके बाद कौनसी? फ़र्माया कि मस्जिदे अक्सा। मैंने सवाल किया और उन दोनों की ता'मीर का बीच का फ़ासला कितना था? फ़र्माया कि चालीस साल। फिर औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस जगह भी नमाज़ का वक़्त हो जाए फ़ौरन नमाज़ पढ़ लो तुम्हारे लिये तमाम रूए ज़मीन मस्जिद है। (राजेज़: 336)

इसकी बाब से मुनासबत ये है कि उसमें मस्जिदे अक्सा का ज़िक्र है जिसकी पहली ता'मीर बहुत क़दीम (पुरानी) है मगर बाद में हज़रत सुलैमान (अलै.) ने उसे बनाया। का'बा शरीफ़ की भी पहली ता'मीर बहुत क़दीम है मगर हज़रत इब्राहीम ने उसकी तजदीद फ़र्माई। दोनों इमारतों की पहली बुनियादों में चालीस साल का फ़ासला है। इस तरह मुंकिरीने हदीष का ए'तिराज़ ग़लत हो गया जो वो इस हदीष पर वारिद करते हैं। उम्मत में गुमराह फ़िक्के बहुत पैदा हुए मगर मुंकिरीने हदीष ने उन तमाम गुमराह फ़िक्कों से आगे क़दम बढ़ाकर बुनियादे इस्लाम को ढहाने की कोशिश की है। क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना यूफ़कून्

3426. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मेरी और तमाम इंसानों की मिषाल एक ऐसे शख़्स की सी है जिसने आग रोशन की हो। फिर परवाने और कीड़े मकोड़े उसमें गिरने लगे हों।

ذَاوُدَ : لَا طُوفَنَ اللَّيْلَةَ عَلَى سَبْعِينَ امْرَأَةً تَحْمِلُ كُلُّ امْرَأَةٍ فَارِسًا يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. فَقَالَ لَهُ صَاحِبُهُ : إِنْ شَاءَ اللَّهُ. فَلَمْ يَقُلْ، وَلَمْ تَحْمِلْ شَيْئًا إِلَّا وَاحِدًا. سَاقِطًا أَحَدَ شَقِيهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَوْ قَالَهَا لَجَاحِدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ. قَالَ شُعَيْبٌ وَائِسُ أَبِي الزَّنَادِ ((سَبْعِينَ)) وَهُوَ أَصَحُّ.

۳۴۲۵- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ مَسْجِدٍ وَضِعَ أَوَّلُ؟ قَالَ: ((الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ)). قَالَتْ: ثُمَّ أَيُّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ الْمَسْجِدُ الْأَقْصَى)). قُلْتُ: كَمْ كَانَ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ: ((أَرْبَعُونَ)). ثُمَّ قَالَ : ((حِينَئِذٍ أَذْرَكْتُكَ الصَّلَاةَ فَصَلِّ وَالْأَرْضُ لَكَ مَسْجِدًا)). [راجع: ۳۳۶]

۳۴۲۶- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزَّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَلٍ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الْفِرَاشُ وَهَذِهِ الذُّوَابُ تَقَعُ فِي النَّارِ)).

3427. और औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो औरतें थीं और दोनों के साथ दोनों के बच्चे थे। इतने में एक भेड़िया आया और एक औरत के बच्चे को उठा ले गया। उन दोनों में से एक औरत ने कहा भेड़िया तुम्हारे बेटे को ले गया है और दूसरी ने कहा कि तुम्हारे बेटे को ले गया है। दोनों दाऊद (अलै.) के यहाँ अपना मुकद्दमा ले गई। आपने बड़ी औरत के हक़ में फैसला कर दिया। उसके बाद वो दोनों हज़रत सुलैमान (अलै.) बिन दाऊद (अलै.) के यहाँ आईं और उन्हें उस झगड़े की ख़बर दी। उन्होंने फ़र्माया कि अच्छा छुरी लाओ। इस बच्चे के दो टुकड़े करके दोनों के बीच बराबर बांट दो। छोटी औरत ने ये सुनकर कहा, अल्लाह आप पर रहम करे। ऐसा न कीजिए, मैंने मान लिया कि ये इसी बड़ी का लड़का है। इस पर सुलैमान (अलै.) ने उस छोटी के हक़ में फैसला किया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने सिक्कीन का लफ़्ज़ उसी दिन सुना, वरना हम हमेशा (छुरी के लिये) मुदया का लफ़्ज़ बोला करते थे। (दीगर मक़ाम : 6769)

٣٤٢٧- (رواق : كانت امرأتان معهما ابنهما. جاء الذئب فذهب بواحدة. فقالت صاحبتها إنما ذهب بابنك. وقالت الأخرى: إنما ذهب بابنك. فتحاكمتا إلى داود ف قضى به للكبيرة. فخرجتا على سليمان بن داود عليهما السلام فاخبرناه فقال: اتوني بالسكين اشق بينهما. فقالت الصغرى: لا تفعل يرحمك الله. هو ابنها. ف قضى به للصغرى. قال أبو هريرة رضي الله عنه: والله إن سمعت بالسكين إلا يؤمّد. وما كنا نقول إلا المديّة).

(صرفه في : ٦٧٦٩).

इन जुम्ला अह्मदीय मज़क़ूरा में ज़िम्नी तौर पर हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र आया है। इसीलिये इन अह्मदीय को यहाँ दर्ज किया गया। बाब से यही वजह मुनासबत है। मज़ीद तफ़्सील किताबुत तफ़्सीर में आएगी। ईशा अल्लाह।

#### बाब 41 : हज़रत लुक्मान (अलै.) और सूरह

##### लुक्मान में अल्लाह तआला ने फ़र्माया,

बेशक दी थी हमने लुक्मान को हिक्मत या'नी ये कहा कि अल्लाह का शुक्र अदा कर आयत इन्नल्लाहा ला युहिबु कुल्ला मुख्तालिन फ़ख़ूर तक। ला तुमज़अीर या'नी अपना चेहरा न फेर।

#### 41- باب قول الله تعالى:

﴿وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ - إِلَى قَوْلِهِ - إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ﴾ [لقمان : ١٧-١٨].

﴿وَلَا تُصْغِرْ: الإغراض بالفؤجيه.

हज़रत लुक्मान (अलैहिस्सलाम) अपने ज़माने के एक दाना हकीम थे, कुछ रिवायात में है कि उन्होंने हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का ज़माना पाया और उनसे फ़ैज़ भी हासिल किया, जुम्हूर का क़ौल यही है कि यही एक दाना हकीम थे नबी न थे। कुछ लोगों ने उनको नबी कहा है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

3428. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में जुल्म की मिलावट नहीं की, नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) के मुहाबा ने अर्ज़ किया कि हममें ऐसा कौन होगा जिसने

٣٤٢٨- حدثنا أبو الوليد حدثنا شعبة

عن الأعمش عن إبراهيم عن علقمة عن

عبد الله قال: لما نزلت: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا

وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ [الأنعام :

٨٢] قال أصحاب النبي ﷺ: أينا لم

अपने ईमान में जुल्म नहीं किया होगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई, अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहरा। बेशक शिर्क ही जुल्मे अज़ीम है। (राजेअ : 32)

يَلَيْسَ إِيمَانُهُ بِظُلْمٍ؟ فَتَوَلَّى: ﴿لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ، إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ [لقمان:

[١٣]. [راجع: ٣٢]

ये रिवायत ऊपर गुज़र चुकी है। इस रिवायत में गो हज़रत लुक्मान (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र नहीं है मगर चूँकि उसके बाद वाली रिवायत में है और ये आयत हज़रत लुक्मान (अलैहिस्सलाम) ही का क़ौल है लिहाज़ा बाब की मुनासबत ज़ाहिर है।

3429. मुझसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनस ने ख़बर दी, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ जुल्म की मिलावट नहीं की, नाज़िल हुई तो मुसलमानों पर बड़ा शाक़ गुज़रा और उन्होंने अर्ज़ किया हममें कौन ऐसा हो सकता है जिसने अपने ईमान के साथ जुल्म की मिलावट न की होगी? आ'हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका ये मतलब नहीं, जुल्म से मुराद आयत में शिर्क है। क्या तुमने नहीं सुना कि हज़रत लुक्मान (अलै.) ने अपने बेटे से कहा था उसे नज़ीहत करते हुए कि, ऐ बेटे! अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क बड़ा ही जुल्म है। (राजेअ : 32)

٣٤٢٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا تَوَلَّى: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ لَّا يَظْلِمُ نَفْسَهُ؟ قَالَ: لَيْسَ ذَلِكَ، إِنَّمَا هُوَ الشِّرْكَ، أَلَمْ تَسْمَعُوا مَا قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ: ﴿يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾. [راجع: ٣٢]

## बाब 42 : और उनके सामने बस्ती वालों की मिशाल बयान कर, अल आयति

फ़अज़ज़ना के मा'नी में मुजाहिद ने कहा कि हमने उन्हें कुव्वत पहुँचाई, अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ताइरुकुम के मा'नी तुम्हारी मुस्रीबतें हैं।

सूरह यासीन की इन आयत में जिन पैगम्बरों का ज़िक्र है, ये हज़रत यह्या से पहले भेजे गये थे, उनका नाम योहन्ना और बोलिस था, तीसरे का नाम षमरून था। इमाम बुखारी (रह.) इस बाब में कोई हदीष न ला सके क्योंकि इस बारे में कोई हदीष उनकी शर्त के मुताबिक़ न मिली होगी। उन पैगम्बरों की तौहीद व तब्लीग़ और शहादत का तज़िक़रा सूरह यासीन में मुफ़स्सल मौजूद है। करिया से मुराद शहरे इंत़ाकिया है।

## बाब 43 : हज़रत ज़करिया (अलै.) का बयान

और अल्लाह तआला ने सूरह मरयम में फ़र्माया (ये) तेरे परवरदिगार के रहमत (फ़र्माने) का तज़िक़रा है अपने बन्दे ज़करिया पर जब उन्होंने अपने रब को आहिस्ता पुकारा, कहा ऐ परवरदिगार! मेरी

٤٢- بَابُ ٤٢ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ. الْآيَةُ (يس: ١٣) ﴿فَعَزَّزْنَاهُمْ بِطَائِفٍ مِّنْهُمْ﴾: مَضَائِبُكُمْ

٤٣- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿وَنَزَّلْنَا رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ عَبْدَهُ ذَكَرِيَّا، إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ يَدَّاءَ عَفِيًّا. قَالَ: رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْتًا - إِلَىٰ

हड्डियाँ कमजोरी हो गई हैं और सर में बालों की सफेदी फैल पड़ी है। आयत लम नज़ल लहू मिन कबिल समिय्या तक।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रज़िय्या, मरज़िय्या के मा'नी में इस्ते'माल हुआ है। अतिया बमा'नी अस्मिय्या है। अता यअतू से मुश्तक है। ज़करिया (अले.) बोले, ऐ परवरदिगार! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा? आयत प्रलाज़ा लयालिन सविय्या तक। (सविय्या बमा'नी) सहीहा है। फिर वो अपनी क्रौम के रूबरू हुज़ा में से बरआमद हुआ और इशारा किया कि अल्लाह की पाकी सुबह व शाम बयान किया करो। फ़अवहा बमा'नी फ़अशार है। ऐ यह्या! किताब को मज़बूत पकड़, आयत व यौमा युब्अबु हय्या तक। हफ़िया बमा'नी लतीफा। आक्रिया, मुअन्नअ और मुज़न्नर दोनों के लिये आता है।

इसाईली नबियों में ज़करिया का मुकाम बहुत बुलन्द है। हज़रत मरयम (अलेहिस्सलाम) की परवरिश उन ही की निगरानी में हुई थी। अल्लाह तआला ने बुढ़ापे में उनको बतौर मुअज़िज़ा हज़रत यह्या (अलेहिस्सलाम) जैसा फ़रज़न्दे रशीद (नेक बेटा) अता फ़र्माया, इन आयत में उन ही का ज़िक्र है। इन आयत के मुश्किल अल्फ़ाज़ की भी वज़ाहत यहाँ पर कर दी गई। तफ़्सील के लिये सूरह मरयम का मुतालआ कर लिया जाए।

3430. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे मालिक बिन सज़सज़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने शबे मेज़राज के बारे में बयान फ़र्माया कि फिर आप ऊपर चढ़े और दूसरे आसमान पर तशरीफ़ ले गए। फिर दरवाज़ा खोलने के लिये कहा। पूछा गया, कौन हैं? कहा कि जिब्रईल (अले.)। पूछा गया, आपके साथ कौन हैं? कहा कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा गया, क्या उन्हें लाने के लिये भेजा गया था? कहा कि जी हाँ। फिर जब मैं वहाँ पहुँचा तो ईसा और यह्या (अले.) वहाँ मौजूद थे। ये दोनों नबी आपस में ख़ालाज़ाद भाई हैं। जिब्रईल (अले.) ने बताया कि ये यह्या और ईसा (अले.) हैं। उन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया, दोनों ने जवाब दिया और कहा खुश आमदीद नेक भाई और नेक नबी। (राजेज़: 3207)

قوله - لَمْ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَيِّئًا  
[مریم : 3-7]. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : مَلَأَ  
يُقَالُ : مَوْضِعًا : مَوْضِعًا : مَوْضِعًا :  
عَصِيًا ، غَفَا يَغْتَو . قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ  
لِي غَلَامٌ - إِلَى قَوْلِهِ - فَلَا تَلَّالَ سَوَاءً  
وَيُقَالُ صَحِيحًا : فَالْخُرُجُ عَلَى قَوْمِهِ مِنْ  
الْمُخْرَابِ ، فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ أَنْ سَخُوا  
بُكْرَةً وَعَشِيًا . فَأَوْحَى : فَأَشَارَ . جَاءَ  
يَخِي خَلَّ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ - إِلَى قَوْلِهِ -  
وَيَوْمَ يُنْفُثُ حَيَاتُ . حَفِيَاءَ : لَطِيفًا .  
مُعَاقِرًا : الذِّكْرُ وَالْأُنثَى سَوَاءً .

3430. - حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا  
هَمْدَانٌ يَخِي حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ  
مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْقَةَ : ((أَنَّ نَبِيَّ  
اللَّهِ ﷺ حَمَلَتْهُ عَنْ نَيْلِهِ أُسْرِي بِهِ : ثُمَّ  
صَعِدَ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ . فَاسْتَفْتَحَ .  
قِيلَ مِنْ هَذَا؟ قَالَ : جِبْرَائِيلُ . قِيلَ : وَمَنْ  
مَعَكَ؟ قَالَ : مُحَمَّدٌ . قِيلَ : أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟  
قَالَ : نَعَمْ . فَلَمَّا حَلَصْتُ فَإِذَا يَخِي  
وَعِيسَى وَهُمَا ابْنَا خَالَتِي . قَالَ : هَذَا يَخِي  
وَعِيسَى . فَسَلَّمَ عَلَيْهِمَا ، فَسَلَّمْتُ ، فَرَدَّا ،  
ثُمَّ قَالَا : مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ  
[الصالح] - (راجع : 3207)

रिवायत में हज़रत यह्या (अले.) का ज़िक्र है यही बाब की वजह मुनासबत है। हज़रत ईसा (अले.) की वालिदा हज़रत मरयम

(अल्लै.) और हज़रत यह्या (अल्लै.) की वालिदा हज़रत ऐशाअ माँ जाई बहनें थीं जिनकी माँ का नाम हिना है। मरयम सुरयानी लफ़ज़ है जिसके मा'नी खादिमा के हैं। किरमानी व फ़तह वगैरह।

### बाब 44 : हज़रत ईसा (अल्लै.) और

### हज़रत मरयम (अल्लै.) का बयान

सूरह मरयम में अल्लाह तआला का इर्शाद, और किताब में मरयम का ज़िक्र कर जब वो अपने घरवालों से अलग होकर एक शर्की मकान में चली गई (और वो वक़्त याद करो) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! अल्लाह तुझको खुशख़बरी दे रहा है, अपनी तरफ़ एक कलिमा की, बेशक अल्लाह ने आदम और नूह और आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम जहाँ पर बरगुज़ीदा बनाया। आयत यरज़ुकु मय्यंशाउ बिगैरि हिसाब तक। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि आले इमरान से मुराद ईमानदार लोग हैं जो इमरान की औलाद में हों जैसे आले इब्राहीम और आले यसीन और आले मुहम्मद (ﷺ) से भी वही लोग मुराद हैं जो मोमिन हों। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं, अल्लाह ने फ़र्माया, हज़रत इब्राहीम (अल्लै.) के नज़दीक वाले वही लोग हैं जो उनकी राह पर चलते हैं। या'नी जो मोमिन मुवहिहद हैं। आल का लफ़ज़ असल में अहल था। आले यअकूब या'नी अहले यअकूब (ह को हमज़ा से बदल दिया) तज़गीर में फिर असल की तरफ़ ले जाते हैं तब अहील कहते हैं।

मकानन शरक़िया का मतलब ये मा'लूम होता है कि हज़रत मरयम हैकल (खानकाह) छोड़कर जहाँ उनकी परवरिश हुई अपने आबाई वतन नासिरा चली गई। ये यरूशलम के शिमाल मशरिफ़ (उत्तर-पूर्व) में वाकेअ है और बाशिनदगाने यरूशलम के लिये मशरिफ़ का हुक्म रखता है। इज़ील से भी उसकी तस्दीक़ होती है क्योंकि वो मामले का महल्ले वकूअ नासिरा ही बतलाते हैं। देखो किताब लूका।

3431. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा उन्होंने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि हर एक बनी आदम जब पैदा होता है तो पैदाइश के वक़्त शैतान उसे छूता है और बच्चा शैतान के छूने से ज़ोर से चीखता है। सिवाय मरयम और उनके बेटे ईसा (अल्लै.) के। फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि (उसकी वजह मरयम

### ६६ - باب قول الله تعالى:

«وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ اتَّخَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا [مریم : १६]۔ إِذْ قَالَتِ السَّالِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُشْرِكُ بِكَلِمَتِهِ الْإِنْعَامُ : १६۵]۔ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ - إِلَى قَوْلِهِ - يَرْزُقُ مِنْ نَحْنٍ بغير حَسَابٍ [آل عمران : ३३]۔ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : هَؤُلَاءِ عِمْرَانُ ه. الْمُؤْمِنُونَ مِنْ آلِ إِبْرَاهِيمَ وَآلِ عِمْرَانَ وَآلِ يَسِينَ وَآلِ مُحَمَّدٍ ﷺ. يَقُولُ : هَؤُلَاءِ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لِلَّذِينَ اتَّخَفَوْهُ [آل عمران : ६۸]۔ وَهُمْ الْمُؤْمِنُونَ. وَيُقَالُ : هَؤُلَاءِ يَغْتَفَبُونَ أَهْلُ يَغْتَفَبُونَ. لِإِذَا صَغُرُوا : ((آل)) ثُمَّ رَدُّهُ إِلَى الْأَصْلِ : قَالُوا : أَهْلُ

३६३१ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ قَالَ : قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَا مِنْ بَنِي آدَمَ مَوْلُودٌ إِلَّا يَمَسُّهُ الشَّيْطَانُ حِينَ يُولَدُ فَيَسْتَهْلِكُ صَارِخًا مِنْ مَسِّ



(अलै.) की वालिदा की ये दुआ है कि ऐ अल्लाह! मैं उसे (मरयम को) और उसकी औलाद को शैताने रजीम से तेरी पनाह में देती हूँ।

### बाब 45 : अल्लाह तआला ने फ़र्माया,

और (वो वक़्त याद कर) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझको बरगुजीदा किया है और पलीदी से पाक किया है और तुझको दुनिया जहाँ की औरतों के मुकाबले में बरगुजीदा किया। ऐ मरयम! अपने रख की इबादत करती रह और सज्दा करती रह और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रह, ये (वाक़ियात) ग़ैब की ख़बरों में से हैं जो मैं आप पर वहा कर रहा हूँ और आप उन लोगों के पास नहीं थे जब वो अपने क़लम डाल रहे थे कि उनमें से कौन मरयम को पा ले और आप न उस वक़्त उनके पास थे जब वो आपस में इख़ितालाफ़ कर रहे थे। यक्फ़लु यज़ुम्मु के मा'नी में बोलते हैं, या'नी मिला लेवे। कफ़ल्लहा या'नी ज़म्महा मिला लिया, (कुछ क़िरातों में) तख़फ़ीफ़ के साथ है। ये वो किफ़ालत है जो क़र्ज़ों वग़ैरह में की जाती है या'नी ज़मानत वो दूसरा मा'नी है।

3432. मुझसे अहमद बिन अबी रिजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़र ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से सुना, कहा कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि मरयम बन्ते इमरान (अपने ज़माने में) सबसे बेहतरीन ख़ातून थीं और इस उम्मत की सबसे बेहतरीन ख़ातून हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) हैं। (दीगर मक़ाम : 3815)

### बाब 46 : अल्लाह पाक का सूरह आले इमरान में फ़र्माया, जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम!

फ़इन्नमा यक्फ़लु लहू कुन फ़यकून तक। युबशिशरुकि और व युबशिशरुका (मज़ीद और मुजर्रद) दोनों के एक मा'नी हैं। वजीहा का मा'नी शरीफ़। इब्राहीम नख़्ई ने कहा। मसीह सिद्दीक़ को कहते हैं। मुजाहिद ने कहा कहला का मा'नी बुर्दबार। अकमहु

الشيطان. عبر مريم وابنها. ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ: «وَأَيُّ عَيْدِهَا بِكَ وَفَرِيَّتِهَا مِنْ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ». [آل عمران : 36].

45- «بَابُ» وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَأَكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ. يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ. ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ. وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ الْأَمْثِلَ عَلَيْهِمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ. وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ» [آل عمران 42] يَقَالُ «يَكْفُلُ» يَضُمُّ. كَفَلَهَا ضَمُّهَا مُحَقَّقَةٌ. لَيْسَ مِنْ كَفَالَةِ الدَّيُونِ وَشِبْهِهَا.

3432- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النُّضَرُ عَنْ جِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ جَعْفَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ عِمْرَانُ، وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ)).

(أُضْرَدِي : 3815).

46- «بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: «وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَأَكَةُ يَا مَرْيَمُ - إِلَى قَوْلِهِ - فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ» [آل عمران 45-48]. «يَشْرُكُ»: وَيَشْرُكُ وَاحِدًا. «وَحِينَهَا»: شَرِيفًا. وَقَالَ

जो दिन को देखे, पर रात को न देखे। ये मुजाहिद का कौल है।  
ओरों ने कहा अकमहू के म अनी मादर ज़ाद औंधे के हैं।

إِبْرَاهِيمُ: الْمَسِيحُ الصَّدِيقُ. وَقَالَ  
مُجَاهِدٌ: الْكَهْلُ الْحَلِيمُ. وَالْأَكْمَةُ مَنْ  
يُصْبِرُ بِالنَّهَارِ وَلَا يُصْبِرُ بِاللَّيْلِ. وَقَالَ  
غَيْرُهُ: مَنْ يُولَدُ أَعْمَى.

आयाते मज़क़रा में हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश का ज़िक्र है जो बग़ैर बाप के महज़ अल्लाह के हुक्म से पैदा हुए।  
जिन नामों-निहाद मुसलमानों ने हज़रत ईसा (अलै.) की इस हकीकत से इंकार किया है उनका कौल बातिल है। कुर्आन पाक  
में साफ़ मौजूद है, इन्न मसल ईसा इन्दल्लाहि कमसल आदम ख़लक़हु मिन तुराबिन धुम्म क़ाल लहु कुन फयकून  
(आले इमरान : 59) सदक़ल्लाहु तआला आमन्ना बिही व सहकना कौलुहु अल्मसीहु अस्सिदीक़ कालज़ब्बी मुरादु  
इब्नाहीम बिज़ालिक अन्नल्लाहु मसहहू फतहरहू मिनज़ुनूबि फहुव फईलुन बिमअना मफ़ज़लुन व युक़ालु  
सुम्मिय बिज़ालिक लिअन्नहू कान ला यम्सहु जा आहतिन इल्ला बरिअ व सुम्मियहज़्ज़ालु बिही लिअन्नहू  
यम्सहुल्अर्ज़ व क़ौल लि कौनिही मम्सुहुल्ऐन. (फतुहल बारी)

3433. हमसे आदम बिन अबी अथास ने बयान किया, उन्होंने  
कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरहने, उन्होंने  
कहा कि मैंने हम्दानी से सुना। वो हज़रत अबू मूसा अशअरी  
(रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया औरतों  
पर आइशा की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम ख़ानों पर प्रीति की।  
मदों में से तो बहुत से कामिल हो गुज़रे हैं लेकिन औरतों में मरयम  
बिन्ते इमरान और फ़िरअन की बीवी आसिया के सिवा और कोई  
कामिल पैदा नहीं हुई। (राजेअ : 3411)

٣٤٣٣- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ  
غُبَرِ بْنِ مَرْثَدَةَ قَالَ: سَمِعْتُ مَرْثَدَةَ  
الْهَمْدَانِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مُوسَى  
الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: «فَضَّلْتُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ  
كَفَضَّلْتُ الْفَرِيدَ عَلَى سَائِرِ الطُّعَامِ. كَمُلُ  
مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ  
إِلَّا مَرْثَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ وَآبِيَةُ امْرَأَةٍ  
فَرَعُونَ»». [راجع: ٣٤١١]

3434. और इब्ने वहाब ने बयान किया कि मुझे यूनस ने ख़बर दी,  
उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन  
मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने  
बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया  
कि ऊँट पर सवार होने वालियों (अरबी ख़वातीन) में सबसे  
बेहतर तीन कुनैशी ख़वातीन हैं। अपने बच्चे पर सबसे ज़्यादा मुहब्बत  
व शफ़क़त करने वाली और अपने शौहर के माल व अस्बाब की  
सबसे बेहतर निगरां व मुहाफ़िज़। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ये  
हदीष बयान करने के बाद कहते थे कि मरयम बिन्ते इमरान ऊँट  
पर कभी सवार नहीं हुई थीं। यूनस के साथ इस हदीष को जुहरी  
के भतीजे और इस्हाक़ कल्बी ने भी जुहरी से रिवायत किया है।

٣٤٣٤- وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ  
عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ  
الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «نِسَاءُ قُرَيْشٍ خَيْرُ  
نِسَاءٍ رَكِبْنَ الْإِبِلَ: أَخْنَاهُ عَلَى طِفْلِ،  
وَأَرْغَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ»». يَقُولُ  
أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى إِثْرِ ذَلِكَ:  
وَلَمْ تَرَكَبْ مَرْثَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ بَعِيرًا قَطُّ.  
تَابِعَهُ ابْنُ أَحِبِّي الرُّهْرِيُّ وَابْنُ الْحَكَّامِ

(दीगर मक़ाम : 5082, 5365)

### बाब 47 : अल्लाह तआला का सूरह मरयम में फ़र्मांना, ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू (सख़ती और तशहूद) न करो

और अल्लाह तआला की निस्बत वही बात कहो जो सच है। मसीह ईसा बिन मरयम (अलै.) तो बस अल्लाह के एक पैग़म्बर ही हैं और उसका एक कलिमा जिसे अल्लाह ने मरयम तक पहुँचा दिया और एक रूह है उसकी तरफ़ से। पस अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और ये न कहो कि अल्लाह तीन हैं, उससे बाज़ आ जाओ। तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है। अल्लाह तो बस एक ही मा'बूद है, वो पाक है उससे कि उसके बेटा हो। उसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह ही का कारसाज़ होना काफ़ी है। अबू इब्नूद ने बयान किया कि कलिमतुहू से मुराद अल्लाह तआला का ये फ़र्मांना कि हो जा और वो हो गया और दूसरों ने कहा कि वरूहुम मिन्हू से मुराद ये है कि अल्लाह ने उन्हें ज़िन्दा किया और रूह डाली और ये न कहो कि अल्लाह तीन हैं।

नसारा के अक़ीद-ए-तख़ल्लियत (ट्रिनिटी) की तर्दीद है जो रूहुल कुदुस और मरयम और ईसा तीनों को मिलाकर एक अल्लाह के क़ाइल हैं। ये ऐसा बातिल अक़ीदा है जिस पर अक़ल और नक़ल से सहीह दलील पेश नहीं की जा सकती मगर ईसाई दुनिया आज तक उस फ़ासिद अक़ीदे पर जमी हुई है। आयत बला तकूलू षलाम़तुन में इसी बातिल अक़ीदे का ज़िक्र है।

3435. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमैर बिन हानी ने बयान किया, कहा कि मुझसे जुनादा बिन अबी उमय्या ने बयान किया और उनसे इब्नादा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, वो वहदहु ला शरीक है और ये है कि मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और रसूल हैं और ये कि ईसा (अलै.) उसके बन्दे और रसूल हैं और उसका कलिमा हैं, जिसे पहुँचा दिया था अल्लाह ने मरयम तक और एक रूह है उसकी तरफ़ से और ये कि ज़न्नत हक़ है और दो ज़ख़ हक़ है तो उसने जो भी अमल किया होगा (आख़िर) अल्लाह तआला उसे ज़न्नत में दाख़िल करेगा। वलीद ने बयान किया कि मुझसे इब्ने जाबिर ने बयान किया, उनसे इमैर ने और जुनादा ने और अपनी रिवायत में ये ज़्यादा किया (ऐसा

عَنِ الزُّهْرِيِّ. [طَرَفَاهُ: 5365, 5082].  
٤٧- بَابُ قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ، إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَزَوَّجَ مِنْهُ، فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ انْتَهَى خَيْرًا لَكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ، لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ، وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا﴾ [النساء: 171].  
وَقَالَ أَبُو عُبَيْدٍ: ﴿كَلِمَتُهُ﴾ كُنْ فَكَانَ.  
وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿وَزَوَّجَ مِنْهُ﴾: أَحْيَاهُ فَجَعَلَهُ زَوْجًا ﴿وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةً﴾.

٣٤٣٥- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْقَعْنَبِيِّ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ عَنْ الْأَوْزَاعِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي غُمَيْرُ بْنُ هَانِيَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي جُنَادَةُ بْنُ أَبِي أُمَيَّةٍ عَنْ جُنَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَزَوَّجَ مِنْهُ، وَالْحَقُّ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ، أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ عَلَى مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ)). قَالَ الْوَلِيدُ: حَدَّثَنِي ابْنُ جَابِرٍ عَنْ غُمَيْرٍ عَنْ

शख्स) जन्नत के आठ दरवाजों में से जिससे चाहे (दाखिल होगा)।

### बाब 48 : सूरह मरयम में अल्लाह तआला ने फर्माया (उस) किताब में मरयम का जिक्र कर जब वो अपने घरवालों से अलग होकर

एक पूरब रुख मकान में चली गई। लफ़्ज़ अम्बजत नबज़ा से निकला है जैसे हज़रत यूनुस के क़िस्से में फ़र्माया नबज़ाहू या'नी मैंने उनको डाल दिया। शरफ़िया पूरब रुख (या'नी मस्जिद से या उनके घर से पूरब की तरफ़) फ़ा जाउहा के मा'नी उसको लाचार और बेकरार कर दिया। तसाक़्त गिरेगा। क़ज़िया दूर। फ़रिया बड़ा या बुरा। नसिय्या नाचीज़। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ऐसा ही कहा। दूसरों ने कहा नसी कहते हैं हकीर चीज़ को (ये सदी से मन्कूल है) अबू वाइल ने कहा कि मरयम ये समझी कि परहेज़गार वही होता है जो अक़्लमन्द होता है। जब उन्होंने कहा (जिब्रईल अलै. को एक जवान मर्द की शक्ल में देखकर) अगर तू परहेज़गार है अल्लाह से डरता है। वकीअ ने इस्राईल से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्हाक़ से, उन्होंने बराअ बिन आज़िब से सरिय्या सुरयानी जुबान में छोटी नहर को कहते हैं।

3436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गोद में तीन बच्चों के सिवा और किसी ने बात नहीं की। अब्बल ईसा (अलै.) (दूसरे का वाक़िया ये है कि) बनी इस्राईल में एक बुजुर्ग थे, नाम जुरैज था। वो नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनकी माँ ने उन्हें पुकारा। उन्होंने (अपने दिल में) कहा कि मैं वालिदा का जवाब दूँ या नमाज़ पढ़ता रहूँ? उस पर उनकी वालिदा ने (गुस्सा होकर) बद दुआ की, ऐ अल्लाह! उस व़क्त तक उसे मौत न आए जब तक ये ज़ानिया औरतों का मुँह न देख ले। जुरैज अपने इबादतख़ाने में रहा करते थे। एक मर्तबा उनके सामने एक फ़ाहिशा औरत आई और उनसे बदकारी चाही लेकिन उन्होंने (उसकी ख़्वाहिश पूरी

جَنَّةٍ وَزَادَ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ أَيُّهَا شَاءَ.

٤٨- باب «وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذْ أَنْبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا» [مريم : ١٦]. فَبَدَّلَهُ : الْقَيْنَةُ : اغْتَرَلَتْ شَرَقِيًّا : مِمَّا : الشَّرْقِ. «فَلَمَّا جَاءَهَا» : أَفَلَتْ مِنْ جَنَّةٍ. وَيُقَالُ : أَلْجَأَهَا اضْطِرَّاهَا. «تَسَاقَطَ» : تَسَقَطَ. «فَصِيًّا» : قَامِيًّا. «فَلَمَّا» : عَظِيمًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : «نَسِيًّا» : لَمْ أَكُنْ شَيْئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ النَّسِيُّ : الْخَفِيرُ. وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ : عَلِمْتُ مَرْيَمَ أَنَّ الْفَقِي ذُو نَهْجَةٍ حِينَ قَالَتْ : «إِنْ كُنْتُ نَقِيًّا». وَقَالَ وَكَيْعٌ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الزَّهْرَاءِ «سَرِيًّا» نَهْرٌ صَغِيرٌ بِالسُّرْيَانِيَةِ.

٣٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَارِثٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَمْ يَتَكَلَّمْ فِي الْمَهْدِ إِلَّا ثَلَاثَةٌ: عِيسَى. وَكَانَ فِي نَبِيِّ إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ جُرَيْجٌ كَانَ يُصَلِّي، جَاءَتْهُ أُمُّهُ فَدَعَتْهُ، فَقَالَ: أَجَبْتَهَا أَوْ أَصَلْتُ؟ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لَا تُعْبَثْ حَتَّى تُرَبِّيهَ وَجْهَ الْمُؤْمِسَاتِ، وَكَانَ جُرَيْجٌ فِي صَوْمَعِيهِ، فَتَعَرَّضَتْ لَهُ امْرَأَةٌ وَكَلَّمَتْهُ قَائِي، قَالَتْ رَاغِبًا فَأَمَكَّتْهُ مِنْ نَفْسِهَا،

करने से) इंकार किया। फिर एक चरवाहे के पास आई और उसे अपने ऊपर क़ाबू दे दिया। उससे एक बच्चा पैदा हुआ और उसने उन पर ये तोहमत धरी कि ये जुरैज का बच्चा है। उनकी क़ौम के लोग आए और उनका इबादतख़ाना तोड़ दिया, उन्हें नीचे उतार कर लाए और उन्हें गालियाँ दीं। फिर उन्होंने जुजू करके नमाज़ पढ़ी, उसके बाद बच्चे के पास आए और उससे पूछा कि तेरा बाप कौन है? बच्चा (अल्लाह तआला के हुक्म से) बोल पड़ा कि चरवाहा है उस पर (उनकी क़ौम शर्मिन्दा हुई और) कहा कि हम आपका इबादतख़ाना सोने का बनाएँगे। लेकिन उन्होंने कहा हरिज़ नहीं, मिट्टी ही का बनेगा (तीसरा वाक़िया) और बनी इस्राईल की औरत थी, अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। क़रीब से एक सवार निहायत इज़्ज़त वाला और ख़ुशपोश गुज़रा, उस औरत ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को भी उसी जैसा बना दे लेकिन बच्चा (अल्लाह के हुक्म से) बोल पड़ा कि ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा न बनाना। फिर उसके सीने से लगकर दूध पीने लगा। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जैसे मैं इस वक़्त भी देख रहा हूँ कि नबी करीम (ﷺ) अपनी उँगली चूस रहे हैं (बच्चे के दूध पीने लगने की कैफ़ियत बतलाते वक़्त) फिर एक बांदी उसके क़रीब से ले जाई गई (जिसे उसके मालिक मार रहे थे) तो उस औरत ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को उस जैसा न बनाना। बच्चे ने फिर उसका पिस्तान छोड़ दिया और कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे उसी जैसा बना दे। उस औरत ने पूछा। ऐसा तू क्यों कह रहा है? बच्चे ने कहा कि वो सवार ज़ालिमों में से एक ज़ालिम शाइख़ था और उस बांदी से लोग कह रहे थे कि तुमने चोरी की और ज़िना किया हालाँकि उसने कुछ भी नहीं किया था। (राजेअ: 1206)

वो पाकदामन अल्लाह की नेक बन्दी थी। उन तीनों बच्चों के कलाम करने का ता'ल्लुक सिर्फ़ बनी इस्राईल से है। उनके अलावा कुछ दूसरे बच्चों ने भी बचपन में कलाम किया है।

3437. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने (दूसरी सनद) मुझसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा

فَوَلَدَتْ غُلَامًا، فَقَالَتْ: مِنْ جُرَيْجٍ، فَأَتَوْهُ فَكَسَرُوا صَوْمِعَتَهُ وَأَزَلُّوهُ وَسَبُّوهُ، فَتَوَضَّأَ وَصَلَّى، ثُمَّ أَتَى الْغُلَامَ فَقَالَ: مَنْ أَبُوكَ يَا غُلَامُ؟ قَالَ: الرَّاعِي، قَالُوا: نَبِيُّ صَوْمِعَتِكَ مِنْ ذَهَبٍ؟ قَالَ: لَا، إِلَّا مِنْ طِينٍ. وَكَانَتْ امْرَأَةٌ تَرْضِعُ ابْنًا لَهَا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ، فَمَرَّ بِهَا رَجُلٌ رَاكِبٌ ذُو شَارَةِ، فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ اجْعَلْ ابْنِي مِثْلَهُ، فَتَرَكَ نَدْبَهَا وَأَقْبَلَ عَلَى الرَّاكِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلَنِي مِثْلَهُ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى نَدْبِهَا بِمَضَّةٍ، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمُصُّ إصْبَعَهُ، ثُمَّ مَرَّ بِأَمَةٍ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْ ابْنِي مِثْلَ هَذِهِ. فَتَرَكَ نَدْبَهَا فَقَالَ: اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: لِمَ ذَلِكَ؟ فَقَالَ: الرَّاكِبُ جَبَّارٌ مِنَ الْجَبَابِرَةِ، وَهَذِهِ الْأَمَةُ يَقُولُونَ: سَرَقَتْ زَيْنَتِي وَكَمْ تَفْعَلُ.))

[راجع: ١٢٠٦]

٣٤٣٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ ح. وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ

मुझको सईद बिन मुसय्यिब ने खबर दी और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस रात मेरी मेहराज हुई, मैंने ईसा (अलै.) से मुलाक़ात की थी। राबी ने बयान किया कि फिर औहज़रत (ﷺ) ने उनका हुलिया बयान किया कि वो.... मेरा ख़याल है कि मअमर ने कहा.... दराज़ क़ामत और सीधे बालों वाले थे जैसे क़बीला शनूआ के लोग होते हैं। आपने बयान किया कि मैंने ईसा (अलै.) से भी मुलाक़ात की। औहज़रत (ﷺ) ने उनका भी हुलिया बयान फ़र्माया कि दरम्याना क़द और सुख़ व सफ़ेद थे, जैसे अभी अभी गुस्लख़ाने से बाहर आए हों और मैंने इब्राहीम (अलै.) से भी मुलाक़ात की थी और मैं उनकी औलाद में उनसे सबसे ज़्यादा मुशाबेह हूँ। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे पास दो बर्तन लाए गए, एक में दूध था और दूसरे में शराब। मुझसे कहा गया कि जो आपका जी चाहे ले लो। मैंने दूध का बर्तन ले लिया और पी लिया। उस पर मुझसे कहा गया कि फ़ितरत की तरफ़ आपने राह पाली, या फ़ितरत को आपने पाला। उसके बजाय अगर आप शराब का बर्तन लेते तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती।

(राजेअ: 3394)

3438. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमको इम्राईल ने ख़बर दी, कहा हमको इब्मान बिन मुगीरह ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने ईसा, मूसा, और इब्राहीम (अलै.) को देखा। ईसा (अलै.) निहायत सुख़ घुंघराले बाल वाले और चौड़े सीने वाले थे और मूसा (अलै.) गन्दुमी रंग, लम्बा क़द और सीधे बालों वाले थे जैसे कोई क़बीला जुत का आदमी हो।

जुत सूडान का एक क़बीला या यहूद, जहाँ के लोग दुबले पतले लम्बे क़द के होते हैं। जुत से जाट का लफ़्ज़ बना है जो हिन्दुस्तान की एक मशहूर क्रोम है जो हिन्दू और मुसलमान दोनों मज़ाहिब से ताल्लुक रखते हैं। रिवायत में अन मुजाहिदिन अन इब्नि उमर नाकिलीन का सह है असल में सहीह ये है अन मुजाहिद अन इब्ने अब्बास।

3439. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ज़मरह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह

بن الزُّهري قَالَ: أَخْبَرَنِي مُعَيْدُ بْنُ لُمَيْسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: لَيْلَةَ أُسْرِي: لَقِيتُ مُوسَى، قَالَ: قَتَعَتْهُ فَإِذَا رَجُلٌ خَسِيئَةٌ قَالَ مُضْطَرِبٌ رَجُلٌ الرَّأْسِ كَأَنَّهُ مِنْ رَجَالِ شَوْوَةٍ. قَالَ: وَلَقِيتُ عِيسَى، لَعَنَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: رَبْعَةٌ أَحْمَرٌ، كَأَنَّمَا حَرَجَ مِنْ دِيْمَاسٍ - يَعْنِي الْخَمَامَ - رَزَايْتُ إِبْرَاهِيمَ وَأَنَا أَشْبَهُ وَلَدِهِ بِهِ. قَالَ: وَأَتَيْتُ يُونَانَ عِنْدَ مَا أَخَذَهُمَا لَبَنٌ وَالْآخَرُ فِيهِ خَمْرٌ، فَقِيلَ لِي: خَذْ أَيهُمَا شِئْتَ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَشَرَبْتُهُ، فَقِيلَ لِي: هَذِهِ الْفِطْرَةُ - أَوْ أَصَبْتَ الْفِطْرَةَ - أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ)).

(راجع: 3394)

٣٤٣٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ أَخْبَرَنَا غُثَمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ عِيسَى وَمُوسَى وَإِبْرَاهِيمَ، فَأَمَّا عِيسَى فَأَخْمَرٌ جَفَدٌ غَرِيضُ الصَّنْبَرِ، وَأَمَّا مُوسَى فَأَدَمٌ حَسْبُهُ سَبْطُ كَنْةٍ مِنْ رَجَالِ الرُّطْبِ)).

٣٤٣٩ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَبُو صُمْرَةَ حَدَّثَنَا مُوسَى عَنْ نَافِعٍ

(रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन लोगों के सामने दज्जाल का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि उसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला काना नहीं है, लेकिन दज्जाल दाहिनी आँख से काना होगा, उसकी आँख उठे हुए अंगूर की तरह होगी। (राजेअ: 3057)

3440. और मैंने रात का'बा के पास ख़्वाब में एक गन्दुमी रंग के आदमी को देखा जो गन्दुमी रंग के आदमियों में शक्ल के ए'तिबार से सबसे ज़्यादा हसीन व जमील था। उसके सर के बाल शानों तक लटक रहे थे, सर से पानी टपक रहा था और दोनों हाथ दो आदमियों के शानों पर रखे हुए वो बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे थे। मैंने पूछा कि ये कौन बुजुर्ग हैं? तो फ़रिश्तों ने बताया कि ये मसीह इब्ने मरयम हैं। उसके बाद मैंने एक शख्स को देखा, सख्त और मुड़े हुए बालों वाला जो दाहिनी आँख से काना था। उसे मैंने इब्ने क्रतन से सबसे ज़्यादा शक्ल में मिलता हुआ पाया, वो भी एक शख्स के शानों पर अपने दोनों हाथ रखे हुए बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था। मैंने पूछा, ये कौन है? फ़रिश्तों ने बताया कि ये दज्जाल है। इस रिवायत की मुताबअत अब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से की है। (दीगर मक़ाम: 3441, 5902, 6999)

3441. हमसे अहमद बिन मुहम्मद मक्की ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्राहीम बिन सअद से सुना, कहा कि मुझसे जुस्री ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हर्गिज़ नहीं। अल्लाह की क़सम! नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत ईसा के बारे में ये नहीं फ़र्माया था कि वो सुख़्शे बल्कि आपने ये फ़र्माया था कि मैंने ख़्वाब में एक मर्तबा बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए अपने को देखा, उस वक़्त मुझे एक साहब नज़र आए जो गन्दुमी रंग लटके हुए बाल वाले थे, दो आदमियों के दरम्यान उनका सहारा लिये हुए और सर से पानी साफ़ कर रहे थे। मैंने पूछा कि आप कौन हैं? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि आप इब्ने मरयम (अलै.) हैं। इस पर मैंने उन्हें ग़ौर से देखा तो मुझे एक और शख्स

قال عبد الله: ذكر النبي ﷺ يوماً بين ظهري الناس المسيح الدجال فقال: ((إن الله ليس بأغور، ألا إن المسيح الدجال أغور العين اليمنى، كأن عينه عينة طائية)). [راجع: ٣٠٥٧]

٣٤٤٠- وأراني الليلة عند الكعبة في المنام، فإذا رجل آدم كأحسن ما يرى من آدم الرجال، تضرب لمة بين منكبيه، رجل الشعر يقطر رأسه ماء، واضعاً يديه على منكبي رجلين وهو يطوف بالبيت. فقلت: من هذا؟ فقالوا: هذا المسيح ابن مريم. ثم رأيت رجلاً ورأاه جعداً قططاً أغور عين اليمنى كأنه من رأيت باني فطن، واضعاً يديه على منكبي رجل يطوف بالبيت، فقلت: من هذا؟ قالوا: المسيح الدجال. تابعه عبيد الله عن نافع.

[أطرافه في: ٣٤٤١، ٥٩٠٢، ٦٩٩٩]

٣٤٤١- حدثنا أحمد بن محمد المنكي قال: سمعت إبراهيم بن سعد قال: حدثني الزهري عن سالم عن أبيه قال: لا والله، ما قال النبي صلى الله عليه وسلم ليعسى أحمر، ولكن قال: ((بينما أنا قائم أطوف بالكعبة، فإذا رجل آدم سبط الشعر يهادي بين رجلين يظف رأسه ماء - أو يهراق رأسه ماء - فقلت: من هذا؟ قالوا: ابن مريم.

भी दिखाई दिया जो सुर्ख, मोटा, सर के बाल मुड़े हुए और दाहिनी आँख से काना था, उसकी आँख ऐसी दिखाई देती थी जैसे उठा हुआ अंगूर हो, मैंने पूछा कि ये कौन है? तो फ़रिश्तों ने बताया कि ये दज्जाल है। उससे शक्स व मूरत में इन्ने क़तन बहुत ज़्यादा मुशाबेह था। जुहरी ने कहा कि ये क़बीला ख़ुजाआ का एक शख्स था जो जाहिलियत के ज़माने में मर गया था। (राजेअ: 3440)

فَدَمَبْتُ النَّفْثَ إِذَا رَجُلٌ أَحْمَرُ جَسِيمٌ خَفَدَ الرَّأْسِ أَغْوَزَ عَيْنَهُ الْيَمْنَى كَأَنَّ عَيْنَهُ عِبْنَةَ طَافِيَةٍ. قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: هَذَا الدَّجَالُ. وَأَقْرَبُ النَّاسِ بِهَئِذَا ابْنُ قَطْنٍ. قَالَ الزُّهْرِيُّ: رَجُلٌ مِنْ خَزَاةٍ خَلَلَ فِي لَحَاظِهِ).

[راجع: ٣٤٤٠]

**तशरीह:** जिस रिवायत में हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की निस्बत ज़अद का लफ़्ज़ आया है तो उसके मा'नी घुँघराले बाल वाले नहीं हैं, वरना ये हदीष उसके मुखालिफ़ होगी। इसीलिये हमने ज़अद के मा'नी इस हदीष में गठे हुए जिस्म के किये हैं और मुताबक़त इस तरह भी हो सकती है कि ख़फ़ी घुँघराले बाल तेल डालने या पानी से भिगोने या बातचीत करने से सीधे हो जाते हैं। (वहीदी)

3442. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें अबू सलमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि मैं इब्ने मरयम (अलै.) से दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा करीब हूँ, अंबिया अलाती भाइयों की तरह हैं और मेरे और ईसा (अलै.) के दरम्यान कोई नबी नहीं है। (दीगर मक़ाम: 3443)

٣٤٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلْمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِابْنِ مَرْيَمَ، وَالْأَنْبِيَاءِ أَوْلَادُ عَلَاتٍ لَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ نَبِيٌّ)). [طرفه في: ٣٤٤٣].

**तशरीह:** आप (ﷺ) भी पैग़म्बर वो भी पैग़म्बर, आपके और उनके बीच में दूसरा कोई पैग़म्बर नहीं है। खुद हज़रत ईसा (अलै.) ने इंजील में आपकी बशारत दी कि मेरे बाद तसल्ली देने वाला आया और वो तुमको बहुत सी बातें बतलाएगा जो मैंने नहीं बतलाई क्योंकि वो भी वहीं से इल्म हासिल करेगा जहाँ से मैं हासिल करता हूँ। एक इंजील में साफ़ आँ हज़रत (ﷺ) का नाम मज़कूर है लेकिन नज़ारा ने उसको छुपा डाला है। इस शारत का कोई ठिकाना है। कहते हैं कि फ़ार क़लीत के मा'नी भी सराहा हुआ है या'नी मुहम्मद (ﷺ)।

3443. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिलाल बिन अली ने बयान किया, उनसे अब्दुलहिमान बिन अबी अमर ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं ईसा बिन मरयम (अलै.) से और लोगों की बनिस्बत ज़्यादा करीब हूँ, दुनिया में भी और आखिरत में भी और अंबिया (अलै.) अलाती भाइयों (की तरह) हैं। उनके मसाइल में अगरचे इख़ितलाफ़ है लेकिन दीन सबका एक ही है। और इब्राहीम बिन तह्मन ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक्बाने,

٣٤٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا هِلَالُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَالْأَنْبِيَاءُ إِخْوَةٌ لِعَلَاتٍ أَمْهَاتُهُمْ شَتَّى وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ)). وَفِي إِبْرَاهِيمَ بْنِ طَاهِمَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ



उनसे सप्रवान बिन सुलैम ने, उनसे अत्ता बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। (राजेअ : 3443)

غَفَبَهُ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سَلِيمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. [راجع: ٣٤٤٣]

अलाती भाई वो जिनका बाप एक हो, माँ जुदा जुदा हों। इसी तरह तमाम अंबिया का दीन एक है और फ़ुरूई मसाइल जुदा जुदा हैं।

3444. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने एक शख्स को चोरी करते हुए देखा फिर उससे दरयाफ़्त फ़र्माया तूने चोरी की है? उसने कहा कि हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं। हज़रत ईसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मेरी आँखों को धोखा हुआ।

٣٤٤٤- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَى نَسِي ابْنِ مَرْثَمَ رَجُلًا يَسْرِقُ، فَقَالَ لَهُ: أَسْرَقْتَ؟ قَالَ: كَلَّا وَاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ. فَقَالَ عَيْسَى: آمَنْتُ بِاللَّهِ، وَكَذَّبْتَ عَيْسَى.))

**तशरीह :** या'नी मोमिन झूठी क़सम नहीं खा सकता जब उसने क़सम खा ली तो मा'लूम हुआ कि वो सच्चा है। आँख से ग़लती मुम्किन है मज़लन उसके जैसा कोई दूसरा शख्स हो। या दरहकीक़त उसका फ़ेअल चोरी न हो। उस माल में उसका कोई हक़ मुतअय्यन हो। बहुत से एहतिमाल हो सकते हैं। कुछ ने कहा ऐसा कहने से हज़रत ईसा की मुराद ये थी कि मोमिन को मोमिन की क़सम पर ऐसा भरोसा होना चाहिये जैसे आँख से देखने पर बल्कि इससे ज़्यादा। कुछ ने ये कहा मतलब ये था कि क़ाज़ी को अपने इल्म और मुशाहिदे पर हुक्म देना दुरुस्त नहीं जब तक बाकायदा जुर्म के लिये शुबूत मुहय्या न हो जाए। (वहीदी)

3445. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुस्री से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि.) को मिय़बर पर ये कहते सुना था कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, मुझे मेरे मर्तबे से ज़्यादा न बढ़ाओ जैसे ईसा इब्ने मरयम (अलै.) को नज़ारा ने उनके मर्तबे से ज़्यादा बढ़ा दिया है। मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिये यही कहा करो (मेरे बारे में) कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। (राजेअ : 2462)

٣٤٤٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: عَلَى الْمُجْتَرِمِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَبَ النَّصَارَى ابْنَ مَرْثَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا: عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ.)) [راجع: ٢٤٦٢]

**तशरीह :** अल्लाह का गुलाम, अल्लाह के हबीब, अल्लाह के ख़लील, अशरफ़ुल अंबिया आपको ता'रीफ़ की हद यही है। जब कुआन में आपको अल्लाह का बन्दा फ़र्माया ये आयत उतरी, लम्मा क़ाम अब्दुल्लाहि (अल ज़िन्न : 19) तो आप निहायत ही खुश हुए अल्लाह की उबूदियते ख़ालिसा बहुत बड़ा मर्तबा है। ये जाहिल क्या जानें। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की नज़द यही समझ रखी है कि आपको अल्लाह बना दें या अल्लाह से भी एक दर्जा आगे चढ़ा दें। कबुरत कलिमतन तख़रूजु मिन अफ़्वाहिहिम. (वहीदी)

3446. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको साँ लेह बिन हथि ने ख़बर दी कि ख़ुरासान के एक शख्स ने शअबी से पूछा तो उन्होंने बयान किया कि मुझे अबू बुर्दा ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान किया, अगर कोई शख्स अपनी लौण्डी को अच्छी तरह अदब सिखलाए और पूरे तौर पर उसे दीन की ता'लीम दे। फिर उसे आज़ाद करके उससे निकाह कर ले तो उसे दो गुना प्रवाब मिलता है और वो शख्स जो पहले हज़रत ईसा (अलै.) पर ईमान रखता था, फिर मुझ पर ईमान लाया तो उसे भी दो गुना प्रवाब मिलता है और वो गुलाम जो अपने रब का भी डर रखता है और अपने आज़ा की भी इताअत करता है तो उसे भी दो गुना प्रवाब मिलता है। (राजेअ: 97)

**तशरीह:** ख़ुरासान के नामा'लूम शख्स ने शअबी से कहा कि लोग यूँ कहते हैं कि अगर आदमी उम्मे वलद को आज़ाद करके फिर उससे निकाह करे तो ऐसा है जैसे अपनी कुर्बानी के जानवर पर सवार हुआ, तो इमाम शअबी ने ये बयान किया जो आगे मज़कूर है।

3447. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुगीरह बिन नोअमान ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (फ़ायामत के दिन) तुम लोग नंगे पाँव, नंगे बदन और बग़ैर ख़त्ता के उठाए जाओगे। फिर आपने इस आयत की तिलावत की, जिस तरह मैंने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया था इसी तरह मैं दोबारा लौटाऊँगा, ये मेरी जानिब से वा'दा है और बेशक मैं उसे पूरा करने वाला हूँ, फिर सबसे पहले हज़रत इब्राहीम (अलै.) को कपड़ा पहनाया जाएगा। फिर मेरे अम्हाब को दाई (जन्नत की) तरफ़ ले जाया जाएगा। लेकिन कुछ को बाई (जहन्नम की) तरफ़ ले जाया जाएगा। मैं कहूँगा कि ये तो मेरे अम्हाब हैं लेकिन मुझे बताया जाएगा कि जब आप उनसे जुदा हुए तो उसी वक़्त उन्होंने इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया था। मैं उस वक़्त वही कहूँगा जो अब्दुस्सालेह (नेक बन्दा) ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने कहा था कि जब तक मैं उनमें मौजूद था उनकी निगरानी करता रहा लेकिन जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका निगाहबान है और तू हर चीज़ पर निगाहबान है। आयत अलअज़ीज़ुल हकीम तक मुहम्मद

۳۴۴۶- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ أَخْبَرَنَا صَالِحُ بْنُ خَمْرٍ أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ خُرَاسَانَ قَالَ لِلشَّعْبِيِّ: فَقَالَ الشَّعْبِيُّ أَخْبَرَنِي أَبُو بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا أَذَبَ الرَّجُلُ أَمَتَهُ فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا، وَعَلَّمَهَا فَأَحْسَنَ تَعْلِيمَهَا، ثُمَّ أَغْتَقَهَا فَزَوَّجَهَا كَانَ لَهُ أَجْرَانِ، وَإِذَا آمَنَ بَعِثَى ثُمَّ آمَنَ بِي فَلَهُ أَجْرَانِ، وَالْعَبْدُ إِذَا اتَّقَى رَبَّهُ وَأَطَاعَ مَوْلَاهُ فَلَهُ أَجْرَانِ)). (راجع: ۹۷)

۳۴۴۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْمُغْبِرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((تُخْشَرُونَ خِفَةَ غُرَافَةٍ غُرَافَةٍ، ثُمَّ قُرَأَ هَؤُلَاءِ بِأَنَّا أَوَّلُ خَلْقٍ نُعْبَدُهُ، وَغَدَا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَأَعْلَيْنَ، فَأَوَّلُ مَنْ يُكْتَسَى إِبْرَاهِيمَ، ثُمَّ يُؤْخَذُ بِرِجَالِ بْنِ أَحْمَسَ، ذَاتِ الْيَسِينِ وَذَاتِ الشَّمَالِ، فَأَقُولُ أَحْمَسَ، فَيَقَالُ: إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَغْصَانِهِمْ مِنْذُ فَارَقْتَهُمْ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ: وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ، فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ، وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ. إِلَى قَوْلِهِ

बिन यूसुफ ने बयान किया अबू अब्दुल्लाह से रिवायत है और उनसे कुबैसा ने बयान किया कि ये वो मुर्तदीन हैं जिन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के अहदे ख़िलाफ़त में कुफ़्र इख़्तियार किया था, और जिनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने जंग की थी। (राजेज़: 3349)

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ  
الْمُرَبِّي: ذُكِرَ عِنْدَ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ عَنْ  
قَبِيصَةَ قَالَ: ((هُمْ الْمُرْتَدُّونَ الَّذِينَ  
ارْتَدُّوا عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ، فَقَاتَلَهُمْ أَبُو  
بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ)). [راجع: ٣٣٤٩]

और वो अहले बिदअत भी धुत्कार दिये जाएँगे जिन्होंने किस्म किस्म की बिदआत से इस्लाम को मस्ख कर डाला था जैसा कि दूसरी रिवायत में है कि उनको हौज़े कौषर से रोक दिया जाएगा। खुद मा'लूम होने पर आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माएँगे, सुहक़न लिमन गय्यर बअदी दीनन उनके लिये दूरी हो जिन्होंने मेरे बाद मेरे दीन को बदल डाला। इन तमाम बयान की गई अहदादीष में किसी न किसी तरह से हज़रत ईसा (अलै.) का ज़िक्र आया है। इसलिये उनको यहाँ लाया गया और यही बाब से वजहे मुनासबत है।

#### बाब 49 : हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) का आसमान से उतरना

3448. हमसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको यअक़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा मुअसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे झालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्होंने ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़स्म जिसके हाथ में मेरी जान है, वो ज़माना करीब है कि ईसा बिन मरयम (अलै.) तुम्हारे दरम्यान एक आदिल हाकिम की हैथियत से नाज़िल होंगे। वो मल्लीब को तोड़ देंगे, सुअर को मार डालेंगे और जिज़्या मौक़ूफ़ कर देंगे। उस वक़्त माल की इतनी क़व़रत हो जाएगी कि कोई उसे लेने वाला नहीं मिलेगा। उस वक़्त का एक सज्दा दुनिया व माफ़ीहा से बड़कर होगा। फिर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, और कोई अहले किताब ऐसा नहीं होगा जो ईसा की मौत से पहले उस पर ईमान न लाए और क़यामत के दिन वो उन पर गवाह होंगे। (राजेज़: 2222)

٤٩ - بَابُ نَزُولِ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ  
عَلَيْهِمَا السَّلَامُ  
٣٤٤٨ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ  
يُونُسَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحِ بْنِ  
شِهَابٍ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ سَمِعَ أَبَا  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ : ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَيُوشِكُنَّ  
أَنْ يَنْزِلَ إِلَيْكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلًا،  
فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلَ الْخَنَازِيرَ، وَيَنْجِيَ  
الْجَبْرِيَّةَ، وَيَقْبِضَ التَّمَالَحَ حَتَّى لَا يَبْقَى  
أَخَذٌ حَتَّى تَكُونَ السَّجْدَةُ الْوَاحِدَةُ خَيْرًا  
مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)). ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: وَافْرَوْا إِنْ شِئْتُمْ «وَإِنْ  
مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَكُنَّ مِنْهُمْ قُلُوبًا مَوْبِقًا»  
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ . يَوْمَ شَهِدَائِهِ.

[راجع: ٢٢٢٢]

आयत का मतलब ये हुआ कि क़यामत के करीब जो यहूद व नसारा होंगे और हज़रत ईसा उनके ज़माने में नाज़िल होंगे तो उस ज़माने के अहले किताब उनके ऊपर ईमान ले आएँगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से ऐसा ही मन्कूल है।

3449. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हज़रत अबू क़तादा अंसारी (रज़ि.) के गुलाम नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया किरसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब ईसा इब्ने मरयम तुममें उतरेंगे (तुम नमाज़ पढ़ रहे होगे) और तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा। इस रिवायत की मुताबअत अक़ील और औज़ाई ने की। (राजेअ : 2222)

**तथरीह**

आखिर ज़माने में हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) के आसमान से नाज़िल होने पर उम्मत इस्लामिया का इज्माअ है। आयते कुआनी व इन्ना मिन अहलिल किताब अल्ख इस अक़ीदा पर नस्से कतई है और अह्दादीषे सहीहा इस बारे में मौजूद हैं। उस आख़री ज़माने में चन्द नेचरिस्ट (प्रकृतिवादी) क्रिस्म के लोगों ने इस अक़ीदे का इन्कार किया और पंजाब के एक शख्स मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस इन्कार को बहुत कुछ उछाला और तमाम मुसलमानाने सलफ़ व ख़लफ़ के खिलाफ़ उनकी मौत का झूठा अक़ीदा मशहूर किया, जो सरीह बातिल है। किसी भी रासिख़ुल ईमान मुसलमान को ऐसे बद अक़ीदा लोगों की हफ़्वात से मुताप्पिर नहीं होना चाहिये।

### बाब 50 : बनी इस्राईल के वाक़ियात का बयान

3450. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे रबई बिन हिराश ने बयान किया कि हज़रत उक्ब़ा बिन अमर (रज़ि.) ने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से कहा, क्या आप वो हदीष हमसे नहीं बयान करेंगे जो आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी? उन्होंने कहा कि मैंने ओहज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि जब दज्जाल निकलेगा तो उसके साथ आग और पानी दोनों होंगे लेकिन लोगों को जो आग दिखाई देगी वो ठण्डा पानी होगा और लोगों को जो ठण्डा पानी दिखाई देगा तो वो जलाने वाली आग होगी। इसलिये तुममें से जो कोई उसके ज़माने में हो तो उसे उसमें गिरना चाहिये जो आग होगी क्योंकि वही इन्तिहाई शीरी और ठण्डा पानी होगा। (दीगर मक़ाम : 7130)

3451. हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने ओहज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि पहले ज़माने में एक शख्स के पास मलकुल मौत उनकी रूह कब्ज़ करने आए तो उनसे पूछा गया कोई अपनी नेकी तुम्हें याद है? उन्होंने कहा कि मुझे तो याद नहीं पड़ती,

٣٤٤٩ - حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيِّ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فَيَكُمُ وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ)) تَابِعَةُ عَقِيلٍ وَالْأَوْزَاعِيُّ.

راجع : ٢٢٢٢

٥٠ - بَابُ مَا ذُكِرَ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ

٣٤٥٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ

حَدَّثَنَا أَبُو غَرَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ

عُمَيْرٍ عَنْ رَبِيعِ بْنِ جَرَّاشٍ قَالَ: قَالَ عَقِبَةُ

بْنِ عُمَرَ لِحَدِيثِهِ: أَلَا تَحَدَّثُنَا مَا سَمِعْتَ

مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُهُ

يَقُولُ: ((إِنَّ مَعَ الدَّجَالِ إِذَا خَرَجَ مَاءٌ

وَنَارًا، فَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهَا النَّارُ

فَمَاءٌ بَارِدٌ. وَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهُ مَاءٌ

بَارِدٌ فَنَارٌ تَحْرِقُ. فَمَنْ أَذْرَكَ مِنْكُمْ فَلْيَقْعْ

فِي الَّذِي يَرَى أَنَّهَا نَارٌ. فَإِنَّهُ عَذَابٌ

بَارِدٌ)). (إسرفه في : ١٧١٣٠)

٣٤٥١ - قَالَ حَدِيثُهُ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ:

إِنْ رَجُلًا كَانَ فِيمَنْ قَلْبُكُمْ أَنَاةَ الْمَلِكِ

لَيَقْبِضَ رُوحَهُ، فَقِيلَ لَهُ: مَنْ عَمِلْتَ مِنْ

उससे दोबारा कहा गया कि याद करो? उन्होंने कहा कि मुझे कोई अपनी नेकी याद नहीं, सिवा उसके कि मैं दुनिया में लोगों के साथ खरीद व फ़रोख़्त किया करता था और लेन-देन किया करता था, जो लोग खुशहाल होते उन्हें तो मैं (अपना कर्ज़ वसूल करते वक़्त) मुहलत दिया करता था और तंग हाथ वालों को मुआफ़ कर दिया कर था। अल्लाह तआला ने उन्हें उसी पर जन्नत में दाख़िल किया। (राजेअ: 2077)

3452. और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि एक शख़्स की मौत का जब वक़्त आ गया और वो अपनी ज़िन्दगी से बिलकुल मायूस हो गया तो उसने अपने घरवालों को वसियत की कि जब मेरी मौत हो जाए तो मेरे लिये बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करना और उनमें आग लगा देना। जब आग मेरे गोश्त को जला चुके और आखिर हड्डी को भी जला दे तो उन जली हुई हड्डियों को पीस डालना और किसी तेज़ हवा वाले दिन का इंतज़ार करना और (ऐसे किसी दिन) मेरी राख को दरिया में बहा देना। उसके घरवालों ने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी राख को जमा किया और उससे पूछा ऐसा तूने क्यूँ करवाया था? उसने जवाब दिया कि तेरे ही डर से ऐ अल्लाह! अल्लाह तआला ने उसी वजह से उसकी मफ़िरत फ़र्मा दी। हज़रत अब्बा बिन अमर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना था कि ये शख़्स कफ़्रन चोर था। (दीगर मक़ाम: 3479, 6480)

जिस शख़्स का ज़िक्र हुआ है वो बनी इस्राईल से था, बाब से यही वजह मुनासबत है। मुर्दों को जलाना ऐसे ही ग़लत तसव्वुरात का नतीजा है जो ख़िलाफ़े फ़ितरत है। इंसान की असल मिट्टी से है लिहाज़ा मरने के बाद उसे मिट्टी में दफ़न करना फ़ितरत का तकाज़ा है।

3452, 54. मुझसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको मअमर और यूनस ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर नज़अ की हालत तारी हुई तो आप अपनी चादर चेहरा मुबारक पर बार-बार डाल लेते फिर जब शिहत बढ़ती तो उसे हटा देते थे। हज़ूर (ﷺ) ने उसी हालत में फ़र्माया था, अल्लाह तआला की ला'नत हो

خَيْرٌ قَالَ: مَا أَعْلَمُ. قِيلَ لَهُ: أَنْظُر. قَالَ: مَا أَعْلَمُ شَيْئًا، غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ أَتَابِعُ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا فَأَجَازِيهِمْ، فَأَنْظُرُ الْمَوْتِ وَأَتَجَاوِزُ عَنِ الْمَغْسِرِ، فَأَدْخِلُهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ. (راجع: ٢٠٧٧)

٣٤٥٢- فَقَالَ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: إِنْ رَجُلًا حَضَرَهُ الْمَوْتُ، فَلَمَّا يَسِرُ مِنَ الْحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ: إِذَا آتَا مِتُّ فَاجْتَمِعُوا لِي حَطَبًا كَثِيرًا أَوْقِدُوا فِيهِ نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلْتُ لَحْمِي وَخَلَصْتُ إِلَى عَظْمِي فَامْتَحَشْتُ، فَخَذُّوْهَا فَاطْحِنُوْهَا ثُمَّ انْظُرُوا يَوْمًا رَاحًا فَادْفِنُوْهُ فِي التِّمِّ: فَفَعَلُوا. فَجَمَعَهُ فَقَالَ لَهُ: لِمَ فَعَلْتَ ذَلِكَ؟ قَالَ: مِنْ خَشْيَتِكَ. فَفَرَّ اللَّهُ لَهُ)) قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عُمَيْرٍ: ((وَأَنَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ ذَلِكَ، وَكَانَ نَبَاشًا)).

[طرمه في: ٣٤٧٩، ٤٦٤٨٠]

٣٤٥٣، ٣٤٥٤- حَدَّثَنِي بَشَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنِي مَعْمَرُ وَيُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَائِشَةَ وَابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللَّهِ طَلِقَ يَطْرُقُ خَمِيصَةً عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ وَمَوْ

यहूद व नसारा पर कि उन्होंने अपने अंबिया की कब्रों को सज्दा गाह बना लिया। औहुज़ूर (ﷺ) इस उम्मत को उनके किये से डराना चाहते थे। (राजेअ: 435, 436)

3455. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे फ़रात कज़ार ने बयान किया, उन्होंने अबू हाज़िम से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की मजलिस में पाँच साल तक बैठा हूँ। मैंने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये हदीस बयान करते सुना कि आपने फ़र्माया बनी इस्राईल के अंबिया उनकी सियासी रहनुमाई भी किया करते थे, जब भी उनका कोई नबी हलाक हो जाता तो दूसरे उनकी जगह आ मौजूद होते, लेकिन याद रखो मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा। हाँ मेरे नाइब होंगे और बहुत होंगे। सहाबा ने अज़ा किया कि उनके बारे में आपका हमें क्या हुक्म है। आपने फ़र्माया कि सबसे पहले जिससे बेअत कर लो, बस उसी की बफ़ादारी पर क़ायम रहो और उनका जो हक़ है उसकी अदायगी में कोताही न करो क्योंकि अल्लाह तआला उनसे क़यामत के दिन उनकी रिआया के बारे में सवाल करेगा।

खुलफ़ा की इताअत के साथ खुलफ़ा को भी उनकी ज़िम्मेदारियों के अदा करने पर तवज्जह दिलाई गई है। अगर वो ऐसा न करेंगे, उनको अल्लाह की अदालत में सख़्ततरीन रुस्वाई का सामना करना होगा, आज नामोनिहाद जुम्हूरियत के दौर में कुर्सियों पर आने वाले लोगों के लिये भी यही हुक्म है कि वो अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास करें मगर कितने कुर्सीनशीन हैं जो अपनी ज़िम्मेदारियों को सोचते हैं, उनको सिर्फ़ वोट मांगने के वक़्त कुछ याद आता है बाद में सब भूल जाते हैं इल्ला माशा अल्लाह।

3456. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग पहली उम्मतों के तरीक़ों की क़दम-ब-क़दम पैरवी करोगे यहाँ तक कि अगर वो लोग किसी साहिना के सूराख में दाख़िल हुए हों तो तुम भी उसमें दाख़िल होगे। हमने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या आपकी

كَذَلِكَ: ((لَعَنَ اللَّهُ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ، يَخْضَرُونَ مَا صَلَّوْا)).

[راجع: ٤٣٥، ٤٣٦]

٣٤٥٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قُرَاتٍ الْقَزَّازِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ قَالَ: فَأَعَدْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ خَمْسَ مِائِينَ، فَسَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمُ الْأَنْبِيَاءُ، كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ، وَإِنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِي، وَسَيَكُونُ خُلَفَاءُ فَيَكْتُلُونَ)). قَالُوا: لِمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: ((لَوْ بَيَّعَ الْأَوَّلُ الْأَوَّلَ، أَطَعُوهُمْ حَقَّهُمْ، فَإِنَّ اللَّهَ سَالِبُهُمْ غَمًّا اسْتَرْعَاهُمْ)).

٣٤٥٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَّارِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَتَبْعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ شَبْرًا بِشِبْرِ وَفِرَاعًا بِفِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ سَلَكَوا جُحْرَ ضَبٍّ

मुराद पहली उम्मतों से यहूद व नसारा हैं? आपने फ़र्माया फिर कौनसा हो सकता है?

(दीगर मक़ाम : 7320)

لَسَلْتَكُمْوَهُ. قُلْنَا : يَا رَسُولَ اللَّهِ، الْيَهُودُ  
وَالنَّصَارَى؟ قَالَ : لَمَنْ؟

[طرفه ١ : ٧٣٢٠].

**तशरीह :** आपका मतलब ये था कि तुम अंधाधुंध यहूद और नसारा की तक्लीद करने लगोगे, फ़िक्र और ताम्मुल का माहा तुमसे निकल जाएगा। हमारे ज़माने में मुसलमान ऐसे ही अंधे बन गये हैं, यहूद व नसारा ने जिस तरह अपने दीन को बर्बाद किया उनसे भी बढ़कर मुसलमानों ने बिदअतें ईजाद करके इस्लाम का हुलिया बदल दिया है, क़ब्रपरस्ती, इमाम परस्ती मुसलमानों का शिआर बन गई हैं, इनमें इस क़दर फ़िक्र पैदा हो गये कि यहूद व नसारा से आगे उनका क़दमत है, शिया और सुन्नी नामों से जो तफ़रीक़-दर-तफ़रीक़ होते हुए सैकड़ों फ़िक्रों तक नौबत पहुँच चुकी है, किताब व सुन्नत का सिर्फ़ नाम बाकी रह गया है।

3457. हमसे इमरान बिन मैसरा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि (नमाज़ के लिये ऐलान के तरीक़े पर बहस करते वक़्त) सहाबा ने आग और नाकूस का ज़िक्र किया, लेकिन कुछ ने कहा कि ये तो यहूद व नसारा का तरीक़ा है। आख़िर बिलाल (रज़ि.) को हुक्म हुआ कि अज़ान में (कलिमात) दो-दो बार कहें और तक्बीर में एक एक दफ़ा। (राजेअ : 603)

٣٤٥٧- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ حَدَّثَنَا  
عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ  
عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((ذَكَرُوا  
النَّارَ وَالنَّافُوسَ فَذَكَرُوا الْيَهُودَ  
وَالنَّصَارَى، فَأَمَرَ بِلَالٌ أَنْ يَنْفَعِ الْأَذَانَ  
وَأَنْ يُرَوِّعَ الْإِقَامَةَ)). (راجع: ٦٠٣)

इबादत के लिये आग जलाकर या नाकूस बजाकर लोगों को बुलाना आज भी अक़बर धर्मों का मा'मूल है। इस्लाम ने इस तरीक़े को नापसन्द करके अज़ान का बेहतर तरीक़ा जारी किया जो पाँच औक़ात फ़ज़ा-ए-आसमानी में पुकारकर कही जाती है, जिसमें अक़ीदा-ए-तौहीद व रिसालत का ऐलान होता है और बेहतरीन लफ़्ज़ों में मुसलमानों को इबादत के लिये बुलाया जाता है। रिवायत में यहूद व नसारा का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत है। रिवायत में इकहरी तक्बीर कहने का ज़िक्र साफ़ लफ़्ज़ों में मौजूद है, मगर इस ज़माने में अक़बर बिरादराने मिल्लत, इकहरी तक्बीर सुनकर सख़्त नफ़रत का इज़हार करते हैं जो उनकी नावाक़फ़ियत की खुली दलील है, इकहरी तक्बीर सुन्नते नबवी है उससे इंकार हर्गिज़ जाइज़ नहीं है, अल्लाह पाक हमारे मुहतरम बिरादरान को तौफ़ीक़ दे कि वो ऐसा शलत तअस्सुब दिलों से दूर कर दें।

3458. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबुज्ज़ुहा ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) कोख पर हाथ रखने को नापसन्द करती थीं और फ़र्माती थीं कि इस तरह यहूद करते हैं।

इस रिवायत की मुताबअत शुअबा ने आ'मश से की है।

٣٤٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا  
سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي  
الصُّحَيْ عَنْ مَسْرُوقٍ ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهَا كَانَتْ تَكْرَهُ أَنْ يَجْعَلَ يَدُهُ فِي  
خَاصِرَتَيْهِ وَتَقُولُ : إِنَّ الْيَهُودَ تَفْعَلُهُ)).  
تَابِعَهُ شُعْبَةُ عَنْ الْأَعْمَشِ.

कोख पर हाथ रखने की आदत यहूद की थी और उससे तकब्बुर का भी इज़हार होता है। इसीलिये नापसन्द करा दिया गया। ज़िम्नन यहूद का ज़िक्र है यही बाब से वजहे मुनासबत है।

3459. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे नाफेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा ज़माना पिछली उम्मतों के मुकाबले में ऐसा है जैसे अम्र से मरिब तक का वक़्त है, तुम्हारी मिषाल यहूद व नसारा के साथ ऐसी है जैसे किसी शख्स ने कुछ मज़दूर लिये और कहा कि मेरा काम आधे दिन तक कौन एक एक क़ीरात की उजरत पर करेगा? यहूद ने आधे दिन तक एक एक क़ीरात की मज़दूरी पर काम करना तै कर लिया। फिर उस शख्स ने कहा कि आधे दिन से अम्र की नमाज़ तक मेरा काम कौन शख्स एक एक क़ीरात की मज़दूरी पर करेगा। अब नसारा एक एक क़ीरात की मज़दूरी पर आधे दिन से अम्र के वक़्त तक मज़दूरी करने पर तैयार हो गये। फिर उस शख्स ने कहा कि अम्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक दो दो क़ीरात पर कौन शख्स मेरा काम करेगा? तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि वो तुम्हीं लोग हो जो दो दो क़ीरात की मज़दूरी पर अम्र से सूरज डूबने तक काम करोगे, तुम आगाह रहो कि तुम्हारी मज़दूरी दी गई है। यहूद व नसारा इस फ़ैसले पर गुस्सा हो गये और कहने लगे कि काम तो हम ज़्यादा करें और मज़दूरी हमीं को कम मिले। अल्लाह तआला ने उनसे फ़र्माया क्या मैंने तुम्हें तुम्हारा हक़ देने में कोई कमी की है? उन्होंने कहा कि नहीं। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि फिर ये अफ़ज़ल है, मैं जिसे चाहूँ ज़्यादा दूँ। (राजेअ: 557)

٣٤٥٩ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّمَا أَجَلُكُمْ - لِي أَجَلٍ مَنْ خَلَا مِنَ الْأَمَمِ - مَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ. وَإِنَّمَا مَنَاجِلُكُمْ وَمَنْجَلُ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى كَرَجُلٍ اسْتَفْعَلَ عَمَلًا فَقَالَ: مَنْ يَفْعَلْ لِي إِلَى يَصْنِفِ النَّهَارَ عَلَى قِرَاطٍ قِرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ إِلَى يَصْنِفِ النَّهَارَ عَلَى قِرَاطٍ قِرَاطٍ. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَفْعَلْ لِي مِنْ يَصْنِفِ النَّهَارَ إِلَى صَلَاةِ الْعَصْرِ عَلَى قِرَاطٍ قِرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ النَّصَارَى مِنْ يَصْنِفِ النَّهَارَ إِلَى صَلَاةِ الْعَصْرِ عَلَى قِرَاطٍ قِرَاطٍ. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَفْعَلْ لِي مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِرَاطَيْنِ قِرَاطَيْنِ؟ أَلَا لَأَتِمَّ الَّذِينَ يَفْعَلُونَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِرَاطَيْنِ قِرَاطَيْنِ، أَلَا لَكُمْ الْأَجْرُ مَرَّتَيْنِ. فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى فَقَالُوا: نَحْنُ أَكْثَرُ عَمَلًا وَأَقْلُ عَطَاءً، قَالَ اللَّهُ: قَلَّ ظَنُّكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ هُنَا؟ قَالُوا: لَا. قَالَ: فَإِنَّهُ لَصَلِّي، أُعْطِيَهِ مَنْ شِئْتَ».

[راجع: ٥٥٧]

**तशरीह:** यहूद व नसारा और मुसलमान मज़हबी दुनिया की ये तीन अज़ीम क़ौमों हैं, जिनको आसमानी किताबें दी गई हैं, उनके अलावा दुनिया की दूसरी क़ौमों में भी इल्हामे रब्बानी का इल्काअ हुआ है मगर अब उनकी तारीख़ मुस्तनद नहीं है। बहरहाल ये तीन क़ौमों आज भी दुनिया में अपने क़दीम दआवी के साथ मौजूद हैं जिनमें मुसलमान क़ौम एक ऐसे दीन की अलमबरदार है जो नासिखुल अदयान होने का मुद्दा है, उनको अल्लाह ने ये फ़ज़ीलत बख़शी है कि हर नेक काम पर उनको न सिर्फ़ दोगुना बल्कि दस गुना तक अज़र मिलता है। हदीष में यही तम्बील बयान की गई है। क़ीरात चार जौ के बराबर वज़न



को कहते हैं, कुछ आमाले सालेहा (नेक आमाल) का प्रवाब दस से भी ज्यादा कई सौ गुना तक मिलता है।

3460. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे ताऊस ने, उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा अल्लाह तआला फ़लाँ को तबाह करे। उन्हें क्या मा'लूम नहीं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, यहूद पर अल्लाह की ला'नत हो, उनके लिये चर्बी हुराम हुई तो उन्होंने उसे पिघलाकर बेचना शुरू कर दिया। इस रिवायत को इब्ने अब्बास (रज़ि.) के साथ जाबिर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ: 2223)

۳۴۶۰- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَاتَلَ اللَّهُ فُلَانًا، أَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَيَحْمِلُونَهَا قَبَاغًا)).  
تَابِعَهُ جَابِرٌ وَأَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ۲۲۲۳]

**तस्रीह:** फ़लाँ से मुराद समुरह बिन जुन्दब हैं जिन्होंने काफ़िरों से जिज़्या में शराब वसूल कर ली थी और उसको बेचकर उसका पैसा बैतुलमाल को रवाना कर दिया, समुरह ने अपनी राय से ये इज्तिहाद किया था कि उसमें कोई क़बाहत नहीं, उन्होंने ये हदीष नहीं सुनी थी, इसलिये हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको कोई सज़ा नहीं दी। (वहीदी)

3461. हमसे अबू आसिम जिह्राक बिन मुखलद ने बयान किया, कहा हमको औज़ार्ने ने ख़बर दी, कहा हमसे हस्सान बिन अतिया ने बयान किया, उनसे अबू कब्शा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा पैग़ाम लोगों को पहुँचाओ! अगरचे एक ही आयत हो और बनी इस्राईल के वाक़ियात तुम बयान कर सकते हो, उसमें कोई हर्ज नहीं और जिसने मुझ पर क़स्दन झूठ बाँधा तो उसे अपने जहन्नम के ठिकाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

۳۴۶۱- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الطُّحَاكِيُّ بْنُ مَعْلَبٍ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ غَطِيَّةٍ عَنْ أَبِي كَثْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((تَلَقَّوْا عَنِّي وَلَوْ آيَةً، وَخَذُّوْا عَنْ نَبِيِّ إِسْرَائِيلَ وَلَا حَرَجَ، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَّخِذْ مَفْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

वाक़ियाते बनी इस्राईल बयान करने में कोई हर्ज नहीं है मगर इस ख़याल से कि न उनकी तस्दीक हो न तक्ज़ीब सिवा उनके जो सहीह सनद से प्राबित हों।

3462. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सॉलेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, यहूद व नसारा (दाढ़ी वग़ैरह) में ख़िज़ाब नहीं लगाते, तुम लोग उसके ख़िलाफ़ तरीक़ा इख़्तियार करो (या'नी ख़िज़ाब लगाया करो)।

۳۴۶۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَرِيرِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى لَا يَتَّبِعُونَ، فَخَالِفُوهُمْ)).

[طرفه ي: ۵۸۹۹]

(दीगर मक़ाम: 5799)

**तशरीह :** हदीष में यहूद व नसारा का जिक्र है यही बाब से वजह मुनासबत है मेहन्दी का खिजाब मुराद है जिसे दाढ़ी और सर पर लगाना मस्नून है, इस हदीष से ये भी निकला कि यहूद व नसारा की तहजीब की बजाय इस्लामी तहजीब, इस्लामी तर्ज अमल इख्तियार करना जरूरी है और अंधाधुंध उनके मुकल्लिदीन बनकर उनकी बदतरीन तहजीब को इख्तियार करना बड़ी दनाइत है मगर अफसोस कि आज बेशतर नामनिहाद मुसलमान उसी तहजीब के दिलदादा बने हुए हैं, जिन रिवायतों में इज़ाल-ए-शैब या 'नी सफ़ेद बालों के ख़त्म की नहीं आई है, वो नही स्याह खिजाब के बारे में है जो मना है। मुस्लिम शरीफ़ में है, क़ालन्नबिय्यु गय्यरूहू व जन्निबुस्सवाद या 'नी सफ़ेद बालों को मुतगय्यर कर दो मगर स्याह खिजाब से बचो। जो लोग जानते हैं कि दाढ़ी बढ़ाना इसलिये सुन्नत है कि ये यहूद की तहजीब की मुखालफ़त करना है उनको मा'लूम होना चाहिये कि बालों का सफ़ेद ही रखना भी यहूदी तहजीब है जैसा कि यहाँ बयान मौजूद है फिर उस तहजीब की मुखालफ़त में मेहन्दी का खिजाब करना इतना ही जरूरी है जितना दाढ़ी का बढ़ाना जरूरी है मगर अक़्बर मुसलमान हैं जो आधी बात याद रखते हैं, आधी को भूल जाते हैं। बहरहाल इस्लामी तहजीब एक मुकम्मल बेहतरीन तहजीब है, आज मरिबियत के फ़िदाई इस्लामी तहजीब छोड़नेवाले शक्ल व सूरत व लिबास वगैरह वगैरह से अल्लाह के अज़ाब में गिरफ़्तार हो जो ऐसा लिबास अपनाते हुए भी जिसको पहनकर न आराम से खा सकते हैं न बैठ सकते हैं फिर उस लिबास पर मगन हैं।

3463. मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा मुझसे हज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे जरिर ने बयान किया, उनसे हसन ने, कहा हमसे हज़रत जुन्दब बिन अब्दुल्लाह ने उसी मस्जिद में बयान किया (हसन ने कहा कि) उन्होंने जब हमसे बयान किया हम उसे भूले नहीं और न हमें उसका अंदेशा है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ इस हदीष की निस्बत ग़लत की होगी, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछले ज़माने में एक शख़्स (के हाथ में) ज़ख़म हो गया था और उसे उससे बड़ी तकलीफ़ थी, आख़िर उसने छुरी से अपना हाथ काट लिया उसका नतीजा ये हुआ कि ख़ून बहने लगा और उसी से वो मर गया फिर अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि मेरे बन्दे ने ख़ुद मेरे पास आने में जल्दी की इसलिये मैंने भी जन्नत को उस पर ह़राम कर दिया। (राजेअ: 1364)

٣٤٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا جُنْدُبُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ، وَمَا نَسِينَا مِنْهُ حَدَّثَنَا، وَمَا نَعْشَى أَنْ يَكُونَ جُنْدُبٌ كَذَبَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَجُلٌ بِهِ جُرْحٌ فَبَجَزَعٌ فَأَخَذَ سِكِّينًا فَحَزَّ بِهَا يَدَهُ، فَمَا رَقَا الدَّمُ حَتَّى مَاتَ، قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: بِأَذْنِي عَبْدِي بِتَفْسِي، حَزَمْتُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ)).

[راجع: ١٣٦٤]

पिछले ज़माने के एक शख़्स का ज़िक्र हदीष में वारिद हुआ, यही बाब की मुनासबत है, हदीष से ये ज़ाहिर हुआ कि खुदकुशी करने वाले पर जन्नत ह़राम है, इन तमाम अह्दादीष में अहले किताब का ज़िक्र किसी न किसी तौर पर बताया है इसीलिये इनको यहाँ दर्ज किया गया है।

### बाब 51 : बनी इस्राईल के एक कोढ़ी और एक नाबीना और एक गंजे का बयान

3467. मुझसे अहमद बिन इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन आसिम ने बयान किया, उनसे हम्मा ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझसे

### ٥١- بَابُ حَدِيثِ أَبِرَصٍ وَأَعْمَى

وَأَقْرَعٌ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ

٣٤٦٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ

अब्दुर्रहमान बिन अबी हम्जा ने बयान किया और उनसे हजरत अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, उन्हें हम्माम ने खबर दी, उनसे इस्हाक बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबी अम्प ने खबर दी और उनसे हजरत अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फर्माया कि बनी इस्राईल में तीन शख्स थे, एक कोढ़ी, दूसरा अंधा और तीसरा गंजा, अल्लाह तआला ने चाहा कि उनका इम्तिहान लो चुनोंचे अल्लाह तआला ने उनके पास एक फरिश्ता भेजा। फरिश्ता पहले कोढ़ी के पास आया और उससे पूछा कि तुम्हें सबसे ज्यादा क्या चीज पसन्द है? उसने जवाब दिया कि अच्छा रंग और अच्छी चमड़ी क्योंकि मुझसे लोग परहेज करते हैं। बयान किया कि फरिश्ते ने उस पर अपना हाथ फेरा तो उसकी बीमारी दूर हो गई और उसका रंग भी खूबसूरत हो गया और चमड़ी भी अच्छी हो गई। फरिश्ते ने पूछा किस तरह का माल तुम ज्यादा पसन्द करोगे? उसने कहा कि ऊँट! या उसने गाय कही, इस्हाक बिन अब्दुल्लाह को इस सिलसिले में शक था कि कोढ़ी और गंजे दोनों में से एक ने ऊँट की ख्वाहिश की थी और दूसरे ने गाय की। चुनोंचे उसे हामला ऊँटनी दी गई और कहा गया कि अल्लाह तआला तुम्हें इसमें बरकत देगा, फिर फरिश्ता गंजे के पास आया और उससे पूछा कि तुम्हें क्या चीज पसन्द है? उसने कहा कि इम्दह बाल और मेरा मौजूदा ऐब खत्म हो जाए, क्योंकि लोग इसकी वजह से मुझसे परहेज करते हैं। बयान किया कि फरिश्ते ने उसके सर पर हाथ फेरा और उसका ऐब दूर हो गया और उसके बजाय इम्दा बाल आ गये। फरिश्ते ने पूछा, किस तरह का माल पसन्द करोगे? उसने कहा कि गाय! बयान किया कि फरिश्ते ने उसे हामला गाय दे दी और कहा कि अल्लाह तआला तुम्हें इसमें बरकत देगा। फिर अंधे के पास फरिश्ता आया और कहा कि तुम्हें क्या चीज पसन्द है? उसने कहा कि अल्लाह तआला मुझे आँखों की रोशनी दे दे ताकि मैं लोगों को देख सकूँ। बयान किया कि फरिश्ते ने हाथ फेरा और अल्लाह तआला ने उसकी बीनाई उसे वापस कर दी। फिर पूछा कि किस

الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ أَخْبَرَنَا هَمَامٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنَّ ثَلَاثَةً فِي نَبِيِّ إِسْرَائِيلَ الْبُرْصَ وَالْعَمَى وَالْفَرْعَ بَدَأَ اللَّهُ غُرًّا وَجَلَّ أَنْ يَنْتَلِيَهُمْ فَبَعَثَ إِلَيْهِمْ مَلَكًا، فَأَتَى الْبُرْصَ فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: لَوْ أَنَّ خَسَنَ وَجِلْدًا خَسَنًا، قَدْ قَلْبَرَنِي النَّاسُ. قَالَ: فَمَسَحَهُ فَلَذَبَ عَنْهُ، فَأَعْطِيَنِي لَوْ أَنَّ خَسَنًا وَجِلْدًا خَسَنًا. فَقَالَ: أَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الْإِبِلُ - أَوْ قَالَ: الْبَقَرُ - هُوَ شَيْءٌ فِي ذَلِكَ: إِنَّ الْبُرْصَ وَالْفَرْعَ قَالَ: أَخَذْنَاهُمَا: الْإِبِلَ، وَقَالَ الْآخَرُ: الْبَقَرُ: فَأَعْطِيَنِي نَاقَةً عُشْرَاءَ، وَأَتَى الْفَرْعَ فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: شَعْرٌ خَسَنٌ وَيَذْهَبُ عَنِّي هَذَا، قَدْ قَلْبَرَنِي النَّاسُ. قَالَ: فَمَسَحَهُ فَلَذَبَ، وَأَعْطِيَنِي شَعْرًا خَسَنًا. قَالَ: فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الْبَقَرُ. قَالَ: فَأَعْطَاهُ بَقَرَةً حَامِلًا، وَقَالَ: يَبَارَكَ لَكَ فِيهَا. وَأَتَى الْأَعْمَى فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: يَرُودُ اللَّهُ إِلَيَّ بَصَرِي فَأُبْصِرُ بِهِ النَّاسَ. قَالَ: فَمَسَحَهُ،

तरह का माल तुम पसन्द करोगे? उसने कहा कि बकरियाँ! फ़रिश्ते ने उसे हामला बकरी दे दी। फिर तीनों जानवरों के बच्चे पैदा हुए, यहाँ तक कि कोढ़ी के ऊँटों से उसकी वादी भर गई, गंजे की गाय बैल से उसकी वादी भर गई और अंधे की बकरियों से उसकी वादी भर गई। फिर दोबारा फ़रिश्ता अपनी उसी पहली शक्ल में कोढ़ी के पास आया और कहा कि मैं एक निहायत मिस्कीन व फ़क़ीर आदमी हूँ, सफ़र का तमाम सामान व अस्बाब ख़त्म हो चुका है और अल्लाह तआला के सिवा और किसी से हाज़त पूरी होने की उम्मीद नहीं, लेकिन मैं तुमसे उसी ज़ात का वास्ता देकर जिसने तुम्हें अच्छा रंग और अच्छा चमड़ा और अच्छा माल अत्ता किया, एक ऊँट का सवाल करता हूँ जिससे सफ़र को पूरा कर सकूँ। उसने फ़रिश्ते से कहा कि मेरे ज़िम्मे हुकूक और बहुत से हैं। फ़रिश्ते ने कहा, ग़ालिबन मैं तुम्हें पहचानता हूँ, क्या तुम्हें कोढ़ की बीमारी नहीं थी जिसकी वजह से लोग तुमसे धिन् खाते थे। तुम एक फ़क़ीर और क़ल्लाश थे। फिर तुम्हें अल्लाह तआला ने ये चीज़ें अत्ता कीं? उसने कहा कि ये सारी दौलत तो मेरे बाप दादा से चली आ रही है। फ़रिश्ते ने कहा कि अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी पहली हालत पर लौटा दे। फिर फ़रिश्ता गंजे के पास अपनी उसी पहली मूरत में आया और उससे भी वही दरख्वास्त की और उसने भी वही कोढ़ी वाला जवाब दिया। फ़रिश्ते ने कहा कि अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तआला तुम्हें अपनी पहली हालत पर लौटा दे, उसके बाद फ़रिश्ता अंधे के पास आया, अपनी उसी पहली मूरत में और कहा कि मैं एक मिस्कीन आदमी हूँ, सफ़र के तमाम सामान ख़त्म हो चुके हैं और सिवा अल्लाह तआला के किसी से हाज़त पूरी होने की तवक्क़ल नहीं। मैं तुमसे उस ज़ात का वास्ता देकर जिसने तुम्हें तुम्हारी बीनाई वापस दी है, एक बकरी मांगता हूँ जिससे अपने सफ़र की ज़रूरियात पूरी कर सकूँ। अंधे ने जवाब दिया कि वाक़ई मैं अंधा था और अल्लाह तआला ने मुझे अपने फ़ज़ल से बीनाई अत्ता की और वाक़ई मैं फ़क़ीर और मोहताज था और अल्लाह तआला ने मुझे मालदार बनाया। तुम जितनी बकरियाँ चाहो ले सकते हो, अल्लाह की क़सम! जब तुमने अल्लाह का वास्ता दिया है तो जितना भी तुम्हारी जी चाहे ले जाओ, मैं तुम्हें हरिज़ नहीं रोक

رَدَّ اللَّهُ إِلَيْهِ بَصْرَهُ. قَالَ : فَأَيُّ الْمَالِ حَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ : الْفَقْرُ، فَأَعْطَاهُ شَاةً رَابِدًا، فَأَتَيْتُ هَذَانِ وَوَلَدَ هَذَا، فَكَانَ لِهَذَا رَادٌّ مِنْ إِيْلٍ، وَلِهَذَا رَادٌّ مِنْ بَقَرٍ، وَلِهَذَا رَادٌّ مِنْ الْفَقْرِ. ثُمَّ إِنَّهُ أَتَى الْأَمْرَسَ فِي صُورَتِهِ وَمَنْتَبِهِ. فَقَالَ : رَجُلٌ مِسْكِينٌ لَقَطَعْتَ بِهِ الْجِبَالَ فِي سَفَرِهِ فَلَا بَلَغَ الْيَوْمَ إِلَّا بِاللهِ ثُمَّ بَكَ، أَسَأَلْتُكَ - بِاللَّيْلِ - أَطْعَاكَ اللَّوْنُ الْحَسَنَ وَالْجِلْدَ وَالْحَسَنَ وَالْمَالُ - نَجِيزًا أَفْأَلْ تَبْلُغَ عَلَيْهِ فِي سَفَرِي. فَقَالَ لَهُ : إِنَّ الْخَلْقَ كَثِيرٌ. فَقَالَ لَهُ : كَأَنِّي أَعْرِفُكَ، أَلَمْ تَكُنْ أَمْرَسَ يَفْتَرِكُ النَّاسُ، لَفَقِيرًا فَأَعْطَاكَ اللهُ؟ فَقَالَ : لَقَدْ وَرَيْتُ بِكَبِيرٍ عَنْ كَبِيرٍ. فَقَالَ : إِنْ كُنْتُ كَاذِبًا فَصَيِّرْكَ اللهُ إِلَيَّ مَا كُنْتُ. وَأَتَى الْأَمْرَسَ فِي صُورَتِهِ وَمَنْتَبِهِ. فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِهَذَا، فَرَدَّ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا رَدَّ عَلَيْهِ هَذَا، فَقَالَ : إِنْ كُنْتُ كَاذِبًا فَصَيِّرْكَ اللهُ إِلَيَّ مَا كُنْتُ. وَأَتَى الْأَعْمَى فِي صُورَتِهِ فَقَالَ : رَجُلٌ مِسْكِينٌ وَابْنُ سَبِيلٍ وَتَقَطَّعَتْ بِهِ الْجِبَالَ فِي سَفَرِهِ، فَلَا بَلَغَ الْيَوْمَ إِلَّا بِاللهِ ثُمَّ بَكَ، أَسَأَلْتُكَ بِاللَّيْلِ رَدَّ عَلَيْكَ بِصَرِّكَ شَاةً أَتَبْلُغُ بِهَا فِي سَفَرِي. فَقَالَ : قَدْ كُنْتُ أَعْمَى فَرَدَّ اللهُ بَصْرِي، وَفَقِيرًا فَقَدْ أَغْنَانِي، فَخُذْ مَا حِطَّتْ، فَوَ اللهُ لَا أَجْهَدُكَ الْيَوْمَ بِشَيْءٍ أَخْلَقْتَهُ اللهُ. فَقَالَ : أَمْسِكْ مَا لَكَ، فَإِنَّمَا أَتَيْتُكُمْ، فَقَدْ

सकता। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम अपना माल अपने पास रखो, ये तो सिर्फ़ इम्तिहान था और अल्लाह तआला तुमसे राज़ी और खुश है और तुम्हारे दोनों साथियों से नाराज़ है। (दीगर मक्काम : 6653)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْكَ، وَسَخِطَ عَلَى صَاحِبَيْكَ. [طرفه 3 : 1103].

**तशरीह :** आयते कुआनी, लइन शकरतुम ल अज़ीदन्नकुम (इब्राहीम : 7) अगर मेरा शुक़ करोगे तो नेअमत ज़्यादा दूंगा और अगर नाशुकी करोगे तो मेरा अज़ाब भी सख़्त है, इस आयत की तफ़सीर इस हदीष से बख़ूबी वाज़ेह है। रिवायत के आख़िर में नाबीना के अल्फ़ाज़ ला अज्हुदुक मन्कूल हैं या'नी तू कितनी भी बकरियाँ ले ले मैं तुझसे वापस नहीं मांगूंगा कुछ नुस्खों में ला अहमदुक है। फिर तर्जुमा यूँ होगा कि मैं तेरी ता'रीफ़ उस वक़्त तक नहीं करूँगा जब तक जो तुझे दरकार है वो अल्लाह के नाम पर न ले लेगा। इंसान की फ़ितरत है वो बहुत जल्द अपनी पहली हालत को भूल जाता है, खास तौर पर माल व दौलत वाले जो बेशतर ग़रीब होते हैं फिर वो दौलतमन्द बन जाते हैं और भूल जाते हैं कि वो पहले क्या थे। ऐसे लोगों को अल्लाह से डरना चाहिये जो अल्लाह दौलत देने पर कादिर है, वो वापस लेने पर भी इसी तरह कादिर है और ये रोज़ाना होता रहता है देखने को नज़रे बसीरत दरकार है।

### बाब 52 : अस्हाबे कहफ़ का बयान

सूरह कहफ़ में अल्लाह ने फ़र्माया है, ऐ पैग़म्बर! क्या तू समझा कि कहफ़ और रक्कीम मेरी कुदरत की निशानियों में अजीब थे, कहफ़ पहाड़ में जो दरा हो, रक्कीम के मा'नी लिखी हुई किताब, मरकूम के मा'नी भी लिखी हुई रबज़ना अला कुलूबिहिम हमने उनके दिलों में सब डाला, शतता जुल्म और ज़्यादती, वसीद के मा'नी लगन और सहन, उसकी जमा वसाइद और वसद आती है, वसीद दरवाज़े को भी कहते हैं (दहलीज़) को मूसदतुन जो सूरह हुमज़ा में है या'नी बन्द दरवाज़ा लगी हुई अरब लोग कहते हैं। सदल बाब और अव सदल बाब या'नी दरवाज़ा बन्द किया, वअप्रना हमने उनको ज़िन्दा कर दिया। अज़का या'नी ज़्यादा सोने वाला या पाकीज़ा, खुश-मज़ा या सुस्त। फ़ज़रबल्लाहु अला अज़ानिहिम या'नी अल्लाह तआला ने उनको सुला दिया, रज्म बिल ग़ैबि या'नी बे दलील (महज़ गुमान अटकल पचू) मुजाहिद ने कहा तक्रिज़ुहुम या'नी छोड़ देता है, कतरा जाता है। सूरह कहफ़ में उन जवानों का तफ़सीली ज़िक्र मौजूद है।

٥٢- بَابُ وَأَمَّ حَيْثُ أَنْ أَصْحَابُ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ ﴿١﴾ الْكَهْفُ: الْفَتْحُ فِي الْجَبَلِ. ﴿٢﴾ وَالرَّقِيمِ: الْكِتَابُ. ﴿٣﴾ مَرْثُومٌ: مَكْتُوبٌ، مِنَ الرِّقْمِ. ﴿٤﴾ وَرَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ: أَلْهَمْنَاهُمْ مَبْرَأً. ﴿٥﴾ شَطَطًا: إِطْرَاطًا. ﴿٦﴾ الْوَصِيدُ: الْفَيْءُ، وَجَمْعُهُ وَصَائِدٌ وَوَصْدٌ، وَيُقَالُ: الْوَصِيدُ الْبَابُ. ﴿٧﴾ مُوَصَّدَةٌ: مُطَبَّقَةٌ، أَصَدَ الْبَابُ وَأَوْصَدَ: بَغَضْنَاهُمْ: أَخْتَنَاهُمْ. ﴿٨﴾ أَرْجَى: أَكْثَرُ رَيْفًا. ﴿٩﴾ فَطَرَبَ اللَّهُ عَلَى آذَانِهِمْ: لَقَامُوا. ﴿١٠﴾ رَجَمًا بِالْغَيْبِ: لَمْ يَسْتَنُوا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿تَفَرَّضْنَاهُمْ﴾: تَرَكْنَاهُمْ.

**तशरीह :** उसका मुफ़सल बयान किताबुतफ़सीर में आया। इशाअल्लाह! इमाम बुखारी (रह.) ने अस्हाबे कहफ़ के बाब में कोई हदीष बयान नहीं की शायद उनको अपनी शर्त पर कोई हदीष नहीं मिली, अब्द बिन हुमैद ने उनका किस्सा तूल के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है, मगर मौकूफ़ है। रक्कीम वो तख़्ता जिस पर अस्हाबे कहफ़ के नाम लिखे हुए थे। (अल्हम्दुलिल्लाह कि पारा नम्बर 13 भी ख़ैरियत के साथ ख़त्म हुआ)

# अर्ज-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुजारिशत)

क्रारेईने किराम! अल्लाह रब्बुल-इज्जत के फ़ज़ल व एहसानो-क़रम से सहीह बुखारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की तीसरी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। पहली व दूसरी जिल्द से यकीनन आपने फ़ैज़ हासिल किया होगा। इस तीसरी जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हासिल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफ़ी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही है ताकि शुरूआती दो जिल्द पढ़ चुके क्रारेईन व मुअतरिज़ीन के सवालात के तसल्लीबख़्श जवाब मिल सके।

01. बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्हीह व नज़रे-झानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अरबी के माहिर आलिम मौलाना जमशेद आलम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अरबी हर्फ़ (ح) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष' इस्तेमाल पर ए' तिराज़ जताया है, सहीह बुखारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर हदीष 'इज़मल अअमालु बिन्नीयात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अमल का दारोमदार निध्यत पर है।' हमारी निध्यत यह है कि अरबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालआ करें।

02. इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास हफ़ों को अलग तरह से लिखा गया हमिशाल के तौर पर:— (ا) के लिये अ, (ع) के लिये अ; (ح) के लिये ष, (س) के लिये स, (ش) के लिये श, (ص) के लिये स; (ط) के लिये ह, (و) के लिये ह, (خ) के लिये ख, (غ) के लिये ग, (ف) के लिये फ़, (ك) के लिये क, (ق) के लिये क़ लिखा गया है। (ج) के लिये ज का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ز) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) के लिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ ज़ का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हफ़ों के लिये सहीह विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; असीर, अलिफ़ (ا) सीन (س) ये (س) रे (ر) जिसका मतलब होता है कैदी। अषीर, अलिफ़ (ا) षे (ش) ये (س) रे (ر) जिसका मतलब होता है ख़ालिस। असीर ऐन (ع) सीन (س) ये (س) रे (ر), जिसका मतलब होता है मुश्किल। असीर ऐन (ع) साद (ص) ये (س) रे (ر), जिसका मतलब होता है अंगूर की चाशनी (शीरा)। अषीर ऐन (ع) षे (ش) ये (س) रे (ر), जिसका मतलब होता है धूल। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में सहीह तलफ़ुज़ (उच्चारण) के लिये हद-दर्जा कोशिश की गई है।

03. मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मैटर की एडिटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्हीह (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाईनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी है, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। ऐ अल्लाह! मेरे वालिद-वालदा को अपने अर्श के साथे तले, अपनी रहमत की पनाह नसीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअमतेँ अता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है। आमीन! तक्ब्बल या रब्बल आलमीन!!

व सल्लल्लहु तआला अला नबिय्यिना व अला आलिही व अस्सलामु व अल्वाइहि व बारिक व सल्लिम.

सलीम ख़िलजी.

## मुनाजात (दुआएं)

हकीम मुहम्मद सिद्दीक गौरी

रखे-आज़म अर्शे-आज़म पर है तेरा इस्तवा,  
तू है आली, तू है आला, तू ही है रखुल उला।

हमद, पाकी किबरियाई मेरे सुब्बानो-हमीद  
सिर्फ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।

लामका, बेखानमा, तू है नही हरगिज़ रफ़ीअ  
अर्श पर है तू यकीनन, है पता मुझको तेरा।

अर्श पर होकर भी तू मेरी रमो-जा से क़रीब  
इतना मेरे पास है मैं कह नहीं सकता ज़रा।

अर्श पर है ज़ात तेरी, इल्मो-कुदरत से क़रीब  
तू हमारे पास है ऐ हजियो-नाज़िर खुदा।

अर्श पर है तू यकीनन और वह 'मकतूब' भी  
'तेरी रहमत है फ़ज़ू तेरे मज़ब से ऐ खुदा।

अरबो खरबो रहमतो हो, बरकतों लाखों सलाम,  
उन पर उनकी आल पर जो है मुहम्मद मुस्ताफ़ा।

काबिले-तारीफ़ तू है मेरे रखुल आलमीन  
तू है रहमानो-रहीमो-मालिके-यौमे-जज़ा।।

हम तुझी को पूजते हैं तू ही इक माबूद है  
हम मदद चाहते नहीं, हरगिज़ कभी तेरे सिवा।

तू है ज़ाहिर, तू है बातिन, अव्वलो-आखिर है तू  
फ़रार भी तू दूर कर दे क़र्ज़ भी या रब मेरा।

मैं ज़मीनो-आसमां पर डालता हूँ जब नज़र  
कोई भी पाता नहीं हूँ मैं 'खुदा' तेरे सिवा।

चौंद-तारे दे रहे हैं अपने सानेअ की खबर  
तेरी कुदरत से अया है बिलयक़ीन होना तेरा।

मैं तुझे कुछ जानता हूँ, तेरे कुछ औसाफ़ भी  
तू कयामत में भी होगा जाना-पहचाना मेरा।

तू मेरा ज़ाकिर रहे मैं भी रहूँ ज़ाकिर तेरा  
हो ज़मी पर ज़िक्र तेरा आसमां में हो मेरा।

फ़ल्बे-मुज़र को सुकू मिल जाए तेरी याद से  
और तेरे ज़िक्र से हो मुत्माइन ये दिल मेरा।

रोज़ो-शब, सुबह मसा, आठो पहर, चौसठ घड़ी  
तू ही तू दिल में रहे कोई न हो तेरे सिवा।

मैं हमेशा याद रखूँ अपनी मजलिस में तुझे  
तू भी मुझको याद रखे अपनी मजलिस में सदा।

बन्द तेरी याद से मेरी जुबां या रब न हो  
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।

ज़िन्दगी दुस्वार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर  
मासी-ए-बेआब हो बेज़िक्रये बन्दा तेरा।

मैं दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊँ क़रीब  
गोया तहतुल अर्श में हूँ तेरे कदमों में पड़ा।

हालते सद-यास में भी ऐ खुदा तेरी कसम  
जो न हारूँ और मैं करता रहूँ तुझसे दुआ।

बह रही हो मेरी आँखों मेरी गर्दन हो झुकी  
नाक रगड़े, पस्त होकर, तुझसे मैं माँगूँ दुआ।

तेरे आगे आजिज़ाना, दस्त बस्ता, सर नमूँ  
मैं रहूँ या रब खड़ा भी तेरे कदमों में पड़ा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम  
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगना।

हर मेरी ऐसी दुआ हो जिस से टल जाए पहाड़  
ग़ार वालों से भी बढ़कर तेरी रहमत से खुदा।

हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक्सीम हो  
तेरे बन्दों पर तो बरस्यो जाए लाखों बे-सज़ा।

नेकियों में तू बदल दे और उनको बरस्य दे  
उम्र मर के अगले पिछले सब गुनाहों को खुदा।

हज़ मेरे मबरूर हो सब कोशिशें मशकूर हो  
दे तिज़ास्त तू भी वह जिसमें न हो घाटा ज़रा।

तेरी मज़ी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल ज़िन्दगी  
खाना पीना, चलावा फिरना, बैठना उठना मेरा।

जो क़सम खाई या खाऊँ तुझ पे करके ऐतमाद  
मअ फ़लाहे दोजह के साथ पूरी हो खुदा।



मैं न छोड़ू, मैं न छोड़ू संगे-दर तेरा कभी  
आ गया हूँ, आ पड़ा हूँ, तेरे दर पर ऐ खुदा।

हर मज़ाई कोई शय है मैं तेरी तौफ़ीक से  
सिर्फ चाहूँ तुझसे या तेरे नबी से फ़ैसला।

उम्र भर मेरी नज़र इस पर रहे हो मुस्तज़ू  
तूने या सब क्या कहा? मुस्ताफ़ा ने क्या कहा?

आख़िरत में अपनी या सब कितनी ही मस्तज़ूक पर  
मुझ को मेरी आल को तू फ़ौकियत करना अता।

उम्र मेरी आख़री है दिन है मरने के करीब  
मैं रहूँ मिरया के तू ख़न्दा मिले मुझसे खुदा।

फ़जल फ़रमा करते दम तक मैं रहूँ इस हाल में  
तुझ से हो उम्मीद बेहद डर भी हो मुझको तेरा।

मैं रहूँ बेचैन बेहद तुझसे मिलने के लिये  
जान जब निकले तो तड़पे कब वह हो तन से जुदा।

मौत की ताख़ीर भी हो मौत ही मेरे लिए  
हो दमे-आख़िर मुझे इतना तेरा शौक़े लिका।

बख़्श दे तू, रहम कर, आला राफीको से मिलूँ  
हो मुझे उस वक़्त बेहद शौक़ मिलने का तेरा।

'क़ौल साबित' पर रहूँ साबित खुदाया हो नसीब  
ला इलाहा इल्ला अन्तल्लाह पे मरना मेरा।

आख़री हिचकी मुझे दे तेरी रहमत की ख़बर  
औँख जब बन्द हो तो देखू तेरी ज़मत की फ़िज़ा।

तेरी रहमत की तरफ़ हो मेरा दुनिया से ख़ुलज  
जाकनी के वक़्त पाऊँ मुजदा साए जाफ़िज़ा।

क्या मेरा मस्कन ज़मीनो-आसमा तक रो पड़े  
मेरे मरने पर खुदाया अर्श हिल जाए तेरा।

'रखे राज़ी की तरफ़ चल हो के राज़ी तू निकल'  
रूह से मेरी फ़रिश्ते यह कहे वक़्तो कज़ा।

तेरी रहमत के फ़रिश्ते मुझको लेने के लिए  
आएँ वह, लेकर चढ़े, मुझको जहाँ है तू खुदा।

रूह का जब आसमा में हो फ़रिश्तो पर वरूद  
हो यही उनकी सदाएँ 'मरहबा सद मरहबा'।

'क़दे मुनी, क़दे मुनी हो चलो जल्दी चलो'  
जब जनाज़ा ले चले कहता रहे बन्दा तेरा।

तू मुसल्ली हो मलाइक भी तेरे हो बिलख़ुसूस  
मुझ मरीबो-बेनवा का जब जनाज़ा हो पड़ा।

हो मेरा मस्कन वहाँ, तुझ को जहाँ भी हो पसन्द  
जो ज़मी हो तुझको पियारी वह बने मदफ़न मेरा।

कर चुके जब दफ़न मुझको आए जब मुन्कर नेकीर  
'रखे सख़ित रखे सख़ितनी' हो लंब पर ऐ खुदा।

क़ब्र हो मुश्ताक़ मेरी उसका बेहतर हो सुलूक  
पाऊँ मैं आग़ोश मादर की तरह उसको खुदा।

ज़िन्दगी के इस सफ़र में तू मेरा साहिब रहे  
कुल मेरे पसमान्दगा में तू ख़लीफ़ा हो मेरा।

तू सफ़र में भी 'हज़र में' क़ब्र में भी हज़र में  
मेहरबा मुझ पर रहे बेहद निगहबा भी मेरा।

जाकनी हो, क़ब्र हो या हज़र हो या पुलसिरात  
सहल तेरे फ़जल से हो मरहला इक इक मेरा।

'रखे सल्लिम रखे सल्लिम हसबुना ने अमुलवकील'  
हज़र के कुल मरहलो में हो यही कलमा मेरा।

रोज़े नहरार हो तेरे रूए मुबारक पर नज़र  
जब तेरी पिण्डली खुले सज्दे में हो बन्दा तेरा।

अर्श का साया मिले सातो तरह से हज़र में  
मुझको, मेरी आल को जो हो क़यामत तक खुदा।

गो पलक झपके न झपके मुझसे तै हो पुलसिरात  
इस कठिन मज़िल में मेरी मेरे मौला काम आ।

'जल्द इसको पार कर यह सर्ट कर देगा मुझे'  
जब जहन्नम पर से गुज़रू वह कहे तुझको खुदा।

आएगा बन्दा तेरा इक दिन कफ़न पहने हुए  
तेरे आगे, बख़्श देना आक्रियत करना अता।

यस्ता सीधा दिखा, इन्आम कर हम पर मदान  
उम्मत-अहमद में मुझको ख़ास दर्जा कर अता।

उम्र भर की कुल ख़ताएँ उनकी माफ़िर बख़्श दे  
तू मेरे मा-बाप की कर माफ़िरत बेइन्तिहा।